Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BIRJ BHASHA SOUR KOSH

G. K. U.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Stock Verification-2024

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रजभाषा सूर-कोश

(चतुर्थ खंड)

1.3/24 IV,V,VI
35567

निर्देशक

डॉ० दीनदयालु गुप्त, एम० ए०, एल-एल० बी०, डी० लिट्०,
प्रोफ़ेसर तथा अध्यक्ष हिंदी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

संपादक

प्रेमनारायण टंडन, एम० ए०
प्राध्यापक, हिंदी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

1979

प्रकाशक

लखनऊ विश्वविद्यालय

चौथे खंड की शब्द-संख्या—५८३४
चारों खंडों की शब्द-संख्या—२१४४७

मूल्य—डाकव्ययसहित ४)
स्थायी ग्राहकों से ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या 9/12 IV, 913/24 IV, IV, IV
पुस्तक संख्या
आगत पञ्जिका संख्या 35,560 — 35,585

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३,२६०
८-१-६१

... दिनांक १८-४-१९...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि.—जलानेवाला। उ.—महापतित कुल तारन, एक नाम अघ जारन, दारुन दुख बिसरावन—१०-२५१।

जारनहार—संज्ञा पुं. [हिं. जलाना+हार (प्रत्य.)] जलाने-वाला। उ.—मीठे बचन सुहाये बोलत अंतर जारन हार—२७८७।

जारना—क्रि. स. [हिं. जलाना] जलाना।

जारा—संज्ञा पुं. [हिं. जाला] जाला।

जारि—क्रि. स. [हिं. जलाना] जलाकर, नष्ट करके। उ.—हरि की सरन महँ तू आउ। काम-क्रोध-विषाद-तृष्ना, सकल जारि बहाउ—१-३१४।

जारिणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] व्यभिचारिणी स्त्री।

जारी—वि. [अ.] (१) बहता हुआ, प्रवाहयुक्त। (२) चलता हुआ, प्रचलित।

—संज्ञा पुं. [देश.] (१) झरबेरी। (२) एक मुहर्रमी गीत जो प्रायः स्त्रियाँ गाती हैं।

संज्ञा स्त्री. [सं. जार+ई (प्रत्य.)] व्यभिचार।

क्रि. स. [हिं. जलाना] जला दी, जलायी। उ.—(क) भैया-बंधु-कुटुंब घनेरे, तिनतैं कछु न सरी। लै देही घर-बाहर जारी, सिर ठोंकी लकरी—१-७१। (ख) तव वियोग सोक तौ उपज्यौ काम देह तनु जारी—२७९२।

वि.—जलायी या सताई हुई। उ.—बिट बाहर ग्रह ग्रह प्रति दुरि जाति आवति विकल मदन की जारी—२२९६।

जारुथी—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक प्राचीन नगरी।

जारुधि—संज्ञा पुं. [सं.] एक पर्वत।

जारूथ, जारूथ्य—संज्ञा पुं. [सं. जारूथ्य] वह अश्वमेध जिसमें तिगुनी दक्षिणा ली जाय।

जारे—क्रि. स. [हिं. जलाना] जलाये, दग्ध किये। उ.—चल तन चपल रहत थिरकै रथ बिरहिन के तनु जारे—२८६२।

जारै—क्रि. स. [हिं. जलाना] जलाता है, भसमता है, नष्ट करता है। उ.—अंतकाल जो नाम उचारै। सो सब अपने पापनि जारै—६-४।

जारोब—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] झाड़ू, बुहारी।

जारौं—क्रि, स. [हिं. जलाना] जलाता हूँ, नष्ट करता हूँ। उ.—सूरदास सुनि भक्त-विरोधी, चक्र सुदरसन जारौं—१-२७२।

जारौ—क्रि. स. [हिं. जलाना] जलाती है, पीड़ित करती है। उ.—तृष्ना-तड़ित चमकि छनहीं-छन, अहनिसि यह तन जारौ—१-२०९।

जार्यक—संज्ञा पुं. [सं. जार्य्यक] एक मृग।

जारयौ—क्रि. स. [हिं. जलाना] (१) जलाया। उ.—ज्वाला प्रीति प्रगट सन्मुख हठि, ज्यौं पतंग तन जारयौ—१-१०२। (२) पीड़ित किया, दुख दिया। उ.—हिरनाकुस प्रहलाद भक्त कौं बहुत सासना जारयौ—१-१०९।

जालंधर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक ऋषि। (२) एक दैत्य।

जालंधरी विद्या—संज्ञा स्त्री. [सं. जालंधर=एक दैत्य] माया, जादू।

जाल—संज्ञा पुं. [सं.] तार या सूत का बुना हुआ पट जो मछलियों, चिड़ियों आदि को फँसाने के काम में आता है। उ.—मेल्यौ जाल काल जब खैंच्यौ, भयौ मीन-जल-हार्यौ—१-६७।

मुहा.—जाल डालना (फेंकना)—मछलियों आदि को फँसाने के लिए जल में जाल डालना। जाल फैलाना (बिछाना)—पक्षियों को फँसाने के लिए जाल लगाना।

(२) किसी को फँसाने की युक्ति या तदबीर।

मुहा.—जाल फैलाना (बिछाना)—किसी को फँसाने या वश में करने का उपाय करना।

(३) मकड़ी का जाला। (४) समूह। उ.—(क) बल मोहन बन ते वने आवत लीने गैया जाल—२३७१। (ख) कुटिल अलक बिना बपन के मनौ अलि-सिसु-जाल—१०-२३४। (ग) भागे जंजाल जाल—१०-२०५। (५) इंद्रजाल, जादू। (६) झरोखा। (७) अभिमान। (८) क्षार, खार। (९) कदम का पेड़। (१०) एक तोप। (११) फूल की कली।

संज्ञा पुं. [अ. जअ़ल] धोखा देने का उपाय।

जालक—संज्ञा पुं [सं.] (१) जाल। (२) कली। (३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समूह । (४) झरोखा । (५) मोतियों का एक आभूषण । (६) केला । (७) घोसला । (८) अभिमान ।

जालजीवी—संज्ञा पुं. [सं.] मछुआ, धीवर ।

जालदार—वि. [सं. जाल+फ़ा. दार] छेददार ।

जालना—क्रि. स. [हिं. जलाना] जलाना ।

जालपाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हंस । (२) वह पक्षी जिसके पैर की उँगलियों पर जालदार झिल्ली हो ।

जालप्राया—संज्ञा स्त्री. [सं.] कवच, जिरहबख्तर ।

जालरंध्र—संज्ञा पुं. [सं.] झरोखा ।

जालव—संज्ञा पुं. [सं.] एक दैत्य जो बलबल का पुत्र था और श्रीबलदेव जी द्वारा मारा गया था ।

जालसाज—संज्ञा पुं. [अ. जअ्ल+फ़ा. साज़] जालिया ।

जालसाजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जालसाज] दगाबाजी ।

जाला—संज्ञा पुं. [सं. जाल] (१) समूह । उ.—कंबुकंठ, भुज नैन बिसाला । कर केयूर कंचन नगजाला—६२५ । (२) मकड़ी का जाल । (३) आँख का एक रोग । (४) सूत या सन का जाल । (५) बड़ा बरतन ।

जालाक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] गवाक्ष, झरोखा ।

जालिक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जाल बुननेवाला । (२) जाल से पशु-पक्षियों को फँसाने वाला । (३) मदारी, जादूगर । (४) मकड़ी ।

जालिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) पाश, फंदा, जाल । (२) जाली । (३) विधवा स्त्री । (४) कवच । (५) मकड़ी । (६) लोहा । (७) समूह ।

जालिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) तरोई । (२) चित्रशाला ।

जालिम—वि. [अ. ज़ालिम] अत्याचारी ।

जालिया—वि. [हिं. जाल=फरेब+इया (प्रत्य.)] छली-कपटी, धोखेबाज, दगाबाज, फरेबी ।

संज्ञा पुं. [हिं. जाल+इया (प्रत्य.)] धीवर ।

जाली—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) तरोई । (२) परवल ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. जाल] (१) छोटे-छोटे छेदों का समूह । (२) महीन छेद काढ़ने-बनाने का काम । (३) महीन छेददार कपड़ा । (४) कच्चे आम की गुठली के ऊपर का तंतु-समूह ।

वि. [अ. जअ्ल] नकली, बनावटी ।

वि. [हिं. जलाना] जलायी हुई । उ.—सूरदास प्रभु तव न मुई हम जिवहिं बिरह की जाली—३२२८ ।

जालीदार—वि. [हिं. जाली + दार] जिसमें जाली हो ।

जाल्म—वि. [सं.] (१) नीच । (२) मूर्ख ।

जाल्मक—वि. [सं.] गुरु आदि का द्वेषी ।

जाल्य—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव ।

जाव—क्रि. स. [हिं. जाना] जाओ । उ.—सूर स्याम बिनु कौन छुड़ावै, चले जाव भाई पोइसि—१-३३३ ।

जावक—संज्ञा पुं. [सं. यावक] पैरों में लगाने का अलता । उ.—कहिहैं न चरनन देन जावक गुहन वेनी फूल—२७५६ ।

जावत—अव्य. [सं. यावत्] (१) सब, सारा । (२) जब तक । (३) जहाँ तक ।

जावदेक—अव्य., वि. [सं. यावत्+एक] जितनी भी, जो कुछ भी । उ.—घर बाहर ते बोलि लेहु सब जावदेक ब्रजबाल—३२७४ ।

जावन—संज्ञा पुं. [हिं. जामन] दही जमाने का जामन । उ.—(क) नई दोहिनी पोंछि पखारी धरि निधूम खीर पर तायौ । तामें मिलि मिश्रित मिस्री करि दै कपूर पुट जावन नायौ । (ख) कोउ दधि मैं जावन पय फेरै—पृ. ३३८ (७५) ।

जावित्री—संज्ञा स्त्री. [सं. जातिपत्री] जायफल का ऊपरी सुगंधित छिलका ।

जावै—क्रि. अ. [हिं. जाना] जाता है ।

मु.—मिटि जावै—नष्ट हो जाता है । उ.—बहुरौ ताहि बुढ़ापा आवै । इंद्री-सक्ति सकल मिटि जावै—३-१३ ।

क्रि. स. [सं. जनन] उत्पन्न करे, पैदा करे, जने । उ.—(क) धनि जननी जो सुभटहिं जावै । भीर परैं रिपु कौ दल दलि-मलि, कौतुक करि दिखरावै—९-१५२ । (ख) मातु कहै कन्या कुल को दुख जनि कोऊ जग जावै—१२२३ ।

जाषक—संज्ञा पुं. [सं.] पीला चंदन ।

जाषनी, जाषिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. यक्षिणी] (१) यक्ष की स्त्री, यक्षिणी । (२) कुबेर-पत्नी ।

जासु, जासू—वि. [हिं. जो] जिसका ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जासूस—संज्ञा पुं. [अ.] **भेदिया, गुप्तचर ।**

जासूसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जासूस] **जासूस का काम ।**

जासौं—सर्व. [हिं. जा+सौं (प्रत्य.)] **जिससे ।** उ.—घर की नारि बहुत हित जासौं, रहति सदा सँग लागी—१-७६ ।

जास्पति—संज्ञा पुं. [सं.] **जँवाई, दामाद ।**

जाहक—संज्ञा पुं. [सं.] **बिछौना, बिस्तर ।**

जाहर, जाहिर—वि. [अ. ज़ाहिर] (१) **जो छिपा न हो, खुला हुआ ।** (२) **विदित, जाना हुआ ।**

जाहि—क्रि. अ. [हिं. जाना] **जा, जाओ ।** उ.—करि हियाव, यह सौंज लादि कै, हरि कैं पुर लै जाहि—१-३१० । वि. [हिं. जा+हि] **जिसको ।**

जाहिरा—क्रि. वि. [अ. ज़ाहिरा] **प्रकट रूप से ।**

जाहिरी—वि. [अ. ज़ाहिरा] **जाहिर, प्रकट ।**

जाहिल—वि. [अ.] (१) **मूर्ख ।** (२) **अपढ़ ।**

जाहीं—क्रि. अ. [हिं. जाना] (१) **जाते हैं, जाना होता है ।** उ.—सूरदास हरि भजौ गर्ब तजि, बिमुख अगति कौं जाहीं—२-३३ । (२) **बीतते हैं, (दिन आदि) व्यतीत होते हैं ।** उ.—नेम-धर्म हीं मैं दिन जाहीं—७६९ ।

प्र.—रीझि जाहीं—**प्रसन्न हो जाते हैं ।** उ.—कबहुँ कियैं भक्ति हूँ के न ये रीझिहीं, कबहुँ कियैं बैर के रीझि जाहीं—८-८ ।

जाही—संज्ञा स्त्री. [सं. जाति] (१) **चमेली की जाति का एक सुगंधित फूल ।** उ.—जाही जूही सेवती करना कनिआरी-१८२३ । (२) **एक तरह की आतिशबाजी ।**

जाहु—क्रि. अ. [हिं. जाना] **जाओ ।** उ.—मिथ्या तन कौ मोह बिसार । जाहु रहौ भावै ग्रह-बार—३-१३ ।

जाहुगे—क्रि. अ. [हिं. जाना] **जाओगे, प्रस्थान करोगे ।** उ.—नंद बबा की बात सुनौ हरि । मोहिं छाँड़ि जौ कहूँ जाहुगे, ल्याउँगी तुमकौं धरि—१०-६८१ ।

जाह्नवी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जह्नु से उत्पन्न गंगा ।**

जिंद—संज्ञा पुं. [अ.] **भूत, प्रेत, जिन ।**

जिंदगानी, जिंदगी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **जीवन ।** (२) **जीवन-काल, आयु ।**

मुहा.—जिंदगी के दिन पूरे करना (भरना)—(१) **कष्ट से जीवन बिताना ।** (२) **मरने के समीप होना ।**

जिंदा—वि. [फ़ा.] **जो जीवित या जीता हो ।**

जिंदा दिल—वि. [फ़ा.] **खुशमिजाज, हँसोड़ ।**

जिंवाइ—क्रि. स. [हिं. जिमाना] **खाना खिला कर, जिमाकर ।** उ.—मेघनाद ब्रह्मा-वर पायौ । आहुति अगिनि जिंवाइ सँतोषी, निकस्यौ रथ बहु रतन बनायौ—९-१४१ ।

जिंवाना—क्रि. स. [हिं. जिमाना] **भोजन कराना ।**

जिंवावति—क्रि. स. [हिं. जिमाना] **खिलाती है, भोजन कराती है ।** उ.—सरस बसन तन पोंछि गई लै, षटरस की ज्यौनार जिंवावति—५१४ ।

जिंवावै—क्रि. स. [हिं. जिमाना] **खिलाता है, भोजन कराता है, भोग लगाता है ।** उ.—इच्छा करि मैं बाह्मन न्यौत्यौ, ताकौं स्याम खिझावै । वह अपने ठाकुरहिं जिंवावै, तू ऐसैं उठि धावै—१०-२४९ ।

जिंस—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **प्रकार, किस्म, तरह ।** (२) **चीज, वस्तु ।** (३) **सामान ।** (४) **अन्न, अनाज ।**

जिअन—संज्ञा पुं. [सं. जीवन, हिं. जीना] **जीना, जीवित रहना ।** उ.—काल-अगिनि सबही जग जारत । तुम कैसैं कैं जिअन बिचारत—१-२८४ ।

जिआना—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जीवित करना ।**

जिआवत—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जीवित करता है, जिलाता है ।** उ.—सखी री चातक मोहिं जिआवत—२८४५ ।

जिउ—संज्ञा पुं. [हिं. जीव] **जीव-जंतु, प्राणी ।**

जिउका—संज्ञा स्त्री. [सं. जीविका] **रोजी, जीविका ।**

जिउकिया—संज्ञा पुं. [हिं. जीविका, जिउका] (१) **जीविका पैदा करनेवाले ।** (२) **कठिनता से प्राप्त वस्तुओं का व्यापार करनेवाले पहाड़ी लोग ।**

जिउतिया—संज्ञा स्त्री. [सं. जिता या जीमूत] **आश्विन कृष्ण या शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन पुत्रवती स्त्रियों द्वारा किया जानेवाला एक व्रत ।**

जिउलेवा—वि. [हिं. जीव+लेना] **बहुत कष्टदायी ।**

जिए—क्रि. स. [हिं. जीना] **जीता है, जीवित रहता है ।** उ.—नैन दरस देखन कौं दिए । मूढ़ देखि परनारी जिए—४-१२ ।

जिऐं—क्रि. स. [हिं. जीना] **जीवित रहने (से) न**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरन (से)। उ.—सूरजदास बिमुख जो हरि तैं, कहा भयौ जुग कोटि जिऐं—१-८६।

जिकिर, जिक्र—संज्ञा पुं. [अ. ज़िक्र] चर्चा, प्रसंग।

जिगर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) कलेजा। (२) चित, मन। (३) साहस, हिम्मत। (४) सार भाग, गूदा। (५) पुत्र।

जिगरा—संज्ञा पुं. [हिं. जिगर] हिम्मत, साहस।

जिगरी—वि. [फ़ा.] (१) भीतरी, दिली। (२) बहुत घनिष्ट।

जिगिन—संज्ञा स्त्री. [सं. जिंगिनी] एक जंगली पड़।

जिगीषा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) जय या विजय पाने की इच्छा। (२) उद्यम।

जिच, जिच्च—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़िच] (१) विवशता, लाचारी। (२) कोई मार्ग, चारा या उपाय न होना, गतिरोध।

वि.—विवश, लाचार, तंग, मजबूर।

जिजिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. जीजी] बहन, भगिनी।

संज्ञा पुं. [फ़ा. जज़िय] जजिया कर।

जिज्ञासा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नयी बात जानने या जानकारी प्राप्त करने की इच्छा। (२) पूछताँछ।

जिज्ञासु, जिज्ञासू—वि. [सं.] (१) जानकारी प्राप्त करने या नयी बात जानने का इच्छुक। (२) खोजी।

जिज्ञास्य—वि. [सं.] जो जानने योग्य हो।

जिठाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जेठ] बड़ाई, जेठापन।

जिठानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जेठ] जेठ की पत्नी।

जिठैरौ—संज्ञा पुं. [हिं. जेठ, जेठा] बड़ा दुलारा पुत्र। उ.—देखियत नहिं भवन माँझ, जैसोइ तन तैसि साँझि, छल सौं कछु करत फिरत महरि कौ जिठेरौ—१०-२७६।

जित—क्रि. वि. [सं. यत्र] जिधर, जिस ओर। उ.—जित जित मन अर्जुन कौ तितहिं रथ चलायौ-१-२३।

मुहा.—जित - तित—इधर - उधर, यहाँ वहाँ, जिधर-तिधर। उ.—नाम अधार नहीं अवलोकत जित-तित गोता खात—१-१७५।

संज्ञा पुं. [सं.] जीत, विजय।

वि. [सं.] (१) जो जीत लिया गया हो। (२) जीतनेवाला। उ.—इंद्रि - जित हौं कहावत हुतौ—८-१०।

जितक—वि. [हिं. जितना] जितने (संख्या या परिमाणवाचक)। उ.—मेरी देह छुटत जम पठए, जितक दूत घर मौं—१-१५१।

जितना—वि. [हिं. जिस+तना (प्रत्य.)] जिस मात्रा या परिणाम का।

क्रि. वि.—जिस मात्रा या परिमाण में।

जितलोक—वि. [सं.] पुण्यों के कारण स्वर्गादि उच्चलोक प्राप्त करनेवाला।

जितवना—क्रि. स. [सं. ज्ञात] प्रकट करना।

जितवाना—क्रि. स. [हिं. जिताना] जीतने देना।

जितवार, जितवैया—वि. [हिं. जीतना] जीतनेवाला।

जिताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जीत] जीत, विजय।

क्रि. स. [हिं. जीतना] जीतने दिया।

जिताए—क्रि.स. [हिं. जितना] जीतने में समर्थ किया, विजयी बनाया। उ.—पांडव पाँच भजे प्रभु चरननि रनहिं जिताए हैं जदुराई—१-२४।

जितात्मा—वि. [सं. जितात्मन्] जितेंद्रिय।

जिताना—क्रि. स. [हिं. 'जीतना' का प्रे.] जीतने में समर्थ करना, जीतने देना।

जितार—वि. [सं. जित्वर] (१) जीतनेवाला। (२) जो जीत सके। (३) भारी वजन या भार का।

जितारि—वि. [सं.] जितेंद्रिय।

संज्ञा पुं.—गौतम बुद्ध का एक नाम।

जितावै—क्रि. स. [हिं. जिताना] जिता दे, विजयी करा दे। उ.—तौ हम कछु न बसाइ पार्थ, जौ श्रीपति तोहिं जितावै—१-२७५।

जिताष्टमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] आश्विन कृष्ण या शुक्ल अष्टमी को पुत्रवती स्त्रियों का एक व्रत।

जिति—संज्ञा स्त्री. [सं.] जीत, विजय।

जितिक—वि. [हिं. जितना] जितने (संख्या.)। उ.—जितिक बोल बोल्यौ तुम आगैं, राम प्रताप तुम्हारैं। सूरदास प्रभु की सौं साँचै, जन करि पैज पुकारै—६-१०७।

जिती—क्रि. अ. [हिं. जीतना] जीती, विजयी हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—खेलत जूप सकल जुवतिनि मैं, हार रघुपति जिती जनक की—६-२५।

वि. [हिं. जिस] **जितनी।** उ.—(क) हुतीं जिती जग मैं अधमाई सो मैं सबै करी—१-१३०। (ख) सुनहु कृपानिधि, जिती कृपा तुम या काली पै कीन्ही—५७०।

जितेंद्रिय—वि. [सं.] (१) **जिसने इंद्रियों को वश में कर लिया हो।** (२) **समान वृत्तिवाला, शांत।**

जिते—वि. [हिं. जितना] **जितने (संख्या-सूचक)।** उ.—(क) जानत जदुनाथ, जिते जन निज भुज-स्रम-सुख पायौ—१-१५। (ख) पाप-मारग जिते सबै कीन्हें तिते—१-११०।

जितै—क्रि. स. [हिं. जीतना] **जीते, विजयी हो।** उ.—हरि कृपा करै जिहिं, जितै सोई—८-१०।

क्रि. वि. [सं. यत्र, प्रा. यत्त] **जिस ओर।**

जितैया—वि. [हिं. जीतना] **जीतनेवाला, विजयी।**

जितो, जितौ—वि. [हिं. जिस] **जिस परिमाण का।** उ.—आनि देहिं अपने घर तैं हम, चाहति जितौ जसोवै—३४७।

जित्—वि. [सं.] **जीतनेवाला, जेता, विजयी।**

जित्य—संज्ञा पुं. [सं.] **बड़ा हल।**

जित्वर—वि. [सं.] **जीतनेवाला, विजयी।**

जिद—संज्ञा स्त्री. [अ. ज़िद] (१) **हठ।** (२) **वैर।**

मुहा.—जिद पर आना (पकड़ना)—**हठ करना।**

जिदियाना—क्रि. अ. [हिं. जिद] **हठ करना।**

जिद्द—संज्ञा स्त्री. [हिं. जिद] **हठ, अड़।**

जिद्दी—वि. [हिं. जिद] (१) **हठी, अड़नेवाला।** (२) **दूसरे की बात न माननेवाला, दुराग्रही।**

जिधर—क्रि. वि. [हिं. जिस+धर (प्रत्य.)] **जिस ओर।**

जिधर-तिधर—(१) **इधर-इधर।** (२) **बेठिकाने।**

जिन—सर्व. ['जिस' का बहु.] **जिन्होंने, जिसने।** उ.—सब करतूति कैकई कैं सिर, जिन यह दुख उपजायौ—६-५०।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विष्णु।** (२) **सूर्य।** (३) **बुद्धदेव।** (४) **जैनों के तीर्थंकर।**

संज्ञा पुं. [अ.] **भूत-प्रेत, जिन।**

अव्य. [हिं. जनि] **नहीं, मत।** उ.—जिन कोउ काहू के बस होइ—२८११।

जिनकौ—सर्व. [हिं. जिन+कौ (प्रत्य.)] **जिनका।**

जिना—संज्ञा पुं [अ. ज़िना] **व्यभिचार।**

जिनि—अव्य. [सं. जनि] **नहीं, मत, न (निषेधात्मक)।** उ.—(क) सूरदास आपुहिं समुझावै, लोग बुरौ जिनि मानौ—१-६३। (ख) द्वारे खड़े रहे हैं कबके जिनि रे गर्ब करै जिय भारी—२५८६।

जिनिस—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. जिंस] **अनाज, सामान।**

जिन्ह—सर्व. [हिं. जिन] **'जिस' का बहुवचन।**

जिब्भा—संज्ञा स्त्री. [सं. जिह्वा] **जीभ, जबान।**

जिभला—वि. [हिं. जीभ+ला (प्रत्य.)] **चटोरा, चट्टू।**

जिभ्या—संज्ञा स्त्री. [सं. जिह्वा] **जीभ, जवान।**

जिमाना—क्रि. स. [हिं. जीमना] **भोजन कराना।**

जिमि—क्रि. वि. [हिं. जिस+इमि] **जैसे, ज्यों।**

जिम्मा—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **भारग्रहण, उत्तरदायित्व, प्रतिज्ञा, जवाबदेही।** (२) **देखरेख, संरक्षा।**

जिम्में—संज्ञा पुं. [अ. जिम्मा] **ऋण-स्वरूप रकम होना, देना ठहरना।** उ.—मोहरिल पाँच साथ करि दीने, तिनकी बड़ी बिपरीत। जिम्में उनके, माँगैं मोतैं, यह तौ बड़ी अनीति—१-१४३।

मुहा.—किसी के जिम्मे करना—(१) **काम सौंपना।** (२) **देखरेख में रखना।** किसी के जिम्मे रुपया आना (निकलना, होना)—**किसी के ऊपर ऋण होना।** किसी के जिम्मे रुपया डालना—**किसी के ऊपर ऋण ठहराना।**

जिम्मावार, जिम्मेदार, जिम्मेवार—वि. [हिं. जिम्मा] **जो किसी बात का जिम्मा ले चुका हो।**

जिम्मावारी, जिम्मेदारी, जिम्मेवारी—वि. [हिं. जिम्मा] (१) **जवाबदेही।** (२) **सुपुर्दगी, संरक्षा।**

जिय—संज्ञा पुं. [सं. जीव] (१) **मन, चित्त, जी।** उ.—(क) ऐसी को करी अरु भक्त काजैं। जैसी जगदीस जिय धरी लाजैं—१-५। (ख) यँ जिय जानि कै अंध भव त्रास तैं सूर कामी कुटिल सरन आयौ—१-५। (ग) कहा मल्ल चानूर कुबलिया, अब जिय त्रास नहीं तिन नैंकौ—२५५८। (२) **जीव, प्राणी।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—(क) हारि-जीति नाहिं जिय कैं हाथ—६-५। (ख) एकनि कौं जिय-बलि दै पूजै—१-१७७। (ग) मैं कीन्हीं बहु जिय की हानि—४-१२। (३) **संकल्प, विचार, इच्छा।**

मुहा.—जिय में खुभना (गड़ना)—(१) **हृदय पर गहरा प्रभाव करना।** (२) **चित्त में बराबर ध्यान बना रहना।** जिय में खुभी—**चित्त में बराबर ध्यान बना रहता है।** उ.—माधव-मूरति जिय में खुभी। जिय दीन्ह—**ध्यान लगाया।** उ.—पाइँ धोइ मंदिर पग धारे प्रभु-पूजा जिय दीन्ह—१०-२६०।

जियत—क्रि. स. [हिं. जीना] (१) **जीता है।** (२) **जीते जी, जीवित रहते हुए।** उ.—सूरदास रनभूमिं बिजय बिनु, जियत न पीठि दिखाऊँ—१-२७०। (३) **पलते हैं।** उ.—कितने अहिर जियत मेरैं घर—१०-३३

जियतौ—संज्ञा पुं. [सं. जीव, हिं. जी] **मन, चित्त, जी।** उ.—सूर स्याम गिरिधर, धराधर हलधर, यह छबि सदा थिर, रहौ मेरैं जियतौ—३७३।

जियन—संज्ञा पुं. [सं. जीवन] **जिंदगी, जीवन।**

जियरा—संज्ञा पुं. [हिं. जीव] **जी, हृदय।**

जियरी—संज्ञा पुं. [हिं. जीव] **जीव।**

जियाजंतु—संज्ञा पुं. [हिं. जीवजंतु] **पशु-पक्षी।**

जियादती—संज्ञा स्त्री. [हिं. ज्यादती] (१) **अधिकता, बहुतायत।** (२) **अन्याय, अत्याचार।**

जियादा—वि. [हिं. ज्यादा] **अधिक, ज्यादा।**

जियान—संज्ञा पुं. [अ. ज़ियान] **घाटा, हानि।**

जियाना—क्रि. स. [हिं. जिलाना] (१) **जीवित करना, जिलाना।** (२) **पालन-पोषण करना, पालना।**

जियाफत—संज्ञा स्त्री. [अ. जियाफ़त] **दावत।**

जियारत—संज्ञा स्त्री. [अ. ज़ियारत] **तीर्थ-दर्शन।**

मुहा.—जियारत लगना—**दर्शकों की भीड़ होना।**

जियारती—वि. [हिं. ज़ियारत] **तीर्थ-यात्री, दर्शक।**

जियारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जीना] (१) **जीवन, जिंदगी।** (२) **जीविका।** (३) **दृढ़ता, साहस।**

जियावन—वि. [हिं. जिलाना] **जिलानेवाली, जीवित करने की।** उ.—कृष्णा-सुमंत्र जियावन मूरी, जिन जन मरत जिवायौ—२-३२।

जियावहि—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जिला ले, जीवन-दान दे, जीवित कर दे।** उ.—ऐसौ गुनी नहीं त्रिभुवन कहूँ, हम जानति हैं नीकैं। आइ जाइ तौ तुरत जियावहि, नैंकु छुवत उठैं जीकैं—७४६।

जिये—क्रि. स. [हिं. जीना] **जीवित रहे।** उ.—सूरदास कौं और बड़ौ सुख जूठनि खाइ जिये—१-१७१।

संज्ञा पुं.सवि.—**जी में, मन में।** उ.—स्यामसुंदर कमलनयन वसो मेरे जिये—३१२६।

जियै—क्रि. अ. [हिं. जीना] **जीवित रहे, जिये।** उ.—सूर जियै तौ जग जस पावै, मरि सुरलोक सिधावै—६-१५१।

जियो, जियौ—क्रि. स. [हिं. जीना] **जिया, जीवित हो गया।** उ.—(क) जिहिं तन हरि भजिबौ न कियौ। सो तन सूकर-स्वान-मीन ज्यौं इहिं सुख कहा जियौ—२-१६। (ख) बिसरि गई सब रोष हरष मन पुनि फिरि मदन जियो री—१६८६।

संज्ञा पुं.—**जीना, जीवित रहना।** उ.—इहिं बिधि बिकल सकल पुरबासी, नाहिंन चहत जियौ—६४४।

जिरगा—संज्ञा पुं. [फ़ा. जिर्गः] (१) **झुंड।** (२) **मंडली।**

जिरह—संज्ञा स्त्री. [अ. जुरह] (१) **हुज्जत, वाद-विवाद।** (२) **पूँछताँछ, छानबीन।**

संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़िरह] **कवच।**

जिरही—वि. [हिं. जिरह] **जो कवच पहने हो।**

जिराअत, जिरायत—संज्ञा स्त्री. [अ. ज़िराअत] **खेती।**

जिला—संज्ञा स्त्री. [अ.] **चमक दमक।**

संज्ञा पुं. [अ. ज़िला] **प्रांत का विभाग।**

जिलाट—संज्ञा पुं. [सं.] **एक प्राचीन बाजा।**

जिलाना—क्रि. स. [हिं. जीना] (१) **जिंदा या जीवित करना।** (२) **पालना, पोसना।** (३) **मरने से बचाना।**

जिलाह—संज्ञा पुं. [अ. जल्लाद] **अत्याचारी।**

जिल्द—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **खाल।** (२) **ऊपर का चमड़ा।** (३) **दफ्ती।** (४) **एक पुस्तक।** (५) **पुस्तक का एक भाग।**

जिल्लत—संज्ञा स्त्री. [अ. ज़िल्लत] (१) **अनादर, अपमान।** (२) **दुर्गति, दुर्दशा।**

मुहा.—जिल्लत उठाना (पाना)-**अपमानित होना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिव—संज्ञा पुं. [सं. जीव] **जीव, प्राणी, जीवधारी।** उ.—जिव कौ कियौ कछू नहिं होइ—६-१७३।

जिवन—संज्ञा पुं. [सं. जीवन] **जीवन, प्राणाधार, परम प्रिय।** उ.—मेरे प्रान-जिवन-धन कान्हा, तिनके भुज मोहिं बँधे दिखाए—१०-३७०।

जिवाँना—क्रि. स. [हिं. जिमाना] **भोजन कराना।**

जिवाइ—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जीवित करके।**

जिवाई—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जिला लेना, जीवित कर लेना।** उ.—सुक्र असुर कौं लेत जिवाई—६-२७३।

जिवाऊँ—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जिलाऊँ, जीवनदान दूँ।** उ.—रतन चौदह तहाँ तैं प्रगट होहिं तब, असुर कौं सुरा, तुम्हैं अमृत प्याऊँ। जीतिहौ तब असुर महा बलवंत कौं, मरैं नहिं देवता यौ जिवाऊँ—८-८।

जिवाए—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जीवित कर दिये।** उ.—मृतक भए सब सखा जिवाए, बिष-जल जाइ पियौ—१-३८।

जिवाजिव—संज्ञा पुं. [सं.] **चकोर पक्षी।**

जिवाना—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जीवित करना।**

जिवायौ—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जिलाया, जीवित किया।** उ.—कृष्ण सुमंत्र जियावन मूरी, जिन जन मरत जिवायौ—२-३२।

जिवावति—क्रि. स. [हिं. जिमाना] **जिमाती हैं, खिलाती हैं, भोजन कराती हैं।** उ.—बल-मोहन दोउ करत बियारी। प्रेम सहित दोउ सुतनि जिवावति, रोहिनि अरु जसुमति महतारी—१०-२२८।

जिष्णु—वि. [सं.] **जीतनेवाला, विजयी।**
संज्ञा पुं.—(१) **विष्णु।** (२) **इंद्र।** (३) **अर्जुन।** (४) **सूर्य।** (५) **वस्तु।**

जिस—त्रि. [सं. यः, यस्] **'जो' का विभक्ति-सहित विशेष्य के साथ प्रयुक्त रूप।**
सर्व.—**'जो' का विभक्ति लगने के पूर्व रूप।**

जिसिम, जिस्म—संज्ञा पुं. [फ़ा. जिस्म] **शरीर।**

जिह—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़द, सं. ज्या] **धनुष की डोरी।**
सर्व. [हिं. जिस] **जिस।** उ.—जिहके प्रीति निरंतर मन मैं सो मन क्यों समुझावै—३४४१।

जिहन—संज्ञा पुं. [अ. ज़िहन] **समझ, बुद्धि।**
मुहा.—जिहन खुलना—**बुद्धि बढ़ना।** जिहन लड़ना—**बुद्धि का काम करना।** जिहन लड़ाना—**बुद्धि दौड़ाना।**

जिहाज—संज्ञा पुं. [हिं. जहाज] **जलयान, जहाज।**

जिहाद—संज्ञा पुं. [अ.] **धर्म-युद्ध।**

जिहालत—संज्ञा स्त्री. [अ. जहालत] **मूर्खता।**

जिहासा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **त्याग की इच्छा।**

जिहासु—वि. [सं.] **त्याग का इच्छुक।**

जिहिं, जिहि—सर्व. [हिं. जिस] **जिसे, जिसको।** उ.—साँची निस्चय प्रेम को जिहि रे मिले गोपाल—३४४३।

जिहीर्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **लेने या हरने की इच्छा।**

जिहीर्षु—वि. [सं.] **लेने या हरने का इच्छुक।**

जिह्म—वि. [सं.] (१) **वक्र।** (२) **दुष्ट।** (३) **खिन्न।**
संज्ञा पुं.—(१) **एक फूल।** (२) **अधर्म।** (३) **दुष्टता।**

जिह्मग, जिह्मगामी—वि. [सं.] (१) **टेढ़ी चालवाला।** (२) **धीमी चालवाला।** (३) **कुटिल, कपटी।**
संज्ञा पुं.—**साँप, सर्प, भुजंग।**

जिह्मता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **टेढ़ापन।** (२) **धीमापन।** (३) **कुटिलता, कपट।**

जिह्मित—वि. [सं.] (१) **टेढ़ा।** (२) **चकित।**

जिह्मीकृत—वि. [सं.] **टेढ़ा किया हुआ।**

जिह्वल—वि. [सं.] **चटोरा, चट्टू, जिभला।**

जिह्वा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जीभ।**

जिह्वाग्र—संज्ञा पुं. [सं.] **जीभ की नोक, टूँड़।**

जिह्वामूल—संज्ञा पुं. [सं.] **जीभ का पिछला स्थान।**

जिह्वामूलीय—वि. [सं.] **जिह्वामूल से संबंधित।**
संज्ञा पुं.—**वह वर्ण (जैसे क, ख) जिसका उच्चारण जिह्वामूल से होता है।**

जिह्विका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जीभी।**

जींगन—संज्ञा पुं. [सं. जृंगण] **जुगनूँ, खद्योत।**

जी—संज्ञा पुं. [सं. जीव] (१) **मन, चित्त।** उ.—मोहिं छाँड़ि तुम और उधारै, मिटै सूल क्यौं जी कौ—१-१३८। (२) **हिम्मत।** (३) **संकल्प, विचार।**
मुहा.—जी अच्छा होना—**स्वस्थ होना।** जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आना—प्रेम होना। जी उकताना (उचटना)—मन न लगना, तबियत घबराना। जी उठना—(१) मन न लगना। (२) जीवित हो जाना। जी उठाना—(१) विरक्त होना। (२) इच्छा करना। जी उड़ जाना (उड़ना)—घबराहट होना। जी उदास होना—खिन्न या उदास होना। जी उलट जाना (उलटना)—(१) होश न रहना। (२) विरक्त होना। जी करना—(१) साहस करना। (२) इच्छा होना। जी काँपना—डरना। जी का बुखार (गुबार) निकालना—क्रोध या दुख से बकना-झकना। जी का बोझ हलका करना—खटका मिटाकर चिंता दूर करना। जी की अमान माँगना—प्राण दान की प्रतिज्ञा कराना। जी का आ लगना—प्राण संकट में पड़ना। जी की निकालना—(१) इच्छा पूरी करना (२) क्रोध या दुख से बकना-झकना। जी की जी में रह जाना (रहना)—इच्छा पूरी न हो सकना। जी की पड़ना—प्राण बचाना कठिन हो जाना। जी का—साहसी, हिम्मती। जी के पीछे (पैंड़े) पड़ना—बहुत परेशान करना, सताना, कष्ट देना। जी के पैंड़े परयो है—जी के पीछे पड़ा है, बहुत सताता या कष्ट देता है। उ.—गोकुल के ग्वैंड़े एक साँवरो सो ढोटा माई अँखियन के पैंड़े पैठि जी के पैंड़े परयौ है—८७२। जी को जी समझना—दूसरे को भी अपने समान आदमी समझना, दूसरे से मनुष्यता का व्यवहार करना। जी (को) मारना—(१) इच्छाओं को रोकना। (२) संतोष करना। जी को लगना—(१) वेदना या सहानुभूति होना। (२) प्रिय या भला लगना। (३) चिंता होना। जी को न लगाना—विशेष चिंता न करना। जी खटकना—(१) संदेह या चिंता होना। (२) जी हिचकिचाना। जी खट्टा करना—घृणा या विरक्ति उत्पन्न करना, चित्त हट जाना, घृणा होना। जी खपाना—(१) मन लगाकर परिश्रम से काम करना। (२) बहुत कष्ट सहना। जी खुलना—संकोच या हिचक न रहना। जी खोल कर—(१) बिना संकोच या हिचक के, बेधड़क। (२) मनमाना। (३) उत्साह के साथ। जी गँवाना—जान खोना। जी गिरना—(१) सुस्ती या आलस्य छाना। (२) हल्का ज्वर होना। जी घबराना—(१) मन व्याकुल होना। (२) मन न लगना। जी चलना—(१) इच्छा होना। (२) चित्त विचलित होना। (३) मोहित होना। जी चला—(१) वीर। (२) दानी (३) रसिक। जी चलाना—(१) इच्छा करना। (२) चित्त विचलित करना। (३) हिम्मत बाँधना। जी चाहना—इच्छा होना। जी चाहे—यदि इच्छा हो। जी चुराना (छुपाना)—किसी काम से भागना या टाल-टूल करना। जी छूटना—(१) साहस या उत्साह में कमी होना। (२) थकावट या आलस्य आना। (३) किसी झगड़े से पीछा छूटना। जी छोटा करना—(१) निरुत्साहित या उदास होना। (२) कंजूसी करना। जी छोड़ना—(१) प्राण त्यागना। (२) हिम्मत हारना। जी छोड़कर भागना—इस तरह भागना कि कहीं साँस लेने के लिए भी न रुकना। जी जलना—(१) गुस्सा या झुँझलाहट लगना, कुढ़ना। (२) डाह या ईर्ष्या होना। जी जलाना—(१) कुढ़ाना, चिढ़ाना। (१) सताना, दुखी करना। (३) ईर्ष्या या डाह पैदा करना। जी जानता है (होगा)—जो कुछ या जैसा कुछ किया या सहा वह कहा नहीं जा सकता। जी जान एक करना (लड़ाना)—(१) खूब मन लगाना। (२) कड़ा परिश्रम करना। जी जानै—जो कुछ सहा या किया है, मेरा जी ही जानता है। उ.—ऐसी कै ब्यापी हौं मनमथ मेरो जी जानै माई स्याम स्याम कहि रैनि जपति—१६५६। जी-जान से जुटना (लगना)—(१) खूब मन लगाना, ध्यान के काम करना। (२) कड़ी मेहनत करना। किसी को जी-जान से लगना—(१) किसी को बराबर काम या बात की चिंता रहना और उसके लिए प्रयत्न करना। (२) स्वार्थ अटकने के कारण किसी काम या बात को पूरा करने का शक्ति भर प्रयत्न करना। जी टूट जाना (टूटना)—निरुत्साह या निराशा होना। जी टँगा रहना (होना)—चित्त चिंतित रहना। जी टटोलना—मन की इच्छा जानने-परखने की कोशिश करना, मन की थाह लेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी ठंडा होना—(१) चित्त शांत या संतुष्ट होना। (२) इच्छापूर्ति से प्रसन्नता होना। जी ठुकना—(१) चित्त स्थिर होना। (२) हिम्मत बंधना। जी डालना—(१) जीवित करना। (२) मरने से बचाना। (३) प्रेम करना। (४) निराश, उदास या निरुत्साहित होना। जी डूबना—(१) मूर्छित होना। (२) घबराहट होना। (३) निराशा होना। जी ढहा जाना—(१) मूर्छा सी आना। (२) उदासी होना। जी तपना—क्रोध चढ़ना। जी तरसना—(१) बहुत इच्छा होना। (२) किसी के लिए अधीर या दुखी होना। जी दहलना—बहुत भय लगना। जी दान—प्राण का दान या रक्षा। जी दार—साहसी, हिम्मती। जी दुखना—कष्ट या दुख होना। जी दुखाना—दुख देना, सताना। जी देना—(१) मरना। (२) बहुत प्रेम करना। जी दौड़ना—(१) बड़ी चाह होना। (२) जी भटकना। जी धँसा जाना—(१) मूर्छा-सी आना। (२) उदास होना। जी धड़कना—(१) भय के कारण घबराहट होना। (२) साहस या हिम्मत न बँधना। जी धकधक करना (होना)—डर से घबराहट होना। जी निकलना—(१) मृत्यु होना। (२) डर लगना। (३) बहुत कष्ट होना। जी निढाल होना—(१) जी बहुत घबराना। (२) उदासी या खिन्नता होना। जी पक जाना (पकना)—कोई अप्रिय बात देखते-सुनते चित्त बहुत दुखी या खिन्न हो जाना। जी पड़ना—(१) शरीर में प्राण पड़ना। (२) मरे हुए में जान सी आना, निरुत्साहित में उत्साह भर जाना। जी पकड़ लेना—कलेजा थामना। जी पकड़ा जाना—संदेह या खुटका पैदा होना। जी पर आ बनना—अचानक ही कोई ऐसा संकट आना कि प्राण बचाना कठिन हो जाय। जी पर खेलना—(१) प्राण संकट में डालना। (२) प्राण की चिंता न करके बड़े साहस का काम करना। जी पानी करना—(१) प्राण लेने-देने की स्थिति पैदा करना। (२) कठोर चित्त को कोमल कर देना। जी पानी होना—कठोर चित्त का कोमल हो जाना। जी पिघलना—कठोर चित में दया या प्रेम का संचार होना। जी पीछे पड़ना—दुख आदि भूलकर मन बहलना। जी फट जाना—(१) पहले सा प्रेम न रहना, प्रेम में अंतर पड़ जाना। (२) उत्साह भंग होना। जी फिर जाना—पहले सा प्रेम न रहकर विरक्ति या अरुचि उत्पन्न होना। जी फिसलना—(१) मन मोहित होना। (२) पाने की इच्छा या लालसा उत्पन्न होना। जी फीका होना—चित हट जाना, विरक्ति होना। जी बँटना—(१) दुख आदि भुलाने के लिए मन का बहलकर दूसरी ओर लगना। (२) ध्यान स्थिर न रहना, मन उचटना। (३) केवल एक के प्रति प्रेम न रह जाना। जी बंद होना—विरक्ति होना। जी बढ़ना—(१) उत्साहित होना। (२) हिम्मत आना। जी बढ़ाना—(१) उत्साहित करना। (२) हिम्मत बँधाना। जी बहलना—(१) आनंद या मनोरंजन होना। (२) दुख-चिंता भूल कर किसी अन्य बात या काम में चित्त लगना। जी बहलाना—(१) आनंद या मनोरंजन करना। (२) दुख-चिंता भुलाने के लिए दूसरे काम में मन लगाना। जी बिखरना—(१) चित्त ठिकाने न होना। (२) मूर्छा होना। जी बिगड़ना—(१) जी मचलाना। (२) घिन मालूम होना। (३) अस्वस्थ होना। जी बुरा करना—कै करना। (किसी की ओर से) जी बुरा करना—किसी के प्रति घृणा, क्रोध या अरुचि होना। (दूसरे का) जी बुरा करना—दूसरे के मन में घृणा, क्रोध या अरुचि पैदा करना। जी बुरा होना—(१) जी मचलाना। (२) घिन या अरुचि होना। (३) अस्वस्थ होना। जी बैठ जाना (बैठना)—(१) चित ठिकाने न होना। (२) मूर्छा आना। (३) उदास या खिन्न होना। जी भटकना—(१) घबराहट होना, मन उड़ा-उड़ा फिरना। (२) बहुत चिंता लगना, बड़ी लालसा होना। जी भिटकना—घिन लगना। जी भर आना—चित्त में दुख या दया उमड़ना, रोमांच होना। जी भरकर—जितना जी चाहे उतना, मनमाना। जी भरना—(क्रि. अ.) (१) संतुष्ट होना, मन भर जाना। (२) इच्छा पूरी होना। (३) रुचि या इच्छा के अनुकूल काम होना। (क्रि. स.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) खटका या संदेह मिटाना। (२) दिलजमई करना। जी भरभरा उठना—चित्त में दुख या दया उमड़ना, रोमांच होना। जी भारी करना—चित्त खिन्न या दुखी करना। जी भारी होना—(१) चित्त उदास होना। (२) तबियत ठीक न होना। जी भुरभुराना—मोहित होना, लुभाना। जी मचलना (मतलाना)—(१) वमन या कै सी होने लगना। (२) घिन होना। जी मर जाना (मरना)—(१) चित्त उदास होना। (२) उत्साह या उमंग न रहना। जी मलमलाना—(१) अफसोस या पछताना होना। (२) स्नेह को प्रकट करने का अवसर न पाने के कारण पछताना होना। जी मारना—(१) उमंग या उत्साह को दबाना। (२) संतोष करना। (किसी से) जी मिलना—(१) समान प्रकृति के कारण विचार, कार्य और भाव एक से होना। (२) स्नेह होना। जी में आना—(१) विचार उठना। (२) इच्छा या इरादा होना। जी में घर करना—(१) बराबर ध्यान बना रहना। (२) मन में बसना। जी में खुभना (गड़ना, चुभना)—(१) हृदय पर गहरा प्रभाव करना। (२) बराबर ध्यान बना रहना। जी में जलना—(१) मन ही मन कुढ़ना या झुँझलाना। (२) डाह या ईर्ष्या होना। जी में जी आना—चिंता या घबराहट दूर होना, भय या आशंका मिट जाना। जी में जी डालना—(१) चिंता या घबराहट दूर करना। (२) विश्वास दिलाना; दिलजमई कराना। जी में डालना—सोचना, बिचारना। जी में धरना—(१) ख्याल करना, ध्यान बनाये रहना। (२) नाराज होना; बुरा मानना। जी में पैठना (बैठना)—(१) मन में जम जाना। (२) बराबर ध्यान में बना रहना। (३) मन में निश्चित या दृढ़ होना। जी में रखना—(१) ध्यान रखना। (२) बुरा मानना। (३) बात गुप्त रखना, प्रकट न करना। (किसी का जी रखना—(१) मन को रख लेना, इच्छा पूरी कर देना। (२) प्रसन्न या संतुष्ट करना। जी रुकना—(१) जी घबराना। (२) जी में संकोच होना। जी लगना—(१) मन का किसी काम में रम जाना। (२) मन बहलना। (३) प्रेम होना। जी लगाना—किसी से प्रेम करना। जी लगा रहना (होना)—चित्त में ध्यान या ख्याल बना होना। किसी से जी लगाना—प्रेम करना। जी लड़ाना—(१) प्राण जाने की चिंता न करके किसी काम में जुटना। (२) सारा ध्यान लगा देना। जी लरजना—भय या आशंका होना। जी ललचाना—(१) कुछ पाने की लालसा या इच्छा होना। (२) मन मोहित होना। जी ललचाना—(क्रि. अ.) (१) लोभ होना। (२) मोह होना। (क्रि .स.) (१) एक दूसरे के मन में लोभ पैदा करना। (२) दूसरे का मन लुभाना या मोहित करना। जी लुटना—मन मुग्ध होना। जी लुभाना—(क्रि. अ.) मन मोहित होना। (क्रि. स.) चित्त आकर्षित करना, मन मोहित करना। जी लूटना—मन मोहित करना। जी लेना—(१) जी चाहना, चाह होना। (२) मन की थाह लेना, मन की इच्छा जानने-परखने की कोशिश करना। (दूसरे का जी लेना)—मार डालना। जी लोटना—मन छटपटाना। जी सन (सन्न, सुन्न) होना—भय-आशंका से जी घबरा जाना। जी सनसनाना (सायँ सायँ होना)—भय-आशंका से शरीर स्तब्ध होना। जी से—खूब ध्यान लगाकर। जी से उतर जाना—स्नेह, श्रद्धा या आदर न रह जाना, विरक्ति या उदासीनता होना। जी से जाना—जान खो बैठना। जी से जी मिलना—(१) भावों, विचारों और आदर्शों में समानता होना। (२) परस्पर प्रीति होना। जी हट जाना (हटना)—इच्छा या चाह न रहना, विरक्ति हो जाना। जी हवा होना—मृत्यु होना। जी हवा हो जाना—भय-आशंका से घबरा जाना। (किसी का) जी हाथ में रखना (लेना)—(१) प्रसन्न या संतुष्ट रखना। (२) सांत्वना या धीरज दिये रहना। जी हारना—(१) घबरा जाना। (२) हिम्मत या साहस छोड़ना। जी हिलना—(१) भय से हृदय काँपना। (२) दया से चित्त उद्विग्न होना।

अव्य. [सं. जित्, प्रा. जिव=विजय अथवा सं. (श्री) युक्त, प्रा. जुक, हिं. जू] (१) एक सम्मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचक शब्द। (२) किसी बड़े के कथन या संबोधन के उत्तर में प्रति- संबोधन-रूप में कहा जानेवाला शब्द।

जीअ—संज्ञा पुं. [सं. जीव] (१) मन। (२) हिम्मत।

संज्ञा पुं. [सं. जीव] जीव, प्राणी।

जीअन—संज्ञा पुं. [सं. जीवन] (१) जीवन। (२) आयु।

जीउ—संज्ञा पुं. [सं. जीव] जीव, प्राणी।

जीगन—संज्ञा पुं. [हिं. जुगनूँ] जुगनूँ।

जीगा—संज्ञा पुं. [तु. जीग़ा] सिरपेच, कलगी।

जीजत, जीजतु—क्रि. अ. [हिं. जीना] जीता है, जीवित रहता है, जीवन के दिन बिताना है। उ.—(क) चिरंजीव रहौ सूर नंद-सुत जीजत मुख चितए—३१३१। (ख) सूर स्याम बिहरत ब्रज भीतर जीजतु है मुख चाहे—३०६७। (ग) निसि दिन जीजतु है या ब्रज मैं देखि मनोहर रूप—३२२३।

जीजा—संज्ञा पुं. [हिं. जीजी] बड़ी बहन का पति।

जीजियति—क्रि. अ. [हिं. जीना] जीवित रहती है, जीवन के दिन बिताती है। उ.—दामिनि की दमकनि, बूँदनि की झमकनि, सेज की तलफ कैसे जिजियति माई है—२८२७।

जीजी—संज्ञा स्त्री. [सं. देवी, हिं. दीदी] बड़ी बहन।

जीजूराना—संज्ञा पुं. [देश.] एक चिड़िया।

जीजै—क्रि. अ. [हिं जीना] (१) जीवन के दिन बिताइए, जीवित रहिए। उ.—सूरदास गिरिधर-जस गाइ-गाइ जीजै—१-७२। (२) जीवित है, जीवन के दिन बिताती है। उ.—सूर स्याम प्रीतम बिनु राधे सोचि सोचि त्रिय जीजै—२८६४।

जीट—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़ीट] डींग।

जीत—संज्ञा स्त्री. [सं. जिति, वैदिक जीति] (१) जय, विजय। (२) सफलता। (३) लाभ, फायदा।

संज्ञा स्त्री. [देश. जीति] जीति नामक लता।

जीतना—क्रि. स. [हिं. जीत+ना (प्रत्य.)] (१) विपक्षी को हराना, विजय प्राप्त करना। (२) सफलता पाना।

जीता—वि. [हिं. जीना] (१) जो मरा न हो, जीवित।

मुहा.—जीता-जागता—जीवित और सचेत, भला चंगा। जीता लहू—ताजा खून।

(२) नाप या तोल से कुछ ज्यादा।

क्रि. स. [हिं. जीतना] विजय प्राप्त की।

जीति—क्रि. स. [हिं. जीतना] (१) युद्ध में विपक्षी को परास्त करके, युद्ध में विजय पाकर। (२) किसी कार्य में विपक्षी को हरा कर। (३) विजय। उ.—जीति भक्त अपनैं की—१-२७२।

संज्ञा स्त्री. [देश.] एक लता जिसके रेशों से धनुष की डोरी बनायी जाती है।

जीती—क्रि. स. [हिं. जीतना] जीत ली, विजय प्राप्त की। उ.—खरभर परी, दियौ उन पैंड़ौ, जीती पहिली रारि—९-१०४।

क्रि. अ.—विजयी हुई। उ.—जीती जीती है रन बंसी—१६८८।

क्रि. अ. [हिं. जीना] जीवित और सचेत (है)।

मुहा.—जीती जागती—जीवित और सचेत, भली चंगी। जीती मक्खी निगलना—(१) जान-बूझ कर अन्याय, बुराई या बेइमानी करना। (२) जान-बूझकर अन्याय, बुराई या बेइमानी में शामिल होना।

जीते—क्रि. स. [हिं. जीतना] जीत सके, विजयी हुए। उ.—चौपरि जगत मड़े जुग बीते। गुन पाँसे, क्रम अंक, चारि गति सारि, न कबहूँ जीते—१-६०।

क्रि. अ. [हिं. जीना] जीवित रहे।

मुहा—जीते जी—(१) जीवित रहते हुए, बने रहते। (२) जीवन भर। जीते जी मर जाना (मरना)—किसी भारी विपत्ति या हानि से जीवन का रस या आनंद नष्ट हो जाना, जीवन नष्ट होना। जीते रहो—बड़ों का आशीर्वाद, जीवित रहो।

जीतैं—क्रि. स. [हिं. जीतना] जीतने से, विजयी होने से, सफलता पाने पर। उ.—जीतैं जीति भक्त अपनैं कैं, हारैं हारि बिचारौं—१-२७२।

जीतै—क्रि. स. [हिं. जीतना] विजयी हो, जीत जाय। उ.—भगवती कह्यौ तिनकौं सुनाई। जुद्ध जीतै सो मोहिं बरै आई—८-११।

जीतौ—क्रि. स. [हिं. जीना] जीवित रहता। उ.—रसना-स्वाद-सिथिल, लंपट ह्वै, अघटित भोजन करतौ। यह ब्यौहार लिखाइ, रात-दिन, पुनि जीतौ, पुनि मरतौ—१-२०३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीत्यौ—क्रि.स. [हिं. जीतना] युद्ध में जीता, शत्रु को हराया। उ.—गहि सारंग, रन रावन जीत्यौ. लंक विभीषन फिरी दुहाई—६-२४।

जीन—संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़ीन] घोड़े की काठी।

वि. [सं. जीर्ण] (१) पुराना, जर्जर। (२) वृद्ध।

जीनत—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़ीनत] (१) शोभा, सुंदरता। (२) शृंगार, सजावट।

जीना—क्रि. स. [सं. जीवन] (१) जिंदा रहना, न मरना। (२) जीवन के दिन बिताना, जिंदगी काटना।

मुहा.—जब तक जीना तब तक सीना—जीविका के लिए जीवन भर प्रयत्न करना या हाथ पैर मारना; जिंदगी भर रोजी कमाने के लिए कुछ न कुछ काम-धंधा करना।

(३) सुखी, संतुष्ट या प्रसन्न होना।

मुहा.—अपनी खुशी जीना—(इतना स्वार्थी होना कि) केवल अपने को सुखी देखकर ही संतुष्ट होना।

संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़ीनः] पक्की सीढ़ी।

जीभ—संज्ञा स्त्री. [सं. जिह्व, प्रा. जिब्भ] रसना, जिह्वा।

मुहा.—जीभ करना—बहुत बढ़ कर बोलना। जीभ खोलना—मुँह से शब्द निकालना। जीभ चलना—(१) कुछ चटपटी चीज खाने की इच्छा होना। (२) बहुत जल्दी-जल्दी बोलना। (३) उचित-अनुचित का ध्यान न रखते हुए बकते जाना। जीभ थोड़ी करना—(१) चटोरापन कम करना। (२) बकवाद कम करना, ज्यादा न बोलना। जीभ न करही थोरी—बकवाद कम नहीं करती, बहुत बके जाती है। उ.—मेरौ गोपाल तनक सो कहा करि जानै दधि की चोरी। हाथ नचावति आवति ग्वालिन जीभ न करही थोरी। जीभ निकालना—(१) जीभ मुँह से बाहर करना। (२) जीभ खींचना या उखाड़ना। जीभ पकड़ना—बोलने न देना। जीभ पिराना—बकवाद करने की इच्छा होना। जीभ पिरावति—बकवाद करने या बकने की इच्छा होती है। उ.—काहे को जीभ पिरावति—३०८१। जीभ बंद करना—बोलने न देना। जीभ बंद होना—चुप रहना। जीभ बढ़ाना—चटोरपन की आदत होना। जीभ लड़ाना—बहुत बातें या बकवाद करना, बहुत बोलना। जीभ लड़ावति—बेसमझे-बूझे बातें करती हुई। उ.—सुवा पढ़ावति, जीभ लड़ावति, ताहि बिमान पठायौ—१-१८८। जरा जीभ हिलाना—मुँह से कुछ कहना, दो-एक शब्द बोलना। जीभ के नीचे जीभ होना—एक बार कही हुई बात बदल देना, अपनी बात पर दृढ़ न रहना।

(२) जीभ के आकार की कोई चीज।

मुहा.—कलम की जीभ—कलम का नुकीला भाग।

जीभी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जीभ] (१) जीभ साफ करने की लचीली वस्तु। (२) छोटी जीभ।

जीमना—क्रि. स. [सं. जेमन] भोजन करना।

जीमूत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पर्वत। (२) बादल। (३) इंद्र। (४) जीविका देनेवाला। (५) एक ऋषि। (६) एक मल्ल जो भीम द्वारा मारा गया था।

जीमूतमुक्ता—संज्ञा पुं. [सं.] बादल से बरसनेवाला एक कल्पित मोती जिसे किसी ने आज तक नहीं देखा।

जीमूतवाहन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) इंद्र। (२) शालिवाहन राजा का पुत्र जिसकी पूजा पुत्र की कामनावाली स्त्रियाँ करती हैं। (३) जीमूतकेतु राजा का पुत्र जो नागानंद नाटक का नायक है।

जीमूहवाही—संज्ञा पुं. [सं. जीमूहवोहिन्] धुआँ, धूम्र।

जीय—संज्ञा पुं. [हिं. जी] मन, चित्त, जी।

मुहा.—जीय धरै—(१) ध्यान दे, परवाह करे। (२) मन में बुरा माने, असंतुष्ट हो। उ.—माधौ जू, जौ जन तैं विगरै। तउ कृपाल करुनामय केसव, प्रभु नहिं जीय धरै—१-११७

संज्ञा पुं. [सं. जीव] जीव, प्राणी।

जीयट—संज्ञा पुं. [हिं. जीवट] साहस, हिम्मत।

जीयति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. जीना] जीवित है, जीती है। उ.—जिय जिय सोच करत मारुत-सुत, जीयति न मेरैं जान। कै वह भाजि सिंधु मैं डूबी, कै उहिं तज्यौ परान—९-७५।

संज्ञा स्त्री.—जीवन, जिंदगी।

जीयदान—संज्ञा पुं. [सं. जीव = प्राण + दान] प्राणदान, जीवनदान। उ.—बालक-काज धर्म ज नि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाँड़ौ राय न ऐसी कीजै हो। तुम मानी बसुदेव देवकी जीयदान इन दीजै हो।

जीयन—संज्ञा पुं. [सं. जीवन, हिं. जीना] जीवन, जीना, जीवित रहना। उ.—धृग तव जन्म, जीयन धृग तेरौ, कहीं कपट-मुख बाता—६-४६।

जीर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जीरा। (२) फूल की केसर या जीरा। (३) तलवार।

वि.—तेज या जल्दी चलनेवाला।

संज्ञा पुं. [फ़ा. जिरह] जिरह, कवच।

वि. [सं. जीर्ण] पुराना, जर्जर, नष्ट।

जीरई—क्रि. अ. [हिं. जीरना] फटती है।

जीरक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जीरा। (२) फूल-केसर।

जीरण, जीरन—वि. [सं. जीर्ण] पुराना, फटा-पुराना। उ—(क) जीरन पट, कुपीन तन धारि। चल्यौ सुरसरी सीस उघारि—१-३४१। (ख) निरपत पटे कटुक अति जीरन चाहत मम उर लेख्यौ—३००४।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) जीरा। (२) फूल-केसर।

जीरणता, जीरनता, जीरनताई—संज्ञा स्त्री. [सं. जीर्णता] (१) बुढ़ापा, बूढ़ापन। (२) पुरानापन।

जीरना—क्रि. अ. [सं. जीर्ण] (१) पुराना होना। (२) मुरझाना, कुम्हलाना। (३) फटना। (४) नष्ट होना।

जीरा—संज्ञा पुं. [सं. जीरक, फ़ा. ज़ीर: (१) एक पौधा जिसमें सौंफ की तरह के फूल लगते हैं। (२) जीरे की तरह के महीन बीज। (३) फूलों का केसर।

ज़ीरी—संज्ञा पुं. [हिं. जीरा] एक तरह का धान।

जीर्ण—वि. [सं.] (१) बहुत बुड्ढा। (२) बहुत दिनों का। (३) फटा-पुराना और कमजोर।

यौ.—जीर्ण-शीर्ण—फटा-पुराना, टूटा-फुटा।

(४) पेट में अच्छी तरह पचा हुआ।

संज्ञा पुं.—(१) जीरा। (२) फूल-केसर।

जीर्णता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बुढ़ापा। (२) पुरानापन।

जीर्णा—वि. स्त्री. [सं.] वृद्धा, बुढ़िया।

जीर्णोद्धार—संज्ञा पुं. [सं. जीर्ण+उद्धार] (१) टूटी फूटी चीजों की मरम्मत। (२) मृत संस्थाओं आदि का पुनः सुधार या उद्धार।

जील—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़ीर] (१) धीमा या मध्यम स्वर। (२) बायाँ तबला।

जीला—वि. [सं. झिल्ली] (१) पतला। (२) महीन।

जीलानी—संज्ञा पुं. [अ.] एक तरह का लाल रंग।

जीवंत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्राण। (२) औषध।

वि.—जीता-जागता, जीवित और सचेत।

जीवंतिका, जीवंती—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक लता।

जीव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आत्मा, जीवात्मा। (२) प्राण, जीवनतत्व, जीव। उ.—(क) निसि-निसि ही रिषि लिए सहस-दल दुरवासा पग धारयौ। ततकालहिं तव प्रगट भए हरि, राजा-जीव उबारयौ—१-१०६। (ख) रुद्र अपमान कियौ सती तव जीव दियौ—४-६। (३) प्राणी, जीवधारी।

यौ.-जीव-जंतु-(१) जानवर। (२) कीड़े-मकोड़े।

(४) जीवन। (५) विष्णु। (६) वृहस्पति।

संज्ञा पुं. [हिं. जी] जी, मन। उ.—मेरे जीव ऐसी आवत भइ—२७६२।

जीवक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्राणधारी, जीव। उ.—जब कही पवन-सुत बंधु-वात। तब उठी सभा सब हरषगात। ज्यौं पावस-ऋतु घन-प्रथम-घोर। जल जीवक, दादर रटत मोर—६-१६६। (२) सँपेरा। (३) सेवक। (४) ब्याज या सूद खानेवाला। (५) एक जड़ी या बूटी।

जीवट—संज्ञा स्त्री. [सं. जीवथ] साहस, हिम्मत।

जीवत—क्रि. स. [हिं. जीना] जीवित रहता है।

जीवति—वि. [हिं. जीना] जीवित रहते हुए, जीते जी। उ.—जौ पै पतिव्रता व्रत तेर, जीवति बिछुरी काइ—६-७७।

संज्ञा स्त्री.—जीविका, रोजी।

जीवथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्राण। (२) मेघ। (३) मोर।

वि.—(१) धर्मात्मा। (२) दीर्घ आयुवाला।

जीवद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जीवनदाता। (२) वैद्य।

जीवदान—संज्ञा पुं. [सं.] प्राणदान, प्राणरक्षा। उ.—दोष इन कियो मोहिं छमा प्रभु कीजिए भद्र करि सीस जीवदान दीयौ।

जीवधन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जीव या पशु-रूप धन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पशु-धन। (२) जीवनधन, बहुत प्रिय।

जीवधानी—संज्ञा स्त्री. [सं.] जीव-आधार, पृथ्वी।

जीवधारी—संज्ञा पुं. [सं.] जंतु, प्राणी, जानवर।

जीवन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जीवित रहने की अवस्था, जिंदगी। (२) जीवित रहने का भाव। (३) प्राण या जीवन का सहारा। (४) प्राणाधार, परम प्रिय। उ.—येई हैं सब ब्रज के जीवन सुख पावहिं लिएँ नाम—३६७। (५) जीविका। (६) जल। (७) वायु। (८) पुत्र।

जीवनचरित, जीवनचरित्र—संज्ञा पुं. [सं. जीवनचरित] (१) जीवन का वृत्तांत। (२) जीवनी।

जीवनधन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सबसे प्रिय वस्तु या व्यक्ति। (२) बहुत प्रिय, प्राणाधार।

जीवनधर—वि. [हिं. जीवन+धारण] जीवनदायक।

जीवनद—वि. [हिं. जीवन+द] जीवनदायक।

जीवनकर—वि. [हिं. जीवन+कर] जीवनदायक।

जीवनबूटी—संज्ञा स्त्री. [सं. जीवन + हिं. बूटी] संजीवनी बूटी।

जीवनमूरि—संज्ञा स्त्री. [सं. जीवन+मूल] (१) अत्यंत प्रिय वस्तु, प्राणप्रिय। उ.—खिन मुँदरी, खिनहीं हनुमत सौं, कहति बिसूरि-बिसूरि। कहि मुद्रिके, कहाँ तैं छाँड़े मेरे जीवनमूरि—९ ८३। (२) संजीवनी बूटी।

जीवनवृत्त, जीवनवृत्तांत—संज्ञा पुं. [सं.] जीवन चरित।

जीवनवृत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] जीविका, रोजी।

जीवनहर—वि. [हिं. जीवन+हरना] जीवननाशक।

जीवनहारि—वि. [हिं. जीवन+हार] जीवित रहने की इच्छा या कामना रखनेवाली। उ.—परति धाइ जमुना-सलिल, गहि आनतिं ब्रजनारि। नैंकु रहौ सब मरहिंगी, को है जीवनहारि—५८९।

जीवनहेतु—संज्ञा पुं. [सं.] जीवन-साधन, जीविका।

जीवना—क्रि. अ. [हिं. जीना] जीवित रहना।

जीवनावास—संज्ञा पुं. [सं. जीवन+आवास] शरीर।

जीवनि—संज्ञा पुं. [सं. जीवन] जीवन की, जीवित रहने की। उ.—जीवनि-आस प्रबल श्रुति लेखी। साच्छात सो तुममैं देखी—१-२८४।

संज्ञा स्त्री. [सं. जीवनी] (१) संजीवनी बूटी। (२) जिलानेवाली वस्तु। (३) प्राणप्रिय वस्तु।

जीवनी—संज्ञा. स्त्री. [सं. जीवन+ई (प्रत्य.)] जीवन-वृत्त या वृत्तांत, जीवनचरित।

जीवनीय—वि. [सं.] (१) जीवनप्रद। (२) व्यवहार या बरतने योग्य।

संज्ञा पुं.—(१) जल। (२) दूध।

जीवनोपाय—संज्ञा पुं. [सं. जीवन+उपाय] जीविका।

जीवनौषध—सं. स्त्री. [सं. जीवन+औषध] वह दवा जो मरते हुए को भी जिला सके, संजीवनी औषध।

जीवन्मुक्त—वि. [सं.] जो जीवन-काल में ही आत्म-ज्ञान द्वारा सांसारिक माया या बंधन से छूट जाय।

जीवन्मृत—वि. [सं.] जो जीते जी मरे के समान हो।

जीवपति—संज्ञा पुं. [सं. जीव+पति] धर्मराज।

संज्ञा स्त्री. [सं.] सुहागिनी स्त्री।

जीवप्रभा—संज्ञा स्त्री. [सं.] आत्मा।

जीवबंद, जीवबंधु—संज्ञा पुं. [देश.] गुलदुपहरिया।

जीवयोनि—संज्ञा स्त्री [सं.] जीव-जंतु, प्राणी।

जीवरा—संज्ञा पुं. [हिं. जीव] जीव, प्राण।

जीवरि, जीवरी—संज्ञा पुं. [सं. जीव या जीवन] जीवन या प्राण-धारण करने की शक्ति। उ.—बीज मन माली मदन चुर आलबाल बयौ। प्रेम-पय सींच्यौ पहिल ही सुभग जीवरि दयौ—३३०७।

जीवलोक—संज्ञा पुं. [सं.] पृथ्वी, मृत्युलोक।

जीववृत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) जीव का गुण या व्यापार। (२) पशु पालने का व्यवसाय।

जीवसू—वि. [सं.] जिसकी संतान जीवित हो।

जीवस्थान—संज्ञा पुं. [सं.] हृदय जहाँ जीव रहता है।

जीवहत्या, जीवहिंसा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) जीवों का वध। (२) जीवों का वध करने से लगनेवाला पाप।

जीवहु—क्रि. स. [हिं. जीना] जीवित रहो, जियौ। उ.—(क) जुग जुग जीवहु कान्ह, सबनि मन भावन रे —१०-२८। (ख) सूरदास प्रभु जीवहु जुगजुग—४१८।

जीवांतक—संज्ञा पुं [सं. जीव+अंत+क=करनेवाला] (१) जीवहिंसक। (२) व्याध, बहेलिया। (३) काल।

जीवा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सीधी रेखा, ज्या। (२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनुष की डोरी। (३) भूमि (४) जीविका। (५) जीवन।

जीवाजून—संज्ञा पुं. [सं. जीवयोनि] जीव-जंतु।

जीवाणु—संज्ञा पुं. [सं.] प्राण-युक्त अणु जो अनेक रोग फैलाते हैं।

जीवात्मा—संज्ञा पुं. [सं.] प्राणी की चेतन-वृत्ति या जीवन का कारण-रूप तत्व, जीव, आत्मा।

जीवाधार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हृदय जो आत्मा का आश्रय स्थान है। (२) जीवन का हेतु या आधार।

जीवानुज—संज्ञा पुं. [सं.] गर्गाचार्य जो बृहस्पति के वंशज या उनके अनुज माने जाते हैं।

जीवावहु—क्रि. स. [हिं. जिलाना] जिला लेना, जीवित कर लेना। उ.—जब तुम निकसि उदर तैं आवहु। या विद्या करि मोहिं जीवावहु—६-१७३।

जीवावै—क्रि. स. [हिं. जिलाना] जिला ले, जीवित कर ले। उ.—मृतक सुरनि कौ फेरि जीवावै—६-१७३।

जीवावौ—क्रि. स. [हिं. जिलाना] जिला लो, जीवित कर लो। उ.—मृतक सुरनि कौं तुमहुँ जीवावौ—६-१७३।

जीविका—संज्ञा स्त्री. [सं.] भरण-पोषण का साधन, वृत्ति, रोजी। उ.—मेरी सकल जीविका यामैं रघुपति मुक्त न कीजै। सूरजदास चढ़ौं प्रभु पाछैं, रेनु पखारन दीजै—६-४१।

मुहा.—जीविका लगना—रोजी का ठिकाना होना। जीविका लगाना—रोजी का ठिकाना करना।

जीवित—वि. [सं.] जीता हुआ, जिंदा। उ.—जीवित रहिहौ कौ लौं भू पर—१-२८४।

संज्ञा पुं.—जीवन, प्राणधारण।

जीवितेश—संज्ञा पुं. [सं. जीवित = जीवन + ईश] (१) प्राणाधार, प्राणनाथ। (२) यम। (३) इंद्र। (४) सूर्य। (५) इड़ा-पिंगला नाड़ी।

जीवी—वि. [सं. जीविन्] (१) जीवित रहनेवाला, जीनेवाला। (२) जीविका या रोजी करनेवाला।

जीवेश—संज्ञा पुं. [सं. जीव + ईश] परमात्मा।

जीवैं—क्रि. अ. [हिं. जीना] जीवित रहें। उ.—कह्यौ बिनय करि सुनु रिषिराइ। दोउ जीवैं सो करौ उपाइ—६-१७३।

जीवै—क्रि. अ. [हिं. जीना] जीवित रहे, जिये। उ.—जीवै तौ सुख बिलसै जग मैं, कीरति लोकनि गावै—६-१५२।

जीवो—संज्ञा स्त्री. [हिं. जीना] जीवित रहना। उ.—लोचन चातक जीवो नहिं चाहत—२७७१।

जीवोपाधि—संज्ञा स्त्री. [सं. जीव + उपाधि] स्वप्न, सुषुप्ति और जाग्रत अवस्थाएँ।

जीवौं—क्रि. अ. [हिं. जीना] जीवित रहूँ। उ.—जब लौं हौं जीवौं जीवन भर, सदा नाम तव जपिहौं—६-१६४।

जीवौ—क्रि. अ. [हिं. जीना] जीवित रहो।

जीह, जीहि, जीही—संज्ञा स्त्री. [हिं. जीभ] जिह्वा, जीभ, जबान।

जीहौ—क्रि. स. [हिं. जीना] जीवित रहोगे, जियोगे। उ.—धिक धिक नंदहिं कह्यौ, और कितने दिन जीहौ—५८६।

जुंबिश, जुंबिस—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. जुंबिश] गति।

जु—सर्व. [हिं. जो] जो। उ.—जौ हरि-व्रत निज उर न धरैगौ। तौ को अस त्राता जु अपुन करि, कर कुठावँ पकरैगौ—१-७५।

क्रि. वि.—यदि, अगर।

वि.—जो।

संज्ञा पुं. [हिं. जू] बड़े लोगों के लिए एक संबोधन या आदरसूचक शब्द।

जुअती—संज्ञा स्त्री. [सं. युवती] युवती।

जुआँ—संज्ञा पुं. [सं. यूका, प्रा. जूआ] सिर का जूँ।

जुआँरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जुआँ] छोटी जूँ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ज्वार] एक मोटा अनाज।

जुआ—संज्ञा पुं. [सं. युज = जोड़ना] (१) गाड़ी की लकड़ी जो बैलों के कंधे पर रहती है। (२) चक्की की मूठा जिसे पकड़कर उसे चलाते हैं।

संज्ञा पुं. [सं. द्यूत, प्रा. जूत] कौड़ी या ताश का वह खेल जिसमें हारनेवाले से कुछ धन जीतनेवाले को मिलता है, द्यूत। उ.—(क) कौरव-पासा कपट बनाए। धर्म-पुत्र कौं जुआ खिलाए—१-२४६। (ख) आछो गात अकारथ गारयौ। करी न प्रीति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमल-लोचन सौं जनम जुश्रा ज्यों हारयौ—१-१०१।

जुश्राचोर—संज्ञा पुं. [हिं. जुश्रा+चोर] (१) वह जो जीतकर खिसक जाय। (२) ठग, वंचक।

जुश्राचोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जुश्रा+चोरी] ठगी।

जुश्रानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जवानी] युवावस्था।

जुश्रार—संज्ञा स्त्री. [हिं. ज्वार] एक मोटा अनाज।

संज्ञा स्त्री.—समुद्र का ज्वार।

संज्ञा पुं. [हिं. जुश्रा] जुश्रा खेलनेवाला। उ.—कहो नंद कहाँ छाँड़े कुमार। .... । चितवत नंद ठगे से ठाढ़े मानो हारयौ हेम जुश्रार—२६७१।

जुश्रारभाटा—संज्ञा पुं. [हिं. ज्वार+भाटा] ज्वार भाटा।

जुश्रारी—संज्ञा पुं. [हिं. जुश्रा] जुवा खेलनेवाला। उ.—अधोमुख रहति उरध नहिं चितवत ज्यों गथ हारे थकित जुश्रारी—३४२५।

जुक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं. युक्ति] (१) उपाय, ढंग। उ.—जोग न जुक्ति ध्यान नहिं पूजा बिरध भएँ पछितात—२-२२। (२) कौशल, चातुरी। (३) चाल, रीति, प्रथा। (४) न्याय, नीति। (५) अनुमान। (६) हेतु, कारण, उपपत्ति।

जुग—संज्ञा पुं. [सं. युग] (१) पुराणानुसार समय का बहुत बड़ा परिमाण। ये संख्या में चार माने गये हैं, यथा सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। उ.—चौपरि जगत मड़े जुग बीते—१-६०।

मुहा.—जुगजुग—चिरकाल तक, बहुत समय तक। उ.—जुगजुग बिरद यहै चलि आयौ भक्तनि-हाथ बिकानौ—१-११।

(२) जोड़ा, दल, दो। उ.—अद्‌भुत राम नाम के अंक। धर्म-अँकुर के पावन द्वै दल मुक्ति-बधू ताटंक। मुनिमन-हंस पच्छ जुग जाकैं बल उड़ि ऊरध जात—१-६०।

मुहा.—जुग टूटना—(१) गुट्ट या दल का तितर-बितर हो जाना। (२) गुट्ट या दल में एका या मेल न रहना। जुग फूटना—दो साथियों में एक का न रहना।

(३) चौसर में दो गोटियों का एक ही घर में होना। (२) पुश्त, पीढ़ी।

जुगजुगाना—क्रि. अ. [हिं. जगना=प्रज्वलित होना] (१) टिमटिमाना। (२) कुछ-कुछ उन्नति करना।

जुगत, जुगति—संज्ञा स्त्री. [सं. युक्ति] (१) युक्ति, विधान, उपाय। (२) व्यवहार-कुशलता। (३) चमत्कारपूर्ण उक्ति।

जुगती—वि. [हिं. जुगत] (१) युक्ति या तरकीब लड़ानेवाला। (२) चतुर, चालाक।

संज्ञा स्त्री.—(१) युक्ति, तरकीब। (२) चतुरता।

जुगनी, जुगनू—संज्ञा पुं. [हिं. जुगजुगाना] (१) एक कीड़ा जिसका पिछला भाग चमकता है, खद्योत, पटबीजना। (२) एक गहना।

जुगम—वि. [सं. युग्म] दो, जोड़ा, युग।

जुगल—वि. [सं. युगल] वे जो एक साथ दो हों, युग्म, जोड़ा। उ.—अंधकार-अज्ञान हरन कौं रवि-ससि जुगल-प्रकास—१-६०।

जुगवना—क्रि. स. [सं. योग+अवना (प्रत्य.)] (१) एकत्र या संचित करना, जोड़ना। (२) सुरक्षित रखना।

जुगवनि—वि. [हिं. जुग] दो। उ.—द्रुमबल्ली पर दीप जुगवनि जननि अनल त्रिय जारिहै—सा. उ. ४।

जुगादरी—वि. [सं. युगांतरीय] बहुत पुराना।

जुगाना—क्रि. स. [हिं. जुगवना] इकट्ठा करना।

जुगालना—क्रि. अ. [सं.] पागुर करना।

जुगाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. जुगालना] पागुर।

जुगुत—संज्ञा स्त्री. [हिं. जुगत] युक्ति, उपाय।

जुगुप्सक—वि. [सं.] दूसरे की निंदा करनेवाला।

जुगुप्सन—संज्ञा पुं. [सं.] पर-निंदा, बुराई।

जुगुप्सा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) निंदा। (२) घृणा।

जुगुप्सित—वि. [सं.] (१) निंदित। (२) घृणित।

जुगुप्सू—वि. [सं.] बुराई करनेवाला।

जुगुल—वि. [सं. युगल] दो, दोनों। उ.—(क) सुख की रासि जुगुल मुख ऊपर सूरदास बलि जात—सा. उ. ६। (ख) जुगुल कपाट बिदारि बाट करि लतनि जुही सँधियोंरी—१०-५२।

जुगै—क्रि. स. [हिं. जुगवना] (१) जमा या संचित करके। (१) कोशिश करके। उ.—नभ तैं निकट आनि राखौ है जलपुट जरान जुगै—१०-१६५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा पुं. [हिं. जुग] **युग, जुग।**

मुहा.—जुगै जुग—**अनेक जुग।** उ.—(क) केतिक संख जुगै जुग बीते मानव असुर अहेरो—९-१३२। (ख) हरि की भक्ति जुगै जुग बिरधै—२-२।

जुजीठल—संज्ञा पुं. [सं. युधिष्ठिर] **राजा युधिष्ठिर।**

जुज्झ—संज्ञा स्त्री. [सं. युद्ध, प्रा. जुज्झ] **लड़ाई-झगड़ा।**

जुझवाना—क्रि. स. [हिं. जुझाना] (१) **लड़ने की प्रेरणा देना, लड़ाना।** (२) **लड़ाकर मरवा डालना।**

जुझाऊ—वि. [हिं. जुज्झ, जूझ + आऊ प्रत्य)] (१) **युद्ध-संबंधी।** (२) **युद्ध के लिए उत्साहित करनेवाला।**

जुझार—वि. [हिं. जुज्झ + आर (प्रत्य.)] **वीर-बाँकुरा।**

जुट—संज्ञा स्त्री. [सं. युक्त, प्रा. जुत्त] (१) **जोड़ी।** (२) **समूह।** (३) **गुट्ट, दल।** (४) **मेल का साथी।** (५) **जोड़ का आदमी।**

जुटना—क्रि. अ. [सं. युक्त, प्रा. जुत्त + ना (प्रत्य.) या सं. जुड = बाँधना] (१) **जुड़ना, संबद्ध होना।** (२) **सटना, लगना।** (३) **लिपटना, चिमटना।** (४) **इकट्ठा होना,** (५) **कार्य में जोग देना।** (६) **तत्पर होना।** (७) **एकमत होना।**

जुटली—वि. [सं. जूट] **जूड़ेवाला, जटाधारी, बालों की लंबी लटवाला।** उ.—सखी री, नंद-नंदन देखु। धूरि धूसर जटा जुटली, हरि किए हर-भेसु—१०-१७०।

जुटाना—क्रि. स. [हिं. जुटना] (१) **दो वस्तुओं को जोड़ना।** (२) **मिलाना, सटाना।** (३) **इकट्ठा करना।**

जुटाव—संज्ञा पुं. [हिं. जुटना] (१) **जुटने की क्रिया या भाव।** (२) **जमाव, भीड़, जमावड़ा।**

जुटिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **शिखा, चोटी।** (२) **लट, गुच्छा, जूड़ी।** (३) **कपूर।**

जुट्टी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जुटना] (१) **घास-पत्ती का पूला।** (२) **गड्डी।** (३) **एक पकवान।**

वि.—**जुड़ी, मिली या सटी हुई।**

जुठरावत—क्रि. स. [हिं. जूठा] **जूठा करते हैं।**

मुहा.—मुख जुठरावत—**जरा-सा खिलाते हैं, चखाते हैं।** उ.—नंद लै लै हरि-मुख जुठरावत—१०-८९।

जुठायौ—क्रि. स. [हिं. जूठा, जुठारना] **जूठाकर दिया, उच्छिष्ट दिया।** उ.—नैन उघारि विप्र जौ देखै, खात कन्हैया देख न पायौ। देखौ आइ जसोदा, सुत-कृति, सिद्ध पाक इहिं आइ जुठायौ—१०-२४८।

जुठनियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. जूठ, जूठन] **किसी के आगे का बचा हुआ भोजन, जूठन।** उ.—भोजन करि नँद अचमन लीन्हौ, माँगत सूर जुठनियाँ—१०-२३८।

जुठारना—क्रि. स. [हिं. जूठा] (१) **खाने-पीने की चीज मुँह से लगाकर या कुछ खाकर अपवित्र कर देना।** (२) **किसी वस्तु को स्वयं भोग कर दूसरे के अयोग्य कर देना।**

जुठिहारा, जुठिहारे—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. जूठा + हारा, जुठिहारा (एक वचन)] **जूठा खानेवाले।** उ.—तुम साकट, वै भगत-भागवत, राग-द्वेष तैं न्यारे। सूरदास प्रभु नंदनंदन कहैं, हम ग्वालिन जुठिहारे—१-२४२।

जुड़ना—क्रि. अ. [हिं. जुटना या सं. जुड़ = बाँधना] (१) **दो वस्तुओं का संबद्ध या संयुक्त होना।** (२) **इकट्ठा होना।** (३) **किसी काम में योग देने को प्रस्तुत होना।** (४) **मिलना, प्राप्त होना।** (५) **गाड़ी में पशु जुतना।**

जुड़वाँ—वि. [हिं. जुड़ना] **जुड़े हुए, एक साथ पैदा होनेवाले, जुड़वाँ (बच्चे)।**

जुड़वाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोड़ना] **जोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।**

जुड़वाना—क्रि. स. [हिं. जूड़] (१) **ठंडा या शीतल करना।** (२) **शांत, सुखी या संतुष्ट करना।**

क्रि. स. [हिं. जोड़वाना] **जोड़ने में प्रवृत्त करना,**

जुड़ाईं—क्रि. अ. [हिं. जुड़ाना] **सरदी खा गयीं, जड़ा गयीं।** उ.—ब्रज-ललना कह्यौ नीर जुड़ाई। अति आतुर ह्वै तट कौं धाई—७९९।

जुड़ाई—क्रि. अ. [हिं. जुड़ाना] **शान्त या सुखी करना, ठंडा या शीतल करना।** उ.—(माखन) अति कोमल तुम्हरे मुख लायक, तुम जेंवहु मेरे नैन जुड़ाई—५४६।

वि.—**जड़ायी हुई, सरदी खाई हुई।** उ.—हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठाढ़ी जल माहिं गुसाईं खरी जुड़ाई नीर की—३३०३।

जुड़ाना—क्रि. अ. [हिं. जूड़] (१) **ठंडा या शीतल होना। (२) प्रसन्न या सुखी होना।**

क्रि. स. (१) **शीतल करना। (२) संतुष्ट करना।**

क्रि. स. [हिं. जोड़ना] **जोड़ने का काम कराना।**

जुड़ाने—क्रि. अ. [हिं. जुड़ाना] **ठंडे या शीतल हुए, प्रसन्न हुए।** उ.—अँचवत तब नयन जुड़ाने—१०-१८३।

जुड़ावत—क्रि. अ. [हिं. जुड़ाना] **सुख-संतोष देता है, शांति मिलती है।** उ.—ठाढ़ी अजिर जसोदा अपनैं, हरिहिं लिए चंदा दिखरावत। रोवत कत बलि जाउँ तुम्हारी,देखौं धौं भरि नैन जुड़ावत–१०-१८८।

जुड़ावन—वि. [हिं. जुड़ाना] **सुखी-संतुष्ट करनेवाले।** उ.—मोतैं को हो अनाथ, दरसन तैं भयौ सनाथ, देखत नैन जुड़ावन—१०-२५१।

जुड़ावना—क्रि. स. [हिं. जुड़ाना] (१) **ठंडा या शीतल करना। (२) शांत, सुखी या प्रसन्न करना।**

क्रि. अ.—(१) **ठंडा होना। (२) तृप्त होना।**

जुड़ावाँ—वि. [हिं. जुड़ना] **जुड़े हुए, जुड़वाँ।**

जुत—वि. [सं. युक्त] **युक्त, सहित।** उ.—(क) हरि कह्यौ, राज न करत धर्मसुत। कहत हते मैं भ्रात तात-जुत—१-२६१। (ख) छठएँ सुक्र तुला के सनि जुत सत्रु रहन नहिं पैहैं—१०-८६।

जुतना—क्रि. अ. [हिं. युक्त, प्रा. जुत्त] (१) **बैल-घोड़े का गाड़ी में लगना। (२) किसी काम में तत्पर होना। (३) लड़ना, गुथना, जुटना। (४) जमीन, खेत आदि का जोता जाना।**

जुतवाना—क्रि. स. [हिं. जोतना] (१) **जमीन जुताना। (२) गाड़ी में बैल-घोड़ा बँधवाना।**

जुताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोताई] **जोतने की क्रिया, रीति या मजदूरी, जोताई।**

जुताना—क्रि. स. [हिं. जोतना] (१) **जमीन जोतने में लगाना। (२) गाड़ी में घोड़ा-बैल नथवाना। (३) जबरदस्ती काम में लगाना।**

जुतियाना—क्रि. स. [हिं. जूता+इयाना (प्रत्य.)] (१) **जूता मारना। (२) निरादर या अपमान करना।**

जुतियौअल—संज्ञा स्त्री. [हिं. जूता] **जूतों की मार।**

जुत्थ—संज्ञा पुं. [सं. यूथ] (१) **समूह। (२) सेना।**

जुदा—वि. [फ़ा.] (१) **अलग। (२) भिन्न।**

जुदाई—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **वियोग, विछोह।**

जुदी—वि. स्त्री. [हिं. जुदा] (१) **अलग। (२) भिन्न।**

जुद्ध, जुध—संज्ञा पुं. [सं. युद्ध] **लड़ाई, संग्राम, रण।** उ.—(क) कोटि छ्यानबे नृप-सेना सब जरासंध बँध छोरे। ऐसैं जन परतिज्ञा राखत, जुद्ध प्रगट करि जोरे —१-३१। (ख) बहुरौ क्रोधवंत जुध चह्यौ। सहस-बाहु तब ताकौं गह्यौ—९-१३।

जुधिष्ठिर—संज्ञा पुं. [सं. युधिष्ठिर] **राजा पांडु के क्षेत्रज पुत्र जो उनकी पत्नी कुंती के गर्भ से धर्म द्वारा उत्पन्न थे। पाँचों भाइयों में ये सबसे बड़े थे। परम सत्यवादी और धर्म परायण होने के कारण ये धर्मराज कहलाते थे।**

जुनून—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **पागलपन।**

जुन्हरी, जुन्हार—संज्ञा स्त्री. [सं. यवनाल] **ज्वार अन्न।**

जुन्हाई, जुन्हैया—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्योत्स्ना, प्रा. जोन्हा] (१) **चाँदनी, चंद्रिका। (२) चंद्र, चंद्रमा।**

जुपना—क्रि. अ. [हिं. जुड़ना] **(दीपक का) बुझना।**

जुबराज—संज्ञा पुं. [सं. युवराज] **बड़ा राजकुमार जो राज्य का अधिकारी हो।**

जुबाद—संज्ञा पुं.—**एक तरह की कस्तूरी।**

जुबान—संज्ञा स्त्री. [हिं. जबान] **जीभ, जबान।**

जुबानी—वि. [हिं. जबानी] **जबानी।**

जुमला—वि. [फ़ा.] **सब कुछ, सबके सब।**

संज्ञा पुं.—**वाक्य, सार्थक वाक्य।**

जुमा, जुम्मा—संज्ञा पुं. [अ.] **शुक्रवार (दिन)।**

जुमिल—संज्ञा पुं.—**एक तरह का घोड़ा।**

जुमुकना—क्रि. अ. [सं. यमक] (१) **पास, निकट या समीप आ जाना। (२) इकट्ठा या एकत्र होना।**

जुमेरात—संज्ञा स्त्री. [अ.] **गुरुवार (दिन)।**

जुर—संज्ञा पुं. [सं. ज्वर] **ज्वर, ताप, बुखार।** उ.—(क) सुत-तनया-बनिता-बिनोद-रस, इहिं जुर-जरनि जरायौ—१-१५४। (ख) बिन देखे की जथा बिरहिनी अति जुर जरति न जाति छुई—१४३३।

जुरअत—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **साहस, हिम्मत।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुरझुरी—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्वर या जूर्ति+हिं. झरझराना] (१) **हरारत**। (२) **ज्वर के कारण कँपकँपी**।

जुरना—क्रि. अ. [हिं. जुड़ना] **सटना, जुड़ना**।

जुरबाना, जुरमाना—संज्ञा पुं. [हिं. जुरमाना] **धन दंड**।

जुरा—संज्ञा स्त्री. [हिं. जरा] (१) **बुढ़ापा**। (२) **मौत**।

जुराइ, जुराय—क्रि. स. [हिं. जुड़ाना] **जुड़ाकर, (एक में) बँधवा कर**। उ.—(क) अछत-दूब दल बँधाइ, लालन की गँठि जुराइ, इहै मोहिं लाहौ नैननि दिखरावौ—१०-९५ । (ख) राधा मोहन गाँठि जुराय—२४५४ (६) ।

जुराना—क्रि. अ. [हिं. जुड़ाना] **शीतल या ठंडा होना**।

जुरावौ—क्रि. स. [हिं. जुड़ाना] **जुड़वाओ, बँधवाओ**। उ.—सूर स्याम छबि निहारति, तन-मन जुवति जन वारति, अतिहीं सुख धारति, बरष-गाँठि जुरावौ—१०-९५ ।

जुरि—क्रि. स. [हिं. जुड़ना] **जुड़कर, एकत्र होकर**। उ.—आज बधाई नंद कैं माई । ब्रज की नारि सकल जुरि आई—१०-३२ ।

जुरीं—क्रि. अ. [हिं. जुड़ना] **जुड़ीं, इकट्ठा हुईं**। उ.—(क) षटरस सहस जुरी सुकुमारी—७६६ । (ख) जुरी ब्रजसुंदरी दसन छबि कुंदरी काम तनु दुंदरी करनहारी—१२६० ।

जुरी—संज्ञा स्त्री. [सं जूर्ति=ज्वर] **हरारत**।

क्रि. अ. स्त्री. [हिं. जुड़ना] **एकत्र हुई, इकट्ठा हुई**। उ.—भोग-समग्री जुरी अपार । बिचरन लागे सुख-संसार—३-१३ ।

जुरे—क्रि. अ. [हिं. जुड़ना] **एकत्र हुए, इकट्ठा हुए**। उ.—(क) माखन खात चले उठि खेलन, सखा जुरे सब साथ—१०-३१२ । (ख) बहुत जुरे ब्रजबासी लोग—६२२ । (ग) दुहुँ दिसि सुभट बाँके बिकट अति जुरे—१० उ. १ । (घ) जुरे मनुज नहिं पार —सारा. २३० ।

जुर्म—संज्ञा पुं. [अ.] **अपराध**।

जुर्रा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **नर बाज (पक्षी)**।

जुर्राब—संज्ञा स्त्री. [तु.] **मोजा**।

जुरयौ—क्रि. अ. [हिं. जुटना=जुड़ना] **जुड़ा, एकत्र हुआ, इकट्ठा हुआ**। उ.—कटक अगिनित जुरयौ, लंक खरभर परयौ, सूर कौ तेज धर-धूरि ढाँप्यौ—९-१०६ ।

जुल—संज्ञा पुं. [सं. छल] **धोखा, झाँसा, बुत्ता**।

जुलना—क्रि. स. [हिं. जुड़ना] (१) **सम्मिलित होना**। (२) **मिलना, भेंट करना**।

जुलबाज—वि. [हिं. जुल+फ़ा. बाज़] **छली, धूर्त्त**।

जुलबाजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जुलबाज] **छल, धूर्त्तता**।

जुलम—संज्ञा पुं. [हिं. जुल्म] **अत्याचार**।

जुलाई—वि.—हीन, तुच्छ। उ.—प्रभु जू हौं तौ महा अधर्मी। घाती कुटिल ढीठ अति क्रोधी कपटी कुमति जुलाई —१-१८६ ।

जुलाब, जुल्लाब—संज्ञा पुं. [अ. जुल्लाब] **रेचन, दस्त**।

जुलाहा—संज्ञा पुं. [फ़ा. जौलाह] (१) **कपड़ा बिनने या बुनने वाला**। (२) **पानी का एक कीड़ा**। (३) **एक बरसाती कीड़ा**।

जुलुफ, जुल्फ, जुल्फी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. जुल्फ़] **सिर के बाल जो पीछे की ओर लटकते हैं, पट्टे, कुल्ले**।

जुलुम, जुल्म—संज्ञा पुं. [अ. जुल्म] **अत्याचार, अनीति**।

मुहा.—जुल्म टूटना-**आफत आना**। जुल्म ढाना-(१) **अत्याचार करना**। (२) **अद्भुत काम करना**।

जुलूस—संज्ञा पुं. [अ.] **धूम-धाम की सवारी**।

जुलोक—संज्ञा पुं. [सं. द्यु लोक] **सुरलोक, बैकुंठ**।

जुवक—संज्ञा पुं. [सं. युवक] **नौजवान, युवक**।

जुवति, जुवती—संज्ञा स्त्री. [सं. युवती] (१) **युवती, नयी उम्र की स्त्री**। उ.—षोड़स जुक्ति, जुवति चित्त षोड़स, षोड़स बरस निहारै—१-६० । (२) **पत्नी**। उ.—पतिव्रता जालंधर-जुवती, सो पतिव्रत तैं टारी—१-१०४।

जुवराज—संज्ञा पुं. [सं. युवराज] **युवराज**।

जुवाँ—संज्ञा स्त्री. [सं. यूका, हिं. जूँ] **जूँ नामक स्वेदज कीड़ा**। उ.—बालापन दुख बहु बिधि पावै ।''''''''। कबहूँ जुवाँ देहिं दुख भारी । तिनकौं सो नहिं सकै निवारी—३-१३ ।

जुवा—संज्ञा पुं. [सं. द्यूत, पा. जूत] **जुआ, द्यूत**। उ.—आछौ गात अकारथ गारयौ । करी न प्रीति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमल-लोचन सौं, जनम जुवा ज्यौं हारयौ—१-१०१।

संज्ञा स्त्री. [सं. युवा] **युवावस्था, यौवनावस्था।** उ.—बालापन खेलत ही खोयौ, जुवा बिषय-रस मातैं—१-११८।

जुवान—संज्ञा पुं. [हिं. जवान] **नवयुवक।**

जुवानी—संज्ञा पुं. [हिं. जवानी] **युवावस्था।**

जुवार, जुवारि—संज्ञा स्त्री. [हिं. ज्वार] **ज्वार नामक अन्न।** उ.—सूर हंस स्वाति-सुत धोखैं कबहुँक खात जुवारि—२१४६।

जुवारि, जुवारी—संज्ञा पुं. [हिं. जुआरी] **जुआरी।**

जुस्तजू—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **तलाश, खोज।**

जुहाना—क्रि. स. [सं. यूथ, प्रा. जूह+आना (प्रत्य.)] **(१) इकट्ठा करसा। (२) जोड़ना, संचित करना।**

जुहार, जुहारा, जुहारि, जुहारी—संज्ञा स्त्री. [सं. अवहार=युद्ध रुकना, हिं. जुहार] **प्रणाम, अभिवादन।** उ.—(क) सूर आकासबानी भई तबै तहँ, यहै बैदेहि है, करु जुहारा—९-७६। (ख) देखि सरूप सकल कृष्णाकृति कीनी चरन-जुहारो—८-१४।

जुहारना—क्रि. स. [हिं. जुहार] **(१) प्रणाम या अभिवादन करना। (२) सहायता माँगना, अहसान लेना।**

जुहावना—क्रि. स. [हिं. जुहाना] **जोड़ना, संचित करना।**

जुहिला—संज्ञा स्त्री. [हिं. जुही] **राधा की एक सखी का नाम।** उ.—कहि राधा किन हार चुरायौ। ....। सुमना बहुला चंपा जुहिला ज्ञाना भाना भाउ—१५८०।

जुही—संज्ञा स्त्री. [सं. यूथी, हिं. जूही] **एक पौधा जिसके फूल सफेद होते हैं।**

जुहू—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) एक यज्ञ पात्र। (२) पूर्व दिशा।**

जुहोता—संज्ञा पुं. [सं. जुहुवत्] **यज्ञ में आहुति देनेवाला।**

जूँ—संज्ञा स्त्री. [सं. यूका] **एक छोटा स्वदेज कीड़ा।**

मुहा.—कानों पर जूँ रेंगना—**परवाह न करना, सतर्क न होना।** जूँ की चाल—**बहुत सुस्त चाल।**

जूँठ—वि. [वि. जूठा] **खाया हुआ, जूठा।**

जूँठन—संज्ञा स्त्री. [हिं. जूठन] **जूठा किया हुआ पदार्थ, खाने से बचा हुआ शेष अन्न।** उ.—छाँक खाय जूँठन ग्वालिनकौ कछु मन मैं नहि मान्यौं—सारा. ७५०।

जूँठे—वि. बहु. [हिं. जूठा] **जो जूठे हों, उच्छिष्ट।** उ.—खाटे फल तज़ि मीठे ल्याई। जूँठे भए सो सहज सुहाई—९-६७।

जूँदन—संज्ञा पुं. [देश.] **बंदर।**

जूँमुहाँ—वि. [हिं. जूँ+मुँह] **जो देखने म सीधा पर भीतर से बड़ा धूर्त्त और कपटी हो।**

जू—अव्य. [सं. (श्री) युक्त] **(१) आदरसूचक शब्द जो प्रतिष्ठित व्यक्तियों के नाम के साथ लगाया जाता है; यह ब्रज, बुंदेलखंड और राजपूताने में विशेष प्रचलित है, जी।** उ.—बकी कपट करि मारन आई सो हरिजू बैकुंठ पठाई—१-३। **(२) संबोधन का एक प्रत्युत्तर।**

अव्य. [देश.] **एक निरर्थक शब्द।**

संज्ञा स्त्री. [सं.] **(१) सरस्वती। (२) वायुमंडल।**

जूआ—संज्ञा पुं. [सं. युग] **(१) हल आदि में नथे बैलों के कंधे पर बँधी लकड़ी।** उ.—काम-क्रोध दोउ बैल बली मिलि, रस-तामस सब कीन्हौ। अति कुबुद्धि मन हाँकनहारे, माया-जूआ दीन्हौ—१-१८५। **(२) चक्की फिराने की लकड़ी।**

संज्ञा पुं. [सं. द्यूत, प्रा. जूआ] **धन की हार-जीत का खेल, द्यूत।**

जूजू—संज्ञा पुं. [अनु.] **हाऊ, हउआ।**

जूझ—संज्ञा स्त्री. [सं. युद्ध, प्रा. जुज्झ] **युद्ध।**

जूझत—क्रि. अ. [हिं. जूझना] **(१) लड़ना। (२) लड़कर मर जाना।** उ.—असी सहस किंकर-दल तेहिके, दौरे मोहिं निहारि। तुव प्रताप तिनकौं छिन भीतर जूझत लगी न बार—९-१०४।

जूझना—क्रि. अ. [सं. युद्ध, हिं. जूझ] **(१) लड़ना। (२) लड़कर मरना, युद्ध में प्राण त्यागना।**

जूझि—क्रि. अ. [हिं. जूझना] **युद्ध में लड़ते-लड़ते मरना।** उ.—सेवक जूझि परै रन भीतर, ठाकुर तउ घर आवै—९-१५४।

जूझे—क्रि. अ. [हिं. जूझना] **जूझते या लड़ते रहे।** उ.—सहस बरस लौं जल में जूझे कियौ दनुज सहार—सारा. ४६।

जूट—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) जटा की गाँठ। (२) लट,**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जटा। (३) शिव की जटा। (४) पटसन।

जूटना— क्रि. स. [हिं. जोड़ना] जोड़ना, मिलाना।

क्रि. अ.—(१) जुड़ना, एकत्र होना। (२) फँसना।

जूटि—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोड़ी] जोड़ी।

जूठ—संज्ञा स्त्री. [हिं. जूठ] जूठन, उच्छिष्ट भोजन। उ.—अबकी बार मनुष्य-देह धरि, कियौ न कछू उपाइ। भटकत फिरयौ स्वान की नाईं नैकुँ जूठ कैं चाइ—१-१५५।

वि.—खाकर अपवित्र किया हुआ, जूठा।

जूठन, जूठनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. जूठा] (१) खाकर अपवित्र किया हुआ सामान। (२) खाने से बचा भोजन। उ.—(क) इहाँ रहहु जहँ जूठनि पावहु ब्रजवासिनि कैं ऐनु—४६१। (ख) जूठनि माँगि सूर जन लीन्हौ। बाँटि प्रसाद सबनि कौं दीन्हौ—३६६।

जूठा, जूठो, जूठौ—वि. [सं. जुष्ठ, प्रा. जुट्ठ, हिं. जूठा] (१) किसी के खाने से बचा हुआ, किसी का खाया हुआ, उच्छिष्ट। उ.—ग्वालनि कर तैं कौर छुड़ावत। जूठौ लेत सबनि के मुख कौ, अपनैं मुख लै नावत—४६८।

मुहा.—मीठे के लालच से जूठा खाना—किसी लोभ या लाभ की आशा से अनुचित काम करने को तैयार होना। जूठो खइए मीठे कारन—लाभ की आशा से अनुचित काम करना। उ.—नैनन दसा करी यह मेरी। आपुन भए जाइ हरि चेरे मोहिं करत हैं चेरी। जूठो खइए मीठे कारन आपुहिं खात लड़ावत। और जाइ सो कौन न फेको, देखन तौ नहिं पावत—पृ. ३३१।

(२) जिसका स्पर्श मुँह या जूठे पदार्थ-पात्र आदि से हुआ हो।

मुहा.—जूठे हाथ से कुत्ता न मारना—बहुत ज्यादा कंजूस होना।

(३) व्यवहार या भोग किया हुआ।

संज्ञा स्त्री.—खाने से बचा हुआ भोजन, जूठन।

जूठी—वि. स्त्री. [हिं. जूठा] खायी हुई चीज।

जूड़—वि. [हिं. जाड़ा] ठंडा, शीतल।

जूड़ा—संज्ञा पुं. [सं. जूट] (१) स्त्री के सिर के बालों की गाँठ, साधु की जटा की गाँठ। (२) चोटी, कलगी। (३) पगड़ी का पिछला भाग।

जूड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जूड़ या जाड़ा] जाड़ा लगकर चढ़नेवाला ज्वर या बुखार।

संज्ञा स्त्री. [हिं. जुड़ना] गड्डी।

जूत, जूता—संज्ञा पुं. [सं. युक्त, प्रा. जुत्त] पनही, उपानह।

मुहा.—जूता उठाना—(१) जूता मारने को तैयार होना। (२) हीन सेवा करना। (३) खुशामद करना। जूता उछलना (चलना)—मारपीट या झगड़ा होना। जूता खाना—(१) जूतों की मार खाना। (२) भली-बुरी बातें सुनकर अपमानित होना। जूता गाँठना—नीच काम करना। जूता चाटना—खुशामद करना। जूता जड़ना (देना, मारना, लगाना)—(१) जूता मारना। (२) जली-कटी, मुँहतोड़, चुभती हुई या अपमान करनेवाली बात करना। जूता पड़ना (लगना)—(१) जूते की मार पड़ना। (२) मुँहतोड़ जवाब मिलना। (३) हानि होना। जूता बरसना (बैठना)—जूते की मार पड़ना। जूते का आदमी—मार खाकर या फटकार सुनकर ही ठीक काम करनेवाला।

जूताखोर, जूतीखोर—वि. [हिं. जूता + फ़ा. ख़ोर] (१) जो जूते पड़ने पर ठीक रहे। (२) निर्लज्ज, बेहया।

जूति—संज्ञा पुं. [सं.] वेग, तेजी।

जूतियाँ—संज्ञा स्त्री. बहु. [हिं. जूती] (१) स्त्रियों के जूते। (२) छोटे-हल्के जूते।

मुहा.—जूतियाँ उठाना—(१) नीच सेवा करना। (२) खुशामद करना। जूतियाँ खाना—(१) जूतों से पिटना। (२) भली-बुरी सुनना। (३) अपमानित होना। जूतियाँ गाँठना—नीच काम करना। जूतियाँ चटकाते फिरना—(१) निर्धनता के मारे घूमना। (२) बेकार मारे-मारे घूमना। जूतियाँ पड़ना—(१) जूतों की मार पड़ना। (२) अपमानित होना। जूतियाँ दबाकर भागना—चुपचाप चले जाना, खिसकना। जूतियाँ मारना (लगाना)—(१) जूते मारना। (२) कड़ी बात कहना। (३) अपमानित करना। जूतियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीधी करना—(१) तुच्छ सेवा करना। (२) बहुत खुशामद करना।

जूती—संज्ञा स्त्री. [हिं. जूता] (१) स्त्री का जूता। (२) छोटा-हलका जूता।

मुहा.—जूती की नोक पर मारना—कुछ न समझना, कुछ परवाह न करना। जूती की नोक से—बला से, सींगे से, कुछ परवाह नहीं। जूती के बराबर—बहुत हीन या तुच्छ। जूती के बराबर होना—बहुत तुच्छ होना। जूती चाटना—बहुत खुशामद करना। जूती देना—जूता मारना। जूती पर जूती चढ़ना—कहीं यात्रा का शकुन होना। जूती पर मारना—परवाह न करना। जूती पर रखकर रोटी देना—अपमान के साथ खिलाना-पिलाना। जूती से—कुछ परवाह नहीं।

जूतीखोर—वि. [हिं. जूती + फ़ा. ख़ोर] (१) जो मार या ताड़ना से ही ठीक रहे। (२) निर्लज्ज, बेहया।

जूतीछुपाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जूती + छुपाना] (१) विवाह में वर के जूते छिपाने की रसम। (२) इस रसम का नेग।

जूतीपैजार—संज्ञा स्त्री. [हिं. जूती + फ़ा. पैजार] (१) मार-पीट, धौल-धप्पा। (२) लड़ाई-झगड़ा।

जूथ—संज्ञा पुं. [सं. यूथ] समूह। उ.—(क) नरक-कूपनि जाइ जमपुर परयौ बार अनेक। थके किंकर-जूथ जम के, टरत टारैं न नेक—१-१०६। (ख) जो बनिता-सुत-जूथ सकेले, हय-गय-बिभव घनेरौ। सबै समर्पौ सूर स्याम कौं, यह साँचौ मत मेरौ—१-२६६।

जूथकर—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक तरह का फूल।

जूथनि—संज्ञा पुं. [सं. यूथ+हिं. नि (प्रत्य.)] समूह या झुंड पर। उ.—ज्यौं कंदर तैं निकसि सिंह, झुकि, गज-जूथनि पर धाए—१-२७४।

जूथपति—संज्ञा पुं. [सं. यूथपति] सेनानायक, सेनापति। उ.—जाके दल सुग्रीव सुमंत्री, प्रबल जूथपति भारी—६-११५।

जूथिका—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक तरह का फूल।

जून—संज्ञा पुं. [सं. द्युवन्=सूर्य] समय, बेला, काल। उ.—गो-सुत गोठ बँधन सब लागे, गो-दोहन की जून टरी—४०४।

संज्ञा पुं. [सं. जूर्ण=एक तृण] तिनका।

वि. [हिं. जीर्ण] पुराना, घिसा-घिसाया।

जूना—संज्ञा पुं. [सं. जूर्ण=तिनका] (१) घास-फूस की बटी हुई रस्सी। (२) घास-फूस या बाँधों का लच्छा या पूला जो बरतत माँजने के काम आता है।

जूप—संज्ञा पुं. [सं. द्यूत, प्रा. जूअ या जूव] (१) जुआ, द्यूत। (२) विवाह की एक रीति जिसमें वर-बधू परस्पर जुआ खेलते हैं। उ.—खेलत जूप सकल जुवतिनि मैं, हारे रघुपति, जिती जनक की—९-२५।

संज्ञा पुं. [सं. यूप] (१) यज्ञ का बलि-पशु बाँधने का खम्भा। (२) खंभा, यूप। उ.—प्रति प्रति गृह तोरन ध्वजा धूप। सब तजे कलस अरु कदलि जूप।

जूमना—क्रि. अ. [अ. जमा] इकट्ठा होना, जुड़ना।

जूर, जूरु—संज्ञा पुं. [हिं. जुरना] जोड़, संचय।

जूरना—क्रि. स. [हिं. जोड़ना] जोड़ना।

जूरा—संज्ञा पुं. [हिं. जूड़ा] स्त्रियों की चोटी।

जूरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जुरना] (१) छोटा पूला, जुट्टी। (२) नये कल्ले। (३) एक पकवान। (४) एक पौधा।

ज़ूर्णि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) वेग। (२) देह। (३) क्रोध।

वि.—(१) तेज। (२) गला हुआ। (३) स्तुति या प्रशंसा करने में कुशल।

जूवैं—संज्ञा पुं. सवि. [सं. द्यूत, पा. जूत, हिं. जुआ] जुए में, द्यूत में। उ.—दूतनि कह्यौ बड़ौ यह पापी। इन तौ पाप किए हैं धापी। बिप्र जन्म इन जूवैं हारयौ। काहे तैं तुम हमैं निवारयौ—६-४।

जूर्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] ज्वर, बुखार।

जूष, जूस—संज्ञा पुं. [सं. जूष] (१) झोल। (२) उबाली हुई दाल का पानी।

मुहा.—जूस देना—उबली दाल का पानी देना।

संज्ञा पुं. [फ़ा. जुफ़्त। सं. युक्त] सम संख्या।

जूह—संज्ञा पुं. [सं. यूथ, प्रा. जूह] झुंड, समूह।

जूहर—संज्ञा पुं. [फ़ा. जौहर] राजपूत स्त्रियों का युद्ध-संकट में चिता में जीवित जल जाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जूही—संज्ञा स्त्री. [सं. यूथी] एक पौधा।
संज्ञा स्त्री. [सं. यूक] जुई नामक कीड़ा।

जृंभ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जँभाई। (२) आलस्य।

जृंभक—वि. [सं.] जँभाई लेनेवाला।
संज्ञा पुं.—(१) एक रुद्र-गण। (२) एक अभिमंत्रित अस्त्र जो शत्रुओं को शिथिल कर देता था। ताड़का-संहार के पश्चात् विश्वामित्र ने अग्नि से प्राप्त यह अस्त्र श्रीराम को दिया था।

जृंभण—संज्ञा पुं. [सं.] जँभाने की क्रिया।

जृंभमान—वि. [सं.] (१) जँभाई लेता हुआ। (२) सुस्त, आलसी, शिथिल (३) प्रकाशमान।

जृंभा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) जँभाई। (२) एक शक्ति।

जृंभिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) आलस्य। (२) जँभाई।

जृंभित—वि. [सं.] (१) चेष्टित। (२) स्फुटित।
संज्ञा पुं. [सं.] (१) रंभा। (२) स्त्रियों की इच्छा।

जेंइ—क्रि. अ. [हिं. जेंवना] जीमकर, भोजन करके। उ.—जेंवत अति रुचि पावहीं, परुसति माता हेत। जेंइ उठि अँचमन लियौ, दुहुँ कर बीरा देत—४३७।

जेंगना—संज्ञा पुं. [हिं. जुगनूँ] जुगनूँ।

जेंगरा—संज्ञा पुं. [देश.] अनाज के शेष डंठल।

जेंना—क्रि. स. [हिं. जेंवना] भोजन करना।

जेंवत—क्रि. स. [हिं. जेंवना] भोजन करते हैं, खाते हैं। उ.—(क) लै लै अधर-परस करि जेंवत, देखत फूल्यौ मात हियौ—१०-१६८। (ख) सुठि सरस जलेबी बोरी। जिहिं जेंवत रुचि नहिं थोरी—१०-१८३। (ग) जेंवत कान्ह नंद इकठौरे—१०-२२४। (घ) जेंवत अति रुचि पावहीं, परुसनि माता हेत—४३७।

जेंवन—संज्ञा पुं. [हिं. जीमना] (१) भोज, ज्योनार। (२) भोजन करना। (३) रसोई, भोजन। उ.—(क) टेरत बड़ी बार भई मोकौं, नहिं पावत घनस्याम तमालहिं। सिध जेंवन सिरात, नंद बैठे, ल्यावहु बोलि कान्ह तत्कालहिं—१०-२३६। (ख) जेंवन करन चली जब भीतर—५६५।
क्रि. स.—जीमना, खाना, भोजन करना।
प्र.—जेंवन लागे—खाने लगे। उ.—बैठे संग नंद बाबा के चारों भैया जेंवन लागे—सारा. १६५।

जेंवना—क्रि. स. [सं. जेमन] भोजन करना।
संज्ञा पुं.—खाने का पदार्थ, भोजन।

जेंवनार—संज्ञा स्त्री. [हिं. जेवनार] भोज, दावत।

जेंवरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. जेवरी] रस्सी। उ.—प्रेत-प्रेत तेरौ नाम परयौ, जब जेंवरि बाँधि निकारयौ—१-३३६।

जेंवहु—क्रि. स. [हिं. जेंवना] जीमो, भोजन करो, खाओ। उ.—(क) लुचुई लपसी, सद्य जलेबी, सोइ जेंवहु जो लगै पियारी—१०-२२७। (ख) बेसन मिलै सरस मैदा सौं, अति कोमल पूरी है भारी। जेंवहु स्याम मोहिं सुख दीजै, तातैं करी तुम्हैं ये प्यारी—१०-२४१।

जेंवाना—क्रि. स. [हिं. जेंवना] भोजन कराना।

जेंवावत—क्रि. स. [हिं. जिमाना] भोजन कराते हैं। उ.—मधु मेवा पकवान मिठाई अपने हाथ जेंवावत—सारा.—१६५।

जेंवौ—क्रि. स. [हिं. जीमना] जीमो, भोजन करो। उ.—फेनी, सेव, अँदरसे प्यारे। लै आवौं जेंवौ मेरे बारे—३६६।

जे—सर्व. [सं. ये] संबंधवाचक सर्वनाम 'जो' का बहुवचन, जो लोग। उ.—सूरदास भगवंत भजत जे, तिनकी लीक चहूँ जुग खाँची—१-१८।

जेइ, जेउ, जेऊ—सर्व. [हिं. जो] (१) जो, जो लोग। उ.—अहो नाथ जेइ जेइ सरन आए तेइ तेइ भए पावन—१०-२५१। (२) जो भी।

जेठ—संज्ञा स्त्री. [सं. यूथ] (१) समूह। (२) तह, गड्डी। (३) गोद, कोरा। (४) बरतनों का ढेर।
संज्ञा पुं. [सं. ज्येष्ठ] (१) बैसाख के बाद का महीना। (२) पति का बड़ा भाई।
वि.—(१) बड़ा, अग्रज। (२) श्रेष्ठ।

जेठरा—वि. [हिं. जेठ] बड़ा, अग्रज।

जेठरैयत—संज्ञा पुं. [हिं. जेठ+अ. रैयत] मुखिया।

जेठवा—संज्ञा पुं. [हिं. जेठ] जेठ मास की कपास।

जेठा—वि. [सं. ज्येष्ठ] अग्रज, बड़ा।

जेठाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जेठ] बड़प्पन, जेठापन।

जेठानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जेठ] जेठ की स्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेठी—वि. [हिं. जेठ+ई (प्रत्य.)] जेठ-मास संबंधी।
संज्ञा स्त्री.—जेठ मास में तैयार कपास।
संज्ञा स्त्री. [हिं. जेठ = बड़ा] बड़ी लड़की। उ.—जमुना जस की रासि चहूँ जग जम-जेठी जग की महतारी—१० उ. ४२।

जेठुआ—वि. [हिं. जेठी] जेठ मास संबंधी।

जेठौत, जेठौता—संज्ञा पुं. [हिं. जेठ+पूत] जेठ-जेठानी का पुत्र।

जेठौती—संज्ञा स्त्री. [हिं. जेठौता] जेठ की पुत्री।

जेतक—वि. [हिं. जेते] जितने (संख्यावाचक)। उ.—जेतक सस्त्र सो किए प्रहार। सो करि लिए असुर आहार—६-५।

जेतवार, जेतवारु—वि. [हिं. जीत+वार] विजयी।

जेतव्य—वि. [सं.] जो जीता जा सके।

जेता—वि. [सं. जेतृ] जीतनेवाला, विजयी।
संज्ञा पुं—विष्णु।
वि. [हिं. जितना] जितना, जिस कदर।

जेतार—वि. [हिं. जेता] विजय पानेवाला।

जेतिक—क्रि. वि. [सं. यः] जितना, जिस मात्रा में, जिस संख्या में। उ.—जेतिक अधम उधारे प्रभु तुम, तिनकी गति मैं नापी—१-१४०।

जेती—वि. स्त्री. [हिं. जेते] जितनी (संख्यावाचक)। उ.—चौदह सहस किन्नरी जेती, सब दासी हैं तेरी—६-७६।
मुहा.—जेती की तेती—जैसी की तैसी, पूर्ववत्, बिना लाभ या वृद्धि के। उ.—प्रभु जू, यौं कीन्ही हम खेती। बंजर भूमि, गाउँ हर जोतें, अरु जेती की तेती—१-१८५।

जेते—वि. [सं. यः, यस्] जितने। उ.—इहिं विधि इहिं डहके सबै, जल-थल-नभ जिय जेते (हो)—१-४४।

जेतो, जेतौ—क्रि. वि. [सं. यः, यस्] जितना, जिस कदर। उ.—(क) कोउ कहैं दैहैं दाम, नृपति जेतौ धन चाहैं—५८६। (ख) हमैं तुम्हैं अंतर है जेतो जानत हैं बनवारी—३६३८।

जेना—क्रि. स. [हिं. जेंवना] भोजन करना, खाना।

जेन्य—वि. [सं.] (१) ऊँचे वंश में उत्पन्न। (२) जो बनावटी न हो, सच्चा, असला।

जेन्यावसु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) इंद्र। (२) अग्नि।

जेब—संज्ञा पुं. [फ़ा.] खीसा, खरीता।
संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़ेब] शोभा, सुंदरता।

जेबदार—वि. [फ़ा ज़ेब+दार] सुंदर।

जेबी—वि. [हिं. जेब] (१) जो जेब में आ सके। (२) बहुत छोटा।

जेमन—संज्ञा पुं. [सं.] भोजन का कार्य।

जेय—वि. [सं.] जो जीता जा सके।

जेर—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) गर्भगत बालक की आँवल या झिल्ली। (२) एक पेड़।
वि. [फ़ा. ज़ेर] (१) परास्त, पराजित। उ.—मनहुँ मदन जग जीति जेर करि राख्यौ धनुष उतारि—१६८४। (२) दिक, परेशान, सताया हुआ।

जेरना—क्रि. स. [हिं. ज़ेर] तंग या पीड़ित करना।

जेरपाई—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] स्त्री की जूती।

जेरबार—वि. [फ़ा. ज़ेरबार] (१) तंग, दुखी, परेशान। (२) जिसकी बहुत हानि हो गयी हो।

जेरबारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जेरबार] (१) तंगी, कष्ट, परेशानी, हैरानी। (२) हानि, क्षति।

जेरि, जेरिया, जेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जेर] नवजात शिशु की आँवल।
संज्ञा स्त्री.—(१) ग्वालों या चरवाहों की साथ रहनेवाली लाठी। उ.—(क) उतहिं सखी कर जेरी लीन्हे गारी देहिं सकुच तोरी की। इतहिं सखा कर बाँस लिये बिच मारु मची झोरा झोरी की—२४०५। (ख) इत लिए कनक लकुटिया नागरि उत जेरी धरे ग्वार—२४३७। (२) खेती का एक औजार।

जेल—संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़ेर] (१) जंजाल, झंझट, बंधन। (२) बंदीगृह।

जेवड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जेवरी] रस्सी।

जेवन—संज्ञा स्त्री. [हिं. जेंवना] भोजन, रसोई। उ.—देखहु जाइ कहा जेवन कियौ रोहिनि तुरत पठाई—५११।

जेवना—क्रि. स. [हिं. जीमना] भोजन करना, खाना।

जेवनार—संज्ञा स्त्री. [हिं. जेवना] (१) रसोई, भोजन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—(क) भूखौ भयौ आजु मरौ बारौ। ....। पहिलेहिं रोहिनि सौं कहि राख्यौ, तुरत करहु जेवनार—१०-३६५। (ख) रोहिंनि करि जेव-नार, स्याम-बलराम बुलाए—४३७। (२) **सह-भोज, दावत।**

जेवर—संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़ेवर] **गहना, आभूषण।**

संज्ञा पुं. [देश.] **जघी नामक पक्षी।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. जेवरी] **रस्सी।**

जेवरा—संज्ञा पुं. [हिं. ज्योरा] **फसल तैयार होने पर नाई, चमार आदि को दिया जानेवाला अनाज।**

जेवरी—संज्ञा स्त्री. [सं. जीवा] **रस्सी।** उ.—सो हरि प्रेम जेवरी बाँध्यौ जननि साँट लै डाँटै।

जेवहु—क्रि. स. [हिं. जेवना] **भोजन करो।** उ.—कहाँ माखन रोटी कहाँ जमुमति जेवहु कहि कहि प्रेम—२६१५।

जेष्ठ—संज्ञा पुं. [सं. ज्येष्ठ] (१) **जेठ का महीना।** (२) **पति का बड़ा भाई, जेठ।**

वि.—(१) **अग्रज, जेठा, बड़ा।** (२) **श्रेष्ठ।**

जेष्ठा—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्येष्ठा] (१) **एक नक्षत्र।** (२) **बीच की उँगली।** (३) **गंगा।** (४) **अलक्ष्मी।**

वि.—(१) **बड़ी, जेठी।** (२) **श्रेष्ठ (स्त्री)।**

जेह—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़िह। सं. ज्या] (१) **धनुष की डोरी, ज्या, चिल्ला।** (२) **दीवार के निचले भाग का मोटा पलस्तर।**

जेहड़—संज्ञा स्त्री. [हिं. जेट+घट] **तले-ऊपर रखे हुए पानी के कई घड़े।**

जेहन—संज्ञा पुं. [अ. ज़ेहन] **बुद्धि, धारणाशक्ति।**

जेहर, जेहरि, जेहरी—संज्ञा स्त्री.—**पैर का पाजेब नामक घुंघरूदार गहना।** उ.—(क) पग जेहरि बिछियन की झमकनि चलत परस्पर बाजत। (ख) पग जेहरि जंजीरनि जकर्यौ। (ग) पगनि जेहरि लाल लहँगा अंग पचरंग सारि—पृ. ३४४ (२६)। (घ) जुगल जंघ जेहरि जराव की राजति परम उदार।

जेहल—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. जहल] **हठ, जिद।**

जेहली—वि. [हिं. जेलह] **हठी, जिद्दी।**

जेहि—सर्व. [सं. यस] **जिसको, जिसका, जिसकी।** उ.—जेहिं माया बिरंचि सिव मोहैं, वहै बानि करि चीन्हौ—१०-४।

जैं—अव्य. [हिं. जनि] **मत, नहीं, न।**

जैंता—संज्ञा पुं. [सं. जयंती] **जैत का पेड़।**

जै—संज्ञा स्त्री. [सं. जय] **जय।** उ.—जै जै रघुनाथ कहत, बंधन सब टूटे—६-६७।

वि. [सं. यावत्, प्रा. जाव] **जितने।**

जैऐ—क्रि. अ. [हिं. जाना] **जाइए, गमन कीजिए।** उ.—गुरु-पितु गृह बिनु बोलेहु जैऐ—४-५।

जैकरी—संज्ञा पुं. [हिं. जयकरी] **चौपाई नामक छंद।**

जैकार—संज्ञा स्त्री. [हिं. जयकार] **जय-घोषणा।**

जैगीषव्य—संज्ञा पुं. [सं.] **एक योगशास्त्रज्ञ मुनि।**

जैजैकार—संज्ञा स्त्री. [सं. जयजयकार] **जयजयकार, 'जय हो', 'जय हो' कहना।** उ.—जैजैकार, दसौं दिसि भयौ। असुर देह तजि, हरि-पुर गयौ—७-२।

जैजैवंती—संज्ञा स्त्री. [सं. जयजयवंती] **एक रागिनी।**

जैढक—संज्ञा पुं. [सं. जय + ढका] **बड़ा ढोल।**

जैत—संज्ञा स्त्री. [सं. जयति] **विजय, जीत।**

संज्ञा पुं. [अ.] **जैतून नामक वृक्ष।**

संज्ञा पुं. [सं. जयंती] **एक पेड़।**

जैतपत्र—संज्ञा पुं. [सं. जयति + पत्र] **विजय पत्र।**

जैतवार—संज्ञा पुं. [हिं. जैत+वार] **विजयी, विजेता।**

जैतश्री—संज्ञा स्त्री. [सं. जयतिश्री] **एक रागिनी।**

जैति—अव्य. [सं. जयति] **जय हो।** उ.—मनौ वेद बंदीजन सूत-वृंद मागध-गन, बिरद बदत जै जै जै जैति कैटभारे—१०-२०५।

जैती—संज्ञा स्त्री. [सं. जयंतिका] **एक तरह की घास।**

जैतून—संज्ञा पुं. [अ.] **एक सदाबहार पेड़।**

जैत्र—संज्ञा पुं. [सं] (१) **विजयी।** (२) **पारा।**

जैत्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जैत का पेड़।**

जैन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भारत का एक प्रसिद्ध धर्म।** (२) **जैन धर्म का अनुयायी, जैनी।**

जैनी—संज्ञा पुं. [हिं. जैन] **जैन मतावलंबी।** उ.—जा परसैं जीतैं जम सैनी, जमन, कपालिक जैनी—६-११।

जैनु—संज्ञा पुं. [हिं. जेंवना] **भोजन, अहार।** उ.—इहाँ रहौ जहँ जूठनि पावै ब्रजवासी के जैंनु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैपत्र—संज्ञा पुं. [हिं. जयपत्र] **विजयपत्र।**

जैबे—क्रि. अ. [हिं. जाना] **जाना में।** उ.—बोलत नंद बार बार मुख देखें तुव कुमार गाइन भई बड़ी बार बृंदाबन जैबे—२३२०।

जैबैं—क्रि. अ. [हिं. जाना] **जाने के लिए, गमन के हेतु, प्रस्थान करने को।** उ.—पग दिए तीरथ जैबैं काज। तिन सौं चलि नित करै अकाज—४-१२।

जैबो, जैबौ—क्रि. अ. [हिं. जाना] **जायँ, प्रस्थान करें।** उ.—बनत नहीं जमुना कौ ऐबौ। सुंदर स्याम घाट पर ठाढ़े, कहौ कौन बिधि जैबौ—७७६।

जैमंगल—संज्ञा पुं. [सं. जयमंगल] (१) **एक वृक्ष।** (२) **राजा की सवारी का हाथी।**

जैमाल, जैमाला—संज्ञा स्त्री. [हिं. जयमाला] (१) **विजयमाल।** (२) **वधू द्वारा वर को पहनायी गयी माला, जयमाला।**

जैमिनि—संज्ञा पुं. [सं.] **व्यास जी के एक शिष्य।**

जैयतु—क्रि. अ. [हिं. जाना] **जाओगे, जाते हो।** उ.—रोक्यौ भवन-द्वार ब्रज-सुंदरि, नूपुर मूँदि अचानक ही कै। अब कैसैं जैयतु अपनैं बल, भाजन भाँजि, दूध-दधि पी कै—१०.२८७।

जैयद—वि. [अ. जदे = दादा] (१) **बहुत।** (२) **बहुत धनी।**

जैयहु—क्रि. अ. [हिं. जाना] **जाना, प्रस्थान करना।** उ.—खेलहु जाइ घोष के भीतर, दूर कहूँ जनि जैयहु बारे—४२३।

जैया—क्रि. स. [हिं. जनन] **उत्पन्न किया, जन्म दिया, जाया।** उ.—किंतिक बात यह बका बिदारयौ, धनि जसुमति जिनि जैया—४२८।

क्रि. अ. [हिं. जाना] **जाता हूँ।**

प्र.—बलि जैया—**बलि जाता हूँ, निछावर होता हूँ।** उ.—सूरदास तिन प्रभु चरननि की, बलि बलि मैं बलि जैया—१०-१३१। दिन जैया—**दिन जाते या बीतते हैं।** उ.—भले बुरे को मात-पिता तन हरषत ही दिन जैया—११४०।

जैयै—क्रि. अ. [हिं. जाना] **जाइए, प्रस्थान कीजिए।** उ.—(क) जज्ञदान करि सुरपुर जैयै। तहाँ जाइ क सुख बहु पैयै—१-२९०। (ख) गौतम रूप बिना जो जैये। ताके साप अग्नि सौं तैयै—६-८।

जैल—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **दामन।** (२) **निचला भाग या स्थान।** (३) **पंक्ति, समूह।** (४) **इलाका।**

जैव—वि. [सं.] **जीव-संबंधी।**

जैसा—वि. [सं. यादृश, प्रा. जारिस, पैशा. जइस्सो] (१) **जिस प्रकार (रूप, रंग, आकार या गुण) का।**

मुहा.—जैसा करना वैसा भरना, जैसा बोना वैसा काटना—**जैसा उचित अनुचित कर्म होगा, वैसा ही उचित-अनुचित फल मिलेगा।** जैसा चाहिए—**जैसा उचित या ठीक हो।**

(२) **जितना, जिस परिमाण या मात्रा का।** (३) **समान, बराबर, सदृश।**

क्रि. वि.—**जितना, जिस परिमाण या मात्रा में।**

जैसी—वि. स्त्री. [हिं. पुं. जैसा] **जिस प्रकार की।**

जैसे, जैसैं, जैसो, जैसौ—वि. [हिं. जैसा] **जिस प्रकार का।**

मुहा.—जैसे का तैसा—**ज्यों का त्यों, जैसा था वैसे ही।** जैसे को तैसा—(१) **जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करनेवाला।** (२) **एक ही व्यवहार या स्वभाव का।**

क्रि. वि.—**जिस प्रकार या ढंग से।**

मुहा.—जैसे जैसे—**ज्यों-ज्यों।** जैसे तैसे—**बहुत यत्न करके, बड़ी कठिनता से।** उ.—(क) कछु दिन जैसैं तैसैं खोऊँ दूरि करौं पुनि डर कौं—७३८। (ख) ठाढ़ी हीं जैसैं-तैसैं झुकि परी धरिनि तिहिं ऐन—७४६। जैसे बने (हो)—**जिस तरह हो सके।**

जैसोइ—वि. [हिं. जैसा + ही (प्रत्य.)] **जैसा ही, जैसा भी।**

मुहा.—जैसोइ बोइयै तैसोइ लुनिए—**जैसा उचित-अनुचित कर्म करोगे, वैसा ही उचित-अनुचित फल मिलेगा।** उ.—जैसोइ बोइयै, तैसोइ लुनिए, कर्मन भोग अभागे—१-६१।

जैहैं—क्रि. अ. बहु. [हिं. जाना] **जायँगे।** उ.—ता दिन तेरे तन-तरुवर के सबै पात झरि जैहैं—१-८६।

जैहै—क्रि. अ. एक. [हिं. जाना] **जायगा।** उ.—जा दिन मन पंछी उड़ जैहै—१-८६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैहौं—क्रि. अ. [हिं. जाना] जाऊँगा। उ.—लछिमन, सिया समेत सूर की, सब सुख सहित अजोध्या जैहौं—६-१५७।

जैहौ—क्रि. अ. [हिं. जाना] जाओगे। उ.—जज्ञ कियैं गंध्रबपुर जैहौ—६-२।

जौं—क्रि. वि. [हिं. ज्यों] ज्यों, जैसे, जिस भाँति।

जोंक—संज्ञा स्त्री. [सं. जलौका] (१) पानी का एक कीड़ा। (२) वह व्यक्ति जो काम निकालने के लिए हर समय पीछे पड़ा रहे। (३) चीनी साफ करने का छनना।

जोंकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोंक] (१) जोंक पेट में पहुँच जाने से होनेवाली जलन या पीड़ा। (२) तख्ते जोड़ने का काँटा। (३) पानी का एक लाल कीड़ा।

जों तों—क्रि. वि. [हिं. ज्यों त्यों] ज्यों-त्यों।

मुहा.—जों तों करके—बड़ी मुसीबत से।

जोंदरा, जोंधरा—संज्ञा पुं. [सं. जूर्ण] बड़ी ज्वार।

जोंदरी, जोंधरी—संज्ञा स्त्री. [सं. जूर्ण] छोटी ज्वार।

जोंधैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. जुन्हैया] चाँदनी, चंद्रिका।

जो—सर्व. [सं. यः] एक संबंध-वाचक सर्वनाम। उ.—जो जानैं सो पावै—१-२।

अव्य. [सं. यद्] यदि, अगर। उ.—अब जिनि गहर करो हो मोहन जो चाहत हो ज्यायौ—३४८०।

जोअना—क्रि. स. [हिं. जोवना] (१) देखना, निहारना। (२) ढूँढ़ना, तलाश करना।

जोइ—संज्ञा स्त्री. [सं. जाया] पत्नी, भार्या। उ.—बिरथ अरु बिभाग हू को पतित जो पति होइ। जऊ मूरख होइ रोगी तजै नाहीं जोइ।

सर्व. [हिं. जो] जो (संबंधवाचक)।

मुहा.—जोइ-सोइ-यह वह, इधर उधर की। उ.—जोइ सोइ मुखहिं कहत मरन निज न जानै—६-६७।

क्रि. स. [हिं. जोवना] (१) देखकर। उ.—हरि जू, तुमतैं कहा न होइ ? बोलै गुंग, पंगु गिरि लंघै अरु आवै अंधौ जग जोइ—१-६५। (ख) भयो सोच नृप-चित यह जोइ—१-२८६। (२) ध्यान देकर, विचार करके। (२) ताहि कछु यह बहुत नाहीं हृदय देखौ जोइ—२६४२।

जोइतो—क्रि. स. [हिं. जोवना] देखकर, प्रतीक्षा करके।

मुहा.—मग जोइतो—प्रतीक्षा करते-करते, रास्ता देखते-देखते। उ.—सुन री सखी सँदेस दुर्लभ भए नैन थके मग जोइतो—१० उ. ८७।

जोइसी—संज्ञा पुं. [सं. ज्योतिषी] ज्योतिषी।

जोई—क्रि. स. [हिं. जोवना] (१) देखने लगे, निहारने लगे। उ.—उमा कौं छाँड़ि अरु डारि मृग चर्म कौं, जाइकै निकट रहे रुद्र जोई—८-१०।

प्र.—आवै जोई—देख आवे। उ.—बोलै गूँग पंगु गिरि लंघै अरु आवै अंधा जग जोई।

जोउ—सर्व. [हिं. जो] (संबंधवाचक) जो।

जोऊ—सर्व. सवि. [हिं. जो + ऊ] जो ही, जो भी।

जोए—क्रि. स. [हिं. जोहना] देखे, निहारे।

मुहा.—मुख जोए—मुँह ताका। उ.—तिलक बनाइ चले स्वामी ह्वै विषयनि के मुख जोए-१-५२।

जोक—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोंक] जोंक नामक कीड़ा।

जोख—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोखना] तौल, वजन।

जोखता—संज्ञा स्त्री. [सं. योषिता] स्त्री, लुगाई।

जोखना—क्रि. स. [सं. जुष = जाँचना] तौलना।

जोखम, जोखिम—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाक, झोको, जोखों](१)अनिष्ट या विपत्ति की आशंका या संभावना।

मुहा.—जोखिम उठाना (में पड़ना, सहना)—ऐसा काम करना जिसमें विपत्ति या अनिष्ट की आशंका हो। जान जोखिम होना—(१) जान मुसीबत में फँसना। (२) प्राण जाने का भय होना।

(२) धन-संपत्ति या जेवर आदि जिनके कारण विपत्ति आने की संभावना हो।

जोखा—संज्ञा पुं. [हिं. जोखना] लेखा, हिसाब।

संज्ञा स्त्री. [सं. योषा] पत्नी, लुगाई, भार्या।

जोखाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोखना] तौलने का काम, भाव या मजदूरी।

जोखिउँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोखिम] संकट, विपत्ति।

जोखिता—संज्ञा स्त्री. [सं. योषिता] स्त्री, औरत।

संज्ञा पुं. [हिं. जोगी] योगी या जोगीपन।

जोखिम—संज्ञा स्त्री. [हिं. झोंका] (१) संकट, विपत्ति। (२) संकट या विपत्ति का कारण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोखुआ, जोखुवा—संज्ञा पुं. [हिं. जोखना + उआ (प्रत्य.)] **तौलनेवाला, वजन करनेवाला।**

जोखों, जोखौं—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोखिम] **जोखिम।**

जोगंधर—संज्ञा पुं. [सं. योगंधर] **शत्रु के अस्त्र से बचने की एक युक्ति।**

जोग—संज्ञा पुं. [सं. योग] (१) **शुभ काल, शुभ घड़ी।** उ.—हरषीं सखी-सहेलरी हो, आनँद भयो सुभ जोग—१०-४०। (२) **चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन करने का विधान, चित्त की वृत्ति का निरोध।** उ.—आये जोग देन अबलनि को सुरभि-कंठ वृष जोत—३३६४।

अव्य. [सं. योग्य] **को, के निकट।**

वि.—(१) **उपयुक्त।** (२) **योग्य, समर्थ।** उ.—(क) पाँच बरस अरु कछुक दिननि कौ, कब भयौ चोरी जोग—१०-२६२। (ख) कबहिं गुपाल कंचुकी फारी कब भए ऐसे जोग—७७४। (३) **श्रेष्ठ।**

जोग-जुगुति—संज्ञा स्त्री. [सं. यौग+युक्ति] **योग की क्रिया, योग-विधान।** उ.—(क) जोग-जुगुति बिसरी सबै, काम-क्रोध-मद जागे (हो)—१-४४। (ख) जोग-जुगुति केहि काज हमारे जदपि महा सुखखानि।

जोगड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. जोग+ड़ा (प्रत्य.)] **बना हुआ, पाखंडी या धूर्त्त जोगी।**

जोगता—संज्ञा स्त्री. [सं. योग्यता] **योग्यता।**

जोगन, जोगनिया—संज्ञा स्त्री. [सं. योगिनी] (१) **योग-साधनेवाली, तपस्विनी** (२) **रण-पिशाचिनी।**

जोगमाया—संज्ञा स्त्री. [सं. योगमाया] (१) **भगवती जो विष्णु की माया है।** (२) **वह कन्या जो यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और जिसे कंस ने मार डाला था। विश्वास है कि वह भगवती का ही रूप थी।** उ.—पहुँचे जाइ महर-मंदिर मैं, मनहिं न संका कीनीं। देखी परी जोगमाया, वसुदेव गोद करि लीनी—१०-४।

जोगवना—क्रि. स. [सं. योग+अवना (प्रत्य.)] (१) **किसी वस्तु को सम्हालकर या सावधानी से रखना।** (२) **इकट्ठा या एकत्र करना।** (३) **आदर करना।** (४) **जाने देना, कुछ ख्याल न करना।** (५) **पूरा करना।**

जोगसाधन—संज्ञा पुं. [सं. योगसाधन] **तपस्या।**

जोगानल—संज्ञा स्त्री. [सं. योगानल] **योगबल से उत्पन्न की हुई आग।**

जोगिंद—संज्ञा पुं. [सं. योगींद्र] (१) **योगीराज।** (२) **शिव, महादेव।**

जोगिन, जोगिनि, जोगिनियाँ, जोगिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. योगिनी] (१) **योगिनी, तपस्विनी।** उ.—(क) कै रघुनाथ तज्यौ पन अपनौ, जोगिनि दसा गही—९-९१। (ख) भूमि अति डगमगी जोगिनी सुनि जगी, सहसफल सेस कौ सीस काँप्यौ—९-१६०। (२) **योगी की स्त्री।** (३) **रण-पिशाचिनी।** (४) **पिशाचिनी।** (५) **एक पौधा।**

जोगिनिया—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) **लाल ज्वार।** (२) **एक धान।**

जोगिया—वि. [हिं. जोगी] (१) **योगी या जोगी से संबंधित।** (२) **गेरू के रंग में रँगा हुआ, गेरुआ।**

जोगींद्र—संज्ञा पुं. [सं. योगींद्र] (१) **बड़ा योगी।** (२) **शिव, महादेव।**

जोगी—संज्ञा पुं. [सं. योगी] (१) **वह जो योग करता हो, योगी।** (२) **एक तरह के भिक्षुक।**

जोगीड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. योगी+ड़ा (प्रत्य.)] (१) **एक गाना।** (२) **गानेवाला जोगी।** (३) **गानेवाले जोगियों की मंडली।**

जोगीस्वर, जोगेस्वर—संज्ञा पुं. [सं. योगी, योग+ईश्वर] (१) **योग का अधिकारी, योग का ज्ञाता, सिद्ध योगी।** उ.—तासौं सुत निन्यानवे भए। भरतादिक सब हरि-रँग रए। तिनमैं नव नव-खँड-अधिकारी। नव जोगेस्वर ब्रह्म-बिचारी—५-२। (२) **श्रीकृष्ण।** (३) **महादेव, शिव।**

जोगोटा—वि. [हिं. जौगी] **योगी।**

जोग्य—वि. [सं. योग्य] (१) **समर्थ।** (२) **लायक।**

जोजन—संज्ञा पुं. [सं. योजन] (१) **दूरी की एक नाप जो किसी के मत से दो कोस, किसी के मत से चार कोस और किसी के मत से आठ कोस की होती है।** (२) **बहुत अधिक समय।**

जोजनगंधा—संज्ञा स्त्री. [सं. योजनगंधा] **व्यासजी की**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता और शांतनु की पत्नी सरस्वती। अपनी कौमार्यावस्था में ही पराशर मुनि की कामना पूरी करने पर सरस्वती के शरीर से आनेवाली मत्स्यगंध दूर हो गयी और सुगंध निकलने लगी। इसी से इसका नाम गंधवती या योजनगंधा पड़ा। उ.—जोजनगंधा काया करी।

जोट—संज्ञा पुं. [सं. योटक] (१) जोड़ा, जोड़ी। उ.—हंस के से जोट दोऊ असुर कियो निपात—२६२३। (२) साथी।

वि.—बराबरी का, मेल या टक्कर का।

जोटनि—संज्ञा पुं. [सं. योटक] जोड़ा, युग। उ.—देखि माई हरि जू की लोटनि। यह छवि निरखि रही नँदरानी, अँसुवा ढरि ढरि परत करोटनि। परसत आनन मनु रवि-कुंडल, अंबुज स्रवत सीप-सुत जोटनि—१०-१८७।

जोटा—संज्ञा पुं. [सं. योटक] (१) जोड़ा, बराबर की जोड़ी। उ.—(क) श्रीदामा गहि फेंट कह्यौ, हम-तुम इक जोटा। कहा भयौ जौ नंद बड़े, तुम तिनकैं ढोटा—५८६। (ख) एइ बसुदेव के दोउ ढोटा। गौर स्याम नट नील पीत पट कलहंसन के जोटा—२५८०। (२) टाट का दोहरा थैला।

जोटिंग—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव।

जोटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोट] (१) जोड़ी, युग्मक। उ.—(क) सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी—१०-१७५। (ख) सूरदास प्रभु जीवहु जुग जुग हरि हलधर की जोटी—४१८। (ग) नैन बिसाल, बदन अति सुंदर, देखत नीकी, छोटी। सूर महरि सबिता सौं बिनवति, भली स्याम की जोटी—७०२। (२) बराबर या जोड़ का साथी।

जोड़—संज्ञा पुं. [सं. योग] (१) जोड़ने की क्रिया। (२) योग का फल। (३) स्थान जहाँ टुकड़े टाँके या सिये गये हों।

मुहा.—जोड़ उखड़ना—(१) जोड़ ढीला हो जाना। (२) संबंध में कुछ भेद पड़ जाना।

(४) टुकड़ा जो जोड़ा जाय। (५) योग का चिह्न। (६) शरीर के दो अंगों का मिलन-स्थान, गाँठ।

मुहा.—जोड़ उखड़ना—शरीर के जोड़ों की हड्डी झटके आदि से हट जाना। जोड़ बैठना—हटी हुई हड्डी का अपने स्थान पर आना।

(७) मेल, मिलाप। (८) बराबरी, टक्कर। (९) एक ही तरह की दो चीजें, जोड़ा।

मुहा.—जोड़ बाँधना—कुश्ती के लिए बराबर के पहलवान छाँटना। (२) चौपड़ में दो गोटों को एक घर में रखना।

(१०) एक ही से स्वभाव-गुणवाला। (११) पूरी पोशाक। (१२) किसी वस्तु के कुल आवश्यक अंग। (१३) जोड़ा। (१४) जोड़ने की क्रिया या भाव। (१५) छल, दाँव।

यौ.—जोड़-तोड़—(१) युक्ति, उपाय, तरकीब। (२) दाँव-पेच, छल-कपट।

जोड़ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोड़ + ती (प्रत्य.)] योग, जोड़।

जोड़न—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोड़] दही का जामन।

जोड़ना—क्रि. स. [हिं. जोड़ + बाँधना, या सं. युक्त, प्रा. जुह] (१) दो चीजों को सी या चिपकाकर एक करना। (२) टूटी चीज को मिलाकर एक करना। (३) इकट्ठा करना। (४) स्थापित करना। (५) योगफल निकालना। (६) वर्णन करना। (७) जलाना, बलाना। (८) संबंध स्थापित करना। (९) गाड़ी में पशु जोतना।

जोड़ला, जोड़वाँ—वि. [हिं. जोड़ा+ला, वाँ (प्रत्य.)] साथ जन्मे दो या अधिक बच्चे, यमज।

जोड़वाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जुड़वाना] जुड़वाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोड़वाना—क्रि. स. [हिं. जुड़ाना] जोड़ने में लगाना।

जोड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. जोड़ना] (१) एक सी दो चीजें। (२) दोनों पैरों के जूते। (३) एक साथ पहने जाने-वाले कपड़े।

यौ.—जोड़ा-जामा—पूरी पोशाक।

(४) स्त्री-पुरुष। (५) नर-मादा (पशु-पक्षी)। (६) जोड़।

जोड़ाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोड़ना+आई (प्रत्य.)] (१)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी। (२) दीवार की चुनाई।

जोड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोड़ा] (१) एक सी दो चीजें।

यौ.—जोड़ीदार—बराबर का, जोड़वाला।

(२) एक साथ पहने जानेवाले कपड़े। (३) स्त्री-पुरुष। (४) नर-मादा (पशु-पक्षी)। (५) दो घोड़ों या बैलों की गाड़ी। (६) दो मुगदर। (७) मँजीरा, ताल। (८) समान गुण-धर्मवाला व्यक्ति, जोड़।

जोत—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोतना] (१) गाड़ी में जोते जानेवाले पशुओं के गले की रस्सी या तस्मा। (२) तराजू की डोरी जिसमें पल्ले लटकते हैं। (३) एक असामी द्वारा जोती जानेवाली भूमि।

संज्ञा स्त्री. [सं. ज्योति] (१) प्रकाश। (२) लौ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. जोतना] जोतने योग्य भूमि।

जोतत—क्रि. स. [हिं. जोतना] जोतते (समय), जोतता है, जोतने में। उ.—लादत, जोतत लकुट बाजिहै, तब कहँ मूड़ दुरैहौ—१-३३०।

जोतदार—संज्ञा पुं. [हिं. जोत+दार] जोतने-बोने के लिए भूमि पानेवाला असामी।

जोतना—क्रि. स. [सं. योजन या युक्त, प्रा. जुत+ना] (१) गाड़ी-कोल्हू आदि चलाने के लिए पशु बाँधना। (२) पशु बाँधकर चलाने के लिए गाड़ी तैयार करना। (३) किसी को जबरदस्ती कोई काम करने में लगाना। (४) हल चलाना।

जोतनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोत या जोतना] जुते हुए जानवर के गले के निचले भाग में बँधी रस्सी।

जोतसी—संज्ञा पुं. [सं. ज्योतिषी] ज्योतिषी।

जोता—संज्ञा पुं. [हिं. जोतना] (१) जोतनी। (२) करघे की डोरी। (३) धरन। (४) खेती करने या हल जोतनेवाला।

जोताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोतना+आई (प्रत्य.)] जोतने का काम, भाव या मजदूरी।

जोति—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्योति] (१) प्रकाश, द्युति, कांति। (२) देवी-देवता के सामने का दीपक। (३) आग, लौ, लपट। उ.—निरखि पतंग बानि नहिं छाँड़त, जदपि जोति तनु तावत—१-२१०।

संज्ञा स्त्री. [हिं. जोतना] बोने योग्य भूमि।

जोतिख—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्योतिष] ज्योतिष विद्या।

जोतिखी—संज्ञा पुं. [सं. ज्योतिषी] ज्योतिषी।

जोतिलिंग—संज्ञा पुं. [सं. ज्योतिर्लिंग] शिव।

जोतिष, जोतिस—संज्ञा पुं. [सं. ज्योतिष] ज्योतिष विद्या जिससे अंतरिक्ष में स्थित ग्रहों, नक्षत्रों आदि की परस्पर दूरी, गति, परिमाण आदि का निश्चय किया जाता है। उ.—(क) धनि सो दिन, धनि सो घरी (हो), धनि सो जोतिष-जाग—१०-४०। (ख) लगन सोधि सब जोतिष गनिकै, चाहति तुमहिं सुनायौ—१०-८६।

जोतिषटोम—संज्ञा पुं. [सं. ज्योतिष्टोम] एक यज्ञ।

जोतिषी, जोतिसी—संज्ञा पुं. [सं. ज्योतिषी] ज्योतिष विद्या जाननेवाला व्यक्ति, ज्योतिषी। उ.—(नंद जू) आदि जोतिषी तुम्हरे घर कौ, पुत्र-जन्म सुनि आयौ—१०-८६।

जोतिहा—संज्ञा पुं. [हिं. जोतना] जोतने-बोनेवाला।

जोती—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्योति] (१) लौ। (२) प्रकाश।

संज्ञा स्त्री. [सं. जोति] देवी-देवता की जोत।

संज्ञा स्त्री. (१) रास, लगाम। (२) तराजू की डोरी।

जोते—क्रि. स. [हिं. जोतना] जोतते हैं, जोता। उ.—प्रभु जू, यौं कीन्ही हम खेती। बंजर भूमि गाउँ हर जोते, अरु जेती की तेती—१-१८५।

जोत्स्ना—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्योत्स्ना] चाँदनी।

जोधन—संज्ञा स्त्री. [सं. योग+धन] बैल के जुए में ऊपर-नीचे बँधी रस्सी।

संज्ञा पुं. बहु. [हिं. योद्धा] योद्धाओं ने या में।

जोध, जोधा, जोधार—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोधन] जुआठे की रस्सी।

संज्ञा पुं. [हिं. योद्धा] युद्ध करनेवाला, भट, वीर। उ.—(क) मानी हार बिमुख दुरजोधन जाके जोधा हे सौ भाई—१-२४। (ख) प्रगट कपाट बड़े दीने हैं, बहु जोधा रखवारे। (ग) सूर प्रभु सिंह-ध्वनि करत जोधा सकल जहाँ तहँ करन लागे लराई। (घ) मन हठ परयौ कमंध जोधा लौं हारेउ नाहीं जीति—३२३७।

जोन, जोनि—संज्ञा स्त्री. [सं. योनि] प्राणियों के विभाग,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातियाँ या वर्ग जिनकी संख्या चौरासी लाख कही गई है।

जोना—क्रि. स. [हिं. जोहना] देखना, निहारना।

जोनरी, जोन्हरी, जोन्हार—संज्ञा स्त्री. [देश.] ज्वार।

जोन्ह, जोन्हइया जोन्हाई—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्योत्स्ना] (१) चाँदनी, चाँद्रिका जुन्हाई। (२) चाँद, चंद्रमा।

जोप—संज्ञा पुं. [सं. यूप] यज्ञ का बलि-पशु बाँधने का खंभा।

जोपै—प्रत्य. [हिं. जो+पर] (१) यदि। (२) यद्यपि।

जोफ—संज्ञा पुं. [अ. जोफ़] (१) बुढ़ापा। (२) सुस्ती।

जोबन—संज्ञा पुं. [सं. यौवन] (१) युवापन, यौवन, युवा होने का भाव। उ.—(क) धन-जोबन-अभिमान अल्प जल कहैं क्रूर आपनी बोरी—१-३०३। (ख) त जोबन-मद तैं यह कीन्हो—६-१७४।

मुहा.—जोबन लूटना—यौवन का आनंद लेना।

(२) युवावस्था। उ.—बालापन खेलत ही खोयौ, जोबन जोरत दाम—१-५७। (३) युवक। (४) युवावस्था का रूप, सुंदरता।

मुहा—जोबन उतरना (खसना, ढलना) - युवावस्था समाप्त होना। जोबन खसै—युवावस्था समाप्त हो। उ.—तन-मन-धन जोबन खसै (रे) तऊ न मानै हार—१-३२५। जोबन चढ़ना—युवावस्था की सुंदरता आना।

(५) कुच, स्तन। (६) रौनक, बहार, सजावट। (७) एक फूल।

जोबना—क्रि. स. [हिं. जोवना] (१) देखना, निहारना। (२) ढूँढ़ना, तलाश करना।

संज्ञा पुं. [हिं. यौवन] (१) यौवन। (२) युवावस्था। (३) रूप, सुंदरता। (४) कुच, स्तन।

जोम—संज्ञा पुं. [अ.] (१) उमंग, चाव, उत्साह। (२) जोश, आवेश। (३) अहंकार, अभिमान।

जोय—संज्ञा स्त्री. [सं. जाया] पत्नी, जोरू।

सर्व पुं. [हिं. जो] जो, जिस।

क्रि. स. [हिं. जोवना] देखकर।

जोयना—क्रि. स. [हिं. जोवना] (१) देखना, निहारना। (२) ढूँढ़ना, तलाश करना।

क्रि. स. [हिं. जोति] जलाना, बलाना।

जोयसी—संज्ञा पुं. [हिं. ज्योतिषी] ज्योतिषी।

जोर—संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़ोर] (१) बल, शक्ति, ताकत। उ.—बिना जोर अपनी जाँघन के कैसे सुख कियौ चाहत—२२६१।

मुहा.—जोर करना—(१) बल या ताकत लगाना। (२) कोशिश करना। करि जोर—बल का प्रयोग करके। उ.—केस गहत कलेस पाऊँ करि दुसासन जोर—१-२५३। जोर टूटना—(१) बल घट जाना। (२) प्रभाव कम होना। जोर डालना (देना)—(१) (शरीर आदि का) बोझ या भार लादना। (२) बल या ताकत लगाना। (३) सिफारिश पहुँचाना। (किसी बात पर) जोर देना—बहुत आवश्यक या जरूरी बताकर ध्यान दिलाना। (किसी बात के लिए) जोर देना—किसी बात के लिए हठ, जिद या आग्रह से करना। जोर देकर कहना—बहुत दृढ़ता या आग्रह से कहना। जोर मारना (लगाना)—(१) बल या ताकत का प्रयोग करना। (२) बहुत कोशिश करना।

यौ.—जोर-जुलुम (जुल्म)—अत्याचार।

(२) प्रबलता, अधिकता, बढ़ती, तेजी। उ.—रोर कै जोर तैं सोर घरनी कियौ चल्यौ द्विज द्वारका-द्वार ठाढ़ौ—१०५।

मुहा.—जोर पकड़ना (बाँधना, में आना)—(१) प्रबल या तेज होना। (२) सहसा वृद्धि या उन्नति होना। जोर करना (मारना)—तेजी दिखलाना। जोरों पर होना—(१) प्रबल या तेज होना। (२) उन्नति या वृद्धि पर होना। (३) प्रभाव बढ़ा-चढ़ा या अधिक होना।

(३) वश, अधिकार, काबू।

मुहा.—जोर डालना—अधिकार के साथ आग्रह करना, प्रभावशाली व्यक्ति के द्वारा दबाव डालना, सिफारिश पहुँचाना।

(४) वेग, आवेश, झोंक, उत्तेजना।

मुहा.—जोर (जोरों) पर—वेग से, तेजी से।

(५) भरोसा, आसरा, सहारा।

मुहा.—(किसी मोहरे पर) जोर देना (पहुँचाना)—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(शतरंज के खेल में) सहायता के लिए दूसरा मोहरा रखना या चलना। (मोहरे का) जोर पर होना—सहायता के लिए दूसरा मोहरा होना। किसी के जोर पर कूदना—दूसरे के बल या भरोसे पर तेजी दिखाना या काम करना। बेजोर—असहाय, निर्बल, निराश्रय।

(६) परिश्रम, मेहनत। (७) कसरत, व्यायाम।

वि.—प्रबल, तेज, बढ़ा-चढ़ा, सशक्त। उ.—(क) गृह-दीपक, धन तेल, तूल तिय, सुत ज्वाला अति जोर—१-४६। (ख) कान्ह हलधर बीर दोऊ, भुजा बल अति जोर—१०-२४४।

संज्ञा पुं. [हिं. जोड़] (१) शरीर के अंगों का संधि-स्थान, जोड़। (२) वह स्थान जहाँ दो टुकड़े जोड़े गये हों। उ.—जरासंध कौ जोर उघारयौ, फारि कियौ द्वै फाँकौ—१-११३।

वि.—बराबरी के, जोड़ के, समान। उ.—देख सखि चारि चंद इक जोर—१६१६।

संज्ञा पुं. [हिं. जोड़ा] (१) जोड़ा, युग्म। उ.—चंद्र-मुख पर बैठे सुभग जोर चकोर—पृ. ३४२ (१८)। (२) जोड़े, समूह। उ.—देत छबि अति गिरत उर पर अंबु-कन के जोर—३५८।

क्रि. स. [हिं. जोड़ना] (१) जोड़कर, मिलाकर।

मुहा.—कर जोर—हाथ जोड़कर, विनय के साथ, नम्रतापूर्वक। उ.—ब्रज घर समझ लेहु महरैटी, कहत सूर कर जोर—१०-३२३।

(२) इकट्ठा करके, एकत्र करके। उ.—तब हरि जाय संग हलधर लै सब यादव दल जोरि-सारा. ७०१।

जोरई—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोड़] (१) एक ही में बँधे दो लंबे बाँस। (२) एक हरा कीड़ा।

क्रि. स. [हिं. जोड़ना] जोड़ता है।

जोरत—क्रि. स. [हिं. जोड़ना] (१) एकत्र करते हुए, संग्रह करने में, जोड़ते रहने में। उ.—बालापन खेलत हीं खोयौ, जोवन जोरत दाम—१-५७। (२) इकट्ठा या संग्रह करता है। उ.—फूले फूले फूल जोरत—२४५४ (१)। (३) संबंध स्थापित करता है। उ.—विमुखनि सौं रति जोरत दिन-प्रति, साधुनि सौं न कबहूँ पहिचानी—१-१४६।

जोरति—क्रि. स. [हिं. जोड़ना] संबंध स्थापित करती है। उ.—सूर स्याम को केतिक बात यह जननी जोरति नात—१००२।

जोरदार—वि. [फ़ा. ज़ोर + दार] (१) बली, सबल। (२) शक्ति, प्रभाव या असर से युक्त। (३) जोरदार।

जोरन—संज्ञा पुं. [हिं. जोड़न] दही का जामन।

जोरना—क्रि. स. [हिं. जोड़ना] जोड़ना।

क्रि. स. [हिं. जोतना] गाड़ी में जोतना।

जोरशोर—संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़ोर + शोर] बहुत जोर।

जोरहि—क्रि. स. [हिं. जोड़ना] अलग-अलग टुकड़ों को एक ही में जोड़ दे। उ.—देति असीस जरा देवी कों राहु-केतु किनि जोरहि—२८६२।

जोरहु—क्रि. स. [हिं. जोड़ना] मिलाओ, (एक-दूसरे से) सटाओ।

मुहा.—कर जोरहु-हाथ जोड़ो, बिनती या प्रार्थना करो। उ.—सूर स्याम देवनि कर जोरहु, कुसल रहै जिहिं गात—१०-२६१।

जोरा—संज्ञा पुं. [हिं. जोड़ा] (१) दो समान पदार्थ। (२) स्त्री-पुरुष। (३) नर-मादा। (४) जूते का जोड़ा।

संज्ञा पुं. [हिं. जोर] (१) बल। (२) अधिकार।

क्रि. स. [हिं. जोड़ना] लगाया, सटाया।

जोराजोरी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़ोर] जबरदस्ती।

क्रि. वि.—बलपूर्वक, जबरदस्ती करके।

जोरावर—वि. [फ़ा. ज़ोरावर] ताकतवर, जबरदस्त।

जोरावरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोरावर] जबरदस्ती।

जोरि—क्रि. स. [हिं. जोड़ना] (१) जोड़ कर, मिलाकर, सटाकर। उ.—(क) जोरि अंजलि मिले, छोरि तंदुल लए, इंद्र के बिभव तैं अधिक बाढ़ौ—१-५। (ख) मुख मुख जोरि बत्यावही सिसुताई ठानै—१०-७२। (ग)मुख मुख जोरि अलिंगन दीन्हो-१२१६।

मुहा.—कर (हाथ) जोरि—हाथ जोड़कर, विनय पूर्वक। उ.—(क) महाराज रघुबीर धीर कौं हाथ जोरि सिर नायौ—९-१५६। (ख) जानि मैं यह नहीं कीन्हौ जोरि कहौं दोउ हाथ—४८५।

(२) इकट्ठा करके, एकत्र करके। उ.—(क) तुम जनि डरपौ मेरी माता राम जोरि दल ल्यायौ—९-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८८ । (ख) राम कपि जोरि ल्यायौ—६-१३५ । (ग) अब हलधर उलटहु काहे तुम धावहु ग्वालन जोरि—२४४६ । (३) **बचाकर, संचित करके।** उ.—बहुत भाँति मेवा सब मेरे षटरस ब्यंजन न्यारे । सबै जोरि राखति हित तुम्हरैं मैं जानति तुम वानि—४६४ । (४) **लादकर** । उ.—और बहुत काँवरि दधि-माखन अहिरिन काँधे जोरि—५८३ । (५) **गढ़कर, बनाकर, (पदों की) योजना करके ।** उ.—उरहन लै जुवती सब आवति झूँठी बतियाँ जोरि—८६८ ।

जोरिय—क्रि. स. [हिं. जोड़ना] **जुड़वा लीजिए ।**

जोरी—क्रि. स. भूत. [हिं. जोड़ना] (१) **जोड़ी, संग्रह की, एकत्र की, संचित की ।** उ.—(क) हरि, हौं ऐसौ अमल कमायौ । साबिक जमा हुती जो जोरी, मिनजालिक तल ल्यायौ—१-१४३ । (ख) सिर पर धरि न चलैगो कोऊ जतननि करि माया जोरी—१-३०३ । (२) **संबंध स्थापित किया** । उ.—(ग) कहा लाइ तैं हरि सौ तोरी ? हरि सौं तोरि कौन सौं जोरी—१-३०३ । (ख) बरबस ही इन गही मूढ़ता प्रीति जाय चंचल सों जोरी—पृ. ३२८ । (ङ) अब हरि कौन सौं रति जोरी—२८६३ ।

संज्ञा स्त्री. [फ़ा. जोरी] (१) **जोड़ी, हमजोली, साथी ।** उ.—(क) गौर-स्याम जोरी वनी—१० ११६ । (ख) विधिना जोरी भली बनाई—७६१ । (ग) ए अहीर बह दासी पुर की विधिना जोरी भली मिलाई—२६७६ । (घ) बारक हमें दिखाओ अपने वालपने की जोरी—१० उ. ११५ । (ङ) सीता जू को बर यह चहिये है जोरी सुकुमार—सारा. २११ । (२) **प्रतिद्वंदी, प्रतिपक्षी ।** उ.—तब कह्यौ मैं दौरि जानत बहुत बल मो गात । मोरि जोरी है श्रिदामा हाथ मारे जात—१०-२१३ ।

संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़ोर] **जोरावरी, जबरदस्ती ।** उ.—जोरी मारि भजत उतही कौं जात जमुन के तीर—५३४ ।

वि.—[हिं. जोरी] **मत्त, प्रमत, मतवाली ।** उ.—(क) सूर कहाँ मेरो तनक कन्हाई आपुन जोवन जोरी—८५८ । (ख) चमकति चलै बदन मटकावै ऐसी जोवन जोरी—१६२१ ।

जोरू—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोड़ा] **पत्नी, घरवाली ।**

यौ.—जोरू-जाता—**घर-बार, बीबी-बच्चे ।**

जोरे—क्रि. स. [हिं. जोड़ना] **जोड़कर, मिलाकर ।**

मुहा.—कर जोरे—**हाथ जोड़कर, अत्यंत नम्रता-पूर्वक ।** उ.—(क) कर जोरे प्रहलाद जो विनवै, विनय सुनौ असरन-सरनाई—७-४ । (ख) अष्टसिद्धि नवनिधि कर जोरे—४८८ ।

जोरैं—क्रि. स. [हिं. जोड़ना] **मिलाते हैं, सटाते हैं ।**

मुहा.—कर (हाथ) जोरैं—**हाथ जोड़ते हैं, बहुत विनय के साथ ।** उ.—ताहि जमहूँ रहैं हाथ जोरैं—१-२२२ ।

जोरै—क्रि. स. [हिं. जोड़ना] (१) **योगफल निकालता है, मीजान लगाता है ।** उ.—मुजलिम जोरै ध्यान कुल्ल कौ, हरि सौं तहँ लै राखै—१-१४२ । (२) **मिलाती है, सटाती है ।**

मुहा.—नैन जोरैं—**नेत्र मिलाती है, देखती है ।** उ.—निरखि आपनो रूप आपुही बिवस भई सूर परछाँह को नैन जोरै—पृ. ३१६ ।

(२) **संग्रह करता है ।** उ.—लंपट, धूत, पूत, दमरी कौ, कोड़ी कौड़ी जोरै—१-१८६ । (३) **बाँधती है ।** उ.—भुज गहि रजु ऊखल सो जोरै—३४४ । (४) **संबंध स्थापित करती है ।** उ.—सूरदास यह रसिक ग्वालिनीं नेह नवल सँग जोरै—१०-३२१ ।

जोरो, जोरौ—क्रि. स. [हिं. जोड़ना] **(संबंध) स्थापित करो ।**

जोरयौ—क्रि. स. [हिं. जोड़ना] (१) **एकत्र किया, संग्रह किया, जोड़ा, इकट्ठा किया ।** उ.—जिहिं-जिहिं जोनि जन्म धारयौ, बहु जोरयौ अघ कौ भार—१-६८ । (२) **(टुकड़ा) जोड़ा, सटाया, मिलाकर एक किया ।** उ.—जरा जरासंध की संधि जोरयौ हुत्यौ भीम ता संधि को चीर डारयौ—१० उ. ५१ ।

मुहा.—चित जोरयौ—**मन रमाया ।** उ.—सूरदास प्रभु सों चित जोरयौ—१२०१ ।

(३) **क्रमशः स्थापित किया, क्रम-क्रम से एकत्र**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिया। उ.—जब मुख गए समाइ, असुर तब चाब सकोरयौ। अंधकार इमि भयौ मनहुँ निसि बादल जोरयौ—४३१।

जोल—संज्ञा. पुं. [हिं. जाल] **झुंड, समूह।** उ.—कहा करौं बारिज मुख ऊपर बिथके षटपद जोल।

जौलहा, जोलाहा—संज्ञा पुं. [हिं. जुलाहा] **जुलाहा।**

जोलाहल—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्वाला] **आग, अग्नि।**

जोली—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोड़ी] **जोड़, जोड़ी।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. झोली] **(१) किरमिच का जहाजी बिस्तर। (२) रस्सी की गाँठ।**

जोलो—संज्ञा पुं. [हिं. झोल] **अंतर।** उ.—कैंधौं तुम पावन प्रभु नाहीं कै कछु मौपै जोलो।

जोवत—क्रि. स. [हिं. जोहना, जोवना] **देखता है, ताकता है।** उ.—(क) बोवत बबुर, दाख फल जोवत—१-६१। (ख) बैठी तहँ अहिनारि, डरी बालक कौं जोवत—५८९।

जोवति—क्रि. स. [हिं. जोवना] **आसरा देखती है, रास्ता देखती है।** उ.—सूरस्याम मग जोवति जननी, आइ गए मुनि बचन रसालहिं—१०-२३६।

जोवना—क्रि. स. [हिं. जोहना] **(१) देखना, ताकना। (२) ढूँढ़ना, तलाशना। (३) रास्ता देखना।**

जोवारी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह की मैना।**

जोवै—क्रि. स. [हिं. जोवना] **जोहता (है), देखता (है)।** उ.—(क) पुत्र-कलत्र देखि सब रोवै। राजा तिनकी ओर न जोवै—१-३४१। (ख) हरि पथ जोवै छिन छिन रोवै—३४४२।

जोश—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **(१) उफान, उबाल।**

मुहा.—जोश खाना—**खौलना।** जोश देना—**उबालना।**

(२) आवेश, मनोवेग।

मुहा.—जोश में आना—**आवेश में आना।** खून का जोश—**वंशज या संबंधी के लिए प्रेमावेग।**

यौ.—जोश-खरोश—**अधिक आवेश।**

जोशन—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **(१) भुजा का एक गहना। (२) जिरह बकतर, कवच।**

जोशाँदा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **काढ़ा, क्वाथ।**

जोशी—संज्ञा पुं. [सं. ज्योतिषी] **ज्योतिषी।**

जोशीला—वि. [फ़ा.] जोश+ईला (प्रत्य.)] **ओजपूर्ण।**

जोष—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) प्रेम, अनुराग। (२) सुख, आनंद। (३) सेवा।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. जोख] **तौल, वजन।**

जोषक—संज्ञा पुं. [सं.] **सेवक।**

जोषण—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) प्रेम। (२) सेवा।**

जोषा, जोषिता—संज्ञा स्त्री [सं.] **नारी, स्त्री।**

जोषी—संज्ञा पुं. [सं. ज्योतिषी] **गुजराती, महाराष्ट्री और पहाड़ी ब्राह्मणों की एक जाति। (२) ज्योतिषी, गणक।**

जोस—संज्ञा पुं. [सं. जोश] **(१) उफान। (२) आवेग।**

जोह—क्रि. अ. [हिं. जोहना] **देख, ताक या निहार (रहा है)।** उ.—माइ जसुदा देखि तोकौं, करति कितनौ छोह। सुनत हरि की बात प्यारी, रही मुख-तन जोह—७०७।

संज्ञा स्त्री.—**(१) खोज, तलाश। (२) इंतजार, परीक्षा। (३) नजर, दृष्टि या दयादृष्टि।**

जोहड़—संज्ञा पुं. [देश.] **कच्चा तालाब।**

जोहत—क्रि. स. [हिं. जोहना] **राह देखते हैं, प्रतीक्षा करते हैं।** उ.—जग माहिं तुम पसु जे मारे। ते सब ठाढ़े सस्त्रनि धारे। जोहत हैं वे पंथ तिहारौ। अब तुम अपनौ आपु सँभारौ—४-१२।

जोहन—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोहना] **(१) देखने या जोहने की क्रिया।** उ.—सघन कला तरु तर मन मोहन। दच्छिन चरन चरन पर दीन्हे तनु त्रिभंग मृदु जोहन। **(२) तलाश, खोज। (३) प्रतीक्षा, इंतजार।**

क्रि. स.—**प्रतीक्षा करना, राह देखना।** उ.—बैठि एकांत जे हन लगे पंथ सिव, मोहनी रूप कब दै दिखाई—८-१०।

जोहना—क्रि. स. [सं. जुषण=सेवन] **(१) देखना, निहारना। (२) खोजना, तलाश करना। (३) इंतजार या प्रतीक्षा करना।**

जोहर—संज्ञा स्त्री. [देश.] **छोटा तालाब।**

जोहार—संज्ञा स्त्री. [सं. जुषण=सेवन] **प्रणाम, वंदन।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रि. अ.—**प्रणाम या अभिवादन करता है।** उ.—मनसिज भवन जोहार अहो हरि होरी है—२४४८।

जोहारना—क्रि. अ. [हिं. जोहार] **प्रणाम करना।**

जोहारि, जोहारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जोहार] **प्रणाम, वंदन, अभिवादन।** उ.—इक इक बान भेज्यौ सकल नृपन पै मानों सब साथ कीन्हें जोहारी—१० उ. ४६।

जोहि, जोही—क्रि. स. [सं. जोहना] **देखकर।**

जोहै—क्रि. स. [हिं. जोहना] **देखता है, ताकता है, निहारता है।** उ.—ससि-गन गारि रच्यौ बिधि आनन, बाँके नैननि जोहै—१०-१५८।

जोह्यौ—क्रि. स. [हिं. जोहना] **देखा, निहारा।** उ.—उमाहूँ देखि पुनि ताहि मोहित भई, तासु सम रूप अपनौ न जोह्यौ—८-१०।

जौं—अव्य. [सं. यदि] **जो, यदि।**

क्रि. वि.—**ज्यों, जैसे।**

जौंकना—क्रि. स. [अनु. झाँव] **डाँटना, डपटना।**

जौंची—संज्ञा स्त्री. [देश.] **फसल का एक रोग।**

जौंरा भौंरा—संज्ञा पुं. [हिं. भुँइधर, भुँइहर] **गुप्त तहखाना जिसमें खजाना आदि हो।**

संज्ञा पुं. [हिं. जोड़ा+भौंरा] **दो बच्चों की जोड़ी।**

जौंरे—क्रि. वि. [फ़ा. जवार] **निकट, पास।**

जौं—अव्य. [सं. यद्] **यदि, अगर।** उ.—जाँचक पैं जाँचक कह जाँचै, तौ जाँचै तौ रसना हारी—१-३४।

क्रि. वि.—**जब।**

यौ.—जौ लौं, जौ लगि, जौ लहि—**जब तक।**

संज्ञा पुं. [सं. यव] (१) **एक अनाज।** (२) **एक पौधा।** (३) **एक तौल जो ६ राई के बराबर होती है।**

जौक—संज्ञा पुं. [तु. जूक] (१) **झुंड।** (२) **सेना।**

जौकेराई, जौकेराव—संज्ञा स्त्री. [हिं. जौ + केराव] **मटर मिला हुआ जौ।**

जौख—संज्ञा पुं. [तु. जूक] **झुंड, जत्था, समूह, गोल।** (२) **फौज।** (३) **पक्षियों की श्रेणी।**

जौगढ़वा—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह का धान।**

जौचनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जौ+चना] **चना मिला जौ।**

जौजा—संज्ञा स्त्री [अ. जौज:] **पत्नी, घरवाली।**

जौतुक—संज्ञा पुं. [सं. यौतुक] **दहेज, जहेज।**

जौधिक—संज्ञा पुं. [सं.] **तलवार का एक हाथ।**

जौन—संज्ञा पुं. [सं. यवन] **म्लेच्छ, यवन।**

सर्व. [सं. यः] **जो, जिसे।** उ.—घर मैं गथ नहिं भजन तिहारौ, जौन दियैं मैं छूटौं—१-१८५।

वि.—(१) **जो।** उ.—जौन ठौर मोहिं आज्ञा होई। ताही ठौर रहौं मैं जोइ—१-२६०। (२) **जैसा, जिस प्रकार का।** उ.—कही जात न सखी मोपै मिले जौन सनेह—पृ. ३१६।

जौनाल—संज्ञा स्त्री. [सं. यव+नाल] **रबी का खेत।**

जौन्ह—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्योत्स्ना] **चाँदनी, चंद्रिका।**

जौपै—अव्य. [हिं. जो+पर] **यदि, अगर।**

जौबति—संज्ञा स्त्री. [सं. युवती] **युवती।**

जौबन—संज्ञा पुं. [सं. यौवन] **युवा होने का भाव, यौवन।** उ.—(क) जौबन-रूप-राज-धन धरती जानि जलद की छाहीं—२-२३। (ख) धन जौबन अभिमान अलप जल कहँ कूर आपुनी बौरी।

जौम—संज्ञा पुं. [हिं. जोम] **उमंग, जोश, उत्साह।**

जौरा—संज्ञा पुं. [हिं. जूरा] **नाई आदि को साल भर की सेवा के बदले में दिया जानेवाला अन्न।**

संज्ञा पुं. [हिं. ज्या+वर] **बड़ा रस्सा।**

जौलाऊ—संज्ञा स्त्री. [हिं. जौलाय] **रुपए में बारह पैसे का भाग या हिस्सा।**

जौलाय—वि. [देश.] **बारह।**

जौलौं—अव्य. [हिं. जौ+लौं (प्रत्य.)] **जब तक, जिस समय तक।** उ.—आमिष-रुधिर-अस्थि अँग जौलौं, तौलौं कोमल चाम—१-७६।

जौशन—संज्ञा पुं. [हिं. जोशन] **भुजा का एक गहना।**

जौहर—संज्ञा पुं. [फ़ा. गौहर का अ. रूप] (१) **रत्न।** (२) **सार, तत्व।** (३) **हथियार की ओप या चमक।** (४) **विशेषता, उत्तमता, खूबी।**

मुहा.—जौहर खुलना—(१) **गुण या खूबी प्रकट होना।** (२) **भेद या रहस्य खुलना।** जौहर खोलना—(१) **विशेषता प्रकट करना।** (२) **रहस्य खोलना।**

संज्ञा पुं. [हिं. जीव+हर] (१) **युद्ध के संकट-**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल में राजपूत-वीरांगनाओं का धर्म-रक्षा के लिए जलती आग में कूदकर प्राण देने की प्रथा।

मुहा,—जौहर होना—धर्म-रक्षा के लिए जल मरना। (२) प्राणत्याग, आत्महत्या। (३) वह चिता जो जौहर के लिए प्रस्तुत स्त्रियों के लिए बनायी जाती है।

जौहरी—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) जवाहरात बचनेवाला। (२) जवाहरात का पारखी। (३) गुण का पारखी। (४) गुण का ग्राहक या आदर करनेवाला।

ज्ञ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ज्ञान, बोध। (२) ब्रह्मा। (३) निर्विकार ब्रह्म। (४) बुध ग्रह। (५) मंगल ग्रह। (६) ज् और ञ से बना संयुक्त अक्षर।

प्रत्य.—जाननेवाला, ज्ञाता, ज्ञानी।

ज्ञपित—वि. [सं.] (१) जाना हुआ। (२) मारा हुआ। (३) तुष्ट किया हुआ। (४) तेज किया हुआ। (५) प्रशंसित।

ज्ञप्त—वि. [सं.] जाना हुआ।

ज्ञप्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) जानकारी, (२) बुद्धि। (३) मारना। (४) तुष्टि। (५) जलाना। (६) स्तुति।

ज्ञवार—संज्ञा पुं. [सं.] बुधवार।

ज्ञा—संज्ञा स्त्री. [सं.] जानकारी।

ज्ञात—वि. [सं.] जाना हुआ, विदित।

ज्ञातनंदन—संज्ञा पुं. [सं.] जैन-तीर्थंकर महावीर स्वामी का एक नाम।

ज्ञात यौवना—संज्ञा स्त्री. [सं.] वह किशोरी नायिका जिसे अपनी युवावस्था का ज्ञान हो गया हो।

ज्ञातव्य—वि. [सं.] जो जाना जा सके, जो जानने योग्य हो, ज्ञेय, बोधगम्य।

ज्ञाता—वि. [सं. ज्ञातृ] (१) जाननेवाला, जानकर। (२) ज्ञानी, तत्वदर्शी। उ.—ब्याध-गीध-गनिका-गज इनमैं को ज्ञाता—१-१२३।

ज्ञाति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य, भाई, बंधु-बांधव। उ.—(क) हँसि हँसि दौरि मिले अंक भरि हम तुम एकै ज्ञाति—१०-३६ (ख) आपु गये नँद सकल महर घर लै आए सब ज्ञाति—१०८९। (२) जाति। अहिर जाति ओछी मति कीन्ही। अपनी ज्ञाति प्रकट करि दीन्ही—१०२४।

ज्ञातिपुत्र—संज्ञा पुं. [सं.] जैनतीर्थंकर महावीर स्वामी का एक नाम।

ज्ञातृत्व—संज्ञा पुं. [सं.] जानकारी, ज्ञान।

ज्ञात्री—संज्ञा स्त्री. [हिं. ज्ञाता] जाननेवाली।

ज्ञान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बोध, जानकारी।

मुहा.—ज्ञान छाँटना—योग्यता या जानकारी दिखाने के लिए लंबी-चौड़ी बातें करना।

(२) तत्वबोध, आत्मबोध, सम्यक्बोध। (३) ध्यान, विचार। उ.—(क) ऐसे दुख सौं मरन सुख मन करि देखौ ज्ञान—५८६। (ख) आइ गए दिन अबहिं नेरैं, करत मन यह ज्ञान—८१४।

ज्ञानकांड—संज्ञा पुं. [सं.] वेद का एक विभाग जिसमें ब्रह्म आदि गहन विषयों की चर्चा है।

ज्ञानकृत—वि. [सं.] जान-बूझ कर किया हुआ।

ज्ञानगम्य—वि. [सं.] जो जाना जा सके।

ज्ञानगोचर—वि. [सं.] जो ज्ञानेंद्रियाँ जान सकें।

ज्ञानत:—क्रि. वि. [सं.] जान-बूझ कर।

ज्ञानदग्धदेह—संज्ञा पुं. [सं.] ज्ञानी संन्यासी।

ज्ञानदाता—संज्ञा पुं. [सं. ज्ञानदातृ] गुरु।

ज्ञाननमनि—वि. [सं. ज्ञानी+मणि] ज्ञानियों में श्रेष्ठ। उ.—ज्ञाननमनि, विद्यामनि, गुनमनि चतुरनमनि, चतुराई—२१७६।

ज्ञानमद—संज्ञा पु. [सं.] ज्ञानी होने का गर्व।

ज्ञानमुद्रा—संज्ञा पुं. [सं.] राम-पूजा की एक रीति।

ज्ञानयज्ञ—संज्ञा पुं. [सं.] ब्रह्म-जीव-ज्ञान।

ज्ञानयोग—संज्ञा पुं. [सं.] ज्ञान-प्राप्तिद्वारा मोक्ष-साधन। उ.—एक ज्ञान योग बिस्तरै। ब्रह्म जान सत्र सों हित करै।

ज्ञानवान, ज्ञानवान्—वि. [सं.] ज्ञानी।

ज्ञानवृद्ध—वि. [सं.] ज्ञान में बढ़ा-चढ़ा।

ज्ञानसाधन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ज्ञानप्राप्ति का प्रयत्न। (२) इंद्रियाँ जो ज्ञान-प्राप्ति में सहायक हों।

ज्ञानाकर—संज्ञा पुं. [सं. ज्ञान+आकर=खान] बुद्ध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानावरण—संज्ञा पुं. [सं. ज्ञान+आवरण] (१) **ज्ञान-प्राप्ति की बाधा । (२) ज्ञान-लाभ में बाधक पाप ।**

ज्ञानासन—संज्ञा पुं. [सं.] **ज्ञान का एक आसन ।**

ज्ञानियनि—वि. बहु. [सं. ज्ञानी] **जो आत्मज्ञानी या ब्रह्मज्ञानी हों ।** उ.—तपसियनि देखि कह्यौ, क्रोध इनमैं बहुत, ज्ञानियनि मैं न आचार पेखौं—८-८ ।

ज्ञानी—वि. [सं. ज्ञानिन] (१) **जानकार, जिसे ज्ञान हो, ज्ञानवान्** (२) **आत्मज्ञानी ।**

ज्ञानेंद्रिय, ज्ञानेंद्री—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्ञानेंद्रिय] **वे पाँच इंद्रियाँ जिनसे विषयों का बोध होता है—दर्शनेंद्रिय, श्रवणेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, रसना और स्पर्शेन्द्रिय जिनके आधार क्रमश. आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा है ।** उ.—इक मन अरु ज्ञानेंद्री पाँच । नर कौं सदा नचावैं नाच—५-४ ।

ज्ञानै—संज्ञा पुं. सवि. [सं. ज्ञान] **ज्ञान को ।** उ.—(क) मरन अवस्था कौं नृप जानै । तौ हू धरैं न मन मैं ज्ञान—४-१२ । (ख) तौ तजि सगुन साँवरी मूरति कत उपदेसै ज्ञानै—३४०४

ज्ञापक—वि. [सं.] **सूचक, जतानेवाला, व्यंजक ।**

ज्ञापन—संज्ञा पुं. [सं.] **जताने का कार्य ।**

ज्ञापित—वि. [सं.] **जताया या बताया हुआ ।**

ज्ञेय—वि. [सं.] (१) **जिसका जानना उपयोगी या आवश्यक हो ।** (२) **जो जाना जा सके ।**

ज्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **धनुष की डोरी ।** (२) **रेखा जो चाप के एक सिरे से दूसरे तक खीची जाय ।** (३) **पृथ्वी ।** (४) **माता ।**

ज्याइ—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जीवित करके ।**

प्र.—ज्याइ लीन्ही—**जीवित कर लिया ।** उ.—सूर प्रभु तोहिं ज्याइ लीन्ही कही कुँवरि सौं मात—७६० ।

ज्याई—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जिला दी, जीवित कर दी, जान डाल दी ।** उ.—महरि, गारुड़ी कुँवर कन्हाई । एक विटिनियाँ कारैं खाई, ताकौं स्याम तुरत हीं ज्याई—७५४ ।

ज्याए—क्रि. स. [हिं. जिलाना] (१) **जिलाने से, जीवित रखने से ।** उ.—तिहिं न करत चित अधम अजहूँ लौं, जीवत जाके ज्याए—१-३२० । (२) **जीवित किये ।** .—सीस अज राखि कै दच्छ ज्याए—४-६ ।

ज्यादती—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ज़यादती] (१) **अधिकारी, बहुतायत ।** (२) **अनीति, अत्याचार ।**

ज्यादा—वि. [फ़ा. ज़्यादा] **बहुत, अधिक ।**

ज्यान—संज्ञा पुं. [फ़ा. ज़ियान] **हानि, घाटा, नुकसान ।**

ज्याना—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जीवित करना ।**

ज्याफत—संज्ञा स्त्री. [अ. जियाफत] (१) **दावत, भोज, सहभोज ।** (२) **मेहमानी, आतिथ्य ।**

ज्यामिति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **रेखागणित ।**

ज्यायौ—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जिलाना, जीवित रखना, जी डालना ।** उ.—(क) जौ सूरज प्रभु ज्यायौ चाहत, तौ ताकौ अब देहु दिखाई—७४८ । (ख) अब जिनि गहर करो हो मोहन जो चाहत हौ ज्यायौ—३४८० ।

ज्यारना, ज्यावना–क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जीवित करना ।**

ज्यावहु—क्रि. स. [हिं. जिलाना] **जीवन दो, जिला दो, जीवित करो ।** उ.—सूर स्याम मेरौ बड़ौ गारुड़ी, राधा ज्यावहु जाई—७५६ ।

ज्यूँ—अव्य. [हिं. ज्यों] **ज्यों, जैसे ।**

ज्येष्ठ—वि. [सं.] (१) **बड़ा, जेठा** (२) **बूढ़ा ।**

संज्ञा पुं.—(१) **जेठ का महीना ।** (२) **वह वर्ष जिसमें बृहस्पति का उदय ज्येष्ठा नक्षत्र में हो ।**

ज्येष्ठता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बड़ा या श्रेष्ठ होने का भाव ।**

ज्येष्ठांबु—संज्ञा पुं. [सं.] **चावल का धोवन ।**

ज्येष्ठा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **अठारहवाँ नक्षत्र ।** (२) **पत्नी जो पति को सबसे प्रिय हो ।** (३) **छिपकली ।** (४) **बीच की उँगली ।** (५) **गंगा ।** (६) **अलक्ष्मी देवी ।**

वि. स्त्री—**बड़ी, श्रेष्ठ ।**

ज्येष्ठाश्रम—संज्ञा पुं. [सं. ज्येष्ठ+आश्रम] **गृहस्थाश्रम ।**

ज्येष्ठाश्रमी—संज्ञा पुं. [सं. ज्येष्ठाश्रमिन्] **गृहस्थ, गृही ।**

ज्येष्ठी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **छिपकली, पल्ली ।**

ज्यों—क्रि. वि. [सं. यः+इव] (१) **की तरह, के ढंग से, जैसे, के रूप से ।** उ.—करी न प्रीति स्याम सों जनम जुआ ज्यों हार्‌यौ—१-१०१ ।

मुहा.—ज्यों त्यों—(१) **किसी न किसी तरह**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े झंझट या बखेड़े के साथ। (२) अरुचि के साथ, अनिच्छा से। (३) जिस तरह हो सके वैसे, किसी भी उपाय से। उ.—ज्यों त्यों कीन्हो. चाहैं भोग—११-३। ज्यों त्यों करके—(१) किसी भी उपाय से। (२) बड़ी कठिनाई से। ज्यों का त्यों—(१) जैसा था वैसे ही। (२) जैसा था, वैसा (उसी तरह का) ही।

(२) जिस क्षण, जैसे हो।

मुहा.—ज्यों-ज्यों—जिस क्रम से, जैसे जैसे।

ज्योतिःशास्त्र—संज्ञा पुं. [सं.] ज्योतिष।

ज्योति—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्योतिस्] (१) प्रकाश, उजाला, कांति, द्युति। उ.—(क) बिकसति ज्योति अधर-बिच, मानौ बिधु मैं बिज्जु उज्यारी—१०-६१। (ख) कहा करौं जू सनेह न छूटे रूप-ज्योति गयी तातै—३४२६। (२) लपक, लौ।

मुहा.—ज्योति जगना—(१) प्रकाश फैलना। (२) किसी देवी-देवता का दीपक जलना।

(३) अग्नि। (४) सूर्य। (५) नक्षत्र। (६) आँख की पुतली का मध्यबिंदु जो दृष्टि का मुख्य साधन है, (७) विष्णु। (८) परमात्मा का एक नाम।

ज्योतिक—संज्ञा पुं. [हिं. ज्योतिषी] ज्योतिषी। उ.—बार-बार ज्योतिक सों घरी बूझि आवै।

ज्योतित—वि० [सं० ज्योति] चमकता हुआ।

ज्योतिरिंग, ज्योतिरिंगण—संज्ञा पुं. [सं.] जुगनूँ।

ज्योतिमान, ज्योतिर्मय, ज्योतिर्मान—वि. [सं०] जगमगाता या चमकता हुआ।

ज्योतिर्लिंग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) महादेव, शिव। (२) शिव के बारह लिंग जिनके नाम और स्थान इस प्रकार हैं—सोमनाथ (सौराष्ट्र), मल्लिकार्जुन (श्रीशैल), महाकाल (उज्जयिनी), ओंकार (नर्मदा-तट), केदार (हिमालय), भीमशंकर (डाकिनी), विश्वेश्वर (काशी), त्र्यंबक (गोमती तट), वैद्यनाथ, (चिता-भूमि), नागेश्वर (द्वारका), रामेश्वर (सेतुबंध) और घृष्णेश्वर (शिवालय)।

ज्योतिर्लोक—संज्ञा पुं० [सं०] (१) ध्रुवलोक जहाँ ध्रुव स्थित हैं। (२) इस लोक के स्वामी परमेश्वर या विष्णु।

ज्योतिर्विद—संज्ञा पुं. [सं.] ज्योतिष जाननेवाला।

ज्योतिर्विद्या—संज्ञा स्त्री [सं०] ज्योतिष विद्या।

ज्योतिर्हस्ता—संज्ञा स्त्री [सं.] दुर्गा।

ज्योतिश्चक्र—संज्ञा पुं. [सं.] नक्षत्र और राशि-मंडल।

ज्योतिष—संज्ञा पुं. [सं] (१) वह विद्या जिससे ग्रहों-नक्षत्रों की दूरी, गति और शुभ-अशुभ फल आदि का निश्चय किया जाता है। (२) शत्रु के चलाये हुए अस्त्र की रोक।

ज्योतिषिक—वि. [सं.] ज्योतिष-संबंधी।

संज्ञा पुं.—ज्योतिष का अध्ययन करनेवाला।

ज्योतिषी—संज्ञा पुं. [सं. ज्योतिषिन्] ज्योतिष जाननेवाला।

ज्योतिष्क—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ग्रह-नक्षत्र समूह। (२) चित्रक वृक्ष। (३) मेरु पर्वत की एक चोटी।

ज्योतिष्टोम—संज्ञा पुं. [सं.] एक तरह का यज्ञ।

ज्योतिष्पथ—संज्ञा पुं. [सं.] आकाश।

ज्योतिष्पुंज—संज्ञा पुं. [सं.] नक्षत्र-समूह।

ज्योतिषमती—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) रात। (२) एक नदी। (३) एक वैदिक छंद। (४) एक प्राचीन बाजा।

ज्योतिष्मान—वि. [सं.] प्रकाशपूर्ण।

संज्ञा पुं.—(१) सूर्य। (२) एक पर्वत।

ज्योत्स्ना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चाँदनी। (२) चाँदनी रात। (३) सफेद फूल की तोरई। (४) सौंफ।

ज्योत्स्नाप्रिय—संज्ञा पुं. [सं.] चकोर।

ज्योत्स्नावृक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] दीवट, दीपाधार।

ज्योत्स्नका, ज्योत्स्नी—संज्ञा स्त्री. [सं.] चाँदनी रात।

ज्योनार—संज्ञा स्त्री. [सं. जेंमन] (१) भोजन, रसोई, पक्का खाना। (२) सहभोज, दावत।

ज्योरा, ज्यौरा—संज्ञा पुं. [हिं. जीविका] फसल तैयार होने पर नाई-धोबी आदि को दिया जानेवाला अन्न।

ज्योरी—संज्ञा स्त्री. [सं. जीवा] रस्सी, डोरी।

ज्योहत—संज्ञा पुं. [सं. जीव + हत] आतमहत्या, जौहर। उ.—भई ब्याकुल सबै हेतु रोवन लगीं मरन को तुरत ज्योहत बिचारयौ।

ज्योहर—संज्ञा पुं. [हिं. जौहर] राजपूत स्त्रियों का युद्ध-संकट-काल में धर्म-रक्षार्थ आग में जलना, जौहर।

ज्यौं—क्रि. वि. [हिं. ज्यों] (१) जिस प्रकार, जैसे, जिस ढंग से। उ.—(क) ज्यौं गूँगैं मीठे फल कौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस अंतरगत हीं भावै—१-२ । (ख) करी न प्रीति स्यामसुंदर सौं जन्म जुआ ज्यौं हारयौ ।

मुहा.—ज्यौं त्यौं—**किसी भी प्रकार, ढंग या रीति से**। उ.—ज्यौं त्यौं कोउ हरि-नाम उचरै । निस्चय करि सो तरै पै तरै—६-४ ।

(२) **जिस क्षण, जैसे ही ।**

संज्ञा स्त्री.—**तरह, प्रकार, रीति** । उ.—उनमत की ज्यौं बिचरन लागे—५-२ ।

ज्यौ—अव्य. [सं. यदि] **जो ।**

संज्ञा पुं. [सं. जीव] **जीव, प्राणी** । उ.—तन माया ज्यौ ब्रह्म कहावत, सूर सु मिलि बिगरौ—१-२२० ।

संज्ञा पुं. [सं. जी] (१) **प्राण** । उ.—कागासुर आवत नहिं जान्यौ । सुनी कहत ज्यौ लेइ परान्यौ—३६१ । (२) **जी, मन, चित्त** । इ.—तब तैं मेरौ ज्यौ न रहि सकत—६७१ ।

ज्यौतिषिक—संज्ञा पुं. [सं.] **ज्योतिषी ।**

ज्यौनार—संज्ञा स्त्री. [सं. जेंमन=खाना] (१) **पक्का भोजन, रसोई**, उ.—(क) नंदघरनि ब्रज-बधू बुलाईं, जे सब अपनी पाँति । कोउ ज्यौनार करति, कोउ घृत-पक, षट्रस के बहु भाँति—१०-८६ । (ख) सरस बसन तन पोंछि गई लै, षट रस की ज्यौनार जिंवावति—५१४ । (२) **सहभोज, दावत ।**

ज्वर—संज्ञा पुं. [सं.] **ताप, बुखार ।**

ज्वरघ्न—संज्ञा पुं [सं.] (१) **गुड़ च** (२) **बथुआ ।**

ज्वरता—संज्ञा स्त्री. [हिं. ज्वर] **ताप, ज्वाला** । उ.—मनहुँ बिरह की ज्वरता लगि लियो नेम प्रेम सिव-संसि सहस घट—३४६५ ।

ज्वरराज—संज्ञा पुं. [सं.] **ज्वर की एक औषध ।**

ज्वरांकुश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक औषध** । (२) **एक घास ।**

ज्वरांतक—संज्ञा पुं. [सं.] **चिरायता । अमलतास ।**

ज्वरा—संज्ञा स्त्री. [सं. जरा] **मौत, मृत्यु ।**

ज्वरार्त्त—वि. [सं.] **ज्वर से दुखी या पीड़ित ।**

ज्वरित, ज्वरी—वि. [हिं. ज्वर] **जिसे ज्वर हो ।**

ज्वर्रा—संज्ञा पुं. [हिं. जुर्रा] **नर बाज (पक्षी) ।**

ज्वलंत—वि. [सं.] (१) **जलता हुआ, प्रकाशमान** । (२) **प्रकाश में आया हुआ, अत्यंत स्पष्ट ।**

ज्वल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अग्नि** । (२) **प्रकाश ।**

ज्वलका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आग की लपट ।**

ज्वलन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जलन, दाह** । (२) **आग, अग्नि** । (३) **लपट, ज्वाला** । (४) **चित्रक वृक्ष ।**

ज्वलित—वि. [सं.] (१) **जला हुआ** । (२) **चमकीला ।**

ज्वान—वि. [हिं. जवान] **युवक, जवान ।**

ज्वाना—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. जवानी] **यौवन, तरुणाई, युवावस्था** । उ.—बालपनौ गए, ज्वानी आवै । वृद्ध भए मूरख पछितावै—७-२ ।

ज्वाब—संज्ञा पुं. [हिं. जवाब] **जवाब, उत्तर** । उ.—(क) ज्वाब देति न हमहि नागरि रही बदन निहारि—८७६ । (ख) दीन्हो ज्वाब दई को चैहौ देखौ री यह कहा जँजाल—१११२ ।

ज्वार—संज्ञा स्त्री. [सं. यवनाल, यवाकार या जूर्ण] (१) **एक मोटा-अनाज** । (२) **समुद्री तरंगों का चढ़ाव ।**

ज्वारभाटा—संज्ञा पुं. [हिं. ज्वार+भाटा] **समुद्री लहरों का चढ़ार-उतार या बढ़ना-घटना ।**

ज्वारि, ज्वारी—संज्ञा पुं. [हिं. जुआरी] **जुआ खेलनेवाला** । उ.—चुगुल ज्वारि निर्दय अपराधो, झूठौ, खोटौ-खूटा—१-१८६ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ज्वार] **ज्वर नामक अनाज** । उ.—सूरदास मुकताहल भोगी हंस ज्वारि को चुनही—३०१३ ।

ज्वाल—संज्ञा पुं. [सं.] **अग्निशिखा, लौ, लपट** । उ.—(क) बिनु जान अहिराज बिष ज्वाल बरसै—५५२। (ख) धरनि आकास लौं ज्वाल-माला प्रबल घेरि चहुँपास ब्रजबास आयौ—५६७ ।

ज्वालक—वि. [सं.] **जलानेवाला ।**

ज्वालमाली—संज्ञा पुं. [सं. ज्वालमालिन्] **सूर्य ।**

ज्वाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **अग्निशिखा, दीपशिखा, लपट** । उ.—ग्रह दीपक, धन तेल, तूल तिय, सुत ज्वाला अति जोर—१—४६ । (२) **गरमी, ताप, जलन** । (३) **विष आदि की गरमी का ताप** । उ.—काल-ब्याल, रज-तम-बिष-ज्वाला कत जड़ जंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरत—१-५५। (४) तक्षक की पुत्री-जिससे ऋक्ष ने विवाह किया था।

संज्ञा पुं.—एक देश। उ.—भूप प्रथीराज दीनौ तिन्है ज्वाला देस—सा. ११८।

ज्वालाजिह्व—संज्ञा पुं. [सं.] आग, अग्नि।

ज्वालादेवी—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक देवी।

ज्वालामालिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक देवी।

ज्वालामुखी—वि. [सं.] जिसके मुख से ज्वाला निकले।

ज्वालामुखीपर्वत—संज्ञा पुं. [सं.] एक पर्वत जिससे समय समय पर धुआँ, राख, पिघले पदार्थ आदि निकलते हैं।

ज्वैना—क्रि. स. [हिं. जोहना] देखना, निहारना।

झ

झ—देवनागरी वर्णमाला का नवाँ और चवर्ग का चौथा व्यंजन। यह स्पर्श वर्ण है और इसका उच्चारण-स्थान तालु है।

झं—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) धातु-खंडों के टकराने से होनेवाला शब्द। (२) हथियार टकराने का शब्द।

झंकना—संज्ञा पुं. [हिं. झीखना] खीजना।

झंकाड़—संज्ञा पुं. [हिं. झंखाड़] (१) ठूँठ या पत्तेरहित पौधे। (२) काठ की बेकार चीजों का ढेर।

झंकार—संज्ञा स्त्री. [हिं. झनकार] (१) झनझन की ध्वनि, झनझन शब्द, झनकार। उ.—घर-घर गोपी दह्यौ बिलोवैं, कर-कंकन-झंकार—४०८। (२) झींगुर आदि के बोलने का झनझन शब्द। (३) झनझन शब्द होने का भाव।

झंकारना—क्रि. स. [सं. झंकार] झनझन शब्द करना।

क्रि. अ.—झनझन शब्द होना।

झँकियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँकना] झरोखा, जाली।

संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँकी] (अल्पार्थक) झाँकी।

झंकृत—वि. [सं.] जिसमें झनकार हुई हो।

झंकृति—संज्ञा स्त्री. [सं. झंकृत] झनकार।

झँकोर, झँकोरा—संज्ञा पुं. [हिं. झकोर] (१) हवा का झोंका या हिलोर। (२) झटका, धक्का।

झँकोरना, झकोलना—क्रि. अ. [हिं. झकोरना] (१) हवा का झोंका या हिलोर आना। (२) झटका या धक्का लगना।

झँकोलना, झँकोला—संज्ञा पुं. [हिं. झकोर] (१) हवा का झोंका या हिलोर। (२) झोंका, झटका।

वि.—(वह पलँग, खटोला आदि) जिसकी बुनावट बहुत ढीली हो।

झँखत—क्रि. अ. [हिं. खीजना] झुँझलाते हैं, झगड़ते हैं, खीझते हैं, झीखते हैं,। उ.—क्रीड़त प्रात समय दोउ बीर। माखन माँगत, बात न मानत, झँखत जसोदा-जननी तीर—१०-१६१।

झँखति—क्रि. अ. [हिं. खीजना] खीजती या झीखती है। उ.—सूरज प्रभु आवत हैं, हलधर को नहिं लखत झँखति कहति तो होते संगदोऊ—३०५६।

झँखना—क्रि. अ. [हिं. झींखना] झुँझलाना, झींखना।

झंखाट, झंखाड़—संज्ञा पुं. [हिं. झाड़ का अनु.] (१) घनी झाड़ी। (२) डाल-शाखा-रहित ठूँठ। (३) काठ की बेकार चीजों का समूह।

झंखे—क्रि. अ. [हिं. झंखना] डरे, भयभीत हुए। उ.—तीन लोक डर जाके कंपै तुम हनुमान न झंखे।

झँगरा—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का बाँस।

झँगा—संज्ञा पुं. [हिं. झगा] (१) ढीला-ढाला कुरता। उ.—झँगा पगा अरु पाग पिछौरी ढाढ़िनं को पहिरायौ—सारा. ४०८। (२) बच्चों का ढीला ढाला कुरता।

झँगिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. झँगुली] ढीला कुरता।

झँगुआ—संज्ञा पुं. [देश.] एक गहने की चूड़ी।

झँगुला—संज्ञा पुं. [हिं. झगा] ढीला कुरता।

झँगुली, झँगूली, झँगुलिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. झगा का अल्पा.] (१) बच्चों के पहनने का ढीला-ढाला कुरता। उ.—(क) स्याम बरन पर झँगुलिया पीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीस कुलहिया चौतनियाँ—१०-१३२। (ख) तन झँगुली, सिर लाल चौतनी, चूरा दुहुँ कर-पाइ—१०-८६। (ग) कुलही चित्र-विचित्र झँगूली। निरखि जसोदा-रोहिनि फूली—१०-११७। (घ) नील नलिन तनु पीत झँगुलिया घनदामिनि द्युति पेखत —सारा. १६६।

झंझ—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँझ] झाँझ नामक बाजा।

झंझट—संज्ञा पुं. [अनु.] झगड़ा, बखेड़ा।

झँझनाना—क्रि. अ. [अनु.] झनझन शब्द होना।

क्रि. स.—झनझन का शब्द उत्पन्न करना।

झंझर—संज्ञा पुं. [हिं. झज्झर] मिट्टी का एक पात्र।

झँझरा—संज्ञा पुं. [अनु.] मिट्टी का जालीदार ढक्कन।

वि.—छोटे छोटे छेदवाला, झीना।

झँझरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झरझर से अनु.] (१) जाली। (२) जालीदार खिड़की। (३) दमचूल्हे की जाली। (४) छानने की चलनी। (५) कपड़े पर बनायी हुई जाली।

वि. स्त्री.—जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद हों।

झँझरीदार—वि. [हिं. झँझरी+फ़ा. दार] जालीदार।

झंझा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तेज आँधी और वर्षा। (२) आँधी, अंधड़। (३) हल्की वर्षा। (४) झाँझ।

वि.—प्रचंड, तेज।

झंझानिल—संज्ञा पुं. [सं. झंझा+अनिल] (१) आँधी, अंधड़। (२) जोर का पानी और आँधी।

झंझार—संज्ञा पुं. [सं. झंझा] आग की लपट जिसमें से एक अव्यक्त ध्वनि के साथ धुआँ और चिनगारियाँ निकलती हैं। उ.—अति अगिनि झार, भंभार, धुंधार करि, उचटि अंगार झंझार छायौ—५९६।

झंझावात—संज्ञा पुं. [सं. झंझा+वात=हवा] (१) आँधी, अंधड़। (२) तेज आँधी और पानी।

झंझी—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) फूटी कौड़ी। (२) दलाली का धन, झज्झी।

झँझोड़ना, झँझोरना—क्रि. स. [सं. झर्झन, हिं. झँझोड़ना] वेग या झटके से हिलाना, झकझोरना।

झँझोटी, झँझौटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झिंझौटी] एक राग।

झंड—संज्ञा पुं. [सं. जट] मूँडन के पहले के बाल।

झंडा—संज्ञा पुं. [सं. जयंत] (१) ध्वजा, पताका।

मुहा.—झंडा खड़ा करना—(१) झंडे से सैनिकों को संकेत करना। (२) किसी स्थान पर अधिकार जताना। (३) आडंबर करना। झंडा गाड़ना—(फहराना)—किसी स्थान पर अधिकार जताना। झंडा तले (झंडे के नीचे) आना—पक्ष में एकत्र होना। झंडा (झंडे) तले की दोस्ती—मामूली जान-पहचान। झंडा (झंडे) पर चढ़ना—बदनाम होना। झंडा (झंडे) पर चढ़ाना—बदनाम करना।

(२) ज्वार-बाजरे आदि का ऊपरी नर-फूल।

झंडी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झंडा] रंगबिरंगे कपड़े-कागज का छोटा झंडा।

झंडीदार—वि. [हिं. झंडी+फ़ा. दार] जिसमें झंडी हों।

झँडूलना, झँडूला—वि. [हिं. झंड+ऊला (प्रत्य.)] (१) जिसके सिर पर मूँडन के पहले के बाल हों। (२) जो (बाल) मूँडन के पहले के हों। (३) सघन, घनी पत्तीवाला।

संज्ञा पुं.—(१) वह बालक जिसका मूँडन न हुआ हो। (२) बाल जो मूँड़े न गये हों। (३) सघन वृक्ष।

झँडूले—वि. [हिं. झँडूला] मूँडन-संस्कार के पहले का, गर्भ का। उ.—उर बघनहाँ, कंठ कठला, झँडूले बार, बेनी लटकन मसि-बुंदा-मनि-मनहार—१०-१५१।

झंप—संज्ञा पुं. [सं.] उछाल, कुदान, फँदान।

मुहा.—झंप देना—कूदना-फाँदना। उ.—करि अपनो कुल नास बहिन सो अगिन झंप दै आई।

संज्ञा पुं. [देश.] घोड़े के गले का एक गहना।

झँपकना—क्रि. अ. [हिं. झपकना] (१) पलक गिरना। (२) झपकी लेना। (३) झपटना। (४) डरना। (५) पंखे आदि से हवा करना।

झँपकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झपकी] (१) हलकी नींद। (२) आँख झपकने की क्रिया। (३) धोखा, चकमा।

झँपताल—संज्ञा पुं. [हिं. झपताल] ताल का एक भेद।

झंपति—क्रि. अ. [हिं. झँपना] उछलती-कूदती या लपकती है। उ.—जबहिं झंपति तबहिं कंपति विहँसि लगति उरोज—२४५७।

झँपना—क्रि. अ. [सं. झंप] (१) छिपना, आड़ में होना। (२) उछलना-कूदना, लपकना-झपकना। (३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दम से टूट पड़ना। (४) झेंपना, लज्जित होना।

झँपरिया, झँपरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँपना] पालकी ढकने की खोली, गिलाफ, ओहार।

झँपाई—क्रि. अ. [हिं. झपाना] झपका दिये, मूँदे, बंद किये। उ.—खेलत तुम निसि अधिक गई, सुत नैननि नींद झँपाई—१०-२४२।

झंपाक—संज्ञा पुं. [सं.] बंदर।

झंपान—संज्ञा पुं. [सं. झंप] खटोली की सवारी।

झंपित—वि. [सं. झंप] ढका या छिपा हुआ।

झँपोला—संज्ञा पुं. [हिं. झाँपा+ओला] छोटा झाबा।

झँब—संज्ञा पुं. [देश.] गुच्छा, झब्बा।

झँवकार—वि. [हिं. झाँवला] कुछ काले रंग का।

झँवयो—क्रि. स. [हिं. झँवाना] घटाया, कम किया। उ.—ज्ञान को अभिमान किए मोको हरि पठयो। मेरोई भजन थापि माया सुख झँवयो।

झँवरना, झँवराना—क्रि. अ. [हिं. झाँवर] (१) कुछ काला पड़ना। (२) कुम्हलाना, मुरझाना, सूखना।

झँवा—संज्ञा पुं. [हिं. झाँवाँ] मैल छुटाने का झाँवा।

झँवाना—क्रि. अ. [हिं. झाँवा] (१) कुछ काला पड़ना। (२) आग का मंद या कम हो जाना। (३) घट जाना। (४) मुरझाना, कुम्हलाना। (५) झाँवें से रगड़कर मैल का छुड़ाया जाना।

क्रि. स.—(१) कुछ काला कर देना। (२) आग की तेजी कम करना। (३) कम करना, घटाना। (४) कुम्हला देना, मुरझा देना। (५) झाँवें से रगड़कर मैल छुटाना। (६) झाँवे से रगड़वाना।

झँसना—क्रि. स. [अनु.] (१) सिर या तलुए में चिकना पदार्थ रगड़ना। (२) धन ऐंठ लेना।

झ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आँधी-पानी। (२) बृहस्पति। (३) ध्वनि, शब्द, गूँज। (४) तेज हवा।

झइँ, झईं, झई—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँईं] आँख के आगे अँधेरा, तिरमिराहट। उ.—सूरदास स्वामी के बिछुरे लागे प्रेम झई—२७७३।

झउआ, झउवा—संज्ञा पुं. [हिं. झावा] खाँचा, झौआ।

झक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] धुन, सनक।

संज्ञा स्त्री. [हिं. झख] झीखने की क्रिया या भाव।

वि.—चमकीला, बहुत साफ।

संज्ञा पुं. [सं. झष] (१) मछली। (२) मकर।

झककेतु—संज्ञा पुं. [हिं. झषकेतु] कामदेव।

झकझक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) व्यर्थ की कहा-सुनी, हुज्जत, तकरार (२) बकवाद, विवाद।

झकझका—वि. [हिं. झक (अनु.)] चमकदार।

झकझकाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. झक (अनु.)] चमक।

झकझेलना—क्रि. स. [अनु.] झोंका या झटका देना।

झकझोर—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) झोंका या झटका। (२) हिलने-डोलने या चंचल होने की क्रिया या भाव। उ.—सूरदास बलि बलि या छबि की अलकन की झकझोर—२३१२।

वि.—(१) झोंकेदार, तेज। उ.—क्रोध-दंभ-गुमान-तृष्ना पवन अति झकझोर। नाहिं चितवन देत सुत-तिय नाम-नौका ओर—१-९९। (२) चंचल, हिलता-डोलता। उ.—त्रास तैं अति चपल गोलक, सजल सोभित छोर। मीन मानौ बेधि बंसी, करत जल झकझोर—३५८।

झकझोरत—क्रि. अ. [हिं. झकझोरना] झोका खाता है, हिलता-डुलता है। उ.—(क) मैया री मैं चंद लहौंगौ। यह तौ झलमलात झकझोरत, कैसैं कै जु लहौंगो—१०-१९४। (ख) इत-उत अंग मुरत झकझोरत, अँगिया बनी कुचनि सौं माढ़ी—१०-३००।

क्रि. स.—झोंका या झटका देता है। उ.—काहे कौं झकझोरत नोखे, चलहु न देउँ बताइ—६८२।

झकझोरतिं—क्रि. स. स्त्री. बहु. [हिं. झकझोरना] झोंका या झटका देती है। उ.—जाकौ नेति-नेति स्रुति गावत ध्यावत सुर-मुनि ध्यान धरे। सूरदास तिहिंकौं ब्रज-बनिता झकझोरतिं उर अंक भरे—१०-८८।

झकझोरति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. झकझोरना] झटका देती या झँकोरती है। उ.—सूरदास तिनकौं ब्रज-जुवती झकझोरति उर अंक भरे। (ख) यह ऐसेहिं झकझोरति मोको पायौ नीके दाँउ—१६१३।

झकझोरना—क्रि. स. [हिं. झोंका] झोंका-झटका देना।

झकझोरा—संज्ञा पुं. [अनु.] झोंका, झटका, धक्का।

झकझोरि—क्रि. स. [हिं. झकझोरना] झटका देकर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झोंका देकर, जोर से हिलाकर। उ.—नाक मूँदि, जल सींचि जबहिं जननी कहि टेरयौ। बार-बार झकझोरि, नैंकु हलधर-तन हेरयौ—५८६।

झकझोरयो—क्रि. स. [हिं. झकझोरना] **झोंका, झटका या धक्का दिया।** उ.—भुज भरि धरि अँकवारि बाँह गहि कै झकझोरयौ—१०२६।

झकझोलना—क्रि. स. [हिं. झकझोलना] **झटका देना।**

क्रि. अ.—**हिलना-डुलना, झटका या धक्का सहना।**

झकझोलै—क्रि. अ. [हिं. झकझोरना] **हिलती डुलती है, काँपती है।** उ.—पकरयौ चीर दुष्ट दुस्सासन, बिलखि बदन भर डोलै। जैसैं राहु नीच ढिग आएँ, चंद्र-किरन झकझोलै—१-२५६।

झकड़—संज्ञा पुं. [हिं. झक्कड़] **आँधी, अंधड़, तूफान।**

झकड़ी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **दूध दुहने का पात्र।**

झकति—क्रि. अ. [हिं. झीखना] **खीजती या कुढ़ती रहती है।** उ.—ऊधौ कुलिस भई यह छाती। मेरो मन रसिक लग्यौ नँदलालहिं झकति रहति दिन राती—४२६६।

झकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **व्यर्थ की बातें कहना।** (२) **झुँझलाना, खीजना।** (३) **क्रोध में बकना।**

झकर—संज्ञा पुं. [हिं. झक्कड़] **आँधी, अंधड़, तूफान।**

झका—वि. [हिं. झक] **चमकीला बहुत साफ।**

झकाझक—वि. [अनु.] **साफ और चमकीला।**

झकिझकि—क्रि. अ. [हिं. झकना] **बकझक कर, खीझ कर, झुँझला कर, बेकार समझ कर।** उ.—हरि कौ नाम, दाम खोटे लौं, झकिझकि डारि दयौ—१-६४।

झकुराना—क्रि. अ. [हिं. झकोरा] **झूमना।**

झकोर, झकोरा, झकोरो—संज्ञा पुं. [अनु. झोंका] (१) **हवा का झोंका या हिलकोरा।** उ.—(क) चारु लोचन हँसि बिलोकनि देखि कै चित भोर। मोहनी मोहन लगावत लटकि मुकुट झकोर—१३३५। (ख) नील पीत सित अरुन ध्वजा चल सीर समीर झकोर। (२) **झटका, धक्का, लहर, झोंका, छींटा।** उ.—(क) जगमग रहो जराइ को टीको छवि को उठत झकोरो हो—२२४३। (ख) गोपी ग्वाल गाइ ब्रज राख्यो, नेकु न आई बूँद झकोर—६६८।

झकोरत—क्रि. अ. [अनु.] (हवा का) **झोंका देता या मारता है।** उ.—चहुँ दिसि पवन झकोरत घोरत मेघ घटा गँभीर।

झकोरना—क्रि. अ. [अनु.] **हवा का झोंका मारना।**

झकोल—संज्ञा पुं [हिं. झकोर] **हवा का झोंका या हिलकोरा।** उ.—नील पीत सित अरुन ध्वजा चल सीर समीर झकोल।

झक्क—वि. [अनु.] **खूब साफ और चमकीला।**

संज्ञा स्त्री. [हिं.] **धुन, सनक, लहर।**

झक्कड़—संज्ञा पुं. [अनु.] **आँधी, अंधड़, तूफान।**

वि. [हिं. झक्की] (१) **बकवादी।** (२) **सनकी।**

झक्का—संज्ञा पुं. [अनु.] **हवा का झोंका, झक्कड़, आँधी।**

झक्की—वि. [अनु.] (१) **बकवादी।** (२) **सनकी।**

झक्खना—क्रि. अ. [हिं. झीखना] **खीजना, कुढ़ना।**

झख—संज्ञा स्त्री. [हिं. झीखना] **झीखने का भाव।**

मुहा.—झख मारना—(१) **बेकार समय खराब करना।** (२) **अपनी दशा बिगाड़ना।** (३) **लाचार होकर कुढ़ना।** झख मारि—**लाचार होकर, विवश होकर, अछताते-पछताते।** उ.—सूर अपनो अंस पावै, जाहिं घर झख मारि—११३५।

झखकेतु—संज्ञा पुं. [सं. झषकेतु] **कामदेव।**

झखत—क्रि. अ. [हिं. झीखना] **दुखी होता या खीजता है, झीखता है।** उ.—(क) बाबा नंद झखत किहिं कारन, यह कहि मया मोह अरुझाइ। सूरदास-प्रभु मातु-पिता कौ, तुरतहिं दुख डारयौ बिसराइ—५३१।

झखना—क्रि. अ. [हिं. झीखना] **झुँझलाना, झीखना।**

झखनिकेत—संज्ञा पुं. [सं. झषनिकेत] **कामदेव।**

झखराज—संज्ञा पुं. [सं. झषराज] **मगर, मकर।**

झखलगन, झखलग्न—संज्ञा पुं. [सं. झषलग्न] **मीनलग्न।**

झखिआँ, झखियाँ, झखी—संज्ञा स्त्री. [सं. झष] **मछली, मीन।** उ.—आवत बन तें साँझ देखो मैं गायन माँझ काहू को ढोटा री एक सीस मोर पखियाँ। अतसी कुसुम जैसे चंचल दीरघ नैन मानो रसभरी जो लरति जुगल झखिआँ—२३६६।

झगड़ना—क्रि. अ. [हिं. झकझक से अनु.] (१) **हुज्जत, तकरार या तेज वाद-विवाद करना।** (२) **लड़ाई-**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झगड़ा करना।

झगड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. झकझक से अनु.] (१) **हुज्जत, तकरार, तेज वाद-विवाद। (२) लड़ाई,मारपीट।**

झगड़ालू—वि. [हिं. झगड़ा+आलू (प्रत्य.)] (१) **हुज्जती, बकवादी। (२) लड़ाई-झगड़े में लगा रहने या रुचि लेनेवाला।**

झगड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झगड़ा] (१) **झगड़ा करनेवाली। (२) अपने नेग या हक के लिए झगड़नेवाली।**

झगर—संज्ञा पुं. [देश.] **एक चिड़िया।**

क्रि. अ. [हिं. झगड़ना] **झगड़ा करके।**

झगरत—क्रि. अ. [हिं. झगड़ना] **झगड़ा करते हैं, लड़ते-झगड़ते हैं, वाद-विवाद करते हैं।** उ.—(क) खेलत-खात गिरावहीं, झगरत दोउ भाई—१०-१६२। (ख) आपुनि हारि सखनि सौं झगरत यह कहि दियौ पठाइ—१०-२१४। (ग) ब्रज की ढीठी गुवारि, हार की बेचनहारि, सकुचै न देत गारि झगरत हूँ—१०-२६५। (घ) नितहीं झगरत हैं मनमोहन, देखि प्रेम-रस-चाखी—७७४।

झगरना—क्रि. अ. [हिं. झगड़ना] **झगड़ा करना, लड़ना।**

झगरा—संज्ञा पुं. [हिं. झगड़ा] **हुज्जत, लड़ाई।**

झगराऊ—वि. [हिं. झगड़ालू] **झगड़ा करनेवाला।**

झगरि—क्रि. अ. [हिं. झगड़ा] **झगड़ा करके, लड़-झगड़कर, वाद-विवाद करके।** उ.—एक दूध-फल, एक झगरि चबेना लेत, निज निज कामरि के आसननि कीने—४६७।

झगरिनि, झगरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झगड़ी] (१) **झगड़ने-लड़नेवाली। (२) अपने नेग के लिए झगड़नेवाली।** उ.—(क) बहुत दिननि की आसा लागी, झगरिनि झगरौ कीनौ—१०-१५। (ख) झगरिनि तैं हौं बहुत खिझाई। कंचन-हार दिऐ नहि मानति, तुहीं अनोखी दाई—१०-१६। (ग) जसुमति लटकति पाइ परै। तेरौ भलौ मनैहौं झगरिनि, तू मति मनहिं डरै—१०-१७।

झगरू—वि. [हिं. झगड़ालू] **कलहप्रिय, झगड़ा-बखेड़ा करनेवाला, लड़ाकू।** उ.—लोभी, लौंद, मुकरवा, झगरू, बड़ौ पढ़ैलौ, लूटा—१-१८६।

झगरै—क्रि. अ. [हिं. झगड़ना] **झगड़ा करे, वाद-विवाद करे, लड़े।** उ.—(क) सूरदास स्वामी प्रगटे हैं, औसर पै झगरै—१०-१७। (ख) कब मेरौ अँचरा गहि मोहन, जोइ-सोइ कहि मोसौं झगरै—१०-७६।

झगरो, झगरौ—संज्ञा. पुं. [हिं. झगड़ा] **झगड़ा, वाद-विवाद, हुज्जत, तकरार।** उ.—(क) बहुत दिननि की आसा लगी, झगरिनि झगरौ कीनौ—१०-१५। (ख) स्याम करत माता सौं झगरौ—१०-६४। (ग) भोरहिं नित प्रति ही उठि, मोसों करत झगरो—१०-३३६। (घ) हमहिं तुमहिं कैसोई झगरो सूर सुजान हम गँवारी—१०३०। (ङ) दान देत की झगरो करिहौ—११२४।

झगला, झगा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) **बच्चों का ढीला-ढाला कुरता।** उ.—(क) नंद-उदौ सुनि आयौ हो, वृषभानु कौ जगा। दैवे कौं बड़ौ महर, देत न लावै गहर, लाल की बधाई पाऊँ लाल कौ झगा—१०-३६। (ख) झगा पगा अरु पाग पिछौरी ढाढ़िन को पहिरायौ। (२) **ढीला-ढाला बड़ा कुरता।**

झगुलि, झगुलिआ, झगुलिया, झगुली—संज्ञा स्त्री. [हिं. झगा का अल्पा.] **ढीलाढाला बच्चों का छोटा कुरता।** उ.—प्रफुलित ह्वै कै आनि, दीनी है जसोदा रानी झीनीयै झगुलि तामैं कंचन-तगा—१०-३६।

झज्झर—संज्ञा पुं. [सं. अलिंजर] **मिट्टी का एक छोटा पात्र जिसमें गर्मी में पानी ठंढा करते हैं।**

झज्झी—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) **फूटी कौड़ी। (२) दलाली में प्राप्त धन।**

झझक—संज्ञा स्त्री. [हिं. झझकना] (१) **झिझक, भड़क।**

मुहा.—झझक निकलना—**भय-संकोच दूर होना।** झझक निकालना—**भय-संकोच दूर करना।**

(२) **झुँझलाहट। (३) अप्रिय गंध। (४) कुछ सनक।**

झझकन—संज्ञा स्त्री. [हिं. झझकना] **संकोच, भड़क।**

झझकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **भय या आशंका से ठिठकना या भड़कना। (२) झुँझलाना। (३) चौंकना।**

झझकनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. झझकना] **झिझक, भड़क।** उ.—वह रस की झझकनि, वह महिमा, वह मुसुकनि वैसो संजोग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झझकाना—क्रि. स. [हिं. झझकना का प्रे.] (१) भय या आशंका से बिदकाना या भड़काना। (२) खिझाना। (३) चौंका देना।

झझकार—संज्ञा स्त्री. [हिं. झझकारना] डाँटने, डपटने या दुरदुराने का भाव या कार्य।

झझकारत—क्रि. स. [अनु.] अपने सामने मंद या फीका कर देता है। उ.—नख मानो चंदबान साजि कै झझकारत उर आयौ—१६७२।

झझकारना—क्रि. स. [अनु.] (१) डाँटना-डपटना। (२) दुतकारना, दुरदुराना। (३) अपने सामने कुछ न गिनना-समझना, तुलना में मंद या हीन कर देना।

झझकि—क्रि. अ. [हिं. झझकना (अनु.)] (१) चौंककर। प्र.—झझकि उठे, उठ्यौ—चौंक पड़ा। उ.—(क) जसुमति मन-मन यहै बिचारति। झझकि उठ्यौ सोवत हरि अबहीं, कछु पढ़ि-पढ़ि तन-दोष निवारति—१०-२००। (ख) जागे नंद, जसोदा जागी, बोलि लिए हरि पास। सोवत झझकि उठे काहे तैं, दीपक कियौ प्रकास—५१७।

(२) भय-आशंका से चमककर, बिदककर या भड़ककर। उ.—मिलति भुज कंठ दै रहति अँग लटकि कै जात दुख दूरि ह्वै झझकि सपने—१७४७। (३) संकुचित हुए, सकुचाये। उ.—अति प्रतिपाल कियो तुम हमरो सुनत नंद जिय झझकि रहे—२६४६।

झझक्यौ—क्रि. अ. [हिं. झझकना (अनु.)] चौंक पड़ा, आशंकित हुआ। उ.—केहरी-नख निरखि हिरदै, रहीं नारि बिचारि। बाल-ससि मनु भाल तैं लै उर-धर्‍यौ त्रिपुरारि। देखि अंग अनंग झझक्यौ, नंद-सुत हर जान—१०-१७०।

झट—क्रि. वि. [सं. झटिति] तुरंत, फौरन, तत्क्षण। मुहा.—झट से—जल्दी से, तुरंत ही।

झटकना—क्रि. स. [हिं. झट] (१) झटका देना, झोंका देकर हिलाना। (२) जोर से हिलाना, झोंका देना। मुहा.—झटक कर—झोंके या झटके से, तेजी से। (३) दबाव, चालाकी या छल से कोई चीज लेना, ऐंठना। मुहा.—झटके का माल—दबाव, चालाकी या छल से लिया हुआ, ऐंठा हुआ या चुराया हुआ माल। क्रि. अ.—रोग-शोक से बहुत दुबला हो जाना।

झटका—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) झोंका, धक्का। (२) धक्के का भाव। (३) एक ही वार में पशु का वध करने का ढंग। (४) रोग-शोक का आघात।

झटकारना—क्रि. स. [हिं. झटका] झटका देना।

झटकि—क्रि. स. [हिं. झटकना] (१) झटका या धक्का देकर। उ.—(क) धरनि पट पटकि कर झटकि भौंहनि मटकि अटकि तहाँ रीझे कन्हाई। (ख) रिसन उठी झहराइ झटकि भुज छुवत कह पिय सरस नाहीं—२१४२। (२) झटक कर, झिटका खाकर। उ.—किलकि झटकि उलटे परे देवन मुनि-राई—१०-६६।

झटकाई—क्रि. स. [हिं. झटकना] झटके से छीनी। उ.—यहि लालच अँकवारि भरत हौ हार तोरि चोली झटकाई।

झटकी—क्रि. स. [अनु.] झटका दिया, फटकारी। उ.—(क) बिषधर झटकी पूँछ फटकि सहसौ फन काढ़ो—५८६। (ख) छोरे ते नहीं छुटति कइक वेर झटकी—१२००।

झटकैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. झटका] झटके से, झटकने से। उ.—कठिन जो गाँठि परी माया की, तोरी जाति न झटकैं—१-२६२।

झटक्यौ—क्रि. स. [हिं. झटकना] झोंका दिया, झटका, (किसी चीज को) जोर से हिलाया। उ.—बृच्छ-जीव ऊखल लै अटक्यौ। आगैं निकसि नैंकु गहि झटक्यौ—३६१।

झटपट—अव्य. [हिं. झट + पट] तुरंत ही, फौरन।

झटाका—क्रि. वि. [हिं. झड़ाका] चटपट।

झटास—संज्ञा स्त्री. [हिं. जड़ी] बौछार।

झटिका—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाटा] जूही।

झटित—क्रि. वि. [सं.] (१) झटपट, तुरंत, तत्काल। (२) बिना समझे-बूझे।

झट्ट—क्रि. वि. [हिं. झट] तुरंत, शीघ्र, तत्काल।

झड़—संज्ञा स्त्री. [हिं. झड़ना] वर्षा की झड़ी।

झड़कना—क्रि. स. [हिं. झिड़कना] (१) अपमान या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनादर करते हुए कुछ कहना। (२) अलग फेंक देना।

झड़क्का—संज्ञा पुं. [हिं. झड़का] झड़प, मुठभेड़।

झड़झड़ाना—क्रि. स. [हिं. झिड़कना] डाँटना।
क्रि. स. [हिं. झँझोड़ना] झोंका-झटका देना।

झड़न—संज्ञा स्त्री. [हिं. झड़ना] (१) झाड़ने से गिरी हुई चीज। (२) झाड़ने की क्रिया या भाव।

झड़ना—क्रि. अ. [सं. क्षरण] (१) कण या बूँद के रूप में गिरना। (२) बहुत अधिक गिरना। (३) झाड़कर साफ किया जाना।

झड़प—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) झगड़ा, मुठभेड़, लड़ाई। (२) क्रोध, गुस्सा, जोश, आवेश। (३) आग की लपट।

झड़पना—क्रि. अ. [अनु.] (१) वेग से गिरना। (२) आक्रमण करना। (३) छोपना। (४) लड़ना-झगड़ना। (५) छीनना, ऐंठना।

झड़पा झड़पी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] हाथापाई।

झड़पाना—क्रि. स. [हिं. झड़प] दूसरों को लड़ाना।

झड़बेरी, झड़बैरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाड़+बेरी] जंगली बेर का पौधा या फल।
मुहा.—झड़बेरी का काँटा—झगड़ालू आदमी।

झड़वाना—क्रि. स. [हिं. झाड़ना का प्रे.] झाड़ने का काम दूसरे से कराना, झाड़ने में लगाना।

झड़ाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाड़ना] झाड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झड़ाक, झड़ाका—संज्ञा पुं. [अनु.] झड़प, मुठभेड़।
क्रि. वि.—जल्दी से, चटपट, तुरंत।

झड़ाझड़—क्रि. वि. [अनु.] लगातार, जल्दी-जल्दी।

झड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झड़ना] (१) कणों या बूँदों के बराबर गिरने की क्रिया। (२) छोटी बूँदों की वर्षा। (३) लगातार वर्षा। (४) बिना रुके बहुत सी बातें कहे या बकते जाना।

झन—संज्ञा स्त्री. [अनु.] धातुखंड बजने की ध्वनि।

झनक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] झनकार का शब्द।

झनकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) झनकारना, झनझनाना। (२) क्रोध से हाथ पैर पटकना। (३) चिड़चिड़ाना।

झनकमनक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] गहनों की झनकार।

झनकार—संज्ञा स्त्री. [हिं. झंकार] झनझन की ध्वनि, गहनों की झनक। उ.—(क) किंकिनी कटि कुनित कंकन कर चुरी झनकार—१७२९। (ख) छीन लंक कटि किंकिनि बाजत अति झनकार—२७६२।

झनकारना—क्रि. स. [हिं. झनकार] झनझन करना।
क्रि. अ.—झनझन शब्द होना।

झनकारनो—क्रि. स. [हिं. झनकारना] गहनों का बजकर झनझन करना। उ.—मनिमय नूपुर कुनित कंकन किंकिनी झनकारनो—२२८०।

झनकारा—संज्ञा स्त्री. [सं. झंकार] झनझन शब्द, झनकार। उ.—समदत भई अनाहत बानी, कंस-कान-झनकारा—१०-४।

झनझन—संज्ञा स्त्री. [अनु.] झनकार।

झनझना—संज्ञा पुं. [देश.] 'चनचना' कीड़ा।
वि. [अनु.] जिससे झनझन शब्द निकले।

झनझनाना—क्रि. अ. [अनु.] झनझन शब्द होना।
क्रि. स.—झनझन का शब्द करना।

झनझनाहट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] झनकार।

झननन—संज्ञा पुं. [अनु.] झनझन शब्द, झंकार।

झननाना—क्रि. स. [अनु.] झनझन शब्द करना।
क्रि. अ.—झनझन शब्द होना।

झनस—संज्ञा पुं. [हिं. झन] एक प्राचीन बाजा।

झनाझन—संज्ञा स्त्री. [अनु.] झनझन शब्द, झंकार।
क्रि. वि.—झनझन शब्द के साथ।

झनिया—वि. [हिं. झीना] बहुत महीन, झीना। उ.—कनक रतन मनि जटित कटि किंकिन कलित पीत पट झनिया।

झन्नाहट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] झनझनाहट।

झप—क्रि. वि. [सं. झंप=जल्दी से कूदना] जल्दी से, तुरंत, झटपट। उ.—खेलत खेलत जाइ कदम चढ़ि झप जमुना-जल लीन्हो।

झपक—संज्ञा स्त्री. [हिं. झपकना] (१) पलक झपकने का थोड़ा समय। (२) पलक का गिरना। (३) हलकी नींद, झपकी। (४) शर्म, झेंप।

झपकना—क्रि. अ. [सं. झंप] (१) पलक गिरना। (२) हलकी नींद या झपकी लेना। (३) झपट कर आगे बढ़ना। (४) ढकेलना। (५) झेंपना। (६) सहमना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झपका—संज्ञा पुं. [अनु.] हवा का झोंका।
झपकाना—क्रि. स. [अनु.] बराबर पलकें गिराना।
झपकी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) हलकी नींद, ऊँघ। (२) आँख झपकना। (३) कपड़ा जो अनाज ओसाने में हवा करने के काम आता है। (४) धोखा, चकमा।
झपकौहाँ, झपकौहें—वि. पुं. [हिं. झपना] (१) नींद से भरा या ऊँघता हुआ। (२) मस्त, नशे में चूर।
झपकौहीं—वि. स्त्री. [हिं. झपकौहाँ] (१) नींद-भरी, झपकती या ऊँघती हुई। (२) मस्त, नशे में चूर।
झपट—संज्ञा स्त्री. [सं. झंप = जल्दी से कूदना] झपटने की क्रिया या भाव।
यौ.—लपट-झपट—झपटने की क्रिया या भाव।
मुहा.—झपट लेना—तेजी से आगे बढ़कर छीनना।
झपटत—क्रि. अ. [हिं. झपटना] झपटती है, सवेग बढ़ती है। उ.—झपटि झपटत लपट, फूल-फल चट चटकि, फटत, लटलटकि द्रुम द्रुमनवायौ—५६६।
झपटना—क्रि. अ. [हिं. झपट] (१) तेजी या झोंके से बढ़ना। (२) पकड़ने या आक्रमण के लिए टूटना।
क्रि. स.—झपट कर पकड़ या छीन लेना।
झपटा—क्रि. अ. [हिं. झपटना] लपका, दौड़ा।
झपटान—संज्ञा स्त्री. [हिं. झपटना] झपट।
झपटाना—क्रि. स. [हिं. झपटने का प्रे.] (१) झपटने में प्रवृत्त करना, दौड़ाना। (२) विपक्षी पर धावा या आक्रमण कराना।
झपटि—क्रि. अ. [हिं. झपटना] किसी (वस्तु या व्यक्ति की) ओर झोंके के साथ बढ़कर, सवेग चलकर। उ.—झपटि झपटत लपट, फूल-फल चट चटकि, फटत, लटलटकि द्रुम द्रुमनवायौ—५६६।
झपट्ट—संज्ञा स्त्री. [हिं, झपट] झपटने की क्रिया।
झपट्टा—संज्ञा पुं. [हिं. झपट] तेजी से लपककर झटका या झोंका देने की क्रिया या भाव।
झपताल—संज्ञा पुं. [देश.] संगीत में एक ताल।
झपति—क्रि. अ. [हिं. झपना] (१) झपकी लेती है। (२) झुकती है। (३) लजित होती या झेंपती है।
झपना—क्रि. अ. [अनु.] (१) आँखें झपकना, पलक गिरना। (२) झुकना। (३) झेंपना, लज्जित होना।
झपनी—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) ढकना। (२) पिटारी।
संज्ञा स्त्री. [हिं. झपना] झपकी, ऊँघ।
झपलैया—संज्ञा स्त्री [हिं. झँपोला] छोटा झाबा।
झपवाना—क्रि. स. [अनु.] झपाने में लगाना।
झपस—संज्ञा स्त्री. [हिं. झपसना] (१) गुंजान होने की क्रिया या भाव। (२) झुकी हुई डाल या शाखा।
झपसना—क्रि. अ. [हिं. झँपना = ढँकना] लता या पेड़-पौधे का खूब गुंजान या घना होकर फैलना।
झपाका—संज्ञा पुं. [हिं. झप] शीघ्रता, जल्दी।
क्रि. वि.—जल्दी से, शीघ्र ही।
झपाट—क्रि. वि. [हिं. झपट] शीघ्र ही, तुरंत।
झपाटा—संज्ञा पुं. [हिं. झपट] (१) चपेट, आक्रमण। (२) झपट्टा, झपट।
झपाना—क्रि. स. [हिं. झपना] (१) मूँदना, बंद करना, झपकाना। (२) झुकाना।
झपाव—संज्ञा पुं. [देश.] घास काटने का औजार।
झपि—क्रि. वि. [सं. झंप = जल्दी से गिरना, कूदना] जल्दी से, तुरंत, झटपट। उ.—खेलत खेलत जाइ कदम चढ़ि, झपि जमुना-जल लीन्हौ—५७६।
झपित—वि. [हिं. झपना] (१) मुँदा हुआ, बंद। (२) जिसमें नींद भरी हो, उनींदा। (३) झेंपा हुआ।
झपिया—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक गहना। पिटारी।
झपेट—संज्ञा स्त्री. [हिं. झपट] झपट, वेग।
झपेटना—क्रि. स. [अनु.] दबोचना, छोपना।
झपेटा—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) झपट, वेग की चपेट। (२) भूत-प्रेत की बाधा। (३) हवा का झोंका।
झपोला—संज्ञा पुं. [हिं. झँपोला] छोटा झाबा।
झपोली—संज्ञा स्त्री. [हिं. झँपोली] छोटी डलिया।
झप्पड़, झप्पर—संज्ञा पुं. [अनु.] झापड़, थप्पड़।
झप्पान—संज्ञा पुं. [हिं. झंपान] खटोली की सवारी।
झप्पानी—संज्ञा पुं. [हिं. झंपान] झप्पान उठानेवाला।
झब—संज्ञा पुं. [हिं. झब्बा] गुच्छा, फुंदना।
झबझबी—संज्ञा स्त्री [देश.] कान का एक गहना।
झबड़ा, झबरा—वि. [हिं झबरा] बड़े बालवाला।
झबधरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक घास।
झबरीला—वि. [हिं. झबड़ा + ईला (प्रत्य.)] (१) बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिखरा-घुंघराला (बाल) । (२) ऐसे बालवाला ।

झबरीली—वि. स्त्री. [हि. झबरीला] **बड़े बाल वाली ।**

झबरैरा—वि. [हिं. झबरीला] **बड़ा, बिखरा हुआ और घुंघराला ।** उ.—कुंतक कुटिल छवि राजत झबरैरी। लोचन चपल तारे रुचिर भँवरैरी।

झबा—संज्ञा पुं. [हिं. झब्बा] **रेशमी या सूती फुँदना या गुच्छा ।** उ.—सीस फूल धरि पाटी पोंछत फूँदनि झबा निहारत।

झबार, झबारि—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **झगड़ा, बखेड़ा ।** (क) वहुत अचगरी जिन करौ अजहूँ तजौ झबारि। (ख) वड़े घर की बहू बेटी करति बृथा झबारि।

झबिया—संज्ञा स्त्री. अल्पा. [हिं. झब्बा] (१) **छोटा फुंदना या गुच्छा ।** (२) **सोने-चाँदी की छोटी-छोटी कटोरियाँ जिनसे गहनों का फुँदना तैयार होता है ।**

झबुआ—वि. [हिं. झबरा] **बड़े बालवाला ।**

झबूकना—क्रि. अ. [अनु.] **भड़कना, बिदकना ।**

झबूकै—क्रि. अ. [हिं. झबूकना] **भड़कते हैं ।**

झब्बा—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) **रेशमी-सूती तारों का गुच्छा या फुँदना ।** (२) **एक सी चीजों का गुच्छा ।**

झमक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **प्रकाश, उजेला ।** (२) **झमझम शब्द ।** (३) **ठसक या नखरे की चाल ।**

झमकत—क्रि. अ. [हिं. झमकना] **गहनों की झमझम-छमछम के साथ उछलता-कूदता है ।** क.—कबहुँक निकट देखि बरसा रितु झूलत सुरँग हिंडोरे। रमकत झमकत जनकसुता सँग हाव-भाव चित चोरे—सारा. ३१० ।

झमकना—क्रि. अ. [हिं. झमक] (१) **चमकना, दमकना, प्रकाश करना ।** (२) **छा जाना, झपकना ।** (३) **झमझम की ध्वनि होना ।** (४) **गहनों की झनकार के साथ उछलना-कदना ।** (५) **गहने झनकारते हुए नाचना ।** (६) **हथियारों का चमकना और खनकना ।** (७) **ठसक दिखाना ।** (८) **झमझम शब्द करना ।**

झमकनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. झमकना] **झमझम ध्वनि ।** उ.—(क) दामिनि की दमकनि, बूँदनि की झमकनि सेज की तलफ कैसे जीजियत माई है—२८२७। (ख) पग जेहरि बिछियन की झमकनि चलत परस्पर बाजत।

झमकाइ—क्रि. स. [हिं. झमकना] **आभूषण आदि बजाकर और ठसक दिखाकर ।** उ.—(क) सूर स्याम आए ढिग आपुन घट भरि चलि झमकाइ—८८४। (ख) ग्वारि घट सिर धरि चली झमकाइ—८८५।

झमकाई—क्रि. स. [हिं. झमकना] (१) **गहनों की छमछमाहट की ।** (२) **ठसक दिखायी ।**

झमकाना—क्रि. स. [हिं. झमकना] (१) **चमक पैदा करना ।** (२) **आभूषण झमझमाना ।** (३) **हथियार चमकाना या खनखनाना ।**

झमकार, झमकारा, झमकारे—वि. [हिं. झमझम] **झमाझम बरसने या पानी बरसानेवाला (बादल) ।**

झमकि—क्रि. अ. [हिं. झमकना] (१) **गहनों का झमझम शब्द या झनकार की ध्वनि करके ।** उ.—हँसत नंद, गोपी सब बिहँसीं, झमकि चलीं सब भीतर ढुरकी—१०-१८० । (२) **झपकी लेकर, (नींद आदि) छाकर ।** उ.—आलस सौं कर कौर उठावत, नैननि नींद झमकि रही भारी—१०-२२८। (३) **झमझम शब्द करके ।** उ.—तैसिये नन्ही बूँदनि बरसतु झमकि झमकि झकोर। (४) **तेजी करके, झमक दिखाकर ।** उ.—धमकि मारयौ घाउ गुमकि हृदय रह्यौ झमकि गहि केस लै चले ऐसे—२६१५।

झमझम—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **घुंघरू आदि का छमाछम शब्द ।** (२) **पानी बरसने का शब्द ।** (२) **चमक-दमक ।**

क्रि. वि.—(१) **छमाछम ध्वनि के साथ ।** (२) **चमक-दमक के साथ ।**

वि.—**जिससे खूब चमक-दमक या आभा हो ।**

झमझमाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **झमझम शब्द होना ।** (२) **चमकना, चमचमाना ।**

क्रि. स.—(१) **झमझम करना ।** (२) **चमकाना ।**

झमझमाहट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **झमझम होने की क्रिया या भाव ।** (२) **चमकने की क्रिया या भाव ।**

झमना—क्रि. अ. [अनु.] **झुकना, नम्र होना ।**

झमा—संज्ञा पुं. [हिं. झाँवाँ] **झाँवाँ ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झमाई—क्रि. अ. [हिं. झमाना] (नेत्रों में नींद) छा गयी या भर गयी। उ.—खेलत तुम निसि अधिक गई सुत नैनन नींद झमाई।

झमाका—संज्ञा पु. [अनु.] (१) पानी बरसने या गहने बजने का शब्द। (२) चटक-मटक, ठसक, नखरा।

झमाझम—क्रि. वि. [अनु.] (१) चमक-दमक के साथ। (२) झमझम या छमछम शब्द के साथ।

झमाट—संज्ञा पुं. [अनु.] झुरमुट।

झमाना—क्रि. अ. [अनु.] (नींद से) झपकना।

क्रि. अ. [हिं. झँवाना] (१) कुछ काला पड़ जाना। (२) घटना, कम होना। (३) कुम्हलाना। (४) झाँवे से रगड़ा जाना।

क्रि. स.—इकट्ठा या एकत्र करना।

झमी—क्रि. अ. [हिं. झमना] झुकी, नम्र हुई। उ.—मुरली स्याम के कर अधर-बिंब रमी। .... । महा कठिन कठोर आली बाँस बंस जु जमी। सूर पूरन परसि श्रीमुख नैक नाहीं झमी।

झमूरा—वि. [हिं. झबूरा] (१) बड़े बालवाला, झबड़ा। (२) जो ढीले-ढाले कपड़े पहने हो।

झमेल—संज्ञा स्त्री. [हिं. झमेला] झगड़ा, झंझट।

झमेला—संज्ञा पुं. [अनु. झाँव झाँव] (१) झगड़ा, बखेड़ा, झंझट। (२) भीड़-भाड़, जमावड़ा, झुंड।

झमेलिया—वि. [हिं. झमेला+इया (प्रत्य.)] झगड़ालू।

झर—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) पानी गिरने का स्थान। (२) पर्वत से निकलता हुआ जलप्रवाह। (३) समूह, झुंड। (४) तेजी, वेग। उ.—प्रात गई नीके उठि घर तैं। मैं बरजी कहाँ जात री प्यारी तब खीझी रिस झर तैं—७४४। (५) लगातार वर्षा, वर्षा की झड़ी। उ.—सूरदास के प्रभु सों कहियौ नैनन है झर लायौ—२८१५। (६) किसी वस्तु की लगातार वर्षा। उ.—सूरदास तबही तम नासै ग्यान अगिनि झर फूटै—२-१६। (७) आँच, ताप, लपट, ज्वाला। उ.—(क) सूरस्याम अंकम भरि लीन्हो बिरह अगिनि झर तुरत बुझानी। (ख) स्याम गुन-रासि मानिनी मनाई। रह्यौ रस परस्पर मिटयौ तनु बिरह-झर भरी आनँद त्रिय उर न माई। (ग) नहिं दामिनि द्रुम-दवा सैल चढ़ि फिरि बयारि उलटी झर धावति—३४८५। (८) ताले का खटका।

झरक—संज्ञा स्त्री. [हिं. झलक] चमक-दमक।

झरकना—क्रि. अ. [हिं. झलकना] (१) चमक-दमक होना। (२) कुछ कुछ प्रकट या आभासित होना।

क्रि. अ. [हिं. झिड़कना] घुड़कना, डाँटना।

झरकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झिड़की] झिड़की। उ.—रोवति देखि जननि अकुलानी दियो तुरत नौआ को झरकी (घुरकी)—१०-१८०।

झरझर—संज्ञा स्त्री. [अनु.] जल बहने, बरसने या हवा चलने से होनेवाला शब्द।

झरझराति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. झरझराना (अनु.)] झरझर शब्द करके, झरझराकर। उ.—झरझराति भहराति लपट अति, देखियत नहीं उबार—५९३।

झरझराना—क्रि. स. [अनु.] झरझर शब्द करना।

झरत—क्रि. अ. [हिं. झड़ना] बहते रहते हैं, प्रवाहित रहते हैं। उ.—झरना लौं ये झरत रैन दिन उपमा सकल बहीं।

झरना—क्रि. अ. [सं. क्षरण] (१) झड़ना, बहना। (२) ऊपर से जल-धारा गिरना।

संज्ञा पुं.—(१) बड़ा छलना या चलना। (२) बड़ा करछुल, पौना। (३) एक घास।

संज्ञा पुं. [हिं. झर] (१) ऊँचे स्थान से गिरनेवाला जल-प्रवाह। (२) लगातार बहनेवाली जल-धारा, सोता।

वि.—(१) जो झरता हो। (२) जिससे झरता हो।

झरन—संज्ञा स्त्री. [हिं. झरना] (१) झड़ने की क्रिया या भाव (२) झड़ी हुई वस्तु।

झरनि, झरनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झरना] झरने की क्रिया, भाव या रीति।

वि.—(१) झरनेवाला। (२) जिससे झरता हो।

झरप—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) झोंका, झकोरा। (२) वेग, तेजी। (३) टेक, सहारा। (४) परदा, चिलमन। (५) लड़ाई-झगड़ा। (६) क्रोध, गुस्सा (७) जोश, आवेश। (८) आग की लौ या लपट।

झरपत—क्रि. अ. [हिं. झरपना] (१) झोंका देता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बौछार मारता है। उ.—बरषत गिरि झरपत ब्रज ऊपर—१०५४। (२) **लड़ता-झगड़ता है।** उ.—एते पर कबहूँ जब आवत झरपत लरत घनेरो।

झरपना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **झोंका देना, बोछार मारना।** (२) **वेग से टूटना।** (३) **लड़ना-झगड़ना।**

झरपेटा—संज्ञा पुं. [हिं. झपट] **झपट, झपट्टा।**

झरबेर—संज्ञा पुं. [हिं. झड़बेर] **जंगली बेर।**

झरबेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झड़बेरी] **जंगली बेर।**

झरवाना—क्रि. स. [हिं. झाड़ना का प्रे.] (१) **झाड़ने में दूसरे को लगाना।** (२) **झड़वाना।**

झरसना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **आग या गरमी से झुलसना।** (२) **मुरझाना, कुम्हलाना, सूखना।**

क्रि. स.—(१) **झुलसाना।** (२) **मुरझा देना।**

झरहरना—क्रि. अ. [अनु.] **झरझर शब्द करना।**

झरहरा—वि. [हिं. झँझरा] **छेददार।**

झरहरात—क्रि. अ. [हिं. झरहराना] **हवा के झोंके से पत्तों का शब्द करना, झरझर ध्वनि करके गिरना।** उ.—झरहरात बन-पात, गिरत तरु, धरनी तरकि तराकि सुनाइ—५६४।

झरहराना—क्रि. अ. [अनु.] **हवा के झोंके से पतों का झर-झर शब्द करते हुए गिरना।**

क्रि. स.—(१) **झरझर शब्द सहित पत्तों आदि को गिराना।** (२) **झाड़ना, झटकना।**

झरहरि—क्रि. अ. [हिं. झरहरना] **झरझर शब्द करके।** उ.—अजहूँ चेति मूढ़, चहुँ दिसि तैं उपजी काल-अगिनि झर झरहरि। सूर काल-बल-व्याल ग्रसत है, श्रीपति-सरन परत किन फरहरि—१-३१२।

झरहिल—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक चिड़िया।**

झरा—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह का धान।**

झराझर—क्रि. वि. [अनु.] (१) **झरझर शब्द के साथ।** (२) **लगातार।** (३) **वेग के साथ।**

झराबोर—संज्ञा पुं. [हिं. लाबोर] (१) **कलाबातून का कढ़ा-बुना साड़ी या चादर का अंचल।** (२) **कारचोबी।** (३) **काँटा, झाड़ी।** (४) **चमक।**

वि. [हिं. झलमल=चमक] **चमकीला।**

झरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. झड़ी] **लगातार वर्षा, झड़ी, बराबर पानी बरसना।** उ.—करन मेघ बान-बूँद भादौं-झरि लायौ—१-२३।

क्रि. अ. [हिं. झड़ना] **झड़कर, गिर कर।** उ.—हरि बिनु फूल झरी सी लागत झरि झरि परत अँगार—२७६८।

झरिफ—संज्ञा पुं. [हिं. झरप] **परदा, चिलमन।**

झरिबो—संज्ञा पुं. [हिं. झड़ना] **गिरने या प्रवाहित रहने की क्रिया या भाव।** उ.—प्राननाथ संगहुँते बिछुरे रहत न नैन-नीर कौ झरिबो—२८६०।

झरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झरना] (१) **झरना, सोता, स्रोत।** (२) **छोटे दूकानदारों से किराये या ब्याज-रूप में प्राप्त धन।** (३) **लगातार वर्षा, वर्षा की झड़ी।** उ.—कबहुँ न मिटत सदा पावस ब्रज लागी रहत झरी—३४४५।

संज्ञा स्त्री. [हिं. झर] **आँच, ताप, ज्वाला।** उ.—हरि बिनु फूल झरी सी लागत झरि झरि परत अँगार—२७६८।

झरुआ—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह की घास।**

झरे—क्रि. अ. [हिं. झड़ना] **झड़े, गिरे।** उ.—ज्यों सरिता पर्वत की खोरी प्रेम पुलक स्रम-स्वेद झरे री—पृ. ३२७।

झरै—क्रि. अ. [हिं. झड़ना] **झड़ते हैं, (मुख से वचन आदि) निकलते हैं।** उ.—कब द्वै दाँत दूध के देखौं, कब तोतरैं मुख वचन झरै—१०-७६।

झरोखा—संज्ञा पुं. [अनु. झरझर + गौख] **छोटी खिड़की, मोखा, गौखा, गवाक्ष।** उ.—(क) झाँकति झपति झरोखा बैठी कर मीड़त ज्यौ मँखियाँ—२७६६। (ख) तहँ तहँ उझकि झरोखा झाँकति जनक नगर की नार—सारा. २०८।

झरोखैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. झरोखा] **खिड़की में (पर)।** उ.—चितवत हुती झरोखैं ठाढ़ी, किये मिलन कौ साजु—८०८।

झर्झर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हुड़ुक नामक बाजा।** (२) **कलियुग।** (३) **बड़ा करछुल, पौना।** (४) **झाँझ बाजा।** (५) **पैर का झाँझ नामक गहना।**

झर्झरक—संज्ञा पुं. [सं.] **कलियुग।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झर्झरा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) तारा देवी । (२) वेश्या ।

झर्झरी—संज्ञा पुं. [सं झर्झरिन्] शिव ।

संज्ञा स्त्री. [सं.] झाँझ नामक बाजा ।

झर्झरीक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देश । (२) देह ।

झर्यौ—क्रि. अ. [हिं. झरना=झड़ना] गिरा, बहा । उ.—करुना करत सूर कोसलपति, नैननि नीर झर्यौ—९-१४४ ।

झर्रा—संज्ञा पुं. [देश.] एक पक्षी ।

झरैंया—संज्ञा पुं. [देश.] बया नामक पक्षी ।

झल—संज्ञा पुं. [हिं. झार, सं. झल=ताप] (१) दाह, जलन । (२) उत्कट या तीव्र इच्छा । (३) विषय-भोग की कामना । (४) क्रोध, गुस्सा । (५) समूह, झुंड ।

झलक—संज्ञा स्त्री. [सं. झल्लिका=चमक] (१) आकृति का आभास, प्रतिबिंब । उ.—(क) पीत-बसन चंदन-तिलक, मोर-मुकुट, कुंडल-झलक, स्याम-घन-सुरंग-छलक, यह छबि तन लिए—४६० । (ख) चलित कुंडल गंड-मंडल लक ललित कपोल—६२७ । (७) चमक-दमक, प्रभा, द्युति ।

झलकत—क्रि. अ. [हिं. झलकना] चमकता है, दमकता है, झलकता है । उ.—(क) कुंडल लोल कपोलनि झलकत, मनु दरपन मैं झाईं री—१०-१३७ । (ख) चंचल दृग अंचल-पट-दुति-छबि, झलकत चहुँ दिसि झालरी—१०-१४० ।

झलकदार—वि. [हिं. झलक + फ़ा. दार] चमकीला ।

झलकना—क्रि. अ. [सं. झल्लिका=चमक] (१) चमकना, दमकना (२) आभास होना, जान पड़ना ।

झलकनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. झलक] झलक । उ.—सलिल झलकनि रूप आभा देख री नँदलाल—१२५६ ।

झलका—संज्ञा पुं. [सं. ज्वल=जलना] छाला, फफोला ।

झलकाउ—क्रि. स. [हिं. झलकाना] दिखाता है, दरसाता है । उ.—जोबन-मद रस अमृत भरे हैं रूप-रंग झलकाउ—११३३ ।

झलकाना—क्रि. स. [हिं. झलकना] (१) चमकाना-दमकाना । (२) दरसाना, दिखलाना ।

झलकावत—क्रि. स. [हिं. झलकाना] चमकाते हैं, दिखाते या दरसाते हैं । उ.—कैसे रूप हृदय राखति हौ वै तो अति झलकावत री—१६३४ ।

झलकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झलक] (१) चमक-दमक, आभा । (२) छाया, झलक, प्रतिबिंब ।

झलझल—संज्ञा स्त्री [हिं. झलकना] चमक-दमक ।

क्रि. वि.—चमक-दमक के साथ ।

झलझलाना—क्रि. अ. [अनु.] चमकना, चमचमाना ।

क्रि. स.—चमकाना, दमकाना, झलकाना ।

झलझलाहट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] चमक-दमक ।

झलना—क्रि. स. [हिं. झलझल से अनु.] (१) किसी चीज को हिलाकर हवा लगाना । (२) (पंखे आदि को हिलाकर) हवा करना । (३) ढकेलना, ढेलना, धक्के से आगे बढ़ाना ।

क्रि. अ.—(१) किसी चीज का इधर-उधर हिलना-डुलना । (२) शेखी बघारना, डींग हाँकना । (३) झाला जाना, टाँका लगाया जाना । (४) (वार, आघात आदि) झेला जाना ।

झलमल—वि. [हिं. झलमला] (१) झिलमिलाता हुआ, हिलती-डुलती लौ या ज्योतिवाला । उ.—झलमल दीप समीप सौंज भरि लेकर कंचन थालिका—८०६ ।

संज्ञा पुं. [सं. ज्वल=दीप्ति] (१) हल्का प्रकाश या उजाला । (२) अँधेरा । (३) चमक-दमक या आभा । उ.—मकर कुंडल गंड झलमल निरखि लजित काम—१४०० ।

क्रि. वि.—हल्की चमक-दमक या आभा के साथ ।

झलमला—वि. [हिं. झलमलाना] चमकता हुआ ।

झलमलात—क्रि. अ. [हिं. झलमलाना] अस्थिर ज्योति निकलती है, प्रकाश झिलमिलाता है । उ.—मैरा री मैं चंद लहौंगौ । कहा करौं जलपुट भीतर कौ, बाहर ब्यौंकि गहौंगौ । यह तौ झलमलात झकझोरत, कैसैं कै जु लहौंगौ—१०-१९४ ।

झलमलाति—क्रि. अ. [हिं. झलमलाना] रहरहकर ज्योति या आभा चमकती है । उ.—स्याम अलक बिच मोती गंगा । मानहु झलमलाति सीस गंगा ।

झलमलाना—क्रि. अ. [हिं. झलमल] (१) रहरह कर चमकना, चमचमाना । (२) हल्की, अस्थिर ज्योति या लौ निकलना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रि. स.—ज्योति या लौ का हिलना-डुलना ।

झलमले—वि. [हिं. झलमला] चमकीला, चमकता हुआ । उ.—ललित कपोलनि झलमले सुंदर अति निर्मल ।

झलरा—संज्ञा पुं. [हिं. झालर] चौड़ी झालर ।

झलराना—क्रि. अ. [हिं. झालर] फैलकर छा जाना ।

झलरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) एक बाजा । (२) झाँझ ।

झलवाना—क्रि. स. [हिं. झलना] (१) हवा करने का काम दूसरे से कराना । (२) झालने का काम कराना ।

झलहाया—संज्ञा पुं. [हिं. झल] ईर्ष्यालु, डाही ।

झला—संज्ञा पुं. [हिं. झड़] (१) हल्की या थोड़ी वर्षा । (२) झालर, बंदनवार । (३) पंखा । (४) समूह ।

संज्ञा स्त्री. [सं.] आतप, धूप ।

झलाझल—वि. [अनु.] खूब चमकता हुआ ।

झलाझली—वि. [अनु.] बहुत चमकदार ।

ंज्ञा स्त्री.—चमकने की क्रिया या भाव ।

झलाना—क्रि. स. [हिं. झलना] (१) हवा कराना । (२) झालने या टाँका देने का काम दूसरे से कराना ।

झलाबोर—संज्ञा पुं. [हिं. झलमल] (१) कलबत्तू से कढ़ा अंचल । (२) कारचोबी । (३) एक आतिशबाजी । (४) काँटा । (५) चमक ।

वि.—चमकीला, जिसमें चमक-दमक हो ।

झलामल—संज्ञा स्त्री. [हिं. लमल] चमक-दमक ।

वि.—चमकीला, जिसमें चमक-दमक हो ।

झल्ल—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) एक वर्णसंकर जाति । (२) भाँड़, विदूषक । (३) एक बाजा । (४) ज्वाला ।

संज्ञा स्त्री. [अनु.] झल्ला होने का भाव ।

झलकंठ—संज्ञा पुं. [सं.] कबूतर, परेवा ।

झल्लक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) करताल । (२) मंजीरा ।

झल्लना—क्रि. अ. [अनु.] डींग-हाँकना ।

झल्लरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) एक बाजा । (२) झाँझ । (३) पसीना, स्वेद, पसेव ।

झल्ला—संज्ञा पुं. [देश.] (१) बड़ा झौआ । (२) वर्षा ।

वि.—जिसमें बहुत पानी मिला हो, पतला ।

संज्ञा पुं. [हिं. झल्लाना] क्रोध, झुँझलाहट ।

वि.—(१) पागल । (२) बड़ा मूर्ख ।

झल्लाना—क्रि. अ. [हिं. झल] झुँझलाना, चिढ़ना ।

क्रि. स.—किसी को चिढ़ाना या कुढ़ाना ।

झल्लिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) अँगोछा । (२) शरीर का मैल । (३) प्रकाश । (४) सूर्य की किरणों की तेजी

झल्ली—वि. [हिं. झलना] बातूनी, गप्पी, डींगिया ।

संज्ञा स्त्री. [सं.] चमड़ा-मढ़ा एक बाजा ।

संज्ञा पुं. [देश.] छोटा झौआ या टोकरा ।

झवर, झवारि—संज्ञा पुं. [हिं. झबार, झबारि (अनु.)] झगड़ा, बखेड़ा, टंटा, नटखटपन । उ.—(क) बहु अचगरी जिनि करौ, अजहूँ तजौ झवारि—५८६ (ख) बरे घरन की बहू बेटी करत वृथा झवारि ।

झष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मीन, मछली । उ.—(क) फिरति सदन दरसन के काजे ज्यों झष सूखे सर २७६४ । (ख) पै झष कनक रुद्र रंगी तंत्री सु आद भर भोग—सा. ११५ । (२) मकर, मगर । (३) ताप, गरमी । (४) वन । (५) मीन, राशि । (६) झीखने का भाव या क्रिया ।

झषकेतु, झषकेतन—संज्ञा पुं. [सं. झषकेतन] कामदेव ।

झषत—क्रि. अ. [हिं. झषना] झीखता या खिजलाता है । उ.—मेरे मन रसिक लग्यौ नंदलालहिं झषत रहत दिन राती—३११६ ।

झषना—क्रि. अ. [हिं. झीखना] खीजना, झीखना ।

झषनिकेत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जलाशय । (२) समुद्र ।

झषराज—संज्ञा पुं. [सं.] मकर, मगर ।

झषलग्न—संज्ञा पुं. [सं.] मीन लग्न ।

झषांक—संज्ञा पुं. [सं. झष+अंक] कामदेव ।

झषोदरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] व्यास की माता मत्स्यगंधा ।

झहनना—क्रि. अ. [अनु.] (१) सन्नाटे में आना, चकित होना । (२) रोएँ खड़े होना । (३) झनझन शब्द करना ।

क्रि. स.—(१) किसी को सन्नाटे में डालना या चकित करना । (२) झनझन शब्द निकालना ।

झहनाना—क्रि. स. [अनु.] (१) किसी को सन्नाटे में डालना या चौंकाना । (२) झनझन का शब्द करना ।

झहनावै—क्रि. स. [हिं. झहनावै] झनकारते हैं, झनझन का शब्द निकालते हैं । उ.—गति गयंद कुच कुंभ किंकिनी मनहुँ घंट झहनावै ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झहरना—क्रि. अ. [अनु.] (१) झड़न का झरझर शब्द करना। (२) (शरीर) शिथिल या ढीला पड़ना।

क्रि. स. [हिं. झल्लाना] झिड़कना, डाँटना-डपटना।

झहराइ, झहराई—क्रि. अ. [हिं. झहराना] (१) झरझर शब्द करके, खड़खड़ाकर। उ.—(क) आपु गए जमलार्जुन-तरु-तर, परसत पात उठे झहराई—१०-३८३। (ख) असुर लै तरु सौं पछारयौ गिरयौ तरु झहराई। (२) खीजकर, झुँझला कर, झल्ला कर। (ग) रिसनि रही झहराइ कै मन ही मन बाम—२१२६। (ख) रिसन उठी झहराइ झटकि भुज—२१४२। (ड) सबै चली झहराइ कै—१०२५। (च) जो देखे ह्याँ संग बिराजत चली त्रिया झहराई—१६७६।

झहरात—क्रि. वि. [हिं. झहराना (अनु.)] (१) हिलता डोलता और झरझर शब्द के साथ। उ.—झहरात झहरात दवा (नल) आयौ—५६५।

क्रि. अ.—झरझर शब्द करके गिरता है।

झहराना—क्रि. अ. [अनु.] (१) झरझर शब्द करके या खड़खड़ाकर गिरना। (२) झल्लाना, खिजलाना। (३) हिलना-डोलना।

क्रि. स.—(१) झरझ शब्द करते हुए गिराना। (२) दूसरे को खिजाना। (३) हिलाना-डुलाना।

झहरानी—क्रि. अ. [हिं. झहराना] (१) झल्लायी, खिजलायी। उ.—(क) बेसरि नाउ लेत सरमानी तब राधा झहरानी—१५३४। (ख) एक अभिमान हृदय करि बैठी ऐते पर झहरानी—१६४५। (ग) नागरि हँसति हँसी उर झाया तापर अति झहरानी। (२) झरझर शब्द करके गिरी।

झहराय—क्रि. अ. [हिं. झहराना] झल्लाकर।

प्र.—उठी झहराय—झुँझला उठी, झल्लाने लगी। उ.—रिसनि उठी झहराय कह्यौ यह बस कीन्हो मन मेरो—१६६६।

झहरि—क्रि. अ. [हिं. झहरना (अनु.)] (१) झरझर का शब्द करके। उ.—यह सुनत तब मातु धाईं, गिरे जाने झहरि—१०-६७। (२) झल्लाकर, झुँझलाकर। उ.—रिसनि नारि झहरि उठी क्रोध मध्य बूड़ी—२६७४।

झहरैं—क्रि. अ. [हिं. झहरना] झुँझलाते हैं, झल्लाते हैं। उ.—सुनि सजनी मैं रही अकेली बिरह दहेली इत गुरुजन झहरैं—१६७१।

झाँई—संज्ञा स्त्री. [सं. छाया] (१) परछाईं, प्रतिबिंब, छाया, आभा, झलक। उ.—(क) पराधीन, पर बदन निहारत, मानत मूढ़ बड़ाई। हँसैं हँसत, बिलखैं बिलखत हैं, ज्यौं दरपन मैं झाँई—१-१६५। (ख) अरुन अधरनि दसन झाँई कहौं उपमा थोरि। नील पुट बिच मनौ मोती धरे बंदन बोरि—१०-२२५। (ग) बेसरि के मुकता में झाँई बरन बिराजत चारि। मानौ सुरगुरु सुक्र भौम सनि चमकत चंद मझारि। (२) अंधकार। (३) धोखा, छल। (४) प्रतिध्वनि। (५) रक्त-विकार से चेहरे पर पड़ने वाले हल्के-हल्के धब्बे।

झाँक—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँकना] झाँकने की क्रिया।

यौ.—ताक-झाँक—छिपकर देखना।

संज्ञा पुं.—झाँख—एक जंगली हिरन।

झाँकत—क्रि. अ. [हिं. झाँकना) (१) इधर-उधर या ऊपर-नीचे झुककर देखता है। उ.—निरखत झुकि, झाँकत प्रतिबिंबहिं। देत परम सुत पितु अरु अंबहिं—१०-११७। (२) ओट या आड़ में से मुंह निकालकर देखता है। उ.—जहँ तहँ उझकि झरोखा झाँकति जनक नगर की नारि—सारा. २०८।

झाँकति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. झाँकना] ओट या आड़ से मुँह निकाल कर देखती है। उ.—झाँकति झपटि झरोखा बैठी कर मीड़ति ज्यों मखियाँ—२७६६।

झाँकना—क्रि. अ. [सं. अध्यक्ष, प्रा. अज्झक्ख=आँख के सामने] (१) ओट या आड़ से मुंह निकालकर देखना। (२) इधर उधर झुक कर देखना।

झाँकनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँकना] झाँकी।

झाँकर—संज्ञा पुं. [हिं. झंखाड़] काठ-किवाड़।

झाँका—संज्ञा पुं. [हिं. झाँकना] (१) जालीदार खाँचा या झौआ। (२) झरोखा, खुला भाग, संधि।

क्रि. अ.—ओट या आड़ से मुँह निकालकर देखा।

झाँकि—क्रि. अ. [हिं. झाँकना] ओट में से देखकर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झाँक कर। उ.—झाँकि-उझकि बिहँसत दोऊ सुत, प्रेम मगन भइ इकटक जाम—१०-१५७।

झाँकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँकना] (१)झाँकने की क्रिया या भाव, दर्शन। (२) दृश्य। (३) झरोखा। (४) कृष्ण की व्रज की लीलाओं का चित्र-द्वारा प्रदर्शन।

क्रि. अ.—ओट से देखा, दर्शन किया।

झाँकै—क्रि. अ. [हिं. झाँकना] झाँकती है। उ.—ठाढ़ी तन काँपैं टेरै झाँकै बार-बार अकुलाइ—३४४१।

झाँकौ—संज्ञा पुं. [हिं.झाँकना] संधि, झाँकने का स्थान या छिद्र,झरोखा। उ.—सभा-माँझ द्रौपदि-पति राखी, पति पानिप कुल ताकौ। बसन-ओट करि कोट बिसंभर, परन न दीन्हौ झाँकौ—१-११३।

झाँक्यो, झाँक्यौ—क्रि. अ. [हिं. झाँकना] झाँका। उ.—तब रिस धरि सोई उत मुख करि झुकि झाँक्यौ उपरैना माथ—२७३६।

झाँख – संज्ञा पुं. [देश.] एक जंगली हिरन।

झाँखना—क्रि. अ. [हिं. झींखना] खीजना, झल्लाना।

झाँखर—संज्ञा पुं. [हिं. झंखाड़] (१) काठ-किवाड़, झंखाड़। (२) अरहर की सूखी खूँटियाँ।

झाँखा—क्रि. अ. [हिं. झाँखना] खीजा, झल्लाया।

झाँखि—क्रि. अ. [हिं. झाँखना] खीजकर, झल्लाकर।

झाँगला—वि. [देश.] ढीला-ढाला।

झाँगा—संज्ञा पुं. [हिं. झगा] ढीला-ढाला कुरता।

झाँजन—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँझन] पायल, पैंजनी।

झाँझ—संज्ञा स्त्री. [सं. झल्लक या झनझन से अनु.] (१) झाल नामक एक बाजा जिसका प्रयोग प्रायः घड़ियाल-शंखों आदि अन्य बाजों के साथ होता है। उ.—ताल, मृदंग, झाँझ, इंद्रिनि मिलि, बीना, बेनु बजायौ—१-२०५। (२) क्रोध, गुस्सा। (३) दुष्टता, शरारत। (४) बुरे विचार का उत्तेजित होना। (५) सूखा कुआँ या तालाब। (६) भोग की इच्छा (७) पायल या पैंजनी नामक पैर का गहना।

झाँझड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँझ] झांझ नामक बाजा।

संज्ञा स्त्री [हिं. झाँझन] पैंजनी, पायल।

झाँझन—संज्ञा स्त्री. [अनु.] पैर का एक तरह का पोला कड़ा जिसके अंदर के छर्रे बजते हैं, पायल।

झाँझर—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) झाँझन (२) चलनी।

वि.—(१) टूटा फूटा, पुराना। (२) छेददार।

झाँझरि, झाँझरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) झाँझ या झाल नामक बाजा। (२) झाँझन, पायल, पैंजनी।

झाँझा—संज्ञा पुं. [हिं. झँझरा] (१) एक कीड़ा। (२) घी-चीनी के साथ भूनी हुई भाँग। (३) सेव छानने या बनाने का पौना, करछुल।

संज्ञा पुं. [हिं. झाँझ] झाँझ या झाल बाजा।

संज्ञा पुं. [हिं. झंझट] झंझट, बखेड़ा।

झाँझिया—वि. [हिं. झाँझ + इया (प्रत्य.)] झाँझ या झाल नामक बाजा बजानेवाला।

झाँटा—संज्ञा पुं. [हिं. झंझट] बखेड़ा, झंझट।

झाँप—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँपना] (१) पर्दा, चिक, ढाँकने की चीज। उ.—पूजत नाहिं सुभग स्यामल तन, जद्यपि जलधर धावत। बसन समान होत नहिं हाटक, अगिनि झाँप दै आवत—६६५। (२) नींद, झपकी।

संज्ञा पुं. [सं. झंप] उछल-कूद।

झाँपत—क्रि. स. [हिं. झाँपना] ढकती है। उ.—नित रहत मनमन मदहि छाकी निलज कुच झाँपत नहीं —१०-३२४।

झाँपना—क्रि. स. [सं. उत्थान, हिं. ढाँपना] (१) ढकना, आवरण में करना। (२) लजाना, झेंपना।

झाँपी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँपना] (१) ढकने की टोकरी। (२) मूंज की पिटारी। (३) नींद, ऊँघ, झपकी।

झाँपो—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) खंजन। (२) बुरी स्त्री।

झाँप्यो, झाँप्यौ—क्रि. स. [हिं. झाँपना] ढका, ओट या आड़ में किया। उ.—तैं जु बदन झाँप्यौ झुकि अंचल इहै न दुख मेरे मन मान—२२१७।

झाँवँ झाँवँ—संज्ञा स्त्री. [अनु.] बकवाद। तकरार।

झाँवना—क्रि. स. [हिं. झाँवा] झाँवे से रगड़ कर हाथ-पैर का मैल छुड़ाना।

झाँवर, झाँवरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाबर] नीची भूमि।

वि. [सं. श्यामल] (१) कुछ कुछ काले रंग का। (२) मलिन। (३) मुरझाया या कुम्हलाया हुआ। (४) शिथिल, सुस्त।—उ. कबहुँ कहत ब्रजनाथ बन गए जोवत मग भइ दृष्टि झाँवरी—२४४८।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[हिं. छाँव, छाया] (१) झलक।
झाँवली—संज्ञा स्त्री. [हिं. छाँव, छाया] (१) झलक। (२) आँख की कनखी या कोर।

मुहा.—झाँवली देना—आँख से इशारा करना।

झाँवाँ—संज्ञा पुं. [सं. झामक] जली हुई काली ईंट जिससे रगड़कर हाथ-पैर का मैल छुड़ाते हैं।

झाँसना—क्रि. स. [हिं. झाँसा] धोखा देना, ठगना।

झाँसा—संज्ञा पुं. [सं. अध्यास=मिथ्या ज्ञान, प्रा. अज्झास] धोखा-धड़ी, ठगी, छल-कपट।

यौ.—झाँसा-पट्टी—धोखा-धड़ी, छल-कपट।

मुहा.—झाँसे में आना—धोखा खाना, ठग जाना।

झाँसिया, झाँसू—संज्ञा पुं. [हिं. झाँसा + इया (प्रत्य.)] धोखेबाज, धोखादेनेवाला, छली, कपटी।

झा—संज्ञा पुं. [सं. उपाध्याय, प्रा. उज्झाओ, हिं. ओझा] मैथिल ब्राह्मणों की एक उपाधि।

झाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँई] छाया, प्रतिबिंब, झलक।

उ.—रत्न जटित कुंडल स्रवनन बर गंड कपोलनि झाई—३०३१।

झाऊ—संज्ञा पुं. [सं. झाबुक] एक छोटा झाड़ जिसकी टहनियाँ प्रायः टोकरियाँ और रस्सियाँ बनाने के काम आती हैं।—उ.—मोहूँ कौं चुचकारि गयौ लै, जहाँ सघन बन झाऊ—४८१।

झाग—संज्ञा पुं. [हिं. गाज] पानी आदि का फेन।

झागड़—संज्ञा पुं. [हिं. झगड़ा] झगड़ा, बखेड़ा।

झागना—क्रि. अ. [हिं. झाग] फेन निकलना।

क्रि. स.—फेन निकालना, झाग उत्पन्न करना।

झाझ—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाँझ] झाँझ नामक बाजा।

झाड़—संज्ञा पुं. [सं. झाट] (१) एक कटीला पेड़। (२) रोशनी करने का एक सामान जो प्रायः शोभा के लिए लटकाया जाता है और जिसमें शीशे के कई गिलास होते हैं। (३) एक आतिशबाजी। (४) एक समुद्री घास। (५) गुच्छा, लच्छा।

संज्ञा स्त्री. [हिं. झाड़ना] (१) झाड़कर साफ करने की क्रिया। (२) डाँट-फटकार। (३) मंत्र से झाड़ने की क्रिया।

झाड़खंड—संज्ञा पुं. [हिं. झाड़+खंड] जंगल, वन।

झाड़-झंखाड़—संज्ञा पुं. [हिं. झाड़+झंखाड़] (१) काँटेदार झाड़ियाँ। (२) काठ-किवाड़, बेकार चीजें।

झाड़दार—वि. [हिं. झाड़+फ़ा. दार] (१) घना। (२) काँटेदार। (३) जिस पर बेल-बूँटे बने हों।

संज्ञा पुं.—बेल-बूटेदार कसीदा या कालीन।

झाड़न—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाड़ना] (१) झाड़ने से निकलने वाला कूड़ा या धूल। (२) झाड़ने का कपड़ा, साफी। (३) झाड़ने की क्रिया।

झाड़ना—क्रि. स. [सं. क्षरण] (१) झटकार-फटकार कर साफ करना। (२) झटका देकर गिराना। (३) पड़ी हुई चीज झाड़कर हटाना। (४) छल-बल से धन पाना या ऐंठना। (५) मंत्र से भूत-प्रेत-बाधा दूर करना। (६) डाँटना, फटकारना।

झाड़फूँक—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाड़ना+फूँकना] भूत-प्रेत-बाधा दूर करने के लिए मंत्र पढ़कर फूँक मारना।

झाड़-बुहार—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाड़ना+बुहारना] सफाई।

झाड़ा—संज्ञा पुं.—[हिं. झाड़ना] (१) झाड़-फूँक। (२) तलाशी। (३) सितार के तारों का एक साथ बजना।

क्रि. स. [हिं. झाड़ना] (१) झाड़कर साफ किया। (२) छल-बल से ऐंठ लिया। (३) मंत्र पढ़कर फूँका।

झाड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाड़] (१) छोटा झाड़। (२) छोटे-छोटे पेड़ों का समूह। (३) बालों की कूँची।

झाड़ीदार—वि. [हिं. झाड़ी+फ़ा. दार] कँटीला।

झाड़ू—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाड़ना] (१) कूँचा, बोहारी।

मुहा.—झाड़ू देना—सफाई करना। झाड़ू फिरना—सब कुछ साफ हो जाना, कुछ (धन-संपति) न रहना। झाड़ू फेरना—सब कुछ मिटा देना। झाड़ू मारना—(१) घृणा करना। (२) अपमान करना। झाड़ू से (की सींक से) भी न छूना—(१) बहुत ही घृणा करना। (२) बहुत ही तिरस्कार के साथ त्यागना।

(२) दुमदार सितारा, पुच्छल तारा, केतु।

झाड़ूबरदार—संज्ञा पुं. [हिं. झाड़ू + फ़ा. बरदार] (१) वह जो झाड़ू देता है। (२) चमार, भंगी।

झापड़—संज्ञा पुं. [सं. चपट] थप्पड़, तमाचा।

झाबर—संज्ञा पुं. [देश. डाबर] दलदली भूमि।

झाबा—संज्ञा पुं. [हिं. झाँपना] (१) टोकरा, खाँचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) टोंटीदार बरतन। (३) रोशनी करने का झाड़। (४) गुच्छा।

झाबी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाबा] छोटा छाबा, टोकरी।

झाम—संज्ञा पुं. [देश.] (१) झब्बा, गुच्छा। उ.—सुंदर भुजा पीठ कटि सुंदर सुंदर कनक मेखला झाम—१४०२। (२) बड़ी कुदाल। (३) घुड़की, डांट। (४) छल-कपट।

झामक—संज्ञा पुं. [सं.] जली हुई इंट का झाँवाँ।

झामा—संज्ञा पुं. [हिं. झूमर] (१) औजार तेज करने की सिल्ली। (२) पैर का एक गहना।

झाँमरा—वि. [हिं. झाँवर]गंदा, मैला, काला।

झामा—संज्ञा पुं. [सं. झामक] झाँवाँ।

झामी—संज्ञा पुं. [हिं. झाम] छली-कपटी, धूर्त्त।

झायँ झायँ—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) झन झन शब्द। (२) सन्नाटे में ह्वा का सन सन शब्द। (३) तकरार।

झार—वि. [सं. सर्व, प्रा. सारो, हिं. सारा] (१) एक मात्र, केवल। (२)सब, कुल,समस्त (३) समूह, झुंड।

संज्ञा स्त्री. [सं. झाला=ताप] (१) डाह, ईर्ष्या, जलन। उ.—कहा कहौं तुमसौं मैं प्यारे, कंस करत तुमसौं कछु झार—५३०। (२) ज्वाला, लपट,आँच। उ.—(क) और कौन जो तुमसौं बाँचै, सहस फननि की झार—५५८। (ख) बार-बार फन घात कै विष ज्वाला की झार—५८९। (ग) अति अगिनि झार भंभार धुंधारि करि उचटि अंगार झंझार छायौ——५९६। (३ झाल, चरपरापन।

संज्ञा पुं. [हिं. झड़ना] झरना, पौना, करछुल।

संज्ञा स्त्री. [हिं. बौछार] बौछार, छींटा, वर्षा की झड़ी, पानी की बूंदें। उ.—सात दिन भरि ब्रज पर गई नेक न झार—९७३।

झारखंड—संज्ञा पुं. [हिं. झाड़ + खंड] एक पहाड़ जो वैद्यनाथ से जगन्नाथपुरी तक फैला है। (२) जंगल।

झारत—क्रि. स. [हिं. झाड़ना] (१) (रज, धूल, आदि) झाड़ कर, पोंछकर। उ.—झारत रज लागैं मेरी अँखियनि रोग-दोष-जंजाल—१०-१३८। (२) कुछ गिराने या पाने के लिए किसी चीज को झाड़ता-फटकारता है। उ.—उनके गुन कैसे कहि आवै सूर पयारहिं झारत—पृ. ३२७।

झारति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. झाड़ना] (धूल, गर्द आदि) झाड़ती है, झटकारती है, फटकारती है। उ.—(क) सूरज प्रभु जसुमति रज झारति, कहाँ भरी यह खेह—१०-१११। (ख) सूरदास प्रभु मातु जसोदा, पट लै, दुहुनि अंग-रज झारति—५१२।

झारन—संज्ञा स्त्री. [हिं. झड़न] (१) झाड़ने-पोछने का कपड़ा। (२) झाड़ी हुई धूल आदि। (३) झाड़ने की क्रिया या रीति।

झारना—क्रि. स. [सं. झट] (१) बालों में कंघी करना। (२) अलग करना, छाँटना।

क्रि. स. [हिं. झाड़ना] (१) झाड़ना। (२) डाँटना।

झार-फूँक—संज्ञा स्त्री. [हिं. झाड़ना+फूँकना] झाड़फूँक।

झारा - संज्ञा पुं. [हिं. झारना] (१) सूप। (२) झरना।

झारि—संज्ञा स्त्री. [हिं. झार] (१) डाह, ईर्ष्या। (२) ज्वाला, लपट, आँच। (३) झाल, चरपरापन।

वि.—(१) केवल। (२) सब। (३) समूह।

क्रि. स. [हिं. झाड़ना] (१) किसी चीज को साफ करने के लिए झटक या फटकार कर। (२) झाड़कर, साफ करके। उ.—मुख के रेनु झारि अंचल सौं जसुमति अंग भरै—२८०३।

मुहा.—झारि झूरि—झाड़-फटकार कर, झाड़ने-झूड़ने से पाकर। उ.—झारि झूरि मन तो तू लै गयौ बहुरि पयारहिं गाहत—३०६५।

(३) डालकर, फेंककर। उ.—इतनी सुनि कृपालु कोमल प्रभु दियौ धनुष कर झारि—९-६५। (४) रोग, विष या भूत-प्रेत बाधा दूर करने के लिए मंत्र पढ़कर और फूँककर। उ.—कहूँ राधिका कारैं खाई जाहु न आवौ झारि—७५५।

झारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झरना] एक टोंटीदार जलपात्र। उ.—(क) जमुना जल राख्यौ झारी भरि। (ख) आपुन झारी माँगि विप्र के चरन पखारे। (ग) सीतल जल लियौ मँगाई। भरि झारी जसुमति ल्याई—१०-१८३।

संज्ञा स्त्री. [सं. झारि] (हाजमा ठीक रखने का) पानी जिसमें नमक, जीरा आदि छोड़ा गया हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा स्त्री. [हिं. झाड़ी] **छोटा झाड़, झाड़ी ।**

वि. [हिं. झार] (१) **एक मात्र । (२) सब ।**

क्रि. स. [हिं. झाड़ना] (१) **झाड़कर, फट-फटाकर ।** उ.—उलटि पवन जब बावर जरियौ, स्वान चल्यौ सिर झारी—१-२२१ । (२) **रोग, विष, प्रेत-बाधा आदि दूर करने के लिए मंत्र आदि पढ़ा और फूँक मारी ।** उ.—एक बिटिनियाँ सँग मेरे ही, कारैं खाई ताहि तहाँ री ।........कहत सुन्यौ नंद कौ यह बारौ, कछु पढ़िकै तुरतहिं उहिं झारी—६६७ ।

झारू—संज्ञा पुं. [हिं. झाड़ू] **बोहारी, कूँचा ।**

झारै—क्रि. स. [हिं. झाड़ना] **झाड़-पोंछ कर साफ करता है ।** उ.—मम तन रज-पथ लागी पीत पट सों झारै—१०उ.७६ ।

झार्यौ—क्रि. स. [हिं. झाड़ना] **झाड़ लिया, निचोड़ सा लियां, खींच-सा लिया ।** उ.—अति बल करि-करि काली हार्यौ । लपटि गयौ सब अंग-अंग प्रति, निर्विष कियौ सकल बल झार्यौ—५७४ ।

झाल—संज्ञा पुं. [सं. झल्लक] **झाँझ बाजा ।**

संज्ञा पुं. [देश.] **झालने की क्रिया या भाव ।**

संज्ञा स्त्री. [सं. झाला] (१) **चरपराहट, तीतापन । (२) लहर, मौज । (३) विलास की कामना ।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. झड़] **पानी की लगातार झड़ी ।**

वि. [हिं. झार] (१) **केवल । (२) सब । (३) झुंड ।**

संज्ञा स्त्री.—(१) **डाह, जलन । (२) ज्वाला, आँच ।**

झालड़—संज्ञा स्त्री. [सं. झल्लरी] (१) **घड़ियाल जो बजाया जाता है । (२) झालर ।**

झालना—क्रि. स. [हिं. झाल] **धातु की वस्तुओं में टाँका देकर जोड़ लगाना ।**

झालर—संज्ञा स्त्री. [सं. झल्लरी] (१) **शोभा के लिए लगायी जानेवाली बेल-बूटे या जालीदार चौड़ी गोट । (२) झाला या गोट की तरह लटकती हुई चीज । (३) किनारा, छोर । (४) झाँझ, झाल । (५) घड़ियाल जो बजाया जाता है ।**

झालरदार—वि. [हिं. झालर+फ़ा. दार] **जिसमें शोभा के लिए झालर या गोट लगी हो ।**

झालरना—क्रि. अ. [हिं. झलराना] **फैलना, बढ़ना ।**

झालरा—संज्ञा पुं. [हिं. झालर] **रुपहला हार ।**

संज्ञा पुं. [हिं. ताल] **चौड़ा कुआँ, कुंड, बावली ।**

झालरि, झालरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झालर] (१) **किसी चीज के किनारे या नीचे लगा या टँका हिलने या लटकनेवाला हाशिया जो शोभा के लिए लगाया जाता है ।** उ.—(क) रेसम बनाइ नव रतन पालनौ, लटकन बहुत पिरोजा-लाल । मोतिनि झालरि नाना भाँति खिलौना रचे बिस्वकर्मा सुतहार—१०-८४ । (ख) चंचल दृग अंचल-पट-दुति-छबि, झलकत चहुँ दिसि झालरी—१०-१४० । (२) **एक बाजा ।** उ.—(क) बीन मुरज उपंग मुरली झाँझ झालरि ताल—२४१५ । (ख) रंज मुरज डफ झाँझ झालरी यंत्र पखावज तार—२४३७ ।

झाला—संज्ञा पुं. [देश.] **राजपूतों की एक जाति ।**

झालि—संज्ञा स्त्री. [हिं. झड़ी] **पानी की झड़ी ।**

संज्ञा स्त्री [सं.] **कच्चे आम की काँजी ।**

झाँव झाँव—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **बकबक, बकवाद । (२) तकरार, हुज्जत । (३) झगड़ा, लड़ाई ।**

झावर—संज्ञा पुं. [हिं. झावर] **दलदली भूमि ।**

झावरि, झावरी—[हिं. झाँवर] **शिथिल, मंद, सुस्त ।** उ.—निसि न नींद आवै दिवस न भोजन भावै चितवत मग भइ दृष्टि झावरी—३४३२ ।

झावुक—संज्ञा पुं. [सं.] **एक झाड़, झाऊ ।**

झिंग—संज्ञा स्त्री. [सं. झिंगाक] **तरोई, तुरई ।**

झिंगवा—संज्ञा स्त्री. [सं. चिंगट] **एक छोटी मछली ।**

झिंगाक—संज्ञा पुं. [सं.] **तरोई, तुरई ।**

झिंगिनी, झिंगी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक जंगली वृक्ष ।**

झिंगुलि, झिंगुली—संज्ञा स्त्री. [हिं. झगा] **बच्चों के पहनने का ढीला-ढाला कुरता ।** उ.—छोटौ बदन छोटियै झिंगुली, कटि किंकिनी बनाइ—१०-१३३ ।

झिंझिया—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **छेददार छोटा घड़ा जिसमें दिया जलाकर लड़कियाँ कुआर मास में घूमती हैं ।**

झिंझी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **झिल्ली, झींगुर ।**

झिंझोटी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक रागिनी जो दिन में चौथे पहर गायी जाती है ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झिगड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. झगड़ा] झगड़ा, बखेड़ा।
झिझक—संज्ञा स्त्री. [हिं. झझक] झझक, संकोच।
झिझकना—क्रि. अ. [हिं. झझकना] संकोच न करना।
झिझकार—संज्ञा स्त्री. [हिं. झझकार] झझक।
झिझकारना—क्रि. स. [हिं. झझकारना] (१) डाँटना, डपटना। (२) दुरदुराना। (३) अपने सामने कुछ न मानना या समझना।
क्रि. स. [हिं. झटकना] झटका देना।
झिझकारि—क्रि. स. [हिं. झिझकारना] (१) डाँट-डपट कर, बुरा-भला कहकर। उ.—वोही ढंग तुम रहे कन्हाई सबै उठीं झिझकारि। (२) क्रोध से ललकार कर। उ.—उठ्यौ झिझकारि कर ढाल खडगहिं लिये रंग रनभूमि के महल बैठ्यौ—२५६३।
झिटकारना—क्रि. स. [हिं. झटकारना] झटका देना।
झिड़क—संज्ञा स्त्री. [हिं. झिड़कना] डाँट-डपट।
झिड़कना—क्रि. स. [अनु.] (१) झुँझला कर डाँटना, डपटना या घुड़कना। (२) अलग फेंक देना।
झिड़की—संज्ञा स्त्री. [हिं. झिड़कना] (१) डाँट-फटकार। (२) झड़कने की क्रिया या भाव।
झिड़झिड़ाना—क्रि. अ. [अनु.] बुरा-भला कहना।
झिड़झिड़ाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. झिड़झिड़ाना] झिड़-झिड़ाने का भाव या क्रिया।
झिनवा—संज्ञा पुं. [देश.] महीन चावल का धान।
वि. [हिं. झीना] (१) महीन। (२) छेददार।
झिपना—क्रि. अ. [हिं. झेंपना] लजाना, शरमाना।
झिपाना—क्रि. स. [हिं. झेंपाना] लज्जित करना।
झिमकना—क्रि. अ. [हिं. झमकना] (१) चमकना। (२) झपकना। (३) झमझम होना। (४) झनकारना।
झिर—संज्ञा स्त्री. [हिं. झिरी] (१) दराज। (२) गढ़ा।
झिरकना—क्रि. स. [हिं. झिड़कना] (१) डाँटना-डपटना। (२) झटक कर अलग फेंक देना।
झिरकि—क्रि. स. [हिं. झिड़कना] (१) झिड़क कर, झिड़की देकर, तिरस्कार करके। उ.—(क) छरीदार वैराग बिनोदी, झिरकि वाहिरैं कीन्हे—१-४०। (ख) झिरकि कै नारि, दै गारि गिरिधारि तब, पूँछ पर लात दै अहि जगायौ—५५२। (२) अलग फेंक कर, झटक कर। उ.—मुकुट सिर श्रीखंड सोहै निरखि रही ब्रजनारि। कोटि सुर को दंड आभा झिरकि डारैं वारि।
झिरझिर—क्रि. वि. [अनु.] (१) झिरझिर शब्द के साथ। (२) मंद-मंद, धीरे-धीरे।
झिरझिरा—वि. [हिं. झीना] महीन, झँझरा, झीना।
झिरझिराना—क्रि. अ. [हिं. झिड़झिड़ाना] झुँझलाना।
झिरना—क्रि. अ. [हिं. झरना] झड़ना, गिरना।
संज्ञा पुं.—(१) पौना, करछुल। (२) छेद, सूराख।
झिरा—संज्ञा स्त्री. [हिं. झरना] आय, आमदनी।
झिरी—संज्ञा स्त्री. [हिं झरना] (१) छोटा छेद, दरज। (२) गड्ढा जिसमें झिर झिर कर पानी भरे। (३) तुषार, पाला।
झिर्री—संज्ञा स्त्री. [हिं. झिरी] पानी रोकने का गढ़ा।
झिलँग—संज्ञा पुं. [हिं. ढीला+अंग] टूटी या ढीले बाँध या बुनावट वाली खाट।
संज्ञा पुं. [हिं. झींगा] एक मछली। एक धान।
झिलना—क्रि. अ. [हिं. झेलना] (१) घुसना, धँसना। (२) अघाना। (३) लीन होना। (४) (कष्ट आदि) सहा या झेला जाना।
संज्ञा पुं. [सं. झिल्ली] झींगुर।
झिलम—संज्ञा स्त्री. [हिं. झिलमिला] लोहे का टोप।
झिलमा—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का धान।
झिलमिल—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) हिलती या झलमलाती हुई रोशनी। (२) रोशनी घटने-बढ़ने की क्रिया। (३) एक बढ़िया मुलायम कपड़ा।
वि.—रह-रहकर झलमलाता या काँपता हुआ।
झिलमिला—वि. [अनु.] (१) जो गाढ़ा न हो। (२) छेददार, झीना। (३) अस्थिर प्रकाशवाला। (४) चमकता हुआ। (५) अस्पष्ट।
झिलमिलाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) रह-रह कर चमकना। (२) प्रकाश या ज्योति का हिलना-डोलना।
क्रि. स.–(१) रह-रह कर चमकाना। (२) हिलाना।
झिलमिलाहट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] चमकाने या हिलाने डुलाने की क्रिया या भाव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झिलमिली—संज्ञा स्त्री. [हिं. झिलमिल] (१) आड़ी-तिरछी पटरियों का ढाँचा। (२) परदा, चिलमन। (३) कान का एक गहना।

झिल्ल—संज्ञा पुं. [सं.] लाल फूल का एक पौधा।

झिल्लड़—वि. [हिं. झिल्ली] झीनी बुनावट का।

झिल्ला—वि. [अनु.] (१) पतला। (२) छेददार।

झिल्लिका, झिल्लीक—संज्ञा स्त्री. [सं.] झींगुर, झिल्ली।

झिल्ली—संज्ञा स्त्री. [सं. चैल] (१) किसी चीज की ऊपरी पतली तह। (२) बारीक छिलका। (३) आँख का जाला।

वि.—बहुत पतला या बारीक, झीना।

संज्ञा पुं. [सं.] झींगुर, झिल्लिका।

झिल्लीदार—वि. [हिं. झिल्ली+फ़ा. दार] जिस पर पतली तह या बारीक झिल्ली हो।

झींक, झींका—संज्ञा पुं. [देश.] उतना अन्न जितना एक बार चक्की में डाला जाय।

झींकना—क्रि. अ. [हिं. झींखना] कुढ़ना, खीजना।

क्रि. स. [देश.] फेंकना, पटकना।

झींखना—क्रि. अ. [हिं. खीजना] (१) दुखी होकर पछताना, कुढ़ना या खीजना। (२) दुखड़ा रोना।

संज्ञा पुं—(१) झींखने का भाव। (२) दुखड़ा।

झींखि—क्रि. अ. [हिं. झींखना] झींखकर। उ.—देखि सखी कछु कहत न आवै झींखि रही अपमानन मारि—२७६५।

झींगट—संज्ञा पुं. [देश.] केवट, मल्लाह।

झींगा—संज्ञा पुं. [सं. चिंगट] (१) एक मछली। (२) एक धान। (३) कपास का हानिकारक एक कीड़ा।

झींगुर—संज्ञा पुं. [अनु. झीं+कर] झिल्ली नामक कीड़ा।

झींझना—क्रि. अ. [अनु.] झुँझलाना, खिजलाना।

झींझो—संज्ञा पुं. [देश.] (१) आश्विन शुक्ल चतुर्दशी को कन्याओं का एक छेददार घड़े में दिया जलाकर संबंधियों के घर जाने की रस्म। (२) छेददार घड़ा जिसमें दिया जलाया जाता है।

झींटना—क्रि. अ. [हिं. झींकना] खींजना, कुढ़ना।

झींपना—क्रि. अ. [हिं. झेंपना] लज्जित होना।

क्रि. अ. [हिं. ढँपना] छिपना।

झींसा—संज्ञा पुं. [हिं. झींसी] बहुत हल्की वर्षा।

झींसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झीना] फुहार, महीन बूँदें।

झीख—संज्ञा स्त्री. [हिं. खीझ] कुढ़न, खीझ।

झीखना—क्रि. अ. [हिं. झींखना] (१) कुढ़ना, खीजना, झुँझलाना। (२) दुखड़ा रोना, विपत्ति कहना।

झीन, झीना—वि. [सं. क्षीण] (१) बहुत पतला। (२) महीन, छेददार। (३) दुबला, पतला। (४) मंद, धीमा।

झीनियै, झीनीयै—वि. [हिं. झीना] महीन, बारीक, पतला। उ.—प्रफुल्लित ह्वै के आनि दीन है जसोदा रानि झीनियै (झीनीयै, झोनीयै) झँगुलि तामें कंचन (को) तगा—१०-३६।

झीनी—वि. स्त्री. [हिं. पुं. झीना] (१) बहुत महीन, बारीक, पतली। उ.—(क) पियरी पिछौरी झीनी और उपमा न भीनी, बालक दामिनि मानौ ओढ़े बारौ बारि-धर—१०-२५१। (ख) फटी कंचुकी झीनी—३४४६। (२) फटी-पुरानी। उ.—झीनी कामरि काज कान्ह ऐसो नहिं कीजै—११२७।

झीमर—संज्ञा पुं. [हिं. झीवर] मल्लाह, माँझी।

झील—संज्ञा स्त्री. [सं. क्षीर=जल] (१) बहुत बड़ा प्राकृतिक जलाशय। (२) बहुत बड़ा तालाब।

झीली—संज्ञा स्त्री. [हिं. झिल्ली] (१) झिल्ली। (२) दूध पर पड़नेवाली मलाई।

झीवर—संज्ञा पुं. [सं. धीवर] माँझी, मल्लाह।

झुँकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. झोंकाई] झोंकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झुँगरा—संज्ञा पुं. [देश.] साँवाँ नामक अन्न।

झुझलात—क्रि. अ. [हिं. झुँझलाना] खीजते हैं।

झुँझलाना—क्रि. अ. [अनु.] खीजना, कुढ़ना।

झुँझलावत—क्रि. अ. [हिं. झुँझलाना] खीजते हैं।

झुझायौ—संज्ञा पुं. [हिं. झुँझलाना] झूँझल, खिजलाहट, झुँझलाहट। उ.—नित प्रति रीती देखि कमोरी, मोहिं अति लगत झुँझायौ—१०-२८८।

झुंड—संज्ञा पुं. [सं. यूथ] समूह, गरोह।

मुहा.—झुंड के झुंड—बहुत बड़ी संख्या में। झुंड में रहना—अपने ही वर्ग वालों के साथ रहना।

झुकझोरना—क्रि. स. [हिं. झकझोरना] जोर से हिलाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झुकति--क्रि. अ. [हिं. झुकना] झुँझलाती है, क्रुद्ध होती है, रिसाती है। उ.—(क) लोगन कहा झुकति तू बौरी—१०-३२४। (ख) अब झूठौ अभिमान करति सिय झुकति हमारे ताईं। (ग) झुकति कहा मोपर ब्रजनारी—३०३४।

झुकना—क्रि. अ. [सं. युज्, युक्, हिं. जुक] (१) नीचे लटकना, नवना।

मुहा.—झुक झुक पड़ना—नशे या नींद के कारण झूमना या सीधा न रह सकना।

(२) नीचे की ओर होना। (३) प्रवृत्त होना, ध्यान देना, मुखातिब होना। (४) कुछ लेने को बढ़ना। (५) नम्र या विनीत होना। (६) रिसाना, क्रोध करना।

झुकमुख—संज्ञा पुं. [हिं. झुकना+मुख] झुटपुटा।

झुकरना—क्रि. अ. [अनु.] झुँझलाना, खीझना।

झुकराना—क्रि. अ. [हिं. झोंका] झोंका खाना।

झुकवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. झुकवाना] झुकवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झुकवाना—क्रि. स. [हिं. झुकाना] झुकाने में लगाना।

झुकाइ—क्रि. स. [हिं. झुकना] झुकाकर, दबाकर। उ.—इहिं विधि लखत, झुकाइ रहै जम अपनैं हीं भय भाल। सूर सुजस-रागी न डरत मन, सुनि जातना कराल—१-१८६।

झुकाई—क्रि. स. [हिं. झुकाना] झुकाया।

संज्ञा स्त्री.—झुकाने की क्रिया, भाव, या मजदूरी।

झुकाना—क्रि. स. [हिं. झुकना] (१) नीचे लाना, नवाना। (२) किसी चीज को किसी ओर प्रवृत्त करना। (३) ध्यान दिलाना, प्रवृत्त या रुजू करना। (४) दबाना, नम्र या विनीत करना।

झुकामुखी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झुकमुख] झुटपुटा।

झुकार—संज्ञा पुं. [हिं. झकोरा] हवा का झोंका।

झुकाव—संज्ञा पुं. [हिं. झुकना] (१) झुकने की क्रिया या भाव। (२) ढाल, उतार। (३) प्रवृत्ति, रुचि।

झुकावट—संज्ञा स्त्री. [हिं. झुकना+आवट (प्रत्य.)] (१) नम्र होने की क्रिया या भाव। (२) रुचि।

झुकि—क्रि. अ. [हिं. झुकना] झुककर। उ.—रथ तैं उतरि चक्र कर लीन्हौ, सुभट सामुहैं आए। ज्यौं कंदर तैं निकसि सिंह, झुकि, गज-जूथनि पर धाए —१-२७४।

झुकी—क्रि. अ. [हिं. झुकना] क्रुद्ध हुई, रिसाई। उ.—कह जानै मेरौ बारौ भोरौ, झुकी महरि दै दै मुख गारि—१०-३०४।

झुगिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. कुटिया] कुटिया, झोपड़ी। उ.—हरि, तुम क्यौं न हमारैं आए? षट्रस व्यंजन छाँड़ि रसोई, साग बिदुर-घर खाए। ताके झुगिया मैं तुम बैठे कौन बड़प्पन पायौ—१-२४३।

झुटपुटा—संज्ञा पुं. [अनु.] प्रातः और संध्या काल की वह घड़ी जब कुछ अँधेरा और कुछ उजेला होता है।

झुटुंग—वि. [हिं. झोटा] झोंटे या जटा वाला।

झुट्ठा—वि. [हिं. झूठा] (१) जो सच न बोले। (२) जो पवित्र, शुद्ध या अनखाया न हो।

झुठकाना, झुठलाना—क्रि. स. [हिं. झूठ] (१) झूठी बात कहकर बहलाना या धोखा देना। (२) झूठा बनाना या ठहराना।

झुठयो, झुठयौ—क्रि. स. [हिं. झुठाना] झुठलाया।

झुठवत—क्रि. स. [हिं. झुठलाना] झूठा या असत्य सिद्ध करता है। उ.—साँटी लिए दौरि भुज पकरयौ, स्याम लँगरई ठानी। लरिकनि का तुम सब दिन झुठवत, मोसौं कहा क़हौगे—१०-२५३।

झुठाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. झूठ+आई (प्रत्य.)] झूठापन, असत्यता, अयथार्थता। उ.—जानि परत नहिं साँच-झुठाई, चारत धेनु झुरैया—५१३।

झुठाना—क्रि. स. [हिं. झूठ+आना] झूठा ठहराना।

झुठामुठी—क्रि. वि. [हिं. झूठमूठ] झूठे ही, व्यर्थ।

झुठालना—क्रि. स. [हिं. झुठलाना] झूठा बनाना।

झुन—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक चिड़िया।

झुनक—क्रि. अ. [हिं. झुनकना (अनु.) झुनझुन शब्द करती है। उ.—झुनक स्याम की पैजनियाँ—१०-१३२।

क्रि. वि.—झुनझुन शब्द या ध्वनि के साथ। उ.—रुनक झुनक कर कंकन बाजै, बाँह डुलावति ढीली—१०-२६६।

झुनकना—क्रि. अ. [अनु.] झुनझुन शब्द करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा पुं—बच्चों का 'झुनझुना' नामक खिलौना।
संज्ञा पुं.—धोखा, छल, कपट।
झुनका—संज्ञा पुं.—धोखा, छल, कपट।
झुनकार—वि. [हिं. झीना] महीन, झीना।
झुनकरी—वि. [हिं. पुं. झुनकार] झीना।
झुनझुन—संज्ञा पुं. [अनु.] नूपुर आदि का झुनझुन शब्द। उ.—अरुन तरनि नख ज्योति जगमगित झुनझुन करत पाय पैजनियाँ।
झुनझुना—संज्ञा पुं. [हिं. झुनझुन] एक खिलौना।
झुनझुनाना—क्रि. अ. [अनु.] झुनझुन शब्द होना।
क्रि. स.—झुनझुन शब्द करना या निकालना।
झुनझुनियाँ—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) 'झुनझुन' करनेवाला पैर का आभूषण। (२) बेड़ी, निगड़।
संज्ञा स्त्री.—सनई का पौधा।
झुनझुनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झुनझुनाना] सनसनाहट।
झुनुक-झुनुक—क्रि. वि. [हिं. झुनक] झुनझुन शब्द के साथ। उ.—ललित आँगन खेलै, ठुमुकि-ठुमुकि डोलै, झुनुक झुनुक बोलै पैजनी मृदु मुखर—१०-१५१।
झुपझुपी, झुबझुबी—संज्ञा स्त्री. [देश.] कान में पहनने का देहाती स्त्रियों का एक गहना।
झुपरी—संज्ञा पुं. [हिं. झोपड़ी] झोपड़ी।
झुप्पा—संज्ञा पुं. [हिं. झब्बा] गुच्छा, झब्बा।
संज्ञा पुं. [हिं. झुंड] समूह, वृंद, गरोह।
झुमका—संज्ञा पुं. [हिं. झूमना] (१) कान का एक गहना। (२) एक पौधा या उसका फूल।
झुमना—वि. [हिं. झूमना] झूमनेवाला, मस्त।
झुमाऊ—वि. [हिं. झूमना] झूमनेवाला, मस्त।
झुमाना—क्रि. स. [हिं. झूमना] झूमने में प्रवृत्त करना, हिलाना-डुलाना, किसी को मस्त करना।
झुरकुट—वि. [हिं. झुराना] (१) दुबला। (२) सूखा।
झुरकुटिया—वि. [हिं. झुराना] दुबला-पतला।
संज्ञा पुं. [देश.] पक्का लोहा, खेड़ी।
झुरकुन—संज्ञा पुं. [हिं. झड़+कण] चूरा, चूर।
झुरझुरी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) कँपकँपी, घबराहट। (२) सर्दी के बुखार या जूड़ी की कँपकँपी।
झुरना—क्रि. अ. [हिं. धूल, या चूर] (१) सूख जाना, खुश्क होना। (२) बहुत दुखी होना। (३) चिंता या परिश्रम से दुबला होना, घुलना।
झुरमुट—संज्ञा पुं. [सं. झुंट+झाड़ी] (१) झाड़ी आदि की आड़। (२) समूह, झुंड। (३) चादर से सारा शरीर ढकना।
झुरवन—संज्ञा स्त्री. [हिं. झुरना+वन (प्रत्य०)] अंश जो किसी चीज के सूखने पर उसमें से निकल जाय।
झुरवाना—क्रि. स. [हिं. झुरना] सुखाने में लगाना।
क्रि. अ.—सूख जाना, झुरा जाना।
झुरसना—क्रि. अ. [हिं. झुलसना] ताप की अधिकता से जल या सूख जाना।
झुरसाना—क्रि. अ. [हिं. झुलसाना] ताप अधिक करके जलाना या सुखाना।
झुरहुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झुरझुरी] कँपकँपी।
झुराइ—क्रि. अ. [हिं. झुराना] (दुख या भय से) उदास होना, सूख जाना, कुम्हला जाना। उ.—(क) नंद घरनि सौं पूछत बात। बदन झुराइ गयौ क्यौं तेरौ, कहाँ गए बल, मोहन तात—५४२। (ख) जबहिं आए सुने ऊधो अतिहिं गई झुराइ—२६६१।
झुराना—क्रि. स. [हिं. झुरना] सुखाना।
क्रि. अ.—(१) सूखना। (२) दुख से खिन्न, उदास या क्षुब्ध होना। (३) दुबला या क्षीण होना।
झुरानी—क्रि. अ. [हिं. झुराना] दुख से खिन्न, उदास या स्तब्ध हो गयी। उ.—यह बानी सुनि ग्वारि झुरानी। मीन भयौ मानो बिन पानी—११६१।
झुराये—क्रि. अ. [हिं. झुराना] उदास किये हुए।
झुरावन—संज्ञा स्त्री. [हिं. झुरना+वन (प्रत्य.)] वह अंश जो किसी चीज के सूखने पर निकल जाय।
झुरि—क्रि. अ. [हिं. झुरना] (१) बहुत दुखी या शोकग्रस्त होकर। उ.—झुरि-झुरि सब मरति बिरह गोपीजन की ते—२६५२। (२) सूखकर। उ.—झुरि झुरि पियरी भई हैं यह तौ सुकुमारी—१६७८।
झुरैया—क्रि. अ. [हिं. झुरना] (चिंता, रोग या परिश्रम आदि के कारण) घुल जाना, दुर्बल हो जाना। उ.—जानि परत नहिं साँच झुठाई, चारत धेनु झुरैया—५१३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झुरना] सिकुड़न, शिकन ।
झुलना—संज्ञा पुं. [हिं. झूलना] झूला ।
वि.—झूलनेवाला, झूलने का शौकीन ।
झुलनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झूलना] चाँदी-सोने के हार में गुँथा मोतियों का गुच्छा ।
झुलमुला—वि. [हिं. झिलमिला] चमकदार ।
झुलय—संज्ञा पुं. [हिं. झूला] झूला ।
झुलवत—क्रि. अ. [हिं. झूलना] झूला झूलती हैं । उ. कुंज-पुंज झुलय झुलवत सहचरी चहुँ ओर—२२८१ ।
झुलवा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) जेठवा कपास । (२) झूला ।
झुलवाना—क्रि. स. [हिं. झूलना] झुलाने के काम में दूसरे को लगाना या प्रवृत्त करना ।
झुलसन—संज्ञा स्त्री. [हिं. झुलसना] (१) झुलसने की क्रिया या भाव । (२) झुलसाने वाली गरमी ।
झुलसना—क्रि. अ. [सं. ज्वल+अंश] (१) आँच की तेजी से अधजला हो जाना, झौंसना । (२) धूप की तेजी से सूखकर काला-सा पड़ जाना ।
क्रि. स.—(१) आँच में अधजला करना, झौंसना । (२) अधिक धूप में सुखाकर काला करना ।
झुलसवाना—क्रि. स. [हिं. झुलसाना] झुलसाने या सुखाने में लगाना ।
झुलसाना—क्रि. स. [हिं. झुलसना] (१) तेज आँच में अधजला करना । (२) तेज गरमी में सुखाकर काला करना ।
झुलाइ, झुलाई—क्रि. अ. [हिं. झुलाना] झुलाकर ।
प्र.—रह्यौ झुलाई—झूल रहा है, लटक रहा है, हिलडुल रहा है । उ.—स्याम भुजनि की सुंदरताई । ......बड़े बिसाल जानु लौं परसत, इक उपमा मन आई । मनौं भुजंग गगन तैं उतरत, अधमुख रह्यौ झुलाई—६४१ । देत झुलाइ—झुलाते हैं । उ.—डरत लाल हिंडोल झूलत, हरैं देत झुलाइ—४९८ ।
झुलाना—क्रि. स. [हिं. झूलना] (१) झूले या हिंडोले में बैठा कर हिलाना या पेंग देना । (२) बार-बार झोंका देकर या टाँगकर हिलाना । (३) आसरे में रखना ।
झुलावति—क्रि. स. [हिं. झुलाना] झुलाती है । उ.—पलना स्याम झुलावति जननी—१०-४४ ।
झुलावना—क्रि. स. [हिं. झुलाना] झुलाना, हिलाना ।
झुलावनि—संज्ञा स्त्री. [झुलाना] झुलाने की क्रिया ।
झुलावहीं—क्रि. स. [हिं. झुलाना] झुलाती हैं । उ.—झूलैं सखी झुलावहीं, सूरदास बलि जाइ हालरु रे—१०-४७ ।
झुलावैं—क्रि. स. [हिं. झुलाना] झूला झुलाते हैं । उ. पालनैं गुपाल झुलावैं—१०४५ ।
झुलावै—क्रि. स. [हिं. झुलाना] झुलाती है । उ.—जसोदा हरि पालनैं झुलावै—१०-४३ ।
झुलुआ—संज्ञा पुं. [हिं. झूला] झूला ।
झुलैया—संज्ञा पुं. [हिं. झूला] झूलनेवाला । उ.—पालनौ आन्यौ बनाइ, अति मन मान्यौ सुहाइ, नीकौ सुभ दिन सुधाइ, झूलौ हो झुलैया—१०-४१ ।
झुलौवा—संज्ञा पुं. [हिं. झूला] (१) ढीला-ढाला जनाना कुरता । (२) झूलना, हिंडोरा ।
वि. [हिं. झूलना] झूलनेवाला ।
झुल्ला—संज्ञा पुं. [हिं. झूला] झूला, हिंडोला ।
झुहिरना—क्रि. अ.—लदना, लादा जाना ।
झुहिराना—क्रि. स. [हिं. झुहिरना] (बोझ) लादना ।
झूँक—संज्ञा पुं. [हिं. झोंका] हवा का झोंका ।
संज्ञा स्त्री. [हिं. झोंक] (१) झुकाव । (२) बोझ । (३) तेजी । (४) कार्य की उठान या गति । (५) ठाठ । (६) झोंका, झकोरा ।
झूँकना—क्रि. स. [हिं. झोंकना] छोड़ना, डालना ।
क्रि. स. [हिं. झखना] झीखना । दुखड़ा रोना ।
झूँखना—क्रि. अ. [हिं. झीखना] कुढ़ना । दुखड़ा रोना ।
झूँझल—संज्ञा स्त्री. [हिं. झुँझलाना] झुँझलाहट ।
झूँका—संज्ञा पुं. [हिं. झोंका] झकोरा, हिलोरा ।
झूँटा—संज्ञा पुं. [हिं. झोंटा] झूले का पेंग ।
वि. [हिं. झूठ] झूठ बोलनेवाला ।
झूँठ—संज्ञा पुं. [हिं. झूठ] असत्य कथन ।
वि.—असत्य, मिथ्या ।
झूँपड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. झोपड़ा] झोपड़ा, कुटिया ।
झूँसना—क्रि. अ. [हिं. झुलसना] झुलसना ।
झूँसा—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह की घास ।
झूक—संज्ञा पुं. [हिं. झोंका] हवा का झोंका ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा स्त्री. [हिं. झोंक] (१) झुकाव। (२) झोंका।

संज्ञा स्त्री. [हिं. जूट+काँटा] छोटी झाड़ी।

झूकटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. जूट+काँटा] छोटी झाड़ी।

झूकै—क्रि. अ. [हिं. झुकना=झोंका जाना] गिरे, पड़े, डूबे। उ.—जाकौ दीनानाथ निवाजैं। भवसागर मैं कबहुँ न झूकै, अभय निसाने बाजैं—१-३६।

झूखी—क्रि. अ. [हिं. झींखना] दुखी हुई, कुढ़ी, खीझी, पछतायी। उ.—अवधि गनत इकटक मग जोवत तब एती नहिं झूखी—३०२६।

झूझ—संज्ञा पुं. [सं. युद्ध] युद्ध।

झूझना—क्रि. अ. [हिं. जूझना] युद्ध करना।

झूझी—क्रि. अ. [हिं. झूझना] लड़ी, युद्ध किया।

झूट, झूठ—संज्ञा पुं. [सं. अयुक्त, प्रा. अजुत्त, हिं, झूठ] मिथ्या या अयथार्थ कथन। उ.—सूर पतित जौ झूठ कहत है, देखौ खोजि बही—१-१३७।

मुहा.—झूठ-सच कहना (लगाना)—ठीक बेठीक बातें बताकर शिकायत करना।

वि. [हिं. जूठा] निस्सार, असार। उ.—सुख-संपति, दारा सुत, हयगय, झूठ सबै समुदाइ। छनभंगुर यह सबै स्याम बिनु अंत नाहिं सँग जाइ—१-३१७।

संज्ञा स्त्री. [हिं. जूठन] जूठी चीज, जूठन।

झूठनि—वि. [हिं. झूठ+नि (प्रत्य.)] जो सच्चे नहीं हैं, जो नश्वर हैं, असार। उ.—झूठौ मन, झूठी सब काया, झूठी आरभटी। अरु झूठनि के बदन निहारत मारत फिरत लटी—१-६८।

झूठमूठ—क्रि. वि. [हिं. झूठ+अनु. मूठ] (१) बिना किसी तथ्य या आधार के। (२) यों ही, व्यर्थ।

झूठहिं—क्रि. वि. [हिं. झूठ+हिं. (प्रत्य.)] झूठे ही, झूठमूठ ही। उ.—प्रेम सहित मुख खीझति जाहीं। झूठहिं बार-बार पछिताहीं—७६६।

झूठा—वि. [हिं. झूठ] (१) मिथ्या, असत्य। (२) जो सच न बोले। (३) जो असली न हो। (४) जो (पुरजे आदि बिगड़ जाने से) ठीक काम न दे। (५) साररहित, असार, मायामय।

वि. [हिं. जूठा] (१) जो शुद्ध या पवित्र न हो। (२) भोगा हुआ। (३) खाया हुआ।

झूठी—वि. [हिं. पुं. झूठा] (१) असत्य, मिथ्या। (२) नाशवान। उ.—झूठौ मन, झूठी सब काया, झूठी आरभटी—१-६८। (३) गलत, अशुद्ध बातों से युक्त। उ.—अहंकार पटवारी कपटी झूठी लिखत बही—१-१८५।

झूठे—वि. [हिं. झूठ] (१) मिथ्या, असत्य, जो सच्चे न हों। उ.—एकनि कौं जिय-बलि दै पूजे, पूजत नैंकु न तूठे। तब पहिचानि सबनि कौं छाँड़े, नख-सिख लौं सब झूठे—१-१७७। (२) नाशवान, निस्सार, मायामय। उ.—झूठे नाते जगत के सुत कलत्र परिवार—२-२६।

झूठेहिं—क्रि. वि. [हिं. झूठ] झूठमूठ। उ.—झूठेहिं मोहिं लगावति ग्वारि—१०-३०४।

झूठैं—क्रि. वि. [हिं. झूठ] झूठ ही, झूठमूठ ही। उ.—झूठैं लोग लगावत मोकौं, माटी मोहिं न सुहावै—१०-२५३।

झूठों, झूठौं—क्रि. वि. [हिं. झूठा] (१) झूठमूठ, यों ही सा, व्यर्थ ही। (२) नाममात्र को, कहने भर को।

झूठो, झूठौ—वि. [हिं. झूठ] (१) असत्य, निस्सार, मिथ्या। उ.—(क) झूठौ सुख अपनौ करि जान्यौ, परस प्रिया कैं भीनौं—१-६५। (ख) यहै तन-गति जनम झूठौ, स्वान काग न खाइ—१-३१६। (२) गलत, अयथार्थ। उ.—अब झूठौ अभिमान करति है—६-७७। (३) मिथ्यावादी।

झूना—वि. [हिं. झीना] महीन, पतला, झीना।

झूम—संज्ञा स्त्री. [हिं. झूमना] (१) झूमने की क्रिया या भाव। (२) ऊँघ, उँघाई, झपकी।

झूमक—संज्ञा पुं. [हिं. झूमना] (१) होली का एक गीत जिसे स्त्रियाँ झूमझूम कर गाती हैं। उ.—झूमि झूमि झूमक सब गावति बोलति मधुरी बानी—२३६१। (२) विवाह के अवसर का एक गीत। (३) गीत के साथ का नृत्य। (४) गुच्छा। (५) चाँदी-सोने की गोलियों या मोतियों के गुच्छे जो साड़ी के उस भाग में लगाये जाते हैं जो माथे पर रहता है। (६) झुमका नामक कान का गहना।

झूमकसाड़ी, झूमकसारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झूमक+सारी] वह साड़ी या ओढ़नी जिसके माथे पर रहने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले भाग में सोने-चांदी की गोलियां या मोती आदि लगे हों। उ.—लाख टका और झूमक (झुमका) सारी देहु दाइ की नेगु—१०-४०।

झूमका—संज्ञा पुं. [हिं. झुमका] (१) कान का एक गहना, फूल के आकार का एक गहना। उ.—मोतिन झालरि झूमका राजत बिच नीलमनि बहुभावनो। (२) सोने-चांदी की गुरियों या मोतियों का गुच्छा जो माथे की शोभा बढ़ाने को साड़ी या ओढ़नी में टाँका जाता है। उ.—अंचल चंचल झूमका।

झूमड़—संज्ञा पुं. [हिं. झूमरा] एक गहना।

झूमड़ा—संज्ञा पुं.[हिं झूमरा] एक तरह का ताल।

झूमड़ झामड़—संज्ञा पुं. [हिं. झूमड़ा] ढकोसला।

झूमना—क्रि. अ. [सं. झंप] (१) हिलना, झोंके खाना। (२) नशे या नींद में सिर हिलाना।

मुहा.—दरवाजे (द्वार) पर हाथी झूमना—बहुत धनी होना। झूमझूमकर—बड़ी मस्ती या नशे से सिर हिला हिलाकर।

झूमर, झूमरि—संज्ञा पुं. [हिं. झूमना, या सं. युग्म, प्रा. जुम्म+र (प्रत्य.)] (१) सिर का एक गहना। (२) झुमका नामक गहना। (३) होली का झूमक गीत। (४) इस गीत का नाच। (५) चीजों का अंबार या जमघटा। (६) स्त्री-पुरुषों का घेरा बनाकर नाचना। (७) झूमरा ताल। (८) एक खिलौना।

झूमरा—संज्ञा पुं. [हिं. झूमर] ताल का एक भेद।

झूमरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] ताल का एक भेद।

झूमि—क्रि. अ. [हिं. झूमना] मस्ती से झूमझूमकर। उ.—झूमि-झूमि झूमक सव गावति बोलति मधुरी बानी—२३६१।

झूमै—क्रि. अ. [हिं. झूमना] झूमता है, मस्त चाल से उठता या चलता है। उ.—चारु चखौड़ा पर कुंचित कच, छबि मुक्ता ताहू मैं। मनु मकरंद-बिंदु लै मधुकर, सुत-प्यावन-हित झूमै—१०-१४७।

झूर—वि. [हिं. धूर या चूर] सूखा, शुष्क।

वि. [हिं. झूठ] (१) खाली। (२) बेकार।

वि. [हिं. जुष्ट] जूठा, खाया हुआ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. झार] (१) दाह। (२) दुख।

झूरना—क्रि. स. [हिं. झूर] सूखना, दुबला होना।

झूरा—वि. [हिं. झूर] (१) सूखा। (२) खाली। (३) व्यर्थ। (४) जूठा, उच्छिष्ट।

संज्ञा पुं.—(१) सूखा स्थान। (२) वर्षा का अभाव। (३) कमी।

झूरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. झूर] (१) जलन, दाह। (२) दुख, व्यथा। उ.—सूर दाहनि मरत गोपी कूबरी के झूरि—२६८२।

क्रि. स. [हिं. झाड़ना] झाड़कर, खोज या झटककर, प्राप्त करके। उ.—झारि झूरि मन तौ तू लै गयौ बहुरि पयारहिं गाहत—३०६५।

झूरै—क्रि. अ. [हिं. झूर] दुखी होती है, परिताप सहती है। उ.—बाँधि पची डोरी नहिं पूरै। बार-बार खीझै, रिस झूरै—३६१।

क्रि. वि.—व्यर्थ, निष्प्रयोजन।

झूल—संज्ञा स्त्री. [हिं. झूलना] (१) शोभा के लिए चौपायों की पीठ पर डाला जानेवाला चौकोर कपड़ा।

मुहा—गधे पर झूल पड़ना—अयोग्य या कुरूप को बढ़िया वस्त्र मिलना।

(२) ढीला-ढाला और बेढंगा सिला कपड़ा।

मुहा.—झूल डाले घूमना—ढीला- ढाला और बेढंगा सिला कपड़ा पहने घूमना।

(३) झूलने का झूला, हिंडोला।

झूलत—क्रि. अ. [हिं. झूलना] (पालने या झूले आदि पर) झूलते हुए, पेंग लेते हुए। उ.—सुर-नर मुनि कौतूहल फूले, झूलत देखत नंदकुमार—१०-८४।

झूलन—संज्ञा पुं. [हिं. झूलना] (१) वह उत्सव जिसमें श्रीराम या श्रीकृष्ण की मूर्तियों को झूले में बैठाकर झुलाते हैं, हिंडोल। (२) एक तरह का गाना।

संज्ञा स्त्री.—झूलने की क्रिया या भाव। उ.—वह छबि छाके अति हैं दोऊ लोचन वाहे गहि झूलनि की—३२६६।

झूलना—क्रि. अ. [सं. दोलन] (१) इधर-उधर हिलना। (२) झूले पर बैठकर पेंग लेना। (३) किसी आशा या आसरे में रहना।

वि.—झूलनेवाला, जो हिलता-डोलता हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा पुं.—(१) **एक छंद। (२) हिंडोला, झूला।**

झूलनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. झूलन] **झूलने की क्रिया या भाव।** उ.—कहाँ लता तरु तरु प्रति झूलनि कुंज कुंज बन धाम—३०११।

झूलरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. झूलना] **झूलता या हिलता-डोलता गुच्छा या झुमका।**

झूला—संज्ञा पुं [सं. दोला] (१) **ऊँचे स्थान पर बँधी रस्सी या जंजीर जिस पर पटरी डाल कर झूलते हैं, हिंडोला।** (२) **झूलता हुआ पुल।** (३) **पशुओं की झूल।** (४) **ढीला-ढाला कुरता।** (५) **झोंका, झटका, धक्का, हिलकोरा।**

झूलि—क्रि. अ. [हिं. झूलना] **हिलडुल या झूलकर।**

झूले—वि. [हिं. झूलना] **झूलते या झूमते हुए।** उ.—कुमुदिनि सकुची, वारिज फूले। गुंजत फिरत अलीगन झूले—१०-२३३।

क्रि. अ.—**झूले पर पेंग लिये।** उ.—जो छबि निरखत सो पुनि नाहीं भरम-हिंडोरे झूले—पृ. ३३४।

झूलैं—क्रि. स. [हिं. झूलना] **झूलते हैं।** उ.—झूलैं सखी झुलावहीं, सूरदास बलि जाइ, बलि हालरु रे—१०-४७।

झूलौ—क्रि. अ. [हिं. झुलना] **झूलो, झूले पर बैठकर पेंग लो।** उ.—(क) पालनौ आन्यौ बनाइ, अति मन मान्यौ सुहाइ, नीकौ सुभ दिन सुधाइ, झूलौ रे झुलैया—१०-४१। (ख) पलना झूलौ मेरे लाल पियारे—१०-१६०।

झूल्यौ—क्रि. अ. [हिं. झूलना] **हिला-डुला, डोल गया, भ्रम में भटक गया।** उ.—यह गोकुल किधौं और किधौं मैं ही चित्त भूल्यौ। ये अबिनासी होइँ, ज्ञान मेरौ भ्रम भूल्यौ—४६२।

झेंपना, झेपना—क्रि. अ. [हिं. छिपना] **लजाना।**

झेर—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. देर] (१) **विलंब, देर।** उ.—(क) काहे को तुम झेर लगावति। दान देहु घर जाहु बेचि दधि तुम ही को यह भावति—११४५। (ख) दधि बेचहु घर सूधे आवहु काहे झेर लगावति—११७४। (ग) चलहु तुरत जिनि झेर लगावहु—१८८१। (२) **झगड़ा, बखेड़ा, टंटा।** उ.—बिरह बिषय चहुँघा भरमति है स्याम कहा कियौ झेर—१२१५।

झेरन—संज्ञा स्त्री. [हिं. झेर] **झगड़ा, बखेड़ा।** उ.—नंदकुमार छाँड़ि को लैहे जोग दुखन की टेरन। जहाँ न परम उदार नंदसुत मुक्ति परो किन झेरन—२४७७।

झेरना—क्रि. स. [हिं. झेलना] **झेलना, सहना।**

क्रि. स. [हिं. छेड़ना] **आरंभ या शुरू करना।**

झेरा—संज्ञा पुं. [हिं. झेर] **झगड़ा, बखेड़ा, झंझट।**

झेरें, झेरे—संज्ञा पुं [हिं. झेर] **झगड़ा, बखेड़ा, झंझट।** उ.—(क) श्री बनवारी बृथा करत काहे झेरें। (ख) कतहिं करत त्रिय झेरे री—२०३४।

झेरो, झेरौ संज्ञा स्त्री. [फ़ा. देर, हिं. झेर] (१) **झगड़ा, बखेड़ा।** उ.—(क) दीपक मैं धरयौ बारि, देखत भुज भए चारि, हारी हौं धरति करति दिन-दिन कौ झेरौ—१०-२७६। (ख) जंत्र-मंत्र कह जानै मेरौ। यह तुम जाइ गुननि कौं बूझौ, इहाँ करति कत झेरौ—७५३।

झेल—संज्ञा स्त्री. [हिं. झेलना] (१) **तैरने की क्रिया।** (२) **हल्का धक्का या हिलकोरा।** उ.—सुरत समुद्र मगन दंपति रस झेलत अति सुख झेल। (३) **झूलने की क्रिया या भाव।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. झेर] **विलंब, देर।**

झेलत—क्रि. स. [हिं. झेलना] **(हाथ-पैर से) पानी उछालते या हटाते हैं।** उ.—(क) कर पग गहि, अँगुठा मुख मेलत। प्रभु पौढ़े पालनैं अकेले, हरषि हरषि अपनैं रंग खेलत। सिव सोचत, बिधि बुद्धि बिचारत, बट बाढ़्यौ सागर जल झेलत—१०-६३। (ख) बाल केलि को बिसद परम सुख सुख समुद्र नृप झेलत—सारा. १८६।

झेलना—क्रि. स. [सं. दवेल = हिलाना-डुलाना] (१) **सहना, बरदाश्त करना।** (२) **तैरने में पानी को हाथ-पैर से हटाना।** (३) **पानी में हिलना।** (४) **ठेलना, आगे बढ़ाना।** (५) **हजम करना।**

झेलनि, झेलनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झेलना] **सोने-चाँदी की जंजीर जो नाक के गहने का भार सम्हालने के**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए बालों में अटकायी जाती है।

झेलि—क्रि. स. [हिं. झेलना] ऊपर लेकर। उ.—ठेलि हलधर दियो झेलि तब हरि लियो महल के तरे धरनी गिरायौ—२६१५।

झोंक—संज्ञा स्त्री. [सं. युक्त, हिं. झुकना] (१) झुकाव, प्रवृत्ति, रुचि। (२) बोझ, भार। (३) वेग, झटका, तेजी। (४) कार्य की गति। (५) ठाट, सजावट, चाल। (६) पानी का हिलोरा। (७) झोंका।

झोंकना—क्रि. स. [हिं. झोंक] (१) तेजी से फेंकना।

मुहा.—भाड़ झोंकना—तुच्छ काम करना।

(२) ठेलना, आगे बढ़ाना। (३) अँधाधुंध खर्च करना। (४) दुख या मुसीबत में डालना। (५) बहुत ज्यादा काम किसी पर लादना। (६) दोष लगाना।

झोंकवा—वि. [देश.] भाड़ झोंकनेवाला।

झोंकवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. झोंकना] (भाड़ आदि) झोंकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झोंकवाना—क्रि. स. [हिं. झोंकना] झोंकने के काम में लगाना या प्रवृत्त करना।

झोंका—संज्ञा पुं. [हिं. झोंक] (१) धक्का, रेला, झपेटा। (२) वायु का झटका या थपेड़ा। (३) वायु का प्रवाह या झकोरा। (४) पानी का हिलकोरा। (५) झूमने या हिलने-डोलने की क्रिया।

मुहा.—झोंका आना—ऊँघना, नींद से झूमना। झोंका खाना—झटका खाना।

(६) ठाट, सजावट, चाल।

झोंकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. झोंकना] (भाड़ आदि) झोंकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झोंकिया—वि. [हिं. झोंकनां] झोंकनेवाला।

झोंकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झोंक] (१) बोझ। (२) हानि।

झोंको—संज्ञा स्त्री. [हिं. झोंका] ठाट, सजावट, चाल, अंदाज। उ.—पहिरे राती चूनरी सिर उपरना सोहै। कटि लहँगा लीलो बन्यौ झोंको जो देखि मन मोहै।

झोंझ—संज्ञा पुं. [देश.] (१) घोसला। (२) खुजली।

झोंझल—संज्ञा पुं. [हिं. झुँझलाना] झुँझलाहट।

झोंझा—संज्ञा पुं. [हिं. झोंझ] बया का घोसला।

झोंट—संज्ञा पुं. [सं. झुंट] (१) झाड़ी। (२) आड़। (३) समूह, जुट्टी, गड्डी। (४) झोंटा।

झोंटा—संज्ञा पुं. [सं. जूट] (१) बड़े-बड़े और बिखरे हुए बाल। (२) जुट्टा, समूह, गड्डी।

संज्ञा पुं. [हिं. झोंका] झूले का झोंका या पेंग। उ.—ललिता बिसाखा देहिं झोंटा रीझि अंग न समाति—२८८१।

संज्ञा पुं. [हिं. ढोटा] भैंस का बच्चा। भैंसा।

झोंटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झोंटा] बड़े बड़े बाल।

संज्ञा स्त्री. [हिं. झोंका] हिलोर, झकोरा, झोंका।

झोंपड़ा—संज्ञा पुं [हिं. छोपना = छाना] कुटी।

मुहा.—अंधा झोपड़ा—पेट। अंधे झोपड़े में आग लगना—भूख लगना।

झोंपड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झोपड़ा का अल्प.] कुटिया।

झोंपा—संज्ञा पुं. [हिं. झब्बा] गुच्छा, झब्बा।

झोटा—संज्ञा पुं. [हिं. झोंका] झूले का पेंग। उ.—ललिता बिसाखा देहि झोटा रीझि अंग न समाति—२२८१।

झोटिंग—वि. [हिं. झोंटा] बड़े बालवाला।

झोपड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. झोपड़ा] कुटी।

झोपड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झोंपड़ी] कुटिया।

झोर—संज्ञा पुं. [हिं. झोल] गाढ़ा रसा, शोरवा।

झोरई—वि. [हिं. झोल] झोल या रसेदार। उ.—सूर करत री सरस तोरई। सेमि सींगरी छमकि झोरई।

संज्ञा स्त्री.—झोल या रसेदार तरकारी।

झोरना—क्रि. स. [सं. दोलन] (१) झटके से हिलाना। (२) हिलाकर गिराना। (३) इकट्ठा करना।

झोरा—संज्ञा पुं. [हिं. झब्बा] गुच्छा, झब्बा।

झोरि—क्रि. स. [हिं. झेरना] झटके से हिलाकर या कँपाकर। उ.—कहयौ कहारनि हमैं न खोरि। नयौ कहार चलत पग झोरि।

संज्ञा स्त्री. [हिं. झोली] झोली।

झोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. झोली] (१) झोली। उ.—हमरे कौन बेद बिधि साधै। बटुआ झोरी देउ अधारा इतनेन को आराधै—३२८४। (२) पेट। (३) एक तरह की रोटी। उ.—रोटी बाटी पोरी झोरी। इक कोरी इक घीव चभोरी—३९६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झोल—संज्ञा पुं. [हिं. झाल] (१) तरकारी का रसा। (२) पतली लेई। (३) माँड़ (४) मुलम्मा।

संज्ञा पुं. [हिं. झूलना] (१) कपड़े का भाग जो ढीला होने के कारण लटक जाय। (२) पल्ला, आँचल। उ.—तनक बदन दोउ तनक तनक कर तनक चरन पोंछत पट झोल।

(३) परदा, ओट, आड़। उ.—कहन देहु कहा करै हमरौ बस उठि जैहै झोल।

वि.—(१) जो कसा या तना न हो, ढीला।

यौ.—झोल-झाल—(१) ढीला। (२) झगड़ा।

संज्ञा पुं.—भूल, गलती।

संज्ञा पुं. [हिं. झिल्ली या झोली] गर्भ।

संज्ञा पुं. [सं. ज्वाल, हिं. झाल] (१) भस्म, राख। (२) दाह, जलन।

क्रि. स. [हिं. जलाना] जलाना, भस्मना।

प्र.—झोल डारयौ—जला दिया। उ.—तिन अति बोल झोल तन डारयौ अनल भँवर की नाईं—३०७७।

झोलदार—वि. [हिं. झोल+फ़ा. दार] (१) रसेदार। (२) जिस पर मुलम्मा हो। (३) ढीला-ढाला।

झोलना—क्रि. स. [सं. ज्वलन] जलाना।

झोला—संज्ञा पुं. [सं. चोल या हिं. झूलना] (१) कपड़े की बड़ी थैली या झोली। (२) ढीला-ढाला गिलाफ या खोल। (३) ढीला-ढाला कुरता, चोला। (४) वात का एक रोग।

मुहा.—किसी को झोला मारना—(१) वात रोग से अंग बेकाम होना। (२) सुस्त या शिथिल पड़ना।

(५) पेड़ों के सूखने का रोग। (६) झटका, आघात। (७) हाथ का संकेत या इशारा। (८) रस्सी को ढीला करना।

झोलिहार, झोलिहारा—संज्ञा पुं. [हिं. झोली+हारा (प्रत्य.)] (१) झोली लटकानेवाला। (२) कहार।

झोली—संज्ञा स्त्री. [हिं. झूलना] (१) कपड़े की थैली। उ.—टूक टूक ह्वै सुभट मनोरथ आने झोली घालि—२८२६।

मुहा.—झोड़ी छोड़ना—बुढ़ापे में खाल लटकना। झोली डालना (लेना, सम्हालना)—साधु या भिक्षुक होना। झोली भरना—(१) बहुत सा सामान भरना। (२) भरपूर भिक्षा देना।

(२) घास बाँधने का जाल। (३) मोट, चरसा।

संज्ञा स्त्री. [सं. ज्वाल या झाला] राख, भस्म।

झोलौ—संज्ञा पुं. [हिं. झोल] निकम्मापन, दोष, बुराई, कमी। उ.—कैधों तुम पावन प्रभु नाहीं, कै कछु मो मैं झोलौ। तौ हौं अपनी फेरि सुधारौं, वचन एक जौ बोलौ—१-१३६।

झौंका—संज्ञा पुं. [हिं. झोंका] हवा का झोंका।

झौंझट—संज्ञा पुं. [हिं. झंझट] झगड़ा, बखेड़ा।

झौंद—संज्ञा पुं. [हिं. झौंझ] पेट, उदर।

झौंर—संज्ञा पुं. [सं. युग्म, प्रा. जुम्म, हिं. झूमर] (१) झुंड, समूह। (२) फूल, पत्ती, फल का गुच्छा। (३) एक गुच्छेदार गहना। उ.—कलगी तुर्रा झौंर जराग सिरपेच सुकुंडल। (४) पेड़ों-झाड़ों का समूह, कुंज।

झौंरना—क्रि. अ. [अनु.] (१) गूँजना, गुंजारना। (२) झपट कर पकड़ लेना, धर दबाना।

झौंरा—संज्ञा पुं. [हिं. झौंर] (१) झुंड। (२) गुच्छा।

झौंराना—क्रि. अ. [हिं. झाँवा या झाँवरा] (१) काला या बदरंग हो जाना। (२) मुरझाना, कुम्हलाना।

क्रि. अ. [हिं. झूमना] हिलना, झूमना।

झौंसना—क्रि. अ. [हिं. झुलसना] (१) ताप की अधिकता से अधजला होना। (२) धूप की तेजी से झुलसना या कुम्हलाना।

झौआ—संज्ञा पुं. [हिं. झाबा] खँचिया, खँची।

झौनी—संज्ञा स्त्री. [देश.] टोकरी।

झौड़, झौर—संज्ञा पुं. [अनु. झाँव-झाँव] (१) झंझट, बखेड़ा, झगड़ा, विवाद। उ.—(क) महरि तैं ब्रज चाहति कछु और। बात एक मैं कही कि नाहीं, आपु लगावति झौर—१०-३२३। (ख) नहीं ढीठ नैनन ते और। कितनो मैं बरजति समुझावति उलटि करत हैं झौर। (२) डाँट-फटकार, कहा-सुनी।

झौरना—क्रि. स. [हिं. झपटना] झपट कर पकड़ लेना, दबा या छोप लेना।

झौरा—संज्ञा पुं. [हिं. झाँव-झाँव] झंझट, हुज्जत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झौरे—क्रि. वि. [हिं. धौरे] (१) समीप, पास, निकट। (२) संग-संग, साथ-साथ।

झौलना—क्रि. स. [सं. ज्वाल] जलाना, बलाना।

झौवा—संज्ञा पुं. [हिं. झावा] खँचिया, खँची।

झौहाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) गुर्राना। (२) जोर से बकना, झकना या चिड़चिड़ाना।

ञ

ञ—देवनागरी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन, चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण, उच्चारण तालु और नाक से होता है।

ट

ट—देवनागरी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यंजन, टवर्ग का पहला वर्ण, इसका उच्चारण करने में तालू से जीभ लगानी होती है।

टंक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक तौल। (२) सिक्कों की तौल का एक मान। (३) सिक्का। (४) पत्थर काटने की टाँकी या छेनी। (५) कुल्हाड़ी। (६) कुदाल। (७) तलवार। (८) टाँग। (९) क्रोध। (१०) अभिमान। (११) खजाना। (१२) एक राग। (१३) म्यान। (१४) एक कँटीला पौधा।

टंकक—संज्ञा पुं [सं.] चाँदी का सिक्का।

टंककशाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] टकसाल।

टंकटीक—संज्ञा पुं. [सं.] शिव।

टंकण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) धातु के पात्र आदि में टाँका लगाने की क्रिया। (२) एक तरह का घोड़ा।

टँकना—क्रि. अ. [सं. टंकण] (१) टाँका या जड़ा जाना। (२) सिया या जोड़ा जाना। (३) सींकर अटकाया जाना। (४) रेती (औजार) तेज होना। (५) लिखा या दर्ज किया जाना। (६) चक्की आदि का खुरदुरा किया जाना।

टंकपति—संज्ञा पुं. [सं.] टकसाल का अध्यक्ष।

टँकवाना—क्रि.स. [हिं. टँकाना] टाँकने का काम कराना।

टंकशाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] टकसाल।

टंका—संज्ञा पुं. [सं. टंक] (१) एक तौल। (२) टका।

संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का गन्ना।

संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) जाँघ। (२) तारा देवी।

टँकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. टँकाना] टाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

टँकाना—क्रि. स. [हिं. टाँकना का प्रे.] (१) जुड़वाना, सिलवाना। (२) सिला कर लगवाना। (३) चक्की, सिल आदि को खुरदुरा कराना।

टंकार—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) टनटन शब्द। (२) धनुष की डोरी खींचकर छोड़ने का शब्द। (३) झनकार, ठनाका। (४) विस्मय। (५) यश, कीर्ति।

टंकारना—क्रि. स. [सं. टंकार] धनुष की डोरी खूब खींचकर और छोड़कर 'टंकार' ध्वनि करना।

टंकारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक पेड़।

टंकिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] पत्थर काटने की छेनी।

टंकी—संज्ञा स्त्री. [सं. टंक] एक रागिनी।

संज्ञा स्त्री. [सं. टंक = गड्ढा] पानी का कुंड।

टंकोर—संज्ञा पुं. [हिं. टंकार] धनुष की टंकार।

टँकोरत—क्रि. अ. [हिं. टंकोरना] 'टंकोर' ध्वनि करता है। उ.—जाके धनुष टँकोरत हाथा—२६३१।

टँकोरना—क्रि. स. [अनु.] (१) धनुष की डोरी से टंकार शब्द करना। (२) ठोकर या टक्कर मारकर शब्द निकालना।

टँकौरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] छोटी तराजू।

टंग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) टाँग। (२) कुल्हाड़ी। (३) कुदाल, फरसा। (४) सुहागा। (५) एक तौल।

टँगड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. टंग] टाँग।

टँगना—क्रि. अ. [सं. टंकण=जड़ा जाना] (१) लटकना। (२) फाँसी पर चढ़ना।

संज्ञा पुं—टाँगने की रस्सी, अलँगनी, बिलगनी।

टँगरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टँगड़ी] टाँग।

टँगारी—संज्ञा स्त्री. [सं. टंग] कुल्हाड़ी, फरसा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टंच—वि. [सं. चंड, हिं. चंठ] (१) कंजूस, सूम। (२) निष्ठुर। (३) चालाक, काइयाँ।

वि. [हिं. टिच्चन] तैयार, मुस्तैद।

टंट-घंट—संज्ञा पुं [अनु. टन टन+घंटा] बहुत साज-सामान के साथ पूजा करने का आडंबर।

टंटा—संज्ञा पुं. [अनु. टनटन] (१) प्रपंच, बखेड़ा, खटराग। (२) दंगा, फसाद। (३) लड़ाई, तकरार।

टँड़िया—संज्ञा स्त्री. [सं. ताड़] बाँह का एक गहना।

टँडुलिया—संज्ञा स्त्री. [देश.] बन-चौलाई का साग।

टंसरि, टंसरी—संज्ञा स्त्री.—एक तरह की वीणा।

टँसहा—संज्ञा पुं. [हिं. टाँस+हा.] लँगड़ा बैल।

वि.—जो लँगड़ा हो गया हो।

ट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नारियल का खोपड़ा। (२) चौथाई भाग। (३) शब्द।

टई—संज्ञा स्त्री. [हिं. टही] जोड़तोड़, युक्ति।

टक—संज्ञा स्त्री. [सं. त्राटक या टक] स्थिर दृष्टि से देखने की क्रिया, गड़ी नजर। उ.—सहज समाधि रूप रस इक टक करत न टक तें टारे—३०३६।

मुहा.—टक बँधना—स्थिर दृष्टि से देखना। टक बाँधना—स्थिर दृष्टि होना। एक टक देखना—स्थिर दृष्टि से देखना। टक लगाना—आसरा देखना, प्रतीक्षा में रहना।

टकटका—संज्ञा पुं. [हिं. टक] स्थिर दृष्टि, टकटकी।

वि.—स्थिर, बँधी हुई या एक तरफ जमी (दृष्टि)।

टकटकाना—क्रि. स. [हिं. टक] (१) एक टक या दृष्टि जमाकर देखना। (२) टकटक शब्द करना।

टकटकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टक] स्थिर दृष्टि।

मुहा.—टकटकी बँधना—दृष्टि स्थिर होना या जमना। टकटकी बाँधना—स्थिर दृष्टि से देखना।

टकटकै—क्रि. स. [हिं. टकटकाना] स्थिर या एकटक दृष्टि से देखकर। उ.—टकटकै मुख झुकी नैनहीं नागरी, उरहनो देत रुचि अधिक बाढ़ी।

टकटोना—क्रि. स. [हिं. टकटोरना] टटोलना।

टकटोरत—क्रि. स. [हिं. टकटोरना] टटोलता है, स्पर्श करके देखता है। उ.—पुनि पीवत ही कच टकटोरत झठहिं जननि रहै—१०-१७४।

टकटोरना—क्रि. स. [हिं. टटोलना] (१) छूकर या स्पर्श करके जाँचना। (२) ढूँढ़ना। (३) कुतरना।

टकटोरि—क्रि. स. [हिं. टकटोरना] जाँचकर, परखकर, परीक्षा लेकर। उ.—सूर एकहू अंग न काची मैं देखी टकटोरि—३४६८।

टकटोलना—क्रि. स. [हिं. टकटोरना] टटोलना।

टकटोहन—संज्ञा पुं. [हिं. टकटोना] टटोलकर या स्पर्श करके देखने या जाँचने की क्रिया या भाव। उ.—स्याम-स्याम मन रिझवत पीन कुचन टकटोहन।

टकटोहना—क्रि. स. [हिं. टकटोलना] टटोलना।

टकटोहै—क्रि. स. [हिं. टकटोलना, टकटोहना] जाँचता है, टटोलता है, खोजता है। उ.—या छबि की पटतर दीबै कौं सुकबि कहा टकटोहै। देखत अंग-अंग प्रति बानक, कोटि मदन-मन मोहै—१०-१५८।

टकटौरे—क्रि. स. [हिं. टकटोरना] कुतरता है, काट लेता है। उ.—वरा कौर मेलत मुख भीतर, मिरिच दसन टकटौरे। तीछन लगी नैन भरि आए, रोवत बाहर दौरे—१०-२२४।

टकतंत्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक पुराना बाजा।

टकना—संज्ञा पुं. [हिं. टाँग] घुटना, टँखना।

क्रि. अ. [हिं. टँकना] टाँका या सिया जाना।

टकबीड़ा—संज्ञा पुं. [देश.] विवाहादि की भेंट।

टकरात—क्रि. अ. [हिं. टकराना] मारे-मारे बेकार घूमता है। उ.—जहँ-तहँ फिरत स्वान की नाई द्वार-द्वार टकरात।

टकराना—क्रि. अ. [हिं. टक्कर] (१) धक्का या ठोकर खाना। (२) इधर-उधर मारे-मारे घूमना-फिरना।

मुहा.—टकराते फिरना—मारे-मारे बेकार घूमना।

क्रि. स.—एक वस्तु को दूसरी से भिड़ाना।

मुहा.—माथा टकराना—(१) पैर पर सिर रखकर विनय करना। (२) बहुत प्रयत्न करना।

टकरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक तरह का पेड़।

टकसरा—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का बाँस।

टकसार, टकसाल—संज्ञा स्त्री. [हिं. टंकशाला] (१) सिक्के बनाने या ढालने का स्थान।

मुहा.—टकसाल का खोटा—नीच, अशिष्ट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टकसाल चढ़ना—(१) परखा जाना, परीक्षा होना। (२) चतुर या कुशल समझा जाना। (३) बुराई में पक्का होना। टकसाल बाहर—(१) (जो सिक्का) प्रचार में न हो। (२) (जो वाक्य, शब्द या प्रयोग) शिष्ट या प्रामाणिक न हो।

(२) निर्दोष, प्रामाणिक या असल चीज।

टकसाली—वि. [हिं. टकसाल] (१) टकसाल का या उससे संबंधित। (२) खरा, चोखा, असली। (३) सर्वसम्मत, सर्वमान्य, (४) जँचा हुआ, प्रामाणिक, शिष्ट, मान्य।

मुहा.—टकसाली बात—ठीक और पक्की बात। टकसाली बोली या भाषा—शिष्ट और सर्वसम्मत भाषा या प्रयोग।

संज्ञा पुं.—टकसाल का अध्यक्ष या अधिकारी।

टका—संज्ञा पुं. [सं. टंक] (१) चाँदी का एक पुराना सिक्का, रुपया। उ.—नाइन बोलहु नवरँगी (हो), ल्याउ महाउर वेग। लाख टका अरु झूमका (देहु) सारी दाइ कौं नेगु—१०-४०। (२) ताँबे का एक सिक्का जो दो पैसों के बराबर होता है।

मुहा.—टका पास न होना—दरिद्र होना। टका सा जवाब देना—(१) साफ इनकार करना, कोरा जवाब देना। (२) साफ निकल जाना। टका सा मुँह लेकर रह जाना—लज्जित हो जाना, खिसिया जाना। टका सी जान—(१) अकेला दम। (२) बहुत सुकुमार या कोमल होना।

(३) रुपया-पैसा। (४) तीन तोले की तौल।

टकाटकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टकटकी] गड़ी हुई दृष्टि।

टकानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टँकना] बैलगाड़ी का जूआ।

टकासी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टका] टके रुपए का व्याज।

टकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टकटकी] गड़ी हुई दृष्टि।

टकुआ—संज्ञा पुं. [सं. तर्कुक, प्रा. तकुआ] सूत चढ़ाने का सूआ, चरखे का तकुआ या तकला।

टकुली—संज्ञा स्त्री. [सं. टंक] पत्थर काटने की टाँकी।

टकूचना—क्रि.स. [हिं. टाँकना] मुनाफा लेना या खाना।

टकैट, टकैत—वि. [हिं. टका+ऐत (प्रत्य.)] धनी।

टकोर—संज्ञा स्त्री. [सं. टंकार] (१) हल्की चोट, ठेस। (२) डंके या नगाड़े की चोट या आवाज। (३) धनुष की टंकार। (४) गरम पोटली की सेंक। (५) खटास से दाँतों की टीस। (६) झालपन, चरपराहट। उ.—कबहूँ कौर खात मिरचन की लागी दसन टकोर।

टकोरना—क्रि. स. [हिं. टकोर] (१) ठोकर या ठेस मारना। (२) डंके पर चोट देना। (३) सेंक करना।

टकोरा—संज्ञा पुं. [सं. टंकार] डंके की चोट।

टकोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टक्कर] चोट, आघात।

टकौना—संज्ञा पुं. [हिं. टका] (१) टका। (२) रुपया।

टकौरी—संज्ञा स्त्री. [सं. टंक] छोटी तराजू, काँटा।

टक्कर—संज्ञा स्त्री. [अनु. ठक] (१) धक्का, ठोकर।

मुहा.—टक्कर खाना—(१) धक्का या ठोकर लगाना। (२) बेकार फिरना और सफल न होना।

(२) मुठभेड़, लड़ाई, भिड़ंत।

मुहा.—टक्कर का—बराबरी का, समान। टक्कर खाना—(१) लड़ना-भिड़ना। (२) मुकाबले का या समान होना। टक्कर लेना—मुकाबला करना, लड़ना-भिड़ना। पहाड़से टक्कर लेना—बड़े प्रतिद्वंद्वीसे भिड़ना।

(३) कड़ी चीज से सिर टकराने का आघात।

मुहा.—टक्कर मारना—(१) सिर पटकना। (२) कठिन परिश्रम करने के बाद भी लाभ न होना।

(४) घाटा, हानि, नुकसान।

मुहा.—टक्कर झेलना—नुकसान सहना।

टखना—संज्ञा पुं. [सं. टंक=टाँग] पैर का गट्टा।

टगटगाना—क्रि. स. [हिं. टकटकी] एकटक देखना।

टगण—संज्ञा पुं. [सं.] छः मात्राओं का एक गण।

टगर—संज्ञा पुं. [सं. टंकण] विलास, क्रीड़ा।

टघरना—क्रि. अ. [हिं. पिघलना] (१) घी आदि पिघलना। (२) हृदय में दया आदि उपजना।

टघराना—क्रि. स. [हिं. टघरना] (१) घी आदि पिघलाना। (२) हृदय में दया आदि का संचार करना।

टचटच—क्रि. वि. [हिं. टचना=जलना] (आग की लपट के) धकधक या धाँय-धाँय शब्द के साथ।

टचना—कि. अ. [अनु.] धकधक करके जलना।

टचनी—संज्ञा स्त्री. [सं. टंक] नक्काशी का औज़ार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टटका—वि. [सं. तत्काल] (१) हाल का, ताजा, तुरंत का। (२) जो बरता न गया हो।

टटकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. टटका+आई] ताजापन।

टटकी—वि. स्त्री. [हिं. टटका] (१) तत्काल की, हाल की, अभी की। उ.—निसि के उनींदे नैन, तैसे रहे ढरि ढरि, कीधौं कहुँ प्यारी कौं लागी टटकी नजरि—७५२। (२) नयी, कोरी, बिना बरती।

टटड़ी—संज्ञा स्त्री. [पंजाबी] (१) खोपड़ी। (२) हड्डियों की ठटरी। (३) खपच्चियों का ढाँचा।

टटरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टट्टी] खपच्चियों का ढाँचा।

टटाना—क्रि. अ. [हिं. ठाँठ] सूख जाना।

टटल-बटल—वि. [अनु.] ऊटपटाँग, अंटसंट।

टटावली—संज्ञा स्त्री. [सं. टिट्टिभावलि] कुररी चिड़िया।

टटिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. टट्टी] खपच्चियों का ढाँचा।

टटियाना—क्रि. अ. [हिं. टटाना] सूख जाना।

क्रि. अ. [हिं. टट्टी] टट्टी से घेरना।

टटीवा—संज्ञा पुं. [अनु.] घिरनी, चक्कर।

टटीरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिटिहरी] कुररी चिड़िया।

वि.—(१) बहुत दुबला-पतला। (२) तेज।

टटुआ—संज्ञा पुं. [हिं. टट्टू] छोटा घोड़ा, टाँगन।

टटुई—संज्ञा स्त्री. [हिं. टट्टू] मादा टट्टू।

टटोना, टटोरना, टटोलना, टटोहना—क्रि. स. [सं. त्वक्+तोलन=अंदाज करना, हिं. टटोलना] (१) छूना, दबाना। (२) ढूँढ़ना, खोजना। (२) मन की थाह लेना। (४) परीक्षा करना।

टटोल—संज्ञा स्त्री. [हिं. टटोलना] टटोलने का भाव।

टट्टड़, टटटर—संज्ञा पुं. [सं. तट या स्थाता] (१) बाँस की खपच्चियों का दरवाजा। (२) सीखचों का छाजन। (३) भेरी का शब्द।

टट्टनी—संज्ञा स्त्री· [सं.] छिपकली।

टट्टरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) ढोल-नगाड़े का शब्द। (२) लंबी-चौड़ी बात। (३) चुहलबाजी।

टट्टा—संज्ञा पुं. [सं. तट या स्थाता=जो खड़ा हो] (१) बाँस की खपच्चियों का परदा। (२) तख्ता।

टट्टी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टट्टर] (१) बाँस की खपच्चियों या खस के परदे आदि की आड़ या रोक।

मुहा.—टट्टी की आड़ (ओट) से शिकार खेलना—(१) छिपकर चाल चलना। (२) छिपाकर बुरा काम करना। टट्टी में छेद करना—खुलकर बुरा काम करना। टट्टी लगाना—(१) आड़ करना। (२) सामने ही भीड़ इकट्ठा करना। धोखे की टट्टी—(१) धोखा देने की आड़। (२) ऐसी आड़ या चीज जिसके कारण लोग धोखा खा जायँ। (३) ऐसी चीज जो सुंदर हो, पर ज्यादा काम की न हो, चटपट टूट जानेवाली दिखावटी चीज।

(२) परदा, चिलमन। (३) परदे की पतली दीवार। (४) बाँस की खपच्चियों का हलका छाजन।

टट्टू—संज्ञा पुं. [अनु.] छोटा घोड़ा, टाँगन।

मुहा.—टट्टू पार होना—मतलब निकल जाना। भाड़े का टट्टू—रुपया लेकर काम करनेवाला।

टठिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. टाठी] छोटी थाली।

टड़िया—संज्ञा स्त्री. [सं. ताड़] बाँह का एक गहना जो अनंत से कुछ मोटा और बेघुंडी का होता है, टाँड़।

टन—संज्ञा स्त्री. [अनु.] घंटा बजने का शब्द।

मुहा.—टन हो जाना—चटपट मर जाना।

टनकना—क्रि. अ. [अनु. टन] (१) टनटन बजना। (२) सिर में रहरह कर पीड़ा होना।

टनटन—संज्ञा स्त्री. [अनु.] घंटा बजने का शब्द।

टनटनाना—क्रि. अ. [हिं. टनटन] घंटा बजना।

क्रि. स.—घंटा बजाना, टनटन करना।

टनमन—संज्ञा पुं. [हिं. टोना] जादू-टोना।

टनमन, टनमना—वि. [सं. तन्मनस्] स्वस्थ, चंगा।

टनाका—संज्ञा पुं. [अनु. टन] घंटा बजने का शब्द।

वि.—माथा टनकानेवाली तेज और कड़ी (धूप)।

टनाटन—संज्ञा स्त्री. [अनु.] लगातार टनटन शब्द।

वि.—बिलकुल ठीक दशा में और दृढ़।

क्रि. वि.—'टनटन' शब्द के साथ।

टप—संज्ञा स्त्री. [हिं. टोप, तोप=आच्छादन] खुली गाड़ियों का ओहार, सायवान, कलंदरा या छतरी।

संज्ञा पुं. [हिं. ठप्पा] एक औजार।

संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) बूँद टपकने का शब्द। उ.—परत स्रम-बूँद टप टपकि आनन बाल भई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेहाल रति मोह भारी। (२) किसी चीज के अचानक ऊपर से गिर पड़ने का शब्द।

मुहा.—टप से—झटपट, चट से, तुरंत।

टपक—संज्ञा स्त्री. [हिं. टपकना] (१) टपकने का भाव। (२) बूँद टपकने का शब्द। (३) रुक रुक कर होने-वाला दर्द, टीस, कसक।

टपकत—क्रि. अ. [हिं. टपकना] चूता है, बूँद बूँद पानी गिरता है। उ.—अति दरेर की झरेर टपकत सब अँबराई—१५६५।

टपकना—क्रि. अ. [अनु. टपटप] (१) बूँद-बूँद गिरना, चूना, रसना। (२) फल का पककर गिरना। (३) ऊपर से अचानक गिरना।

मुहा.—आ टपकना—टपक पड़ना, एकाएक आकर उपस्थित हो जाना।

(४) लक्षण, चेष्टा आदि से कोई भाव प्रकट या व्यंजित होना। (५) चित्त लुभाना या मोहित होना। (६) घाव-फोड़े का टीसना। (७) घायल होकर गिरना।

टपका—संज्ञा पुं. [हिं. टपकना] (१) टपकने का भाव। (२) टपकी हुई चीज। (३) गिरा हुआ पक्का फल। (४) रह रहकर उठनेवाला दर्द, टीस।

टपका-टपकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टपकना] (१) बूँदा-बाँदी, हलकी वर्षा। (२) पके फलों का गिरना। (३) किसी चीज के लिए बहुतों का टूट पड़ना। (४) एक एक करके कई मौतें।

वि.—एक-आध, बहुत कम, भूला-भटका।

टपकाना—क्रि. स. [हिं. टपकना] (१) बूँद बूँद गिराना। (२) भबके से अरक उतारना।

टपकाव—संज्ञा पुं. [हिं. टपकाना] टपकाने का भाव।

टपना—क्रि. अ. [हिं. तपना] (१) बिना खाये-पिये पड़े रहना। (२) बेकार आसरे में पड़े रहना।

क्रि. अ. [हिं. टाप] उछलना, कूदना।

क्रि. स. [हिं. तोपना] ढक देना।

टपरा—संज्ञा पुं. [हिं. तोपना] (१) छप्पर, छाजन। (२) झोपड़ा, कुटी।

संज्ञा पुं. [हिं. टप्पा] खत का छोटा भाग।

टपाटप—क्रि. वि. [अनु. टपटप] (१) बूँद-बूँद करके बराबर गिरना। (२) झटपट, जल्दी जल्दी।

टपाना—क्रि. स. [हिं. टपाना] (१) बिना खिलाये पिलाये डाल रखना। (२) बेकार आसरे में रखकर हैरान करना। (३) कुदाना, फँदाना।

क्रि. स. [हिं. टाप] कुदाना, फँदाना।

टप्पर—संज्ञा पुं. [हिं. तोपना] छप्पर, छाजन।

मुहा.—टप्पर उलटना—दिवाला निकलना।

टप्पा—संज्ञा पुं. [सं. स्थापन, हिं. थाप, टाप] (१) उछलने वाली चीज का जमीन से टकराना। (२) कूद-फाँद। (३) तय की हुई दूरी। (४) दो स्थानों के बीच का मैदान। (५) अंतर, फर्क।

मुहा.—टप्पा देना—अंतर करना, फर्क डालना।

(६) मोटी भद्दी सिलाई। (७) टिकान। (८) एक चलता गाना। (९) एक तरह का काँटा।

टप्पैत—वि. [हिं. टप्पा] (१) टप्पे (गाने) से संबंधित। (२) टप्पा (गाना) गानेवाला।

टब्बर—संज्ञा पुं. [हिं. कुटुंब] कुटुंब, परिवार।

टमकी, टमुकी—संज्ञा स्त्री. [सं. टंकार] छोटा नगाड़ा।

टमटी—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक तरह का बरतन।

टमस—संज्ञा स्त्री. [सं. तमसा] टौंस या तमसा नदी।

टर—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) कर्कश या अप्रिय बोली।

मुहा.—टर टर करना (लगाना)—(१) ढिठाई से जबान लड़ाना। (२) बकवाद करना।

(२) मेढ़क की बोली। (३) घमंड या अकड़भरी बात। (४) हठ, जिद, अड़। (५) तुच्छ या बेमेल बात। (६) ईद के बाद का एक मेला।

टरई—क्रि. अ. [हिं. टरना=टलना] (१) विचलित होती है, डिगती है। उ.—अचला चलै, चलत पुनि थाकै, चिरंजीवि सो मरई। श्री रघुनाथ-प्रताप पतिव्रत, सीतासत नहिं टरई—९-७८। (२) दूसरे स्थान को जाती है, हटती है। उ.—चिरंजीवि सीता तरुवर तर छिनक न कवहूँ टरई—९-९९। (३) मिटता है, दूर होता है। उ.—(क) मोकौं भई अनाहत बानी, तातैं सौच न टरई—१०-४। (ख) घटै बढ़ै यहि पाप तें कालिमा न टरई—२८६१।

टरकना—क्रि. अ. [हिं. टरना] चले जाना, दूर होना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रि. अ. [हिं. टर] **कर्कश स्वर से बोलना ।**

टरकनी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **ईख की दूसरी सिंचाई ।**

टरकाना—क्रि. स. [हिं. टरकना] (१) **हटाना, खिसकाना, दूर करना ।** (२) **बहाने से टालना ।**

टरकुल—वि.—**खराब, बहुत मामूली ।**

टरटराना—क्रि. स. [हिं. टर] (१) **बकबक करना, अप्रिय वाणी बोलना ।** (२) **ढिठाई से बोलना ।**

टरत—क्रि. अ. [हिं. टलना] **हटता (है), अपने स्थान से अलग होता (है) ।** उ.—नरक कूपनि जाइ जमपुर परयौ बार अनेक । थके किंकर-जूथ जम के, टरत टारें न नेक—१-१०६ ।

मुहा.—व्रत टरत न टारे—**(प्रतिज्ञा) अवश्य पूरी होती है, (निश्चय) नहीं टल सकता ।** उ.—हम भक्तनि के भक्त हमारे । सुनि अरजुन परतिज्ञा मेरी यह व्रत टरत न टारे—१-२७२ ।

टरतौ—क्रि. अ. [हिं. टरना, टलना] (१) **दूर होता, संबंध न रखता, जाता रहता, वंचित होता ।** उ.—परतिय-रति - अभिलाष निसा-दिनु मनपिटरी लै भरतौ । दुर्गति, अति अभिमान, ज्ञान बिनु, सब साधन तैं टरतौ—१-२०३ । (२) **पास न बना रहता, चला जाता ।** उ.—होतौ नफा साधु की संगति मूल गाँठ नहिं टरतौ ।

टरना—क्रि. अ. [हिं. टलना] **हटना, दूर होना ।**

टरनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. टरना] **टरने का भाव ।**

टरहीं—क्रि. अ. [हिं. टलना] **दूर होते हैं ।**

मुहा.—चित ते टरहीं—**ध्यान नहीं रहता, याद नहीं बनी रहती ।** उ.—सकल सखा अरु नंद जसोदा वे चित तें न टरहीं—१० उ० १०३ ।

टराना—क्रि. अ. [हिं. टरना] **हटाना, टालना ।**

टराहीं—क्रि. अ. [हिं. टलना] **टलते हैं, दूर होते हैं ।** उ.—सुरभी ग्वाल नंद अरु जसुमति मम चित तें न टराहीं—१० उ० १०४ ।

टरि—क्रि. अ. [हिं. टलना] **(समय) टल गया, बीत गया ।** उ.—चेत्यौ नाहिं, गयौ टरि औसर, मीन विना जल जैसे—१-२६३ ।

टरिबो—संज्ञा पुं. [हिं. टलना] **टलने का भाव या क्रिया ।** उ.—रथ थाक्यौ मानो मृग मोहे नाहिंन कहूँ चंद्र को टारिबो—२८६० ।

टरिहै—क्रि. अ. [हिं. टलना] **टलेगा, अन्यथा होगा, खंडित होगा, ठीक न होगा ।** उ.—मेरौ कह्यौ नाहिं यह टरिहै—८-२ ।

टरिहौं—क्रि. अ. [हिं.टलना] (१) **भगाऊँगा, हटाऊँगा ।** उ.—आज हौं एक-एक करि टरिहौं । कै तुमहीं कै हमहीं माधौ, अपन भरोसैं लरिहौं—१-१३४ । (२) **हटूँगा, आना-कानी करूँगा, पिछड़ूँगा ।** उ.—विदुर कह्यौ, सेवा मैं करिहौं । सेवा करत नैंकु नहिं टरिहौं—१-१८४ ।

टरी—क्रि. अ. भूत. स्त्री. [हिं. टरना, टलना] (१) **टूटी, दूर हुई, मिटी, खंडित हुई ।** उ.—मो अनाथ के नाथ हरी । ब्रह्मादिक, सनकादिक, नारद, जिहिं समाधि नहिं ध्यान टरी—१-२४९ । (ख) मेरे साँवरे जब मुरली अधर धरी । सुनि सिध समाधि टरी—६२३ । (ग) सूरदास प्रभु तुम्हरे बिछुरे विधि मरयाद टरी —३४५५ । (२) **दूर हुई, टल गई ।** उ.—करवर बड़ी टरी मेरे की, घर-घर आनँद करत बधाई—१०-५१ ।

टरे—क्रि. अ. [हिं. टलना] **चंचल या गतियुक्त हुए ।** उ.—चल थाके अचल टरे—६२३ ।

टरेगो—क्रि. अ. [हिं. टलना] **दूर होगा, मिटेगा ।** उ.—काहे को लेति नयन जल भरि भरि नयन भरे ते कैसे सूल टरेगो—२८७० ।

टरै—क्रि. अ. [हिं. टालना] **हटाता है, खिसकाता है ।** उ.—चिरिया कहा समुद्र उलीचै, पवन कहा परबत टरै—१-२३४ ।

क्रि. अ.-[हिं. टलना] (१) **(अपने स्थान से) हटता है, डिगता है ।** उ.—ग्रह नछत्रहू सबही फिरैं । तू भयौ अटल न कबहूँ टरै- ४-६ ।(२) **टलता है, अघटित होता है ।** उ.—भावी काहू सौं न टरै—१-२६४ । (३) **मिटे, दूर हो ।** उ.—यह मम दोष कौन बिधि टरै-४-१२ ।

टरौ—क्रि. अ. [हिं. टलना] **(कोई बात) अपूर्ण या खंडित हुई जाती है ।** उ.—(क) कै इनकौ निरधार कीजियै, कै प्रन जात टरौ—१-२२० । (ख) मुनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा, तेरौ व्रत टरौ—६-५।

टर्यौ—क्रि. अ. [हिं. टरना=टलना] टला, टल गया, असत्य हुआ, अन्यथा हो गया। उ.—राजा, वचन तुम्हारौ टर्यौ—६-२।

टर्रा—वि. [अनु. टरटर] (१) ऐंठ या अकड़कर बोलनेवाला, टर्रानेवाला। (२) ढीठ।

टर्राना—क्रि. अ. [अनु. टर] ऐंठ या अकड़ कर बात करना, सीधे न बोलना।

टर्रापन—संज्ञा पुं. [हिं. टर्रा + पन (प्रत्य.)] ऐंठ या अकड़कर बात करने का भाव या ढंग।

टर्रू—संज्ञा पुं. [हिं. टरटर] (१) टर्रा आदमी। (२) मेढ़क। (३) एक खिलौना।

वि.—ऐंठ या अकड़कर बात करनेवाला।

टलना—क्रि. अ. [सं. टलन=विचलित होना] (१) अपने स्थान से अलग होना। खिसकना।

मुहा.—बात से टलना—प्रतिज्ञा पूरी न करना।

(२) स्थान-विशेष पर उपस्थित न रहना। (३) दूर होना, मिटना, न रहना। (४) किसी काम या बात के लिए आगे का समय तय होना। (५) किसी बात का ठीक न रहना या खंडित होना। (६) (किसी बात का) माना न जाना। (७) समय बीतना।

टलहा—वि. [देश.] खोटा, खराब।

टलाटली—संज्ञा स्त्री. [हिं. टालटूल] बहाना।

टल्ला—संज्ञा पुं. [अनु.] धक्का, ठोकर।

मुहा.—टल्ला (टल्ले) मारना—मारे-मारे फिरना।

टवर्ग—संज्ञा पुं. [सं.] ट ठ ड ढ ण का समूह।

टवाई—संज्ञा स्त्री. [सं. अटन] मारे-मारे फिरना।

टस—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) खिसकने का शब्द।

मुहा.—टस से मस न होना—(१) भारी चीज का जरा भी न हटना। (२) कड़ी चीज का जरा भी न गलना। (३) कहने-सुनने का कुछ भी प्रभाव न पड़ना।

(२) (कपड़ा) फटने या मसकने का शब्द।

टसक—संज्ञा स्त्री. [हिं. टसकना] कसक, टीस।

संज्ञा स्त्री.—टलने या हटने का भाव।

टसकना—क्रि. अ. [हिं. टस] (१) हिलना, हटना, खिसकना। (२) रह रहकर दर्द करना, कसकना। (३) प्रभावित होना। (४) (फल आदि का) पक जाना। (५) रोना-धोना।

टसकाना—क्रि. स. [हिं. टसकना] सरकाना, खिसकाना।

टसना—क्रि. अ. [अनु. टस] (कपड़ा) फटना।

टसर—संज्ञा पुं. [सं. त्रसर] एक तरह का रेशम।

टसुआ—संज्ञा पुं. [हिं. आँसू, अँसुआ] आँसू।

मुहा.—टसुआ बहाना (ढरकाना) झूठमूठ रोना।

टहक—संज्ञा स्त्री. [हिं. टसक] कसक, टीस, चसक।

टहकना—क्रि. अ. [हिं. टसकना] (१) रहरहकर दर्द मारना। (२) (घी आदि) पिघलना।

टहकाना—क्रि. स. [हिं. टहकना] पिघलाना।

टहटहा—वि. [हिं. टटका] ताजा, नया, कोरा।

टहना—संज्ञा पुं. [सं. तनुः] वृक्ष की मोटी डाल।

टहनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टहना] वृक्ष की पतली डाल।

टहरना—क्रि. अ. [हिं. टहलना] घूमना-फिरना।

टहल—संज्ञा स्त्री. [हिं. टहलना] (१) सेवा, शुश्रूषा। उ.—(क) दासी तृष्ना भ्रमत टहल-हित, लहत न छिन बिस्राम—१-१४१। (ख) जसुमति मात और ब्रजपति जू बहुतहिं आनँद दीनो। यातें टहल करन नहिं पायौ कहत स्याम रँगभीनों—सारा. ५३०। (ग) जिहिं डर भ्रमत पवन, रवि, ससि जल सो करै टहल, लकुटिया सौं डरि—३६२।

यौ.—टहल टई (टकोर)—सेवा-शुश्रूषा।

(२) नौकरी-चाकरी, काम-धंधा। उ.—जाकौ ब्रह्मा अंत न पावै। तापै नंद की नारि जसोदा, घर की टहल करावै—३६३।

टहलई—संज्ञा स्त्री. [हिं. टहल] सेवा, नौकरी।

टहलना—क्रि. अ. [सं. तत्+चलन] (१) घूमना-फिरना।

मुहा.—टहल जाना—(१) चुपचाप चले जाना। (२) सैर करना, हवा खाना। (३) मर जाना।

टहलनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टहल] दासी, लौंडी।

टहलाना—क्रि. स. [हिं. टहलना] (१) घुमाना-फिराना। (२) सैर कराना, हवा खिलाना। (३) हटा देना।

टहलुआ—संज्ञा पुं. [हिं. टहल] सेवक, नौकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा स्त्री. [हिं. टहल] दासी, लौंडी ।

टहलुई—संज्ञा स्त्री. [हिं. टहल] सेवक, नौकर ।

टहलुवा, टहलू—संज्ञा पुं. [हिं. टहल] सेवक, नौकर ।

टही—संज्ञा स्त्री. [हिं. घात] जोड़-तोड़, घात ।

टहुआटारी—संज्ञा स्त्री. [देश.] चुगलखोरी ।

टहूका—संज्ञा पुं. [देश.] (१) पहेली । (२) चुटकुला ।

टहोका—संज्ञा पुं. [हिं. ठोकर] धक्का, झटका ।

मुहा.—टहोका देना—ढकेलना, ठेलना । टहोका खाना—धक्का खाना, ठोकर सहना, ठेला जाना ।

टाँक—संज्ञा स्त्री. [सं. टंक] (१) तीन या चार माशे की तौल । (२)धनुष-परीक्षा की पचीस सेर की तौल । (३) जाँच, कूत, अंदाज । (४) हिस्सेदारों का भाग ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. टाँकना] (१) लिखने का अंक या चिह्न, लिखावट, (२) कलम की नोंक या डंक ।

टाँकना—क्रि. स. [सं. टंकन] (१) चिप्पी आदि जड़ना । (२)सुई से सीना या जोड़ना ।(३) सी कर अटकाना । (४) सिल, चक्की आदि को खुरदुरा करना । (५) कागज, बही आदि में लिखना ।

मुहा.—मन में टाँकना (टाँक रखना)—याद रखना, सदा ध्यान रखना ।

(६) लिखकर भेजना । (७) (भोजन आदि) चटपट खा लेना । (८) (रुपया-पैसा) मार लेना ।

टाँकली—संज्ञा स्त्री. [सं. टक्कर] एक पुराना बाजा ।

टाँका—संज्ञा पुं. [हिं. टाँकना] (१) धातु-पत्तरों आदि का जोड़ मिलाने की कील या काँटा ।(२) सुई का एक बार ऊपर-नीचे करने पर लगनेवाली सीवन या ग्रंथि । (३) सिलाई, सीवन । (४) सी हुई थिगली या चकती । (५) धातु जोड़ने का मसाला ।

संज्ञा पुं. [सं. टंक] पत्थर काटने की छेनी ।

संज्ञा पुं—(१) पानी का हौज । (२) कंडाल ।

टाँका टूट—वि. [हिं. टाँक+तौल] ठीक तुला हुआ ।

टाँकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टाँका] पत्थर गढ़ने की छेनी । (२) काटकर किया हुआ छेद । (३) दाँता, दंदाना ।

टाँकौ—संज्ञा पुं. [हिं. टाँकना] (१) टँकी हुई चकती, जोड़, थिगली, पैबंद, चिप्पी । (२) दोष, लांछन, कलंक । उ.—नरहरि ह्वै हिरनाकुस मारयौ, काम परयौ हो बाँको । गोपीनाथ सूर के प्रभु कैं बिरद न लाग्यौ टाँकौ—१-११३ ।

टाँग—संज्ञा स्त्री. [सं. टंग] जाँघ से एड़ी तक अंग ।

मुहा.—टाँग अड़ाना—(१) किसी काम में बेकार हाथ डालना या दखल देना । (२) विघ्न-बाधा डालना । (३) जिस विषय का ज्ञान या जानकारी न हो उसकी चर्चा करना । टाँग उठाना—जल्दी-जल्दी चलना । टाँग तले (नीचे) से निकलना—हार मानना, अधीन होना । टाँग तोड़ना—(१) अंग भंग करना । (२) बेकार करना । (३) टूटी फूटी भाषा लिखना-बोलना । (४) पैर थकाना । टाँग पसार कर सोना—(१) सुख की नींद सोना । (२) चैन के दिन बिताना । टाँग रह जाना—चलते-चलते पैर दुखने लगना । टाँग लेना—(१) टाँग पकड़ना । (२) कुत्ते की तरह काटना । (३) पिंड न छोड़ना । टाँग बराबर—छोटा सा । टाँग से टाँग बाँधकर बैठना—पास से न हटना ।

टाँगन, टाँघन—संज्ञा पुं. [हिं. ठेंगना या सं. तुरंगम्] पहाड़ी टट्टू, छोटा घोड़ा ।

टाँगना—क्रि. स. [हिं. टँगना] (१) अटकाकर लटकाना । (२) फाँसी पर चढ़ाना ।

टाँगा—संज्ञा पुं. [सं. टंग] बड़ी कुल्हाड़ी ।

संज्ञा पुं. [हिं. टँगना] एक घोड़े की एक गाड़ी ।

टाँगानोचन—संज्ञा स्त्री. [हिं. टाँग+नोचना] नोच-खसोट, छीन-झपट ।

टाँगी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टाँगा] कुल्हाड़ी ।

टाँगुन—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक मोटा अनाज ।

टाँच, टाँचु—संज्ञा स्त्री. [हिं. टाँकी] दूसरे का काम बिगाड़ने या चित्त बहकानेवाली बात, भाँजी ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. टाँका] (१) सिलाई । (२) थिगली, जोड़ ।

टाँचना—क्रि. स. [हिं. टाँच] (१) सीना । (२) छीलना ।

क्रि. अ.—गुलछर्रे उड़ाते घूमना-फिरना ।

टाँची—संज्ञा स्त्री. [सं. टंक=रुपया] रुपए कमर में बाँधने की लंबी थैली, न्योजी, नियानी, बसनी ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. टाँकी] भाँजी, खटकती बात ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टाँट, टाँटर—संज्ञा पुं. [हिं. टट्टी] खोपड़ी, कपाल।

मुहा.—टाँट के बाल उड़ना—(१) सिर के बाल गिरना। (२) पास में कुछ धन न रहना। (३) बहुत मार पड़ना। टाँट खुजाना—मार खाने को जी चाहना। टाँट गंजी करना—(१) बहुत मारना। (२) खूब धन खर्च कराना।

टाँठ, टाँठा—वि. [अनु. ठन] (१) कड़ा (२)तगड़ा।

टाँड़—संज्ञा पुं. [सं. ताड़] बाँह का गहना, टँड़िया। उ.—कर कंकन तैं भुज टाँड भई।

संज्ञा पुं. [सं. अट्टाल, हिं. अटाला, टाल] (१) ढेर, टाल। (२) पंक्ति। (३) घरों की पंक्ति।

टाँड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. टाँड़=समूह] (१) व्यापारी या बनजारों के सामान से लदे बैलों का समूह। (२) माल का एक स्थान से दूसरे को जाना, खेप चलाना।

मुहा.—टाँड़ा लदना—(१) बिक्री का माल लदना। (२) चलने की तैयारी होना। (३) मरने के समीप होना।

(३) व्यापारियों या बनजारों का चलता-फिरता झुंड। (४) नाव पर पार जानेवाले यात्रियों और व्यापारियों का समूह। (५) कुटुंब, परिवार।

संज्ञा पुं. [सं. तुंड, हिं. टूँड़] एक हरा कीड़ा।

टाँड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. तत्+डीन+उड़ान] टिड्डी।

टाँड़ौ—संज्ञा पुं. [हिं. टाँड़ =समूह] पथिकों या व्यापारियों का समूह जो नाव द्वार इस पार से उस पार जाता है। उ.—वहुत भरोसौ जानि तुम्हरौ अघ कीन्हे भरि भाँड़ौ। लीजै बेगि निबेरि तुरतहीं सूर पतित कौ टाँड़ौ—१-१४६।

टाँयटाँय—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) टें टें जैसा कर्कश शब्द। (२) बकबक, बकवाद।

मुहा.—टाँयटाँय फिस—शुरू में बहुत हाथ-पैर मारे जायँ पर बाद में जोश ठंडा हो जाना।

टाँस—संज्ञा स्त्री. [हिं. टनना] नसों का तनाव।

टाँसना—क्रि. स. [हिं. टाँचना] काटना-छाँटना।

क्रि. स. [हिं. टाँकना] टाँका मारना, सीना।

टाकू—संज्ञा पुं. [सं. तर्कु] टकुआ, तकुआ, टेकुरी।

टाट—संज्ञा पुं. [सं. तंतु] (१) सन का मोटा कपड़ा।

मुहा.—टाट में मूँज की बखिया—दो भद्दी चीजों का मेल। टाट में पाट की बखिया—भद्दी और सस्ती चीज का सुंदर और मूल्यवान चीज के साथ मेल।

(२) कुल, वंश, बिरादरी।

मुहा.—एक ही टाट के—(१) एक ही बिरादरी के। (२) एक साथ उठने-बैठनेवाले, एक दल के।

(३) साहूकार या महाजन की गद्दी।

मुहा.—टाट उलटना—दिवालिया होना।

टाटक—वि. [हिं. टटका] (१) ताजा। (२) कोरा।

टाटबाफी—वि. [फ़ा. तारबाफी] कलाबत्तू के काम का, जिस पर कलाबत्तू का काम हो।

टाटर—संज्ञा पुं. [सं. स्थात्तृ=खड़ा हुआ] (१) टट्टर, टट्टी। (२) सिर की हड्डी, खोपड़ी।

टाटिका, टाटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टट्टी] छोटा टट्टर, टट्टी। उ.—सूर प्रभु कहा निहोरो मानत रंक त्रास टाटी को—१० उ. ७१।

टाठी—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थाली, प्रा. ठाली, ठाडी] थाली।

टाड़—संज्ञा स्त्री. [सं. ताड़] भुजा का एक गहना, टाँड़, टँड़िया। उ.—बाहु टाड़ कर कंकन बाजूबंद एते पर हौ तौकी।

टाडर—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक चिड़िया।

टान—संज्ञा स्त्री. [सं. तान=फैलाव, खिंचाव] (१) तनाव, खिंचाव। (२) खींचने की क्रिया।

संज्ञा पुं. [सं. स्थाणु=थून, खंभा] मचान।

टानना—क्रि. स. [हिं. टान] तानना, खींचना।

टाप—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थापन, हिं. थापन, थाप] (१) घोड़े का पद-तल या सुम। (२) घोड़े का पैर जमीन पर पड़ने का शब्द।

टापड़—संज्ञा पुं. [सं. टप्पा] ऊसर मैदान।

टापदार—वि. [हिं. टाप+फ़ा. दार] जिसके सिरे पर कुछ भाग उभरा हुआ हो।

टापना—क्रि. अ. [हिं.टाप] (१) घोड़े का पैर पटकना। (२) हैरान होकर फिरना। (३) उछलना-कूदना।

क्रि. स.—लाँघना-फाँदना।

क्रि. अ. [सं. तप] (१) बिना खाये-पिये रहना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) ऐसी बात के आसरे में रहना जो हो न सके।
(३) हाथ मलना, पछताना।

टापर—संज्ञा पुं. [देश.] ओढ़ने की मोटी चादर।
संज्ञा पुं. [हिं. टाप] टट्टू आदि की सवारी।

टापा—संज्ञा पुं. [हिं. थाप] (१) मैदान। (२) ऊसर मैदान। (४) उछल-कूद, छलाँग।
मुहा.—टाप देना—लंबे-लंबे डग भरना।

टापू—संज्ञा पुं. [हिं. टापा] (१) द्वीप। (२) टापा।

टाबर—संज्ञा पुं. [पंजाबी टब्बर] (१) लड़का, बच्चा।
(२) परिवार, कुल, वंश।

टामक—संज्ञा पुं. [अनु.] डुग्गी, डुगडुगी।

टामन, टामनि—संज्ञा पुं. [सं. तंत्र] टोना, टोटका।
उ.—टोना-टामनि जंत्र-मंत्र करि ध्यायौ देव-दुआरो री—१०-१३५।

टार—संज्ञा स्त्री. [हिं. टालना] टालटूल।
क्रि. स.—टालना, ध्यान न देना।
प्र.—दीन्ह्यौ टार—टाल दिया, ध्यान न दिया, बचा गये। उ.—खेलन चले नंदकुमार। दूत आवत जानि व्रज मैं, आपु दीन्ह्यौ टार—५२४।
संज्ञा पुं. [सं.] घोड़ा।
संज्ञा पुं. [सं. अट्टाल, हिं. टाल] राशि, ढेर।

टारत—क्रि. स. [हिं. टालना] दूर करते हैं, मिटाते हैं, रहने नहीं देते, टालते हैं, निवारते हैं। उ.—(क) कौन जाति अरु पाँति बिदुर की, ताही कैं पग धारत। भोजन करत माँगि घर उनकैं, राज-मान-मद टारत—१-१२। (ख) चिंतत चित्त सूर चिंता पति मोह-मेरु दुख टरत न टारत—६-६२।

टारन—वि. [हिं.टालना] दूर करनेवाले, मिटानेवाले, निवारक। उ.—कलि-मल-हरन, कालिमा-टारन, रसना स्याम न गायौ—१-५८।
संज्ञा स्त्री.—(१) टालने या सरकाने की क्रिया।
(२) विचलित करने का भाव। उ.—कैसै कै पठ-वत वैं आवत टारन को हित नेम—३३४८।

टारना—क्रि. स. [हिं. टालना] हटाना, टरकाना।

टारि—क्रि. स. [हिं. टालना] (१) टेढ़ा करना। उ.—सूर केस नहि टारि सकै कोउ—१-२३४। (२) हटाना, खिसकाना। उ.—कोपि अंगद कह्यौ, धरौं धर चरन मैं, ताहि जो सकै कोऊ उठाई।......। रहे पचि हारि नहिं टारि कोऊ सक्यौ—६-१३५।
(३) बहलाकर टालटूल करके, बातें बनाकर। उ.—खेलत जमुना तट गये आपुहिं लाए टारि—५८६।

टारी—क्रि. स. [हिं. टालना] (१) दूर की, मिटायी, निवारी। उ.—(क) जे जन सरन भजे बनवारी। ते ते राखि लिए जग-जीवन, जहँ जहँ बिपति परी तहँ टारी—१-२२ (ख) कठिन आपदा टारी—१-२८२। (२) धर्म आदि से विचलित की। उ.—पतिव्रता जालंधर-जुवती सो पति-व्रत तैं टारी—१-१०४।

टारे—क्रि. स. [हिं. टलना] (१) दूर किये, मिटाये, निवारे। उ.—(क) सर परी जहँ बिपति दीन पर, तहाँ बिघन तुम टारे—१-२५। (ख) सूर सहाइ कियौ बन बसि कै वन-बिपदा-दुख टारे—६-१४७।
(२) अलग किये, हटाये, सरकाये। उ.—जे पद-पदुम सदा सिव के धन, सिंधु-सुता उर तैं नहिं टारे—१-६४।

टारैं—क्रि. स. [हिं. टालना] (१) हटाने पर, खिसकाने पर। (२) निकालने या खदेड़ने पर। उ.—नरक-कूपनि जाइ जमपुर परयौ बार अनेक। थके किंकर-जूथ जम के, टरत टारैं न नेक—१-१०६।

टारै—क्रि. स. [हिं. टालना] (१) हटाये जाने पर। उ.—निहचै एक असल पै राखै, टरै न कबहूँ टारै—१-१४२। (२) दूर करता है, निकालता है। उ.—सूरदास प्रभु अपने जन कौं, डर तैं नैंकुँ न टारै—१-२५७।

टारौं—क्रि. स. [हिं. टालना] (आदेश आदि का) पालन न करूँ, उल्लंघन करूँ, न मानूँ। उ.—सूर-दास प्रभु तुम्हरे बचन लगि, सिव-बचननि कौं टारौं—६-१०८।

टारौ—क्रि. स. [हिं. टालना] दूर करो, मिटाओ, निवारण करो। उ.—(क) तुम तौ दीनदयाल कहावत, सकल आपदा टारौ—१-२१८। (ख) मारि कै ताहि जग-दुख टारौ—४-११। (ग)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम पुनीत जानकी सँग लै कुल-कलंक किन टारौ—६-११५।

टार्यौ—क्रि. स. [हिं. टालना] (१) दूर किया, मिटाया, निवारा। उ.—ग्राह ग्रसत गज कौं जल बूड़त, नाम लेत वाकौ दुख टार्यौ—१-१४। (२) हटाया, खिसकाया। उ.—सूरदास प्रभु प्रान-दान कियौ, पठयौ सिंधु उहाँ तैं टार्यौ—५७४।

टाल—संज्ञा स्त्री. [सं. अट्टाल, हिं. अटाला] (१) ऊपर-नीचे रखी चीजों का ढेर, अटाला, ऊँचा ढेर। (२) लकड़ी आदि की दूकान।

संज्ञा स्त्री. [हिं. टालना] टालने का बहाना।

टालटूल—संज्ञा स्त्री. [हिं. टालना] टालने का बहाना।

टालना—क्रि. स. [हिं. टलना] (१) हटाना, खिसकाना, सरकाना। (२) दूर भेजना, टरकाना, भगा देना। (३) दूर करना, मिटाना, निवारण करना। (४) किसी काम को आगे के लिए हटाना। (५) समय बिताना, (६) आज्ञा या आदेश का पालन न करना। (७) बहाना करके पीछा छुटाना।

मुहा.—दूसरे पर टालना—दूसरे को सौंपना। (८) झूठा वादा करना। (९) टरकाना, धता बताना। (१०) और का और करना, बदलना। (११) ध्यान न देना, बरा जाना, तरह देना।

टालमटाल, टालमटूल, टालमटोल—संज्ञा पुं. [हिं. टालना] टालने या टरकाने का बहाना।

टाला—वि. [देश.] आधा (भाग)।

टाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. टाला] (१) तीन वर्ष से कम की चंचल बछिया। उ.—पाई पाई है रे भैया, कुंज-पुंज मैं टाली। अबकैं अपनी हटकि चरावहु, जैहैं भटकी घाली—५०३। (२) पशुओं के गले की घंटी। (३) एक बाजा (४) आधा रुपया, अठन्नी।

क्रि. स. [हिं. टालना] मिटायी, निभने न दी, पूरी न होने दी। उ.—जिन हति सकट प्रलंब तृनाव्रत इंद्र प्रतिज्ञा टाली—२५६७।

टाहली—संज्ञा पुं. [हिं. टहल] सेवक, नौकर।

टिंड, टिंडा, टिंडसी, टिंडिश—संज्ञा पुं. [सं. टिंडिश] एक तरकारी, डेंड़सी, ढेंड़सी।

टिंडी—संज्ञा स्त्री. [देश.] हल या चक्की की मूँठ।

टिकई—संज्ञा स्त्री. [हिं. टीका] सफेद टीकेवाली गाय।

टिकटिक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) घोड़ा हाँकने का शब्द। (२) घड़ी के चलने का शब्द।

टिकटिकी, टिकठी—संज्ञा स्त्री. [सं. त्रिकाष्ठ, हिं. तीन काठ] (१) अपराधियों को दंड या फाँसी देने का तीन लकड़ियों का ढाँचा। (२) ऊँची तिपाई।

टिकटिकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टकटकी] स्थिर दृष्टि।

टिकड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. टिकिया] (१) गोल चिपटा टुकड़ा। (२) सोने-चाँदी का जड़ाऊ टुकड़ा। (३) मोटी रोटी।

मुहा.—टिकड़ा लगाना—बाटी, मोटी रोटी या अंगाकड़ी सेंकना।

टिकड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिकड़ा] छोटी मोटी रोटी।

टिकना—क्रि. अ. [सं. स्थित+कृ अथवा हिं. अ= नहीं + टिक=चलना] (१) ठहरना, डेरा करना। (२) घुली हुई चीज का तल में बैठना। (३) कुछ दिन तक काम देना या चलना। (४) जम जाना, बैठना, स्थिर रहना।

टिकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिकिया] एक पकवान।

टिकली—संज्ञा स्त्री. [हिं. टीका] (१) छोटी टिकिया। (२) छोटी बिंदी, चमकी। (३) छोटा टीका।

संज्ञा स्त्री. [हिं. तकला] सूत बटने की फिरकी।

टिकसार—वि. [हिं. टिकना] टिकाऊ।

टिकाई—संज्ञा पुं. [हिं. टीका] युवराज।

क्रि. स. [हिं. टिकाना] टिकाकर, ठहराकर, स्थिर करके। उ.—दसरथ कहयौं, देवहू भाष्यौ ब्योम विमान टिकाई—९-१६२।

संज्ञा स्त्री. [हिं. टिकना] (१) रहने या ठहरने की क्रिया। (२) ठहराने की मजदूरी।

टिकाऊ—वि. [हिं. टिकना] (१) कुछ दिन रहने-बसने वाला। (२) कुछ दिन काम देनेवाला।

टिकान—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिकना] (१) रहने या ठहरने का भाव। (२) रहने या ठहरने का स्थान।

टिकाना—क्रि. स. [हिं. टिकना] (१) रहने या ठहरने का स्थान देना, ठहराना। (२) सहारे खड़ा करना,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमाना।(३) सहारा देना।(४) रुपया पैसा हाथधरना।

टिकाव—संज्ञा पुं. [हिं. टिकना] (१) ठहरने का भाव। (२) स्थिरता। (३) ठहरने का स्थान, पड़ाव।

टिकिया—संज्ञा स्त्री. [सं. वटिका] (१) छोटा गोल-चिपटा टुकड़ा। (२) एक मिठाई। (३) छोटी मोटी रोटी, छोटी, बाटी।

संज्ञा स्त्री. [हिं. टीका] (१) माथा। (२) माथे पर लगी बिंदी, टिकुली।

टिकुरा—संज्ञा पुं. [देश.] टीला, भीटा।

टिकुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टकुआ] सूत बटने की फिरकी।

टिकुला, टिकोरा, टिकोला—संज्ञा पुं. [हिं. टिकिया] कच्चा आम जिसमें जाली न पड़ी हो।

टिकुली—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिकली] बिंदी, टिकली।

टिकुवा—संज्ञा पुं. [हिं. टेकुआ] चरखे का तकला।

टिकैत—संज्ञा पुं. [हिं. टीका + ऐत (प्रत्य.)] उत्तराधिकारी राजकुमार, युवराज। (२) सरदार, स्वामी।

वि. [हिं. टिकना] जमकर रहनेवाला।

टिकोर—संज्ञा स्त्री. [हिं. टकोर] (१) हल्की चोट या ठेस। (२) डंके की चोट। (३) धनुष की टंकार।

टिकोरा—संज्ञा पुं. [हिं. टिकिया] कच्ची अँबिया।

टिक्कड़—संज्ञा पुं. [हिं. टिकिया] (१) बड़ी टिकिया। (२) हाथ की मोटी रोटी, बाटी। (३) मालपुआ।

टिक्का—संज्ञा पुं. [हिं. टीका] (१) तिलक। (२) याद।

टिक्की—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिकिया] (१) छोटी टिकिया।

मुहा.—टिक्की जमना (बैठना, लगना)—जुगत बैठना।

(२) छोटी मोटी रोटी, बाटी। (३) एक पकवान।

संज्ञा स्त्री. [हिं. टीका] (१) बिंदी, टिकुली। (२) गोल टीका।

टिघलना—क्रि. अ. [सं. तप + गलन] पिघलना।

टिघलाना—क्रि. स. [हिं. टिघलना] पिघलाना।

टिटकारना—क्रि. स. [अनु.] टिकटिक करके हाँकना।

टिटिह, टिटिहा, टिटिहरी—संज्ञा स्त्री. [सं. टिट्टिभ हिं. टिटिह] पानी के किनारे रहनेवाली कुररी नामक चिड़िया जिसकी बोली कड़ुई होती है।

टिटिहा रोर—संज्ञा पुं. [हिं. टिटिहा + रोर] (१) कुररी का कर्कश स्वर। (२) शोर-गुल, कोलाहल। (३) रोना-पीटना।

टिट्टिभ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) टिटिहरी। (२) टिड्डी।

टिट्टिभा, टिट्टिभी—संज्ञा स्त्री. [सं. टिट्टिभ] मादा टिटिहरी।

टिड्डा—संज्ञा पुं. [सं. टिट्टिभ] एक परदार कीड़ा।

टिड्डी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिड्डा] एक तरह का टिड्डा।

मुहा.—टिड्डी दल—बड़ी भारी भीड़ या सेना।

टिढ़बिंग—वि. [हिं. टेढ़ा + सं. वंक] टेढ़ा-मेढ़ा।

टिप—संज्ञा स्त्री. [हिं. टीपना] साँप के काटने की एक रीति जिससे रक्त में विष मिल जाय।

टिपकना—क्रि. अ. [हिं. टपकना] बूँद बूँद चूना।

टिपका—संज्ञा पुं. [हिं. टिपकना] बूँद, कतरा।

टिपटिप—संज्ञा स्त्री. [अनु.] बूँद टपकने का शब्द।

टिपवाना—क्रि. स. [हिं. टीपना] (१) दबवाना। (२) पिटवाना।

टिपारा, टिपारो—संज्ञा पुं. [हिं. तीन + फ़ा. पार:= टुकड़ा] तीन शाखाओं वाली एक मुकुटनुमा टोपी।

टिपुर—संज्ञा पुं. [देश.] (१) घमंड। (२) पाखंड।

टिप्पणी, टिप्पनी—संज्ञा स्त्री. [सं. टिप्पनी] (१) टीका, व्याख्या। (१) विशेषण-सूचक लेखा।

टिप्पन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) टीका। (२) जन्मपत्री।

टिप्पस—संज्ञा स्त्री. [देश.] उपाय, युक्ति, जुगत।

टिबरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] पहाड़ों की छोटी चोटी।

टिब्बा—संज्ञा पुं. [देश.] पहाड़ों का छोटा शिखर।

टिमकी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) छोटा पात्र। (२) बच्चों का पेट।

टिमटिमाना—क्रि. अ. [सं. तिम = ठंडा होना] (१) मंद-मंद जलना, धीमी रोशनी देना। (२) बुझने पर हो होकर जलना।

टिमाक—संज्ञा स्त्री. [देश.] बनाव, शृंगार, ठसक।

टिमिला—संज्ञा पुं. [देश.] लड़का, छोकरा।

टिमिली—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिमला] लड़की, छोकरी।

टिम्मा—वि. [देश.] नाटे डील डौल का।

टिरफिस—संज्ञा स्त्री. [हिं. टर + फिस] चीं-चपड़।

टिलवा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) गँठीला लक्कड़। (२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटा या ठिगना आदमी। (३) चापलूस आदमी।
टिल्ला—संज्ञा पुं. [हिं. ठेलना] धक्का, चोट, प्रहार।
टिल्लेनवीसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिल्ला+फ़ा. नवीसी] (१) हीन या नीच सेवा। (२) बेकार का काम। (३) टालटूल, टालमटोल।
टिसुआ—संज्ञा पुं. [हिं. आँसू, अँसुआ] आँसू।
टिहुकना, टिहूकना—क्रि. अ. [देश.] (१) ठिठकना, झिझकना। (२) चौंक पड़ना।
टिहुनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. घुटना] (१) घुटना, टखना। (२) कोहनी।
टिहूक—संज्ञा स्त्री. [देश.] झिझक, चौंक।
टींड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिड्डी] टिड्डी।
मुहा.—टींड़ी दल—बड़ी भीड़ या सेना।
टीक—संज्ञा स्त्री. [सं. तिलक] (१) गले का एक गहना। (२) माथे का एक गहना। (२) रक्त की धार।
टीकठ—संज्ञा पुं. [हिं. टिकना] रीढ़ की हड्डी।
टीकन—संज्ञा पुं. [हिं. टेकना] टेक का खंभा, थूनी।
टीकना—क्रि. स. [हिं. टीका] तिलक करना।
टीका—संज्ञा पुं. [सं. तिलक] (१) रोली-चंदन का तिलक। (२) विवाह तय होने की एक रीति, तिलक। (३) दोनों भौहों के बीच का भाग। (४) श्रेष्ठ पुरुष। (५) राजतिलक। (६) युवराज। (७) प्रधानता या विशेषता की छाप।
मुहा.—टीके का—विशेषता रखनेवाला।
(८) राजा या स्वामी को दी जानेवाली भेंट। (९) माथे का एक गहना। (१०) दाग, धब्बा।
संज्ञा स्त्री. [सं.] व्याख्या, अर्थ का स्पष्टीकरण।
टीकाकार—संज्ञा पुं. [सं.] व्याख्या करनेवाला।
टीकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टीका] टिकुली। टिकिया।
टीकुर—संज्ञा पुं. [देश.] (१) ऊँची जमीन। (२) वन।
टीको, टीकौ—संज्ञा पुं. [हिं. टीका] (१) श्रेष्ठ व्यक्ति, शिरोमणि, अगुआ। उ.—प्रभु, हौं सब पतितनि कौ टीकौ। और पतित सब दिवस चारि के, हौं तौ जनमत ही कौ—१-१३८। (२) रोली चंदन आदि का तिलक। उ.—भ्रुकुटी धनुष नैन सर साँधे सिर केसरि को टीको—१८४१। (३) माथे का एक गहना। उ.—मोतिन माल जराउ को टीकौ कर्ण फूल नक बेसरि—११२०। (४) भेंट, उपहार। उ.—रघुकुल प्रकटे हैं रघुबीर। देस-देस तैं टीकौ आयौ, रतन-कनक मनि हीर—९-१८। (ख) लोक-लोक को टीको आयौ—२६३०।
टीड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिड्डी] टिड्डी।
टीप—संज्ञा स्त्री. [हिं. टीपना] (१) हाथ से दबाने की क्रिया या भाव। (२) धीरे-धीरे ठोंकने का भाव। (३) गच या फर्श की पिटाई। (४) ईंट के जोड़ों में मसाला भरना। (५) टंकार, ध्वनि। (६) जोर की तान। (७) टाँकने या लिखने का काम। (८) दस्तावेज। (९) जन्मपत्री।
वि.—सबसे अच्छा या बढ़िया।
टीपटाप—संज्ञा स्त्री. [देश.] सजावट, ठाट-बाट।
टीपना—क्रि. स. [सं. टेपन=फेंकना] (१) हाथ से दबाना। (२) धीरे-धीरे ठोंकना। (३) ऊँचे स्वर से गाना।
क्रि. स. [सं. टिप्पनी] लिख या टाँक लेना।
टीबा—संज्ञा पुं. [हिं. टीला] टीला, ढूह, भीटा।
टीमटाम—संज्ञा स्त्री. [देश.] ठाट-बाट सजावट।
टीला—संज्ञा पुं. [सं. अष्ठीला=उभार] (१) पृथ्वी का ऊँचा भाग, ढूह, भीटा। (२) छोटी पहाड़ी।
टीस—संज्ञा स्त्री. [देश.] रह-रहकर उठनेवाली पीड़ा, कसक, चसक,
टीसना—क्रि. अ. [हिं. टीस] रहरहकर दर्द उठना।
टुँगना—क्रि. स. [हिं. टुनगा] कुतरकर चबाना।
टुंच—वि. [सं. तुच्छ] क्षुद्र, टुच्चा, ओछा।
मुहा.—टुंच भिड़ाना (लड़ाना)—(१) थोड़ी पूंजी से काम करना। (२) थोड़े धन से जुआ खेलना।
टुंटा—वि. [सं. रुंड, हिं. टूटा] जिसका हाथ कटा हो।
टुंड—संज्ञा पुं. [सं. रुंड] (१) डाल-शाखारहित वृक्ष, ठूँठ। (२) कटा हुआ हाथ। (३) एक प्रेत।
टुंडा—वि. [हिं. तुंड] (१) डाल-शाखा-रहित। (२) लूला, लुंज। (३) सींगटुट्टा, डूँडा।
संज्ञा. पुं.—(१) लूला या लुंजा आदमी। (२) एक सींगवाला बैल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टुंडी—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंडि] नाभि, ढोंढी, तोंदी।
संज्ञा स्त्री. [सं. दंड] भुजा, बाहुदंड, मुश्क।

टुइयाँ—वि. [देश.] ठिगना, नाटा, बौना।

टुक—वि. [सं. स्तोक+थोड़ा] थोड़ा, तनिक।
मुहा.—टुक सा—थोड़ा सा, जरा-सा।
क्रि. वि.—थोड़ा, जरा, तनिक।

टुकड़गदा—संज्ञा पुं. [हिं. टुकड़ा+फ़ा. गदा] भिखारी।
वि.—(१) तुच्छ, हीन। (२) दरिद्र, कंगाल।

टुकड़तोड़—वि. [हिं. टुकड़ा+तोड़ना] दूसरे के आश्रित।

टुकड़ा—संज्ञा पुं. [सं. स्तोक = थोड़ा, हिं. टुक, टूक + ड़ा (प्रत्य.)] (१) छोटा खंड या अंश।
मुहा.—टुकड़े-टुकड़े उड़ाना (करना)—काटकर छोटे-छोटे कई भाग करना।
(२) रोटी का टुकड़ा, ग्रास, कौर।
मुहा.—दूसरे का टुकड़ा तोड़ना—भोजन के लिए दूसरे के आश्रित होना। टुकड़ा तोड़कर (सा) जवाब देना—साफ इनकार करना। दूसरे के टुकड़ों पर पड़ना—भोजन के लिए दूसरे के आश्रित होना। टुकड़ा माँगना—भीख माँगना।

टुकड़ी, टुकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टुकड़ा] (१) छोटा टुकड़ा। (२) दल, भुंड, जत्था। (३) सेना का एक भाग। (४) स्त्रियों का लहँगा। (५) कार्तिक स्नान का मेला।

टुकनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टोकनी] टोकरी, डलिया।

टुघलाना—क्रि. अ. [देश.] (१) चूसना। (२) जुगाली करना।

टुच्चा—वि. [सं. तुच्छ] ओछा, छिछोरा, नीच।

टुटका—संज्ञा पुं. [हिं. टोटका] तंत्र-मंत्र, टोना।

टुटनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टोंटी] छोटी टोंटी।

टुटपुँजिया—वि. [हिं. टूटी+पूँजी] थोड़े धनवाला।

टुटरू—संज्ञा पुं. [अनु.] छोटी पंडुकी या फाख्ता।
मुहा.—टुटरूँ सा—अकेला, एकाकी।

टुटरूँ टूँ—संज्ञा स्त्री. [अनु.] पंडुकी का शब्द।
वि.—(१) अकेला। (२) दुबला-पतला।

टुडुका—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक चमड़ा-मढ़ा बाजा।

टुडुहा—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक चिड़िया।

टुटेला—वि. [हिं. टूटना] टूटा-फूटा।

टुड्डी—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंडि] (१) नाभि। (२) ठोड़ी।
संज्ञा स्त्री. [हिं. टुकड़ी] छोटा टुकड़ा, डली।

टुनकी—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक परदार कीड़ा।

टुनगा, टुनगी—संज्ञा स्त्री. [सं. तनु=पतला + अग्र=अगला] टहनी का अगला कोमल भाग।

टुनटुना—संज्ञा पुं. [देश.] एक नमकीन पकवान।

टुनहाया—संज्ञा पुं. [हिं. टोनहाया] टोना करनेवाला।

टुनियाँ—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] मिट्टी का टोंटीदार पात्र।

टुनिहाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. टोनहाई] टोना करनेवाली।

टुन्ना—संज्ञा पुं. [सं. तुंड] नाल जिसमें फूल लगता है।

टुपकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) धीरे से काटना या डंक मारना। (२) चुगली खाना, किसी के विरुद्ध कुछ कहना। (३) धीरे से मारना।

टुबी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डूबना] गोता, डुब्बी।

टुर्रा—संज्ञा पुं. [देश.] टुकड़ा। अनाज का दाना।

टुलकना—क्रि. अ. [हिं. ढुलकना] लुढ़कना।

टुलड़ा—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का बाँस।

टुसकना—क्रि. अ. [हिं. टसकना] रोना-धोना।

टूँक—संज्ञा पुं. [हिं. टूक] टुकड़ा।

टूँगना—क्रि. स. [हिं. टुनगा] (१) कुतर कर चबाना।
(२) संकोच या चिंता से बहुत धीरे-धीरे खाना।

टूँड़—संज्ञा पुं. [सं. तुंड] (१) मच्छड़, मक्खी आदि के अगले बाल। (२) जौ-गेहूँ आदि की बाल के दाने के कोश का नुकीला सींग।

टूँड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] (१) जौ-गेहूँ की बाल के दाने के कोश का नुकीला सींग। (२) तोंदी, नाभि। (३) गाजर-मूली की नोक। (४) नुकीला भाग, नोक।

टूक, टूकर, टूका—संज्ञा पुं. [सं. स्तोक] (१) टुकड़ा, खंड। उ.—(क)सूर- ससि कह्यौ, यह असुर, तब कृष्नजू लै सुदरसन सु द्वै टूक कीन्हौ—८-८। (ख) लखन कह्यौ, करवार सम्हारौं। कुंभकरन अरु इंद्र-जीत कौं टूक-टूक करि डारौं—९-१४३। (२) रोटी का टुकड़ा। (३) भीख।

टूकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टूक] (१) टुकड़ा। (२) भीख।

टूट—संज्ञा स्त्री. [हिं. टूटना] (१) टूटा हुआ भाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) टूटने का भाव। (३) छूटा हुआ शब्द आदि जो बाद में लिखा जाय।

संज्ञा पुं.—(१) घाटा, कमी। (२) भूल, चूक।

टूटत—क्रि. अ. [हिं. टूटना] टूटते ही, टुकड़े-टुकड़े होते ही। उ.—टूटत धनु नृप लुके जहाँ-तहँ, ज्यौं तारागन भोर—९-२३।

टूटना—क्रि. स. [सं. त्रुट] (१) खंडित या भग्न होना। (२) शरीर के किसी जोड़ का उखड़ना। (३) क्रम या सिलसिला भंग होना। (४) झपटना। (५) बहुत से लोगों का एक साथ आ जाना, पिल पड़ना।

मुहा.—टूट टूट कर—बहुत ज्यादा।

(६) आक्रमण या धावा करना। (७) एकाएक आ जाना। (८) अलग होना, मेल न रहना। (९) संबंध छूटना, लगाव न रहना। (१०) दुबला-पतला होना।

मुहा.—(कुएँ आदि का) पानी टूटना—पानी कम होना।

(११) निर्धन हो जाना, बिगड़ जाना। (१२) चालू न रहना, बंद होना। (१३) किले पर शत्रु का अधिकार होना (१४) रुपये का वसूल न होना। (१५) हानि या घाटा होना। (१६) शरीर में पीड़ा होना। (१७) पेड़ का फल तोड़ा जाना।

टूटा—वि. [हिं. टूटना] भग्न, खंडित।

यौ.—टूटा फूटा—बेकार, निकम्मा, बरता हुआ।

मुहा.—टूटी फूटी बात(बोली)(१) जिस बात में क्रम या संबंध न हो। (२) जो बात स्पष्ट न हो। टूटी बाँह गले पड़ना—अपाहिज के निर्वाह का भार पड़ना।

(२) दुबला-पतला। (३) निर्धन, दरिद्र।

संज्ञा पुं. [हिं. टोटा] घाटा, नुकसान।

टूटि—क्रि. अ. [हिं. टूटना] (१) टूट कर, टुकड़े-टुकड़े होकर। उ.—गज दोउ दंत टूटि धर परे—७-२। (ख) पाट गए टूटि, परी लूटि सब नगर मैं, सूर दरबान कह्यौ जाइ टेरी—९-१३८। (ग) पैरि पाटि टूटि परे, भागे दरवाना—९-१३९। (घ) सहज कपाट उघरि गये ताला-कूँची टूटि—२६२५।

मुहा.—टूटि परीं—दल बाँध कर सहसा आक्रमण किया। उ.—टूटि परीं चहुँ पास घेरि लीन्हो बलभाई—३४१९।

टूटी—वि. [हिं. टूटना] भग्न, खंडित, टुकड़े-टुकड़े। उ.—टूटी छानि मेघ जल बरसैं—१-२३९।

मुहा.—टूटी फूटी बात—जो बात स्पष्ट न हो। उ.—सीत पित्त कफ कंठ निरोधे रसना टूटी फूटी बात।

टूटे—क्रि. अ. [हिं. टूटना] (१) टुकड़े-टुकड़े हो गये। उ.—जै-जै रघुनाथ कहत बंधन सब टूटे—९-९७। (२) ढह गये, दूसरे के अधिकार में चले गये। उ.—घूँघट पट कोट टूटे, छूटे दृग ताजी—६५०।

टूटै—क्रि. अ. [हिं टूटना] (१) खंडित होता है, भग्न होता है।

मुहा.—टूटै बात—अस्पष्ट या असंबद्ध बात (निकलती है)। उ.—सीत-बात-कफ कंठ बिरोधै, रसना टूटै बात—१-३१३।

(२) लपकता है, दौड़ता है। उ.—करनी और, कहै कछु औरै, मन दसहूँ दिसि टूटै—२-१९।

टूटैगी—क्रि. स. [हिं. टूटना] टूट जायगी। उ.—तब मैं कह्यौ खीझि, हरि छाँड़हु, टूटैगी मोतिन लर मेरी—१२०९।

टूटौ—वि. [हिं. टूटना] टूटा, भग्न हुआ, खंडित। उ.—टूटी छानि, मेघ जल बरसैं, टूटौ पलँग बिछइयै—१-२३९।

टूट्यौ—क्रि. स. [हिं. टूटना] (१) टूटा, भग्न हुआ, खंडित हुआ। उ.—सब नृप पचे धनुष नहिं टूट्यौ तब बिदेह दुख पायौ—सारा. २८८। (२) संबंध छूट गया, लगाव न रहा। उ.—जा तैं आँगन खेलत देख्यौ, मैं जसुदा कौ पूत री। तब तैं गृह सौं नातौ टूट्यौ, जैसैं काँचौ सूत री—१०-१३६। (२) ढह गया। उ.—सखी री कठिन मान गढ़ टूट्यौ—२१५२।

टूठना—क्रि. अ. [सं. तुष्ठ, प्रा. तुट्ठ] संतुष्ट होना।

टूठनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. टूठना] संतोष, तुष्टि।

टूठे—क्रि. अ. [हिं. टूठना] संतुष्ट हुए। उ.—हमसौं मिले वर्ष द्वादस दिन चारिक तुम सों टूठे—३२८०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जादू-टोना।

टूना—संज्ञा पुं. [हिं. टोना] जादू-टोना।

टूम—संज्ञा स्त्री. [अनु. टुन टुन] (१) गहना, माल। यौ.—टूमटाम—(१) गहना, जेवर। (२) बनाव-सिंगार। टूम छल्ला—छोटा मोटा गहना।

(२) सुंदर स्त्री। (३) मालदार स्त्री। (४) चालाक आदमी। (५) झटका, धक्का। (६) ताना, व्यंग्य।

टूसना—क्रि. स. [अनु.] (१) धक्का या झटका देना। (२) ताना मारना, व्यंग्य करना।

टूसा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) टुकड़ा। (२) एक फूल।

टूसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टूसा] अधखिला फूल, कली।

टें—संज्ञा स्त्री. [अनु.] तोते या सुए की बोली।

यौ.—टें टें—व्यर्थ की बकवाद।

मुहा.—टें होना (बोलना)—चटपट मर जाना।

टेंकी—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक तरह का नृत्य।

टेंगड़ा, टेंगना, टेंगर, टेंगरा—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] एक मछली जो मुँह से गनगुनाती-सी है।

टेंघुना—संज्ञा पुं. [सं. अष्ठीवान्] घुटना।

टेंघुनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टेंघुना] घुटना।

टेंचन—संज्ञा पुं. [हिं. टेक] खंभा, चाँड़, टेक।

टेंट—संज्ञा स्त्री. [देश.] कमर पर धोती की ऐंठन या मुर्री जिसमें रुपया-पैसा भी रखा जाता है।

मुहा.—टेंट में कुछ होना—पास में रुपया-पैसा होना।

संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड, हिं. टोंट] (१) कपास की ढोंढ़ या डोडा जिससे रुई निकलती है। (२) करील का कड़ुआ फल।

टेंटड़, टेंटर—संज्ञा पुं. [सं. तुंड] रोग या चोट से आँख के डेले का सूजा हुआ माँस, ढेंढर।

टेंटा, टेंटार—संज्ञा पुं. [देश.] एक चितकबरा पक्षी।

टेंटी—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) करील। उ.—सूर कहौ कैसे रुचि मानै टेंटी के फल खारे। (२) करील का फल, कचड़ा।

संज्ञा पुं. [हिं. टें टें (अनु.)] टर्रानेवाला।

वि.—चपल, चंचल।

टेंडुआ, टेंडुवा—संज्ञा पुं. [देश.] गला, घोंची।

टेंटें—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) तोते की बोली। (२) व्यर्थ की बकवाद या हुज्जत।

मुहा.—टें टें करना—बकवाद या हुज्जत करना।

टेंव, टेउ—संज्ञा स्त्री. [हिं. टेक, टेव] आदत, स्वभाव, प्रकृति। उ.—(क) विषय-बिकार-दवानल उपजी, मोह-बयारि लई। भ्रमत-भ्रमत बहुतै दुख पायौ, अजहुँ न टेंव गई—१-२९९। (ख) जदपि टेंव तुम जानति उनकी तऊ मोहिं कहि आवै—३७९३।

टेउकन—संज्ञा पुं. [हिं. टेक] आड़, रोक।

टेउकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टेक] आड़, रोक, टिकान।

टेक—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिकना] (१) रोक का खंभा, थूनी, चाँड़। (२) रोक, सहारा। (३) संकल्प, दृढ़ निश्चय, अड़, हठ, जिद। उ.—(क) मोकौं मुक्ति बिचारत हौ प्रभु, पचिहौ पहर-घरी। श्रम तैं तुम्हैं पसीना ऐहै, कत यह टेक करी—१-१३०। (ख) लोगनि तिहिं बहु बिधि समुझायौ। पै तिहिं मन-संतोष न आयौ। तब हरि कह्यौ टेक परिहरौ भीष्म पितामह कहैं सो करौ—१-२६१।

मुहा—टेक निभना (रहना)—(१) हठ पूरा होना। (२) प्रतिज्ञा पूरी होना। टेक गहना (पकड़ना)—हठ या जिद करना।

(४) आश्रय, अवलंब, सहारा। उ.—अब मोकौं धरि रही न कोऊ, तातैं जाति मरी। मेरैं मात-पिता- पति-बंधू, एकै टेक हरी—१-२५४। (५) बैठने का ऊँचा चबूतरा या वेदी। (६) ऊँचा टीला, छोटी पहाड़ी। (७) बान, आदत, संस्कार। (८) गीत का चरण जो बार बार गाया जाय।

टेकड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. टेक] (१) टिकान। (२) शांति या आराम से बैठने की क्रिया।

टेकड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टेक] (१) ऊँचा टीला, छोटी पहाड़ी। (२) टिकान। (३) शांति या आराम से बैठने की क्रिया या रीति।

टेकत—क्रि स. [हिं. टेकना] (चलते, उठते, बैठते समय किसी वस्तु को) हाथ से पकड़ते हैं, सहारे के लिए थामते हैं। उ.—(क) स्याम उलटे परे देखे बड़ी सोभा लहरि। सूर प्रभु कर सेज टेकत, कबहुँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेकत ढहरि—१०-६७। (ख) नाचत गावत गुन की खानि। सोभित भए टेकत पिय पानि।

टेकन, टिकनी—संज्ञा पुं. [हिं. टेकना] रोक, थूनी।

टेकना—क्रि. स. [हिं. टेक] (१) उठने-बैठने में किसी चीज का सहारा लेना। (२) शरीर को सहारे के लिए टिकाना या ठहराना।

मुहा.—माथा टेकना—प्रणाम या दंडवत करना।

(३) सहारे के लिए थामना। (४) हाथ का सहारा लेना। (५) हठ ठानना।

संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का जंगली धान।

टेकर, टेकरा—संज्ञा पुं [हिं. टेक] ऊँचा टीला।

टेकरी—संज्ञा स्त्री [हिं. टेकरा] ऊँचा टीला।

टेकला—संज्ञा स्त्री. [हिं. टेक] धुन, रट।

टेकहु—क्रि. स. [हिं. टेकना] रोको, थामों। उ.—टेकहु गिरि गोवर्धनराई—१०५८।

टेकान—संज्ञा पुं. [हिं. टेकना] (१) टेक, थूनी। (२) चबूतरा जिस पर बोझा रखकर सुस्ताया जा सके।

टेकाना—क्रि. स. [हिं. टेकना] उठने या चलने-फिरने में सहारा देने को पकड़ना या थामना।

टेकानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टेकना] फँसाने की कील।

टेकि—क्रि. स. [हिं. टेकना] (१) उठते, चलते, चढ़ते समय किसी वस्तु को थाम कर, सहारा लेकर। उ.—ग्रह ग्रह प्रति द्वार फिर्यौ, तुमकौं प्रभु छाँड़े। अंध-अंध टेकि चलै, क्यौं न परै गाड़ै—१-१२४। (२) पकड़कर, थामकर। उ.—चरन टेकि दोउ हाथ जोरि कै विनती क्यौं नहिं कीजै—६-१२६।

टेकी—वि. [हिं. टेक] (१) कही हुई बात या प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। उ.—ऐ तो अलि उनहीं के संगी अपनी बात के टेकी—३२८८। (२) हठी, जिद्दी।

मुहा.—गौं के टेकी—पक्का मतलबी, बड़ा स्वार्थी। उ.—तुम तौ अलि उनहीं के संगी अपनी गौं के टेकी—३२८७।

टेकुआ, टेकुवा—संज्ञा पुं. [हिं. तकला] चरखे का तकुला जिस पर सूत लपेटा जाता है।

संज्ञा पुं. [हिं. टेक] टिकाने की चीज।

टेकुरा—संज्ञा पुं. [देश.] पान।

टेकुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टेकुआ] (१) तकला। (२) फिरकी।

टेघरना—क्रि. अ. [हिं. टिघलना] पिघलना।

टेटका—संज्ञा पुं. [सं. ताटंक] कान का एक गहना।

टेटा—संज्ञा पुं. [हिं. टेंट] करील का कडुआ फल। उ.—सूरदास गोपाल छाँड़ि कै चूसे टेटा खारे—३०४५।

टेढ़—संज्ञा स्त्री. [हिं. टेढ़ा] (१) टेढ़ापन। (२) ऐंठ।

वि.—जो सीधा न हो, वक्र, कुटिल।

टेढ़बिड़ंगा—वि. [हिं. टेढ़ा+बेढंगा] टेढ़ा-मेढ़ा।

टेढ़ा—वि. [सं. तिरस्] (१) जो सीधा न हो, वक्र कुटिल। (२) तिरछा। (३) जो सरल न हो कठिन। (४) जो शिष्ट या नम्र न हो, उजड्ड।

मुहा.—टेढ़ा पड़ना (होना)—(१) उग्र या कठोर होना (२) अकड़ना, ऐंठना।

टेढ़ाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. टेढ़ा] टेढ़ापन।

टेढ़ापन—संज्ञा पुं. [हिं. टेढ़ा+पन (प्रत्य.)] टेढ़ा होने का भाव, टेढ़ाई।

टेढ़ी—वि.स्त्री. [हिं. टेढ़ा] (१) जो सीधी न हो, वक्र।

मुहा.—टेढ़ी चितवन—तिरछी नजर।

(२) जो समानांतर न हो, तिरछी। उ.—(क) अरुन लोचन भौंह टेढ़ी बार बार जँभात—१०-१००। (ख) रोकि रहत गहि गली साँकरी टेढ़ी बाँधत पाग—१०-३२८। (३) जो सरल न हो, कठिन।

मुहा.—टेढ़ी खीर—कठिन या मुश्किल काम।

(४) जो शिष्ट या नम्र न हो, उग्र, उजड्ड। उ.—कुटिल कुचील जन्म की टेढ़ी सुंदर करि घर आनी—३०८६।

मुहा.—टेढ़ी आँख से देखना—क्रोध से देखना, दुष्टता के व्यवहार का विचार करना। टेढ़ी आँखें करना—क्रोध से देखना, बिगड़ना।

टेढ़ी (टेढ़ी-सीधी) सुनाना—बुरा-भला कहना।

टेढ़े, टेढ़ैं, टेढ़ो—क्रि. वि. [हिं. टेढ़ा] घूम कर, सीधे नहीं।

मुहा.—टेढ़ टेढ़े (टेढ़ो टेढ़ो) जाना (चलना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धाना)— **घमंड करना**। टेढ़े टेढ़े जात—**घमंड करता है, इतराता है**। उ.—कबहूँ कमला चपल पाय के टेढ़े टेढ़े (टेढ़ैं टेढ़ैं) जात। कबहुँक मग मग धूरि टटोरत, भोजन को बिललात—२-२२। टेढ़ैं टेढ़ैं धायौ—**इतराया, घमंड किया**। उ.—टेढ़ी चाल, पाग सिर टेढ़ी, टेढ़ैं टेढ़ैं धायौ—१-३०१। टेढ़े बताना—**घमंड से बात करना**। टेढ़े बतात—**घमंड से बकते हो**। उ.—टेढ़े कहा बतात कंस कौं देहु कमल अब—५८६।

टेना—क्रि. स. [देश.] (१) **हथियार आदि तेज करने को रगड़ना**। (२) **मूँछें ऐंठना या मरोड़ना**।

टेनी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **छोटी उँगली**।

टेपारा—संज्ञा पुं. [हिं. टिपारा] **टोपी जिसमें कलगी की तरह तीन शाखाएँ होती हैं**।

टेम—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिमटिमाना] **दीपक की लौ**।

टेमन—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह का साँप**।

टेर—संज्ञा स्त्री. [सं. तार] (१) **गाने की तान, टीप**। (२) **पुकार, हाँक, बुलाहट**। उ.—(क) हा लछिमन सुनि टेर जानकी, बिकल भई, आतुर उठि धाई—९-५६। (ख) स्याम स्याम कहि टेर लगायौ—११-७७। (ग) सिखिनि सिखर चढ़ि टेर सुनायौ। बिरहिनि सावधान ह्वै रहियौ सजि पावस दल आयौ—३९४६।

संज्ञा स्त्री. [सं. तार=तै करना] **निर्वाह, गुजर**।

मुहा.—टेर करना—**बिताना, काटना, निबाहना**।

टेरति—क्रि. स. [हिं. टेरना] **बुलाती (है), पुकारती (है), हाँक लगाती (है)**। उ.—(क) जसुमति सुनत चली अति आतुर, ब्रज घर-घर टेरति लै नाम—१०-२३५। (ख) हरि कौं टेरति है नँदरानी। बहुत अबार भई कहँ खेलत रहे मेरे सारँगपानी—१०-२३६। (२) **चिल्लाती है**। उ.—ब्रह्म-बाण तैं गर्भ उबारयौ, टेरति जरी जरी—१-१६।

टेरन—संज्ञा स्त्री. [हिं. टेरना] **संगीत की तान, टीप**। उ.—तन-मन लियौ चुराइ हमारौ वा मुरली की टेरन—३२७७।

टेरना—क्रि. स. [हिं. टेर+ना (प्रत्य.)] (१) **तान निकालना, सस्वर गाना**। (२) **बुलाना, पुकारना, हाँक लगाना**।

क्रि. स. [सं. तोरण=तै करना] (१) **पूरा करना, निभाना**। (२) **बिताना, काटना, निर्वाह करना**।

टेरहीं—क्रि. स. [हिं. टेरना] **बुलाते हैं, पुकारते हैं**। उ.—ग्वाल-बाल सब टेरहीं, गैया बन चारन—१०-४३९।

टेरा—क्रि. स. [हिं. टेरना] **बुलाया, पुकारा**।

संज्ञा पुं. [देश.](१) **अंकोल का पेड़**। (२) **पेड़ का तना**। (३) **शाखा, डाली**।

टेरि—क्रि. स. [हिं. टेरना] **ऊँचे स्वर से चिल्लाकर, हाँक लगाकर**। उ.—(क) प्रभु हौं बड़ी देर कौ ठाढ़ौ टेरि कहत हौं यातैं। मरियत लाज पाँच पतितनि मैं, हौं अब कहौ घटि कातैं—१-१३७। (ख) द्रुपद-सुता कौ मिट्यौ महादुख, जबहीं सो हरि टेरि पुकारौ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. टेर] **पुकार, हाँक**। उ.—ग्राह जब गजराज घेरयौ, बल गयौ हारी। हारि कै जब टेरि दीन्ही, पहुँचे गिरधारी—१-१७६।

टेरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **टहनी, पतली शाखा**।

संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक पौधा। एक फली**।

क्रि. स. [हिं. टेरना] (१) **बुलाया, पुकारा, दुहाई दी, हाँक लगायी**। उ.—इत-उत देखि द्रोपदी टेरी। ऐंचत बसन, हँसत कौरव सुत, त्रिभुवन-नाथ, सरन हौं तेरी—१-२५१। (२) **चिल्लाकर, पुकारकर**। उ.—पाट गये टूटि, परी लूटि सब नगर मैं, सूर दरबान कह्यौ जाइ टेरी—९-१३८।

टेरै—क्रि. स. [हिं. टेरना] **टेरता है, बुलाता है**। उ.—बृंदाबन मैं गाइ चरावै, धौरी धूमरि टेरै हो—४५२।

टेरो, टेरौ—क्रि. स. [हिं. टेरना] **बुलाओ, पुकारो, हाँक लगाओ**। उ.—(क) द्रुम चढ़ि काहे न टेरौ कान्ह, गैयाँ दूरि गईं—६१२। (ख) राधा सों कहति नारि काग सगुन टेरो—३०४९।

संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह की सरसों**।

टेर्यौ—क्रि. स. भूत. [हिं. टेरना] **बुलाया, पुकारा, हाँक लगायी**। उ.—हा करुनामय, कुंजर टेर्यौ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहयौ नहीं बल, थाकौ—१-११३।

टेली—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का पेड़।

टेव—संज्ञा स्त्री. [हिं. टेक] अभ्यास, आदत, बान, स्वभाव। उ.—(क) जुग-जुग जनम, मरन अरु बिछुरन, सब समुझत मत-भेव। ज्यौं दिनकरहिं उलूक न मानत, परि आई यह टेव–१-१००। (ख) सब विधि सोधै ताकी टेव—६-१७३। (ग) तुम तौ टेव जानतिहि ह्वै हौ, तऊ मोंहि कहि आवै। प्रात उठत मेरे लाल लड़ैतैं माखन रोटी भावै–३७६३।

टेवकी—संज्ञा स्त्री. [हि. टेकन] नाव का ऊपरी पाल।

टेवना—क्रि. स. [हिं. टेना] (१) हथियार तेज करने के लिए रगड़ना। (२) मूँछे ऐंठना।

टेवा—संज्ञा पुं. [सं. टिप्पन] (१) जन्म-पत्री या कुंडली। (२) विवाह का लग्नपत्र।

टेवैया—संज्ञा पुं. [हिं. टेवना] (चाकू, हथियार आदि पर) धार धरने या तेज करनेवाला।

टेसुआ, टेसू—संज्ञा पुं. [सं. किंशुक] पलाश या ढाक का पेड़ या फूल। (२) लड़कों का एक उत्सव जिसमें विजयदशमी को घास का एक पुतला बनाकर घर घर घुमाते हैं और शरदपूर्णिमा को खेल खेलते और मिठाई खाते हैं। उ.—जे कच कनक कचोरा भरि भरि मेलत तेल फुलेल। तिन केसन को भस्म चढ़ावत टेसू केसे खेल—३२२१।

टेहला—संज्ञा पुं. [देश.] विवाह की रीति-रस्म।

टैयाँ—संज्ञा स्त्री. [देश.] चित्ती कौड़ी।

टैन—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक तरह की घास।

टैना—संज्ञा पुं. [देश.] घास का पुतला जो खेत में पक्षियों को डराने के लिए रखा जाता है।

टोंक—संज्ञा स्त्री [हिं. टोकना] किसी के टोकने या पूँछ-ताँछ करने से लगनेवाली नजर।

संज्ञा पुं. [हिं. टोंका] छोर, सिरा, नोक।

टोंकना—क्रि. स. [हिं. टोकना] (१) दूसरे के बीच में एकाएक बोल उठना। (२) हूँसना, नजर लगाना।

टोंका—संज्ञा पुं. [सं. स्तोक = थोड़ा] (१) छोर, सिरा, किनारा। (२) नोक, कोना।

टोंचना—क्रि. स. [सं. टंकन] चुभाना, गड़ाना।

टोंट, टोंटा—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] (१) चोंच। (२) चोंच की तरह की निकली हुई चीज। (३) तुलतुली।

टोंटरी, टोंटी—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] (१) झारी, लोटे आदि की पतली नली या तुलतुली। (२) पशु का थूथन।

टोआ—संज्ञा पुं. [पंजाबी] गड्ढा, गढ़ा।

टोइयाँ—संज्ञा स्त्री. [देश.] पीली चोंच का तोता।

टोई—संज्ञा स्त्री. [देश.] गन्ने आदि की पोर।

टोक—संज्ञा पुं. [सं. स्तोक] बोला हुआ शब्द।

संज्ञा स्त्री.—(१) दूसरे के बीच में कुछ पूछने या जानने के लिए कहा हुआ शब्द या वाक्य।

यौ.—टोक-टाक—पूछ-ताँछ। रोक-टोक—मनाही, विघ्न-बाधा, छेड़-छाड़।

(२) नजर, कुदृष्टि का प्रभाव।

मुहा.—टोक में आना—नजर लगानेवाले के सामने पड़ जाना। टोक लगना—कुदृष्टि का प्रभाव पड़ना।

टोकना—क्रि. स. [हिं. टोक] (१) बीच में बोलकर या पूछताँछ करके बाधा डालना। (२) हूँसना, नजर लगाना।

संज्ञा पुं.—(१) बड़ा झौआ। (२) बड़ा हंडा।

टोकनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टोकना] (१) छोटा झाबा, डलिया। (२) छोटा हंडा या कलसा। (३) बटलोई।

टोकरा—संज्ञा पुं.—झाबा, झौआ।

मुहा.—टोकरे पर हाथ रहना–इज्जत बनी रहना।

टोकरिया, टोकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टोकरा] डलिया।

टोकवा—संज्ञा पुं. [देश.] नटखट लड़का।

टोका—संज्ञा पुं. [सं. स्तोक] (१) सिरा, छोर। (२) कपड़े आदि का कोना, पल्ला। (३) नोक।

टोकारा—संज्ञा पुं [हिं. टोक] इशारे का शब्द।

टोकै—क्रि. स. [हिं. टोकना] दूसरे के बीच में एकाएक बोलता या टोकता है। उ.—घाट बाट जमुना तट रोकै। मारग चलत जहाँ तहँ टोकै–पृ०२३४ (५)।

टोक्यौ—क्रि. स. [हिं. टोकना] रोका, सावधान किया, पूछा-ताँछा, बाधा डाली। उ.—जब जब अधम करी अधमाई, तब तब टोक्यौ नाथ—१-१९६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा पुं [हिं. टोटा] (१) घाटा। (२) कमी।

टोट—संज्ञा पुं [सं. त्रोटक] तंत्रमंत्र, जादू-टोना।

टोटका—संज्ञा पुं. [सं. त्रोटक] तंत्रमंत्र, जादू-टोना।

मुहा.—टोटका करने आना—आकर तुरंत ही चल देना। टोटका होना—किसी काम का चटपट हो जाना।

टोटकेहाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. टोटका] टोना करनेवाली।

टोटा, टोटो—संज्ञा पुं. [सं. तुंड] कटा हुआ टुकड़ा।

संज्ञा पुं. [हिं. टूटना, टूटा] (१) कमी, अभाव। (२) घाटा, हानि, नुकसान।

मुहा.—टोटा देना (भरना)—हरजाना देना।

टोड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. त्रोटकी] प्रातःकाल गायी जानेवाली एक रागिनी।

टोनहा—वि. [हिं. टोना] टोना करनेवाला।

टोनही—वि. स्त्री. [हिं. टोनहा] जादू करनेवाली।

टोनहाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. टोना+टाई (प्रत्य.)] (१) जादू-टोना करनेवाली। (२) झाड़-फूँक करनेवाली।

टोनहाया—संज्ञा पुं. [हिं. टोना+हाया (प्रत्य.)] जादू-टोना करनेवाला। (२) झाड़-फूँक जाननेवाला।

टोना—संज्ञा पुं. [सं. तंत्र] (१) तंत्र-मंत्र का प्रयोग, जादू। उ.—(क) नैकुँ दृष्टि जहँ परि गई, सिव-सिर टोना लागे (हो)—१-४४। (ख) हरि कछु ऐसो टोना जानत—१० उ. ८०।

यौ.—टोना टामनि (टम्मन)—जादू-टोना, जंत्र-मंत्र। उ.—टोना टामनि जंत्र मंत्र करि ध्यायौ देव-दुआरौ री—१०-१३५।

(२) विवाह का एक गीत जिसमें 'टोना' शब्द कई बार प्रयुक्त होता है।

संज्ञा पुं. [देश.] एक शिकारी चिड़िया।

क्रि. स. [सं. त्वक्=स्पर्शेंद्रिय+ना (प्रत्य.)] हाथ से टटोलना, छूकर मालूम करना।

टोनाहाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. टोनहाई] (१) जादू-टोना करनेवाली। (२) झाड़-फूँक जाननेवाली।

टोप—संज्ञा पुं. [हिं. तोपना=ढाँकना] (१) बड़ी टोपी। (२) लोहे की टोपी, सिरस्त्राण। (३) गिलाफ।

संज्ञा पुं. [अनु. टपटप या सं. स्तोक] बूँद।

टोपा—संज्ञा पुं. [हिं. टोप] बड़ी टोपी।

संज्ञा पुं. [हिं. तोपना] झाबा, टोकरा।

संज्ञा पुं. [हिं. तुरपना] टाँका, सीवन।

टोपी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तोपना=ढाकना] (१) सिर का एक पहनावा।

मुहा.—टोपी उछालना—बेइज्जती करना। टोपी बदलना—भाई-चारे का संबंध स्थापित करना।

(२) ताज, राजमुकुट। (३) टोपी की तरह गोल और गहरी चीज। (४) थैली जो शिकारी जानवर के मुँह पर चढ़ी रहती है।

टोभ—संज्ञा पुं. [हिं. डोभ] टाँका, सीवन।

टोया—संज्ञा पुं. [सं. तोय] गड्ढा, गढ़ा।

टोर—संज्ञा स्त्री. [देश.] कटार, कटारी।

टोरना—क्रि. स. [सं. त्रुट] तोड़ना।

मुहा.—आँख टोरना—लज्जा आदि के कारण दृष्टि छिपाना, नजर बचाना।

टोरा—संज्ञा पुं. [सं. तोक] लड़का, छोकरा।

टोरि—क्रि. स. [हिं. टोरना] तोड़कर।

मुहा.—लोचन टोरि—लज्जा आदि से दृष्टि बचाकर, नजर चुराकर। उ.—सूर प्रभु के चरित सखियन कहत लोचन टोरि।

संज्ञा स्त्री [हिं. टोली] (१) समूह, (२) मुहल्ला।

टोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टोड़ी] एक रागिनी।

टोल—संज्ञा स्त्री. [सं. तोलिका=घेरा, बाड़ा] (१) मंडली, समूह, झुंड। उ.—कुंचित केस सुगंध सुबसु मनु उठि आये मधुपन के टोल—१३३०। (२) बस्ती, मुहल्ला। उ.—आजु भोर तमचुर के रोल। गोकुल मैं आनंद होत है, मंगन-धुनि महराने टोल—१०-९४। (२) चटसार, पाठशाला।

संज्ञा पुं.—एक राग।

टोला—संज्ञा पुं. [सं. तोलिका=घेरा, बाड़ा] बस्ती, मुहल्ला।

संज्ञा पुं. [देश.] बड़ी कौड़ी, टग्घा।

संज्ञा पुं. [देश.] (१) पत्थर का टुकड़ा, रोड़ा। (२) मार-पीट का लाल-नीला चिह्न, नील।

टोलिया, टोली—संज्ञा स्त्री. [सं. तोलिका=हाता, बाड़ा] (१) छोटा मुहल्ला। (२) समूह, झुंड,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंडली। (३) पत्थर की सिल।

टोवना—क्रि. स. [हिं. टोना] टटोलना।

टोह—संज्ञा स्त्री. [हिं. टटोलना] (१) खोज, तलाश।

मुहा.—टोह मिलना—पता लगाना। टोह में रहना—तलाश में रहना। टोह लगाना (लेना)—पता लगाना।

(२) खबर, देखभाल।

मुहा.—टोह रखना (लेना)—खोज-खबर लेना।

टोहना—क्रि. स. [हिं. टोह] (१) ढूँढ़ना, खोजना, तलाशना। (२) छूना, टटोलना।

टोहाटाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. टाह] (१) छानबीन, ढूँढ़-ढाँढ़, तलाश। (२) देखभाल।

टोहिया—वि. [हिं. टोह] ढूँढ़ने या खोजनेवाला।

टोहियाना—क्रि. स. [हिं. टोहना] ढूँढ़ना, टटोलना।

टोही—संज्ञा स्त्री. [हिं. टोह] तलाश करनेवाला।

टौंस—संज्ञा स्त्री. [सं. तमसा] तमसा नदी।

टौना—संज्ञा पुं. [हिं. टोना] टोना, जादू, तंत्र मंत्र का प्रयोग। उ.—अति सुन्दर नंद-महर ढुटौना निरखि निरखि ब्रजनारि कहति सब, यह जानत क टौना—६०१।

टौर—संज्ञा पुं.— दाँव, घात।

टौरना—क्रि. स. [हिं. टेरना] (१) जाँचना, परखना। (२) पता लगाना, खोजना।

ठ

ठ—टवर्ग का दूसरा और देवनागरी वर्णमाला का बारहवाँ व्यंजन; उच्चारण-स्थान मूर्धा है—उच्चारण में जीभ का मध्य भाग तालु से लगता है।

ठंठ—वि. [सं. स्थाणु] (१) ठूँठ, सूखा (पेड़)। (२) खाली, रीता, छूँछा। (३) सारहीन।

ठंठनाना—क्रि. अ. [हिं. ठनठनाना] 'ठनठन' होना। क्रि. स.—'ठनठन' शब्द निकालना या बजाना।

ठंठार—वि. [हिं. ठंठ] खाली, रीता, छूँछा।

ठंठी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठंठ] ज्वार-मूँग का दाना जो पीटने के बाद भी बाल में लगा रहे।

वि. स्त्री.—जो (गाय-भैंस) बच्चा या दूध न दे।

ठंड, ठंढ—संज्ञा स्त्री [हिं. ठंढा] जाड़ा, सरदी।

ठंडई, ठंढई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठंढाई] (१) शरीर की गरमी शांत करनेवाला शरबत। (२) भाँग का शरबत जिसमें सौंफ, इलायची आदि पड़ती हैं।

ठंडक, ठंढक—संज्ञा स्त्री. [हिं.ठंढा](१) सरदी, जाड़ा। (२) ताप या जलन की शांति। (३) संतोष, प्रसन्नता, तसल्ली। (३) रोग या उपद्रव की शांति।

ठंडा, ठंढा—वि. [सं. स्तब्ध, प्रा. तद्ध, ठढ्ढ, हिं. ठंढा] (१) शीतल, सर्द। (२) बुझा या बुता हुआ। (३) जो उद्विग्न या आवेशयुक्त न हो, शांत।

मुहा.—ठंढा करना—(१) क्रोध शांत करना। (२) धीरज या तसल्ली देकर शोक कम करना।

(४) जिसे कामोद्दीपन न हो। (४) जिसे क्रोध न हो, धीर, शांत, गंभीर। (५) धीमा, सुस्त, उत्साहहीन, उमंगरहित। (६) चुप रहने या विरोध न करनेवाला। (७) तृप्त, संतुष्ट। (८) निश्चेष्ट, मृत, मरा हुआ।

मुहा.—ठंढा होना—मर जाना। ताजिया ठंढा करना—(१) ताजिया दफनाना। (२) झगड़ा या विरोध दबा देना। (मूर्ति आदि को) ठंढा करना—नदी आदि में विसर्जन करना। (पवित्र या प्रिय वस्तु को) ठंढा करना—फेंकना या तोड़ना-फोड़ना।

(९) जिसमें चहल-पहल, बहार या रौनक न हो।

मुहा.—बाजार ठंडा होना—खूब बिक्री न होना।

ठंडाई, ठंढाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठंढा] (१) सौंफ, इलायची, गुलाब के फूल आदि से बना ठंढक पहुँचानेवाला शरबत। (२) भाँग का शरबत।

ठंढा मुलम्मा—संज्ञा पुं. [हिं. ठंढा+अ.मुलम्मा] बिना आँच के सोने-चाँदी का पानी चढ़ाना।

ठंडी, ठंढी—वि. स्त्री. [हिं. पुं.ठंढा] (१) सर्द, शीतल।

मुहा.—ठंढी आगा—(१) बरफ। (२) पाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठंढी कढ़ाई—सब पकवानों के अंत में हलुआ बनाने की रीति। ठंढी मार—भीतरी या गुप्त चोट। ठंढी मिट्टी—(१) शरीर जो जल्दी न बढ़े। (२) शरीर जिसमें कामोद्दीपन न हो। ठंढी साँस—दुखभरी साँस या आह। ठंढी साँस भरना (लेना)—दुख की साँस लेना।

(२ बुझी हुई। (३) आवेशरहित, अक्रुद्ध।

मुहा.—माता (चेचक, शीतला) ठंढी करना—शीतला के अच्छे होने पर देवी की पूजा करना।

(४) जिसे कामोद्दीपन न हो। (५) शांत, गंभीर। (६) तृप्त, प्रसन्न। (७) धीमी, सुस्त, मंद।

मुहा.—ठंढी गरमी—बनावटी या दिखावटी प्रीति।

(८) विरोध न करनेवाली। (६) मरी हुई।

मुहा.—चूड़ी ठंढी करना—किसी स्त्री के विधवा हो जाने पर उसकी चूड़ी तोड़ना-फोड़ना।

संज्ञा स्त्री.—शीतला, माता, चेचक।

मुहा.—ठंढी ढलना – चेचक का जोर कम होना। ठंढी निकलना—शीतला या चेचक का रोग होना।

ठंडे, ठंढे—वि. बहु. [हिं. ठंढा] (१) सर्द, शीतल।

मुहा.—ठंढे-ठंढे—ठंढे समय में, सबेरे।

(२) आवेशरहित। (३) जिन्हें कामोद्दीपन न हो। (४) धीर, गंभीर। (५) जिनसें उमंग न हो। (६) जो विरोध न करें।

मुहा.—ठंढे-ठंढे—बिना विरोध किये, चुपचाप।

(७) संतुष्ट, तृप्त, प्रसन्न, खुश।

मुहा.—ठंढे-ठंढे—हँसी-खुशी से। ठंढे पेट (पेटों)-हँसी खुशी के साथ। ठंढे रहना—प्रसन्न रहना।

(८) बेरौनक। (६) मरे हुए, निश्चेष्ट।

मुहा.—ठंढे होना—मर जाना।

ठ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शिव। (२) मंडल।

ठई—क्रि. स. [हिं. ठयना] (१) दृढ़ संकल्प के साथ आरंभ की, ठानी, छेड़ी। उ.—दासी सहस प्रगट तहँ भई। इंद्रलोक-रचना रिषि ठई—६-३। (२) ठहरायी, निश्चित की, स्थिर की। उ.—नृप पुत्री दासी करि ठई। दासी सहस ताहि सँग दई—६-१७४। (३) स्थित हुई, घटित हुई। उ.—ठानी हुती और कछु मन मैं औरै आनि ठई—१-२६६।

ठउर, ठऊर—संज्ञा पुं. [हिं. ठौर] स्थान, ठौर।

ठए—क्रि. स. [हिं. ठयना] किये, संपादित किये। उ.—प्राचीनबर्हि भूप इक भए। आयु प्रजंत जज्ञ तिन ठए—४-१२।

ठक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] ठोंकने का शब्द।

वि.—भौचक्का, स्तब्ध, निश्चेष्ट।

ठकठक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] झगड़ा-बखेड़ा।

ठकठकाना—क्रि. स. [अनु.] ठोंकना-पीटना।

ठकठकिया—वि. [अनु. ठकठक] झगड़ालू, बखेड़िया।

ठकठौआ—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) एक करताल। (२) करताल बजाकर भीख माँगनेवाला। (३) एक नाव।

ठकार—संज्ञा पुं. [हिं. ठ+कार] 'ठ' की ध्वनि।

ठकुरई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठकुराई] (१) प्रभुता। (२) स्वामी के अधिकार का उपयोग। (३) रियासत, जमींदारी। (४) महत्व, बड़प्पन।

ठकुरसुहाती—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाकुर+सुहाना] वह बात जो दूसरे को खुश करने के लिए कही जाय, खुशामद, लल्लोचप्पो।

ठकुराइत—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठकुरायत] (१) प्रभुत्व, प्रधानता। (२) ठाकुर का अधिकृत प्रदेश, रियासत।

ठकुराइन, ठकुराइनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. ठाकुर] (१) स्वामिनी, मालकिन। उ.—(क) नहिं दासी ठकुराइन कोई—३४४२। (ख) तुम ठकुराइनि घर रहौ, मोहिं चेरी पाई—७१३। (२) क्षत्राणी। (३) नाइन, नाउन। (४) देवी।

ठकुराइस—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठकुरायत] (१) प्रभुता, प्रधानता, आधिपत्य। (२) ठाकुर की रियासत।

ठकुराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाकुर] (१) आधिपत्य, प्रभुत्व, सरदारी, प्रधानता। उ.—(क) कह पांडव कै घर ठकुराई अरजुन के रथ-बाहक—१-२६। (२) ठाकुर का अधिकार, स्वामीत्व का उपयोग। (३) महत्व, बड़प्पन, श्रेष्ठता। उ.—(क) हरि के जन की अति ठकुराई। महाराज, रिषिराज, राजमुनि, देखत रहे लजाई—१-४०। (ख) उन सम नहिं हमरी ठकुराई—१० उ. ३२।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठकुरानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाकुर] (१) ठाकुर या सरदार की स्त्री । (२) रानी । उ.—सूरदास प्रभु तहँ पग धारे जहँ दोऊ ठकुरानी—१० उ. १२० । (३) देवी । स्वामिनी । (४) क्षत्राणी ।

ठकुराय—संज्ञा पुं. [हिं. ठाकुर] एक क्षत्रिय जाति ।

ठकुरायत—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाकुर] (१) आधिपत्य, प्रभुता । उ.—ठकुरायत गिरिधर की साँची । कौरव जीति जुधिष्ठिर राजा, कीरति तिहूँ लोक मैं माँची—१-१८ । (२) ठाकुर या सरदार का अधिकृत प्रदेश, रियासत, जमींदारी ।

ठकोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टेकना, ठेकना+और (प्रत्य.)] कुलियों आदि की सहारे की लकड़ी, सहारा, टेक ।

ठक्कर—संज्ञा स्त्री. [हिं. टक्कर] चोट, आघात ।

ठक्कुर—संज्ञा पुं. [सं.] देवता, पूज्य प्रतिमा ।

ठग—वि. पुं. [सं. स्थग] (१) लुटेरा, धोखा देकर धन हड़पनेवाला । उ.—बटपारी, ठग, चोर उचक्का, गाँठिकटा लठबाँसी—१-१८६ ।

मुहा.—ठग लगना—ठगों का पीछे पड़ना ।

(२) छली, धूर्त, धोखेबाज, कपटी ।

ठगई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठग+ई (प्रत्य.)] (१) ठग का काम, धोखे से धन हड़पने की क्रिया । (२) छल, धूर्तता ।

ठगण—संज्ञा पुं. [सं.] पाँच मात्राओं का एक गण ।

ठगत—क्रि. अ. [हिं. ठगना] धोखा खाने से, भुलावे में पड़ने से, ठगे जाने से । उ.—बिनु देखैं, छिनुहीं सुनैं, ठगत न कोऊ बाँच्यौ (हो)—१-४४ ।

ठगना—क्रि. स. [हिं. ठग] (१) धोखा देकर धन हड़पना । (२) छल करना, भुलावे में डालना ।

मुहा.—ठगा सा—चकित, भौचक्का, दंग ।

(३) किसी चीज का उचित से अधिक मूल्य लेना ।

क्रि. अ.—(१) धोखा खाकर माल खोना । (२) धोखे में आना । (३) चकित होना, चक्कर में पड़ना ।

ठगनी—वि. स्त्री. [हिं. ठग] (१) ठगनेवाली । (२) छल-कपट करनेवाली, धोखा देनेवाली ।

संज्ञा स्त्री.—(१) ठग की स्त्री । (२) कुटनी ।

ठगपना—संज्ञा पुं. [हिं. ठग+पन] (१) ठगने का भाव या काम । (२) धूर्तता, चालाकी, छल ।

ठगमूरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठग+मूरी] एक नशीली जड़ी बूटी जिससे बेहोश करके ठग यात्रियों को लूटते हैं।

मुहा.—ठगमूरी खाना—होश-हवास में न होना। ठगमूरी खायी—मतवाली हुई, होश हवास में न र[ही]। उ.—काहू तोहि ठगोरी लाई । बूझति सखी सु[नि] नहिं नेकहुँ तुही किधौं ठगमूरी खाई—८४६ ।

ठगमोदक—संज्ञा पुं. [हिं. ठग+सं. मोदक] ठगों [के] नशीले लड्डू । उ.—चलत चितै मुसकाय कै[,] बचन सुनाये । ते ही ठगमोदक भए, मन धीर[...] हरि-तन छूछो छिटकाए ।

ठगलाड़ू—संज्ञा पुं. [हिं. ठग+लड्डू] ठगों के न[शीले] लड्डू जिन्हे खाकर पथिक बेहोश हो जाता है ।

मुहा.—ठगलाड़ू खाना—मतवाला या बे[सुध] होना । ठगलाड़ू खायौ—मस्त या बेसुध हुए । उ.—सूर कहा ठगलाड़ू खायो । इत उत फिरत मोह [...] मातो कबहु न सुधि करि हरि चित लायौ ।

ठगवाना—क्रि. स. [हिं. ठगना का प्रे.] धोखा दिला[ना]।

ठगविद्या—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठग+विद्या] धोखेबाजी।

ठगहाई, ठगहारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठग] ठगपना।

ठगाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठग+आई (प्रत्य.)] ठगप[ना,] छल, धोखा । उ.—हम जानैं हरि हितू हमारे उ[...] चित्त ठगाई—२७१८ ।

क्रि. अ. [हिं. ठगाना] ठगा दिया ।

ठगाठगी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठग] धोखाधड़ी, छल ।

ठगाना—क्रि. अ. [हिं. ठगना] (१) धोखे में हानि सह[ना]। (२) किसी वस्तु का उचित से अधिक मूल्य देना।

ठगायौ— क्रि. अ. [हिं. ठगाना] ठगा गया, धोखा [खा] गया, भुलावे में पड़ा । उ.—रे मन, जग पर जा[नि] ठगायौ । धन-मद, कुल-मद, तरुनी कैं मद, भव[...] हरि बिसरायौ—१-५८ ।

ठगाही—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठगाई] ठगपना, छल ।

ठगि—क्रि. अ. [हिं. ठगना] चक्कर में आ गयी, च[कित] हुई, दंग रह गयी । उ.—सूरदास ठगि रही ग्वालि[नि] मन हरि लियौ आँजोरि—१०-२७० ।

क्रि. स.—धोखा दिया, धूर्तता की, भुलावे [में] डाला । उ.—अबहिं त तू करति ये ढँग, [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब हीं होन। स्याम कौं तू ऐसैं ठगि लियौ, कछु न जानै जौन—७१६।

ठगिन, ठगिनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठग] **(१) ठग की स्त्री। (२) धोखेबाज या धूर्त स्त्री।**

वि.—**ठगनेवाली, धोखेबाज, छल करनेवाली।** उ.—ठगति फिरति ठगिनी तुम नारी—११६०।

ठगिया—त्रि. [हिं. ठग] **धूर्त, छली, ठग।**

ठगीं—क्रि. स. [हिं. ठगना] **ठग लीं, धोखा दिया, भुलावे में डालीं।** उ.—मैं इहिं ज्ञान ठगीं व्रजबनिता दियौ सुक्यौं न लहौं—३-२।

ठगी—क्रि. स. [हिं. ठगना] (१) **ठग लिया।** उ.—जनु हीरा हरि लिए हाथ तें ढोल बजाइ ठगी—२७६०। (२) **धोखे में डाला, धूर्तता की।**

मुहा.—रही ठगी—**चकित, भौचक्की, स्तब्ध।** उ.—(क) तब हँसि कै मेरौ मुख चितयौ, मीठी बात कही। रही ठगी, चेटक सौ लाग्यौ, परि गई प्रीति सही—१०-२८१। (ख) इतने बीच आइ गये ऊधौ रहीं ठगी सब बाम—३०५८।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ठग] **(१) धोखा देकर माल या धन लूटना। (२) ठगने का भाव। धूर्तता।**

ठगे—क्रि. अ. [हिं. ठगना] **ठक से रह गये, दंग रहे।** उ.—दीरघ मोल कह्यौ ब्यौपारी, रहे ठगे सब कौतुक हार—१०-१७३।

मुहा.—ठगे से—**स्तब्ध, ठक से।** उ.—बिनु गोपाल ठगे से ठाढ़े अति दुर्बल तनु कारे—३४४६।

ठगै—क्रि. स. [हिं. ठग] **धोखा देती है, भुलावे में डालती है।** उ.—एकनि कौं दरसन ठगै, एकनि के सँग सोवै (हो)—१-४४।

ठगोर, ठगोरि, ठगोरी, ठगौर, ठगौरि, ठगौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठग+मूरि, ठगोरी] **ठगमाया, मोहिनी, टोना, जादू।** उ.—(क) दसन चमक अधरनि अरुनाई, देखत परी ठगोरि—६७०। (ख) संग लरिकिनी चलि इत आवति, दिन-थोरी, अति छवि, तन-गोरी। सूर स्याम देखत हीं रीझे, नैन-नैन मिलि परी ठगोरी—६७२। (ग) सूर चकित भई सुंदरी सिर परी ठगोर—पृ. ३३७ (७१)। (घ) कुटिलकच मृगमद तिलक छबि-बचन मंत्र ठगोर—पृ. ३२७।

ठग्यौ—क्रि. स. [हिं. ठगना] **ठग लिया, ठगा।** उ.—चोली चतुरानन ठग्यौ, अमर उपरना राते (हो)—१-४४।

ठट—संज्ञा पुं. [सं. स्थाता = जो खड़ा हो] **(१) बनाव, रचना, सजावट। (२) (बहुत सी वस्तुओं या व्यक्तियों का) समूह, भीड़।** उ.—घर-घर तैं नर-नारि मुदित मन गोपी ग्वाल जुरे बहु ठट री—८१०।

मुहा.—ठट के ठट—**झुंड के झुंड।** ठट लगना—**(१) भीड़ होना। (२) ढेर या राशि लगना।**

क्रि. स. [हिं. ठटना] **सजाकर, तैयार करके।**

मुहा.—ठट कर बातें करना—**एक एक शब्द पर जोर देते हुए या गढ़ गढ़ कर बात करना।**

ठटकि—क्रि. अ. [हिं. ठिठकना] **रुक कर, अड़कर, ठिठककर।** उ.—क्रोध गजपाल के ठटकि हाथी रह्यौ देत अंकुस मसकि कहा सकानो—२५६०।

ठटकील, ठटकीला—वि. [हिं. ठाट] **सजा-सजाया, ठाटदार, तड़क-भड़कवाला।**

ठटकीली—वि. स्त्री. [हिं. ठटकीला] **सजी-सजायी, तड़क-भड़कदार।** उ.—आछी चरननि कंचन लकुट ठटकीली बनमाल कर टेके द्रुम डार टेढ़े ठाढ़े नंदलाल छबि छायी घट-घट—८३६।

ठटना—क्रि. स. [हिं. ठाट, ठाढ़] **(१) स्थिर या निश्चित करना, ठहराना। (२) सुसज्जित या तैयार करना, सजाना।**

क्रि. अ.—**(१) अड़ना, डटना। (२) तैयार होना।**

क्रि. स.—[हिं. ठाठ] **(राग) छेड़ना, आरंभ करना।**

ठटनि, ठटनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठटना] **बनाव, सजावट, रचना।** उ.—नाभि भँवर त्रिवली तरंग गति पुलिन तुलिन ठटनी।

ठटया—संज्ञा पुं. [देश.] **एक जंगली जानवर।**

ठटरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाट] **(१) हड्डियों का ढाँचा।**

मुहा.—ठटरी होना—**बहुत दुबला हो जाना।**

(२) घास आदि बाँधने का जाल।। (२) किसी चीज का ढाँचा। (४) मुरदे की अरथी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठटी—क्रि. स. [हिं. ठाट, ठाढ़] ठहरायी, निश्चित की, स्थिर की, ठानी, अपनायी। उ.—(क) किंचित स्वाद स्वान-बानर ज्यौं, घातक रीति ठटी—१-६८। (ख) होत सु जो रघुनाथ ठटी।

ठटु—संज्ञा पुं. [हिं. ठाट] बनाव, रचना, सजावट।

ठटै—क्रि. स. [हिं. ठाट, ठाढ़, ठटना] निश्चित या स्थिर करता है, सोचता है। उ.—होत सो जो रघुनाथ ठटै। पचि-पचि रहैं सिद्ध, साधक, मुनि तऊ न बढ़ै-घटै—१-२६३।

ठट्ट—संज्ञा पुं. [हिं. ठट] (१) ढेर। (२) समूह।

मुहा.—ठट्ट के ठट्ट—झुंड के झुंड।

ठट्टी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाट] हड्डी का ढाँचा, ठट्टरी।

ठट्ठइ, ठट्ठई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठट्ठा] हँसी-दिल्लगी।

ठट्ठा—संज्ञा पुं. [सं. अट्टहास] हँसी, खिल्ली।

मुहा.—ठट्ठा उड़ाना—खिल्ली उड़ाना। ठट्ठा मारना (लगाना)—खिलखिला कर हँसना।

ठट्ठेबाज—वि. [हिं. ठट्ठा+फ़ा. बाज] मसखरा।

ठट्ठेबाजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठट्ठा+फ़ा. बाजी] दिल्लगी।

ठठ—संज्ञा पुं. [सं. स्थाता] भीड़, समूह, ढेर।

ठठई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठट्ठा] हँसी-दिल्लगी।

ठठकत—क्रि. अ. [हिं. ठठकना] ठिठक ठिठक कर, रुक रुक कर। उ.—सुनहु सूर ठठकत सकुचत ता गृह गये नंदकुमार—२०८१।

ठठकति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. ठठकना] ठिठककर, रुक कर। उ.—ठठकति चलै मटकि मुंह मोरै बंकट भौंह चलावै।

ठठकना—क्रि. अ. [सं. स्थेष्ट+करण] (१) ठिठकना, रुकना, ठहरना। (२) चकित या स्तब्ध होना।

ठठकान—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठठकना] ठिठकने का भाव।

ठठकि—क्रि. अ. [हिं. ठिठकना] (१) स्तंभित होकर, ठक रहकर, ठिठककर। उ.—(क) जसुमति चली रसोई भीतर, तवहिं ग्वालि इक छींकी। ठठकि रही द्वारे पर ठाढ़ी, बात नहीं कछु नीकी—५४०। (ख) मन में कछु कहन चहै देखत ही ठठकि रहै सूर स्याम निरखत दुरी तन सुधि बिसराय।

ठठना—क्रि. स. [हिं. ठटना] (१) निश्चित या स्थिर करना, ठहराना। (२) सजाना, तैयार करना।

क्रि. अ.—(१) अड़ना, डटना। (२) तैयार हो...

ठठनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठठना] (१) बनावट, रच... (२) ठाठ, सजावट, तैयारी।

ठठरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठटरी] हड्डी का ढाँचा।

ठठवा—संज्ञा पुं. [हिं. टाट] एक मोटा कपड़ा।

ठठा—संज्ञा पुं. [हिं. ठट्ठा] हँसी-दिल्लगी।

ठठाना—क्रि. स. [अनु. ठक] ठोंकना-पीटना।

क्रि. अ. [सं. अट्टहास] खिलखिलाकर हँसना।

ठठियार—संज्ञा पुं. [देश.] चरवाहा।

ठठिरिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठठेरा] ठठेरे की स्त्री।

ठठुकना—क्रि. अ. [हिं. ठिठकना] (१) रुकना, ठह... ठिठकना। (२) चकित होना, ठक रह जाना।

ठठेर-मंजारिका—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठठेरा+सं. मार्जारि...] ठठेरे की बिल्ली जो खड़खड़ाहट से नहीं डरती।

ठठेरा—संज्ञा पुं. [अनु. ठकठक] बरतन बनानेवाला।

संज्ञा पुं. [हि. ठाँठ] ज्वार-बाजरे का डंठल।

ठठेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठठेरा] (१) ठठेरे की स्त्री। (२) बरतन बनाने का काम।

वि.—ठठेरों का, ठठेरे से संबंधित।

ठठेरे—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. ठठेरा] बरतन बनानेवाले...

मुहा.—ठठेरे ठठेरे बदलाई—धूर्त और का... मनुष्यों का पारस्परिक व्यवहार। ठठेरे की बिल्ली—ऐसा आदमी जो बुराई देखते-देखते उसका अभ्य... हो गया हो।

ठठोल—वि. [हिं. ठट्ठा] दिल्लगीबाज, मसखरा।

संज्ञा पुं.—हँसी, ठठोली, मसखरापन।

ठठोली—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठट्ठा] हँसी-दिल्लगी।

ठड़कना—क्रि. अ. [हिं. ठिठकना] रुकना, ठहरना।

ठड़ा—वि. [सं. स्थातृ] जो बैठा न हो, खड़ा।

ठड्डा—संज्ञा पुं. [हिं. ठड़ा] (१) रीढ़ की हड्डी, ... (२) पतंग की खड़ी कमाची।

ठढ़ा—वि. [सं. स्थातृ] जो बैठा न हो, खड़ा।

ठढ़िया, ठढ़ुई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाढ़] ऊँची ओखल...

ठढ़ियाना—क्रि. स. [हि. ठढ़ा] खड़ा करना।

ठढ़े—क्रि. अ. [हिं. ठढा] खड़े हुए। उ.—सूर...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिपरीत बिधातैं यहि तनु फेरि ठढ़े—३३६६ ।

ठन—संज्ञा स्त्री. [अनु.] धातुखंड का शब्द ।

ठनक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) मृदंग आदि बाजों का शब्द । (२) रहरह कर होनेवाली पीड़ा, कसक ।

ठनकना—क्रि. अ. [अनु. ठनठन] (१) ठनठन शब्द करना । (२) रहरह कर पीड़ा या कसक होना ।

मुहा.—माथा ठनका—किसी बुरे लक्षण को देखकर दुख, हानि या अनिष्ट की आशंका होना ।

ठनका—संज्ञा पुं. [हिं. ठनक] (१) ठनकने का शब्द । (२) आघात, ठोकर । (३) रहरहकर होनेवाली पीड़ा ।

क्रि. अ.—(१) शब्द निकला । (२) पीड़ा हुई ।

ठनकाना क्रि. स. [हिं. ठनकना] 'ठनठन' करना ।

मुहा.—रुपया ठनका लेना—रुपया वसूल करना ।

ठनकार—संज्ञा पुं. [अनु. ठनठन] 'ठनठन' शब्द ।

ठनगन—संज्ञा पुं. [अनु. ठनठन] किसी शुभ अवसर पर नेग या पुरस्कार पानेवाले की अड़ ।

ठनठन—संज्ञा पुं. [अनु.] धातुखंड बजने का शब्द ।

ठनठनगोपाल—संज्ञा पुं. [अनु. ठनठन+गोपाल=कोई व्यक्ति] (१) आदमी जिसके पास कछ न हो । (२) वस्तु जो छूछी और निस्सार हो ।

ठनठनाना—क्रि. स. [अनु.] 'ठनठन' शब्द निकालना ।

क्रि. अ.—'ठनठन' होना या बजना ।

ठनना—क्रि. अ. [हिं. ठानना] (१) किसी कार्य या भाव का छिड़ना या आरंभ होना । (२) मन में पक्का या निश्चित होना । (३) धारण किया जाना । (४) मुस्तैद होना ।

मुहा.—किसी बात पर ठनना—(१) कोई काम करने को तैयार होना । (२) किसी बात पर झगड़ा होना ।

ठनाका—संज्ञा पुं. [अनु.] 'ठनठन' शब्द ।

ठनाठन—क्रि. वि. [अनु.] 'ठनठन' शब्द के साथ ।

ठप—वि. [अनु.] (चलता हुआ कार्य या व्यापार) किसी कारण से रुक जाना ।

ठपका—संज्ञा पुं. [देश.] धक्का, ठोकर, ठस ।

ठप्पा—संज्ञा पुं. [सं. स्थापन, हिं. थापन, थाप] (१) लकड़ी आदि का साँचा । (२) लकड़ी का बेलबूटेदार छापा । (३) छाप ।

ठभोली—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठठोली] हँसी-दिल्लगी ।

ठमक—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठमकना] (१) ठहरने का भाव । (२) रुकावट । (३) चलने की ठसक या लचक ।

ठमकना—क्रि. अ. [सं. स्तंभ हिं. थम+करना] (१) ठिठकना, रुकना । (२) ठसक या लचक से चलना ।

ठमकाना, ठमकारना—क्रि. स. [हिं. ठमकना] (१) ठहराना, रोकना । (२) चलने में ठसक या हावभाव दिखाना ।

ठयना—क्रि. स. [सं. अनुष्ठान] (१) दृढ़ संकल्प के साथ कोई काम आरंभ करना या छेड़ना । (२) अच्छी तरह से करना । (३) मन में ठहराना, निश्चित या पक्का करना ।

क्रि. अ.—(१) दृढ़ संकल्प के साथ कोई काम आरंभ होना या छिड़ना । (२) मन में निश्चित या दृढ़ होना ।

क्रि. स. [सं. स्थापन, प्रा. ठावन] (१) ठहराना, स्थापित करना । (२) लगाना, नियोजित करना ।

क्रि. अ.—(१) जमना, बैठना । (२) लगना, नियोजित होना ।

ठये—क्रि. स. [हिं. ठयना] किया, बनाया, सजाया । उ.—करति प्रतीति आपु आपुन तें सवन सिंगार ठये—१० उ. १०७ ।

ठयो, ठयौ—क्रि. स. [हिं. ठयना] (१) किया, ठाना, छेड़ा, आरंभ किया । उ.—(क) होत समय तिन रोदन ठयौ—३-७ । (ख) इहाँ सिव-गननि उपद्रव कियौ । तब भृगु रिषि उपाइ यह ठयौ—४-५ । (२) माना, अनुभव किया । उ.—बिनु देखैं ताकौं सुख भयौ, देखे तैं दूनौ दुख ठयौ—१-२८६ ।

क्रि. स.—(१) स्थापित किया, ठहराया, बैठाया । (२) लगाया, नियोजित किया । उ.—विधिना अति ही पोच कियो री । ... ... । रोम रोम लोचन एकटक करि जुवतिन प्रति काहे न ठयौ री—१५०६ ।

ठरना—क्रि. अ. [सं. स्तब्ध, प्रा. ठड्ढ+ना (प्रत्य.)] (१) सरदी से ठिठुरना, अकड़ना या सुन्न होना । (२) बहुत ठंड पड़ना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठरमरुआ, ठरुआ—वि. [हिं. ठार+मारना] (फसल) जो पाले से मारी गयी हो।

ठर्रा—संज्ञा पुं. [हिं. ठड़ा=खड़ा] (१) मोटा सूत। (२) महुए की मामूली शराब। (३) अँगियाँ की तनी। (४) भद्दा मोती।

ठवना—क्रि. स. [हिं. ठयना] (१) ठानना, छेड़ना। (२) करना, कर चुकना। (३) मन में ठहराना, निश्चित करना।

क्रि. अ.—(१) ठनना। (२) मन में दृढ़ होना।

क्रि. स.—(१) बैठाना, ठहराना। (२) नियोजित करना।

क्रि. स.-(१) स्थित होना। (२) नियोजित होना।

ठवनि, ठवनी—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थापन, हिं. ठवना= बैठना या सं. स्थान] (१) बैठक, स्थिति। (२) खड़े होने की मुद्रा।

ठवर—संज्ञा पुं. [हिं. ठौर] स्थान, ठौर।

ठस—वि. [सं. स्थास्नु=दृढ़ता से जमा हुआ] (१) ठोस, कड़ा। (२) भीतर से भरा हुआ। (३) घनी बुनावट का। (४) दृढ़, मजबूत। (५) भारी, वजनी। (६) सुस्त, आलसी। (७) (सिक्का) जिसकी आवाज ठीक न हो (८) भरापुरा, धनी, संपन्न। (९) कंजूस। (१०) हठी, जिद्दी।

ठसक—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठस] (१) नाज-नखरा, गर्वभरी चेष्टा। (२) शान, घमंड, अभिमान।

ठसकदार—वि. [हिं. ठसक+फ़ा. दार] (१) नाज-नखरेवाला, घमंडी। (२) शानदार, तड़क-भड़कदार।

ठसका—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) सूखी खाँसी। (२) धक्का।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ठसक] नखरा, शान।

ठसाठस— क्रि. वि. [हिं. ठस] दबादबाकर भरा हुआ।

ठस्सा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) ठसक, नखरा। (२) घमंड, अहंकार। (३) ठाट-बाट, शान। (४) खड़े होने की मुद्रा, ठवनि।

ठह—क्रि. अ. [हिं. ठहना] बनाकर, सजाकर।

मुहा.—ठह ठहकर बोलना—हाव-भाव के साथ रुकरुक कर बोलना। ठहकर—अच्छी तरह जमकर।

टहक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] नगाड़े का शब्द।

ठहना—क्रि. अ. [अनु.] (१) घोड़ों का हिनहिनाना। (२) घंटे का बजना, ठनठनाना, घनघनाना।

क्रि. अ. [सं. स्था, प्रा. ठा] बनाना, सँवारना।

ठहर—संज्ञा पुं. [सं. स्थल] (१) स्थान, जगह। (२) लिपा-पुता स्वच्छ स्थान, चौका।

मुहा.—ठहर देना—चौका लगाना।

ठहरना—क्रि. अ. [सं. स्थैर्य+ना (प्रत्य.)] (१) रुकना थमना। (२) टिकना, विश्राम करना। (३) इधर उधर न होना—एक स्थान पर बना रहना।

मुहा.—मन (चित्त) ठहरना—चित्त शांत होना। तबियत ठहरना—तबियत ठीक होना।

(४) अड़ा या टिका रहना। (५) बना रहना, न मिटना, नष्ट न होना। (६) जल्दी न टूटना-फूटना। (७) घुली हुई चीज का नीचे बैठना, थिराना। (८) प्रतीक्षा करना, धीरज रखना। (९) कार्य आरंभ करने में देर करना, आसरा देखना। (१०) किसी बात या काम का रुकना, थमना। (११) पक्का होना, निश्चित होना।

मुहा.-किसी बात का ठहरना-विचार स्थिर होना।

ठहराइ—क्रि. अ. [हिं. ठहरना] स्थिर होता है रुकता है, एकाग्रता आती है। उ.—जबै आवौं साधु-संगति, कछुक मन ठहराइ—१-४५।

ठहराई—क्रि. स. [हिं. ठहराना] निश्चित की, पक्की की, स्थिर की। उ.—मन मैं यहै बात ठहराई। होइ असंग भजौं जदुराई—५-३।

संज्ञा स्त्री.—(१) ठहराने की क्रिया। (२) ठहराने की मजदूरी। (३) अधिकार, कब्जा।

ठहराउ—संज्ञा पुं. [हिं. ठहराव] (१) ठहरने का भाव, स्थिरता। (२) निश्चय, स्थिर किया हुआ विचार।

ठहराऊ—वि. [हिं. ठहरना] (१) ठहरने या रुकनेवाला। (२) नष्ट न होनेवाला। (३) टिकाऊ, मजबूत।

ठहरात—क्रि. अ. [हिं. ठहरना] टिकता है, हिलता-डुलता नहीं। उ.—मृदु पद धरत धरनि ठहरात न, इत-उत भुज जुग लै-लै भरि-भरि—१०-१२०।

ठहरान—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठहरना] ठहरने या स्थिर होने की क्रिया। उ.—संत दरस कबहूँ जौ होइ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जग-सुख मिथ्या जानै सोइ। पै कुबुद्धि ठहरानं न देइ। राजा कौं अंकम भरि लेइ—४-१२।

ठहराना—क्रि. स. [हिं. ठहरना] (१) चलने से रोकना, थामना। (२) टिकाना, विश्राम कराना। (३) टिकाना, अड़ाना, स्थित करना। (४) इधर-उधर न जाने देना। (५) काम या बात को बंद करना। (६) पक्का या तय करना।

ठहरानी—क्रि. अ. [हिं. ठहरना] टिकी, स्थिर रही। उ.—छूटत ही उड़ि मिले आपुन कुल, प्रीति न पल ठहरानी—३४७५।

ठहराने—क्रि. अ. [हिं. ठहरना] स्थिर हुए। उ.—इक टक रहे चकोर चंद ज्यों निमिष बिसरि ठहराने —पृ. ३२२।

ठहराय – क्रि. अ. [हिं. ठहरना] रुके, स्थिर रहे।

मुहा.—सकै नहिं ठहराय—रुक न सके, सामने न ठहर सके। उ.—अंग निरखि अनंग लजित सकै नहिं ठहराय।

ठहरायौ—क्रि. स. [हिं. ठहराना] निश्चित किया, स्थिर किया, विचार दृढ़ किया। उ.—तब नारद मुनि आय चक्र सों बात करन ठहरायौ—सारा. ६६२।

ठहराव—संज्ञा पुं. [हिं. ठहरना] (१) ठहरने का भाव, स्थिरता। (२) निश्चय, स्थिर किया हुआ मत।

ठहरावत—क्रि. स. [हिं. ठहराना] टिकाते हैं, आकर्षित करते हैं। उ.—बरन-बरन मंदिर बने लोचन ठहरावत—२५६०।

ठहरावति—क्रि. स. [हिं. ठहराना] स्थिर करती है; एक टक जमाती है। उ.—कैसे स्याम अंग अवलोकति क्यों नैनन को ठहरावत री—२६३४।

ठहरावै—क्रि. स. [हिं. ठहराना] (१) चलने से रोकता है। (२) टिकाता है, विश्राम देता है। (३) पक्का करता है, तय करता है, निश्चित करता है।

ठहरु—संज्ञा पुं. [हिं. ठहर] स्थान, जगह।

ठहरौनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठहराना] विवाह में वर पक्षवालों का कन्या पक्षवालों से धन आदि संबंधी करार।

ठहाका—संज्ञा पुं. [अनु.] जोर की हंसी।

वि.—चटपट, तुरंत, तड़ से।

ठहियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाँव] जगह, ठिकाना।

ठही—क्रि. अ. भूत [हिं. ठहना] बचायी, रक्षा की, सँवारी। उ.—पूरे चीर, अंत नहिं पायौ, दुरमति हारि लही। सूरदास प्रभु द्रुपद-सुता की, हरि जू लाज ठही—१-२५८।

ठाँ—संज्ञा स्त्री. पुं. [हिं. ठाँव] ठाँव, स्थान, ठिकाना। उ.—(क) महर कंठ लावत, मुख पोंछत, चूमत तिहिं ठाँ आयौ—१०-१५६। (ख) भीतरि भरि भोग भामिनी की तेहि ठाँ कौन पठाऊँ—१० उ. ८५।

संज्ञा पुं. [अनु.] बंदूक की आवाज।

ठाँई—संज्ञा स्त्री. पुं. [हिं. ठाँव] (१) स्थान, ठौर, ठिकाना। (२) तईं, प्रति। (३) पास, निकट, समीप।

ठाँउँ, ठाँऊँ—संज्ञा पुं. [हिं. ठाँव] स्थान, आश्रय, ठिकाना। उ.—(क) कृपा अब कीजिये बलि जाउँ। नाहिंन मेरे और कोउ, बलि, चरन-कमल बिन ठाँउँ—१-१२८। (ख) रंक सुदामा कियौ अजाची, दियौ अभय-पद ठाँउँ—१ १६४।

ठाँठ—वि. [अनु. ठनठन] (१) जो सूख गया हो, नीरस। (२) जो (गाय-भैंस) दूध न देती हो।

ठाँयँ—संज्ञा पुं. स्त्री. [हिं. ठाँव] (१) स्थान, ठिकाना, ठौर। (२) पास, निकट, समीप।

संज्ञा पुं. [अनु.] बंदूक छूटने का शब्द।

ठाँयँ ठाँयँ—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) बंदूक छूटने का शब्द। (२) लड़ाई-झगड़ा।

ठाँव—संज्ञा पुं. स्त्री. [सं. स्थान, प्रा. ठान] स्थान, ठौर, ठिकाना। उ.—एक गाँव एक ठाँव को बास एक तुम कैहौ क्यौं मैं सैहौं—८४३।

ठाँसना—क्रि. स. [सं. स्थास्नु=मजबूती से बैठाया हुआ] (१) कसकर घुसेड़ना। (२) दबा-दबाकर भरना। (३) रोकना, मना करना।

क्रि. अ.—बिना कफ निकाले जोर से खाँसना।

ठाँहीं—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाँई] (१) स्थान, ठौर, ठिकाना। (२) तईं, प्रति। (३) पास, निकट, समीप।

ठाई—क्रि. स. [हिं. ठयना] सजाये, पहने। उ.—उलटे अंग अभूषन ठाई—पृ. ३३८ (७५)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठाकुर—संज्ञा पुं. [सं. ठक्कुर] (१) देव-मूर्ति, देवता। (२) ईश्वर, भगवान, परमेश्वर। उ.—सूरदास प्रभु पूरन ठाकुर, कह्यौ, सकल मैं हूँ नियराई—७-४। (३) मालिक, स्वामी, प्रभु। उ.—(क) हरि सौं ठाकुर और न जन कौ। जिहिं जिहिं विधि सेवक सुख पावै, तिहिं विधि राखत मन कौं—१-६। (ख) इहिं विधि कहा घटैगो तेरौ। नंदनँदन करि घर कौ ठाकुर आपुन ह्वै रहु चेरौ—१-२६६। (४) गाँव का मालिक, जमीदार। उ.—(क) घर मैं गथ नहिं भजन तिहारौ जौन दियैं मैं छूटौं। धर्म-जमानत मिल्यौ न चाहै तातैं ठाकुर लूटौ—१-१८५। (ख) घर के ठाकुर कैं सुत जायौ—१०-३२। (५) पूज्य या आदरणीय व्यक्ति। (६) नायक, सरदार। (७) क्षत्रियों की उपाधि। (८) नाइयों की उपाधि।

ठाकुरद्वारा—संज्ञा पुं. [हिं. ठाकुर + सं. द्वार] देवालय, मंदिर।

ठाकुरबाड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाकुर + बाड़ा, बाड़ी=घर] देवालय, मंदिर।

ठाकुरसेवा—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाकुर+सेवा] (१) देवता का पूजन। (२) धन-संपत्ति जो मंदिर के नाम हो।

ठाकुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाकुर] ठकुराई, स्वामित्व।

ठाट—संज्ञा पुं. [सं. स्थातृ=खड़ा होनेवाला] (१) लकड़ी या बाँस की खपच्चियों का बना ढाँचा या परदा। (२) ढाँचा, पंजर।

ठाट खड़ा करना—ढाँचा तैयार करना। ठाट खड़ा होना—ढाँचा तैयार होना।

(३) सजावट, बनावट, शृंगार। उ.—(क) ब्रज नर-नारि ग्वाल-बालक कहैं कौने ठाट रच्यौ। (ख) पहिरि पटंबर करि आडंबर बहु तन ठाट सिंगारयौ।

मुहा.—ठाट बदलना—(१)नया रूप-रंग दिखाना। (२) मतलब गाँठने के लिए झूठा रूप-रंग बनाना या वेष-भूषा धारण करना। (३) झूठमूठ का अधिकार या बड़प्पन जताना, रंग बाँधना।

(४) तड़क-भड़क, धूमधाम। (५) चैनचान।

मुहा.—ठाट मारना—चैन करना, मजे उड़ाना। ठाट से रहना—चैन या आराम से दिन बीतना।

(६) रीति, प्रकार, ढंग, ढब। (७) आयोजन, सामान, प्रबंध, अनुष्ठान, समारंभ। उ.—सोइ तिथि-वार-नछत्र-ग्रह, सोइ जिहिं ठाट ठयौ। तिन अंकन कोउ फिरि नहिं बाँचत, गत स्वारथ समयौ—१-२९८। (८) माल-असबाब, सामान। (९) युक्ति, उपाय, रीति, व्यवहार, डौल। उ.—(क) पेड़ पेड़ तरु के लगे ठाटि ठगन को ठाट—१००६। (ख) कहा हाथ परयौ सठ अक्रूर के यह ठग ठाट ठए—३१४१। (१०) कुश्ती का पैंतरा।

मुहा.—ठाट बदलना—पैंतरा बदलना। ठाट बाँधना—वार करने की मुद्रा में खड़ा होना।

(११) कबूतर आदि पक्षियों का प्रसन्नता से पंख फड़फड़ाने या झाड़ने की क्रिया या रीति। (१२) सितार का तार।

संज्ञा पुं.—(१) समूह, झुंड। (२) अधिकता, प्रचुरता। (३) बैल या साँड़ की गरदन का कूबड़।

ठाटना—क्रि. स. [हिं. ठाट] (१) रचना, बनाना। (२) ठानना, अनुष्ठान करना। (३) सजाना।

ठाटबंदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाट+बंदी] (१) बाँस की खपच्चियों और फूस का परदा या ढाँचा बनाने की क्रिया। (२) इस प्रकार बना हुआ ढाँचा, टट्टर।

ठाट-बाट—संज्ञा पुं. [हिं. ठाट] (१) सजावट, सजधज। (२) धूमधाम, साजबाज, तड़क-भड़क, शानशौकत।

ठाटर—संज्ञा पुं. [हिं. ठाट] (१) बाँस की खपच्चियों का टट्टर। (२) ठटरी, पंजर। (३) ढाँचा। (४) ठाटबाट, सजावट।

ठाटि—क्रि. स. [हिं. ठाटना] (१) रचकर, संयोजित करके, सजाकर, सँवारकर। उ.—मैं बिरंचि बिरच्यौ जग मेरौ, यह कहि गर्व बढ़ायौ। ब्रज-नर-नारि, ग्वाल-बालक, कहि कौनैं ठाटि रचायौ—४३६। (२) ठानकर, आयोजित करके, अपनाकर। उ.—पेड़ पेड़ तरु के लगे ठाटि ठगन के ठाट १००६।

ठाटी—क्रि. स. [हिं. ठाटना] ठानी, आयोजित की। उ.—बार-बार अनरुचि उपजावति, महरि हाथ लिए साँटी। महतारी सों मानत नाहीं कपट-चतुराई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठाटी—१०-२५४ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाट] ठट, समूह, श्रेणी ।

ठाट्ठ, ठाठ—संज्ञा पुं. [हिं. ठाट] (१) ढाँचा । (२) सजावट । (३) चैनचान । (४) ढंग । (५) तैयारी ।

ठाठना—क्रि. स. [हिं. ठाटना] (१) बनाना, रचना । (२) ठानना, आयोजित करना । (३)सजाना, सँवारना ।

ठाठर—संज्ञा पुं. [हिं. ठाटर] (१) टट्टर । (२) ठठरी, पंजर । (३) ठाट-बाट, सजावट, बनावट ।

संज्ञा पुं. [देश.] नदी का काफी गहरा भाग ।

ठाड़ा, ठाढ़ा—संज्ञा पुं. [हिं. खड़ा] (१) खड़ा, जो बैठा न हो । (२) जो पिसा-कुटा न हो, साबुत । (३) उत्पन्न ।

मुहा.—ठाढ़ा देना—ठहराना, टिकाना ।

वि.—हट्टा-कट्टा, बली, मजबूत ।

ठाढ़—वि. [हि. ठाढ़ा] खड़े । उ.—तब न्हाइ नंद भए ठाढ़े, अरु कुस हाथ धरे—१०-२४ ।

ठाढ़ा वि. [सं. स्थातृ] (१) खड़ा, जो बैठा न हो । (२) समूचा, साबुत, सारा ।

ठाढ़ीं—क्रि. अ. [हिं. ठाढ़ा] खड़ी हैं । उ.—अष्ट महा-सिधि द्वारैं ठाढ़ीं, कर जोरे, डर लीन्हे—१-४० ।

ठाढ़े—क्रि. अ. [हिं. ठाढ़ा] खड़े थे, खड़े रहे । उ.—ठाढ़े भीम,नकुल,सहदेवऽरु नृप सब कृष्न समेत—१-६ ।

ठाढ़ेश्वरी—संज्ञा पुं. [हिं. ठाढ़+ईश्वर] साधु जो आध्यात्मिक साधना के लिए दिन-रात खड़े रहते हैं; खड़े खड़े ही खाते-पीते और सोते हैं ।

ठाढ़ो ठाढ़ौ—क्रि. अ. [हिं. ठाढ़ा] (१) खड़ा हुआ । उ.—(क) रोर कै जोर तैं सोर घरनी कियौ, चल्यौ द्विज द्वारिका-द्वार ठाढ़ौ—१-५ । (ख) काकैं द्वार होउँ ठाढ़ौ, देखत काहि सुहाउँ—१-१२८ । (२) उत्पन्न, पैदा ।

सुहा.—दयो ठाढ़ो—ठहराया, टिकाया । उ.—बारह वर्ष दयो हम ठाढ़ो यह प्रताप बिनु जाने । अब प्रगटे वसुदेव सुवन तुम गर्ग वचन परिमाने ।

ठादर—संज्ञा पुं. [देश.]रार, झगड़ा, मुठभेड़ । उ.—देव आपनो नही सँभारत करत इंदु सों ठादर—६,४६ ।

ठान—संज्ञा स्त्री. [सं. अनुष्ठान] (१) कार्य का आरंभ या आयोजन । (२) आरंभ किया हुआ काम । (३) दृढ़ संकल्प, पक्का इरादा । (४) चेष्टा, मुद्रा, अंग-संचालन । उ.—पाछे बंक चितै मधुरै हँसि गात किए उलटे सु ठान सौं ।

ठानत—क्रि. स. [हिं. ठानना] करता है, आरंभ करता है । उ.—तातैं हमरी अस्तुति ठानत—१० उ.१२७ ।

ठानना—क्रि. स. [सं. अनुष्ठान, हिं. ठान] (१) किसी काम को तत्परता और संकल्प के साथ आरंभ करना । (२) मन में दृढ़ या स्थिर करना, दृढ़ संकल्प करना ।

ठानहु—क्रि. स. [हिं. ठानना] तत्परता से आरंभ करो । उ.—गोवर्धन की पूजा ठानहु—१०१६ ।

ठाना—क्रि. स. [हिं. ठानना] (१) तत्परता और संकल्प से आरंभ किया, छेड़ा । (२) मन में ठहराया या निश्चित किया ।:(३) स्थापित किया, धरा ।

ठानि—क्रि. स. [हिं. ठानना] निश्चय कर, दृढ़ संकल्प कर, कोई बात ठानकर । उ.—सूर सो सुहृद मानि, ईश्वर अंतर जानि, सुनि सठ, झूठौ हठ-कपट न ठानि—१-७७ ।

ठानी—क्रि. स. [हिं. ठानना] (१) मन में निश्चित की, दृढ़ संकल्प किया । उ.—(क) जन्म तैं एक टक लागि आसा रही, बिषय-बिष खात नहिं तृप्ति मानी । जो छिया छरद करि सकल संतनि तजी, तासु तैं मूढ़-मति प्रीति ठानी—१-११० । (ख) ठानी हुती और कछु मन मैं, औरै आनि ठई—१-२६६ । (ग) लीन्हे गोद बिभीषन रोवत कुल-कलंक ऐसी मात ठानी—६-१६० । (घ) हरि माँग्यौ माखन, नहिं दीन्ह्यौ, तब मन में रिस ठानी—सारा. ४४८ । (२) तत्परता के साथ आरंभ की । उ.—अर्ध निसा ब्रजनारि संग लै बन बंसी लीला ठानी—३४०२ ।

ठानै—क्रि. स. [हि. ठानना] स्थिर करता है, चित्त में दृढ़तापूर्वक धारण करता है । उ.—उनमत ज्यौं सुख-दुख नहि जानै । जागै वहै रीति पुनि ठानै—४-१२ ।

ठानो, ठानौ—क्रि. स. [हिं. ठानना] किया, माना,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठाना। उ.—ऐसी बातनि झगरो ठानो हो मूरख तेरो कौन हवाला—१०३४।

ठान्यो, ठान्यौ—क्रि. स. [हिं. ठानना] (१) अनुष्ठित की, दृढ़तापूर्वक आरंभ की। उ.—विप्रनि बेद-धर्म नहिं जान्यौ। तातैं उन ऐसौ बलि ठान्यौ—८-३। (२) मन में ठहराया, निश्चित किया। उ.—(क) अबलन को लै सो व्रत ठान्यौ जो जोगनि को जोग—३०८३। (ख) सुफलक सुत मिलि ढंग ठान्यौ है—३३५१।

ठाम—संज्ञा पुं. [सं. स्थान] (१) स्थान, जगह। उ.—छाँड़ि न करत सूर सब भव-डर बृंदावन सौं ठाम—१-७६। (२) अंग-संचालन, मुद्रा, ठवनि। (३) शरीर की दीप्ति या कान्ति।

ठायँ—संज्ञा पुं., स्त्री. [हिं. ठाँव.] ठौर, ठिकाना, स्थान।

ठार—संज्ञा पुं. [सं. स्तब्ध, प्रा. ठड्ढ, ठड़] (१) कड़ा जाड़ा या शीत। (२) पाला, हिम।

ठारे—संज्ञा पुं., स्त्री. [हिं. ठौर] ठौर, स्थान, जगह। उ.—पूरब पवन स्वाँस उर ऊरध आनि जुरे इक ठारे—३३८४।

ठाल—संज्ञा स्त्री. [हिं. निठल्ला] (१) बेकारी, बेरोजगारी। (२) फुरसत, खाली समय।

वि.—जो खाली या बेकार हो, निठल्ला।

ठाला—संज्ञा पुं. [हिं. निठल्ला] (१) रोजगार की कमी, बेकारी। (२) आमदनी की कमी।

वि.—खाली, बेकार, निठल्ला।

मुहा.—ठाला बताना—बिना कुछ दिये टरकाना।

ठाली—वि. स्त्री. [हिं. निठल्ला] खाली, बेकार, निठल्ली, जिसके पास काम-धंधा न हो। उ.—ऐसी को ठाली बैसी है तो सौं मूड़ चढ़ावै (चरावै)—३२८७।

ठावँ—संज्ञा स्त्री., पुं. [हिं. ठाँव] स्थान, जगह, ठिकाना।

यौ.—ठावँहिं-ठावँ—स्थान-स्थान पर, अनेक स्थानों पर। उ.—अनंद अतिसै भयौ घर-घर, नृत्य ठावँहिं-ठावँ—१०-२६।

ठावना—क्रि. स. [हिं. ठाना] (१) ठानना, आरंभ करना। (२) मन में ठहराना, संकल्प करना।

ठासा—संज्ञा पुं. [हिं. ठाँसना] लोहारों का एक औजार।

ठाह—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठहना] (१) ठहने की क्रिया या भाव। (२) संगीत में साधारण से अधिक समय लगाकर गाने की क्रिया या भाव, विलंबित।

ठाहना—क्रि. स. [हिं. ठहरना] संकल्प करना।

ठाहर, ठाहरु—संज्ञा पुं. [सं. स्थल, हिं. ठहर] (१) स्थान, जगह। उ.—(क) सुक्र-सुता जब आई बाहर। बसन न पाए तिन ता ठाहर—९-१७४। (ख) तातैं खरी मरत इहिं ठाहर—३३६१। (ग) सर्वव्यापी तुम सब ठाहर—१० उ. १·६। (२) निवास स्थान, बसने या टिकने का स्थान।

ठाहीं—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाँई] (१) स्थान, जगह। (२) तईं, प्रति। (३) समीप, पास, निकट।

ठिंगना—वि. [हिं. हेठ+अंग] छोटे कद का, नाटा।

ठिंगनी—वि. स्त्री. [हिं. ठिंगना] छोटे कद की, नाटी।

ठिक—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिकिया] धातु की चकती।

संज्ञा स्त्री. [हिं. टिकना] स्थिरता, ठहराव।

ठिकठान—संज्ञा पुं. [हिं. ठीक+स्थान] ठौर, ठिकाना।

ठिकठैन, ठिकठैना—संज्ञा पुं. [हिं. ठीक + ठयना] प्रबंध।

ठिकड़ा, ठिकरा—संज्ञा पुं. [हिं. ठीकरा] घड़े आदि मिट्टी के पात्र का टूटा हुआ टुकड़ा।

ठिकना—क्रि. अ. [हिं. ठिठकना] ठहरना, रुकना।

ठिकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठीकरी] (१) मिट्टी के बरतन का टुकड़ा। (२) तुच्छ चीज। (३) चिलम का तवा।

ठिकान, ठिकाना—संज्ञा पुं. [हिं. टिकान] (१) स्थान, ठौर। (२) निवास-स्थान, रुकने-ठहरने की जगह। (३) आश्रय, जीविका, निर्वाह का स्थान।

मुहा.—ठिकाना करना—(१) जगह या स्थान नियत करना। (२) टिकना, डेरा डालना। (३) आश्रय ढूँढ़ना, जीविका ठीक करना। (४) ब्याह ठीक करना। ठिकाना ढूँढ़ना—(१) जगह तलाश करना। (२) ठहरने या टिकने की जगह खोजना। (३) नौकरी खोजना। (४) कन्या के लिए वर खोजना। (किसी का) ठिकाना लगना—(१) ठहरने या टिकने का स्थान मिलना। (२) जीविका का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) कन्या का विवाह हो जाना ।

प्रबंध होना । (३) कन्या का विवाह हो जाना ।

(४) ठीक, प्रमाण, यथार्थता । (५) प्रबंध, बंदोबस्त ।

मुहा.—ठिकाना लगना—**प्रबंध होना, प्राप्ति का डौल होना ।** ठिकाना लगाना—**प्राप्ति का डौल लगाना ।**

(६) **अंत, हद, सीमा, पारावार ।**

क्रि. स. [हिं. ठिकना] **अड़ाना, स्थित करना ।**

ठिकाने, ठिकानैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. ठिकाना] **ठिकाने पर, स्थान पर ।**

मुहा.—ठिकानैं आवै—(१) **निश्चित या नियत स्थान पर पहुँचे ।** उ.—चलत पथ कोउ थाक्यौ होइ । कहैं दूरि, डरि मरिहै सोइ । जो कोउ ताकों निकट बतावै । धीरज धरि सो ठिकानैं आवै—३-१३ । (२) **ठीक विषय, विचार या निष्कर्ष पर पहुँचे । (३) असली या मतलब की बात छेड़े या कहे ।** ठिकाने की बात—(१) **ठीक या असली बात । (२) समझदारी की बात । (३) पते या भेद की बात ।** ठिकाने न रहना—**चंचल हो जाना** ठिकाने पहुँचाना—(१) **ठीक जगह पर पहुँचाना । (२) किसी चीज को नष्ट या लुप्त करना । (३) मार डालना ।** ठिकाने लगना—(१) **ठीक जगह पर पहुँचना । (२) काम या उपयोग में आना । (३) सफल होना । (४) मर जाना ।** ठिकाने लगाना—(१) **ठीक जगह पहुँचाना । (२) काम या उपयोग में लाना । (३) सफल करना । (४) खो देना, लुप्त कर देना । (५) खर्च कर डालना । (६) काम-धंधे से लगाना । (७) काम पूरा करना । (८) मार डालना ।**

ठिकानौ—संज्ञा पुं. [हिं. टिकान] (१) **ठिकाना, स्थान ।** (२) **आश्रय स्थान, अवलंब ।** उ.—अपने हीं अज्ञान-तिमिर मैं, बिसरयौ परम ठिकानौ—१-४७ ।

ठिठकना—क्रि. अ. [सं. स्थित+करण] (१) **चलते-चलते रुकना, ठहरना । (२) अंगों का स्थिर होना, ठक या स्तब्ध हो जाना ।**

ठिठरना, ठिठुरना—क्रि. अ. [सं. स्थित] **सरदी से ऐंठना या अकड़ना, बहुत सरदी खा जाना ।**

ठिनकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **बच्चों का रह रह कर रोने-सा शब्द निकालना । (२) रोने का नखरा करना ।**

ठिया—संज्ञा पुं. [सं. स्थित] (१) **गाँव की सीमा या हद का पत्थर । (२) चाँड़, थूनी, टेक । (३) टिकने का ठीहा, चबूतरा ।**

ठिर—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थिर] **कड़ा जाड़ा, पाला ।**

ठिरना—क्रि. स. [हिं. ठिर] **सरदी से ठिठुरना ।**

क्रि. अ.—**बहुत ज्यादा सरदी पड़ना ।**

ठिलना—क्रि. अ. [हिं. ठेलना] (१) **ठेला-ठकेला जाना । (२) घुसना, धँसना । (३) बैठना, जमना ।**

ठिलाठिल—क्रि. वि. [हिं. ठिलना] **धकेलते हुए ।**

ठिलिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. स्थाली, प्रा. ठाली] **छोटा घड़ा ।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. ठेला] **छोटा ठेला ।**

ठिलुआ—वि. [हिं. निठल्ला] **बेकाम, बेरोजगार ।**

ठिल्ला—संज्ञा पुं. [हिं. ठिलिया] **घड़ा, गगरी ।**

ठिल्ली, ठिल्ही—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठिल्ला] **छोटा घड़ा ।**

ठिहार—वि. [सं. स्थिर] **विश्वास करने योग्य ।**

ठिहारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठहरना] **करार, ठहराव ।**

ठीक—वि. [हिं. ठिकाना] (१) **सच, यथार्थ, जैसा हो वैसा । (२) भला, अच्छा, उचित, योग्य ।**

मुहा.—ठीक लगना—**भला या उचित जान पड़ना ।**

(३) **जिसमें भूल या अशुद्धि न हो, सही । (४) जो बिगड़ा या खराब न हुआ हो, दुरुस्त । (५) जो ढीला या कसा न हो, अच्छी तरह बैठा या जमा हुआ ।**

मुहा.—ठीक आना—**ढीला या कसा न होना ।**

(६) **सीधा, नम्र, अच्छे आचरणवाला ।**

मुहा.—ठीक करना (बनाना)—(१) **(सुधारने के उद्देश्य से) दंड देना । (२) मारना-पीटना ।**

(७) **जो आगे-पीछे, इधर-उधर घटा-बढ़ा न हो ।**

मुहा.—ठीक उतरना—**तौल में कम-बढ़ न होना ।**

(८) **ठहराया हुआ, निश्चित या पक्का किया हुआ ।**

क्रि. वि.—जैसे चाहिए वैसे, उचित रीति से ।

संज्ञा पुं—(१) **निश्चय, पक्की या दृढ़ बात ।**

मुहा.—ठीक देना—**दृढ़ निश्चय करना ।**

(२) **ठहराव, करार, निश्चित प्रबंध, पक्का आयोजन । (३) जोड़, योग ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा.—ठीक देना (लगाना)—जोड़ या योग निकालना।

ठीकठाक—संज्ञा पुं. [हिं. ठीक] (१) निश्चित प्रबंध, पक्का आयोजन। (२) जीविका का प्रबंध। (३) पक्की बात।

वि.—बनकर तैयार, काम देने योग्य।

ठीकड़ा, ठीकरा—संज्ञा पुं. [हिं. टुकड़ा] (१) मिट्टी के बरतन का टूटा-फूटा टुकड़ा।

मुहा.—ठीकरा फोड़ना—दोष या कलंक लगाना। ठीकरा समझना—तुच्छ या बेकार समझना, कुछ न मानना। (किसी वस्तु का) ठीकरा होना—पानी की तरह अँधाधुंध खर्च होना।

(२) बहुत पुराना बरतन। (३) भिक्षापात्र।

ठीकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठीकरा] (१) मिट्टी के फूटे बरतन का टुकड़ा। (२) बेकार या तुच्छ चीज।

ठीका—संज्ञा पुं. [हिं. ठीक] (१) धन लेकर किसी काम को पूरा कर देने का जिम्मा। (२) कुछ धन देकर आयवाली किसी वस्तु की आमदनी वसूलने का काम सौंपना, इजारा।

ठीकेदार—संज्ञा पुं. [हिं.] ठीका लेनेवाला।

ठीठी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] हँसी का शब्द।

ठीलना—क्रि. स. [हिं. ठेलना] जबरदस्ती भेजना।

ठीले—क्रि. स. [हिं. ठीलना] जबरदस्ती भेजने (से)। उ.—मैं तो भूलि ज्ञान को आयौ गयउ तुम्हारे ठीले।

ठीवन—संज्ञा पुं. [सं. ष्ठीवन] थूक, खखार।

ठीहँ—संज्ञा स्त्री. [अनु.] घोड़ों की हिनहिनाहट।

ठीहा—संज्ञा पुं. [सं. स्था] (१) जमीन में गड़ी लकड़ी। (२) लकड़ी छीलने, काटने या गढ़ने का कुंदा। (३) गद्दी। (४) हद, सीमा।

ठुंठ, ठुंड—संज्ञा पुं. [हिं. ठूँठ] (१) सूखा पेड़। (२) कटे हुए हाथवाला या लूला मनुष्य।

ठुकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) ठोका-पीटा जाना। (२) चोट पड़ने से गड़ना या धँसना। (३) मारा-पीटा जाना। (४) कुश्ती में हारना। (५) हानि होना। (६) कैद होना। (७) दाखिल होना।

ठुकराना—क्रि. स. [हिं. ठोकर] (१) ठोकर या लात मारना। (२) तुच्छ या बेकार समझ कर पैर से किनारे करना।

ठुकवाना—क्रि. स. [हिं. ठोकना का प्रे.] (१) ठोकने का काम कराना, पिटवाना। (२) मरवाना। (३) गड़वाना, धँसवाना।

ठुड्डी—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] चिबुक, ठोड़ी।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ठड़ा = खड़ा] वह भुना हुआ अनाज जो फूटकर खिला न हो, टोरीं।

ठुनकना—क्रि. अ. [हिं. ठिकना] ठिठकना, रुकना।

क्रि. स. [हिं. ठोंकना] धीरे धीरे ठोकना।

ठुनकाना—क्रि. स. [हिं. ठोकना] धीरे से ठोकना।

ठुनठुन—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) धातु के टुकड़े या बरतन बजने का शब्द। (२) बच्चों के रुक रुक कर रोने का शब्द।

ठुमक—वि. [अनु.] (चाल) जो ठिठक या पटक की ध्वनि के साथ हो। (२) ठसक भरी (चाल)।

ठुमक ठुमक—क्रि. वि. [अनु.] उमंग से पैर पटकते, ठिठकते या धीरे-धीरे कूदते हुए।

ठुमकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) उमंग से पैर पटकते, ठिठकते या धीरे-धीरे कूदते हुए चलना। (२) पैर पटककर घुंघरू बजाते हुए नाचना।

ठुमका—वि. [अनु.] छोटे डील-डौल का, नाटा।

संज्ञा पुं. [अनु.] झटका, ठुमका (पतंग)।

ठुमकारना—क्रि. स. [अनु.] (पतंग को) ठुमका देना।

ठुमकी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) झटका, थपका (पतंग)। (२) ठिठक, रुकावट। (३) छोटी खरी पूरी।

वि. स्त्री.—छोटे डील-डौल की, नाटी।

ठुमकि, ठुमुकि, ठुमक, ठुमुकु—क्रि. वि. [अनु. ठुमुक-ठुमुक] जल्दी-जल्दी (बच्चों का) पैर पटकते हुए या कूदते हुए चलना, ठुमुक ठुमुक कर चलना। उ.—(क) चलत देखि जसुमति सुख पावै। ठुमुकि-ठुमुकि पग धरनी रेंगत, जननी देखि दिखावै—१०-१२६। (ख) ललित आँगन खेलै, ठुमुकि ठुमुकि डोलै, झुनुक झुनुक बोलै पैजनी मृदु मुखर—१०-१५१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठुमरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) दो बोलों का छोटा गीत। (२) गप, अफवाह, उड़ती खबर।

ठुरियाना—क्रि. स. [हिं. ठिठुरना] सरदी से अकड़ना।

ठुर्री—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठड़ा=खड़ा] वह भुना हुआ दाना जो भूनने पर खिला-फूटा न हो, टोर्री।

ठुसकना—क्रि. अ. [हिं. ठिनकना] ठसक से रोना।

ठुसना—क्रि. अ. [हिं. ठूँसना] (१) ठूँस-ठूँसकर या दबा-दबाकर भरा जाना। (२) कठिनता से दबना।

ठुसवाना—क्रि. स. [हिं. ठूसने का प्रे.] कसकर भरवाना।

ठुसाना—क्रि. स. [हिं. ठूँसना] (१) कसकर भरवाना। (२) खूब पेट भर खिलाना।

ठूँग, ठूँगा—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] (१) चोंच। (२) चोंच से मारना। (३) उँगली की पिछली हड्डी की चोट।

ठूँठ—संज्ञा पुं. [सं. स्थाणु] (१) सूखा-साखा पेड़। (२) कटा हुआ हाथ, टुंड। (३) एक कीड़ा।

ठूँठा—वि. [हिं. ठूँठ] (१) सूखा-साखा (पेड़)। (२) बिना हाथ का (मनुष्य), लूला।

ठूँठिया—वि. [हिं. ठूँठ] (१) लूला। (२) नपुंसक।

ठूँठी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठूँठ] पौधों का डंठल जो खेत कटने पर रह जाय, खूँटी।

ठूँसना, ठूसना—क्रि. स. [हिं. ठस, ठूसना] (१) दबा दबाकर मारना। (२) जोर से घुसेड़ना। (३) खूब खाना, छककर खाना।

ठूँसा—संज्ञा पुं. [हिं. ठोसा] अँगूठा, ठेंगा।

ठेंगना—वि. [हिं. ठिगना] नाटा, ठिगना।

ठेंगा—संज्ञा पुं. [हिं. अँगूठा] (१) अँगूठा।

मुहा.—ठेंगा दिखाना—(१) अँगूठा दिखाकर, धृष्टता के साथ किसी बात को अस्वीकार करना। (२) अँगूठा दिखाकर चिढ़ाना।

(२) चुंगी का कर। (३) सोंटा, डंडा।

मुहा.—ठेंगा बजना—(१) मार पीट होना। (२) प्रयत्न करने पर भी कुछ काम न होना।

ठेंगुर—संज्ञा पुं. [हिं. ठेंगा=सोंटा] लंबी लकड़ी जो प्रायः नटखट चौपायों के गले में बाँध दी जाती है।

ठेंगे—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. ठींगा] अँगूठे, सींगे।

मुहा—ठेंगे से—बला से, कुछ परवाह नहीं।

ठेंघा—संज्ञा पुं. [हिं. टेघा] चाँड़, टेक, थूनी।

ठेंठ—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] (१) चने के दाने का कोश। (२) पोस्ते की ढोंढी।

वि. [हिं. ठेठ] (१) निरा, बिलकुल। (२) खालिस। (३) निर्मल। (४) शुरू, आरंभ।

ठेंठी, ठेंपी—संज्ञा स्त्री. [देश. ठेठी] (१) कान का मैल। (२) रुई या कपड़ा जो कान का छेद मूँदने के लिए खोंसा जाय।

मुहा.—कान में ठेंठी लगना—न सुनना।

(३) शीशी-बोतल आदि की काग या डाट।

ठेक—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिकना] (१) सहारा। (२) टेक, चाँड़। (३) पच्चड़। (४) पेंदा, तल। (५) छड़ी या लाठी की सामी।

ठेकना—क्रि. स. [हिं. टेक] (१) सहारे या आश्रय की चीज। (२) टिकना, ठहरना।

ठेका—संज्ञा पुं. [हिं. टिकना, टेक] (१) सहारे की चीज, टेक। (२) रुकने-ठहरने का स्थान। (३) बाँयें तबले का ताल। (४) बाँयाँ तबला। (४) ठोकर, धक्का।

संज्ञा पुं. [हिं. ठीक] कुछ धन के बदले में काम करने का जिम्मा, ठीका। (२) आमदनी की चीज से आय वसूलने का पट्टा, इजारा।

ठेकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. टेक] (१) टेक, सहारा। (२) विश्राम के लिए बोझ को टिकाने की क्रिया।

ठेगड़ी—संज्ञा पुं. [देश.] कुत्ता।

ठेगना, ठेघना—क्रि. स. [हिं. टेकना] (१) टेकना, सहारा लेना। (२) रोकना, बरजना, मना करना।

ठेगनी, ठेघनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठेगना] टेकने की लकड़ी।

ठेघा—संज्ञा पुं. [हिं. टेक] सहारे की टेक, चाँड़।

ठेघुना—संज्ञा पुं. [हिं. टेहुना] घुटना, टखना।

ठेठ—वि. [देश.] (१) निरा, बिलकुल। (२) जिसमें बाहरी या दूसरी चीजों का मेल न हो, खालिस। (३) निर्मल, शुद्ध। (४) आरंभ।

संज्ञा स्त्री.—सीधी-सादी अनगढ़ बोली।

ठेप संज्ञा पुं. [सं. दीप] दीपक, चिराग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठेपी—संज्ञा स्त्री. [देश.] बोतल की काग ।

ठेलत—क्रि. स. [हिं. ठेलना] ठेलते हैं, ढकेलते हैं। उ.—इक कौं आनि ठेलत पाँच—१-१९६ ।

ठेलना—क्रि. स. [हिं. टलना] ढकेलना, रेलना ।

ठेलमठेल—क्रि. वि. [हिं. ठेलना] ढकेलते हुए ।

ठेला—संज्ञा पुं. [हिं. ठेलना] (१) बगल से लगाया हुआ धक्का या आघात । (२) ढेल कर चलायी जानेवाली गाड़ी । (३) भीड़ का धक्कमधक्का ।

ठेलाठेल—संज्ञा स्त्री [हिं. ठेलना] रेल पेल, धक्कमधक्का ।

ठेलै—क्रि. अ. [हिं. ठिलना] आगे बढ़े । उ.—आगे को रथ नेकु न ठेलै – ३३८९ ।

क्रि. स. [हिं. ठेलना] आगे बढ़ाये ।

ठेस—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठस] आघात, चोट, धक्का, ठोकर । उ.—कह्यौ लंकेस दै ठेस पग की तबै, जाहि मति-मूढ़, कायर डरानौ—९-१११ ।

ठेसना—क्रि. स. [हिं. ठूसना] घुसेड़ना, भरना ।

ठेहुना—संज्ञा पुं. [सं. अष्ठीवान] घुटना ।

ठैन—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थान, हिं. ठाँय] जगह, स्थान, ठौर । उ.—क्रीड़त सघन कुंज वृंदावन बंसीबट जमुना की ठैन—२०८७ ।

ठैयाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाईं] (१) ठौर, स्थान । (२) तईं, प्रति । (३) निकट, पास, समीप ।

ठैरना—क्रि. अ. [हिं. ठहरना] रुकना, ठहरना ।

ठैराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठहराई] ठहरने की क्रिया ।

ठैराना—क्रि. स. [हिं. ठहराना] रोकना, टिकाना ।

ठोंक—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठोंकना] प्रहार, आघात ।

क्रि. स.—थपेड़ा देकर, थपथपाकर ।

मुहा.—ठोंक ठोंक कर लड़ना—डटकर या ताल ठोंककर लड़ना, जबरदस्ती झगड़ा करना । ठोंक बजाकर—जाँच करके, परखकर ।

ठोंकना—क्रि. स. [अनु. ठकठक] (१) जोर से चोट मारना, पीटना । (२) लात, घूँसे से मारना पीटना । (३) चोट या प्रहार करके गाड़ना । (४) (दावा, नालिश) दायर करना । (५) बेड़ियों से जकड़ना । (६) हाथ से थपथपाना ।

मुहा.—ठोंकना बजाना—परीक्षा करना, परखना । पीठ ठोंकना—शाबाशी देना । रोटी (बाटी) ठोंक... अपने हाथ से रोटी बनाना ।

(७) हाथ से मारकर (बाजा आदि) बजा... (८) जड़ना, लगाना, अँटकाना । (९) 'खटाखट'... करना, खटखटाना ।

ठोंकि—क्रि. स. [हिं. ठोंकना] थपथपाकर, ... देकर । उ.—कर सौं ठोंकि सुतहिं दुलरा... चटपटाई बैठे अतुराने—१०-१५७ ।

मुहा.—ठोंकि बजाय—अच्छी तरह परख... परीक्षा करके, जाँचकर । उ.—नंद-ब्रज ... ठोंकि बजाय । देहु बिदा मिलि जाहिं मधुपुरी... गोकुल के राय—२७०० ।

ठोंकी—क्रि. स. [हिं. ठोंकना] ऊपर से चोट मा... धंसाई, गाड़ दी । उ.—लै देही घर-बाहर जा... सिर ठोंकी लकरी—१-७१ ।

ठोंग—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] (१) चोंच । (२) ... की चोट । (३) उँगली की पिछली हड्डी की ठोकर...

ठोंगना, ठोंचना—क्रि. स. [हिं. ठोंग] (१) चोंच... चोट मारना, (२) उँगली की पिछली हड्डी... प्रहार करना ।

ठोंठी—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] (१) चने के दाने... कोश । (२) पोस्ते की ढोंढी ।

ठो—अव्य. [हिं. ठौर] संख्या, अदद ।

ठोकना—क्रि. स. [हि. ठोंकना] (१) ठोकर ले... (२) मारना । (३) गाड़ना । (४) थपथपाना... (५) जड़ना । (६) हाथ से बजाना ।

ठोकर—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठोकना] (१) चोट जो कि... पड़ी या गाड़ी हुई चीज से टकराने पर लग जाय...

मुहा.—ठोकर उठाना—हानि या दुख सहना... ठोकर खाना—(१) किसी पड़ी हुई चीज से टकरा... या टकराकर गिरना । (२) भूल से दुख या हा... सहना । (३) भूल-चूक करना । (४) इधर उ... मारे-मारे फिरना । ठोकर खाते फिरना—इधर-उ... मारे मारे फिरना । ठोकर लगना—(१) किसी प... हुई चीज से टकराकर चोट खाना । (२) दुख... हानि पहुँचना । ठोकर लेना—किसी चीज से टक...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर चोट खाना ।

(२) रास्ते में पड़ा या गड़ा हुआ कंकड़- पत्थर जिससे पैर में चोट लगने का डर हो । (३) पैर का आघात या प्रहार ।

मुहा.—ठोकर देना (जड़ना)—ठोकर मारना । ठोकर खाना—लात का आघात या प्रहार सहना । ठोकर पर पड़ा रहना—अपमान या तिरस्कार सहकर भी सेवा या निर्वाह करना ।

(४) कड़ा आघात, धक्का ।

ठोका—संज्ञा पुं. [देश.] कलाई का एक गहना ।

ठोट—वि. [हिं. ठूँठ] (१) जड़, मूर्ख, गावदी । उ.—पतित जानि तुम सब जन तारे, रह्यौ न कोऊ खोट । तौ जानौं जौ मोहिं तारिहौ, सूर कूर कवि ठोट—१-१३२ । (२) तत्व या सारहीन ।

ठोठरा—वि. [हिं. ठूँट] पोपला, खाली ।

ठोड़ी, ठोढ़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] चिबुक, ठुड्डी । उ.—मैं बलि जाउँ ललित ठोड़ी पर—६६४ ।

मुहा.—ठोड़ी पर हाथ धरकर बैठना—चिंतित होना । ठोड़ी पकड़ना (में हाथ देना)—(१) प्यार करना । (२) मीठी बातें कहकर क्रोध शांत करना । ठोड़ी तारा—सुंदर ठुड्डी पर काला तिल ।

ठोप—संज्ञा पुं. [अनु. टपटप] बूँद, बिंदु ।

ठोर—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह की मिठाई ।

संज्ञा पुं. [सं. तुंड] चोंच, चंचु ।

ठोला—संज्ञा पुं. [देश.] आदमी, मनुष्य ।

संज्ञा पुं. [देश.] रेशम बनाने का एक औजार ।

ठोली—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठठोली] हँसी-दिल्लगी ।

संज्ञा स्त्री. [देश.] उपपत्नी ।

ठोस—वि. [हिं. ठस] जो पोला या खोखला न हो । (२) दृढ़, मजबूत । (३) बहुत धनी ।

ठोसनि—संज्ञा पुं. [हिं. ठोस+नि] कुढ़न, डाह । उ.—इक हरि के दरसन बिनु मरियत अरु कुबिजा के ठोसनि—१० उ. ८८ ।

ठोसा—संज्ञा पुं. [देश.] (हाथ का) अँगूठा ।

मुहा.—ठोसा दिखाना—अँगूठा दिखाकर इनकार करना ।

ठोसे—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. ठोसा] अँगूठे, सींगे ।

मुहा.—ठोसे से—बला से, कुछ परवाह नहीं ।

ठोहना—क्रि. स. [हिं. ढूँढ़ना] खोजना, ढूँढ़ना ।

ठोहर—संज्ञा पुं. [हिं. निठोहर] अकाल, मँहगी ।

ठौनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठवन] खड़े होने की मुद्रा ।

ठौर—संज्ञा पुं. [सं. स्थान, प्रा. ठान, हिं. ठाँव+र] जगह, स्थान, ठिकाना । उ.—छुद्र मतित तुम तारि रमापति, अब न करौ जिय गारौ । सूर पतित कौं ठौर नहीं, तौ बहत बिरद कत भारौ—१-१३१ ।

यौ.—ठौर-ठिकाना—(१) रहने या बसने का स्थान । (२) पता-ठिकाना ।

मुहा.—आइ होइ इक ठौर—एक स्थान पर एकत्र हों । उ.—यह सुनि जहाँ तहाँ तैं सिमिटैं, आइ होइ इक ठौर । अब कैं तौ आपुन लै आयौ, बरे बहुर की ओर—१-१४६ । कहूँ ठौर नहिं—कहीं आश्रय नहीं है । उ.—कहूँ ठौर नहिं चरन-कमल बिनु, भृंगी ज्यौं दसहूँ दिसि धावै—१-२३३ । ठौर न आना—पास न जाना । ठौर न आवै—समीप नही आता, पास नहीं फटकता । उ.—हरि को भजै सो हरि पद पावै । जन्म मरन तेहि ठौर न आवै । ठौर-कुठौर—(१) शरीर के कोमल-कठोर अंग । (२) भली-बुरी जगह । (३) बेमौका, बिना अवसर । ठौर रखना—(१) गुंजाइश रखना । (२) मार डालना । ठौर रहना—(१) गुंजाइश होना । (२) जहाँ का तहाँ रह जाना । (३) मर जाना । किसी के ठौर—किसी के समान या स्थानापन्न ।

(२) मौका, घात, अवसर ।

ठौर ठिकाना—संज्ञा पुं. [हिं. ठौर+ठिकाना] (१) सुरक्षित स्थान । (२) (बात या निश्चय की) दृढ़ता ।

ठ्यापा—वि. [देश.] उपद्रवी, शरारती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ड

ड—टवर्ग का तीसरा और देवनागरी वर्णमाला का तेरहवां व्यंजन; इसका उच्चारण जिह्वामध्य को मूर्द्धा में स्पर्श करने से होता है।

डंक—संज्ञा पुं. [सं. दंश] (१) बिच्छू, भिड़ आदि कीड़ों का जहरीला कांटा जिसे वे क्रोध में प्राणियों के शरीर में गड़ोते हैं। (२) कलम की जीभ। (३) डंक लगा हुआ स्थान।

डंकना—क्रि. अ. [अनु.] जोर से गरजना।

डंका—संज्ञा पुं. [सं. ढक्का=दुंदुभि का शब्द] (१) एक बड़ा बाजा जो प्रायः युद्ध के अवसर पर बजाया जाता था।

मुहा.—डंका देना (पीटना, बजाना)—(१) सब पर प्रकट करना, घोषित करना। (२) डौंडी फेरना, मुनादी करना। किसी का डंका बजना—किसी का शासन या अधिकार चलना। डंका बजाकर (डंके की चोट) कहना—सबको जता-जताकर कहना।

डंकिनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाकिनी] पिशाची, डाइन।

डँकियाना—क्रि. स. [हिं. डंक+आना] डंक मारना।

डंका—वि. [हिं. डंक] जिसके 'डंक' हो, डंकवाला।

डँकीला—वि. [हिं. डंक+ईला (प्रत्य.)] डंकवाला।

डंकुर—संज्ञा पुं. [हिं. डंका] एक पुराना बाजा।

डँकौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डंक+औरी (प्रत्य.)]भिड़, बर्र।

डंग—संज्ञा पुं. [देश.] छुहारा जो अधपका हो।

डंगम—संज्ञा पुं. [देश.] एक पहाड़ी वृक्ष।

डंगर संज्ञा पुं. [देश.] चौपाया।

डँगरा—संज्ञा पुं. [सं. दशांगुल] खरबूजा।

डँगरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डँगरा] लंबी ककड़ी।

संज्ञा स्त्री. [हिं. डाँगर] चुड़ैल, डाइन।

संज्ञा स्त्री. [देश.] एक पहाड़ी बेंत।

डँटैया—संज्ञा पुं. [हि. डाँटना] डांटने-धमकानेवाला।

डँठरी, डंठी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डंठल] छोटी टहनी।

डंठल—संज्ञा पुं. [सं. दंड] छोटे पौधों की टहनी।

डंड, डँड़—संज्ञा पुं. [सं. दंड] (१) डंडा, सोंटा। (२) बाहुदंड। उ.—कृष कटि सबल डंड—१९९७। (३) व्यायाम की एक रीति। (४) दंड, सजा। (५) जुरमाना। (६) घाटा हानि। (७) घड़ी, ...

डंडक—संज्ञा पुं. [सं. दंडक] (१) दंड देनेवाला। (२) डंडा। (३) दंडक नामक वन।

डंडपेल—संज्ञा पुं. [हिं डंड+पेलना] (१) खूब डंड पेलने या व्यायाम करनेवाला, कसरती। (२) बलवान आदमी।

डंडवत—संज्ञा पुं. [सं. दंडवत्] प्रणाम की एक रीति।

डँडवारा—संज्ञा पुं. [हिं. डाँड़+वार=किनारा] नीची दीवार या चारदीवारी।

संज्ञा पुं. [हिं. दक्खिन+वायु] दक्षिणी वायु।

डँड़वी—संज्ञा पुं. [देश.] दंड या कर देनेवाला।

डंडा—संज्ञा पुं. [सं. दंड] (१) लकड़ी का सीधा टुकड़ा, मोटी छड़ी। (२) बच्चों के खेलने की छोटी रंगीन छड़ी। (३) नीची चारदीवारी।

डंडाकरन—संज्ञा पुं. [सं. दंडकारण्य] दंडकवन।

डंडाल—संज्ञा पुं. [हिं. डंडा] नगाड़ा, दुंदुभी।

डँड़िया—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाँड़ी=रेखा] (१) कुछ लड़कियों की साड़ी जिसमें गोट टाँककर लकीरें बनी हों। उ.—(क) लाल चोली नील डँड़ियां ... जुवतिन भीर। (ख) नख-सिख सजि सिंगार ... जुवती तन डँड़िया कुसुमें वोरी की। (२) गेहूं ... लंबी सींक जिसमें बाल लगती है।

संज्ञा पुं. [हिं. डाँड़=अर्थदंड] कर वसूलनेवाला।

डंडी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डंडा] (१) पतली छड़ी। (२) हथिया, मुठिया, दस्ता। (३) तराजू की डाँड़ी। (४) पौधे का लंबा डंठल या नाल। (५) फूल का निचला भाग। (६) हरसिंगार का फूल। (७) आरसी नामक गहने का छल्ला। (८) डंडे में बँधी झोली की पहाड़ी सवारी। (९) दंडधारी संन्यासी।

वि.—[सं. द्वंद्व] झगड़ा करने या चुगली खानेवाला।

डँड़ौर—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाँड़ी] सीधी लकीर।

डँडोर—क्रि. स. [अनु.] ढूंढ़ने-खोजने के लिए ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पलटकर। उ.—हरि सौं हीरा खोइ कै हम रहीं समुद्र डँढोर।

डँढोरना—क्रि. स. [अनु.] उलट-पलटकर ढूँढ़ना।

डँडौत—संज्ञा पुं. [सं. दंडवत्] प्रणाम की एक रीति।

डंबर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आयोजन, धूमधाम। (२) विस्तार (३) विलास। (४) एक तरह का चँदोवा।

यौ.—अंबर-डंबर—संध्या की लाली जो आकाश में दिखायी देती है। मेघ डंबर—बड़ा शामियाना।

डँवाडोल—वि. [हिं. डाँव डाँव+डोलना] चंचल, विचलित, डाँवांडोल, घबराया हुआ।

डंस—संज्ञा पुं. [सं. दंश] (१) जंगली मच्छर, डाँस। (२) डंक चुभने का स्थान।

डँसना—क्रि. स. [हिं. डसना] डंक मारना।

डकइत—संज्ञा पुं. [हिं. डकैत] लुटेरा, डाकू।

डकराना—क्रि. अ. [अनु.] गाय-भैंस आदि चौपायों का पीड़ा या कष्ट से चिल्लाना।

डकवाह—संज्ञा पुं. [हिं. डाक] डाकिया।

डकार—संज्ञा स्त्री. [अनु.] मुँह से निकला हुआ वायु का उद्गार जो प्रायः पेट भरने या भोजन पचने का सूचक माना जाता है।

मुहा.—(साँस) डकार न लेना—(१) चुपचाप दूसरे की धन-संपत्ति या माल हजम कर जाना। (२) काम का पता न देना।

(२ सिंह, बाघ आदि की गरज, दहाड़ या गुर्राहट।

डकारना—क्रि. अ. [हिं. डकार+ना (प्रत्य.)] (१) डकार लेना। (२) धन-संपत्ति चुपचाप हजम कर लेना। (३ सिंह, बाघ आदि का गरजना या गुर्राना।

डकैत—संज्ञा पुं. [हिं. डाका+ऐत (प्रत्य.)] लुटेरा, डाका डालनेवाला।

डकैती—संज्ञा स्त्री. [हिं. डकैत] लूट-मार, डाका।

डकौत—संज्ञा पुं. [देश.] ज्योतिषी आदि का ढोंग रचनेवाला, भड्डरी।

डग—संज्ञा पुं. [सं. दक्=चलना] चलने में आगे बढ़ने के उद्देश्य से पैर उठाकर पुनः रखने की क्रिया की समाप्ति, कदम। उ.—(क) ज्यों कोउ दूरि चलन कौं करै। क्रम क्रम करि डग डग पग धरै—३-१३। (ख) मुरि-मुरि चितवत नंद गली। डग न परत ब्रजनाथ साथ-बिनु बिरह-ब्यथा मचली। (ग) नित उठि जाइ प्रात लै बन सँग आगे-पाछे चलि न सकति सखी डग एकु—२८७१।

मुहा.—डग देना (भरना)—चलने में पैर आगे बढ़ाना। डग मारना (बढ़ाना)—लंबे लंबे कदम बढ़ाना। (२) जहाँ से पैर उठाया जाय और जहाँ रखा जाय, उन दोनों स्थानों की दूरी, पैंड़।

डगडगाना—क्रि. अ. [अनु.] हिलना-डोलना।

डगडोलना—क्रि. अ. [हिं. डग+डोलना] हिलना, काँपना।

डगडोलै—क्रि. अ. [हिं. डगडोलना] हिलती-काँपती है। उ.—भीषम, द्रोन करन सुनै कोउ मुखहु न बोलै। ए पांडव क्यों काढ़ियै धरनी डगडोलै।

डगडौर—वि. [हिं. डग+डोलना] हिलती-डुलती, डाँवाडोल, काँपती हुई। उ.—स्याम को एक तुही जान्यो दुराचारनी और। जैसे घट पूरन न डोलै अध भरो डग डौर।

डगण—संज्ञा पुं. [सं.] चार मात्राओं का एक गण।

डगना—क्रि. अ. [हिं. डग] (१) खिसकना, जगह छोड़ना। (२) भूल-चूक करना, चूकना (३) विचलित होना।

डगमग—क्रि. अ. [हिं. डग+मग] हिलना-डुलना, स्थिर न रहना। उ.—बिहरत बिबिध बालक संग। डगनि डगमग पगनि डोलत, धूरि, धूसर अंग—१०-१८४।

डगमगाइ—क्रि. अ. [हिं. डगमगाना] हिलडुलकर, थरथराकर, डगमग होकर। उ.—सिखवति चलन जसोदा मैया। अरबराइ कर पानि गहावत, डगमगाइ धरनी धरै पैया—१०-११५।

डगमगात—क्रि. अ. [हिं. डगमगाना] हिलते-डुलते (हैं), थरथराते (हैं), स्थिर नहीं रहते। उ.—(क) चलन चहत पाइनि गोपाल।........। डगमगात गिरि परत पानि परि, भुज भ्राजत नँदलाल—१०-११४। (ख) डगमगात डोलत आँगन मैं, निरखि बिनोद-मगन सुर-मुनि-नर—१०-१२४।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डगमगाना—क्रि. अ [हिं. डग+मग] (१) हिलना-डोलना, थरथराना। (२) किसी बात पर दृढ़ न रहना।

डगमगी—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. डग+मग] हिलने-डुलने लगी, स्थिर न रह सकी। उ.—भूमि अति डगमगी, जोगिनी सुनि जगी, सहसफन सेस कौ सीस काँप्यौ—६-१०६।

डगमगे—वि. [हिं. डगमग] चंचल, डाँवाडोल, अस्थिर, काँपते हुए। उ.—सूर सों मनसा भई पाँगुरी निरखि डगमगे गोड़—१३५७।

डगर, डगरा, डगरिया, डगरी, डगरौ—संज्ञा पुं. [हिं. डग, डगर] पथ, मार्ग, पैंड़ा। उ.—(क) भोरहिं नित प्रति ही उठि, मोसौं करत झगरौ। ग्वाल-बाल संग लिए घेरि रहै डगरौ—१०-३३६। (ख) आवत जात डगर नहिं पावत गोवर्धन पूजा संजोग—६१६।

मुहा.—डगर (डगरा, डगरी) बताना—(१) रास्ता बताना। (२) उपाय या तदबीर बताना।

डगरना—क्रि. स. [हिं. डगर] धीरे-धीरे चलना।

डगराना—क्रि. स. [हिं. डगरना] (१) ले चलना, चलाना। (२) हाँकना।

डगा—संज्ञा पुं. [हिं. डागा] डुग्गी या नगाड़ा बजाने की लकड़ी, चोब।

डटना—क्रि. अ. [सं. स्थातृ, हिं. ठाट या ठाढ़] (१) अड़ना, जमकर खड़ा होना, ठहरना। (२) छू जाना, लगना।

क्रि. स. [सं. दृष्टि, हिं. डीठ] देखना, ताकना।

डटा—क्रि. अ. [हिं. डटना] अड़ा, ठहरा।

मुहा.—डटा रहना—शत्रु का सामना करने या कठिनाई झेलने से मुँह न मोड़ा।

डटाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाटना] डाँटने की क्रिया।

डटाना—क्रि. स. [हिं. डटना] (१) सटाना, भिड़ाना। (२) ठेलना। (३) जमाकर खड़ा करना।

डगाना—क्रि. स. [हिं. डिगाना] विचलित करना।

डगै—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. डग] डग या कदम को।

मुहा.—मारि डगै—लंबे-लंबे कदम बढ़ाकर। उ.—मारि डगै छ्वै फिरि चली सुंदर बेनि ढुरै सब अंग।

डग्गर—संज्ञा पुं. [सं. तर्क्षु] एक मांसाहारी पशु।

डग्गर, डग्गा—संज्ञा पुं. [हिं. डग] दुबला-पतला घोड़ा।

डट—संज्ञा पुं. [देश.] निशाना।

क्रि. अ. [हिं. डटना] (१) जमकर। (२) तृप्त होकर, अघाकर, संतुष्ट होकर।

डट्टा—संज्ञा पुं. [हिं. डाटना] (१) डाट, काग। (२) बड़ी मेख। (३) छींट छापने का ठप्पा या साँचा।

डड़्ढार—वि. [हिं. डाढ़ी] बड़ी दाढ़ीवाला।

वि. [सं. दृढ़, हिं. डिढ़] दृढ़ हृदय का, वीर।

डढ़न—संज्ञा स्त्री. [हिं. डढ़ना] जलन, ताप।

डढ़ना—क्रि. अ. [सं. दग्ध, प्रा. डड्ढ+ना (प्रत्य.)] जलना, बलना, सुलगना।

डढ़ार, डढ़ारा—वि. [हिं. डाढ़] (१) जिसके दाढ़ हो। (२) जिसके डाढ़ी हो, डाढ़ीवाला।

डढ़ियल—वि. [हिं. डाढ़ी] लंबी डाढ़ीवाला।

डढ़ै—कि. अ. [सं. दग्ध, प्रा. डड्ढ, हिं. डढ़ना] जलती (है), जलाकर। उ.—औंचवत पय तातो जब लाग्यौ, रोवत जीभि डढ़ै—१० १७४।

डढ्ढना—क्रि. स. [हिं. डढ़ना] जलाना, बलाना।

डढ़्यौरा—वि. [हिं. डाढ़ी] डाढ़ीवाला।

डपट—संज्ञा स्त्री. [सं. दर्प] डाँट, घुड़की।

संज्ञा स्त्री. [हिं. रपट] तेज चाल या दौड़।

डपटना—क्रि. स. [हिं. डपट] डाँटना, घुड़कना।

क्रि. स. [हिं. रपटना] तेज दौड़ना।

डपोरसंख—संज्ञा पुं. [अनु. डपोर=बड़ा + संख] (१) वह जो कहे तो बहुत-कुछ, परंतु करे कुछ नहीं। (२) वह जो देखने में तो बड़ी आयु का हो, बुद्धि में पिछड़ा हो।

डप्पू—वि. [देश.] बहुत बड़ा या मोटा।

डफ—संज्ञा पुं. [अ. दफ़] चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा जो लकड़ी से बजाया जाता है। उ.—(क) डफ-झाँझ मृदंग बजाइ, सब नंद-भवन गए—१०-२४। (ख) डिमिडिमी पटह ढोल डफ बीना मृदंग उमंग चंग तार—२४४६।

डफला—संज्ञा पुं. [अ. दफ़] डफ नामक बाजा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डफली—संज्ञा स्त्री. [अ. दफ़] छोटा डफ, खँजरी।
मुहा.—अपनी अपनी डफली अपना अपना राग—जितने लोग उतनी ही राय, सब लोगों का अपनी अपनी बात पर जोर देना।

डफार—संज्ञा स्त्री. [अनु.] चिल्लाहट, चिंघाड़।

डफारना—क्रि. अ. [अनु.] जोर से रोना-चिल्लाना।

डफालची, डफाली—संज्ञा पुं. [हिं. डफला] (१) डफला बजानेवाला। (२) डफला बजाकर भीख माँगनेवाला।

डफोरना—क्रि. अ. [अनु.] चिल्लाना, ललकारना।

डब—संज्ञा पुं. [हिं. डब्बा] जेब, थैला।

डबकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) पीड़ा करना, दर्द होना। (२) लँगड़ाकर चलना।

डबकौंहाँ, डबकौंहें—वि. पुं. [अनु.] आँसू भरा हुआ, डबडबाया हुआ।

डबकौंही—वि. स्त्री. [हिं. डबकौंहाँ] आँसू भरी हुई।

डबडबाइ—क्रि. अ. [हिं. डबडबाना] आँसू भरकर, डबडबा कर। उ.—जब जब सुरति करत तब तब डबडबाई दोउ लोचन उमँगि भरत—२०३६।

डबडबाना—क्रि. अ. [अनु.] आँसू भर आना।

डबरा—संज्ञा पुं. [सं. दभ्र=झील, समुद्र] कुंड, हौज।

डबरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डबरा] छोटा गड्ढा या ताल।

डबला—संज्ञा पुं. [देश.] पुरवा, कुल्हड़, चुक्कड़।

डबा—संज्ञा पुं. [हिं. डिब्बा] संदुकची।

डबिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. डिब्बा] छोटी डिबिया।

डबी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डिबिया] छोटी संदुकची।

डबुलिया—संज्ञा स्त्री. [देश.] कुल्हिया, छोटा पुरवा।

डबोना—क्रि. स. [अनु. डबडब] (१) डूबाना, बोरना, गोता देना। (२) बिगाड़ना, चौपट करना।
मुहा.—नाम डबोना—नाम में धब्बा लगाना। वंश डबोना—कुल में धब्बा लगाना। लुटिया डबोना-(१) प्रतिष्ठा या मान खोना। (२) काम बिगाड़ना।

डब्बा—संज्ञा पुं. [तैलंग। या सं. डिब=गोला] धातु का छोटा ढक्कनदार पात्र, संपुट।

डभकना—क्रि. अ. [अनु. डभडभ] डूबना-उतराना।

डभका—संज्ञा पुं. [हिं. डभकना] कुएँ का ताजा पानी। संज्ञा पुं. [देश.] भुना हुआ साबुत अनाज।

डभकौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डभकना] उरद की पीठी की बरी जो कढ़ी में बिना तले ही डाली जाती है। उ.—पानौरा राइता पकौरी। डभकौरी मुँगछी सुठि सौंरी।

डभकौहाँ—वि. [अनु.] आँसू भरा हुआ।

डम—संज्ञा पुं. [सं.] डोम, चांडाल।

डमर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) भय से भागना, भगदड़। (२) हलचल, उपद्रव।

डमरु, डमरू—संज्ञा पुं. [सं. डमरु] (१) डमरू नाम का बाजा जो शिव जी को बहुत प्रिय माना गया है। उ.—खुनखुना कर हँसत हरि, हर हँसत डमरु बजाइ—१०-१७०। (२) डमरू के आकार की कोई चीज। (३) एक वृत्त।

डमरुआ—संज्ञा पुं. [सं. डमरु] गठिया रोग।

डमरुमध्य—संज्ञा पुं. [सं. डमरु+मध्य] धरती का पतला भाग जो दो बड़े भूखंडों को मिलाता है।

डयन—संज्ञा पुं. [सं.] उड़ने की क्रिया, उड़ान।

डर—संज्ञा पुं. [सं. दर] (१) भय, भीति, त्रास। (२) अनिष्ट की संभावना, आशंका।

डरई—क्रि. अ. [हिं. डरना] डरता है, भयभीत होता है। उ.—उड़ु परिवार पिसुन सभा अपजसहिं न डरई—२८६१।

डरत—क्रि. अ. [हिं. डरना] डरते हैं, भयभीत होते हैं, आशंकित होकर। उ.—(क) ब्रह्म-रुद्र डर डरत काल कैं, काल डरत भ्रू-भंग की आँची—१-१८। (ख) हरि सीता लै चल्यौ डरत जिय, मानौ रंक महानिधि पाई—९-५६।

डरति—क्रि. अ. [हिं. डरना] डरती है, भयभीत होती है। उ.—ढीठ, निठुर, न डरति काहूँ, त्रिगुन है समुहाइ—१-५६।

डरतौ—क्रि. अ. [हिं. डरना] डरता, भयभीत होता। उ.—कबहुँक राज-मान-मद-पूरन, कालहु तैं नहिं डरतौ। मिथ्या बाद आप-जस सुनि सुनि, मूँछहिं पकरि अकरतौ—१-२०३।

डरना—क्रि. अ. [हिं. डर+ना (प्रत्य.)] (१) भयभीत होना, अनिष्ट के भय से शंकित होना। (२) आशंका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना, अंदेशा करना।

डरपत—क्रि. अ. [हिं. डरपना] डरता है, भयभीत होता है, आशंकित होता है। उ.—(क) चलि नहिं सकत गरुड़ मन डरपत, बुद्धि बल बलहिं बढ़ावत—८-४। (ख) तोहिं देखि मेरौ जिय डरपत, नैननि आवत नीर—६-८६। (ग) राजहेतु डरपत मन माहीं—१२-५।

डरपना—क्रि. अ. [हिं. डर] भयभीत होना।

डरपाइ, डरपाई—क्रि. अ. [हिं. डरपना] डरकर, भयभीत होकर। उ.—(क) उठयौ अकुलाइ, डरपाइ तुरतहिं धाइ, गयौ पहुँचाइ तट आइ दीन्हौ—५८४। (ख) भूलीं कहा, कहौ सो हमसौं, कहति कहा डरपाई। सूरदास सुरपति की पूजा, तुम सबहिनि बिसराई—८१२।

क्रि. स.—डरा-धमकाकर, भयभीत करके। उ.—सूर स्याम हैं चोर तुम्हारे छाँड़ि देहु डरपाइ—१५१४।

डरपाउँ—क्रि. अ. [हिं. डरपना] डरता हूँ, भयभीत होता हूँ। उ.—मोहिं नहीं जिय कौ डर नैकहुँ, दोउ सुत कौं डरपाउँ—५२८।

डरपावत—क्रि. स. [हिं. डरपाना] डराते हैं। उ.—जौ लायक तौ अपने घर को बन भीतर डरपावत—११०४।

डरपावन—संज्ञा पुं. [हिं. डर] डरानेवाले। उ.—तीनि भुवन-आनंद, कंस-डरपावन रे—१०-२८।

क्रि. स. [हिं. डरपना, डरपाना] डराने (लगे), भय दिखाने (लगे)। उ.—श्रीदामा चले रोइ जाइ कहिहौं नँद-आगे। गेंद लेहु तुम आइ, मोहिं डरपावन लागे—५८६।

डरपावहु—क्रि. स. [हिं. डरपाना] डराओ, भयभीत करो। उ.—काली उरग रहै जमुना मैं, तहँ तैं कमल मँगावहु। दूत पठाइ देहु ब्रज ऊपर, नंदहिं अति डरपावहु—१०-५२२।

डरपावैं—क्रि. स. [हिं. डरपाना] भयभीत करते हैं, डराते हैं। उ.—मैं घर आवन कहौं, सखा सँग कोउ नहिं आवैं। देखत बन अति अगम डरौं, वै मोहिं डरपावैं—४३७।

डरपाहिं—क्रि. स. [हिं. डरपना] डरते हैं, भयभीत होते हैं। उ.—सुनहु-सुनहु सबहिनि के लरिका तेरौ सौ कहुँ नाहिं। हाटनि-बाटनि, गलिनि कोउ चलत नहीं, डरपाहिं—१०-३२८।

डरपि—क्रि. अ. [हिं. डरपना] डरकर, भयभीत होकर। उ.—ग्वाल डरपि डरि पैं कह्यौ आइ। राखि अब त्रिभुवनराइ—६१४।

डरपी—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. डरपना] डर गयी, भयभीत हुई। उ.—मो देखत वह परी धरनि गिरि, डरपी अपनैं जिय भारी—६६७।

डरपे—क्रि. अ. [हिं. डरपना] डरे, भयभीत हुए। उ.—सुनत धुनि सब ग्वाल डरपे, अब न उबै स्याम—४२७।

डरपोक, डरपोकना—वि. [हिं. डरना + पोंकना] बहुत डरनेवाला, कायर, भीरु।

डरपौं—क्रि. अ. [हिं. डरपना] डरता हूँ, भयभीत होता हूँ। उ.—हौं डरपौं, काँपौं अरु रौवौं, कोउ नहिं धीर धराऊ—४८१।

डरपौ—क्रि. अ. [हिं. डरना] डरो, भयभीत हो। उ.—मैं बरज्यौ जमुना-तट जात। सुधि रहि गई न्हात की तेरैं, जनि डरपौ मेरे तात—५१८।

डरप्यौ—क्रि. अ. [हिं. डरपना] डरा, भयभीत हुआ। उ.—चरन की छबि देखि डरप्यौ अरुन, गगन छपाइ—१०-२३४।

डरवाई—क्रि. स. [हिं. डरवाना] डराया, भयभीत किया। उ.—जाहु जाहु घर तुरत जुवति जन खिझत गुरुजन कहि डरवाई—१६६७।

डरवाए—क्रि. स. [हिं. डरवाना] डराया, भयभीत किया। उ.—महर कह्यौ हम तुम डरवाए—१००५।

डरवाना—क्रि. स. [हिं. डराना] भयभीत करना।

क्रि. स. [हिं. डलवाना] डालने का काम कराना।

डराइ—क्रि. अ. [हिं. डरना] डरकर, डर (गये)। उ.—सुर सब गये डराइ—३-११।

डराउँ, डराऊँ—क्रि. अ. [हिं. डरना] डरता हूँ, भयभीत होता हूँ, आशंकित हूँ। उ.—(क) भक्त समुद्र अति देखि भयानक, मन मैं अधिक डराउँ—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१-१६४। (ख) साधु-साधु सुरसरी-सुवन तुम, नहिं प्रन लागि डराऊँ। सूरजदास भक्त दोऊ दिसि, कापर चक्र चलाऊँ—१-२७४। (ग) रिच्छप तर्क बोलिहैं मोसौं, ताकौं बहुत डराउँ—६-७५।

डराडरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डर] **डर, भय, आशंका।**

डरात—क्रि. अ. [हिं. डरना] **डरता है, भयभीत होते हैं।** उ.—(क) कामना करि कोटि कबहूँ किए बहु पसु घात। सिंहसावक ज्यौं तजै गृह, इंद्र आदि डरात—१-१०६। (ख) देखि री नंद-नंदन ओर।....बार बार डरात तोकौं, बरन बदनहिं थोर--३६४।

डराति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. डरना] **डरती (है), भयभीत होती (है)।** उ.—(क) गृह कौ काज इनहूँ तैं प्यारौ, नैकहुँ नाहिं डराति—१०-७६। (ख) ग्वालिनी डराति जियहिं, सुनै जनि जसोवै—१०-२८४।

डराना—क्रि. स. [हिं. डरना] **भयभीत करना।**

डरानी—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. डरना] **डर गयी, भयभीत हुई।** उ.—(क) लछिमन, धनुष देहु, कहि उठे हार, जसुमति सूर डरानी—१०-१६६। (ख) अब लौं सही तुम्हारी ढीठो, तुम यह कहत डरानी—१०४६। (ग) मैं अपने कुल-कानि डरानी—१४६२।

डराने—क्रि. अ. [हिं. डरना] **डर गये, भयभीत हुए।** उ.—(क) भीतर देखत अति डराने दुहुँनि दीन्यौ रोइ—१०-२८६। (ख) हरि सब भाजन फोरि पराने। हाँक देत पैठे दै पेला, नैंकु न मनहिं डराने—१०-३२८। (ग) देखि तरु सब अति डराने, हैं बड़े बिस्तार—३८७। (घ) पाती बाँचत नंद डराने—५२६।

डरानौ—वि. [हिं. डर] **डरा हुआ, भयभीत, आशंकित।** उ.—कह्यौ लंकेस दै ठेस पग की तबै, जाहि मति-मूढ़, कायर, डरानौ—९-१११।

डरान्यौ—क्रि. अ. [हिं. डरना] **डर गया, भयभीत हुआ।** उ.—(क) मथुरापति जिय अतिहिं डरान्यौ। सभा माँझ असुरनि के आगैं, सिर धुनि-धुनि पछितान्यौ—१०-६०। (ख) कहत स्याम मैं अतिहिं डरान्यौ। ऊखल तर मैं रह्यौ छपान्यौ—३६१।

डरायौ—क्रि. अ. [हिं. डराना] **डराया, भयभीत किया, आशंकित किया।** उ.—यह सुनत परजर्यौ, बचन नहिं मन धर्यौ, कहा तैं राम सौं मोहिं डरायौ—९-१२८।

डरावन—वि. [हिं. डरावना] **भयभीत करनेवाला, जिससे डर लगे, भयानक, भयंकर।** उ.—सुनहु सूर ए मेघ डरावन—१०४८।

संज्ञा पुं. [हिं. डर] **डर, भय।** उ.—बल-मोहन कौ नाम धरयौ कह्यौ पकरि मँगावन। तातैं अति भयौ सोच लगत सुनि मोहिं डरावन—५८६।

डरावना—वि. [हिं. डर] **जिससे डर लगे, भयानक।**

डरावा—संज्ञा पुं. [हिं. डराना] **लकड़ी जो फलों को पक्षियों से रक्षा करने के लिए पेड़ों से बाँधी जाती हैं; इसके खींचने से खटखट का शब्द होता है, खटखटा, धड़का।**

डराहुक—वि. [हिं. डरना] **डरपोक, कायर।**

डरि—क्रि. अ. [हिं. डरना] (१) **डरो, भय करो।** उ.—प्रहलाद-हित जिहिं असुर मार्यौ, ताहि डरि डरि डरि—१-३०६। (२) **डरकर।**

डरिपहु—क्रि. अ. [हिं. डरना] (१) **डरना, भयभीत होना।** उ.—डरिपहु जिनि तुम सघन कुंज महँ, तहँ के तरु हैं भारी—२६४२। (२) **डरोगे, भयभीत होगे।**

डरियाँ, डरिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. डार, डाल] **डाल, शाखा।** उ.—(क) हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम-डरिया, पारधि साधे बान—१-६७। (ख) सीतल छहियाँ स्याम हैं बैठे, जानि भोजन की बिरियाँ। बाम भुजाहिं सखा अँस दीन्हे, दच्छिन कर द्रुम-डरियाँ—४७०।

डरिहै—क्रि. अ. [हिं. डरना] **भयभीत होगा, सशंक होगा।** उ.—काकी ध्वजा बैठि कपि किलकिहि, किहिं भय दुरजन डरिहै—१-२६।

क्रि. स. [हिं. डालना] **डाल देगा।**

डरिहौं—क्रि. स. [हिं. डालना] **डाल दूँगा, फेंक दूँगा।** उ.—असुर कठोर जमुन लै डरिहौं—११६१।

डरी—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. डरना] **भयभीत हुई, आशंकित हुई।** उ.—नृप कन्या सो देखत डरी—९-३।

संज्ञा स्त्री. [हिं. डली] **छोटा टुकड़ा, डली।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डरीला—वि. [हिं. डार] डाल-शाखा वाला।

डरैंगे—क्रि. अ. [हिं. डरना] डर जायँगे, भयभीत होंगे। उ.—यह सुनि कै ब्रज लोग डरैंगे, वै सुनिहैं यह बात—५२२।

डरै—क्रि. अ. [हिं. डरना] डरता है, भयभीत होता है। उ.—अधम कौन है अजामील तैं, जम तहँ जात डरै—१-३५।

डरैला—वि. [हिं. डर] डरावना, भयानक।

डरैहौं—क्रि. अ. [हिं. डरना] डरूँगा, भयभीत हूँगा। उ.—मैया हौं गाइ चरावन जैहौं। तू कहि महर नंद बाबा सौं, बड़ौ भयौ न डरैहौं—४१२।

डरयौ—क्रि. अ. [हिं. डरना] डरा, भयभीत हुआ। उ.—(क) इहिं अवसर कत बाँह छुड़ावत, इहिं डर अधिक डरयौ—१-१५६। (ख) जिय अति डरयौ, मोहिं मत सापै, ब्याकुल बचन कहंत—६-८३।

डल—संज्ञा पुं. [हिं. डला = टुकड़ा] टुकड़ा, खंड।
मुहा.—डल का डल—ढेर का ढेर, बहुत सा।
संज्ञा स्त्री. [सं. तल्ल] झील।

डलई—संज्ञा स्त्री. [हिं. डलिया] छोटा टोकरा।

डलना—क्रि. अ. [हिं. डालना] डाला जाना, पड़ना।

डलवा—संज्ञा पुं. [हिं. डला] टोकरा।

डलवाना—क्रि. स. [हिं. डालने का प्रे.] डालने देना।

डला—संज्ञा पुं. [सं. दल] टुकड़ा, खंड।
संज्ञा पुं. [सं. डलक] टोकरा, दौरा।

डलिया, डली—संज्ञा स्त्री. [हिं. डला] छोटा टोकरा।

डली—संज्ञा स्त्री [हिं. डला] (१) छोटा टुकड़ा या खंड, कंकड़ी। (२) सुपारी।

डल्लक—संज्ञा पुं. [सं.] डला, दौरा, टोकरा।

डवँरू—संज्ञा पुं. [हिं. डमरू] डमरू नामक बाजा।

डस—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) एक तरह की शराब। (२) तराजू की डोरी जिसमें पलड़े बँधते हैं, जोती।

डसन—संज्ञा स्त्री. [सं. दंशन] डसने की क्रिया, भाव या ढंग। उ.—यह अपराध भड़ौ उन कीन्हो। तच्छक डसन साप मैं दीन्हौ—१-२९०।

डसना—क्रि. स. [सं. दंशन] (१) किसी जहरीले कीड़े का दाँत से काटना। (२) डंक मारना।
संज्ञा पुं. [हिं. डासन] बिछौना, बिछावन।

डसवाना—क्रि. स. [हिं. डसना का प्रे.] (१) जहरीले कीड़े से कटवाना। (२) डंक मरवाना।

डसा—संज्ञा पुं. [सं. दंश] डाढ़, चौभड़।

डसाइ—क्रि. स. [हिं. डासना] बिछाकर, बिछा (दी)। उ.—अपनी अपनी कंध कमरिया ग्वालन [illegible] डसाइ—२३२४।
क्रि. स. [हिं. डसाना] दाँत से कटाकर।

डसाए—क्रि. स. [हिं. डासना] बिछाये। उ.—(क) [illegible] पाटंबर पाँवड़े डसाए—१००१। (ख) एक दि[न] वृंदाबन भीतर कर करि पत्र डसाए—३०८३।

डसाना—क्रि. स. [हिं. डसना का प्रे.] (१) जहरीले कीड़े से कटवाना। (२) डंक मरवाना।
क्रि. स. [हिं. डासना] (बिस्तर) बिछाना।

डसायौ—क्रि. स. [हिं. 'डसना' का प्रे.] दाँत [से] कटवाया। उ.—सूरदास भगवंत-भजन-बिनु, का[ल] ब्याल पै आपु डसायौ—१-३२६।

डसावैं—क्रि. स. [हिं. डासना] बिछाते हैं, रखते [हैं], धरते हैं। उ.—हा हा राम, लखन अरु सीता, [प] भोजन जु डसावैं पात—९-३८।

डसिअत—क्रि. स. [हिं. डासना] (बिस्तर आदि) बिछाते हैं। उ.—ओढ़िअत हैं की डसिअत हैं की[धौं] कहिअत कीधौं जु पतीजत—१४४१।

डसी—क्रि. स. स्त्री. [हिं. डसना] जहरीले कीड़े [ने] काट लिया, (विषैले कीड़े द्वारा) काटी गयी है। उ.—(क) डसी री स्याम भुअंगम कारे। मोहन-मु[ख] मुसुक्यानि मनहुँ बिष, जात मैन सौं मारे—७४[७]। (ख) ताहि कछू उपचार न लागत डसी क[ठि] अहि-मैन—७४६।
संज्ञा स्त्री. [हिं. डसी] (१) कपड़े के छोर [का] सूत, छीर। (२) कपड़े या थान का पल्ला। (३) पता, चिन्ह, निशानी, सहदानी।

डसै—क्रि. स. [हिं. डसना] विषैला कीड़ा काट ले। उ.—कोउ कहति अहि काम पठयौ, डसै जिनि [य] काहु। स्याम-रोमावली की छवि, सूर नाि[हि] निबाहु—६३६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डस्यौ—क्रि. स. [हिं. डसना] (विषैले कीड़े ने) काटा, डस लिया। उ.—(क) सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी, कर छूट्यौ संधान—१-९७। (ख) स्याम-भुअंग डस्यौ हम देखत, ल्यावहु गुनी बुलाइ—७४३। (ग) प्रात खरिकहिं गई, आइ बिहवल भई, राधिका कुँवरि कहुँ डस्यौ कारौ—७५१।

डहकत—क्रि. अ. [हिं. डहकना] ठगते या धोखा देते हैं। उ.—डहकत फिरत आपने स्वारथ पाखँड अग्र दये—३०६३।

डहकना—क्रि. स. [हिं. डाका] (१) छल करना, धोखा देना, ठगना। (२) कोई वस्तु दिखाकर या देने को कहकर मुकर जाना या न देना।

क्रि. अ. [हिं. दहाड़, धाड़] (१) बिलख बिलख कर रोना, विलाप करना। (२) हुंकरना, दहाड़ना।

क्रि. अ. [देश.] फैलना, छिटकना।

डहकाना—क्रि. स. [हिं. डाका] गँवाना, नष्ट करना।

क्रि. अ.—ठगा जाना, धोखा खाना।

क्रि. स.—(१) धोखा देना, ठगना। (२) देने के लिए कोई चीज दिखाकर भी न देना।

डहकानौ—क्रि. स. [हिं. डहकना] धोखे में पड़ गया, छला गया। उ.—सुत-बित-बनिता-प्रीति लगाईं, झूठे भरम भुलानौ। लोभ-मोह तैं चेत्यौ नाहीं, सुपनैं ज्यौं डहकानौ—१-३२९।

डहकायौ—क्रि. स. [हिं. डहकाना] ठगा गया, धोखा खाया, छला गया। उ.—धोखैं ही धोखैं डहकायौ। समुझि न परी, बिषय-रस गीध्यौ, हरि-हीरा घर माँझ गँवायौ—१-३२५।

डहकावै—क्रि. स. [हिं. डहकाना] खोता है, व्यर्थ गँवाता है, नष्ट करता है। उ.—बाद-बिवाद, जज्ञ ब्रत-साधन, कितहूँ जाइ, जनम डहकावै—१-२३३।

क्रि. अ.—ठगा जाये, धोखा खाये। उ.—इनके कहे कौन डहकावै, ऐसी कौन अजानी—३३४०।

डहकि—क्रि. स. [हिं. डाका, डहकना] किसी वस्तु से (दूसरों को) ललचाते हुए भी न देकर, देने को दिखाते हुए न देकर। उ.—स्याम सबनि मिलि खात हैं लै लै कौर छुड़ाइ। औरनि लेत बुलाइ ढिग, डहकि आपु मुख नाइ—४३७।

क्रि. अ. [हिं. दहाड़, धाड़, डहकना] बिलख-कर, बिलाप करके। उ.—सूर गोपिन सब ऊधौ आगे डहकि दीन्हीं रोई—३२-९।

डहके—क्रि. स. [हिं. डाका, डहकना] छल किया, धोखा दिया, ठगा, जटा। उ.—इहिं बिधि इहिं डहके सबै, जल-थल-नभ-जिय-जेते (हो)—१-४४।

डहडह—क्रि. वि. [हिं. डहडहा] प्रफुल्लित होकर, प्रसन्नता से, आनंदित होकर। उ.—चलित कुंडल, गंड-मंडल, झलक ललित कपोल। सुधा-सर जनु मकर क्रीड़त, इंदु डहडह डोल—६२७।

वि.—प्रसन्न, प्रफुल्लित। उ.—हरष डहडह मुसुकि फूले प्रेम फलनि लगाइ—१६९०।

डहडहत—क्रि. अ. [हिं. डहडहाना] लहलहाते हैं, खिलते हैं, हिलते हैं। उ.—दुर दमंकत सुभग स्रवननि, जलज जुग डहडहत—१०-१८४।

डहडहा—वि. [अनु.] (१) हरा-भरा, लहलहाता हुआ। (२) प्रसन्न, प्रफुल्लित, आनंदित। (३) तुरंत का, ताजा।

डहडहाट—संज्ञा स्त्री. [हिं. डहडहा] (१) हरापन। (२) प्रफुल्लता, प्रसन्नता। (३) ताजगी।

डहडहाना—क्रि. अ. [हिं. डहडहा] (१) हरा-भरा होना, लहलहाना (२) प्रसन्न या आनंदित होना।

डहडहाव—संज्ञा पुं. [हिं. डहडहा] (१) हरापन। (२) आनंद, हर्ष। (३) ताजापन।

डहन—संज्ञा पुं. [सं. डयन = उड़ना] पंख, पर, डैना।

संज्ञा स्त्री. [सं. दहन] दाह, जलन।

डहना—संज्ञा पुं. [हिं. डहन] पंख, पर, डैना।

क्रि. अ. [सं. दहन] (१) जलना, भस्म होना। (२) कुढ़ना, चिढ़ना, द्वेष या ईर्ष्या करना।

क्रि. स.—(१) जलाना, भस्म करना। (२) कुढ़ाना, चिढ़ाना, संतप्त या दुखी करना।

डहर—संज्ञा स्त्री. [हिं. डगर] (१) रास्ता, मार्ग, पथ। (२) आकाशगंगा।

डहरना—क्रि. अ. [हिं. डहर] चलना-फिरना।

डहराइ, डहराई—क्रि. स. [हिं. डहराना] चलायी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौड़ाकर, फिराकर। उ.—कोऊ निरखि रही भाल चंदन एक चित लाई। कोऊ निरखि बिथुरी भृकुटि पर नैन डहराई।

डहराना—क्रि. स. [हिं. डहरना] घुमाना-फिराना।

डहरि—संज्ञा स्त्री. [देश. ढहरी] मिट्टी का बरतन, मटकी। उ.—हरषे नंद टेरत महरि। आइ सुत-मुख देखि आतुर, डार दै दधि-डहरि—१०-६७।

संज्ञा स्त्री. [हिं. डगर] रास्ता, पथ, मार्ग। उ.—(क) देखी उरहिं बीचहीं खाई, माटी भई जहरि। सूर स्याम बिषधर कहुँ खाई, यह कहि चली डहरि—७५०। (ख) जल भरन कोउ नहीं पावति रोकि राखत डहरि—८६०।

डहार—संज्ञा पुं. [हिं. डाहना] दुखी करनेवाला।

डहु, डहू—संज्ञा पुं. [सं.] बड़हर का पेड़।

डाँ—संज्ञा स्त्री. [सं. डा] डाकिनी, डाइन।

डाँक—संज्ञा स्त्री. [हिं. दमक, दवँक] तांबे जैसी धातु का बहुत पतला पत्तर।

संज्ञा स्त्री. [हिं. डाँकना] कै, वमन, उलटी।

डाँकना—क्रि. स. [हिं. लाँघना] फांदना, पार करना।

डाँग—संज्ञा पुं. [सं. टंक = पहाड़ी किनारा और चोटी] (१) पहाड़ी चोटी। (२) पहाड़ के ऊपर का जंगल।

संज्ञा पुं. [सं. दंक, हिं. डागा] लट्ठ, डंडा।

संज्ञा पुं. [हिं. डाँकना] कूद-फांद।

डाँगर—वि. [देश.] (१) चौपाया, ढोर, पशु। (२) मरे हुए चौपाये की लाश। (३) एक नीच जाति।

वि.—(१) दुबला-पतला। (२) मूर्ख, गावदी।

डाँट—संज्ञा स्त्री. [सं. दांति = दमन, वश] (१) शासन। (२) वश, दबाव। (३) डांटने-डपटने की क्रिया।

मुहा.—डाँट में रखना—वश में रखना, डपट से रखना। डाँट रखना—दबाव रखना, स्वच्छन्द न होने देना।

(३) डराने के लिए दी हुई घुड़की, डपट।

डाँट-डपट—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाँटना+डपटना] क्रोधपूर्वक और घुड़की के साथ कही जानेवाली बात।

डाँटत—क्रि. स. [हिं. डाँटना] घुड़कते या डपटते (रहो)। उ.—जैसे मीन किलकिला दरसत ऐसे रहो प्रभु डाँटत—१-१०७।

डाँटना—क्रि. स. [हिं. डाँट+ना] घुड़कना, डपटना।

डाँट-फटकार—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाँट+फटकार] डाँट-डपट, घुड़की, दबाव।

डाँटी—क्रि. स. [हिं. डाँटना] डांटा, घुड़का, डपटा। उ.—(क) वारौं कर जु कठिन अति, कोमल नख जरहु जिनि डाँटी—१०-२५६। (ख) सूनैं घर बा... नँद नाही, ऐसैं करि हरि डाँटी—३७५।

डाँटै—क्रि. स. [हिं. डाँटना] डांटती है, डपटती है, घुड़कती है। उ.—जाकौ नाम लेत भ्रम छूटै, क... फंद सब काटै। सोई यहाँ जेंवरी बाँधे, जननि सौं... लै डाँटै—३४६।

डाँट्यौ—क्रि. स. [हिं. डाँटना] घुड़का, डपटा। उ.—छाँड़ि देस मम यह कहि डाँट्यौ—१-२६०।

डाँठ—संज्ञा पुं. [सं. दंड] डंठल।

डाँड़—संज्ञा पुं. [सं. दंड] (१) डंडा, लाठी। (२) 'गतका' खेलने का डंडा। (३) अंकुश की मू... (४) सीधी लकीर। (५) रीढ़ की हड्डी। (६) ऊँची मेड़ जो सीमा या हद के लिए बनती है।

मुहा.—डाँट मारना—मेड़ उठाना।

(७) छोटा टीला। (८) समुद्र का ढलुआ रेतीला किनारा। (९) सीमा, हद। (१०) अर्थदंड, जुरमाना। (११) नुकसान के बदले में लिया जानेवाला धन या वस्तु, हरजाना। (१२) नाव खेने का डंडा।

डाँड़ना—क्रि. अ. [हिं. डाँड़] जुरमाना करना।

डाँड़र—संज्ञा पुं. [हिं. डाँठ] बाजरे की खूँटी।

डाँड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. डाँड़] (१) डंडा। (२) 'गतका' खेलने का डंडा। (३) नाव खेने का डंडा। (४) समुद्र का ढलुआ रेतीला किनारा। (५) हद, सीमा, मेड़।

मुहा.—होली का डाँड़ा—लकड़ी आदि का ढेर जो होली जलाने के लिए इकट्ठा किया जाता है।

डाँड़ामेंड़ा, डाँड़ामेड़ी—संज्ञा पं. [हिं. डाँड़ + मेड़] (१) एक ही मेड़ का अंतर, लगाव। (२) अनबन, झगड़ा, नोकझोंक।

डाँड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाँड़] (१) लंबी पतली लकड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) किसी वस्तु की लंबी हत्थी जिसे पकड़कर काम किया जाता है; डंडी। उ.—हरि जू की आरती बनी। कच्छप अध आसन अनूप अति डाँड़ी सहस फनी—२-२८। (३) तराजू की डंडी जिसमें पलड़े लटकाये जाते हैं।

मुहा.—डाँड़ी मारना—कम सौदा तौलना।

(४) टहनी, पतली शाखा। (५) फूल या फल की नाल। (६) झूले की लकड़ियाँ या डोरियाँ जिनमें बैठने की पटरी फँसायी जाती है। उ.—पटुलो लगे नग नाग बहु रंग बनी डाँड़ी चारि। भौंरा भँवै भजि केलि भूले नवल नागर नारि। (७) डाँड़ खेने वाला (८) सुस्त आदमी। (९)लीक, मर्यादा। (१०) फूल का निचला पतला भाग। (११) पालकी का डंडा। (१२) पालकी। (१३) डंड में बँधी झोलियों की सवारी, झप्पान।

डाँढ़री—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाढ़ा] मटर की भुनी फली।

डाँवरा—संज्ञा पुं. [सं. डिंब] लड़का, बेटा।

डाँवरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाँवरा] लड़की, बेटी।

डाँवरू—संज्ञा पुं. [सं. डिंब] बाघ का बच्चा।

डाँवाडोल—वि. [हिं. डोलना] चंचल, हिलता हुआ।

डाँस—संज्ञा पुं. [सं. देश.] (१) बड़ा मच्छड़। (२) एक तरह की बड़ी मक्खी।

डाँसर—संज्ञा पुं. [देश.] इमली का बीज, चिआँ।

डाइन—संज्ञा स्त्री. [सं. डाकिनी] (१) भुतिनी, चुड़ैल। (२) कुरूपा या डरावनी स्त्री। (३) जादू टोना करनेवाली स्त्री।

डाक—संज्ञा पुं. [हिं. डाँकना] (१) यात्रा की टिकानों में सवारी के जानवर बदलने का प्रबंध।

मुहा.—डाक बैठाना (लगाना)—सवारी के जानवर बदलने के लिए चौकी नियत करना।

(२) पत्र आने-जाने की व्यवस्था। (३) चिट्ठी-पत्री।

संज्ञा स्त्री. [अनु.] वमन, उलटी, कै।

डाकना—क्रि. अ. [हिं. डाक] वमन या कै करना।

क्रि. स. [हिं. डाक+ना] लाँघना, पार करना।

डाका—संज्ञा पुं. [हिं. डाकना या सं. दस्यु] आक्रमण करके जबरदस्ती लूटना, बटमारी, लूट-मार।

डाकाजनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाका+फ़ा. ज़नी] डाका डालने या बटमारी करने का काम।

डाकिन, डाकिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. डाकिनी] (१) एक पिशाची जो काली के गणों में मानी जाती है। (२) चुड़ैल, डाइन।

डाकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाक] वमन, कै, उलटी।

वि.—बहुत खानेवाला, पेटू।

वि.—सबल, प्रचंड।

डाकू—संज्ञा पुं. [हिं. डाकना] (१) लुटेरा, बटमार। (२) बहुत खाऊ, पेटू।

डाकोर—संज्ञा पुं. [सं. ठक्कुर, हिं. ठाकुर] (१) ठाकुरजी। (२) विष्णु भगवान।

डाख—संज्ञा पुं. [हिं. ढाक] ढाक, पलाश।

डागरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. डगर] मार्ग, रास्ता।

डागा—संज्ञा पुं. [सं. दंडक] नगाड़ा आदि बाजे बजाने का डंडा, चोब।

डागुर—संज्ञा पुं. [देश.] जाटों की एक जाति।

डाट—संज्ञा स्त्री. [सं. दाँति] (१) टेक, रोक, चाँड़। (२) छेद बंद करने की चीज (३) काग, ठेंठी।

संज्ञा पुं. [हिं. डाँट] डाँट-डपट, घुड़की।

डाटत—क्रि. स. [हिं. डाँटना] घुड़कते या डपटते (रहो)। उ.—जैसैं मीन किलकिला दरसत, ऐसैं रहौ प्रभु डाटत—१-१०७।

डाटना—क्रि. स. [हिं. डाट] (१) दो चीजों को सटाकर दबाना। (२) टेकना, चाँड़ लगाना। (३) ठेंठी लगाकर छेद बंद करना। (४) कस कर घुसेड़ना। (५) खूब डट कर खाना। (६) ठाठ से गहना कपड़ा पहनना। (७) भिड़ाना, मिलाना।

डाटे—क्रि. अ. [हिं. डाटना] खूब डट कर खाया।

मुहा.—भोजन करि डाटे—भर पेट खाया, छक कर खाया। उ.—अगनित तरु-फल-सुगंध-मृदुल-मिष्ठ खाटे। मनसा करि प्रभुहिं अर्पि, भोजन करि डाटे—९-९६।

डाड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाँड़, डाँड़ी] हिंडोरे में लगी हुई चार सीधी लकड़ियाँ (या डोरियाँ) जिनसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटरियां लटकती रहती हैं। उ.—कंचन खंभ, मयारि, मरुवा-डाड़ी, खचि हीरा बिच लाल प्रबाल। रेसम बनाइ नव रतन पालनौ, लटकन बहुत पिरोजा लाल—१०-८४।

डाढ़—संज्ञा स्त्री. [सं. द्रष्टा, प्रा. डड्ढ] (१) चबाने के दांत, चौभड़। (२) बट जैसे वृक्षों की जटाएँ।

डाढ़ना—क्रि. स. [सं. दग्ध, प्रा. डड्ढ+ना (प्रत्य.)] जलाना, भस्म करना।

डाढ़ा—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाढ़ना] (१) आग, अग्नि। (२) वन की आग, दावाग्नि। (३) ताप, जलन।

वि. पुं.—जलाया हुआ, तप्त।

डाढ़ी—वि. स्त्री. [हिं. डाढ़ना] जली हुई, दग्ध, तपायी हुई, तप्त। उ.—(क) सखी संग की निरखतिं यह छवि, भईं ब्याकुल मन्मथ की डाढ़ी—७३६। (ख) नैन नींद न परै निसि दिन बिरह डाढ़ी देह—३२७५। (ग) कंधनि बाँह धरे चितवति द्रुम मनहु बेलि दव डाढ़ी—२५३५। (घ) ज्यों जलहीन दीन कुमुदिन वन रवि-प्रकास की डाढ़ी—३४७७।

संज्ञा स्त्री. [हिं. डाढ़, दाढ़ी] (१) ठोड़ी, चिबुक, ठुड्डी। (२) ठोड़ी और गाल के बाल, दाढ़ी।

मुहा.—डाढ़ी का एक एक बाल करना—(१) डाढ़ी उखाड़ लेना। (२) दुर्दशा करना। डाढ़ी को कलप लगाना—बूढ़े और भले आदमी को कलंक लगाना। पेट में डाढ़ी होना—बहुत फांइयां और चालाक होना। डाढ़ी फटकारना—संतोष और हर्ष प्रकट करना।

ाब—संज्ञा स्त्री. [सं. दर्भ] (१) डाभ नामक घास। ’२) कच्चा नारियल।

ि. [हिं. डाभक] कुएं का ताजा पानी।

[सं. दभ्र=समुद्र, झील] (१) नीची ी जमा रहे। (२) पोखरी, तलैया ची हो। (३) हाथ धोने का पानी।

ा, संपुट।

घास। (२) कुश

नारियल।

डाभक—वि. [अनु. डभक] कुएँ का ताजा पानी।

डामचा—संज्ञा पुं. [देश.] मचान, माचा।

डामर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक तंत्र। (२) हल धूम। (३) ठाटबाट, सजावट, (४) चमत्कार।

संज्ञा पुं. [देश.] (१) गोंद। (२) राल ना गोंद। (३) मक्खी जो राल बनाती है।

डामाडोल—वि. [हिं. डाँवाडोल] चंचल, अस्थिर।

डायँडायँ—क्रि. वि. [अनु.] व्यर्थ मारे मारे फिरना

डायन—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाइन] (१) पिशाचि चुड़ैल, भुतिनी। (२) कुरूपा और भयानक स्त्री

डार—संज्ञा स्त्री. [सं. दारु=लकड़ी] (१) डाल, शा उ.—(क) धरनि पत्ता गिरि परे तैं फिरि न डार—१-८८। (ख) रत्नजटित कंकन बा गगन मुद्रिका सोहैं। डार-डार मनु मदन विटप बिकच देखि मन मोहै। (ग) जोइ जोइ आवत मथुरा ते एक डार के से तोरे—३०५६। इतनी कहत सुकाग उहाँ तैं हरी डार उड़ि बैठ ६-१६४। (२) बरगद जैसे पेड़ों की नयी डा जो पूजा के काम आती हैं, हरी पत्तियों से टहनियां। उ.—आजु बधायौ नंदराइ कैं, मंगलचार। आईं मंगल-कलस साजि कै, दधि नूतन-डार—१०-२७।

संज्ञा स्त्री. [सं. डलक] डलिया, चँगेर।

क्रि. स. [हिं. डालना=फेंकना] फेंककर, कर। उ.—डार सस्त्र सर-सैया सोये हरि चित लायौ—सारा. ७८६।

प्र.—दीन्हौ डार—फेंक दिया। उ.— कह्यौ बारंबार। तब रिषि दीन्हौ ताकौं डार-

डारत—क्रि. स. [हिं. डारना, डालना] डालत उ.—आपुन तरि तरि औरनि तारत। अस्म प्रगट पानी मैं, बनचर लै लै डारत—९-१२३।

प्र.—डारत हति—(१) तोड़ डालता है। ज्यौं गज फटिक सिला मैं देखत दसननि हति—१-३००। (२) मार डालता है।

डारति—क्रि. स. [हिं. डालना] (१) डालती है।

प्र.—डारति वारी—वारती है, निछावर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर तन-मन डारति वारी—१०-२२८।

(२) जादू-टोना आदि करती है। उ.—कौन मंत्र जानति तू प्यारी, पढ़ि डारति हरि गात—७२१।

डारना—क्रि. स. [हिं. डालना] (१) **गिराना।** (२) **छोड़ना।** (३) **घुसाना।** (४) **त्याग करना।** (५) **अंकित करना।**

डारा—संज्ञा स्त्री. [हिं. डार, डाल] **डाल, शाख, शाखा।** उ.—(क) पौरि सब देखि सो असोक बन मैं गयौ, निरखि, सीता छप्यौ बृच्छ-डारा—६-७६। (ख) सबै समाने तरुवर डारा—७६६।

क्रि. स. भूत. [हिं. डालना, डाला] **छोड़ा, डाला, त्याग दिया, गिरा दिया।**

डारि—क्रि. स. [हिं. डालना] (१) **छोड़ कर, निकाल कर, अलग करके, फेंक कर।** उ.—उमा कौं छाँड़ि अरु डारि मृगचर्म कौं जाइकै निकट रहे रुद्र जोई—८-१०।

प्र.—डारि देत—**अलग कर देते हैं।** उ.—रस लै लै औटाइ करत गुर, डारि देत है खोई—१-६३। दीन्हें डारि—**फेंक दिये, गिरा दिये।** उ.—कागद दीन्हें डारि—१-१६७।

(२) **(सिंहासन, चौकी आदि) बिछा कर।** उ.—इंद्र एक दिन सभा मँझारि। बैठे हुते सिंहासन डारि—६-५। (३) **जादू-टोना आदि करके।** उ.—लहर उतारि राधिका सिर तैं दई तरुनिनि पै डारि—७६४। (४) **त्याग करके।** उ.—(क) स्याम हँसि बोले प्रभुता डारि—१७१६। (ख) मनहुँ सूर दोउ सुभग सरोवर उमँगि चले मर्यादा डारि—२७६५। (५) **फेंक कर, गिरा कर।**

प्र.—डारि दिये—**फेंक दिया, गिरा दिया।** उ.—डारि न दिये कमल कर तें गिरि दबि रहतीं ब्रज-बाल—३१५६।

डारियास—संज्ञा पुं. [देश.] **बंदर की एक जाति।**

डारिहौं—क्रि. स. [हिं. डालना] **डालूंगा।**

प्र.—उपारि डारिहौं—**उखाड़ डालूंगा।** उ.—कंस उपारि डारिहौं भूतल, सूर सकल सुख पावत—६-१३३।

डारिहौ—क्रि. स. [हिं. डारना, डालना] **डालोगे।** उ.—सूर तबहुँ न द्वार छाँड़ै, डारिहौ कढ़िराइ—१-१०६।

डारी—क्रि. स. [हिं. ालना] (१) **डालकर, फेंककर, छोड़कर।** उ.—दुरबासा दुरजोधन पठयौ पांडव-अहित बिचारी। साक-पत्र लै सबै अघाए, न्हात भजे कुस डारी—१-१२२।

प्र.—रहत डारी—**पड़ी रहती है।** उ.—फलन माँझ ज्यों करुई तोमरि रहत घुरे पर डारी—२६३५। (२) **डाल दी, छोड़ दी, रख दी, फेंक दी।** उ.—पांडु कुमार पावन से डोलत, भीम गदा कर तैं महिं डारी—१-२४८१। (३) **भुला दी, विस्मृत कर दी।** उ.—बन ही में बेंचति फिरै घर की सुधि डारी—११६३।

संज्ञा स्त्री. [हिं. डाल] **डाल, शाखा।**

डारे—क्रि. स. [हिं. डालना] (१) **डाल दिये, छोड़ दिये, फेंक दिये।** उ.—इन्द्रजित बलनिधि जब आयौ, ब्रह्म अस्त्र उन डारे—सारा. २८४।

प्र.—डारे धोई—**धो डाले, दूर कर दिये।** उ.—पतित अजामिल, दासी कुब्जा, तिनके कलिमल डारे धोई—१-६५।

(२) **गिरा दिये, तोड़ दिये।** उ.—ऊरध स्वाँस समीर तेज अति सुख अनेक द्रुम डारे—२७६१।

डारैं—संज्ञा स्त्री. सवि. [हिं. डाल] **डाल पर।** उ.—बोलत मोर सैल द्रुम चढ़ि चढ़ि बन जु उड़त तरु डारैं—२८२०।

डारै—क्रि. स. [हिं. डालना] (१) **डाल देने पर, छोड़ देने पर।** उ.—जैसे मीन दूध में डारै जल बिनु सचु नहिं पावै हो—२८०४। (२) **संपादित करता है, रचता है।** उ.—बागर तैं सागर करि डारै चहूँ दिसि नीर भरै—१-१०५। (३) **वमन करता है, उलटी करता है।** उ.—बमनहिं खाइ, खाइ सो डारै, भाषा कहि कहि टेरा—१-१८६।

डारौं—क्रि. स. [हिं. डारना, डालना] **डालूं, रखूं।** उ.—होड़ा होड़ी मनहिं भावते किए पाप भरि पेट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते सब पतित पाय-तर डारौं, यहै हमारी भेंट—१-१४६।

डारौ—क्रि. स. [हिं. डारना, डालना] (१) **सम्मिलित कर लो, मिला लो।** उ.—गीध-व्याध-गज-गनिका उधरी, लै लै नाम तिहारौ। सूरदास प्रभु कृपावंत ह्वै, लै भक्तनि मैं डारौ—१-१७८। (२) **डाल लो, पड़ा रहने दो।** उ.—सूर क्रूर की याही बिनती, लै चर-ननि मैं डारौ—१-१२८। (३) **छोड़ो, डाल दो।** उ.—नाम लेइ गम आहुति डारौ—४-११।

[डा]रयौ—क्रि. स. [हिं. डारना, डालना] (१) **डाला, रखा।** उ.—पतित-समूह सबै तुम तारे, हुतौ जु लोक भरयौ। हौं उनतैं न्यारौ करि डारयौ, इहिं दुख जात मरयौ—१-१५६। (२) **किया, संपादित किया।**

प्र.—बिताइ डारयौ—**बिता दिया।** उ.—या बिधि डारयौ जनम बिताइ—५-३।

(३) **डाल दिया, फेंक दिया, छोड़ दिया।** उ.—सुत-दारा कौ मोह अँचै बिष, हरि अमृत-फल डारयौ—१-३३६।

डाल—संज्ञा स्त्री. [सं. दारु=लकड़ी, हिं. डार] (१) **शाखा, डाली।**

मुहा.—डाल का टूटा—(१) **डाल से पककर गिरा हुआ ताजा फल।** (२) **बढ़िया, अनोखा।** (३) **नया (व्यक्ति)।** डाल का पका—**पेड़ की डाल में लगा रहकर पकनेवाला फल।**

(२) **तलवार का फल।** (३) **एक गहना।**

संज्ञा स्त्री. [सं. डलक, हिं. डला] (१) **डलिया।** (२) **फल-फूल की भेंट जो डलिया में सजा कर दी जाय।**

क्रि. स. [हिं. डालना] **गिराकर, छोड़कर।**

मुहा.—डाल रखना—(१) **किसी चीज को लेकर रख छोड़ना।** (२) **किसी काम को लेकर भी उसमें हाथ न लगाना।**

डालना—क्रि. स. [सं. तलन=(नीचे) रखना] (**किसी चीज को गिराना, फेंकना, छोड़ना।** (२) **एक चीज को दूसरी पर गिराना।** (३) **किसी चीज को दूसरी में मिलाने के लिए उसमें गिरा[ना]।** (४) **घुसेड़ना, भीतर करना।** (५) **खोज-खब[र] लेना, भुला देना।** (६) **चिह्न लगाना, अं[कित] करना।** (७) **फैलाना, एक चीज को फैलाकर दूसरी [को] ढकना।** (८) **शरीर पर धारण करना, पहनना।** (९) **किसी के जिम्मे छोड़ देना।** (१०) **कै करना, उ[लटी] करना।** (११) **किसी स्त्री को पत्नी की तरह [रख] लेना।** (१२) **लगाना, उपयोग करना।**

डाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. डला, डाल] (१) **डलि[या], चँगेरी।** (२) **फल-फूल आदि से सजी डाली जो [भेंट] में दी जाय।** (३) **शाखा, डाल।**

डावड़ा, डावरा—संज्ञा पुं. [सं. डिंब] **पुत्र, बेटा।**

डावड़ी, डावरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डावरी] **बेटी, पु[त्री]।**

डास—संज्ञा पुं. [देश.] **चमड़ा साफ करने का औजा[र]।**

डासन—संज्ञा पुं. [सं. डाभ+आसन] **बिछावन, चा[रपाई], बिछौना, बिस्तर।**

डासना—क्रि. स. [हिं. डासन] (**बिछौना**) **बिछाना।**

क्रि. स. [हिं. डसना] (**जहरीले कीड़े का**) **काट[ना]।**

डासनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डासन] **खाट, चारपाई।**

डासि—क्रि. स. [हिं. डासन, डासना] **बिछाकर, [...]कर, फैलाकर।** उ.—इहिं बिधि बन बसे रघु[...] डासि कै तृन भूमि सोवत, द्रुमनि के फल खा[...] ९-६०।

डासी—क्रि. स. [हिं. डालना] **डसी हुई।** उ.—[...] न उठत जसोदा जननी मनौ भुअंगम डासी—३४[...]

डाह—संज्ञा स्त्री. [सं. दाह] (१) **जलन, ईर्ष्या, [द्वेष]।** (२) **बैर, पीछे।** उ.—एते पर संतोष न म[...] परे हमारे डाह—२८६८।

डाहति—क्रि. स. [हिं. डाहना] **जलाती हैं।** उ.—ए[...] भई चित्र की पुतरी सून सरीरहिं डाहत—३०६[...]

डाहन—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाहना] **सताने की क्रिया।**

क्रि. स. [सं. दाहन] **जलाने, सताने, तंग कर[ने]।** उ.—काहे को मोहिं डाहन आए रैनि देत सुख वा[...]

डाहना—क्रि. स. [सं. दाहन] **जलाना, सताना।**

डाहनि—संज्ञा स्त्री. सवि. [हिं. डाह+नि (प्रत्य.)] [...] **से, ईर्ष्या से।** उ.—सूर डाहनि मरत गोपी कूबर[...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूरि—२६८२ ।
डाहीं—क्रि. स. [हिं. डाहना] जलायीं, दग्ध कीं । उ.—मुरछ्यौ मदन तरुनि सब डाहीं—पृ. ३३८ ।
डाही—वि. [हिं. डाह] ईर्ष्या करनेवाला ।
डाहुक—संज्ञा पुं. [देश.] एक छोटा पक्षी ।
डिंगर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मोटा आदमी । (२) दुष्ट, ठग । (३) दास । (४) नीच मनुष्य ।
संज्ञा पुं. [देश.] वह मोटा डंडा जो नटखट चौपायों के गले में बाँधा जाता है, ठिंगुरा ।
डिंगल—वि. [सं. डिंगर] नीच, दोषपूर्ण ।
संज्ञा स्त्री.—राजपूताने की काव्य-भाषा ।
डिंडिम, डिंडिमी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चमड़ा मढ़ा एक प्राचीन बाजा, डुगडुगी । (२) करौंदा नामक फल ।
डिंडिर—संज्ञा पुं. [सं.] समुद्रफन ।
डिंब—संज्ञा पुं. [सं.] (१) लड़ाई-दंगा । (२) अंडा । (३) फेफड़ा ।(४) कीड़े का छोटा बच्चा । (५) बच्चा ।
डिंबाहव—संज्ञा पुं. [सं.] मामूली लड़ाई ।
डिंबिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] मदमाती स्त्री ।
डिंभ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) छोटा बच्चा । उ.—गहि मनि-खंभ डिंभ डग डोलैं । कलबल-बचन तोतरे बोलैं—१०.११७ । (२) मूर्ख व्यक्ति ।
संज्ञा पुं. [सं. दंभ] (१) पाखंड, आडंबर । (२) घमंड, अभिमान ।
डिंभक—संज्ञा पुं. [सं.] छोटा बच्चा ।
डिंभिया—वि. [सं. दंभ, हिं. डिंभ] (१) पाखंडी, आडंबरप्रिय । (२) घमंडी, अभिमानी ।
डिक्की—संज्ञा स्त्री. [हिं. धक्का] धक्का, चपेट ।
डिगना—क्रि. अ. [हिं. डग] (१) हटना, सरकना, जगह छोड़ना । (२) बात पर दृढ़ न रहना ।
डिगवा—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का पक्षी ।
डिगाना—क्रि. स. [हिं. डिगना] (१) सरकाना, खिसकाना । (२) बात या सिद्धांत से विचलित करना ।
डिग्गी—संज्ञा स्त्री. [सं. दीर्घिका] तालाब, बावली ।
डिठार—वि. [हिं. डीठ=नजर] आँखोंवाला ।
डिठियारा—वि. [हिं. डीठि+आरा (प्रत्य.)] आँखोंवाला, जिसको अच्छी तरह सुझायी देता हो ।
डिठोहरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डीठि + हरना] एक जंगली फल के बीज जो नजर से बचाने के लिए बच्चों को पहनाये जाते हैं ।
डिठौना, डिठौरा—संज्ञा पुं. [हिं. डीठ] काजल का टीका जो बच्चों को नजर से बचाने के लिए लगाया जाता है । उ.—सिर चौतनी, डिठौना दीन्हौ, आँखि आँजि पहिराइ निचोल—१०-९४ ।
डिढ़—वि. [सं. दृढ़] पक्का, मजबूत ।
डिढ़ाना—क्रि. स. [हिं. दृढ़] (१) पक्का या मजबूत करना । (२) संकल्प करना, निश्चय ठानना ।
डिढया—संज्ञा स्त्री. [देश.] लालच, तृष्णा ।
डित्थ—संज्ञा पुं. [सं.] विशेष गुणवाला व्यक्ति ।
डिबिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. डिब्बा] छोटा डिब्बा ।
डिब्बा—संज्ञा पुं. [हिं. डब्बा] छोटा ढक्कनदार पात्र, संपुट ।
डिभगना—क्रि. स. [देश.] मोहित करना ।
डिम—संज्ञा पुं. [सं.] नाटक का एक भेद ।
डिमडिमी—संज्ञा स्त्री. [सं. डिंडिम] चमड़ा मढ़ा एक प्राचीन बाजा, डुगडुगी । उ.—डिमडिमी पटह ढोल डफ बीना मृदंग उपँग चँगतार ।
डिल्ला—संज्ञा पुं. [सं.] एक छंद ।
संज्ञा पुं. [हिं. टीला] बैलों का कूबड़ ।
डींग—संज्ञा स्त्री. [सं. डीन=उड़ान] खूब बढ़ बढ़कर कही हुई बात, शेखी ।
मुहा.—डींग की लेना—शेखी बघारना ।
डीकरी—संज्ञा स्त्री. [सं. डिंबक] बेटी, पुत्री ।
डीठ—संज्ञा स्त्री. [सं. दृष्टि, प्रा. दिट्ठि, डिट्ठि] (१) दृष्टि, निगाह, नजर ।
मुहा.—डीठ चुराना (छिपाना)—आँख न मिलाना, सामने न ताकना । डीठ जोड़ना—नजर मिलाना, सामने देखना । डीठ बाँधना—ऐसा जादू-टोना करना कि सामने की चीज भी ठीक ठीक न दिखायी दे । डीठ मारना—नितवन से मोह लेना । डीठ रखना—देख-रेख रखना । डीठ लगाना—नजर लगाना ।
(२) देखने की शक्ति । (३) समझ, बुद्धि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डीठना—क्रि. अ. [हिं. डीठ+ना] दिखायी देना।

डीठबंध—संज्ञा पुं. [सं. दृष्टिबंध] (१) ऐसा जादू-टोना कि सामने की चीज भी साफ साफ न दिखायी दे। (२) ऐसा जादू-टोना करनेवाला।

डीठि—संज्ञा स्त्री. [हिं. डीठ] (१) नजर का कुप्रभाव। उ.—(क) बाहेर जिनि कबहूँ खेये सुत डीठि लगैगी काहू की—१०४। (ख) डीठि लगावति कान्ह कौ जरैं बरैं वै आँखि—१०-६६। (२) दृष्टि। (३) देखने की शक्ति। (४) समझ, बुद्धि।

डीठिमूठि—संज्ञा स्त्री. [हिं. डीठि+मूठ] नजर, टोना।

डीन—संज्ञा स्त्री. [सं.] पक्षियों की उड़ान।

डीबुआ—संज्ञा पुं. [देश.] पैसा।

डीमडाम—संज्ञा पुं. [सं. डिंब=धूमधाम] (१) ऐंठ, ठसक। (२) धूमधाम, ठाटबाट, आडंबर।

डील—संज्ञा पुं. [देश.] (१) शरीर की ऊँचाई या विस्तार, कद, उठान।

यौ.—डील डौल—(१) शरीर की लंबाई-चौड़ाई। (२) शरीर का ढांचा या आकृति, काठी।

(२) शरीर, देह। (३) प्राणी, मनुष्य।

डीह—संज्ञा पुं. [फ़ा. देह] (१) गाँव, आबादी। (२) उजड़े हुए गाँव का टीला। (३) ग्राम-देवता।

डुंग—संज्ञा पुं. [सं. तुंग=ऊँचा] (१) ढेर, अंबार। (२) टीला, भीटा, पहाड़ी।

डुंगरनि—संज्ञा पुं. [सं, तुंग=पहाड़ी, हिं, डूँगर] टीला, भीटा, दूह। उ.—बृंदा आदि सकल बन ढूढ़यौ, जहँ गाइनि की टेर। सूरदास प्रभु दुरत दुराए, डुँगरनि ओट सुमेर—४५८।

डुंड—संज्ञा पुं. [सं. दंड] पेड़ या उसकी डाल जिसमें पत्ते आदि न हों।

संज्ञा पुं. [हिं. डौंड़ी] डुगडुगी, डौंड़ी।

डुंड, डुंडु, डुंडुभ—संज्ञा पुं. [सं.] पानी का साँप।

डुंडुल—संज्ञा पुं. [सं.] छोटा उल्लू।

डुक, डुक्का—संज्ञा पुं. [अनु.] घूँसा, मुक्का।

डुकिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. डोकिया] काठ का कटोरा।

डुकियाना—क्रि. स. [हिं. डुंक] घूँसे मारना।

डुगडुगाना—क्रि. स. [अनु.] डुगडुगी बजाना।

डुगडुगी, डुग्गी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] चमड़ा मढ़ा ए[क] छोटा बाजा, डौंगी, डौंड़ी।

मुहा.—डुगडुगी पीटना—चारों ओर प्रकट करना।

डुड़—संज्ञा पुं. [सं. दादुर] मेढक।

डुपटना—क्रि. स. [हिं. दो+पट] (किसी वस्त्र आदि को) तहाना, चुनियाना, चुनना।

डुपट्टा—संज्ञा पुं. [हिं. दुपट्टा] दो पाट की चादर।

डुबकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डूबना] (१) पानी में डूबने की क्रिया, गोता, बुड़की। (२) पीठी की बिना तली बड़ियाँ। (३) एक तरह की बटेर,

डुबवाना—क्रि. स. [हिं. डुबाना का प्रे.] पानी में डुबाने का काम दूसरे से करना।

डुबाना—क्रि.स.[हिं.डूबना](१) पानी या किसी द्रव पदार्थ में गोता देना, बोरना। (२) चौपट या नष्ट करना।

मुहा.—नाम डुबाना—नाम या यश को कलंकित करना, नाम या यश पर धब्बा लगाना। लुटिया डुबाना—(१) महत्व या बड़ाई खोना। (२) काम बिगाड़ना। वंश डुबाना—कुल की प्रतिष्ठा खोना।

डुबाव—संज्ञा पुं. [हिं. डूबना] पानी की इतनी गहराई जिसमें कोई प्राणी डूब जाय।

डुबोना—क्रि. स. [हिं. डुबोना] डुबकी देना।

डुब्बी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डुबकी] गोता, डुब्बी।

डुभकौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डुबकी+बरी] पीठी की बिना तली बड़ियाँ जो पीठी के झोल में पकायी जाती हैं।

डुलत—क्रि. अ. [हिं. डुलना, डोलना] हिलती है, चलायमान होती है। उ.—डुलत नहिं द्रुम-पत्र बेली, थकित मंद-समीर—६५८।

डुलति—क्रि. अ. [हिं. डोलना] हिलती-डुलती है, चलायमान होती है। उ.—डोलत तन सिर-अंचल उघरयौ, बेनी पीठि डुलति इहिं भाइ—१०-२६८

डुलना—क्रि. अ. [हिं. डोलना] हिलना-डोलना।

डुलाए—क्रि. स. [हिं. डोलना] हिलाया, चलायमान किया। उ.—लिखि लिखि मम अपराध जनम के चित्रगुप्त अकुलाए। भृगु रिषि आदि सुनत चकित भए, जम सुनि सीस डुलाए—१-१२५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डुलाना—क्रि. स. [हिं. डोलना] (१) **हिलाना, गति में लाना। (२) भगाना। (३) घुमाना, टहलाना।**

डुलाय—क्रि. स. [हिं. डुलाना] **घुमाकर।** उ.—द्वारे पैठत कुंजर मार्‍यौ डुलाय धरनी डार्‍यौ—२६१८।

डुलावत—क्रि. स. [हिं. डुलाना] **हिलाती-डुलाती है, चलायमान करती है।** उ.—(क) दधि लै मथति ग्वालि गरबीली। रुनक-झुनक कर कंकन बाजै, बाँह डुलावत ढीली—१०-२६६। (ख) सूरदास मानहु करभा-कर बारंबार डुलावत—६३२। (ग) मानहुँ मूक मिठाई के गुन, कहि न सकत मुख, सीस डुलावत—६४८।

डुलावति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. डुलाना] **हिलाती-डुलाती है, चलायमान करती है।** उ.—मुरली तऊ गुपालहिं भावति। ······ ।सूर प्रसन्न जानि एकौ छिन, धर तैं सीस डुलावति—६५५।

डुलावन—क्रि. स. [हिं. डुलाना] **चलाना-फिराना, घुमाना, टहलाना।** उ.—जसुमति बाल-बिनोद जानि जिय, उहीं ठौर लै आई। दोउ कर पकरि डुलावन लागी, घट मैं नहिं छबि पाई—१०-१५६।

डुलावै—क्रि. स. [हिं. डुलाना] (१) **हिलाता है, चलायमान करता है।** उ.—(क) बहत पवन, भरमत ससि-दिनकर, फनपति सिर न डुलावै—१-१६३। (ख) असुर-सुता तिहिं ब्यजन डुलावै—६-१७४। (२) **चंचल करता है, विचलित करता है।** उ.—ऐसैं सूर कमल-लोचन तैं चित नहिं अनत डुलावै हो—२-१०।

डुलि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मादा कछुआ, कछुई।**

डुलै—क्रि. अ. [हिं. डुलना, डोलना] **हिलता-डुलता है, चलायमान होता है।** उ.—डुलै सुमेरु, शेष-सिर कंपै, पच्छिम उदै करै बासरपति—६-८२।

डूँगर—संज्ञा पुं. [सं. तुंग=पहाड़ी] (१) **टीला, भीटा, ढूह।** उ.—सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि कैसे दुरत दुराय कहौ धौं डूँगर ओट सुमेर। (२) **छोटी पहाड़ी।** उ.—छिन ही मैं ब्रज धोइ बहावै। डूँगर को कहुँ पार न पावै।

डूँगरी—संज्ञा पुं. [हिं. डूँगर] **छोटी पहाड़ी।**

डूज—संज्ञा स्त्री. [देश.] **आँधी, तेज हवा।**

डूँडा—वि. [सं. त्रुटि, हिं. टूटना] **एक सींगवाला।**

डूकना—क्रि. स. [सं. त्रुटि+करण] **भूल करना।**

डूब—क्रि. अ. [हिं. डूबना] **पानी आदि में डूबकर।**

मुहा.—(चुल्लू भर पानी में) डूब मरना—**शर्म या लाज से मुँह छिपाना।**

डूबता—वि. [हिं. डूबना] **जो डूब रहा हो।**

डूबते—वि. [हिं. डूबता] **जो डूब रहे हों।**

मुहा.—डूबते को तिनके का सहारा—**विपत्ति में पड़े हुए व्यक्ति को जरा सी सहायता भी बहुत होती है।**

डूबना—क्रि. अ. [अनु. डुबडुब] (१) **पानी या अन्य द्रव पदार्थ के भीतर जाना, गोता खाना, बूड़ना।**

मुहा.—डूबना-उतराना—(१) **सोच या चिंता में पड़ जाना।** (२) **घबराना।** जी डूबना—(१) **जी घबराना।** (२) **बेहोशी होना।**

(२) **ग्रह-नछत्र आदि का अस्त होना।** (३) **चौपट, नष्ट या बरबाद होना।**

मुहा.—नाम डूबना—**मान-मर्यादा नष्ट होना।**

(४) **पूंजी नष्ट होना।** (५) **लड़की का बुरे घर ब्याहा जाना।** (६) **विचार या ध्यान में लीन होना।**

डेड़हा—संज्ञा पुं [सं. डुंडुभ] **पानी का साँप।**

डेढ़—वि. [सं. अध्यर्द्ध, प्रा. डिड्यढ] **एक और आधा।**

मुहा.—डेढ़ ईंट की जुदा मसजिद खड़ी करना (बनाना)—**ऐंठ और अकड़ के कारण सबसे अलग काम करना।** डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना—**अपना मत या काम सबसे अलग रखना।**

डेढ़ा—वि. [हिं. डेढ़] **डेढ़ गुना, डेवढ़ा।**

डेबरा—वि. [देश.] **बायें हाथ से काम करनेवाला।**

डेर—संज्ञा पुं. [हिं. डर] **भय, आशंका।**

डेरा—संज्ञा पुं. [हिं. डालना या ठहराना] (१) **टिकान, पड़ाव, ठहरने का काम या भाव।**

मुहा.—डेरा दयो (दियो)—**ठहरे, टिके, रह गये।** उ.—(क) ता आस्रम सजात नृप गयौ। तहाँ जाइकै डेरा दयौ—६-३। (ख) लंकपुर आइ रघुराइ डेरा दियौ, तिया जाकी सिया मैं लै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयौ—९-१४२ ।

(२) **टिकने का सामान या आयोजन ।**

यौ.—डेरा-डंडा—**बोरिया-बँधना, माल असबाब ।**

मुहा.—डेरा डालना—**टिकना, ठहरना, रुकना ।** डेरा पड़ना–**टिकान होना, छावनी पड़ना ।** डेरा परे–**छावनी छायी गयी, टिकने का आयोजन किया गया ।** उ.—भरि चौरासी कोस परे गोपन के डेरा । डेरा-डंडा उखाड़ना (हटाना)—**टिकने या ठहरने का सामान समेटना ।**

(३) **ठहरने का स्थान ।** (४) **खेमा, तंबू ।** (५) **नाचने-गानेवालों की मंडली ।** (६) **घर, निवासस्थान ।**

वि. [सं. डहर] **बायाँ ।**

संज्ञा पुं. [देश.] **एक छोटा जंगली पेड़ ।**

डेराई—क्रि. अ. [हिं. डरना] **डरती है, भयभीत होती है ।** उ.—सुनहु सूर माता रिस देखत राधा सकुचि डेराई ।

डेराऊँ—क्रि. अ. [हिं. डरना] **डरता हूँ ।** उ.—जब परतीति होइ या जुग की परमिति छुटत डेराऊँ—१२३१ ।

डेराना—क्रि. अ. [हिं. डरना] **भयभीत होना ।**

डेरानी—क्रि. अ. [हिं. डेराना] **डरी, भयभीत हुई ।** उ.—मैं कछू कपट सवन सौं कीन्हौ अपजस तैं न डेरानी—१००८ ।

डेराने—क्रि. अ. [हिं. डरना] **डरे, भयभीत हुए ।** उ.—देव भोग को रहत डेराने—१००८ ।

डेरानो—क्रि. अ. [हिं. डरना] **डरा, भयभीत हुआ ।** उ.—सूर सोच मुख देख डेरानो ऊरध लेत उसाँस—२४६५ ।

डेरे—संज्ञा पुं. [हिं. डेरा] **डेरा, टिकान ।**

मुहा.—दए आनि डेरे—**डेरा डाला, ठहरे, आकर टिके ।** उ.—सुनि अरे सठ, दसकंठ कौं कौन डर, राम तपसी दए आनि डेरे—९-१२९ ।

डेरो, डेरौ—संज्ञा पुं. [हिं. डेरा] **पड़ाव, जमाव, टिकान ।** उ.—(क) कहा भयौ जौ संपति बाढ़ी, कियौ बहुत घर घेरौ । कहुँ हरि-कथा, कहूँ हरि-पूजा, कहुँ संतनि कौ डेरौ—१-२६६ । (ख) कोटि छ्यानबे मेघ बुलाये आनि कियो ब्रज डेरो—९५९ ।

(२) **टिकने का आयोजन या सामान ।**

मुहा.—डेरो परयो—**टिके, छावनी डाली ।** उ.—डेरो परयौ कोस चौरासी—१०३६ ।

डेल—संज्ञा पुं. [सं. डंडुल] **उल्लू पक्षी ।**

संज्ञा पुं. [सं. दल, हिं. डला] **पत्थर या ईंट का टुकड़ा, रोड़ा, ढेला ।** उ.—नाहिंन राम रसिक रस चाख्यौ तातें डेल सों डारो ।

डेला—संज्ञा पुं. [सं. दल] **आँख का कोया ।**

संज्ञा पुं. [हिं. ठेलना] **वह काठ जो नटखट चौपायों के गले में बाँधा जाता है, ठेंगुर ।**

डेली—संज्ञा स्त्री. [हिं. डला] **बाँस की डलिया, झाँपी ।**

डेवढ़—वि. [हिं. डेवढ़ा] **डेढ़ गुना, ड्योढ़ा ।**

डेवढ़ना—क्रि. स. [हिं. डेवढ़ा] (१) **आँच पर रोटी फुलाना ।** (२) **कपड़े तहाना ।**

डेवढ़ा—वि. [हिं. डेढ़] **डेढ़ गुना ।**

डेवढ़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ड्योढ़ी] **दरवाजा, पौरी ।**

डेहरी, डेहल—संज्ञा स्त्री. [सं. देहली] **दहलीज ।**

डैना—संज्ञा पुं. [सं. डयन=उड़ना] **पंख, पर, पक्ष ।**

डोंगर—संज्ञा पुं. [सं. तुंग=पहाड़ी] **पहाड़ी, टीला, भीटा ।** उ.—(क) एक फूँक बिष ज्वाल के जल डोंगर जरि जाहि । (ख) डोंगर को बल उनहिं बताऊँ—१०४३ । (ग) वै बरखत डोंगर बन धरनी सरिता कूप तड़ाग—पृ. ३३० ।

डोंगरि, डोंगरी—संज्ञा स्त्री. अल्प. [हिं. डोंगर] **छोटी पहाड़ी, टीला ।** उ.—वृंदाबन ढूँढयौ जमुना तट देख्यौ बन डोंगरी मँझारी—१५७७ ।

डोंगा—संज्ञा पुं. [सं. द्रोण] **बिना पाल की नाँव ।**

डोंगी—संज्ञा स्त्री. अल्प. [सं. द्रोणी] **छोटी नाँव ।**

डोंड़ा—संज्ञा पुं. [सं. तुंड] (१) **बड़ी इलायची ।** (२) **टोंटा, कारतूस ।**

डोंड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] **टोंटी ।**

संज्ञा स्त्री. [सं. द्रोणी] **छोटी नाँव, डोंगी ।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. डौंड़ी] **ढिंढोरा ।**

डोक—संज्ञा पुं. [देश.] **पकी हुई खजूर ।**

डोकर, डोकरड़ो, डोकरा, डोकरो—संज्ञा पुं. [सं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुष्कर] (१) बूढ़ा या शक्तिहीन मनुष्य। (२) पिता, बाप।

डोकरिया, डोकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डोकरा] (१) बूढ़ी या शक्तिहीन स्त्री। (२) माता।

डोकिया, डोकी—संज्ञा स्त्री. [सं. द्रोणक=काठ का कटोरा] काठ की छोटी कटोरी।

डोगर—संज्ञा पुं. [हिं. डोंगर] पहाड़ी, टीला।

डोड़हथी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाँड़ा+हाथ] तलवार।

डोड़हा—संज्ञा पुं. [सं. डुंडुभ] पानी का साँप।

डोब, डोबा—संज्ञा पुं. [हिं. डूबना] गोता, डुबकी।

डोभरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] ताजा महुआ।

डोम, डोमड़ा—संज्ञा पुं. [सं. डम] एक नीच जाति।

डोमनी, डोमिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. डोम] डोम स्त्री।

डोमा—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का साँप।

डोर—संज्ञा स्त्री. [सं] डोरा, तागा, धागा, सूत। उ.—(क) रतन जटित बर पालनो रेसम लागी डोर, बलि हालरु रे—१०-४७। (ख) देत छबि अति गिरत उर पर अंबु-कन के जोर। ललित हिय जनु मुक्त-माला, गिरति टूटैं जोर—३५८। (ग) अलकावलि मुकुतावलि गँथी डोर सुरंग बिराजै—सारा. १७३।

मुहा.—डोर पर लगाना—ठीक रास्ते या ढंग पर लगाना। डोर मजबूत होना—जिंदगी बाकी होना। डोर होना—मोहित होना।

क्रि. स. [हिं. डोलना] हिलता-डुलता (है), चलायमान होता (है)। उ.—सजल चपल कनीनिका पल अरुन ऐसें डोर (ल)। रस भरे अंबुजनि भीतर भ्रमत मानौ भौंर—१७३।

डोरक—संज्ञा पुं. [सं.] डोरा, तागा, सूत।

डोरा—संज्ञा पुं. [सं. डोरक] (१) सूत, तागा, धागा। उ.—आसा करि-करि जननी जायौ, कोटिक लाड़ लड़ायौ। तोरि लयौ कटिहू कौ डोरा, तापर बदन जरायौ—२-३०। (२) धारी, लकीर। (३) आँखों की महीन लाल नसें। (४) तलवार की धार। (५) तपे हुए घी की धार ऊपर से डालना। (६) खड़े फल की कलछी। (७) प्रेम का बंधन, लगन।

मुहा.—डोरा डालना—प्रेम में फँसाना। डोरा लगना—प्रेम में फँसना।

(८) किसी चीज़ के खोजने का पता या सुराग। (९) काजर या सुरमे की रेखा।

संज्ञा पुं. [हिं. ढोंड़] पोस्ते आदि का डोडा।

डोरि, डोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डोरा, डोरी] (१) डोरी, रस्सी। उ.—ज्यौं कपि डोरि बाँधि बाजीगर, कन-कन कौं चौहटैं नचायौ—१-३२६। (२) पतला तागा या धागा, डोर। उ.—अति आधीन भई सँग डोलत ज्यों गुड्डी बस डोरि—पृ. ३३३। (३) मंगलसूत्र, सूत की बटी हुई डोरी। (४) पाश, बंधन, बाँधने की डोरी। उ.—तब कर-डोरि छुटै रघुपति जू जब कौसिल्या माता आवै—९-२५। (४) पाश, बंधन, बांधने की डोरी। उ.—(क) जनम सिरानौ अटकैं-अटक। राज-काज, सुत-बित की डोरी, बिनु बिवेक फिरयौ भटकैं—१-२९२। (ख) मैं-मेरी करि जनम गँवावत जब लगि नाहिं परति जम डोरी—१-३०३। (५) प्रेम का बंधन, स्नेह-सूत्र। उ.—(क) बात कहौं तेरैं ढोटा की सब ब्रज बाँध्यौ प्रेम की डोरि—१०-३२७। (ख) काके भये कौन के ह्वै हैं बँधे कौन की डोरी—२८६३। (ग) काको मान परेखो कीजै बँधी प्रेम की डोरी—३१११।

डोरिया—संज्ञा पुं. [हिं. डोरा] मोटे सूत की धारियों वाला सूती कपड़ा।

डोरियाना—क्रि. स. [हिं. डोरी+आना (प्रत्य.)] पशुओं को डोरी से बाँधकर ले चलना।

डोरिहार—संज्ञा पुं [हिं. डोरी+हारा] रंगीन सूतों से बिनने का काम करनेवाला, पटवा।

डोरिहारिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. डोरिहार] पटवे की स्त्री।

डोरे—संज्ञा स्त्री. [हिं. डोर, डोरी] डोर, तागा। उ.—ज्यों डोरे बस गुडी देखियत डोलत संग अधीने—पृ. ३३५।

क्रि. वि.—साथ-साथ, संग-संग, एक साथ।

डोल—क्रि. स. [सं. दोल, हिं. डोलना] हिलता-डुलता (है), चलायमान होता (है)।

वि.—[हिं. डोलना] चंचल, हिलता हुआ।

संज्ञा स्त्री, [हिं, डोलना] हिलने-डुलने की क्रिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या भाव, हिलना-डुलना । उ.—कीधौं मोर मुदित नाचत की वरहि मुकुट की डोल—१६२८ ।

संज्ञा पुं. [सं. डोल = झूलना, लटकना] (१) कुएँ से पानी भरने का लोहे का पात्र । (२) हिंडोला, झूला, पालना । उ.—सघन कुंज में डोल बनायो झूलत हैं पिय प्यारी । (३) डोली, पालकी, शिविका ।

संज्ञा स्त्री. [देश.] एक तरह की काली मिट्टी ।

डोलक—संज्ञा पुं. [सं.] ताल देने का एक बाजा ।

डोलची—संज्ञा स्त्री. [हिं. डोल] (प्रत्य.) (१) छोटा डोल । (२) डोल के आकार की बाँस की पिटारी ।

डोलडाल—संज्ञा पुं. [हिं. डोलना] चलना-फिरना ।

डोलत—क्रि. स. [हिं. डोलना] (१) घूमते-फिरते हैं । उ.—(क) भक्त-विरह-कातर करुनामय डोलत पाछैं लागे—१-८ । (ख) आनंद मगन भए सब डोलत कछू न सोध सरीर—६-१८ । (२) चलता-फिरता है, सजीव है । उ.—जब लगि डोलत बोलत चितवत धन-दारा हैं तेरे—१-३१६ ।

डोलति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. डोलना] घूमती-फिरती है । उ.—दर-दर लोभ लागि लियें डोलति, नाना स्वाँग बनावै—१-४२ ।

डोलन—क्रि. स. [हिं. डोलना] हिलने-डुलने (लगे), चलायमान (हुए) । उ.—सेष सहस फन डोलन लागे, हरि पीवत जब पाइ—१०-६४ ।

संज्ञा स्त्री.—घूमने-फिरने की क्रिया या भाव । उ. —संझा समय घोष की डोलन वह सुधि क्यौं बिसरै —२८०३ ।

डोलना—संज्ञा पुं. [सं. दोलन=लटकना, हिलना, हिं. डोला] बच्चों का पालना, ढोलना । उ.—अगरु चँदन कौ पालनौ (रँगि), इंगुर ढार सुढार । लै आयौ गढ़ि डोलना (हो), बिसकर्मा सुतहार—१०-४० ।

क्रि. स.—(१) हिलना, चलायमान होना । (२) चलना, फिरना, टहलना । (३) हटना, दूर होना । (४) चित्त विचलित होना या डिगना ।

डोलनि—संज्ञा पुं. [हिं. डोलना] डोलने या हिलने-डुलने की क्रिया । उ.—(क) बदन सरोज तिलक गोरोचन, लट लटकनि मधुकर-गति डोलनि—१०-१२१ । (ख) सोभित अति कुंडल की डोलनि मकराकृति श्री सरस बनाई—६३० ।

डोलरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डोल] (१) पलँग, खाट, चा[illegible] पाई । (२) झोली ।

डोला—संज्ञा पुं. [सं. दोल] (१) पालकी, शिविका ।

मुहा.—डोला लेना—भेंट में कन्या लेना । (२) झूले का झोंका या पेंग ।

क्रि. स.—(१) हिला-डुला । (२) चंचल हु[illegible]

डोलाइ—क्रि. स. [हिं. डोलना] हिला-डुलाकर, [illegible] कर, गति देकर, पेंग या झोंका देकर । उ.—[illegible] हालरु रे । गढ़ि-गुढ़ि ल्यायौ बाढ़ई, धरनी डोलाइ, बलि हालरु रे—१०-४७ ।

डोलाना—क्रि. स. [हिं. डोलना] (१) हिला[illegible] चलाना, गति में करना । (२) दूर करना, भगान[illegible]

डोली—संज्ञा स्त्री. [हिं. डोला] पालकी या शिवि[illegible] की सवारी जिसमें प्रायः स्त्रियाँ बैठती हैं ।

क्रि. स. स्त्री. भूत.—(१) हिली-डुली । ([illegible] हटी, सरकी । (२) विचलित या चंचल हुई ।

डोले, डोलै—क्रि. स. भूत. [हिं. डोलना] (१)[illegible] फिरे । उ.—पांडव-कुल के सहाय भये हरि जहँ[illegible] संगहिं डोले—सारा. ७७३ । (२) हिले-डुले । उ[illegible] डोलै गगन सहित सुरपति अरु पुहुमि पलटि[illegible] परई—६-७८ ।

डोलौ—क्रि. सं. [हिं. डोलना] घूमते-फिरते हो[illegible] उ.—(क) भये त्रिया के बस निसि जागे स[illegible] भोर भए उठि आए भूले काहे डोलौ—२६५[illegible] (ख) सूर जोग लै घर घर डोलौ लेहु लेहु[illegible] सूप—३२२३ ।

डोहरा—संज्ञा पुं. [देश.] काठ का एक पात्र ।

डोही—संज्ञा स्त्री. [हिं. डोकी] काठ की बड़ी कलछ[illegible]

डौंड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. डिंडिम] (१) ढिंढोरा पीटने[illegible] ढोल या डुगडुगिया ।

मुहा.—डौंड़ी देना—(१) घोषणा करना, मुन[illegible] करना । (२) सबसे कहते फिरना । डौंड़ी बजना[illegible] (१) घोषणा होना । (२) जयजयकार होना । डौं[illegible] बाजी—दुहाई फिरी, जयजयकार हुई । उ.[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौड़ी के घर डौंड़ी बाजी जब बढ़्यौ स्याम अनुराग —३०६५।

(२) जनता को दी जानेवाली सूचना, घोषणा।

डौंरु, डौंरू—संज्ञा पुं. [हिं. डमरू] डमरू। उ.—खुनखुना करि हँसत मोहन नचत डौंरु बजाइ।

डौआ—संज्ञा पुं. [देश.] काठ का चमचा या करछुल।

डौर, डौल—संज्ञा पुं. [हिं. डोल] (१) ढाँचा, रूपरेखा।

मुहा.—डौल डालना—ढाँचा या रूपरेखा तैयार करना। डौल पर लाना--काट-छाँटकर ठीक करना।

(२) बनावट या रचना का ढंग।

मुहा.—डौल से लगाना—उचित क्रम से सजाना।

(३) तरह, प्रकार, भाँति। (४) उपाय, ब्योंत।

मुहा.—डौल पर लाना—राजी करना, साध लेना। डौल बाँधना (लगाना)—उपाय या युक्ति बैठाना, जुगत लगाना।

(५) रंग-ढंग, लक्षण। (६) आय का अनुमान, तखमीना।

संज्ञा स्त्री.—खेतों की मेड़, डाँड़।

डौलडाल—संज्ञा पुं. [हिं. डौल] उपाय, ब्योंत।

डौलदार—वि. [हिं. डौल+फ़ा. दार] सुडौल, सुंदर।

डौलना—क्रि. स. [हिं. डौल] काटछाँट से ठीक करना, सुडौल बनाना।

डौलियाना—क्रि. स. [हिं. डौल] (१) ढंग पर लाना, साध लेना। (२) काट-छाँट कर ठीक करना।

ड्योढ़ा—वि. [हिं. डेढ़] डेढ़गुना।

ड्योढ़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. देहली] (१) चौखट, दरवाजा, फाटक। (२) बाहरी कमरा, दहलीज, पौरी।

ड्योढ़ीदार—संज्ञा पुं. [हिं. ड्योढ़ी+फ़ा. दार] द्वारपाल।

ड्योढ़ीवान—संज्ञा पुं. [हिं. ड्योढ़ी + वान् (प्रत्य.)] ड्योढ़ी का सिपाही, द्वारपाल, दरबान।

ढ

ढ—देवनागरी वर्णमाला का चौदहवाँ और टवर्ग का चौथा व्यंजन; इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।

ढँकन—संज्ञा पुं. [हिं. ढकना] ढकना, ढक्कन।

संज्ञा स्त्री.—ढँकने की क्रिया या भाव।

ढँकना—क्रि. स. [हिं. ढकना] मूँदना, ढाँपना।

संज्ञा पुं.—मूँदने की चीज, ढक्कन।

ढँकुली—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढेंकली] ढेंकी, ढेंकली।

ढंख—संज्ञा पुं. [सं. आषाढ़क] ढाक, पलाश।

ढँग, ढंग—संज्ञा पुं. [सं. तंग (तंगन)=चाल, गति] (१) ढब, रीति, तौर-तरीका। (२) प्रकार, भाँति, किस्म, तरह। (३) बनावट, गढ़न, ढाँचा। (४) युक्ति, उपाय, तदबीर।

मुहा.—ढंग पर चढ़ना—काम निकलने या मतलब पूरा होने के अनुकूल होना। ढंग पर लाना--काम निकालने या मतलब पूरा करने के किसी को अनुकूल करना। ढंग का—कुशल, चतुर, उपयुक्त।

(५) चाल-ढाल, आचरण, व्यवहार, बर्ताव। उ.—(क) गज कौं कहा अन्हवाएँ सरिता बहुरि धरै वह ढंग—१-३३२। (ख) बारे तैं सुत ये रँग लाए मनहीं मनहिं सिहाति—१०-३२८। (ग) राधे ये ढँग हैं री तेरे—७१८। (घ) अबहीं तैं तू करति ये ढँग, तोहिं अबही होन—७१९। (ङ) लै करि चीर कदम पर बैठे, किन ऐसैं ढँग लाए—७६४। (च) उधौ हरि के अवरै ढंग—३३२७।

मुहा.—ढंग बरतना--दिखावटी व्यवहार करना।

(६) धोखा देने का बहाना, हीला-बहाना, पाखंड। उ.—सुनहु सूर नृप यहि ढँग आयौ, बल मोहन पर घात—५२७। (७) लक्षण, आभास, आसार।

यौ.—रंग-ढंग—(१) आभास, लक्षण, आसार। (२) काम, करतूत, व्यवहार की रीति-नीति।

(८) दशा, अवस्था, स्थिति।

ढँगलाना—क्रि. स. [हिं. ढाल] लुढ़काना।

ढँगिया, ढंगी—वि. [हिं. ढंग] चालबाज, काँइयाँ।

ढँढरच—संज्ञा पुं. [हिं. ढंग + रचना] धोखा देने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीला या बहाना, पाखंड का आयोजन ।

ढंढार—वि. [देश.] **बड़ा और बेढंगा ।**

ढँढोर—क्रि. स. [हिं. ढँढोरना] **हाथ से टटोलकर, इधर-उधर ढूँढ़कर ।** उ.—हरि सों हीरा खोइकै, हौं रही समुद्र ढँढोर—३३८३ ।

संज्ञा पुं. [अनु. धायँ धायँ] **(१) आग की लौ, लपट या ज्वाला । (२) काले मुँह का बंदर, लंगूर ।**

ढँढोरची—संज्ञा पुं. [हिं. ढिंढोरा+फ़ा. ची (प्रत्य.)] **ढिंढोरा पीटनेवाला, मुनादी फेरनेवाला ।**

ढँढोरना—क्रि. स. [हिं. ढूँढ़ना] **हाथ डाल कर टटोलना, हाथ से इधर-उधर ढूँढ़ना या खोजना ।**

ढँढोरा—संज्ञा. पुं. [अनु. ढम + ढोल] **(१) घोषणा करने का ढोल, डुग्गी, डौंड़ी ।**

मुहा.—ढँढोरा पीटना—**डुग्गी पीट कर सबको सूचना देना, मुनादी फेरना ।**

(२) वह घोषणा जो डुग्गी पीटकर की जाय ।

ढँढोरि—क्रि. स. [हिं. ढूँढ़ना, ढँढोरना] **टटोलकर, हाथ से (इधर-उधर) ढूँढ़कर ।** उ.—तेरैं लाल मेरौ माखन खायौ । दुपहर दिवस जानि घर सूनौ, ढूँढ़ि ढँढोरि आपही आयौ—१०-३३१ ।

ढँढोरिया—संज्ञा पुं. [हिं. ढँढोरा] **डुग्गी पीटनेवाला ।**

ढँपना—क्रि. अ. [हिं. ढँकना] **किसी चीज के नीचे छिपना, किसी चीज की आड़ या ओट में होना ।**

संज्ञा पुं.—**ढकने की चीज, ढक्कन ।**

ढ—संज्ञा पुं [सं.] **(१) बड़ा ढोल । (२) कुत्ता । (३) कुत्ते की पूँछ । (४) ध्वनि । (५) साँप ।**

ढई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढहना] **देर तक रुकना ।**

मुहा.—ढई देना—**धरना देना ।**

ढकई—वि. [हिं. ढाका] **ढाके का ।**

ढकना—संज्ञा पुं. [सं. ढक=छिपना] **ढक्कन ।**

क्रि. अ.—**छिपना, ओट में होना ।**

ढकनियाँ, ढकनिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढकनी] **ढांकने का छोटा या हल्का ढक्कन, ढकनी ।** उ.—सुभग ढकनियाँ ढाँपि बाँधि पट जतन राखि छीके समदायो—११७९ ।

ढकनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढकना] **(१) ढकने की छोटी चीज, ढक्कन । (२) हथेली के पीछे का गोदना ।**

ढका—संज्ञा पुं. [सं. ढक्का] **बड़ा ढोल ।**

संज्ञा पुं. [अनु.] **धक्का, टक्कर ।**

ढकि—क्रि. अ. [हिं. ढकना] **(१) ढककर, ओढ़ाकर ।**

प्र.—ढकि लइ—**ढक लिया, ओढ़ा कर लिया ।** उ.—पकरयौ चीर दुष्ट दुस्सासन, बिलख बदन भइ डोलै । जाकैं मीत नंदनंदन से, ढकि लइ पीत पटोलै—१-१५६ ।

(२) छिपाकर, ओट या आड़ में रखकर । उ.—तुम चुप करि रहौ ज्ञान ढकि राखो क़त हो बिरह बढ़ावत—३११५ ।

ढकिल—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढकेलना] **धावा, आक्रमण ।**

ढकेलना—क्रि. स. [हिं. धक्का] **(१) धक्के से गिराना । (२) ठेल कर हटाना या सरकाना ।**

ढकेला ढकेली—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढकेलना] **धक्कमधक्का ।**

ढकोसना—क्रि. स. [अनु. ढकढक] **एक बार में का ढेर या बहुत सा पानी पीना ।**

ढकोसला—संज्ञा पुं. [हिं. ढंग + कौशल] **धोखा या मतलब निकालने का कपट व्यवहार, पाखंड ।**

ढक्कन—संज्ञा पुं. [सं.] **ढाँकने की चीज ।**

ढक्का—संज्ञा स्त्री. [सं.] **ढोल, नगाड़ा, डंका ।**

ढक्की—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढाल] **पहाड़ी ढाल ।**

ढखनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढकना] **ढक्कन ।**

ढगण—संज्ञा पुं. [सं.] **तीन मात्राओं का एक गण ।**

ढचर—संज्ञा पुं. [हिं. ढाँचा] **(१) ढाँचा, आयोजन । (२) झगड़ा-बखेड़ा, जंजाल । (३) कार-बार, धंधा । (४) आडंबर, पाखंड, ढकोसला ।**

ढटींगड़, ढटींगड़ा, ढटींगर—वि. [सं. डिंगर = मोटा आदमी] **(१) बड़े डीलवाला। (२)मोटा-ताजा, मुस्तंड ।**

ढट्ठा—संज्ञा पुं. [हिं. डाढ़] **बड़ा साफा या मुरेठा ।**

संज्ञा पुं. [हिं. डाट] **छेद बंद करने की डाट ।**

ढट्ठी—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाढ़] **डाढ़ी बाँधने की पट्टी ।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. डाट] **छोटी डाट, ठेंपी ।**

ढड्डा, ढड्ढा—वि. [देश.] **बहुत बड़ा और बेढंगा ।**

संज्ञा पुं. [हिं. ठाट] **(१) ढाँचा, ठटरी । (२) झूठा ठाट-बाट या आडंबर ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढड्ढो—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढड्ढा] (१) बहुत बुड्ढी और दुबली स्त्री। (२) बकवाद करनेवाली स्त्री।

वि.—(१) मूर्ख, उजड्ड। (२) ढीठ।

ढनमनाना—क्रि. अ. [अनु.] लुढ़कना, ढुलकना।

ढप—संज्ञा पुं. [हिं. डफ] चमड़ामढ़ा एक बाजा।

ढपना—संज्ञा पुं. [हिं. ढाँपना] ढकने की चीज।

क्रि. अ.—ढक जाना, ओट में हो जाना।

ढपला—संज्ञा पुं. [हिं. डफला] डफ नामक बाजा।

ढपली—संज्ञा स्त्री. [हिं. डफली] छोटा डफ, खँजरी।

ढप्पू वि. [देश.] बहुत बड़ा और बेढंगा।

ढफ—संज्ञा पुं. [हिं. डफ] डफ नामक बाजा। उ.—रुंज मुरज ढफ ताल बाँसुरी झालर की झंकार।

ढब—संज्ञा पुं. [सं. धव=चलना, गति] (१) रीति, तौर, तरीका। (२) प्रकार, भाँति, किस्म। (३) रचना, बनावट, गढ़न, ढाँचा। (४) युक्ति, उपाय।

मुहा—ढब पर चढ़ना—मतलब निकलने के अनुकूल होना। ढब पर लगाना (लाना)—मतलब निकालने के लिए अनुकूल बनाना।

(५) गुण, स्वभाव, बान, आदत।

मुहा.—ढब डालना—(१) आदत डालना। (२) आचार-विचार की अच्छी बातें सिखाना।

ढबरा—वि. [हिं. ढाबर] मटमैला, गँदला।

ढबीला—वि. [हिं. ढब] (१) अच्छे ढंग का, अच्छी आदतोंवाला। (२) चतुर, चालाक, काँइयाँ।

ढबुआ—संज्ञा पुं. [देश.] पैसा।

ढबैला—वि. [हिं. ढाबर] मटमैला, गँदला।

ढमढम—संज्ञा पुं. [अनु.] ढोल या नगाड़े का शब्द।

ढमलाना—क्रि. स. [देश.] लुढ़काना, ढुलकाना।

ढयना—क्रि. अ. [हिं. ढहना] गिरना, ध्वस्त होना।

ढरक—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढरकना (१) ढरकने की क्रिया या भाव। (२) दयालुता।

ढरकना—क्रि. अ. [हिं. ढार या ढाल] (१) द्रव पदार्थ का गिर कर बहना। (२) नीचे लुढ़कना।

मुहा.—दिन ढरकना—सूर्यास्त होना।

ढरका—संज्ञा पुं. [हिं. ढरकना] बाँस की नली।

ढरकाइ—क्रि. स. [हिं. ढरकाना] ढरकाकर, घिसलाकर, लुढ़काकर। उ.—बटा धरनी डारि दीनौ, लै चले ढरकाइ—१०-२४४।

ढरकाए—क्रि. स. [हिं. ढरकाना] (पानी जैसे द्रव पदार्थ) गिराये या बहाये। उ.—कौसिल्या सुनि परम दीन ह्वै, नैन-नीर ढरकाए—९-३१।

ढरकाना—क्रि. स. [हिं. ढलकाना] (१) (पानी आदि द्रव पदार्थ) गिराकर बहाना। (२) लुढ़काना।

ढरकायो, ढरकायौ—क्रि. स. [हिं. ढरकाना] गिराया, (गिराकर) बहाया। उ.—(क) खोलि किंवार, पैठि मंदिर मैं, दूध-दही सब सखनि खवायौ। ऊखल चढ़ि, सीकैं कौ लीन्हौ, अनभावत भुइ मैं ढरकायौ—१०-३३१। (ख) भली करी हरि माखन खायो। इहौ मानि लीनी अपने सिर, उबरो सो ढरकायो—११२८।

ढरकि—क्रि. अ. [हिं. ढरकना] गिरकर, बहकर। उ.—ब्याकुल मथति मथनियाँ रीती, दधि भुव ढरकि रह्यौ—१०-१८२।

ढरकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढरकना] जुलाहों का औजार।

क्रि. अ. भूत. स्त्री—गिरी, बही, लुढ़की।

ढरकौंहा—वि. [हिं. ढरकना] ढरकनेवाला।

ढरकौ—क्रि. अ. [हिं. ढरकना] ढरकता रहता है, पड़ा रहता है, बहा करता है। उ.—सूर स्याम कितनौ तुम खैहौ, दधि-माखन मेरैं जहँ-तहँ ढरकौ—१०-३३३।

ढरत, ढरतु—क्रि. अ. [हिं. ढलना] (१) बहता है। उ.—मोसों कहत होइ जिनि ऐसी, नैन ढरत नहिं भरत हियौ—२६४७। (२) भर कर खाली होता है। उ.—बारंबार रहँट के घट ज्यौं भरि भरि लोचन ढरतु—२२५३।

ढरन—संज्ञा पुं. [हिं. ढरना] (१) दीनों पर द्रवीभूत होनेवाले, दयाशील, कृपालु। उ.—दूरि देखि सुदामा आवत, धाइ परस्यौ चरन। लच्छ सौं बहु लच्छ दीन्हौ, दान अबढर-ढरन—१-२०२। (२) गिरने या पड़ने की क्रिया, पतन। उ.—छल कियौ पांडवनि कौरव, कपट-पासा ढरन—१-२०२।

ढरना—क्रि. अ. [हिं. ढलना] (१) गिरकर बहना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) बीतना, गुजरना। (३) लुढ़कना। (४) आकर्षित होना। (५) रीझना, प्रसन्न होना।

ढरनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढरना] (१) गिरने या बहने की क्रिया या रीति। उ.—(क) ललित श्री गोपाल-लोचन लोल आँसू-ढरनि। —३५१। (ख) स्याम-सिंधु सरिता ललनागन जल की ढरनि ढरीं—३३६-(८२)। (२) हिलने-डोलने की क्रिया, गति। (३) चित्त की प्रवृत्ति, झुकाव। उ.—रिस अरु रुचि हौं समुझि देखिहौं वाके मन की ढरनि वाकी भावती बात चलाइहौं--२२०६। (४) द्रवीभूत होने की क्रिया या भाव, दयाशीलता, कृपालुता।

ढरहरना—क्रि. अ. [हिं. ढरना] खसकना, सरकना।

ढरहरा—वि. [हिं. ढरारा] ढालू, ढलुहा।

ढरहरि—संज्ञा स्त्री. [हिं ढरहरी] पकौड़ी।

क्रि. अ. [हिं. ढरहरना] सरककर, झुककर, चलकर। उ.—दीनदयाल, गोपाल, गोपपति, गावत गुन आवत ढिग ढरहरि—१-३१२।

ढरहरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] पकौड़ी। उ.—राय भोग लियो भात पसाई। मूँग ढरहरी हींग लगाई—२३२१।

क्रि. अ. [हिं. ढरहरना] सरकी, खिसकी।

ढराइ—क्रि. स. [हिं. ढरकाना] गिराकर, बहाकर। उ.—अब देहौं ढराइ सब गोरस तबहिं दान तुम दैहौ—पृ. २४१।

ढराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढलाई] ढालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

क्रि. स. [हिं. ढरकाना] गिरायी, बहायी।

ढराना—क्रि. स. [हिं. ढहाना] ढालने का काम करने में दूसरे को प्रवृत्त करना।

क्रि. स. [हिं. ढरकाना] लुढ़काना, गिराना।

ढराने—क्रि. अ. [हिं. ढलना] बहने लगे। उ.—यहै कहत दोउ नैन ढराने, नंद-घरनि दुख पाइ—५२६।

ढरायो—क्रि. अ. [हिं. ढरकना] ढरक गया, लुढ़क गया। उ.—सुनि मैया, दधि माट ढरायो—११७४।

ढरारा—वि. [हिं. ढार या ढाल] (१) गिरकर बहने वाला। (२) लुढ़कनेवाला। (३) शीघ्र ही आकर्षित या प्रवृत्त होनेवाला, चलायमान होनेवाला।

ढरारी—वि. स्त्री. [हिं. ढरारा] (१) बहनेवाली। (२) लुढ़कनेवाली। (३) शीघ्र ही आकर्षित होनेवाली।

ढरि—क्रि. अ. [हिं. ढलना] (१) बीतकर, समाप्त होकर।

प्र.—गई ढरि—समाप्त हो गयी, बीत गयी। उ.—काहु न प्रगट करी जदुपति सों दुसह दुरा... गई अवधि ढरि—२८६३।

(२) गिरकर, सरककर, खिसककर। उ.—सिर... गई दोहनी ढरि कै, आपु रही मुरझाई—७४३।

ढरिआना—क्रि. अ. [हिं. ढारना] गिराना, बहाना।

ढरीं—क्रि. अ. [हिं. ढलना] बहीं, प्रवाहित हुईं, खिंचीं। उ.—स्याम सिंधु सरिता ललनागन जल की ढरनि ढरीं—३३६। (८६)।

ढरी—क्रि. अ. [हिं. ढलना] (१) बही, प्रवाहित हुई। उ.—रुधिर धार रिषि आँखिनि ढरी—६-३। (२) ढीली पड़ी, रोष तज दिया, प्रसन्न हुई। उ.—पा... लिखि कछु स्याम पठायौ यह सुनि मनहिं ढरी—३०६२। (३) ढल गयी, अनुरूप हो गयी। उ.—जैसें नारि भजे परपुरुषहिं ताके रंग ढरी—पृ. ३३...

ढरे—क्रि. स. [हिं. ढरना] (१) गिरे, बहे। उ.—निज कर चरन पखारि प्रेम-रस आनँद-आँसु ढरे—६-१७१। (२) द्रवित हुए, दया दिखायी। उ.—... जो जाँच्यो सोइ दीन अस नँदराइ ढरे—१०-२४...

ढरै—क्रि. अ. [हिं. ढाल, ढलना] (१) अनुकूल, प्रसन्न हो, रीझे, दया करे। उ.—उ.—(क) जा... दीनानाथ ढरै। सोइ कुलीन, बड़ौ सुंदर सोइ, जि... पर कृपा करै—१-३५। (ख) सूर पतित तरि जा... छिनक मैं, जौ प्रभु नैंकु ढरै—१-१०५। (२) ... जाय, ढल जाय, अनुरक्त हो जाय, अनुरूप हो जाय... उ.—सूर स्याम के रस पुनि छाकति वैसे ही ढं... बहुरि ढरै—११६५।

ढरैया—संज्ञा पुं. [हिं. ढारना] ढालनेवाला।

ढर्रा—संज्ञा पुं. [हिं. ढरना] (१) मार्ग, रास्ता। (२) काम करने का ढंग। (३) युक्ति, उपाय, तदबीर। (४) चाल-चलन, व्यवहार।

ढलकना—क्रि. अ. [हिं. ढाल] (१) किसी द्रव पदार्थ का पात्र से नीचे गिरना। (२) लुढ़कना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढलकाना—क्रि. स. [हिं. ढलकना] (१) द्रव पदार्थ पात्र के बाहर गिराना। (२) लुढ़काना।

ढलकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढरकी] जुलाहों का औजार।

ढलना—क्रि. अ. [हिं. ढाल] (१) द्रव पदार्थ का गिर कर बहना। (२) बीतना, गुजरना, समाप्त हो जाना।

मुहा.—जवानी ढलना—युवावस्था समाप्त होने लगना। छाती ढलना—स्तन लटक जाना। जोबन ढलना—युवावस्था का उतार पर होना। दिन ढलना—संध्या होना। चाँद-सूरज ढलना—चाँद-सूरज का अस्त होना।

(३) द्रव का एक पात्र से दूसरे में उँडेला जाना।

मुहा—बोतल(शराब) ढलना—शराब पी जाना।

(४) लुढ़कना। (५) हिलना-डोलना, लहराना। (६) किसी की ओर आकर्षित होना, अनुरक्त होना। (७) अनुकूल होना, रीझना। (८) ढाला जाना।

ढलवाँ—वि. [हिं. ढालना] ढाल कर बनाया हुआ।

ढलवाना—क्रि. स. [हिं. ढालना का प्रे.] ढालने का काम किसी दूसरे से कराना।

ढलाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढालना] ढालने का काम, भाव या मजदूरी।

ढलाना—क्रि. स. [हिं. ढालना] ढलवाना।

ढलुवाँ—वि. [हिं. ढलवाँ] ढला हुआ।

ढले—क्रि. अ. [हिं. ढलना] बीते, समाप्त हुए।

मुहा.—दिन ढले—साँझ को।

ढलैत—संज्ञा पुं. [हिं. ढाल] ढाल रखनेवाला।

ढवरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] धुन, लौ, लगन, रट। उ.—हरि दरसन की ढवरी लागी—३४४२।

ढहना—क्रि. अ. [सं. ध्वंसन] (१) गिरना, ध्वस्त होना। (२) नष्ट होना, मिट जाना।

ढहराना—क्रि. स. [हिं. ढाइ] लुढ़काना।

ढहरि, ढहरी—संज्ञा स्त्री. [सं. देहली, हिं. ढहरी] देहली, दहलीज, डेहरी। उ.—सूर प्रभु कर सेज टेकत कबहुँ टेकत ढहरि—१०-६७।

संज्ञा स्त्री. [देश.] मिट्टी का गगरा, मटका। उ.—डगर न देत काहुहिं फोरि डारत ढहरि।

ढहवाना—क्रि. स. [हिं. ढहाना का प्रे.] गिरवाना।

ढहाई—क्रि. स. भूत. [हिं. ढहाना] ढा दिया, गिरा दिया, ध्वस्त कर दिया। उ.—एक ही बान को पाषान को कोट सब हुतो चहुँ ओर सो दियो ढहाई—१०३.३१।

ढहाना—क्रि. स. [सं. ध्वंसन] गिराना, ध्वस्त करना।

ढहायौ—क्रि. स. [हिं. ढहाना] ढा दिया, ध्वंस किया। उ.—रे पिय, लंका बनचर आयौ। करि परपंच हरी तैं सीता, कंचन-कोट ढहायौ—९-११६।

ढहावत—क्रि. स. [हिं. ढहाना] गिराते हैं। उ.—महा प्रलय-जल गिरिहिं ढहावत—१०५४।

ढही—क्रि. अ. भूत. [हिं. ढहना] (१) गिर पड़ी। उ.—सोचति अति पछितानि राधिका मूर्छित धरनि ढही—२८९९। (२) मिट गयी, नष्ट हुई। उ.—अब सुनि सूल सहति सब सूरज कुल मरजाद ढही—३३७०।

ढहैहौं—क्रि. स. [हिं. ढहाना] ध्वस्त करूँगा, ढा दूँगा। उ.—छिन इक माहिं गढ़ तोरौं, कंचन-कोट ढहैहौं—९-११३।

ढाँकति—क्रि. स. [हिं. ढाँकना] ढकती हैं, मूँदती हैं। उ.—खन खोलत खन ढाँकति नागरि मुख रिसि मन मुसुकाइ—पृ. ३१८।

ढाँकना—क्रि. स. [सं. ढक=छिपाना] (१) ढक देना। (२) ऐसे फैलाना कि नीचे की चीज ढक जाय।

ढाँकि—क्रि. स. [हिं. ढाँकना] (कपड़े आदि से) ढककर, कपड़े के नीचे छिपाकर। उ.—अँचरा तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु कौं दूध पियावति—१०-११०।

ढाँख—संज्ञा पुं. [हिं. ढाक] पलाश का पेड़।

ढाँग—वि. [देश.] ढालू, ढालुवाँ।

ढाँच, ढाँचा—संज्ञा पुं. [सं. स्थाता, हिं. ठाट, ढाँचा] (१) ठाट, टट्टर। (२) ठटरी, पंजर। (३)चौखटा। (४) गढ़न, बनावट। (५) प्रकार, भाँति, तरह।

ढाँप—क्रि. स. [हिं. ढाँपना] ढककर, छिपाकर। उ.—यह उपदेस आपुनो ऊधौ राखो ढाँप सवारो—३२०५।

ढाँपना—क्रि. स. [हिं. ढाँकना] ढकना, छिपाना।

ढाँपि—क्रि. स. [हिं. ढाँपना] ढककर, छिपाकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—सुभग ढकनियाँ ढाँपि बाँधि पट जतन राखि छीके समदायो—११७६।

ढाँप्यौ—क्रि. स. [हिं. ढाँकना] (१) **ढक लिया, छिपा लिया, ओट में किया।** उ.—स्रवन मूँदि, मुख आँचर ढाँप्यौ, अरे निसाचर चोर—९-८३। (२) **किसी वस्तु के ऊपर दूसरी का इस तरह फैलकर आवरित कर लेना कि नीचेवाली छिप जाय।** उ.—कटक अगिनित जुरयौ, लंक खरभर परयौ, सूर कौ तेज, धर-धूरि ढाँप्यौ—९-१०६।

ढाँस—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **खाँसी का ठसका।**

ढाँसना—क्रि. अ. [हिं. ढाँस] **सूखी खाँसी खाँसना।**

ढाई—वि. [सं. अर्द्धद्वितीय, प्रा. अड्ढाइय, हिं. अढ़ाइ] **दो और आधा।**

ढाक—संज्ञा पुं. [सं. आषाढक=पलाश, हिं. ढाक] **पलाश।** उ.—सेमर-ढाकहिं काटि कै, बाँधौं तुम बेरौ—९-४२।

मुहा.—ढाक के तीन पात—**सदा एक सा (निर्धन), ज्यों का त्यों (निर्धन)।** ढाक तले की फूहड़ महुए तले की सूहड़—**धनहीन मूर्ख और धनवान चतुर समझा जाता है।**

संज्ञा पुं. [सं. ढक्का] **लड़ाई का डंका या ढोल।**

ढाकति—क्रि. स. [हिं. ढकना] **ढकती है।** उ.—ढाकति कहा प्रेम हित सुंदरि सारँग नेक उघारि—२२२०।

ढाकन—संज्ञा पुं. [हिं. ढकना] **ढक्कन, ढकना।**

ढाक्यो—क्रि. स. [हिं. ढकना] **ढक लिया, छिपा लिया।** उ.—वारौं लाज भई मोको बैरिनि मैं गँवारि मुख ढाक्यो—२५४६।

ढाड़—संज्ञा स्त्री. [अनु] **चीख, चिल्लाहट।**

ढाढ़—संज्ञा पुं. [हिं. ढाढी (देश.)] **ढाढ़ियों का बाजा जिसको बजाकर वे बधाई गाते हैं।** उ.—ढाढ़िन मेरी नाचै-गावै, हौंहूँ ढाढ़ बजाऊँ—१०-३७।

ढाढ़ना—क्रि. स. [हिं. दाढ़ना] **दुखी करना, जलाना।**

ढाढ़स—संज्ञा पुं. [सं. दृढ़, प्रा. डिढ] (१) **धैर्य, धीरज, शांति।** (२) **दृढ़ता, साहस, हिम्मत।**

ढाढ़िन, ढाढ़िनि—संज्ञा स्त्री. [देश. पुं. ढाढ़ी] **नीची जाति की गानेवाली स्त्रियाँ जो प्रायः जन्म के अवसर पर बधाई गाती हैं।** उ.—हँसि ढाढ़िनि ढाढ़ी सों बोली, अब तू बरनि बधाई। ऐसौ दियौ न दै सूर कोउ, जसुमति हौं पहिराई—१०-३७।

ढाढ़ी—संज्ञा पुं. [देश.] **नीची जाति के गवैये जो प्रायः जन्मोत्सव के अवसर पर बधाई के गीत गाते हैं।** उ.—(क) ढाढ़ी और ढाढ़िनि गावैं, ठाढ़े हुरके बजावैं, हरषि असीस देत मस्तक नवाइ कैं—६४६। (ख) हौं तौ तेरे घर कौ ढाढ़ी सूरदास मोहिं नाउँ—१०-३५।

ढाना—क्रि. स. [सं. ध्वंसन, हिं. ढाहना] (१) **तोड़-फोड़कर गिराना।** (२) **गिराकर जमीन पर डालना।**

ढापना—क्रि. स. [हिं. ढाँपना] **ढकना।**

ढाबर—वि. [देश.] **मटमैला, गँदला।**

ढाबा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) **जाल।** (२) **रोटी की दूकान।** (३) **ओलती।**

ढामक—संज्ञा पुं. [अनु.] **ढोल नगाड़े का शब्द।**

ढार—संज्ञा पुं. [सं. धार] (१) **ढाल, उतार।** (२) **पथ, मार्ग।** (३) **प्रकार, ढाँचा, ढंग, रचना, बनावट।** उ.—आगरु चँदन कौ पालनौ (रँगि) ईंगुर ढार सुढार। लैं आयौ गढ़ि डोलना (हो), बिसकरमा सुतहार—१०-४०।

संज्ञा स्त्री.—**कान का एक गहना, बिरिया।**

क्रि. स. [हिं. धारना] **धारण करना।** उ.—राज्य दीन्हो उग्रसेनहिं चँवर निज कर ढार—३०७५।

ढारत—क्रि. स. [हिं. ढारना] (**पानी जैसे द्रव पदार्थ**) **गिराकर बहाते हैं।** उ.—हा सीता, सीता कहि सियपति, उमड़ि नयन जल भरि भरि ढारत—९-६२।

ढारतिं—क्रि. स. [हिं. ढारना] (**पानी जैसे द्रव पदार्थ को**) **गिराती या बहाती हैं।** उ.—उरग नारि आगैं भईं ठाढ़ी, नैननि ढारतिं नीर—५७५।

ढारना—क्रि. स. [हिं. ढार+ना (प्रत्य.)] (१) **द्रव पदार्थ गिराकर बहाना।** (२) **ऊपर से छोड़ना या डालना।** (३) **हिलाना-डुलाना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा पुं. [हिं. ढाढ़स] (१) धैर्य। (२) साहस।

ढारस—संज्ञा पुं. [हिं. ढाढ़स] (१) धैर्य। (२) साहस।

ढारि—क्रि. स. [हिं. ढारना] (पानी जैसे द्रव पदार्थ को) गिराया, बहाया। उ.—तृन-अंतर दै दृष्टि तरौंधी, दियौ नयन जल ढारि—६-७६।

ढारे—क्रि. स. [हिं. ढारना] (पानी आदि द्रव पदार्थ) गिराकर बहाये। उ.—भरत गात सीतल ह्वै आयौ, नन उमँगि जल ढारे—६-५४।

क्रि. स. [हिं. धारना] धारण करे। उ.—छत्र सिर धराइ चमर निज कर ढारे—१०-३१६।

ढारैं—क्रि. स. [हिं. ढारना] (किसी द्रव पदार्थ को) गिराता या बहाता है। उ.—रीतै भरै, भरैं पुनि ढारं, चाहै फेरि भरै—१-१०५।

ढारौं—क्रि. स. [हिं. धारना] धारण करूँ। उ.—उग्रसेन सिर छत्र चमर अपने कर ढारौं—११३८।

ढारौ—क्रि. स. [सं. धार, हिं. ढारना] (द्रव पदार्थ को) गिराकर बहाओ। उ.—(क) सूरदास भगवंत भजन बिनु, चल्यौ पछिताइ नयन जल ढारौ—१-८१। (ख) कहियो जाइ जसोदा आगे नैन नीर जिनि ढारौ—१०-३५३।

ढारयौ—क्रि. स. [हिं. ढारना] (पानी आदि द्रव पदार्थ को) गिराकर बहाया। उ.—यह बिपरीत सुनी जब सबहीं, नैननि ढारयौ नीर—६-४४।

ढाल—संज्ञा स्त्री. [सं.] (तलवार आदि का) वार रोकने की फरी या चर्म, आड़, फलक।

संज्ञा स्त्री. [सं. धार] (१) उतार। (२) ढंग, प्रकार, तौर-तरीका। (३) उगाही, चंदा।

ढालना—क्रि. स. [सं. धार] (१) द्रव पदार्थ गिराना, उँडेलना। (२) शराब पीना। (३) बेच देना। (४) सस्ता बेचना। (५) चंदा उगाहना। (६) साँचे में ढालकर बनाना।

ढालवाँ, ढालुआँ—वि. [हिं. ढाल] ढालू।

ढालिया—वि. [हिं. ढालना] ढालकर बनानेवाला।

ढालू—वि. [हिं. ढाल] ढाल या उतार का।

ढावना—क्रि. स. [देश.] गिराना, ढाना।

ढास—संज्ञा पुं. [सं. दस्यु] ठग, लुटेरा, डाकू।

ढासना—संज्ञा पुं. [सं. धारण+आसन] (१) सहारा, टेक। (२) सहारे का तकिया।

ढाहन—क्रि. स. [हिं. ढाहना] गिराना।

प्र.—ढाहन लग्यो—गिराने या ढाने लगा। उ.—वृक्ष बन काटि महलात ढाहन लग्यो नगर के द्वार दीनो गिराई—१० उ. ५६।

ढाहना—क्रि. स. [हिं. ढाना] गिराना, ढाना।

ढाहा—संज्ञा पुं. [हिं. ढाहना] नदी का ऊँचा किनारा।

ढिंढोरना—क्रि. स. [अनु.] (१) मथना, बिलोना। (२) हाथ डालकर ढूँढ़ना, टटोलकर खोजना।

ढिंढोरा—संज्ञा पुं. [अनु. ढम + ढोल] (१) घोषणा करने का ढोल। (२) ढोल बजाकर जन-साधारण को दी जानेवाली सूचना।

ढिग—क्रि. वि. [सं. दिक् = ओर] पास, समीप, निकट। उ.—(क) तब नारद तिनकैं ढिग आइ। चारि स्लोक कहे समुभाइ—१-२३०। (ख) जैसें राहु नीच ढिग आऐं, चंद-किरन झकझोलै—१-२५६। (ग) मुरली धुनि सुनि सबै ग्वालिनी हरि के ढिग चलि आई (घ) चाहत हौं ताही पै चढ़ि क हरि जी के ढिग जाब—२७६८।

संज्ञा स्त्री.—(१) पास, सामीप्य। (२) तट, किनारा। (३) कपड़े का किनारा, पाड़, कोर।

ढिगन, ढिगनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढिग = कपड़े का कोर + न, नि (प्रत्य.)] कपड़े का किनारा, पाड़, कोर। उ.—(क) पीत उढ़नियाँ कहाँ बिसारी। यह तौ लाल ढिगनि की औरै, है काहू की सारी—६६३। (ख) लाल ढिगनि की सारी ताकौं पीत उढ़नियाँ कीन्ही—६६४।

ढिठाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढीठ + आई (प्रत्य.)] (१) व्यवहार की अनुचित स्वच्छंदता, धृष्टता, गुस्ताखी। उ.—बासुदेव की बड़ी बड़ाई। जगत पिता, जगदीस, जगतगुरु, निज भक्तन की सहत ढिठाई—१-३। (ख) हमको अपराव छमहु करी हम ढिठाई—२६१६। (ग) पालागौं यह दोस बकसियो सनमुख करत ढिठाई—३३४३। (२) लोक लाज-हीनता, निर्लज्जता। (३) अनुचित साहस।

ढिठान—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढीठ] ढीठता, ढिठाई, धृष्टता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चपलता। उ.—हौं जु कहत, लै चलौ जानकी, छाँड़ौ सबै ढिठान। सनमुख होइ सूर के स्वामी, भक्तनि कृपानिधान—६-१३४।

ढिठौना—संज्ञा पुं. [हिं. ढोटा] **दुलारा पुत्र।** उ.—कहा कहत तू नंद ढिठौना—१०-३७।

ढिपुनी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **(१) फल-पत्ते से जुड़ा टहनी का कोमल भाग। (२) कुच का अग्र भाग, बोंड़ी।**

ढिमका—सर्व. [हिं. अमका का अनु.] **अमुक, फलाना।**

ढिलढिला—वि. [हिं. ढीला] **ढीला ढाला।**

ढिलाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढीला] **(१) ढीला होना, कसा न रहना। (२) शिथिलता, सुस्ती, आलस्य।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. ढीलना] **ढीला कराना।**

ढिलाना—क्रि. स. [हिं. ढीलना का प्रे.] **ढीला कराना।**

क्रि. स.—**(१) ढीला करना। (२) खोलना।**

क्रि. अ.—**(१) ढीला हो जाना। (२) खुल जाना।**

ढिल्लड़—वि. [हिं. ढीला] **सुस्त, आलसी, शिथिल।**

ढिसरना—क्रि. अ. [सं. ध्वंसन] **(१) फिसल पड़ना, सरकना। (२) झुकना, प्रवृत्त होना। (३) फल का डाल में लगे लगे ही पकने लगना।**

ढींगर—संज्ञा पुं. [सं. डिंगर] **(१) बड़े डील-डौल का या मोटा-ताजा आदमी। (२) पति। (३) उपपति।**

ढींढ़—संज्ञा पुं. [सं. ढुंढि = लंबोदर, गणेश] **बड़ा पेट।**

ढींगर—संज्ञा पुं. [सं. डिंगर] **(१) हट्टा-कट्टा आदमी। (२) पति। (३) उपपति, प्रेमी।**

ढींगे—क्रि. वि. [हिं. ढिग] **पास, समीप।**

ढीट—संज्ञा स्त्री. [देश.] **रेखा, लकीर।**

ढीठ, ढीठक—वि. [सं. धृष्ट, हिं. ढीठ] **(१) व्यवहार में अनुचित स्वच्छंदता प्रकट करनेवाला, धृष्ट।** उ.—(क) लंगर, ढीठ गुमानी ढूँडक, महा मसखरा रूखा—१-१८६। (ख) अहो ढीठ मतिमुग्ध निसिचरी बैठी सनमुख आई—६-७७। **(२) अनुचित साहसी, न डरनेवाला।** उ.—ऐसे ढीठ भए हैं कान्हा दधि गिराय मटकी सब फोरी। **(३) साहसी, हिम्मतवर।**

ढीठता—संज्ञा स्त्री. [सं. धृष्टता] **ढिठाई।**

ढीठा—वि. [हिं. ढीठ] **(१) धृष्ट। (२) साहसी।**

संज्ञा स्त्री.—**ढिठाई, धृष्टता।**

ढीठि, ढीठी—वि. स्त्री. [हिं. ढीठ] **ढीठ, धृष्ट, ... का संकोच या डर न रखनेवाली।** उ.—(क) ... की ढीठी गुवारि, हाट की बेचनहारि, सकुचै न ... गारि, झगरत हूँ—१०-२६५। (ख) (माई ... मुरली अति गर्व काहुँ बदति नाहिं आज।... बैठत कर-पीठि ढीठि, अधर छत्र छाहिं। रा... अति चँवर चिकुर, सुरद सभा माँहिं—६५३।

ढीठो, ढीठौ—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढीठ] **धृष्टता, ढिठा...** उ.—(क) महर बड़ौ लंगर सब दिन कौ, हँ... देति मुख गारि। राधा बोलि उठीं, बाबा ... तुमसौं ढीठौ कीन्हौ—७०३। (ख) डारि ... भूषन तब भागे। स्याम करन अब ढीठौ लागे... ७६६। (ग) अब लौं सही तुम्हारी ढीठो तुम ... कहत डरानी—१०४६।

ढीठ्यौ—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढीठा] **ढिठाई, धृष्टता।**

ढीम, ढीमा—संज्ञा पुं. [देश.] **(१) पत्थर का ... ढोका। (२) मिट्टी की बड़ी पिंडी।**

ढीमड़ो—संज्ञा पुं. [देश.] **कूप, कुआँ।**

ढील—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढीला] **(१) उत्साहहीन... शिथिलता, अतत्परता, सुस्ती।** उ.—सत्य भ... तारिबे कौं, लीला बिस्तारी। बेर मेरी क्यों ... कीन्ही, सूर बलिहारी—१-१७६।

मुहा.—ढील देना—**लापरवाही करना।**

(२) बंधन ढीला करना, कड़ा बंधन न रखना।

मुहा.—ढील देना—**(१) पतंग की डोर बढ़ा... (२) मनमाना करने की पूरी स्वतंत्रता देना।**

वि.—**ढीला, जो कसा न हो।**

संज्ञा पुं.—**बालों में पड़नेवाली जूँ।**

ढीलत—क्रि. स. [हिं. ढीलना] **बंधन खोल देते ... छोड़ देते हैं।** उ.—ता पर सूर बछरुवन ढीलत ... बन फिरति बही—१०-२६१।

ढीलना—क्रि. स. [हिं. ढीला] **(१) ढीला कर... कसा न रखना। (२) बंधन मुक्त करना, छोड़ दे... (३) डोरी-रस्सी बढ़ाना या डालना। (४) ... चीज को पतला करना।**

ढीला—वि. [सं. शिथिल, प्रा. सिढ़िल] (१) जो क...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तना या खिंचा हुआ न हो। (२) जो कस कर जमा, जड़ा या बैठा न हो। (३) जो खूब कसकर पकड़ा हुआ न हो। (४) जो बहुत गाढ़ा या कड़ा न हो। (५) जो अपने हठ या संकल्प पर अड़ा न रहे। (६) जिसका क्रोध शांत या कम हो जाय, नरम। (७) मंद, सुस्त, शिथिल, धीमा।

मुहा.—ढीली आँख—रस या मद आदि के कारण अधखुली आँख।

(८) आलसी। (९) जिसे काम की प्रेरणा न हो।

संज्ञा पुं. [देश.] पत्थर, ईंट या मिट्टी का टुकड़ा।

ढीलापन—संज्ञा पुं. [हिं. ढीला + पन (प्रत्य.)] ढीला होने का भाव, कसापन न रहने का भाव, शिथिलता।

ढीली—वि. [हिं. ढीला] बहुत हल्का, जो तेज न हो।

क्रि. वि—हल्के-हल्के, धीरे-धीरे। उ.—दधि लै मथति ग्वालि गरबीली। रुनक झुनक कर कंकन बाजे, बाँह डुलावति ढीली—१०-२९९।

क्रि. स. भूत. स्त्री. [हिं. ढीलना] बंधनमुक्त की, खोल दी। उ.—निसि भई छीन बोलि तमचुर खग ग्वालन ढीली गाई—२१२७।

ढीह—संज्ञा पुं. [सं. दीर्घ, हिं. दीह] ऊँचा टीला, ढूह।

ढुंढ—संज्ञा पुं. [हिं. ढूँढ़ना] ठग, लुटेरा। उ.—चोर ढुंढ बटपार अन्यायी अपमारगी कहावैं जे।

ढुंढपाणि, ढुंढपानि—संज्ञा पुं. [सं. दंडपाणि] (१) शिव के एक गण। (२) दंडपाणि भैरव।

ढुँढवाना—क्रि. स. [हिं. ढूढ़ना का प्रे.] तलाश कराना।

ढुंढा—संज्ञा स्त्री. [सं.] हिरण्यकशिपु की बहिन होलिका जिसे वरदान था कि तू आग में न जलेगी।

ढुंढि—संज्ञा पुं. [सं.] गणेश का एक नाम, क्योंकि सारे विषय इन्हीं के ढूँढ़े या अन्वेषित माने जाते हैं।

ढुंढी—संज्ञा स्त्री. [देश.] बाँह, भुजा।

मुहा.—ढुंढी चढ़ाना—मुश्कें बाँधना।

ढुकना—क्रि. स. [देश.] (१) घुसना, प्रवेश करना। (२) टूट पड़ना, पिल पड़ना। (३) देखने सुनने के लिए आड़ में छिपना।

ढुकाइ—क्रि. अ. [हिं. ढुकाना] धावा करने को प्रेरित किया, पिल पड़ने को उत्साहित किया, टूट पड़ने का संकेत किया। उ.—बहुरौ दीन्हे नाग ढुकाइ। जिनकी ज्वाला गिरि जरि जाइ—७-२।

ढुकाना—क्रि. स. [हिं. ढुकना] घुसाना, छिपाना।

ढुकास—संज्ञा स्त्री. [अनु. ढुकढुक] जोर की प्यास।

ढुकि—क्रि. वि. [हिं. ढुकना] छेड़कर, पिल पड़कर। उ.—दिन-दिन देन उरहनौ आवति ढुकि ढुकि करति लरैया—३७१।

ढुकी—क्रि. अ. [हिं. ढुकना] कोई बात देखने सुनने के लिए ओट या आड़ में लुकी या छिपी।

ढुक्का—संज्ञा पुं. [हिं. ढुका] किसी बात को देखने-सुनने के लिए ओट या आड़ में छिपाना।

ढुक्यौ—क्रि. अ. [हिं. ढुकना] घात में तैठा या छिपा था, टूट पड़ा। उ.—हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम-डरिया, पारधि साधे बान। ताकैं डर मैं भाज्यौ, ऊपर ढुक्यौ सचान—१-९७।

ढुच—संज्ञा पुं. [देश.] घूँसा, मुक्का।

ढुटौना—संज्ञा पुं. [हिं. ढोटा] पुत्र, बेटा। उ.—(क) ग्रह-संपति द्वै तनक ढुटौना, इनहीं लौं सुख-भोग—५१९। (ख) अति सुंदर नँद महर-ढुटौना—६०१।

ढुनमुनिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठनमनाना] (१) लुढ़कने की क्रिया या भाव। (२) एक मंडल में झूम झूमकर कलजी गाने का ढंग।

ढुरकना—क्रि. अ. [हिं. ढुलकना] (१) फिसलना, लुढ़कना, सरक कर गिरना। (२) झुकना।

ढुरकी—क्रि. अ. [हिं. ढुलकना] झुक-झूमकर। उ.—हँसत नंद, गोपी सब बिहँसीं, झमकि चलीं सब भीतर ढुरकी—१०-१८०।

ढुरति—क्रि. अ. [हिं. ढुरना] हिलती-डुलती है, लहराती है। उ.—देखी हरि मथति ग्वालि दधि ठाढ़ी। जोबन मदमाती इतराती, बेनि ढुरति कटि लौं, छबि बाढ़ी—१०-३००।

ढुरना—क्रि. अ. [हिं. ढार] (१) गिरकर बहना, टपकना। (२) लुढ़कना, सरकना। (३) इधर-उधर डोलना, डगमगाना। (४) हिलना, लहराना। (५) झुकना, प्रवृत्त होना। (६) अनुकूल या प्रसन्न होना।

ढुरहुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढुरना] (१) लुढ़कने या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिसलने की क्रिया या भाव। (२) पगडंडी। (३) नथ में जड़ी सोने के दानों की पंक्ति।

ढुराना—क्रि. स. [हिं. ढुरना] (१) गिराकर बहाना, टपकाना, लुढ़काना। (२) हिलाना, लहराना।

ढुरावत—क्रि. स. [हिं. ढुराना] (१) गिराकर बहाते हैं, टपकाते हैं। उ.—पलक न लावत रहत ध्यान धरि बारंबार ढुरावत (ढुरावति) पानी—३०३७। (२) इधर उधर हिलाते-डुलाते हैं, लहराते हैं। उ.—आनंद मगन सकल पुरवासी चमर ढुरावत श्रीब्रजराज—१०-२०।

ढुरुआ—संज्ञा पुं. [हिं. ढुरना] गोल मटर।

ढुर्री—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढुरना] पगडंडी।

ढुलकना—क्रि. अ. [हिं. ढाल] लुढ़कना, फिसलना।

ढुलकाना—क्रि. स. [हिं. ढुलकाना] लुढ़काना, ढँगलाना।

ढुलना—क्रि. अ. [हिं. ढाल] (१) गिरकर बहना, ढरकना। (२) फिसलना, लुढ़कना। (३) झुकना, प्रवृत्त होना। (४) अनुकूल या प्रसन्न होना। (५) इधर-उधर हिलना-डोलना। (६) लहराना।

ढुलवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढोना] ढोने का क्रिया, भाव या मजदूरी।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ढुलना] ढुलाने की क्रिया, भाव, या मजदूरी।

ढुलवाना—क्रि. स. [हिं.ढोने का प्रे.] बोझ आदि ढोने का काम कराना।

क्रि. स. [हिं. ढुलाना का प्रे] ढुलाने का काम कराना।

ढुलाना—क्रि. स. [हिं. ढाल] (१) गिराकर बहाना, ढरकाना। (२) नीचे गिराना। (३) लुढ़काना। (४) झुकाना, प्रवृत करना। (५) अनुकूल या प्रसन्न करना। (६) इधर-उधर हिलाना। (७) चलाना-फिराना। (८) फेरना, पोतना।

क्रि. स. [हिं. ढोना] बोझ ढोने का काम करना।

ढूँकना—क्रि. अ. [हिं. ढुकना] (१) घुसना। (२) धावा करना। (३) देखने सुनने या भेद लेने को छिपना।

ढूँका—संज्ञा पुं. [हिं. ढुकना] देखने-सुनने या भेद लेने को ओट या आड़ में छिपने की क्रिया या भाव।

ढूँकी—क्रि. अ. [हिं. ढुकना] भेद लेने को ओट आड़ में छिपी, घात में लुकी। उ.—ढूँकी रहीं ... तहँ गोरी—२४१७।

ढूँढ़—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढूँढ़ना] खोज, तलाश।

यौ.—ढूँढ़ ढाँढ़—खोज-तलाश, छान-बीन।

ढूँढ़त—क्रि. स. [हिं. ढूँढ़ना] खोजता है, पता लगा... है। उ.—ज्यौं कुरंग-नाभी कस्तूरी, ढूँढ़त फि... भुलायौ—६-२३।

ढूँढ़ति—क्रि. स. [हिं. ढूँढ़ना [खोजती है, पता लगा... है, ढूँढ़ती है। उ.—देखै जाइ मटुकिया रीती, राख्यौ कहुँ हेरि। चकित भई ग्वालिनी मन अ... ढूँढ़ति घर फिरि फेरि—१०-२७१।

ढूँढ़न—संज्ञा पुं. [हिं. ढूँढ़ना] खोजने की क्रि... ढूँढ़ना। उ.—संध्या समय निकट नहिं आयौ। त... ढूँढ़न कौं उठि धायौ—५-३।

ढूँढ़ना—क्रि. स. [सं. ढुंढ़न] खोजना, तलाशना।

यौ.—ढूँढ़ना - ढाँढ़ना—पता लगाना, खोज... अन्वेषण करना।

ढूँढ़ला—संज्ञा स्त्री. [सं. ढंढा] हिरण्यकशिपु की होलि... नामक बहन जिसे आग में न जलने का वरदान ...

ढूँढ़ि—क्रि. स. [हिं. ढूँढ़ना] खोजकर, पता लगा... तलाश करके। उ.—मेरी देह छुटत जम प... जितक दूत घर मौं।........ढूँढ़ि फिरे घर को... बतायौ, स्वपच कोरिया लौं—१-१५१।

ढूँढ़ी—क्रि. स. स्त्री. [हिं. ढूँढ़ना] खोज की, पता लगा... तलाश की। उ.—लंका पौरि पौरि मैं ढूँढ़ी ... बन-उपबन जाइ—६-१०४।

ढूँढ़ैं—क्रि. स. [हिं. ढूँढ़ना] खोजते हैं, पता लगाते हैं। उ.—बानर बीर चहूँ दिसि धाए, ढूँढ़ैं गिरि... झार—६-८३।

ढूँढ़ै—क्रि. स. [हिं. ढूँढ़ना] खोजता है, पता ल... है। उ.—भ्रमत हीं वह दौरि ढूँढ़ै, जबहिं ... बास—१-७०।

ढूँढ़्यौ—क्रि. स. [हिं. ढूँढ़ना] ढूँढ़ा, खोजा, लगाया। उ.—बृंदा आदि सकल बन ढूँढ़्यौ, गाइनि की टेर—४५८।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढूहे, ढूहा—संज्ञा पुं. [सं. स्तूप] (१) ढेर, राशि, अटाला । (२) टीला, भीटा । (३) सीमा या हद सूचक दीवार ।

ढेंक—संज्ञा स्त्री [सं. ढेंक] लंबी चोंचवाली एक चिड़िया ।

ढेंकली, ढेंकी, ढेंकुर, ढेंकुली—संज्ञा स्त्री. [हि ढेंक] लकड़ी का देशी यंत्र । (१) कुएँ से पानी निकालने का लकड़ी का यंत्र । (२) धान कूटने का लकड़ी का यंत्र ।

ढेंका—संज्ञा पुं. [हिं. ढेकली] बड़ी ढेंकली ।

ढेंढ़, ढेंढ़ा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) कौआ । (२) एक नीच जाति । (३) मूर्ख या उजड्ड मनुष्य ।

संज्ञा पुं. [सं. तुंड, हिं. ढोढ़] कपास का डोडा ।

ढेढ़वा—संज्ञा पुं. [देश.] काले मुँह का बंदर ।

ढेंढ़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढेंढ़] (१) कपास या पोस्ते का डोडा । (२) कान का तरकी नामक गहना ।

ढेंप, ढेंपी—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) फल-पत्ते के साथ लगा टहनी का पतला भाग । (२) स्तन की घुंडी ।

ढेबुआ, ढेबुक, ढेबुवा—संज्ञा पुं. [देश.] पैसा ।

ढेऊ—संज्ञा पुं. [देश.] पानी की लहर, तरंग ।

ढेर—संज्ञा पुं. [हिं. धारना] (१) अंबार, राशि ।

मुहा.—ढेर करना—मार कर गिराना । ढेर हो जाना—(१) मर कर गिरना । (२) ढह पड़ना ।

वि.—बहुत, अधिक, ज्यादा ।

ढेरिं, ढेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढेर] राशि, समूह । उ.—(क) तऊ कहुँ त्रिपितात नाहीं रूप रस की ढेरि—पृ. ३३४ । (ख) प्रानन के बदले न पाइयत सेंति बिकाय सुजस की ढेरी—२८५२ ।

ढेल, ढेला—संज्ञा पुं. [सं. दल या हिं. डला] (१) ईंट, पत्थर का टुकड़ा । (२) टुकड़ा, खंड । (३) एक तरह का धान ।

ढेलवाँस—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढेला + सं. पारा] रस्सी का फंदा जिससे ढेला फेंका जाता है, गोफना ।

ढैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढाई] (१) दो और आधा । (२) ढाई सेर का बाँट । (३) ढाई गुने का पहाड़ा ।

ढोंकना—क्रि. स. [अनु.] पी जाना ।

ढोंग—संज्ञा पुं. [हिं. ढंग] ढकोसला, पाखंड ।

ढोंगी—वि. [हि. ढोंग] ढकोसलेबाज, पाखंडी ।

ढोंटा, ढोंटा, ढोटौना—संज्ञा पुं. [सं. दुहितृ = लड़की, हिं. ढोटा] (१) पुत्र, बेटा । उ.—(क) कबहुँक बैठ्यौ रहसि-रहसि कें, ढोटा गोद खिलायौ । कबहुँक फूलि सभा मैं बैठ्यौ, मूँछनि ताव दिवायौ—१-३०१ । (ख) पूँछो जाइ कवन को ढोटा तब कह उत्तर देहैं—३४३६ । (२) लड़का, बालक । उ.—(क) गोकुल के गवैंड़े एक साँवरौ सौ ढोटा माई अँखियन के पैंड पैठि जी के पैंड़े परयौ है—८७२ । (ख) स्याम बरन एक मिल्यो ढोटौना तेहि मोकों मोहनी लगाई ।

ढोढ़—संज्ञा पुं. [सं. तुंड] (१) डोडा । (२) फली ।

ढोढो—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढोंढ़ा] नाभि, तोंदी ।

ढोटी—संज्ञा स्त्री. [सं. दुहितृ] लड़की ।

ढोड़—संज्ञा पुं. [देश.] ऊँड ।

ढोना—क्रि. स. [सं. वोट = वहन करना] (१) बोझ ले चलना । (२) (सामान) उठा ले जाना ।

ढोर, ढोरा—संज्ञा पुं. [हिं. ढुरना] चौपाये, पालतू पशु । उ.—जब हरि मधुबन को जु सिधारे धीरज धरत न ढोर—३०८४ ।

ढोरना—क्रि. स. [हिं. ढारना] (१) द्रव पदार्थ बहाना या ढरकाना । (२) लुढ़काना ।

ढोरी—क्रि. स. [हिं. ढोरना] (१) बही, गिरी, टपकी, ढरकी । (२) लुढ़की ।

संज्ञा स्त्री.—(१) बहाने, गिराने या ढरकाने का भाव । उ.—कनक कलस-केसरि गहि ल्याई डारि दियो हरि पर ढोरी की । (२) रट, धुन, लौ, लगन । उ.—सूरदास गोपी बड़भागी । हरि दरसन की ढोरी लागी ।

ढोरे—क्रि. स. [हिं. ढोरना] गिराये, बहाये । उ.—वै अक्रूर क्रूर कृत जिनके रीते भरे भरे गहि ढोरें—३१७६ ।

ढोरैं—क्रि. स. [हिं. ढोरना] (१) गिराते, बहाते या टपकाते हैं । उ.—अति ही सुंदर कुमार जसुमति रोहिनि बार बिलखति यह कहति सबै लोचन जल ढोरैं—२६०४ । (२) हिलाती-डुलाती हैं ।

ढोरै—क्रि. स. [हिं. ढोरना] (पानी सा द्रव पदार्थ) गिराता है, बहाता है, ढरकाता है । उ.—(क) जननी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति रिस जानि बँधायो, निरखि बदन लोचन जल ढोरै—३४४। (ख) रीतें भरै भरै पुनि ढोरै (ढारै) चाहै फेरि भरै—१-१०५।

ढोल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक चमड़ा मढ़ा बाजा।

यौ.—ढोल-ढमक्का—गाना-बजाना, बाजा गाजा।

मुहा.—ढोल पीटना (बजाना)-घोषणा करना, सबको जताना। ढोल बजाइ—सबको जताकर, घोषणा करके, सब पर प्रकट करके, खुल्लमखुल्ला। उ.—जनु हीरा हरि लिए हाथ तें ढोल बजाइ ठगी—२७६०।

(२) कान की झिल्ली या परदा।

ढोलक, ढोलकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढोल] छोटा ढोल जो प्रायः उत्सवों और मंगलकार्यों में स्त्रियाँ बजाती हैं।

ढोलकिया—संज्ञा स्त्री, [हिं. ढोलक] (१) छोटी ढोलक। (२) ढोलक बजानेवाला।

ढोलन, ढोलना—संज्ञा पुं. [हिं. ढोल] ढोलक के आकार का छोटा जंतर जिसे तागे में पिरोकर बच्चे के गले में पहनाया जाता है। उ.—अनगढ़ सोना ढोलना (गढ़ि) ल्याए चतुर सुनार। बीच-बीच हीरा लगे, (नँद) लाल गरे कौ हार—१०-४०।

संज्ञा पुं. [सं. दोलन] बच्चों का झूला या पालना।

क्रि. स. [सं. दोलन] (१) ढरकाना, ढालना। (२) इधर-उधर हिलाना-डुलाना।

ढोलनी—संज्ञा स्त्री. [सं. दोलन] बच्चों का झूला या पालना। उ.—लै आयो गढ़ि ढोलनी बिसकर्मा सो सुत धार।

ढोला—संज्ञा पुं. [हिं. ढोल] (१) एक कीड़ा। (२) हद या सीमा सूचित करने का चबूतरा। (३) मेहराव बनाने की डाट। (४) शरीर। (५) प्रियतम। (६) मूर्ख व्यक्ति। (७) एक गीत।

ढोलिनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढोलिया] ढोल बजानेवाली।

ढोलिया—संज्ञा पुं. [हिं. ढोल] ढोल बजानेवाला।

ढोली—संज्ञा स्त्री. [हिं. ढोल] २०० पान की गड्डी।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ठठोली, ठोली] हँसी-ठठोली। उ.—सूर प्रभु नारि राधिका नागरी चरचि लोनी मोहिं करति ढोली—१२६८।

ढोव—संज्ञा पुं. [हिं. ढोवना] भेंट, उपहार।

ढोवना—क्रि. स. [हिं. ढोना] (१) भार या बोझ चलना। (२) धन संपत्ति उड़ा ले जाना।

ढोवहिं—क्रि. स. [हिं. ढोवना] भार आदि ले जाते हैं। उ.—मेघ छ्यानबे कोटि सब जल ढोवहिं ... बार—११२८।

ढौंचा—संज्ञा पुं. [सं. अर्द्ध, प्रा. अड्ढ + हिं. चार] साढ़े चार का पहाड़ा।

ढौंसना—क्रि. अ. [हिं. धौंस से अनु.] आनंद-ध्वनि करना, किलकारी मारना।

ढौकन—संज्ञा पुं. [सं.] घूस, रिश्वत।

ढौरि, ढौरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] रट, धुन, लौ, लगन। उ.—रसिक शिरमौर ढौरि लगावत गावत राधा नाम।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ढुर्री] पगडंडी।

ण

ण—देवनागरी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ और टवर्ग का पाँचवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।

ण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आभूषण। (२) निर्णय। (३) ज्ञान। (४) शिव का एक नाम। (५) दान।

वि.—गुणहीन, जिसमें विशेषता न हो।

णगण—संज्ञा पुं. [सं.] दो मात्राओं का एक गण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त

त—देवनागरी वर्णमाला का सोलहवाँ और तवर्ग का पहला व्यंजन जिसका उच्चारण-स्थान दंत है।

तं—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नाव। (२) पुण्य।

तँई—प्रत्य. [हिं. तईं] से।

प्रत्य. [प्रा. हुंतो] (१) प्रति, को। (२) से।

अव्य. [सं. तावत्] लिए, वास्ते।

तंक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) भय, डर। उ.—जब रथ साजि चढ़ौं रन-सन्मुख, जीय न आनौं तंक। राघव सैन समेत सँहारौं, करौं रुधिरमय पंक—६-१३४। (२) वियोग का दुख। (३) पत्थर काटने की टाँकी।

तंग—संज्ञा पुं. [फ़ा.] घोड़ों की पेटी या तस्मा।

वि.—(१) कसा। (२) हैरान। (३) कम चौड़ा।

मुहा.—तंग आना (होना)—(१) घबरा जाना। (२) हैरान हो जाना। तंग करना—हैरान करना। हाथ तंग होना—पास में पैसा न होना।

तंगहाल—वि. [फ़ा.] (१) गरीब। (२) दुखी।

तंगी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) सँकरा या कम चौड़ा होने का भाव। (२) दुख। (३) गरीबी। (४) कमी।

तंड—संज्ञा पुं. [सं. तांडव] नाच, नृत्य।

तंडक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) खंजन पक्षी। (२) समास-युक्त वाक्य। (२) बहुरूपिया, आडंबरप्रिय।

तंडव—संज्ञा पुं. [सं. तांडव] एक तरह का नाच।

तंडुल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चावल। (२) एक साग।

तंडुलजल—संज्ञा पुं. [सं.] चावल का पानी।

तंत—संज्ञा पुं. [सं. तंतु] (१) सूत, ताँगा, रेशा। (२) संतान। (३) विस्तार, फैलाव। (४) ताँत।

संज्ञा स्त्री. [हिं. तुरत] आतुरता, उतावली।

संज्ञा पुं. [सं. तत्व] (१) वास्तविकता। (२) जगत का मूल कारण। (३) पृथ्वी, जल, अग्नि, गगन, वायु—ये पाँच तत्व। (४) सार।

संज्ञा पुं. [सं. तंत्र] (१) तारवाला बाजा। (२) क्रिया। (३) तंत्रशास्त्र। (४) प्रबल इच्छा। (५) अधीनता।

वि.—जो तौल या वजन में ठीक हो।

तंतमंत—संज्ञा पुं. [हिं. तंत्रमंत्र] जादू-टोना।

तंतरी—संज्ञा पुं. [सं. तंत्री] तारवाले बाजे बजानेवाला।

तंति—संज्ञा स्त्री. [सं.] गाय, गौ।

तंतु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूत, डोरा, तागा, रेशा। (२) ग्राह। (३) संतान, संतति। (४) विस्तार। (५) वंश-परंपरा। (६) ताँत। (७) मकड़ी का जाला।

तंतुक, तंतुकी—संज्ञा स्त्री. [सं.] नाड़ी।

तंतुर, तंतुल—संज्ञा पुं. [सं.] कमल की जड़ या नाल।

तंतुवादक—संज्ञा पुं. [सं.] तारवाले बाजे, (जैसे बीन, सितार) बजानेवाला, तंत्री।

तंतुवाप, तंतुवाय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कपड़ा बुननेवाला, ताँती। (२) मकड़ी।

तंत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ताँत। (२) सूत, डोरा। (३) जुलाहा। (४) कपड़ा। (५) परिवार का भरण-पोषण। (६) सिद्धांत। (७) प्रमाण। (८) दवा। (९) झाड़-फूँक। (१०) कार्य। (११) कारण। (१२) उपाय। (१३) राज्य-प्रबंध। (१४) सेना। (१५) अधिकार। (१६) समूह। (१७) प्रसन्नता। (१८) घर। (१९) धन। (२०) परवशता। (२१) वर्ग, श्रेणी। (२२) कुल, वंश। (२३) शपथ। (२४) उपासना-संबंधी एक शास्त्र।

तंत्रमंत्र—संज्ञा पुं. [हिं. तंत्र+मंत्र] जादू-टोना। उ.—यह कछु तंत्र मंत्र जानत है अति हीं सुंदर कोमल गात—५५४।

तंत्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बीन, सितार आदि तारवाले बाजे। (२) शरीर की नस। (३) रस्सी। (४) वीणा।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह जो तारवाले बाजे बजाता हो। (२) गवैया, गानेवाला। उ.—तंत्री (मंत्री) काम क्रोध निज दोऊ अपनी अपनी रीति। दुबिधा दुंदुभि है निसि बासर उपजावति बिपरीति—१-१४१।

वि.—[सं.] (१) आलसी। (२) परवश।

तंद्रा—संज्ञा स्त्री. [सं. तंद्रा] ऊँघ, खुमारी।

तंदुरुस्त—वि. [फ़ा.] स्वस्थ, नीरोग।

तंदुरुस्ती—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] स्वस्थता, नीरोगता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तंदुल—संज्ञा पुं. [सं. तंडुल] **चावल** । उ.—(क) रोर कै जोर तैं सोर घरनी कियौ, चल्यौ द्विज द्वारिका-द्वार ठाढ़ौ । जोरि अंजलि मिले, छोरि तंदुल लए, इंद्र के बिभव तैं अधिक बाढ़ौ—१-५ । (ख) तंदुल माँगि दों चिलाई सो दीन्हों उपहार । फाटे बसन बाँध कै द्विजवर अति दुर्बल तनहार—सारा ८०६ । (ग) तीनि लोक विभव दियो तंदुल के खाता—१-१२३ ।

तंदेही—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. तनदिही] (१) **परिश्रम, मेहनत**। (२)**कोशिश, प्रयत्न**। (३ **ताकीद, चेतावनी**।

तंद्रा, तंद्रि तंद्रिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **ऊँघने की अवस्था, उंघाई** । (२) **हलकी मूर्छा या बेहोशी** ।

तंद्रालु—वि. [सं.] **जिसे ऊँघ लगती हो** ।

तंद्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **ऊँघ** । (२) **भौंह** ।

तंबा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **गाय** ।

संज्ञा पुं. फ़ा. तंबान] **चौड़ी मोहरी का पायजामा** ।

तंबीह—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **उपदेश** । (२) **दंड** ।

तंबू—संज्ञा पुं. [हिं. तनना] **डेरा, शामियाना, शिविर** ।

तबूर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **एक तरह का छोटा ढोल** ।

तंबूरची—संज्ञा पुं. [फ़ा. तंबूर+ची] **तंबूर बजानेवाला** ।

तंबूर, तंबूरा—संज्ञा पुं. [हिं. तानपूरा] **बीन की तरह का एक पुराना बाजा, तानपूरा** ।

तबोल—संज्ञा पुं. [सं. तांबूल] (१) **पान का पत्ता** । (२) **पान का बीड़ा** ।

मुहा—लियौ तँबोल—**बीड़ा लिया, काम करने को कटिबद्ध हुए** । उ.—लियौ तँबोल माथ धरि हनुमत, कियो चतुरगुन गात—९-७४ ।

(३) **वह धन जो बरात के मार्गव्यय के लिए कन्या पक्षवालों की ओर से भेजा जाता है** ।

तँबोलिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. तँबोली] **तँबोली की स्त्री** ।

तँबोली—संज्ञा पुं. [हिं. तँबोल + ई] **पान बेचनेवाला** ।

तंभ, तंभन—संज्ञा पु. [सं. स्तंभ] **शृंगार रस का स्तंभ नामक सात्विक भाव** ।

तँवाई—संज्ञा स्त्री. [सं. ताप, हिं. ताव] **ताप, जलना** ।

तँवार, तँवारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तव] (१) **सिर का चक्कर, घुमटा, घुमेर** । (२) **हरारत, ज्वर** ।

तः—प्रत्य. [सं.] **एक संस्कृत प्रत्यय जो शब्दों के अंत लगकर ये अर्थ बढ़ाता है—रूप से और के अनुसार**

त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नाव** । (२) **पुण्य** । (३) **चो** (४) **झूठ** । ५) **गोद** । (६) **रत्न** । (७) **अमृत** ।

क्रि. वि. [सं तद्, हिं. तो] **तो**

तइँ, तईं—प्रत्य. [हिं. ते] **से** ।

प्रत्य. [प्रा. हुंतो] (१) **प्रति, को** । (२) **से** ।

अव्य. [सं. तावत्] **लिए, वास्ते** ।

तई—क्रि. अ. [हिं. तपना] **संतप्त या दुखी हुई** ।
(क) राधे कत रिस सरस तई—२२५५ । (
ध्यान धरत (धरत हृदय) न टरत मूर त त्रि
(तिहूँ) ताप तई—३१०७ और ३१३१ ।

प्रत्य [प्रा. हुंतो] **प्रति, को, से** । उ.—
कहै हरि रीति सब तई ।

तउ—अव्य [हि. तऊ] **तब भी, तिस पर भी,**
पर भी । उ.—(क) अष्ट-दस-घट नीर अँचव
तृषा तउ न बुझाइ—१-५६ । (ख) खवाय
गृह लाय दीन्हो, तउ न पाए जरन—१-२०२।

तऊ—अव्य. [हिं. तब+ऊ (प्रत्य.] **तो भी, तिस**
भी, तब भी । उ.—(क) देखत-सुनत सबै
हौं, तऊ न आवौ बाज —१-१०८ । (ख) बेद पु
रहत जस जाको तऊ न पावत पार—सारा, ६
(ग) निसि दिन रहत सूर के प्रभु बिनु म
तऊ न जात जियौ—२५४५ ।

तए—क्रि. अ. [हिं. तपना] **तपे, संतप्त हुए, दुखी हु**
उ.—(क) बूड़ि नुए कै कहुँ उठि गए ।
सोंच नृपति बहु तए—१-२८४ । (ख) मह
बैठे राह गए । दच्छ देखि अतिसय दुख तए-४

तक—अव्य. [सं. अंत+क] **सीमा या अवधि**
विभक्ति, पर्यंत ।

संज्ञा स्त्री. [सं. लकड़ी] **तराजू, तराजू का पल**

संज्ञा स्त्री. [हिं. टक] **स्थिर दृष्टि** ।

तकति—क्रि. अ. [हिं. ताकना] **देखती है, निहा**
है । उ.—लरकिनी सबनि घर, तोसी नहिं
निडर, चलति नभ चितै, नहिं तकति धरनी-६६

तकदीर—संज्ञा स्त्री. [अ. तक़दीर] **भाग्य, किस्मत** ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तकन—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताकना] देखना, दृष्टि ।

तकना—क्रि. अ. [हिं. ताकना] (१) देखना, निहारना। (२) शरण या आश्रय लेना ।

तकरार—संज्ञा स्त्री. [अ.] लड़ाई-झगड़ा, हुज्जत ।

तकरीर—संज्ञा स्त्री. [अ. तक़रीर] (१) बातचीत, वार्तालाप । (२) वक्तृता, भाषण, व्याख्यान ।

तकला—संज्ञा पुं. [सं. तर्कु] सूत कातने का टेकुआ ।

तकली—संज्ञा स्त्री. [हिं. तकला] छोटा तकला ।

तकलीफ—संज्ञा स्त्री. [अ. तकलीफ़] (१) कष्ट, दुख । (२) विपत्ति, मुसीबत ।

तकल्लुफ—संज्ञा पुं. [अ. तकल्लुफ़] दिखावटी शिष्टाचार ।

तकवाना—क्रि. स. [हिं. ताकना] ताकने में लगाना ।

तकवाही, तकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताकना+ई (प्रत्य.)] ताकने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

तकसीम—संज्ञा स्त्री. [अ. तक़सीम] (१) बाँटने की क्रिया या भाव । (२) भाग करने की क्रिया ।

तकाजा—संज्ञा पुं. [अ. तक़ाज़ा] (१) ऐसी चीज माँगना जिसके पाने का अधिकार हो । (२) वह काम करने को कहना जिसके लिए वचन मिल चुका हो । (३) उत्तेजना, प्रेरणा ।

तकान—संज्ञा स्त्री. [हिं. थकान] थकने का भाव ।

तकाना—क्रि. स. [हिं. ताकना का प्रे.] ताकने, देखने या निगरानी रखने में लगाना ।

क्रि. अ.—किसी ओर को भागना या जाना ।

तकावी—संज्ञा स्त्री. [अ. तक़ावी] वह धन जो किसानों को उनके व्यवसाय की उन्नति के लिए दिया जाय ।

तकि—क्रि. स. [हिं. ताकना] सोच-विचार कर, चाह-कर, देखकर । उ.—जे रघुनाथ-सरन तकि आए, तिनकी सकल आपदा टारी—१-३४ ।

तकिए—क्रि. स. [हिं. ताकना] ताकिए, देखिए, इच्छा कीजिए । उ.—कैसो कठिन कर्म केसो बिन काकी सूर सरन तकिए—३०७३ ।

तकिया—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) सिरहाने रखने का रुई या कपड़े से भरा थैला । (२) विश्राम का सहारा । (३) आश्रय, आसरा । (४) मुसलमान फकीर का निवास स्थान ।

तकिया कलाम—संज्ञा पुं. [फ़ा. तकिया+कलाम] वह शब्द या पद जो अभ्यास वश बार-बार लोगों के मुख से निकलने लगता है ।

तकियो—क्रि. स. [हिं. ताकना] देखना, आश्रय लेना । उ.—ठकुराई तकियो गिरिधर की सूरदास जन जानी—२५४८ ।

तकुआ—संज्ञा पुं. [हिं. तकला] सूत कातने का टेकुआ ।

संज्ञा पुं. [हिं. ताकना + उआ] ताकनेवाला ।

तकै—क्रि. अ. [हि. ताकना] देखता है, निहारता है, ताकता है । उ.—सूर अवगुन भरयौ, आइ द्वारैं परयौ, तकै गोपाल अब सरन तेरी – १-११० ।

तकैया—संज्ञा पुं. [हिं. ताकना+ऐया] ताकनेवाला ।

तकौं—क्रि. अ. [हिं. ताकना] देखूँ, निहारूँ । उ.—करुनासिंधु कृपाल, कृपा बिनु काकी सरन तकौं—१-१५१ ।

तक्र—संज्ञा पुं. [सं.] मठा, छाछ । उ.—छलकत तक्र उफनि अँग आवत नहिं जानति तेहिं कालहिं सों ।

तक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कश्यप का पुत्र एक नाग जिसने राजा परीक्षित को काटा था । (२) साँप, सर्प । (३) विश्वकर्मा । (४) सूत्रधार । (५) दस वायुओं में एक, नागवायु । उ.—प्रान अपान व्यान उदान और कहियत प्रान समान । तक्षक धनंजय पुनि देवदत्त और पौंड्रक संख द्युमान—सारा. ६ ।

वि.—छेदनेवाला, छेदक ।

तक्षण, तक्षा—संज्ञा पुं. [सं. तक्षन्] बढ़ई ।

तखमीना—संज्ञा पुं. [अ. तख़मीना] अंदाज, अनुमान ।

तखलिया—संज्ञा पुं. [अ. तख़लिया] एकांत स्थान ।

तख्त—संज्ञा पुं. [फ़ा. तख्त:] (१) सिंहासन । (२) चौकी ।

तख्ता—संज्ञा पुं. [फ़ा. तख्त:] (१) लकड़ी का बड़ा पटरा ।

मुहा.—तख्ता उलटना—(१) बना बनाया काम बिगड़ना । (२) प्रबंध नष्ट-भ्रष्ट होना । तख्ता हो जाना—ऐंठ या अकड़ जाना ।

(२) काठ की बड़ी चौकी । (३) अरथी, टिखटी ।

तख्ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. तख्ता] (१) छोटा तख्ता । (२) लिखने की पटिया । (३) छोटी पटरी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तगड़ा—वि. [हिं. तन+कड़ा] (१) **बलवान, ताकतवर ।** (२) **अच्छा और बड़ा ।**

तगड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तागड़ी] **करधनी, तागड़ी ।**

वि. स्त्री. [हिं. तगड़ा] (१) **बली ।** (२) **बड़ी ।**

तगण—संज्ञा पुं [सं.] **तीन वर्णों का एक गण ।**

तगा—संज्ञा पुं. [हिं. तागा] **तागा, डोरा, सूत, धागा ।** उ.—(क) प्रफुलित ह्वै कै आनि, दीनी है जसोदा रानी, झीनीयै झगुलि तामैं कंचन-तगा—१०-३६ । (ख) जाकैं नाल भए ब्रह्मादिक, सकल जोग ब्रत साध्यौ (हो) । ताकौ नाल छीन ब्रज-जुवती, बाँटि तगा सौं बाध्यौ (हो)—१०-१२८ । (ग) अपरस रहत सनेह तगा ते नाहिंन मन अनुरागी—३३३५ ।

संज्ञा पुं.—**रुहेलखंड की एक ब्राह्मण जाति ।**

तगाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तागना] **मोटी सिलाई करने का काम, भाव या मजदूरी ।**

तकादा, तगादा—संज्ञा पुं. [हिं. तकाजा] (१) **प्राप्य धन अदा करने का तकाजा ।** (२) **प्रेरणा ।**

तगाना—क्रि. स. [हिं. तागना] **मोटी सिलाई कराना ।**

तगार, तगारी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **गड्ढा । नाँद ।**

तगियाना—क्रि. स. [हिं. तागना] **मोटी सिलाई करना ।**

तगीर—संज्ञा पुं. [अ. तग़य्युर=परिवर्तन] **परिवर्तन ।**

तगीरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तगीर] **बदली, परिवर्तन ।**

तचना—क्रि. अ. [हिं. तपना] **तप्त होना, तपना ।**

तचा—संज्ञा स्त्री. [सं. त्वचा] **चमड़ा, खाल ।**

तचाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तचाना] **जलाने की क्रिया ।**

क्रि. स. भूत.—**जलायी, तपायी, तप्त की ।**

तचाना—क्रि. स. [हिं. तपाना] **जलाना, तप्त करना ।**

तचिबौ—क्रि. अ. [हिं. तपना, तचना] **जलना होगा, जलेगा ।** उ.—तजि अभिमान, राम कहि बौरे, नतरुक ज्वाला तचिबौ—१-५६ ।

संज्ञा पुं.—**तचने की क्रिया या भाव ।**

तची—क्रि. अ. [हिं. तचना] **तपी, जली, तप्त हुई ।** उ.—मानो बिधि सव उलट रची री । जानत नहीं सखी काहे ते वही न तेज तजी री ।

तच्छक—संज्ञा पुं. [सं. तक्षक] (१) **तक्षक नाग ।** (२) **साँप ।** (३) **नागवायु ।** (४) **विश्वकर्मा ।**

तच्छिन—क्रि. वि. [सं. तत्क्षण] **उसी समय ।**

तच्यो—क्रि. अ. [हिं. तचना] **तपा, तप्त हुआ ।**

क्रि. स. [हिं. तचाना] **तपाया, तप्त किया ।**

तजकिरा—संज्ञा पुं. [अ. तज़किरा] **चर्चा, जिक्र ।**

तजत—क्रि. स. [हिं. तजना] **त्यागता है, छोड़ता** उ.—(क) त्यौं सठ बृथा तजत नहिं कबहूँ, बिषय-आधीन—१-१०२ । (ख) कहा होत पय कराएँ, बिष नहिं तजत भुजंग—१-३३२ । (ग) पर नहिं तजत अघोड़ी कपटी कंस कुचाली—

तजतौ—क्रि. स. [हिं. तजना] **त्यागता, छोड़ता ।**

तजन—संज्ञा पुं. [सं. त्यजन] **त्याग, परित्याग ।**

तजना—क्रि. स. [सं. त्यजन] **त्यागना, छोड़ना ।**

तजनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. तजना] **तजने की क्रिया भाव, त्याग ।** उ.—सूरदास-प्रभु-प्रेम-मगन भई न तजनि ब्रजबाल की—१०-१०५ ।

तजरबा—संज्ञा पुं. [अ.] **अनुभव, तजुरबा ।**

तजबीज—संज्ञा स्त्री. [अ. तजवीज़] (१) **सम्मति, राय ।** (२) **फैसला, निर्णय ।** (३) **प्रबंध, आयोजन**

तजि—क्रि. स. [हिं. तजना] **छोड़कर, त्यागकर ।** उ.—छाँड़ि सुखधाम अरु गरुड़ तजि साँवरौ पवन गवन तैं अधिक धायौ—१-५ ।

तजी—क्रि. स. [हिं. तजना] **त्याग दी ।** उ.— परे तैं धीर सबहिनि तजी—१-५ ।

तजे—क्रि. स. [हिं. तजना] **छोड़ा, त्यागा ।** उ.— ग्रह तजे मुरारे—१-२४२ ।

तजैं—क्रि. स. [हिं. तजना] **छोड़ता है, त्यागता** उ.—सिंह-सावक ज्यौं तजैं ग्रह इंद्र आदि डरा १-१०६ ।

तजै—क्रि. स. [हिं. तजना] **छोड़े, त्यागे ।** उ.— कूल-मूल आश्रित कौं तजै आपु अकुलाइ—

तजौं—क्रि. स. [हिं. तजना] **छोड़ दूं, त्याग दूं ।** उ. तन दैबे तैं नाहिंन भजौं । जोग धारना करि तजौं—६-५ ।

तजौंगी—क्रि. स. स्त्री. [हिं. तजना] **छोड़ूंगी, दूंगी ।** उ.—प्रान तजौंगी आपनो देखि सिरमौर—३५०८ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[हिं. तजना] तज दूँगा, छोड़ दूँगा । उ.—मैं निज प्रान तजौंगो सुनि कपि, तजिहि जानकी सुनिकै—६-१४६ ।

तजौंगो—क्रि. स. [हिं. तजना] तज दूँगा, छोड़ दूँगा ।

तजौ—क्रि. स. [हिं. तजना] त्याग दो, छोड़ दो । उ.—(क) तजौ बिरद कै मोहिं उधारौ, सूर कहै कसि फेंट—१-१४५ । (ख) तजौ मन, हरि बिमुखन कौ संग—१-३३२ ।

तज्यौ—क्रि. स. भूत. [हिं. तजना] त्याग दिया, छोड़ दिया । उ.—सुतनि तज्यौ, तिय तज्यौ, भ्रात तज्यौ, तन तैं त्वच भई न्यारी—१-११८ ।

तज्ञ—वि. [सं.] (१) तत्व का ज्ञाता । (२) ज्ञानी ।

तटंक—संज्ञा पुं. [सं. ताटंक] कर्णफूल नामक कान का गहना । उ.—चलि-चलि आवत स्रवने निकट अति सकुचि तंटक फँदा ते ।

तट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तीर, किनारा, कूल । उ.—हारी जानि परी हरि मेरी । माया-जल बूड़त हौं, तकि तट चरन-सरन धरि तेरी—१-२१३ । (२) क्षेत्र, खेत । (३) शिव, महादेव ।

क्रि. वि.—समीप, पास, निकट ।

तटका—वि. [हिं. टटका] (१) हाल का, ताजा, तत्काल का । (२) नया, कोरा ।

तटकी—वि. स्त्री. [हिं. तटका] हाल की, तुरंत की । उ.—निसि के उनींदे नैन तैसे रहे टरि टरि । किधौं कहूँ प्यारी को तटकी लागी नजरि ।

तटके—क्रि. वि. [हिं. तटका] तुरंत, शीघ्र । उ.—लीजो जोग सँभारि आपुनो जाहु तहीं तटके—३१०७ ।

तटग—संज्ञा पुं. [सं.] तालाब, सरोवर, तड़ाग ।

तटनी—संज्ञा स्त्री. [सं. तटिनी] नदी, सरिता ।

तटस्थ—वि. [सं.] (१) तीर या किनारे पर रहनेवाला । (२) समीप या निकट रहनेवाला । (३) अलग रहनेवाला । (४) जो किसी के पक्ष में न हो, उदासीन ।

तटस्थता—संज्ञा स्त्री. [सं.] तटस्थ रहने या होने का कार्य या भाव, उदासीनता ।

तटस्थीकरण—संज्ञा पुं. [सं. तटस्थ+करण] (१) तटस्थ करने की क्रिया या भाव । (२) किसी वस्तु का गुण हटाकर इसके प्रभाव को नष्ट करने की क्रिया ।

तटाक—संज्ञा पुं. [सं.] तालाब, सरोवर, तड़ाग ।

तटिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] नदी, सरिता ।

तटी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) तीर, कूल, किनारा । (२) नदी, सरिता । उ.—सूर सुजल सींचियै कृपानिधि, निज जन चरन-तटी—१-९८ । (३) तराई, घाटी ।

तड़—संज्ञा पुं. [सं. तट] विभाग, पक्ष ।

संज्ञा पुं. [अनु.] पटकने या पीटने का शब्द ।

यौ.—तड़ पड़—चटपट, तुरंत, तत्काल ।

तड़क—संज्ञा स्त्री. [हिं. तड़कना] (१) तड़कने की क्रिया या भाव । (२) तड़कने या टूटने का चिह्न । (३) चटपटे पदार्थ, चाट ।

तड़कना—क्रि. अ. [अनु.] (१) तड़ शब्द के साथ टूटना । (२) सूखी चीज का फटना । (३) जोर का शब्द करना । (४) झुँझलाना, बिगड़ना । (५) उछलना-कूदना ।

क्रि. स.—छौंकना, बघारना, तड़का देना ।

तड़क-भड़क—संज्ञा स्त्री. [अनु.] ठाट-बाट ।

तड़का—संज्ञा पुं. [हिं. तड़कना] (१) सबेरा । (२) छौंक ।

तड़काना—क्रि. स. [हिं. तड़कना] (१) तड़ से तोड़ना । (२) सुखाकर फाड़ना । (३) जोर का शब्द करना । (४) खिजाना, क्रोध दिलाना ।

तड़कीला—वि. [हिं. तड़कना + ईला (प्रत्य.)] (१) चमक भड़कवाला । (२) तड़कने, फटने या टूटनेवाला ।

तड़क्का—संज्ञा पुं. [हिं. तड़का] सबेरा, प्रातःकाल ।

क्रि. वि. [हिं. तड़ाका] चटपट, तुरंत ।

तड़तड़ाना—क्रि. अ. [अनु.] तड़तड़ शब्द होना ।

क्रि. स.—तड़तड़ शब्द उत्पन्न करना ।

तड़तड़ाहट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] तड़तड़ाने की क्रिया ।

तड़ता—संज्ञा स्त्री. [सं. तड़ित] बिजली, विद्युत ।

तड़प—संज्ञा स्त्री. [हिं. तड़पना] (१) तड़पने की क्रिया या भाव । (२) चमक-दमक ।

तड़पदार—वि. [हिं. तड़प+फ़ा. दार] चमकीला ।

तड़पना, तड़फना—क्रि. अ. [अनु.] (१) कष्ट या वेदना से छटपटाना । (२)घोर शब्द करना, गरजना ।

तड़पाना, तड़फाना—क्रि. स. [हिं. तड़पना] (१) कष्ट या वेदना से पीड़ित करना (२) घोर शब्द करने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाध्य करना।

तड़ाक—संज्ञा पुं. [सं.] **तालाब, सरोवर।**

संज्ञा पुं. [अनु.] **तड़ाके का शब्द।**

क्रि. वि.—(१) **तड़ाक से।** (२) **चटपट, तुरंत।**

यौ.—तड़ाक-फड़ाक—**चटपट, तुरंत!**

तड़ाका—संज्ञा पुं. [अनु.] **तड़तड़ का शब्द।**

क्रि. वि.—**चटपट, तुरंत, तत्काल।**

तड़ाग, तड़ागा—संज्ञा पुं. [सं.] **तालाब, सरोवर।** उ.—एकबार ताकैं मन आई। न्हावन-काज तड़ाग सिधाई—९-१७४।

तड़ातड़—क्रि. वि. [अनु.] **तड़तड़ शब्द के साथ।**

तड़ाना—क्रि. स. [हिं. ताड़ना का प्रे.] **किसी दूसरे को ताड़ने या भाँपने में प्रवृत्त करना।**

तड़ावा—संज्ञा स्त्री. [हिं. तड़ाना = दिखाना] (१) **ऊपरी या दिखावटी चमक-दमक।** (२) **धोखा, छल।**

तड़ित, तड़िता—संज्ञा स्त्री. [सं. तड़ित्] **बिजली, विद्युत।**

तड़ित-बसन—संज्ञा पुं. [सं. तड़ित्+वसन] **बिजली के समान उज्ज्वल या चमक-दमकवाले वस्त्र।** उ.—तड़ित-बसन घन-स्याम सदस तन तेज-पुंज तम कौं त्रासै—२-६६।

तड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तड़] (१) **चपत।** (२)**बहाना।**

तट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वायु।** (२) **विस्तार, फैलाव।** (३) **पिता।** (४) **पुत्र।** (५) **तारवाला बाजा।**

वि. [सं. तप्त] **तपा हुआ, गरम।**

संज्ञा पुं. [सं. तत्व] (१) **पंचतत्व।** (२) **सार।**

ततकाल—क्रि. वि. [सं. तत्काल] **तुरंत, उसी समय।** उ.—(क) सुमिरत ही ततकाल कृपानिधि, बसन-प्रवाह बढ़ायौ—१-१०९। (ख) ततकालहिं तब प्रगट भए हरि, राजा-जीव उबारयौ—१-१०९।

ततछन—क्रि. वि. [सं. तत्क्षण] **उसी समय, तत्काल।** उ.—(क) ब्रह्मा बाल बछरुआ हरि गयौ, सो ततछन सारिखे सँवारी—१-२८। (ख) हति गज-सत्रु सूर के स्वामी ततछन सुख उपजाए—८-६।

ततपर—वि. [सं. तत्पर] **तैयार, कटिबद्ध।**

ततबाउ, ततबाऊ, ततबाय, ततुबाउ, ततुबाऊ—संज्ञा पुं. [सं. तंतुवाय] (१) **जुलाहा।** (२) **मकड़ी।**

ततबीर—संज्ञा स्त्री. [अ. तदबीर] **युक्ति, उपाय।** कोउ गई जल-पैठि तरुनी और ठाढ़ी तीर। लई बोलाइ राधा करति सुख तदबीर।

ततसार—संज्ञा स्त्री. [सं. तप्तशाला] **तपान का**

तताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तत्ता] **ताप, गरमी।**

ततारना—क्रि. स. [हिं. तत्त] **जल-धार से धोना।**

तति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **श्रेणी, पंक्ति, ताँता।** **झुंड, समूह।** (३) **विस्तार, फैलाव।**

ततिहर—संज्ञा पुं. [हिं. तत्ता + हाँड़ी] **जल का पात्र।** उ.—मोहन आउ, तुम्हैं अन्हवाऊँ। तैं जलभरि लै आऊँ, ततिहर तुरत चढ़ाऊँ-१०-

ततैया—संज्ञा स्त्री.[सं.तिक्त] (१) **बर्रे।** (२) **कड़ुई**

वि. [हिं. तीता] (१) **फुरतीला।** (२)**चाला**

तत्—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ब्रह्म।** (२) **वायु।**

सर्व.—**उस।**

तत्काल—क्रि. वि. [सं.] **तुरंत, उसी समय।**

तत्कालीन—वि. [सं.] **उसी समय का (की)।**

तत्क्षण—क्रि. वि. [सं.] **उसी क्षण, फौरन।**

तत्त—संज्ञा पुं. [सं. तत्व] **तत्व, सार।**

तत्ता—वि. [सं. तप्त] **जलता या तपता हुआ।**

तत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१)**यथार्थता, वास्तविक स्थि** (२) **जगत के मूल कारण जो २५ माने गये हैं—** **प्रकृति, महतत्व या बुद्धि, अहंकार, चक्षु,** **नासिका, जिहवा, त्वक, वाक्, पाणि, वायु,** **उपस्थ, मन, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, पृथ्वी,** **तेज, वायु और आकाश। सूरदास ने इनमें सत्,** **और तम तीनों गुणों को सम्मिलित करके २८** **लिखे हैं।** उ.—कीन्हें तत्व प्रकट तेही छन सबै अरु बीस। तिनके नाम कहत कवि सूरज निगु सबके ईस। पृथिवी अप तेज वायु नभ संज्ञा परस अरु गंध। रस अरु रूप और मन बुधि अहंकार मतिअंध। पान अपान व्यान उदान कहियत प्रान समान। तत्क धनंजय पुनि देव अरु पौंड्रक संख द्यु मान। राजस तामस सात्विक जीव ब्रह्म सुखधाम। अट्ठाइस तत्व यह कहि सो कवि सूरज नाम—सारा. ७, ८, ९, १०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश)। उ.—जाके उदर लोक-त्रय, जल-थल, पंच तत्व चौ-खानि—४८७ (४) परमात्मा। (५) सार, सारांश।
तत्वज्ञ, तत्वज्ञानी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ईश्वर या ब्रह्म को जानेवाला, ब्रह्मज्ञानी। (२)दर्शनशास्त्र का ज्ञाता।
तत्वज्ञान—संज्ञा पुं. [सं.] ब्रह्म, जीव और आत्मा का ज्ञान जिससे मनुष्य की मुक्ति हो जाय।
तत्वविद्, तत्ववेत्ता—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ईश्वर या ब्रह्म का ज्ञान रखनेवाला। (२) दार्शनिक।
तत्वावधान—संज्ञा पुं. [सं.] निरीक्षण, देखभाल।
तत्त्वावधानक—संज्ञा पुं. [सं.] निरीक्षक।
तत्थ—वि. [सं. तत्व] मुख्य, प्रधान।
संज्ञा पुं.—शक्ति, बल, सामर्थ्य।
तत्पद—संज्ञा पुं. [सं.] परमपद, निर्वाण, मोक्ष।
तत्पर—वि. [सं.] (१) तैयार, मुस्तैद। (२) चतुर।
तत्परता—वि. [सं.] (१) मुस्तैदी। (२) चतुरता।
तत्पुरुष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ईश्वर। (२) समास का एक भेद। (३) एक रुद्र का नाम।
तत्र—क्रि. वि. [सं.] उस जगह, वहाँ।
तत्रभवान—वि. [सं.] माननीय, पूज्य, श्रेष्ठ।
तत्रापि—अव्य. [सं.] तथापि, तो भी।
तत्सम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संस्कृत का वह शब्द जिसका व्यवहार हिंदी में उसके शुद्ध रूप में हो। (२) शब्द का शुद्ध या मूल रूप।
तथा—अव्य. [सं.] (१) और। (२) उसी तरह, ऐसे या वैसे ही। उ.—(क) कह्यौ, कहौं इक नृप की कथा। उन जो कियो, करौ तुम तथा—४-१२। (ख) बहुरि कही अपनी सब कथा। हरि जो कह्यौ, कह्यौ पुनि तथा—६-५।
यौ.—तथास्तु—ऐसा ही हो।
संज्ञा पुं.—(१)सत्य। (२)सीमा (३) समानता।
संज्ञा स्त्री.—शक्ति, सामर्थ्य, क्षमता।
तथागत—संज्ञा पुं. [सं.] गौतम बुद्ध का एक नाम।
तथापि—अव्य. [सं.] तो भी, तिस पर भी, तब भी।
तथैव—अव्य. [सं.] वैसा ही, उसी प्रकार।
तथ्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सच्चाई, यथार्थता। (२) सत्य घटना। (३) वह बात जिसका ज्ञान विशेष अवस्था या स्थिति में हुआ हो।
तथ्यभाषी, तथ्यवादी—वि. [सं. तथ्य+हिं. भाषी, वादी] साफ और सच्ची बात कहनेवाला।
तदंतर—क्रि. वि. [सं.] इसके बाद या उपरांत।
तदनंतर—क्रि. वि. [सं.] उसके बाद या उपरांत।
तदनु—क्रि. वि. [सं.] (१)उसके बाद। (२) उसी तरह।
तदनुरूप—वि. [सं.] उसी के रूप रंग का।
तदनुसार—वि. [सं.] उसी के अनुसार।
तदपि—अव्य. [सं.] तो भी, तिस पर भी, तथापि। उ.—तदपि सूर मैं भक्त बछल हौं, भक्तनि हाथ बिकानौ—१-२४३।
तदबीर—संज्ञा स्त्री. [अ.] युक्ति, उपाय, तरकीब।
तदा—क्रि. वि. [सं.] उस समय, तब।
तदाकार—वि. [सं.] (१) वैसा ही। (२) लवलीन।
तदपि—सर्व. [सं.] उसका, उससे संबंधित।
तदुपरांत—क्रि. वि. [सं.] उसके पीछे या बाद।
तद्गत—वि. [सं.] (१) उससे संबंधित। (२) उसमें व्याप्त।
तद्गुण—संज्ञा पुं. [सं.] एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का अपना गुण त्यागकर समीपवर्ती श्रेष्ठ वस्तु का गुण ग्रहण कर लेना वर्णित हो।
तद्धित—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक प्रत्यय जिसे संज्ञा के अंत में लगाकर नया शब्द बनाते हैं। (२) इस प्रत्यय के लगने से बननेवाला नया शब्द।
तद्भव—संज्ञा पुं. [सं.] तत्सम शब्द का विकृत, परिवर्तित या अपभ्रंश रूप।
तद्यपि—अव्य. [सं.] तथापि, तो भी।
तद्रूप—वि. [सं.] समान, वैसा ही, सदृश।
तद्रूपता—संज्ञा स्त्री. [सं.] सादृश्य, समानता। उ.—जानि जुग जूप मैं भूप तद्रूपता बहुरि करिहैं कलुष भूमि भारी—१० उ. ५०।
तद्वत—वि. [सं.] उसके समान, ज्यों का त्यों।
तधी—क्रि. वि. [सं. तदा] तभी।
तन—संज्ञा पुं. [सं. तनु] (१) शरीर, गात। उ.—(क) लाज के साज मैं हुती ज्यौं द्रौपदी, बढ़्यौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन-चीर नहिं अन्त पायौ—१-५। (ख) अब हीं देखे नवल किसोर। घर आवत ही तनक भये हैं ऐसे तन के चोर—१३६४। (२) योनि। उ.—काहू के कुल तन न बिचारत। अबिगत की गति कहि न परति है, ब्याध-अजामिल तारत—१-१२।

यौ. - तन ताप—(१) शारीरिक कष्ट। (२) भूख, क्षुधा।

क्रि. वि.—तरफ, ओर। उ.—(क) तजि कुल-लाज सूर के प्रभु के मुख-तन फिरि फिरि चितवत—७३०। (ख) सुनत ठाढ़ो भयो हाँक तिनकौं दयो दनुज कुल-दहन ता तन निहारै—२६११। (ग) मधुबन तन तैं आवत सखी री देखहु नैन निहारि—३०५१।

तनक—वि. [हिं. तनिक] (१) थोड़ा, कम। उ.—कब धौं तनक तनक कछु खैहै, अपने कर सौं मुखहिं भरै—१०-७६। (२) छोटा। उ.—(क) तनक तनक सी दूध-दँतुलिया, देखौ, नैन सफल करौ आइ—१०-८२। (ख) अब ही देखे नवल किसोर। घर आवत ही तनक भये हैं ऐसे तन के चोर-१३६४।

तनकि—क्रि. अ. [हिं. तिनकना] रूठकर, खीजकर। उ.—तनक सी बात कहै, तनक तनकि रहै, तनक सौ रीझि रहै तनक से साधन—१०-१५०।

तनकीह—संज्ञा स्त्री. [अ.] जांच, खोज।

तनखाह—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. तनख़्वाह] वेतन।

तनगना—क्रि. अ. [हिं. तिनकना] चिढ़ना, झल्लाना।

तनगि—क्रि. अ. [हिं. तिनकना] झल्लाकर, झुँझलाकर। उ.—सुनहु सूर पुनि तो कहि आवै तनगि गये ता पास।

तन-चीर—संज्ञा पुं. [सं. तनु + चीर] शरीर का वस्त्र, धोती, साड़ी। उ.—लाज के साज मैं हुती ज्यौं द्रौपदी, बढ़यौ तन-चीर नहिं अंत पायौ—१-५।

तनज्जुली—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] अवनति।

तनत—क्रि. स. [हिं. तानना] तानती है।

मुहा.—भौंह तनत—गुस्सा दिखाती है। उ.—बार-बार बुझाइ हारी भौंह मो पर तनत-पृ० ३२६।

तनतना—संज्ञा पुं. [हिं. तनतनाना] (१) रोबदाब, दबदबा। (२) क्रोध, गुस्सा।

तनतनाना—क्रि. अ. [हिं. तनना या अनु.] (१) रोब या शान दिखाना। (२) क्रोध या गुस्सा दिखाना।

तनत्राण—संज्ञा पुं. [सं. तनुत्राण] (१) वह चीज जो शरीर की रक्षा करे। (२) कवच।

तनधर—संज्ञा पुं. [सं. तनुधारी] शरीरधारी।

तनना—क्रि. अ. [सं. तन या तनु] (१) खिंचना। (२) कस जाना। (३) आकर्षित या प्रवृत्त होना। (४) ऐंठना, कष्ट होना।

तनमय—वि. [सं. तन्मय] लीन, लवलीन, मग्न। उ.—(क) अपनो अपनो भाग सखी री तुम तनमय मैं कहुँ न नेरे। (ख) कबहूँ कहति कौन हरि को मैं तौं तनमय ह्वै जाहीं।

तनमात्रा—संज्ञा स्त्री. [सं. तन्मात्रा] पंचभूतों का आदि रूप।

तनय—संज्ञा पुं. [सं.] पुत्र, बेटा।

तनया—संज्ञा स्त्री. [सं.] बेटी, पुत्री।

तनराग—संज्ञा पुं. [सं. तनुराग] सुगंधित उबटन।

तनरुह—संज्ञा पुं. [सं. तनूरुह] (१) रोम, लोम, रोआँ। (२) पक्षियों का पर या पंख। (३) पुत्र।

तनवाना—क्रि.स. [हिं. तानना का प्रे.] तानने में लगाना।

तनसुख—संज्ञा पुं. [हिं. तन + सुख] एक बढ़िया कपड़ा।

तनहा—वि. [फ़ा.] अकेला, एकाकी।

तनहाई—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) अकेला होने की दशा या भाव। (२) एकांत स्थान।

तना—संज्ञा पुं. [फ़ा.] वृक्ष का निचला मोटा भाग।

क्रि. वि. [हिं. तन] ओर, तरफ।

तनाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तनना] तनने का भाव, तनाव।

तनाउ, तनाऊ—संज्ञा पुं. [हिं. तनना] तनने का भाव।

तनाकु—क्रि. वि. [हिं. तनिक] जरा, टुक।

तनाजा—संज्ञा पुं. [अ. तनाज़ा] (१) झगड़ा। (२) शत्रुता।

तनाना—क्रि. स. [हिं. तानना] दूसरे को तानने में प्रवृत्त करना या लगाना।

तनायौ—क्रि. स. भूत. [हिं. तनाया (प्रे.)] तनाया, (छत्र आदि) फैलाया। उ.—देखि रे, वह सारँग-धर आयौ। सागर-तीर भीर बानर की, सिर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छत्र तनायौ—६-१२५ ।

तनाव—संज्ञा पुं. [हिं. तनना] (१) तनने की क्रिया या भाव। (२) रज्जु, रस्सी ।

संज्ञा पुं. [हिं. तनना] रूठने या बुरा मानने का भाव।

तनि, तनिक, तनिकौ—क्रि. वि. [सं. तनु = अल्प, हिं. तनिक] जरा भी, टुक । उ.—भूख प्यास ताकौं नहिं ब्यापै । सुख दुख तनिकौ तिहिं न सँतापै—३-१३ ।

वि.—(१) थोड़ा, कम । (२) छोटा । उ.—इहाँ हुती मेरी तनिक मड़ैया को नृप आइ छरयौ ।

तनियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. तनी] (१) कछनी,जाँघिया। उ.—कनक-रतन-मनि-जटित-रचित कटि-किंकिनि कुनित पीत-पट तनियाँ—१०-१०६ । (२) लँगोट, कौपीन। (३) चोली ।

तनिष्ठ—वि. [सं.] दुबला-पतला, कमजोर ।

तनी—संज्ञा स्त्री. [सं. तनिका, हिं. तानना] (१) अँगरखे या चोली का बंद जो उस वस्त्र का पल्ला तानकर बाँधने के काम आता है। उ.—(क) सिर स्वेत पट कटि नील लहँगा लाल चोली बिन तनी —१० उ. २४। (ख) कंचुकि ते कुचकलस प्रगट ह्वै टूटि न तरक तनी—१० उ. १२२। (२) बंधन, डोरी, फंदा। उ.—आनँद-मगन राम-गुन गावै, दुख-संताप की काटि तनी—१-३६ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. तनिया] (१) लँगोट, कौपीन। (२) कछनी, जाँघिया। (३) चोली ।

क्रि. वि. [हिं. तनिक] जरा, टुक, तनिक ।

वि.—(१) थोड़ा, कम। (२) छोटा ।

क्रि. अ. [हिं. तनना] अप्रसन्न हुई, रूठी ।

तनु—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) शरीर, देह। उ.—(क) छैलनि कै संग यौं फिरै, जैसैं तनु सँग छाईं (हो)—१-४४। (ख) निरखि पतंग बान नहिं छाँड़त जदपि जोति तनु तावत—१-२१०। (ग) सूरदास अक्रूर कृपा तैं सही बिपति तनु गाढ़ी—२५३५। (२) चमड़ा, खाल। (३) स्त्री, औरत। (४) केंचुली।

वि.—[सं.] (१) दुबला-पतला। (२) थोड़ा, कम। (३) कोमल, नाज़ुक। (४) सुंदर।

तनुक—वि. [हिं. तनिक] (१) थोड़ा। (२) छोटा।

क्रि. वि.—जरा, टुक, तनिक।

संज्ञा पुं.—(१)शरीर। (२)चमड़ा। (३) केंचुल।

तनुज़—संज्ञा पुं. [सं.] पुत्र, बेटा।

तनुजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] पुत्री, बेटी।

तनुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) छोटाई। (२) दुर्बलता।

तनुधारी—वि. [सं.] शरीर या देहधारी।

तनुभव—संज्ञा पुं. [सं.] पुत्र, बेटा।

तनुराग—संज्ञा पुं. [सं.] सुगंधित उबटन।

तनुरुह—संज्ञा पुं. [सं.] रोम, लोम, रोआँ।

तनू—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पुत्र। (२) शरीर।

तनूज—संज्ञा पुं. [सं. तनुज] पुत्र, बेटा।

तनूजा—संज्ञा स्त्री. [सं. तनुजा] पुत्री, बेटी।

तनूरुह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रोम, रोआँ, लोम। (२) पक्षियों का पंख या पर (३) पुत्र, बेटा।

तनेना, तनैना—वि. [हिं. तनना+एना(प्रत्य.)] (१) खिंचा हुआ, टेढ़ा, तिरछा। (२) क्रुद्ध, अप्रसन्न।

तनेनी, तनैनी—वि. स्त्री. [तनेना] (१) टेढ़ी, तिरछी खिंची हुई। (२) अप्रसन्न, रूठी हुई, तनी हुई।

तनै—संज्ञा पुं. [सं. तनय] पुत्र, बेटा।

तनैया—संज्ञा स्त्री. [सं. तनया] पुत्री, बेटी।

तनोज—संज्ञा पुं. [सं. तनूज] (१) रोआँ। (२) पुत्र।

तनोरुह—संज्ञा पुं. [तनूरुह] (१) रोआँ। (२) पुत्र।

तन्नाना—क्रि. अ. [हिं. तनना] ऐंठना, बिगड़ना।

तन्मय—वि. [सं.] लीन, लवलीन, लिप्त। उ.—सूरदास गोपी तनु तजिकै तन्मय भई नँदलाल सौं—८०४।

तन्मयता—संज्ञा स्त्री. [सं.] लिप्तता, लीनता, लगन।

तन्मयासक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] भक्ति में अपने को भूलकर स्वयं को भगवान समझना।

तन्मात्र, तन्मात्रा—संज्ञा स्त्री. [सं. तन्मात्र] पंचभूतों का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप, रस और गंध। उ.—रजगुन तैं इंद्रिय बिस्तारी। तमगुन तैं तन्माचा सारी—३-१३।

तन्वि, तन्वी—वि. [सं. तन्वी] कोमल अंगवाली।

तप—संज्ञा पुं. [सं. तपस्] (१) चित्त-शुद्धि अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक निग्रह के उद्देश्य से किये गये व्रत अथवा नियम, तपस्या। उ.—सुरपति बिस्वरूप पै जाइ। दोउ कर जोरि कह्यौ सिर नाइ। कृपा करौ मम प्रोहित होहु। कियौ बृहस्पति मो पर कोहु। कह्यौ, पुरोहित होत न भलौ। बिनसि जात तेज-तप सकलौ —६-५। (२) मन, वचन आदि को वश में रखने का धर्म। (३) अग्नि।

संज्ञा पुं.—(१) गरमी, ताप। (२) ग्रीष्म ऋतु। (३) ज्वर, हरारत।

तपकना—क्रि. अ. [हिं. टपकना] धड़कना, उछलना।

तपड़ी—संज्ञा स्त्री. [देश.] छोटा टीला, ढूह।

तपत—वि. [हिं. तप्त] तपता या जलता हुआ।

क्रि. अ. [हिं. तपना] कष्ट सहता है। उ.—सूर स्याम बिनु तपत रैनि दिन मिले भलेहिं सचु-पावहि—३४२७।

तपति—संज्ञा पुं. [सं. तपन] (१) ताप, जलन, दाह। उ.—(क) गहि बहियाँ हौं लैकै जैहौं, नैननि तपति बुझान दै—१०-२७४। (ख) लोचन तृप्त भए दर-सन तैं, उर की तपति बुझानी—७७८। (२) ताप, गरमी। उ.—धन्य व्रत इन कियौ पूरन, सीत तपति निवारि—७८३।

वि.—तप्त, तपे हुए। उ.—नैन सिथिल, सीतल नासापुट, अंग तपति, कछु सुधि न रहाई—७४८।

क्रि. अ.—(१) तपती है। (२) कष्ट सहती है।

तपन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ताप, जलन, दाह। (२) सूर्य। (३) ग्रीष्म, गरमी। (४) एक अग्नि।

संज्ञा स्त्री. [हिं. तपना] तपने का भाव।

मुहा.—तपन का महीना—गरमी की ऋतु।

तपना—क्रि. अ. [सं. तपन] (१) खूब गरम होना। (२) कष्ट सहना, मुसीबत झेलना। (३) तेज या गरमी फैलाना। (४) प्रताप या आतंक दिखाना। (५) तप-तपस्या करना।

तपनि—संज्ञा पुं. [सं. तपन] ताप, जलन, दाह। उ.—को जानै हरि की चतुराई। नैन-सैन संभाषन कीन्हौ, प्यारी की उर-तपनि मिटाई—७०१।

तपनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तपना] (१) आग तापने का स्थान, कौंड़ा, अलाव। (२) तप, तपस्या। उ.—मेरो कह्यौ करि मान हृदय धरि, छौंड़ि दे अति तपनी—१६६२।

तपभूमि—संज्ञा स्त्री. [सं. तपोभूमि] तप करने का स्थान।

तपराशि—संज्ञा पुं. [सं. तपोराशि] बड़ा तपस्वी।

तपलोक—संज्ञा पुं. [सं. तपोलोक] एक लोक जहाँ अपने कठिन तप से भगवान को प्रसन्न करनेवाले लोग भजे जाते हैं। यह लोक जनलोक और सत्यलोक के बीच में स्थित माना गया है। उ.—सत्यलोक जनलोक, तपलोक और महर निज लोक। जहँ राजत ध्रुवराज महानिधि निसि दिन रहत असोक—सारा. २२।

तपवाना—क्रि. स. [हिं. तपाना] गरम कराना।

तपवृद्ध—वि. [सं. तपोवृद्ध] तपस्वियों में श्रेष्ठ।

तपश्चरण—संज्ञा पुं. [सं.] तप, तपस्या।

तपश्चर्या—संज्ञा स्त्री. [सं. तपश्चर्य्या] तपस्या।

तपस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य। (२) चंद्र।

संज्ञा स्त्री. [सं. तपन] ताप, तपन।

तपसा—संज्ञा स्त्री. [सं. तपस्या] तप, तपस्या।

तपसाली—संज्ञा पुं. [सं. तपःशालिन्] तपस्वी।

तपसियनि—संज्ञा पुं. बहु. [सं. तपस्वी] तपस्वियों। उ.—तपसियनि देखि कह्यौ, क्रोध इनमैं अहुत, ज्ञानियनि मैं न आचार पेखौं—८-८।

तपसी—संज्ञा पुं. [सं. तपस्वी] तपस्या करनेवाला, तपस्वी। उ.—(क) बहुतक तपसी पचि पचि मुए। पै तिन हरि-दरसन नहि हुए—४-६। (ख) तपसी तुमकौं तप करि पावैं। सुनि भागवत गृही गुन गावैं। (ग) तीनि लोक तैं पकरि मँगाऊँ वै तपसी दोउ भाई—६-१४०।

तपस्या—संज्ञा स्त्री [सं.] तप, व्रतचर्या।

तपस्विता—संज्ञा स्त्री. [सं.] तपस्वी होने का भाव, स्थिति या अवस्था।

तपस्विनी—संज्ञा स्त्री. [सं. (१) तप करनेवाली। (२) तपस्वी की स्त्री। (३) सती। (४) दीन स्त्री।

तपस्वी—संज्ञा पुं. [सं. तपस्विन्] तप करनेवाला।

तपा—संज्ञा पुं. [हिं. तप] तपस्वी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि.—तप या तपस्या में लीन।

वि.—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) जोश। (२) तेजी।

तपाक—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) जोश। (२) तेजी।

तपाकर—संज्ञा पुं. सं. तप+आकर=खान] (१) सूर्य। (२) बहुत बड़ा तपस्वी।

तपानल—संज्ञा पुं. [सं. तप+अनल] तप के कारण उत्पन्न तेज या प्रताप।

तपाना क्रि. स. [हिं. तपना] (१) बहुत गरम करना। (२) कष्ट या दुख देना। (३) चिढ़ाना।

तपावंत—संज्ञा पुं. [हिं. तप+वंत] तपस्वी।

तपाव—संज्ञा पुं. [हि. तपना+आव] ताप, तपन।

तपित—वि. [सं. तप्त] तपा हुआ, गरम।

तपिया—संज्ञा पुं. [सं. तपस्वी] तपस्वी।

तपिश—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] गरमी, आँच, ताव।

तपी—संज्ञा पुं. [हिं. तप+ई (प्रत्य.)] (१) तप करनेवाला तपस्वी। (२) सूर्य।

तपु—संज्ञा पुं [सं. तपुस्] (१) आग। (२) सूर्य। (३) शत्रु।

वि.—(१) तपा हुआ, तप्त। (२) तपानेवाला।

तपेदिक—संज्ञा पुं. [फ़ा. तप+अ. दिक] क्षयी रोग।

तपै—क्रि. अ. [हिं. तपना] तपती है, जलती है।

उ.—माधो चलन कहत मधुबन को सुने तपै अति छाती—२४६६।

तपोधन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तपस्वी। (२) तप।

तपोनिधि, तपोनिष्ठ—संज्ञा पुं. [सं.] तपस्वी।

तपोवन—संज्ञा पुं. [सं. तपोवन] तपस्वियों का स्थान।

तपोबल—संज्ञा पुं. [सं.] तप का प्रभाव।

तपोभूमि—संज्ञा स्त्री. [सं.] तप का स्थान।

तपोमय—संज्ञा पुं. [सं.] परमेश्वर।

तपोमूर्ति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) परमेश्वर। (२) तपस्वी।

तपोराशि—संज्ञा पुं. [सं.] बहुत बड़ा तपस्वी।

तपोलोक—संज्ञा पुं. [सं.] जनलोक और सत्यलोक के बीच एक लोक जहाँ कठिन तपस्या से भगवान को संतुष्ठ करनेवाले लोग जाते हैं।

तपोवन—संज्ञा पुं. [सं.] तपस्वियों का स्थान।

तपोवृद्ध—वि. [सं.] तपस्वियों में श्रेष्ठ।

तपौना—संज्ञा स्त्री [हिं. तपनी] तप, तपस्या।

तप्त—वि. [सं.] (१) जलता हुआ, तापित, गरम, उष्ण।

उ.—(क) जनु सीतल सौं तप्त सलिल दै सुखित समोइ करे—६-१७१। (ख) भूलिहु जिनि आवहिं यहि गोकुल तप्त रैनि औ चंद—३४२०। (२) दुखित, पीड़ित।

तप्तमुद्रा संज्ञा स्त्री. [सं.] द्वारका के शंख-चक्र आदि के छापे जिन्हें वैष्णव लोग धार्मिक चिन्ह-रूप में भुजा आदि अंगों में दाग लेते हैं।

तप्प संज्ञा पुं. [हिं. तप] तपस्या।

तप्य—वि. [स.] जो तपने या तपाने योग्य हो।

तफरी, तफरीह—संज्ञा स्त्री. [अ. तफरीः] (१) खुशी, प्रसन्नता। (२) मनबहलाव। (३) सैर। (४) ताजापन।

तफसील—संज्ञा स्त्री. [अ. तफ़सील] (१) विस्तृत विवरण। (२) टीका। (३) सूची। (४) ब्योरा।

तब—अव्य. [सं. तदा] (१) उस समय। (२) इस कारण।

तबदील—वि. [अ.] बदला हुआ, परिवर्तित।

तबदीली—संज्ञा स्त्री. [अ.] बदली, परिवर्तन।

तबर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) कुल्हाड़ी। (२) कुल्हाड़ी की तरह का एक हथियार।

तबल—संज्ञा पुं. [फ़ा.] ढोल, नगाड़ा, डंका।

तबलची—संज्ञा पुं. [अ. तबलः + ची (प्रत्य.)] तबला बजानेवाला, तबलिया।

तबला—संज्ञा पुं. [अ. तबलः] ताल देने का चमड़ा मढ़ा एक बाजा।

मुहा. तबला खनकना (ठनकना) (१ तबला बजना। (२) नाच-रंग होना।

तबलिया —संज्ञा पुं. [हिं. तबला + इया] तबलची।

तबादला संज्ञा पुं. [अ.] (१) चीजों का बदला जाना। (२) कर्मचारी का एक स्थान से दूसरे को भेजा जाना।

तबाह—वि. [फ़ा.] नष्ट, बरबाद, चौपट।

तबाही—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] नाश, बरबादी।

तबिअत, तबियत, तबीअत—संज्ञा स्त्री. [अ. तबीअत] (१) मन, चित्त, जी।

मुहा.—तबियत आना—(१) प्रेम होना। (२) पाने की इच्छा होना। तबियत उछलना—जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घबराना। तबियत फड़कना (फड़क उठना)—(१) जी में उमंग और उत्साह होना। (२) जी खुश होना। तबियत फिरना—जी हटना। तबियत भरना—(१) संतोष होना। (२) संतोष करना। (३) इच्छा या उमंग न रहना। तबियत लगना—(१) जी में इच्छा या उमंग पैदा होना, प्रेम होना। (२) ध्यान बना रहना। तबियत लगाना—(१) मन को किसी काम में लगाना। (२) प्रेम करना। तबियत होना—जी चाहना, इच्छा होना।

(२) बुद्धि, समझ, भाव।

मुहा.—तबियत पर जोर डालना (लड़ाना)—विशेष ध्यान देना, मन लगाना।

तबियतदार—वि. [अ. तबिअत + फ़ा. दार] (१) समझदार, बुद्धिमान। (२) रसिक, भावुक।

तबै—अव्य. सवि. [सं. तदा, हिं. तब] उस समय ही, उसी वक्त। उ.—उचित अपनी कृपा करिहौ, तबै तौ बनि जाइ—१-१२६।

तभी—अव्य. [हिं. तब + ही] (१) उसी समय, उसी घड़ी। (२) इसी कारण, इसी वजह से।

तमंचा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] छोटी बंदूक, पिस्तौल।

तम—संज्ञा पुं. [सं. तमः, तमस्] (१) अंधकार, अँधेरा। (२) तमाल वृक्ष। (३) राहु। (४) पाप। (५) क्रोध। (६) अज्ञान। (७) कालिख। (८) नरक। (९) मोह। (१०) अविद्या। (११) प्रकृति का एक गुण जिसकी अधिकता होने पर काम, क्रोध, हिंसा आदि बातों में प्राणी अधिक रुचि लेने लगता है।

तमक—संज्ञा स्त्री. [हिं. तमकना] (१) जोश, आवेश। (२) तेजी, तीव्रता। (३) क्रोध, गुस्सा।

तमकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) क्रोध या आवेश में आना। (२) क्रोध से लाल होना। (३) चमकना।

तमकि—क्रि. अ. [हिं. तमकना] क्रोध या आवेश में भरकर। उ.—देखि नृप तमकि हरि चमकि तहाँई गये, दमकि लीन्हों गिरह बाज जैसे—२६१५।

तमके—क्रि. अ. [हिं. तमकना] क्रोध में भर गये। उ.—सूरदास यह सुनि धन तमके—१०४६।

तमगा—संज्ञा पुं. [तु. तमग़ा] पदक।

तमगुन—संज्ञा पुं. [सं. तमोगुण] 'तम' नामक प्रकृति का गुण जिससे काम, क्रोध, हिंसा आदि बढ़ जाते हैं।

तमचुर, तमचोर—संज्ञा पुं. [सं. ताम्रचूड़] मुरगा, कुक्कुट। उ.—(क) आजु भोर तमचुर के रोल। गोकुल मैं आनंद होत है मंगल-धुनि महराने टोल—१०-९४। (ख) जागियै, ब्रजराज कुँवर, कमल-कुसुम फूले।........। तमचुर खग-रोर सुनहु, बोलत बन-राइ—१०-२०२। (ग) अरुन गगन, तमचुरनि पुकारयौ—१०-२३३।

तमतमाना—क्रि. अ. [सं. ताम्र] (१) धूप या क्रोध से चेहरा लाल होना। (२) चमकना।

तमतमाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. तमतमाना] (१) धूप या क्रोध से चेहरा लाल होने का भाव। (२) चमकने का भाव।

तमता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) तम का भाव। (२) अँधेरा। (३) कालिमा। उ.—बोले तमचुर चारों यामकौ गजर मार्यौ पौन भयौ सीतल तम तमता गई—१६०८।

तमन्ना—संज्ञा स्त्री. [अ.] कामना, इच्छा।

तमयी—संज्ञा स्त्री. [सं. तम+मयी] रात।

तमर—संज्ञा पुं. [सं. तम] अँधेरा, अंधकार।

तमस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अँधकार। (२) अज्ञान का अंधकार। (३) पाप। (४) कूप, कुआँ। (५) तमसा नदी।

तमसा—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक प्रसिद्ध नदी।

तमस्वनी, तमस्विनी—संज्ञा स्त्री [सं.] रात।

तमस्वी—वि. [सं. तमस्विन्] अंधकारपूर्ण।

तमहर—संज्ञा पुं. [सं. तमोहर] (१) चंद्रमा। (२) सूर्य। (३) अग्नि, आग। (४) ज्ञान।

तमहाया—वि. [सं. तम+हाया (प्रत्य.)] (१) अंधकार से युक्त। (२) तमोगुण युक्त।

तमा—संज्ञा पुं [सं. तमाः, तमस्] राहु।

संज्ञा स्त्री.—रात, रात्रि।

संज्ञा स्त्री. [अ. तमअ] (१) लोभ। (२) इच्छा।

तमाइ, तमाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तम] अंधकार, कालिमा।

संज्ञा स्त्री. [अ. तमअ] (१) लालच। (२) चाह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमाकू, तमाखू—संज्ञा पुं. [पुर्त. टबैको] एक पौधा जिसके पत्ते विषाक्त और नशीले होते हैं।

तमाचा—संज्ञा पुं. [फ़ा. तमान्चः] थप्पड़।

तमाचारी—संज्ञा पुं. [सं.] राक्षस, निशिचर।

तमाम—वि. [अ.] (१) कुल, सारा। (२) समाप्त।

मुहा.—(काम) तमाम होना—समाप्त होना, मर जाना।

तमारि—संज्ञा पुं. [हिं. तम+अरि] सूर्य, रवि।

संज्ञा स्त्री. [हिं. तँवार] सिर का चक्कर, घुमटा।

तमाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पौधा जिसके पत्ते गहरे हरे और फूल लाल रंग के होते हैं। उ.—सुरसरी कैं तीर मानौ लता स्याम तमाल-१-३०७। (२) तिलक का पेड़। (३) एक तरह की तलवार।

तमाशगीर, तमाशबीन—संज्ञा पुं. [अ. तमाशा+फ़ा. ग़ीर, बीन] (१) तमाशा देखनेवाला। (२) विलासी।

तमशा, तमासा, तमासौ—संज्ञा पुं. [अ. तमाशा] अद्भुत व्यापार, मनोरंजक दृश्य या खेल, अनोखी बात। उ.—मैया बहुत बुरौ बलदाऊ। कहन लग्यौ बन बड़ौ तमासौ, सब मौड़ा मिलि आऊ—४८१।

तमाशाई—संज्ञा पुं. [अ.] तमाशा देखनेवाला।

तमि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रात। (२) मोह, ममता।

तमिनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा।

तमिस्र—संज्ञा पुं. [सं] (१) अंधकार। (२) क्रोध।

तमिस्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] अँधेरी रात।

तमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] रात, रात्रि।

तमीचर—संज्ञा पुं. [सं.] निशाचर, राक्षस।

तमीज—संज्ञा स्त्री. [अ. तमीज़] (१) विवेक, बुद्धि। (२) जानकारी, परिचय। (३) अदब, कायदा।

तमीपति—संज्ञा पुं. [सं. तमी+पति] चंद्रमा।

तमीश—संज्ञा पुं. [सं. तमी+ईश] चंद्रमा।

तमु—संज्ञा पुं. [सं. तम] अंधकार, तम।

तमूरा—संज्ञा पुं. [हिं. तंबूरा] तानपूरा नामक बाजा।

तमूल—संज्ञा पुं. [सं. तांबूल] पान।

तमोंध—वि. [सं. तम+अंध] (१) अज्ञानी। (२) क्रोधी।

तमोगुण, तमोगुन—संज्ञा पुं. [सं. तमस्] प्रकृति का 'तम' नामक गुण जिसकी अधिकता होने पर प्राणी क्रोधी, कामी, हिंसक आदि हो जाता है।

तमोगुणी, तमोगुनी—वि. [सं. तमोगुणी] अधम वृत्तिवाला, तामस प्रकृति का। उ.—तमोगुनी चाहै या भाइ। मम बैरी क्यौं हूँ मरि जाइ.......... तमोगुनी रिपु मरिबौ चाहै—३-१३।

तमोघ्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अग्नि। (२) चंद्रमा। (३) सूर्य। (४) विष्णु। (५) ज्ञान। (६) दीपक।

वि.—जिससे अंधकार का नाश हो।

तमोमय—वि. [सं.] (१) जिसमें तमोगुण की अधिकता हो। (२) अज्ञानी। (३) क्रोधी।

संज्ञा पुं. [सं.] राहु।

तमोर—संज्ञा पुं. [सं. तांबूल] पान, पान का बीड़ा। उ.—(क) थार तमोर दूब दधि रोचन हरषि जसोदा लाई। (ख) कंचन थार दूब दधि रोचन सजि तमोर लै आई—१००१। (ग) अंजन अधर ललाट महाउर, नैन तमोर खवाए-१६७३। (घ) सोभित पीत बसन दोउ राते अधरन अंजन नैन तमोर—२०३१।

तमोरि—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य।

तमोरी—संज्ञा पुं. [हिं. तँबोली] पान बेचनेवाला।

तमोल—संज्ञा पुं. [सं. तांबूल, हिं. तंबोल] पान, पान का बीड़ा। उ.—(क) गोकुल मैं आनंद होत है, मंगल-धुनि महराने ढोल। फूले फिरत नंद अति सुख भयौ, हरषि मँगावत फूल-तमोल—१०-६४। (ख) तब तमोल रचि तुमहिं खवावौं। सूरदास पनवारौ पावौं—१०-२११। (ग) तज्यो तेल तमोल भूषन अंग बसन मलीन—३४५१।

तमोलन, तमोलनि, तमोलिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. तँबोलिन] तँबोली की स्त्री। उ.—तमोलनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउँ—१७६१।

तमोली—संज्ञा पुं [हिं. तँबोली] पान बेचनेवाला।

तमोहर, तमोहरि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चंद्रमा। (२) सूर्य। (३) अग्नि, आग। (४) ज्ञान।

वि.—(१) अंधकार दूर करनेवाला। (२) अज्ञान दूर करनेवाला। (३) मोह दूर करनेवाला।

तय—वि. [अ.] (१) समाप्त। (२) निश्चित। (३) निर्णीत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तपना—क्रि. अ. [सं. तपन] (१) **तपना, बहुत गरम होना।** (२) **दुखी या पीड़ित होना।**

तयार—वि. [हिं. तैयार] (१) **ठीक।** (२) **प्रस्तुत।** (३) **उद्यत, मुस्तंद।** (४) **मोटा-ताजा।**

तयारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तैयारी] (१) **ठीक होने का भाव।** (२) **तत्परता।** (३) **मोटाई।** (४) **धूमधाम।** (५) **सजावट।**

तयौ—क्रि. अ. भूत. [हिं. तयना] **संतप्त हुआ, दुखी हुआ, पीड़ित हुआ।** उ.—(क) भरत मोह बस ताकैं भयौ। सब दिन बिरह-अगिनि अति तयौ—५-३। (ख) पै इंद्रहि संतोष न भयौ। ब्राह्मन-हत्या कैं दुख तयौ—६-५। (ग) ताके बिरह नृपति बहु तयौ। नगन पगन ता पाछैं गयौ—६-२।

तरंग—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **लहर, हिलोर।** उ.—(क) अंग-अंग-प्रति-छबि तरंग-गति सूरदास क्यौं कहि आवै—१-६६। (ख) गयीं ब्रजनारि जमुना तीर देखि लहरि-तरंग हरषीं रहति नहिं मन धीर—१२६१। (ग) या संसार समुद्र मोह-जल, तृष्ना-तरँग उठति अति भारी—१-२१२। (२) **चित्त की उमंग, मन की मौज।** उ.—सदा ब्रज कौ ध्यान मेरे रास-रंग-तरंग—३०१०। (३) **संगीत में स्वर का उतार-चढ़ाव, स्वरलहरी।** (४) **वस्त्र, कपड़ा।**

तरंगक—संज्ञा पु. [सं.] (१) **पानी की लहर, हिलोर।** (२) **स्वर का उतार-चढ़ाव, स्वरलहरी।**

तरंगवती, तरंगालि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नदी।**

तरंगिणी, तरंगिनि, तरंगिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. तरंगिणी] **नदी, सरिता।** उ.—मन-कृत-दोष अथाह तरंगिनि, तरि नहिं सक्यौ, समायौ—१-६७।

वि.—**जिसमें तरंगें हों, तरंगवाली।**

तरंगित—वि. [सं.] **लहराता हुआ, हिलोरें लेता हुआ।**

तरंगी—वि. [सं. तरंगिन्] (१) **जिसमें लहरें हों।** (२) **मनमौजी, जैसा मन में आवे वैसा करनेवाला।**

तर—वि. [फ़ा.] (१) **भीगा हुआ, गीला।** (२) **शीतल, ठंडा।** (३) **जो सूखा न हो, हरा।** (४) **मालदार।**

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पार करने की क्रिया।** (२) **आग।** (३) **वृक्ष।** (४) **नाव की उतराई।**

प्रत्य. [सं.] **एक प्रत्यय जो दो चीजों में एक की विशेषता सूचित करने के लिए जोड़ा जाता है।**

क्रि. वि. [सं. तल] **तले, नीचे।** उ.—(क) और पतित आवत न आँखि-तर देखत अपनो साज—१-६६। (ख) ते सब पतित पाय-तर डारौं यहै हमारी भेंट—१-१८६। (ग) कामधेनु चितामनि दीन्हौं, कल्पबृच्छ-तर छाउँ—१-१६४। (घ) कहै तौ परबत चाँपि चरन-तर नीर-खार मैं गारौं—६-१०७। (ङ) कर सिर तर करि स्याम मनोहर अलक अधिक सोभावै—१०६५। (च) मानौ मनि धर मनि ज्यौं छाँड़्यौ फन तर रहत दुराए ६७५। (छ) मनौ जलधर तर बाल कलानिधि कबहुँ प्रगटि दुरि देत दरस—२१०८।

संज्ञा पुं. [सं. तल] **नीचे का भाग, तल।**

तरई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तारा] **नक्षत्र, तारा।**

तरक—संज्ञा स्त्री. [सं. तड़कना] **तड़कने की क्रिया।**

संज्ञा पुं. [सं. तर्क] (१) **सोच-विचार, उधेड़-बुन।** (२) **चमत्कारपूर्ण उक्ति, चतुरता की बात, चतुराई का वचन।** उ.—(क) सुनत हँसि चले हरि सकुचि भारी। यह कह्यौ आज हम आइहैं गेह तुम तरक जिनि कहै, हम समुझि डारी—२१५५। (ख) प्यारी को मुख धोइ कै पट पोंछि सँवारयौ। तरक बात बहुतइ कही कछु सुधि न सँवारयौ। (३) **व्यंग्य, ताना।** उ.—ते सब तरक बोलिहैं मोकौं तातैं बहुत डेराऊँ।

संज्ञा पुं. [सं. तर्क=सोच-विचार] (१) **बाधा, अड़चन।** (२) **भूल-चूक, क्रम का उलट-फेर।**

तरकना—क्रि. अ. [हिं. तड़कना] (१) **टूटना, चटकना।** (२) **जोर का शब्द करना।** (३) **कूदना, तड़पना।**

क्रि. अ. [सं. तर्क] **सोच-विचार करना, तर्क-वितर्क करना, अनुमानना।**

तरकश, तरकस—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **तीर रखने का चोगा, भाथा, तूणीर।**

तरकसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तरकश] **छोटा तरकश।**

तरका—संज्ञा पुं. [हिं. तड़का] (१) **सबेरा।** (२) **छौंक**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरकारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. तरः=सब्ज़ी+कारी] शाक, भाजी, सब्जी।

तरकि—क्रि. अ. [हिं. तड़कना (अनु.) (१) भड़ककर, उछल कूद कर। उ.—रवि मग तज्यौ, तरकि ताके हय उत्पथ लागे जान—९-२६। (२) तड़तड़ शब्द करके, तड़तड़ाकर। उ. झरहरास बन-पात गिरत तरु, धरनी तरकि तराकि सुनाई—५९४। (३) फट कर, मसक कर। उ.—सुनत सु बचन सखी के मुख ते पुलकित प्रेम तरकि गई चोली—१०उ. १०६।

तरकी—संज्ञा स्त्री. [सं० ताडंकी] कान का एक गहना।

तरकीब—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) संयोग, मिलन। (२) बनावट, रचना। (३) युक्ति, उपाय। (४) रचना-प्रणाली, तौर-तरीका।

तरकुली—संज्ञा स्त्री. [हिं. टाल+कुल] कान की तरकी।

तरक्की—संज्ञा स्त्री. [अ] वृद्धि, बढ़ती, उन्नति।

तरखा—संज्ञा पुं. [सं. तरंग] पानी का तेज बहाव।

तरछाना—क्रि. अ. [हि. तिरछा] तिरछी-आँख से देखकर इशारा करना।

तरज—संज्ञा पुं. [अ. तर्ज़] (१) प्रकार, किस्म, तरह। (२) रीति, ढंग, ढब। (३) रचना-प्रणाली, तौर-तरीका।

तरजना—क्रि. अ. [सं. तर्जन] (१) डाँटना-डपटना, ताड़ना देना। (२) भला-बुरा कहना, बिगड़ना।

तरजनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तर्जनी] अँगूठे के पास कीउँगली।

संज्ञा स्त्री. [सं. तर्जन] भय, डर। उ.—अहो रे बिहंगम बनवासी। तेरे बोल तरजनी बाढ़ति स्रवन सुनत नींदऊ नासी—१८४३।

तरजुमा—संज्ञा पुं. [अ.] अनुवाद, भाषांतर।

तरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नदी पार करना। (२) तख्ता, बेड़ा। (३) निस्तार, उद्धार। (४) स्वर्ग।

तरणि, तरणी—संज्ञा पुं. [सं.] (१ सूर्य। (२) मदार। (३) किरण।

संज्ञा स्त्री. [सं. तरणी] नाव, नौका।

तरणिजा, तरणितनया, तरणितनूजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] सूर्य-पुत्री जमुना नदी।

तरत—क्रि. अ. [हिं. तरना] तैरता है, (पानी पर) उतराता है। उ.—रामचंद्र-परताप दसौं दिसि, जल पर तरत पखानौ—१०-१२१।

तरतरात—क्रि. अ. [हिं. तड़तड़ाना] तड़तड़ शब्द करके। उ.—घहरात तरतरात गररात हहरात पर-रात झहरात माथ नाये।

तरतराना—क्रि. अ. [अनु.] तड़तड़ शब्द करना।

तरतीब—संज्ञा स्त्री. [अ.] क्रम, सिलसिला।

तरद्दुद—संज्ञा पुं. [अ.] सोच, चिंता।

तरन—संज्ञा स्त्री. [सं. तरण,] तरने के लिए, पार जाने के लिए। उ. (क पतितपावन जानि सरन आयौ। उदधि-संसार सुभ नाम-नौका तरन अटल स्थान निजु निगम गायौ—१-११६। (ख) सूर-प्रभु कौ सुजस गावत, नाम-नौका तरन—१-२०२।

संज्ञा पुं. [हिं. तरौना] (१) कान का तरकी नामक गहना। २) कान का कर्णफूल नामक गहना।

तरनतार—संज्ञा पुं. [सं. तरण] मोक्ष, मुक्ति।

तरनतारन—संज्ञा पुं. [सं. तरण, हिं. तरना] (१) उद्धार, मोक्ष। (२) उद्धार करनेवाला।

तरना—क्रि. स. [सं. तरण] पार करना।

क्रि. अ.—उद्धार होना।

क्रि. स. [हिं. तलना] घी-तेल में पकाना।

तरनि—संज्ञा पुं. [सं. तरणि] (१) सूर्य। उ.—दई असीस तरनि-सन्मुख ह्वै, चिरजीवो दोउ भ्राता—९-८७। (२, मदार। (३) किरण। उ.—तिनकी नख सोभा देखत हो तरनि-नाथ हूँ की मति भोरी—२३६३।

तरनिजा, तरनितनूजा—संज्ञा स्त्री. [सं. तरणि + जा, तनूजा] सूर्य की पुत्री जमुना नदी।

तरनि-सुता—संज्ञा स्त्री. [सं. तरणि + सुता] सूर्य की पुत्री, यमुना नदी। उ.—जे तप व्रत किये तरनि-सुता-तट पन गहि पीठि न दीन्ही—६५६।

तरनी—संज्ञा स्त्री. [सं. तरणी] नाव, नौका। उ.—ब्रज-जुवती सब देखि थकित भईं, सुंदरता की सरनी। चिरजीवहु जसुदा कौ नंदन, सूरदास कौं तरनी—१०-१२३।

तरप—संज्ञा स्त्री. [हिं. तड़प] (१) तड़पने की क्रिया या भाव। (२) चमक-दमक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरपत— संज्ञा पुं. [सं. तृप्ति] (१) आराम। (२) सुबीता। क्रि. अ. [हिं. तड़पना] (१) छटपटाता है। (२) गरजता है।

तरपन—संज्ञा स्त्री. [सं. तड़पन] तड़पने का भाव। संज्ञा पुं. [सं. तर्पण] (१) तृप्त या संतुष्ठ करना। (२) तर्पण करना।

तरपना—क्रि. अ. [हिं. तड़पना] (१) छटपटाना। (२) गरजना।

तरपर—क्रि. वि. [हिं. तर + पर] (१) ऊपर-नीचे। (२) एक के बाद दूसरा।

तरफ—संज्ञा स्त्री. [अ. तरफ़] (१) ओर, दिशा। (२) किनारा, बगल। (३) पक्ष।

तरफत—क्रि. अ. [हिं. तड़पना] तड़पता है, छटपटाता है। उ.—(क) चमकत, तरफत स्रोनित मैं तन, नाहिं परत निहारौ—९-१४६। (ख) ज्यों जल-हीन मीन तरफत ऐसे बिकल प्रान हमारो—२७३२।

तरफदार—वि. [हिं. तरफ + फा. दार] पक्षपाती।

तरफदारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तरफदार] पक्षपात।

तरफरात—क्रि. अ. [हिं. तड़फड़ाना] छटपटाते हैं, तड़पते हैं। उ.—(नैन) स्याम सिंधु से बिछुरि परे हैं तरफरात ज्यों मीन—२७६७।

तरफराना—क्रि. अ. [हिं. तड़फड़ाना] छटपटाना।

तरबतर—वि. [फ़ा] भीगा हुआ, खूब तर।

तरबूज, तरबूजा—संज्ञा पुं. [फा. तर्बुज, हिं. तरबूज] तरबूज। उ.—सफरी, सेब, छुहारे, पिस्ता, जे तरबूजा नाम—१०-२१२।

तरबूजिया—वि. [हिं. तरबूज] गहरे हरे रंग का।

तरमीम—संज्ञा स्त्री. [अ.] संशोधन, सुधार।

तरराना—क्रि. अ. [अनु.] ऐंठना, ऐंड़ाना।

तरल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हार के बीच का मणि। (२) हार। (३) हीरा। (४) लोहा। (५) तल, पेंदा। (६) घोड़ा।

वि. [सं.] (१) हिलता-डुलता, चलायमान, चल, चंचल। उ.—सुभ स्रवननि तरल तरौन, बैनी सिथिल गुही—१०-२४। (२) अस्थिर, क्षण-भंगुर। (३) द्रव, बहनेवाला। (४) चमकदार, कांतिवान्। (५) खोखला, पोला।

तरलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चंचलता। द्रवत्व।

तरलभाव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पतलापन। (२) चंचल

तरलाई—संज्ञा स्त्री. [सं. तरल + आई (प्रत्य.)] चंचलता, चपलता। (२) बहने का भाव।

तरवन—संज्ञा पुं. [हिं. ताड़ + बनना] (१) तर (२) कर्णफूल।

तरवर—संज्ञा पुं. [सं. तरुवर] बड़ा पेड़, वृक्ष। फूली फिरैं धेनु धाम, फूली गोपी अँग अँग, फूले तरवर आनद लहर के—१०-३४।

तरवरिया, तरवरिहा, तरवारी—संज्ञा पुं. [हिं. तलवार] (१) तलवार चलानेवाला। (२) त चलाने में दक्ष या कुशल।

तरवा—संज्ञा पुं. [हिं. तलवा] पैर का तलुआ।

तरवाना—क्रि. स. [हिं. तारना] तारने की प्रेरणा

तरवार, तरवारि—संज्ञा पुं. [सं.] खड्ग का एक तलवार। उ.—जानि कठिन कलिकाल कुटिल संग सजी अत्र-सैनी। जनु ता लगि तरवारि त्रिवि धरि करि कोप उपैनी—९-११।

तरस—संज्ञा पुं. [सं. त्रस = डरना] दया, रहम। उ सूर सखी बूझेहु न बोलते सो कहि धौं तोहि तरस—२००८।

तरसत—क्रि. अ. [हिं. तरसना] दुखी है आकु तरसता है। उ.—(क) जसोदा कान्हहु तैं प्यारौ। डारि देहि कर मथत मथानी, तरसत दुलारौ—३७८। (ख) हरि दरसन को त अँखियाँ—२७६६। (ग) तरसत रहे बसुदेव नहिं हितु मात-पिता को—३२४९।

तरसना—क्रि. अ. [सं. तर्षण = अभिलाषा] किसी को पाने के लिए बेचैन या आकुल होना।

तरसनि—संज्ञा स्त्री. [हिं तरसना] तरसने की (किसी वस्तु आदि के) अभाव की बेचैनी। उ कंचन-मनि-जटि-थार, रोचन, दधि, फूल-डार, की तरसनि—१०-९६।

तरसाना—क्रि. स. [हिं. तरसना] (१) किसी चीज़ अभाव का दुख या कष्ट देना। (२) बेकार ललचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरसायौ—क्रि. स. [हिं. तरसाना] पीड़ित किया, कुम्हला दिया। उ.—कान्ह-बदन अतिहीं कुम्हिलायौ। मानौ कमलहिं हिम तरसायौ—३६१।

तरसावति—क्रि. स. [हिं. तरसाना] दुख देती है, पीड़ित करती है। उ.—तब तैं बाँधे ऊखल आनि। बाल-मुकुदहिं कत तरसावति, अति कोमल अंग जानि—३६५।

तरसै—क्रि. स. [हिं. तरसना] (१) बेचैन होता है, घबराता है, दुखी होता है। उ.—देखत सुतप्त जल तरसै। जसुदा के पाइनि परसै। (२) अभाव के कारण दुखी होता है। उ.—बिनु देखे ताके मन तरसै—१० उ. ११३।

तरसौंहाँ—वि. [हिं. तरसना] तरसनेवाला।

तरह—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) भाँति, प्रकार। (२) ढाँचा, बनावट, रूप-रंग। (३) ढब, प्रणाली। (४) युक्ति।

मुहा.—तरह देना—(१) ख्याल न करना, जाने देना। (२) टालटूल करना।

(५) हाल, दशा, अवस्था।

तरहदार—वि. [फ़ा.] (१) सुंदर बनावट का, अच्छी चाल का। (२) शौकीन, सज-धजवाला।

तरहदारी—वि. [फ़ा.] सजावट, सजधज।

तरहर, तरहुँड़—क्रि. वि [हिं. तर+हर] तले, नीचे।

वि.—(१) नीचे का, निचला। (२) बुरा, निकृष्ट।

तरहरना—क्रि. स. [हिं. तरह] ध्यान न देना, त्याग देना, तरह दे जाना, छोड़ देना।

तरहरि—क्रि. स. [हिं. तरहरना] त्यागकर, छोड़कर। उ.—चरन प्रताप आनि उर अंतर, और सकल सुख या सुख तरहरि—३·३१२।

तरहेल—वि. [हिं. तर+हेर, हेल (प्रत्य.)] (१) अधीन। (२) जो वश में हो, पराजित।

क्रि. वि.—नीचे, तले।

तरा—संज्ञा पुं. [देश.] पटुआ, पटसन।

संज्ञा पुं. [हिं. तला] नीचे का भाग, तलवा।

तराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तर=नीचे] (१) पहाड़ के नीचे की भूमि। (२) पहाड़ की घाटी।

संज्ञा स्त्री. [सं. तारा] नक्षत्र, तारा।

तराकि—संज्ञा पुं. [हिं. तड़ाक (अनु.)] तड़ाके का शब्द, तड़ाक से किसी चीज के टूटने का शब्द। उ.—झरहरात बन-पात, गिरत तरु, धरनी तरकि तराकि सुनाइ—५६४।

तराजू—संज्ञा स्त्री., पुं. [फ़ा.] तौलने की तुला।

तराटक—संज्ञा पुं [सं. त्राटिका] योग का एक साधन।

तराना—संज्ञा पुं. [फ़ा.] अच्छा गीत।

तराप—संज्ञा स्त्री. [अनु.] तड़ाक का शब्द।

तरापा—संज्ञा पुं. [अनु.] हाहाकार, कोहराम।

तराबोर—वि. [फ़ा. तर+हिं. बोरना] खूब भीगा हुआ।

तरायला—वि. [हिं. तरल] (१) तरल। (२) चंचल।

तरारा—संज्ञा पुं. [हिं. तरतर से अनु.] (१) छलाँग। (२) पानी की अटूट धार।

तरावट—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. तर+आवट (प्रत्य.)] (१) गीलापन, नमी। (२) ठंडक, शीतलता। (३) शरीर की गर्मी शांत करनेवाली चीज। (४) तरमाल, स्निग्ध या पुष्टिकारक भोजन।

तराश—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) काटने का ढंग। (२) काट-छाँट। (३) ढंग, तर्ज़।

तराशना—क्रि. स. [फ़ा.] काटना, कुतरना।

तरास—संज्ञा पुं. [सं. त्रास] (१) डर। (२) कष्ट।

तरासना—क्रि. स. [सं. त्रसन] त्रास या कष्ट देना।

तराहि—अव्य. [सं. त्राहि] रक्षा करो, बचाओ।

तराहीं—क्रि. वि. [हिं. तले] तले, नीचे।

तरि—संज्ञा स्त्री. [सं.] नौका, नाव।

क्रि. स. [हिं. तरना] पार होकर।

प्र.—गये तरि—तर गये, पार हो गये। उ.—गये तरि लै नाम केते पतित हरि-पुर-धरन—१-३०८। तरि सक्यौ—पार कर सका, पार जा सका। उ.—मन-कृत-दोष अथाह तरंगिनि, तरि नहिं सक्यो समायौ—१-६७।

तरिक—संज्ञा पुं. [सं.] मल्लाह, माँझी।

तरिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] नाव, नौका।

संज्ञा स्त्री. [सं. तड़ित] बिजली।

तरिको—संज्ञा पुं. [हिं. तरकी] कान का तरकी या तरौना नामक गहना। उ.—तैं कत तोरयौ हार

CC-0. In Public Domain: Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौसरि कौ मोती बगरि रहे सब बन भैं गयो कान को तरिको—१०५३।

तरिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] तर्जनी उँगली।

संज्ञा स्त्री. [सं. तडित्] बिजली।

तरिया—संज्ञा पुं. [हिं. तरना] तैरनेवाला।

तरियाना—क्रि. स. [हिं. तर, तरे=नीचे] (१) नीचे डाल देना। (२) छिपा देना, ढाँक देना।

क्रि. अ.—नीचे या तले बैठ जाना।

तरिवन, तरिवना—संज्ञा पु. [हिं. ताड़] (१) कान का तरकी नामक गहना। उ.—(क) तारवन स्त्रवन फाँसि गर डारति केंसेहूँ नहीं सकत निरवारि—११६४। (ख) तरिवन स्त्रवन नेन दोउ आँजति नासा वेसरि साजत—२०८०। (ग) पीक कपोलन तरिवन के ढिग झलमलात मोतिन छबि जोए—२०१२।(२) कर्णफूल नामक गहना।

तरिवर—संज्ञा पुं. [सं. तरुवर] (१) श्रेष्ठ वृक्ष। (२) कल्पवृक्ष।

तरिहिंत—क्रि. वि. [हिं. तर+हंत] नीचे, तले।

तरिहै—क्रि. अ. [हिं. तरना] तरेगा, मुक्त होगा, सद्गति को प्राप्त होगा। उ.—महादेव-हित जो तप करिहै। सोऊ भव-जल तैं नहिं तरिहै—४-५।

तरी—क्रि. अ. [हिं. तरना] (१) पानी के ऊपर उतरायी। उ.—सिला तरी जल माहिं सेत बाँधे, बलि वह चरन अहिल्या तारी—१-३४। (२) भव-सागर के पार हो गयी, मुक्त हो गयी। उ.—गौतम की नारि तरी नेंकु परस लाता—१-१२३।

संज्ञा स्त्री [सं.] (१) नाव, नौका। (२) पिटारी। (३) धुआँ। (४) कपड़े का छोर, दामन।

संज्ञा स्त्री. [फ़ा. तर] (१) ढीलापन। (२) ठंढक, शीतलता। (३) तराई, तरहटी। (४) वह नीचा स्थान जहाँ पानी इकट्ठा रहे।

संज्ञा स्त्री. [हि. तर=नीचे] (१) जूते का तला। (२) पैर का तलवा। (३) तलछट, तरौंछ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ताड़] (१) तरकी। (२) कर्णफूल।

तरीका—संज्ञा पुं. [अ. तरीक़ा] (१) ढंग, विधि, प्रकार। (२) चाल-व्यवहार। (३) युक्ति, उपाय।

तरीनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. तर=तले] पहाड़ के का भाग, तलहटी।

तरु—संज्ञा पुं. [सं] वृक्ष, पेड़। उ.—तरु मैं बीज बीज माँह तरु, दुहुँ मैं एक न न्यारौ री—१०-

तरुण, तरुन—वि. [सं. तरुण] (१) युवा, युव उ.—देख्यो भरत तरुन अति सुंदर—५-३१। नया, नतन।

तरुणई, तरुणाई, तरुनई, तरुनाई—संज्ञा स्त्री. [तरुण+आई (प्रत्य.)] युवावस्था, जवानी। उ. (क) देखहु री ये भाव कन्हाइ। कहाँ गया तरुनाई—७६६। (ख) तरुनाई तनु-आवन कित जिय होत बिहाला—१०३८।

तरुणाना, तरुनाना—क्रि. अ. [सं. तरुण + (प्रत्य.)] युवावस्था में प्रवेश करना।

तरुणिमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] तरुण होने की भाव, तारुण्य, यौवन।

तरुणि, तरुणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] युवती।

तरुनापो—संज्ञा पुं. [सं. तरुण+आपा (प्रत्य.)] यु वस्था या जवानी में। उ.--बालापन खेलत ही खो तरुनापै गरुवानौ।

तरुनापौ—संज्ञा पुं. [सं. तरुण] युवावस्था, जवानी उ.—लघु सुत नृपति-बुढ़ापौ लयौ। अपनौ तरु तिहिं दयौ—६-१७४।

तरुनि, तरुनी—वि. स्त्री. [सं. तरुणी] युवती, ज (स्त्री)। उ—क) लाल कुअर मेरौ कछू न तू है तरुनि किसोर—१०-३१०। (ख) मैं तो भयो वह तरुनी सदा बयस इकसारी—१-१७३।

इकटक रही निहारि कै तरुनी मन भाए—२५

तरुबाँही—संज्ञा स्त्री. [सं. तरु+हिं.+बाँह] पेड़ की शाखा

तरुराज—संज्ञा पुं. [सं.] कल्पवृक्ष।

तरुवर—संज्ञा पुं. [सं.]श्रेष्ठ वृक्ष। कल्प वृक्ष।

तरूट—संज्ञा पुं. [सं.] कमल की जड़, भसींड़।

तरेंदा—संज्ञा पुं. [सं. तरंड] (१) पानी का बेड़ा (२) वह चीज जिसके सहारे पार हो सके।

तरे—क्रि. वि. [सं. तल] नीचे, तले।

क्रि. स. [हि. तलना] घी-तेल में पकाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रि. अ. [हिं. तरना] तर गये, मुक्त हो गये। उ.—ऐसे और पतित अवलंबित, ते छिन माँहि तरे—१-१६८।

तरेटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तर] तराई, तलहटी।

तरेरना—क्रि. स. [सं. तर्ज=डाँटना + हिं. हेरना] आँख के इशारे से असहमति या असंतोष प्रकट करना।

तरैं—क्रि. वि. [हिं. तले] नीचे, तले। उ.—(क) सीत घाम धन विपति बहुत बिधि भार तरैं मरि जैहौ--१-३३१। (ख) लोह तरैं, मधि रूपा लायौ—७-७। (ग) कठुला कंठ चिबुक तरैं मुख दसन बिराजैं—१०-१७४।

क्रि. अ. [हिं. तरना] तर जायँ, मुक्त हो जायँ।

तरैयाँ—संज्ञा स्त्री [सं. तारा] तारे, नक्षत्र। उ.—तुम चाहति हौ गगन-तरैयाँ, माँगैं कैसैं पावहु—७७३।

तरै—क्रि. अ. [हिं. तरना] भवसागर के पार हो जाय, सद्गति प्राप्त कर ले, मुक्त हो जाय। उ.—सूरज-दास स्याम सेए पैं दुस्तर पार तरै—१-८२।

तरैश्रा, तरैया—संज्ञा पुं. [हिं. तारा] तारा, नक्षत्र। उ.—किन अकास तें तोरि तरैआ आनि धरी घर माई—३३४३।

तरोवर—संज्ञा पुं. [सं. तरुवर] श्रेष्ठ वृक्ष, कल्पवृक्ष। उ.—कल्प तरोवर तर बंसीबट राधा रतिग्रह धाम--१७२४।

तरौं—क्रि. अ. [हिं. तरना] मुक्त होऊँ, उद्धार पाऊँ, सद्गति प्राप्त करूँ। उ.—काकैं बल हौं तरौं गुसाईं, कछु न भक्ति मो मौं—१-१५१।

तरौंछ—संज्ञा स्त्री. [हिं. तल+छूट] तल का मैल।

तरौंधी—वि. स्त्री. [हिं. तिरछा] तिरछी, टेढ़ी। उ.—कठिन वचन सुनि स्रवन जानकी, सकी न बचन सँभारि। तृन-अंतर दै दृष्टि तरौंधी, दियौ नयन जल ढारि—९-७९।

तरौंस—संज्ञा पुं. [हिं. तर+औंस (प्रत्य.)] तट, किनारा।

तरौन, तरौना - संज्ञा पुं. [हिं. तरौना=ताड़+वनना] तरकी या कर्णफूल नाम का आभूषण। उ.—सुभ स्रवननि तरल तरौना, वेनी सिथिल गुही—१०-२४।

तर्क—संज्ञा पुं. [सं] (१) विवेचना, दलील, बहस। (२) चमत्कारपूर्ण उक्ति, चतुराई भरी बात। उ.—प्यारी को मुख धोइकै पट पोंछि सँवारयौ। तर्क बात बहुतै कही कछु सुधि न सँभारयौ। (३) व्यंग्य, ताना। उ.—ते सब तर्क बोलिहैं मोकौं तासौं बहुत डेराऊँ।

संज्ञा पुं. [अ.] त्याग, छोड़ने का भाव।

तर्कक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तर्क करनेवाला। (२) याचक, माँगनेवाला, मँगता।

तर्कणा, तर्कना—संज्ञा स्त्री. [सं. तर्कणा] (१) विवेचना, सोच-विचार, ऊहा। (२) दलील, बहस।

तर्कना—क्रि. अ. [सं. तर्क] तर्क करना।

तर्क-वितर्क—संज्ञा पुं [सं.] (१) सोचविचार, ऊहापोह। (२) वाद-विवाद, बहस।

तर्कश—संज्ञा पुं. [फ़ा.] तीर रखने का चोगा, तूणीर।

तर्कसी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. तरकश] छोटा तरकश।

तर्की—संज्ञा पुं. [सं. तर्किन] तर्क करनेवाली।

तर्कु—संज्ञा पुं. [सं.] तकला, टेकुआ।

तर्कुटी—संज्ञा स्त्री. [सं.] तकला, टेकुआ,

तर्क्य—वि. [सं.] विचार के योग्य।

तर्ज—संज्ञा पुं. स्त्री. [अ.] (१) प्रकार, किस्म। (२) रीति, ढंग। (३) रचना-प्रणाली, बनावट।

तर्जन—संज्ञा पुं. [सं. तर्ज्जन] (१) धमकाना। (२) क्रोध। (३) डाँट-डपट, तिरस्कार, फटकार।

तर्जना—क्रि. अ. [सं. तर्ज्जन] डाँटना, धमकाना।

तर्जनी—संज्ञा स्त्री. [सं. तर्ज्जनी] अँगूठे के पास की उँगली जो बिचली से छोटी होती है।

तर्जुमा—संज्ञा पुं. [अ.] भाषांतर, अनुवाद।

तर्पण, तर्पन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तृप्त या संतुष्ट करने की क्रिया। (२) पितरों को पानी देने की कर्मकांड की रीति। उ.—कबहूँ स्राद्ध करत पितरन कौ तर्पन करि बहु भाँति—सारा. ६७३।

संज्ञा स्त्री. [हिं. तड़पना] तड़पने की क्रिया।

तर्पित—वि. [सं.] तृप्त या तुष्ट किया हुआ।

तर्पी—वि. [सं. तर्पिन्] (१) तुष्ट या तृप्त करनेवाला। (२) तर्पण करनेवाला।

तर्यौ—क्रि. अ. [हिं. तरना] सांसारिक क्लेशों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्त हुए, सद्गति पायी। उ.—(क) को को न तरयौ हरि-नाम लिएँ—१-८६। (ख) सूरदास कहै, सब जग बूड़यौ, जुग जुग भक्त तरयौ—१-२६१।

क्रि. अ. [हिं. तैरना] उतराने लगे। उ.—नल अरु नील बिस्वकर्मा-सुत छुवत पषान तरयौ—६-१२२।

तरयौना—संज्ञा पुं. [हिं. तरौना] (१) तरकी नामक गहना। (२) कर्णफूल नामक गहना।

तर्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अभिलाषा। (२) असंतोष। (३) बेड़ा। (४) समुद्र। (५) सूर्य।

तर्षण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्यास। (२) इच्छा।

तर्षित—वि. [सं.] (१) प्यासा। (२) इच्छुक।

तल—संज्ञा पुं. [सं. [(१) नीचे का भाग। (२) पेंदा, तला। (३) जल के नीचे की भूमि। (४) किसी चीज के नीचे की भूमि। (५) पैर का तला। (६) हथेली। (७) किसी वस्तु का बाहरी फैलाव, सतह। उ.—(क) कहै सूरदास देखि नैननि की मिटी प्यास, कृपा कीन्ही गोपीनाथ, आए भुव-तल मैं—८-५। (ख) पलटि धरौं नव खंड पुहुमि तल जौ बल भुजा सम्हारौं—६-१३२। (८) थप्पड़। (९) स्वभाव। (१०) जंगल, वन। (११) गड्ढा। (१२) घर की छत, पाटन। (१३) मुठिया। (१४) आधार।

तलक—अव्य. [हिं. तक] तक, पर्यंत।

तलछट—संज्ञा स्त्री. [हिं. तल+छँटना] तलौंछ।

तलना—क्रि. स. [सं. तरण=तिराना] खौलते हुए घी-तेल में कुछ पकाना।

तलप—संज्ञा पुं. [हिं. तल्प] (१) पलंग। उ.—तजि वह जनक-राज-भोजन-सुख कत तृन-तलप बिपिन फल खाहु—६-३४। (२) अटारी।

तलपट—वि. [देश.] नाश, बरबाद, चौपट।

तलफ—वि. [अ. तलफ़] नष्ट, बर्बाद।

संज्ञा स्त्री.—छटपटाहट, बेचैनी, पीड़ा। उ.—(क) मनु पर्यक तें परी धरनि धुकि तरँग तलफ नित भारी—२७२८। (ख) दामिनि की दमकनि बूँदनि की झमकनि सेज की तलफ कैसे जीजियत माई है—२८२७।

तलफत—क्रि. अ. [हिं. तलफना (अनु.)] तड़पते हैं, व्याकुल होते हैं, बेचैन होते हैं। उ.—(क) हौं ब… गई, दास देखैं बिनु, तलफत हैं नैननि के तारे—१०-२६६। (ख) इते मान तन तलफत बहि… जैसे मीन तट बिन पानी—२७८७। (ग) मृग… मलय परस तनु तलफत जनु बिष बिषम पिए—३४…

वि.—तड़पता हुआ। उ.—तलफत छाँड़ि… मधुबन को बहुरि न कीनी सार—२७१७।

तलफति—क्रि. अ. [हिं. तलफना] छटपटाती है, बे… होती है। उ.—ज्यों जलहीन मीन तनु तलफति… गति ब्रजबालहिं—२८००।

तलफना—क्रि. अ. [अनु.] छटपटाना, बेचैन होना।

तलफि—क्रि. अ. [हिं. तलफना] छटपटाकर, तड़प… उ.—तलफि तलफि जिय निकसन लागे पापी न जानी—३०५६।

तलफी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. तलफ़ी] (१) खराबी, … दोष। (२) हानि, नुकसान।

तलब—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) खोज, तलाश। … चाह, इच्छा। (३) माँग, आवश्यकता। … बुलावा, बुलाहट। (५) वेतन, तनख्वाह।

तलबगार—वि. [फ़ा.] चाहने या माँगनेवाला।

तलबी—संज्ञा स्त्री [अ.] (१) बुलाहट। (२) माँ…

तलबेली—संज्ञा स्त्री. [हिं. तलफना] आतुरता, बे… छटपटाहट, उत्कंठा। उ.—(क) कान्ह उठे … प्रात ही तलबेली लागी। (ख) फिरि फिरि अ… भवन ही तलबेली लागी—१५४१।

तलमल—संज्ञा पुं. [सं.] तलछट, तरौंछ।

तलमलाना—क्रि. अ. [देश.] तड़पना, छटपटाना।

तलमलाहट संज्ञा स्त्री. [हिं. तलमलाना] बेचैनी।

तलवा—संज्ञा पुं. [सं. तल] पैर का निचला भाग।

मुहा.—तलवा न टिकना (भरना)—एक … अधिक देर तक रहा न जाना।

तलवार—संज्ञा स्त्री. [सं. तरवारि] खड्ग, असि।

मुहा.—तलवार का खेत—लड़ाई का मैदा… तलवार का घाट—तलवार की टेढ़ी धार। तल… के घाट उतारना—तलवार से मार डालना। तल… का पानी—तलवार की चमक जो उसके …

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने का लक्षण है। तलवार का हाथ—तलवार का वार या आघात। तलवार की आँच—तलवार के वार का सामना। तलवार तौलना—वार करने के लिए तलवार सम्हालना। तलवार पर हाथ रखना—(१) तलवार निकालने को तैयार होना। (२) तलवार की कसम खाना। तलवार सौंतना—वार करने के लिए तलवार खींचना।

तलवे, तलवों—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. तलवा] दोनों पैरों के निचले भाग।

मुहा.—तलवे चाटना—बहुत खुशामद करना। तलवे छलनी होना—बहुत दौड़-धूप से पैर घिस जाना। तलवे तले आँखें मलना—(१) बहुत दीनता दिखाना। (२) बहुत प्रेम जताना। (३) कुचल कर नष्ट करना। तलवे धो धोकर पीना—बहुत श्रद्धा-भक्ति दिखाना, बहुत प्रेम जताना। तलवे सहलाना—(१) बहुत सेवा करना। (२) बहुत खुशामद करना। तलवों में आग लगना—बहुत क्रोध आना।

तलहटी—संज्ञा स्त्री. [सं. तल+घट्ट] पहाड़ की घाटी।

तला—संज्ञा पुं. [सं. तल] नीचे का भाग, पेंदा।

तलाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताल] छोटा ताल, बावली।

संज्ञा स्त्री. [हिं. तलना] तलने या तलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तलाउ—संज्ञा पुं. [हिं. तालाब] सरोवर, तालाब।

तलाक—संज्ञा पुं. [अ. तलाक़] पति-पत्नी का संबंध-त्याग।

तलातल—संज्ञा पुं [सं.] सात पातालों में एक का नाम। उ.—अतल वितल अरु सुतल तलातल और महातल जान। पाताल और रसातल मिलि सातों भुवन प्रमान—सारा. ३१।

तलबेली—संज्ञा स्त्री. [हिं. तलबेली] बेचैनी, उत्कंठा।

तलाव—संज्ञा पुं. [सं. तल्ल] तालाब, ताल।

तलाश—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) खोज। (२) चाह।

तलाशना—क्रि. स. [फ़ा. तलाश] ढूढ़ना, खोजना।

तलाशी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] खोयी या छिपाई हुई चीज के लिए पहने हुए कपड़ों, पास की चीजों या घर-बार की देखभाल।

तलि—क्रि. स. [हिं. तलना] घी-तेल म तल कर।

उ.—लोन लगाइ तुरत तलि लीने—२३२१।

तलित—वि. [हिं. तलना] तला हुआ।

तलिन—वि. [सं.] (१) दुबला-पतला। (२) बिखरा हुआ। (३) थोड़ा, कम। (४) स्वच्छ, साफ।

संज्ञा स्त्री. [सं.] शैया, सेज, पलँग।

तलिया, तली—संज्ञा स्त्री. [सं. तल] (१) निचला भाग, सतह। (२) तलछट, तलौंछ। (३) पैर की एड़ी।

तले—क्रि. वि. [सं. तल] नीचे, निचले भाग में।

मुहा.—तले ऊपर—(१) एक के ऊपर दूसरा। (२) उलट-पलट किया हुआ। तले ऊपर के—आगे पीछे के, एक के बाद का दूसरा। जी तले ऊपर होना—(१) जी मचलाना। (२) जी घबराना। तले की साँस तले और ऊपर की साँस ऊपर रह जाना—स्तब्ध या भौचक्का रह जाना। तले की दुनिया ऊपर होना—(१) बहुत उलट-फेर या परिवर्तन हो जाना। (२) असंभव बात संभव हो जाना। तले बच्चा होना—हाल ही का जन्मा बच्चा होना।

तलेटी—संज्ञा स्त्री. [सं. तल] (१) पेंदी। (२) तलहटी।

तलैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताल] छोटा ताल।

तलौंछ—संज्ञा स्त्री. [सं. तल] तल का मैल।

तल्प—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पलँग, सेज़। (२) अटारी।

तल्ला—संज्ञा पुं. [सं. तल] (१) नीचे की परत, अस्तर। (२) नीचे का भाग। (३) पास, निकट।

तल्ली—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) युवती। (२) नौका।

तल्लीन—वि. [सं.] किसी विषय में लीन, निमग्न।

तव—सर्व. [सं.] तुम्हारा। उ.—फूटि गईं तब चारयौ—१-१०१।

तवज्जह—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) ध्यान। (२) कृपाभाव।

तवना—क्रि. अ. [सं. तपन] (१) गरम होना। (२) ताप या दुख से पीड़ित (३) प्रताप, तेज या आतंक फैलना। (४) क्रोध या गुस्से से जलना।

तवा—संज्ञा पुं. [हिं. तवना = जलना] (१) लोहे का छिछला पात्र जिस पर रोटी सेंकी जाती है।

मुहा.—तवा सा मुँह—बहुत काला मुख,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत काला और चित्तीदार मुख । जैहै छनकि तवा ज्यों पानी—गरम तवे में पड़े पानी की तरह क्षण भर में छनछना कर खत्म हो जायगा, प्रचंड शत्रु के क्रोध की तीव्रता के सामने बहुत जल्द ठंडा हो जायगा। उ.—अब नहिं बचै क्रोध नृप कीन्हो जैहै छनकि तवा ज्यों पानी—२४६६ । तवा सिर से बाँधना—प्रहार या चोट सहने के लिए तैयार होना । तवा पर (तवे) की बूँद—(१) बहुत शीघ्र नष्ट हो जाने वाली । (२) जिससे जरा भी संतोष न हो ।

(२) चिलम का छोटा ठिकरा ।

तवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताव = ताप] (१) गरमी, ताप । (२) लू, गरम हवा ।

तवाजा—संज्ञा स्त्री. [अ. तवाज़ा] (१) आदर, मान, आव-भगत । (२) खातिर, मेहमानदारी ।

तवाना—क्रि. स. [हिं. ताना] तप्त या गरम करना ।

क्रि. स.—पात्र का मुँह बंद करना ।

तवारा, तवारो—संज्ञा पुं. [सं. ताप, हिं. ताव] जलन, दाह, ताप । उ.—तवतें इन सबहिन सचु पायौ । जब तै हरि संदेसं तुम्हारो, सुनत तवारो आयौ-३४८०

तवारीख—संज्ञा स्त्री. [अ. तवारीख़] इतिहास ।

तवालत—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) लंबाई, दीर्घता । (२) अधिकता (२) बखेड़ा, झंझट ।

तशरीफ—संज्ञा स्त्री. [अ. तशरीफ़] बुजुर्गी, बड़प्पन ।

मुहा.—तशरीफ रखना—आदर से बैठना । तशरीफ लाना—सादर आना । तशरीफ ले जाना—चला जाना ।

तश्तरी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] छोटी थाली, रकाबी ।

तष्ट—वि. [सं.] छिला या कुटा पिटा हुआ ।

तष्टा—संज्ञा पुं. [सं.] छीलने या गढ़नेवाला ।

तस—वि. [सं. तादृश, प्रा. तारिस, पुं. हिं. तइस] तैसा, वैसा ।

क्रि. वि.—तैसा, वैसा ।

तसकर—संज्ञा पुं. [सं. तस्कर] चोर । उ.—ज्यौं सपने मैं रंक भूप भयौ, तसकर अरि पकरयौ—२-२६ ।

तसकीन—संज्ञा स्त्री. [अ.] तसल्ली, धीरज ।

तसदीक—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) सच्चाई । (२) सच्चाई का समर्थन या पुष्टि । (३) गवाही, साक्ष्य ।

तसदीह—संज्ञा स्त्री. [अ. तसदीह] (१) सर-दर्द । (२) तकलीफ, दुख, कष्ट ।

तसनीफ—संज्ञा स्त्री. [अ. तसनीफ़] ग्रंथ की रचना ।

तसबीह—संज्ञा स्त्री. [अ.] माला, सुमिरनी ।

तसला—संज्ञा पुं. [फ़ा. तश्त = छिछला पात्र+ला] लोहे-पीतल ताँबे का बड़ा लेकिन कम गहरा पात्र ।

तसलीम—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) प्रणाम । (२) स्वीकृति

तसल्ली—संज्ञा स्त्री. [अ.] धीरज, सांत्वना ।

तसवीर—संज्ञा स्त्री. [अ.] चित्र ।

वि.— चित्र सा सुंदर, मनोहर ।

तस्कर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चोर । उ.—गीध्यौ हेम तस्कर ज्यों, अति आतुर मतिमंद—१-१० (२) श्रवण, कान ।

तस्करता—संज्ञा स्त्री. [सं.] चोर का काम, चोरी ।

तस्करी—संज्ञा स्त्री. [सं. तस्कर] । (१) चोरी । (२) चोर की स्त्री । (३) चोरी करनेवाली स्त्री ।

तस्मात्—अव्य. [सं.] इसलिए, अतः ।

तस्य—सर्व. [सं.] उसका ।

तहँ, तहँवाँ—क्रि. वि. [हिं. तहाँ] वहाँ, उस स्थान पर । उ.—जहाँ जहाँ सुमिरे हरि जिहिं विधि तैसैं उठि धाए (हो)—१-७ ।

तहँई—क्रि. वि. [हि. तहाँ + ही] उस ही स्थान पर, वहीं । उ.—(क) को इहँई पिय को न बुलावै तहँई चलि जाहीं— २१४५ । (ख) इहि अंतरि हरि आए तहँई—२६४३ ।

तह—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) मोटाई का फैलाव, परत ।

मुहा—तह पर रखना—छिपाकर रखना, निकालना । तह जमाना (बैठाना)—(१) परत ऊपर परत रखना । (२) भोजन पर भोजन करना । तह तोड़ना—झगड़ा निबटाना । तह देना—(१) हलकी परत चढ़ाना । (२) हलका रंग चढ़ाना । (३) इत्र बनाने के लिए जमीन या आधार देना ।

(२) नीचे का विस्तार, तल, पेंदा ।

मुहा—तह की बात— गुप्त या छिपी हुई बात । तह को (तक) पहुँचना—असली बात जान लेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) पानी की थाह, तल । (४) महीन झिल्ली ।

तहकीक—संज्ञा स्त्री. [अ. तहकीक] (१) सत्य, वास्तविकता । (२) सच्चाई की जाँच । (३) पूछ-ताँछ ।

तहकीकात—संज्ञा स्त्री. [हिं. तहकीक] जाँच, छान-बीन ।

तहखाना—संज्ञा पुं. [फ़ा. तहखाना] तलगृह भुइँहरा ।

तहज़ीब—संज्ञा स्त्री. [अ. तहज़ीब] शिष्टता का व्यवहार ।

तहरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) पेठे की बरी और चावल की खिचड़ी । (२) मटर की खिचड़ी ।

तहरीर—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) लिखावट । (२) लेखन-शैली । (३) लिखी हुई बात । (४) लिखा हुआ प्रमाण । (५) लिखने की मजदूरी ।

तहरीरी—वि. [फ़ा.] लिखा हुआ, लिखित ।

तहलका—संज्ञा पुं. [अ.] (१) मौत । (२) बरबादी, नाश (३) खलबली, हलचल ।

तहस नहस—वि. [देश.] नष्ट, बरबाद ।

तहसील—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) वसूली, उगाही । (२) वसूल किया हुआ धन । (३) कर या मालगुजारी जमा करने का कार्यालय ।

तहसीलदार—संज्ञा पुं. [हिं. तहसील + फ़ा. दार](१) कर वसूल करनेवाला । (२) सरकारी मालगुजारी वसूल करनेवाला अधिकारी ।

तहसीलना—क्रि. स. [हिं. तहसील] वसूल करना ।

तहाँ—क्रि. वि. [सं. तत । सं. स्थान, प्रा थाण, थान] वहाँ, उस स्थान पर । उ.—हमता जहाँ, तहाँ प्रभु नाहीं, सो हमता क्यौं मानौं—१-११ ।

तहाँई—क्रि. वि. [हिं. तहाँ + ही] वहीं, उसी स्थान पर। उ.—मो सनमुख कत आए हो, दहन पिय रसमसे नैन अटपटे बैननि तहाँई जाहु जाके रंग रए हो—१०८५ ।

तहाना—क्रि. स. [हिं. तह] तह करना, लपेटना ।

तहियाँ—क्रि. वि. [सं. तदाहि] तब, उस समय ।

क्रि. वि. [हिं. तहाँ] वहाँ, उसी स्थान पर ।

तहियाना—क्रि. स. [फ़ा. तह] तह लगाना, लपेटना ।

तहियो—अव्य. [सं. तद्] तो भी, तब भी ।

तहीं—क्रि. वि. [हिं. तहाँ] वहीं, उसी स्थान पर । उ.—छाँड़ि तहीं सब राज-समाज । सजा गयौ अखेटक-काज—६-३ ।

ताँई—क्रि. वि. [हिं. ताईं] (१) तक, पर्यंत । (२) पास, निकट, समीप । (३) किसी के प्रति । (४) विषय में, लिए, वास्ते ।

ताँगी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. तंग = बंद] किसी चीज को कसकर बाँधने की डोरी ।

तांडव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पुरुषों का नृत्य । (२) उद्धत नृत्य जिसमें बहुत उछल-कूद हो । (३) शिव का नृत्य ।

तांत—वि. [सं.] (१) श्रांत, थका हुआ । (२) (शब्द) जिसके अंत में 'त्' हो ।

ताँत—संज्ञा स्त्री. [सं. तंतु] (१) भेंड़-बकरी की अंतड़ी या पुट्ठों को बटकर बनाया हुआ सूत । (२) धनुष की डोरी । (३) डोरी । (४) सारंगी आदि का तार ।

मुहा.—ताँत सा—बहुत दुबला-पतला पर चिमड़ा ।

ताँतड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताँत] ताँत, सूत, डोरी ।

तांतव—वि. [सं.] जिससे तार निकल सके ।

ताँता—संज्ञा पुं. [सं. तति = श्रेणी] पंति, कतार ।

मुहा.—ताँता बाँधना—(१) पंक्ति में खड़ा होना । (२)क्रम या सिलसिला न टूटना, बराबर चले आना ।

ताँति—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताँत] बाजे का तार । उ.—तैसे सूर सुने जदुनंदन बजी एक रस ताँति—३३६८ ।

ताँतिया—वि. [हिं. ताँत] बहुत दुबला-पतला ।

ताँती—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताँता] (१) कतार ।(२)बालबच्चे ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ताँत] बाजे का तार ।

तांत्रिक—वि. [सं.] तंत्र-संबंधी ।

संज्ञा पुं.—तंत्र-मंत्र या तंत्रशास्त्र जाननेवाला ।

ताँबा—संज्ञा पुं. [सं. ताम] लाल रंग की एक धातु ।

ताँबिया, ताँबी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताँवा] ताँबे का पात्र ।

तांबूल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पान । (२) पान का बीड़ा ।

ताँबे, ताँबैं—संज्ञा पुं. [हिं. ताँबा + ऐं (प्रत्य.)] ताँबे (नामक धातु) से । उ.—(क) तहँ गैयाँ गनी न जाहिं, तरुनी बच्छ बढ़ीं । .... । खुर ताँबैं, रूपैं पीठि, सोनैं सींग मढ़ी—१०-२४ । (ख) ताँबे रूपे सोने सजि राखी वै बनाइकै—२६२८ ।

ताँवर, ताँवरी—संज्ञा स्त्री. [सं. ताप, हिं. ताव] (१)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वर, हरारत ।(२) जूड़ी । (३) मूर्छा, पछाड़, चक्कर ।

ताँवरना—क्रि. अ. [हिं. ताँवर] (१) गरम होना, तपना । (२) क्रोध के आवेश में आना ।

ताँवरा, ताँवरो—संज्ञा पुं. [हिं. ताँवर] (१) ज्वर, हरारत । (२) जूड़ी । (३) मूर्छा, पछाड़, घुमटा, चक्कर । उ.—ज्यों सुक सेमर सेव आस लगि, निसिबासर हठि चित्त लगायौ , रीतौ परयौ जबै फल चाख्यौ, उड़ि गयौ तूल, ताँवरो आयौ—१-३२६ ।

ताँसना—क्रि. स. [सं. त्रास] (१) डाँटना-धमकाना । (२) सताना, कष्ट देना ।

ता-प्रत्य. [सं.] एक भाववाचक प्रत्यय जो विशेषण और संज्ञा शब्दों के आगे लगता है ।

अव्य. [फ़ा.] (१) तक, पर्यंत । (२) वही, वैसा ही । उ.—हय गय खोलि भँडार दिये सब, फेरि भरे ता भाँति— १०-३६ ।

सर्व० [सं. तद्] उस । उ.—(क) सारँग इक सारँग ह्वै लोव्यौ, सारँग ही कैं तीर । सारँग-पानि राय ता ऊपर, गए परीच्छत कीर—१-३३ । (ख) मानहुँ नभ निर्मल तारागन ता मधि चंद्र बिराजत —१३२८ ।

वि.—उस । उ.—तब सिव उमा गये ता ठौर ।

ताईं—अव्य. [सं. तावत् या फ़ा. ता] (१) तक, पर्यंत । उ.—मोसौं पतित न और गुसांईं । अवगुन मोपैं अजहुँ न छूटत, बहुत पच्यौ अब ताईं —१ १४७ । (२) पास, समीप, निकट । (३) किसी के प्रति, किसी को लक्ष्य करके । (४) लिए, वास्ते, निमित्त । उ.—दूरि गयौ दरसन के ताईं, ब्यापक प्रभुता सब बिसरी—१-११५ ।

ताई—क्रि. स. [हिं. ताना = ताव + ना (प्रत्य.)] (१) ताव देकर, ता कर, गरम करके । (२) पिघला कर ।

सर्व. [हिं. ता+ई] उसे ।

संज्ञा स्त्री. [सं. ताप, हिं. ताय + ई (प्रत्य.)] (१) ताप, हरारत । (२) जूड़ी ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ताऊ] ताऊ की पत्नी ।

ताईद—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) पक्षपाती, तरफदारी । (२) समर्थन, पुष्टि ।

ताउ—संज्ञा पुं. [हिं. ताव] (१) ताव । (२) गुस्सा ।

ताऊ—संज्ञा पुं. [सं. तात] बाप का बड़ा भाई ।

मुहा.—बछिया के ताऊ । (१) बैल । (२) मूर्ख ।

ताऊस—संज्ञा पुं. [अ.] (१) मोर पक्षी । (२) एक बाजा ।

ताक— संज्ञा स्त्री. [हिं. ताकना] (१) देखने की क्रिया । (२) स्थिर दृष्टि, टकटकी । (३) मौका, घात ।

मुहा.—ताक में रहना—मौका देखना, घात में रहना । (४) खोज, तलाश, फिराक ।

संज्ञा पुं [अ. ताक़] आला, ताख ।

मुहा.—ताक पर धरना (रखना)—काम में न लाना । ताक पर रहना (होना)—काम में न आना, व्यर्थ पड़ा रहना ।

वि.—(१) जो सम न हो । (२) अनुपम, अद्वितीय ।

ताकझाँक—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताकना + झाँकना] (१) बार-बार देखना । (२) छिपकर देखना । (३) देखभाल, निगरानी । (४) खोज ।

ताकत—क्रि. स. [हिं. ताकना] एकटक दृष्टि से देखता है । उ.—धन-जोबन-मद ऐंड़ौ ऐंड़ौ ताकत नारि पराई—१-३२८ ।

संज्ञा स्त्री. [अ. ताक़त] जोर, शक्ति, सामर्थ्य ।

ताकतवर—वि. [हिं. ताकत + वर] बली, समर्थ ।

ताकना—क्रि. स. [सं. तर्कण=विचारना] (१) सोचना-विचारना । (२) दृष्टि जमाकर या टकटकी लगाकर देखना । (३) ताड़ लेना, समझ जाना । (४) देखकर स्थिर करना । (५) रखवाली करना, देखते रहना ।

ताकि—क्रि. स. [हिं. ताकना] देखकर, दृष्टि गड़ाकर, अवलोकन करके । उ.—लकुट कैं डर ताकि तोहिं तब पीत पट लपटात—३६० ।

अव्य. [फ़ा.] जिससे, इसलिए कि ।

ताकी—सर्व. [हिं. ता + की (प्रत्य.] उसकी । उ.—कलि मैं नामा प्रगट ताकी छानि छवावै—१-४ ।

ताकीद—संज्ञा. स्त्री. [अ.] चेतावनी ।

ताके, ताकैं—सर्व. [हिं. ता + के, कैं (प्रत्य.)] उसके । उ.—पट कुचैल, दुर्बल द्विज देखत, ताके तंदुल खाए (हो)—१-७ । (ख) ज्यौं मृगा कस्तूरि भूलै सु तौ ताकैं पास—१-७० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताको, ताकौं—सर्व [हिं. ता + को, कौं (प्रत्य)] उसे, उसको। उ.—रावन अरि कौ अनुज बिभीषन ताकौं मिले भरत की नाईं—१-३।

ताकौ—सर्व. [हिं. ता + कौ (प्रत्य.)] उसका, उसके लिए। उ.—निरभय देह, राज-गढ़ ताकौ, लोक मगन-उतसाहु—१-४०।

ताक्यो, ताक्यौ—क्रि. स. [हिं. ताकना] (१) देखा, अवलोका, निहारा। उ.—(क) सूरदास प्रभु ध्यान हृदय धरि गोकुल तन को ताक्यो—२४७६। (ख) उन कछु नेक चतुरई कीनी गेंद उछारि गगन मिस ताक्यौ—२५४६। (२) स्थिर किया, निश्चय किया, घात में लगा। उ.—गैयन भीतर आइ समान्यो कान्हहिं मारन ताक्यौ—२३७३।

ताख, ताखा—संज्ञा पुं. [हिं. ताक] आला, ताक। उ.—सूरदास ऊधो की बतियाँ उड़उड़ि बैठीं ताख—३३२१।

ताखड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं त्रि + हिं. कड़ी] तराजू।

तागड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताग + कड़ी] (१) करधनी या किंकिणी नामक कमर का गहना। (२) कमर में पहनने का रंगीन डोरा।

तागना—क्रि. स. [हिं. तागा] मोटी सिलाई करना।

तागा—संज्ञा पुं. [सं. तार्कव, प्रा. तग्गो प. हिं. तागो या पहलवी—ताक = रेशा] रुई, रेशम आदि का सूत, डोरा, धागा।

ताछन—संज्ञा पुं. [सं तक्षण] शत्रु के आक्रमण से बचने और उस पर वार करने को बगल से बढ़ना, कावा।

ताछना—क्रि. अ. हिं. [ताछन] वार करने के लिए बगल से बढ़ना।

ताज—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) मुकुट, राजमुकुट। उ.—(क) कौरव-पति कौ पारयौ ताज—१-२४५ (ख) बिकल मान खोयौ कौरवपति, पारेउ सिर कौ ताज—१-२५५। (२) कलगी। (३) मुर्गे आदि पक्षियों की शिखा। (४) दीवार की कँगनी। (५) आगरे का प्रसिद्ध ताजमहल।

ताजगी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. ताज़गी] (१) ताजा या हरापन। (२) प्रफुल्लता, स्वस्थता (३) नयापन।

ताज़ा—वि. [फ़ा ताज़:] (१) हरा-भरा। (२) पेड़ से तुरंत टूटकर आया हुआ। (३) जो थका-माँदा न हो, नया दमदार। (४) तुरंत का बना हुआ। (५) जो बहुत दिनों का या पुराना न हो।

ताजिया—संज्ञा पुं. [फ़ा.] कागज आदि के बने मकबरे की आकृति के मंडप जो मुहर्रम में शिया मुसलमान दस दिन तक रखने के बाद गाड़ते हैं।

ताजी—संज्ञा पुं. [फ़ा. ताज़ी] (१) अरबी घोड़ा। उ.—(क) बिडरे गज-जूथ सील, सैन-लाज भाजी। घूँघट पट कोट टूटे, छूटे दृग ताजी—६१०। (ख) नव बादल बानैत पवन ताजी चढ़ि चुटकि दिखायो—२८४०। (२) शिकारी कुत्ता।

वि. [फ़ा.] अरब का, अरब संबंधी।

वि. स्त्री. [हिं. ताजा] (१) नया। (२) स्वस्थ।

ताज्जुब—संज्ञा पुं. [अ. तअज्जुब] अचरज, आश्चर्य।

ताटंक, ताडंक—संज्ञा पुं. [सं.] कान का एक गहना, करनफूल, तरकी। उ.—(क) जिन स्रवनन ताटंक खुभी और करनफूल खुटिलाऊ—३२२१। (ख) कहुँ कंकन कहुँ गिरी मुद्रिका कहुँ ताटंक कहुँ नेत—३४५।

ताड़—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक शाखारहित बड़ा पेड़। (२) ताड़ना, प्रहार। (३) शब्द, ध्वनि, धमाका। (४) हाथ का एक गहना।

ताड़का—संज्ञा स्त्री. [सं. ताड़का] एक राक्षसी जो सुकेतु नामक यक्ष की कन्या थी। इसमें हजार हाथियों का बल था। यह सुंद को ब्याही थी। अगस्त्य के शाप से यह राक्षसी हो गयी थी। विश्वामित्र की आज्ञा से इसे श्री रामचंद्र ने मार दिया था। उ.—मारग में ताड़का जु आई धाई बदन पसार। छिन में राम तुरंत सो मारी नेक न लागी बार—सारा. २०३।

ताड़न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मार, प्रहार। (२) डाटडपट (३) शासन, दंड।

ताड़ना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मार, आघात। (२) घुड़की, डाँट। (३) धमकी, सजा। (४) यातना, पीड़ा।

क्रि. स.—(१) मारना-पीटना (२) डाँटना, धमकाना। (३) दंड देना। (४) यातना या पीड़ा देना।

क्रि. स. [सं. तर्कण = सोचना] (१) किसी गुप्त बात को अनुमान या बुद्धि से कुछ कुछ समझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेना, भाँपना। (२) मार-पीटकर भगाना, हाँकना।

ताड़नीय—वि. [सं.] दंड देने या डाँटने योग्य।

ताड़ित—वि. [सं.] (१) जो मारा-पीटा गया हो। (२) जो डाँटा-घुड़का गया हो। (३) दंडित, शासित। (४) उत्पीड़ित। उ.—काँपन लागी धरा, पाय तैं ताड़ित लखि जदुराई—२०७। (५) हँकाया हुआ।

ताड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) ताड़ का छोटा वृक्ष। (२) एक आभूषण।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ताड़ + ई (प्रत्य.)] ताड़ के डंठलों से निकाला हुआ एक प्रकार का नशीला रस।

ताड़ुका—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताड़का] एक राक्षसी जिसे विश्वामित्र की आज्ञा से श्रीराम ने मारा था।

ताड़े—क्रि. स. [सं. ताड़ना] मारे-पीटे, नष्ट किये। उ.—पवन-पूत दानव-दल ताड़े दिसि चारी-९-९६।

तात—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पिता। उ.—(क) कोपै तात प्रहलाद भगत कौ, नामहिं लेत जरै—१-८२। (ख) मुनि बसिष्ठ पंडित अति ज्ञानी रचि-पचि लगन धरै। तात-मरन सिय-हरन राम बन-बपु धरि बिपति भरै—१-२६४। (२) पूज्य व्यक्ति, गुरु। (३) छोटों के लिए स्नेहसूचक संबोधन। (४) पुत्र, बेटा, लड़का। उ.—रजक धनुष गज मल्ल मारे तनक से नँद-तात—२६२७।

वि. [हिं. तत्ता] गरम, तप्त। उ.—(क) विष ज्वाला जल जरत जमुन कौ, याकैं तन लागत नहिं तात—५५४। (ख) एक फँक कौं नाहिं तू विष-ज्वाला अति तात—५८९।

तातकाल—क्रि. वि. [सं. तत्काल] तुरंत, उसी समय, उसी दम, तत्काल। उ.—अगिनि विना जानैं जो गहै। तातकाल सो ताकौं दहै……। हरि-पद सौं उन ध्यान लगायौ। तातकालै बैंकुंठ सिधायौ—६-४।

तातगु—संज्ञा पुं. [सं.] चाचा।

तातन—संज्ञा पुं. [सं.] खंजन पक्षी।

तातपर्य—संज्ञा पुं. [सं. तात्पर्य] आशय, अभिप्राय।

ताता—संज्ञा पुं. [सं. तात] (१) पिता, बाप। उ.—(क) राम जू कहाँ गए री माता ? सूनौ भवन, सिंहासन सूनौ, नाहीं दसरथ ताता—९-४९। (ख) धन्य बानी गगन धरनि पाताल धनि धन्य हो, धन्य बसुदेव ताता—२६१५। (ग) अंतरजामी जानि नंद सौं पूँछत बाता। कहा करत हौ सोच, कहौ कछु मोसौं ताता—५८९। (२) पूज्य व्यक्ति। (३) पुत्र, शिष्य आदि के लिए स्नेह-सूचक संबोधन।

वि. [सं. तप्त, प्रा. तत्त] तपा हुआ, गरम।

ताताथेई—संज्ञा स्त्री. [अनु.] नृत्य का एक बोल, नृत्य में पैर गिरने का अनुकरण शब्द। उ.—हौड़ा होड़ी नृत्य करैं रीझि रीझि अंक भरैं ताताथेई उघटत हैं हरषि मन—१७८१।

ताति—संज्ञा पुं. [सं.] पुत्र, लड़का, बेटा।

ताती—वि. [हिं. तत्ता] (१) तपी हुई, गरम। उ.—(क) गोकुल बसत नंद नंदन कै कबहुँ बयारि न लागी ताती—३०७७। (ख) नैन सजल कागद अति कोमल कर अँगुली ताती—३०८०। (२) कठिन, भयंकर। उ.—छाता लौं छाँह किए सोभित हरि छाती। लागन नहिं देत कहूँ समर-आँच ताती—१-२३।

तातील—संज्ञा स्त्री. [अ.] छुट्टी या अवकाश का दिन।

तातैं, तातैं—क्रि. वि. [हिं. ता + तैं. (प्रत्य)] इस-लिए, इस कारण। उ.—(क) सब विधि अगम बिचारहिं तातैं सूर सगुन पद गावै—१-२। (ख) तातैं सेइयै श्री जदुराइ। संपति बिपति, बिपति तैं संपति, देह कौ यहै सुभाइ—१ २६५। (ग) सुनतहिं सुगम कहत नहिं आवत बोलि जाइ नहिं तातैं--२७१३।

ताते—वि. [हिं. ताता] (१) तत्ते, गरम, गरमागरम। उ.—मीठे अति कोमल हैं नीके। ताते, तुरत चभोरि घी के—३९६। (२) बुरे, दुखदायी, कष्टदायक। उ.— समाचार ताते औ सीरे आगे जाय लहै- २९०५।

क्रि. वि. [हिं. ता + ते] इसलिए, इस कारण। उ.—नंद-जसोदा के तुम बालक विनती करति हौं ताते—२५२८।

तातो, तातौ—वि. [हिं. तत्ता] गरम, जलानेवाला, दुख-दायी। उ.—बिषयासक्त रहत निसि बासर सुख सियरौ दुख तातौ—१-३०२।

तात्कालिक—वि. [सं.] तुरंत का, उसी समय का।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तात्पय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आशय, अभिप्राय, मतलब। (२) तत्परता।

तात्विक—वि. [सं.] (१) तत्व से संबंधित। (२) तत्व के ज्ञान के युक्त। (३) यथार्थ, वास्तविक।

तादात्मय—संज्ञा पु. [सं.] एक वस्तु का दूसरी से मिलकर उसी के रूप में हो जाना।

तादाद—संज्ञा स्त्री. [अ. तअदाद] संख्या, गिनती।

तादृश—वि. [सं.] उसके समान वैसा।

ताधा- संज्ञा स्त्री. [हि. तातायंई] नृत्य में एक बोल। नाचने में पंर के गिरने का अनुकरण शब्द। उ.—
भृकुटा धनुष-नैंन सर साधे बदन बिकास अगाधा।
चञ्चल चपल चारु अवलोकनि काम नचावति ताधा।

तान—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) तानने का भाव, फंलाव। (२) सुर का खींचना, लय का विस्तार। उ.—
काम-क्रोध-मद लाभ-मोह की तान-तरंगनि गायौ—१-२०५।

मुहा.—तान उड़ाना (भरना, मारना, लेना)—राग अलापना, गीत गाना।

(३) ज्ञान या बोध का विषय। (४) एक पेड़।

क्रि. स. [हिं. तानना] (१ फंलाने को खींचकर।

मुहा.—तानकर—बलपूर्वक, जोर से।

(२) खींचने के लिए फैलाकर।

मुहा.—तान कर सोना—बेफिक्री से सोना।

तानत—क्रि. स. [हि. तानना] खीचने या तानने (से), तानता है। उ.—छुटि गये कुटिल कटाच्छ अलक मनो टूटि गयं गुन तानत—पृ. ३३६।

तानना—क्रि. स. [हिं. तान=विस्तार] (१) फैलाने के लिए खींचना। २) जोर से खींचकर फैलाना। (३) किसी परदे आदि को फैलाकर बाँध देना। (४) एक तरफ से दूसरी तरफ तक डोरी आदि बाँधना। (५) मारने के लिए हाथ या हथियार उठाना (६) चिट्ठी-पत्री या आवेदन-पत्र भेजना। (७) जेल भजना।

तानपूरा—संज्ञा पु. [सं. तान+हिं. पूरा] सितार के आकार का बाजा जो सुर बाँधने में सहारा देता है।

तानबान संज्ञा पुं. [हि. तानाबाना] कपड़ा बिनने में लंबाई और चौड़ाई के बल फंलाये हुए सूत।

तानसेन—संज्ञा पुं.—सम्राट अकबर का समकालीन एक प्रसिद्ध गवैया जिसका नाम त्रिलोचन मिश्र था।

ताना—संज्ञा पुं. [हि. तानना] (१) कपड़ा बिनने में लंबाई के बल फैलाया हुआ सूत। (२) करघा।

क्रि. स. [हिं. ताय+ना (प्रत्य.)] (१) गरम करना, तपाना। (२) पिघलाना। (३) तपाकर (धातुओं की) परीक्षा करना। (४) अजमाना।

क्रि. स. [हि. तावा ताव] ढक्कन मूँदना।

संज्ञा पुं. [अ.] चुभती हुई बात, व्यंग्य।

संज्ञा स्त्री. [हिं. तान] तान, लय, सुर। उ.—
सुन्यौ चाहौ स्रवन मधुर मुरली की ताना—१८१७।

तानाबाना—संज्ञा पुं. [हिं. ताना+बाना] कपड़ा बुनने में लंबाई और चौड़ाई के बल फैलाये हुए सूत।

तानारीरा—संज्ञा स्त्री. [हि. तान+अनु. रीरी] राग।

ताना—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताना] कपड़ा बुनने में लंबाई के बल रहनेवाला सूत।

तानूर—संज्ञा पु. [सं.] पानी या वायु का भँवर।

तान—सर्व. पुं. सवि. [हिं. तान] तान को।

क्रि. स. [हिं. तानना] तानता है। उ.—(क) नासा पुटनि सँकोचत लोचनति बिकट भृकुटि धनु तानैं—२०५३। (ख) जैसे मृगिअन ताकि बधिक दृग कर कोदंड गहि तानै—३१३६।

तान्यौ—क्रि. स. [हिं. तानना] ताना, पसारा, फैलाया। उ.—आसा कै सिंहासन बैठ्यौ, दंभ-छत्र सिर तान्यौ—१-१४१।

तान्व—संज्ञा पुं. [सं.] पुत्र, लड़का, बेटा।

ताप—संज्ञा पुं [सं.] (१ उष्णता, गरमी। उ.—
जद्यपि मलय-वृच्छ जड़ काटे, कर कुठार पकरै।
तउ सुभाव सीतल नहिं छाँड़ै, रिपु तन-ताप हरै—१-११७। (२) आँच, लपट। (३) ज्वर। (४) कष्ट, दुख, पीड़ा। उ.—(क) तातै जानि भजे बनवारी। सरनागत की ताप निवारी—१-२८। (ख) नंद-हृदय भयौ सुनि ताप—४५। (ग) बहुत दिनन के ताप तबन के सुफलक-सुत सब मेटे—सारा. ५६२।

तापक—संज्ञा पु. [सं.] (१) ताप उत्पन्न करनेवाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) रजोगुण। (३) ज्वर।

तापती—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सूर्य की एक कन्या, तापी। (२) सतपुरा पहाड़ से निकलनेवाली एक नदी।

ताप-त्रय—संज्ञा पु. [सं. ताप+त्रय] तीन प्रकार के ताप आध्यात्मिक, आधिदैविक, और आधिभौतिक; इन्हें दैहिक, दविक और भौतिक भी कहते हैं।

तापत्रय-हरन—संज्ञा पुं. [सं. ताप+त्रय+हरण] तीनों प्रकार के ताप—आध्यात्मिक, आधिदैविक, और आधिभौतिक—हरनेवाला, ईश्वर। उ.—दीन जन क्यौं करि आवे सरन ? भूल्यौ फिरत सकल जल-थल मग, सुनहु ताप-त्रय-हरन—१ ४८।

तापन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ताप देनेवाला। (२) सूर्य। (३) कामदेव का बाण। (४) सूर्यकांत मणि। (५) मदार। (६) ढोल बाजा। (७) एक नरक।

तापना क्रि. अ. [सं. तापन] आग से अपने आपको जाड़ा दूर करने के लिए गरमाना।

क्रि. स.—(१) जलाना। (२) नष्ट करना।

क्रि. स.—तपाना, गरम करना।

ताप-निवारन—संज्ञा पुं. [सं. ताप + निवारण] (१) कष्ट दूर करनेवाले। (२) ईश्वर जो आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक दुखों से छुटकारा दिलाता है। उ.—तीन लोक के ताप-निवारन, सूर स्याम सेवक सुखकारी—१-३०।

तापमान संज्ञा पुं. [सं.] उष्णता की मात्रा।

तापल—संज्ञा पुं. [सं. ताप] क्रोध, गुस्सा।

तापस—संज्ञा पु. [सं.] (१) तप करनेवाला, तपस्वी। उ.—जती सती तापस आराधै, चारौ वेद रट—१-२६३। (२) तमाल का वृक्ष।

तापसी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) तपस्वी की स्त्री। (२) तपस्या करनेवाली स्त्री, तपस्विनी।

तापित—वि. [सं] (१) जो तपाया गया हो। (२) जिसने ताप या कष्ट सहा हो, दुखित, पीड़ित।

तापी—वि. [सं. तापिन्] जिसमें ताप हो।

संज्ञा स्त्री.—(१) सूर्य की एक कन्या का नाम। (२) तापती नदी जो सतपुरा से निकलती है।

तापु—संज्ञा पुं. [सं.] कष्ट, दुख, पीड़ा। उ.—सुंदर बदन दिखाइ कै हरौ नैन कौ तापु—४-३१।

तापेंदु—संज्ञा पुं. [सं. ताप + इंद्र] सूर्य।

तापैं—सर्व [हिं. ता+पै (प्रत्य)] उस पर, उसके पा... उ.—(क) दुरबासा अंबरीस सतायौ, सो हरि-... गयौ। परतिज्ञा राखी मन-मोहन, फिरि यापै पठ... १-३८। (ख) भारत जुद्ध बितत जब भयौ, ... जोधन अकेल रहि गयौ। अस्वत्थामा तापै ... एसी भाँति वह्यौ समुझाइ—१-२८९।

ताप्ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. तापती] तापती नदी।

ताफ्ता—संज्ञा पु [फ़ा. ताफ़्ता] धूप-छाँह का ... दार रेशमी कपड़ा।

ताब—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) गरमी। (२) च... (३) हिम्मत, मजाल। (४) सहनशक्ति।

ताबड़ताड़—क्रि. वि. [अनु.] लगातार, बराबर।

ताबूत—संज्ञा पुं. [अ.] संदूक जिसमें मुर्दा रखते...

ताबे—वि. [अ. ताबअ] (१) वश में, अधीन। आज्ञा माननेवाला, आज्ञाकारी।

ताबेदार—वि. [अ. ताबअ + फ़ा. दार] आज्ञाकारी... संज्ञा पु—नौकर, सेवक, दास।

ताबेदारी—संज्ञा स्त्री. [हि. ताबेदार] (१) नौकरी, ... काई। (२) सेवा, टहल।

ताम—संज्ञा पु. [सं.] (१) मनोविकार, चित्त का ... व्याकुलता। उ.—(क) मिट्यौ काम तनु ताम ... ही रिझई मदनगोपाल। (ख) तरु तमाल तर ... कन्हाई दूरि करन जुवतिन तनु ताम—१३२७। ... दुख, क्लेश, व्यथा, कष्ट। उ.—देखत पय ... बलराम। तातो लगत डारि तुम दीनो दाव... पीवत नहिं ताम—४६७। (३) दोष। (४) ग्लानि...

वि—(१) दुखी, व्याकुल। उ.—अति सुंद... मनोहर मूरति, ताहि करति तुम ताम। (२) भो... डरावना, भयानक आकृतिवाला।

संज्ञा पुं. [सं. तामस] (१) क्रोध, रोष, गुस्सा... उ.—(क) सूर प्रभु जेहि सदन जात न सोइ क... तनु ताम। (ख) कस को निर्बस ह्वै है करत... पर ताम—२५६१। (२) अंधकार, अंधेरा। उ... (क) कहौ तौ सूरज उगन देउँ नाहिं, दिसि ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाढ़ै ताम—६-१४८ । (ख) जननि कहत उठहु स्याम। बिगत जानि रजनि ताम, सूरदास प्रभु कृपालु तुमकौं कछु खँवै ।

तामजान तामजाम संज्ञा पुं. [हिं. थामना + सं. यान] एक खुली सवारी जो लंबी कुरसी की सी होती हैं ।

तामड़ा—वि. [हिं. ताँबा + ड़ा] तांबे के रंग का ।

संज्ञा पुं.—(१) ऊदा पत्थर । (२) गंजी खोपड़ी । (३) साफ आकाश ।

तामरस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कमल । (२) सोना । (३) तांबा । (४) धतूरा ।

तामस—वि. [सं.] तमोगुण युक्त । उ.—ब्रह्मा राजस गुण अधिकारी, सिव तामस अधिकारी ।

संज्ञा पुं.—(१) क्रोध, गुस्सा । उ.—कहु तोकौं कैसै आवत है रिसु पर तामस एत । (२) साँप । (३) खल दुष्ट । (४) उल्लू नामक पक्षी । (५) अंधकार, अंधेरा । (६) अज्ञान, मोह ।

तामसी—वि. स्त्री. [सं.] तमोगुणवाली, जिसकी प्रकृति तमोगुणयुक्त हो । उ.—तिन बहु सृष्टि तामसी करी—३-७ ।

संज्ञा स्त्री.—(१) अँधेरी रात । (२) महाकाली ।

तामिल-संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) द्राविड़ जाति की एक शाखा । (२) तामिल लोगों की भाषा ।

तामिस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक नरक का नाम । (२) क्रोध । (३) द्वेष । (४) एक अविद्या ।

तामील—संज्ञा स्त्री. [अ.] आज्ञा का पालन ।

तामैं- सर्व [हिं. ता + मैं (प्रत्य.)] उसमें । उ.—नृप कन्या कौ व्रत प्रतिपारयौ, कपट वेष इक धारयौ । तामैं प्रगट भए श्रीपति जू अरि-जन-गर्व प्रहारयौ—१-३१ ।

ताम्र ताम्रक—संज्ञा पुं. [सं.] तांबा ।

ताम्रपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तांबे का पत्तर । (२) तांबे का पत्तर जिस पर अक्षर आदि खुदे हों ।

ताम्र वर्ण—वि. [सं.] (१) तांबे के रंग का । (२) लाल ।

ताय—संज्ञा पुं. [सं. ताप, हि. ताव (१) ताप, गरमी । (२) जलन । (३) धूप ।

सर्व.—[हिं. ताहि] उसे, इसको । उ.—वाके आस्रम जो कोऊ बसत है माया लगत न तायं—सारा. १६६ ।

तायना—क्रि. स. [हिं. ताव] तपाना, गरम करना ।

ताया—संज्ञा पुं. [सं. तात] बाप का बड़ा भाई ।

क्रि. स. [हिं. ताना] गरम किया, पिघलाया ।

तार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चांदी । (२) सोने-चांदी आदि धातुओं का बहुत पतला सूत या डोरी ।

मुहा.—तार-तार करना—बिनी या बटी हुई चीज की धज्जियाँ उड़ा देना । तार तार होना—बहुत फट जाना ।

(४) परंपरा, चलता हुआ क्रम, सिलसिला ।

मुहा.—तार टूटना—चलता हुआ काम या क्रम टूटना । तार बँधना—किसी काम या बात का सिलसिला शुरू होना । तार बँधाना (लगाना)—किसी बात या काम को बराबर करते जाना ।

(१) ब्योंत, सुबीता । (८) ठीक नाप । (६) युक्ति, उपाय, ढब । (१६) श्री राम की सेना का एक बंदर । (११) नक्षत्र, तारा ।

संज्ञा पुं. [सं. ताल] (१) ताली, ताल । उ.—मोहि देखि सब हँसत परस्पर, दै दै तारी तार—१-१७५ । (२) ताल मजीरा । (३) करताल । उ.—डिमडिमी पटह ढोल डफ बीना मृदंग उपंग चंग तार—२४४६ (१) ।

संज्ञा पुं. [सं. तल] तल, सतह ।

संज्ञा पुं. [हिं. ताड़] कान का ताटंक नामक गहना । उ.—स्रवनन पहिरे उलटे तार ।

वि. [सं.] (१) जिसमें से किरणें फूटी हों । (२) स्वच्छ, निर्मल ।

क्रि. स. [हिं. तारना] तार कर, उद्धार करके । उ.—इंद्रप्रस्थ हरि गये कृपा करि पांडव-कुल को तार—सारा. ६५४ ।

तारक संज्ञा पुं. [सं.] (१) राम का षड़ाक्षर मंत्र, 'ओं रामायनमः' का मंत्र । उ.—गोबिंद-भजन करौ इहिं बार । संकर पारबती उपदेसत तारक मंत्र लिख्यौ स्रुति-द्वार—२-३ । (२) नक्षत्र, तारा । (३) आंख । (४) आंख की पुतली । (५) एक असुर । (६) पार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनेवाला । (७) मल्लाह, केवट । (८) उद्धारक ।

तारका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नक्षत्र, तारा । (२) आँख की पुतली । (३) बालि की स्त्री तारा । उ.—सुग्रीव को तारका मिलाई बध्यौ बालि भयमंत ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ताड़का] ताड़का नामक राक्षसी ।

तारकाक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] तारकासुर का पुत्र ।

तारकामय—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव ।

तारकासुर—संज्ञा पुं. [सं.] एक असुर जिसे देव सेनापति कुमार कार्तिकेय ने मार था ।

तारकित, तारकी—वि. [सं. तारकित] तारों से युक्त ।

तारकेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शिव । (२) एक शिव-लिंग जो कलकत्ते के पास है ।

तारख—संज्ञा पुं. [सं. तार्क्ष्य] गरुड़ ।

तारखी—संज्ञा पुं. [सं. तार्क्ष्य] घोड़ा ।

तारघाट—संज्ञा पुं. [हिं. तार + घात] मतलब गँठने या निकलने का दाँव, घात या आयोजन ।

तारण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पार करने की क्रिया । (२) उद्धार, निस्तार । (३) उद्धारक । (४) विष्णु ।

तारत—क्रि. स. [हिं. तारना] (१) पार लगाते हैं । (२) उद्धार करते हैं, सद्गति देते हैं, तारते हो, मुक्त करते हो । उ—(क) काहू के कुल तन न बिचारत । अविगत की गति कहि न परति है, ब्याध-अजा मल तारत—१-१२ । (ख) साँचे बिरद सूर के तारत, लोकनि-लोक अवाज—१-९६ ।

तारतम्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कम या ज्यादा का क्रम या संबंध । (२) कम-ज्यादा के अनुसार उत्तरोत्तर क्रम । (३) दो वस्तुओं के कम या ज्यादा गुण, परिमाण आदि का परस्पर मिलान ।

तार तार—वि. [हिं. तार] कटा-फटा, उधड़ा हुआ ।

तारतोड़—संज्ञा पुं. [हिं. तार + तोड़ना] कारचोबी या जरदोजी का काम ।

तारन—क्रि. स. [हिं. तारना] उद्धार करने के लिए, तारने को, मुक्त करने को । उ.—मैं जु रह्यौ राजीव-नैन दुरि, पाप-पहार-दरी । पावहु मोहिं कहाँ तारन कौं, गूढ़-गंभीर खरी—१-१३० ।

संज्ञा पुं. [हिं. तर] छत या छाजन की ढाल ।

तारना—क्रि. स. [सं. तारण] (१) पार लगाना । संसार से उद्धार करना, मुक्ति देना ।

तारनि—संज्ञा पुं. बहु. [सं. तारे] आँख की पुतलि... उ. मंजुल तारनि की चपलाई, चित्त चतुराई... री—१०-१३७ ।

तारल्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) द्रवित होने का भाव, धर्म, द्रवता । (२) चंचलता, चपलता ।

तारा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नक्षत्र, सितारा ।

मुहा.—तारा टूटना—उल्कापात होना । ... डूबना—(१) किसी नक्षत्र का अस्त होना । शुक्र का अस्त होना । तारा सी आँख हो... (होना) आँख का स्वच्छ या नीरोग होना । ... हो जाना—(१) बहुत ऊँचाई पर पहुँच जाना । बहुत अंतर या फासले पर होना ।

(२) भाग्य, किस्मत, सितारा ।

संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बृहस्पति की स्त्री । ... आँख की पुतली । (३) एक महाविद्या । (४) ... नामक बानर की स्त्री । (४) राधा की एक सखी ... नाम । उ.—कमला तारा बिमला चंदा चंद्रा... सुकुमारि—१५८० ।

संज्ञा पुं. [हिं. ताला] ताला, कुलुफ ।

ताराग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] पाँच ग्रहों—मंगल, बुध, ... शुक्र और शनि—का समूह ।

ताराज—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) लूटमार । (२) नाश...

ताराधिप, ताराधीश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चंद्रमा ... (२) शिव । (३) बृहस्पति । (४) बालि । (५) सुग्रीव ...

तारानाथ, तारापति—संज्ञा पुं. [हिं. तारा + पति] (१) चंद्रमा । (२) बृहस्पति । (३) बालि ... (४) सुग्रीव ।

तारापथ—संज्ञा पुं. [सं.] आकाश ।

तारापीड़—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा ।

ताराभूषा—संज्ञा स्त्री. [सं.] रात, रात्रि ।

तारामंडल—संज्ञा पुं. [सं.] नक्षत्रों का समूह या ...

तारायण—संज्ञा पुं. [सं.] आकाश ।

तारि—क्रि. स. [हिं. तारना] तार कर, मुक्त ... उद्धार करके । उ.—क्षुद्र पतित तुम तारि रमा...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब न करौ जिय गारौ—१-१३१ ।

तारिक—संज्ञा स्त्री. [सं] **पार उतारने की मजदूरी ।**

तारिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **ताड़ी नामक मद्य ।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. तारका] **नक्षत्र, तारा ।** उ.—तारिका दुरानी, तमचुर बोले, स्रवन भनक परी ललिता के तान की—१६०६ ।

तारिणी—त्रि. स्त्री. [सं.] **तारनेवाली ।**

संज्ञा स्त्री. **तारा देवी ।**

तारिबे—क्रि. स. [हिं. तारना] **उद्धार करन (को), मुक्त करने या सद्गति देने को ।** उ.—(क) और को है तारिबे कौं कहौ कृपा ताता—१-१२३ । (ख) सत्य भक्तहिं तारिबे कौं लीला बिस्तारी—१-१७६ ।

तारिहौ—क्रि. स. [हिं. तारना] **तारोगे, मुक्त करोगे, उद्धारोगे, निस्तारोगे ।** उ.—तौ जानौं जो मोहि तारिहौ, सूर कूर कबि ढोट—१-१३२ ।

तारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तारा = आँख की पुतली] **(१) निद्रा । (२) ध्यान, समाधि ।** उ.—(क) सिव की लागी हरि-पदतारी । तातैं नहिं उन आँखि उघारी—४-५ । (ख) बाँसुरी बजाइ आछे ढंग से मुरारी । सुनि कै धुनि छूटि गई संकर की तारी—६४६ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ताड़ी] **ताड़ी नामक मद्य ।**

क्रि. स. [हिं. तारना] **(१) पार लगा दी ।** उ.—अंबर हरत सभा मैं कृष्णा सोक-सिंधु तैं तारी—१-२८२ । **(२) उद्धार कर दिया, मुक्ति दी ।** उ.—गौतम की पतिनी तुम तारी, देव, देवानल कौं अँचयौ—१-२६ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ताली] **ताली, करतल का परस्पर आघात ।** उ.—मोहिं देखि सब हँसत परस्पर, दै दै तारी तार १-१७५ ।

तारीक—वि. [फ़ा.] **(१) काला । (२) धुंधला ।**

तारीकी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **(१) स्याही । (२) अँधेरा ।**

तारीख—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **(१) तिथि । (२) नियत तिथि ।**

तारीफ—संज्ञा स्त्री. [अ.] **(१) परिभाषा, लक्षण । (२) वर्णन, विवरण । (३) प्रशंसा, बड़ाई । (४) गुण ।**

तारु, तारू—संज्ञा पुं. [हिं. तालू] **तालू ।**

मुहा.—रसना तारू सौं नाहिं लावत—**चुपचाप नहीं रहता ।** उ.—चातक के रट नेह सदा वह रितु अनरितु नहिं हारत । रसना तारू सौं नहिं लावत पीवै पीव पुकारत—पृ. ३३० ।

तारुण्य—संज्ञा पुं. [सं.] **यौवन, जवानी ।**

तारे—क्रि. स. [हिं. तारना] **(१) पार पहुँचाये, पार लगाये । (२) उद्धारे, मुक्त किये, सद्गति दी ।** उ.—(क) कहा कहौं हरि केतिक तारे, पावन-पद परतंगी—१-२१ । (ख) बन में जाय बहुत मुनि तारे दूरि करैं भुव-भार—सारा. २५२ । (ग) मारग में मुनिजन तारे अरु बिराध रिपु मारे—सारा. २५५ ।

संज्ञा पुं. बहु. [सं. तारा] **(१) नक्षत्र, सितारे ।**

मुहा.—तारे गिनना—**चिंता, दुख, आसरे या प्रतीक्षा म बेचैनी से रात काटना ।** तारे गनत—**चिंता, दुख या प्रतीक्षा में बेचैनी से रात कटी ।** उ.—(क) सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु रैनि गनत गयी तारे—२७८१ । (ख) तारे गन तगगन के सजनी बीते चारौ जाम—२८२३ । तारे खिलना—**तारों का चमकना ।** तारे छिटकना—**स्वच्छ आकाश में तारे चमकना ।** तारे तोड़ लाना—**(१) असंभव काम कर दिखाना । (२) बड़ी चालाकी से काम करना ।** तारे दिखायी देना—**कमजोरी के कारण आंखों के सामने तिरमिराहट होना ।**

(२) आँख की पुतलियाँ । उ.—(क) बार बार इहै कहति भरि भरि दोउ तारे—२६०१ । (ख) बिन ही रितु बरसत निसि बासर सदा मलिन दोउ तारे—२७६१ । (ग) सुनि ऊधो के बचन रहीं नीचै कै तारे—३४४३ ।

तारैं—क्रि. स. [हिं. तारना] **तार दें, मुक्त कर देने से, उद्धारने से, उद्धार करें ।** उ.—(क) कहा भयौ गज-गनिका तारैं जो न तारौ जन ऐसौ—१-११६ । (ख) सूर स्याम हौ पतित-सिरोमनि, तारि सकै तौ तारैं—१-१८३ ।

तारै—क्रि. स. [हि. तैराना] **(१) तैरावे, (पानी पर) उतरावै ।** उ.—तप बली, सत्य तापस बली, तप बिना बारि पर कौन पाषान तारै—९-१२९ । **(२) पार लगा दे, तार दे ।** उ.—करौ भगवान कौ जस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुनीजन सदा जो जगत-सिंधु तैं पार तारैं—४-११ ।

तारौं—क्रि. स. [हिं. तैराना] (पानी पर तैरा दूँ, पानी पर उतरा दूँ। उ. - कहा हौ तुत्र प्रताप श्री रघुबर, उदधि पखाननि तारौं—९-२०८ ।

तारौ—क्रि. स. [हिं. तारना] उद्धारो, मुक्त करो, तार दो। उ.—(क) कहा भयौ गज गनिका तारैं जो न तारौ जन ऐसौं—१-१०६। (ख) जौ जानौ यह सूर पतित नहिं, तौ तारौ निज हेत—१-१५६।

संज्ञा पुं. [हिं. ताला] ताला, कुल्फ। उ.—(क) बड़े पतित पासंगहु नाहीं. अजामिल कौन बिचारौ। भाजे नरक नाम सुनि मेरो, जम दीन्यौ हढ़ि तारौ—१-१३१। (ख) देखत आन सँच्यौ उर अंतर, दै पलकनि कौ तारौ री—१०-१३५।

तार्किक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तर्क करनेवाला। (२) तर्कशास्त्र का ज्ञाता। (३) दार्शनिक।

तार्यौ—क्रि. स. [हिं. तारना] (१) पार लगाया। (२) सांसारिक क्लेशों से मुक्त किया, उद्धारा, सदगति दी। उ.—तौ हम कोऊ तार्यौ नहिं जौ मोसौं पतित न तार्यौ—१-७३।

ताल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हाथ का तल, हथेली। (२) करतल ध्वनि, ताली। (३) नाचने-गाने में काल और क्रिया का परिमाण जिसे बीच-बीच में हाथ पर हाथ मारकर सूचित करते हैं।

मुहा.— ताल बेताल—(१) जिसका ताल ठीक न हो। (२) मौके-बे मौके। ताल मे बेताल होना गाने बजाने में काल या क्रिया का परिमाण बिगड़ जाना।

(४) करताल या झाँझ नामक बाजा। उ.—ताल-पखावज चले बजावत समधी सोभा कौ—१-१५१। (५) ललकारने या चुनौती देने के लिए जाँघ या बाहु पर जोर से हथेली मारने से उत्पन्न शब्द।

ताल ठोंकना लड़ने के लिए ललकारना।

(६) ताड़ का पेड़ या फल। (७) हाथियों के कान फटफटाने का शब्द। (८) ताला। (९) तलवार की मूठ। (१०) एक नरक। (११) महादेव।

संज्ञा पुं [सं. तल्ल] तालाब, पोखरा।

तालक—संज्ञा पुं. [हिं. ताल्लुक] संबंध, ताल्लुक।

तालकेतु, तालध्वज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह जिसकी पताका पर ताड़ का पेड़ अंकित हो। (२) भीष्म। (३) बलराम।

तालबन—संज्ञा पुं. [सं. तालवन] वृन्दावन के समीप एक वन। उ.—(क) सखा कहन लागे हरि सौं नव चलौ तालबन कौं जैऐ अब—४६६। (ख) तालबन इन बच्छ मार्यौ—२५८२।

तालबेन—संज्ञा स्त्री. [सं. ताल + वेणु] एक बाजा।

तालमेल—संज्ञा पुं. [हिं. ताल + मेल] (१) ताल सुर का मिलान। (२) मेल जोल। (३) उपयुक्त अवसर।

तालरस—संज्ञा पुं. [सं.] ताल के पेड़ का मद्य, ताड़ी। उ.—तालरस बलराम चाख्यो मन भयौ अनंद। गोपसुत सब टेरि लीन्हे सुधि भई नँदनंद।

तालवन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ताड़ के पेड़ों का वन। (२) व्रजमंडल के अंतर्गत एक वन जहाँ बलराम ने धेनुक को मारा था।

तालवाही—वि. [सं.] ताल देने का बाजा।

तालवृंत—संज्ञा पुं. [सं.] ताड़ के पत्ते का पंखा।

तालव्य वि. [सं.] (१) तालु से संबंधित। (२) तालु से उच्चरित वर्ण जैसे इ ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श।

ताला—संज्ञा पुं. [सं. तलक] कुल्फ, कुलफ, जंदरा। उ.—सहज कपाट उघरि गये ताला कूँची टूटि—२६२५।

तालाब—संज्ञा पुं. [हिं. ताल + फ़ा. आब] सरोवर।

तालिका—संज्ञा स्त्री [सं] (१) ताली। (२) सूची।

तालिब—वि. [अ.] चाहने या ढूँढ़नेवाला।

तालिबइल्म—संज्ञा पुं. [अ.] विद्यार्थी।

तालम—संज्ञा स्त्री. [सं. तल्प] शैया, बिस्तर।

ताली—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) कुंजी, चाबी। (२) ताड़ी।

संज्ञा स्त्री. [सं] (१) हथेलियों का परस्पर आघात।

मुहा.—ताली पटना (बजाना)— हँसी उड़ाना। एक हाथ से ताली नहीं बजती— बैर या प्रीति एक ओर से नहीं होती।

(२) करतल-ध्वनि।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ताल = तालाब] तलैया।

संज्ञा स्त्री. [देश.] पैर की बिचली उंगली का ऊपरी भाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[ताली]—संज्ञा स्त्री. [अ.] शिक्षा ।

तालीम—संज्ञा स्त्री. [अ.] शिक्षा ।

तालु, तालू—संज्ञा पुं. [सं. तालु] मुँह की भीतरी ऊपरी छत ।

मुहा.—तालू में दाँत जमना—बुरे दिन आना । तालू से जीभ न लगना— चुपचाप न रह सकना ।

ताल्लुक—संज्ञा पुं. [अ. तअल्लुक़] संबंध, लगाव ।

ताव—संज्ञा पुं. [सं. ताप, प्रा. ताव] (१) गरमी जो किसी चीज को तपाने या पकाने के लिए पहुँचायी जाय । उ.—जठर अगिन को ब्यापै ताव—३-११ ।

मुहा.— ताव आना— जितना चाहिए उतना गरम होना । ताव खाना — आँच में गरम होना । ताव खा जाना—(१) आग की तेजी से जल-सा जाना । (२) किसी खौलायी हुई चीज का ज्यादा ठंडा हो जाना । ताव देना—(१) गरम करना । (२) तपाकर लाल करना । ताव बिगड़ना— आँच का कम या ज्यादा होना । मूँछों पर ताव देना—अभिमान या घमंड से मूँछें ऐंठना । मूँछनि ताव दिवायौ—गर्व या घमंड से मूँछों पर हाथ फेरा । उ.—कबहुँक फूलि सभा मैं बैठ्यौ मूछनि ताव दियौ—१-३०१ ।

(२) घमंड की झोंक में क्रोध करना ।

मुहा.—ताव दिखाना—अभिमान के कारण क्रोध दिखाना । ताव में आना—घमंड की झोंक में क्रोध मे आ जाना ।

(३) अहंकार का आवेश, शेखी की झोंक । (४) किसी बात के होने की इच्छा या उत्कंठा ।

मुहा.—ताव चढ़ना— प्रबल इच्छा होना । ताव पर—जरूरत के मौके पर ।

संज्ञा पुं. [फ़ा. ता = संख्या] कागज का तख्ता ।

तावत—क्रि. स. [हि. तान] जलाती है, भस्म करती है । उ.—निरखि पतंग बात नाहिं छाँड़त जदपि जोते तनु तावत—१-२१० ।

तावत्—क्रि. वि. [सं.] (१) उतने समय तक । (२) उतनी दूर तक । (३) तक ।

तावना—क्रि. स. [सं. तापन] (१) तपाना, गरम करना । (२) जलाना । (३) दुख या संताप पहुँचाना ।

तावभाव—संज्ञा पुं. [हि. ताव+भाव] उपयुक्त अवसर ।

वि.—थोड़ा सा, जरा सा, हलका सा ।

तावर, तावरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताव + री] (१) दाह, जलन । (२) धूप, घाम । (३) बुखार । (४) गर्मी का चक्कर, घुमटा ।

तावरो—संज्ञा पुं. [हिं. तावर] (१) ताप, जलन । (२) धूप घाम । उ.—मैं जमुना-जल भरि घर आवति मो को लागो तावरो—२४३२ । (३, गर्मी से आया हुआ चक्कर ।

तावल—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताव] जल्दी, उतावली ।

तावा—संज्ञा पुं. [हिं. ताव] तवा ।

तावान—संज्ञा पुं [फ़ा.] हानि का डाँड़ ।

ताविषी—संज्ञा स्त्री. [स.] (१) देव-कन्या । (२) नदी । (३) पृथ्वी, भूमि ।

तावीज—संज्ञा पु. [अ. तअवीज़] (१) गले या बाँह में पहनने का यंत्र, मंत्र या कवच । (२) संपुट जिसमें यंत्र-मंत्र रखकर बाँधा जाता है ।

तालीष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) स्वर्ण । (२) समद्र ।

ताश संज्ञा पुं. [अ. तास] (१) एक तरह का जरदोजी कपड़ा । (२) खेलने का पत्ता । (३) ताश का खेल ।

ताशा, तासा—संज्ञा पुं. [अ. तास] चमड़ा मढ़ा एकबाजा ।

तासीर—संज्ञा स्त्री. [अ.] असर, प्रभाव, गुण ।

तासु, तासू - सर्व. [हिं. ता + सु (प्रत्य.)] उसका ।

तासो, तासौं—सर्व. [हि. ता + सों, सौं (प्रत्य.)] उससे, उसे । उ.—या बिधि कौ ब्यौपार बन्यौ जग, तासौं नेह लगायौ—१-७६ ।

ताह—वि. [हिं. ता] उसका, उसके । उ.—जब सुत भयो कहेउ ब्राह्मण ते अर्जुन गये गृह ताह—सारा. ८५१ ।

ताहम—अव्य. [फ़ा.] तौ भी, तिस पर भी ।

ताहि—सर्व. [हिं. ता + हिं (प्रत्य.)] उसे, उसको । उ.—धाइ चक्र लै ताहि उबारयौ, मारयौ ग्राह बिहंगी—१ २१ ।

ताहीं --अव्य. [हिं. ताईं] (१) तक, पर्यंत । (२) पास, समीप (३) किसी के प्रति । (४) संबंध में, लिए ।

प्रत्य. [हिं. तईं] से ।

ताही—सर्व. [हि. ता + ही (प्रत्य.)] उसी, उस ही ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—(क) कौन जाति अरु पाँति बिदुर की, ताही कैं पग धारत—१-१२। (ख) मोसौं बात सकुच तजि कहियै। कत ब्राइत, कोउ और बतावौ, ताही के ह्वै रहियौ—१-११६।

ताहू—सर्व. [हिं. ता + हू (प्रत्य.)] उसे भी, उसमें भी। उ.—(क) सूरदास की एक आँख है, ताहू मैं कछु कानौ—१-४७। (ख) चारु चखौड़ा पर कुंचित कच, छबि मुक्ता ताहू मैं—१०-१४७।

तिंतिड़, तितिड़िका, तिंतिड़ीक, तिंतिड़ीका, तिंतलिका, तिंतिली—संज्ञा स्त्री. [सं. तिंतिड़] इमली।

तिंदुकतीर्थ—संज्ञा पुं. [सं.] व्रज का एक तीर्थ।

तिआ—संज्ञा स्त्री. [हिं. तिया] स्त्री।

तिब्राह—संज्ञा पुं. [सं. त्रिविवाह] तीसरा विवाह।

तिकड़म—संज्ञा पु. [सं त्रि + क्रम (?)] गुप्त युक्ति, उपाय या चाल।

तिकड़मी—वि. [हि. तिकड़म] चालबाज।

तिकड़ी—वि. [हिं. तीन + कड़ी] तीन कड़ियोंवाला।

तिकोन, तिकोना, तिकोनिया वि. [सं. त्रिकोण, हिं. तिकोना] जिसमें तीन कोने हों।

संज्ञा पुं.—(१) समोसा। (२) तिकोनी नक्कासी करने या बनाने की छेनी।

तिक्ख—वि. [सं. तीक्ष्ण, प्रा. तिक्ख] (१) तीखा, तेज। (२) तीव्र बुद्धिवाला, चालाक।

तिक्त—वि. [सं.] तीता, कड़ुआ।

तिक्तता—संज्ञा स्त्री. [सं.] तिताई, कड़ुआपन।

तिच्छ—वि. [सं. तीक्ष्ण] (१) तेज। (२) चोखा।

तिच्छता—संज्ञा स्त्री. [हिं. तीक्ष्णता] तेजी, चोखापन।

तिखाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तीखा] तीक्ष्णता, तेजी।

तिखारना—क्रि. अ. [सं. त्रि + हि. आखर] बात को निश्चित करने के लिए तीन बार पूछना।

तिखूँटा—वि. [हि. तीन+खूँट] तीन कोने का, तिकोना।

तिगना, तिगूचना—क्रि. स. [देश.] भाँपना, देखना।

तिगुना—वि. [सं. त्रिगुण] तीन गुना।

तिग्म—वि. [सं.] तीक्ष्ण, खरा, तेज।

तिग्मकर—संज्ञा पुं. [सं. तिग्म + कर] सूर्य।

तिग्मता—संज्ञा स्त्री. [सं. तिग्म] तीक्ष्णता, तेजी।

तिच्छ, तिच्छन—वि. [सं. तीक्ष्ण] तीखा, तेज।

तिजहरिया, तिजहरी—संज्ञा पुं. [हिं. तीन + पहर] दिन का तीसरा पहर।

तिजारत—संज्ञा स्त्री [अ.] वाणिज्य, व्यापार।

तिजारती—वि. [हि. तिजारत] तिजारत संबंधी।

तिजया—संज्ञा पुं. [हि. तीजा] तीसरा विवाह करनेवाला।

तिजोरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] धन-दौलत रखने के लिए लोहे का छोटा संदूक या अलमारी।

तिड़ीबिड़ी—वि. [हि. तीन.] तितर-बितर, बिखरा हुआ।

तित—क्रि. वि. [सं. तत्र] (१) वहाँ, तहाँ। उ.—जल-थल-नभ-कानन घर-भीतर, जहलौं दृष्टि पसारौ री। तित तित मेरे नैनिनि आगे निरतत नंद दुलारौ री-१०-१३५। (ख) थाकित जित-तित अमर मुनिगन नंदलाल निहारि—१०-१६६। (२) उधर, उस ओर। उ.—जित देखौं तित स्याममय है।

तितना—क्रि. वि [हि. उतना] उतना।

तितनी—वि. [हिं. तितना] उतनी, उस मात्रा की। उ.—जितनी लाज गुपालहि मेरी। तितनो नाहि वधू हौं जिनकी, अंबर हरत सबनि तन हेरी—१-२५२।

तितने—वि. [हि. तितना] उतने, उतनी संख्या में। उ.—भुव की रज नभ के सब तारे तितन हैं अवतार—सारा. ६०६।

तितर-बितर—वि. [हिं. तिधर + अनु.] (१) जो एकत्र न हो, बिखरा हुआ (२) जो क्रम से न हो, अस्तव्यस्त।

तितली—संज्ञा स्त्री. [हि. तितर (?) पू. हि. तितली] (१) एक उड़नेवाला सुंदर कीड़ा या पतिंगा। (२) एक घास। (३) सुंदर बनी-ठनी युवती।

तितलौका—संज्ञा स्त्री. [हि. तीता+लौआ] कडुआ, कद्दू।

तितहिं—क्रि. वि. [हि. तित्त + हि] तहाँ ही, वहाँ ही, वहीं। (२) उधर ही, उसी ओर। उ.—जित-जित मन अरजुन कौ तितहि रथ चलायौ—१-२३।

तीतारा—संज्ञा पु. [सं. त्रि+हि. तार] तीन तार का बाजा। वि— जिसमें तीन तार लगे हों, तीन तारवाला।

तितिंबा—संज्ञा पुं. [अ. तितिम्मा] (१) पाखंड, ढकोसला। (२) शेषांश। (३) पुस्तक की परिशिष्ट।

तितिक्षु—वि. [सं.] सहनशील, क्षमाशील।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तितिक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सरदी, गरमी आदि सहने की शक्ति। (२) क्षमा, क्षमाशीलता।

तितिक्षु—वि. [सं.] क्षमाशील, सहिष्णु।

तितिम्मा—संज्ञा पुं. [अ.] (१) बचा हुआ भाग, शेषांश। (२) पुस्तक की परिशिष्ट।

तितीर्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) तैरने की इच्छा। (२) तर जाने की कामना।

तितीर्षु—वि. [सं.] (१) तैरने का इच्छुक। (२) तरने का अभिलाषी।

तिते—वि. [सं. तति] उतने (संख्यावाचक)। उ.—(क) पाप-मारग जिते, सब कीन्हे तिते, बच्यौ नहिं कोउ जहँ सुरति मेरी—१-११०। (ख) जीव जल-थल जिते, वेष धरि-धरि तिते अटत दुरगम अगम अचल भारे—१-१२०।

तितेक—वि. [हिं. तिते + एक] उतना।

तितै—क्रि. वि. [हिं. तित + ऐ (प्रत्य.)] (१) वहीं, वहाँ हो। (२) वहाँ। (३) उधर।

तितो—वि. [सं. तति] उतना, उस मात्रा का।

क्रि. वि.—उतना।

तिथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अग्नि, आग। (२) कामदेव। (३) काल। (४) वर्षा ऋतु।

तिथि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चंद्रकला के घटने-बढ़ने के अनुसार गिने जानेवाले महीने के दिन, मिति, तारीख। उ.—(क) सोइ तिथि-बार-नक्षत्र-लगन-ग्रह सोइ जिहिं ठाट ठयौ—१-२६८। (ख) ब्रज प्राची राका तिथि जसुमति सरद सरस रितु नंद—१३३२। (२) पंद्रह की संख्या।

तिथिक्षय—संज्ञा पुं. [सं.] तिथि का गिनती में न आना।

तिथिपति—संज्ञा पु. [स.] तिथियों के देवता।

तिथिपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] पत्रा, पंचांग, जंत्री।

तिथिप्राणी—संज्ञा पुं. [सं.] चद्रमा।

तिदरा—संज्ञा स्त्री. [हिं. तीन+फ़ा. दर] तीन दरवाजों की कोठरी।

तिधर—क्रि. वि [सं. तत्र] उधर, उस ओर।

तिन—सर्व. [सं. तेन] 'तिस' शब्द का बहुवचन। उ.—(क) तिन प्रभु प्रहलादहिं सुमिरत हीं नरहरि-रूप जु कीन्हौ—१-१५। (ख) सुक सौं नृपति परीछित सुन्यौ। तिनि सुनि भली भाँति करि गुन्यौ—१-२३७।

संज्ञा पुं. [सं. तृण] तिनका, घास-फूस।

तिनउर—संज्ञा पुं. [सं. तृण + उर या ओर] तिनकों का ढेर या समूह।

तिनकना—क्रि. अ. [हिं. चिनगारी, चिनगी या अनु.] चिड़चिड़ाना, चिढ़ना, झल्लाना, बिगड़ना।

तिनका—संज्ञा पुं. [सं. तृण] सूखी घास का टुकड़ा।

मुहा.—तिनका दाँतों में दबाना (पकड़ना, लेना)—क्षमा या कृपा के लिए विनती करना। तिनका तोड़ना—(१) संबंध तोड़ना। (२) (बच्चे को नजर से बचाने के लिए माता का तिनका तोड़कर) बलैया लेना। तिनका चुनना—पागल या बावला होना। तिनका चुनवाना—(१) पागल बना देना। (२) मोहित कर लेना। सिर से तिनका उतारना—(१) थोड़ा सा अहसान करना। (२) थोड़ा काम करके उपकारी बनना।

तिनकी—सर्व. [हिं. तिन] 'तिसकी' शब्द का बहुवचन, उनकी। उ.—हरि-चरनारबिंद तजि लागत अनँत कहूँ तिनकी मति काँची—१-१८।

संज्ञा स्त्री. [हिं. तिनका का अल्प.] छोटा तिनका।

मुहा.—तिनकी तोड़ना—संबंध तोड़ना। तिनकी तोर करहु जिनि हम सौं—हमसे संबंध मत तोड़ो, हमसे संबंध बनाये रहो। उ.—तिनकी तोर करहु जिनि हम सों एक बीस की लाजनि बहिबो—३४१६।

तिनके—सर्व. [हिं. तिनका = उनका] उनके।

संज्ञा पुं. बहु. [हिं. तिनका = तृण] घास के टुकड़े।

मुहा.—तिनके चुनना—पागल का सा काम करना। तिनके चुनवाना—(१) पागल या बावला बनाना। (२) मोहित करना। तिनके का सहारा—(१) थोड़ा सा सहारा। (२) ऐसी बात जिससे थोड़ा धीरज बँधे। तिनके को पहाड़ करना—छोटी सी बात को बहुत बड़ी कर देना। तिनके को पहाड़ कर दिखाना—जरा सी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहना। तिनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओट पहाड़—छोटी सी बात में किसी बड़ी बात को छिपाना।

तिनकौं—सर्व. [हिं. तिन + कौं (प्रत्य.)] 'तिस' सर्वनाम के बहुबचन 'तिन' का विभक्तियुक्ति रूप; उनको। उ.—जिनकौ मुख देखत दुख उपजत, तिनकौं राजा-राय कहैं—१-५३।

तिनगना—क्रि. अ. [हिं. तिनका] बिगड़ना, झल्लाना।

तिनगरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक प्रकार का पकवान। उ.—पेठापाक जलेबी कौरी। मोंदपाक, तिनगरी, गिंदौरी—३९६।

तिनपहल, तिनपहला—वि. [हिं. तीन + पहल] जिसमें तीन पहल हों, तिपहला।

तिनि—[हिं. तिन] उन्होंने। उ.—जोइ जोइ माँग्यौ जिनि, सोइ सोइ पायौ तिनि, दीजै सूरदास दर्स भक्तनि बुलाइकै—६४६।

तिनुका—संज्ञा पुं. [हिं. तिनका] घास का टुकड़ा, तृण।

मुहा.—तिनुका तोरि—संबंध विच्छेद करके, नाता तोड़कर। उ.—(क) कापर नैन चढ़ाए डोलति, व्रज मैं तिनुका तोरि—१०-३१०। (ख)—भाई बंधु कुटुंब सहोदर सब मिलि यहै बिचार्यौ। जैसे कर्म, लहो फल तैसे, तिनुका तोरि उचार्यौ—१-३३६। तिनका सों तोर्यो—बड़ी सरलता से त्याग दिया। उ.—लोक-वेद तिनुका सों तोर्यो—१२०१।

तिन्ह—सर्व. [हिं. तिन] उनके। उ.—(क) सुत कुबेर के मत्त-मगन भए विषै-रस नैननि छाए (हो)। मुनि सराप तैं भए जमलतरु तिन्ह हित आपु बँधाए (हो)—१-७। (ख) दुखित जानिकै सुत कुबेर के, तिन्ह लगि आपु बँधाए—१-१२२।

तिन्हैं—सर्व. [हिं. तिन] उन्हें, उनको। उ.—इनके पुत्र एक सौ मुए। तिन्हैं बिसारि सुखी ये हुए-१-२८४।

तिपति—संज्ञा स्त्री. [सं. तृप्ति] संतोष।

तिपल्ला—वि. [हिं. तीन + पल्ला] तीन पर्तों का।

तिपाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तीन+पाया] तीन पायों की चौकी।

तिपाड़—संज्ञा पुं. [हिं. तीन + पाड़] (१) जो तीन पाट जोड़कर बनाया गया हो। उ.—दच्छिन चीर तिपाड़ को लहँगा। पहिरि बिबिध पट मोलन महँगा। (२) जिसमें तीन पल्ले हों। (३) जि[समें] तीन किनारे हों।

तिबारा—वि. [हिं. तीन + बार] तीसरी बार।

संज्ञा पुं. [हिं. तीन+बार] तीन द्वार की कोठ[री]।

तिबासी—वि. [हिं. तीन+बासी] तीन दिन का बा[सी]।

तिमंजिला वि. [हिं. तीन+अ. मंज़िल] तीन खंडों [का]।

तिम—संज्ञा पुं. [हिं. डिंडिम] नगारा, डंका, डुं[दुभी]।

तिमाना—क्रि. स. [देश.] भिगोना, तर करना।

तिमि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) समुद्र का एक बड़ा [...] (२) समुद्र। (३) रतौंधी नामक रोग।

अव्य.—[सं. तद् + इमि] उस प्रकार, वैसे।

तिमित—वि. [सं.] (१) निश्चल। (२) आर्द्र।

तिमिर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अंधकार। (२) र[तौंधी] नामक रोग। (३) एक पेड़।

तिमिरहर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य। (२) दीपक।

तिमिरारि—संज्ञा पुं. [सं. तिमिर + अरि] (१) [अंध]कार का शत्रु। (२) सूर्य। (३) दीपक।

तिमिरारी—संज्ञा स्त्री. [सं. तिमिराली] अँधेरा।

संज्ञा पुं. [सं. तिमिरारि] (१) सूर्य। (२) दीप[क]।

तिमिरावलि—संज्ञा स्त्री. [सं.] अंधकार का समूह।

तिय, तिया—संज्ञा स्त्री. [सं. स्त्री, हिं. तिय] [(१) स्त्री।] (२) पत्नी, भार्या। उ.—अस्मय-तन गौतम-ति[य] साप नसावै—१.४।

तियला—संज्ञा पुं.[हिं.तिय + ला]स्त्रियों का एक पह[नावा]।

क्रि. अ.—बाल सफेद होना।

तिरकना—क्रि. अ. [अनु.] तड़कना, फट जाना।

तिरकस—वि. [सं. तिरस] जो सीधा न हो, टेढ़ा।

तिरखा संज्ञा स्त्री. [सं.तृषा] प्यास।

तिरखित—वि. [सं. तृषित] प्यासा।

तिरखूटा—वि. [हिं. तिखूटा] तीन कोने का।

तिरगुन—संज्ञा पुं. [सं. त्रिगुण] प्रकृति के तीन गु[ण]— सत्व, रज और तम।

तिरछई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तिरछा] तिरछापन।

तिरछा—वि. [सं. तिरश्चीन] जो न बिलकुल [खड़ा] और न बिलकुल आड़ा।

यौ.—बाँका तिरछा—छैल-छबीला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा.—तिरछा वाक्य या वचन—अप्रिय बात।

तिरछाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तिरछा + ई] तिरछापन।

तिरछाना—क्रि. अ. [हिं. तिरछा] तिरछा होना।

क्रि. स.—तिरछा करना।

तिरछापन—संज्ञा पुं. [हिं. तिरछा + पन (प्रत्य.)] तिरछा होने का भाव।

तिरछी—वि. स्त्री. [हिं. तिरछी] जो बिलकुल सीधा या आड़ा न हो। उ.—मनो एक सँग गंग जमुन नभ तिरछी धार बहावत—१३५०।

मुहा.—तिरछी चितवन (नजर)—टेढ़ी दृष्टि या निगाह, कटाक्ष। तिरछी बात—अप्रिय या कटु बात।

तिरछे—वि. [हिं. तिरछा] जो बिलकुल आड़ा या सीधा न हो। उ.—अब कैसे निकसत सुन ऊधौ तिरछे ह्वै जो अड़े—३१५१।

मुहा.—तिरछे हो जाना—सीधे या लाभदायक न रह जाना। तिरछे भये—खोटे, बुरे, दुखदायी या हानिकारक हो गये। उ.—तिरछे भये कर्म कृत पहिले विधि यह ठाठ बनायौ—२५१३।

तिरछैं—वि. [हिं. तिरछा] तिरछे होकर, टेढ़े-टेढ़े। उ.—पौढ़ि रहे धरनी पर तिरछैं बिलखि बदन मुरझायौ—३५६।

तिरछो, तिरछौ—वि. [हिं. तिरछा] जो सीधा या आड़ा न हो, तिरछा।

मुहा.—तिरछो भयो—दुखदायी या हानिकारिक हो गया। उ.—तिरछो करम भयो पूरब को प्रीतम भयो पाइ की बेरी—८०७।

तिरछौहाँ—वि. पुं. [हिं. तिरछा + औहाँ (प्रत्य.)] जो कुछ-कुछ तिरछा हो।

तिरछौहीं—वि. स्त्री. [हिं. तिरछौहाँ] कुछ-कुछ तिरछी।

तिरछौहैं—क्रि. वि. [हिं. तिरछौहाँ] कुछ-कुछ तिरछेपन के साथ, तिरछापन लिये हुए, वक्रता से।

तिरतिराना—क्रि. अ. [अनु.] बूँद-बूँद टपकना।

तिरना—क्रि. अ. [सं. तरण] (१) पानी के ऊपर उतराना। (२) तैरना, पैरना। (३) पार होना। (४) तर जाना, मुक्त हो जाना।

तिरनी—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) नीवी, घँघरिया की डोरी। (२) स्त्रियों की घँघरिया या धोती का भाग जो नाभि के नीचे पड़ता है। उ.—बेनी सुभग नितंबनि डोलत मंदगामिनी नारी। सूथन जघन बाँधि नाराबँद तिरनी पर छबि भारी।

तिरप—संज्ञा स्त्री. [सं. त्रि] नृत्य में एक ताल। उ.—तिरप लेति चपला सी चमकति झमकति भूषन अंग।

तिरपट—वि. [देश.] (१) तिरछा। (२) कठिन।

तिरपटा—वि. [देश.] तिरछा ताकनेवाला, भेंगा।

तिरपन—संज्ञा पुं. [सं. त्रिपंचाशत्, प्रा. तिपण्ण] पचास से तीन अधिक की संख्या।

तिरपाल—संज्ञा पुं. [सं. तृण + हिं. पालना=बिछाना] फूस या सरकंडे के पूले जो छाजन में बिछाये जाते हैं।

तिरपित—वि. [सं. तृप्त] संतुष्ट।

तिरबेनी—संज्ञा पुं. [सं. त्रिवेणी] गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम।

तिरमिरा—संज्ञा पुं [सं. तिमिर] (१) दुर्बलता से दृष्टि के सामने चिनगारियाँ छूटना। (२) चकाचौंध।

संज्ञा पुं. [हिं. तेल + मिलना] पानी आदि द्रवों पर घी-तेल के तैरनेवाले छींटे।

तिरमिराना—क्रि. अ. [हिं. तिरमिरा] (आँख का) झपना या चौंधियाना।

तिरलोक—संज्ञा पुं. [सं. त्रिलोक] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल—ये तीनों लोक।

तिरलोकी—संज्ञा स्त्री. [सं. त्रिलोकी] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल—ये तीनों लोक।

तिरवराना—क्रि. अ. [हिं. तिरमिराना] चौंधियाना।

तिरवाह—संज्ञा पुं. [सं. तीर+वाह] नदी-तीर की भूमि।

तिरसठ—संज्ञा पुं. [सं. त्रिषष्ठि, प्रा. तिसट्ठि] वह संख्या जो गिनती में साठ से तीन अधिक हो।

तिरसूल—संज्ञा पुं. [सं. त्रिसूल] तीन फाल का एक अस्त्र जो शिव जी को प्रिय माना गया है।

तिरस्कर—संज्ञा पु. [सं.] परदा करनेवाला।

तिरस्करी—संज्ञा पुं. [सं. तिरस्करिन्] परदा।

तिरस्कार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अनादर, अपमान। (२) डाँट-फटकार। (३) अनादर के साथ त्याग।

तिरस्कृत—वि. [सं.] (१) जिसका अनादर या तिरस्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया हो, अपमानित । (२) जिसका अनादर पूर्वक त्याग किया गया हो । (३)परदे में छिपा हुआ ।

तरस्क्रिया—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) अनादर। (२) वस्त्र ।

तिरानबे—संज्ञा पुं. [सं. त्रिनवति, प्रा. तिन्नवइ] वह संख्या जो गिनती में नब्बे से तीन अधिक हो ।

तिराना—क्रि. स. [हि. तिरना] (१) पानी पर ठहरना । (२) तैरना । (३) पार करना । (४) उबारना ।

तिरास—संज्ञा पुं. [सं. त्रास] (१) डर । (२) कष्ट ।

तिरासना—क्रि. स. [सं. त्रासन] डराना ।

तिरासी—संज्ञा पुं. [सं. त्र्यशीति, प्रा. तियासीति] वह संख्या जो गिनती में अस्सी से तीन ज्यादा हो ।

तिरहा—संज्ञा पुं. [हिं. तीन + राह] वह स्थान जहाँ से तीन ओर को रास्ते गये हों ।

तिरिन—संज्ञा पुं. [सं. तृण] तिनका, तृन ।

तिरिया—संज्ञा स्त्री. [सं. स्त्री.] स्त्री, औरत ।

यौ.—तिरिया चरित्तर—स्त्रियों का रहस्य ।

तिरीछा तिरछौ—वि. [हिं. तिरछा] तिरछा, टेढ़ा, आड़ा ।

मुहा.—तिरीछौ होई—आड़े आना, कठिनाई में सहायक होना, संकट के समय काम आना । उ.—हरि सौं मीत न देख्यौ कोई । बिपति काल सुमिरत, तिहिं औसर आनि तिरीछौ होई—१-१० ।

तिरोधान—संज्ञा पुं. [सं.] अंतर्द्धान ।

तिरोधायक—संज्ञा पुं. [सं.] छिपानेवाला ।

तिरोभाव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अन्तर्भाव । (२) छिपाव ।

तिरोभूत—वि. [सं.] गुप्त, छिपा हुआ, अदृष्ट ।

तिरोहित—वि. [सं.] (१) अदृष्ट । (२) ढका हुआ ।

तिरौंछी—वि. [हिं. तिरछा] तिरछी, टेढ़ी, आड़ी । उ.—कठिन बचन सुनि स्रवन जानकी सकी न बचन सम्हार । तृन अंतर दै दृष्टि तिरौंछी (तरौंधी) दई नैन जलधार—६-७९ ।

तिर्पित—वि. [सं. तृप्त] संतुष्ट, प्रसन्न ।

तिर्यक—वि. [सं.] तिरछा, आड़ा, टेढ़ा ।

तिर्यक्ता—संज्ञा स्त्री. [सं.] तिरछापन, आड़ापन ।

तिल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक अनाज जो दो प्रकार का होता है-काला और सफेद । उ.-तिल चाँवरी, बतासे मेवा, दियौ कुँवरि की गोद—१०-७०४ ।

मुहा.—तिल की ओझल (ओट) पहाड़—छोटी बात के भीतर बड़ा रहस्य । तिल का ताड़ करना—छोटे से मामले को बहुत बढ़ा देना । तिल-भर—थोड़ा, जरा सा । तिल धरने की जगह न होना—जरा सी भी जगह खाली न होना । तिल न रहति चित चैन—जरा भी शांति नहीं मिलना । उ.—मृदु मुसुक्यानि हर्यौ मन कौ मनि, तैं तिल न रहति चित चैन—७४२ । तिल भर—(१) जरा सा, थोड़ा सा । (२) क्षण भर, थोड़ी देर । (२) काले रंग का छोटा सा दाग जो शरीर पर होता है । (३) गाल या ठोंढ़ी पर छोटा सा गोल चिह्न । (४) आँख की गोल बिंदी ।

तिलक—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चंदन, केसर आदि का टीका । (२) राज्याभिषेक । (२) विवाह-संबंध पक्का करने की एक रीति जिसमें वर के टीका करके कुछ देते हैं । (४) माथे का एक गहना । (५) श्रेष्ठ व्यक्ति । उ.—सूर समुझि, रघुबंस-तिलक दोउ उतरे सिंधु तीर—९-११५ । (६) ग्रंथ की टीका ।

संज्ञा पुं. [तु. तिरलीक का संक्षि. रूप] (१) मुसलमान स्त्रियों का ढीला ढाला कुरता । (२) खिलअत ।

तिलकना—क्रि. अ. [हिं. तड़कना] मिट्टी की तह का सूखकर-दरकना ।

तिलक मुद्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] चंदन आदि का टीका और शंख-चक्र आदि की छाप जिसे भक्तजन लगाते हैं ।

तिलकहरू, तिलकहार—संज्ञा पुं. [हिं. तिलक + हार (प्रत्य.)] व्यक्ति जो वर को तिलक चढ़ाने जाय ।

तिलका—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कंठ का एक गहना। (२) एक वृत्त ।

तिलड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तीन + लड़] तीन लड़ों की माला जिसके बीच में एक जुगनी लटकती है।

तिलकालक—संज्ञा पुं. [सं.] शरीर पर तिल की तरह का काला चिह्न ।

तिलकुट—[हिं. तिल + कूटना] कूटे हुए तिल जो शकर या गुड़ में पकाये गये हों ।

तिलछना—क्रि. अ. [अनु.] बेचैन रहना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिलमिल—संज्ञा स्त्री. [हिं. तिरमिर] चकाचौंध।
तिलमिलाना—संज्ञा स्त्री. [हिं. तिरमिराना] चौंधियाना।
तिलरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तिलड़ी] तीन लड़ों की माला जिसके बीच में एक जुगनी लटकती है । उ.—कंठ-सिरी दुलरी तिलरी उर मानिक मोती हार रंग की—१०४२।
तिलहन—संज्ञा पुं. [हिं. तेल + धान्य] तिल, सरसों आदि के पौधे जिनके बीजों से तेल निकलता है।
तिलांजलि, तिलांजली—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक संस्कार जिसमें मृतक को फूंकने के पश्चात स्नान करके अँगुली भर जल में तिल डालकर उसके नाम पर छोड़ते हैं।
मुहा.—तिलांजली देना—बिलकुल त्याग देना।
तिलिस्म—संज्ञा पुं. [यू. टेलिस्मा] (१) जादू । (२) अद्भुत व्यापार या चमत्कार।
तिलिस्मी—वि. [हिं. तिलिस्म] तिलिस्म से संबंधित।
तिलोक—संज्ञा पुं. [सं. त्रिलोक] तीन लोक।
तिलोकनाथ, तिलोकपति—संज्ञा पुं. [सं. त्रिलोक+नाथ, पति] (१) विष्णु। (२) परमेश्वर।
तिलोकी—संज्ञा स्त्री. [सं. त्रिलोकी] तीन लोक।
तिलोचन—संज्ञा पुं. [सं. त्रिलोचन] शिव, महादेव।
तिलोत्तमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक परम रूपवती अप्सरा जिसकी रचना ब्रह्मा ने संसार के समस्त उत्तम पदार्थों का एक-एक तिल अंश लेकर की थी । इसे देखकर सुंद और उपसुंद नामक दो दैत्य, जो हिरण्याक्ष के पुत्र थे और जिन्हें आपस में लड़कर ही मर सकने का वरदान था, परस्पर लड़कर मर मिटे थे।
तिलोदक—संज्ञा पुं. [सं. तिल+उदक] तिलांजली।
तिलौंछना—क्रि. स. [हिं. तेल+औंछना] तेल लगाकर चिकना करना, चिकनाना।
तिलौंछा—वि. [हिं. तेल+औंछना] जिसमें तेल का मेल, स्वाद, गंध या रंगत हो।
तिलौरीं, तिलौरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक तरह की मैना।
संज्ञा स्त्री. [हिं. तिल + बरी] उर्द, मूँग और तिल की नमकीन वरी जो तलकर खायी जाती है।
तिल्ला—संज्ञा पुं. [अ. तिला] (१) कलाबत्तू आदि का काम। (२) कपड़ा जिस पर कलाबत्तू का काम हो।
तिल्ली—संज्ञा स्त्री. [सं. तिलक] पेट का एक भीतरी अवयव।
संज्ञा स्त्री. [सं. तिल] तिल या तेलहन।
तिवई—संज्ञा स्त्री. [सं. स्त्री.] स्त्री, तिय।
तिवान—संज्ञा पुं. [देश.] चिंता, फिक्र।
तिवारी—संज्ञा पुं. [सं. त्रिपाठी] त्रिवेदी।
तिवास—संज्ञा पुं. [सं. त्रिवासर] तीन दिन।
तिष्टना—क्रि. स. [सं. सृष्टि] रचना, बनाना।
तिष्ठना—क्रि. अ. [सं. तिष्ठ] ठहरना।
तिष्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पुष्य नक्षत्र। (२) पूस का महीना। (३) कलियुग। (४) मंगलकारी बात।
तिष्षन—वि. [सं. तीक्ष्ण] तीखा, तेज।
तिस—सर्व. [सं. तस्मिन्, पा. तिस्सं] 'ता' का विभक्ति-रहित एक रूप।
मुहा.—तिस पर—(१) उसके बाद। (२) इतना होने पर भी।
तिसना—संज्ञा स्त्री. [सं. तृष्णा] (१) लोभ। (२) प्यास।
तिसरा—वि. [हिं. तीसरा] तीसरा।
तिसराय—क्रि. वि. [हिं. तीसरा] तीसरी बार।
तिसाना—क्रि. अ. [सं. तृषा] प्यासा होना।
तिहत्तर—संज्ञा पुं. [सं. त्रिसप्तति, पा. तिसत्तति, प्रा. तिहत्तरि] सत्तर से तीन अधिक की संख्या।
तिहरा—वि. [हिं. तीन + हरा] तीन परत का।
तिहराना—क्रि. स. [हिं. तेहरा] (किसी काम या बात को दो बार करने के बाद) तीसरी बार फिर करना।
तिहरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तीन + हार] तीन लड़ों की माला।
तिहवार—संज्ञा पुं. [हिं. त्योहार] उत्सव का दिन।
तिहवारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. त्योहारी] त्योहार के उपलक्ष में नौकरों या सेवकों को दिया जानेवाला धन।
तिहाई—संज्ञा स्त्री. [सं. त्रि+भाग] तीसरा भाग।
तिहाउ—संज्ञा पुं. [हिं. तिहाव] (१) क्रोध। (२) वैर।
तिहारा—सर्व. [हिं. तुम्हारा] तुम्हारा।
तिहारी—सर्व. [हिं. तुम्हारी] तुम्हारी। उ.—(क) अब सिर परी ठगौरी देव। तातैं बिबस भयौ करुनामय, छाँड़ि तिहारी सेव—१-४६। (ख) अब आयो हौं सरन तिहारी—१-१७८।
तिहारे—सर्व. [हिं. तुम्हारे] तुम्हारे। उ.—(क) कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुन बरनौं स्याम, तिहारे—१-२५ । (ख) तिहारे आगैं बहुत नच्यौ—१-१७४ ।

तिहारैं—सर्व. [हिं. तिहारा] तुम्हारे, तेरे। उ.--(क) महा-पतित कबहूँ नहिं आयौ, नैंकु तिहारैं काज—१-१०८। (ख) अगनित गुन हरिनाम तिहारैं, अजौं अपुनपौ धारौ—१-१५७।

तिहारो, तिहारौ—सर्व. [हिं. तिहारा] तुम्हारा। उ.—अजामील तौ विप्र तिहारौ, हुतौ पुरातन दास—१-१३२।

तिहाव—संज्ञा पुं. [हिं. तेहा] (१) क्रोध। (२) बिगाड़।

तिहिं—सर्व. [हिं. तेहिं] उसे, उसको।

वि.—उसके। उ.—सूरदास स्वामी करुनामय, बार-बार बंदौं तिहिं पाइ—१-१।

यौ.—जिहिं तिहिं—किसी भी प्रकार से, कोई भी उपाय करके, कैसे भी। उ.--अब मैं उनको ज्ञान सुनाऊँ। जिहिं तिहिं विधि बैराग्य उपाऊँ—१-२८४।

तिहीं-- वि. [हिं. तेहि] वैसे (ही), उसी (तरह)। उ.-सुक नृपति पाँहिं जिहिं बिधि सुनाई। सूरजनहूँ तिहिं भाँति गाई—८-११।

तिहुँ,तिहूँ—वि. [हिं. तीन+हुँ (प्रत्य.)] तीनों। उ.—(क) बलि बल देखि, अदिति-सुत कारन, त्रिपद ब्याज तिहुँ पुर फिरि आई—१-६। (ख) अखिल ब्रह्मांड पति तिहुँ भुवनपति नीरपति पवनपति अगमवानी—१५२२। (ग) कौरव जीति जुधिष्ठिर राजा, कीरति तिहूँ लोक मैं माँची—१-१८।

तिहैया—संज्ञा पुं. [हिं. तिहाई] तीसरा भाग या अंश।

ती—संज्ञा स्त्री. [सं. स्त्री] (१) स्त्री (२) पत्नी।

तीअत—संज्ञा स्त्री. [सं. तृणांत] शाक, भाजी, तरकारी।

तीकरा—संज्ञा पुं. [देश.] अंकुर, अँखुआ।

तीकुर—संज्ञा पुं. [हिं. तीन+कूरा=अंश] तिहाई अंश।

तीक्ष्ण, तीछन, तीक्षण—वि. [सं. तीक्ष्ण] (१) तेज नोक या धारवाला। (२) तेज, तीव्र, प्रखर। (३) उग्र, प्रचंड, तीखा। (४) तेज या चरपरे स्वाद का। (५) अप्रिय या कर्णकटु (वाक्य या बात)। (६) जिसे आलस्य न हो। (७) आत्मत्यागी। (८) जो सहा न जा सके, असह्य।

संज्ञा पुं.—(१) गरमी। (२) विष। (३) युद्ध। (४) मृत्यु। (५) महामारी। (६) योगी।

तीक्ष्णता--संज्ञा स्त्री. [सं.] तीक्ष्ण होने का भाव, तीव्रता।

तीक्ष्णदृष्टि - वि. [सं.] सूक्ष्म बातों को देखनेवाला।

तीक्ष्णधार--वि. [सं.] जिसकी धारा बहुत तेज हो।

संज्ञा पुं.—तलवार।

तीक्ष्णबुद्धि—वि. [सं.] बहुत बुद्धिमान।

तीक्ष्णरश्मि, तीक्ष्णांशु—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य।

तीक्ष्णाग्र—वि. [सं.] तेज नोकवाला।

तीख, तीखन, तीखा—वि. [सं. तीक्ष्ण] (१) तेज नोक या धारवाला। (२) तेज, तीव्र। (३) उग्र, प्रचंड। (४) उग्र स्वभाव का। (५) चरपरे स्वाद का। (६) अप्रिय या कटु (वाक्य या कथन)। (७) बढ़िया।

तीखुर, तीखुल—संज्ञा पुं [सं. तवक्षीर] एक पौधा जिसकी जड़ का सत बढ़िया मैदे की तरह का होता है।

तीछन, तीछा—वि. [सं. तीक्ष्ण] (१) तेज। उ.—तिहिं काटन कौं समरथ हरि कौ तीछन नाम-कुठार—१-६८। (२) प्रखर, तीव्र। (३) उग्र, प्रचंड। (४) कर्ण कटु, कठोर या अप्रिय।

तीछनता—संज्ञा स्त्री. [सं. तीक्ष्णता] तीव्रता, तेजी।

तीज—संज्ञा स्त्री. [सं. तृतीया] (१) प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि। उ.—रंग महल में जहँ नँदरानी खेलति सावनी तीज सुहाय—२२६०। (२) भादों सुदी की हरतालिका तृतीया।

तीजा—संज्ञा पुं. [हिं. तीज] मरने से तीसरा दिन।

वि.—तीसरा, तृतीय।

तीजे—संज्ञा पुं. [हिं. तीज] तीसरा, तृतीय। उ.--(क) तिन्हैं कह्यौ संसार मैं असुर होहु अब जाइ। तीजे जनम बिरोध करि मोकौं मिलिहौ आइ—३-११। (ख) तीजे मास हस्त पग होहिं—३-१३।

तीत, तीता—वि. [सं. तिक्त, हिं. तीता] (१) चरपरे स्वाद का। (२) कड़ुआ, कटु।

वि.—भीगा हुआ, आर्द्र, नम।

तीतर, तीतुल—संज्ञा पुं. [सं. तित्तिर] एक पक्षी।

तीन—संज्ञा पुं. [सं. त्रिणि] दो और चार के बीच की संख्या, दो में एक के जोड़ से बननेवाली संख्या।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा.—तीन-पाँच करना—हुज्जत या झगड़ा करना। तीन तेरह करना—तितिर-बितर करना। न तीन में न तेरह में—जिसे कोई भी न पूछता हो।

तीनलड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तीन+लड़ी] तीन लड़ की माला।

तीनि—संज्ञा पुं. [हिं. तीन] तीन की संख्या।

तीनो, तीनौ—वि. [हिं. तीन] पूरे तीन। उ.—(क) तीनौ पन ऐसैं हीं खोए—१-७३। (ख) तीनौ पन मैं भक्ति न कीन्हीं—१-१७८।

तीन्यौ—वि. [हिं. तीन] तीनों। उ.—तीन्यौ पन मैं ओर निबाहे, यहै स्वाँग कौं काछे—१-१३६।

तीमारदारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] रोगी की सेवा।

तीय, तीया—संज्ञा स्त्री. [सं. स्त्री.] स्त्री, औरत।

तिरंदाज—संज्ञा पुं. [फ़ा.] तीर चलानेवाला।

तीरंदाजी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] तीर चलाने की कला।

तीर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नदी-सागर का किनारा, तट, कूल। उ.—(क) भवसागर मैं पैरि न लीन्हौ।.... । अति गंभीर, तीर नहिं नियरैं, किहिं बिधि उतरयौ जात—१-१५। (ख) सागर-तीर भीर बनचर की—९-८४। (ग) जमुना तीर कियो रथ ठाढ़ो—२५५३। (२) निकट, समीप। उ.—(क) सारँग इक सारँग है लोट्यौ, सारँग ही कैं तीर—१-३३। (ख) तुम्हैं पहिचानति नाहीं बीर। इन नैननि कबहूँ नहिं देख्यौ, रामचंद्र कैं तीर—९-८६। (ग) झँखत जसोदा-जननी तीर—१०-१६१। (घ) हृदय रुचिर मोतिन की माला नख रेखा तेहिं तीर—२६९१।

संज्ञा पुं. [फ़ा.] वाण, शर।

मुहा.—तीर चलाना (फेंकना)—युक्ति भिड़ना।

तीरथ—संज्ञा पुं. [सं. तीर्थ] (१) ऐसा पुण्य स्थान जहाँ धर्मभाव से लोग जाते हों। उ.—(क) चल्यौ तीरथ कूँ मुड उघारी—१-२८४। (ख) जोग जज्ञ जप तप तीरथ-ब्रत कीजत है जहि लोभा—२५६६। (२) कोई पवित्र स्थान।

तीरवर्ती—वि. [सं.] (१) तट या किनारे पर रहनेवाला। (२) समीप रहनेवाला, पड़ोसी।

तीरस्थ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नदी के तीर पर पहुँचा हुआ। (२) मरणासन्न व्यक्ति जिसे नदी के किनारे पहुँचा दिया गया हो।

तीरा—संज्ञा पुं. [हिं. तीर] (१) किनारा। (२) निकट।

तीर्ण—वि. [सं.] (१) जो पार हो गया हो। (२) जो सीमा को पार कर चुका हो। (३) भीगा हुआ।

तीर्थंकर—संज्ञा पुं. [सं.] जैनियों के चौबीस देवता।

तीर्थ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह पवित्र स्थान जहाँ भक्त-जन स्नान या दर्शन के लिए जाते हैं। (२) कोई पवित्र स्थान। (३) हाथ के कुछ विशिष्ट स्थान।

तीर्थक—वि. [सं.] (१) ब्राह्मण। (२) तीर्थंकर। (३) तीर्थों की यात्रा करनेवाला।

तीर्थपति—संज्ञा पुं. [सं.] प्रयाग।

तीर्थयात्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] तीर्थ स्नान को जाना।

तीर्थराज—संज्ञा पुं. [सं.] प्रयाग।

तीर्थराजी—संज्ञा स्त्री. [सं.] काशी जिसमें सब तीर्थ हैं।

तीर्थाटन—संज्ञा पुं. [सं.] तीर्थों की यात्रा।

तीली—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. तीर=वाण] (१) सींक। (२) किसी धातु की सींक। (३) सींकों की कूँची।

तीवन—संज्ञा पुं. [सं. तेमन=व्यंजन] (१) पकवान, व्यंजन। (२) रसेदार तरकारी।

तीवर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) समुद्र। (२) बहेलिया। (३) मछुआ। (४) एक वर्णसंकर अंत्यज जाति।

तीव्र—वि. [सं.] (१) अत्यंत, अधिक। (२) तीक्ष्ण, तेज। (३) बहुत गरम। (४) बेहद, बहुत अधिक। (५) कड़ुआ। (६) जो सहा न जा सके (७) प्रचंड। (८) बहुत वेगवाला। (९) ऊँचा स्वर।

तीव्रगति—संज्ञा स्त्री. [सं.] वायु, हवा।

तीव्रता—संज्ञा स्त्री. [सं.] तेजी, तीखापन।

तीस—वि. [सं. त्रिशांत, पा. तीसा] जो दस का तिगुना हो। उ.—एकै चित एकै वह मूरति पलन लगै दिन तीस—३१३०।

यौ.—तीस दिन—सदा। तीस मार खाँ—बड़ा बहादुर (व्यंग्य)।

संज्ञा पुं.—दस की तिगुनी संख्या।

तीसर, तीसरा—वि. [हिं. तीन+सरा (प्रत्य.)] (१) क्रम में तीन के स्थान पर पड़नेवाला। (२) जिसका प्रसंग से कोई संबंध न हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरैं—वि. [हिं. तीसरा] तीसरा, जो दो के उपरांत हो। उ.—देवधामी करत, द्वार द्वारैं परत, पुत्र द्वै, तीसरैं यहै बारी—६६६।

तीसवाँ—वि. [हिं. तीस+वाँ] जो क्रम में उनतीस के बाद पड़े, तीस के स्थान में पड़नेवाला।

तीसी—संज्ञा स्त्री. [सं. अतसी] अलसी नामक तेलहन।
संज्ञा स्त्री. [हिं. तीस+ई] तीस चीजों का समूह।

तीहा—संज्ञा पुं. [[सं. तुष्टि ?] तसल्ली, आश्वासन।
संज्ञा पुं. [हिं. तिहाई] तिहाई भाग।

तुंग—वि. [सं. (१) उन्नत, ऊँचा। उ.-पीन भुजलीन जे लखि रंजित नील घन सीत तनु तुंग छाती—२६७०। (२) उग्र, प्रचंड। (३) प्रधान, मुख्य।
संज्ञा पुं.—(१) पहाड़। (२) नारियल। (३) कमल का केसर। (४) शिव। (५) बुधग्रह। (६) ग्रहों की उच्च राशि।

तुंगता—संज्ञा स्त्री. [सं.] ऊँचाई।

तुंगनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] हिमालय पर एक शिवलिंग।

तुंगारण्य, तुंगारन्न—संज्ञा पुं. [सं.] बेतवा नदी का एक जंगल जहाँ एक मंदिर है और मेला लगता है।

तुंगी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) रात। (२) वन तुलसी।

तुंगीपति—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा।

तुंड—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मुँह। (२) चोंच। (३) थूथन। (४) तलवार का अगला भाग। (५) शिव।

तुंडि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मुँह। (२) चोंच। (३) बिंबफल या उसकी ढोंड़ी (४) नाभि, तोंदी।

तुंडिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) टोंटी। (२) चोंच।

तुंडिल—वि. [सं.] (१) तोंद या बड़े पेटवाला। (२) उभरी नाभिवाला। (३) बकवादी। (४) सूँड़वाला।

तुंडी—वि. [सं. तुंडिन्] (१) मुँहवाला। (२) चोंचवाला। (३) थूथनवाला। (४) सूँड़वाला।
संज्ञा पुं.—गणेश जी।
संज्ञा स्त्री.—नाभि, तोंदी, ढोंढ़ी।

तुंद—संज्ञा पुं. [सं] पेट, उदर।
वि. [फ़ा.] तेज, घोर, प्रचंड।

तुंदिक, तुंदिल—वि. [सं.] तोंदवाला, तोंदियल।

तुंदैल, तुंदैला—वि. [सं. तुंदिल] तोंदियल।

तुंब—संज्ञा पुं. [सं.] (१) लौकी। (२) सूखी लौकी।

तुंबा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कड़ुआ कद्दू। (१) कड़ुई लौकी। (३) सूखे कद्दू का पात्र।

तुंबी, तुंबिका—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंबी] (१) छोटा कड़ुआ कद्दू। (२) छोटी कड़ुई लौकी। (३) सूखी लौकी या कद्दू का पात्र, तूँबी।

तुंबुर, तुंबुरु—संज्ञा पुं. [सं. तुंबुरु] एक गंधर्व जो चैत के महीने में सूर्य के रथ पर रहते हैं। ये विष्णु के प्रिय पार्श्वचर और संगीत विद्या में अति निपुण माने जाते हैं। उ.—रजनी-मुख आवत, गुन गावत, नारद तुंबुर नाऊँ—९-१७२।

तुअ—सर्व. [हिं. तुव] तुम्हारा।

तुअना—क्रि. अ. [हिं. चूना] (१) चूना, टपकना। (२) गिर पड़ना। (३) गर्भपात होना।

तुइ, तुई—सर्व. [हिं. तू] तू, तुम।

तुक—संज्ञा स्त्री. [हिं. टूक=टुकड़ा] (१) किसी पद्य या गीत का टुकड़ा। (२) पद्य की पंक्तियों के अंतिम अक्षर। (३) पद्य की पंक्तियों के अंतिम अक्षरों की मैत्री या सम स्वरता।
मुहा.—तुक जोड़ना—भद्दी कविता बनाना।

तुकबंदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तुक+फ़ा. बंदी] (१) भद्दी कविता। (२) भद्दी कविता बनाने का काम।

तुकांत—संज्ञा पुं. [हिं. तुक+अंत] पद्य की दो पंक्तियों के अंतिम अक्षरों का मेल, अंत्यानुप्रास।

तुका—संज्ञा पुं. [फ़ा.] बिना गाँसी का तीर।

तुकार, तुकारि, तुकारी—क्रि. वि. [हिं. तू+सं. कार=तुकार] 'तू तू' करके, क्षुद्रता या अशिष्टता सूचक ढंग से। उ.—वारौं हौं वे कर जिन हरि कौ बदन छुयौ, वारौं रसना सो जिहिं बोल्यौ है तुकारि—३६२।

तुकारना—क्रि. स. [हिं. तुकार] तू-तू करके अपमानजनक रीति से संबो- धन करना।
संज्ञा पु. [हिं. तुक+अक्कड़] तुक जोड़ जोड़कर भद्दी कविता करनेवाला।

तुक्का—संज्ञा पुं. [फ़ा. तुक:] (१) बिना नोंक का तीर। (२) टीला। (३) सीधी खड़ी वस्तु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा.—तुक्का सा—सीधा खड़ा ठंठ सा ।

तुख—संज्ञा पुं. [सं. तुष] (१) भूसी, छिलका । (२) अंडे का छिलका ।

तुखार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक प्राचीन देश । (२) इस देश का निवासी । (३) इस देश का घोड़ा ।

संज्ञा पुं. [सं. तुषार] वर्फ, पाला ।

तुख्म—संज्ञा पुं. [अ. तुख़्म] बीज ।

तुच,तुचा—संज्ञा स्त्री. [सं. त्वचा] चमड़ा । उ.—कानमुद्रा भस्म कंथा मृग तुचा आसन उहै—२४६० ।

तुच्छ—वि. [सं.] (१) खोखला, क्षुद्र, निःसार । उ.—परम कुबुद्धि, तुच्छ रस-लोभी, कौड़ी लगि मग की रज छानत—१-११४ । (२) हीन । (३) ओछा, खोटा । (४) अल्प, थोड़ा, कम । उ.—तुच्छ आयु परिश्रम करत—१२-३ ।

संज्ञा. पुं.— छिलका, भूसी ।

तुच्छता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) हीनता, नीचता । (२) नीस्सारता, खोखलापन । (३)ओछापन । (४)अल्पता ।

तुच्छत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हीनपन । (२) ओछापन । (३) खोखलापन । (४) अल्पता, कमी ।

तुच्छातितुच्छ—वि. [सं.] बहुत हीन या क्षुद्र ।

तुजी—संज्ञा स्त्री. [डिं.] कमान, धनुष ।

तुझ—सर्व. [सं. तुभ्यम्, प्रा. तुज्झं] 'तू' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तियाँ लगने के पहले प्राप्त होता है ।

तुझे—सर्व. [हिं. तुझ] 'तू' का कर्म और संप्रदान रूप ।

तुट—वि. [सं. त्रुट=टूटना] टुकड़ा, जरा सा ।

तुट्ठना—क्रि. स. [सं. तुष्ट, प्रा. तुट्ठ] राजी करना ।

तुड़वाना—क्रि. स. [हिं. तोड़ना का प्रे.] दूसरे को तोड़ने में प्रवृत्त करना, तोड़ने देना ।

तुड़ाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तुड़ाना] तोड़ने या तुड़ाने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

तुड़ाना—क्रि. स. [हिं. तोड़ना का प्रे.] (१) तोड़ने का काम करना, तोड़ने देना । (२) बंधन छुड़ाना । (३) संबंध-विच्छेद करना । (४) रुपया आदि भुनाना । (५) दाम कम कराना ।

तुड़ुम—संज्ञा पुं. [सं. तूर] तुरही, बिगुल ।

तुतरा—वि. [हिं. तोतला] तुतलानेवाला ।

तुतराइ—क्रि. वि. [हिं. तुतलाना] तुतलाकर, अस्पष्ट स्वर से । उ.—तनक मुख की तनक बतियाँ, बोलत हैं तुतराइ—१०-१६६ ।

तुतरात—क्रि. अ. [हिं. तुतलाना] तुतलाकर, तुतलाते हैं, अस्पष्ट बोलते हैं । उ.—(क) स्रवन सुनन उत्कंठ रहत हैं, जब बोलत तुतरात री—१०-१३६ । (ख) बलि-बलि जाउँ मुखारबिंद की अमिय बचन बोलौ तुतरात—१०-१५६ ।

तुतराना—क्रि. अ. [हिं. तुतलाना] साफ़साफ न बोलना ।

तुतरानी— क्रि. अ. [हिं. तुतलाना] तुतलाकर बोलती है, अस्पष्ट स्वर निकालती है । उ.—अचरज महरि तुम्हारे आगैं, अबै जीभ तुतरानी—१०-३११ ।

तुतरौंहाँ—वि. [हिं. तोतला] तुतलानेवाला ।

तुतरौंही—वि. स्त्री. [हिं. तोतली] तोतली, अस्पष्ट स्वर वाली । उ.—बोलत हैं बतियाँ तुतरौंहीं, चलि चरननि न सकात—१०-२६४ ।

तुतलाना—क्रि. अ. [हिं. तोता] रुक-रुककर अस्पष्ट स्वर में बोलना ।

तुतली—वि. स्त्री. [हिं. तोतली] तुतलानेवाली ।

तुतुई, तुतुही—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] टोंटीदार घंटी ।

तुदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कष्ट या पीड़ा देने की क्रिया । (२) पीड़ा, व्यथा ।

तुनक—वि. [फ़ा.] (१) दुर्बल । (२) नाजुक ।

यौ.—तुनक मिज़ाज—जल्दी रूठनेवाला ।

तुनतुनी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) एक बाजा । (२) सारंगी ।

तुनीर—संज्ञा पुं. [सं. तूणीर] तूण, निषंग, तरकश । उ.—अलख अनंत अपरिमित महिमा, कटि-तट कसे तुनीर—९-२६ ।

तुन्न—वि. [सं.] कटा-फटा, छिन्न-भिन्न ।

तुपक—संज्ञा स्त्री. [तु. तोप] छोटी तोप, बंदूक ।

तुफंग—संज्ञा स्त्री. [तु. तोप] (१) हवाई बंदूक । (२) लंबी नली जिसमें फूंक से गोलियाँ चलायी जाती हैं ।

तुफान—संज्ञा पुं. [अ. तूफ़ान] आंधी, तूफान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुभना—क्रि. अ. [सं. स्तोभन] स्तब्ध या ठक रह जाना, अचल हो जाना।

तुभी—क्रि. अ. [हिं. तुभना] स्तब्ध या ठक रह गयी। उ.—टरति न टारे वह छबि मन में चुभी। स्याम सघन पीतांबर दामिनि, अँखियाँ चातक ह्वै जाइ तुभी—१४४६।

तुम—सर्व. [सं. त्वम्] 'तू' शब्द का बहुवचन। इसका प्रयोग शिष्टता की दृष्टि से एकवचन में भी होता है।

तुमड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंबिनी] (१) कड़ुए कद्दू का सूखा फल। (२) इस फल से बना पात्र जो प्रायः साधुओं के पास रहता है। (३) इस फल से बना सँपेरों का बाजा।

तुमरा—सर्व. [हिं. तुम्हारा] तुम्हारा।

तुमरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तुमड़ी] (१) कड़ुआ कद्दू। (२) इससे बना पात्र। (३) इससे बना बाजा।

सर्व. [हिं. तुम्हारी] तुम्हारी।

तुमरे—सर्व. [हिं. तुम्हारा] तुम्हारे। उ.—तुमरे कुल कौं बेर न लागै, होत भस्म संघात—९-७७।

तुमरौ—सर्व. [हिं. तुम्हारा] तुम्हारे। उ.—अहो महरि पालागन मेरौ, मैं तुमरौ सुत देखन आई—१०-५१।

तुमाना—क्रि. स. [हिं. तूमना का प्रे.] दबी हुई रुई को पुलपुली करके फैलाने के लिए नुचवाना।

तुमुर, तुमुल—संज्ञा पुं. [सं. तुमुल] (१) सेना की धूम या कोलाहल। (२) सेना की मुठभेड़ या भिड़ंत।

तुम्ह—सर्व. [हिं. तुम] तुम।

तुम्हरा, तुम्हारा—सर्व. [हिं. तुम, तुम्हारा] 'तुम' का संबंधकारक में प्रयुक्त होनेवाला रूप।

तुम्हरी, तुम्हारी—सर्व. [हिं. तुम्हारा] 'तुम' के संबंधकारक स्त्रीलिंग रूप 'तुम्हारी' का व्रजभाषा तथा अवधी का मिश्रित प्रयोग। उ.—सूरदास प्रभु तुम्हरी कृपा बिनु, को मो दुख बिसरावै—१-४२।

तुम्हरे, तुम्हरो, तुम्हरौ, तुम्हारे, तुम्हारो, तुम्हारौ—सर्व. [हिं. तुम] 'तुम' के संबंधकारक रूप 'तुम्हारे' का व्रजभाषा और अवधी का मिश्रित प्रयोग। उ.—सूरदास प्रभु तुम्हरे भजन बिनु, जैसैं सूकर-स्वान-सियार—१-४२।

तुम्हरैं—सर्व. [हिं. तुम] 'तुम' के संबंधकारक रूप 'तुम्हारे' का निश्चयार्थक व्रजभाषा प्रयोग, तुम्हारा ही। उ.—तुम्हरैं भजन सबहिं सिगार। जो कोउ प्रीति करै पद-अंबुज, उर मंडत निरमोलक हार—१-४१।

तुम्हें—सर्व. [हिं. तुम] 'तुम' का कर्म और संप्रदान में प्रयुक्त विभक्तियुक्त रूप।

तुरँग, तुरंग, तुरंगम, तुरंगा—वि. [सं. तुरंग] जल्दी चलनेवाला, शीघ्रगामी।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) घोड़ा। उ.—(क) सत जोजन मग एक दिवस में तुरँग जाइ पहुँचायौ—१०३-२७। (ख) चले नगर के लोग साजि रथ तरल तुरंगा—१० उ.-१०५। (ग) अंतरिक्ष तैं द्वै रथ उपजे आयुध तुरँग समेत—सारा. ५९६। (२) चित्त।

तुरंगशाला, तुरँगसाल, तुरंगसाला—संज्ञा स्त्री. [सं. तुरंग + शाला] घोड़े बाँधने का स्थान, घुड़साल।

तुरंत—क्रि. वि. [सं. तुर=वेग, जल्दी] झटपट।

तुर—क्रि. वि. [सं.] शीघ्र, जल्दी।

वि.—वेगवान्, शीघ्र चलनेवाला।

तुरई—संज्ञा स्त्री. [सं. तूर=तुरही नामक बाजा] एक बेल जिसके लंबे फलों की तरकारी बनती है।

मुहा.—तुरई का सा फूल—चटपट खर्च या समाप्त हो जानेवाली चीज।

संज्ञा स्त्री. [हिं. तुरही] फूँककर बजाने का एक बाजा। उ.—तुरई बाजनि बीना ताजनि चपल चपल सेहरी—१० उ. २४।

तुरकान, तुरकाना—संज्ञा पुं. [फ़ा. तुर्क] तुर्कों की बस्ती।

तुरग—वि. [सं.] तेज चलनेवाला।

संज्ञा पुं.—(१) घोड़ा। उ.—रोवैं बृषभ, तुरंग अरु नाग—१-२८६। (२) चित्त।

तुरगदानव—संज्ञा पुं. [सं.] केशी नामक दैत्य जो कंस की आज्ञा से घोड़े का रूप धर कर व्रज में आया था और श्रीकृष्ण के हाथ से मारा गया था।

तुरगी—संज्ञा स्त्री. [सं.] घोड़ी।

संज्ञा स्त्री. [सं. तुरगिन्] घुड़सवार।

तुरत—अव्य. [सं. तुर] शीघ्र, चटपट, तत्क्षण। उ.—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर तुरत मधुबन पग धारे धरनी केहितकारी—२५३३।

तुरतुरा, तुरतुरियो—वि. [सं. त्वरा] (१) तेज, जल्द-बाज। (२) जल्दी बोलने या बात करनेवाला।

तुरते, तुरतै—अव्य. [हिं. तुरत] शीघ्र ही, तत्क्षण। उ.—(क) भात पसाइ रोहिनी ल्याई। घृत सुगंधि तुरतै दै ताई—३९६। (ख) लै लै लकुट ग्वाल सब धाये करत सहाय उठे हैं तुरते—६६२।

तुरपई, तुरपन—संज्ञा स्त्री. [हिं. तुरपना] मोटी सिलाई।

तुरपना—क्रि. स. [हिं. तोपा] सिलाई करना।

तुरय—संज्ञा पुं. [सं. तुरग] घोड़ा। उ.—सायक चाप तुरय बनि जाति हौ लिये सबै तुम जाहु।

तुरसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तुलसी] तुलसी की पत्ती।

मुहा.—तुरसी की पती मुँह में लेना—सच बोलने का प्रमाण देना। मुँह में लैहौ तुरसी—सच बोलकर उसको प्रमाणित करोगे। उ.—बातैं कहत सबै साँची सी मुँह मैं लेहौ तुरसी—३१९८।

तुरहो—संज्ञा स्त्री. [सं. तूर] फूँक से बजाने का एक बाजा।

तुरा—संज्ञा स्त्री. [सं. त्वरा] जल्दी, शीघ्रता।

संज्ञा पुं. [सं. तुरग] घोड़ा, तुरंग।

तुराई—संज्ञा स्त्री. [सं. तूलिका = गद्दा] रुई भरा हुआ गद्दा, तोशक। उ.—दसरथ राज बाजि गज लैकै सबहीं सौज तुराई—सारा. २२६।

क्रि. स. [हिं. तुड़ाना] तुड़ाकर, बंधन छुड़ाकर।

संज्ञा स्त्री. [सं. त्वरा] शीघ्रता, जल्दी।

तुराट—संज्ञा पुं. [सं. तुरंग] घोड़ा।

तुराना—क्रि. अ. [सं. तुर] घबराना, आतुर होना।

क्रि. स. [हिं. तुड़ाना] बंधन आदि छुड़ाना।

तुरावत्, तुरावान्—वि. [सं. त्वरावत्] वेगवाला।

तुरावती—वि. स्त्री. [सं. त्वरावती] झोंके के साथ बहने-वाली, वेगवती।

तुरित—वि. [सं. त्वरित] जल्दी चलनेवाला।

क्रि. वि.—शीघ्रतापूर्वक, जल्दी से।

तुरिया, तुरी, तुरीय—वि. [सं. तुरीय] चतुर्थ, चौथा।

संज्ञा स्त्री.—(१) वाणी की वह स्थिति जब वह मुँह से उच्चरित होती है। (२) चार अवस्थाओं में से अंतिम, मोक्ष।

संज्ञा पुं.—निर्गुण ब्रह्म।

तुरी—वि. स्त्री. [सं.] वेगवती, तेज।

संज्ञा स्त्री. [अ. तुरय] (१) घोड़ा। (२) लगाम।

संज्ञा पुं.—घुड़सवार, अश्वारोही।

संज्ञा स्त्री. [अ. तुर्रा] मोती या फूल का गुच्छा।

संज्ञा स्त्री. [हिं. तुरही] तुरही नामक बाजा।

वि. [हिं. तोड़ना] तोड़नेवाला।

तुरैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. तुरई] तुरई नामक तरकारी।

तुर्क—संज्ञा पुं. [सं. तुरुष्क] मुसलमान, तुर्किस्तानी।

तुर्य—वि. [सं.] चौथा, चतुर्थ।

तुर्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] ज्ञान जिसमें मुक्ति हो जाती है।

तुर्याश्रम—संज्ञा पुं. [सं.] चौथा संन्यासाश्रम।

तुर्रा—संज्ञा पुं. [अ.] (१) घुँघराले बालों की लट। (२) पगड़ी में खोंसने का पर, फुंदना या बादले का गुच्छा।

मुहा.—तुर्रा यह कि—ऊपर से इतना और। किसी बात पर तुर्रा होना—सच्ची बात में कुछ और बात मिलाना।

(३) पक्षियों के सिर पर परों का गुच्छा या चोटी। (४) किनारा, हाशिया। (५) मकान का छज्जा।

वि. [फ़ा.] अनोखा, अद्भुत।

तुर्श—वि. [फ़ा.] खट्टा।

तुर्शाई, तुर्शी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] खटाई, खट्टापन।

तुर्शाना—क्रि. अ. [फ़ा.] खट्टा हो जाना।

तुल—वि. [सं. तुल्य] समान, सदृश।

तुलत—क्रि. अ. [हिं. तुलना] तुल्य है, समान (होता) है। उ.—मोहिं भ्रम भयौ सखी उर अपनै, चहुँ दिसि भयौ उज्यारौ री। जौ गुंजा सम तुलत सुमेरहिं, ताहू तैं अति भारौ री—१०-१३५।

तुलना—क्रि. अ. [सं. तल] (१) तौला जाना। (२) तौल या मान में बराबर उतरना। (३) अस्त्र आदि का सधना। (४) अंदाज हो जाना। (५) भर जाना। (६) तैयार होना, उतारू होना।

संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मिलान। (२) समता, बराबरी। (३) उपमा। (४) तौल। (५) गणना।

तुलनात्मक—वि. [सं.] जिसमें अन्य किसी के साथ तुलना करते हुए विचार किया गया हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तौलना] तौलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तुलवाना—क्रि. स. [हिं. तौलना] तौल कराना।

तुलसी—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक छोटा पौधा जिसे वैष्णव अत्यंत पवित्र मानते हैं। उ.—(क) सरबस प्रभु रीझि देत तुलसी कैं पाता—१-१२३। (ख) बात करत तुलसी मुख मेलै नयन सयन दै मुख मटकी—१३०१। (ग) तुलसी को कहा नीम प्रगट कियो मोही ते करि वोहनि—२०१४।

तुलसीदल—संज्ञा पुं. [सं.] तुलसीपत्र जिसे वैष्णव अत्यंत पवित्र मानते हैं।

तुलसीदाना—संज्ञा पुं. [हिं. तुलसी + दाना] एक गहना।

तुलसीदास—संज्ञा पुं.— हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि।

तुलसीपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] तुलसी की पत्ती।

तुलसीवन—संज्ञा पुं. [सं.] वृंदावन।

तुला—स्त्री. [सं.] (१) तुलना, मिलान। (२) तराजू, काँटा। उ.—तुला बिच लौं केस तौले गरुअ आनन गोर—१७०३। (३) मान, तौल। (४) नापने का बरतन, भाँड। (५) पाँच मन की एक पुरानी तौल। (६) ज्योतिष की बारह राशियों में से सातवीं राशि जिसमें चित्रा नक्षत्र के शेष ३० दंड तथा स्वाती और विशाखा के आद्य ४५-४५ दंड होते हैं। उ.—छठएँ सुक्र तुला के सुनि जुत सत्रु रहन नहिं पैहैं–१०-८६।

तलाई—संज्ञा स्त्री. [सं. तूल=रुई] दोहरा कपड़ा जिसमें रुई भरी हो, दुलाई।

संज्ञा स्त्री. [हिं. तुलना] तौलने का काम, भाव या मजदूरी।

तुलादान—संज्ञा पुं. [सं.] मनुष्य की तौल के बराबर द्रव्य या पदार्थ का दान।

तुलाधार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तुला राशि। (२) तराजू की रस्सी जिसमें पलड़े बँधते हैं। (३) बनिया।

वि.—तुला या तराजू धारण करनेवाला।

तुलाना—क्रि. अ. [हिं. तुलना = तौल में बराबर होना] (१) निकट या समीप आना। (२) पूरा उतरना।

क्रि. अ. [सं. तुल्य] समान या बराबर होना।

क्रि. स. [हिं. तुलवाना] तौलने का काम कराना।

तलानी—क्रि. अ. [हिं. तुलाना] (१) बराबर हुई, पूर्ण हुई, समाप्त हुई। उ.—(क) रे दसकंधर, अंधमति, तेरी आयु तुलानी आनि—९-७६। (ख) सूर न मिटै भाल की रेखा, अल्प मृत्यु तुव आइ तुलानी—९-११६। (२) समीप आयी, आ पहुँची। उ.—करना करति मँदोदरि रानी।........। चोरी करी, राम खोयौ, अल्प मृत्यु तव आइ तुलानी—९-१६०।

तुलानो, तुलानौ—क्रि. अ. [हिं. तुलाना] आ पहुँचा, समीप आया। उ.—(क) कह्यौ लंकेस दै ठेस पग की तबै, जाहि मति-मूढ़. कायर, डरानौ। जाहि असरन-सरन, सूर के प्रभु कौं, तुरत हीं आइ द्वारैं तुलानौ—९-२११। (ख) अब जिनि होहि अधीर कंस जम आइ तुलानो—२६२५।

तुलामान—संज्ञा पुं. [सं.] तौलने का बाँट।

तुलि—संज्ञा स्त्री. [सं.] चित्र बनाने की कूँची।

तुलित—वि. [सं.] (१) तुला हुआ। (२) समान।

तुल्य—वि. [सं.] (१) बराबर। (२) सदृश।

तुल्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बराबरी। (२) सादृश्य।

तुल्योगिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक काव्यालंकार।

तुव—सर्व. [सं. तव] तुम्हारा। उ.—(क) गिनती सुनौ दीन की चित्त दै,कैसैं तुव गुन गाऊँ–१-४२। (ख) दान धर्म बहु कियो भानु-सुत सो तुव बिमुख कहायौ–२-१०४। (ग) पोषे नहिं तुव दास प्रेम सों पोष्यौ अपनौ गात्र–१-२१६। (घ) तुव प्रसाद मम घर सुत होइ—५-४।

तुवर—वि. [सं.] बिना दाढ़ी-मूछ वाला।

तुष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अनाज के ऊपर का छिलका, भूसी। (२) अंडे के ऊपर का छिलका।

तुषानल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) घास फूस की आग। (२) इस आग में भस्म होने की क्रिया जो प्रायश्चित्त के लिए की जाती है।

तुषार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जाड़ा, पाला, सरदी। उ.—(क) सलिल तैं सब निकास आवहु वृथा सहति तुषार—७८६। (ख) माघ-तुषार जुवति अकुलाहीं—७९९। (२) हिम, बरफ। (३) एक तरह का कपूर। (४) हिमालय के उत्तर का एक देश जहाँ के घोड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसिद्ध थे। (४) इस देश में बसनेवाली जाति।

वि.—छूने में बरफ की तरह ठंडा।

तुषारकर, तुषारमूर्ति, तुषाररश्मि, तुषारांशु—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा।

तुषारपाषाण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ओला। (२) बरफ।

तुषाराद्रि—संज्ञा पुं. [सं.] हिमालय पर्वत।

तुष्ट—वि. [सं.] (१) तृप्त। (२) प्रसन्न।

तुष्टता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) तुष्टि। (२) प्रसन्नता।

तुष्टना—क्रि. अ. [सं. तुष्ट] प्रसन्न होना।

क्रि. स.—संतुष्ट या प्रसन्न करना।

तुष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) संतोष। (२) प्रसन्नता।

तुस—संज्ञा पुं. [सं.] अन्न का छिलका, भूसी। उ.—जौ लौं मन कामना न छूटै। तौ कहा जोग-जज्ञ-व्रत कीन्हैं, बिनु कन तुस कौं कूटै—२-१६।

तुसार—संज्ञा पुं. [सं. तुषार] (१) पाला। (२) हिम।

तुसी—संज्ञा स्त्री. [सं. तुष] अन्न के ऊपर का छिलका, भूसी। उ.—ऐसी को ठाली बैठी है तोसौं मूड़ पिरावै। झूठी बात तुसी सी बिनु कन फटकत हाथ न आवै—३२८७।

तुस्त—संज्ञा स्त्री. [सं.] धूल, गर्द।

तुहार—सर्व. [हिं. तुम्हारा] तुम्हारा।

तुहिं, तुही—सर्व. [हिं. तू + हीं (प्रत्य.)] (१) तू ही, केवल तू। उ.—झगरिनि तैं हौं बहुत खिझाई। कंचन-हार दिएँ नहिं मानति, तुहीं अनोखी दाई—१०-१६। (२) तुझको।

तुहिन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पाला, कोहरा। (२) हिम, बरफ। (३) चाँदनी। (४) शीतलता, ठंढक।

तुहैं—सर्व. [हिं. तुम्हें] तुम्हें, तुमको।

तूँ—सर्व. [सं. त्वम्, हि. तू] मध्यमपुरुष एक वचन सर्वनाम, तू। उ.—रे मन, छाँड़ि विषय कौ रँचिबो। कत तू होत सुवा सेमर कौ, अंतहि कपट न बचिबो—१-५६।

तूँशी—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) पृथ्वी। (२) नाव।

तूँवड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. तूँबा] साधुओं का कमंडल।

तूँवना—क्रि. स. [हिं. तूनना] रुई उधड़कर पोली करना।

तूँबा—संज्ञा पुं. [सं. तुंबक] (१) कड़आ गोल कद्दू या घीया। (२) इससे बना साधुओं का कमंडल।

तूँबी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तूँबा] (१) कड़आ गोल कद्दू या घीया। (२) इससे बना छोटा कमंडल।

तू—सर्व. [सं. त्वम्] मध्यमपुरुष एकवचन सर्वनाम।

मुहा.—तू तड़ाक (तू तकार या तू-तू मैं-मैं) करना—कहा सुनी या गाली-गलौज करना।

संज्ञा स्त्री. [अनु.] कुत्तों को बुलाने का शब्द।

तूख—संज्ञा पुं. [सं. तुष=तिनका] तिनका, सींक या खरका जिसे पत्ते में छेद कर 'दोना' बनाते हैं।

तूखना—क्रि. स. [सं. तोषण] तुष्ट या प्रसन्न करना।

क्रि. अ.—तुष्ट या प्रसन्न होना।

तूटना—क्रि. अ. [हिं. टूटना] टूट जाना।

तूटी—क्रि. अ. [हिं. टूटना] टूटी, अलग हुई।

तूठना—क्रि. अ. [सं. तुष्ठ, प्रा. तुट्ठ] (१) संतुष्ट होना, अघाना। (२) प्रसन्न या राजी होना। (३) घमंड से फूलना।

तूठे—क्रि. अ. [हिं. तूठना] संतुष्ट या प्रसन्न हुए। उ.—लालच लागि कोटि देवन के, फिरत कपाटनि खोलत……। एकनि कौं जिय-बलि दै पूजे, पूजत नैंकु न तूठे—१-१७७।

तूण—संज्ञा पुं. [सं.] तीर रखने का चोगा, तरकश।

तूणक्ष्वेड़—संज्ञा पुं. [सं.] बाण, तीर।

तूणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] बाण रखने का चोगा, तरकश।

वि. [सं. तूणिन्] जो तरकश लिये हो।

तूणीर—संज्ञा पुं. [सं.] तूण, निषंग, तरकश।

तूती—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) छोटी जाति का तोता। (२) एक छोटी सुंदर चिड़िया। (३) मटमैले रंग की चिड़िया जो प्यारी बोली के लिए पाली जाती है।

मुहा.—किसी की तूती बोलना—किसी की खूब चलना, किसी का प्रभाव जमना। नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है—(१) बहुत शोरगुल में एक आदमी की बात पर कोई ध्यान नहीं देता। (२) बड़ों के समाज में छोटों की बात पर कोई ध्यान नहीं देता।

(४) मुँह से बजाने का एक बाजा या खिलौना।

तूदा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) राशि। (२) हदबंदी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तून—संज्ञा पुं. [सं. तूण] तरकश, तूणीर। उ.—कटि तट तून, हाथ सायक-धनु सीता-बंधु समेत—९-३६।

संज्ञा पुं. [सं. तृण] तिनका, सींक।

तूना—क्रि अ. [हिं. चूना] (१) चूना, टपकना। (२) खड़ा न रहना, गिरना।

तूनीर—संज्ञा पुं. [सं. तूणीर] तरकश, तूण। उ.—कटि तट पट पीतांबर काछे, धारे धनु-तूनीर—९-४४।

तूफान—संज्ञा पुं. [अ. तूफ़ान] (१) बहुत बड़ी बाढ़। (२) आँधी, अंधड़। (३) आफत, आपत्ति। (४) हल्ला-गुल्ला। (५) झगड़ा-बखेड़ा। (६) झूठा कलंक जिससे आफत खड़ी हो जाय।

तूफानी—वि. [फ़ा. तूफ़ान] (१) झगड़ालू, उपद्रवी। (२) झूठा कलंक लगानेवाली। (३) उग्र, प्रचंड।

तूमड़ी, तूमरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तूँबा + ड़ी (प्रत्य.)] (१) तूँबी, कमंडल। (२) सँपेरों का बाजा।

तूमतड़ाक—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] तड़क-भड़क, ठसक।

तूमना—क्रि. स. [सं. स्तोम = ढेर + ना] (१) रुई को उधेड़कर पोला करना। (२) धज्जी उड़ाना। (३) मसलना। (४) भेद खोलना।

तूमार—संज्ञा पुं. [अ.] बात का व्यर्थ बढ़ाना।

तूर—संज्ञा पुं. [सं.] एक प्रकार का बाजा। उ.—(क) जागी महरि, पुत्र मुख देखौ आनँद-तूर बजायौ—१०-४। (ख) दसएँ मास मोहन भए (हो) आँगन बाजै तूर—१०-४०। (ग) चंदन आँगन लिपाइ, मुतियनि चौकैं पुराइ, उमँगि अँगनि आनंद सौं तूर बजावौ—१०-९५।

संज्ञा स्त्री. [स. तुवरी] अरहर।

तूरज—संज्ञा पुं. [सं. तूर्य] तुरही नामक बाजा।

तूरण, तूरन—क्रि. वि. [स. तूर्ण] शीघ्र, जल्दी।

तूरना—क्रि. स. [हिं. तोड़ना] भंग करना।

संज्ञा पुं. [सं. तूर] तुरही नामक बाजा।

तूरा—संज्ञा पुं [सं. तूर] तुरही नामक बाजा।

तूरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] धतूरे का पेड़।

तूर्ण—क्रि. वि. [सं.] शीघ्र, तुरत, चटपट।

तूर्व—क्रि. वि. [सं.] तुरंत, शीघ्र, तत्काल।

तूर्य—संज्ञा पुं. [सं.] तुरही नामक बाजा।

तूर्व—क्रि. वि. [सं.] तत्काल, तत्क्षण, तुरंत।

तूल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कपास या सेमर के डोडे भीतर का घूआ, रुई। उ.—(क) सेमर-फूल सुं[illegible] अति निरखत मुदित होत खग-भूप। परसत चो[illegible] तूल उघरत मुख परत दुःख कैं कूप—१-१०२। (ख) ब्याकुल फिरत भवन बन जहँ तहँ तूल आक [illegible] राइ। (२) रुई की बत्ती जो दीपक में जलती है। उ.—गृह दीपक, धन तेल, तूल तीय, सुत ज्[illegible] अति जोर। मैं मति-हीन मरम नहिं जान्यौ, प[illegible] अधिक करि दौर—१-४६। (३) शहतूत। (४) आका[illegible]

संज्ञा पुं. [हिं. तून = एक पेड़] (१) गहरा ला[illegible] रंग। (२) गहरे लाल रंग का सूती कपड़ा।

वि. [सं. तुल्य] तुल्य, समान। उ.—(क) अपराधी ब्रज बधू सों कहे वचन विष तूल—१[illegible] १०४। (ख) काम अवतार लीन्हों विदित [illegible] यह तासु सम तूल नहिं रूप दोऊ—१० उ. ७[illegible]

तूलता—संज्ञा स्त्री. [सं. तुल्यता] समानता, बराबरी।

तूलन—संज्ञा स्त्री. [हिं. तूल] रुई। उ.—बन-ब[illegible] फिरे अर्क-तूलन ज्यों बास बिराटहिं [illegible] —सारा. ७७८।

तूलना—क्रि. स. [हिं. तुलना] पहिए की धुरी [illegible] तेल देना, चिकनाना।

तूला—संज्ञा स्त्री. [सं.] कपास।

तूलिका, तूली—संज्ञा स्त्री. [सं.] चित्रकारों की कूँची।

तूलै—वि. [सं. तुल्य, हिं. तूल] तुल्य या समान होती है। उ.—स्रुति-कुंडल छबि रबि नहि तूलै दसन-दम[illegible] दुति दामिनि भूलै—७९।

तूवरक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बिना सींग का बैल। (२) बिना दाढ़ी का मनुष्य।

तूष्णी—वि. [सं. तृष्णीम् (अव्य.)] मौन, चुप।

संज्ञा स्त्री.—मौन, खामोशी, चुप्पी।

तूष्णीक—वि. [सं.] मौन साधनेवाला।

तूस—संज्ञा पुं. [सं. तुष] भूसी, भूसा।

संज्ञा पुं. [तिब्बती-थ.स] एक तरह का ऊन।

तूसना—क्रि. स. [सं. तुष्ट] (१) संतुष्ट या [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना। (२) प्रसन्न या राजी करना।

तूसी—वि. [हिं. तूस] स्लेटी रंग का।

तूस्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) धूल, रज। (२) अणु, कण। (३) जटा। (४) धनुष, चाप।

तृखा—संज्ञा स्त्री. [सं. तृषा] प्यास।

तृजग—वि. [सं. तिर्यक] तिरछा, आड़ा।

तृण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दूब, कुश आदि घास। (२) तिनका, सूखी घास-फूस।

मुहा.—तृण गहना (पकड़ना)--हीनता दिखाना, गिड़गिड़ाना। तृण गहाना (पकड़ाना)—हीन बनाना, वश में करना। किसी वस्तु पर तृण टूटना—सुंदर चीज (पुत्र आदि) को नजर से बचाने के लिए टोटके के रूप में तिनका टूटना। तृण बराबर (तृणवत् या समान)–तिनके के बराबर, बहुत ही मामूली। तृण तोड़ना—(१) सुंदर चीज (पुत्र आदि) को नजर से बचाने के लिए टोटके के रूप में तिनका तोड़ना। (२) संबंध या नाता तोड़ना।

तृणचर—वि. [सं.] घास चरनेवाला (पशु)।

तृणमय—वि. [सं.] घास का बना हुआ।

तृणशय्या, तृणशैया—संज्ञा स्त्री. [सं.] चटाई, साथरी।

तृणावर्त्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बवंडर, अंधड़। (२) एक दैत्य जो कंस के भेजने पर बवंडर-रूप में गोकुल आया और श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था।

तृतिय, तृतीय—वि. [सं. तृतीय] तीसरा।

तृतीयांश—संज्ञा पुं. [सं. तृतीय + अंश] तीसरा भाग।

तृतीया—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) प्रत्येक पक्ष का तीसरा दिन, तीज। (२) करणकारक (व्याकरण)।

तृतीयाश्रम—संज्ञा पुं. [सं.] वानप्रस्थ आश्रम।

तृन—संज्ञा पुं. [सं. तृण] (१) कुश, मूँज, घास। उ.—(क) जन के उपजत दुख किन काटत? जैसैं प्रथम अषाढ़-आँजु तृन, खेतिहर निरखि निपाटत—१-१०७। (ख) ज्यों सौरभ मृग-नारि बसत है द्रुम-तृन सूँघि फिरयौ—२-२६। (१) तिनका, सूखी घास। उ.—(क) कबहुँक तृन बूड़ै पानी मैं, कबहुँक सिला तरै—१-१०५। (ख) सूखे पात और तृन खाइ—५-३।

मुहा.—तृन गहना (पकड़ना)—हीनता दिखाना, गिड़गिड़ाना। तृन गहाना (पकड़ाना)—नम्र करना, विनीत बनाना, वश में करना। तृन गहाय कै—नम्र करके, वश में करके। उ.—कहौ तौ ताकौं तृन गहाय कै जीवत पायन पारौं—९-१०८। (किसी) वस्तु पर तृन टूटना—(किसी सुंदर चीज जैसे पुत्र-पुत्री को) नजर लगने से बचाने के लिए टोटके-रूप में तिनका टूटना। तृन बराबर (वत् या समान)—तिनके के बराबर तुच्छ या हीन, बहुत ही साधारण, कुछ भी नहीं। (किसी वस्तु पर) तृन तोड़ना—(किसी सुंदर चीज जैसे पुत्र-पुत्री को) नजर से बचाने के लिए टोटके-रूप में तिनका तोड़ना। डारत है तृन तोर—नजर से बचाने के लिए तिनका तोड़ते हैं। उ.—(क) सूर अंग त्रिभंग सुंदर छबि निरखि तृन तोर—१३३५। (ख) पीवत देखि रोहिनी जसुमति डारत हैं तृन तोरे—सारा. ४४२। तृन तोड़ना—संबंध या नाता तोड़ना। तोरि तृन—नाता तोड़कर। उ.—भुजा छुड़ाइ तोरि तृन ज्यौं हित करि प्रभु निठुर हियो। गयो तृन तोर—संबंध तोड़ गया। उ.—ऊधो नंद को गोपाल गिरिधर गयो तृन जो तोर—३३८३। बूड़त ज्यौं तृन गहियत—डूबते को तिनके का सहारा होता है, बड़ी मुसीबत में पड़े व्यक्ति के लिए थोड़ी सहायता या सांत्वना बहुत महत्व की होती है। उ.—फिरि फिरि वहइ अवधि अवलंबन बूड़त ज्यौं तृन गहियत—३३००। तृन दंत गहि—दाँत में तिनका दबाकर, नम्र होकर, अधीन होने की कामना लेकर। उ.—जाइ मिलि अंध दसकंध, गहि दंत तृन, तौ भलैं मृत्यु-मुख तैं उबार—९-१२६।

तृना, तृनाब्रत, तृनाव्रत, तृनावृत—संज्ञा पुं. [सं. तृणावर्त्त] एक राक्षस जो कंस की आज्ञा से बवंडर-रूप में गोकुल आया था और श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था। उ.—(क) जिन हति सकट प्रलंब तृनाव्रत इंद्र प्रतिज्ञा टाली—२५६७। (ख) तृना केसी सकट बकी बक अघासुर, बाम कर राखि गिरि ज्यौं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उबारयौ—५६६ । (ग) बकी, बकासुर, सकट, तृनाव्रत, अघ, प्रलंब, वृषभास—४८७ ।

तृपति—संज्ञा स्त्री. [सं. तृप्ति] संतोष, प्रसन्नता ।

तृपित, तृप्त—वि. [सं. तृप्ति] संतुष्ट, प्रसन्न ।

तृपिता—संज्ञा स्त्री. [सं. तृप्ति] संतोष, तृप्ति । उ.—अँचवत आदर लोचन पुट दोउ मनु नहिं तृपिता पावै—२३६० ।

तृप्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] इच्छा पूरी होने पर शांति, आनंद या संतोष । उ.—(क) फिरत वृथा भाजन अवलोकत, सूनैं सदन अजान । तिहिं लालच कबहूँ कैसैंहूँ, तृप्ति न पावत प्रान—१-१०३ । (ख) जन्म तैं एकटक लागि आसा रही, विषम-विष खात नहिं तृप्ति मानी—११० । (ग) सोभा कहत कही नहि आवै । अँचवत अति आतुर लोचन-पुट मन न तृप्ति कौं पावै—४७८ ।

तृषा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) प्यास । उ.—भूखे भये भोजन जु उदर कौं, तृषा तोय पट तन कौं—१-६ । (२) इच्छा, अभिलाषा । (३) लोभ, लालच ।

तृषालु—वि. [सं.] प्यासा, तृषित ।

तृषावंत, तृषावान्—वि. [सं. तृषावान् का बहु.] प्यासे । उ.—तृषावंत सुरभी बालकगन, कालीदह अँचयौ जल जाइ—५०१ ।

तृषित—वि. [सं.] (१) अभिलाषी, इच्छुक । (२) प्यासा । उ.—(क) तृषित हैं सब दास कारन चतुर चातक दास—१०-२१८ (ख) तृषित भए सब जानि मोहन सखनि टेरत बेनु ! बोलि ल्यावहु सुरभि-गन, सब चलौ जमुन-जल-देनु—४२७ ।

तृष्ण—वि. [सं.] (१) जिसे तृषा या प्यास हो, प्यासा । (२) अभिलाषा या कामना रखनेवाला ।

तृष्णा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) लोभ । (२) प्यास ।

तृष्णालु—वि. [सं.] (१) लोभी । (२) प्यासा ।

तृष्ना—संज्ञा स्त्री. [सं. तृष्णा] (१) प्राप्ति के लिए विकल करनेवाली इच्छा, लोभ । उ.—अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल । ...... । तृष्ना नाद करति घर भीतर नाना विधि दै ताल—१-१५३ ।

तैं—प्रत्य. [सं. तस् (प्रत्य.)] (१) से, द्वारा । (२) से, अधिक । उ.—(क) नैना तेरे जलज तें हैं खंजन अति नाचैं । (ख) चपला तें चमकत अति प्या कहा करौगी स्यामहिं । (३) किसी काल या स्थान से

तेंतालिस, तेंतालीस—संज्ञा पुं. [सं. त्रिचत्वारिंशत्, पा. तिचत्तालीस] चालीस से तीन अधिक की संख्या ।

तेंतालीसवाँ—वि. [हिं. तेंतालीस+वाँ (प्रत्य.)] क्रम तेंतालीस के स्थान पर पड़नेवाला ।

तेंतिस, तेंतीस—संज्ञा पुं.—[सं. त्रयस्त्रिंशत्, पा. ति सति, प्रा. तितीसा] तीस से तीन अधिक की संख्या ।

तेंतीसवाँ—वि. [हिं. तेंतीस+वाँ (प्रत्य.)] जो क्रम तेंतीस के स्थान पर पड़े ।

तेंदुआ—संज्ञा पुं. [देश.] एक हिंसक पशु ।

ते—सर्व. [सं. ते] (१) वे, वे लोग । उ.—(क) जे सरन भजे बनवारी । ते ते राखि लिये जग-जी जहँ जहँ बिपति परी तहँ टारी—१-२२ । (ख) देह छुटत जम पठए, जितक दूत घर मौं । ते ते हथियार आपने, सान धराए त्यौं—१-१५१ । (२) उन्हें, उनको । उ.— अष्टसिद्धि बहुरौ आई । रिषभदेव ते मुँह न लगाई—५-२ ।

वि.—वे । उ.—ते वेली कैसैं दहियत हैं जे अ रस भेइ—१-२६० ।

प्रत्य. [सं. तस्, हिं. तें] (१) से, द्वारा । उ.—सूरदास अक्रूर कृपा ते सही बिपति तन गाढ़ी—२४

तेइ—सर्व. [हिं. ते+ई] वे, उसे । उ.—अपुने कौं न आदर देइ । ज्यौं बालक अपराध कोटि मातु न मानै तेइ—१-२०० ।

तेई—सर्व. [हिं. ते+ई (प्रत्य.)] वे ही, वे लोग ही उ.—(क) सूरदास तेई पद-पंकज त्रिबिध-ताप-दु हरन हमारे—१-६४ । (ख) जिन लोगनि सौं करत है, तेई देखि घिनैहैं—१-८६ ।

तेईस—संज्ञा पुं. [सं. त्रिविंशति, पा. तेवीसति, तेवीस] बीस से तीन अधिक की संख्या ।

तेईसवाँ—वि. [हिं. तेईस+वाँ (प्रत्य.)] क्रम में ते के स्थान पर पड़नेवाला ।

तेउ—संज्ञा पुं. [हिं. तेज] (१) तेज । (२) अग्नि ।

तेउ, तेऊ—सर्व. [सं. ते+हिं. ऊ (प्रत्य.)] वे भी, वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी। उ.—तेऊ चाहत कृपा तुम्हारी जिनकैं बस अनिमिष अनेक गन अनुचर अज्ञाकारी—१-१६३।

तेखना—क्रि. अ. [सं. तीक्ष्ण, हिं. तेहा] नाराज होना।

तेखि—क्रि. अ. [हिं. तेखना] अप्रसन्न या क्रुद्ध होकर।

तेखियो—क्रि. अ. [हिं. तेखना] क्रुद्ध हो (आज्ञार्थक)।

तेखौ—क्रि. अ. [हिं. तेखना] अप्रसन्न हो।

तेग—संज्ञा स्त्री. [अ. तेग़] तलवार, खड्ग।

तेगा—संज्ञा पुं. [अ. तेग़] (१) खाँडा, खड्ग। (२) मेहराव के नीचे का भाग बंद करने का काम।

तेज—संज्ञा पुं. [सं. तेजस्] (१) दीप्ति, कांति, चमक, आभा। उ.—कह्यो, पुरोहित होत न भलौ। बिनसि जात तेज-तप सकलौ—६-५। (२) पराक्रम, जोर, बल। (३) वीर्य। (४) सार, तत्व। (५) ताप, गर्मी। (६) तेजी, प्रचंडता। (७) प्रताप, रोब। (८) पाँच तत्वों में से तीसरा, अग्नि। उ.—पृथ्वी अप तेज वायु नभ संज्ञा शब्द परस अरु गंध—सारा. ८।

वि. [फ़ा. तेज़] (१) पैनी धार का। (२) शीघ्र चलनेवाला। (३) फुरतीला। (४) तीखा, झालदार। (५) महँगा। (६) उग्र, प्रचंड। (७) असर या प्रभाववाला। (८) तीक्ष्ण बुद्धि का। (९) बहुत चपल या चंचल।

तेजधारी—वि. [सं. तेजोधारिन्] तेजस्वी, प्रतापी।

तेजन—संज्ञा पुं. [सं.] तेज उत्पन्न करने की क्रिया या भाव।

तेजना—क्रि. स. [हिं. तजना] त्याग देना।

तेजनो—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मूर्ख। (२) तेजबल।

तेजपत्ता, तेजपत्र, तेजपात—संज्ञा पुं. [सं. तेजपत्र] एक पेड़ का पत्ता जो बहुत सुगंधित होता है।

तेजपुंज—संज्ञा पुं. [सं. तेजस् + पुंज=समूह।] दीप्ति-निधि, कांति निधि, आभापुंज। उ.—तड़ित-बसन घन-स्याम-सदृस तन, तेजपुंज तम कौ नासै—१-६९।

तेजल—संज्ञा पुं. [सं.] चातक, पपीहा।

तेजवंत, तेजवान—वि. [सं. तेजोवान्] (१) तेजयुक्त, तेजस्वी। (२) वीर्यवान। (३) बली, बलवान्। (४) चमकीला, चमकदार।

तेजस्—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कांति, आभा। (२) वीर्य।

(३) प्रताप, तेज।

तेजसी—वि. [हिं. तेजस्वी] तेज से पूर्ण।

तेजस्कर—वि. [सं.] अपना तेज बढ़ानेवाला।

तेजस्वत्—वि. [सं.] तेजस्वी, तेज से युक्त।

तेजस्वी—वि. [सं. तेजस्विन्] (१) जिसमें तेज या कांति हो। (२) प्रतापी। (३) प्रभावशाली।

तेजा—संज्ञा पुं. [फ़ा. तेज] महँगी, तेजी।

तेजाब—संज्ञा पुं. [फ़ा. तेज़ाब] किसी क्षार पदार्थ का अम्लसार जो बहुत तेज होता है।

तेजायतन—संज्ञा पुं. [सं. तेज+आयतन] परम तेजस्वी।

तेजिष्ठ—वि. [सं.] तेजस्वी, तेजी से युक्त।

तेजी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. तेज़ी] (१) तेज होने का भाव। (२) प्रबलता। (३) उग्रता, प्रचंडता। (४) शीघ्रता। (५) महँगी।

तेजोमंडल—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य, चंद्रमा आदि के चारो ओर का आकाश-मंडल।

तेजोमय—वि. [सं.] जिसमें खूब कांति या तेज हो।

तेजोरूप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ब्रह्म। (२) जो अग्नि-रूप हो।

तेजोहत—वि. [सं.] जिसका तेज नष्ट हो, श्रीहत।

तेज्यो—क्रि. स. [हिं. तजना] त्याग दिया।

तेतना, तेता—वि. [हिं. तितना] उतना, उसके बराबर।

तेतिक—वि. स्त्री. [हिं. तेता] उतना, उसके बराबर। उ.—धर्म कहै सर-सयन गंग-सुत तेतिक नाहिं सँतोष—१-२११।

तेती—वि. स्त्री. [हिं. तेता] उतनी, उसके बराबर। उ.—(क) प्रभु जू यों कीन्हीं हम खेती। बंजर भूमि, गाउँ हर जोते, अरु जेती की तेती—१-१८५। (ख) सेवा तुम जेती करी पुनि दैहौं तेती—२६१६।

तेते—वि. पुं. बहु. [हिं. तेता] उतने, उसी प्रमाण के। इहिं विधि इहिं डहके सबै, जल-थल-नभ-जिय जेते (हो)। चतुर-सिरोमनि नंद-सुत, कहौं कहाँ लगि तेते (हो)—१४४।

तेतो, तेतौ—वि. पुं. [हिं. तेता] उतना।

तेपि—पद [हिं. ते+अपि] वे भी।

तेमन—संज्ञा पुं. [सं.] पका हुआ भोजन, व्यंजन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरवाँ, तेरहवाँ—वि. [हिं. तेरह + वाँ (प्रत्य.)] क्रम में तेरह के स्थान में पड़नेवाला।

तेरस—संज्ञा स्त्री. [सं. त्रयोदशी] पक्ष की तेहरवीं तिथि।

तेरह—संज्ञा पुं. [सं. त्रयोदश, प्रा. तेद्दह, अर्द्धमा. तेरस] दस और तीन की संख्या।

तेरहीं—संज्ञा स्त्री. [हिं. तेरह] मृत्यु के दिन से तेहरवाँ दिन जब पिंडदान और ब्राह्मण-भोजन करके मृतक के घरवाले शुद्ध होते हैं।

तेरा—सर्व. [सं. तव] तू का संबंधकारक-रूप।

तेरिय—सर्व. [हिं. तेरी + ही] तेरी ही। उ.—बैठत उठत चलत गउ चारत तेरिय लीला गावै—२०३२।

तेरी—सर्व. स्त्री. [हिं. पुं. तेरा] तू का संबंधकारक स्त्रीलिंग रूप।

मुहा.—तेरी सी—तेरे लाभ या मतलब की।

तेरुस—संज्ञा पुं. [हिं. त्योरुस] (१) बीता हुआ तीसरा वर्ष। (२) आनेवाला तीसरा वर्ष।

तेरे—वि. [हिं. तेरा] तुझसे संबंधित। उ.—कैसैं कहौं-सुनौं जस तेरे—१-२०६।

अव्य. [हिं. ते] से।

तेरैं—वि. [हिं. तेरा] तुझसे संबंधित। उ.—द्वार परयौ है तेरैं—१-२०६।

तेरौ, तेरयौ—वि. [हिं. तेरा] तेरा। उ.—(क) प्रभु तेरौ वचन भरोसौ साँचौ—१-३२। (ख) मूँदन ते नैन कहत कौन ज्ञान तेरयौ—३०५७।

तेल—संज्ञा पुं. [सं. तैल] (१) बीजों-बनस्पतियों से निकलनेवाला चिकना तरल पदार्थ, रोगन। (२) विवाह की एक रीति जिसमें वर को वधू का नाम लेकर तेल चढ़ाया जाता है। इसके पश्चात विवाह-संबंध पक्का समझा जाता है।

मुहा.—तेल उठना (चढ़ना)—तेल की रस्म होना। तेल उटाना (चढ़ाना)—तेल की रस्म पूरी करना।

तेलवाई—संज्ञा पुं. [हिं. तेल + वाई (प्रत्य.)] (१) शरीर में तेल लगाना या मलना। (२) विवाह में कन्या पक्षवालों की ओर से वर पक्ष वालों को तेल भेजने की रस्म। (३) वर,वधू को तेल चढ़ाये जाते समय नाई को दी जानेवाली निछावर।

तेलहन—संज्ञा स्त्री. [हिं. तेल] वे बीज (जैसे तिल, सरसों) जिनसे तेल निकलता है।

तेलहा—वि. पुं. [हिं. तेल] (१) जिसमें से तेल निकले। (२) तेल-संबंधी। (३) जिसमें चिकनाहट हो।

तेला—संज्ञा पुं. [हिं. तीन+बेला] तीन दिन का उपवास।

तेलिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. तेली] तेली की स्त्री।

तेलिया—वि. [हिं. तेल] तेल सा चिकना-चमकीला।

संज्ञा पुं. [हिं. तेल+इया (प्रत्य.)] (१) काला चिकना और चमकीला रंग। (२) इस रंग का पक्षी या पदार्थ।

तेली—संज्ञा पुं. [हिं. तेल + ई (प्रत्य.)] एक शूद्र जाति जो प्रायः तेल पेरने का व्यवसाय करती है।

मुहा.—तेली का वृष (बैल)—हर समय काम में जुटा रहनेवाला आदमी। उ.—महा मूढ़ अज्ञान तिमिर महँ, मगन होत सुख मानि। तेली के वृष लौं नित भरमत, भजत न सारँगपानि—१-१०३।

तेवन—संज्ञा पुं. [सं. अंतेवन] (१) क्रीड़ा, केलि, विनोद। (२) क्रीड़ास्थल।

तेवर—संज्ञा पुं. [सं. त्रिकुटी, पु. हिं. तेउरी] (१) क्रोध की दृष्टि।

मुहा.—तेवर चढ़ना—दृष्टि से क्रोध प्रकट होना। तेवर बदलना (बिगड़ना) (१) मुहब्बत न करना। (२) अप्रसन्न होना। (३) मृत्यु की छाया या चिह्न प्रकट होना। तेवर बुरे दिखायी देना (नजर आना)—प्रेम में अंतर पड़ना। तेवर मैले होना—दृष्टि से दुख, क्रोध या उदासीनता प्रकट होना।

(२) भौंह, भृकुटी।

तेवराना—क्रि. अ. [हिं. तेवर + आना] (१) चिंता या संदेह में पड़ना। (२) चकित होना। (३) मूर्छित होना।

तेवान—संज्ञा पुं. [देश.] चिंता, सोच, विचार।

तेवाना—क्रि. अ. [देश.] सोचना, चिंता करना।

तेह—संज्ञा पुं. [हिं. तेहा] (१) क्रोध, गुस्सा। (२) घमंड, अहंकार। (३) तेजी, प्रचंडता।

तेहर—संज्ञा स्त्री. [सं. त्रि + हार] तीन लड़ों की करधनी।

तेहरा—वि. पुं. [हिं. तीन + हरा] (१) तीन परत का। (२) एक साथ तीन तीन। (३) तीसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया हुआ। (४) तिगुना।

तेहराना—क्रि. स. [हिं. तेहरा] (१) तीन परतों का। (२) तीसरी बार दोहराना।

तेहा—संज्ञा पुं. [हिं. तेह] (१) क्रोध। (२) घमंड।

तेहि, तेही—सर्व. [सं. ते] उस, वे। उ.—असी सहस किंकर-दल तेहि के, दौरे मोहिं निहारि—६-१०४।

तेही—संज्ञा पुं. [हिं. तेहा] (१) क्रोधी। (२) घमंडी।

तेहेदार, तेहेबाज—वि. [हिं. तेहा + फ़ा. दार, बाज़] (१) गुस्सैल। (२) अभिमानी, शेखी बघारनेवाला।

तैं—क्रि. वि. [हिं. ते] से। उ.—(क) लच्छा-गृह तैं काढ़ि कै पांडव गृह ल्यावै—१-४। (ख) भीर के परे तैं धीर सबहिनि तजी खंभ तैं प्रगट ह्वै जन छुड़ायौ—१-५। (ग) ब्रह्म-अस्त्र तैं ताहि बचायौ। .... | तुव सराप तैं मरिहै सोइ—१-२९०।

सर्व. [सं. त्वं] तू, तूने। उ.—तैं अज्ञान करी सन्नाई। उनकी महिमा तैं नहिं पाई—४-५।

तैंतिस, तैंतीस—वि. [हिं. तैंतीस] तीस और तीन, तैंतीस। उ.—तैंतीस कोटि देव बस कीन्हे, ते तुमसौं क्यौं हारे—६-१०५।

तै—क्रि. वि. [सं. तत्] उतना, उस मात्रा का।

संज्ञा पु. [अ.] (१) निबटेरा, फैसला। (२) पूरा करना। (३) तह, परत।

वि.—(१, निबटाया हुआ। (२) समाप्त किया हुआ।

तैजास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चमकीला पदार्थ। (२) घी। (३) वीर मनुष्य। (४) भगवान्। (५) राजस अवस्था में प्राप्त अहंकार।

वि.—तेज से उत्पन्न, तेज-संबंधी।

तैत्तिरि—संज्ञा पुं. [सं.] एक ऋषि।

तैत्तिरीय—संज्ञा स्त्री. [सं.] कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा।

तैनात—वि. [अ. तपअय्युन] नियत, नियुक्त।

तैनाती—संज्ञा स्त्री. [हिं. तैनात] नियुक्ति।

तैयार—वि. [अ.] (१) ठीक या कामलायक।

मुहा.—तैयार होना—अभ्यास से मँज जाना।

(२) उद्यत, तत्पर, मुस्तैद। (३) उपस्थित, मौजूद। (४) मोटा-ताजा।

तैयारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तैयार] (१) ठीक या दुरुस्त होने की क्रिया या भाव। (२) तत्परता, मुस्तैदी। (३) मोटाई। (४) धूमधाम, सजावट।

तैयै—क्रि. अ. [हिं. तयना] संतप्त हुए, पीड़ित हुए। उ.—गौतम-रूप बिना जो जैयै। ताके साप अगिनि सौं तैयै—६-८।

तैयो—क्रि. वि. [हिं. तऊ] तो भी, तिस पर भी।

तैरना—क्रि. अ. [सं. तरण] (१) पानी पर ठहरना या उतराना। (२) हाथ-पैर चलाकर पानी में पैरना।

तैराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तैरना + आई (प्रत्य.)] तैरने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तैराक—वि. [हिं. तैरना + आक (प्रत्य.)] तैरने में कुशल।

तैराना—क्रि. स. [हिं. तैरना का प्रे.] (१) तैराने में दूसरे को लगाना। (२) घुसाना, धँसाना।

तैर्थ—वि. [सं.] तीर्थ से संबंधित।

संज्ञा पुं.—वह कार्य जो तीर्थ में किया जाय।

तैलंग—संज्ञा पुं. [सं. त्रिकलिंग] दक्षिण भारतीय एक देश।

तैलंगी—संज्ञा पुं. [सं. तैलंग] तैलंग देश का निवासी।

संज्ञा स्त्री.—तैलंग देश की भाषा।

वि.—तैलंग देश से संबंधित।

तैलयंत्र—संज्ञा पुं. [सं.] तेल पेरने का कोल्हू।

तैलिक—संज्ञा पुं. [सं.] तेली।

वि.—तेल-संबंधी।

तैलिक जंत्र (यंत्र)—संज्ञा पुं. [सं. तैलिक यंत्र] कोल्हू

तैश—संज्ञा पुं. [अ.] क्रोधावेश, गुस्सा।

तैष—संज्ञा पुं. [सं.] चांद्र पौष मास।

तैस, तैसा—वि. [सं तादृश, प्रा. ताइस] उस प्रकार का, 'वैसा' का पुराना रूप।

तैसि, तैसी—वि. [हिं. तैसा] तैसी, वैसी ही, उसी प्रकार की। उ.—देखियत नहिं भवन माँझ, जैसोइ तन, तैसि साँझि, छल सौं कछु करत फिरत महरि कौ जिठेरौ—१०-२७६।

तैसियै—वि. [हिं. तैसा] तैसी ही, उसी प्रकार की। उ.—(क) त्यौं-त्यौं मोहन नाचै ज्यौं ज्यौं रई-घमर कौ होइ (री)। तैसियै किंकिनि-धुनि पग-नूपुर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहज मिले सुर दोइ (री)—१०-१४८। (ख) अरु तैसियै गाल मसूरी। जो खातहिं सुख-दुख दूरी—१०-१८३।

तैसे—क्रि. वि. [हिं. तैसा] वैसे, उसी प्रकार से।

तैसेइ—वि. [हिं. तैसा + ही] तैसे ही, वैसे ही। उ.—उ.—तैसेइ हरि, तैसेइ सब बालक, कर भौंरा-चकरीनि की डोरी—६६६।

तैसैं—क्रि. वि. [हिं. तैसा] वैसे ही। उ.—जहाँ-जहाँ सुमिरे हरि जिहि बिधि तहँ तैसैं उठि धाए (हो)—१-७।

तैसो—वि. [हिं. तैसा] वैसा, उसी प्रकार का। उ.—लूट लूट दधि खात सखन सँग वैसो स्वाद न पाई—८६४ सारा.।

तैसोइ—वि. [हिं. तैसा + ही (प्रत्य.)] वैसा ही। उ.—जैसोइ बोइयै तैसोइ लुनिए, कर्मन भोग अभागे—१६१।

तोँ—क्रि. वि. [हिं. त्यों] त्यों।

तोंद—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] पेट का बढ़ा हुआ फुलाव।

मुहा.—तोंद पचना-(१) पेट का फुलाव घटना, मोटापा दूर होना। (२) घमंड या शेखी निकल जाना।

तोंदल, तोंदिल—वि. [हिं. तोंद] तोंदवाला।

तोंदी—संज्ञा स्त्री. [सं. तुंड] नाभी, ढोंढी।

तोंबो—संज्ञा स्त्री. [हि. तूंबो] (१) कड़ुआ कद्दू या घीया। (२) इससे बना साधुओं का पात्र।

तोंहका—सर्व. [हिं. तुम] तुम्हें।

तो—सर्व. [सं. तव] तेरा, तुम्हारा।

वि.—तेरे। उ.—(क) कै अधर्म तो ऊपर होत—१२६०। (ख) रे कपि, क्यों पितु-बैर बिसारयौ। तो समतुल कन्या विन उपजी, जो कुल-सत्रु न मारयौ—९-१३४।

अव्य.—[सं. तद्] तब, उस दशा में।

अव्य. [सं. तु] एक अव्यय जिसका व्यवहार प्रायः किसी बात पर जोर देने के लिए किया जाता है।

सर्व. [हिं. तू] 'तू' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के समय प्राप्त होता है।

क्रि. अ. [हिं. हतो] था।

तोइ—संज्ञा पुं. [सं. तोय] पानी।

तोई—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) पट्टी, गोट। (२) नेफा।

तोक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) श्रीकृष्ण का एक सखा। (२) शिशु, संतान।

तोख—संज्ञा पुं. [सं. तोष] संतोष।

तोटका—संज्ञा पुं. [हिं. टोटका] टोना-टुटका।

तोड़—संज्ञा पुं. [हिं. तोड़ना] (१) तोड़ने की क्रिया या भाव। (२) जल का तेज बहाव। (३) प्रभाव को नष्ट करने का पदार्थ या काम। (४) दही का पानी। (५) बार, दफा। (६) दांव, पेंच।

तोड़ना—क्रि. स. [हि. टूटना] (१) टुकड़े करना। (२) नोच कर अलग करना। (३) खंडित या भंग करना। (४) सेंध लगाना। (५) बल, प्रभाव, महत्व आदि घटाना। (६) दाम कम करना। (७) संबंध या व्यवस्था नष्ट करना। (८) नियम या निश्चय स्थिर न रखना। (९) मिटा देना, बना न रहने देना। (१०) दृढ़ या कायम न रहन देना।

तोड़वाना—क्रि. स. [हिं. तोड़ना का प्रे.] तोड़ने में लगाना, तुड़ाना।

तोड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. तोड़ना] (१) सोने-चाँदी की जंजीर। (२) हजार रुपए की थैली। (३) नदी का किनारा। (४) घाटा, कमी।

संज्ञा पुं. [सं. तुंड या टोंटा] फलीता, पलीता।

तोण—संज्ञा पुं. [सं. तूण] तरकश, तूणीर।

तोत—संज्ञा पुं. [फ़ा. तोदः] (१) समूह। (२) खेत।

तोतई—वि. [हिं. तोता + ई] तोते के रंग का।

संज्ञा पुं.—तोते का सा धानी रंग।

तोतक—संज्ञा पुं. [हिं. तोता] पपीहा।

तोतर, तोतरा तोतल, तोतला—वि. [हिं. तोतला] (१) तुतलानेवाला। (२) अस्पष्ट स्वर या उच्चारण।

तोतराना, तोतलाना—क्रि. अ. [हिं. तुतलाना] तुतला कर बोलना अस्पष्ट स्वर में बोलना।

तोतरी—वि. स्त्री. [हिं. तोतला, तुतली] अस्पष्ट, तुतली। उ.—(क) मन-मोहनी तोतरी बोलनि मुनि-मन हरनि सु हँसि मुसुकनियाँ—१०-१०... (ख) बोलत स्याम तोतरी बतियाँ हँसि-हँसि दति...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूमे—१०-१४७।

तोतरे—वि. [हिं. तुतले] (१) अस्पष्ट, तोतले। उ.—(क) कबहुँ तोतरे बोल बोलत, कबहुँ बोलत तात—१०-१००। (ख) कल-बल बचन तोतरे बोलैं—१०-११७। (ग) गोद लिए ताकौं हलरावैं, तोतरे बैन बुलावै—१०-१३०। (घ) तब जो खिलायो गोद मैं बोलि तोतरे बैन—३४४३।

(२) तुतलानेवाले।

तोतरैं—वि. [हिं. तोतला] अस्पष्ट, जो (वचन) स्पष्ट न हो। उ.—कब द्वै दाँत दूध के देखौं, कब तोतरैं मुख बचन भरै—१०-७६।

तोता—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) एक पक्षी, कीर, सूआ।

मुहा.—तोता पालना—किसी दोष, रोग या दुर्व्यसन को जान-बूझकर बढ़ाना।

तोताचश्म, तोतेचसम—संज्ञा पुं. [फ़ा. तोताचश्म] तोते की तरह आँख फेर लेनेवाला, बेमुरव्वत आदमी।

तोताचशमी, तोतेचसमी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. तोताचश्म] बेमुरव्वती, बेवफाई।

तोती—संज्ञा स्त्री. [हिं. तोती] (१) तोते की मादा। (२) उपपत्नी, रखैल।

तोते—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. तोता] कई तोते।

मुहा.—हाथों के तोते उड़ जाना—सहसा किसी अनिष्ट के कारण बहुत घबरा जाना। तोते की तरह आँख फेरना (बदलना)—बहुत बेमुरव्वत होना।

तोद—संज्ञा पुं. [सं.] व्यथा, पीड़ा।

वि.—पीड़ा देनेवाला।

तोदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कोड़ा। (२) कष्ट।

तोप—संज्ञा स्त्री. [तु.] एक अस्त्र जिसमें पलीता लगाकर बड़े बड़े गोले चलाये जाते हैं।

तोपची—संज्ञा पुं. [अ. तोप + ची] तोप चलानेवाला।

तोपना—क्रि. स. [सं. छोपन] नीचे दबाना, गाड़ना।

तोपवाना—क्रि. स. [हिं. तोपना का प्रे.] नीचे दबवाना, ढँकवाना, छिपवाना।

तोपा—संज्ञा पुं. [हिं. तुरपना] एक टाँके की सिलाई।

तोपाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तोपना] तोपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तोपाना—क्रि. स. [हिं. तोपना] नीचे दबवाना।

तोफगी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. तोहफ़ा] खूबी, अच्छापन।

तोफा—वि. [फ़ा. तोहफा] बढ़िया।

संज्ञा पुं.—भेंट, सौगात, उपहार।

तोबड़ा—संज्ञा पुं. [फ़ा. तोबर:] थैली या पात्र जिसमें दाना भर कर घोड़े के मुँह पर बाँध दिया जाता है।

तोबा—संज्ञा स्त्री. [अ. तौब:] अनुचित कार्य भविष्य में पुनः न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा।

तोम—संज्ञा पुं. [सं. स्तोम] समूह, ढेर।

तोमड़ा, तोमरि, तोमरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तूँबड़ा] कड़ुई घीया या लौकी। उ.—फलन माँझ ज्यों करुई तोमरि रहत घुरे पर डारी—३०३५।

तोमैं—सर्व. [हिं. तो + मैं (प्रत्य.)] तुझमें। उ.—जमुना तोहिं बह्यौ क्यौं भावै। तोमैं कृष्ण हेलुआ खेलै, सो सुरत्यौ नहिं आवै—५६१

तोय—संज्ञा पुं. [सं] जल, पानी।

तोयडिंब—संज्ञा पुं. [सं.] ओला, पत्थर।

तोयद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मेघ, बादल। (२) घी। (३) जल-दान करनेवाला।

वि.—जल देनेवाला।

तोयधर, तोयधार—संज्ञा पुं. [सं.] मेघ, बादल।

तोयधि, तोयनिधि—संज्ञा पुं. [सं.] समुद्र, सागर।

तोर—वि. [हिं. तेरा] तेरा। उ.—पावक परौं, सिंधु महँ बूड़ौं, नहिं मुख देखौं तोर—६-८३।

संज्ञा पुं. [हिं. तोड़] तोड़ने की क्रिया या भाव।

क्रि. स. [हिं. तोड़ना] तोड़कर।

संज्ञा पुं. [सं. तुवर] अरहर।

तोरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) घर या नगर का मंडपाकार सजाया हुआ फाटक। (२) सजावट के लिए लटकायी गयी बंदनवार। (३) गला, ग्रीवा। (४) शिवजी।

तोरति—क्रि. स. [हिं. तोड़ना] तोड़ती है। उ.—प्रभु बरष-गाँठि जोरति, वा छबि तर तृन तोरति, सूर अरस-परसनि—१०-९६।

तोरन, तोरना—संज्ञा पुं. [सं. तोरण] मालाएं, बंदनवार। उ.—(क) प्रति प्रति-गृह तोरन-ध्वजा-धूप। सजे सजल कलस अरु कदलि-यूप—९-१६६। (ख) बाजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाजैं गहगहे (हो), बाजैं मंदिर भेरि। मालिनि बाँधै तोरना (रे) आँगन रोपैं केरि—१०-४०।

संज्ञा स्त्री. [हिं. तोड़ना] तोड़ने की क्रिया या भाव, तोड़ने को। उ.—अपने भुजबल तोलत तोरन धनुष पुरार—सारा. २१८।

तोरना—क्रि. स. [हिं. तोड़ना] भंग करना, तोड़ना।

तोरा—सर्व. [हिं. तेरा] तुम्हारा।

क्रि. स. [हिं. तोड़ना] तोड़ा, भंग किया।

तोराना—क्रि. स. [हिं. तुड़ाना] तोड़ने में लगाना।

तोरावान्—वि. [सं. त्वरावत्] वेगवान, तेज।

तोरि—क्रि. स. [हिं. तोड़ना] (१) तोड़कर, अलग करके। उ.—किन अकास तैं तोरि तरैया आन धरी घर माई—३३४३। (२) संबंध विच्छेद करके। उ.—कहा लाइ तैं हरि सौं तोरी ? हरि सौं तोरि कौन सौं जोरी—१-३०३।

तोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तुरई] तुरई की बेल या फल।

क्रि. स. [हिं. तोड़ना] (१) तोड़ दी, अलग की। टुकड़े टुकड़े की। उ.—(क) कठिन जु गाँठि परी माया को तोरी जाति न भटकैं—१-२६०। (ख) नवल छबीले लाल तनी चोली की तोरी—३२०८।

मुहा.—डारतिं तृन तोरी—नजर से बचाने के लिए टोटके के रूप में तिनका तोड़ती हैं। उ.—सूरदास प्रभु हँस हँसि खेलत, ब्रज बनिता डारतिं तृन तोरी—६६६।

(२) संबंध विच्छेद किया। उ.—(क) कहा लाइ तैं हरि सौं तोरी ? हरि सौं तोरि कौन सौं जोरी—१-३०३। (ख) सूरदास प्रभु प्रीति रीति कत ते तुम सब अब रहे तोरी—२८६०।

सर्व. [हिं. तेरा] तेरी। उ.—सूर-स्याम सौं कहति जसोदा, दूध पियहु बलि तोरी—७१२।

तोरे—क्रि. स. [हिं. तोड़ना] तोड़े, तोड़ दिये, तोड़ता है। उ.—(क) देखि सरूप न रही कछू सुधि, तोरे तबहिं कंठ तैं दाम—१०-१५७। (ख) तोरे पात पलास, सरस दोना बहु ल्याए—४३७। (ग) अंचल चीरि अभूषन तोरे—७७१।

सर्व. [हिं. तेरा] तेरे, तुम्हारे।

वि.—तोड़े हुए।

मुहा.—एक डार के से तोरे—एक ही गुण, प्रकृति या स्वभाव के, एक ही थैली के से चट्टे-बट्टे। उ.—जोइ जोइ आवत वा मथुरा तें एक डार के से तोरे—३०५६।

तोरेउ—क्रि. स. [हिं. तोड़ना] तोड़ा, टुकड़े टुकड़ किया। उ.—तब मुनि कहेउ धनुष क्यों तोरउ रुद्र परम गुरु मोरे—सारा. २३७।

तोरैं—क्रि. स. [हिं. तोड़ना] नष्ट-भ्रष्ट करें, तहस-नहस करें। उ.—सूरदास प्रभु लंका तोरैं, फेरैं राम-दुहाई—६-११७।

तोरै—क्रि. स. [हिं. तोड़ना] (१) दूर करे, मिटा दे, बना न रहने दे। उ.—मन मैं डरी, कानि जिनि तोरै, मोहिं अबला जिय जानि। नख-सिख-बान सँभारि, सकुच गहिं पानि—६-७६। (२) तोड़ता है, खंड खंड करता है। उ.—हार तोरै चीर फारै नन चलै चुराइ—७८०

तोरौ—सर्व. [हिं. तेरा] तेरा। उ.—गनिका तरी आपनी करनी, भयौ नाम प्रभु तोरौ—१-१३२।

क्रि. स. [हिं. तोड़ना] (१) तोड़ा। उ.—सूरदास प्रेम-फँद तोरौ नहि जाइ—२८८०। (२) तोड़ दिया। उ.—कठिन निर्दय नंद के सुत जोरि तोरौ नेह—३२७५।

तोरयौ—क्रि. स. भूत. [हिं. तोड़ना] (१) तोड़ दिया, खंड खंड किया। (२) मिटाया, नष्ट किया। उ.—(क) पग सों चाँपि धींच बल तोरयौ—५५७। (ख) लोक-वेद तिनुका सो तोरयौ—१२०१।

तोल—संज्ञा स्त्री. [हिं. तौल] भार, तौल।

वि. [सं. तुल्य] तुल्य, समान, बराबर।

तोलत—क्रि. स. [हि. तोलना] तोलते हैं, अंदाज लगाते हैं। उ.—अपने अपने भुजबल तोलत तोरन धनुष पुरारि—सारा. २१८।

तोलन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तोलने की क्रिया या भाव। (२) उठाने की क्रिया या भाव।

संज्ञा स्त्री. [सं. उत्तोलन] सहारे की लकड़ी, चाँड़।

तोलना—क्रि. स. [हिं. तौलना] (१) वजन करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) लक्ष्य साधना। (३) मिलान करना। (४) पहिये में तेल देना, चिकनाना।

तोला—संज्ञा पुं. [सं. तोलक] महँगी चीजें तौलने की बारह माशे की एक तौल।

तोले—क्रि. स. [हिं. तोलना] अंदाज लगाये, पता लगाये, छान-बीन किये, जाने। उ.—यह सुनि लछिमन भये क्रोध-जुत विषय बचन यों बोले। सूरज-बंस नृपति भूतल पर जाके बल बिनु तोले—सारा.—२२३।

तोलैं—क्रि. स. [हिं. तौलना] तौलते हैं। उ.—कुबिजा भई स्याम-रँग-राती, तातैं सोभा पाई। ताहि सबै कंचन सम तोलैं अरु श्री निकट समाई—१-६३।

तोलै—क्रि. स. [हिं. तौलना] (१) तौलता है, वजन करता है। उ.—कंचन काँच कपूर कटु खरी एकहिं सँग क्यौं तोलै—३२६४। (२) परखता है, जाँचता है। उ.—प्रीति पुरातन पोरी उनसों नेह कसौटी तोलै—३०९१। (३) लक्ष्य या निशाना साधता है। उ.—लोचन मृग जुभग जोर राग-रूप भये भोर भौंह धनुष सर कटाच्छ सुरति व्याध तोलै री—१५५३।

तोश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हिंसा। (२) हिंसक।

तोशक—संज्ञा स्त्री. [तु.] गुदगुदा बिछौना।

तोशल—संज्ञा पुं. [सं.] कंस का एक मल्ल जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। उ.—और मल्ल मारे शल तोशल बहुत गये सब भाज—सारा. ५२३।

तोशा, तोसा—संज्ञा पुं. [फ़ा. तोशः] (१) खाने-पीने की चीज। (२) यात्रा के लिए भोजन, पाथेय।

संज्ञा पुं. [देश.] गँवारू स्त्रियों का एक गहना।

तोष, तोस—संज्ञा पुं. [सं. तोष] (१) संतोष, तुष्टि, तृप्ति। उ.—भयौ तोष दसरथ के सुत कौं, सुनि नारद कौ ज्ञान लखायौ—९-१४१। (२) प्रसन्नता, आनंद। उ.—परम स्वाद सबही सु निरंतर अमित तोष उपजावै—१-२। (३) श्रीकृष्ण का एक सखा।

तोषक, तोसक—वि. [सं.] संतुष्ट करनेवाला।

तोषण, तोषन—संज्ञा पुं. [सं.] तृप्ति संतोष, आनंद।

तोषना—क्रि. स. [सं. तोष] संतुष्ट या प्रसन्न करना।

क्रि. अ.—संतुष्ट, तृप्त या प्रसन्न होना।

तोषल—संज्ञा पुं. [सं.] कंस का एक मल्ल जिसे धनुर्यज्ञ में श्रीकृष्ण ने मारा था।

तोषित—वि. [सं.] तृप्त, तुष्ट, संतुष्ट, प्रसन्न।

तोष्यौ—क्रि. स. [हिं. तोषना] संतुष्ट, तृप्त या प्रसन्न किया। उ.—वैसी आपदा तैं राख्यौ, तोष्यौ, पोष्यौ, जिय दयौ, मुख-नासिका-नयन-स्रौन-पद-पानि-१-७७।

तोसी—सर्व. [हिं. तो + सी (प्रत्य.)] तेरे समान, तेरी सी। उ.—लरिकिनी सबनि घर, तोसी नहिं कोउ निडर, चलति नभ चितै, नहिं तकति धरनी—६९८।

तोसौं—सर्व. [हिं. तो = तेरा + सौं (प्रत्य.)] तुझसे। उ.—सतगुरु कह्यौ, कहौं तोसौं हौं, राम-रतन धन सँचिबौ—१-५९।

तोहफगी—संज्ञा स्त्री. [अ. तोहफा + फ़ा. गी] भलापन।

तोहफा—संज्ञा पुं. [अ.] भेंट, उपहार, सौगात।

वि.—अच्छा, बढ़िया, उत्तम।

तोहमत—संज्ञा स्त्री. [अ.] झूठा कलंक या दोष।

तोहार, तोहारा—सर्व. [हिं. तेरा] तेरा, तुम्हारा।

तोहिं, तोहीं—सर्व [हिं. तू या तैं] तुझे, तुझको। उ.—नर कौ नाम पारगामी हो, सो तोहिं स्याम दयौ—१-७८।

तौंस—संज्ञा स्त्री. [सं. ताप + हिं. ऊमस] वह प्यास जो धूप खा जाने पर लगती है और पानी पीने पर भी शांत नहीं होती।

तौंसना—क्रि. अ. [हिं. तौंस] गरमी से झुलस जाना।

तौंसा—संज्ञा पुं. [हिं. तौंस] कड़ी गरमी।

तौ—क्रि. वि. [सं. तद्, हिं. तो] उस दशा में, तब।

क्रि. वि. [सं. तु, हिं. तो] एक अव्यय जिसका व्यवहार किसी शब्द पर जोर देने के लिए अथवा यों ही किया जाता है।

क्रि. अ. [पु. हिं. हतो] था।

वि. [सं. तव] तेरा, तुम्हारा।

तौऊ—क्रि. वि. [हिं. तब + ऊ (प्रत्यय.)] तो भी, तिस पर भी, तब भी, तथापि। उ.—जैसैं जननि-जठर-अंतरगत सुत अपराध करै। तौऊ जतन करै अरु पोषै, निकसैं अंक भरै—१-११७।

तौक—संज्ञा पुं. [अ. तौक़] (१) हँसुली की तरह गले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का एक गहना । (२) इसी तरह की लोहे की बहुत भारी पटरी जो कैदियों के गले में पहनायी जाती है। (३) हँसुली की तरह का पक्षियों के गले का चिन्ह । (४) गोल घेरा ।

तौचा—संज्ञा पुं. [देश.] देहाती स्त्रियों का एक गहना ।

तौतिक—संज्ञा पुं. [सं.] मोती, मोती की सीप ।

तौन—सर्व. [सं. ते] वह, सो । उ.—(क) रोकनहारो नंदमहर सुत कान्ह नाम जाको है तौन—११७२ । (ख) ननदी तौन दिये बिनु गारी नैकहूँ न रहति—१४६२ ।

तौनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तवा का अल्पा.] छोटा हल्का तवा। सर्व. स्त्री. [हिं. तौन] वह, सो ।

तौर—संज्ञा पुं. [अ.] (१) चालढाल, चाल-चलन । (२) दशा, अवस्था ।(३) तर्ज, तरीका । (४)प्रकार, भांति। संज्ञा पुं. [देश.] मथानी मथने की रस्सी ।

तौरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. ताँवरि] घुमेर, घुमरी, चक्कर ।

तौर्य—संज्ञा पुं. [सं.] ढोल-मँजीरा आदि बाजे ।

तौल—संज्ञा पुं. [सं. तोलन] (१) तराजू । (२)तुला राशि। संज्ञा स्त्री.—(१) किसी चीज का भार, वजन । (२) तौलने की क्रिया या भाव ।

तौलना—क्रि. स. [सं. तोलन] (१) वजन करना । (२) लक्ष्य भेदने के लिए अस्त्र साधना । (३) तुलना या मिलान करना । (४) पहिये में तेल देना ।

तौलवाई, तौलाई—संज्ञा. स्त्री. [हिं. तौलना+वाई, आई (प्रत्य.)] तौलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

तौलवाना, तौलाना—क्रि. स. [हिं. तौलना का प्रे.] तौलने का काम दूसरे से कराना ।

तौला—संज्ञा पुं [हिं. तौलना] (१) दूध नापने का बड़ा बरतन । (२) अनाज तौलनेवाला मनुष्य ।

तौली—संज्ञा स्त्री. [देश.] चौड़े मुँह का बरतन ।

तौले—क्रि. स. [हिं. तौलना] वजन करे । उ—तुला बिच लौ केस तौले गरुअ आनन गोर—१७०३ ।

तौलै—क्रि. स. [हिं. तौलना] लक्ष्य भेदने के लिए अस्त्र साधता है । उ.—लोचन मृग सुभग जोर राग-रूप भये भोर भौह धनुष सर कटाछु सुरधि ब्याध तौलै री।

तौलैया—संज्ञा पुं. [हिं. तौलना+ऐया] तौलनेवाला ।

तौलौं—क्रि. वि. [हिं. तौ+लौं=तक] तब तक, उस समय तक । उ.—(क) आमिष-रुधिर-अस्थि अँग जौलौं तौलौं कोमल चाम—१-७६ । (ख) जब लगि जिय घट-अंतर मेरैं, को सरवरि करि पावै । चिरंजीवि दुरजोधन तौलौं जियत न पकरयो आवै—१-२७५।

तौषार—संज्ञा पुं. [सं.] तुषार या पाले का जल।

तौसना—क्रि. अ. [हिं. तौंस] गरमी से व्याकुल होना। क्रि. स.—गरमी पहुँचाकर व्याकुल करना।

तौहीन, तौहीनी—संज्ञा स्त्री. [अ. तौहीन] अपमान।

तौहू—क्रि. वि. [हिं. तौ+हू (प्रत्य.)] तिसपर भी उ.—खोजत नाल कितौ जुग गयौ । तौहू मैं कछु मरम न लयौ—२-३७ ।

त्यक्त—वि. [सं.] त्यागा या छोड़ा हुआ ।

त्यक्ता—वि. [सं.] जिसने त्याग किया हो ।

त्यजन—संज्ञा पुं. [सं.] त्यागने का काम या भाव।

त्यजनीय—वि. [सं.] जो त्यागने के योग्य हो।

त्यहि—वि. [हिं. तेहि] उस । उ.—यह सुनि कै सबन को बंधन दीनों है त्यहि काल—सारा.४८०।

त्याग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) किसी पदार्थ या पद को अपने से अलग करने की क्रिया, उत्सर्ग । (२) किसी बात को छोड़ने की क्रिया । (३) संबंध न रखने की क्रिया । (४) संसार से विरक्त होकर विषयों को छोड़ने की क्रिया ।

त्यागना—क्रि. स. [सं. त्याग] छोड़ना, तजना।

त्यागपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] इस्तीफा ।

त्यागवान्—वि. [सं.] जो त्याग करे, त्यागी।

त्यागि—क्रि. स. [हिं. त्यागना] छोड़कर, तजकर। उ.—(क) आसंकर बहु रतन त्यागि कै, बिषहिं कंठ धरि लेइ—१२०० । (ख) काल-अवधि पूरन भई जा दिन, तनहूँ त्यागि सिधारयौ—१-३३६ ।

त्यागी—वि. [सं. त्यागिन्] जिसने सर्वस्व त्याग दिया हो, विरक्त ।

क्रि. स. स्त्री. भू. [हिं. त्यागना] त्याग दी।

त्यागूँ—क्रि. स. [हि. त्यागना] छोड़ दूँ, संबंध न रखूँ। उ.—सुत प्रहलाद प्रतिज्ञा मेरी तोधौं कबहूँ न त्यागूँ—सारा. १३३ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्यागे—क्रि. स. [हिं. त्यागना] त्याग दिये, छोड़ दिये, तजे। उ.—और देव सब रंक भिखारी, त्यागे बहुत अनेरे—१-१७० ।

त्यागै—क्रि. स. [हिं. त्यागना] (१) त्याग दे, छोड़ दे। उ.—सूर जो द्वै रंग त्यागै, यहै भक्त सुभाइ—१-७०। (२) त्याग देता है, संबंध नहीं रखता। उ.—सत्य पुरुष सो दीन गहत है, अभिमानी कौं त्यागै—१-२४४ ।

त्याग्यौ—क्रि. स. [हिं. त्यागना] त्याग दिया। उ.—करि संकल्प अन्न-जल त्याग्यौ—१-३३१ ।

त्याज—क्रि. स. [हिं. तजना] त्याग कर, छोड़कर। उ.—दुखिरा द्रौपदी जानि जगतपति आए खगपति त्याज—१-२६६ ।

त्याजन—क्रि. स. [हिं. त्यागना] त्याग करना।

त्याज्य—वि. [सं.] त्यागने या छोड़ने लायक।

त्यार—वि. [हिं. तैयार] प्रस्तुत, कटिबद्ध।

त्यूँ, त्यौं—क्रि. वि [सं. तत् + एवम्] (१) उसी प्रकार, उस तरह। (२) उसी समय, तत्काल।

संज्ञा पुं.—ओर, तरफ।

अव्य.—और, तथा।

त्योंही—क्रि. वि. [हिं. त्यों+ही (प्रत्य.)] उसी प्रकार, उसी तरह, उसी भाँति। उ.—जैसैं सुक नृप कौं समुझायौ। सूरदास त्यौं ही कहि गायौ—१०-२।

त्योरस, त्योरुस—संज्ञा पुं. [हिं. ति (तीन) + बरस] (१) पिछला तीसरा वर्ष। (२) आगे का तीसरा वर्ष।

त्योराना—क्रि. अ. [हिं. ताँवर] सर में चक्कर आना।

त्योरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. त्रिकुटी] दृष्टि, निगाह।

मुहा.—त्योरी चढ़ना (बदलना, में बल पड़ना)—क्रोध से आँखें लाल होना। त्योरी चढ़ाना (बदलना, में बल डालना)—क्रोध से आँखें या भौंह चढ़ाना।

त्योहार—संज्ञा पुं. [सं. तिथि + वार] धार्मिक या जातीय उत्सव मनाने का दिन, पर्व।

त्योहारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. त्योहार] त्योहार के उपलक्ष में नौकरों आदि को दिया जानेवाला धन या भोजन।

त्यौं—क्रि. वि. [हिं. त्यौ] (१) उस तरह। (२) उसी समय।

त्यौनार—संज्ञा पुं. [हिं. तेवर] ढंग, तर्ज।

त्यौर—संज्ञा पुं. [हिं. त्योरी] दृष्टि, नजर।

त्यौराना—क्रि. अ. [हिं. ताँवर] सर में चक्कर आना।

त्र—'त' और 'र' से बना एक संयुक्ताक्षर जो शब्द के अंत में प्रत्यय-रूप में जुड़कर 'एक स्थान पर किया या लाया हुआ' का अर्थ देता है।

त्रपा—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) लाज, शर्म। (२) दुराचारिणी स्त्री। (३) कीर्ति, यश।

त्रपा, त्रपित—वि. [सं.] लज्जित, शर्मिंदा।

त्रय—वि. [सं.] (१) तीन। उ.—दीन जन क्यौं करि आवै सरन ? भूल्यौ फिरत सकल जल-थल-मग, मुनहु ताप-त्रय-हरन—१-४८। (२) तीसरा।

त्रयताप—संज्ञा पुं. [सं.] दैहिक, दैविक और भौतिक, तीन प्रकार के कष्ट।

त्रयताप-हरन—संज्ञा पुं. [सं. त्रयताप+हिं. हरना] तीनों प्रकार के—दैहिक, दैविक और भौतिक—कष्ट दूर करनेवाला, ईश्वर। उ.—सुनु त्रयताप-हरन करुनामय, संतत दीनदयालु—१-२०१।

त्रयी—संज्ञा स्त्री. [सं.] तीन वस्तुओं का समूह।

त्रयोदश—वि. [सं.] तेरह।

त्रयोदशी—संज्ञा स्त्री. [सं.] पक्ष की तेरहवीं तिथि।

त्रष्टा—संज्ञा स्त्री. [सं. तष्टा] तश्तरी।

त्रस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जंगल। (२) चर (जीव)।

त्रसत—क्रि. अ. [हिं. त्रसना] डरता है।

त्रसन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) भय, डर। (२) आवेश।

त्रसना—क्रि. अ. [सं. त्रसना] भय से काँपना, डरना।

त्रसाना—क्रि. स. [हिं. त्रसना] डराना, धमकाना।

त्रसायौ—क्रि. स. [हिं. त्रसाना] डराया, धमकाया, भय दिखाया। उ.—सूर स्याम बैठे ऊखल लगि, माता डर तन अतिहिं त्रसायौ—३६६।

त्रसावत—क्रि. स. [हिं. त्रसाना] डराता-धमकाता है, भय दिखाता है। उ.—गौरी-पति पूजत ब्रजनारि। ....। सरन राखि लीजै सिव संकर तनहिं त्रसावत मार—७६६।

त्रसावै—क्रि. स. [हिं. त्रसाना] डराती(डराता) है। उ.—जाकौ सिव ध्यावत निसि बासर सहसानन जेहि गावै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो। सो हरि राधा बदन चंद को नैन चकोर त्रसावै हो—२५६०।

त्रसित—वि. [सं. त्रस्त] (१) डरा हुआ, भयभीत। (२) दुखी, पीड़ित, सताया हुआ।

त्रसुर—वि. [सं.] कायर, डरपोक, भीरु।

त्रसै—क्रि. अ. [हिं. त्रसना] डरता या भयभीत होता है। उ.—मदन त्रसै तुम आगे—१८६६।

त्रस्त—वि. [सं.] (१) भयभीत, डरा हुआ। (२) दुखित, पीड़ित। (३) चकित, विस्मित।

त्राटक—संज्ञा पुं. [सं.] योग का एक साधन जिसमें एकटक किसी विंदु पर दृष्टि जमायी जाती है।

त्राण, त्रान—संज्ञा पुं. [सं.] रक्षा। रक्षा का साधन।

त्राणक—संज्ञा पुं. [सं.] रक्षक।

त्राता, त्रातार—संज्ञा पुं. [सं. त्रातृ] रक्षक, बचानेवाला। उ.—तौ को अस त्राता जु अपुन करि, कर कुठाँव पकरैगौ—१-७५।

त्रास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) डर, भय। उ.—(क) कर्म लखि त्रास आवै—१-११०। (ख) कहा मल्ल चानूर कुबलिया अब जिय त्रास नहीं तिन नैको—२५५८। (२) कष्ट, तकलीफ। उ.—गरभ-बास अति त्रास, अधोमुख, तहाँ न मेरी सुध बिसरी—१-११६। (३) मणि का एक दोष।

त्रासक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) डरानेवाला, भयभीत करनेवाला। (२) दूर करनेवाला, निवारक।

त्रासत—क्रि. स. [हिं. त्रासना] डराता है, भय दिखाता है। उ.—(क) कौर-कौर कुबुद्धि जड़ किते सहत अपमान। जहँ जहँ जात तहीं तहिं त्रासत अस्म, लकुट, पद-त्रान—१-१०३। (ख) गोप-गाइ-गोसुत जल-त्रासत, गोबर्धन कर धारयौ—१-१५८।

त्रसति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. त्रासन] डराती है, धमका कर, त्रास देकर। उ.—(क) सुनौ सूर ग्वालिनि की बातैं, त्रासति कान्ह जु मोर—१०-३२०। (क) अहो जसोदा कत त्रासति हौ यहै कोख कौ जायौ—३५६।

त्रासन—संज्ञा पुं. [सं.] डराने की क्रिया का भाव।

त्रासना—क्रि. स. [सं. त्रास] डराना, भय दिखाना।

त्रासमान—वि. [सं. त्रास+मान] डरा हुआ, भयभीत।

त्रासित—वि. [सं.] (१) डरा हुआ, भयभीत। (२) दुखी, पीड़ित, त्रस्त।

त्रासी—वि. [सं.] दुखी, पीड़ित। उ.—(क) इतनो सँदेसो कहियो ऊधौ कमल नैन बिनु त्रासी—३४२२। (ख) प्रेम न मिले धेनु दुर्बल भई स्याम बिरह की त्रासी—३४३६।

त्रासै—क्रि. स. [हिं. त्रासना] भयभीत करता है, डराता है। उ.—तड़ित-बसन घन-स्याम-सहस तन, तेज-पुंज तम कौं त्रासै—१-६६।

त्रास्यौ—क्रि. स. [हिं. त्रासना] डराया, भय दिखाया, उ.—काहे कों कलह नाध्यौ, दारुण दाँवरि बाँध्यौ, कठिन लकुट लै त्रास्यो मेरो भैया।

त्राहि—अव्य. [सं.] बचाओ, रक्षा करो।

मुहा.—त्राहि करी—हारी मान ली, परेशान हो गये। उ.—चित्रगुप्त जम-द्वार लिखत हैं मेरे पातक भारि। तिनहूँ त्राहि करी सुनि औगुन कागद दीन्हे डारि—१-१६७। त्राहि-त्राहि करी (पुकारी, भाख्यो) दया या अभयदान के लिए गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की। उ.—(क) त्राहि त्राहि द्रौपदी पुकारी गई बैकुंठ अवाज खरी—१-२४६। (ख) त्राहि त्राहि कहि नंद पुकारयौ देखत ठौर गिरे भहराई—५४४। (ग) त्राहि त्राहि हरि सौं सब भाख्यो दूर करो सब सोक।

त्रिंश—वि. [सं.] तीसवाँ।

त्रिंशत—वि. [सं.] तीस।

त्रि—वि. [सं.] तीन।

त्रिए—संज्ञा स्त्री. [हिं. त्रिया] स्त्री, युवती। उ.—(क) सूरदास प्रभु नवल रसीले वोऊ नवल त्रिए—१७६६। (ख) सूर प्रभु रति रंग राँचे देख रीझी त्रिए-२०६६।

त्रिकंट, त्रिकंटक—संज्ञा पुं. [सं.] त्रिशूल।

वि.—जिसमें तीन नोकें या काँटे हों।

त्रिक—संज्ञा पुं. [सं.] तीन वस्तुओं का समूह।

त्रिककुद्—संज्ञा पुं. [सं.] (१) त्रिकूट पर्वत। (२) विष्णु।

त्रिकाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तीनों समय-भूत, वर्तमान, भविष्य। (२) तीनों समय--प्रातः, मध्याह्न, सायं।

त्रिकालज्ञ—संज्ञा पुं. [सं.] भूत, वर्तमान और भविष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बात जाननेवाला ।

त्रिकालज्ञता—संज्ञा पुं. [सं.] भूत, वर्तमान और भविष्य की बात जानने की शक्ति या भाव ।

त्रिकालदर्शक, त्रिकालदर्शी—संज्ञा स्त्री. [सं.] भूत, वर्तमान और भविष्य की बात जाननेवाला ।

त्रिकालदर्शिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] भूत, वर्तमान और भविष्य की बात जानने की शक्ति या भाव ।

त्रिकुट—संज्ञा पुं. [सं. त्रिकूट] एक पर्वत ।

त्रिकुटी—संज्ञा स्त्री. [सं. त्रिकूट] दोनों भौंहों के बीच के कुछ ऊपर त्रिकूट चक्र का स्थान। उ.—(क) त्रिकुटी संगम भ्र भंग तराटक नैन लागि लागे—२२१४। (ख) त्रिकुटी संगम ब्रह्मदार भिदि यों मिलिहैं बनमाली—२४६२ ।

त्रिकुल—संज्ञा पुं. [सं]पितृ, मातृ और श्वसुर-कुल ।

त्रिकूट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पर्वत जिसकी तीन चोटियां हों। (२) वह पर्वत जिस पर लंका बसी थी और जहां भगवती निवास करती मानी गयी हैं। (३) एक कल्पित पर्वत जो सुमेरु का पुत्र माना गया है और जिसकी तीन चोटियों में एक सोने की है और दूसरी चांदी की। (४) एक पर्वत । सूरदास के अनुसार अगस्त्य के शाप से राजा इंद्रद्युम्न इस पर्वत के रूप में हो गये थे। कालांतर में वे गज हुए और ग्राह से युद्ध होने पर नारायण ने इनका उद्धार किया। उ.—राजा इंद्रद्युम्न कियौ ध्यान । आये अगस्त्य नहीं तिन जान। दियौ साप गजेंद्र तू होहि । कह्यौ नृप, दया करौ रिषि मोहिं। ··· भयौ त्रिकूट पर्वत गज सोइ—८-२ । (५) योग में मस्तक के छः कल्पित चक्रों में पहला जो दोनों भौंहों के बीच कुछ ऊपर की ओर माना गया है। (६) सेंधा नमक ।

त्रिकोण—संज्ञा पुं. [सं.] तीन कोने का क्षेत्र ।

त्रिखा—संज्ञा स्त्री. [सं. तृषा] (१) प्यास। (२) इच्छा ।

त्रिगुण, त्रिगुन—संज्ञा पुं. [सं. त्रिगुण] प्रकृति के सत्व, रज और तम नामक तीन गुण ।

वि.—तीन गुना, तिगुना ।

त्रिगुणात्मक—वि. [सं.] सत्व, रज और तम, तीनों गुणों से युक्त। उ.—माया कौं त्रिगुणात्मक जानौ। सत-रज-तम ताके गुन मानौ—३-१३ ।

त्रिचक्षु—संज्ञा पुं. [सं. त्रिचक्षुस्] महादेव, शिव ।

त्रिजग—संज्ञा पुं. [सं. तिर्यक्] आड़ा चलनेवाला जीव ।

संज्ञा पुं. [सं. त्रिजगत्] तीनों लोक ।

त्रिजट—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव ।

त्रिजटा, त्रिजटी—संज्ञा स्त्री. [सं.] विभीषण की बहन जो सीता जी के पास अशोकवाटिका में रहती थी ।

संज्ञा पुं. [सं. त्रिजट] शिव, महादेव ।

त्रिजामा—संज्ञा स्त्री. [सं. त्रियामा] रात, रात्रि ।

त्रिज्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] वृत्त का अर्द्ध व्यास ।

त्रिण—संज्ञा पुं. [सं. तृण] तिनका, घासफूस ।

त्रितय—संज्ञा पुं. [सं.] धर्म, अर्थ और काम ।

त्रिताप—संज्ञा पुं. [सं. त्रि+ताप] दैहिक, दैविक और भौतिक ताप या कष्ट ।

त्रिदश, त्रिदस—संज्ञा पुं. [सं. त्रिदश] देवता, सुर । उ.—(क) त्रिदस-नृपति, रिषि व्योम बिमाननि, देखत रह्यौ न धीर। त्रिभुवननाथ दयालु दरस दै, हरी सबनि की पीर—९-१६। (ख) जानौं हौं बल तेरौ रावन। ········। दारुन कीस सुभट बर सनमुख, लैहौं संग त्रिदस-बल पावन—९-१३२। (ग) निरखत बरखत कुसुम त्रिदसजन सूर सुमति मन फूल। (घ) त्रिदस कोटि अमरन कौं नायक जानि-बूझि इन मोहिं भुलायौ—६३२।

त्रिदशगुरु—संज्ञा पुं. [सं.] देवगुरु, बृहस्पति ।

त्रिदशनृपति—संज्ञा पुं [सं.] देवराज, इंद्र ।

त्रिदशपति, त्रिदसपति—संज्ञा पुं. [सं. त्रिदशपति] इंद्र । उ.—चतुर्मुख त्रिदसपति बिनय हरि सौं करी, बलि असुर सौं सुरनि दुःख पायौ—८-८ ।

त्रिदशवधू—संज्ञा स्त्री. [सं.] अप्सरा ।

त्रिदशांकुश, त्रिदशायुध—संज्ञा पुं. [सं.] वज्र ।

त्रिदशारि—संज्ञा पुं. [सं. त्रिदश+अरि] असुर ।

त्रिदशालय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) स्वर्ग। (२) सुमेरु ।

त्रिदिव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) स्वर्ग। (२) आकाश ।

त्रिदश—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव ।

त्रिदेव—संज्ञा पुं. [सं.] ब्रह्मा, विष्णु और महेश ।

त्रिदोष—संज्ञा पुं. [सं.] (२) बात, पित्त और कफ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोष। (२) वात, पित्त और कफ-जनित रोग, सन्निपात। उ.—ज्यों त्रिदोष उपजे जक लागत बोलति बचन न सूधो—३६१३।

त्रिदोषज—संज्ञा पुं. [सं.] सन्निपात रोग।

त्रिदोषना—क्रि. अ. [सं. त्रिदोष] (१) वात, पित्त और कफ का दोष होना। (२) काम, क्रोध और लोभ के फेर में पड़ना।

त्रिधा—क्रि. वि. [सं.] तीन प्रकार या तरह से।
वि.—तीन प्रकार या तरह का।

त्रिधातु—संज्ञा पुं. [सं.] सोना, चाँदी और ताँबा।

त्रिधाम—संज्ञा पुं. [सं. त्रिधामन्] (१) विष्णु। (२) शिव। (३) अग्नि। (४) मृत्यु। (५) स्वर्ग।

त्रिधामूर्ति—संज्ञा पुं. [सं.] परमेश्वर।

त्रिधारा—संज्ञा स्त्री [सं.] स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल में बहनेवाली गंगा नदी।

त्रिन—संज्ञा पुं. [सं. तृण] तिनका, घास-फूस।

त्रिनयन, त्रिनेत्र—संज्ञा पुं [सं.] शिव, महादेव।

त्रिपथ—संज्ञा पुं. [सं] कर्म, ज्ञान और उपासना।

त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी—संज्ञा स्त्री [सं.] स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल लोक में बहनेवाली गंगा।

त्रिपद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तिपाई। (२) त्रिभुज। (३) वह जिसके तीन पद या चरण हों। (४) तीन कदम या पग।

त्रिपदव्याज—संज्ञा पुं. [सं. त्रिपद+व्याज] तीन पग (नापने) के बहाने उ.—बलि बल देखि, अदिति सुत कारन त्रिपदव्याज तिहुँ पुर फिरि आई—१-६।

त्रिपाठी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तीन वेदों का जाननेवाला। (२) ब्राह्मणों की एक जाति, त्रिवेदी।

त्रिपिंड—संज्ञा पुं. [सं.] श्राद्ध में पिता, पितामह और प्रपितामह के उद्देश्य से दिये गये पिंड।

त्रिपिटक—संज्ञा पुं. [सं.] गौतमबुद्ध के उपदेशों का संग्रह जो बौद्ध-धर्म का प्रधान ग्रंथ है।

त्रिपितात—क्रि. अ. [हिं. तृप्ति+आना] तृप्त होता (होती) या अघाता (अघाती) है। उ.—जैसे तृषावंत जल अँचवत वह तौ पुनि ठहरात। यह आतुर छबि लै उर धारति नेकु नहीं त्रिपितात—१६६२। (ख) जे षट्रस सुख भोग करत हैं ते कैसे खरि खातें। सुनो सूर लोचन हरि रस तजि हम सों क्यों त्रिपि- तात—पृ. ३३३। (ग) तऊ कहूँ त्रिपितात नाहीं रूप-रस की ढेरि—पृ. ३३४।

त्रिपिताना—क्रि. अ. [सं. तृप्ति+हिं. आना (प्रत्य.)] तृप्त होना, अघाना।

त्रिपुंड, त्रिपुंड्र—संज्ञा पुं. [सं. त्रिपुंड्र] भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का तिलक जो शैव-शाक्त लगाते हैं।

त्रिपुटी—संज्ञा स्त्री. [सं.] तीन वस्तुओं का समूह।

त्रिपुर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तीन नगर जो तारकासुर के तीन पुत्रों—तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली के लिए मयदानव ने बनाये थे। इनमें पहला सोने का स्वर्ग में था, दूसरा चाँदी का अंतरिक्ष में था और तीसरा लोहे का मर्त्यलोक में। शिव जी ने एक ही वाण में इन तीनों को नष्ट कर दिया था। उ.—तब मय दीन्हौ कोट बनाई। लोह तरैं, मधि रूपौ लायो। ताकें ऊपर कनक लगायौ। जहँ लै जाइ तहाँ वह जाइ। त्रिपुर नाम सो कोट कहाइ—७-७। (२) वाणासुर का एक नाम। (३) तीनों लोक। (४) चंदेरी नगर।

त्रिपुरघ्न, तिपुरदहन—संज्ञा पुं. [सं.] शिव।

त्रिपुरारि—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव।

त्रिफला—संज्ञा पुं. [सं.] हड़, बहेड़ा और आँवले का समूह या चूर्ण।

त्रिबलि, त्रिबली—संज्ञा स्त्री. [सं.] पेट पर पड़नेवाले तीन बल जिनकी गणना स्त्री के सौंदर्य में होती है।

त्रिबिध—वि. [सं. त्रिविध] तीन प्रकार का। उ.—उ.—सूरदास तेई पद-पंकज त्रिबिध-ताप-दुख-हरन हमारे—१-६४।

त्रिबिक्रम—संज्ञा पुं. [सं. त्रिविक्रम] (१) विष्णु। (२) वामन का अवतार।

त्रिबेनी—संज्ञा स्त्री. [सं. त्रिवेणी] (१) तीन नदियों का संगम। (२) गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम।

त्रिभंग—वि. [सं.] तीन जगह से टेढ़ा या बलखाया। उ.—(क) तनु त्रिभंग, सुभग अंग, निरखि लजत अनंग, ग्वाल बाल लिए संग, प्रमुदित सब हियै—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४६०। (ख) तनु त्रिभंग, जुग जानु एक पग, ठाढ़े इक दरसाए—६३१। (ग) ललित बर त्रिभंग सु तनु, बनमाला सोहै—६६२।

संज्ञा स्त्री.—टेढ़ापन लिये खड़े होने की मुद्रा।

त्रिभंगी—वि. [सं.] तीन जगह से टेढ़ा, तीन मोड़ का, त्रिभंग।

संज्ञा स्त्री.—टेढ़ापन लिये खड़े होने की मुद्रा।

संज्ञा पुं. [सं.] त्रिभंग मुद्रा से खड़े होनेवाले श्रीकृष्ण। उ.—कहा कूबरी सील-रूप-गुन ? बस भए स्याम त्रिभंगी—१-२१।

त्रिभू—वि. [सं.] जिसमें तीन नक्षत्र हों।

त्रिभुज—संज्ञा पुं. [सं.] तीन रेखाओं से घिरा क्षेत्र।

त्रिभुवन—संज्ञा पुं. [सं.] तीनों लोक—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।

त्रिभुवननाथ—संज्ञा पुं. [सं.] त्रिलोक के स्वामी।

त्रिभुवनराइ, त्रिभुवनराई, त्रिभुवनराय—संज्ञा पुं. [सं. त्रिभुवन + हिं. राय] तीनों लोक के स्वामी। उ.—बिप्रनि अस्तुति बिबिध सुनाई। पुनि कह्यौ सुनियै त्रिभुवनराई—५-२।

त्रिमद—संज्ञा पुं. [सं.] कुल, धन और विद्या का घमंड।

त्रिमधु, त्रिमधुर—संज्ञा पुं. [सं.] घी, शहद और चीनी।

त्रिमूर्ति—संज्ञा पुं. [सं.] ब्रह्मा, विष्णु और शिव।

त्रिय, त्रिया, त्रियो—संज्ञा स्त्री. [सं. स्त्री.] स्त्री, औरत। उ.—(क) सुत-धन-धाम-त्रिया हित औरै लह्यौ बहुत बिधि भारौ—१-२१३। (ख) ऐसी कृपा करी नहिं, जब त्रिय नगन समय पति राखी—५६६। (ग) सूरदास प्रभु भौंह निहारत चलत त्रिया के रंग—१७७८। (घ) सूरस्याम प्रभु के बहुनायक मोसी उनके कोटि त्रियो—१६४६।

त्रियाचरित्र—संज्ञा पुं. [हिं. त्रिया+सं. चरित्र] स्त्रियों का छल-कपट पूर्ण व्यवहार जिसे समझने में बड़े-बड़े बुद्धिमान प्रायः चूक जाते हैं।

त्रियामक—संज्ञा पुं. [सं.] पाप।

त्रियामा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) रात। (२) यमुना नदी।

त्रियुग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) विष्णु। (२) वसंत, वर्षा और शरद ऋतुएँ। (३) सत्ययुग, त्रेता और द्वापर।

त्रिरत्न—संज्ञा पुं. [सं.] बुद्ध, धर्म और संघ का समूह।

त्रिरेख—संज्ञा पुं. [सं.] शंख।

वि.—जिसमें तीन रेखाएँ हों।

त्रिलोक—संज्ञा पुं. [सं.] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक।

त्रिलोकनाथ, त्रिलोकपति, त्रिलोकीनाथ, त्रिलोकीपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तीनों लोकों का स्वामी ईश्वर। (२) राम। (३) कृष्ण। (४) विष्णु का कोई अवतार।

त्रिलोकी—संज्ञा स्त्री. [सं. पुं. त्रिलोक] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक।

त्रिलोचन—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव।

त्रिलोचना, त्रिलोचनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] दुर्गा।

त्रिवर्ग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अर्थ, धर्म और काम। (२) वृद्धि, स्थिति और क्षय। (३) सत्व, रज और तम। (४) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य।

त्रिवलि, त्रिवलिका, त्रिवली—संज्ञा स्त्री. [स. त्रिवली] पेट पर पड़नेवाले तीन बल जो स्त्री के सौंदर्य में गिने जाते हैं।

त्रिविक्रम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वामन। (२) विष्णु।

त्रिविद्—संज्ञा पुं. [सं.] तीनों वेदों का ज्ञाता।

त्रिविध—वि. [सं.] तीन प्रकार या तरह का।

क्रि. वि.—तीन प्रकार या तरह से।

त्रिवृत्त—वि. [सं.] तीन गुना, तिगुना।

त्रिवेणी, त्रिवेनी—संज्ञा स्त्री. [सं. त्रिवेणी] (१) तीन नदियों या धाराओं का संगम। (२) गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का संगम जो प्रयाग में है। उ.—सुभ कुरुक्षेत्र अजोध्या मिथिला प्राग त्रिवेनी न्हाये—सारा. ८२८। (३) इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों का संगम-स्थान।

त्रिवेद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ऋक्, यजु और सामवेद। (२) इन वेदों में वर्णित कर्म। (३) इन वेदों का ज्ञाता।

त्रिवेदी—संज्ञा पुं. [सं. त्रिवेदिन्] (१) ऋक्, यजु और सामवेदों का ज्ञाता। (२) ब्राह्मणों की एक जाति।

त्रिशंकु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक सूर्यवंशी राजा जो सशरीर स्वर्ग जाना चाहते थे; इंद्र ने उन्हें पृथ्वी की ओर ढकेला, परंतु विश्वामित्र ने अपने तप-बल से रोक लिया। तबसे ये अधर में उलटे लटके माने जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। (२) एक तारा जो त्रिशंकु के रूप में प्रसिद्ध है।

त्रिशंकुज—संज्ञा पुं. [सं.] त्रिशंकु के पुत्र हरिश्चंद्र।

त्रिशक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) इच्छा, ज्ञान और क्रिया रूपी शक्तियाँ। (२) बुद्धितत्व।

त्रिशिर, त्रिशिरा—संज्ञा पुं. [सं. त्रिशिरस्] (१) रावण का एक भाई जो खरदूषण के साथ दंडकवन में रहता था। (२) एक राक्षस।

त्रिशूल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) महादेवजी का तीन फल का एक अस्त्र। (२) दैहिक, दैविक और भौतिक दुख।

त्रिशूली—संज्ञा पुं. [सं. त्रिशूलिन्] शिवजी।

त्रिशृंग—संज्ञा पुं [सं.] (१) त्रिकूट पर्वत जिस पर लंका बसी थी। (२) तीन शृंगों का पर्वत। (३) त्रिकोण।

त्रिसंगम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) किसी प्रकार की तीन चीजों का मेल। (२) तीन धाराओं या नदियों का संगम। उ.—जय जय जय जय माधव बेनी।……… जनु ता लगि तरवारि त्रिबिक्रम, धरि करि कोप उछैनी। मेरु मूठि, बरबारि पाल-छिति, बहुत बित्त की लैनी। सोभित अंग तरंग त्रिसंगम, धरी धार अति पैनी—९-११।

त्रिसंध्य—संज्ञा पुं. [सं.] प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल।

त्रिसर्ग—संज्ञा पुं. [सं.] सत्व, रज और तम—इन तीनों गुणों से बनी सृष्टि।

त्रिस्रोता—संज्ञा पुं. [सं. त्रिस्रोतस्] गया तीर्थ।

त्रिसूल—संज्ञा पुं. [सं. त्रिशूल] शिव जी का अस्त्र।

त्रुटि, त्रुटी—संज्ञा स्त्री. [सं. त्रुटि] (१) कमी, कसर। (२) अभाव। (३) भूल-चूक। (४) वचन-भंग।

त्रुटित—वि. [सं.] (१) टूटा हुआ। (२) घायल।

त्रेता, त्रेतायुग—संज्ञा पुं.] सं.] चार युगों में से दूसरा जो १२९६००० वर्ष का माना जाता है।

त्रै—वि. [सं. त्रय] तीन।

त्रैकालिक—वि. [सं.] तीनों कालों में होनेवाला।

त्रैगुण्य—संज्ञा पुं. [सं.] सत्य, रज और तम—इन तीनों गुणों का भाव या धर्म।

त्रैपद—संज्ञा पुं. [सं. त्रिपद] तीन पैरों में नापने की क्रिया या भाव। उ.—(क) जिहिं बल बलि बंदन करि पठयौ, बसुधा त्रैपद करी प्रमान—१०-३२७। (ख) कबहुँ करत बसुधा तब त्रैपद, कबहुँ देह उलँघि न जाइ—४९७।

त्रैमासिक—वि. [सं.] तीसरे महीने होनेवाला।

त्रैलोक, त्रैलक्य—संज्ञा पुं. [सं.] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल—ये तीनों लोक।

त्रैलोकनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] तीनों लोक के स्वामी श्रीकृष्ण। उ.—नाचत त्रैलोकनाथ माखन के का[रन] —१०-१४६।

त्रैवार्षिक—वि. [सं.] तीन वर्षों में होनेवाला।

त्रैविक्रम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वामन। (२) विष्णु।

त्रोटि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चोंच। (२) एक चिड़िया।

त्रोटी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चोंच। (१) टोंटी।

त्रोण—संज्ञा पुं. [सं.] तरकश, तूणीर।

त्र्यंबक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शिव। (२) एक रु[द्र]

त्वक्—संज्ञा पुं. [सं.] (१) छिलका, छाल। (२) त्व[चा,] खाल। (३) एक ज्ञानेंद्री जो शरीर के ऊपरी भा[ग] में व्याप्त है, जिसके द्वारा गरम, ठंडे आदि का ज्ञा[न] होता है और जिसका देवता वायु मान गया है।

त्वच, त्वचा—संज्ञा स्त्री. [सं. त्वचा] चमड़ा, त्वचा। उ.—(क) तन तैं त्वच भई न्यारी—१-११८। (ख) गउ चटाइ. मम त्वचा उपारौ—६-५।

त्वदीय—सर्व. [सं.] तुम्हारा।

त्वरा, त्वरि—संज्ञा स्त्री. [सं. त्वरा] शीघ्रता, जल्दी।

त्वरावान—वि. [हिं. त्वरा] शीघ्रता करनेवाला।

त्वरित—वि. [सं.] तेज।

क्रि. वि.—शीघ्रता से।

त्वष्टा—संज्ञा पुं. [सं. त्वष्ट] (१) वृत्रासुर के पिता जिन्हों[ने] विश्वरूप नामक पुत्र के मारे जाने पर क्रुद्ध हो[कर] एक जटा से वृत्रासुर को उत्पन्न किया था। उ.—त्वष्टा बिस्वरूप कौ बाप। दुखित भयो मुनि सु[नि] संताप—६-४। (२) विश्वकर्मा। (३) महादे[व]। (४) एक प्रजापति।

त्वाष्ट्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वृत्रासुर। (२) विश्वक[र्मा] का बनाया हुआ हथियार, वज्र। (३) चि[त्रा] नक्षत्र।

त्वाष्ट्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] विश्वकर्मा की कन्या।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थ

थ—देवनागरी वर्णमाला का सत्रहवाँ और तवर्ग का दूसरा व्यंजन जिसका उच्चारण-स्थान दंत हैं।

थंडिल—संज्ञा पुं. [सं. स्थंडिल] यज्ञ की वेदी।

थंब, थंभ—संज्ञा पुं. [सं. स्तंभ] (१) खंभा। उ.—जंघन को कदली-सम जानै। अथवा कनक थंभ सम मानै। (२) सहारा, टेक।

थंबी—संज्ञा स्त्री. [सं. स्तंभी] सहारे की बल्ली, चाँड़।

थंभन—संज्ञा पुं. [सं. स्तंभन] (१) रुकावट। (२) तंत्र-मंत्र का प्रयोग जिसके द्वारा जल-प्रवाह, वर्षा आदि को रोक दिया जाय।

यौ.—जलथंभन—जल-प्रवाह आदि रोकने का मंत्र।

थंभित—वि. [सं. स्तंभित] (१) रुका या ठहरा हुआ। (२) अचल, स्थिर। (३) भय आदि से ठक या स्तब्ध।

थईं—संज्ञा स्त्री. [हिं. ठाँव] (१) जगह। (२) ढेर।

थकत—क्रि. अ. [हिं. थकना] थकती है, क्लांत होती है, श्रांत होती है। उ.—नैंकुहूँ न थकत पानि, निरदई अहीरी—३४८।

थकन, थकर—संज्ञा स्त्री. [हिं. थकना] थकावट।

थकना—क्रि. अ. [सं. स्था + कृ, प्रा. थक्कन] (१) परिश्रम से शिथिल या क्लांत होना। (२) ऊबना, हैरान हो जाना। (३) बुढ़ापे के कारण शक्तिहीन या शिथिल होना। (४) धीमा या मंद पड़ना। (५) मुग्ध या मोहित होकर ठक रह जाना।

थकाई—क्रि. अ. [हि. थकना] मोहित हो गये, लुभाकर अचल रह गये। उ.—मोहे थिर, चर, बिटप बिहंगम, ब्योम बिमान थकाई—६२६।

थकान—संज्ञा स्त्री. [हिं. थकना] थकावट, शिथिलता।

थकाना—क्रि. स. [हिं. थकना] (१) परिश्रम कराते-कराते शिथिल कर डालना। (२) हराना, परेशान या हलकान करना।

थकाने, थकानो—क्रि. अ. [हिं. थकना] थके, शिथिल हुए।

थका-माँदा—वि. [हिं. थकना+माँदा] बहुत शिथिल।

थकायो—क्रि. अ. [हिं. थकना] आश्चर्य से स्तब्ध रह गया या अचल हो गया। उ.—मुनि धुनि चंचल पवन थकायो—१८६०।

थकार—संज्ञा पुं. [सं.] 'थ' अक्षर या इसकी ध्वनि।

थकाव—संज्ञा पुं. [हिं. थकना] थकावट, शिथिलता।

थकावट, थकाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. थकना] थकने का भाव, शिथिलता, क्लांतता।

थकि—क्रि. अ. [हिं. थकना] थककर, क्लांत या श्रांत होकर। उ.—गज बल करि कै थकि रह्यौ—८-२।

थकित—वि. [हिं. थकना] (१) थका हुआ, श्रांत, शिथिल। उ.—(क) ऐसे बीते बरस दिन, थकित भये बिधि पाइ—४९२। (२) उदास, खिन्न, अशक्त। उ.—अधोमुख रहति ऊरध नहिं चितवति ज्यों गथ हारे थकित जुआरी—३४२५। (३) मोहित, मुग्ध। उ.—(१) (क) थकित भए कछु मंत्र न फुरई, कीन्हे मोह अचेत—१-२९। (ख) थकित भई गोपी लखि स्यामहिं। (ग) बरनौ बाल-बेस मुरारि। थकित जित तित अमर-मुनिजन नंद-लाल निहारि—१०-१६६।

थकिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. थक्का] गाढ़ी चीज की तह।

थके—क्रि. अ. [हिं. थकना] थक गये, हार गये। उ.—(क) नारदादि सुकदादि मुनिजन थके करत उपाइ—१-५६। (ख) थके किंकर-जूथ जमके-१-१०६।

थकैनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. थकावट] शिथिलता।

थकौहाँ—वि. [हिं. थकना] थका-माँदा, शिथिल।

थकौहीं—वि. स्त्री. [हिं. पुं. थकौहाँ] थकी हुई।

थक्का—संज्ञा पुं. [सं. स्था+कृ] गाढ़ी चीज की तह।

थक्यौ—क्रि. अ. [हिं. थकना] (१) थका, थक गया। उ.—(क) हिरनकसिपु परहार थक्यौ, प्रहलाद न नैंकु डरै—१-३७। (ख) दुख-समुद्र जिहिं वार-पार नहिं तामैं नाव चलाई। केवट थक्यौ, रही अधबीचहिं कौन आपदा आई—९-१४६। (२) मुग्ध होकर अचल रह गया। उ.—वैसेहि दसा भई जमुना की वैसेहि गति जति पवन थक्यौ—१८३३।

थगित—वि. [हिं. थकित] (१) ठहरा या रुका हुआ। (२) शिथिल, थका-माँदा। (३) मंद, धीमा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. थकित] बठक । चबूतरा ।

थति—संज्ञा स्त्री. [हिं. थाती] धरोहर ।

थतिहार—संज्ञा पुं. [हिं. थाती+हार (प्रत्य.)] वह व्यक्ति जिसके पास धरोहर रखी जाय ।

थत्ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. थाती] ढेर, राशि ।

थन—संज्ञा पुं. [सं. स्तन] चौपायों के स्तन ।

थनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. थन] बकरियों के गले की थन की आकृति की थैलियाँ जिनमें दूध नहीं होता ।

थनु—संज्ञा पुं. [हिं. थन] थन, चौपायों के स्तन । उ.—आनंद-मगन धेनु सबैं थनु पय-फेनु, उमँग्यौ जमुन-जल उछलि लहर के—१०-३० ।

थपकना—क्रि. स. [अनु. थपथप] (१) प्यार या दुलार से धीरे-धीरे थपथपाना । (२) धीरे-धीरे ठोंकना । (३) दिलासा देना, पुचकारना । (४) क्रोध आदि शांत करना ।

थपकी, थपथपी—संज्ञा स्त्री. [हिं. थपकना] (१) प्यार-दुलार से थपथपाने की क्रिया या आघात (२) धीरे-धीरे ठोंकने की क्रिया । (३) थापी, मुँगरी ।

थपड़ी—संज्ञा स्त्री. [अनु. थपथप] (१) हथेलियों से बजायी गयी ताली । (२) ताली का शब्द ।

थपन—संज्ञा पुं. [सं. स्थापन] टिकाना, जमाना ।

थपना—क्रि. स. [सं. स्थापन] (१) बैठाना, जमाना, ठहराना । (२) स्थापित या प्रतिष्ठित करना ।

क्रि. अ.—जमना, गड़ना । प्रतिष्ठित होना ।

थपरा—संज्ञा पुं [हिं. थप्पड़]तमाचा, थप्पड़ ।

थपाना—क्रि. स. [हिं. थपना] स्थापित कराना ।

थापि—क्रि. स. [हिं. थपना] प्रतिष्ठित करके । उ.—सूर प्रभु मारि दसकंध, थपि बंधु तिहिं, जानकी छोरि जस जगत लीजौ—६-१३६ ।

थापिहौं—क्रि. स. [हिं. थपना] प्रतिष्ठित करूँगा । उ.—जब लौं हों जीवौं जीवन भर, सदा नाम तब जपिहौं । दधि-ओदन दोना भरि दैहौं, अरु भाइनि मैं थपिहौं—६-१६४ ।

थपुआ—संज्ञा पुं. [हिं. थपना] चौड़ा-चिपटा खपड़ा ।

थपेटा, थपेड़ा—संज्ञा पुं. [अनु. थपथप] आघात, टक्कर ।

थप्पड़—संज्ञा पुं. [अनु. थपथप] (१) तमाचा, झापड़, हथेली का थपेड़ा । (२) धक्का, टक्कर ।

थम—संज्ञा पुं. [सं. स्तंभ, प्रा. थंभ] (१) खंभा, स्तंभ, थूनी । (२) केलों की पेड़ी । (३) पूजा की सोहाली ।

थमकारी—वि. [सं. स्तंभन] रोकनेवाला । उ.—मन बुधि चित अहंकार दरसै इंद्रिय प्रेरक थमकारी ।

थमना—क्रि. अ. [सं. स्तंभन] (१) रुकना, ठहरना । (२) बंद हो जाना, चालू न रहना । (३) धीरज धरना, उतावला न होना ।

थर—संज्ञा स्त्री. [सं. स्तर] तह, परत ।

संज्ञा पुं. [सं. स्थल] (१) थल, जगह, ठिकाना । उ.—एहि थर बनी क्रीड़ा गज-मोचन और अनंत कथा स्तुति गाई—१-६ । (२) बाघ की मांद ।

थरकना—क्रि. अ. [अनु. थरथर+करना] काँपना ।

थरकाना—क्रि. स. [हिं. थरकना] डर से कँपाना ।

थरथर—संज्ञा स्त्री. [अनु.] डर से काँपने की मुद्रा । उ.—मंडपपुर देखे उर थरथर करै—१०३-१४ ।

क्रि. वि.—डर से काँपते हुए ।

थरथरात—क्रि. अ. [हिं. थरथराना] काँपती है, थरथराती है । उ.—सँटिया लिए हाथ नँदरानी, थरथरात रिस गात—१०-३४१ ।

थरथराना—क्रि. अ. [अनु. थरथर] (१) डर के कारण काँपना, थर्राना । (२) काँपना ।

थरथराने—क्रि. अ. [हिं. थरथराना] डर से काँपने लगे । उ.—सैल से मल्ल वै धाइ आये सरन को भूले लागे तब गोड़ पर थरथराने—२५६५ ।

थरथराय—क्रि. अ. [हिं. थरथराना] काँपकर । उ.—तब मैं थरथराय रिस काँप्यौ—१०६३ ।

थरथराहट, थरथरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. थरथराना] कँपकँपी या कंपनी जो डर के कारण हो ।

थरना—क्रि. स. [हिं. थुरना] चोट या आघात करना ।

थरसना—क्रि. अ. [हिं. त्रसना] (१) पीड़ित होना, कष्ट भोगना । (२) बहुत डर जाना ।

थरसि—क्रि. अ. [हिं. थरसना] बहुत भयभीत होकर । उ.—हौ डरपौं, काँपौं अरु रोवौं, कोउ नहिं धराऊ । थरसि गयौं नहिं भागि सकौं, वै भागे जात अगाऊ—४८१ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है। इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर छै नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड लगेगा।

१००००.६.५६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रक
नवभारत प्रेस, नादान महल रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्रजभाषा सूर-कोश

(पंचम खंड)

निर्देशक

डॉ० दीनदयालु गुप्त, एम० ए०, एल-एल० बी०, डी० लिट्०,
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष हिंदी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

संपादक

डा० प्रेमनारायण टंडन, पी-एच० डी०
प्राध्यापक, हिंदी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

प्रकाशक

लखनऊ विश्वविद्यालय

पाँचवें खंड की शब्द-संख्या—६१५४
पाँचों खंडोंकी शब्द-संख्या—२७६०१

मूल्य—साढ़े तीन [illegible]पया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या 9/1354
पुस्तक संख्या
आगत पञ्जिका संख्या 35,288

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

पुस्तक सं०..............
आगत सं०..............
दिनांक..............

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तकालय

विषय संख्या १ / १३५ V

पुस्तक संख्या

आगत पञ्जिका संख्या

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५,२६८
८-१-६

सिंधु थहाइ—पृ. ३२८।

थरिया - संज्ञा स्त्री [हिं. थाली] थाली।

थरी—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थली] (१) माँद। (२) गुफा।

थरु—संज्ञा पुं. [सं. स्थल] जगह, स्थल।

थर्राना—क्रि. अ. [अनु. थर थर] (१) डर से काँपना। (२) दहलना, भयभीत हो जाना।

थल- संज्ञा पुं. [सं. स्थल] (१) स्थान, ठिकाना। (२) सूखी धरती। (३) थल का मार्ग। (४) रेगिस्तान। (५) बाघ की माँद।

थलकना—क्रि. अ. [सं. स्थूल] (१) झोल से हिलना-डोलना। (२) मोटापे से मांस का डिलना-डोलना।

थलचर—संज्ञा पुं. [सं. स्थलचर] पृथ्वी के जीव-जन्तु।

थलचारी—वि. [सं. स्थलचारी] भूमि पर चलनेवाले।

थलज—संज्ञा पुं. [हिं. थल] (१) स्थल में उत्पन्न होनेवाला पेड़-पौधा आदि। (२) गुलाब।

थलथल—वि. [सं. स्थूल] मोटापे या झोल के कारण हिलता-डोलता हुआ।

थलथलाना—क्रि. अ. [हिं. थलथल या थलकना] मोटापे के कारण शरीर के मांस का हिलना-डोलना।

थलपति—संज्ञा पुं. [सं. स्थल + पति] राजा।

थलरुह—वि. [सं. स्थलरुह] पृथ्वी पर के पेड़-पौधे।

थलिया—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थली] थाली।

थली—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थली] (१) स्थान, जगह। (२) जल के नीचे का तल। (३) बैठने का स्थान। (४) परती जमीन। (५) टीला।

थवई—संज्ञा पुं. [सं. स्थपति, प्रा. थवइ] मकान बनानेवाला, कारीगर, राज, मेमार।

थसर—वि. [सं. शिथिल] शिथिल।

थसरना—क्रि. अ. [सं. शिथिल] शिथिल होना।

थहना—क्रि. स. [हिं. थाह] थाह लगाना।

थहरना—क्रि. अ. [अनु. थरथर] काँपना, थर्राना।

थहरात—क्रि. स. [हिं. थहरान] थर्रा या काँप जाता है। उ.—गगन मेघ घहरात थहरात गात—६६०।

थहराना—क्रि. स. [हिं. टहराना] (१) दुर्बलता से काँपना। (२) भय या डर से काँपना।

थहाइ—क्रि. स. [हिं. थहाना] गहराई का पता लगाकर, थाह लेकर। उ.—सूर कहै ऐसो को त्रिभुवन आवै सिंधु थहाइ—पृ. ३२८।

थहाना—क्रि. स. [हिं. थाह] (१) थाह लेना, गहराई का पता लगाना। (२) किसी की योग्यता, कुशलता, विद्वता, बुद्धि आदि का पता लगाना।

थहारना—क्रि. स. [हिं. ठहराना] जल में ठहराना।

थाँग—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थान या हिं. थान] (१) लुकने-छिपने का गुप्त स्थान। (२) खोयी हुई चीज की खोज, सुराग। (३) गुप्त भेद या पता।

थाँगी—संज्ञा पुं. [हिं. थाँग] (१) चोरी का माल लेने या रखनेवाला। (२) चोरों का भेद जाननेवाला। (३) गुप्तचर, जासूस। (४) चोरों का नायक।

थाँभ—संज्ञा पुं. [सं. स्तंभ] खंभा, थूनी, चाँड़, टेक।

थाँभना—क्रि. स. [हिं. थामना] रोकना, लेना, थामना।

थाँवला—संज्ञा पुं. [हिं. थाला] पौधे का थाला।

था—क्रि. अ. [सं. स्था.] 'है' का भूतकाल, रहा।

थाई—वि. [सं. स्थायिन्, स्थायी] स्थिर रहनेवाला।
संज्ञा पुं.—(१) बैठक, अथाई। (२) गीत का स्थायी या ध्रुव पद जो गाने में बार-बार कहा जाता है।

थाक—संज्ञा पुं. [सं. स्था] (१) सीमा। (२) ढेर।
संज्ञा स्त्री. [हिं. थकना] थकने का भाव।

थाकना—क्रि. अ. [हिं. थकना] थक जाना, शिथिल होना।

थाकी—क्रि. अ. भूत. [हिं. थकना] (१) थक गयी, शिथिल हो गयी। उ.—स्रवन न सुनत, चरन-गति थाकी, नैन भए जलधारी—१-११८। (२) हार गयी, ऊब गयी, परेशान हो गयी। उ.—(क) बार-बार हा-हा करि थाकी मैं तट लिए हँकारी—११४१। (ख) बुधि बल छल उपाइ करि थाकी नेक नहीं मटके—१८५२।

थाकु—संज्ञा पुं. [हिं. थाक] ढेर, राशि, समूह, थोक।

थाके—क्रि. अ. भूत. [हिं. थकना] (१) थक गये। उ.—आँखिनि अंध, स्रवन नहिं सुनियत, थाके चरन समेत—१-२६६। (२) थिर या अचल हो गये। उ.—मेरे साँवरे जब मुरली अधर धरी।.... । चर थाके, अचल टरे—६२३। (३) हार गये, सफल न हुए। उ.—सूर गारुड़ी गुन करि थके, मंत्र न लागत थर तैं—७४४। (४) मंत्र-मुग्ध-से रह गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—धरनि जीव जल-थल के मोहे नभ-मंडल सुर थाके—१७५५ ।

थाकै—क्रि. अ. [हिं. थकना] थक जाय, क्लांत या श्रांत हो जाय। उ.—अचला चलै, चलत पुनि थाकै, चिरंजीवि सो मरई—६-७८ ।

थाकौ—क्रि. अ. [हिं. थकना] थक गया। उ.—हा करुनामय कुंजर टेर्‌यौ, रह्यौ नहीं बल, थाकौ—१-११३ ।

थाक्यौ—क्रि. अ. भूत. [हिं. थकना] (१) थक गया। उ.—थाके हस्त, चरनगति थाकी, अरु थाक्यौ पुरुषारथ—१-२८७। (२) स्थिर या अचल हो गया। उ.—रथ थाक्यौ मानो मृग मोहे नाहिंन कहूँ चंद को टरिवो—२८६०। (३) मुग्ध हो गये। उ.—सुंदर बदन री सुख सदन स्याम को निरखि नैन मन थाक्यौ—२५४६ ।

थाट—संज्ञा पुं. [हिं. ठाट] (१) ढाँचा, पंजर। (२) रचना, बनावट, श्रृंगार। (३) तड़क-भड़क।

थात—वि. [सं० स्थातृ, स्थाता] जो टिका या स्थित हो, ठहरा या बैठा हुआ। उ.—द्वै पिक बिंब बतीस बज्रकन एक जलज पर थात—१६८२ ।

थाति—संज्ञा स्त्री [हिं० थात] स्थिरता, ठहराव।

थाति, थाती—संज्ञा स्त्री. [हिं० थात=स्थित] (१) संचित धन, पूँजी, गथ। उ.—पलित केस, कफ कंठ विरुंध्यौ, कल न परति दिन-राती। माया-मोह न छाँड़ै तृष्ना, ये दोऊ दुख-थाती—१-११८। (२) दूसरे के पास रखी गयी ऐसी वस्तु या संपत्ति जो माँगने पर मिल जाय, धरोहर। उ.—थाती प्रान तुम्हारी मोपै, जनमत हीं जौ दीन्ही। सो मैं बाँटि दई पाँचनि कौं, देह जमानति कीन्ही—१-१६६। (३) कुसमय के लिए संचित वस्तु।

थान—संज्ञा पुं० [सं० स्थान] (१) स्थान, ठौर-ठिकाना। उ०—(क) उहाँई प्रेम भक्ति का थान—२८०६। (२) रहने या ठहरने का स्थान, डेरा, निवासस्थान। उ.—(क) कहियौ बच्छ, सँदेसौ इतनौ जब हम वै इक थान। सोवत काग छुयौ तन मेरौ, बरहहिं कीनौ बान—६-८३। (ख) बिपुल बिभूति लई चतुरानन एक कमल करि थान—२१५। (३) किसी देवी-देवता के रहने का स्थान (४) चौपायों के बाँधने का स्थान।

मुहा.—थान का टर्रा—वह जो अपने घर या स्थान में ही बढ़-बढ़ कर बोले, बाहर कुछ न कर सके। थान में आना—(१) चौपाये का धूल में लोटकर प्रसन्न होना। (२) खुशी में आकर कुलाँचें मारना।

थानक—संज्ञा पुं० [सं० स्थानक] (१) स्थान, ठौर। (२) नगर (३) थाला, थाँवला। (४) फेन, झाग।

थाना—संज्ञा पुं० [सं० स्थान, हिं० थान] (१) टिकने-बैठने का ठौर। (२) पुलिस की चौकी। (३) बाँस का समूह या उसकी कोठी।

थानी—संज्ञा पुं० [सं० स्थानिन्] (१) स्थान का स्वामी या अधिकारी। (२) दिशाओं का स्वामी या रक्षक, दिक्पाल।

वि.—पूर्ण, संपूर्ण, अशेष।

थानु-सुत—संज्ञा पुं० [सं० स्थाणु + सुत] गणेश जी।

थानेत—संज्ञा पुं. [हिं. थानैत] स्थान का स्वामी।

थानेदार—संज्ञा पुं० [हिं० थाना + फा. दार] थाने का प्रधान अधिकारी।

थानेदारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. थानेदार] थानेदार का पद या उसका कार्य और दायित्व।

थानैत—संज्ञा पुं. [हिं. थाना + ऐत (प्रत्य.)] (१) स्थान का स्वामी। (२) स्थान-विशेष का देवता।

संज्ञा पुं. [सं० स्थान] ग्राम-देवता।

थानौ—संज्ञा पुं. [सं० स्थान, हिं. थान] ठिकाने का रहने का स्थान, वासस्थान। उ.—रघुकुल राघव कृस्न सदा ही गोकुल कीन्हौं थानौ—१-११।

थाप—संज्ञा स्त्री. [सं० स्थापन] (१) तबले आदि पर दी गयी थपकी या ठोंक (२) पूरे हाथ या पंजे का आघात, थप्पड़। उ.—बारि बाँधे बीर चहुँघा देखि ही दज्र सम थाप बल कुंभ दीन्हो २५६०। (३) चिन्ह, छाप, थापा। (४) स्थिति, जमाव। (५) प्रतिष्ठा, धाक। (६) मान, कदर। (७) शपथ, कसम।

मुहा—किसी की थाप देना—कसम रखाना।

थपा—क्रि० स० [हिं. थोपना] स्थापित करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३१२६८
८-१-६१

थापन—संज्ञा स्त्री. [हिं. थाप] प्रतिष्ठित या स्थापित करने की क्रिया। उ.—(क) नाना वाक्य धर्म थापन को तिमिर हरन भुव भारन—सारा. ३१८। (ख) कर्मबद्ध थापन को प्रकटे पृश्नि गर्भ अवतार—सारा. ३२१।

थापना—क्रि. स. [सं० स्थापन] (१) बैठाकर, जमाकर या स्थापित करके रखना। (२) किसी गीली चीज को हाथ से पीट-पाट कर कोई आकार देना।

संज्ञा स्त्री. [सं. स्थापना] (१) रखने का कार्य। (२) मूर्ति आदि की स्थापना। (३) नवरात्र में घट-स्थापना।

थापर—संज्ञा पुं. [हिं. थप्पड़] तमाचा, झापड़।

थापरा—संज्ञा पुं. [देश.] छोटी नाव, डोंगी।

थापा—संज्ञा पुं. [हिं. थाप] (१) गीले हाथ से दिया हुआ रोली, चंदन आदि का छापा या चिह्न। (२) देवी-देवता की पूजा का चंदा, पुजौरा। (३) अनाज के ढेर पर डाला गया चिह्न। (४) छापे का सांचा, छापा। (५) ढेर, राशि।

थापि—क्रि. स. [हिं. थापना] प्रतिष्ठित या स्थापित करके।

थापिया, थापी—संज्ञा स्त्री [हिं. थापना] चिपटा और चौड़ा काठ का टुकड़ा।

थापी—वि. [हिं. थापना] लिपा हुआ, सना हुआ, लिप्त। उ.—कामी, बिबस कामिनी कैं रस, लोभ-लालसा थापी—१—१४०।

संज्ञा पुं.—प्रतिष्ठित या स्थापित करनेवाला।

थापे—क्रि. स. [हिं. थापना] प्रतिष्ठित किया। उ.—परसुराम ह्वै के द्विज थापे दूर कियो भुवि भार—सारा. १३६।

संज्ञा पुं. बहु. [हिं. थापा] रोली-चंदन आदि के हाथ से लगाये गये छापे या चिह्न। उ.—घर-घर थापे दीजिए घर-घर मंगलचार—६३३।

थापै—क्रि. स. [हिं. थापना] स्थापित करता है, जमाता है। उ.—ग्वालनि देखि मनहिं रिस काँपै। पुनि मन में भय अंकुर थापै—५८५।

थापैंगे—क्रि. स. [हिं. थापना] प्रतिष्ठित या स्थापित करेंगे। उ.—पुनि बलिराजहिं स्वर्गलोक में थापैंगे हरि राइ—सारा. ३४६।

थाप्यो, थाप्यौ—क्रि. स. [हिं. थापना] प्रतिष्ठित या स्थापित किया। उ.—(क) जिनि जायौ ऐसौ पूत, सब सुख-फरनि फरी। थिर थाप्यौ सब परिवार, मन की सूल हरी—१०-२४। (ख) जिहिं बल विप्र तिलक दै थाप्यौ, रच्छा करी आप बिदमान—१०-१२७। (ग) इंद्रहिं मोहि गोबर्धन थाप्यो उनकी पूजा कहा सरै—६५३। (घ) मारि म्लेच्छ धर्म फिरि थाप्यो—सारा. ३२०।

थाम—संज्ञा पुं. [सं०. स्तंभ, प्रा. थंभ] खंभ, स्तंभ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. थामना] थामने की क्रिया या ढंग।

थामना, थाम्हना—क्रि. स. [सं. स्तंभन, प्रा. थंभन=रोकना, हिं. थामना] (१) चलती या गिरती हुई चीज को रोकना। (२) पकड़ना, ग्रहण करना। (३) सहारा या सहायता देना। (४) कार्य का भार लेना। (५) चौकसी या पहरे में रखना।

थायी—वि. [सं. स्थायी] सदा रहनेवाला।

थार, थारा—संज्ञा पुं. [सं. थाल] बड़ी थाली, थाल। उ.—कर कनक-थार तिय करहिं गान—६-१६६।

थारा—सर्व. [हिं. तुम्हारा] तुम्हारा।

थारी—संज्ञा पु. [हिं. थाली] थाली, बड़ी तश्तरी। उ.—उ.—माँगत कछु जूठन थारी—१०-१८३।

थारु, थारू, थाल, थाला—संज्ञा पुं. [हिं. थाली] बड़ी थाली, बड़ी तश्तरी।

थाला—संज्ञा पुं. [सं. स्थालक] (१) थाँवला, आल-बाल। (२) वृक्ष के चारों ओर बना चबूतरा।

थालिका—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थालिका] थाला, थाँवला।

संज्ञा स्त्री. [हिं. थाली] थाली। उ.—झलमल दीप समीप सौंज भरि लेकर कंचन थालिका—८०६।

थाली—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थाली=बटलोई] काँसे-पीतल आदि धातुओं की बनी हुई बड़ी तश्तरी।

मुहा—थाली का बैंगन—वह व्यक्ति जो निश्चित सिद्धांत न रखता हो और थोड़े हानि-लाभ से विचलित होकर कभी एक पक्ष में हो जाय, कभी दूसरे। थाली बजाना—(१) साँप का विष उतारने के लिए थाली बजाकर मंत्र पढ़ना। (२) बच्चा होने पर थाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजाने की रीति करना जिससे उसको डर न लगे।

थाव—संज्ञा स्त्री. [हिं. थाह] थाह, गहराई का अंत।

थावर, थावरु—वि. [सं. स्थावर] जो एक स्थान से दूसरे पर लाया न जा सके, अचल, जंगम का विपरीतार्थक। उ.—(क) थावर-जंगम, सुर-असुर, रचे सबै मैं आइ—२-३६। (ख) थावर-जंगम मैं मोहिं ज नैं। दयासील, सबसौं हित मानै ३·१३।

थाह—संज्ञा स्त्री. [सं. स्था, हिं. थाह] (१) जलाशयों का तल या थल भाग, गहराई का अंत। उ.—(क) ममता-घटा, मोह की बूँदें, सरिता मैन अपारो। बूड़त कतहुँ थाह नहिं पावत, गुरु जन ओट अधारौ—१-२०६। (ख) बूड़त स्याम, थाह नहिं पावौं, दुस्साहस-दुख-सिंधु परी—१-२४६।

मुहा—थाह मिलना (लगना)—(१) गहरे पानी में थल का पता लगना। (२) किसी भेद का पता चलना। डूबते को थाह मिलना—संकट में पड़े हुए आश्रयहीन व्यक्ति को सहारा मिलना।

(२) कम गहरा पानी। (३) गहराई का पता।

मुहा—थाह लगाना—(१) गहराई का पता लगाना। (२) भेद का पता चलना। थाह लेना—(१) गहराई का पता लगाना। (२) भेद का पता चलाना।

(४) अंत, पार, सीमा। (५) परिमाण आदि का अनुमान। (६) भेद, रहस्य।

मुहा.—मन की थाह—गुप्त विचार का पता।

थाहना—क्रि. स. [हिं. थाह] (१) थाह या गहराई का पता लगाना। (२) पता लगाना, अनुमान करना।

थाहरा—वि. [हिं. थाह] छिछला, कम गहरा।

थाह्यौ—क्रि. स. [हिं. थाहना] थाह ली, गहराई का पता लगाया। उ.—सो बल कहा भयौ भगवान? जिहिं बल मीन-रूप जल थाह्यौ, लियौ निगम, हति असुर-परान—१०-१२७।

थिगली—संज्ञा स्त्री. [हिं. टिकली] चकती, पैबंद।

मुहा.—थिगली लगाना—जोड़ तोड़ भिड़ाना, युक्ति लड़ाना। बादल में थिगली लगाना—(१) बहुत कठिन काम करना। (२) असंभव बात कहना। रेशम में टाट की थिगली—बेमेल चीज।

थित—वि. [सं० स्थित] (१) ठहरा हुआ, स्थिर, स्थायी। (२) रखा हुआ, स्थापित।

थिति—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थिति] (१) ठहराव, स्थिरता। (२) ठहरने का स्थान (३) रहने-ठहरने का भाव। (४) बने रहने या रक्षित होने का भाव, रक्षा। उ.—तुमहीं करत त्रिगुन बिस्तार। उतपति, थिति, पुनि करत सँहार—७-२१ (५) अवस्था, दशा।

थिर—वि. [सं. स्थिर] (१) जो चलता हुआ या हिलता-डोलता न हो, ठहरा हुआ। (२) शांत, धीर, अचंचल, अविचलित। (३) जो एक ही अवस्था में रहे, स्थायी, अविनाशी। उ.—(क) सूरदास कछु थिर न रहैगौ, जो आयौ सो जातौ—१-३०२। (ख) जीवन जन्म अल्प सपनौ सौ, समुझि देखि मन माहीं। बादर-छाँह, धूम-धौराहर, जैसैं थिर न रहाहीं—१-३१६। (ग) मरन भूलि, जीवन थिर जान्यौ, बहु उद्यम जिय धार्यौ—१-३३६। (घ) चेतन जीव सदा थिर मानौ—५-४। (च) नर-सेवा तैं जो सुख होइ; छनभंगुर थिर रहै न सोइ—७-२। (छ) असुर कौ राज थिर नाहिं देखौं—८-८।

थिरक—संज्ञा पुं. [हिं. थिरकना] नाचते समय पैरों का हिलना-डोलना या उठना-गिरना।

थिरकना—क्रि. अ. [सं. अस्थिर+करण] (१) नाचते समय पैरों को हिलाना-डुलाना या उठाना-गिराना। (२)मटक-मटक कर नाचना।

थिरकौंहाँ वि. [हिं. थिरकना] थिरकने या हिलनेवाला। वि० [हिं. स्थिर] ठहरा हुआ, स्थिर।

थिरजीह—संज्ञा पुं. [सं. स्थिर+जिह्वा] मछली।

थिरता, थिरताई—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थिरता] (१) ठहराव। (२) स्थायित्व। (३) शांति, अचलता।

थिरना—क्रि. अ. [सं. स्थिर, हिं. थिर+ना (प्रत्य.)] (१) द्रवों का हिलना-डोलना बंद होना। (२) द्रवों के स्थिर होने पर उनमें घुली हुई चीज का तल में बैठना। (३) मैल बैठने पर जल, तेल आदि का स्वच्छ हो जाना।

थिरा—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थिरा] पृथ्वी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थिराना—क्रि. स. [हिं. थिरना] (१) **द्रवों का हिलना-डोलना बंद करना (२) द्रवों को स्थिर करके घुली हुई चीजों को तल में बैठालना।**

थी—क्रि. अ. [हिं. था] **'है' क्रिया का भूत. स्त्री रूप।**

थीकरा—संज्ञा पुं. [सं. स्थित + कर] **रक्षा का भार।**

थीता—संज्ञा पुं. [सं. स्थित, हिं. थित] (१) **स्थिरता। (२) स्थायित्व। (३) अचंचल रहने का भाव।**

थीथी—संज्ञा स्त्री [सं. स्थिति] (१) **दृढ़ता, स्थिरता (२) दशा, अवस्था, स्थिति। (३) धीरज, धैर्य।**

थीर, थीरा—वि. [सं. स्थिर, हिं. थिर] **स्थिर।**

थुकवाना, थुकाना—क्रि. स. [हिं. थूकना का प्रे.] **(१) थूकने का कार्य दूसरे से कराना। (२) उगलवाना। (३) निंदा या तिरस्कार कराना।**

थुकहाई—वि. स्त्री. [हिं. थूक + हाई (प्रत्य.] **वह स्त्री जिसकी सब निंदा या बुराई करें।**

थुकाई—संज्ञा. स्त्री. [हिं. थूकना] **थूकने की क्रिया।**

थुकायल, थुकेल, थुकैल, थुकैला—वि. [हिं.थूक + आयल, एल, ऐल, ऐला] **जिसकी सब निंदा करें।**

थुक्का फजीहत—संज्ञा स्त्री. [हिं. थूक + अ. फजीहत] **(१) निंदा और बुराई। (२) लड़ाई-झगड़ा।**

थुड़ी—संज्ञा स्त्री. [अनु. थू थू = थूकने का शब्द] **घृणा या धिक्कार-सूचक शब्द, लानत, फिटकार।**

मुहा.—थुड़ी थुड़ी होना—**निंदा या तिरस्कार होना।**

थुथकार—संज्ञा स्त्री. [हिं. थूक] **थूकने की क्रिया, भाव या शब्द।**

थुथकारना—क्रि. अ. [हिं. थुथकार] **घृणा दिखाना।**

थुथना—संज्ञा पुं. [हिं. थूथन] **लंबा निकला हुआ मुँह।**

थुथाना—क्रि. अ. [हिं. थूथन] **नाराज होना।**

थुनी, थुन्नी—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थूण, हिं. थूनी] **थूनी, खंभा, चाँड़।** उ.—अति पूरन पूरे पुन्य, रोपी सुथिर थुनी—१०-२४।

थुरना—क्रि. स. [सं. थुर्वण = मारना] (१) **मारना-पीटना। (२) कूटना-पीटना।**

थुरहथ, थुरहथा—वि. [हिं. थोड़ा + हाथ] (१) **छोटे-छोटे हाथोंवाला। (२) किफायत करनेवाला।**

थुरहथी—वि. स्त्री. [हिं. थुरहथ] **छोटे हाथवाली।**

थुली—संज्ञा स्त्री. [हिं. थूला] **अनाज का दलिया।**

थूँक, थूक—संज्ञा पुं. [अनु. थू थू] **गाढ़ा खखार।**

मुहा.—थूक उछालना—**बेकार बकना।** थूक लगाकर रखना—**कंजूसी से जोड़ जोड़कर रखना।** थूक से (थूकों) सत्तू सानना—**कंजूसी के मारे बहुत जरा सी चीज से बड़ा काम करने चलना।**

थूँकना, थूकना—क्रि. अ. [हिं. थूक + ना (प्रत्य.)] **मुँह से थूक निकाल कर फेंकना।**

मुहा.—किसी (वस्तु या व्यक्ति) पर न थूकना—**बहुत घृणा करना।** थूकना और चाटना—**(१) बात कहना और कहकर मुकर जाना। (२) वस्तु देकर फिर वापस कर लेना।**

क्रि. स.—**(१) मुँह की वस्तु उगलकर फेंकना। (२) निंदा या बुराई करना, धिक्कारना।**

मुहा.—(क्रोध-आदि) थूकना (थूक देना)—**गुस्सा दबा लेना या शांत करना।**

थू—अव्य. [अनु.] (१) **थूकने का शब्द। (२) घृणा या तिरस्कार सूचक शब्द, छिः।**

मुहा.—थू थू करना—**घृणा या तिरस्कार प्रकट करना।** थू-थू होना—**निंदा या तिरस्कार होना।**

थूथन, थूथुन—संज्ञा पुं. [देश.] **नर पशुओं का लंबा मुँह।**

थूथन फुलाना (सुजाना)—**नाराज होना।**

थूथनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. थूथन] **मादा पशुओं का लंबा मुँह।**

मुहा.—थूथनी फैलाना—**नाराज होना।**

थूथरा—संज्ञा पुं. [देश.] **लंबा और भद्दा चेहरा।**

थून, थूनि, थूनी—संज्ञा पुं. स्त्री [सं. स्थूण] **खंभा।**

थूरना—क्रि. स. [सं. थुर्वण = मारना] (१) **कुचलना। (२) मारना-पीटना। (३) ठूँस ठूँस कर भरना। (४) खूब डटकर खाना।**

थूल, थूला—वि. [सं. स्थूल] (१) **मोटा, भारी-भरकम।** उ.—देखौ भरत तरुन अति सुंदर। थूल सरीर रहित सब सुंदर—५-३। (२) **मोटापे के कारण भद्दा, मोटा और थलथल।**

थूली—वि. स्त्री. [हिं. थूला] **मोटी-ताजी, भारी भरकम।**

संज्ञा स्त्री.—**अनाज का मोटा दलिया।**

थूवा—संज्ञा पुं. [सं. स्तूप, प्रा. थूप, थूप] (१) **ढोला,**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढूह। (२) मिट्टी का बड़ा लोंदा।
संज्ञा स्त्री. [अनु. थू थू] घृणा का तिरस्कार सूचक शब्द।
थूहड़, थूहर—संज्ञा पुं. [सं. स्थूण=थूनी] एक पेड़।
थूहा—संज्ञा पुं. [स. स्तूर प्रा. थूा, थूव] टीला।
थूही—संज्ञा स्त्री. [हिं. थूहा] (१) मिट्टी की ढेरी। (२) मिट्टी के खंभे जिन पर गराड़ी की लकड़ी रखी जाती है।
थैंथर—वि. [देश.] थका-थकाया, सुस्त, परेशान।
थेइ-थेइ, थेई-थेई—संज्ञा स्त्री. [अनु०] (१) थिरक-थिरक कर नाचने की मुद्रा और ताल। उ.—(क) कालिनाग के फन पर निरतत, संकर्षन कौ बीर। लाग मान थेइ-थेइ करि उघटत, ताल मृदंग गँभीर—५७५। (ख) होड़ा-होड़ी नृत्य करैं रीझि रीझि अंग भरै ताता थेई थेई उघटत हैं हरषि मन—१७८१। (२) नाच का बोल।
थेगली—संज्ञा स्त्री. [हिं. थिगली] पेबंद, चकती।
थेथर—वि. [देश.] बहुत हारा-थका, परेशान।
थेथरई—संज्ञा स्त्री. [हिं. थेथर] थकान, परेशानी।
थेवा संज्ञा पुं. [देश.] (१) अँगूठी का घर जिसमें नगीना जड़ा जाता है। (२) अँगूठी का नगीना। (३) धातु का पत्तर जिस पर मुहर खोदी जाती है।
थैला-संज्ञा पुं. [सं. स्थल=कपड़े का घर] (१) कपड़े का बड़ा बटुआ। (२) रुपयों का थैला, तोड़ा।
थैली—संज्ञा स्त्री. [हिं. थैली] (१) छोटा थैला। (२) रुपयों से भरी हुई थैली, तोड़ा।
मुहा.—थैली खोलना—थैली से रुपया देना।
थोक—संज्ञा पुं. [सं. स्तोमक] (१) ढेर, राशि। (२) समूह, झुंड।
मुहा.—थोक करना—इकट्ठा या जमा करना। सकै थोक कई—इकट्ठा कर सके। उ.—द्रुम चढ़ि काहे न टेरौ कान्हा, गैयाँ दूरि गयीं। ......। छाँड़ि खेल सब दूरि जात हैं बोलें जो सकै थोक कई।
(३) इकट्ठा बेचने का माल।
थोड़ा—वि. [सं. स्तोक, पा. थोअ + ड़ा (प्रत्य.) कम, तनिक, जरा सा।
यौ.-थोड़ा-बहुत—कुछ-कुछ किसी कदर।
मुहा.—थोड़ा थोड़ा होना—लज्जित होना। जो करे सो थोड़ा—बहुत-कुछ करना चाहिए।
क्रि वि.—कम मात्रा में, जरा, तनिक, टुक।
थोड़े वि. बहु. [हिं. थोड़ा] कुछ, कम संख्या में।
क्रि. वि.—थोड़े परिमाण या मात्रा में।
मुहा.—थोड़े ही—नहीं, बिलकुल नहीं।
थोथ—संज्ञा स्त्री. [हिं. थोथा] निस्सारता, खोखलापन।
थोथरा—वि. [हिं. थोथी] (१) खोखला, खाली। (२) निस्सार, तत्वरहित। (३) बेकार।
थोथा—वि. [देश.] (१) खाली, खोखला, पोला। (२) जिसकी धार तेज न हो, गुठला। (३) बिना दुम या पूँछ का। (४) भद्दा, बेढंगा। (५) निकम्मा, बेकार।
थोपड़ी, थोपी—संज्ञा स्त्री. [हिं. थोपना] चपत, धौल।
थोपना—क्रि. स. [सं. स्थापन, हिं. थापन] (१) किसी गीली चीज की मोटी तह ऊपर जमाना, छोपना। (२) तवे पर गीला आटा फैलाना। (३) मोटा तो चढ़ाना। (४) किसी के मत्थे मढ़ना या लगाना।
थोबड़ा-संज्ञा पुं. [देश.] पशुओं का थूथन।
थोर—वि. [हिं. थाड़ा] (१) थोड़ा, कम। उ.—धनुष-बान सिरान, कैधौं गरुड़ बाहन खोर। कै काहु चारायो, कैधौं भुजनि-बल भयौ थोर—१-२५३।
मुहा.—जो कीजै सो थोर—इनके लिए जो कुछ किया जाय वह कम होगा। उ.—हरि का दी कहा करि दीजै जो कीजै सो इनको थो—पृ. ३३५ (४०)।
(२) छोटा, छोटा-सा। उ.—बार-बार डा तोकौं बरन बदनहिं थोर—३६४।
संज्ञा पुं. [देश.] (१) केले की पेड़ी का बिच भाग। (२) थूहर का पेड़।
थोरनो—वि. [हिं. थोडा] कम, थोड़ा। उ.—जैसे हरी हरी भूमि हुलसावनी मोर मराल सुख होत थोरनो—२२८०।
थोरा—वि. [हिं. थोड़ा] कम, थोड़ा, अल्प।
थोरि—वि. स्त्री. [हिं. पुं थोड़ा] छोटी-सी, साधारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—अरुन अधरनि दसन झाईं कहौं उपमा थोरि। नील पुट बिच मनौ मोती धरे बंदन बोरि-१०-२२५।

थोरिक—वि. [हिं. थोड़ा + एक] तनिक सा, थोड़ा-सा।

थोरी—वि. स्त्री. [हिं. थोड़ा] (१) थोड़ी, कम। उ.—राज-पाट सिंहासन बैठो, नील पदुम हूँ सों कहै थोरी। .... । हस्ती देखि बहुत मन-गर्वित, ता मूरख की मति है थोरी —१३०३।

मुहा.—जा कछु कह्यो सो थोरी—(१) ऐसा (अनुचित कार्य किया है कि चाहे जितना बुरा भला या उचित अनुचित कहा जाय, कम है। (२) बहुत-कुछ कहा जा सकता है। उ.—सूरदास प्रभु अतुलित महिमा जो कछु कह्यौ सो थोरी—१० उ.-५२। (२) मामूली, साधारण सी, तुच्छ। उ.—बाँट न लेहु सबै चाहत है, यहै बात है थोरी—१०-२६७।

संज्ञा स्त्री. [देश.] एक हीन अनार्य जाति।

थोरे—वि. [हिं. थोड़ा] थोड़े, कम। उ.—(क) थोरे जीवन भयो तन भारौ—१-१५२। (ख) की यहि गाउँ बसत की अनतहिं दिननि बहुत की थोरे—१:६०।

थोरेक—वि. [हिं. थोड़ा+एक] थोड़ा ही, तनिक सा। उ.—थोरेक ही बल सौं छिन भीतर दीनो ताहि गिराइ—४१०।

थोरैं—वि. सवि. [हिं. थोड़ा] थोड़े (के ही लिए), जरा से (के लिए)। उ.—सुनहु महरि ऐसी न बूझिऐ, सुत बाँधति माखन दधि थोरैं—३४४।

थोरो, थोरौ—वि. [हिं. थोड़ा] थोड़े, कम, अल्प। उ.—औगुन और बहुत हैं मो मैं, कह्यौ सूर मैं थोरौ —१-१८६।

थौंद—संज्ञा स्त्री. [हिं. तोंद] तोंद।

थ्यावस—संज्ञा पुं. [सं. स्थैर्य] (१) ठहराव, स्थिरता। (२) स्थायित्व। (३) धैर्य, धीरता।

द

द—देवनागरी वर्णमाला का अठारहवाँ और तवर्ग का तीसरा व्यंजन; इसका उच्चारण स्थान दंतमूल है।

दंग—वि. [फा.] चकित, विस्मित।

संज्ञा पुं.—भय, डर, घबराहट। उ.—जब रथ साजि चढ़ौं रन सनमुख जीय न आनौं दंग। (तंक) राघव सैन समेत सँहारौं करौं रुधिरमय अंग—(पंक) —९-१३४।

दंगई—वि. [हिं. दंगा] (१) दंगा या झगड़ा करनेवाला, उपद्रवी। (२) उग्र, प्रचंड। (३) लंबा-चौड़ा।

संज्ञा स्त्री.—दंगा करने का भाव, उपद्रव।

दंगल—संज्ञा पुं. [फा.] (१) पहलवानों की कुश्ती। (२) कुश्ती लड़ने का अखाड़ा।

मुहा—दंगल में उतरना—कुश्ती लड़ने को तैयार होना।

(३) समूह, दल, जमाव। (४) मोटा गद्दा या तोशक।

दंगली—वि. [फा. दंगल] (१) दंगल-संबंधी (२) बहुत बड़ा।

दंगा—संज्ञा पुं. [फा. दंगल] (१) झगड़ा-फसाद, उपद्रव। (२) शोर-गुल, गुल-गपाड़ा।

दंगैत, दँगैत—वि. [हिं. दंगा + ऐत (प्रत्य.] उपद्रवी।

दंड—संज्ञा पुं. [सं.] (१) डंडा, सोंटा, लाठी। उ.—(क) जानु-जंघ त्रिभंग सुंदर, कलित कंचन-दंड—१-३०७। (ख) पिनाकहु के दंड लौं तन लहत बल सतराइ—३-३। (ग) बटुआ झोरी दंड अधारी इतनेन को आराधै—१२८४।

मुहा.—दंड ग्रहण करना—संन्यास लेना।

(२) दंड के आकार की कोई चीज। उ.—देखत कपि बाहु-दंड तन प्रस्वेद छूटै—९-९७। (३) व्यायाम का एक प्रकार। (४) भूमि पर गिरकर किया हुआ प्रणाम, दंडवत्। (५) एक तरह का व्यूह। (६) अपराध की सजा। (७) अर्थदंड, जुरमाना, डाँड़।

मुहा—दंड पड़ना—घाटा या हानि होना। दंड भरना—(सहना)—(१) जुरमाना देना। (२) दूसरे का घाटा स्वयं पूरा करना। दंड भुगतना (भोगना)-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) सजा भुगतना। (२) जान-बूझकर कष्ट सहना। (८) दमन-शमन। (६) ध्वजा या झंडे का बाँस। (१०) तराजू की डंडी। (११) मथानी। (१२) एक योग का नाम। (१३) चार हाथ की नाप। (१४) इक्ष्वाकु राजा का एक पुत्र। (१५) यम। (१६) एक घड़ी या चौबिस मिनट का समय। उ.—एक दंड द्वादसी सुनायी —१००१।

दंडक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) डंडा। (२) दंड देनेवाला। (३) २६ से अधिक वर्णों का छंद। (४) इक्ष्वाकु राजा का एक पुत्र जो शुक्राचार्य का शिष्य था और गुरु-कन्या का कौमार्य भंग करने के कारण जो अपने राज्य-सहित भस्म होगया था : (५) दंडकवन।

दंडक बन—संज्ञा पुं. [सं. दंडक वन] दंडकारण्य जहाँ श्रीरामचंद्र ने बसकर शूर्पणखा का नासिकोच्छेदन किया था। विंध्य पर्वत से गोदावरी नदी तक फैले हुए इस प्रदेश में पहले इक्ष्वाकु राजा के एक पुत्र का राज्य था। गुरु- कन्या का कौमार्य भंग करने के अपराध में शुक्राचार्य के शाप से राज्य सहित वह भस्म हो गया था। तभी से वह प्रदेश दंडकारण्य कहलाने लगा। उ.—तहँ ते चल दंडकबन को सुख निधि साँवल गात—सारा. २५४।

दंडकारण्य—संज्ञा पुं. [सं.] दंडकवन।

दंडकी—संज्ञा स्त्री. [सं.] ढोलक।

दंडघ्न—संज्ञा पुं [सं.] (१) डंडे से मारनेवाला। (२) दिया हुआ दंड न माननेवाला।

दंडढक्का—संज्ञा पुं. [सं.] नगाड़ा, धौंसा, दमामा।

दंडत—क्रि. स. [हिं. दंडना] दंड देते-देते, दंड देकर, शासित करके। उ.—मुसल मुदगर हनत, त्रिविध करमनि गनत, मोहिं दंडत धरम-दूत हारे—१-१२०।

दंडदा—संज्ञा पुं. [सं. दंडदाता] दंडविधायक, सर्व शासक। उ.—यह सुनि दूत चले खिसियाइ। कह्यौ तिन धर्मराज सौं जाइ। अबलौं हम तुमहीं कौं जानत। तुमहीं कौं दंड-दाता मानत—६-४।

दंडधर, दंडधार—वि. [सं] जो डंडा बाँधे हो। संज्ञा पुं.—(१) यम। (२) शासक (३) साधु।

दंडन—संज्ञा पुं. [सं.] दंड देने की क्रिया, शासन।

दंडना—क्रि. स. [सं. दंडन] सजा देना, शासित करना।

दंडनायक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सेनापति। (२) दंड विधायक (३) शासक (४) यमराज।

दंडनीति - संज्ञा स्त्री. [सं.] बल-प्रयोग की शासन-विधि।

दंडनीय—वि. [सं] दंड पाने योग्य (व्यक्ति-कार्य)।

दंडपाणि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) यमराज। (२) शिव के वर से काशी में स्थापित भैरव की एक मूर्ति।

दंडपाल, दंडपालक—संज्ञा पुं [सं.] द्वारपाल।

दंडपाशक - संज्ञा पुं. [सं.] घातक, जल्लाद।

दंडप्रणाम - संज्ञा पुं. [सं.] भूमि पर गिरकर प्रणाम करने की मुद्रा।

दंडमान् वि. [हिं. दंड + मान्य] दंडनीय।

दंडमुद्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) साधुओं के दो चिह्न दंड और मुद्रा। (२) तंत्र की एक मुद्रा।

दंडयात्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चढ़ाई। (२) बरयात्रा।

दंडयामा - संज्ञा पुं. [सं.] (१) यम। (२) दिन।

दंडवत, दंडवत् - संज्ञा पुं. स्त्री. [सं. दंडवत्] पृथ्वी पर लेटकर किया हुआ साष्टांग प्रणाम। उ.—... कुसल अरु दीनता, दंडवत सुनाई। कर जोरि ... करी, दुर्बल-सुखदाई—१-२३८।

दंडवासी—संज्ञा पुं. [सं. दंडवासिन्] द्वारपाल, दरवान।

दंडारन—संज्ञा पुं. [सं. दंडकारण्य] दंडकवन।

दंडायमान—वि. [सं.] डंडे की तरह सीधा खड़ा।

दंडालय - संज्ञा पुं. [सं] स्थान जहाँ दंड दिया जाय।

दंडाहत—संज्ञा पुं. [सं.] छाछ-मट्ठा।

दंडित—वि. [सं.] जिसे दंड मिला हो।

दंडी—संज्ञा पुं. [सं. दंडिन्] (१) डंडा बाँधनेवाला। (२) यमराज। (३) शासक। (४) द्वारपाल। (५) दंड-कमंडल-धारी साधु। उ.—हरि कौ भेद ... के अर्जुन धरि दंडी कौ रूप—सारा. ८०४। (६) सूर्य का एक अनुचर। (७) शिव। (८) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि।

दँडौत—संज्ञा पुं. स्त्री. [सं. दंडवत्] साष्टांग प्रणाम, पृथ्वी पर लेटकर किया हुआ नमस्कार, दंडवत। उ.—तातैं तुम कौं करत दँडौत। अरु सब नाहीं परिनौत—५-४।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दंत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दाँत। उ.—पटक्यो भूमि फेरि नहिं मटक्यो लीन्हे दंत उपारी—२५६४।

मुहा—दंत तृन धरि कै—दया की विनती करके, गिड़गिड़ाकर, सविनय क्षमा माँगकर। उ.—सुनु सिख कंत, दंत तृन धरि कै, यौं परिवार सिधारौ—९-११५। अँगुरीनि दंत दै रह्यौ—दाँतों में उँगली दबा ली, बहुत चकित हुआ। उ.- मैं तो जे हरे हैं, ते तो सोवत परे हैं, ये करे हैं कौनैं आन, अँगुरीनि दंत दै रह्यौ—४८४।

(२) ३२ की संख्या। (३) पहाड़ की चोटी।

दंतक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दाँत। (२) पर्वत की चोटी।

दंतकथा संज्ञा स्त्री. [सं.] सुनी-सुनायी बात, जनश्रुति।

दंतताल—संज्ञा पुं. [सं.] ताल देने का एक बाजा।

दंतदर्शन—संज्ञा पुं. [सं.] क्रोध में दाँत निकालना।

दंतधावन—संज्ञा पुं. [सं.] दाँत साफ करने की क्रिया।

दंतपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] कान का एक गहना।

दंतवक्र—संज्ञा पुं. [सं. दंतवक्र] करुष देश का एक राजा।

दंतमूल—संज्ञा पुं. [सं.] दाँत उगने का स्थान।

दंतमूलीय—वि. [सं.] दंतमूल से उच्चरित होने वाले (वर्ण जैसे त, थ)।

दंतवक्र—संज्ञा पुं. [सं.] करुष देश का राजा जो वृद्ध शर्मा का पुत्र था और शिशुपाल का भाई लगता था। इसे श्रीकृष्ण ने मारा था। उ.—सूर प्रभु रहे ता ठौर दिन और, कछु मारि दंतवक्र पुर गमन कीन्हो—१० उ. ५६।

दंतशूल—संज्ञा पुं. [सं.] दाँत की पीड़ा।

दंतार, दंताल—संज्ञा पुं. [हिं. दाँत + आर (प्रत्य.)] हाथी।

वि.—जिसके दाँत बड़े-बड़े हो, बड़दंता।

दंतालिका, दंताली—संज्ञा स्त्री. [सं.] लगाम।

दंतावल, दंताहल—संज्ञा पुं. [सं. दंतावल] हाथी।

दँतियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. दाँत + इयाँ (प्रत्य.)] बच्चों के छोटे-छोटे दाँत। उ.—(क) किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत—१०-११०। (ख) बोलत स्याम तोतरी बतियाँ, हँसि-हँसि दतियाँ दूसै—१०-१४७। (ग) बिहँसत उघरि गईं दँतियाँ, लै सूर स्याम उर लायौ—१०-२८८।

दंती संज्ञा स्त्री. [सं.] एक पेड़।

संज्ञा पुं. [सं. दंत] हाथी।

दंतुर—वि. [सं.] बड़े दाँतवाला।

संज्ञा पुं.—(१) हाथी। (२) जंगली सुअर।

दँतुरियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. दाँत+इया (प्रत्य.)] बच्चों के छोटे-छोटे दाँत। उ.—दमकति दूध दँतुरियाँ रूरी—१०-११७।

दंतुल, दँतुला—वि. [सं. दंतुल] बड़े दाँत वाला।

दँतुलि, दँतुलिया, दँतुली—संज्ञा स्त्री. [हिं. दाँत] बच्चों के छोटे-छोटे दाँत। उ.—(क) कबहिं दँतुलि द्वै दूध की देखौं इन नैननि—१०-७४। (ख) माता दुखित जानि हरि बिहँसे, नान्ही दँतुलि दिखाइ—१०-८१। (ग) प्रगटति हँसत दँतुलि, मनु सीपज दमकि दुरे दल ओलै री—१०-१३७। (घ) तनक-तनक सी दूध-दँतुलिया, देखौ, नैन सफल करौ आई—१०-८२। (च) दमकति दूध-दँतुलिया बिहँसत, मनु सीपज घर कियौ बारिज पर—१०-९३। (छ) सरबस मैं पहिलै ही वारयौ, नान्हीं-नान्हीं दँतुली दू पर—१०-९२। (ज) दुहुँघाँ द्वै दँतुली भईं, मुख अति छबि पावत—१०-१२२।

दंतोष्ठ्य—वि. [सं.] दाँत और ओठ से उच्चरित होनेवाले (वर्ण जैसे 'व')।

दंत्य—वि. [सं.] (१) दाँत से संबंध रखनेवाला। (२) दाँत के लिए गुणकारी। (३) (त, थ आदि वर्ण) जिसका उचरण दाँत से हो।

दंद—संज्ञा पुं. [सं. द्वंद्व] (१) कष्ट, दुख, पीड़ा। उ.—बोलि लीन्हीं कदम कैं तर, इहाँ आवहु नारि। प्रगट भए तहँ सबनि कौं हरि, काम-दंद निवारि—७६५। (२) लड़ाई, झगड़ा। (३) हल्ला गुल्ला।

संज्ञा स्त्री. [सं. दहन] किसी पदार्थ से निकलती हुई गरमी।।

दंदन—वि. [स. द्वंद्व] दमन करनेवाला।

दंदह्यमान—वि. [सं.] दहकता हुआ।

दंदा—संज्ञा पुं. [सं. द्वंद्व] झगड़ा, कलह, बखेड़ा। उ.—संत-उबारन, असुर-सँहारन, दूरि करन दुख-दंदा—१०—१९२।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा पुं. [देश.] ताल देने का एक बाजा।

दंदाना—क्रि. अ. [हिं. दंद] गरम लगना, गरमाना।

संज्ञा पुं. [फ़ा.] दाँत की तरह उभरी हुई चीजों की कतार जैसी कंघी या आरी में होती है।

दंदानेदार—वि. [हिं. दंदाना] जिसम दंदाने हों।

दंदारू—संज्ञा पुं. [हिं. दंद+आरू] छाला, फफोला।

दंदी—वि. [हिं. दंद] उपद्रवी, झगड़ालू।

दंपति, दंपती—संज्ञा पुं. [सं. दंपति] पति-पत्नी।

दंपा—संज्ञा स्त्री. [हिं. दमकना] चमकना।

दंभ—संज्ञा पुं [सं.] (१) झूठा आडंबर, ऊपरी दिखावट, पाखंड। (२) ठसक, अभिमान।

दंभक—संज्ञा पुं. [सं.] पाखंडी, ढकोसलेबाज।

दंभान—संज्ञा पुं. [सं. दंभ] (१) पाखंड। (२) ठसक।

दंभी—वि. [सं. दंभिन्] (१) पाखंडी। (२) घमंडी।

दंभोलि—संज्ञा पुं. [सं.] इंद्र का अस्त्र, वज्र। उ.—मत्त मातंग बल अंग दंभोलि दल काछनी लाल गजमाल सोहै—२६०७।

दँवरी—संज्ञा स्त्री. [सं. दमन, हिं. दाँवना] सूखे डंठलों से अनाज अलग करने को बैलों से रौंदवाने की क्रिया।

दँवारि—संज्ञा स्त्री. [हिं. दव+आगि] दावानल।

दंश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दाँत से काटने का घाव। (२) दाँत से काटने की क्रिया। (३) साँप जैसे विषैले जंतु के काटने का घाव। (४) व्यंग्य, कटूक्ति। (५) वैर, द्वेष। (६) दाँत। (७) विषैले जंतु का डंक। (८) मक्खी जिसके डंक विषैले हों। (९) एक असुर। (१०) कवच।

दंशक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दाँत से काटनेवाला। (२) डंक मारनेवाला जंतु।

दंशन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दाँत से काटने, डंक मारने या डसने का कार्य। (२) कवच।

दंशना—क्रि. स. [सं. दंशन] (१) दाँत से काटना। (२) डंक मारना (३) डसना।

दंशित—वि. [सं.] (१) दाँत से काटा हुआ। (२) डसा हुआ। (३) कवच पहने हुआ।

दंशी—वि. [सं. दंशिन्] (१) दाँत से काटने, डंक मारने या डसनेवाला। (२) कटूक्तियाँ या व्यंग्य वचन कहनेवाला। (३) बैर या द्वेष रखनेवाला।

दंस—संज्ञा पुं. [सं. दंश] दाँत से काटने का घाव।

द—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पहाड़, पर्वत। (२) दाँत। (३) देनेवाला, दाता।

संज्ञा स्त्री—(१) पत्नी। (२) रक्षा। (३) खं...

दइ, दइउ—संज्ञा पुं. [सं. दैव] भाग्य, विधाता।

दइजा—संज्ञा पुं. [हिं. दायजा] दहेज।

दइमारा, दइमारो—वि. [हिं. दई+मारना] अभा... भाग्यहीन। उ.—दूध दही नहिं लेव री, कहि ... पचि हारी। कहति, सूर कोऊ घर नाहीं, कहँ ... दइमारी।

दई—क्रि. स. [हिं देना] (१) देना क्रिया के भू... कालिक रूप 'दिया' के स्त्रीलिंग 'दी' का ब्रजभा... प्रयोग; दी। उ.—(क) बहुत सासना दई प्र... दहिं, ताहिं निसंक कियौ—१-३८। (ख) दी... जाति खेवट उतराई चाहत चढ़्यौ जहाज-१-१... (२) ब्याह दी। उ.—(क) तनया तीनि ... अब सोई। दच्छ प्रजापति कौं इक दई—३-१... (ख) महादेव कौं सो तिन दई—४-४। (ग) जब तैं कन्या रिषि कौं दई—९-३।

संज्ञा पुं. [सं. दैव] (१) ईश्वर, विधा... उ.—(क) अबधौं कैसी करिहैं दई—१-२... (ख) अबिगत-गति कछु समुझि परत नहिं ... कछु करत दई—१-२६६।

मुहा.—दई का घाला (मारा, मारयौ)-अभाग... अब लाग्यौ पछितान पाइ दुख, दीन, दई ... मारयौ—१-१०१। दई की घाली (मारी)-अभागी... उ.— जननि कहति दई की घाली, काहे ... इतराति। दई दई-(१) हे दैव, रक्षा के लिए ईश्व... को पुकारना। (२) अति विपत्ति में अपने दुर्भा... को कोसना।

(२) भाग्य, प्रारब्ध, दैव, संयोग।

दईमार, दईमारा, दईमारो—वि. [हिं. दई+मार... (१) जिस पर दैवी कोप हो। (२) अभागा, कंब...

दउरना—क्रि. अ. [हिं. दौड़ना] भागना, दौड़ना।

दए—क्रि. स. [हिं. देना] 'देना' क्रिया के भूतका...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप 'दिया' के बहुवचन' 'दिये' का ग्राम्य प्रयोग। उ.—प्रगट खंभ तैं दए दिखाई जद्यपि कुल कौ दानौं—१-११।

दक—संज्ञा पुं. [सं.] जल, पानी।

दकन संज्ञा पुं. [सं. दक्षिण] दक्षिण भारत।

दक्खिन- संज्ञा पुं. [सं. दक्षिण] (१) उत्तर दिशा के सामने की दिशा, दक्षिण दिशा। (२) दक्षिण का प्रदेश। (३) भारत का दक्षिणी प्रदेश।

क्रि. वि.—दक्षिण दिशा में, दक्षिण की ओर।

दक्खिनी वि. [हिं. दक्खिन] दक्षिण से संबंधित।

संज्ञा पुं.—दक्षिणी प्रदेश का निवासी।

संज्ञा स्त्री.—दक्षिणी भू-भाग की भाषा।

दक्ष—वि. [सं.] (१) कुशल, चतुर (२) दाहना।

संज्ञा पुं.—(१) एक प्रजापति जो देवताओं के आदि पुरुष माने जाते हैं। (२) अत्रि ऋषि (३) शिव का बैल। (४) विष्णु। (५) बल, वीर्य।

दक्षकन्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] सती जो शिव को ब्याही थी और पिता के यज्ञ में बिना बुलाये जाकर अपमानित होने पर भस्म हो गयी थी।

दक्षता—संज्ञा स्त्री. [सं.] कुशलता, निपुणता।

दक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] पृथ्वी, वसुधा।

वि. स्त्री.—कुशला, चतुरा, निपुणा।

दक्षिण, दक्षिन—वि. [सं. दक्षिण] (१) दाहना, बायें का उलटा। (२) उत्तर दिशा के विपरीत। (३) अनुकूल। (४) कुशल, चतुर।

संज्ञा पुं.—(१) उत्तर दिशा के सामने की दिशा। (२) वह नायक जो सब प्रेमिकाओं से समान प्रेम करे। (३) विष्णु। (४) एक प्रकार का आचार।

दक्षिणा, दक्षिना—संज्ञा स्त्री. [सं दक्षिणा] (१) दक्षिण दिशा। (२) यज्ञादि धर्म-कर्म या विद्या प्राप्ति के बाद पुरस्कार या भेंट रूप में दिया जानेवाला धन या दान। उ.—(क) गुरु दक्षिणा देन जब लागे गुरु पत्नी यह माँग्यौ-सारा. ५३६। (ख) गुरु सौं कह्यौ जोरि कर दोऊ दक्षिणा कहौ सो देउँ मँगाई-३००८। (३) वह नायिका जो नायक को अन्य स्त्रियों से प्रेम करते देखकर भी अपनी प्रीति पूर्ववत् बनाये रहे।

दक्षिणाचल—संज्ञा पुं. [सं.] मलय पर्वत।

दक्षिणाचार - संज्ञा पुं. [सं.] (१) शुद्ध आचरण। (२) वैदिक मार्ग से मिलता-जुलता एक आचार-मार्ग।

दक्षिणाचारी—वि. [सं.] सदाचारी, धर्मशील।

दक्षिणापथ संज्ञा पु. [सं.] विंध्य प्रदेश से दक्षिण वह प्रदेश जहाँ से दक्षिण भारत को मार्ग मिलता है।

दक्षिणायन — वि. [सं.] भूमध्य रेखा के दक्षिण।

संज्ञा पुं.—(१)कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर सूर्य की गति। (२) छः महीने का वह समय (२१ जून से २२ दिसंबर तक) जब सूर्य कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर बढ़ता है।

दक्षिणावर्त—वि. [सं.] दाहिनी ओर घूमा हुआ।

दक्षिणवह—संज्ञा स्त्री. [सं] दक्षिण से आनेवाली हवा।

दक्षिणी, दाहिनी—वि. [सं दक्षिण + हिं. ई (प्रत्य.)] दक्षिण प्रदेश का।

संज्ञा पुं.—दक्षिण प्रदेश का निवासी।

संज्ञा स्त्री.—दाक्षिण प्रदेश की भाषा।

दक्षिणीय—वि. [सं.] (१) दक्षिण दिशा से संबंधित। (२) जो दक्षिणा का पात्र हो।

दखन, दखिन—संज्ञा पुं. [सं दक्षिण] दक्षिण दिशा।

दखल—संज्ञा पुं. [अ. दख़ल] (१) अधिकार, कब्जा। (२) किसी काम में हाथ डालना, हस्तक्षेप। (३) पहुँच। प्रवेश।

दखिन—संज्ञा पुं. [सं. दक्षिण] दक्षिण।

दखिनहरा—संज्ञा पुं. [हिं. दक्खिन+हारा] दक्षिण से आनेवाली हवा।

दखिनहा—वि. [हिं. दक्खिन+हा (प्रत्य.)] दक्षिण का, दक्षिण दिशा से संबंध रखनेवाला।

दखील—वि. [अ. दख़ील] जिसका कब्जा हो।

दगड़, दगड़ा—संज्ञा पुं. [देश.] बड़ा ढोल।

दगड़ना—क्रि. अ. [देश.] किसी की सच्ची बात का भी अविश्वास करना।

दगदगा—संज्ञा पुं. [अ. दग़दग़ा] (१) डर, भय। (२) संदेह, शक। (३) एक तरह की कंडील।

दगदगाना—क्रि. अ. [हिं. दगना] चमकना-दमकना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रि. स.—चमक पैदा करना, चमकाना।
दगदगाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. दगदगाना] चमक-दमक।
दगध—वि. [सं. दग्ध] जला-जलाया।
दगधना—क्रि. अ. [सं. दग्ध+ना] जलना।
क्रि. स.—(१) जलाना। (२) दुख देना।
दगना—क्रि. अ. [सं. दग्ध+ना (प्रत्य)] (१) बंदूक आदि का छूटना (२) बंदूक आदि का दागा जाना। (३) जल जाना, जलना।
क्रि. स. [हिं. दागना] बंदूक आदि छोड़ना।
दगर, दगरा, दगरो—संज्ञा पुं. [हिं. डगर] (१) देर, विलंब। उ.—अंचल ऐंचि ऐंचि राखत हो जान अब देहु होत है दगरौ—१०३१। (२) डगर, रास्ता।
दगरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] दही जिस पर मलाई न हो।
दगलफसल- संज्ञा पुं. [अ. दगल+अनु. फ़स्ल या हिं. फँसना] छल-कपट, जाल-फरेब।
दगल, दगला—संज्ञा पुं. [देश.] रुईदार अँगरखा।
दगवाना—क्रि. स. [हिं. दागना का प्रे०] दागने का काम करने की दूसरे को प्रेरणा देना।
दगहा—वि. [हिं दाग+हा (प्रत्य.)] (१) दाग वाला। (२) जिसके सफद दाग हों।
वि. [हि. दागना हा] जिसने किसी के शव का दाह-कर्म किया हो।
वि. [हिं. दगना+हा] जो दग्ध किया गया हो।
दगा, दगाई—संज्ञा स्त्री. [अ. दग़ा, हिं. दगा] धोखा, छल-कपट। उ.—(क) सोवत कहा, चेत रे रावन, अब क्यौं खात दगा—६-११४। (ख) दै दै दगा, बुलाइ भवन मैं भुज भरि भेंटति उरज-कठोरी—१०-३०५। (ग) सूरदास याही ते जड़ भए इन पलकन ही दगा दई—२५३७। (घ) सुफलक-सुत लै गए दगा दै प्रानन ही के प्रीते—२८६३। (च) आई उघरि [illegible] कलई सी दै निज गए दगाई—२७१८।
दगादार—वि. [हिं. दगा+फा. दार] छली-कपटी।
दगाबाज—वि. [फ़ा. दग़ाबाज़] छली, कपटी, धोखा देने वाला। उ.—दगाबाज कुतवाल काम रिपु, सरबस लूटि लयौ—१-६४।
संज्ञा पुं.—छली मनुष्य, धोखा देने वाला मनुष्य।
दगाबाजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दगाबाज] छल-कपट।
दगैल—वि. [हिं. दाग+ऐल(प्रत्य.)] (१) दागी, दागी हो। (२) जिसके दाग हों, दागदार। (३) जिसमें दोष हो।
संज्ञा पुं. [हिं दगा] छली-कपटी, दगाबाज।
दग्ध—वि. सं. (१) जला या जलाया हुआ। (२) दुखित, पीड़ित, संतप्त। उ.—साप दग्ध हैं कुबेर के आनि भए तरु जुगल सुहाये—३८६।
दग्धा—संज्ञा स्त्री. [सं.] सूर्यास्त की दिशा।
दग्धाक्षर—संज्ञा पुं. [सं.] झ, भ, र, ष और ह जिनसे छंद का आरंभ नहीं होना चाहिए।
दग्धित—वि. [सं. दग्ध] (१) जला या जलाया हुआ। (२) जिसे कष्ट या दुख पहुँचा हो, पीड़ित।
दचक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) धक्के से लगी हुई चोट। (२) धक्का, ठोकर। (३) दबाव।
दचकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) ठोकर लगना। (२) दब जाना। (३) झटका खाना।
क्रि. स.—(१) धक्का देना (२) दबना।
दचना—क्रि. अ. [अनु.] गिरना-पड़ना।
दच्छ—संज्ञा पुं. [सं. दक्ष] एक प्रजापति जिनसे देवता उत्पन्न हुए थे।
दच्छकुमारी—संज्ञा स्त्री. [सं. दक्ष+कुमारी] सती जो शिव जी को ब्याही थी।
दच्छना—संज्ञा स्त्री. [सं. दक्षिणा] भेंट, दान।
दच्छसुता—संज्ञा स्त्री, [सं. दक्ष+सुता] सती जो शिव जी को ब्याही थी।
दच्छिन—वि. [सं. दक्षिण] दाहना, दायाँ। उ.—(क) लेहु मातु, सहिदानि मुद्रिका, दई प्रीति करि नाथ। सावधान ह्वै सोक निवारहु, ओढ़हु दच्छिन हाथ—६-८३। (ख) बाम भुजहिं सखा अँस दीन्हे दच्छिन कर द्रुम-दरियाँ—४७०।
संज्ञा पुं.—(१) दक्षिण दिशा। उ.—दच्छिन राज करन सो पठाये—६-२।
दच्छिनाइनि—संज्ञा पुं. [सं. दक्षिणायन] छह महीने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का. वह समय जिसमें सूर्य कर्क रेखा से चलकर बराबर दक्षिण की ओर बढ़ता रहता है।

दच्यौ—क्रि. अ. भूत. [हिं. दचना (अनु.)] गिरा, गिर पड़ा। उ.—खेलत रह्यो घोष कैं बाहर, कोउ आयौ सिसु-रूप रच्यौ री। गगन उड़ाइ गयौ लै स्यामहिं, आनि धरनि पर आप दच्यौ री— ६०६।

दछ—संज्ञा पुं. [सं. दक्ष] एक प्रजापति जिनसे देवताओं की उत्पत्ति हुई थी। सती इन्हीं की पुत्री थीं। इनको शिवजी के गणों ने मारा था। उ.—दछ सिर काटि कुंड मैं डारि—४-५।

दछिन—वि. [सं. दक्षिण] दाहना, दायाँ। उ.—बहुरि जब रिषिनि भुज दछिन कीन्ही मथन, लच्छमी सहित पृथु दरस दीन्हौ— ४-११।

दज्जाल—संज्ञा पुं. [अ. दज्ज़ाल] झूठा, अन्यायी।

दड़ोकना—क्रि. अ. [अनु.] गरजना, दहाड़ना।

दढ़ना—क्रि. अ. [सं. दहन] जलना, जल जाना।

दढ़ियल—वि. [हिं. दाढ़ी + इयल] जिसके दाढ़ी हो।

दढ़ी—क्रि. अ. [हिं. दढ़ना] जली, जल गयी। उ.—(क) भई देह जो खेह करम-बस, जनु तट गंगा अनल दढ़ी। सूरदास प्रभु दृष्टि सुधानिधि मानौ फेरि बनाइ गढ़ी—९-१७०। (ख) तन मन धन यौवन सुख संपति बिरहा-अनल दढ़ी—२७६४।

दणियर—संज्ञा पुं. [सं. दिनमणि] सूर्य।

दतना—क्रि. अ. [देश.] मग्न या लीन होना।

दतवन, दतवनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. दाँत + अवन (प्रत्य.)] दतून, दातौन, दतौन। उ.—दतवनि लै दुहुँ करौ मुखारी, नैननि कौ आलस जु बिसारौ—४०७।

दतारा—वि. [हिं. दाँत + आरा] जिसमें दाँत हों।

दतिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. दाँत का अल्प.] छोटा दाँत।

दति-सुत-संज्ञा पुं. [सं. दिति + सुत] राक्षस, असुर।

दतुअन, दतुवन, दतुवनि, दतौन, दतौनी—संज्ञा स्त्री [हिं. दाँत + अवन (प्रत्य.)] दतौन, दतून, दातुन। उ.—(क) प्रातहिं तैं मैं दियौ जगाइ। दतुवनि करि जु गए दोउ भाइ—५४७। (ख) माता दुहुँनि दतौनी कर दै, जलझारी भरि ल्याइ—६०९।

दत्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दत्तात्रेय। उ.—(क) ताकैं भयौ दत्त अवतार—४-२। (ख) भृगु कै दुर्वासा तुम होहु। कपिल कै दत्त, कहौ तुम मोहु—५-४। (२) दान। (३) दत्तक।

वि.—दिया हुआ, भेंट किया हुआ।

दत्तक—संज्ञा पुं. [सं.] गोद लिया हुआ लड़का।

दत्तचित्त—वि. [सं.] जिसने खूब ध्यान दिया हो।

दत्ता, दत्तात्रेय—संज्ञा पुं. [सं. दत्तात्रेय] एक प्रसिद्ध ऋषि जो विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक माने जाते हैं। इन्होंने चौबीस पदार्थों को गुरु माना था।

दत्तात्मा—संज्ञा पुं. [सं. दत्तात्मन्] त्यक्त-अनाथ पुत्र।

दत्ती—संज्ञा स्त्री. [सं.] सगाई पक्की होना।

दत्तेय—संज्ञा पुं. [सं.] इंद्र, देवराज।

दत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) धन। (२) सोना, स्वर्ण।

ददन—संज्ञा पुं. [सं.] दान देने की क्रिया।

ददरा—संज्ञा पुं. [देश.] छानने का कपड़ा, छन्ना।

ददा—संज्ञा पुं. [हिं. दादा] बड़ा भाई। उ.—देखत यह बिनोद धरनीधर, मात पिता बलभद्र ददा रे—१०-१६०।

ददिऔर, ददिऔरा, ददियाल, ददिहाल—संज्ञा पुं. [हिं. दादा + आलय] (१) दादा का कुल। (२) दादा का घर या स्थान।

ददोड़ा, ददोरा—संज्ञा पु. [हिं. दाद] चकत्ता।

दध, दधि—संज्ञा पुं [सं. दधि] (१) दही, जमाया हुआ दूध। (२) वस्त्र, कपड़ा।

संज्ञा पुं. [सं. उदधि] समुद्र, सागर।

दधसार—संज्ञा पुं. [हिं. दधि + सार] मक्खन।

दधिकाँदौ—संज्ञा पुं. [सं. दधि + हिं. काँदौ = कीचड़] (१) जन्माष्टमी के समय का एक उत्सव जिसमें लोग परस्पर हल्दी मिला हुआ दही छिड़कते हैं। उ.—जसुमति भाग-सुहागिनी (जिनि) जायौ हरि सौ पूत। [illegible] की आरती (री) अरु दधिकाँदौ सूत—१०-४०। (२) दही की कीचड़। उ.—सींके छोरि, मारि लरिकनि कौं, माखन-दधि सब खाइ। भवन मच्यौ दधिकाँदौ, लरिकनि रोवत पाए जाइ—१०-३२८।

दधिकूर्चिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] फटे हुए दूध का सार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग जो पानी निकलने पर बचता है, छेना।

दधिचार—संज्ञा पुं. [सं.] **मथानी**।

दधिज, दधिजात—संज्ञा पुं. [सं.] **मक्खन**।

संज्ञा पुं. [सं. उदधि + ज, जात] **चंद्रमा**। उ.—देखौ माई दधिसुत में दधिजात १०-१७२।

दधि-तिय—संज्ञा स्त्री. [सं. उदधि (=समुद्र) + स्त्री (समुद्र की स्त्री)] **गंगा**। उ.—दधि-सुत में दधि-तिय दीपति सी मृदु मुख तें मुसकात—सा. ६२।

दधियूप—संज्ञा पुं. [सं.] **एक तरह का पकवान**।

दधिमंड—संज्ञा पुं. [सं.] **दही का पानी**।

दधिमंडोद—संज्ञा पुं. [सं.] **दही का समुद्र**।

दधि-मुख—संज्ञा पुं. [सं.] **एक बंदर जो सुग्रीव का मामा और मधुवन का रक्षक था**।

दधिसागर—संज्ञा पुं. [सं.] **दही का समुद्र**।

दधिसार—संज्ञा पुं. [स.] **मक्खन**।

दधिसुत—संज्ञा पुं. [सं. उदधि + सुत] (१) **कमल**। उ—देखौ माई दधि-सुत मैं दधिजात—१०-१७२। (२) **मुक्ता, मोती**। उ—दधिसुत जामें नंद-दुवार १०-१७३। (३) **चंद्रमा**। उ—(क) मानिनि अजहूँ छाड़ो मान। तीन बिवि दधिसुत उतारत रामदल जुत सान—सा. ८१। (ख) दधि-सुत में दधि-तिय दीपति सी मृदु-मुख ते मुसकात—सा. ६२। (ग) राधा दधिसुत क्यों न दुरावति—सा. उ. ३६। (४) **जालंधर दैत्य**। (५) **विष, जहर**। उ.—नहिं बिभूति दधि-सुत न कंठ दह मृगमद चंदन चरचित तन।

संज्ञा पुं. [सं.] **मक्खन**। उ—गिरि गिरि परत बदन तैं उर पर हैं दधि-सुत के बिंदु। मानहुँ सुभग सुधाकन बरसत प्रिय-जन आगम इंदु—१०-२८३।

दधिसुत—अरि-भष-सुत-सुभाव—संज्ञा स्त्री. [सं उदधि (=समुद्र) + सुत (समुद्र का पुत्र, चंद्रमा) + अरि (=चंद्रमा का शत्रु, राहु) + भष (=राहु का भक्षण, सूर्य) + सुत (=सूर्य का पुत्र, कर्ण) + सुभाव (=कर्ण का स्वभाव 'दानी' होना; उर्दू में 'दानी' का अर्थ होता है सखी)] **सखी, सहेली**। उ.—दधिसुत-अरि-भष-सुत-सुभाव चल तहाँ उताइल आई—सा. ८...

दधिसुत-गृह—संज्ञा पुं. [सं. दधि (उदधि=समुद्र) + सुत (=समुद्र का सुत, अमृत) + गृह (=अमृत का घर अर्थात् ओठ] **अधर, ओठ**। उ.—बिप्र बिचि... रेख दधि-सुत गृह रेसम छद घन ऊपर आ... —सा. ६६।

दधिसुत-(धर) धरन-रिपु—संज्ञा पुं. [सं. दधि (उदधि= समुद्र) + सुत (=समुद्र का पुत्र, चंद्रमा) + ध... (=चंद्रमा को धारण करनेवाला, महादेव) + रिपु (=महादेव का शत्रु, कामदेव)] **कामदेव, मदन**। उ.—(क) रजनिचरगुन जानि दधि-सुत... धरन रिपु हित चाव—सा. १। (ख) दधिसुत धर... रिपु सहे सिलीमुष सुख सब अंग नसायौ—सा. ४६।

दधिसुत-धर-रिपु-पिता—संज्ञा पुं [सं. दधि (उदधि= समुद्र) + सुत (समुद्र का पुत्र, चंद्रमा) + ध... (=चंद्रमा को धारण करनेवाला, महादेव) + रि... =महादेव का शत्रु, कामदेव) + पिता (=कामदेव के पिता श्रीकृष्ण क्योंकि कामदेव के अवतार प्रद्युम्न श्रीकृष्ण के पुत्र थे)] **श्रीकृष्ण**। उ.—द... सुत-धर-रिपु-पिता जानि मन पाछे आयो मोरे- सा. १००।

दधि-सुत-बाहन—संज्ञा पुं. [सं. दधि (=उदधि=समुद्र) + सुत (समुद्र का पुत्र, चंद्रमा) + बाहन (=चंद्रमा का बाहन=मृग) **मृग**। उ.—दधि-सुत-बाहन मेखला लेके बैठि अनईस गनोरी—सा. उ. ५२।

दधि-सुत-सुत—संज्ञा पुं. [सं. दधि (=उदधि=समुद्र) + सुत (=समुद्र या जल का पुत्र, कमल) + सुत (=कमल का पुत्र, ब्रह्मा)] **ब्रह्मा**। उ.—आ... चरित नँद-नंदन सजनी देख। कीनो दधि-सुत-सुत ... सजनी सुन्दर स्याम सुभेष—सा. ७८।

दधि-सुत-सुत-पतिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. दधि(=उदधि= समुद्र) + सुत (समुद्र या जल का पुत्र। कमल) + सुत (कमल से उत्पन्न ब्रह्मा) + पत्नी (ब्रह्मा की पत्नी सरस्वती=गिरा=वाणी)] **वाणी, बोली, वचन**। उ.—लखि बृजचंद्र चंद्र मुख राधे। दधि-सुत-सुत-पतिनी न निकासत दिन-पति-सुत-पतिनी प्रिय बाधे—सा. ६...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दधि-सुत-सुत-वाहन—संज्ञा पुं. [सं दधि (=उदधि=समुद्र) + सुत (=समुद्र या जल से उत्पन्न कमल) + सुत (=कमल से उत्पन्न ब्रह्मा) + वाहन (=ब्रह्मा का वाहन, हंस)] हंस पक्षी। उ.—ठढी जलजा-सुत कर लीने। दधि-सुत-सुत वाहन हित सजनी भष बिचार चित दीने—सा. ७२।

दधि-सुत-सुत-सुत-सुत-अरि-भष-मुख—संज्ञा पुं. [सं. दधि (=उदधि=समुद्र) + सुत (समुद्र या जल का पुत्र, कमल) + सुत (कमल से उत्पन्न ब्रह्मा) + सुत (=ब्रह्मा का पुत्र, कश्यप) + सुत (=कश्यप का पुत्र, सूर्य) + अरि (= सूर्य का शत्रु, राहु) + भष (=राहु का भक्ष्य, चंद्रमा = चंद्र) + मुख (= चंद्रमुख)] चंद्रमुख। उ.—दुरद मूल के आदि राधिका बैठी करत सिंगार। दधि-सुत-सुत-सुत-सुत-अरि-भष-मुख करे बिमुख दुख भार —सा. ३५।

दधि-सुत-सुत-हितकारी—संज्ञा पुं. [सं. दधि (=उदधि =समुद्र) + सुत (समुद्र या जल से उत्पन्न, कमल) + सुत (=कमल से उत्पन्न, ब्रह्मा) + सुत (=ब्रह्मा का पुत्र, वशिष्ट) + हितकारी (=वशिष्ट का सहायक, अग्नि)] अग्नि। उ.—दधि-सुत-सुत-सुत के हितकारी सज-सज सेज बिछावै— सा. ६५।

दधि-सुता—संज्ञा स्त्री. [सं. उदधि + सुता] सीप, सीपी। उ.—दधि-सुता सुत अवलि ऊपर इंद्र आयुध जानि।

दधि-स्नेह—संज्ञा पुं. [सं.] दही की मलाई।

दधि-स्वेद—संज्ञा पुं. [सं.] छाछ, मट्ठा।

दधीच, दधीचि—संज्ञा पुं. [सं. दधीचि] एक वैदिक ऋषि। इनके पिता का नाम किसी ने अथर्व लिखा है और किसी ने शुक्राचार्य। इन्होंने देवताओं की रक्षा के लिए वज्र बनाने के उद्देश्य से अपनी हड्डियाँ दान दे दी थीं।

दधीच्यस्थि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वज्र। (२) हीरा।

दनदनाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) दनदन का शब्द करना। (२) खूब आनंद मनाना।

दनादन—क्रि. वि. [अनु.] दनदन शब्द के साथ।

दनु—संज्ञा स्त्री. [सं.] दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी और जिसके चालीस पुत्र हुए जो 'दानव' कहलाये।

दनुज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दक्ष की कन्या दनु से उत्पन्न असुर, राक्षस। (२) हिरण्यकशिपु। उ.—भक्त बछल बपु धरि नर केहरि दनुज दह्यौ, उर दरि, सुरसाँई—१-६। (३) कंस। (४) रावण।

दनुजदलनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] दुर्गा।

दनुजपति-अनुज-प्यारी—संज्ञा स्त्री. [सं. दनुज (=दैत्य) + पति (=राक्षसों का स्वामी, रावण) + अनुज (रावण का छोटा भाई, कुंभकरण) + प्यारी (कुंभकरण की प्रिय वस्तु, निद्रा) निद्रा, नींद। उ.—दनुजपति की अनुज प्यारी गई निपट बिसार —सा. २४।

दनुजराय—संज्ञा पुं. [सं. दनुज + हिं. राय] हिरण्यकशिपु। (२) कंस। (३) रावण।

दनुज-सुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) पूतना। उ.—दनुज-सुता पहिले संहारी पयपीवत दिन सात—२४६३।

दनुजारि—संज्ञा पुं. [सं.] दानवों का शत्रु।

दनुजेंद्र, दनुजेश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हिरण्यकशिपु। (२) रावण। (३) कंस।

दनुनारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] राक्षसी, पूतना। उ.—कागासुर सकटासुर मार्यौ पय पीवत दनु-नारी ९८६।

दनुसंभव—संज्ञा पुं. [सं] दनु से उत्पन्न, दानव।

दनू—संज्ञा स्त्री. [स. दनु.] दक्ष की कन्या, दनु।
संज्ञा पुं. [सं. दानव] दैत्य, राक्षस।

दन्न—संज्ञा पुं. [अनु.] तोप छूटने का शब्द।

दपट—संज्ञा स्त्री. [हिं. डपट] डपट, घुड़की।

दपटना—क्रि. स. [हिं. दपट] डाँटना, घुड़कना।

दपु—संज्ञा पुं. [सं. दर्प] घमंड, अहंकार। उ.—सात दिवस गोबर्धन राख्यौ इन्द्र गयौ दपु छोड़ि।

दपेट—संज्ञा स्त्री. [हिं. दपट] डपट, घुड़की।

दपेटना—क्रि. स. [हिं. दपटना] डाँटना-घुड़कना।

दफन—संज्ञा पुं. [अ. दफ़न] (१) गाड़ने की क्रिया। (२) मुरदा गाड़ने की क्रिया।

दफ़नाना—क्रि. स. [हिं. दफ़न + आना] (१) गाड़ना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) जमीन में मुर्दा गाड़ना।

दफा—संज्ञा स्त्री. [अ. दफ़अः] (१) बार, बेर। (२) नियम की धारा।

वि. [अ. दफा:] हटाया या दूर किया हुआ।

मुहा.—रफा-दफा करना—झगड़ा निबटाना।

दफीना—संज्ञा पुं. [अ.] गड़ा हुआ धन।

दफ्तर—संज्ञा पुं. [फा. दफ्तर] कार्यालय।

दफ्तरी—संज्ञा पुं. [फा. दफ्तरी] (१) कार्यालय का कर्मचारी। (२) जिल्दसाज।

दबंग—वि. [हिं. दबाव] निडर, प्रभावशाली।

दबक—संज्ञा स्त्री. [हिं. दबकना] (१) छिपने की क्रिया या भाव। (२) सिकुड़न।

दबकना—क्रि. अ. [हिं. दबाना] (१) डर के मारे छिपना। (२) लुकना, छिपना।

क्रि. स. [सं. दर्प] डाँटना-डपटना, घुड़कना।

दबका—संज्ञा पुं. [हिं. दबकना] सुनहरा-रुपहला तार।

दबकाना—क्रि. स. [हिं. दबकना का प्रे.] (१) छिपाना, आड़ में करना। (२) डाँटना।

दबकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दबकना] छिपना, दुबकना।

मुहा.—दबकी मारना—छिप जाना।

दबगर—संज्ञा पुं. [देश.] ढाल आदि बनानेवाला।

दबदबा—संज्ञा पुं. [अ.] रोबदाब, आतंक।

दबना—क्रि. अ. [सं. दमन] (१) भार या बोझ के नीचे पड़ना। (२) दाब में आ जाना। (३) हार मानकर पीछे हटना। (४) विवश होना। (५) तुलना में कम जँचना। (६) बात या विषय का अधिक फैल न सकना। (७) शांत रहना, बढ़ न पाना। (८) दूसरे के अधिकार में होना। (९) धीमा या मंद पड़ना। (१०) संकोच करना।

दबवाना—क्रि. स. [हिं दबना का प्रे.] दबाने का काम दूसरे से कराना।

दबाऊ—वि. [हिं. दबाना] (१) दबानेवाला। (२) दब्बू, बोझ से झुका हुआ।

दबाना—क्रि. स. [सं. दमन] (१) बोझ के नीचे लाना। (२) दबाकर जोर पहुँचाना। (३) पीछे हटाना। (४) गाड़ना, दफनाना। (५) प्रभाव या दबाव से कुछ करने को विवश करना। (६) तुलना में एक चीज को मात कर देना। (७) किसी बात को फैलने न देना। (८) दमन या शांत करना। (९) अनुचित रूप से अधिकार कर लेना। (१०) किसी चीज को कस कर पकड़ना।

दबाव—संज्ञा पुं. [हिं. दबाना] (१) दबाने की क्रिया या भाव। (२) रोब-दाब, प्रभाव।

दबि—क्रि. अ. [हिं दबना] भार या बोझ के नीचे दबकर। उ.—डारि न दियो कमल-कर तें गिरि दबि मरते ब्रजवासी—१६५०।

दबी—वि. [हिं. दबना] धीमी, मंद।

मुहा—दबी आवाज—(१) बहुत मंद आवाज। (२) बिना जोर दिये कही हुई बात। दबी जबान से कहना—(१) भय आदि के कारण अस्पष्ट रूप से कुछ कहना। (२) बिना जोर दिये कहना।

दबीज—वि. [फा.] मोटे दल का।

दबे—वि. [हिं. दबना] धीमें, मंद।

मुहा - दबे-दबाये रहना—चुपचाप रहना, अधीन रहना। दबे पाँव (पैर) चलना—ऐसे चलना कि आवाज न हो।

दबीर—संज्ञा पुं. [फा.] लिखनेवाला, मुंशी।

दबेला—वि. [हिं. दबना+एला (प्रत्य.)] दबा हुआ।

दबैल—वि. [हिं. दबना+ऐल (प्रत्य.)] दब्बू, डरपोक।

दबोचना—क्रि. स. [हिं. दबाना] (१) पकड़कर दबाना। (२) छिपाना।

दबोरना—क्रि. स. [हिं. दबाना] तुलना या लड़ाई में अपने सामने न ठहरने देना।

दबोस—संज्ञा पुं. [देश.] चकमक पत्थर।

दबोसना—क्रि. स. [देश.] शराब पीना।

दभ्र—वि. [सं.] थोड़ा, कम, अल्प।

दमंकना—क्रि. अ. [हिं. दमकना] चमकना।

दम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दमन, दंड, सजा। (२) इंद्रियों को वश में रखना, इंद्रिय-दमन। उ.—गो कहाँ हरि बैकुंठ सिधारे। सम-दम उनहीं संग पधारे—१-२९०। (३) दबाव।

संज्ञा पुं. [फा.] (१) साँस, श्वाँस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा—दम अटकना(उखड़ना, खिंचना)—(मरते समय) साँस रुकना। दम उलटना—(१) जी घबराना। (२) साँस न लिया जा सकना।। दम खाना (लेना)—सुस्ताना। दम खींचना—(१) चुप रहना। (२) साँस खींचना। दम घुटना—हवा की कमी से साँस न ले सकना। दम घोटना—(१) साँस न लेने देना। (२) बहुत कष्ट देना। दम घोटकर मारना—(१) गला दबाकर मारना। (२) बहुत कष्ट देना। दम चढ़ना (फूलना)—(१) दौड़-धूप या मेंहनत से हाँफना। (२) दमे का दौरा होना। दम चुराना—जान बूझ कर साँस रोकना। दम टूटना—(१) प्राण निकलना। (२) इतना हाँफने लगना कि दौड़-धूप के काम ज्यादा न कर सकना। दम तोड़ना—प्राण निकलना। दम पचना—अधिक परिश्रम करने पर भी न हाँफना। दम भरना—(१) किसी के प्रति अधिक प्रेम या मित्रता रखने की साभिमान चर्चा करना। (२) मेंहनत या दौड़-धूप से थक जाना। दम मारना—(१) विश्राम करना। (२) बोलना। (३) बीच में दखल देना। दम साधना—(१) साँस रोकने का अभ्यास करना। (२) मौन रहना।

(२) साँस के साथ नशीली चीज का धुआँ खींचना।

मुहा—दम मारना (लगाना)—नशीली चीज का धुआँ साँस के साथ खींचना। दम लगना—नशीली चीज का धुआँ खींचा जाना।

(३) साँस खींचकर जोर से बाहर फूँकना।

मुहा—दम मारना—झाड़-फूँक करना।

(४) समय जो एक बार साँस लेने में लगे, पल।

मुहा—दम के दम—क्षण भर। दम पर दम—हरदम, बराबर।

(५) प्राण, जान, जी।

मुहा—दम उलझना—जी घबराना। दम खाना—परेशान करना। दम खुश्क होना (फना होना, सूखना)—बहुत भयभीत होना। दम चुराना—बहाने से जान बचाना। नाक में दम आना—बहुत परेशान होना। नाक में दम करना—बहुत तंग करना। दम निकलना—मृत्यु होना। दम पर आ बनना—आफत या हैरान होना। दम फड़क उठना (जाना)—रूप, रंग या गुण को देखकर चित्त बहुत प्रसन्न होना। दम फड़कना—बेचैनी होना। दम में दम आना—भय या घबराहट होना। दम में दम रहना(होना)—(१) शरीर में प्राण रहना। (२) हिम्मत बँधी होना।

(६) प्राण या जीवन-शक्ति। (७) व्यक्तित्व।

मुहा.—(किसी का) दम गनीमत होना—(किसी के) जीवित रहने तक ही भले काम होना।

(८) संगीत में किसी स्वर का देर तक उच्चारण होना। (९) पकाने की एक क्रिया। (१०) धोखा।

यौ.—दम झाँसा—छल-कपट। दम दिलासा (पट्टी) (१) झूठी-आशा। (२) छल-कपट। दमबाज—धोखा देने या फुसलाने वाला।

मुहा.—दम देना—झाँसा देना। दम खाना—धोखा खाना।

(११) छुरी- तलवार आदि की धार।

दमक—संज्ञा स्त्री. [हिं. चमक का अनु.] चमक, चमचमाहट। उ.—मिटि गइ चमक-दमक अँग अँग की, मति अरु दृष्टि हिरानी—१-३०५।

संज्ञा पुं. [सं.] दमन या शांत करनेवाला।

दमकति—क्रि. अ. [हिं. दमकना] चमकती है, चमचमाती है। उ.—(क) दमकति दूध-दँतुलिया बिहँसत, मनु सीपज घर कियौ बारिज पर—१०-९३। (ख) दमकति दूध-दँतुरियाँ रूरी—१०-११६। (ग) दमकति दोउ दूध की दतियाँ, जगमग-जगमग होति री—१०-१३६।

दमकना—क्रि. अ. [हिं.चमकना का अनु.] चमचमाना।

दमकनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. दमक] चमकने-दमकने का भाव या क्रिया। उ.—दामिनि की दमकनि बूँदनि की झमकनि सेज की तलफ कैसे जीजियत माई है—२८२७।

दमकि—क्रि. अ. [हिं. दमकना] चमककर, चमचमाकर। उ.—प्रगटति हँसत दँतुलि, मनु सीपज दमकि दुरे दल ओलै री—१०-१३७।

क्रि. स.[हिं. दबकाना] झपाटे से पकड़कर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—देखि नृप तमकि हरि चमकि तहाँई गये दमकि लीन्हों गिरहबाज जैसे—२६१५।

दमखम—संज्ञा पुं. [फ़ा. दमखम] (१) बृढ़ता, मजबूती। (२) जीवन या प्राण-शक्ति। (३) तलवार की धार का झुकाव।

दमड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. दाम+ड़ा (प्रत्य.)] रुपया-पैसा।

दमड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. द्रविण+धन] पैसे का चौथा या आठवाँ भाग।

मुहा.—दमड़ी के तीन—इतना सस्ता कि कोई न खरीदे, इतना अधिक कि कोई न पूछे।

दमदमा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] किलेबंदी, मोरचा।

दमदार—वि. [फ़ा.] (१) जो जीवनी-शक्ति से पूर्ण हो। (२) दृढ़, मजबूत। (३) जो (वस्तु या व्यक्ति) अधिक समय तक हवा या साँस रोक सके। (४) तेज धारवाला।

दमन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दबाने की क्रिया। (२) दंड। (३) इंद्रिय-निग्रह। (४) विष्णु। (५) शिव। (६) एक ऋषि जिनके यहाँ दमयंती जन्मी थी।

दमनक, दमनशील—वि. [सं.] दमन करनेवाला।

दमनी—संज्ञा स्त्री. [सं. दमन] संकोच, लज्जा।

दमनी, दमनीय—वि. [सं.] (१) जो दमन करने योग्य हो। (२) जिसको दबाया जा सके।

दमबाज—वि. [फ़ा. दम+बाज़] बहानेबाज।

दमबाजी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. दम+बाज़ी] बहानेबाजी।

दमयंती—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) विदर्भ देश के राजा भीमसेन की पुत्री जो नल को ब्याही थी। (२) बेला।

दमरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दमड़ी] पैसे का आठवाँ भाग।

दमशील—वि. [सं.] (१) इंद्रिय-निग्रही। (२) दमन करनेवाला, दमनशील।

दमसाज—संज्ञा पुं. [फ़ा. दमसाज़] गवैये के साथ स्वर साधनेवाला उसका सहायक।

दमा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] एक भयंकर श्वांस रोग।

दमाद—संज्ञा पुं. [हिं. दामाद] जमाई, जामाता।

दमादम—क्रि. वि. [अनु.] लगातार, बराबर।

दमानक—संज्ञा स्त्री. [देश.] तोपों की बाढ़।

दमाम, दमामा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] नगाड़ा, डंका, धौंसा।

दमारि—संज्ञा पुं. [सं. दावानल] जंगल की आग।

दमावति—संज्ञा स्त्री. [सं. दमयंती] नल की पत्नी।

दमि—क्रि. स. [सं. दमन] दमन करके, नष्ट करके।

उ.—इमि दमि दुष्ट देव-द्विज मोचन, लंक बिभीषन, तुमकौं दैहौं—९-१५७।

दमी—वि. [सं. दम] दमन करनेवाला।

वि. [फ़ा. दम] दम लगाने या कश लगानेवाला।

वि. [हिं. दमा] जिसे दमे का रोग हो।

दमुना—संज्ञा पुं. [देश.] अग्नि, आग।

दमैया—वि. [हिं. दमन+ऐया] दमन करनेवाला।

दमोड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. दाम+ओड़ा] मूल्य, कीमत।

दमोदर—संज्ञा पुं. [सं. दामोदर] विष्णु, श्रीकृष्ण।

दम्य—वि. [सं.] दमन करने के योग्य।

दयंत—संज्ञा पुं. [सं. दैत्य] दानव, राक्षस।

दय—संज्ञा पुं. [सं.] दया, कृपा।

दयन—वि. [हिं. देना] देनेवाला। उ.—(क) श्री बृंदाबन कमलनयन। मनु आयौ है मदन गुन गुर दयन—२४८४। (ख) त्रिबिध पवन मन हरन दयन—२३८७।

दया—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) दुखी के प्रति करुणा या सहानुभूति का भाव। (२) दक्षप्रजापति की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी।

दयाकरन—वि. [सं. दया+करण = करनेवाले] दयालु, दयावान। उ.—दीनबंधु, दयाकरन, असरन-सरन, मंत्र यह तिनहिं निज मुख सुनायौ—८-८,

दयाकूर्च—संज्ञा पुं. [सं.] गौतम बुद्ध।

दयादृष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] किसी के प्रति कृपा, करुणा या सहानुभूति का भाव।

दयानत—संज्ञा स्त्री. [अ.] ईमान, सत्यनिष्ठा।

दयानतदार—वि. [अ. दयानत+फ़ा. दार] ईमानदार।

दयानतदारी—संज्ञा स्त्री. [अ. दयानत+फ़ा. दारी] सच्चाई, ईमानदारी।

दयाना—क्रि. अ. [हिं. दया+ना (प्रत्य.)] दयालु होना।

दयानिधान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बहुत दयालु व्यक्ति। (२) ईश्वर का एक नाम।

दयानिधि—संज्ञा पुं० [सं.] (१) सदय, दयालु। (२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर का एक नाम । उ.—दयानिधि तेरी गति लखि न परै—१-१०४ ।

दयानी—क्रि. स. [हिं. दयाना] (दया) दिखायी । उ.—कहा रही अति क्रोध हिये धरि नेक न दया दयानी—२२७५ ।

दयापात्र—संज्ञा पुं. [सं.] वह जिस पर दया करना उचित हो, जो वस्तु दया के योग्य हो ।

दयामय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दयालु व्यक्ति । (२) ईश्वर का एक नाम ।

दयार—संज्ञा पुं. [सं. देवदार] देवदार का पेड़ ।

संज्ञा पुं. [अ.] प्रांत, प्रदेश । ।

दयारत—क्रि. वि. [सं. दया+रत]दयावश, दयालु होकर । उ.—का न कियौ जनहित जदुराई । प्रथम कह्यौ जो बचन दयारत, तिहिं बस गोकुल गाय चराई—१-६ ।

वि.—दयालु दया-कार्य में लगे रहनेवाला ।

दयार्द्र—वि. [सं.] दयापूर्ण, दया से पसीजा हुआ ।

दयाल, दयालु—[सं. दयालु] बहुत दया करनेवाला ।

दयालता, दयालुता—संज्ञा स्त्री. [सं. दयालुता] दया करने का भाव, दयालु होने की प्रवृत्ति ।

दयावंत—वि. [सं. दयावान् का बहु.] दयालु ।

दयावती—वि. स्त्री. [सं.] दया करनेवाली ।

दयावना, दयावने, दयावनो—वि. पुं. [हिं. दया +आवना, आवने, आवनं] जो दीन हो और वस्तुतः दया का पात्र हो ।

दयावनी—वि. स्त्री. [हिं. दयावना] दया की पात्री ।

दयावान्—वि. पुं. [सं.] जो दयालु हो ।

दयावीर—संज्ञा पुं. [सं.] वीर-रस के अंतर्गत गिनाये गये चार प्रकार के वीरों में एक जो दया करने में अपने प्राण भी लगा दे ।

दयाशील—वि. [सं.] दयालु, दयावान् ।

दयासागर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जो बहुत दयालु हो । (२) ईश्वर का एक नाम ।

दयासील—वि. [सं. दयाशील] दयालु, कृपालु । उ.—थावर जंगम मैं मोहिं जानै । दयासील सब सौं हित मानै—३-१३ ।

दयित—वि. [सं.] प्यारा, प्रिय पात्र ।

संज्ञा पुं.—पति ।

दयिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) प्रियतमा । (२) पत्नी ।

दये—क्रि. स. [हिं. देना] दिये ।

दयो, दयौ—क्रि. स. [हिं. देना] दिया । उ.—उग्रसेन कौं राज दयौ—१-२६ ।

दर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शंख । (२) गड्ढा, दरार । (३) गुफा । (४) फाड़ने की क्रिया । (५) डर ।

संज्ञा पुं. [सं. दल] सेना, समूह, दल ।

संज्ञा पुं. [हिं. थल या फ़ा. दर] जगह, स्थान ।

संज्ञा स्त्री.—(१) भाव, मूल्य । (२) ठौर-ठिकाना । (३) प्रतिष्ठा, आदर, महिमा ।

संज्ञा पुं. [फ़ा.] द्वार, दरवाजा । उ.—माया नटी लकुटि कर लीन्हे, कोटिक नाच नचावै । दर-दर लोभ लागि लिये डोलति, नाना स्वाँग बनावै (करावै)—१-४२ ।

मुहा—दर दर मारे मारे फिरना—विपत्ति या दुर्दिन में आश्रय या सहायता की आशा से द्वार-द्वार या स्थान-स्थान पर फिरना ।

वि. [सं.] थोड़ा-सा, जरा-सा ।

संज्ञा स्त्री. [सं. दारू=लकड़ी] ईख, ऊख ।

दरक—वि. [सं.] डरनेवाला, कायर, भीरु ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. दरकना] दरार, चीर ।

दरकच—संज्ञा स्त्री. [देश.] दबने-कुचलने की चोट ।

दरकचाना—क्रि. स. [हिं.] थोड़ा-थोड़ा कुचलना ।

दरकटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दर=भाव+काटना] पहले से ही भाव का ठहराव ।

दरकना—क्रि. अ. [सं. दर=फाड़ना] फटना, चिरना ।

दरका—संज्ञा पुं. [हिं. दरकना] (१) दरार, फटने का चिन्ह । (२) चोट या आघात जिससे कोई चीज फट जाय या उसमें दरार पड़ जाय ।

दरकाना—क्रि. स. [हिं. दरकना] फाड़ना ।

क्रि. अ.—फट जाना ।

दरकानी—क्रि. अ. [हिं. दरकना] फट गयी, मसक गयी । उ.—पुलकित अंग अँगिया दरकानी उर आनँद अंचल फहरात ।

दरकार—वि. [फ़ा.] आवश्यक, जरूरी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरकिनार—क्रि. वि. [फ़ा.] अलग, एक ओर, दूर।

दरकी—क्रि. अ. [हिं. दरकना] (दाब या जोर पड़ने से) फट गयी, मसक गयी, चिर गयी, विदीर्ण हुई। उ.—(क) लिए लगाई कठिन कुच कैं बिच, गाढ़ैं चाँपि रही अपनैं कर। उमँगि अंग अँगिया उर दरकी, सुधि बिसरी तन की तिहिं औसर—१०-३०१ (ख) प्रेम बिबस सब ग्वालि भईं।...... पुलक अंग अँगिया उर दरकी, हार तोरि कर आपु लईं—७०१।

दरकूच—क्रि. वि. [फ़ा.] यात्रा में बराबर बढ़ता हुआ।

दरखत, दरख्त—संज्ञा पुं. [फ़ा. दरख़्त] पेड़, वृक्ष।

दरखास्त, दरख्वास्त—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. दरख़्वास्त] (१) निवेदन, प्रार्थना। (२) प्रार्थना-पत्र।

दरगाह—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) चौखट, देहरी। (२) दरबार, कचहरी। (३) सिद्ध साधु का समाधि स्थान, मकबरा, मजार। (४) मठ, मंदिर।

दरगुजर—वि. [फ़ा.] (१) वंचित। (२) क्षमाप्राप्त।

मुहा—दरगुजर करना—माफ करना, छोड़ देना।

दरगुजरना—क्रि. अ. [फ़ा.] (१) छोड़ना, बाज आना। (२) जाने देना, क्षमा कर देना।

दरज—संज्ञा स्त्री. [सं. दर=दरार] दरार, दराज।

दरजा—संज्ञा पुं. [अ. दर्जः] (१) श्रेणी, वर्ग। (२) कक्षा।

दरजिन—संज्ञा स्त्री [हिं. दरजी] दर्जी की पत्नी।

दरजी—संज्ञा पुं. [फ़ा. दर्जी] (१) कपड़ा सीनेवाला। उ.—सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना तनु भयौ ब्यौंत, बिरह भयौ दरजी—३१६२। (२) कपड़ा सीने का व्यवसाय करने वाली जाति का पुरुष।

दरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दलने-पीसने की क्रिया। (२) नाश, ध्वंस।

दरद—संज्ञा पुं. [फ़ा. दर्द] (१) सहानुभूति, करुणा, दया, तर्स, रहम। उ.—(माई) नैंकुहूँ न दरद करति, हिलकिनि हरि रोवै। बज्रहुँ तैं कठिन हियौ, तेरौ है जसोवै—३४८। (२) पीड़ा, कष्ट, तकलीफ।

वि. [सं.] भयकारक, भयंकर।

संज्ञा पुं.—(१) काश्मीर प्रदेश और हिंदूकुश पर्वत के मध्यवर्ती भू-भाग का प्राचीन नाम। (२) एक प्राचीन म्लेच्छ जाति। (३) ईंगुर।

दर दर—क्रि. वि. [फ़ा. दर=द्वार] द्वार-द्वार, जगह-जगह, ठौर-कुठौर। उ.—(क) माया नटिनि लकुटि कर लीन्हें कोटिक नाच नचावै। दर-दर लोभ लागि लै डोलै नाना स्वाँग करावै। (ख) जीवत जाँचत कन-कन निर्धन दर-दर रहत बिहाल—१-१५६।

दरदरा—वि. [सं. दरण=दलना] जो मोटा पिसा हुआ हो, जो महीन न पिसा हो।

दरदराना—क्रि. स. [सं. दरण] (१) मोटा-मोटा पीसना। (२) किटकिटाकर दाँत से काट लेना।

दरदरी—वि. स्त्री. [हिं. दरदरा] मोटे कण या रवे का।

संज्ञा स्त्री. [सं. धरित्री] पृथ्वी, धरती।

दरदवंत—वि. [फ़ा. दर्द+वंत (प्रत्य.)] (१) दया या सहानुभूति दिखानेवाला। (२) पीड़ित, दुखी।

दरद्द—संज्ञा पुं. [हिं. दर्द] पीड़ा, कष्ट।

दरन—क्रि. स. [हिं. दरना, दलना] नष्ट करनेवाले, दूर करनेवाले। उ.—अरु जन-सँताप-दरन, हरन-सकल-सँताप—१-१८२।

दरना—क्रि. स. [हिं. दलना] (१) दलना, पीसना। (२) नष्ट या ध्वस्त करना।

दरप—संज्ञा पुं. [सं. दर्प] (१) घमंड, अभिमान। (२) मान, रूठना। (३) अक्खड़पन। (४) दबाव, रोब।

दरपक—संज्ञा पुं. [सं. दर्पक] (१) अभिमानी, घमंडी। (२) मान करने या रूठनेवाला। (३) कामदेव।

दरपना—संज्ञा पुं. [सं. दर्पण] शीशा, आइना, दर्पण, आरसी। उ.—(क) ज्यौं दरपन प्रतिबिंब, त्यौं सब सृष्टि करी—२-३६। (ख) इंद्र दिसि के आदि रावै आदि दरपन बरन—सा० ५७।

दरपना—क्रि. स. [सं. दर्प] (१) ताव दिखाना, क्रुद्ध होना। (२) घमंड या अहंकार करना।

दरपनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दरपन] छोटा दर्पण।

दरपेश—क्रि. वि. [फ़ा.] आगे, सामने।

दरब—संज्ञा पुं. [सं. द्रव्य.] (१) धन। (२) धातु।

दरबर—वि. [सं. दरण] मोटा पिसा, दरदरा।

संज्ञा स्त्री. [अनु.] उतावली, आतुरता।

दरबराना—क्रि. स. [हिं. दरबर] (१) किसी को इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह घबरा देना कि वह मन की बात न कह सके। (२) दबाव डालना।

रवा—संज्ञा पुं. [फ़ा. दर] (१) पक्षियों को बंद करने का काठ का खानेदार संदूक। (२) दीवार या पेड़ का कोटर या कोल जिसमें कोई पक्षी आदि रहता हो।

रबान, दरबाना—संज्ञा पुं. [फ़ा. दरबान] द्वारपाल।

रबानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दरबान] द्वारपाल का काम।

रबार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) राजसभा। उ.—(क) जाति-पाँति कोउ पूछत नाहीं. श्रीपति कैं दरबार—१-२३१। (ख) देखि दरबार, सब ग्वार नहिं पार कहुँ, कमल के भार सकटनि सजाए—५८४। (२) वह स्थान जहां नायक या राजा अपने सहकारियों के साथ बैठता हो। (३) वह स्थान जहाँ कोई पदाधिकारी अपने चाटुकारों के साथ बैठता हो (व्यंग्य)।

मुहा—दरबार करना—राज-सभा या बैठक में बैठना। दरबार खुलना—वहाँ जाने की आज्ञा होना। दरबार बंद होना—वहाँ जाने की मनाही होना। दरबार बाँधना—घूस या रिश्वत तय करना। दरबार लगना—सभासदों, सहकारियों या चाटुकारों का इकट्ठा होना।

(४) राजा, महाराजा। (५) अमृतसर में सिखों का मन्दिर जिसमें उनकी धार्मिक पुस्तक, ग्रंथ साहब रखी है। (६) द्वारा, दरवाजा। उ.—दधि मथि कै माखन बहु देहौं, सकल ग्वाल ठाढ़े दरबार—४०३।

रबारदारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दरबार] (१) दरबार में उपस्थित होना। (२) किसी नायक या पदाधिकारी या बड़े आदमी के यहाँ नियमित रूप से बैठने और खुशामद करने का काम।

रबारविलासी—संज्ञा. पुं. [हिं. दरबार+सं. विलासी] द्वारपाल।

बारी—संज्ञा पुं. [हिं. दरबार] राजसभा का सदस्य, सभासद। उ.—दास ध्रुव कौं अटल पद दियौ, राम दरबारी—१-१७६।

वि.—दरबार का, दरबार से संबंधित।

भ—संज्ञा पुं. [सं. दर्भ] (१) कुश। (२) बंदर।

रमा—संज्ञा पुं. [सं. दाड़िम] अनार।

दरमियान—संज्ञा पुं [फ़ा.] मध्य, बीच।

क्रि. वि.—मध्य में, बीच में।

दरमियानी—वि. [फ़ा.] बीच का, मध्य का।

संज्ञा पुं.—बीच में पड़नेवाला, मध्यस्थ।

दररना—क्रि. स. [हिं. दरना] (१) पीसना। (२) नष्ट करना।

क्रि. स. [हिं. दरेरना] (१) रगड़ना। (२) ठेलते या रगड़ते हुए धकियाना।

दरवाजा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) द्वार। (२) किवाड़।

दरवान, दरवाना—संज्ञा पुं. [फ़ा. दरबान] द्वारपाल, ड्योढ़ीदार। उ.—पौरि-पाट टूटि परे, भागे दरवाना—९-१३९।

दरवी—संज्ञा स्त्री. [सं. दर्वी] (१) साँप का फन। (२) सँड़सी।

दरवेश, दरवेस—संज्ञा पुं. [फ़ा. दरवेश] फकीर।

दरश, दरस—संज्ञा पुं. [सं. दर्श] (१) दर्शन। उ—करुनासिंधु, दयाल, दरस दै सब संताप हर्‍यौ—१-१७। (२) भेंट, मुलाकात। (३) रूप, सुंदरता।

दरशन, दरसन—संज्ञा पुं. [सं. दर्शन] देखादेखी, अवलोकन, झलक। उ.—एकनि कौं दरसन ठगै, एकनि के सँग सोवै (हो)—१-४४।

दरशाना, दरसाना—क्रि. अ. [सं. दर्शन] देखने में आना।

क्रि. स.—देखना, लखना, अवलोकना।

दरसनीय—वि. [सं. दर्शनीय] देखने के योग्य,।

दरसनी हुंडी—संज्ञा स्त्री. [सं. दर्शन] (१) वह हुंडी जिस का भुगतान दस दिन के भीतर ही हो जाय। (२) वह वस्तु जिसे दिखाते ही काम की चीज मिल जाय।

संज्ञा स्त्री—दर्पण, आरसी।

दरस-परस—संज्ञा पुं. [सं दर्श+स्पर्श] देखा-देखी, संग-साथ, भेंट-समागम। उ.—दीन बचन, संतनि-सँग दरस-परस कीजै—१-७२।

दरसाना, दरसावना—क्रि. स. [सं. दर्शन] (१) दिखलाना। (२) प्रकट करना, समझाना।

क्रि. अ.—दिखायी पड़ना, देखने में आना।

दरसायौ क्रि. अ. भूत. [हिं. दरसाना] दिखायी दिया, दृष्टिगोचर हुआ। उ.—ढूँढ़त ढूँढ़त बहु स्रम पायौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पै मृगछौना नहिं दरसायौ—५-३ ।

दरसावै—क्रि. अ. [हिं. दरसाना] **प्रकट होना, स्पष्ट होना, समझ पड़ना** । उ.—तब आतम घट घट दरसावै । मगन होइ, तन-सुधि बिसरावै—३-१३ ।

दरसाहिं—क्रि. अ. [हिं. दरसाना] **दिखायी पड़ता है, दृष्टिगोचर होता है** । उ. पै उनकौं कोउ देखे नाहिं । उनकौ सकल लोक दरसाहिं—६.२ ।

दरसै—क्रि. अ. [हिं. दरसना] **दिखायी दे, दीख पड़े, मालूम हो, जान पड़े** । उ.—भय उदधि जमलोक दरसै, निपट ही अँधियार—३-८८ ।

दरसैहौं—क्रि. स. [हिं. दरसाना] **दिखाऊँगी** । उ.—सूर कही राधा के आगे कैसे मुख दरसैहौं—१२६० ।

दरस्यो—क्रि. स. [हिं.दरसना] **देखा, दिखायी दिया** । उ.—नैन चकोर चंद्र दरस्यौ री—२४८७ ।

दराँती—संज्ञा स्त्री. [सं.दात्र] (१) **हँसिया** । (२) **चक्की** ।

दराज—वि. [फा.] (१) **बड़ा** । (२) **लंबा** ।
क्रि. वि.—**बहुत, अधिक, ज्यादा** ।
संज्ञा स्त्री. [हिं.दरार] **दरार, छेद, रंध्र, दरज** ।

दरार—संज्ञा स्त्री. [सं. दर] **लकड़ी के तख्ते के फट जाने से या दो तख्तों के जोड़ के पास रह जानेवाली खाली जगह, शिगाफ, दराज** ।

दरारना—क्रि.अ.[हिं. दरार+ना(प्रत्य.)] **फटना, चिरना** ।

दरारा—संज्ञा पुं. [हिं. दरना] **धक्का, रगड़ा** ।

दरिंदा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **मांस-भक्षी पशु** ।

दरि—क्रि. स. [सं. दरण, हिं. दरना] (१) **ध्वस्त करके, नाश करके** । (२) **फाड़ कर, चीर कर** । उ.—भक्त-बछल बपु धरि नरकेहरि, दनुज दह्यौ, उर दरि सुरसाँई—१-६ ।

दरिद, दरिद्दर—संज्ञा पुं. [सं. दारिद्र] **निर्धनता, कंगाली** ।

दरिद, दरिद्दर, दरिद्र—वि. [सं. दरिद्र] **निर्धन, गरीब** ।
संज्ञा पुं.—**निर्धन मनुष्य, कंगाल आदमी** ।

दरिद्रता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **निर्धनता, गरीबी, कंगाली** ।

दरिद्रनारायण—संज्ञा पुं. [सं.] **दीन-दुखियों के रूप में मान्य ईश्वर** ।

दरिद्री—वि. [हिं. दरिद्र] **निर्धन** ।

दरिद्री—वि. [सं. दरिद्र] **निर्धन, कंगाल, गरीब** ।

दरिया—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **नदी** । (२) **समुद्र** ।
संज्ञा पुं. [हिं. दरना] **दला हुआ अनाज,** ...

दरियाई—वि. [फा.] (१) **नदी या समुद्र से संबं**... (२) **नदी या समुद्र में रहनेवाला** । (३) **न**... **समुद्र के निकट का** ।
संज्ञा स्त्री. [फ़ा. दाराई] **एक रेशमी सा**...

दरियादिल—वि. [फ़ा.] **बहुत उदार या दानी** ।

दरियादिली—संज्ञा स्त्री. [फा.] **उदारता, दानशी**...

दरियाफ़्त—वि. [फ़ा.] **ज्ञात, जिसका पता लगा**...

दरियाव—संज्ञा पुं. [फ़ा. दरिया] (१) **नदी** । (२)...

दरी—संज्ञा स्त्री. [सं. स्तर, स्तरी] **मोटे सूत का**...
संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **गुफा, खोह, प**... **बीच की आड़** । उ.—अधम समूह उधारन... तुम जिय जक पकरी । मैं जु रह्यौं राजीवनैन... पाप-पहार-दरी—१-१३० । (२) **पहाड़ी**... **नदी बहती हो** ।
वि. [सं. दरिन्] **फाड़नेवाला** ।
संज्ञा स्त्री. [हिं. दर=द्वार] **द्वार का** ।

दरीखाना—संज्ञा पुं. [हिं. दरी+खाना] **घर**... **बहुत से द्वार हों** ।

दरीचा—संज्ञा पुं. [फ़ा. दरीच:] (१) **खिड़की** । (... **खिड़की के पास बैठने की जगह** । (२)**चोर द**...

दरीची—संज्ञा स्त्री.[फ़ा. दरीचा] (१) **झरोखा, खि**... (२) **झरोखे के पास बैठने की जगह** ।

दरीबा—संज्ञा पुं.[?] (१)**बाजार** । (२) **पान का**...

दरीभृत—संज्ञा पुं. [सं.] **पर्वत, पहाड़** ।

दरीमुख—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गुफा का द्वार** । (... **श्रीराम की सेना का बंदर** ।

दरेंती—संज्ञा स्त्री.[सं.दर+यंत्र] **अनाज पीसने की**...

दरेग—संज्ञा पुं. [अ. दरेग] **कोर-कसर, कमी** ।

दरेर, दरेरा—संज्ञा पुं. [सं. दरण] (१) **रगड़ा,** ... (२) **मेंह का झोंका या झोला** । उ.—आ... की झरेर टपकत सब अँबराई—१५६५ । (... **बहाव का जोर, धारा का तोड़** ।

दरेरना—क्रि. स. [सं. दरण] **रगड़ना, पीसना** । (... **रगड़ते हुए धक्का देना, धकियाते हुए ले चल**...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरैया—संज्ञा पुं. [सं. दरण] (१) दलने-पीसने वाला। (२) घातक, विनाशक।

दरोग—संज्ञा पुं. [अ.] झूठ, असत्य।

दरोगा—संज्ञा पुं. [फ़ा. दारोगा] थानेदार।

दर्ज—वि. [फ़ा.] कागज पर लिखा हुआ।

दर्जा—संज्ञा पुं. [अ.] (१) श्रेणी। (२) कक्षा। (३) पद। क्रि. वि.—गुना, गुणित।

दर्जिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. दर्जी] दर्जी जाति की स्त्री।

दर्जी—संज्ञा पुं. [फ़ा. दर्जी] कपड़ा सीनेवाला। मुहा—दर्जी की सुई—जो कई तरह के काम करे।

दर्द—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) पीड़ा, कष्ट। मुह.—दर्द खाना—कष्ट सहन करना। (२) दुख, तकलीफ। (३) दया, करुणा। मुहा.—दर्द खाना—तरस खाना, दया करना। (४) धन की हानि का दुख या अफसोस।

दर्दमंद, दर्दी—वि. [फ़ा.] (१) जो दर्द से दुखी हो। (२) जो दूसरे का दुख-दर्द समझ सके, दयालु।

दर्दुर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मेढक। (२) बादल। (३) मलय पर्वत के समीप एक पर्वत। (४) एक चमड़ामढ़ा बाजा।

दर्प—संज्ञा पुं. [सं.] (१) घमंड, अहंकार, मद। (२) मान, मद मिश्रित कोप। (३) अक्खड़पन। (४) आतंक, रोब-दाब।

दर्पक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गर्व करनेवाला। (२) कामदेव, रति का पति।

दर्पण, दर्पन—संज्ञा पुं. [सं. दर्पण] (१) आइना, आरसी। (२) आँख, दृग। (३) उद्दीपन, उत्तेजना।

दर्पित—वि. [सं.] गर्व या मद से भरा हुआ।

दर्पी—वि. [सं. दर्पिन्] गर्व या मद करनेवाला।

दर्ब—संज्ञा पुं. [सं. द्रव्य] (१) धन। (२) सोना-चाँदी आदि।

दर्बान—संज्ञा पुं. [फ़ा. दरबान] द्वारपाल।

दर्बानी—संज्ञा पुं. [फ़ा. दरबानी] द्वारपाल का काम।

दर्बार—संज्ञा पुं. [फ़ा. दरबार] सभा, राजसभा।

दर्बारी—संज्ञा पुं. [फ़ा. दरबारी] राजसभा का सदस्य।

दर्भ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कुश, डाभ। (२) कुशासन।

दर्भट—संज्ञा पुं. [सं.] भीतरी या गुप्त कोठरी।

दर्भासन—संज्ञा पुं. [सं.] कुश का बना आसन।

दर्रा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] सँकरा पहाड़ी मार्ग। संज्ञा पुं. [सं. दरना] (१) मोटा आटा। (२) दरार, दरज।

दर्राना—क्रि. अ. [अनु.] बेधड़क चले जाना।

दर्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हिंसा में रुचि रखनेवाला। (२) राक्षस, दानव। (३) एक प्राचीन जाति जो पंजाब के उत्तर में बसती थी।

दर्वरीक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) इंद्र मघवा। (२) वायु, पवन। (३) एक तरह का प्राचीन बाजा।

दर्वा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) राजा ऊशीनर की पत्नी का नाम। (२) राधा की एक सखी का नाम। उ.—दर्वा, रंभा, कृष्ना, ध्याना, मैना, नैना, रूप-१५८०।

दर्विका—संज्ञा स्त्री. [सं.] घी का काजल।

दर्वी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) कलछी। (२) साँप का फन।

दर्वीका—संज्ञा पुं. [स.] साँप जिसके फन हो।

दर्श—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दर्शन, साक्षात्कार। (२) द्वितीया तिथि। (३) अमावास्या। (४) अमावास्या को किया जानेवाला यज्ञ आदि।

दर्शक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देखने या दर्शन करनेवाला। (२) दिखाने या बतानेवाला। (३) राजा के दर्शन करानेवाला। (४) निरीक्षण करनेवाला।

दर्शन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देखने की क्रिया, साक्षात्कार, देखा-देखी। इस प्रकार के दर्शन के प्रायः चार रूप हैं—प्रत्यक्ष, चित्र, स्वप्न और श्रवण। (२) भेंट, मुलाकात। (३) वह विद्या या शास्त्र जिसमें पदार्थों के धर्म, कारण, संबंध आदि की विवेचना हो। (४) नेत्र, आँख। (५) स्वप्न। (६) बुद्धि। (७) धर्म। (८) दर्पण, आरसी। (९) रंग, वर्ण।

दर्शन शास्त्र—संज्ञा पुं. [सं.] वह शास्त्र जिसमें प्रकृति, आत्मा, परमात्मा, जीवन का लक्ष्य आदि का विवेचन होता है. तत्वज्ञान।

दर्शनीय—वि. [सं.] (१) देखने योग्य। (२) सुंदर।

दर्शाना—क्रि. स. [हिं. दरसाना] (१) दिखाना। (२) समझाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शित—वि. [सं.] दिखलाया या समझाया हुआ।

दर्शी—वि. [सं. दर्शिन्] (१) देखनेवाला। (२) जानने, समझने या विचार करनेवाला।

दल—संज्ञा पुं [सं.] (१) फूल की पंखड़ी (२) पौधे का पत्ता। उ.—अद्भुत राम नाम के अंक। धर्म-अंकुर के पावन द्वै दल, मुक्ति-वधू-ताटंक—१-९०। (३) समूह, गिरोह। (४) पक्ष, गुट्ट, मंडली। (५) सेना। उ.—(क) कौरौ-दल नासि-नासि कीन्हौं जन-भायौं—१-२३। (ख) जा सहाइ पाँडव दल जीतौं—१-२६६। (६) किसी फल या समतल पदार्थ की मोटाई। (७) किसी अस्त्र का कोष म्यान। (८) धन।

दलक, दलकन—संज्ञा स्त्री. [अ. दलक़] गुदड़ी

संज्ञा स्त्री. [हिं. दलकना] (१) किसी धातु या बाजे पर किये गये आघात से उत्पन्न कंप, थर-थराहट, धमक, झनझनाहट। (२) रह रहकर उठने वाली टीस।

दलकना—क्रि. अ. [सं. दलन] (१) फट या चिर जाना। (२) काँपना, थर्राना। (३) चौंकना। (४) विकल होना।

क्रि. स.—डराना, भयभीत करना, भय से कँपाना।

दलकि—क्रि. स. [हिं. दलकना] भयभीत करके, डराकर। उ.—सूरजदास सिंह बलि अपनी लीन्हीं दलकि सृगालहिं।

दलगंजन—वि. [सं.] सेना का नाश करनेवाला वीर।

दलदल—संज्ञा स्त्री. [सं. दलाढ्य] (१) कीचड़, पंक। (२) जमीन जहाँ बहुत कीचड़ हो।

मुहा.—दलदल में फँसना—(१) कीचड़ से लथपथ होना। (२) किसी मुसीबत या झंझट में फँस जाना। (३) किसी काम का उलझन या झगड़े में इस तरह फँस जाना कि फैसला न हो सके, खटाई में पड़ जाना।

दलदला—वि. पुं. [हिं. दलदल] जहाँ कीचड़ हो।

दलदली—वि. स्त्री. [हिं. दलदल] (धरती) जहाँ कीचड़ हो।

दलदार—वि. [हिं. दल+फ़ा. दार] मोटे दल का।

दलन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दलने, पीसने या ... करने का काम (२) नाश, संहार।

दलना—क्रि. स. [सं. दलन] (१) रगड़ या ... चूर चूर करना। (२) रौंदना, कुचलना, ... मीड़ना, मसलना (३) चक्की में डालकर ... आदि को मोटा मोटा पीसना। (४) नष्ट ... करना, जीत लेना। (५) तोड़ना, खंड खंड करना ...

वि. [सं. दलन] संहार करने वाले, दलन ... वाले। उ.—गोपी लै उठाई जसुमति कैं दीनौ ... असुर के दलना—१०-५४।

दलनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. दलना] पीसने-दलने की क्रि...

दलनीय—वि. [सं. दलन] दलने के योग्य।

दलप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सेनानायक। (२) ...

दलपति—संज्ञा पुं. [सं.] अगुआ, मुखिया, सेनापति ...

दल-बल—संज्ञा पुं. [सं.] लाव-लश्कर, फौज-फांटा।

दल बादल—संज्ञा पुं. [हिं. दल+बादल] (१) बा... का समूह। (२) भारी सेना, दल-बल। (... बड़ा शामियाना।

दलमलना—क्रि. स. [हिं. दलना+मलना] (१) ... डालना, कुचल देना, पीस डालना। (२) ... करना, मार डालना।

दलवाना—क्रि. स. [हिं. दलना का प्रे.] (१) ... पीसने का काम कराना। (२) कुचल... रौंदाना। (३) नष्ट कराना।

दलवाल—संज्ञा पुं. [सं. दलपाल] सेनापति, सेनानायक...

दलवैया—संज्ञा पुं. [हिं. दलना] दलने-पीसनेवाला...

दलसूचि—संज्ञा पुं. [सं.] काँटा, पत्तों का काँटा।

दलसूसा—संज्ञा स्त्री. [स. दलश्रसा] पत्तों की नस।

दलहन—संज्ञा पुं. [हिं. दाल+अन्न] वह अनाज जि... दाल दली जाती हो।

दलहरा—संज्ञा पुं. [हिं. दाल+हारा] दाल बेचनेवाला...

दलहा—संज्ञा पुं. [हिं. थाल्हा] थाला, आलबाल।

दलाना—कि. स. [हिं. दलना का प्रे.] दलवाना-पिसवा...

दलारा—संज्ञा पुं. [देश.] झूलनेवाला बिस्तर।

दलाल—संज्ञा पुं. [अ.] (१) माल बेचने-खरीद... (२) ... कुछ धन लेकर सहायता करनेवाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषों को अनाचार के लिए मिलानेवाला।

दलाली संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) दलाल या मध्यस्थ का काम। (२) दलाल को मिलनेवाला धन। उ.—भक्ति-हाट बैठि अस्थिर ह्वै, हरि नग निर्मल लेहि। काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह तू, सकल दलाली देहि—१-३१०।

दलि—क्रि. स. [हिं. दलना] (१) रौंद या कुचल कर। उ.—माधौ, नैंकु हटकौ गाइ। .... । छुधित अति न अघाति कबहूँ, निगम-द्रुम दलि खाइ—१-५६। (२) कुचली जाकर, कुचल जाने पर, पीड़ित होने पर। उ.—रसना द्विज दलि दुखित होति बहु तउ रिस कहा करै—१-११७।

दलि-मलि - क्रि. स. [हिं. दलना + मलना] नाश करके, मारकर। उ.—धनि जननी जो सुभटहिं जावै। भीर परैं रिपु कौं दल दलि-मलि कौतुक करि दिखरावै—९-१५२।

दलित—वि. [सं.] (१) जो मसला या मीड़ा गया हो। (२) रौंदा या कुचला हुआ। (३) खंड-खंड किया हुआ। (४) नष्ट-विनष्ट, छिन्न भिन्न।

दलिद्र—वि. [हिं. दरिद्र] निर्धन, धनहीन।

दलिया—संज्ञा पुं. [हिं. दलना] मोटा पिसा अनाज।

दली—क्रि. स. [हिं. दलना] रगड़ी, मसली, मीड़ी, कुचली। उ.—पग सौं चाँपी पूँछ, सबै अवसान भुलायौ। चरन मसकि धरनी दली, उरग गयौ अकुलाइ—५८९।

वि. [सं. दलिन्] (१) दल या मोटाईवाला। (२) पत्तों से युक्त।

दलील—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) तर्क, युक्ति। (२) बहस।

दले—क्रि. स. [हिं. दलना] नष्ट किये, मार डाले। उ.—सूरदास चिरजीवहु जुग-जुग दुष्ट दले दोउ नंददुलारे—२५६६।

दलेपंज—वि. [हिं. ढलना + पंजा] ढलती उम्र का।

दलैया—वि. [हिं. दलना] (१) दलने-पीसने वाला। (२) मीड़ने-मसलने वाला। (३) मारने या नाश करने वाला।

दल्भ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) धोखा। (२) पाप।

दवँगरा—संज्ञा पुं. [देश.] वर्षा ऋतु का पहला छींटा।

दवँरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दँवरी] अनाज के दानेदार डंठलों को बैलों से रौंदवाने की क्रिया।

दव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वन, जंगल। (२) आग जो वन में पेड़ों की रगड़ से सहसा लग जाती है। उ.—द्रुम मनहुँ बेलि दव डाढ़ी—२५३५। (३) आग, अग्नि। उ.—आजु अजुध्या जल नहिं अँचवौं ना मुख देखौं माई। सूरदास राघव के बिछुरे मरौं भवन दव लाई—९-४७ (४) आग की लपट या तपन।

दवथु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जलन। (२) दुख।

दवन - संज्ञा पुं. [सं. दमन] नाश।

दवन, दवना—संज्ञा पुं. [सं. दमनक] दौना नामक पौधा।

दवना—क्रि. स. [सं. दव] जलाना, भस्म करना।

दवनी—संज्ञा स्त्री. [सं. दमन] अनाज के सूखे पौधों को बैलों से रौंदवाने की क्रिया, मँड़ाई, दँवरी।

दवरिया—संज्ञा स्त्री. [सं. दावाग्नि] जंगल की आग।

दवा—संज्ञा पुं. [सं. दव] (१) आग जो वन में सहसा लग जाती है। उ.—(क) नारी-नर सब देखि चकित भए दवा लग्यौ चहुँ कोद—५९२। (ख) नहिं दामिनि, द्रुम दवा सैल चढ़ि फिरि बयारि उलटी झर लावति—३४८५। (२) आग, अग्नि। उ.—कालीदह के पुहुप माँगि पठए हमसौं उनि। ...। जौ नहिं पठवहुँ कालिह तौ, गोकुल दवा लगाइ—५८९। (३) आग की लपट या तपन। उ.—जोग-अगिनि की दवा देखियत—३०१८।

दवा, दवाई—संज्ञा स्त्री. [फा. दवा] (१) औषध।

मुहा.—दवा को न मिलना—जरा भी न मिलना, दुर्लभ होना।

(२) रोग दूर करने का उपाय। (३) (किसी भाव को) मिटाने का उपाय। (४) (किसी के) उपचार या सुधारने का उपाय।

दवाखाना—संज्ञा पुं. [फा.] औषधालय।

दवागि, दवागिन, दवागी, दवाग्नि—संज्ञा स्त्री. [सं. दवाग्नि] दव, वन में वृक्षों की रगड़ से सहसा लगने-वाली आग, दावानल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दवानल—संज्ञा पुं. [सं. दव+अनल] वन की आग।
दवामी—वि. [अ.] जो सदा बना रहे, स्थायी।
दवारि, दवारी—संज्ञा स्त्री. [सं. दवाग्नि, हिं. दवागि] वनाग्नि, दावानल। उ.—दारुन दुख दवारि ज्यौं तृन-बन, नाहिंन बुझति बुझाई—९-५२।
दश—वि. [सं.] (१) जो गिनती में नौ से एक अधिक हो, दस। (२) कई, बहुत से।
दशकंठ—संज्ञा पुं. [सं.] दस सिर वाला, रावण।
दशकंठजहा—संज्ञा पुं. [सं.] रावण को मारनेवाले श्रीराम।
दशकंठारि—संज्ञा पुं. [सं. दशकंठ+अरि] श्रीराम।
दशकंध—संज्ञा पुं. [सं. दश+हिं. कंध] रावण।
दशकंधर—संज्ञा पुं. [सं.] रावण। उ.—दशकंधर को बेगि सँहारौ दूर करौ भुव-भार—सारा. २५९।
दशक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) लगभग दस वस्तुओं आदि का समूह। उ.—गाउँ दशक शिरदार कहाई—१००२। (२) सन्, संवत् आदि में दस-दस वर्षों का समूह।
दशकर्म—संज्ञा पुं. [सं.] दस संस्कार—गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकरण निष्क्रामण, नामकरण, अन्न-प्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन और विवाह।
दशगात्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शरीर के दस प्रधान अंग। (२) मृतक-संबंधी एक कर्म जो मरने के बाद दस दिन तक पिंड-दान-द्वारा किया जाता है।
दशग्रीव—संज्ञा पुं. [सं.] रावण।
दशति—संज्ञा स्त्री. [सं.] सौ, शत।
दशधा—वि. [सं.] दस प्रकार या ढंग का।
क्रि. वि.—दस प्रकार से।
दशद्वार—संज्ञा पुं. [सं.] शरीर के दस छिद्र—दो कान, दो आँख, दो नथुने, मुख, गुदा, लिंग और ब्रह्मांड।
दशन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दाँत। उ.—ज्यों गजराज काज के औसर औरे दशन देखावत—२९९३। (२) कवच। (३) शिखर।
दशनच्छद—संज्ञा पुं. [सं.] होंठ।
दशनवीज—संज्ञा पुं. [सं.] अनार, दाड़िम।
दशनाम—संज्ञा पुं. [सं.] संन्यासियों के दस भेद—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती भारती, पुरी।

दशनामी—संज्ञा पुं. [सं. दश+हिं. नाम] संन्यासियों का एक वर्ग जो शंकराचार्य के शिष्यों से चला माना जाता है।
वि.—दशनाम से संबंधित।
दशबल—संज्ञा पुं. [सं.] बुद्धदेव, जिन्हें दस बल प्राप्त थे—दान, शील, क्षमा, वीर्य, ध्यान, प्रज्ञा, बल, उपाय, प्रणिधि और ज्ञान।
दशभूमिग, दशभूमीश—संज्ञा पुं. [सं.] दस बलों को प्राप्त करनेवाले बुद्धदेव।
दशम—वि. [सं.] दसवाँ।
दशम दशा—संज्ञा स्त्री. [सं.] मरण, मृत्यु।
दशमलव—संज्ञा पुं. [सं.] गणित में पूर्ण इकाई से भिन्न और उसका अंश सूचित करने वाले अंक।
दशमांश—संज्ञा पुं. [सं.] दसवाँ अंश या भाग।
दशमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चांद्र मास के शुक्ल और कृष्ण पक्षों की दसवीं तिथि। (२) विमुक्त अवस्था। (३) मरण अवस्था।
दशमुख—संज्ञा पुं. [सं.] दसमुख वाला, रावण।
दशमूल—संज्ञा पुं. [सं.] दस पेड़ों की छाल या जड़।
दशमौलि—संज्ञा पुं. [सं.] रावण।
दशरथ—संज्ञा पुं. [सं.] अयोध्या के राजा जो इक्ष्वाकु-वंशी थे और जिनके चार पुत्रों में श्रीराम बड़े थे।
दसरथसुत—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीरामचंद्र।
दशरात्र—संज्ञा पुं. [सं.] दस रातों में होनेवाला यज्ञ।
दशवाजी—संज्ञा पुं. [सं. दशवाजिन्] चंद्रमा।
दशवाहु—संज्ञा पुं. [सं.] शिव जी, महादेव।
दशशिर—संज्ञा पुं. [सं. दश+शिरस्] रावण।
दशशीर्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रावण। (२) एक अस्त्र जो दूसरों के अस्त्रों को निष्फल करने के लिए चलाया जाता था।
दशशीश—संज्ञा पुं. [सं. दशशीर्ष] रावण।
दशस्यंदन—संज्ञा पुं. [सं.] राजा दशरथ।
दशहरा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ज्येष्ठ शुक्ला दशमी जो गंगा जी की जन्म-तिथि मानी जाती है। (२) विजयादशमी।
दशांग—संज्ञा पुं. [सं.] सुगंधित धूप जो पूजन के समय जलायी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशांत—संज्ञा पुं. [सं.] बुढ़ापा।

दशा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) हालत, अवस्था, स्थिति। (२) मनुष्य के जीवन की दस अवस्थाओं—गर्भवास, जन्म, बाल्य, कौमार, पोगड़, यौवन, स्थविर्य, जरा, प्राणरोध और नाश—में एक। (३) साहित्य में विरही की दस अवस्थाओं—अभिलाष, चिंता, स्मरण, गुण-कथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मरण—में एक। (४) ज्योतिष में प्रत्येक ग्रह का नियत भोगकाल। (५) दीपक की बत्ती। (६) चित्त। (७) कपड़े का छोर या अंचल।

दशाकर्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दीपक (२) अंचल।

दशानन—संज्ञा पुं. [सं. दश + आनन = मुख] रावण।

दशाश्व—संज्ञा पुं. [सं. दश + अश्व] चंद्रमा।

दशाश्वमेध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) काशी का एक तीर्थ जहाँ राजर्षि दिवोदास की सहायता से ब्रह्मा का दस अश्वमेध करना प्रसिद्ध है। (२) प्रयाग का एक घाट जहाँ का जल कभी बिगड़ता नहीं माना जाता।

दशास्य—संज्ञा पुं. [सं.] दशमुख, रावण।

दशाह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दस दिन। (२) मृतक-कर्मों का दसवाँ दिन।

दस—वि. [सं. दश] जो पाँच का दूना हो।

मुहा.—दस बीसक—कई, बहुत से। उ.—वेसन के दस-बीसक दोना—३९६।

संज्ञा पुं.—पाँच की दूनी संख्या और उसका सूचक अंक।

दसएँ—वि. [हिं. दसवाँ] दसवाँ, दसवें। उ.—दसएँ मास मोहन भए (हो) आँगन बाजे तू—१०-४०।

दसकंठ—संज्ञा पुं. [सं. दशकंठ] रावण।

दसकंध—संज्ञा पुं. [सं. दश + स्कंध = हिं. कंध] रावण। उ.—बहुरि बीर जब गयौ अवासहिं, जहाँ बसै दसकंध—९-७५।

दसकंधर—संज्ञा पुं. [सं. दशकंधर] रावण। उ.—दसकंधर मारीच निसाचर यह सुनि कै अकुलाए—९-५७।

दसक—वि. [सं. दश + हिं. एक] लगभग दस। उ.—बरष व्यतीत दसक जब होइ। बहुरि किसोर होइ पुनि सोइ—३-१३।

दसठोन—संज्ञा पुं. [सं. दश + स्थान] प्रसूता स्त्री का दसवें दिन का स्नान जब वह सौरी से दूसरे स्थान को जाती है।

दसन—संज्ञा पुं. [सं. दशन] दाँत। उ.—ज्यों गजराज काज के औसर औरे दसन दिखावत—२९९३।

मुहा.—तृन दसननि लै (धरि)—दाँत में तिनका लेकर, विनयपूर्वक क्षमा-याचना करके, गिड़गिड़ाते हुए। उ.—(क) तृन दसननि लै मिलि दसकंधर, कंठनि मेलि पगा—९-११४। (ख) हा हा करि दसननि तृन धरि धरि लोचन जलनि ढराऊँरी—१९७३।

दसना—संज्ञा पुं. [सं. दशन] दाँत। उ.—सोभित सुक-कपोल-अधर, अलप-अलप दसना—१०-९०।

क्रि. अ. [हिं. डासना] बिछाया जाना, फैलना।

क्रि. स.—(बिस्तर आदि) बिछाना।

संज्ञा पुं.—बिस्तर, बिछौना, बिछावन।

क्रि. स.—[हिं. डसना] डस लेना, डंक मारना।

दसम—वि. [सं. दशम] दसवाँ, दसवें। उ.—दसम मास पुनि बाहर आवै—३-१३।

दसमाथ—संज्ञा पुं. [हिं. दस + माथ] रावण।

दसमी—संज्ञा स्त्री. [सं. दशमी] चांद्र मास के कृष्ण अथवा शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि। उ.—दसमी कौं संजम बिस्तरै—९-५।

दसमौलि—संज्ञा पुं. [सं. दश + मौलि = सिर] रावण।

दसरंग—संज्ञा पुं. [हिं. दस + रंग] एक कसरत।

दसरथ—संज्ञा पुं. [सं. दशरथ] अयोध्या के राजा दशरथ। उ.—दसरथ नृपति अजोध्या राव—९-१५।

दसरथकुमार—संज्ञा पुं. [सं. दशरथ + कुमार = पुत्र] राजा दशरथ के पुत्र।

दसवाँ—वि. [हिं. दस] जो नौ के एक बाद हो।

दससिर—संज्ञा पुं. [सं. दश + शिरस्] रावण।

दससीस—संज्ञा पुं. [सं. दश शीर्ष] रावण।

दस-स्यंदन—संज्ञा पुं. [हिं. दस + स्यंदन = रथ] राजा दशरथ।

दसहिं—संज्ञा स्त्री. सवि. [हिं. दशा + हिं.] दशा, स्थिति या अवस्था को। उ.—अपने तन में भेद बहुत बिधि, रसना न जानै नैन की दसहिं—३०१७।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दसांग—संज्ञा पुं. [सं. दशंग] धूप जो पूजा के अवसर पर जलायी जाती है।

दसा—संज्ञा स्त्री. [सं. दशा] (१) हालत, अवस्था, स्थिति। (२) बुरी हालत, दुर्दशा। उ.—नैनन दसा करी यह मेरी। आपुन भये जाइ हरि चेरे मोहिं करत हैं चेरी—पृ. ३३१ (६)।

दसानन—संज्ञा पुं. [सं. दश+आनन] रावण।

दसाना—क्रि. स. [हिं. डासना] बिछाना,

दसारी—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक चिड़िया।

दसी—संज्ञा स्त्री. [सं. दशा] (१) कपड़े के छोर या किनारे का सूत, । (२) कपड़े का पल्ला या आँचल। (३) पता, निशाना, चिन्ह।

दसोतरा—वि. [सं. दश+उत्तर] दस से अधिक। संज्ञा पुं.—सौ में दस।

दसौं—वि. [सं. दश, हिं. दस] कुल दस, दस में प्रत्येक, दसों। उ.—दसौं दिसि तैं कर्म रोक्यो, मीन कौं ज्यौं जार—२-४।

दसौंधी—संज्ञा पुं. [सं. दास=दानपात्र+बंदी=भाट] राजाओं की वंशावली या विरुदावली का गान करने वाला, भाट। उ.—देस देस तें ढाढ़ी आये मन-वांछित फल पायौ। को कहि सकै दसौंधी उनको भयो सबन मन भायौ—सारा. ४०५।

दस्तंदाजी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] किसी काम में दखल देने या हस्तक्षेप करने की क्रिया।

दस्त—संज्ञा पुं. [फ़ा.] हाथ, हस्त।

दस्तक—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) हाथ मारकर खट खटाने की क्रिया। (२) दरवाजा खट-खटाना।

मुहा—दस्तक देना—दरवाजा खटखटाना।

(३) मालगुजारी वसूलने का हुक्मनामा। (४) कर, महसूल, टैक्स। उ.— मोहरिल पाँच साथ करि दीने, तिनकी बड़ी बिपरीत। जिम्मैं उनके, माँगैं मोतैं, यह तौ बड़ी अनीति······। बढ़ौ तुम्हार बरामद हूँ कौ लिखि कीनौ है साफ। सूरदास की यहै बीनती, दस्तक कीजै माफ—१-१४३।

मुहा—दस्तक बाँधना (लगाना)—बेकार का खर्च अपने ऊपर डालना।

दस्तकार—संज्ञा पुं. [फा.] हाथ का कारीगर।

दस्तकारी—संज्ञा स्त्री. [फा.] हाथ की कारीगरी।

दस्तखत—संज्ञा पुं [फा.] हस्ताक्षर।

दस्तखती—वि. [फा. दस्तखत] जिस पर हस्ताक्षर हो।

दस्तगीर—संज्ञा पुं. [फा.] सहारा देनेवाला, सहायक।

दस्तयाब—वि. [फा.] मिला हुआ, प्राप्त।

दस्तखान—संज्ञा पुं. [फा. दस्तरख्वान] चादर जिस पर मुसलमानों के यहाँ भोजन की थाली रखी जाती है।

दस्ता—संज्ञा पुं. [फा. दस्त:] (१) हाथ में आनेवाली (चीज)। (२) मूठ, बेंट। (३) फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता। (४) सिपाहियों की छोटी टुकड़ी। (५) चौबीस कागजों की गड्डी। (६) डंडा सोंटा।

दस्ताना—संज्ञा पुं. [फा. दस्तान:] हाथ का मोजा।

दस्तावेज—संज्ञा पुं. [फा.] वह पत्र पर जिस पर कुछ शर्तें तय करके दोनों पक्ष हस्ताक्षर करें।

दस्ती—वि. [फा. दस्त=हाथ] हाथ का।

संज्ञा स्त्री.—(१) मशाल। (२) छोटी मूठ। (३) विजयादशमी के दिन राजा द्वारा सरदारों में बाँटी जानेवाली सौगात।

दस्तूर—संज्ञा पुं. [फा.] (१) रीति-रिवाज, रस्म, प्रथा। (२) नियम, कायदा।

दस्तूरी—संज्ञा स्त्री. [फा.] दूकानदारों द्वारा धनियों के नौकरों को खरीदारी करने पर दिया जानेवाला इनाम।

दस्यु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) डाकू। (२) असुर।

दस्युता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) लुटेरापन, डकैती। (२) क्रूरता, दुष्टता।

दस्युवृत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं] (१) डकैती, चोरी। (२) क्रूरता, दुष्टता।

संज्ञा पुं. [सं] दस्युओं को मारनेवाले, इंद्र।

दस्र—वि. [स.] हिंसा करने वाला।

दह—संज्ञा पुं. [सं. ह्रद] (१) नदी का भीतरी गड्ढा, पाल। उ.—लै बसुदेव धसैं दह सामुहैं तिहूँ लोक उजियारे हो। (२) कुंड, हौज।

संज्ञा स्त्री. [सं. दहन] ज्वाला, लपट, लौ।

वि. [फा.] दस। उ.—(क) भादौं घोर रात अँधियारी। द्वार कपाट कोट भट रोके दह दिसि कंथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय भारी। (ख) गो-सुत गाइ फिरत हैं दह दिसि बने चरित्र न थोरे—२६६४।

दहिए—क्रि. स. [हिं दहना] जलिए, भस्म होइए। उ.—कै दहिए दारुन दावानल जाइ जमुन धँसि लीजै—२८६४।

दहक—संज्ञा स्त्री. [सं. दहन] (१) आग की धधक। (२) ज्वाला, लपट। (३) शर्म, लज्जा।

दहकन—संज्ञा स्त्री. [हिं. दहकना] आग दहकने की क्रिया।

दहकना—क्रि. अ. [सं. दहन] (१) लपट लौ या धधक के साथ जलना। (२) शरीर का तपना।

दहकाना—क्रि. स. [हिं. दहकना] (१) लपट या धधक के साथ आग जलाना। (२) क्रोध दिलाना।

दहगी—संज्ञा स्त्री. [हिं दाह+आग] ताप, गरमी।

दहड़-दहड़—क्रि. वि. [अनु.] धाँय-धायँ करके या लपट के साथ (जलना)।

दहत—क्रि. स. पुं. [हिं. दहना] जलाता या भस्म करता है। उ.—(क) उलटी गाढ़ परी दुर्वासैं, दहत सुदरसन जाकौं—१-११३। (ख) पावक जथा दहत सबही दल तूल-सुमेरु-समान—१-२६६।

दहति—क्रि. स. [हिं दहना] क्रोध से संतप्त करती है, कुढ़ाती है। उ.—कुँवरि सौं कहति वृषभानु घरनी। नैंकु नहिं घर रहति, तोहिं कितनौ कहति, रिसनि मोहिं दहति, बन भई हरनी—६६८।

दहदल—संज्ञा स्त्री, [हिं. दलदल] कीचड़, दलदल।

दहन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जलने या भस्म होने की क्रिया। (२) अग्नि, आग। (३) कृत्तिका नक्षत्र। (४) तीन की संख्या। (५) चीता पशु। (६) एक रुद्र।

दहनकेतन—संज्ञा पुं. [सं०] धूम, धुआँ।

दहनशील—वि. [सं.] जलनेवाला।

दहना—क्रि. अ. [सं. दहन] (१) जलना, भस्म होना। (२) क्रोध से कुढ़ना, भुँझलाना।

क्रि. स. (१) जलाना भस्म करना। (२) दुखी करना, कष्ट पहुँचाना। (३) कुढ़ाना।

क्रि. अ. [हिं. दह] धँसना, नीचे बैठना।

वि. [हिं. दहिना] बायाँ का उलटा, दहिना।

दहनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. दहना] जलने की क्रिया।

दहनीय—वि. [सं.] जलने या जलाये जाने योग्य।

दहनोपल—संज्ञा पुं. [सं. दहन+उपल] (१) सूर्यकांत मणि। (२) आतशी शीशा।

दहपट—वि. [फा. दह=दस, दसो दिशा+पट=समतल] (१) ध्वस्त, नष्टभ्रष्ट, ढाया हुआ। उ.—तृन दसननि लै मिलि दसंकधर, कंठनि मेलि पगा। सूरदास प्रभु रघुपति आए, दहपट होई लँका ६-११४। (२) रौंदा या कुचला हुआ।

दहपटना—क्रि. स. [हिं. दहपट] (१) ढा देना, नष्ट या चौपट करना। (२) रौंदना, कुचलना।

दहपट्टे—क्रि. स. [हिं. दहपट] नष्ट किये, ध्वस्त कर दिये। उ.—तब बिलंब नहिं कियौ, सबै दानव दहपट्टे—१-१८०।

दहबासी—संज्ञा पुं. [फ़ा. दह=दस+बासी (प्रत्य.] दस सैनिकों का नायक।

दहर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) छोटा चूहा। (२) छछूँदर। (३) भाई, भ्राता। (४) बालक। (५) नरक।

वि.—(१) छोटा। (२) सूक्ष्म। (३) दुर्बोध।

संज्ञा पुं. [सं. ह्रद] (१) नदी का गहरा गड्ढा, दह। उ.—अति अचगरी करत मोहन पटकि गेंडुरी दहर। (२) कुंड, हौज।

क्रि. स. [हिं. दहलाना] दहला कर, भयभीत करके। उ.—सूर प्रभु आय गोकुल प्रगट भए सतन दें हरख, दुष्ट जन मन दहर के।

दहर-दहर—क्रि. वि. [अनु०] धू-धू या धायँ-धायँ के साथ (जलते हुए)।

दहरना—क्रि. अ. [हिं. दहलना] भयभीत होना, डरना।

क्रि. स.—[हिं. दहलाना] भयभीत करना।

दहराकाश—संज्ञा पुं. [सं.] ईश्वर।

दहरौरा—संज्ञा पुं. [हिं. दह+बड़ा] (१) दहीबड़ा। (२) गुलगुला-विशेष।

दहल—संज्ञा स्त्री. [हिं. दहलना] डर से काँपने की क्रिया।

दहलना—क्रि. अ. [सं. दर=डर+हिं. हलना=हिलना] डर से चौंकना या काँप उठना।

मुहा.—कलेजा (जी) दहलना—डर से छाती धक धक करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दहला—संज्ञा पुं. [फ़ा. दह=दस+ला (प्रत्य०)] ताश (खेल) का वह पत्ता जिसमें दस चिन्ह या बूटियाँ हों।

सज्ञा पुं. [सं. थल] थाला, थाँवला।

दहलाना—क्रि. स. [हिं. दहलना] भयभीत करना।

दहलीज—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. दहलीज] (१) बाहरी द्वार के चौखट की निचली लकड़ी, देहली, डेहरी। (२) बाहरी द्वार से मिला कोठा।

मुहा.—दहलीज का कुत्ता—हर समय पीछे लगा रहने वाला। दहलीज न झाँकना वैर या ईर्ष्या के कारण किसी के द्वारा पर न जाना। दहलीज की मिट्टी ले डालना—बार-बार किसी के दरवाजे पर जाना।

दहशत- संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] डर, भय, शोक।

दहाई—सज्ञा स्त्री. [फ़ा. दह=दस] (१) दस का मान या भाव। (२) दो अंकों की संख्या में बायाँ अंक जो दसगुने का बोधक होता है।

क्रि. स. [हिं. दहाना] जलाकर, भस्म करके।

दहाड़—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) जोर की गरज, घोर गर्जन। (२) जोर से रोने-चिल्लाने की ध्वनि।

दहाड़ना—क्रि. अ. [अनु.] (१) जोर से गरजना या चिल्लाना। (२) चिल्ला-चिल्ला कर रोना।

दहाना—सज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) चौड़ा मुँह या द्वार। (२) स्थान जहाँ एक नदी दूसरी से या समुद्र से मिलती है।

दहार—संज्ञा पुं. [अ. दयार=प्रदेश] (१) प्रांत, प्रदेश (२) आसपास का प्रदेश।

दहिंगल—संज्ञा पुं. [देश.] एक चिड़िया।

दहिजार—संज्ञा पुं. [हिं. दाढ़ीजार] पुरुषों के लिए स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त एक गाली।

दहिना—वि. [सं. दक्षिण] बायाँ का उलटा।

दहिनावत—वि. [सं. दक्षिणावर्त] (१) जिसका घुमाव दाहिनी ओर को हो दाहिनी ओर घूमा हुआ।

संज्ञा पुं—दाहिनी ओर से चारो ओर घूमने की क्रिया या भाव। उ.—दहिनावर्त देत ध्रुव तारे सकल नखत बहु बार—सारा. १७६।

दहिने—क्रि. वि. [हिं. दहिना] दाहिनी ओर को। उ.—दहिने देखि मृगन की मालहिं—२४८३।

मुहा.- दहिने होना- अनुकूल होना, प्रसन्न होना। दहिने-बायें इधर-उधर, दोनों ओर।

दहिनैं— क्रि. वि. [हिं. दाहिना] दायीं ओर, दाहने हाथ की तरफ। उ.—देखें नंद चले घर आवत। पैठत पौरि छींक भई बाँए, दहिनैं धाह सुनावत—५४१।

दहिबो—सज्ञा पुं. [हिं. दहना=जलना] जलने या जलाये जाने होने का कार्य, भाव, प्रसंग, या स्थिति। उ.—जात अपनी इन अँखियन या तन को दहिबो-३४१।

दहियक—सज्ञा पुं. [फ़ा. दह=दस] दसवाँ हिस्सा।

दहियत—क्रि. स. [हिं. दहना] (१ संतप्त करते दुख देते हैं। (२) जलाते हैं, भस्म करते हैं। उ.—(क) ते बेली कैसैं दहियत हैं, जे अपनैं रस भेइ— १०००। (ख) चदन चंद-किरनि पावक सम मिलि या तन दहियत—२३००। (ग) जरासंध जाय पुकारी महा क्रोध मन दहियत—सारा. ५१३।

दहियल- संज्ञा पुं. [हिं. दहला] थाला, थाँवला।

दहियौ—संज्ञा पुं. [हिं. दही] दधि, दही। उ.—मथुरा जाति हौं बेचन दहियौ—१०-३१३।

दही—संज्ञा पुं. [सं. दधि] खटाई डालकर जमाया हुआ दूध, दधि।

मुहा.—दही दही करना—कोई चीज मोल लेने के लिए जगह-जगह लोगों से कहते फिरना।

क्रि. अ. [हिं. दहना] जली, संतप्त हुई। उ.—(क) चितवति रही ठगी सी ठाढ़ी, कहि न सकति कछु, काम दही—३००४। (ख) अब इन सँदेसन सुनि-सुनि बिरहिनि बिरह दही—३३४४।

दहुँ, दहु—अव्य. [सं. अथवा] (१) या, अथवा। (२) कदाचित्।

दहेंगर—संज्ञा पुं. [हिं. दही+घड़ा] दही का घड़ा।

दहेंड़ी- संज्ञा स्त्री. [हिं. दही+हंडी]। दही की हाँडी।

दहेज—संज्ञा पुं. [अ. जहेज] विवाह में कन्या की ओर से वर-पक्ष को दिया जानेवाला धन और सामान, दायजा, यौतुक।

दहेला—वि. [हिं. दहला+एला (प्रत्य.)] (१) जला हुआ। (२) दुखी, संतप्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि. [हिं. दहलना] भीगा या ठिठुरा हुआ।

दहेली—वि. [हिं. दहेला] दुखी, संतप्त। उ.—सुनि सजनी मैं रही अकेली बिरह दहेली इत गुरु जन भहरैं—१६७१।

दहोतरसो—संज्ञा पुं. [सं. दशोत्तरशत] एक सौ दस।

दहै—क्रि. स. [सं. दहन, हिं. दहना] (१) जलाती है, भस्म करती है। उ.—अगिनि बिना जानैं जो गहै। ततकाल सो ताकौं दहै—६-४। (२) संतप्त करे, दुख पहुँचाती है। उ.—(क) यह आसा पापिनी दहै। तजि सेवा बैंकुठनाथ की, नीच नरनि कैं संग रहै—१-५३। (ख) देहऽभिमान ताहि नहिं दहै—३-१३। (३) क्रोध दिलाती है, कुढ़ाती है। (४) नष्ट करता या मिटाता है, क्षीण करता है। उ.—त्यौं जो हरि बिन जानैं कहै। सो सब अपने पापनि दहै—६-४।

दह्यो—क्रि. स. [हिं दहना] भस्म किया, जलाया। उ. —निगड़ तोरि मिलि मात-पिता को हरष अनल करि दुखहिं दह्यो—२६४४।

दहौं—क्रि. अ. [हिं. दहना] जलता हूँ, बलता हूँ, भस्म होता हूँ। उ.—और इहाँउ बिबेक अगिनि के बिरह-बिदाक दहौं—३-२।

क्रि. स.—मिटाऊँ, नष्ट कर दूँ। उ.—(क) तेरे सब संदेहैं दहौं—३-१३। (ख) तेरे सब संदेहनि दहौं—४-१२।

दहौंगो—क्रि. स. [हिं. दहना] मिटा दूँगा, नष्ट कर दूँगा। उ.—सूर स्याम कहै कर गहि ल्याऊं, ससि-तन-दाप दहौंगो—१०-१६४।

दहौ—क्रि. स. [सं. दहन, हिं. दहना] नष्ट करो, दूर करो, भस्म कर दो। उ.-इहाँ कपिल सौं माता कह्यौ। प्रभु मेरो अज्ञान तुम दहौ—३-१३।

दह्य—वि. [सं.] जो जल सकता हो।

दह्यो, दह्यौ—क्रि. स. [हिं. दहना] (१) जलाया, भस्म किया। (२) मारा, नाश किया। उ.—भक्तबछल बपु धरि नरकेहरि, दनुज दह्यौ, उर दरि सुरसाँईं-१-६।

क्रि. अ.—जला, संतप्त हुआ। उ.—मुनि ताको अंतर्गत दह्यौ—१० उ.-७।

संज्ञा पुं. [हिं. दहो] दही। उ.—(क) सद माखन घृत दह्यौ सजायौ, अरु मीठो पय पीजै—१०-१६०। (ख) जाको राज-रोग कफ बाढ़त दह्यौ खवावत ताहि—३१४५। (ग) कृष्ण छाँड़ि गोकुल कत आये चाखन दूध दह्यौ—२६६७।

दाँ—संज्ञा पुं. [सं. दाच् (प्रत्य)] दफा, बार।

संज्ञा पुं. [फ़ा.] ज्ञाता, जानकार।

दाँई—वि. स्त्री. [हिं. दायाँ] दाहिनी ओर की।

संज्ञा स्त्री. [हिं. दाई] बारी, बार, दफा।

दाँउ—संज्ञा पुं. [हिं. दाँव] अवसर, मौका, दाउँ। उ.—यक ऐसेहि झकझोरति मोको पायौ नीकौ दाँउ—१६१३।

दाँक—संज्ञा स्त्री. [सं. द्रांक्ष=चिल्लाना] दहाड़, गर्जन।

दाँकना—क्रि. अ. [हिं. दाँक+ना] गरजना, दहाड़ना।

दाँकै—क्रि. अ. [हिं. दाँकना] गरज कर, दहाड़ कर।

उ.—जैसे सिंह आपु मुख निरखै परै कूप में दाँकै हो।

दाँग—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] दिशा, ओर।

संज्ञा पुं. [हिं. डंका] नगाड़ा, डंका।

संज्ञा पुं. [हिं. डूँगर] (१) टीला। (२) शृंग।

दाँगर—संज्ञा पुं. [हिं. डाँगर] (१) पशु। (२) मूर्ख।

वि.—जो बहुत दुबला-पतला हो।

दाँज—संज्ञा स्त्री. [सं. उदाहाये] बराबरी, समता।

दाँड़ना—क्रि. स. [सं. दंड] (१) दंड देना। (२) अर्थ-दंड देना, जुरमाना करना।

दाँडाजिनिक—संज्ञा पुं. [सं.] साधु-वेश में (दंड-आदि धारण करके) धोखा देनेवाला।

दाँडिक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दंड देनेवाला। (२) जल्लाद।

दाँड़ी—संज्ञा पुं. [हिं. डाँड़] (१) डंडा। (२) सीमा।

संज्ञा स्त्री.—(१) डंडी (२) डंडे में बँधी झोली की सवारी, झप्पान।

दाँत—संज्ञा पुं. [सं. दंत] (१) दंत, रद, दशन।

यौ.—दाँत का चौका—सामने के चार दाँत।

मुहा.—दाँत उखाड़ना—कठिन दंड देना, मुँह तोड़ना। दाँतो (तले) उँगली काटना (दबाना)—(१) चकित होना, दंग रह जाना। (२) दुख या खेद प्रकट करना। (३) संकेत से मना करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाँत काटी रोटी—बहुत घनिष्ठता, गहरी दोस्ती। दाँत काढ़ना (निकालना)—(१ खीसें बाना, व्यर्थ ही हँसना। (२) दीनता दिखाना, गिड़गिड़ाना। दाँत किटकिटाना (किचकिचाना, पीसना)—(१) बहुत जोर लगाना। (२) बहुत क्रोध करना। दाँत पीस—बहुत क्रोध करके, बहुत झुंझला कर। उ.—सूर केस नहिं टारि सकै कोउ दाँत पीसि जौ जग मरै—१-२३४। दाँत किरकिरे होना—हार मानना। दाँत कुरेदने को तिनका न रहना—सब कुछ चला जाना। दाँत खट्टे करना—(१) खूब हैरान करना। (२) बुरी तरह हराना। दाँत खट्टे होना—(१) हैरान होना। (२) हार जाना। (किसी पर) दाँत गड़ना (लगना)—(१) दाँत चुभने से घाव हो जाना। (२) लेने या पाने की बहुत इच्छा होना। (किसी के) दाँतों चढ़ना—(१) किसी को खटकना या बुरा लगना। (२) किसी की टोंक या हूँस लगना। (किसी को) दाँतों चढ़ाना—(१) बुरी दृष्टि से देखना। (२) नजर लगाना। दाँत चबाना—क्रोध से दाँत पीसना। दाँत चबात—क्रोध से दाँत पीसते हुए। उ.—मेरी देह छुटत जम पठए जितक दूत घर मौं। दाँत चबात चले जमपुर हैं धाम हमारे कौं—१-१५१। दाँत जमना—दाँत निकालना। दाँत झाड़ देना—बहुत दंड देना, मुंह तोड़ना। दाँत गिरना (झड़ना, टूटना)—बुढ़ापा आना। दाँत तोड़ना—(१) हैरान करना। (२) कठिन दंड देना। दाँत दिखाना—(१) हँसना। (२) डराना। (३) अपना बड़प्पन दिखाना। दाँत देखना—दाँत गिनना, परखना। दाँतों धरती पकड़कर—बड़ी तकलीफ और किफायत से। दाँत न लगाना—बिना चबाये निगलना। किसी चीज का दाँत निकाल देना, निकोसना—(दाँत काढ़ना) फट जाना। दाँत निपोरना—(१) व्यर्थ ही हँसना। (२) गिड़गिड़ाना। दाँत पर न रखा जाना—बहुत ही खट्टा होना। दाँत पर मैल जमना—बहुत ही निर्धन होना। दाँत पर रखना—चखना। दाँतों पसीना आना—बहुत कठिन परिश्रम करना। दाँत बजना—सर्दी से दाँत बजना। दाँत मसमसाना (मीसना)—क्रोध से दाँत पीसना। दाँतों में जीभ-सा होना—बैरियों या शत्रुओं के बीच में रहना। दाँतों में तिनका लेना—बहुत गिड़गिड़ाना, विनती करना। (किसी चीज पर) दाँत रखना (लगना)—लेने या पाने की इच्छा रखना। (किसी व्यक्ति पर) दाँत रखना—बदला लेने या वैर निकालने की इच्छा रखना। दाँतों से उठाना—बड़ी कंजूसी से जुगा कर रखना। (किसी पर) दाँत होना—(१) प्राप्त करने की इच्छा होना। (२) बदला लेने की इच्छा रखना। (किसी के) दाँतों में दाँत जमना—शामत आना।

(२) दाँत या अंकुर की तरह किसी चीज का नुकीला भाग, दंदाना, दाँता।

दाँत—वि. [सं.] (१) दबाया हुआ, दमन किया हुआ। (२) जिसने इंद्रियों को वश में कर लिया हो। (३) दाँत से संबंध रखनेवाला।

दाँतना—क्रि. अ. [हिं. दाँत] (पशुओं आदि का) दाँत वाला होकर जवान होना।

दाँतली—संज्ञा स्त्री. [हिं. डाट] काग, डाट।

दाँता—संज्ञा पुं. [हिं. दाँत] दंदाना, नुकीला कँगूरा आदि।

दाँताकिटकिट, दाँताकिलकिल—संज्ञा स्त्री. [हिं. दाँत+किटकिटाना] (१) कहा-सुनी, झगड़ा। (२) गाली, गलौज।

दाँति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) इंद्रियों का दमन, सहन शक्ति। (२) अधीनता। (३) विनय, नम्रता।

दाँती—संज्ञा स्त्री. [सं. दात्री] हँसिया।

संज्ञा स्त्री. [हिं. दाँत] (१) दाँतों की पंक्ति, बत्तीसी। (२) सँकरा पहाड़ी मार्ग, दर्रा।

दांपत्य—वि. [सं.] पति-पत्नी-संबंधी।

संज्ञा पुं.—पति-पत्नी का प्रेम-व्यवहार।

दांभिक—वि. [सं.] (१) पाखंडी। (२) घमंडी।

संज्ञा पु.—बगला, बक।

दाँव, दाव—संज्ञा पुं. [हिं. दाँव] अवसर, दाँव।

दाँवनी—संज्ञा स्त्री. [सं. दामिनी] एक गहना, दामिनी।

दाँवरि, दाँवरी—संज्ञा. स्त्री. [सं. दाम, हिं. दाँवरी] रस्सी, डोरी। उ.—(क) दधि-मिस आपु बँधाए ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौंवरि सुत कुबेर के तारे—१-२५। (ख) बेद-उपनिषद जासु कौं निरगुनहिं बतावैं। सोइ सगुन ह्वै नंद की दौंवरी बँधावैं—१-४।

दा—संज्ञा पुं. [अनु.] सितार का एक बोल।

प्रत्य० स्त्री०—देनेवाली, दात्री।

दाइँ दाइ—संज्ञा पुं. [हिं. दाँव] (१) बार, दफा। उ.—एक दाइँ मरिबो पै मरिबो नंदनँदन के काजनि—२८७२। (२) दाँव।

दाइ—संज्ञा स्त्री. [हिं दाई] वह स्त्री जो स्त्रियों को बच्चा जनने में सहायता देती है, दाई। उ.—लाख टका अरु झूमका सारी दाइ कौ नेग—१०-४०।

दाइज, दाइजा, दाइजो—संज्ञा पुं. [सं. दाय] वह धन जो विवाह में वर-पक्ष को दिया जाय। उ.—(क) दसरथ चले अवध आनंदत। जनकराइ बहु दाइज दै करि, बार-बार पद बंदत—९-२७। (ख) कहूँ सुत-ब्याह कहूँ कन्या को देत दाइजो रोई।

दाइँ—वि. स्त्री. [हिं. दायाँ] दाहिनी।

संज्ञा स्त्री. [सं. दाच् (प्रत्य.), हिं. दाँ (प्रत्य.)] बार, दफा।

दाई—संज्ञा स्त्री. [सं. धात्री या फा. दायः] (१) दूसरे के बच्चे को दूध पिला कर पालनेवाली, धाय। (२) बच्चे की देखभाल करनेवाली सेविका। (३) वह स्त्री जो बच्चा जनने में सहायता देती है। उ.—भगरिनि तैं मैं बहुत खिझई। कंचन-हार दिएँ नहि मानति, तुहीं अनोखी दाई—१०-१६।

मुहा.—दाई से पेट छिपाना (दुराना)—जाननेवाले से कोई भेद छिपाना। दाई आगे पेट दुरावति—रहस्य या भेद जाननेवाले से कोई बात छिपाती है। उ.—औरनि सौं दुराव जो करती तौ हम कहती भली सयानी। दाई आगे पेट दुरावति वाकी बुद्धि आज मैं जानी—१२६२।

संज्ञा स्त्री. [हिं दादी] (१ दादी। (२) बूढ़ी स्त्री।

वि. [हिं. दायी] देनेवाला।

दाँउ, दाउ—संज्ञा पुं. [हिं. दाँव (१) बार, दफा, मरतबा। (२) बारी, पारी। (३) मौका, उपयुक्त अवसर या संयोग। उ.—यक ऐसिहि झकझोरिति मौको पायौ नीकौ दाउँ—पृ. ३१३ (१३)।

मुहा.—दाँउ लेना—बुरे या अनुचित व्यवहार का बदला लेना। लैहौं दाउँ—पिछले अनुचित व्यवहार का बदला लूँगा। उ.—(क) असुर क्रोध ह्वै कह्यौ बहुत तुम असुर सँहारे। अब लैहौं वह दाँउ छाँड़िहौं नहिं बिन मारे—३-११। (ख) सूर स्याम सोइ सोइ हम करिहैं, जोइ जोइ तुम सब कैहौ। लैहैं दाँउ कबहुँ हम तुमसौं, बहुरि कहाँ तुम जैहौ—७६३। लेत दाँउ—बदला लेता है, जैसा व्यवहार किया गया था, वैसा ही उत्तर देता है। उ.—मारि भजत जो जाहि, ताहि सो मारत, लेत अपनौ दाँउ—५३३। लयौ दाउ—बदला ले लिया, प्रतिकार कर लिया। उ.—मेरे आगैं महरि जसोदा, तोवौं गारी दीन्ही। ....। तोसौं कहि पुनि कह्यौ बबा कौं, बड़ौ धूत बृषभान। तब मैं कह्यौ, ठग्यौ कब तुमकौं हँसि लागी लपटान। भली कही तू मेरी बेटी, लयौ आपनौ दाउ—७०६। दाँव लियौ - बदला लिया। उ.—और सकल नागरि नारिनि कौं दासी दाँउ लियौ—२०८७।

(४) मतलब गाँठने का उपाय, चाल या युक्ति। (५) कुश्ती जीतने का पेच या बंद। उ.—तब हरि मिले मल्लक्रीड़ा करि बहु बिधि दाँउ दिखाये—सारा. ५२१।

यौ०—दाँउ-घात—दाँव-पेच, जीत के उपाय, युक्ति। उ.—यह बालक धौं कौन को कीन्हौ जुद्ध बनाइ। दाँउ-घात बहुतैं कियौ, मरत नहीं जदुराइ—५८६।

(६) छल-कपट का व्यवहार। उ.-अब करति चतुराइ जाने स्याम पढ़ाये दाँउ १२८३। (७) खेलन की बारी या पारी, चाल। (८) जीत का कौड़ो या पाँसा। उ.—(क) दाँउ बलराम को देखि उन छल कियो रुक्म जीत्यौ कहन लगे सारे। देवबानी भई, जीत भई राम की, ताहू पै मूढ़ नाहीं सँभारे—१० उ. ३३। (ख) दाँउ अबकैं परयौ पूरौ, कुमति पिछली हारि—१-३०६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा.—दाँउ देना—खेल में हारने पर दूसरे को खिलाना या नियत दंड भोगना। दाँउ देत नहिं—हारने पर भी दूसरे को खेलने नहीं देते। उ.—तुम्हरे संग कहो को खेलै दाउँ देत नहिं करत रुनैया। दाँउ दियौ—स्वयं हारने के बाद जीतनेवाले को खिलाया। उ.—रुहठिं करै ताथौं को खेलै, रहे बैठि जहँ-तहँ सब ग्वैयाँ। सूरदास प्रभु खेल्यौइ चाहत, दाँउ दियौ करि नंद-दुहैया—१०-२४५।

दाऊ—संज्ञा पुं. [सं. देव] (१) अवस्था में बड़ा भाई, बड़े भैया। (२) श्री कृष्ण के भाई, बलराम। उ.—(क) दाऊ जू, कहि स्याम पुकार्‌यौ—४८७। (ख) मैया री मोहिं दाऊ टेरत—४८४।

दाक्षायण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सोना, स्वर्ण। (२) स्वर्णमुद्रा। (३) दक्ष प्रजापति का किया हुआ एक यज्ञ।

वि.—(१) दक्ष से उत्पन्न। (२) दक्षसंबंधी।

दाक्षायणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) दक्ष-कन्या। (२) दुर्गा।

वि. [सं. दाक्षायणिन] सोने का, स्वर्णमय।

दाक्षिण—वि. [सं.] (१) दक्षिण-संबंधी। (२) दक्षिणा-संबंधी।

दाक्षिणात्य—वि. [सं.] दक्षिण का दक्षिणी।

संज्ञा पुं.—(१) भारत का दक्षिणी भाग। (२) इस भाग का निवासी। (३) नारियल।

दाक्षिण्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रसन्नता, अनुकूलता। (२) उदारता। (३) दूसरे को प्रसन्न करने का भाव।

वि.—(१) दक्षिण-संबंधी। (२) दक्षिणा-संबंधी।

दाक्षी—संज्ञा स्त्री. [सं.] दक्ष की कन्या।

दाक्ष्य—संज्ञा पुं. [सं] दक्षता, निपुणता, कौशल।

दाख—संज्ञा स्त्री. [सं. द्राक्षा] (१) अंगूर। (२) मुनक्का-किशमिश। उ.—ऊधौ मन माने की बात। दाख-छुहारा छाँड़ि अमृत-फल बिष-कीरा बिष खात—४०२१।

दाखिल—वि. [फ़ा] (१) प्रविष्ट, घुसा हुआ। (२) मिला हुआ, सम्मिलित। (३) पहुँचा हुआ।

दाखिला—संज्ञा पुं. [फ़ा] (१) प्रवेश, पैठ। (२) सम्मिलित किये जाने का कार्य।

दाखी—संज्ञा स्त्री. [सं. दाक्षी] दक्ष की कन्या।

दाग—संज्ञा पुं. [सं. दग्ध] (१) जलाने का काम, दाह। (२) मुर्दा जलाने का काम, दाह-कर्म। (३) जलन, जलने की वेदना। उ.—मिलिहैं हृदय सिराइ स्रवन सुनि मेटि बिरह के दाग—२६४८। (४) जलने का चिह्न।

संज्ञा पुं. [फा. दाग़] (१) धब्बा, चित्ती। (२) निशान, चिह्न। उ.—(क) कुंडल मकर कपोलनि झलकत स्रम सीकर के दाग—१२१४। (ख) दसन-दाग नख-रेख बनो है—१६५६। (३) फल आदि के सड़ने का निशान। (४) कलंक, दोष।

दागदार—वि. [फा.] (१) दागी। (२) धब्बेदार, धबीला।

दागना—क्रि. स. [हिं. दाग] (१) जलाना, दग्ध करना। (२) तपे हुए लोहे से चिह्न डालना। (३) धातु के तप्त साँचे से चिह्न डालना। (४) तेज दवा से फोड़े-फुंसी को जलाना। (५) बंदूक आदि में बत्ती देना या आग लगाना।

क्रि. स. [फा. दाग़] रंग आदि से चिह्न अंकित करना।

दागबेल—संज्ञा स्त्री. [फा. दाग़+हिं बेल] कच्ची भूमि पर सिधान के लिए फावड़े आदि से बनाये हुए चिह्न।

दागर—वि. [हिं. दागना ?] नष्ट करनेवाला, नाशक।

दागी—वि. [फा. दाग] (१) जिस पर दाग-धब्बा लगा हो। (२) जिस पर सड़ने का निशान हो। (३) जिसको कलंक लगाया गया हो, कलंकित। (४) जिसे दंड मिल चुका हो, दंडित।

क्रि. स. [हिं. दागना] जलायी, भस्म की।

दागे—क्रि. स. [फा. दाग] रंग आदि के चिन्ह अंकित किये। उ.—कबहुँक बैठि अंस भुज धरि कै पीक कपोलनि दागे।

दाग्यौ—क्रि. स. [हिं. दागना] (१) दाग लगाया, जलाकर कोई चिन्ह बनाया, छाप, लगायी। उ.—तौ जु कोऊ ताग्यौ नहिं जो मोसौं पतित न दाग्यौ—१-७३। (२) रंग आदि से चिह्नित किया। उ.—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबहुँक जावक कहुँ बने तमोर रँग कहुँ अंग रँगुर दाग्यो—१६७२।

दाघ—संज्ञा पुं. [सं.] गरमी, ताप, दाह, जलन।

दाझ, दाझ—संज्ञा पुं [सं. दाहन] (१) अँधेरा। (२) अँधेरी रात।

दाजन, दाझन—संज्ञा स्त्री. [सं. दहन] जलन।

दाजना, दाझना—क्रि. अ. [सं. दग्ध] जलना, ईर्ष्या करना, द्वेष रखना।

क्रि. स.-जलाना, संतप्त करना।

दाड़क—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दाढ़, डाढ़। (२) दाँत।

दाड़िम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अनार। उ.—दाड़िम दामिनि कुंदकली मिलि बाढ़्यौ बहुत बखान—सा. उ.—१५। (२) इलाइची।

दाड़िमप्रिय—संज्ञा पुं. [सं.] तोता, शुक।

दाड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. दाड़िम] अनार, दाड़िम।

दाढ़—संज्ञा स्त्री. [सं. दंष्ट्र, प्रा. डड्डा] दंत-पंक्तियों के दोनों छोर पर के चौड़े दाँत, चौभर।

मुहा.—दाढ़ गरम होना - भोजन मिलना।

संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) दहाड़, (२) चिल्लाहट।

मुहा.—दाढ़ मारकर रोना—चिल्लाकर रोना।

दाढ़ना—क्रि. स. [सं. दाहन] (१) आग में जलना या भस्म होना, (२) संतप्त या दुखी करना।

दाढ़ा—संज्ञा पुं. [हिं. दाढ़] (१) वन की आग। (२) आग। (३) दाह जलन।

मुहा.—दाढ़ा फूँकना - जलन पैदा करना।

दाढ़िक, दाढ़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दाढ़] (१) ठोढ़ी, ठुड्डी। (२) गाल, दाढ़ और ठुड्डी के बाल।

दाढ़ीजार—संज्ञा पुं. [हिं. दाढ़ी+जलना] (१) वह जिसकी दाढ़ी जली हो। (२) मूर्ख पुरुषों केलिए झुँझलायी हुई स्त्रियों की एक गाली।

दात—संज्ञा पुं. [सं. दाता] देनेवाला। उ.—जाके सखा स्यामसुंदर से श्रीपति सकल सुखन के दात-१०उ.५६।

संज्ञा पुं. [सं. दातव्य] दान। उ.—गोकुल बजत सुनी बधाई लोगनि हियैं सुहात। सूरदास आनंद नंद कैं देत कनक नग दात—१०-१२।

दातव्य—वि. [सं.] देने योग्य।

संज्ञा पुं.-(१) दान देने की क्रिया। (२) उदारता।

दाता—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह जो दान दे, दानी। (२) देनेवाला। (३) उदार।

दातापन—संज्ञा पुं. [सं. दाता+हिं. पन] दानशीलता।

दातार—संज्ञा पुं. [सं. दाता का बहु.] देनेवाले, दाता। उ.—कानौं नाम बताऊँ तोकौं। दुखदायक अदृष्ट मम मोनौं। कहियत इतने दुख-दातार—१-२६०।

दाती—संज्ञा स्त्री. [सं. दात्री] देनेवाली। उ.—पलित केस कफ कंठ बिरोध्यौ कल न परै दिन राती। माया-मोह न छाँड़े तृष्ना ए दोऊ दुख-दाती।

दातुन, दतून, दातौन—संज्ञा स्त्री. [हिं. दतुवन] (१) दाँत साफ करने की क्रिया। (२) नीम, बबूल आदि की छोटी टहनी का एक बालिश्त के बराबर टुकड़ा, जिससे दाँत साफ किये जाते हैं।

दातृता—संज्ञा स्त्री. [सं.] दानशीलता, उदारता।

दातृत्व—संज्ञा पुं. [सं.] दानीपन, उदारता।

दात्र—संज्ञा पुं. [सं.] हँसिया, दाँती।

दात्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] देनेवाली।

संज्ञा स्त्री. [सं. दात्र] हँसिया, दाँती।

दाद—संज्ञा स्त्री. [सं. दद्रु] एक चर्मरोग।

संज्ञा स्त्री.—[फा.] इंसाफ, न्याय।

मुहा.—दाद चाहना—अन्याय या अत्याचार के विरोध या प्रतिकार की प्रार्थना करना। दाद देना—(१) न्याय या इंसाफ करना। (२) प्रशंसा या बड़ाई करना, सराहना।

दादनी—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) रकम जो चुकानी हो। (२) रकम जो अग्रिम दी जाय।

दादर—संज्ञा पुं. [हिं. दादुर] मेंढक, मंडूक। उ.—ज्यौं पावस रितु घन-प्रथम घोर। जल जंवक, दादर रटत मोर—६-१६६।

संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का चलता गाना।

दादरा—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का चलता गाना।

दादस—संज्ञा स्त्री [हिं. दादा+सास] सास की सास।

दादा—संज्ञा पुं. [सं. तात] (१) पिता के पिता, पितामह। (२) बड़ा भाई। (३) बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द।

दादि—संज्ञा स्त्री. [फा. दाद] न्याय, इंसाफ, प्रशंसा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उ.—सदा सर्बदा राजाराम को सूर दादि तहँ पाई —६-१७।

दादी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दादा] पिता की माता।
संज्ञा पुं.—[फा. दाद] न्याय चाहनेवाला।

दादु—संज्ञा स्त्री. [सं. दद्रु] दाद नामक चर्मरोग।

दादुर, दादुल—संज्ञा पुं. [सं. दर्दुर] मेढक। उ.—(क) मनु बरषत मास अषाढ़ दादुर मोर ररे—१०-२४। (ख) गर्जत गगन गयंद गुंजरत अरु दादुर किलकार—२८२०। (ग) दादुल जल बिन जियै पवन भख मीन तजै हठि प्रन—३३५७।

दादू—संज्ञा पुं. [अनु. दादा] (१) दादा के लिए स्नेह-सूचक संबोधन। (२) आत्मीयता सूचक सामान्य संबोधन। (३) अकबर के समकालीन एक साधु जिनका पंथ प्रसिद्ध है।

दादूपंथी—संज्ञा पुं. [सं. दादू+पंथी] दादू या दादू-दयाल नामक साधु के अनुयायी, जिनके तीन वर्ग हैं—विरक्त या संन्यासी, नागा या सैनिक और विस्तर धारी या गृहस्थ।

दाध—संज्ञा स्त्री. पुं. [सं. दाद] जलन, दाह, ताप।

दाधना—क्रि. स. [सं. दग्ध] जलाना, भस्म करना।

दाधा—संज्ञा पुं. [सं. दग्ध, हिं दाध] जलन, दुख, दाह, ताप। उ.—निरखत बिधि भ्रमि भूलि परयौ तब, मन-मन करत समाधा। सूरदास प्रभु और रच्यौ बिधि, सोच भयौ तन दाधा—७०५। (ख) सूरदास प्रभु मिले कृपा करि गये दुरति दुख दाधा—१४३७।
वि.—जला हुआ, जो जल गया हो।

दाधीचि—संज्ञा पुं. [सं.] दधीचि का वंशज या गोत्रज।

दाधे—संज्ञा पुं. [हिं. दाद, दग्ध] जला हुआ स्थान।
मुहा.—दाधे पर लोन लगावै—जले पर नमक लगाना, दुखी या पीड़ित को अप्रिय वाक्यों या कार्यों से और पीड़ा पहुँचाना। उ.—सूरदास प्रभु हमहिं निदरि दाधे पर लोन लगावै—३०८८।
क्रि. स.—जलाये, भस्म किये। उ.—बिबरन भये खंड जो दाधे बारिज ज्यों जलमीन—२७६७।

दाधौ—वि. [हिं. दाध] जो जला हुआ हो। उ.—हरि-मुख ए रंग-संग खिये दाधौ फिरे जरै—२७७०।

दान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देने का काम। (२) श्रद्धा भाव से देने का काम। (३) वस्तु जो दान में दी जाय। (४) कर, चुंगी, महसूल। उ.—तुम समार की बाम कहा काहू को करिहौ। चोरी जाती हौ दान सब दिन का भरिहौं। (५) राजनीति का एक उपाय जिसमें कुछ देकर शत्रु के विरुद्ध सफलता पाने का प्रयत्न किया जाय। (६) हाथी का मद। (७) छेदन। (८) शुद्धि। (९) एक तरह का मधु।

दानक—संज्ञा पुं. [सं.] बुरा दान।

दानकुल्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] हाथी का मद।

दानधर्म—संज्ञा पुं. [सं.] दान-पुण्य।

दानपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सदा दान देनेवाला। (२) अक्रूर का एक नाम जो उसे स्यमंतक मणि के प्रभाव से प्रति दिन प्रचुर दान देने के कारण दिया गया था।

दानपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] वह पत्र या लेख जिसमें संपत्ति दान का लेखा हो।

दानपात्र—संज्ञा पुं. [सं.] दान पाने का अधिकारी।

दानलीला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) श्रीकृष्ण की एक लीला जिसमें उन्होंने गोपियों से गोरस का कर वसूल किया था। (२) वह ग्रंथ जिसमें इस लीला का वर्णन किया गया हो।

दानव—संज्ञा पुं. [सं.] 'दनु' नामक पत्नी से उत्पन्न कश्यप के पुत्र, दनुज, असुर, राक्षस।

दानवगुरु—संज्ञा पुं. [सं.] शुक्राचार्य।

दानवप्रिया—संज्ञा स्त्री. [सं. दानव=दैत्य; यहाँ आशय कुंभकरण से है; कुंभकरण की प्रिया=नींद] नींद, निद्रा। उ.—दानव प्रिया सेर चालै सौ सुरभी रस गुड़ सींचो। तजत न स्वाद आपने तन को जो बिधि दीनो नीचो—सा. ६०।

दानवारि—संज्ञा पुं. [सं. दानव+अरि=शत्रु] (१) विष्णु। (२) देवता। (३) इंद्र।

दान-वारि—संज्ञा पुं. [सं.] हाथी का मद।

दानवी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) दानव की स्त्री। (२) दानवाकार भयानक आकृति और क्रूर प्रकृतिवाली स्त्री।

दानवी, दानवीय—वि. [सं. दानवीय] दानव-संबंधी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानवीर—संज्ञा पुं. [सं.] अत्यंत दानी।

दानवेंद्र—संज्ञा पुं. [सं. दानव+इंद्र] राजा बलि।

दानशील—वि. [सं.] दान करनेवाला।

दानशीलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] दान की वृत्ति, उदारता।

दानसागर—संज्ञा पुं. [सं.] कई वस्तुओं का महादानी।

दाना—संज्ञा—पुं. [फा. दानः] (१) अनाज का कण। (२) अनाज, अन्न। (३) भुना अनाज, चबेना। (४) छोटे-छोटे बीज। (५) अनार आदि फलों के बीज। (६) छोटी गोल वस्तु जो प्रायः गूँथी जाय। (७) माला की एक मनका या गुरिया। (८) छोटी-छोटी गोल चीजों के लिए संख्या-सूचक शब्द। (९) रवा, कण। (१०) किसी चीज का हलका उभार। (१०) शरीर के चमड़े पर किसी कारण पड़ जानेवाला हल्का उभार।

वि. [फा. दाना] बुद्धिमान, अक्लमंद।

दानाई—संज्ञा स्त्री. [फा.] अक्लमंदी, बुद्धिमानी।

दाना-चारा—संज्ञा पुं. [फा. दाना+हिं. चारा] भोजन।

दानाध्यक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] दान का प्रबंध करनेवाला कर्मचारी या सेवक।

दाना-पानी—संज्ञा पुं. [फा. दाना+हिं. पानी] (१) खान-पान, अन्न-जल। (२) जीविका, रोजी।

मुहा.—दाना-पानी उठना—जीविका न रहना।

(३) कहीं रहने-बसने का संयोग।

दानि—वि. [हिं. दानी] जो दान करे, उदार।

संज्ञा पुं.—(१) दान करनेवाला व्यक्ति, दाता। उ.—सकल सुख के दानि आनि उर, दृढ़ विश्वास भजौ नँदलालहिं—१-७४। (२) उदार। उ.—कृपा निधान दानि दामोदर सदा सँवारन काज—१-१०६।

दानिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] दान करनेवाली स्त्री।

दानिया—संज्ञा पुं. [हिं. दानी] उदार, दानी।

दानी—वि. [सं. दानिन्] जो दान करे, उदार।

संज्ञा पुं.—दान करनेवाला व्यक्ति, दाता।

संज्ञा पुं.—[सं. दानीय] (१) कर-संग्रह करने या दान लेनेवाला। उ.—(क) तुम जो कहति हौ मेरौ कन्हैया गंगा कैसौ पानी। बाढ़िर तरुन किशोर वयस वर बाट-घाट का दानी—१०-३११। (ख) परुसत ग्वारि ग्वार सब जेंवत मध्य कृष्ण सुखकारी। सूर स्याम दधि दानी कहि कहि आनँद घोष-कुमारी।

दानीय—वि. [सं.] दान करने योग्य।

दाने—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. दाना] अनाज के कण।

मुहा.—दाने दाने को तरसना—भोजन का बहुत कष्ट सहना। दाने दाने को मुहताज—बहुत दरिद्र।

दानेदार—वि. [फा.] जिसमें दाने या रवे हों।

दानो, दानौ—संज्ञा पुं. [हिं. दानव] दैत्य, दनुज, दानव। उ.—इमता जहाँ तहाँ प्रभु नाहीं सो इमता क्यौं मानौं। प्रगट खंभ तें दए दिखाई जद्यपि कुल कौ दानो—१-११।

दान्हे—वि. [हिं. दाहना] बाँया, दहना। उ.—जल दान्हें कर आनि कहत मुख धोवहु नारी-२०६०।

दाप—संज्ञा पुं. [सं. दर्प, प्रा. दप्प] (१) जलन, ताप, दुख। उ.—(क) दियौ क्रोध करि शिवहिं सराप करौ कृपा जो मिटै यह दाप—४-५। (ख) हरि आगे कुबिजा अधिकारनि को जीवै इहिं दाप—२६७९। (२) क्रोध। उ.—कच कौं प्रथम दियौ मैं साप। उनहूँ मोहिं दियौ करि दाप—९-१७४। (३) अहंकार, घमंड, अभिमान। (४) शक्ति, बल, जोर। (५) उत्साह, उमंग। (६) रोब, आतंक।

दापक—संज्ञा पुं. [सं. दर्पक] दबानेवाला। उ.—सो प्रभु हैं जल-थल सब व्यापक। जो है कंस दर्प को दापक—१००१।

दापना—क्रि. स. [हिं. दाब] (१) दबाना। (२) रोकना।

दाब—संज्ञा स्त्री. [हिं. दबना] (१) दबने-दबाने का भाव। (२) भार, बोझ।

मुहा—दाब में होना-वश या अधीन होना।

(३) आतंक, अधिकार, दबदबा, शासन।

मुहा—दाब दिखाना—अधिकार या हुकूमत जताना। दाब मानना—वश में या अधीन होना। दाब में रखना—वश या शासन में रखना। दाब में लाना—वश या शासन में करना। दाब में होना—वश या शासन में होना।

दाबदार—वि. [हिं. दाब+फा. दार] रोब-प्रभाव वाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाबना—क्रि. स. [हिं. दबाना] (१) भार या बोझ के नीचे लाना। (२) शरीर के किसी अंग से जोर लगाना (३) पीछे हटाना। (४) गाड़ना या दफन करना। (५) प्रभाव या आतंक जमाना। (६) गुण या महत्व की अधिकता से दूसरे को हीन कर देना। (७) बात या चर्चा को फैलने न देना। (८ दमन करना। (९) अनुचित अधिकार करना। (१०) विवश कर देना।

दाभ—संज्ञा पुं. [सं. दर्भ] एक तरह का कुश, डाभ।

दाभ्य—संज्ञा पुं. [सं.] जो वश में आ सके।

दाम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रस्सी, रज्जु। उ.—नंद पितु माता जसोदा बाँधे ऊखल दाम—२५८३। (२) माला, हार, लड़ी। उ.—(क) कहुँ क्रीड़त, कहुँ दाम बनावत, कहूँ करत सिंगार। (ख) निरखि कोमल चारु मूरति हृदय मुकुता दाम—२५६५। (३) समूह, राशि। (४) लोक, विश्व।

संज्ञा पुं. [फा.] जाल, फंदा, पाश। उ.—लोचन चोर बाँधे स्याम। जात ही उन तुरत पकरे कुटिल अलकनि दाम—पृ. ३२४ (२८)।

संज्ञा पुं. [हिं. दमड़ी] (१) एक दमड़ी का तीसरा भाग।

मुहा.—दाम दाम भर देना-लेना—कौड़ी-कौड़ी चुका देना-लेना।

(२) मूल्य, कीमत, मोल। उ.-इमतौं लीजै दान के दाम सबै परखाई—१०१७।

मुहा.—दाम उठना—कोई वस्तु बिक जाना। (किसी वस्तु का) दाम करना (चुकाना)—मोल-भाव करना। दाम खड़ा करना—मूल्य वसूलना। दाम भरना—नष्ट करने के कारण किसी चीज का मूल्य देने को विवश होना, डाँड़ देना। दाम भर पाना—सारा मूल्य पा जाना। (३) धन, रुपया-पैसा। उ.—(क) बालापन खेलत ही खोयौ, जोबन जोरत दाम—१-५७। (ख) कोउ कहै देहैं दाम नृपति जेतो धन चाहै—५८६। (४) सिक्का, रुपया। उ.—हरि कौ नाम, दाम खोटे लौं, झकि झकि डारि दयौ—१-६४। (५) राजनीति में धन देकर शत्रु को वश में करने की चाल।

वि. [सं.] देनेवाला, दाता।

दामक—संज्ञा पुं. [सं.] लगाम, बागडोर।

दामन—संज्ञा पुं. [फा.] (१) अंगे, कुर्ते आदि का निचला भाग, पल्ला। (२) पहाड़ का निचला भाग।

संज्ञा पुं. बहु. [सं.] मूल्य, कीमत, मोल, धन।

मुहा.—बिन दामन मो हाथ बिकानी - बिना मोल के वश में या अधीन हो गयी। उ.—धन्य धन्य दृढ़ नेम तुमारौं बिन दामन मो हाथ बिकानी—१७१९।

दामनगीर—वि. [फा.] (१) पल्ला पकड़ने या पीछे पड़ जानेवाला, सिर हो जानेवाला। उ.—अपने पिंड पोषिबैं कारन कोटि सहस जिय मारे। पापनि तैं क्यौं उबरौगे दामनगीर तुम्हारे—१-३३४।

मुहा—दामनगीर होना—पीछे पड़ना या लगना।

(२) दावा करने वाला, दावेदार।

दामनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] रस्सी, रज्जु।

दामर, दामरि, दामरी - संज्ञा स्त्री. [सं. दाम] रस्सी।

दामा—संज्ञा स्त्री, [सं. दावा] दावानल।

संज्ञा स्त्री. [सं. दाम] राधा की एक सखी का नाम। उ.—कहि राधा किन हार चोरायौ।...... प्रेमा दामा रूपा हंसा रंगा हरषा जाउ—१५८०।

दामाद—संज्ञा पुं. [फा.] जवाँई, जामाता।

दामिन, दामिनि, दामिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. दामिनी] (१) बिजली, विद्युत्। उ.—(क) घन-दामिनि धरती लौं कौंधै, जमुना-जल सौं पागे—१०-४। (ख) नील बसन तनु, सजल जलद मनु, दामिनि बिवि भुज-दंड चलावति—१०-१४६। (२) स्त्रियों के सिर का एक गहना, बेंदी, बिंदिया, दावँनी।

दामी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दाम] कर, मालगुजारी।

वि.—अधिक दाम या मूल्यवाला।

दामोद—संज्ञा पुं. [सं.] अथर्ववेद की एक शाखा।

दामोदर—संज्ञा पुं. [सं. दाम=(१) रस्सी, (२) लोक + उदर) (दम अर्थात इंद्रिय-दमन में श्रेष्ठ)। (१) श्रीकृष्ण जो एक बार रस्सी से बाँधे गये थे। उ.—(क) तौलौं बँधे देव दामोदर जौ लौं यह हरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीती—सारा, ४५२। (ख) जन-कारन भुज आपु बँधाए बचन कियौ रिषि ताम। ताही दिन तैं प्रगट सूर प्रभु यह दामोदर नाम—३६१। (२) विष्णु जिनके उदर में सारा विश्व ह। (३ जैनियों के एक तीर्थंकर।

दायँ—संज्ञा पुं. [हिं. दावँ] (१) बार। (२ बारी।
संज्ञा स्त्री. [हिं. दाईं] (१) बार। (२) बारी।
संज्ञा स्त्री. [सं. दमन] कटी हुई फसल को बैलों से रौंदवा कर दाना-भूसा अलग करने की क्रिया, दवँरी।
संज्ञा स्त्री [?] बराबरी, समानता।

दाय—संज्ञा पुं. [सं.] किसी को दिया जानेवाला धन। (२) दान आदि में देने का धन। (३) उत्तराधिकारियों में बाँटा जा सकनेवाला पैतृक धन। (४) दान।
संज्ञा पुं. [सं. दाव] जलन, ताप दुख।

दायक—संज्ञा पुं. [सं.] देनेवाला, दाता।

दायज, दायजा, दायजो—संज्ञा पुं. [सं. दाय] वह धन जो विवाह में वर-पक्ष को दिया जाय, दहेज, यौतुक। उ.—कहुँ सुत ब्याह कहूँ कन्या को देत दायजौ रोई—सारा. २३५।

दायभाग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पैतृक धन का भाग। (२) पैतृक या संबंधी के धन के बटवारे की व्यवस्था।

दायर—वि. [फा.] (१) चलता हुआ। (२) जारी।
मुहा.—दायर होना—किसी के समक्ष पेश होना या उपस्थित किया जाना।

दायरा—संज्ञा पुं. [अ.] (१) गोल घेरा। (२) वृत्त। (३) मडली। (४) खँजड़ी, डफली।

दायाँ—वि. [हिं. दाहिना] दाहिना।

दाया—संज्ञा स्त्री. [हिं. दया] दया-कृपा। उ.—दाया करि मोकौं यह कहिए अमर होहुँ जेहि भाँति—सारा. १५१।

दायागत—वि. [सं.] हिस्से में मिला हुआ।

दायाद—वि. [सं.] हिस्सा या दाय पाने का अधिकारी।
संज्ञा पुं.—(१) पुत्र। (२) सपिंड कुटुंबी।

दायादा, दायादी—संज्ञा स्त्री. [सं.] कन्या।

दायित—वि. [सं.] दान किया हुआ।

दायित्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देनदार होने का भाव। (२) जिम्मेदारी, जवाबदेही।

दायिनी—वि. स्त्री. [सं.] देनेवाली।

दायी—वि. [सं. दायिन्] देनेवाला।

दायें—क्रि. वि. [हिं. दायाँ] दाहिनी ओर को।
मुहा.—दायें होना—अनुकूल या प्रसन्न होना।

दार—संज्ञा स्त्री. [सं.] स्त्री, पत्नी, भार्या। उ.—नाम सुनीति बड़ी तिहिं दार। सुरुचि दूसरी ताकी नार—४-६।
संज्ञा पुं. [सं. दारु] (१) काठ। (२) बढ़ई।

दारक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) लड़का। (२) पुत्र।
वि. [सं.] फाड़ने या विदीर्ण करनेवाला।

दारकर्म—संज्ञा पुं. [सं.] विवाह।

दारण—संज्ञा पुं. [सं.] चीड़-फाड़ की क्रिया।

दारद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक तरह का विष। (२) पारा। (३) ईंगुर।

दारना—क्रि. स. [सं. दारण] (१) चीरना फाड़ना। (२) नष्ट करना।

दारपरिग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] स्त्री का ग्रहण, विवाह।

दारमदार—संज्ञा पुं. [फा.] (१) आश्रय। (२) कार्यभार।

दारसंग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] स्त्री का ग्रहण, विवाह।

दारा—संज्ञा स्त्री. [सं. पुं. दार] स्त्री, पत्नी। उ.—(क) सुख-संपत्ति दारा-सुत हय-गय झूठ सबै समुदाइ—१-३१७। (ख) धन-दारा-सुत-बंधु-कुटुँब-कुल निरखि-निरखि बौरान्यौ—१-३१६।

दारि—संज्ञा स्त्री. [हिं. दाल] दाल। उ.—बेसन दारि चनक करि बान्यौ—१००६।

दारिउँ—संज्ञा पुं [हिं. दाड़िम] अनार।

दारिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बालिका। (२) पुत्री।

दारित—वि. [सं.] चीरा-फाड़ा हुआ।

दारिद, दारिद्र, दारिद्र्य—संज्ञा पुं. [सं. दारिद्र्य] दरिद्रता, निर्धनता। उ.—सुदामा दारिद्र भंजे कूबरी तारी—१-१७६।

दारिम—संज्ञा पुं. [सं. दाड़िम] अनार।

दारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] बेवाई का रोग, खरवा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा स्त्री. [सं. दारिका] युद्ध में जीत कर लायी गयी दासी।

दारीजार— संज्ञा पुं. [हिं. दारी + सं. जार] (१) दासी का पति (गाली)। (२) दासीपुत्र, गुलाम।

दारु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) काष्ठ, काठ, लकड़ी। उ.—जो यह बधू होइ काहू की, दारु-स्वरूप धरे। छूटैं देह, जाइ सरिता तजि, पग सौं परस करे—६-४१। (२) देवदार। (३) बढ़ई। (४) पीतल।

वि.—(१) दानी, उदार। (२) टूटने फूटनेवाला।

दारुक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देवदास। (२) श्रीकृष्ण के सारथी का नाम जो इनके परम भक्त थे। (३) काठ का पुतला।

दारुका—संज्ञा स्त्री [सं.] कठपुतली।

दारुकावन—संज्ञा पुं. [सं.] एक वन जो तीर्थ भी है।

दारुज—वि. [सं.] (१) काठ से पैदा होनेवाला। (२) काठ का बना हुआ।

दारुण—वि. [सं.] (१) भीषण, घोर। (२) कठिन, दुःसह। (३) फाड़नेवाला, विदारक।

संज्ञा पुं—(१) भयानक रस। (२) विष्णु। (३) शिव। (४) एक नरक। (५) राक्षस।

दारुणारि—संज्ञा पुं. [सं. दारुण = राक्षस + अरि] विष्णु।

दारुन—वि. [सं. दारुण] (१) कठोर, भीषण, घोर, भयंकर। उ.—(क) जहाँ न कहू कौ गम दुसह दारुन तम सकल बिधि बिषम खल मल खानि—१-७७। (ख) दुस्सासन अति दारुन रिस करि केसनि करि पकरी—१-२५४। काहैं कौ कलह नाध्यौ दारुन दाँवरि बाँधी, कठिन लकुट लै तैं त्रास्यौ मेरैं भैया—३७२। (२) विकट, प्रचंड, दुसह। उ.—(क) दारुन दुख दवारि ज्यौं तृन बन नाहिंन बुझति बुझाई—६-५२। (ख) नाहीं सही परति अब मापै दारुन त्रास निसाचर केरी—९६३।

दारुनटी—संज्ञा स्त्री. [सं.] कठपुतली।

दारुपात्र—संज्ञा पुं. [सं.] काठ का बरतन।

दारुपुत्रिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] कठपुतली।

दारुमय—संज्ञा पुं. [सं.] काठ का बना हुआ।

दारुमयी—संज्ञा स्त्री. [सं.] काठ से निर्मित।

दारु-योषिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] कठपुतली।

दारू—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) दवा। (२) शराब। (३) बारूद।

दारूकार—संज्ञा पुं. [फ़ा. दारू + हिं. कार] शराब बनानेवाले।

दारूड़ा—संज्ञा पुं [फ़ा. दारू] शराब, मद्य।

दारौं, दारौं—संज्ञा पुं. [सं. दाड़िम] अनार।

दारोगा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) निरीक्षक। (२) थानेदार।

दार्ढ्य—संज्ञा पुं. [सं.] दृढ़ता।

दार्यों, दार्यौं—संज्ञा पुं [सं. दाड़िम] अनार।

दार्वंड—संज्ञा पुं. [सं] मोर, मयूर।

दार्शनिक—वि. [सं] (१) दर्शन शास्त्र का ज्ञाता। (२) दर्शन शास्त्र से संबंध रखनेवाला।

संज्ञा पुं.—दर्शन शास्त्र का ज्ञाता व्यक्ति, तत्ववेत्ता।

दार्ष्टांतिक—वि. [सं.] दृष्टांत संबंधी।

दाल—संज्ञा स्त्री. [सं. दालि] (१) दलों में दला हुआ अरहर, चना, मूंग, आदि फलीदार अनाज जो उबाल कर खाया जाता है। (२) पानी में उबाला हुआ दला अन्न जिसे लोग रोटी-भात के साथ खाते हैं। उ.—दाल-भात घृत कढ़ी सलोनी अरु नाना पकवान सारा, १८७।

मुहा.—दाल गलना— दाल का अच्छी तरह पक जाना। (किसी की) दाल न गलना—(किसी का) मतलब पूरा न होना या काम सिद्ध न होना। दाल दलिया— रूखा-सूखा भोजन। दाल में कुछ काला होना—किसी काम या बात में संदेह, खटका या रहस्य होना। दाल-रोटी सादा भोजन। दाल-रोटी चलना— जीविका का निर्वाह होना। दाल-रोटी से खुश—अच्छी-खासी हैसियत का, खाता-पीता। जूतियों में दाल बटना— बहुत झगड़ा या अनबन होना।

(३) दाल की बनावट की कोई चीज। (४) चेचक, फुंसी आदि की पपड़ी या खुरंड।

मुहा.—दाल छूटना— खुरंड अलग होना। दाल बँधना— खुरंड पड़ना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा पुं. [सं.] पेड़ के खोंडरे का शहद।

दालक—वि. [हिं. दलना] दूर करने वाले, दमन करने में समर्थ। उ.—सूरदास प्रभु असुर निकंदन ब्रज जन के दुख-दालक—२३६६।

दालमोठ—संज्ञा स्त्री. [हिं. दाल + मोठ] एक नमकीन खाद्य।

दालान—संज्ञा पुं. [फ़ा.] खुला कमरा, ओसारा।।

दालि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) दाल। (२) अनार

क्रि. स. [हिं दलना] दबाकर, दमन करके। उ.—अति घायल धीरज दुवाहिआ वेज दुर्जन दालि—२८२६।

दालिद—संज्ञा पुं. [सं. दारिद्रय] दरिद्रता।

दालिम—संज्ञा पुं. [सं. दाड़िम] अनार।

दाली—क्रि. स. [हिं. दलन।] दमन किया। उ.—जिनि पहिले पलना पौढ़े पय पीवत पूतना दाली—२५६७।

दालिम—संज्ञा पुं. [सं.] इंद्र।

दाँव—संज्ञा पुं. [सं. द्रव्य] (१) बार, दफा। (२) बारी, पारी। (३) उपयुक्त अवसर, अनुकूल संयोग।

मुहा—दाँव करना—घात लगाना। दाँव चूकना—अनुकूल संयोग पाकर भी कुछ लाभ न उठाना। दाँव ताकना (लगाना)—अनुकूल अवसर की ताक में रहना। दाँव लगना—अनुकूल अवसर मिलना। दाँव लेना—बुरे या अनुचित व्यवहार का बदला लेना। उ.—असुर कुपित ह्वै वह्यौ बहुत असुर संहारे। अब लैहौं वह दाँव छाँड़िहौं नहिं बिनु मारे।

(४, युक्ति, उपाय, चाल, ढंग। उ.—सुनहु सूर याको वन पठऊँ यहै बनैगो दाँव—२९१२।

मुहा—दाँव पर आना (चढ़ना)—ऐसी स्थिति में पड़ जाना जिससे दूसरे का मतलब सिद्ध हो सके। दाँव पर चढ़ाना (लाना)—दूसरे को ऐसी स्थिति में डालना जिससे अपना मतलब सिद्ध हो सके।

(५) कुश्ती जीतने की चाल या पेच। उ.—तब हरि मिले मल्लक्रीड़ा करि बहु बिधि दाँव दिखाये।

(६) कार्य-साधन का छल-कपट।

मुहा.—दाँव खेलना—चाल चलना, धोखा देना।

(७) खेलने की बारी या चाल।

मुहा—दाँव बदना (रखना, लगाना)—खेल या जुए में धन लगाकर हार-जीत होना।

(८) जीत का पाँसा या कौड़ी। उ.—दाँव बलराम को देखि उन छल कियौ रुक्म जीत्यौ कहन लगे सारे। देव-बानी भयी जीति भई राम की, ताहुँ पै मूढ़ नाहीं सँभारे।

मुहा—दाँव देना—खेल में हार जाने पर पूर्व-निश्चित दंड भोगना या श्रम करना। उ.—तुमरे संग कहौ को खेलै दाँव देत नहिं करत रुनैया। दाँव लेना—खेल में जीत जाने पर हारनेवाले से पूर्वनिश्चित श्रम कराना या दंड देना।

(९) स्थान, ठौर, जगह।

दावँना—क्रि. स. [सं. दमन] अनाज अलग करने के लिए फसल को बैलों से रौंदवाना।

दावँनी—संज्ञा स्त्री. [सं दामिनी] स्त्रियों का माथे का एक गहना, बंदी।

दावँरी—संज्ञा स्त्री. [सं. दाम] रस्सी, रज्जु।

दाव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जंगल, वन। (२) वन की आग। (३) आग। (४) जलन, तपन, ताप।

संज्ञा पुं. [देश.] (१) एक हथियार। (२) एक पेड़।

दावत—संज्ञा स्त्री. [अ. दअवत] (१) भोज, प्रीतिभोज, ज्योनार। (२) भोजन का निमंत्रण, न्योता।

दावदी—संज्ञा स्त्री [हिं. गुलदाउदी] गुच्छेदार सुंदर फूलों का एक पौधा।

दावन—संज्ञा पुं. [सं. दमन] (१) दमन, नाश। (२) नाश या दमन करनेवाले। उ.—(क) ब्रह्म लियौ अवतार, दुष्ट के दावन रे—१०-२८। (ख) हरि ब्रज-जन के दुख-बिसरावन। कहाँ कंस, कब कमल मँगाए, कहाँ दवानल-दावन—६०३। (३) हँसिया। (४) टेढ़ा छुरा, खुखड़ी।

संज्ञा पुं. [सं० दामन] अंगे-कुर्ते का पल्ला।

दावना—क्रि. स. [हिं. दावँना] दाना-भूसा अलग करने के लिए डंठलों को बैलों से रौंदवाना, माँड़ना।

क्रि. स. [हिं. दावन] दमन या नष्ट करना।

दावनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दावँनी] स्त्रियों के माथे का एक गहना, बंदी, दामिनी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दावा—संज्ञा स्त्री. [सं. दाव] वन की आग, दावानल।
संज्ञा पुं. [अ.] (१) किसी वस्तु को अपनी कहना, किसी वस्तु पर अधिकार जताना। (२) स्वत्व, हक, अधिकार। (३) अधिकार या हक सिद्ध करने के लिए न्यायालय में दिया गया प्रार्थना-पत्र। (४) नालिश, अभियोग। (५) जोर, प्रताप। (६) वह दृढ़ता या साहस जो यथार्थ स्थिति के निश्चय के कारण व्यक्ति में आ जाता है। (७) दृढ़ता या साहसपूर्ण कथन।

दावागीर—संज्ञा पुं. [अ. दावा+फा. गीर] दावा करने, हक जताने या अधिकार सिद्ध करनेवाला।

दावाग्नि—संज्ञा स्त्री. (सं.) वन की आग, दावा।

दावात—संज्ञा स्त्री. [अ. दवात] स्याही का पात्र।

दावादार—संज्ञा पुं. [अ. दावा+फा. दार] दावा करने या हक जतानेवाला।

दावानल—संज्ञा पुं. [सं. दाव+अनल] वन की आग जो बाँसों या पेड़ों की टहनियों के रगड़ने से उत्पन्न होकर दूर तक फैलती चली जाती है। उ.—कबहुँ तुम नाहिंन गहरु कियौ।.......। अघ-अरिष्ट, केसी, काली मथि दावानलहिं पियौ—१-१२१।

दाविनी—संज्ञा. [सं. दामिनी] (१) बिजली, दामिनी। (२) स्त्रियों का माथे का एक गहना, बंदी।

दावेदार—संज्ञा पुं. [अ० दावा+फा० दार] दावा करने या अपना हक जतानेवाला।

दाश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) केवट, धीवर। (२) नौकर।

दाशरथ—वि. [सं] दशरथ संबंधी।
संज्ञा पुं.—राजा दशरथ के पुत्र श्रीरामचंद्र।

दाशरथि—संज्ञा पुं. [सं.] दशरथ के पुत्र श्रीराम आदि।

दाश्त—संज्ञा स्त्री. [फा.] पालन-पोषण, लालन-पालन।

दाश्व—वि. [सं.] देनेवाला।

दास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सेवक, नौकर। (२) भक्त। (३) भक्त गज। उ.—ग्राह गहे गजपति मुकरायौ हाथ चक्र लै धायौ। तजि बैकुंठ, गरुड़ तजि, श्री तजि, निकट दास कैं आयौ—१-१० । (४) शूद्र। (५) धीवर। (६) दस्यु। (७) वृत्रासुर।
संज्ञा पुं. [हिं दासन, डासन] बिछौना।

दासक—संज्ञा पुं. [सं.] दास, सेवक।

दासता—संज्ञा स्त्री. [सं.] दास-कर्म, सेवावृत्ति।

दासत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दास-भाव (२) सेवावृत्ति।

दासन—संज्ञा पुं. [हिं. डासन] बिछौना।

दासपन—संज्ञा पुं. [सं. दास+पन (प्रत्य.)] दासत्व, सेवा-कर्म। उ.—दासी-सुत तैं नारद भयौ। दोष दासपन कौ मिटि गयौ—१-२३०।

दासपनौ—संज्ञा पुं. [सं. दास+हिं. पन (प्रत्य.)] दासत्व, सेवाक, दासभाव। उ.—बंदन दासपनौ सो करै। भक्तनि सख्य-भाव अनुसरै—६-५।

दास-व्रत—संज्ञा पुं. [सं. दास+व्रत] (१) दास का व्रत, सेवक का प्रण। (२) भक्त का प्रण, भक्त का निश्चय। उ.—मुनि-मद मेटि दास-व्रत राख्यौ अंबरीष-हितकारी—१-१७।

दासा—संज्ञा पुं. [सं. दशन] हँसिया।
संज्ञा पुं. [सं. दास] सेवक, नौकर।

दासानुदास—संज्ञा पुं.[सं.] सेवक का सेवक, तुच्छ सेवक (नम्रता-सूचक प्रयोग)।

दासिका, दासी—संज्ञा स्त्री. [सं. दासी] (१) (सेविका)। (२) कुब्जा जो कंस की सेविका थी और जिसे श्रीकृष्ण ने, प्रसिद्धि के अनुसार, अपनाया था। उ.—सूर स्याम सुध दासी की करो कही बिधि कैसी—सा. १०४।

दासेय—वि. [सं.] दास से उत्पन्न।
संज्ञा पुं.—(१) दास। (२) धीवर।

दासेयी—संज्ञा स्त्री [सं.] व्यास की माता सत्यवती।

दासेर—संज्ञा पुं. [स.] (१) दास। (२) धीवर। (३) ऊँट।

दासेरक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दासीपुत्र। (२) ऊँट।

दास्तान—संज्ञा स्त्री [फा.] (१) हाल, वृत्तांत। (२) किस्सा कथा-कहानी। (३) बयान, वर्णन।

दास्य—संज्ञा पुं. [सं.] दासपन, सेवा, दासत्व।

दास्यमान—वि. [सं.] जो दिया जानेवाला हो।

दाह—संज्ञा पुं. [सं] (१) जलाने की क्रिया या भाव। (२) शव या मुर्दा जलाने की क्रिया। (३) ताप, जलन। उ.—अंतर-दाह जु मिट्यौ व्यास कौ, इक चित ह्वै भगवान किऐं—१-८६। (४) शोक, दुख, संताप। (५) डाह, ईर्ष्या। (६) एक रोग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाहक—वि. [सं.] (१) जलानेवाला। उ.—अहि मयंक मकरंद कंद हति दाहक गरल जिवाये—२८५४। (२) संतापकारी।

संज्ञा पुं.—(१) चित्रक वृक्ष। (२) आग, अग्नि।

दाहकता—संज्ञा स्त्री [सं.] जलाने का भाव या गुण।

दाहकत्व—संज्ञा पुं. [सं.] जलाने का भाव या गुण।

दाहकर्म—संज्ञा पुं. [सं.] मुर्दा फूँकने का काम।

दाहक्रिया—संज्ञा पुं. [सं.] मुर्दा जलाने की क्रिया।

दाहत—क्रि. स. [हिं. दाहना] जलाता है भस्म करता है। उ.—(क) जल नहिं बूड़त, अगिनि न दाहत, है ऐसौ हरि-नाम—१-६२। (ख) जैहै काहि समीप सूर-नर कुटिल बचन-दव दाहत—१-२१०। (ग) सूरदास प्रभु हरि बिरहा-रिपु दाहत अंग दिखावत बास—सा. उ. २८।

दाहन—संज्ञा [सं] (१) जलाने का काम। २) भस्म कराने या जलवाने का काम।

दाहना—क्रि.स. [सं. दाह] (१) जलाना, भस्म करना। (२) सताना, दुख देना।

वि. [हिं. दाहिना] दायाँ, दाहिना।

दाहसर—संज्ञा पुं. [सं.] मुर्दा जलाने का स्थान।

दाहिन, दाहिना—वि. [सं. दक्षिण, हिं. दाहिना] (१) दायाँ, बायाँ का उलटा, दक्षिण।

मुहा—दाहिना हाथ होना—(१) बहुत सहायक होना। (२) जो दाहने हाथ की ओर हो। (३) अनुकूल, प्रसन्न। उ.—बार-बार बिनवौं नँदलाला। मो पै दाहिन होउ कृपाला।

दाहिनावर्त—वि. [सं. दक्षिणावर्त] (१) दाहिनी ओर को घूमा हुआ। (२) जो घूमने में दाहिनी ओर से बढ़े।

संज्ञा पुं. (१) प्रदक्षिणा। (२) एक तरह का शंख।

दाहिनी—वि. स्त्री. [हिं. दाहिना] दायीं ओर की।

मुहा.—दाहिनी देना (लाना)—परिक्रमा या प्रदक्षिणा करना। दाहिनी देहि-प्रदक्षिणा करके। उ.—जटा भस्म तनु दहै वृथा करि कर्म बँधावै। पुहुमि दाहिनी देहि गुफा बसि मोहि न पावै।

दाहिने—क्रि. वि. [हिं. दाहिना] दायें हाथ की ओर।

मुहा.—दाहिने होना—अनुकूल या प्रसन्न होना।

दाहिनैं—क्रि. वि. [हिं. दाहिना] दाहने हाथ की तरफ, दाहिनी ओर। उ.—बाएँ काग, दाहिनैं खर-स्वर, व्याकुल घर फिरि आईं—५४०।

दाहिनौ—वि. [हिं. दाहिना] अनुकूल, प्रसन्न। उ.—बड़ी बैस बिधि भयौ दाहिनौ, धनि जसुमति ऐसौ सुत जायौ—१०-२४८।

दाहीं—क्रि. स. [हिं. दाहना] जलायी गयीं। उ.—चंदन तजि अँग भस्म बतावत बिरह अनल अति दाहीं—३३१२।

दाही—वि. [सं. दाहिन] जलाने या भस्म करनेवाला।

दाहु—संज्ञा पुं. [सं. दाह] जलन, ताप। उ.—सुमति सँदेस सुनाइ मेटौ बल्लभिनि को दाहु—३०२०।

दाहे—वि. [हिं. दाह] जले हुए। उ.—पलक न परत चहूँ दिसि चितवत बिरहानल के दाहे—३०७८।

दाहै—क्रि. स. [हिं. दाह] जलाती है। उ.—घर बन कछु न सुहाइ रैनि दिन मनहु मृगी दौ दाहै—२८०१।

दाह्य—वि. [सं.] जलाने या भस्म करने योग्य।

दिंक—संज्ञा पुं. [सं.] जूँ नामक कीड़ा।

दिंड—संज्ञा पुं. [सं.] एक तरह का नाच।

दिंडि, दिंडिर—संज्ञा पं. [सं. दिंडिर] एक पुराना बाजा।

दिंडी—संज्ञा पुं. [सं.] उन्नीस मात्राओं का एक छंद।

दिंडीर—संज्ञा पुं. [सं.] समुद्र-फेन।

दिअना—संज्ञा पुं. [सं. दीपक] दिआ, दीपक।

दिअली—संज्ञा स्त्री. [हिं. दिया] छोटा दिया।

दिआ—संज्ञा पुं. [हिं. दिया] दिया, दीपक। उ.—तब फिरि जरनि भई नखसिख तें दिआ बात जनु मिलकी—२७८६।

दिउली—संज्ञा स्त्री. [हिं. दिया] (१) छोटा दिया (२) सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी, खुरंड दाल।

दिए—क्रि. स. [हिं. देना] 'देना' क्रिया के भूतकालिक रूप 'दिया' का बहुवचन। उ.—अरधासन करि हेत दिए (दए)—१०-८५२। इसका प्रयोग संयोजक-क्रिया के रूप में भी होता है। उ.—गुरु-सुत आनि दिए जमपुर तैं—१-१८

वि.—लगाये हुए। उ.—चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन तिलक दिए—१०-६६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिक़—वि. [अ. दिक] (१) हैरान, तंग। (२) अस्वस्थ। संज्ञा पुं.—क्षय रोग, तपेदिक।

दिक्दाह—संज्ञा पुं. [सं. दिग्दाह] सूर्यास्त के पश्चात् भी दिशाओं का जलती-सी दिखायी देना।

दिकाक—संज्ञा पुं. [अ. दक़ीक़=बारीक] कतरन, धज्जी। वि. [अ. दक़ियानूस] बहुत चालाक, खुर्राट।

दिक्—संज्ञा स्त्री. [सं.] दिशा, ओर, तरफ।

दिक्क—संज्ञा पुं. [सं.] हाथी का बच्चा।

दिक्कत—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) तंगी, तकलीफ, परेशानी। (२) कठिनता, मुश्किल।

दिक्कन्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] दिशा-रूपी कन्याएँ जो ब्रह्मा की पुत्रियाँ मानी जाती हैं।

दिक्कर—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव।

दिक्करि, दिक्करी—संज्ञा पुं. [सं. दिक्करिन्] दिशाओं के हाथी

दिक्कांता—संज्ञा स्त्री. [सं.] दिशा-रूपी कन्या।

दिक्चक्र—संज्ञा पुं. [सं.] आठ दिशाओं का समूह।

दिक्पति—संज्ञा पुं. [सं.] (१, दिशाओं के स्वामी ग्रह, यथा - दक्षिण के स्वामी मंगल, पश्चिम के शनि, उत्तर के बुध, पूर्व के सूर्य, अग्निकोण के शुक्र, नैर्ऋत-कोण के राहु, वायुकोण के चंद्रमा और ईशानकोण के बृहस्पति। (२) दसों दिशाओं के पालक देवता।

दिक्पाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दसों दिशाओं के पालन-कर्त्ता देवता, यथा पूर्व के इंद्र, अग्निकोण के अग्नि, नैर्ऋतकोण के नैर्ऋत, पश्चिम के वरुण, वायुकोण के मरुत, उत्तर के कुबेर, ईशानकोण के ईश, ऊर्द्ध दिशा के ब्रह्मा, और अधोदिशा के अनंत। (२) चौबीस मात्राओं का एक छंद।

दिक्शूल—संज्ञा पुं. [सं.] विशिष्ट दिनों में, विशिष्ट दिशाओं में यात्रा न करने का योग; यथा-शुक्र और रविवार को पश्चिम की ओर, मगल और बुध को उत्तर की ओर, शनि और सोम को पूर्व की ओर और बृहस्पति को दक्षिण की ओर।

दिक्साधन—संज्ञा पुं. [सं.] दिशाओं के ज्ञान का उपाय।

दिक्सुन्दरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] दिशारूपी सुंदरी।

दिक्स्वामी—संज्ञा पुं. [सं.] दिक्पति।

दिखना—क्रि. अ. [हिं. देखना] दिखायी देना।

दिखराइहौं—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] दिखलाऊँगा, दृष्टिगोचर कराऊँगा। उ.—हँसि कह्यौ तुम्हें दिखराइहौं रूप वह।

दिखराई—क्रि. स. [हिं. देखना का प्रे. रूप, दिखलाना] दिखायी, दृष्टिगोचर करायी। उ.—कोटिक कला काछि दिखराई जल-थल सुधि नहिं काल—१-१५३।

दिखराऊँ—क्रि. स. [हिं. 'देखना' का प्रे. रूप, दिखलाना] दिखलाऊँ, प्रदर्शित करूँ, दृष्टिगोचर कराऊँ। उ.—(क) बन बारानसि मुक्ति-क्षेत्र है, चलि तोकौं दिखराऊँ—१-३४०। (ख) कैसैं नाथहिं मुख दिखराऊँ जौ बिनु देखे जाऊँ—६-७५। (ग) देखि तिया कैसौ बल करि तोहिं दिखराऊँ—६-११८।

दिखराए—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] दिखाये, दृष्टिगोचर कराये। उ.—मुख मैं तीनि लोक दिखराए, चकित भई नँदरानियाँ—१०८३।

दिखराना—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] (१) दृष्टिगोचर कराना। (२) अनुभव कराना, मालूम कराना।

दिखरायौ—क्रि. स. [हिं. दिखलाया] दिखाया, देखने को प्रवृत्त किया। उ.—(क) मैं ही भूलि चंद दिखरायौ, ताहि कहत मैं खैहौं—१०-१८६। (ख) माटी कैं मिस मुख दिखरायौ, तिहूँ लोक रजधानी—१०-२५६।

दिखरावत—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] (१) दिखाते हैं। (२) जताते या अनुभव कराते हैं। उ.—भजन-महिमा दिखरावत, इमि अति सुगम चरन आराधे—६-५८।

दिखरावति—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] (१) दिखलाती है। उ.—जसुमति तब नंद बुलावति, लाल लिए कनियाँ दिखरावति, लगन घरी आवति, यातैं न्हवाइ बनावौ—१०-६५। (ख) ठाढ़ी अजिर जसोदा अपनैं हरिहिं लिए चंदा दिखरावति—१०-१८८। (२) अनुभव कराती है, मालूम कराती है, जताती है। उ.—हा हा लकुट त्रास दिखरावति—१०-३५६।

दिखरावन—संज्ञा स्त्री. [हिं. दिखलाना] दिखलाने की क्रिया। उ.—करिहौं नाम अचल पसुपति को पूजा-बिधि कौतुक दिखरावन—६-२३२।

दिखरावना—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] (१) दृष्टिगोचर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराना। (२) अनुभव कराना, जताना।

दिखरावती—संज्ञा स्त्री. [हिं. दिखलाना] दिखाने की क्रिया या भाव।

क्रि. स.—(१) दिखलाती (२) अनुभव कराती।

दिखरावहु—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] दिखलाओ, दर्शन कराओ। उ.—तबहुँ देहुँ जल बाहर आवहु। बाँह उठाइ अंग दिखरावहु—७९९।

दिखरावे—क्रि. स. [हिं 'देखना' का प्रे. रूप] दिखाता है, दृष्टिगोचर कराता है। उ.—ज्यौं बहु कला काछि दिखरावै, लोभ न छूटत नट कैं—१-२९२।

दिखरावौं—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] दिखाऊँ, दृष्टिगोचर कराऊँ। उ.—(क) मेरे कहैं नहीं तू मानति, दिखरावौं मुख बाइ—१०-२५५। (ख) व्रत-फल इनहिं प्रगट दिखरावौं। बसन हरौं लै कदम चढ़ावौं—७९९।

दिखरावौ—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] दिखाओ, दृष्टिगोचर कराओ। उ.—अछत-दूब दल बँधाइ, ललन की गँठि जुराइ, इहै मोहिं लाहौ नैननि दिखरावौ—१०-९५।

दिखलवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. दिखलाना] (१) दिखलाने की क्रिया या भाव। (२) वह धन जो दिखाने के बदले में दिया या लिया जाय।

दिखलवाना—क्रि. स. [हिं. दिखलाना का प्रे.] दूसरे को दिखाने में लगाना या प्रवृत्त करना।

दिखलवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं दिखलाना] (१) दिखलाने की क्रिया या भाव। (२) वह धन जो दिखाने के बदले में दिया या लिया जाय।

दिखलाना—क्रि. स. [हिं. दिखाने का प्रे.] (१) दृष्टिगोचर कराना। (२) अनुभव कराना, मालूम कराना।

दिखलावा—संज्ञा पुं. [हिं. दिखावा] झूठा ठाट-बाट।

दिखवैया—संज्ञा पुं. [हिं. दिखाना + वैया (प्रत्य.)] (१) दिखानेवाला। (२) देखनेवाला।

दिखहार—संज्ञा पुं. [हिं. देखना + हार] देखनेवाला।

दिखाइ—क्रि. स. [हिं. दिखाना] दिखा कर। उ.—सोवत सपने मैं ज्यौं संपति, त्यौं दिखाइ बौरावै—१-४३।

दिखाई—क्रि. अ. [हिं. देखना, दिखाना] दीख पड़ना, सामने आना, प्रत्यक्ष होना। उ.—प्रगट खंभ हैं दए दिखाई, जद्यपि कुल कौ दानौ—१-११।

संज्ञा स्त्री. [हिं. दिखाना + आई (प्रत्य.)] (१) देखने की क्रिया या भाव। (२) दिखाने की क्रिया या भाव। (३) वह धन जो देखने के बदले में दिया जाय। (४) वह धन जो दिखाने के बदले में मिले।

दिखाऊ—वि. [हिं. दिखाना या देखना + आऊ (प्रत्य.)] (१) देखने योग्य। (२) दिखाने योग्य। (३) जो सिर्फ देखने लायक हो, काम न आ सके। (२) सिर्फ दिखावटी या बनावटी।

दिखाए—क्रि. स. [हिं. दिखाना] पढ़ाये, अध्ययन कराये। उ.—पहिले ही अति चतुर हुए अरु गुरु सब ग्रंथ दिखाए—३३७३।

दिखाना—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] (१) दृष्टिगोचर कराना। (२) अनुभव कराना या जताना।

दिखायौ—क्रि. स. [हिं. दिखाना] दिखलाया, प्रदर्शित किया। उ.—सूर अनेक देह धरि भूतल, नाना भाव दिखायौ—१-२०५।

दिखाव—संज्ञा पुं. [हिं. देखना + आव (प्रत्य.)] (१) देखने का भाव या क्रिया। (२) दृश्य। (३) दूर और नीचे तक देखने का भाव।

दिखावट—संज्ञा स्त्री. [हिं. देखना + आवट (प्रत्य.)] (१) दिखाने का भाव या ढंग। (२) ऊपरी तड़क-भड़क या बनावट।

दिखावटी—वि. [हिं. दिखावट + ई (प्रत्य.)] जो सिर्फ देखने के लिए हो, काम न आ सके, दिखौआ।

दिखावत—क्रि. स. [हिं. दिखाना] दिखाते हैं या दिखलाते हुए। उ.—धर्म-धुजा अंतर कछु नाहीं, लोक दिखावत फिरतौ—१-२०३।

दिखावति—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] दिखाती है, देखने को प्रवृत्त करती है। उ.—कुम्हिलानौ मुख चंद दिखावति, देखौ धौं नँदरानि—३९५।

दिखावहिंगे—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] दिखलायेंगे, दृष्टिगोचर करायेंगे। उ.—तैसिए स्याम घटा घन-घोरनि बिच बगपाँति दिखावहिंगे—२८८९।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखावहु—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] दिखलाओ। उ.—(क) अपनी भक्ति देहु भगवान। कोटि लालच जौ दिखावहु, नाहिनैं रुचि आन—१-१०६। (ख) अब की बार मेरे कुँवर कन्हैया नंदहि नाच दिखावहु—१०-१७६।

दिखावा—संज्ञा पुं. [हिं. देखना+आवा (प्रत्य.)] ऊपरी तड़क-भड़क, झूठा आडंबर, बनावटीपन।

दिखावै—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] दिखलाती है, देखने को प्रेरित करती है। उ.—महा मोहिनी मोहि आतमा, अपमारगहिं लगावै। ज्यौं दूती पर-बधू भोरि कै, लै पर-पुरुष दिखावै—१-४२।

दिखिअत—क्रि. स. [हिं. दिखना] दिखायी देता है, जान पड़ता है। उ.—सूरदास गाहक नहिं कोऊ दिखिअत गरे परी—३१०४।

दिखैया—संज्ञा पुं. [हिं. देखना+ऐया] देखनेवाला।

संज्ञा पुं. [हिं. दिखाना+ऐया] दिखानेवाला।

दिखैहै—क्रि. अ. [हिं. देखना, दिखाना] दीख पड़ेगा, दिखायी देगा। उ.—कहँ वह नीर, कहाँ वह सोभा, कहँ रँग-रूप दिखैहै—१-८६।

दिखौआ, दिखौवा—वि[हिं. देखना+औआ (प्रत्य.)] जो देखने भर का हो, काम न आ सके; बनावटी।

दिगंत—संज्ञा पुं [सं.] (१) दिशा का छोर या अंत। (२) आकाश का छोर, क्षितिज। (३) चारो दिशाएँ। (४) दसों दिशाएँ।

संज्ञा पुं. [सं दृग्+अंत] आँख का कोना।

दिगंतर—संज्ञा पुं. [सं.] दिशाओं के बीच का स्थान।

दिगंबर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शिव, महादेव। (२) जैन-यती जो नंगा रहता हो। (३) दिशाओं का वस्त्र, अंधकार।

वि.—दिशाओं का वस्त्र धारण करनेवाला, नंगा। उ.—कहँ अबला, कहँ दसा दिगंबर।

दिगंबरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] नंगा रहने का भाव, नग्नता।

दिगंबरपुर—संज्ञा पुं. [सं.] वह नगर या स्थान जहाँ दिगंबर रहनेवाले व्यक्ति बसते हों। उ.—सूरदास दिगंबरपुर ते रजक कहा ब्यौसाइ—३३३४।

दिगंबरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] दुर्गा।

दिगंश—संज्ञा पुं. [सं.] क्षितिज वृत्त का ३६०वाँ अं[श]

दिग, दिग्—संज्ञा स्त्री. [सं. दिक्] दिशा, ओर, त[रफ]

दिगज—संज्ञा पुं. [सं. दिग्गज=सिंदुर=(१) हा[थी] (२) सिंदूर जिसकी बिंदी लगायी जाती है] सि[ंदूर] नामक लाल चूर्ण जिसकी बिंदी लगायी जाती है। उ.—दिगज बिंदु बिजे छन बेनन भानु जुगल [...] रूप उँज्यारी—सा. ६८।

दिगदंती—संज्ञा पुं. [सं. दिक्+हिं. दंतार=दंत+आर (प्रत्य.)] आठ हाथी जो आठों दिशाओं की र[क्षा] के लिए स्थापित हैं। यथा—पूर्व में ऐरावत, पूर्व-[दक्षिण] में पुंडरीक, दक्षिण में वामन, दक्षिण-पश्चि[म] में कुमुद, पश्चिम में अंजन, पश्चिम-उत्तर में पु[ष्प]दंत, उत्तर में सार्वभौम, उत्तर-पूर्व में सप्तसीक। उ.—बिडरि चले घन प्रलय जानि कै, दिगप[ति] दिगदंतीनि सकेलत—१०-६३।

दिगपति—संज्ञा पुं. [सं. दिक्पति, दिग्पति] द[सों] दिशाओं के पालक देवता, यथा—पूर्व के इंद्र, अग्नि[-]कोण के वह्नि, दक्षिण के यम, नैऋतकोण के नैऋत, पश्चिम के वरुण, वायुकोण के मरुत, उत्तर के कुबेर, ईशानकोण के ईश, ऊर्द्ध दिशा के ब्रह्मा और अधोदिशा के अनंत। उ.—बिडरि चले घन प्रल[य] जानि कै, दिगपति दिगदंतीनि सकेलत—१०-६३।

दिगविजय—संज्ञा स्त्री, [सं. दिग्विजय] अपना महत्[व] स्थापित करने के उद्देश्य से राजाओं का देश देशांतरों में ससैन्य जाकर विजय प्राप्त करने की प्राचीन प्रथा। उ.—(क) बहुरि राज ताकौ जब गयौ। मि[...] दिगविजय चहूँ दिसि गयौ—१-२९०। (ख) दिगबिजय कौं जुवति-मंडल भूप परिहैं पाइ—३२[...]

दिगबिजयी—वि. पुं. [सं. दिग्विजयी] सभी दिशाओं के राजाओं को जीतनेवाला। उ. राज-अहँकार चढ़यौ दिगबिजयी, लोभ छत्र करि सीस। फौज असत-संगति की मेरैं, ऐसौ हौं मैं ईस—१-१४४।

दिगीश, दिगीश्वर, दिगेश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दिक्पाल। (२) सूर्य चंद्र आदि ग्रह।

दिग्गज—संज्ञा पुं. [सं.] आठ हाथी आठों दिशाओं की रक्षा के लिए स्थापित हैं; यथा—पूर्व में ऐरावत,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व-दक्षिणकोण में पुंडरीक, दक्षिण में वामन, दक्षिण-पश्चिमकोण में कुमुद, पश्चिम में अंजन, पश्चिम-उत्तर कोण में पुष्पदंत, उत्तर में सार्वभौम और उतर-पूर्व कोण में सप्ततीक।

वि.—बहुत बड़ा या भारी।

दिग्गयंद—संज्ञा पुं. [सं] दिशाओं के हाथी, दिग्गज।

दिग्घ—वि. [सं. दीर्घ] (१) लंबा। (२) बड़ा।

दिग्जय—संज्ञा स्त्री. [सं. दिग्विजय] दिग्विजय।

दिग्ज्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] क्षितिज वृक्ष का ३६०वाँ भाग।

दिग्दर्शक—वि. [सं.] दिशाओं का ज्ञान करानेवाला।

दिग्दर्शन—संज्ञा पुं. [सं] (१) उदाहरण-रूप प्रस्तुत आदर्श या नमूना। (२) आदर्श या नमूना दिखाने का काम। (३) जानकारी।

दिग्दर्शनी—संज्ञा पुं. [स.] दिशा-ज्ञान करानेवाली वस्तु।

दिग्दाह—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्यास्त के पश्चात् भी दिशाओं का लाल और जलती हुई सी दिखायी देना।

दिग्देवता—संज्ञा पुं. [सं. दिक्+देवता] दिक्पाल।

दिग्ध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) विष-बुझा वाण। (२) अग्नि।

वि.—(१) विष में बुझा हुआ। (२) लिप्त।

वि. [सं. दीर्घ] बड़ा, लंबा, दीर्घ।

दिग्पट—संज्ञा पुं. [सं. दिक्पट] दिशा-रूपी वस्त्र।

दिग्पति—संज्ञा पुं. [सं. दिक्+पति] दिक्पाल।

दिग्पाल—संज्ञा पुं. [सं. दिक्+पाल] दिक्पाल।

दिग्भ्रम—संज्ञा पुं. [सं.] दिशा का भूल जाना।

दिग्मंडल—संज्ञा पुं. [सं.] सब दिशाएँ।

दिग्राज—संज्ञा पुं. [सं. दिक्+राज] दिक्पाल।

दिग्वसन, दिग्वस्त्र—संज्ञा पुं. [स. दिक्+वसन, वस्त्र] (१) शिव जी, (२) दिगंबर जैनी, (३) नग्न व्यक्ति।

दिग्वान्—संज्ञा पुं. [सं.] पहरेदार, चौकीदार।

दिग्वारण—संज्ञा पुं. [सं.] दिग्गज।

दिग्विजय—संज्ञा स्त्री. [सं.] राजाओं का देश-देशांतरों में जाकर विजय करना और इस प्रकार अपना महत्व स्थापित करना। उ.—करि दिग्विजय विजय को जग में भक्त पच्छ करवायौ। (२) गुण, विद्वता आदि में दूसरों को पराजित करके स्व-प्रतिष्ठा स्थापित करना।

दिग्विजयी—वि. पुं. [सं] दिग्विजय करनेवाला। उ. गज अहँकार चढ़्यौ दिग्विजयी लोभ छत्र करि सीस।

दिग्विभाग—संज्ञा पुं. [सं.] दिशा, ओर, तरफ।

दिग्व्यापी—वि. [सं.] जो सर्वत्र व्याप्त हो।

दिग्शिखा—संज्ञा पुं. [सं.] पूर्व दिशा।

दिग्सिंधुर—संज्ञा पुं. [सं.] दिग्गज।

दिङ्नाग—संज्ञा पुं. [सं.] दिग्गज।

दिङ्नारि—संज्ञा स्त्री. [सं.] बहुत से पुरुषों से प्रेम करनेवाली स्त्री।

दिङ्मातंग—संज्ञा पुं. [सं.] दिग्गज।

दिङ्मात्र—संज्ञा पुं. [सं.] सिर्फ नमूना भर।

दिङ्मूढ़—वि. [सं.] (१) जो दिशाभूला हो। (२) मूर्ख।

दिच्छित—वि. [सं. दीक्षित] जिसने दीक्षा ली हो।

दिज—संज्ञा पुं. [सं. द्विज] (१) ब्राह्मण। (२) पक्षी। (३) चंद्र।

दिजराज—संज्ञा पुं. [सं. द्विजराज] (१) ब्राह्मण। (२) चंद्रमा।

दिजोत्तम—संज्ञा पुं. [सं. द्विजोत्तम] श्रेष्ठ ब्राह्मण।

दिठवन—संज्ञा स्त्री [सं देवोत्थान] कार्तिक शुक्ल एकादशी को विष्णु का शेष-शैया से उठना।

दिठियार—वि. [हिं. दीठ=दृष्टि+इयार या आर (प्रत्य.)] जिसे दिखायी देता हो, देखनेवाला।

दिठौना—संज्ञा पुं. [हिं. दीठ=दृष्टि+औना (प्रत्य.)] नजर लगने से बचाने के लिए बच्चों के माथे पर लगाया गया काजल का बिंदु।

दिढ़—वि. [सं. दृढ़] (१) मजबूत, पक्का। (२) ध्रुव, पक्का।

दिढ़ता—संज्ञा स्त्री. [सं. दृढ़ता] (१) मजबूत होने का भाव। (२) विचार आदि पर दृढ़ रहने का भाव।

दिढ़ाई—संज्ञा स्त्री. [सं. दृढ़] (१) दृढ़ होने का भाव। (२) विचार या निश्चय पर दृढ़ रहने का भाव।

दिढ़ाना—क्रि. स. [सं. दृढ़+आना (प्रत्य.)] (१) पक्का या मजबूत करना। (२) निश्चित करना।

दितवार—संज्ञा पुं. [सं. आदित्यवार] रविवार।

दिति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) कश्यप ऋषि की स्त्री जो दक्ष प्रजापति की कन्या और दैत्यों की माता थी। उ.—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्यप की दिति नारि, गर्भ ताकैं दोउ आए—३-११
(२) खंडन। (३) दाता।

दितिकुल—संज्ञा पुं. [सं.] दैत्य वंश।

दितिज—संज्ञा पुं. [सं] दिति से उत्पन्न, दैत्य।

दितिसुत—संज्ञा पुं. [सं.] दैत्य, असुर।

दित्सा—संज्ञा स्त्री. [सं] दान की इच्छा।

दित्स्य—वि. [सं.] जो दान किया जा सके।

दिदृक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] देखने की इच्छा।

दिदृक्षु—वि. [सं.] जो देखना चाहता हो।

दिद्यु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वज्र। (२) वाण।

दिधि—संज्ञा पुं. [सं.] धैर्य।

दिन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय।

मुहा—दिन को तारे दिखाई देना—इतना मानसिक कष्ट होना कि बुद्धि ठिकाने न रहे। दिन को दिन रात को रात न जानना (समझना)—सुख या आराम की चिंता न करना। दिन चढ़ना—सूर्योदय के बाद समय बीतना। दिन छपना (डूबना, बूड़ना, मूँदना)—संध्या होना। दिन टलना—सूर्यास्त होने को होना। दिन दहाड़े या दिन दोपहर—ठीक दिन के समय। दिन दूना रात चौगुना बढ़ना (होना)—बहुत जल्दी उन्नति करना। दिन निकलना (होना)—सूर्योदय होना।

यौ.—दिन-रात—हर समय, सदा।

(२) आठ पहर या चौबीस घंटे का समय जिसमें पृथ्वी एक बार अपने अक्ष पर घूम लेती है।

मुहा—चार दिन—बहुत थोड़ा समय। उ.—चारि चारि दिन सबै सुहागिनि री ह्वै चुकी मैं स्वरूप अपनी—१७६२। दिन-दिन (दिन पर दिन)—हर रोज, सदा। उ.—मैं दिन दिन उनमानी महाप्रलय की नीति—३४५७।

(३) समय, काल, वक्त।

मुहा—दिन काटना—कष्ट के दिन बिताना। दिन गँवाना—बेकार समय खोना। दिन पूरे करना—कष्ट का समय किसी तरह बिताना। दिन बिगड़ना—बुरे दिन आना। दिन भुगतना कष्ट के दिन काटना।

यौ.—पतले दिन—बुरे, खोटे या कष्ट के दि

(४) नियत, निश्चित या उचित समय। उ.—सूर नंद सौं कहति जसोदा दिन आये अब चँड़ाई—११८।

मुहा—दिन आना—अंत समय आना। दिन धरना—दिन निश्चित करना या ठहराना। दिन धराना (सुधाना)—दिन निश्चित करना या मु निकलवाना। दिन धराइ (सुधाइ)—मुहूर्त नि वाकर। उ.—पालनो आन्यौ सबहिं अति मन म नीको सो दिन धराइ (सुधाइ) सखिन मंगल गा रंगमहल में पौढ़्यौ है कन्हैया—१०-४१।

(५) विशेष घटना का काल या समय।

मुहा—दिन चढ़ना—किसी स्त्री का गर्भवती हो दिन पड़ना—बुरा समय आना। दिन फि (बहुरना)—बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन आना। दि भरना—बुरे दिन बिताना। दिन उतरना—युवाव बीतना।

क्रि. वि.—सदा, सर्वदा, हमेशा।

दिनअर—संज्ञा पुं. [सं. दिनकर] सूर्य।

दिनकंत—संज्ञा पुं. [सं. दिन + हिं. कंत (कांत)] सूर्य।

दिनकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य। उ.—ज्यौं दि करहिं उलूक न मानत, परि आई यह —१-१००। (२) आक, मंदार।

दिनकर-कन्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] यमुना जी।

दिनकर-सुत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) यम। (२) शनि (३) सुग्रीव। (४) अश्विनीकुमार। (५) कर्ण।

दिनकर्त्ता, दिनकृत—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य।

दिनकेशर—संज्ञा पुं [सं.] अँधेरा, अंधकार।

दिनचर—संज्ञा पुं. [सं. दिन + हिं चर] सूर्य।

दिनचर-सुत-सुत—संज्ञा पुं. [दिन (= हिं. वार) + (= वारचर = वारिचर = पानी में चलनेवाली मछ + सुत (= मछली-सुत = व्यास) + सुत (व्यास पुत्र शुकदेव = शुक = तोता)] शुक, तोता। उ. दिनचर-सुत-सुत सरिस नासिका है कपोल श्री —सा. १०३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनचर्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] दिन भर का काम-धंधा।

दिनचारी—संज्ञा पुं. [सं. दिनचारिन्] दिन में चलने वाला, सूर्य।

दिन ज्योति—संज्ञा स्त्री. [सं. दिन ज्योतिस्] (१) दिन का प्रकाश। (२) धूप।

दिनदानी—संज्ञा पुं. [सं. दिन + हिं. दानी] सदैव दान करनेवाला।

दिनदीप—संज्ञा पुं. [सं. दिन + दीप] सूर्य।

दिनदुखि, दिनदुखी—[सं.] चकवा पक्षी।

दिननाथ, दिननाह—संज्ञा पुं. [सं. दिननाथ] सूर्य।

दिननायक—संज्ञा पुं. [सं.] दिन का स्वामी, सूर्य।

दिनप, दिनपति—संज्ञा पुं. [सं. दिन + प, पति] (१) सूर्य। (२) मित्र ('मित्र' सूर्य का पर्यायवाची है। इसका दूसरा अर्थ सखा है। वही यहाँ लिया गया है।) उ.—दिनपति चले धौं कहा जात—सा. ८।

दिनपति-सुत-अरि-पिता-पुत्र-सुत—संज्ञा पुं. [सं. दिनपति (= सूर्य) + सुत (= सूर्य का पुत्र कर्ण) + अरि (कर्ण का अरि या शत्रु अर्जुन) + पिता (= अर्जुन के पिता इंद्र) + पुत्र (= इंद्र का पुत्र बालि) + पुत्र (= बालि का पुत्र अंगद)] अंगद या बाजूबंद नामक आभूषण। उ.—दिनपति-सुत-अरि-पिता-पुत्र-सुत सो निज करन सँभारे। मानहु कंज रिच्छ गहि तीजो कंचन भू पर धारे—सा. १३।

दिनपति-सुत-पतिनी-प्रिय—संज्ञा पुं., स्त्री. [सं. दिनपति (= सूर्य) + सुत (सूर्य का पुत्र शनि) + पत्नी (= शनि की स्त्री कर्कशा) + प्रिय (= कर्कशा स्त्री का प्रिय कठोर वचन या वाणी)] क्रूर वचन या वाणी। उ०—लखि वृजचंद चंदमुख राधे। दधि सुतसुत पतिनी न निकासत दिनपति-सुत-पतिनी-प्रिय बाधे—सा. ६।

दिनपाल, दिनपालक—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य।

दिनबंधु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य। (२) मंदार।

दिनमणि, दिनमनि—संज्ञा पुं. [सं. दिनमणि] (१) सूर्य। उ.—(क) लै मुरली आँगन ह्वै देखौ, दिनमनि उदित भए द्विघरी—४०३। (ख) तूल दिनमनि कहा सारँग, नाहिं उपमा देत—७०६। (ग) बिनय अंचल छोरि रबि सौं, करति हैं सब बाम। हमहिं होहु दयाल दिनमनि तुम बिदित संसार—७६७। (२) आक, मंदार।

दिनमयूख—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य। (२) मंदार।

दिनमल—संज्ञा पुं. [सं.] मास, महीना।

दिनमान—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन की अवधि या उसका मान।

दिनमाली—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य, रवि।

दिनमुख—संज्ञा पुं. [सं.] सबेरा, प्रभात।

दिनरत्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य। (२) मंदार।

दिनराइ, दिनराई, दिनराउ, दिनराऊ, दिनराज, दिनराय—संज्ञा पुं. [सं. दिनराज] सूर्य, रवि।

दिनशेष—संज्ञा पुं. [सं.] संध्या, सायंकाल।

दिनांक—संज्ञा पुं. [सं. दिन + अंक] तारीख।

दिनांत—संज्ञा पुं. [सं. दिन + अंत] संध्या, सायंकाल।

दिनांतक—संज्ञा पुं. [सं. दिन + अंतक] अंधकार।

दिनांध—संज्ञा पुं. [सं. दिन + अंध] वह जिसे दिन में दिखायी न दे।

दिनांश—संज्ञा पुं. [सं. दिन + अंश] (१) प्रातः, मध्याह्न और सायं—दिन के तीन अंश या भाग। (२) दिन के पाँच अंश जिनमें प्रत्येक, सूर्योदय के पश्चात् तीन मुहूर्त का होता है; यथा प्रातः, संगव मध्याह्न, अपराह्न, और सायंकाल।

दिना—संज्ञा पुं. [सं. दिन] दिन। उ.—(क) जा दिना तैं जनम पायौ, यहै मेरी रीति। बिषय-बिष हठि खात, नाहीं डरत करत अनीति—१-१०६। (ख) एक दिना हरि लई करोटी सुनि हरिषी नँदरानी—सारा. ४२१। (ग) अपनी दसा कहौं मैं कासौं बन-बन डोलति रैनि-दिना—१४६१। (घ) माई वे दिना यह देह अछत बिधना जो आनैरी—२६०४।

मुहा—चार दिना—थोड़ा समय। उ.—दिना चारि रहते जग ऊपर—१०५३।

दिनाई—संज्ञा स्त्री. [सं. दिन + हिं. आना] ऐसी बिषैली वस्तु जिसके खाने से मृत्यु हो जाय। उ.—काके सिर पढ़ि मंत्र दियौ हम कहाँ हमारे पास दिनाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनागम—संज्ञा पुं. [सं. दिन+आगम] प्रभात ।

दिनाती—संज्ञा स्त्री. [हिं. दिन+आती] एक दिन का काम या उसकी मजदूरी ।

दिनादि—संज्ञा पुं. [सं. दिन+आदि=शुरू] प्रभात।

दिनाधीश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य । (२) मंदार ।

दिनारु, दिनालु—वि. [सं. दिनालु] बहुत दिनों का, पुराना ।

दिनार्द्ध—संज्ञा पुं. [सं. दिन+अर्द्ध] आधा दिन, दोपहर ।

दिनास्त—संज्ञा पुं. [सं.] संध्या, सायंकाल ।

दिनिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक दिन की मजदूरी ।

दिनियर—संज्ञा पुं. [सं. दिनकर] सूर्य ।

दिनी—वि. [हिं. दिन+ई (प्रत्य.)] (१) बहुत दिनों का, पुराना । (२) बूढ़ी । उ.—भली बुद्धि तेरैं जिय उपजी । ज्यौं-ज्यौं दिनी भई त्यौं निपजी—३६१ ।

दिनेर—संज्ञा पुं. [सं. दिनकर, प्रा. दिनियर] सूर्य ।

दिनेश—संज्ञा पुं. [सं. दिन+ईश] (१) सूर्य, रवि । (२) आक, मंदार । (३) दिन के स्वामी ग्रह ।

दिनेशात्मज—संज्ञा पुं. [सं. दिन+ईश+आत्मज=पुत्र] (१) शनि । (२) यम । (३) कर्ण । (४) सुग्रीव । (५) अश्विनीकुमार ।

दिनेश्वर—संज्ञा पुं. [सं. दिन+ईश्वर] सूर्य, रवि ।

दिनेस—संज्ञा पुं. [सं. दिनेश] सूर्य । उ.—सिव बिरंचि सनकादि महामुनि सेष सुरेस दिनेस । इन सबहिनि मिलि पार न पायौ द्वारावती नरेस—सारा. ६८४ ।

दिनौंधी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दिन+अंध+ई (प्रत्य.)] आँख का एक रोग जिसमें दिन के प्रकाश में कम दिखायी देता है ।

दिपत—क्रि. अ. [हिं. दिपना] चमकते हैं, शोभा पाते हैं । उ०—नीकन अधिक दिपत दुत ताते अंतरिच्छ छबि भारी—सा. ५१ ।

दिपति—संज्ञा स्त्री. [सं. दीप्ति] चमक, शोभा ।

क्रि. अ—चमकती हैं, शोभा पाती हैं ।

दिपना—क्रि. अ. [सं. दीप्ति] चमकना, शोभा पाना ।

दिब—संज्ञा पुं. [सं. दिव्य] वह परीक्षा जो सत्यता निर्दोषता सिद्ध करने के लिए दी जाय ।

दिमाक़, दिमाग—संज्ञा पुं. [अ. दिमाग़] (१) मस्तिष्क

मुहा.—दिमाग खाना (चाटना)—बहुत बक करके परेशान कर देना । दिमाग खाली करना—मगजपच्ची करना । दिमाग आसमान पर (चढ़ना)—बहुत घमण्ड होना । दिमाग न जाना (मिलना)—बहुत घमण्ड होना । दिमाग खलल होना— पागल-सा हो जाना ।

(२) बुद्धि, समझ, मानसिक शक्ति ।

मुहा.—दिमाग लड़ाना—सोच-विचार करना

(३) अभिमान, गर्व, घमण्ड, शेखी ।

मुहा.—दिमाग झड़ना—घमंड चूर होना।

दिमागदार—वि. [अ. दिमाग़+फ़ा. दार (प्रत्य.)] बुद्धिमान या समझदार । (२) अभिमानी, घमंडी

दिमागी—वि. [हिं. दिमाग] (१) दिमाग से संबंध रखने वाला । (२) अभिमानी, घमंडी ।

दिमात—वि. [सं. द्विमातृ] जिसके दो माताएं हों।

दियत—संज्ञा स्त्री. [हिं. देना] किसी को मार डालने या घायल करने के बदले में आक्रमणकारी को दिया जानेवाला धन ।

दियना, दियरा—संज्ञा पुं. [हिं. दीया] दीपक, चिराग।

दियरा—संज्ञा पुं. [हिं. दीया] एक तरह का पकवान

दियला, दियवा, दिया—संज्ञा पुं. [हिं. दीया] दीपक।

दियाबती—संज्ञा स्त्री. [हिं. दीया+बाती] (सांझ को) दिया जलाने का काम ।

दियारा—संज्ञा पुं. [फ़ा. दयार] (१) नदी-किनारे भूमि, कछार । (२) प्रदेश, प्रांत ।

दिये—क्रि. स. [हिं. देना] लगाये (हुए) । उ.— मूँड्यौ मूँड़ कंठ बनमाला, मुद्रा-चक्र दिये— १७१ । (ख) तन पहिरे नूतन चीर, काजर दिये—१०-२४ ।

दियो, दियौ—क्रि. स. [सं. दान, हिं. देना] प्रदान किया । उ.—(क) करि बल बिगत उ दुष्ट तैं, ग्राह ग्रसत बैकुंठ दियौ—१-२६ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह ज्ञान छली ब्रज-वनिता दियो सु क्यों न लहौं—
१० उ. १०४।

दिर—संज्ञा पुं. [अनु.] सितार का एक बोल।

दिरद—संज्ञा पुं. [सं. द्विरद] हाथी।
वि.—दो दाँत वाला।

दिरमान—संज्ञा पुं. [फ़ा. दरमान:] चिकित्सा।

दिरमानी—संज्ञा पुं. [हिं. दिरमान] वैद्य, चिकित्सक।

दिरानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. देवरानी] देवर की स्त्री।

दिरिस—संज्ञा पुं. [सं. दृश्य] देखने की वस्तु, दृश्य।

दिल—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) कलेजा।

मुहा.—दिल उछलना—(१) घबराहट होना। (२) प्रसन्नता होना। दिल उड़ना—बहुत घबराहट होना। दिल उलटना—(१) वमन करते-करते परेशान हो जाना। (२) होश हवास जाते रहना। दिल काँपना—डर लगना। दिल जलना—(१) कष्ट पहुँचना (२) बहुत बुरा लगना। दिल जलाना—दुख देना। दिल टूटना—हिम्मत न रह जाना, निराश हो जाना। दिल ठंढा करना—संतोष देना। दिल ठंढा होना—संतोष होना। दिल थाम कर बैठ (रह) जाना—रोक कर, वेग दबाकर या मन मसोस कर रह जाना। दिल धक-धक करना—डर से बहुत घबराना। दिल धड़कना—(१) डर से घबराना। (२) बहुत चिंतित होना, जी में खटका होना। दिल निकाल कर रख देना—सबसे प्रिय वस्तु या सर्वस्व दे देना। दिल पक जाना—बहुत तंग या परेशान हो जाना। दिल बैठना—हृदय की गति बहुत क्षीण हो जाना। दिल का बुलबुला बैठना—शोक या दुख के आघात से हृदय की गति रुक जाना।

(२) मन, चित्त, हृदय, जी।

मुहा.—दिल अटकना—मुग्ध होना, प्रेम होना। दिल आना—प्रेम करना। दिल उकताना, उचटना—जी उचाट होना, मन न लगना। दिल उठाना—(१) विरक्त होना। (२) इच्छा करना। दिल उमड़ना—चित्त में दुख या दया उमड़ना। दिल उलटना—(१) घबराहट होना। (२) मन न लगना। (३) घृणा होना। दिल उठाना—(१) मन फेर लेना। (२) इच्छा करना। दिल कड़ा करना—साहस या हिम्मत से काम लेना। दिल कड़ा होना—कठोर साहसी या हिम्मती होना। दिल कबाब होना—बहुत बुरा लगना, जी जल जाना। दिल करना—(१) साहस करना। (२) इच्छा करना। दिल का—जीवटवाला, हिम्मती, साहसी। दिल का कमल खिलना—बहुत प्रसन्नता होना। दिल का गवाही देना—किसी बात के करने या न करने अथवा उचित होने न होने का विचार मन में आना। दिल का गुबार (गुब्बार, बुखार) निकालना—क्रोध, दुख या झुँझलाहट में खूब भली-बुरी सुनकर संतोष करना। दिल का बादशाह—(१) बहुत उदार। (२) मनमौजी। दिल का भरना (भर जाना)—(१) संतुष्ट होना, छक जाना, मन भर जाना। (२) इच्छा पूरी होना (३) रुचि या इच्छा के अनुकूल काम होना। (४) खटका या संदेह मिटना। (५) दिलजमई होना। दिल की दिल में रहना (रह जाना)—इच्छा पूरी न हो सकना। दिल की फाँस—मन का दुख या कष्ट। दिल कुढ़ना—मन में दुख या कष्ट होना, जी जलना। दिल कुढ़ाना—दुख या कष्ट देना, जी जलाना। दिल कुम्हलाना—मन का खिन्न या उदास होना। दिल के दरवाजे खुलना—जी का हाल या भेद मालूम होना। दिल के फफोले फूटना—मन के भाव या चित्त के उद्गार प्रकट होना। दिल के फफोले फोड़ना—भली-बुरी सुनाकर जी ठंढा करना। दिल को करार होना—जी को धैर्य, शांति या आशा होना। दिल मसोसना—शोक, क्रोध आदि को प्रकट न करके मन ही में दबाना। मन मसोस कर रह जाना—शोक, क्रोध आदि को कारणवश प्रकट न कर सकना। दिल को लगना—(१) किसी बात का मन पर बड़ा प्रभाव पड़ना। (२) बहुत लगन होना। दिल खट्टा होना—घृणा या विरक्ति होना। दिल को खटकना—(१) संदेह या चिंता होना। (२) जी हिचकिचाना। दिल खुलना—संकोच या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिचक न रह जाना। दिल खिलना—चित्त बहुत प्रसन्न होना। दिल खोलकर—(१) बिना हिचक या संकोच के, बेधड़क। (२) मनमाना (३) बहुत चाव या उत्साह के साथ। दिल चलना—(१) इच्छा होना। (२) चित्त चंचल या विचलित होना। (३) मोहित या मुग्ध होना। दिल चुराना—किसी काम से भागना या टाल-टूल करना। दिल जमना—(१) किसी काम में मन या चित्त लगना। (२) किसी विषय या पदार्थ का रुचि के अनुकूल होना। दिल जमाना—किसी कार्य-व्यापार में ध्यान देना या मन लगाना। दिल जलना—(१) गुस्सा या झुँझलाहट लगना, कुढ़ना। (२) डाह या ईर्ष्या होना। दिल जलाना—(१) कुढ़ाना, चिढ़ाना। (२) सताना, दुखी करना। (३) डाह या ईर्ष्या पैदा करना। दिलजान से जुटना (लगना)—(१) खूब मन लगाना, बहुत ध्यान से काम करना। (२) कड़ी मेहनत करना। दिल टूट जाना, टूटना—निराशा या निरुत्साह होना। दिल ठिकाने होना—शान्ति, संतोष या धैर्य होना। दिल ठुकना—(१) चित्त स्थिर होना। (२) हिम्मत बाँधना। दिल ठोंकना—(१) जी पक्का करना। (२) हिम्मत बाँधना। दिल डूबना—(१) मूर्छित होना। (२) घबराहट होना। (३) निराशा होना। दिल तड़पना—अधिक प्रेम के कारण किसी के लिए जी में बेचैनी होना। दिल तोड़ना—हिम्मत या साहस भंग कर देना। दिल दहलना—बहुत भय लगना। दिल दुखना—कष्ट या दुख होना। दिल देखना—जी की थाह लेना। दिल देना—प्रेम करना। दिल दौड़ना—(१) बड़ी इच्छा होना। (२) जी इधर-उधर भटकना। दिल दौड़ाना—(१) इच्छा करना। (२) सोचना, ध्यान दौड़ाना। दिल धड़कना—(१) डर से जी काँपना। (२) चित में चिंता होना। दिल पक जाना—दुख सहते-सहते तंग आ जाना। दिल पकड़ लेना (कर बैठ जाना)—शोक या दुख के वेग को दबाकर रह जाना—प्रकट न कर पाना। दिल पकड़ा जाना—संदेह या खुटका पैदा होना। दिल पकड़े फिरना—

मोह-ममता से प्रिय पात्र के लिए भटकते फिर[ना]। दिल पर नक्श होना—जी में अच्छी तरह [बैठ] जाना। दिल पर मैल आना—किसी के प्रति प[हले] का सा प्रेम या सद्भाव न रह जाना। दिल पर [साँप] लोटना—किसी की बढ़ती या उन्नति देखकर [मन] से दुखी होना। दिल पर हाथ रखे फिरना—[मोह] ममता से भटकना। दिल पसीजना (पिघलना)—दुखी या पीड़ित को देखकर जी में दया उमड़ना। दिल पाना—मन की थाह पा लेना। दिल [बहलाना] पड़ना—दुख-शोक भूलकर मन बहलाना। दि[ल] फटना (फट जाना)—(१) पहले-सा प्रेम या व्यव[हार] न रहना। (२) उत्साह भंग हो जाना। दिल फि[रना] (फिर जाना)—पहले सा प्रेम न रहकर अरुचि [या] विरक्ति उत्पन्न हो जाना। दिल फीका होना—[अरुचि] या विरक्ति हो जाना। दिल बढ़ना—(१) उत्सा[हित] होना। (२) हिम्मत बढ़ना। दिल बढ़ाना—(१) उत्साहित करना। (२) हिम्मत बढ़ाना। दिल ब[ह]लना—(१) आनंद या मनोरंजन होना। (२) दु[ख-]चिंता भूलकर दूसरे काम में मन लगना। दि[ल] बहलाना—(१) आनंद या मनोरंजन करना। (२) दुख-चिंता भुलाने के लिए दूसरे काम में म[न] लगाना। दिल बुझना—मन में उत्साह या उमं[ग न] रहना। दिल बुरा होना—(१) जी मचलाना। (२) घिन या अरुचि होना। (३) अस्वस्थ होना। (४) मन में दुर्भाव या कपट होना। दिल बेकल होना—बेचैनी या घबराहट होना। दिल बैठ जाना (बैठना)—(१) मूर्छा आना। (२) बहुत उदास या खि[न्न] होना। दिल बैठा जाना—(१) चित्त ठिकाने [न] रहना। (२) जरा भी उमंग न रह जाना। (३) मूर्छा आने लगना। दिल भटकना—चित्त का [अस्थिर] या चंचल होना। दिल भर आना—मन में [दुख] उमड़ना। दिल भारी करना—चित्त खिन्न या उ[दास] करना। दिल मसोसना—शोक-दुख आदि का [वेग] दबाना। दिल मारना—(१) उमंग या उत्साह [को] दबाना (२) संतोष करना। दिल मिलना—स्नेह [या] प्रेम होना। दिल में आना—(१)विचार उठना। (२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छा या इरादा होना। दिल में खुभना (गड़ना, चुभना)—(१) हृदय पर गहरा प्रभाव करना। (२) बराबर ध्यान बना रहना। दिल में गाँठ (गिरह) पड़ना—अनुचित कार्य-व्यवहार के कारण बुरा मानना। दिल में घर करना—(१) बराबर ध्यान बना रहना। (२) मन में बसना। दिल में चुटकियाँ (चुटकी) लेना—(१) हँसी उड़ाना (२) चुभती हुई बात करना। दिल में चोर बैठना—शंका या संदेह होना। दिल में जगह करना -(१) बराबर ध्यान बना रहना। (२) मन में बसाना। दिल में फफोले पड़ना—मन में बहुत दुखी होना। दिल में फरक आना (बल पड़ना) – शंका या संदेह होना, सद्भाव न रह जाना। दिल में धरना (रखना)—(१) ध्यान रखना। (२) बुरा मानना। (३) बात गुप्त रखना, अप्रकट रखना। दिल मैला करना—चित्त में दुर्भाव उत्पन्न करना। दिल रुकना—(१) जी घबराना। (२) जी में संकोच होना। (किसी का) दिल रखना—(१) किसी की इच्छा पूरी कर देना। (२) प्रसन्न या संतुष्ट करना। दिल लगना—(१) मन का किसी काम में रम जाना। (२) मन बहलाना। (३) प्रेम होना। दिल लगाना - (१) मन बहलाना। (२) प्रेम करना। दिल ललचाना—(१) कुछ पाने की इच्छा या लालसा होना। (२) मन मोहित होना। दिल लेना—(१) अपने प्रेम में फँसाना। (२) मन की थाह लेना। दिल लोटना—मन छटपटाना। दिल से उतरना (गिरना)—स्नेह, श्रद्धा या आदर का पात्र न रह जाना। दिल से—(१) खूब जी लगाकर। (२) अपनी इच्छा से। दिल से उठना—स्वयं कोई काम करने की इच्छा होना। दिल से दूर करना—भुला देना। दिल हट जाना—अरुचि हो जाना। (किसी के) दिल को हाथ में रखना—दूसरे के मन को अपने वश में रखना। (किसी के) दिल को हाथ में लेना- किसी के दिल को अपने कार्य-व्यवहार से वश में कर लेना। दिल हिलना—बहुत भय लगना। दिल ही दिल में—चुपके-चुपके। दिल-जान से—(१) खूब मन लगाकर। (२) कड़ा परिश्रम करके।

(३) साहस, दम। (४) प्रवृत्ति, इच्छा।

दिलचला—वि. [फ़ा. दिल+चलना] (१) साहसी, हिम्मती। (२) वीर, बहादुर। (३) दानी, उदार।

दिलचस्प—वि. [फ़ा.] मनोरंजक, मनोहर।

दिलचस्पी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) मनोरंजन, (२) रुचि।

दिलजमई—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. दिल+अ. जमअई] इतमीनान, तसल्ली, भरोसा, संतोष।

दिलजला—वि. [फ़ा. दिल+हिं. जलना] दुखी, पीड़ित।

दिलदरिया, दिलदरियाव—संज्ञा पुं. [फ़ा. दरियादिल] (१) उदार या दानी व्यक्ति। (२) उदार या दानी होने का भाव।

दिलदार—वि. [फ़ा.] (१) उदार, दाता, (२) रसिक। संज्ञा पुं.—वह जिससे प्रेम हो, प्रेम-पात्र।

दिलदारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. दिलदार+ई (प्रत्य.)] (१) उदारता। (२) रसिकता।

दिलपसंद—वि. [फ़ा.] जो दिल को भला लगे।

दिलबर—वि. [फ़ा.] प्रिय, प्यारा।

दिलरुबा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] प्रेम पात्र, प्रिय व्यक्ति।

दिलवाना—क्रि. स. [हिं. देना का प्रे.] (१) देने का काम दूसरे से कराना। (२) प्राप्त कराना।

दिलवाला—वि. [फ़ा. दिल+हिं. वाला (प्रत्य.)] (१) देने के काम में उदार। (२) बहादुर, साहसी।

दिलवैया—वि. [हिं. दिलवाना+ऐया] (१) दिलानेवाला—प्राप्त करानेवाला। (२) देनेवाला।

दिलाना—क्रि. स. [हिं. 'देना' का प्रे.] (१) देने का काम दूसरे से कराना। (२) प्राप्त कराना।

दिलावर—वि. [फ़ा.] बहादुर, साहसी, वीर।

दिलावरी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] बहादुरी, साहस।

दिलासा—संज्ञा पुं. [फ़ा. दिल+हिं. आशा] तसल्ली, ढारस।

दिली—वि. [फ़ा. दिल] (१) हार्दिक (२) बहुत घनिष्ठ।

दिलीप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) इक्ष्वाकुवंशी एक राजा, 'रघुवंश के अनुसार जिनकी पत्नी सुदक्षिणा के गर्भ से राजा रघु जन्मे थे। (२) एक चंद्रवंशी राजा।

दिलेर—वि. [फ़ा.] बहादुर, साहसी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिलेरी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] बहादुरी, साहस।

दिल्लगी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. दिल+हिं. लगना] (१) दिल लगाने की क्रिया या भाव। (२) हँसी ठट्ठा, मजाक, मखौल, मसखरी।

मुहा.—दिल्लगी उड़ाना—हँसी में उड़ा देना। दिल्लगी में—हँसी में, हँसी मखौल के उद्देश्य से।

दिल्लगीबाज—संज्ञा पुं. [हिं. दिल्लगी+फ़ा. बाज़] मसखरा, मखौलिया, हँसोड़, हँसी- ठिठोली करनेवाला।

दिल्लगीबाजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दिल्लगी+फ़ा. बाज़ी] हँसी-ठठोली।

दिल्ली—संज्ञा स्त्री.—यमुना नदी के किनारे बसा हुआ भारत का प्रसिद्ध नगर जो प्राचीन काल से हिंदू-मुसलमान राजाओं की राजधानी होता आया है। सन् १८०३ में अंग्रेजों ने इस पर अधिकार किया था और नौ वर्ष बाद इसको अपनी राजधानी बनाया था। स्वतंत्र भारत की राजधानी के रूप में आज यह नगर संसार में प्रसिद्ध है।

दिल्लीवाल—वि. [हिं. दिल्ली+वाला (प्रत्य.)] (१) दिल्ली से संबंधित, दिल्ली का। (२) दिल्ली का रहनेवाला।

दिव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) स्वर्ग। उ.—नीलावती चौंवर दिव दुरलभ। भात परोस्यौ माता सुरलभ—३८६। (२) आकाश। (३) वन। (४) दिन।

दिवराज—संज्ञा पुं. [सं.] स्वर्ग का राजा, इन्द्र। उ.—सूरदास प्रभु कृपा करहिंगे सरन चलौ दिवराज।

दिवरानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. देवरानी] देवर की पत्नी।

दिवस—संज्ञा पुं. [सं.] दिन, वासर, रोज। उ.—एक दिवस हौं द्वार नंद के नहीं रहति बिनु आई—२५३८।

दिवस-अंध—संज्ञा पुं. [सं. दिवस+हिं. अंधा] उल्लू।

दिवसकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य। (२) मंदार।

दिवसनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य, दिनकर, रवि।

दिवसपति—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य, रवि।

दिवसपति-नंदनि—संज्ञा स्त्री. [सं. दिवसपति (=सूर्य) +नंदिनी=पुत्री] (१) सूर्य की पुत्री। (२) यमुना।

दिवसपतिसुतमात—संज्ञा पुं. [सं. दिवसपति (=सूर्य) +सुत (=सूर्य का पुत्र कर्ण) +माता (=कर्ण की माता कुंती=कुंत=बर्छा)] बर्छा, भाला। उ.—दिवसपति सुतमात अवधि विचार प्रथम मिलाप—सा. ३२।

दिवसमणि, दिवसमनि—संज्ञा पुं. [सं. दिवसमणि] सूर्य, रवि।

दिवसमुख—संज्ञा पुं. [सं.] सबेरा, प्रातःकाल।

दिवसमुद्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक दिन का वेतन।

दिवसेश—संज्ञा पुं. [सं. दिवस+ईश] सूर्य, रवि।

दिवस्पति—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य, रवि।

दिवस्पृश्—संज्ञा पुं. [स.] पैर से स्वर्ग को छूनेवाले वामनावतारी विष्णु।

दिवांध—वि. [सं.] जिसे दिन में दिखायी न दे।

संज्ञा पुं.—(१) दिनौंधी नामक रोग। (२) उल्लू।

दिवांधकी—सं. स्त्री. [सं.] छछूँदर।

दिवा—संज्ञा पुं.. [सं.] (१) दिन (२) एक वर्णवृत्त।

दिवाई—क्रि. स. [हिं दिलाना (प्रे.)] दिलायी, प्राप्त करायी। उ.—(क) सिव-बिरंचि नारद मुनि देखत, तिनहुँ न मौकौं सुरति दिवाई—७-४। (ख) कहा करौं, बलि जाउँ, छोरि तू तेरी सौंस दिवाई—३६३। (ग) काहू तौ मोहिं सुधि न दिवाई—१०६४। (घ) जो भाई सो सौंह दिवाई तब सूधे मन मान्यौ—२२७५।

दिवाकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य। (२) कौआ, काक। (३) मदार का वृक्ष या फूल। (४) एक फूल।

दिवाकीर्ति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नाई। (२) चांडाल। (३) उल्लू नामक पक्षी।

दिवाचर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पक्षी। (२) चांडाल।

दिवाटन—संज्ञा पुं. [सं.] कौआ, काक।

दिवातन—वि. [सं. दिवा+वेतन ?)] दिन भर का।

संज्ञा पुं.—एक दिन का वेतन या मजदूरी।

दिवान—संज्ञा पुं [अ. दीवान] मंत्री, वजीर।

दिवाना—वि. [हिं. दीवाना] पागल, मतवाला, बावला।

दिवानाथ—संज्ञा पुं. [स.] रवि। सूर्य।

दिवानी—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक पेड़।

संज्ञा स्त्री [हिं. दीवान] दीवान का पद।

वि. [हिं. दीवाना] पगली, मतवाली, बावली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.-(क) तब तू कहति सबनि सौं हँसि-हँसि अब तू प्रगटहिं भई दिवानी—११६०। (ख) सूरदास प्रभु मिलिकै बिछुरे ताते भई दिवानी—३३५६।

दिवापृष्ट—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य, रवि।

दिवाभिसारिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] वह नायिका जो दिन में पति से मिलने के लिए जाय।

दिवाभीत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चोर (२) उल्लू।

दिवामणि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य। (२) मदार।

दिवामध्य—संज्ञा पुं. [सं.] दोपहर, मध्याह्न।

दिवाय—क्रि. सं. [हिं. दिलाना] दिलाकर।

संयु.- देहु दिवाय— दिला दो। उ.—फगुवा हमको देहु दिवाय—२४१०।

दिवायो, दिवायौ— क्रि. स. [हिं. देना का प्रे.] दिलाया, दिलवाया। उ.-(क) जय अरु बिजय कर्म कह कीन्हौ, ब्रह्मसराप दिवायौ—१-१०४। (ख) दोइ लख धेनु दई तेहि अवसर बहुतहि दान दिवायो—सारा.३६२।

दिवार—संज्ञा स्त्री, [हिं. दीवार] दीवार, भीत।

दिवारी—संज्ञा स्त्री, [हिं. दीवाली] दीपावली का त्योहार।

दिवाल—वि. [हिं. देना+वाल (प्रत्य.)] देनेवाला।

संज्ञा स्त्री. [हिं. दीवार] दीवार, भीत।

दिवाला—संज्ञा पुं. [हिं. दीवा+बालना] (१) धन या पूंजी न रह जाने के कारण ऋण चुकाने की असमर्थता, टाट उलटना। (२) किसी पदार्थ का बिलकुल खत्म हो जाना।

दिवालिया—वि. [हिं. दिवाला+इया] जो दिवाला निकाल चुका हो।

दिवाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. दीवाली] दीपावली का त्योहार।

दिवावति—क्रि. स. [हिं दिलाना] (१) दूसरे को देने के लिए प्रवृत्त करती है, दिलवाती है। (२) प्राप्त कराती है, (शपथ आदि) रखती है। उ.—छाँड़ि देहु बहि जाइ मथानी। सौंह दिवावति छोरहु आनी—३६१। (३) भूत-प्रेत की बाधा रोकने के लिए (हाथ) फिरवाती है। उ.—(क) घर-घर हाथ दिवावति डोलति, बाँधति गरै बघनियाँ—१०-८३। (ख) घर-घर हाथ दिवावाति डोलति, गोद लिए गोपाल बिनानी—१०--२५८।

दिवि—संज्ञा पुं० [सं. दिव] (१) स्वर्ग। उ.—(क) सूर भयौ आनंद नृपति-मन दिवि दुंदुभी बजाए—६-२४। (२) आकाश। (ख) जैं दिवि भूतल सोभा समान। जै जै सूर, न सब्द आन—६-१६६। (३) देव। उ.—पाटंबर दिवि-मंदिर छायौ—१००१।

संज्ञा पुं. [सं.] नीलकंठ पक्षी।

दिविता—संज्ञा स्त्री. [सं.] दीप्ति आभा, कांति।

दिविषत्—संज्ञा पुं. [सं.] (१) स्वर्ग-वासी। (२) देवता।

दिविष्टि—संज्ञा पुं. [सं.] यज्ञ।

दिविष्ठि—संज्ञा पुं. [सं.] स्वर्ग में रहनेवाले, देवता।

दिवेश—संज्ञा पुं. [सं.] दिक्‌पाल।

दिवैया—वि. [हिं. देना+ऐया (प्रत्य.)] देने वाला।

दिवोका, दिवौका—संज्ञा पुं. [सं. दिवौकस्] (१) स्वर्ग में रहने वाला। (२) देवता। (३) चातक पक्षी।

दिवोल्का—संज्ञा स्त्री. [सं.] दिन से गिरनेवाली उल्का।

दिव्य—वि. [सं. दिव्य] स्वर्ग से संबंध रखनेवाला, स्वर्गीय। (२) आकाश से संबंध रखने वाला। (३) प्रकाशपूर्ण, चमकीला। उ.—आजु दीपति दिव्य दीप मालिका—१०—८०६। (४) बहुत बढ़िया।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) जौ नामक अन्न। (२) आँवला (३) एक प्रकार के केतु। (४) स्वर्गीय या अलौकिक नायक। (५) अपराधी या निरपराधी की परीक्षा की एक प्राचीन रीति। (६) शपथ।

दिव्यकवच—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अलौकिक कवच। (२) वह स्तोत्र जिसका पाठ करने से अंग-रक्षा हो

दिव्यक्रिया—संज्ञा स्त्री. [सं.] व्यक्ति को अपराधी-निरपराधी सिद्ध करने की प्राचीन परीक्षा-प्रणाली।

दिव्यगायन— संज्ञा पुं. [सं.] स्वर्ग के गायक, गंधर्व।

दिव्यचक्षु—संज्ञा पुं. [सं दिव्यचक्षुस्] (१) ज्ञान-चक्षु अंतःदृष्टि, दिव्यदृष्टि (२)। अंधा।

दिव्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) अलौकिक होन का भाव। (२) देव भाव। (३) उत्तमता, सुंदरता।

दिव्यदोहद—संज्ञा पुं. [सं.] किसी इच्छा की सिद्धि के लिए देवता को अर्पित किया जानेवाला पदार्थ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्यदृष्टि—संज्ञा स्त्री [सं.] अंत:दृष्टि, अलौकिक दृष्टि ।
दिव्यधर्मी—संज्ञा पुं. [सं.दिव्यधर्मिन्] सुशील व्यक्ति ।
दिव्यनगरी—संज्ञा [सं.] ऐरावती नगरी ।
दिव्यनदी—संज्ञा स्त्री. [सं.] आकाश गंगा ।
दिव्यनारी—संज्ञा स्त्री [सं.] अप्सरा ।
दिव्यपुष्प—संज्ञा पुं. [सं.] करवीर, कनेर ।
दिव्य रथ—संज्ञा पुं. [सं.] देवताओं का विमान ।
दिव्यवस्त्र—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य का प्रकाश ।
दिव्यवाक्य– संज्ञा पुं. [स.] देववाणी, आकाशवाणी ।
दिव्य-सरिता—संज्ञा स्त्री. [सं.दिव्यसरित्] आकाश-गंगा
दिव्यस्त्री, दिव्यांगना—संज्ञा स्त्री. [सं.] देववधू अप्सरा ।
दिव्यांशु—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य, रवि ।
दिव्यांगना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) देवी । (२) अप्सरा ।
दिव्या– संज्ञा स्त्री. [सं] (२) आँवला । (२) तीन प्रकार की नायिकों में एक, स्वर्गीय अथवा अलौकिक नायिका ।
दिव्यादिव्य—संज्ञा पुं. [सं.] तीन प्रकार के नायकों में एक, वह मनुष्य जिसमें देवगुण हों ।
दिव्यादिव्या—संज्ञा पुं. [सं.] तीन प्रकार की नायिकाओं में एक, वह स्त्री जिसमें देवियों के गुण हों ।
दिव्यास्त्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह अस्त्र जो देवों से मिला हो । (२) वह अस्त्र जो मंत्रों से चले ।
दिव्योदिक—संज्ञा पुं. [सं.] वर्षा का जल ।
दिव्योपपादक—संज्ञा पुं. [सं.] देवता जिनकी उत्पत्ति बिना माता-पिता के मानी जाती है ।
दिश—संज्ञा स्त्री. [सं. दिश्] दिशा, दिक् ।
दिशा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) ओर, तरफ । (२) क्षितिज-वृत्त के किये गये चार विभागों में से किसी एक की ओर का विस्तार । ये चार विभाग हैं—पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण । इनके बीच के कोणों के नाम ये हैं—पूर्व दक्षिण के बीच अग्निकोण, दक्षिण पश्चिम के बीच नैर्ऋत्य कोण, पश्चिम-उत्तर के बीच वायव्य कोण और उत्तर-पूर्व के बीच ईशान कोण । इन आठ दिशाओं के सर के ऊपर की दिशा को 'ऊर्ध्व' और पैर के नीचे की दिशा को 'अधः' कहते हैं । (३) दस की संख्या ।

दिशागज—संज्ञा पुं. [सं.] दिग्गज ।
दिशाजय—संज्ञा पुं. [सं.] दिग्विजय ।
दिशापाल—संज्ञा पुं. [सं.] दिक्पाल ।
दिशाभ्रम—संज्ञा पुं. [सं.] दिशा- संबधी भ्रम ।
दिशाशूल, दिशासूल—संज्ञा पुं. [सं. दिक्शूल] समय का वह योग जब विशेष दिशाओं में यात्रा करने का निषेध हो ।
दिशि, दिसि—संज्ञा स्त्री. [हिं. दिशा] (१) दिशा ओर ।
दिशेभ—संज्ञा पुं. [सं. दिश्+इभ] दिग्गज ।
दिश्य—वि. [सं.] दिशा-संबंधी ।
दिष्ट—संज्ञा पुं. [सं] (१) भाग्य । (२ उपदेश । (३) काल ।
दिष्टांत—संज्ञा पुं. [सं.] मृत्यु, मौत ।
दिष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] १) भाग्य । (२) उपदेश । (३) उत्सव । (४) प्रसन्नता ।
संज्ञा स्त्री. [सं. दृष्टि] (१) देखने की शक्ति । (२) नजर ।
दिसंतर—संज्ञा पुं. [सं. देशांतर] विदेश, परदेश ।
क्रि. वि.—दिशाओं के अंत तक, बहुत दूर तक ।
दिस—संज्ञा स्त्री. [सं. दिशा] (१) दिशा । (२) ओर ।
दिसना—क्रि. अ. [हिं. दिखना] दिखायी पड़ना ।
दिसा—संज्ञा स्त्री. [.सं दिशा] (१) दिशा । (२) ओर ।
संज्ञा स्त्री.—मल त्यागने की क्रिया ।
दिसादाह—संज्ञा पुं. [सं दिश् + दाह] सूर्यास्त के पश्चात् भी दिशाओं का जलती हुई सी दिखायी देना ।
दिसावर—संज्ञा पुं. [सं. देशांतर] विदेश, परदेश ।
मुहा.—दिसावर उतरना—विदेशों में भाव गिरना । दिसावर चढ़ना—विदेश में दाम बढ़ना ।
दिसावरी—वि. [हिं. दिसावर+ई (प्रत्य.)] विदेश या परदेश से आया हुआ, बाहरी, परदेशी ।
दिसि—संज्ञा स्त्री. [सं. दिशा] (१) ओर, तरफ । उ.—(क) जापर कृपा करै करुनामय ता दिसि कौन निहारै—१-२५७ । (ख) सूरदास भक्त दोऊ दिसि का पर चक्र चलाऊँ—१-२७४ । (२) दिशाएँ जिनकी संख्या दस है ।
दिसिटि—संज्ञा स्त्री. [सं.दृष्टि] दृष्टि, नजर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिसिदुरद—संज्ञा पुं. [सं. दिशि + द्विरद] दिग्गज ।

दिसिनायक—संज्ञा पुं. [सं. दिशि + नायक] दिक्पाल ।

दिसिप, दिसिपति—संज्ञा पुं. [सं. दिशा + प, पति = पालक स्वामी, रक्षक] दिक्पाल

दिसिराज—संज्ञा पुं. [सं. दिशा + राजा] दिक्पाल ।

दिसैया—वि. [हिं. दिसना = दिखना + ऐया (प्रत्य.)] (१) देखनेवाला । (२) दिखानेवाला ।

दिस्सा—संज्ञा स्त्री. [सं दिशा] ओर, तरफ, दिशा ।

दिहंदा—वि. [फा.] दाता, देनेवाला ।

दिहरा—संज्ञा पुं. [सं. देव + हिं. घर = देवहर] देव-मंदिर ।

दिहल—क्रि. स. [पू. हिं. में 'देना' क्रिया का भूत. रूप] दिया, प्रदान किया ।

दिहाड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. दिन + हार (प्रत्य.)] (१) दिन । (२) बुरी दशा, दुर्गति ।

दिहाड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दिहाड़ा + ई प्रत्य.] दिन भर की मजदूरी ।

दिहात—संज्ञा स्त्री. [हिं. देहात] (१) गाँव, देहात । (२) वह स्थान जो सभ्यतादि में पिछड़ा हो ।

दिहाती—वि. [हिं. देहात] (१) गाँव का रहनेवाला । (२) असभ्य, गँवार, उजड्ड ।

दिहातीपन—संज्ञा पुं. [हिं. देहातीपन] (१) ग्रामीणता । (२) उजड्डता, गँवारूपन ।

दिहेज—संज्ञा पुं. [हिं. दहेज] विवाह में कन्यापक्ष की ओर से वर-पक्ष को दिया जानेवाला सामान आदि ।

दीअट—संज्ञा स्त्री. [हिं. देवट] दीपक रखने का आधार ।

दीआ—संज्ञा पुं. [हिं. दीया] दीप, दीपक ।

दीए—क्रि. स. [हिं. देना] दिये, प्रदान किये ।

संज्ञा पुं. बहु. [हिं. दीया] बहुत से दीपक ।

मुहा—दीए का हँसना—दीप की बत्ती से फूल झड़ना ।

दीक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] दीक्षा देनेवाला, गुरु ।

दीक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] दीक्षा देने की क्रिया ।

दीक्षांत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दीक्षा-संस्कार की समाप्ति पर किया जानेवाला यज्ञ । (२) महाविद्यालय या विश्वविद्यालय का उपाधि-वितरणोत्सव ।

दीक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) यजन, यज्ञकर्म । (२) मंत्र की शिक्षा, मंत्रोपदेश । (३) उपनयन-संस्कार जिसमें गायत्री मंत्र दिया जाता है । (४) गुरु-मंत्र, आचार्योपदेश (५) पूजन ।

दीक्षागुरु—संज्ञा पुं. [सं.] मंत्रोपदेशक आचार्य ।

दीक्षापति—संज्ञा पुं. [सं.] यज्ञ का रक्षक, सोम ।

दीक्षित—वि. [सं.] (१) जो किसी यज्ञ में लगा हो । (२) जिसने आचार्य से दीक्षा ली हो ।

संज्ञा पं.—ब्राह्मणों का एक वर्ग ।

दीखति—क्रि. अ. [हिं. दीखना] (१) दिखायी देता है, दृष्टिगोचर होता है । (२) जान पड़ता है, मालूम होता है । उ.—दीखति है कछु होवनहारी—४-५ ।

दीखना—क्रि. अ. [हिं. देखना] दिखायी देना ।

दीघी—संज्ञा स्त्री. [सं. दीर्घिका] तालाब, पोखरा ।

दीच्छा—संज्ञा स्त्री. [सं. दीक्षा] मंत्रोपदेश ।

दीजियै—क्रि. स. [हिं. देना] प्रदान कीजिए । उ.—ताहिं कै हाथ निरमोल नग दीजिए—१-२२३ ।

दीजियौ—क्रि. स. [हिं. देना] देना, प्रदान करना ।

प्र.—अंक दीजियो—गले लगना । उ.—तुम लछिमन निज पुरहिं सिधारौ ।.......। सूर सुमित्रा अंक दीजियौ, कौसिल्याहिं प्रनाम हमारौ—९-३६ ।

दीजै—क्रि. स. [हिं. देना] दीजिए । उ.—नर-देही पाइ चित्त चरन-कमल दीजै—१-७२ ।

दीठ—संज्ञा स्त्री. [सं. दृष्टि] (१) देखने की शक्ति, दृष्टि ।

मुहा—दीठ मारी जाना—देखने की शक्ति न रहना ।

(२) देखने के लिए आँख की पुतली का घुमाव या स्थिति, अवलोकन, चितवन, नजर ।

मुहा—दीठ करना—देखना । दीठ चूकना—देख न पाना । दीठ फिरना—(१) किसी दूसरी ओर देखने लगना । (२) कृपादृष्टि न रह जाना । दीठ फेंकना—नजर डालना । दीठ फेरना—(१) दूसरी ओर देखना । (२) अप्रसन्न हो जाना, कृपादृष्टि न रखना । दीठ बचाना—(१) सामने न पड़ना या होना । (२) छिपाना, दूसरे को देखने न देना । दीठि बाँधना—ऐसा जादू करना कि कुछ का कुछ दिखायी दे । दीठि लगाना—ताकना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) ज्योति-प्रसार जिससे रूप रंग का बोध हो।

मुहा.—दीठ पर चढ़ना—**(१) अच्छा लगना, पसंद आना, निगाह में जँचना। (२) आँखों को बुरा लगना, नजरों में खटकना।** दीठ बिछाना—**(१) बड़ी उत्कंठा से प्रतीक्षा करना। (२) बड़ी श्रद्धा और प्रीत से स्वागत करना।** दीठ में आना(पड़ना)—**दिखायी पड़ना।** दीठि में समाना—**भला या प्रिय लगने के कारण बराबर ध्यान में बना रहना।** दीठि से उतरना (गिरना)—**श्रद्धा, प्रीति या विश्वास के योग्य न रह जाना।**

(४) किसी अच्छी चीज पर ऐसी कुदृष्टि पड़ना जिसका प्रभाव बहुत बुरा हो, कुदृष्टि, नजर।

मुहा.—दीठ उतारना (झाड़ना)—**मंत्र द्वारा नजर या कुदृष्टि का बुरा प्रभाव दूर करना।** दीठि खा जाना (चढ़ना, पर चढ़ना)—**कुदृष्टि पड़ना, नजर लगना, हूँस में आना, टोंक लगना।** दीठि जलाना—**नजर या कुदृष्टि का प्रभाव दूर करने के लिए राई-नोन का उतारा करके जलाना।**

(५) देखने के लिए खुली हुई आँख।

मुहा. दीठि उठाना—**निगाह ऊपर करके देखना।** दीठ गड़ाना (जमाना)—**एकटक देखना या ताकना।** दीठ चुराना—**लज्जा, भय आदि से सामने न आना।** दीठ जुड़ना (मिलना)—**देखा देखी होना।** दीठ जोड़ना (मिलाना)—**देखा-देखी करना।** दीठि फिसलना—**आँख में चकाचौंध होना।** दीठ भर देखना—**जी भरकर या अच्छी तरह देखना।** दीठ मारना—**(१) आँख से संकेत करना। (२) आँख के संकेत से मना करना।** दीठ लगना—**देखा-देखी के बाद प्रेम होना।** दीठ लड़ना—**देखा देखी होना।** दीठ लड़ाना—**आँख के सामने आँख किये रहना, एकटक देखना।**

(६) देख-भाल, निगरानी। (७) परख, पहचान। (८) कृपादृष्टि, भलाई का ध्यान। (९) आशा। (१०) ध्यान, विचार।

दीठबंद—संज्ञा पुं. [हिं. दीठ + सं. बंध] **ऐसा जादू या इन्द्रजाल कि कुछ का कुछ दिखायी दे।**

दीठबंदी—संज्ञा पुं. [हिं. दीठबंद] **ऐसी माया या जा... कि कुछ का कुछ दिखायी दे।**

दीठवंत—वि. [सं. दृष्टि+वंत] **(१) जिसे दिखायी दे, जिसके आँखें हों। (२) ज्ञानी।**

दीठि—संज्ञा स्त्री. [हिं. दीठ] **(१) नेत्र-ज्योति, दृष्टि। (२) अवलोकन, दृक्‌पात, चितवन।** उ०—आर निकट श्रीनाथ निहारे, परी तिलक पर दीठि—१-२७४। **(३) कुदृष्टि, नजर।** उ.—(क) लालन वारी या मुख ऊपर। माई मेरिहि दीठि न लागै, तातैं मसि-बिंदा दियौ भ्रू पर—१०-९२। (ख) खेलत मैं कोउ दीठि लगाई, लै लै राई लौन उतारति—१०-२००। (ग) कुँवरि कौं कहुँ दीठि लागी, निरखि कै पछि... ताइ—६९६।

दीत—संज्ञा पुं. [सं. आदित्य] **सूर्य, रवि।**

दीदा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **(१) दृष्टि। (२) देखादेखी।**

संज्ञा पुं. [फ़ा. दीदः] **(१) आँख, नेत्र।**

मुहा.—दीदा लगना(जमना)—**जी लगना, मन रमना।** दीदे का पानी ढल (में पानी न रह) जाना—**निर्लज्ज हो जाना।** दीदा निकालना—**(१) आँख फोड़ना। (२) क्रोध से देखना।** दीदा पट्ट होना—**(१) आँख फूटी होना। (२) अक्ल कुंद होना।** दीदा फटना—**निर्लज्ज हो जाना।** दीदा फूटना—**(१) अंधा होना। (२) अक्ल कुंद होना।** दीदा फाड़कर देखना—**विस्मय या आश्चर्य से एकटक निहारना।** दीदा मटकाना—**आँख चमकाना।**

(२) ढिठाई, अनुचित साहस।

दीदाधोई—वि. स्त्री. [हिं. दीदा+धोना] **बेशर्म, निर्लज्ज।**

दीदाफटी—वि. स्त्री. [हिं. दीदा+फटना] **बेशर्म, निर्लज्ज।**

दीदार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **देखा-देखी, दर्शन।**

दीदारु, दीदारू—वि. [हिं. दीदार] **देखने योग्य।**

दीदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दादा] **बड़ी बहन।**

दीधिति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **(१) सूर्य-चन्द्रमा आदि की किरण। (२) उँगली।**

दीन—वि. [सं.] **(१) दरिद्र, निर्धन। (२) दुखी, कातर, हीन दशावाला।** उ.—(क) सूर दीन प्रभु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगट-बिरद सुनि अजहुँ दयाल पतत सिर नाई—१-६। (ख) सूरस्याम सुन्दर जौ सेवै क्यौं होवै गति दीन—१-४६। (ग) तुमहिं समान और नहिं दूजौ, काहि भजौं हौं दीन—१-१११। (३) **उदास, खिन्न।** (४) **नम्र, बिनीत।**

क्रि. स. [हिं. देना] **दी, दिया।** उ.—(क) पानि-ग्रहन रघुबर बर कीन्हयौ जनक-सुता सुख दीन—९-२६। (ख) जिन जो जाँच्यौ सोई दीन अस नँदराइ ढरे—१०-२४। (ग) षंडामर्क जो पूछन लाग्यौ तब यह उत्तर दीन – सारा. ११२। (घ) दीन मुक्ति निज पुर की ताकौं—सारा. २७३।

संज्ञा पुं. [अ.] **धर्म-विश्वास, मत।**

दीनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दरिद्रता, गरीबी।** (२) **कातरता, आर्त्तभाव।** उ.—(क) उनकी मोसौं दीनता कोउ कहि न सुनावौ—१-२३७। (३) **उदासी, खिन्नता।** (४) **अधीनता का भाव, बिनीत भाव।** उ.—कोमल बचन दीनता सब सौं, सदा अनंदित रहियै—२-१८।

दीनताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. दीनता] (१) **निर्धनता** (२) **कातरता।**

दीनत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **निर्धनता।** (२) **आर्त्तभाव।**

दीनदयाल, दीनदयालु—वि. [सं. दीनदयालु] **दीनों पर दया करनेवाला।**

संज्ञा पुं—**ईश्वर का एक नाम।**

दीनदार—वि. [अ. दीन+फ़ा. दार] **धार्मिक।**

दीनदारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **धर्म का आचरण।**

दीनदुनिया, दीनदुनी—संज्ञा स्त्री. [अ. दीन+दुनिया] **लोक-परलोक।**

दीननाथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दीनों के स्वामी।** (२) **ईश्वर का एक नाम।** उ.—दीननाथ अब बारि तुम्हारी—१-११८।

दीननि—वि. [सं. दीन+हिं. नि (प्रत्य.)] **दीनों को, दीनों पर।** उ.—जब जब दीननि कठिन परी। जानत हौं करुनामय जन कौं तब तब सुगम करी—१-१६।

दीनबंधु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दुखियों का सहायक।** उ.—दीन-बंधु हरि, भक्त-कृपानिधि, बेद-पुराननि गाए (हो)—१-७। (२) **ईश्वर का एक नाम।**

दीनहिं—वि. [हिं. दीन+हिं (प्रत्य.)] **दीन-दरिद्र को।** उ.—कह दाता जो द्रवै न दीनहिं, देखि दुखित ततकाल—१-१५६।

क्रि. स. [हिं. देना] **दिया, प्रदान किया।**

दीनानाथ—संज्ञा पुं. [सं. दीन+नाथ] (१) **दीनों का स्वामी या रक्षक, दुखियों का पालक और सहायक।** (२) **ईश्वर के लिए एक संबोधन।** उ.—दीनानाथ दयाल मुरारि—७-२।

दीनार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सोने का गहना।** (२) **सोने की मोहर।** (३) **सोने का एक प्राचीन सिक्का।**

दीनी—क्रि. स. [हिं. देना] **दी, प्रदान की।** उ.—(क) नर-देही दीनी सुमिरन कौं—१-११६। (ख) बकी जु गई घोष मैं छल करि, जसुदा की गति दीनी—१-१२२। (ग) बिभीषण कौं लंक दीनी—१-१७६। (घ) तिल-चाँवरी गोद करि दीनी फरिया दई फारि नव सारी—७०८।

दीनौ—क्रि. स. [हिं. देना] **दिया, प्रदान किया।** उ.—पारथ बिमल बभ्रुबाहन कौं सीस-खिलौना दीनौ—१-२९।

प्र.—मन दीनौ—**मन लगाया, चित्त रमाया।** उ.–भाव-भक्ति कछु हृदय न उपजी, मन बिषया मैं दीनौ—१-६५।

दीन्यौ—क्रि. स. [हिं. देना] (१) **दिया, प्रदान किया।** (२) **बंद किया, लगाया, रोका।** उ.—बड़े पतित पासंगहु नाहीं, अजामिल कौन बिचारौ। भाजें नरक नाम सुनि मेरौ, जम दीन्यौ हठि तारौ—१-१३१।

दीन्हीं—क्रि. स. [हिं. देना] **दी, प्रदान की।** उ.—बिप्र सुदामा कौं निधि दीन्हीं १-३६।

दीन्ही—क्रि. स. [हिं. देना] (१) **दी, प्रदान की।** उ.—असुर-जोनि ता ऊपर दीन्ही, धर्म-उछेद करायौ—१-१०४। (२) **डाली, झोंक दी।** उ.—हरि की माया कोउ न जानै आँखि धूरि सी दीन्ही—६६४।

दीन्हे—क्रि. स. [हिं. देना] (१) **दिये रहता है।** (२) **बंद (रखता है)।** उ.–गर्वै भयौ नरकपति मोसौं, दीन्हे रहत किवार—१-१४१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीन्हैं—क्रि. स. [हिं. देना] **दिये, देने पर**, उ.—बिनु दीन्हैं ही देत सूर-प्रभु ऐसे हैं जदुनाथ-गुसाईं—१-३।

दीन्हौ—क्रि. स. [हिं देना] (१) **दिया, प्रदान किया।** उ.—(क) बारह बरस बसुदेव देवकिहिं कंस महा दुख दीन्हौ—१-१५। (ख) निकसे खंभ-बीच तैं नरहरि, ताहि अभय पद दीन्हौ—१-१०४। (२) **लगाया।** उ.—अंजन दोउ दृग भरि दीन्हौ—१०-१८३।

दीन्यौ—क्रि. स. [हिं. देना] **दिया, प्रदान किया।** उ.—मागध हत्यौ, मुक्त नृप कीन्हें, मृतक बिप्र-सुत दीन्यौ—१-१७।

दीप—संज्ञा पु. [सं.] (१) **दीपक, दीया।** उ—धूप-नैवेद्य साजि कै, मंगल करै विचारि—३०—५०। (२) **एक छंद।**

संज्ञा पु. [सं. द्वीप] **द्वीप, टापू।** उ.—कंसहिं कमल पठाइहै, काली पठवै दीप—५८६।

दीपक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दीया, चिराग। उ.—दीपक पीर न जानई (रे) पावक परत पतंग—१-३२५। (२) **एक अर्थालङ्कार।** (३) **एक राग।** (४) **एक ताल।**

वि.—(१) **प्रकाश करने या फैलानेवाला।** उ.—बासुदेव जादव कुल-दीपक बंदीजन बर भावत—२७२६। (२) **वेग या उमंग लानेवाला।** (२) **बढ़ाने या वृद्धि करनेवाला।**

दीपकजात—संज्ञा पुं. [हिं. दीपक+जात=उत्पन्न] **काजल।** उ.—अलिहता रँग मिस्यौ अधरन लग्यौ दीपकजात—२१३०।

दीपकमाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **एक वर्णवृत्त।** (२) **दीपक अलंकार का एक भेद।** (३) **दीपक-पंक्ति।**

दीपकलिका, दीपकली—संज्ञा स्त्री. [सं. दीपकलिका] **दिये की लौ या टेम।**

दीपकवृक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बड़ी दीवट जिसमें कई दीपक रखे जा सकें।** (२) **झाड़।**

दीपकसुत—संज्ञा पुं. [सं.] **काजल, कज्जल।**

दीपकल—संज्ञा पुं. [सं.] **संध्याकाल जब दीप जलता है।**

दीपकावृत्ति—संज्ञा पुं. [सं.] **दीपक अलंकार का एक भेद।**

दीपकिट्ट—संज्ञा पुं. [सं.] **काजल, कज्जल।**

दीपकूपी—संज्ञा पुं. [सं.] **दीए की बत्ती।**

दीपत—संज्ञा स्त्री. [सं. दीप्ति] (१) **कांति, ज्योति।** उ.—दधि-सुत दीपत तज मुरझानो दिनपति-सुत है भूख हीन—सा. ६६। (२) **छटा, शोभा।** उ.—भू-सुत-सु गेह में काहू दीपत द्वार दई—सा. ३१। (३) **कीर्ति।**

क्रि. अ. [हिं. दीपना] (१) **प्रकाशित होता है, चमकता है।** (२) **शोभित है।** उ.—रामदूत दीप नछत्र में पुरी धनद रुचि रचि तमहारी—सा. ६८।

वि.—**चमकता हुआ, प्रकाश फैलाता हुआ।**

दीपति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. दीपना] **प्रकाशित होती है, चमकती है।** उ.—आज दीपति दिव्य दीपमालिका—८०६।

दीपदान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पूजा का एक अंग जिसमें देवता के सामने दीपक जलाया जाता है।** (२) **कार्तिक में राधादामोदर के लिए दीपक जलाने का कृत्य।** (३) **एक क्रिया जिसमें मरणासन्न के अथवा मृत व्यक्ति के हाथ से आटे के जलते हुए दीप का संकल्प कराया जाता है।** उ.—भस्म अंत तिल-अंजलि दीन्ही देव बिमान चढ़ायौ। दिन दस लौं जल कुंभ साजि सुचि, दीपदान करवायौ—६-५०।

दीपदानी—संज्ञा स्त्री. [सं. दीप+हिं. दानी] **दीपक का समान--घी, बत्ती आदि—रखने की डिबिया।**

दीपध्वज—संज्ञा पुं. [सं.] **काजल, कज्जल।**

दीपन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रकाश के लिए जलाने की क्रिया।** (२) **बढ़ाने की क्रिया।** (३) **वेग या उमंग को उत्तेजित करने की क्रिया।**

वि.—**बढ़ाने या उत्तेजित करनेवाला।**

संज्ञा पुं.—(१) **कुंकुम, केसर।** (२) **मंत्र-सिद्धि का एक संस्कार।**

दीपना—क्रि. अ. [सं. दीपन] **चमकना, जगमगाना।**

क्रि. स.—**चमकाना, प्रकाशित करना।**

दीपनीय—वि. [सं.] (१) **प्रकाशन के योग्य।** (२) **उत्तेजन के योग्य।**

दीपपादप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दीवट।** (२) **झाड़।**

दीपमाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **जलते हुए दीपकों की पंक्ति।** (२) **जली हुई बत्तियों का समूह।**

दीपमालिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दीपकों की पंक्ति या समूह।** (२) **दिवाली।** उ.—आज दीपति दिव्य दीपमालिका—८०६। (३) **दीपमाला**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या आरती के लिए जलायी गयी बत्तियों की पंक्ति। उ.—दीपमालिका रचि-रचि साजत। पुहुपमाल मंडली बिराजत।

दीपमाली—संज्ञा स्त्री. [सं. दीपमालिका] **दिवाली।**

दीपवृंत—संज्ञा. पुं. [सं.] **दीवट, दीपाधार।**

दीपशत्रु—संज्ञा पुं. [सं.] **पतंग जो दीप को बुझा दे।**

दीपशिखा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दीप की लौ या टेम।** (२) **दीपक का धुआँ या काजल।**

दीपसुत—संज्ञा पुं. [सं.] **काजल, कज्जल।**

दीपाग्नि—संज्ञा पुं. [सं.] **दीप की लौ की आँच।**

दीपान्वता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दिवाली।**

दीपावलि, दीपावली—संज्ञा स्त्री. [सं. दीपावलि] **दिवाली।**

दीपिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **छोटा दीप।** उ.—दोउ लख लिये दीपिका मानो किये जात उजियारे—२१६०। (२) **एक रागिनी जो प्रदोषकाल में गायी जाती है।**

दीपित—वि. [सं.] (१) **प्रकाशित, जलता हुआ।** (२) **चमकता या जगमगाता हुआ।** (३) **उत्तेजित।**

दीपै—क्रि. अ. [हिं.दीपना] **चमकता है।**

संज्ञा पुं. सवि. [सं.द्वीप, हिं. दीप+ऐ (प्रत्य.)] **द्वीपों में।** उ.—तद्यपि भवन भाव नहिं व्रज बिनु खोजौ दीपै सात—३३५१।

दीपोत्सव—संज्ञा पं. [सं.दीप+उत्सव] **दिवाली।**

दीप्त—वि. [सं.] (१)**जलता हुआ।** (२) **चमकता हुआ।**

संज्ञा पुं.—(१) **सोना, स्वर्ण।** (२) **सिंह।**

दीप्तक—संज्ञा पुं. [सं.] **सोना, स्वर्ण।**

दीप्तकिरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सूर्य।** (२) **मदार।**

दीप्तवर्ण—संज्ञा पुं. [सं.] **कार्त्तिकेय।**

वि.—**जिसका शरीर कुंदन-सा चमकता हो।**

दीप्तांग—संज्ञा पुं. [सं.दीप्त+अंग] **मोर, मयूर।**

वि.—**जिसका शरीर खूब चमकता हो।**

दीप्तांशु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सूर्य।** (२) **मदार।**

दीप्ता—वि. स्त्री. [सं.] (१) **चमकती हुई, प्रकाशित।** (२) **सूर्य से प्रकाशित (दिशा)।**

दीप्ताक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] **बिड़ाल, बिल्ली।**

वि.—**जिसकी आँखें खूब चमकती हों।**

दीप्ताग्नि—वि. [सं.दीप्त+अग्नि] (१) **जिसकी पाचन-शक्ति तीव्र हो।** (२) **जिसको बहुत भूख लगी हो।**

संज्ञा पुं.—**अगस्त्य मुनि जिन्होंने समुद्र पी डाला था और वातापि राक्षस को पचा डाला था।**

दीप्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **उजाला, प्रकाश।** (२) **चमक, प्रभा, द्युति।** (३) **कांति, शोभा, छवि।** (४) **ज्ञान का प्रकाश।**

दीप्तिमान, दीप्तिमान्—वि. [सं.दीप्तिमत्] (१) **चमकता हुआ, प्रकाशित।** (२) **शोभा या कांति से युक्त।**

संज्ञा पुं.—**सत्यभामा से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।**

दीप्तोपल—संज्ञा पुं. [सं.] **सूर्यकान्त मणि।**

दीप्य—वि. [सं.] (१) **जो जलाया जाने को हो।** (२) **जो जलाया जाने योग्य हो।**

दीप्यमान—वि. [सं.] **चमकता हुआ।**

दीप्र—वि. [सं.] **दीप्तिमान्, प्रकाशयुक्त।**

दीबे—क्रि.स. [हिं.देना] **देने (के लिए)।** उ.—(क) मंत्री काम कुमति दीबे कौं, क्रोध रहत प्रतिहारी—१-१४४। (ख) या छबि की पटतर दीबे कौं सुकवि कहा टकटोहै—१०-१५८।

दीबो, दीबौ—क्रि. स. [हिं.देना] **देना, प्रदान करना।**

संज्ञा पुं.—**देने या प्रदान करने की क्रिया।**

दीमक—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **एक छोटा कीड़ा, बल्मीक।**

दीयट—संज्ञा पुं. [हिं. दीवट] **दीपक का आधार।**

दीयमान—वि. [सं०] (१) **जो देने योग्य हो।** (२) **जो दिया जाने को हो।**

दीया—संज्ञा पुं. [सं० दीपक, प्रा. दीअ] (१) **दीप।**

मुहा.—दीया जलना (जले)—**संध्या होना (होने पर)।** दीया जलाना—**दिवाला निकालना।** दीया ठंढा करना—**दिया बुझाना।** दिया ठंढा होना—**दिया बुझना।** किसी के घर का दीया ठंढा होना—**किसी के वंश में पुत्र न रहने से घर में रौनक न रह जाना।** दीया बढ़ाना—**दीप बुझाना।** दीया-बत्ती करना—**रोशनी का सामान करना।** दीया लेकर ढूंढना—**बहुत छानबीन करना।**

(२) **बत्ती जलाने का पात्र या बरतन।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीयौ—क्रि. स. भूत. [सं. दान, हिं. देना] (१) **दी, प्रदान की।** (२) **डाली, छोड़ी।** उ.—नृप कह्यौ, इंद्रपुरी की न इच्छा हमैं, रिषिनि तब पूरनाहुती दीयौ—४-११।

दीरघ—वि. [सं. दीर्घ] (१) **लंबा, बड़ा।** उ.—इन पै दीरघ धनुष चढ़ै क्यौं, सखि, यह संसय मोर—६-२३। (२) **गुरु या दीर्घ मात्रावाला।** उ.—पाछिले कर पहिल दीरघ बहुरि लघुता बोर—सा.११०।

दीरघता—संज्ञा स्त्री [सं. दीर्घता] **लंबाई, बड़ापन, (लघु का विपरीतार्थक), अधिकता।** उ.—(क) तप अरु लघु-दीरघता सेवा, स्वामि-धर्म सब जगहिं सिखाए—६-१६८। (ख) लघु-दीरघता कछू न जानैं, कहुँ बछरा कहुँ धेनु चराए—१०-३०६।

दीर्घ—वि. [सं.] (१) **लंबा।** (२) **बड़ा।** (३) **दीर्घ या गुरु मात्रावाला।**

संज्ञा पुं—**गुरु या द्विमात्रिक वर्ण।**

दीर्घकंठ—वि. [सं.] **जिसकी गरदन लंबी हो।**

संज्ञा पुं—(१) **बगुला।** (२) **एक दानव।**

दीर्घकंद—संज्ञा पुं.—[सं.] **मूली।**

दीर्घकंधर—वि. [सं.] **लंबी गरदनवाला।**

संज्ञा पुं.—**बगुला पक्षी, बँक।**

दीर्घकर्ण—वि. [सं.] **बड़े कानवाला।**

दीर्घकाय—वि. [सं.] **बड़े डील-डौल का।**

दीर्घकेश—वि. [सं.] **लंबे लंबे बालवाला।**

दीर्घगति—संज्ञा पुं. [सं.] **ऊँट (जो लंबे डग रखता है)।**

दीर्घग्रीव—वि. [सं.] **लबी गरदनवाला।**

संज्ञा पुं.—**नील क्रौंच या सारस पक्षी।**

दीर्घघाटिका—वि. [सं.] **जिसकी गरदन लंबी हो।**

संज्ञा पुं.—**ऊँट।**

दीर्घच्छद—वि. [सं.] **जिसके लंबे-लंबे पत्ते हों।**

संज्ञा पुं.—**ईख, ऊख।**

दीर्घजंघ—वि. [सं.] **लंबी-लंबी टाँगोंवाला।**

संज्ञा पुं.—(१) **बक, बगुला।** (२) **ऊँट।**

दीर्घजिह्व—वि. [सं.] **लंबी जीभवाला।**

संज्ञा. पुं.—(१) **सर्प।** (२) **दानव।**

दीर्घजिह्वा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक राक्षसी जो विरोचन की पुत्री थी और जिसे इंद्र ने मारा था।**

दीर्घजीवी—वि. [सं. दीर्घजीविन्] **बहुत दिन जीने...**

दीर्घतपा—वि. [सं. दीर्घतपस्] **बहुत दिन तप ... वाला।**

दीर्घतमा—संज्ञा पुं. [सं० दीर्घतमस्] **एक ऋषि ... रचे मंत्र ऋग्वेद के पहले मंडल में हैं।**

दीर्घता—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) **लंबाई।** (२) **... की भावना।**

दीर्घदर्शिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दूर तक सोचने की भावना या क्षमता, दूरदर्शिता।**

दीर्घदर्शी—वि. [सं. दीर्घदर्शिन्] (१) **दूर तक ... बात सोचनेवाला, दूरदर्शी।** (२) **विचारवान्।**

दीर्घदृष्टि—वि. [सं.] (१) **जो दूर तक देख ...** (२) **जो दूर तक सोच सके।**

संज्ञा पुं.—**गीध, जो दूर तक देखता है।**

दीर्घनाद—वि. [सं.] **जिससे जोर का शब्द निकले।**

संज्ञा पुं.—**शंख।**

दीर्घनिद्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मृत्यु, मौत।**

दीर्घनिश्वास—संज्ञा पुं. [सं.] **लंबी साँस जो दुख... में ली जाती है।**

दीर्घपर्ण—वि. [सं.] **जिसके पत्ते लम्बे हों।**

दीर्घपाद—वि. [सं.] **लम्बी टाँगोंवाला।**

संज्ञा पुं.—(१) **कंक पक्षी** (२) **सारस**

दीर्घपृष्ठ—संज्ञा पुं. [सं.] **सर्प, साँप।**

दीर्घप्रज्ञ—वि. [सं.] **दूरदर्शी, दीर्घदर्शी।**

दीर्घबाहु—वि. [सं.] **लम्बी भुजाओंवाला।**

दीर्घमारुत—संज्ञा पुं. [सं.] **हाथी।**

दीर्घयज्ञ—वि. [सं.] **बहुत समय तक यज्ञ करनेवाला**

दीर्घरद—वि. [सं.] **लंबे-लंबे दाँतवाला।**

संज्ञा पुं.—**सुअर, शूकर।**

दीर्घरसन—संज्ञा पुं. [सं.] **सर्प, साँप।**

दीर्घरोमा—संज्ञा पुं. [सं.] **भालू, रीछ।**

दीर्घलोचन—वि. [सं.] **बड़ी बड़ी आँखवाला।**

दीर्घवक्त्र—वि. [सं.] **लम्बे मुँहवाला।**

संज्ञा पुं.—**हाथी, गज।**

दीर्घश्रुत—वि. [सं.] (१) **जो दूर तक सुनायी ...**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) जिसका नाम दूर-दूर तक फैला हो।

दीर्घसूत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बहुत दिनों में समाप्त होनेवाला एक यज्ञ। (२) वह जो यह यज्ञ करे।

दीर्घसूत्रता—संज्ञा स्त्री. [सं.] देर से काम करने का भाव।

दीर्घसूत्री—वि. [सं.दीर्घसूत्रिन्] देर से काम करनेवाला।

दीर्घायु—वि. [सं.] बहुत दिन जीनेवाला।

पुं.—(१) कौआ, काक। (२) मार्कंडेय।

दीर्घा —वि. [सं.] बड़े मुँहवाला।

संज्ञा पुं.—(१) हाथी। (२) शिव का एक अनुचर।

दीर्घाहन—संज्ञा पुं. [सं.] ग्रीष्म ऋतु, जब दिन बड़े होते हैं।

दीर्घिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] बावली, छोटा तालाब।

दीर्ण—वि. [सं.] फटा या दरका हुआ।

दीवट—संज्ञा स्त्री. [सं. दीपस्थ, प्रा.दीवट्ठ] दीपकधार।

दीवला—संज्ञा पुं. [हिं. दीवा+ला (प्रत्य.)] दीया, दीप।

दीवा—संज्ञा पुं. [सं. दीपक] दीया, दीप।

दीवान—संज्ञा पुं. [अ.] (१) राज्य-प्रबन्धकर्त्ता, मंत्री, प्रधान। उ.—भक्त ध्रुव कौं अटल पदवी, राम के दीवान—१-२३५। (२) राजसभा। (३) गजल-संग्रह।

दीवानआम—संज्ञा पुं. [अ.] (१) ऐसा दरबार जिसमें राजा से साधारण लोग भी मिल सकें। (२) ऐसे दरबार का स्थान।

दीवानखाना—संज्ञा पुं. [फा.] बड़े आदमियों के घर की बैठक।

दीवानखास—संज्ञा पुं. [अ. दीवान+ फा. खास] (१) ऐसा दरबार जिसमें राजा चुने हुए व्यक्तियों के साथ बैठता है। (२) ऐसे दरबार का स्थान।

दीवाना—वि. [फ़ा.] पागल, सिड़ी।

मुहा.—किसी के पीछे दीवाना होना—उसकी प्राप्ति के लिए पागल या बेचैन होना।

दीवानापना, दीवानापना—संज्ञा पुं. [फ़ा. दीवाना+हिं. पन (प्रत्य.)] पागलपन, सिड़ीपन।

दीवानी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.दीवान] (१) दीवान का पद। (२) धन-व्यवहार-संबंधी न्यायालय।

। वि. स्त्री. [फ़ा.दीवाना] पगली, बावली।

दीवार, दीवाल—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) पत्थर, ईंट आदि से बना ऊँचा परदा या घेरा, भीत। (२) किसी वस्तु का उठा हुआ घेरा।

दीवारगीर, दीवारगीरी—संज्ञा पुं. [फ़ा.] दिया आदि का आधार जो दीवार में लगाया जाता है।

दीवाली—संज्ञा स्त्री. [सं. दीपावली] कार्तिकी अमावास्या को मनाया जानेवाला हिंदुओं का एक उत्सव जिसमें लक्ष्मी का पूजन करके दीपक जलाये जाते हैं।

दीवि—संज्ञा पुं. [सं.] नीलकंठ नामक पक्षी।

दीवी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दीया] दीवट दीपाधार।

दीस—संज्ञा स्त्री. [सं. दिश] दिशा, ओर, तरफ। उ.—गरजत रहत मत गज चहुँ दिसि, छत्र-धुजा चहुँ दीस—९-७५।

क्रि. अ.—[हिं. दिखना], दिखायी पड़ता है।

दीसत—क्रि. स. [हिं. दीखना] दिखायी देते हैं। उ.—(क) जहाँ तहाँ दीसत कपि करत राम-आन—९-९६। (ख) उड़त धूरि, धुँआँ धुर दीसत सूल सकल जलधार—१० उ. २।

दीसति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. दीसना] (१) दिखायी देती है। उ.—(क) वै लखि आये राम रजा। जल कैं निकट आइ ठाढ़े भये दीसति बिमल ध्वजा—९-११४। (ख) उज्ज्वल अरुन असित दीसति हैं दुँहुँ नैननि-कोर—३५९। (२) जान पड़ती है, मालूम होती है। उ.—राजा कह्यौ, सप्त दिन माहिं। सिद्धि होत कछु दीसति नाहिं—१-३४१।

दीसना—क्रि. अ. [सं. दृश्=देखना] दिखायी देना।

दीह—वि. [सं. दीर्घ] लम्बा, बड़ा।

दुंका—संज्ञा पुं. [सं. स्तोक] अन्न का दाना या कण।

दुँगरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक मोटा कपड़ा।

दुंद—संज्ञा पुं. [सं. द्वन्द्व] (१) दो पक्षों में होनेवाला झगड़ा। (२) उपद्रव, उधम। उ.—कहा करौं हरिबहुत खिझाई।""""।भोर होत उरहन लै आवहिं, ब्रज की बधू अनेक। फिरत जहाँ तहँ दुंद मचावत घर न रहत छन एक—३७७। (३) जोड़ा, युग्म।

। संज्ञा पुं. [सं.दुंदुभि] नगाड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुंदर, दुंदरा—संज्ञा. पुं. [सं. द्वंद्व] **उलझन, झंझट, जंजाल ।** उ.—देख्यौ भरत तरुन अति सुन्दर। थूल सरीर रहित सब दुंदर—५-३ ।

दुंदरी—संज्ञा स्त्री. [हिं.दुंद] **हलचल, उत्पात ।** उ.—जुरी ब्रज सुंदरी दसन छबि कुंदरी कामतनु दुंदरी करनहरी—१२६०।

दुंदुभ—संज्ञा पुं. [सं.] **नगाड़ा, धौंसा ।**

दुंदुभि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नगाड़ा, धौंसा ।** उ.—हरि कह्यौ, मम हृदय माहिं तू रहि सदा, सुरनि मिलि देव-दुंदभि बजाई—८-८।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विष (२) वरुण । (३) एक राक्षस जिसे मारकर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंक देनें पर बालि को वहाँ न जाने का शाप मिला था।**

दुंदुभिक—संज्ञा पुं. [सं.] **एक तरह का कीड़ा ।**

दुंदुभी—संज्ञा स्त्री [सं दुंदुभि] **नगाड़ा, धौंसा ।**

दुंदुह—संज्ञा पुं. [सं.डुंडभ] **पानी का साँप, डेंड़हा ।**

दुंबुर—संज्ञा पुं. [सं. उदुंबर] **गूलर की जाति का एक पेड़ ।**

दुःख—संज्ञा पुं [सं.] (१) **कष्ट, क्लेश, तकलीफ । (२) संकट, विपत्ति, आपत्ति (३) मानसिक कष्ट, खेद । (४) पीड़ा, व्यथा । (५) रोग, बीमारी ।**

दुःखकर—वि. [सं.] **कष्ट पहुँचानेवाला ।**

दुःखग्राम—संज्ञा पुं. [सं.] **संसार ।**

दुःखजीवी—वि. [सं.] **कष्ट से जीवन बितानेवाला ।**

दुःखत्रय—संज्ञा पुं. [सं.] **तीन प्रकार के दुख ।**

दुःखद—वि. [सं.] **कष्ट पहुँचानेवाला ।**

दुःखदग्ध—वि. [सं.] **दुख से पीड़ित, बहुत दुखी ।**

दुःखदाता—संज्ञा पुं. [सं.दुःखदातृ] **दुख देनेवाला ।**

दुःखदायक—वि. [सं.] **जिससे दुख मिले ।**

दुःखयायी—वि. [सं.दुःखदायिन्] **दुख देनेवाला ।**

दुःखप्रद—संज्ञा पुं. [सं.] **कष्ट देनेवाला।**

दुःखबहुल—वि. [सं.] **दुख या कष्ट से युक्त ।**

दुःखमय—वि. [सं.] **कष्ट-पूर्ण, क्लेश-युक्त ।**

दुःखलभ्य—वि. [सं.] **जो कष्ट से प्राप्त हो सके ।**

दुःखलोक—संज्ञा पुं. [सं.] **संसार, जगत ।**

दुःखसाध्य—वि. [सं.] **जिस (काम) का करना कठिन या मुश्किल हो ।**

दुःखांत वि. [सं.] (१) **जिसके अंत में कष्ट हो (२) जिसके अंत में कष्ट या दुख का वर्णन हो।** संज्ञा पुं. (१) **कष्ट का अंत । (२) बहुत ...**

दुःखायतन—संज्ञा पुं. [सं.] **संसार, जगत ।**

दुःखार्त्त—वि. [सं.] **कष्ट से व्याकुल ।**

दुःखित—वि. [सं.] **जिसे कष्ट या तकलीफ हो।**

दुःखिनी—वि. [सं.] **जिस (स्त्री) पर दुख पड़ा हो।**

दुःखी—वि. पुं. [सं.] **जो कष्ट में हो ।**

दुःशकुन—संज्ञा पुं. [सं.] **ऐसा लक्षण या दर्शन जिसका फल बुरा समझा जाता हो ।**

दुःशला—संज्ञा स्त्री. [सं.] **धृतराष्ट्र की पुत्री जो ... को ब्याही थी ।**

दुःशासन—वि. [सं.] **जो किसी का दबाव न माने।** संज्ञा पुं.— **धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो ... का प्रिय पात्र और मंत्री था ।**

दुःशील—वि. [सं.] **बुरे स्वभाववाला ।**

दुःशीलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बुरा स्वभाव।**

—वि. [सं.] (१) **जिस (व्यक्ति) का ... करना कठिन हो । (२) जिस (धातु आदि) ... शोधना कठिन हो ।**

दुःश्रव—संज्ञा पुं. [सं.] **काव्य का एक दोष जो ... कर्णकटु वर्ण आने से माना जाता है।**

दुःषम—वि. [सं.] **निंदनीय ।**

दुःषेध—वि. [सं.] **जिसका दूर करना कठिन हो।**

दुःसंकल्प—संज्ञा पुं. [सं.] **खोटा या अनुचित विचार।** वि.— **बुरा या अनुचित विचार रखनेवाला**

दुःसंग—संज्ञा पुं. [सं.] **बुरे लोगों का साथ, कुसंग**

दुःसंधान—संज्ञा पुं. [सं.] **काव्य का एक रस जो ... बातों को सुनकर होता है ।**

दुःसह—वि. [सं] **जो कष्ट से सहा जाय।**

दुःसाधी—संज्ञा पुं [सं. दुःसाधिन] **द्वारपाल।**

दुःसाध्य—वि. [सं] (१) **जो कष्ट से किया जा सके (२) जिसका उपाय या उपचार करना कठिन हो।**

दुःसाहस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **व्यर्थ का या निष्फल साहस जिससे कुछ लाभ न हो । (२) ... साहस, ढिठाई, धृष्टता ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःसाहसिक—वि. [सं.] जिस (कार्य) का करना निष्फल या अनुचित हो।

दुःसाहसी—वि. [सं.] निष्फल या अनुचित साहस के काम करनेवाला।

दुःस्थ—वि. [सं.] (१) जिसकी स्थिति अच्छी न हो, दुर्दशा में पड़ा हुआ। (२) दरिद्र, निर्धन (३) मूर्ख, बुद्धिहीन, मूढ़।

दुःस्थिति—संज्ञा स्त्री. [सं.] बुरी या कष्ट की अवस्था।

दुःस्पर्श—वि. [सं.] (१) जो छूने लायक न हो। (२) जिसका छूना या पाना कठिन हो।

संज्ञा स्त्री.— आकाशगंगा।

दुःस्वप्न—संज्ञा पुं. [सं.] ऐसा स्वप्न जिसका फल बुरा हो।

दुःस्वभाव—संज्ञा पुं. [सं.] बुरा स्वभाव।

वि.—बुरे स्वभाववाला।

दु—वि. [हिं. दो] 'दो' का संक्षिप्त रूप जो समास-रचना के काम आता है।

दुअन—संज्ञा पुं. [हिं. दुवन] (१) दुष्ट मनुष्य। (२) शत्रु। (३) राक्षस, दैत्य।

दुआरा—संज्ञा पुं. [सं. द्वार] द्वार या दरवाजा।

दुअरिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. द्वार] छोटा द्वार या दरवाजा।

दुआ—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) प्रार्थना। (२) आशीर्वाद।

संज्ञा. पुं. [हिं. दो] गले का एक गहना।

दुआदस—संज्ञा पुं. [सं. द्वादश] बारह।

दुआब, दुआबा—संज्ञा पुं. [फ़ा. दुआबा] दो नदियों के बीच का उपजाऊ भू-भाग।

दुआर, दुआरा—संज्ञा पुं. [सं. द्वार] द्वार, दरवाजा। उ.-(क) मानिनि बार बसन उघार। संभु कोप दुआर आयो आद को तनु मार—सा. ८६। (ख) देखि बदन विथकित भईं बैठी हैं सिंह-दुआर—२४४३।

दुआर-बैरी—संज्ञा पुं. [सं. द्वार+हिं. बैरी] द्वार का शत्रु, कपाट या किवाड़। उ.-छूटे दिन दुआर के बैरी लटकत सो न सम्हार-सा. ७३।

दुआरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुआर] छोटा दरवाजा।

दुइ, दुई—वि. [हिं. दो] दो। उ.—दुइ मृनाल मातुल उभै द्वै कदली खंभ बिन पात-सा. उ. ३।

मुहा—दुइ नाव पाँव धरि-दो नावों पर पैर रखकर, दो ऐसे पक्षों का आश्रय लेकर जो साथ-साथ रह ही न सकें। उ.—दुई तरंग दुइ नाव पाँव धरि ते कहि कवन न मूठे।

दुइज—संज्ञा स्त्री. [सं. द्वितीय, पा. दुईज] दूज, द्वितीया।

संज्ञा पुं. [सं. द्विज] दूज का चाँद।

दुऔ—वि. [हिं. दोनों] दोनों।

दुकड़हा—वि. [हिं. दुकड़ा+हा (प्रत्य.) (१) जिसका मूल्य एक दुकड़ा हो। (२) बहुत मामूली या तुच्छ। (३) नीच, कमीना।

दुकड़ा—संज्ञा पुं. [सं. द्विक+ड़ा (प्रत्य.)] (१) दो का जोड़ा। (२) दो दमड़ी, छदाम।

दुकड़ी—वि. स्त्री. [हिं. दुकड़ा] दो-दो (चीजों) का।

संज्ञा स्त्री.—(१) ताश की दुग्गी। (२) दो घोड़ों की बग्घी या गाड़ी।

वि. [हिं. दो+कड़ी] जिसमें दो कड़ियाँ हों।

दुकना—क्रि. अ. [देश.] लुकना, छिपना।

दुकान—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] माल बिकने की जगह, हट्ट।

मुहा.—दुकान उठाना—दूकान बंद करना। दुकान करना—दूकान खोलना। दुकान चलना—कारबार बढ़ना। दुकान बढ़ाना—दूकान बंद करना। दुकान लगाना—(१) दूकान का सामान आकर्षक ढंग से सजाना। (२) बहुत सी चीजें इधर-उधर फैलाना।

दुकानदार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) दूकान का मालिक। (२) वह जो ढोंग या तिकड़म से पैसा बनाता हो।

दुकानदारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) दूकान की बिक्री का काम। (२) तिकड़म से धन पैदा करने का काम।

दुकार—संज्ञा. पुं. [हिं. दो+आकार] दो रेखाएँ। उ.—परयौ जो रेख ललाट और मुख भेंटि दुकार बनायौ —३३७७।

दुकाल—संज्ञा पुं. [सं. दुष्काल] अकाल, दुर्भिक्ष।

दुकुल्ली—संज्ञा स्त्री. [देश.] चमड़ामढ़ा एक बाजा।

दुकूल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूत या तीसी के रेशे से बना कपड़ा। (२) महीन कपड़ा। (३) वस्त्र, कपड़ा।

दुकूल-कोट—संज्ञा पुं. [सं. दुकुल+कोट] वस्त्र का समूह, कपड़े का ढेर। उ.—रिपु कच गहत द्रुपद-तनया जब सरन सरन कहि भाषी। बढ़ै दुकूल-कोट अंबर लौं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा माँझ पति राखी—१-२७।

दुकेला—वि. [हिं. दुक्का+एला (प्रत्य.)] **जिसके साथ कोई दूसरा भी हो।**

यौ०—अकेला-दुकेला—**जिसके साथ कोई न हो या एक ही दो मामूली आदमी हों।**

दुकेले—क्रि. वि. [हिं. दुकेला] **किसी को साथ लिये हुए।**

यौ०—अकेले-दुकेले— **बिना किसी को साथ लिये या एक ही दो आदमियों के साथ।**

दुक्कड़—संज्ञा पुं. [हिं. दो+कूँड़] **एक बाजा।**

दुक्का—वि. [सं. द्विक्] (१) **जो किसी (व्यक्ति) के साथ हो।** (२) **जो दो (वस्तुएँ) साथ हों।**

संज्ञा पुं.—**ताश की दुग्गी।**

दुक्की—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुक्की] **ताश का एक पत्ता जिसमें दो बूटियाँ हों।**

दुखंडा—वि. [हिं. दो+खंड] **जिसमें दो खंड हों।**

दुखंत—संज्ञा पुं [सं. दुष्यंत] **राजा दुष्यंत।**

दुख—संज्ञा पुं. [सं. दुःख] (१) **कष्ट, क्लेश।** उ.—बारह बरस बसुदेव-देवकहिं कंस महा दुख दीन्हौ—१-१५। (२) **संकट, आपत्ति, विपत्ति।** (३) **मानसिक कष्ट।** (४) **पीड़ा, व्यथा।** (५) **रोग।**

दुखड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. दुख+ड़ा (प्रत्य.)] (१) **दुख की कथा या चर्चा।**

मुहा.—दुखड़ा रोना— **दुख का हाल कहना।**

(२) **कष्ट, मुसीबत, विपत्ति।**

मुहा.—(स्त्री पर) दुखड़ा पड़ना— **(स्त्री का) विधवा हो जाना।** दुखड़ा पीटना (भरना)—**बहुत कष्ट भोगना।**

दुखता—वि. [हिं. दुख+ता]—**पीड़ित, दर्द करता हुआ।**

दुखती—वि. स्त्री. [हिं. दुखता] (१) **दर्द करती हुई, पीड़ित।** (२) **उठी हुई (आँख)।**

दुखद—वि. [सं. दुःख+द] **कष्ट देनेवाला।**

दुखदाइ, दुखदाई—वि. [सं. दुःखदायिन्, हिं. दुखदायी] **दुख देनेवाला जिससे कष्ट मिले।** उ.—(क) कह्यौ बृषभ सौं, को दुखदाइ ? तासु नाम मोहिं देहु बताइ—१-२६०। (ख) कोउ कहै सत्रु होइ दुखदाई—१-२६०

दुखदानि, दुखदानी—वि. [सं. दुःख+दान+ई (प्रत्य.)] **दुखदाई, दुखद।** उ.—(क) भ्रम्यौ बहुत लघु ... बिलोकत छन-भंगुर दुख दानी—१-८७। (ख) दरस-मलीन, दीन दुरबल अति, तिनकौं मैं दुख दानी। ऐसे सूरदास जन हरि कौ, सब अधमनि मैं मानी—१-१९६।

दुखदाहक—संज्ञा. पुं. [सं. दुःख+दाहक] **दुख दूर करनेवाले, क्लेश मिटानेवाले।** उ.—सूरदास सठ तातैं हरि भजि, आरत के दुख-दाहक—१-१६।

दुखदुंद—संज्ञा पुं. [सं. दुख+द्वंद्वं] **दुख और आपत्ति।** उ.—छन महँ सकल निसाचर मारे। हरे सकल दुख दुंद हमारे।

दुखना—क्रि. अ. [सं. दुःख] **(किसी अंग का) दर्द करना।**

दुखनि—संज्ञा पुं. सवि. [सं. दुःख+नि (प्रत्य.)] **दुखों से।** उ.—जिहिं जिहिं जोनि भ्रम्यौ संकट-बस, सोइ-सोइ दुखनि भरी—१-७१।

दुखनी—वि. [हिं. दुख+नी] (१) **दुख माननेवाली।** (२) **बहुत दुखनेवाली।**

दुख-पुंज—संज्ञा पुं. [सं. दुःख+पुंज] **कष्ट-समूह, अनेक प्रकार के दुख, दुख की अधिकता, अधिक दुख।** उ.—मैं अज्ञान कछू नहिं समुझ्यौ, परि दुख-पुंज सह्यौ—१-४६।

दुखरा—संज्ञा पुं. हिं. दुखड़ा] **दुख की कथा या चर्चा।**

दुखवना—क्रि. स. [हिं. दुखना] **पीड़ा या कष्ट देना।**

दुख-सागर—संज्ञा पुं. [सं. दुःख+सागर] **दुख का समुद्र, अथाह समुद्र के समान महान दुख, महान क्लेश।**

दुखहाया—वि. [हिं. दुख+हाया (प्रत्य.)] **बहुत दुखी।**

दुखाना—क्रि. सं. [सं. दुःख] (१) **पीड़ा या कष्ट देना।**

मुहा.—जी दुखाना— **मानसिक कष्ट देना।**

(२) **किसी पीड़ित या पके हुए अंग को छू देना।**

दुखारा—वि. [हिं. दुख+आर (प्रत्य.)] **दुखी, पीड़ित।**

दुखारि-दुखारी—वि. [हिं. दुखारी=दुख+आर (प्रत्य.)] **दुखी, व्यथित, खिन्न।** उ.—कुलिसहुँ तैं कठिन छतिया चितै री तेरी अजहुँ द्रवति जो न देखति दुखारि-३६१।

दुखारे, दुखारो—वि. [हिं. दुख+आर (प्रत्य.)] **दुखी, पीड़ित।** उ.—(क) सूरदास जम कंठ गहे तैं, निकसत प्रान दुखारे—१-३३४। (ख) इती दूर स्रम किये राज द्विज भए दुखारे—१० उ. ८।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुखित—वि. [सं. दुःखित] **पीड़ित, क्लेशित ।** उ.—(क) रसना द्विज दलि दुखित होत बहु, तउ रिस कहा करै —१-११७ । (ख) कुरुच्छेत्र मैं पुनि जब आयौ । गाइ वृषभ तहाँ दुखित पायौ—१-२६० । (ग) जननि दुखित करि इनहिं मैं लै चल्यौ भईं ब्याकुल सबै घोष नारी—१५५१ ।

दुखिया—वि. [हिं. दुख+इया (प्रत्य)] **दुखी, पीड़ित ।** उ.—पाऊँ कहाँ खिलावन कौ सुख, मैं दुखिया, दुख कोखि जरी—१०-८० ।

दुखियारा—वि. [हिं. दुखिया] (१) **जो दुख में पड़ा हो, दुखी ।** (२) **जिसे शारीरिक कष्ट हो, रोगी ।**

दुखियारी—वि. स्त्री. [हिं. दुखियारी] (१) **दुःखिनी ।** (२) **रोगिणी ।**

दुखी—वि. [सं. दुःखित, दुःखी] (१) **जो दुख या कष्ट में हो ।** (२) **जो खिन्न या उदास हो ।** (३) **रोगी ।**

दुखीला—वि. [हिं. दुख+ईला (प्रत्य.)] **दुख अनुभव करने या माननेवाला (स्वभाव) ।**

दुखीली—वि. स्त्री. [हिं. दुखिला] **दुख, पीड़ा या कष्ट अनुभव करने की प्रकृति ।**

दुखौहाँ—वि. [हिं. दुख+औहाँ (प्रत्य.] **दुख देनेवाला ।**

दुखौहीं—वि. स्त्री. [हिं. दुखौहाँ] **दुखदायिनी ।**

दुग—वि. [सं. द्विक] **दो ।**

दुगई—संज्ञा स्त्री. [देश.] **ओसारा, बरामदा ।**

दुगदुगी—संज्ञा स्त्री. [अनु. धुकधुकी] (१) **धुकधुकी ।**

मुहा.—दुगदुगी में दम—**मरने के समीप ।**

(२) **गले से छाती तक लटकनेवाला एक गहना ।**

दुगन, दुगना—वि. [सं. द्विगुण, हिं. दुगना] **दूना ।**

दुगाड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. दो+गाड़] **दोहरी बंदूक या गोली ।**

दुगासरा—संज्ञा पुं. [सं. दुर्ग+आश्रय] **दुर्ग के समीप या नीचे बसा हुआ गाँव ।**

दुगुण, दुगुन—वि. [हिं. दुगना] **दूना, द्विगुण ।**

दुग्ग—संज्ञा पुं. [सं. दुर्ग] **किला, दुर्ग, कोट ।**

दुग्ध—वि. [सं.] (१) **दुहा हुआ ।** (२) **भरा हुआ ।**

संज्ञा पुं.—**दूध ।**

दुग्धकूपिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक पकवान ।**

दुग्धतालीय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूध का फेन ।** (२) **दूध की मलाई ।**

दुग्धफेन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूध का फेन ।** (२) **एक पौधा ।**

दुग्धबीजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **ज्वार, जुन्हरी ।**

दुग्धसागर, दुग्धसिंधु—संज्ञा पुं. [सं] **पुराणों के अनुसार सात समुद्रों में से एक, क्षीरसमुद्र, क्षीरसागर ।** उ—स्वास उदर उससित यों मानौ दुग्ध-सिंधु छवि पावै—१०-६५ ।

दुग्धाब्धि—संज्ञा पुं. [सं.] **क्षीरसागर ।**

दुग्धाब्धितनया—संज्ञा स्त्री. [सं.] **लक्ष्मी ।**

दुग्धी—वि. [सं. दुग्धिन्] **जिसमें दूध हो ।**

दुघड़िया—वि. [हिं. दो+घड़ी] **दो घड़ी का ।**

दुघड़िया मुहूर्त्त—संज्ञा पुं. [हिं. दो+घड़ी+सं. मुहुर्त्त] **दो-दो घड़ियों का निकाला हुआ महूर्त ।**

दुघरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दो+घड़ी] **दुघड़िया मुहूर्त ।**

दुचंद—वि. [फ़ा. दोचंद] **दूना, दुगना ।**

दुचल्ला—संज्ञा पुं. [हिं. दो+चाल] **छत जो दोनों ओर को ढालू हो ।**

दुचित—वि. [हिं. दो+चित्त] (१) **जो दुबिधा में हो, अस्थिर चित्त ।** (२ **चिंतित, चिंता-ग्रसित ।**

दुचितई, दुचिताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुचित] (१) **दुबिधा, चित्त की अस्थिरता ।** उ—साँची कहहु देख स्रवनन सुख छाँड़हु छिआ कुटिल दुचिताई—३११८ । (२) **खटका, आशंका, चिंता ।**

दुचित्ता—वि. [हिं. दो+चित्त] (१) **जो दुबिधा में हो, अस्थिर चित्त ।** (२) **संदेह में पड़ा हुआ ।** (३) **चिंतित, जिसके मन में खटका हो ।**

दुछ्रण—संज्ञा पुं. [सं. द्वेषण = शत्रु] **सिंह ।**

दुज—संज्ञा पुं. [सं. द्विज] (१) **ब्राह्मण ।** (२) **चंद्र ।**

दुजड़, दुजड़ी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **तलवार, कटार ।**

दुजन्मा—संज्ञा पुं. [सं. द्विजन्मा] (१) **ब्राह्मण ।** (२) **चंद्र ।**

दुजपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चंद्रमा ।** (२) **गरुण ।** (३) **ब्राह्मण ।** (४) **कपूर ।**

दुजराज—संज्ञा पुं. [सं. द्विजराज] (१) **श्रेष्ठ ब्राह्मण ।** (२) **चन्द्रमा ।** (३) **पक्षिराज गरुड़ ।** (४) **कपूर ।**

दुजाति—संज्ञा स्त्री. [सं. द्विजाति] (१) **ब्राह्मण,**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षत्रिय और वैश्य जातियां जो यज्ञोपवीत संस्कार के बाद नया जन्म धारण करती मानी गयी हैं। (२) ब्राह्मण। (३) पक्षी।

दुजानू—क्रि. वि. [फ़ा. दो+जानूँ] दोनों घुटनों के बल।

दुजीह—संज्ञा पुं. [सं. द्विजिह्व] साँप।

दुजेश—संज्ञा पुं. [सं. द्विजेश] (१) ब्राह्मण। (२) चंद्र।

दुटूक—वि. [हिं. दो+टूक] दो टुकड़ों में तोड़ा हुआ। उ.—किया दुटूक चाप देखत ही रहे चकित सब ठाढ़े।

मुहा.—दु टूक बात— साफ-साफ बात जिसमें घुमाव-फिराव, राजनीति या छल-कपट न हो।

दुत—अव्य. [अनु.] (१) तिरस्कार के साथ हटाने के लिए बोला जानेवाला शब्द। (२) घृणा-सूचक शब्द। (३) बच्चों के लिए स्नेह-सूचक शब्द।

दुतकार—संज्ञा स्त्री. [अनु०दुत+कार] धिक्कार, फटकार।

दुतकारना—क्रि. स. [हिं. दुतकार] (१) 'दुत' कहकर किसी को तिरस्कार के साथ हटाना। (२) धिक्कारना, फटकारना।

दुतर्फा—वि. [फ़ा. दो+हिं. तरफ़] दोनों ओर का।

दुतारा—संज्ञा पुं. [हिं. दो+तार] दो तार का बाजा।

दुति—संज्ञा स्त्री. [सं. द्युति] (१) चमक। (२) शोभा।

दुतिमान—वि. [सं. द्युतिमान] चमक या प्रकाश-वाला।

दुतिय—वि. [सं. द्वितीय] दूसरा।

दुतिया—संज्ञा स्त्री. [सं. द्वितीय] प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि, दूज, द्वितीया। उ. (क) वै देखौ रघुपति हैं आवत। दूरहिं तैं दुतिया के ससि ज्यौं, व्योम बिमान महा छवि छावत—६-१६७। (ख) दुतिया के ससि लौं बाढ़ै सिसु देखै जननि जसोइ—१०-५६।

दुतिवंत—वि. [सं. द्युति+हिं. वंत] (१) चमकीला, कांतिवान, आभायुक्त, प्रकाशवान्। (२) सुंदर। शोभावाला।

दुती, दुतीय—वि. [सं. द्वितीय] दूसरा। उ.—दुती लगन में है सिव-भूषन सो तन को सुखकारी—सा. ८१।

दुतीया—संज्ञा स्त्री. [सं. द्वितीया] दूज, द्वितीया।

दुतीरास, दुतीरासि—संज्ञा स्त्री. [सं. द्वितीय+राशि] दूसरी राशि, वृष राशि।

दुथन—संज्ञा पुं. [देश.] पत्नी, विवाहिता स्त्री।

दुदल—वि. [सं. द्विदल] फूटने या टूटने पर जिसके दो बराबर खंड हो जायँ।

संज्ञा पुं.—(१) दाल। (२) एक पौधा।

दुदलाना—क्रि. स. [अनु.] दुतकारना, फटकारना।

दुदहँडी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दूध+हंडी] दूध की मटकी।

दुदामी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दो+दाम] एक सूती कपड़ा।

दुदिला—वि. [हिं. दो+फ़ा. दिल] (१) दुबिधा में पड़ा हुआ, दुचिता। (२) चिंतित, घबराया हुआ।

दुदुकारना— क्रि. स. [अनु.] दुतकारना, फटकारना।

दुद्धी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुबिधा](१) दुबिधा। (२) चिंता।

दुधपिठवा—संज्ञा पुं. [हिं. दूध+पीठा] एक पकवान।

दुधमुख—वि. [हिं. दूध+मुख] (१) दूधपीता (बालक या शिशु)। (२) अनजान-अबोध।

दुधमुहाँ—वि. [हिं. दूध+मुँह] (१) दूधपीता (बालक या शिशु) (२) अबोध, अनजान।

दुधहंडी, दुधाँडी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दूध+हाँडी] दूध रखने की मटकी।

दुधार—वि. [हिं. दूध+आर (प्रत्य.)] (१) दूध देने वाली। (२) जिसमें दूध हो।

दुधार, दुधारा—वि. [हिं. दो+धार] (तलवार, छुरी आदि) जिसमें दोनों ओर धार हो।

संज्ञा पुं.—चौड़ा, तेज खाँडा या तलवार।

दुधारी—वि. स्त्री. [हिं. दूध+आर] दूध देनेवाली।

वि. स्त्री. [हिं. दो+धार] दोनों ओर धारवाली।

संज्ञा स्त्री.—कटारी जिसम दोनों ओर धार हो।

दुधारू—वि. [हिं. दूध+आर] दूध देनेवाली।

दुधिया—वि. [हिं. दूध+इया] (१) जिसमें दूध पड़ा हो। (२) जो दूध से बना हो। (३) दूध सा सफेद।

संज्ञा पुं.—दूध से बनी एक मिठाई।

दुधैली—वि. [हिं. दूध+ऐल] बहुत दूध देनेवाली।

दुनया—संज्ञा पुं. [हिं. दो+सं. नदी, प्रा. णई] वह स्थान जहाँ दो नदियों का संगम हो।

दुनरना,दुनवना—क्रि. अ. [हिं. दो+नवना] झुककर दोहरा हो जाना।

क्रि. स.—लचाकर या झुकाकर दोहरा कर देना।

दुनाली—वि. स्त्री. [हिं. दो+नाल] दो नलोंवाली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनियाँ—संज्ञा स्त्री. [अ. दुनिया] (१) **संसार, इहलोक।**

मुहा.—दुनियाँ के परदे पर—**सारे संसार में।** दुनियाँ की हवा लगना—(१) **सांसारिक अनुभव होना।** (२) **छल-कपट या चालाकी सीख जाना।** दुनियाँ भर का—(१) **बहुत अधिक।** (२) **बहुतों का।** दुनियाँ से उठ जाना (चल बसना)—**मर जाना।** (२) **संसार के लोग, जनता।** (३) **संसार का जाल या बंधन।**

दुनियाँई—वि. [अ. दुनिया+हिं. ई (प्रत्य.)]**सांसारिक।** संज्ञा स्त्री.—**संसार, जगत, दुनियाँ।**

दुनियाँदार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **संसारी, गृहस्थ।** वि.—(१) **व्यवहार-कुशल।** (२) **चालाकी से काम निकालनेवाला।**

दुनियाँदारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **दुनियाँ का कार-बार या व्यवहार।** (२) **दुनियाँ में काम निकालने की रीति-नीति।** (३) **दिखाऊ या बनावटी व्यवहार।**

मुहा.—दुनियादारी की बात—**मन का भाव छिपा कर की जानेवाली लल्लो-चप्पो की बात।**

दुनियाँसाज —वि. [फ़ा.] (१) **मतलबी।** (२) **चापलूस।**

दुनियाँसाजी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा] (१) **मतलब निकालने की रीति-नीति।** (२) **चापलूसी, चाटुकारी।**

दुनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुनियाँ] **संसार, जगत।**

दुपट्टा, दुपट्टा—संज्ञा पुं. [हिं. दो+पाट=दुपट्टा] (१) **चादर, चद्दर।**

मुहा.—दुपट्टा तान कर सोना—**चितारहित होकर सोना।** दुपट्टा बदलना—**सखी या सहेली बनाना।** (२) **कंधे या गले में डालने का लंबा कपड़ा।**

दुपटी, दुपट्टी—संज्ञा स्त्री. [हिं दुपट्टा] **चादर, चद्दर।**

दुपद—संज्ञा पुं. [हिं दो+सं. पद] **दो पैरवाला, मनुष्य।** उ.—राजा, इक पंडित पौरि तुम्हारी। अपद-दुपद-पसु-भाषा बूझत, अविगत अल्प अहारी—८-१४।

दुपर्दी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दो+फ़ा. पर्दा] **बगलबंदी या मिर्जई जिसमें दोनों ओर पर्दे हों।**

दुपहर—संज्ञा स्त्री. [हिं. दोपहर=दो+पहर] **दोपहर, मध्याह्नकाल।** उ.—दुपहर दिवस जानि घर सूनौ, ढूँढ़ि-ढँढ़ोरि आपही खायौ—१०-३३१।

दुपहरिया, दुपहरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दोपहर] (१) **मध्याह्नकाल, दोपहर का समय।** (२) **एक छोटा फूलदार पौधा।**

दुपी—संज्ञा पुं. [सं. द्विप] **हाथी, गज।**

दुफ़सली—वि. स्त्री. [हिं. दो+फ़सल] **अनिश्चित।**

दुबकना—वि. अ. [हिं. दबकना] **छिपना, लुकना।**

दुबज्यौरा—संज्ञा पुं.[हिं. दूध+जेवरा] **गले का एक गहना।**

दुबधा—संज्ञा स्त्री. [सं. द्विविधा] (१) **अनिश्चय, चित्त की अस्थिरता।** (२) **संशय, संदेह** (३) **असमंजस, पसोपेश (खटका, चिंता)।**

दुबरा—वि. [हिं. दुबला] **दुबला-पतला।**

दुबराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुबरा+ई] (१) **दुर्बलता, दुबलापन।** (२) **कमजोरी, शक्तिहीनता।**

दुबराना—क्रि. अ. [हिं. दुबलाना] **दुबला होना।**

दुबला—विं. [सं. दुर्बल] (१) **हल्के और पतले शरीर का।** (२) **कमजोर, शक्तिहीन।**

दुबलापन—संज्ञा पुं. [हिं. दुबला+पन] **क्षीणता, कृशता।**

दुबाइन—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुबे] **दुबे की स्त्री।**

दुबारा—क्रि. वि. [हिं. दो+बार] **दूसरी बार।**

दुबाला—वि. [फ़ा.] **दूना, दुगना।**

दुबाहिया—संज्ञा पुं. [सं. द्विवाह] **दोनों हाथ से तलवार चलानेवाला।**

दुबिद—संज्ञा पुं.[सं. द्विविद]**राम की सेना का एक बंदर।**

दुबिध, दुबिधा—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुबधा] (१) **अनिश्चय चित्त की अस्थिरता।** (२) **संशय, संदेह।** (३) **असमंजस, आगापीछा।** उ.—(क) इक लोहा पूजा मैं राखत इक घर बधिक परौ। सो दुबिधा पारस नहिं जानत, कंचन करत खरौ—१-२२०। (ख) को जानै दुबिधा-सँकोच में तुम डर निकट न आवैं (४) **खटका, चिंता।**

दुबीचा—संज्ञा पुं. [हिं. दो+बीच] (१) **दुविधा, अनिश्चय।** (२) **संशय, संदेह।** (३) **असमंजस, आगा-पीछा।** (४) **खटका, चिंता।**

दुभाखी, दुभाषिया, दुभाषी—संज्ञा पुं. [सं. द्विभाषित्, हिं. दुभाषिया] **दो भिन्न भाषाएँ बोलनेवालों का**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यस्थ वह व्यक्ति जो एक को दूसरे का तात्पर्य समझाने की योग्यता रखता हो।

दुम—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **पशुओं की पूँछ, पुच्छ।**

मुहा.—दुम के पीछे फिरना। **साथ लगे रहना।** दुम बचाकर भागना—**डरकर भाग जाना।** दुम दबा जाना—(१) **डर से भाग जाना।** (२) **डर से काम छोड़ बैठना।** दुम में घुसना—**दूर हो जाना, छट जाना।** दुम में घुसा रहना—**खुशामद या लालच से साथ लगे रहना।** दुम हिलाना—**प्रसन्नता दिखाना।**

(२) **पूँछ की तरह पीछे लगी, बँधी या टँकी चीज।** (३) **पीछे-पीछे या साथ लगा रहनेवाला आदमी।** (४) **काम का शेषांश।**

दुमची—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **तसमा जो दुम के नीचे दबा रहता है।** (२) **पुट्ठों के बीच की हड्डी।**

दुमदार—वि. [फ़ा.] (१) **जिसके पूँछ हो।** (२) **जिसके पीछे दुम—जैसी कोई चीज बँधी या टँकी हो।**

दुमन—वि. [सं. दुर्मनस्, दुर्मना] **अनमना, खिन्न।**

दुमात—वि. [सं. दुर्मातृ] (१) **बुरी मां।** (२) **सौतेली माँ।**

दुमाला—संज्ञा पुं. [हिं. दो+माला] **पाश, फंदा।**

दुमुहाँ—वि. [हिं. दो+मुँह] **दो मुँह वाला।**

दुरंग, दुरंगा—वि. [हिं. दो+रंग] (१) **जिसमें दो रंग हों।** (२) **दो तरह का।** (३) **दोनों पक्षों से मेल-मुलाकात बनाये रखनेवाला।**

दुरंगी—वि. [हिं. दुरंगा] (१) **दो रंगवाली।** (२) **दो तरह की।** (३) **दोनों पक्षों से मिली हुई।**

संज्ञा स्त्री.—**कुछ बातें पक्ष की, कुछ विपक्ष की अपनाने की वृत्ति, दुबधा।**

दुरंत—वि. [सं.] (१) **जिसका अंत या पार पाना कठिन हो।** (२) **जिसे करना या पाना कठिन हो, दुर्गम, दुस्तर।** उ.—वह जु हुती प्रतिमा समीप की सुख-संपति दुरंत जई री—२७८६। (३) **घोर, प्रचंड।** (४) **जिसका अंत या फल बुरा हो।** (५) **दुष्ट, नीच।**

दुरंतक—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव, महादेव।**

दुरंधा—वि. [सं. द्विरंध्र] (१) **जिसमें दो छेद हों।** (२) **जो आरपार छिदा हुआ हो।**

दुर—अव्य. [हिं. दूर] **एक शब्द जिसका प्रयोग कि[सी] को अपमान के साथ हटाने के लिए किया जाता है।**

मुहा.—दुर-दुर करना—**तिरस्कार के साथ हटा[ना]।** दुर-दुर फिट-फिट—**तिरस्कार और फटकार।**

संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **मोती।** (२) **मोती लटकन जो नाक में स्त्रियाँ पहनती हैं।** (३) **छोटी बाली जो कान में पहनी जाती है।** उ.—(क) कान्ह कुँवर कौ कनछेदन है, हाथ सोहारी [भे]ली गुर की।........। कंचन के द्वै दुर मंगाइ लि[ए] कहौं कहा छेदनि आतुर की—१०-१८०। ([ख]) दुर दमंकत सुभग—स्रवननि १०-१८४।

दुरइयै—क्रि. अ. [हिं. दूर] **छिपाइए, गुप्त र[खिए,] प्रकट न कीजिए।** उ.—तुम तौ तीनि लोक के [ठाकुर] तुम तैं कहा दुरइयै—१-२३६।

दुरगम—वि. [सं.] **जहाँ जाना या पहुँचना कठिन है।** उ.—जीव जल-थल जिते, बेष धर-धर तिते अटत दुर[गम] अगम अचल भारे—१-१२०।

दुरजन—संज्ञा पुं. [सं. दुर्जन] **दुष्ट, खल, नीच।** उ.—काकी ध्वजा बैठि कपि किलकिहि, किहिं भय दुरज[न] डरिहैं—२-२६।

दुरजोधन—संज्ञा पुं. [सं. दुर्योधन] **धृतराष्ट्र का बड़ा पु[त्र] दुर्योधन जिसे युधिष्ठिर 'सुयोधन' कहा करते थे।**

दुरत—क्रि. अ. [हिं. दूर, दुरना] **छिपता है, छिपाने है।**

उ.—(क) सूरदास प्रभु दुरत दुराए डुँगरनि [की ओट] सुमेर—४५८। (ख) दुख अस हाँसी सुनौ सखी [री] कान्ह अचानक आए। सूर स्याम कौ मिलन सखी [री] कैसे दुरत दुराए—७६४।

दुरति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. दूर, दुरना] (१) **छिपाती है, दिखायी नहीं देती।** (२) **ओट में हो जाती है,** [आँखों] **के आगे से हट जाती है।** उ.—दूध-दंत-दुति कहि [न] जाति कछु अद्भुत उपमा पाई। किलकल-हँसत दु[रति] प्रगटति मनु, घन मैं बिज्जु, छटाई—१०-१०८।

दुरतिक्रम—वि. [सं.] (१) **जिसका उल्लंघन या प्रतिक[ार] न हो सके।** (२) **ऐसा प्रबल कि जिसके बाहर [या] विरुद्ध कोई न हो सके।** (३) **जिसका पार पा[ना] बहुत कठिन हो।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुरत्यय—वि. [सं.] (१) **जिसका पार पाना कठिन हो। (२) जिसको लाँघा न जा सके, दुस्तर।**

दुरद—संज्ञा पुं. [सं. द्विरद] **हाथी, कुंजर।** उ. (क) दुरद मूल के आदि राधिका बैठी करत सिंगार—सा. ३५। (ख) दुरद कौ दंत उपटाइ तुम लेत हे वहै बल आजु काहैं न संभारौ—३०६६।

दुरदाम—वि. [सं. दुर्दम] **कठिन, कष्ट साध्य।** उ.—हरि राधा-राधा रटत जपत मंत्र दुरदाम। बिरह बिराग महाजोगी ज्यों बीतत हैं सब जाम।

दुरदाल- संज्ञा पुं. [सं. द्विरद] **हाथी, कुंजर।**

दुरदुराना—क्रि. स. [हिं. दुर+दुर] **बड़े अपमान या तिरस्कार के साथ हटाना या भगाना।**

दुरदृष्ट—संज्ञा पुं.[सं.] (१) **अभागा।** (२) **अभाग्य।**

दुरधिगम—वि. [सं.] (१) **जिसकी प्राप्ति संभव न हो। (२) जो समझ में न आ सके, दुर्बोध।**

दुरध्व—संज्ञा पुं. [सं.] **बुरा मार्ग, कुपथ।**

दुरना—क्रि. अ. [हिं. दूर] (१) **आड़ या ओट में हो जाना।** (२) **छिपना, दिखायी न पड़ना।**

दुरप—संज्ञा पुं. [सं. दर्प] **गर्व, अभिमान।** उ.—सूर प्रत्यच्छ निहारत मघन सब दुख दुरप भुलानौ—सा.१००।

दुरपदी—संज्ञा स्त्री. [सं. द्रौपदी] **पांडवों की रानी द्रौपदी।**

दुरबल—वि. [सं. दुर्बल] (१) **अशक्त, बलहीन।** (२) **कृश, दुबला-पतला।** उ.—पट कुचैल, दुरबल द्विज देखत, ताके तंदुल खाए (हो)—१-७।

दुरवास—संज्ञा पुं. [सं. दुर्वास] **बुरी गंध, दुर्गंध।**

दुरवासा—संज्ञा पुं. [सं. दुर्वासा] **एक क्रोधी मुनि।**

दुरबुद्धि—संज्ञा स्त्री. [सं. दुः+बुद्धि] **दुष्ट मति, मूर्खता।** उ.—अब मोहिं कृपा कीजिए सोइ। फिरि ऐसी दुरबुद्धि न होई—४-५।

दुरभाव—संज्ञा पुं. [सं. दुर्भाव] **बुरा भाव या विचार।**

दुरभिग्रह—वि. [सं.] **जो मुश्किल से पकड़ा जा सके।**

दुरभिसंधि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बुरे अभिप्राय से किया गया षड्यंत्र या रचा गया कुचक्र।**

दुरभेव—संज्ञा पुं. [सं. दुर्भाव] (१) **बुरा भाव।** (२) **मनमोटाव, मनोमालिन्य।**

दुरमति—वि. [सं. दुर्मति] (१) **दुर्बुद्धि, कम समझ।** उ.—परम गंग कौं छाँड़ि पियासौ दुरमति कूप खनावै—१-१६८। (२) **खल, दुष्ट।** उ.—भीषम, करन, द्रोन देखत, दुस्सासन बाहँ गही। पूरे चीर, अंत नहिं पायौ, दुरमति हारि लही—१-१५८।

दुरमुट, दुरमुस—संज्ञा पुं. [सं. दुर (उप०)+मुस=कूटना] **गच या फर्श कूटने का लोहे या पत्थर-जड़ा डंडा।**

दुरलभ—वि. [सं. दुर्लभ] **जो कठिनता से प्राप्त हो, दुर्लभ।** उ.—अब सूरज दिन दरसन दुरलभ कलित कमल कर कंठ गहौ (हो)—६-३३।

दुरवस्थ –वि. [सं.] **जो अच्छी दशा में न हो।**

दुरवस्था—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बुरी या हीन दशा।**

दुरवाय—वि. [सं.] **जो आसानी से न मिल सके।**

दुरस—संज्ञा पुं. [हिं. दो+औरस] **सगा भाई।**

दुराइ—क्रि. स. [हिं. दुराना] **छिपाकर।** उ.—लै राखे ब्रज सखा नंदगृह बालक भेष दुराइ—२५८०।

दुराइयाँ—क्रि. वि. [हिं. दुराना] **छिपाने से, प्रकट न करने से, गुप्त रखने से।** उ.—(तुम) केरि बालक जुवा खेल्यौ, केरि दुरद दुराइयाँ—५७७।

दुराई—क्रि. स.स्त्री.पुं. [हिं. दुराना] (१) **दूर किया, हटाया, अदृश्य कर लिया।** उ.—(क) रुद्र को वीर्य खसि कै परयौ धरनि पर, मोहिनी रूप हरि लियो दुराई—८-१०। (२) **छिपाया।**

प्र.—नाहिंन परति दुराई—**छिपायी नहीं जाती।** उ.—जान देहु गोपाल बुलाई। उर की प्रीति प्रान कैं लालच नाहिंन परति दुराई—८०१। (ख) लै भैया केवट, उतराई। महाराज रघुपति इत ठाढ़ेत कत नाव दुराई—६-४०।

दुराईए—क्रि. स. [हिं. दुराना] **छिपाइए, गुप्त रखिए।** उ.—तुम तौ तीन लोक के ठाकुर तुम तैं कहा दुराइए।

दुराउ—संज्ञा पुं. [हिं. दुराव] **छिपाव, भेद-भाव।** उ.—गोपी इहै करत चबाउ। देखौ धौं चतुराई वाकी हम सौं कियो दुराउ—११८३।

दुराए—क्रि. अ. हिं. दूर, दुराना] **छिपाने से, अलक्षित रखने से, छिपाकर, आड़ में धरके।** उ.—(क) सूरदास प्रभु दुरत दुराए कहुँ डुँगरनि ओट सुमेरु—४५८। (२) **गुप्त रखने या प्रकट न करने से।** उ.—सूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्याम कौ मिलन सखी अब, कैसे दुरत दुराए—७६४।
प्र.—छिपाये रखता है, आड़ में किये रहता है।
उ.—मानौ मनिधर मनि ज्यौं छाँड़्यौ फन तर रहत दुराए—६७५।

दुरागमन, दुरागौन—संज्ञा पुं. [सं. द्विरागमन] **वधू का दूसरी बार (गौना करके) ससुराल जाना।**
मुहा.—दुरागौन देना—**गौना करना।** दुरागौन लाना—**गौना लाना।**

दुराग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अनुचित हठ या जिद।** (२) **गलत बात पर भी अड़े रहने का भाव।**

दुराग्रही—वि. [सं.] (१) **अनुचित हठ या जिद रखनेवाला।** (२) **गलत बात पर भी अड़नेवाला।**

दुराचरण—संज्ञा पुं. [सं.] **बुरा चालचलन।**

दुराचार—संज्ञा पुं. [सं.] **बुरा चालचलन।**

दुराचारी—संज्ञा पुं. [हि. दुराचार] **बुरे चालचलन का।**

दुराज—संज्ञा पुं. [हिं. दुर्+राज्य] **बुरा शासन।**
संज्ञा पुं. [हिं. दो+राज्य] (१) **एक ही राज्य में दो का शासन जिससे प्रजा दुखी रहे।** (२) **वह राज्य जहाँ दो शासक हों।**

दुराजी—वि. [सं. द्विराज्य] **दो शासकों से शासित।**
संज्ञा पुं.—**दुराज, बुरा शासन।**

दुराजैं—संज्ञा पुं. सवि. [सं. दुर्+राज्य+एँ (प्रत्य.)] (१) **बुरे राज्य को, बुरे शासन को।** उ.—मारि कंस-केसी मथुरा मैं मेट्यौ सबै दुराजैं—१-३६। (२) **दो राजाओं के शासन में।** उ.-(क) कठुला कंठ। चिबुक तरैं मुख-दसन बिराजैं—खंजन बिच सुक आनि कै मनु परयौ दुराजैं १०-१३४। (ख) जोग-बिरह के बीच परम दुख परियत हैं यह दुसह दुराजैं—३२७३।

दुरात—क्रि. अ. [हिं. दुराना] **दूर होते हैं, भागते हैं।** उ.—जदपि सूर प्रताप स्याम को दानव दूरि दुरात—३३५१।

दुरात्मा—वि. [सं. दुरात्मन्] **दुष्ट व्यक्ति।**

दुरादुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुरना=छिपना] **दुराव-छिपाव।**
मुहा.—दुरादुरी करके—**छिपे-छिपे, गुपचुप।**

दुराधन—संज्ञा पुं. [सं.] **धृतराष्ट्र के एक पुत्र।**

दुराधर—संज्ञा पुं. [सं.] **धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।**

दुराधर्ष—वि. [सं.] **जिसको वश में करना कठिन हो।**

दुराधर्षता—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रबलता, प्रचण्डता।**

दुराधार—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव जी, महादेव।**

दुराना—क्रि.अ. [हिं. दूर] (१) **दूर होना, हटना, भा[गना]** (२) **छिपना, आड़ में होना।**
क्रि. स.—(१) **दूर करना, हटाना, भगाना।** [(२)] **छोड़ना, त्यागना।** (३) **छिपाना, गुप्त रखना।**

दुरानौ—क्रि. अ. [हिं. दुरना] **दूर हो गया।** उ.—प्रतच्छ निहारत भूषन सब दुख-दुरप दुरानौ—सा. [illegible]

दुराय—वि. [सं.] **जिसे पाना कठिन हो, दुष्प्राप्य।**

दुरायो, दुरायौ—क्रि. स. [हिं. दूर] **गुप्त रखा, [प्रकट न] किया।** उ.—कासौं कहौं सखी कोउ नाहिंन, चाहि[त] दुरायौ—१०-४। (ख) मुख दधि पोंछि, बुधि [illegible] कीन्ही, दोना पीठि दुरायौ—१०-३३४।
क्रि.अ.—**आड़ में कर दिया, सामने न रहने दि[या], अलक्षित किया।** उ.—(क) मनौ कुबिजा के [illegible] माँह दुरायौ—३४४२। (ख) सूरदास ब्रजवासिन को [illegible] हरि हिय माँझ दुरायौ—३४६४। (ग) इतने माँझ [illegible] लै भाज्यौ निधि मैं जाय दुरायौ—सारा. ६६२।

दुराराध्य—वि. [सं.] **जिसकी आराधना कठिन हो।**
संज्ञा पुं.—**विष्णु।**

दुरारोह—वि. [सं.] **जिस पर चढ़ना कठिन हो।**
संज्ञा पुं.—**ताड़ का पेड़**

दुरालंभ, दुरालभ—वि. [सं. दुरालभ] **जिसका मिलना [या] प्राप्त होना कठिन हो, दुष्प्राप्य।**

दुरालाप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बुरा या कटु वचन।** [(२)] **गाली, अपशब्द।**

दुरालापी—वि. [हिं. दुरालाप] (१) **कटु या बुरी [बात] कहनेवाला।** (२) **गाली बकनेवाला।**

दुराव—संज्ञा पुं. [हिं. दुराना+आव (प्रत्य.)] (१) **छि[पाव], भेद-भाव।** उ.—(क) औरनि सौं दुराव जो कर[ति] हम कहती भली सयानी—१२६२। (ख) मेरी [illegible] भलै करि जानति मैं तो सौं करिहौं दुराव ही—१२[illegible] (ग) कछू दुराव नहीं हम राख्यौ निकट तुम्हारे [illegible]—११६२। (२) **छल-कपट।**

दुरावत—क्रि. अ. [हिं. दूर, दुराना] **छिपाते हैं, भ[गाते हैं]**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं, गुप्त रखते हो, प्रकट नहीं करते। उ.—(क) अखिल ब्रह्मंड-खंड की महिमा, सिसुता माहिं दुरावत—१०-१०२। (ख) स्याम कहा चाहत से डोलत ? पूँछे तैं तुम बदन दुरावत, सूधे बोल न बोलत—१०-२७६। (ग) ब्रजहिं कृष्ण-अवतार है, मैं जानी प्रभु आज। बहुत किए फ़न-घात मैं, बदन दुरावत लाज—५८६। (घ) सगुन सुमेर प्रगट देखियत तुम तृन की ओट दुरावत—३१३५।

दुरावति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. दुराना] **छिपाती है, ओट में करती है।** उ.—(क) सूरदास-प्रभु होहु पराक्रत, अस कहि भुज के चिन्ह दुरावति—१०-७। (ख) कबहुँ हरि कौं चितै चूमति, कबहुँ गावति गारि। कबहुँ लै पाछे दुरावति, ह्याँ नहीं बनवारि—१०-११८।

दुरावहु—क्रि. स. [हिं० दुराना] **दूर करो, हटाओ, अदृश्य करो।** उ.—महाराज, यह रूप दुरावहु। रूप चतुर्भुज मोहिं दिखावहु—७-२।

दुरावैगी—क्रि. स. [हिं० दुराना] **छिपाएगी, गुप्त रखेगी।** उ.—अब तू कहा दुरावैगी—२०७७।

दुराश—वि. [सं.] **जिसे अधिक आशा न हो।**

दुराशय—वि. [सं.] **जिसका उद्देश्य अच्छा न हो।**

संज्ञा पुं०—(१) **बुरा आशय।** (२) **बुरे आशयवाला।**

दुराशा—संज्ञा स्त्री [सं.] **ऐसी आशा जो पूरी न हो सके, व्यर्थ की आशा।**

दुरास—वि. [सं. दुराश] **जिसे अधिक आशा न हो।**

दुरासद—वि. [सं.] (१) **दुष्प्राप्य।** (२) **दुसाध्य।**

दुरासा—संज्ञा स्त्री. [सं. दुराशा] **ऐसी आशा जो पूरी न हो, व्यर्थ की आशा।** उ.—ऐसैं करत अनेक जनम गए, मन संतोष न पायौ। दिन-दिन अधिक दुरासा लाग्यो, सकल लोक भ्रमि आयौ—१-१५४।

दुरि—क्रि. अ. [हिं. दुरना] **छिपकर, ओट में होकर, आड़ में जाकर।** उ.—(क) अधम-समूह उधारन-कारन तुम जिय जक पकरी। मैं जु रह्यौं राजीव-नैन, दुरि, पाप-पहार-दरी—१-१३०। (ख) सात देखत बधे एक ब्रज दुरि बच्यौ इत पर बाँधि हम पंगु कीन्हो—२६२४।

प्र० रहे दुरि—**छिपे हैं।** उ.—सारँगरिपु की ओट रहे दुरि सुंदर सारँग चारि—सा० उ० १७।

दुरित—संज्ञा पुं० [सं.] (१) **पाप, पातक।** (२) **कष्ट दुख।** उ.—मात-पिता दुरित क्यों हरते—११०२।

वि.—**पाप करनेवाला पापी, पातकी।**

वि. [हिं० दुरना] **छिपा हुआ, अप्रकट।** उ.—देवलोक देखत सब कौतुक, बाल-केलि अनुरागे। गावत सुनत सुजस सुखकरि मन, सूर दुरित दुख भागे—४१६।

दुरितदमनी—वि. स्त्री. [सं.] **पाप का नाश करनेवाली।**

दुरियाना—क्रि. स. [सं. दूर] **दूर करना, हटाना।**

क्रि. स. [हिं० दुर] **दुरदुराना, अपमान से हटाना।**

दुरिष्ट—संज्ञा पुं० [सं] (१) **पाप** (२) **एक यज्ञ।**

दुरिहै—क्रि. अ. [हिं. दुरना] **छिपेगी, प्रकट न होगी, दिखायी न देगी।** उ.—तातैं यहै सोच जिय मोरैं, क्यौं दुरिहै ससि-बचन-उज्यारी—१०-११।

दुरी—क्रि. अ. [हिं. दुरना] **आड़ में हो गयी, छिप गयी।** उ.—ज्ञान-बिवेक बिरोधे दोऊ, हते बंधु हितकारी। बाँध्यौ बैर दया भगिनी सौं, भागि दुरी सु बिचारी—१-१७३।

दुरीषणा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **अहित या अकल्याण की कामना।** (२) **शाप।**

दुरुखा—वि. [हिं० दो+फ़ा. रुख़] (१) **जिसके दोनों ओर मुँह हो।** (२) **जिसकें दोनों ओर अलग-अलग रंग या उनकी छाया हो।**

दुरुत्तर—वि. [सं.] **जिसका पार पाना कठिन हो।**

संज्ञा पुं०—**अनुचित या कटु उत्तर।**

दुरुपयोग—संज्ञा पुं. [सं.] **अनुचित उपयोग।**

दुरुस्त—वि. [फ़ा.] (१) **जो टूटा-फूटा या खराब न हो, ठीक।** (२) **जिसमें ऐब या दोष न हो।**

मुहा.—दुरुस्त करना—(१) **सुधारना।** (२) **दंड देना।**

(३) **उचित, मुनासिब।** (४) **यथार्थ।**

दुरुस्ती—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **सुधार, संशोधन।** (२) **दंड, सजा, मरम्मत।**

दुरूह—वि. [सं.] **जिसका समझना कठिन हो, गूढ़।**

दुरे—क्रि. अ. [हिं. दुरना] **छिप गये, ओट में हो गये,**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आड़ में हो गये। उ.—(क) प्रगटति हँसत दँतुलि, मनु सीपज दमकि दुरे दल ओलै री—१०-१३७। (ख) गोपाल दुरे हैं माखन खात—१०-२८३। (ग) अब कहा दुरे साँवरे ढोटा फगुआ देहु हमार—१४०४।

दुरेफ—संज्ञा पुं. [सं. द्विरेफ] **भ्रमर, भौंरा**। उ.—मुरली मुख-छबि पत्र-साखा दृग दुरेफ चढ़्यौ—३३ ७

दुरैहौं—क्रि. स. [हिं. दुराना] **छिपाऊँगी**। उ.—मोसौं कही, कौन तो सी प्रिय, तोसों बात दुरैहौं—१२६०।

दुरैहौ—क्रि. सं. [हिं. दूर] **दूर करोगे, हटाओगे, बचाओगे**। उ.—भक्ति बिनु बैल बिरानै ह्वै हौ।...... लादत, जोतत लकुट बाजिहै, तब कहँ मूँड़ दुरैहौ—१-३३१।

दुरोदर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जुआ**। (२) **जुआरी**।

दुरौंधा—संज्ञा पुं. [सं. द्वारार्द्ध] **द्वार की ऊपरी लकड़ी**।

दुर्—अव्य. या उप. [सं.] (१) **दूषण या दोष (बुरा अर्थ)**। (२) **निषेध, मना करना** (३) **दुख**।

दुर्कुल—संज्ञा पुं. [सं. दुष्कुल] **अप्रतिष्ठित कुल**।

दुर्गंध—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बुरी गंध, कुबास, बदबू**।

दुर्गंधता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दुर्गंध का भाव**।

दुर्ग—वि. [सं.] **जहाँ जाना कठिन हो, दुर्गम**।

संज्ञा पुं.—(१) **गढ़, कोट, किला**। (२) **एक असुर जिसको मारने से देवी का नाम दुर्गा पड़ गया**। (३) **एक प्राचीन अस्त्र**। उ.—(क) तब चानूर गर्व मन लीन्हौ। दुर्ग प्रहार कृष्न पर कीन्हौ—३०७०।

दुर्गकारक—संज्ञा पुं. [सं.] **किला बनानेवाला**।

दुर्गत—वि. [सं.] (१) **जिसकी दशा बुरी या गिरी हो, दुर्दशाग्रस्त**। (२) **दरिद्र**।

दुर्गति—संज्ञा स्त्री. [सं. दुः+गति] (१) **दुर्दशा, बुरी गति, विपत्ति**। उ.—ध्रुवहिं अभै पद दियौ मुरारी। अंबरीष की दुर्गति टारी—१-२८। (२) **परलोक में होने वाली दुर्दशा, नरक-भोग**।

दुर्गपाल—संज्ञा पुं. [सं.] **किले का रक्षक**।

दुर्गम—वि. [सं.] (१) **जहाँ जाना-पहुँचना कठिन हो**। (२) **जिसे समझना कठिन हो**। (३) **जिसका करना कठिन हो, दुस्तर**।

संज्ञा पुं.—(१) **गढ़, किला**। (२) **वन**। (३) **संकट का स्थान**। (४) **एक असुर**। (५) **विष्णु**।

दुर्गमता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दुर्गम होने का भाव**।

दुर्गमनीय, दुर्गम्य—वि. [सं.] (१) **जहाँ जाना कठिन हो**। (२) **जिसे समझना कठिन हो**। (३) **जिसे पार करना कठिन हो**।

दुर्गरक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] **दुर्गपाल, किलेदार**।

दुर्गलंघन—संज्ञा पुं. [सं.] **ऊँट**।

दुर्गसंचर—संज्ञा पुं. [सं.] **दुर्गम स्थान तक पहुँचने के साधन**।

दुर्गा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आदि शक्ति, देवी जिन्होंने महिषासुर, शुंभ, निशुंभ आदि को मारा था**। (२) **अपराजिता**। (३) **नौ वर्ष की कन्या**।

दुर्गाधिकारी—संज्ञा पुं. [सं.] **किले का स्वामी**।

दुर्गाध्यक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] **किले का स्वामी**।

दुर्गानवमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कार्त्तिक, चैत्र और आश्विन के शुक्ल पक्ष की नवमी**।

दुर्गाष्टमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **चैत्र और आश्विन के शुक्ल पक्ष की अष्टमी**।

दुर्गाह्य—वि. [सं.] **जिसका समझना कठिन हो**।

दुर्गुण—संज्ञा पुं. [सं.] **दोष, ऐब, बुराई**।

दुर्गेश—संज्ञा पुं. [सं.] **दुर्ग का स्वामी या रक्षक**।

दुर्गोत्सव—संज्ञा पुं. [सं] **दुर्गा पूजा का उत्सव**।

दुर्ग्रह—वि. [सं.] (१) **जो जल्दी पकड़ा न जा सके**। (२) **जो कठिनता से समझा जा सके**।

दुर्घट—वि. [सं.] **जिसका होना कठिन हो**।

दुर्घटना—संज्ञा स्त्री. [सं] (१) **अशुभ या हानि-कारिणी घटना, बुरा संयोग**। (२) **विपत्ति**।

दुर्घात—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बुरा या भयानक घात या प्रहार**। (२) **बुरा छल-कपट**।

दुर्घोष—वि. [सं.] **जो कटु या कर्कश ध्वनि करे**।

दुर्जन—संज्ञा पुं [सं.] **दुष्ट जन, खोटा आदमी**। उ.—(क) दुर्जन-बचन सुनत दुख जैसौ। बान लगैं दुख होइ न तैसौ—८-५। (ख) अति घायल धीरज दुवाहिआ तेज दुर्जन दालि—२८२६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्जनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] दुष्टता, खोटापन ।

दुर्जय—वि. [सं.] जो जल्दी जीता न जा सके ।
संज्ञा पुं.—(१) एक राक्षस । (२) विष्णु ।

दुर्जर—वि. [सं.] जो कठिनता से पच सके ।

दुर्जाति—वि. [सं.] (१) जो बुरी रीति से जन्मा हो । (२) जिसका जन्म व्यर्थ ही हो । (३) नीच ।
संज्ञा—(१) व्यसन, दुर्व्यसन । (२) संकट ।

दुर्जाति—संज्ञा स्त्री. [सं.] बुरी या नीच जाति ।
वि.—(१) बुरे कुल का । (२) बिगड़ी जाति का ।

दुर्जीव—वि. [सं.] बुरी रीति से जीविका पानेवाला ।

दुर्जेय—वि. [सं.] जो सरलता से जीता न जा सके ।

दुर्योधन, दुर्जोधना—संज्ञा पुं. [सं. दुयोधन] धृतराष्ट्र का पुत्र जो चचेरे भाई पांडवों से वैर रखता था ।

दुर्ज्ञेय—वि. [सं.] जो कठिनता से समझ में आ सके ।

दुर्दम—वि. [सं.] (१) जो सरलता से दबाया या जीता न जा सके । (२) प्रबल, प्रचंड ।
संज्ञा पुं.—रोहिणी और वसुदेव का एक पुत्र ।

दुर्दमन—वि. [सं.] जिसको दबाना कठिन हो, प्रचंड ।

दुर्दमनीय—वि. [सं.] जिसको दबाना कठिन हो प्रबल ।

दुर्दम्य—वि. [सं. दुर्दम] जिसको दबाना कठिन हो ।

दुर्दर्श, दुर्दशन—वि. [सं.] १) जो जल्दी दिखायी न पड़े । (२) जो देखने में बड़ा भयंकर हो ।

दुर्दशा—संज्ञा स्त्री. [सं.] बुरी दशा, दुर्गति ।

दुर्दांत—वि. [सं.] जिसको दबाना कठिन हो प्रबल ।

दुर्दिन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बुरा दिन । (२) वह दिन जब घटा घिरी हो । (३) कष्ट के दिन ।

दुर्दैव—संज्ञा पुं० [सं.] (१) दुर्भाग्य । (२) दिनोंका फेर ।

दुर्धर—वि. [सं.] (१) जिसको पकड़ना कठिन हो । (२) प्रबल, प्रचंड । (३) जिसको समझना कठिन हो ।
संज्ञा पुं०—(१) एक नरक । (२) महिषासुर का सेनापति । (३) धृतराष्ट्र का एक पुत्र । (४) रावण का एक सैनिक जो हनुमान द्वारा मारा गया था । (५) विष्णु ।

दुर्धर्ष—वि. [सं.] जिसका दमन करना कठिन हो, प्रचंड ।
संज्ञा पुं.—(१) धृतराष्ट्र का एक पुत्र । (२) एक राक्षस का नाम ।

दुर्धी—वि. [सं.] मंद बुद्धिवाला ।

दुर्नय संज्ञा पुं० [सं.] (१) बुरी चाल । (२) अन्याय ।

दुर्नाद—संज्ञा पुं० [सं.] बुरा या अप्रिय शब्द ।
वि—कर्कश या अप्रिय ध्वनि करनेवाला ।
संज्ञा पुं. [सं.] राक्षस ।

दुर्द्धरूढ़—वि. [सं.] गुरु की बात शीघ्र न माने ।

दुर्धर—संज्ञा पुं० [सं. दुर्द्धर] रावण का एक सैनिक जो अशोक वाटिका उजाड़ते हुए हनुमान को पकड़ने आया था; परंतु राम दूत द्वारा स्वयं मारा गया था । उ.—दुर्धर परहस्त संग आइ सैन भारी । पवन-पूत दानव दल ताड़े दिसि चारी - ९-९६ ।

दुर्नाम—संज्ञा पुं० [सं. दुर्नामन्] (१) बुरा नाम, बदनामी । (२) बुरा वचन, गाली ।

दुर्निमित्त—संज्ञा पुं० [सं.] बुरा सगुन ।

दुर्निरीक्ष, दुर्निरीक्ष्य—वि. [सं.] (१) जो देखा न जा सके । (२) देखने में भयंकर । (३) कुरूप ।

दुर्निवार, दुर्निवार्य—वि. [सं. दुर्निवार्य्य] (१) जो जल्दी रोका न जा सके । (२) जिसे जल्दी दूर न किया जा सके । (३) जो जल्दी टल न सके ।

दुर्नीति—संज्ञा स्त्री. [सं.] कुचाल, अन्याय ।

दुर्बचन—संज्ञा पुं० [सं. दुर्वचन] (१) दुर्वाक्य, कटु वचन । उ.—सुत-कलत्र दुर्बचन जो भाखैं । तिन्हैं मोहवस मन नाहिं राखै - ५-४ । (२) गाली ।

दुर्बल—वि. [सं.] कमजोर, दुबला-पतला ।

दुर्बलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] कमजोरी, दुबलापन ।

दुर्बासा—संज्ञा पुं० [हिं. दुर्वासा] एक क्रोधी मुनि जो अत्रि के पुत्र थे । इनकी पत्नी कंदली थी ।

दुर्बासैं—संज्ञा पुं. सवि. [सं. दुर्वासा] दुर्वासा को, दुर्वासा पर । उ.—उलटी गाढ़ परी दुर्बासैं, दहत सुदरसन जाकौं—१-११३ ।

दुर्बुद्धी—वि. [सं. दुर्बुद्धि] मूर्ख, मंदबुद्धि । उ.—निर्घिन, नीच, कुलज, दुर्बुद्धी, भौंदू, नित कौ रौऊ —१-१८६ ।

दुर्बोध—वि. [सं.] जो जल्दी समझ में न आये, गूढ़ ।

दुर्भक्ष—वि. [सं.] (१) जिसे खाना कठिन हो । (२) खाने में बुरा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा पुं०—**अकाल, दुर्भिक्ष।**

दुर्भग—वि. [सं.] **अभागा, भाग्यहीन।**

दुर्भगा—वि. स्त्री. [सं.] **अभागिनी, भाग्यहीना।**
संज्ञा स्त्री.—**पति-प्रेम से वंचिता पत्नी।**

दुर्भर—वि. [सं.] **भारी, वजनी।**

दुर्भाग, दुर्भाग्य—संज्ञा पुं० [सं. दुर्भाग्य] **बुरा भाग्य, अभाग्य।**

दुर्भागी—वि. [सं. दुर्भाग्य] **मंद भाग्यवाला, अभागा।**

दुर्भाव—संज्ञा पुं० [सं.] (१) **बुरा भाव** (२) **द्वेष।**

दुर्भावना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बुरी भावना।** (२) **खटका, चिंता, अंदेशा।**

दुर्भाव्य—वि. [सं.] **जो जल्दी ध्यान में न आ सके।**

दुर्भिक्ष, दुर्भिच्छ—संज्ञा पुं० [सं. दुर्भिक्ष] **अकाल का समय, अन्न के अभाव का काल।**

दुर्भेद, दुर्भेद्य—वि. [सं. दुर्भेद] (१) **जिसका भेदना या छेदना कठिन हो।** (२) **जिसे जल्दी पार न किया जा सके।**

दुर्मति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नासमझी।** (२) **कुबुद्धि।**
वि.—(१) **जिसकी समझ ठीक न हो।** (२) **खल, दुष्ट नीच।**

दुर्मद—वि. [सं.] (१) **नशे में चूर।** (२) **गर्व में चूर।**

दुर्मना—वि. [सं. दुर्मनस्] (१) **बुरे चित्त या विचार का, दुष्ट।** (२) **उदास, खिन्न, अनमना।**

दुर्मर—वि. [सं.] **जिसकी मृत्यु बड़े कष्ट से हो।**

दुर्मरण—संज्ञा पुं० [सं.] **कष्ट से होनेवाली मृत्यु।**

दुर्मर्ष—वि. [सं.] **जिसको सहना कठिन हो, दुःसह।**

दुर्मल्लिका, दुर्मल्ली—संज्ञा स्त्री. [सं. दुर्मल्लिका] **उपरूपक का एक भेद जो हास्यरस प्रधान होता है।**

दुर्मिल—संज्ञा पुं० [सं.] **एक मात्रिक और एक वर्णिक छंद।**

दुर्मुख—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **घोड़ा।** (२) **श्रीराम की सेना का एक बंदर।** (३) **श्रीराम का एक गुप्तचर।** (४) **शिव, महादेव।**
वि.—(१) **जिसका मुख बुरा हो।** (२) **कटु-भाषी, कठोर बात कहनेवाला।**

दुर्मुट, दुर्मुस—संज्ञा पुं. [सं. दुर् + मुस = कूटना] **गच या फर्श कूटने का डंडा जिसके नीचे लोहा या पत्थर लगा होता है।**

दुर्मूल्य वि. [सं.] **जिसका दाम अधिक हो, मँहगा।**

दुर्मेध—वि. [सं. दुर्मेधस्] **नासमझ, मंद बुद्धिवाला।**

दुर्यश—संज्ञा पुं० [सं. दुर्यशस्] **बुराई, बदनामी, अपयश।**

दुर्योध—वि. [सं.] **कठिनाइयाँ सहकर भी युद्ध के मैदान में डटा रहनेवाला, विकट साहसी।**

दुर्योधन—संज्ञा पुं. [सं] **कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र जो चचेरे भाई पांडवों को अपना शत्रु समझता था और जिसे युधिष्ठिर 'सुयोधन' कहा करते थे। गदा चलाने में यह बड़ा निपुण था। धृतराष्ट्र की इच्छा युधिष्ठिर को ही युवराज बनाने की थी; परंतु दुर्योधन ने इसका विरोध किया और पांडवों को वन भेज दिया। लौटने पर युधिष्ठिर न इन्द्रप्रस्थ को राजधानी बनाकर राजसूय यज्ञ किया। उनके अपार वैभव को देखकर वह जल उठा। पश्चात् अपने मामा शकुनि के कौशल से युधिष्ठिर का राज्य और धन ही नहीं, द्रौपदी सहित उनके भाइयों को भी इसने जुए में जीत लिया। तब दुःशासन द्रोपदी को सभा में घसीट लाया और दुर्योधन ने उसे अपनी जाँघ पर बैठने का संकेत किया। भीम का क्रोध यह देखकर भभक उठा और उन्होंने गदा से दुर्योधन की जाँघ तोड़ने की प्रतिज्ञा की। द्यूत के नियमानुसार पांडवों को बारह वर्ष वनवास और एक वर्ष अज्ञातवास करना पड़ा। पश्चात् श्रीकृष्ण पांडवों के दूत होकर कौरव सभा में गये; परंतु दुर्योधन पूर्व निश्चय के अनुसार आधा राज्य तो क्या, पाँच गाँव देने को भी तैयार न हुआ। फलतः कुरुक्षेत्र का भयानक युद्ध हुआ जिसमें सौ भाइयों सहित दुर्योधन मारा गया।**

दुर्योनि—वि. [सं.] **जो नीच कुल में जन्मा हो।**

दुर्रा—संज्ञा पुं. [फ़ा. दुर्रः] **कोड़ा, चाबुक।**

दुर्लंघ्य—वि. [सं.] **जिसे लाँघना सरल न हो।**

दुर्लक्ष्य—वि. [सं.] **जो कठिनता से दिखायी पड़े।**
संज्ञा पुं—**बुरा उद्देश्य, लक्ष्य या स्वार्थ।**

दुर्लभ—वि. [सं.] (१) **जो कठिनता से मिल सके, जिसे प्राप्त करना सहज न हो, दुष्प्राप्य।** उ.—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारँग चतुरानन दुर्लभ सोइ सारँग संभु मुनि ध्यात–सा. उ. २४ (२) अनोखा, बहुत बढ़िया। उ.—दुर्लभ रूप देखिबे लायक—२४४४। (३) प्रिय, रुचिकर। उ.—जहाँ तहाँ तैं सबै धाईं सुनत दुर्लभ नाम—२६५५।

संज्ञा पुं.—विष्णु।

दुर्लेख्य—वि. [सं.] जो बुरी लिखावट में लिखा हो।

दुर्वच—वि. [सं.] (१) जो दुख से कहा जा सके। (२) जो कठिनता से कहा जा सके।

दुर्वच, दुर्वचन—संज्ञा पुं. [सं.] गाली, कटुवचन।

दुर्वह—वि. [सं.] जिसे उठाकर ले चलना कठिन हो।

दुर्वाच—संज्ञा पुं. [सं.] बुरा या कटुवचन।

दुर्वाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) निंदा, बदनामी। (२) अप्रिय वाक्य। (३) अनुचित विवाद।

दुर्वादी—वि. [सं. दुर्वादिन्] तर्क-कुतर्क करनेवाला।

दुर्वार, दुर्वार्य—वि. [सं.] जो जल्दी रोका न जा सके।

दुर्वासना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बुरी या अनुचित इच्छा। (२) इच्छा जो पूरी न हो सके।

दुर्वासा—संज्ञा पुं. [सं. दुर्वासस्] एक क्रोधी मुनि जो अत्रि के पुत्र थे। इन्होंने और्व मुनि की कन्या कंदली से विवाह किया था। पत्नी से सौ बार क्रुद्ध होने पर इन्होंने उसे क्षमा कर दिया; पश्चात् किसी अपराध पर उसे शाप देकर भस्म कर दिया। इस पर इनके ससुर और्व मुनि ने शाप दिया—तुम्हारा गर्व चूर होगा। इसी कारण अंबरीष के प्रसंग में इन्हें नीचा देखना पड़ा।

दुर्विगाह—वि. [सं] जिसकी थाह जल्दी न मिले।

दुर्विज्ञेय—वि. [सं.] जो जल्दी जाना न जा सके।

दुर्विद—वि. [सं.] जिसे जानना कठिन हो।

दुर्विदग्ध—वि. [सं.] (१) अधजला (२) अधपका। (३) घमंडी, अहंकारी।

दुर्विदग्धता—संज्ञा स्त्री. [सं.] पूर्ण निपुणता का अभाव।

दुर्विध—वि. [सं.] (१) दरिद्र। (२) नीच।

दुर्विधि—संज्ञा पुं० [सं.] दुर्भाग्य, अभाग्य।

संज्ञा स्त्री—बुरी विधि, अनीति, कुनीति।

दुर्विनीत—वि. [सं.] अशिष्ट, उद्धत, अक्खड़।

दुर्विपाक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कुफल। (२) दुर्घटना।

दुर्विभाव्य—वि. [सं.] जिसका अनुमान भी न हो सके।

दुर्विलसित—संज्ञा पुं० [सं.] बुरा या अनुचित काम।

दुर्विवाह—संज्ञा पुं० [सं.] बुरा या निंदित विवाह।

दुर्विष—संज्ञा पुं० [सं.] महादेव जिन पर विष का कोई प्रभाव न हुआ।

दुर्विषह—वि. [सं.] जिसे सहना कठिन हो, दुःसह।

दुर्वृत्त—वि. [सं.] जिसका आचरण बुरा हो।

संज्ञा पुं० – बुरा आचरण, या व्यवहार।

दुर्वृत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] बुरा काम या व्यवसाय।

दुर्व्यवस्था—संज्ञा स्त्री. [सं.] कुप्रबंध।

दुर्व्यवहार—संज्ञा पुं० [सं.] बुरा वर्ताव या आचरण।

दुर्व्यसन—संज्ञा पुं. [सं.] बुरी लत या आदत।

दुर्व्यसनी—वि. [सं.] बुरी लत या आदतवाला।

दुर्मन—संज्ञा पुं० [सं.] बुरी इच्छा या निश्चय।

वि.—बुरी इच्छा रखनेवाला, नीचाशय।

दुर्हृद—संज्ञा पुं० [सं.] जो मित्र न हो, शत्रु।

दुलकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दलकना] घोड़े की एक चाल।

दुलखना—क्रि. स. [हिं. दो+लक्षण] बार-बार कहना।

दुलड़ा—वि. [हिं. दो+लड़] जिसमें दो लड़ हों।

संज्ञा पुं०—दो लड़ों का हार।

दुलड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुलड़ा] दो लड़ों की माला।

दुलत्ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. दो+लात] पशुओं का पिछले पैर उठा कर मारना।

दुलना—क्रि. अ. [हिं. डुलना] हिलना-डोलना।

दुलभ—वि. [हिं. दुर्लभ] (१) दुष्प्राप्य। (२) बहुत सुंदर।

दुलराई—क्रि. वि. [हिं. दुलारना] लाड़-प्यार करके, दुलार करके। उ.—जसोदा हरि पालनैं झुलावै। हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोइ-सोइ कछु गावै–१०-४३।

दुलराना—क्रि. स. [हिं. दुलारना] लाड़-प्यार करना।

क्रि. अ.—दुलारे बच्चों का सा व्यवहार करना।

दुलरावति—क्रि. स. [हिं. दुलारना] दुलार-प्यार करती है, लाड़-प्यार दिखाती है। उ.—(क) बैठी हुती जसोदा मंदिर, दुलरावति सुत कुँवर कन्हाई—१०–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५० । (ख) कर सौं ठोंकि सुतहिं दुलरावति, चटपटाइ बैठे अतुराने—१०-१६७ ।

दुलरावन—संज्ञा [हिं. दुलारना] **दुलार करने का भाव ।**

प्र.—लागी दुलरावन—**दुलार-प्यार का व्यवहार करने लगी ।** उ.—अब लागी मोको दुलरावन प्रेम करति टरि ऐसी हो । सुनहु सूर तुमरे छिन छिन मति बड़ी प्रेम की गैसी हो ।

दुलरावना—क्रि. स. [हिं. दुलारना] **दुलार-प्यार करना ।**

दुलरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दो+लड़=दुलड़ी] **दो लड़ की माला ।** उ.—(क) दुलरी कंठ नयन रतनारे मो मन चितै हर्‌यौ—८८३ । (ख) स्रुति मंडल मकराकृत कुंडल कंठ कनक दुलरी—३०२६ ।

वि.—**दो लड़ की ।** उ.—अंग-अभूषन जननि उतारति । दुलरी ग्रीव माल मोतिनि की, लै केयूर भुज स्याम निहारति—५१२ ।

दुलरुवा—वि. [हिं. दुलारा] **प्यारा-दुलारा ।**

दुलह, दुलहा—संज्ञा पुं० [हिं. दूल्हा] **वर, दूल्हा** । उ. —श्री बलदेव कह्यौ दुर्योधन नीको दुलह विचारो—सारा. ८०३ ।

दुलहन, दुलहिन, दुलहिनि, दुलहिनी, दुलहिया, दुलही,—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुलहन] **वधू, नयी बहू ।** उ.—(क) आगैं आउ, बात सुनि मेरी, बलदेवहिं न जनैहौं । हँसि समुझावति, कहति जसोमति, नई दुलहिया लैहौं—१०-१६३ । (ख) दुलहिनि कहत दौरि दीजहु द्विज पाती नंद के लालहिं—१०-३-२० ।

दुलही—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुलहन] **श्रीकृष्ण का गैया-विशेष के लिए दुलार का संबोधन ।** उ.—अपनी अपनी गाइ ग्वाल सब, आनि करौ इकठौरी ।······। दुलही, फुलही, भौंरी, भूरी, हाँकि ठिकाई तेती–४४५ ।

दुलहेटा—संज्ञा पुं० [हिं. दुलारा+बेटा] **लाड़ला-दुलारा बेटा ।**

दुलाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. तुलाई, तुराई] **रुई भरी रजाई ।**

दुलाना—क्रि. स. [हिं. डुलाना] **हिलाना-डुलाना ।**

दुलार—संज्ञा पुं० [हिं. दुलारना] **लाड़-प्यार ।**

दुलारना—क्रि. स. [सं. दुर्लालन, प्रा. दुल्लाडन] **लाड़-प्यार करना, लाड़ लड़ाना ।**

दुलारा—वि. [हिं. दुलार, दुलारा] **प्यारा, लाड़ला।**

संज्ञा पुं.—**प्यारा और लाड़ला पुत्र ।**

दुलारी—संज्ञा स्त्री, [हिं. पुं. दुलारा] **लाड़ली बेटी,** **कन्या ।** उ.—यह सुनिकै बृषभानु मुदित चित, हँसि बूझति बात दुलारी—७०८ ।

वि. स्त्री.—**जिसका खूब दुलार-प्यार हो,**

दुलारे—वि.[हिं. दुलार का बहु.] **जिनका बहुत प्यार होता हो, लाड़ले, प्यारे ।**

संज्ञा पुं.—**लाडला बेटा या बेटे ।** उ.—कोमल गोबर्धन धार्‌यौ जब हुते नंद-दुलारे—१-२५ ।

दुलारो, दुलारौ—संज्ञा पुं. [हिं. दुलारा] **लाड़ला** **प्रिय पुत्र ।** उ.—मिटि जु गयौ संताप जनम कौ, दे नंद-दुलारौ—१०-१५ ।

दुलीचा, दुलैचा—संज्ञा पुं. [देश.] **गलीचा, कालीन**

दुलोही—संज्ञा स्त्री. [हिं. दो+लोहा] **तलवार ।**

दुल्लभ—वि. [सं. दुर्लभ] (१) **दुष्प्राप्य ।** (२) **सुंदर ।**

दुल्हैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुलहन] **नयी वधू ।**

दुव—वि. [सं. द्वि] **दो ।**

दुवन—संज्ञा पुं. [सं. दुर्मनस्] (१) **दुष्ट प्रकृति** **आदमी, दुर्जन ।** (२) **शत्रु, वैरी ।** (३) **राक्षस**

वि.—**बुरा, खराब ।**

दुवाज—संज्ञा पुं. [?] **एक तरह का घोड़ा ।**

दुवादस—वि. [सं. द्वादश] (१) **बारह ।** (२) **बारहवाँ**

दुवादस बानी—वि. [सं. द्वादश=सूर्य+वर्ण] **सूर्य** **समान चमक-दमक वाला, खरा, दमकता हुआ ।**

दुवादसी—संज्ञा स्त्री. [सं. द्वादशी] **किसी पक्ष** **बारहवीं तिथि ।**

दुवार—संज्ञा पुं. [सं. द्वार] **द्वार, दरवाजा, बाहर निकलने का पथ ।** उ.—(क) आँखि, नाक, मुख, दुवार—४–१२ । (ख) दधिसुत जामें नंद-दुवार—१०–१७३ । (ग) देहरि उलँघि सकत नाहिं, सो खेलत नंद–दुवार—४८७ । (ग) सब सुंदरि मंगल गावत कंचन कलस दुवार—सारा. १६३ ।

दुवारिका—संज्ञा स्त्री. [सं. द्वारका] **द्वारकापुरी ।**

दुवारे, दुआरैं—संज्ञा पुं. मुनि. [सं. द्वार] **द्वार पर**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—अर्थ काम दोउ रहैं दुवारें, धर्म-मोच्छ सिर नावैं—१-४०। (ख) हरि ठाढ़े रथ चढ़े दुवारे—१-२४०। (ग) देखि फिरि हरि ग्वाल दुवारे। तब इक बुद्धि रची अपनैं मन, गए नाँघि पिछवारैं—१०-२७७।

दुविद—संज्ञा पुं. [सं. द्विविद] **श्रीराम का सेनानायक एक बंदर।**

दुविधा—संज्ञा पुं. [हिं. दुबधा] (१) **असमंजस।** (२) **खटका।**

दुवौ, दुवौ—वि. [हिं. दव=दो+उ=ही] **दोनों।**

दुश्वार—वि. [फ़ा.] (१) **कठिन।** (२) **दुःसह।**

दुश्वारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **कठिनता**

दुशाला—संज्ञा पुं. [फ़ा दोशाला] **बढ़िया चादर।**

मुहा.—दुशाले में लपेटकर—**छिपे-छिपे।**

दुशासन—संज्ञा पुं. [सं. दुःशासन] (१) **दुर्योधन का एक भाई।** (२) **बुरा या कष्टदायी शासन।**

दुश्चर—वि. [सं.] **जिसका करना कठिन हो।**

दुश्चरित—वि. [सं.] (१) **बुरे चरित्रवाला।** (२) **कठिन।**

संज्ञा पुं.—(१) **बुरा आचरण।** (२) **पाप।**

दुश्चरित्र—वि. [सं.] **बुरे चरित्रवाला।**

संज्ञा पुं.—**बुरा आचरण, दुराचार।**

दुश्चलन—संज्ञा स्त्री. [सं. दः+हिं. चलन] **दुराचार।**

दुश्चिंत्य—वि. [सं.] **जो कठिनता से समझ में आवे।**

दुश्चिकित्स्य—वि. [सं.] **जिसकी चिकित्सा न हो सके।**

दुश्चिंत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **खटका।** (२) **घबराहट।**

दुश्चेष्टा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बुरा काम, कुचेष्टा।**

दुश्चेष्टित—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पाप।** (२) **नीच काम।**

दुश्च्यवन—वि. [सं] **जो जल्दी विचलित न हो।**

संज्ञा पुं.—**देवराज इंद्र।**

दुश्च्याव—वि. [सं.] **जो जल्दी विचलित न हो।**

संज्ञा पुं.—**शिव जी, महादेव।**

दुश्मन—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **शत्रु, वैरी।**

दुश्मनी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **वैर, शत्रुता, विरोध।**

दुष्कर—वि. [सं.] **जिसको करना कठिन हो (काम)।**

संज्ञा पुं.—**आकाश, गगन।**

दुष्कर्म—संज्ञा पुं. [सं. दुष्कर्मन्] **बुरा काम, पाप।**

दुष्कर्मी, दुष्कर्मी—वि. [सं. दुष्कर्मन्] **पापी।**

दुष्काल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कुसमय।** (२) **अकाल।**

दुष्कीर्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अपयश, बदनामी।**

दुष्कुल—संज्ञा पुं. [सं.] **नीच या बुरा कुल।**

वि.—**नीच या अप्रतिष्ठित वंश का।**

दुष्कुलीन—वि. [सं.] **तुच्छ या अप्रतिष्ठित घराने का।**

दुष्कृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बुरा या नीच कर्म।**

वि. [सं.] **कुकर्मी, पापी।**

दुष्कृती—वि. [सं. दुष्कृतिन्] **बुरा काम करनेवाला।**

दुष्क्रीत—वि. [सं.] **अधिक मूल्य का, महँगा।**

दुष्ट—वि. [सं.] (१) **जिसमें दोष हो, दूषित।** (२) **खल, दुर्जन, खोटा।**

दुष्टचारी—वि. [सं. दुष्टचरिन्] (१) **बुरा आचरण करनेवाला।** (२) **खल, दुर्जन, नीच।**

दुष्टचेता—वि. [सं. दुष्टचेतस्] (१) **बुरे विचार का।** (२) **बुरा या अहित चाहनेवाला।** (३) **कपटी।**

दुष्टता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दोष, ऐब।** (२) **बुराई, खराबी।** (३) **खोटाई, दुर्जनता।**

दुष्टत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **दुष्टता, खोटापन, दुर्जनता।**

दुष्टपना—संज्ञा पुं. [हिं. दुष्ट+पन (प्रत्य.)] **खोटाई।**

दुष्टमति—वि- [सं.] **दुर्बुद्धि, दुराशय।** उ—बालक लियौ उछंग दुष्टमति, हरषित अस्तन-पान कराई—१०-५०।

दुष्ट-सभा—संज्ञा स्त्री. [सं. दुष्ट+सभा] (१) **दुष्टों का समूह।** (२) **दुराचारी कौरवों की राजसभा।** उ—अंबर हरत द्रुपद-तनया की दुष्ट-सभा मधि लाज सम्हारी—१-२२।

दुष्टा—वि- स्त्री. [सं.] **दुष्ट या बुरे स्वभाव की।**

दुष्टाचार—संज्ञा पुं. [सं.] **कुकर्म, खोटा या बुरा काम।**

वि-—[सं.] **खोटा या बुरा काम करनेवाला।**

दुष्टाचारी—वि—[सं.] **बुरा काम करनेवाला, कुकर्मी।**

दुष्टात्मा—वि. [सं.] **खोटे या बुरे स्वभाव का।**

दुष्टान्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बासी या सड़ा अन्न।** (२) **अन्न जो पाप की कमाई हो।** (३) **नीच का अन्न।**

दुष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दोष, ऐब, पाप।**

दुष्पच—वि. [सं.] **जो जल्दी न पच सके।**

दुष्पद—वि. [सं.] **जो सरलता से प्राप्त न हो सके।**

दुष्पराजय—वि. [सं.] **जिसको जीतना कठिन हो।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुष्परिग्रह— वि. [सं.] **जिसको पकड़ना कठिन हो।**

दुष्पर्श—वि. [सं.] (१) **जिसको स्पर्श करना कठिन हो।** (२) **जिसको पकड़ना कठिन हो।**

दुष्पार—वि. [सं.] **जिसको पार करना कठिन हो।**

दुष्पूर—वि. [सं.] **जिसको पूरा भरना कठिन हो।**

दुष्प्रकृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बुरी या दुष्ट प्रकृति।**

वि-—**खोटे या नीच स्वभाववाला।**

दुष्प्रधर्ष—वि. [सं-] **जो जल्दी पकड़ा न जा सके।**

दुष्प्रवृत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बुरी या खोटी प्रकृति।**

दुष्प्राय, दुष्प्राप्य—वि. [सं. दुष्प्राप्य] **जो आसानी से मिल न सके, जिसका मिलना कठिन हो।**

दुष्प्रेक्ष, दुष्प्रेक्ष्य—वि. [सं. दुष्प्रेक्ष्य] (१) **जिसे देखना कठिन हो।** (२) **देखने में भीषण या भयानक।**

दुष्मंत, दुष्यंत—संज्ञा पुं० [सं. दुष्यंत] **एक पुरुवंशी राजा जिसने कण्व ऋषि की पोषिता कन्या शकुंतला से विवाह किया था और जिनकी कथा लेकर कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुंतल' नाटक लिखा।**

दुसराना—क्रि. स. [हिं. दूसरा] **दुहराना।**

दुसरिहा—वि. [हिं. दूसरा+हा (प्रत्य.)] (१) **साथ रहनेवाला, साथी-संगी।** (२) **प्रतिद्वंद्वी, विरोधी।**

दुसह—वि. [सं. दुःसह (१) **जो सरलता से सहा न जा सके, असह्य, बहुत कष्टदायक।** उ.— (क) तुम बिनु ऐसो कौन नंद-सुत यह दुख दुसह मिटावन लायक —६५४। (ख) अति ही दुसह सह्यौ नहिं जाई—२६५०। (ग) चलते हरि धिक जु रहत ये प्रान कहँ वह सुख, अब सहौं दुसह दुख, उर करि कुलिस समान —२६८४। (२) **कठोर, दृढ़, मजबूत।** उ.—यह अति दुसह पिनाक पिता-प्रन राघव बयस किसोर —६-२३।

दुसही—वि. [हिं. दुःसह+ई (प्रत्य.)] (१) **जो कठिनता से सहन कर सके।** (२) **डाह रखनेवाला, डाही, ईर्ष्यालु।**

दुसाखा—संज्ञा पुं० [हिं. दो+शाखा] (१) **दो कनखे वाला शमादान।** (२) **लकड़ी जिसमें दो कनखे हों।**

दुसाध—वि. [सं. दुःसाध्य] **नीच, दुष्ट।**

दुसार, दुसाल—संज्ञा पुं० [हिं. दो+सालना] **आर पार किया गया या होनेवाला छेद।**

क्रि. वि.—**एक पार से दूसरे पार तक।**

वि. [सं. दुःशल्य] **बहुत कष्ट देनेवाला।**

दुसाला—संज्ञा पुं० [हिं. दुशाला] **पश्मीने की चादर...**

दुसासन—संज्ञा पुं० [सं. दुःशासन] **धृतराष्ट्र के पुत्र जो भीम द्वारा मारा गया था।**

दुसूती—संज्ञा स्त्री. [हिं. दो+सूत] **एक मोटा कपड़ा...**

दुसेजा—संज्ञा पुं० [हिं. दो + सेज] **बड़ी खाट...**

दुस्कर—वि. [सं. दुष्कर] **जिसे करना कठिन हो।**

दुस्तर—वि. [सं.] (१) **जिसे पार करना कठिन...** उ.—सूरजदास स्याम सेए तैं दुस्तर पार तरै—१-... (२) **दुर्घट, विकट, कठिन।**

दुस्त्यज —वि. [सं. दुस्त्याज्य] **जिसको त्यागना कठिन...**

दुस्तर्क्य—वि. [सं.] **जिसे तर्क से सिद्ध करना कठिन...**

दुस्सह—वि. [सं. दुःसह] **अत्यंत कष्टदायक, घोर।** उ.—हिरनकसिप दुस्सह तप कियौ—७-२।

दुस्सासन—संज्ञा पुं० [सं. दुःशासन] **धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक जो भीम द्वारा मारा गया था।**

दुहत—क्रि. स. [हिं. दुहना] **दुहते हैं, दुही जाती...** उ.—नव लख धेनु दुहत हैं नित प्रति, बड़ौ नाम नंद महर कौ—१०-३३३।

दुहता—संज्ञा पुं० [सं. दौहित्र] **लड़की का लड़का, नाती...**

दुहती—संज्ञा स्त्री [हिं. दुहिता] **पुत्री की पुत्री, नातिन...**

दुहत्थड़, दुहत्था—वि. [हिं. दो+हाथ] (१) **दोनों हाथों से किया हुआ।** (२) **जिसमें दो हत्थे हों, मूँठें हों।**

दुहन—संज्ञा. स्त्री. [हिं. दुहना] **दुहने की क्रिया, (थन से) दूध निकालने की क्रिया।** उ.—(क) कान्हि गो दुहन सिखावैं, दुही सबै अब गाइ—४००। (ख) मैं दुहिहौं, मोहिं दुहन सिखावहु—४०१। (ग) बाबा मोकौं दुहन सिखायौ—६६७।

दुहना—क्रि. स. [सं. दोहन] (१) **थन से दूध निकालना।** (२) **सारा तत्व-भाग निचोड़ लेना।** (३) **धन हर लेना।**

दुहनियाँ, दुहनी—संज्ञा स्त्री [सं. दोहनी] **वह पात्र जिसमें दूध दूहा जाय।** उ.—डारि दियौ भरी दुहनियाँ अबहीं नीकैं आई—७४१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुहराना, दुहराना—क्रि. स. [हिं. दोहराना] (१) **किसी बात को बार-बार कहना। (२) किसी चीज को दोहरा करना।**

दुहरा—वि. [हिं. दोहरा] (१) **दो तह का। (२) दुगना।**

दुहरानी—वि. [हिं. दोहराना] **दुगने के लगभग।** उ.—कहा करौं अपथि भई मिलि बड़ी व्यथा दुख दुहरानी—२८८७।

दुहहु—क्रि. स. [हिं. दुहना] **दुहो, (पशुओं के) थन से दूध निकालो।** उ.—सूरदास नँद लेहु दोहिनी, दुहहु लाल की नाटी—१०-२५६।

दुहाइ—संज्ञा स्त्री [हिं. दुहाई] **घोषणा, राजकीय सूचना।**

मुहा.—फिरी दुहाइ—**विजय-घोषणा हुई, जयजयकार हुई, प्रभुत्व का डंका पिटा।** उ.—कुंभकरन तन पंक लगाई, लंक बिभीषन पाइ। प्रगट्यौ आइ लंक-दल कवि कौ, फिरी रघुबीर दुहाइ—६-८३।

दुहाई—संज्ञा स्त्री [सं.द्वि = दो+आह्वान = पुकार] **घोषणा, पुकार, सूचना।**

मुहा.—(किसी की) दुहाई फिरना—(१) **राजा के सिंहासनासीन होने की घोषणा।** उ.—(क) बैठे राम राज-सिंहासन जग में फिरी दुहाई—सारा. ३०२। (२) **प्रताप का डंका बजना, जयजयकार होना।** उ.—बंसी बनराज आज आई रन जीति।······। देत मदन मारुत मिलि दसों दिसि दुहाई—६५०।

(२) **सहायता, बचाव या रक्षा के लिए पुकार।**

मुहा.—दुहाई देना—**संकट पड़ने पर सहायता या रक्षा के लिए पुकारना।**

(३) **शपथ, कसम, सौगंद।** उ.—(क) अब मन मानि धौं राम दुहाई। मन-बच-क्रम हरिनाम हृदय धरि, ज्यों गुरु बेद बताई—१-३१८। (ख) मोहिं कहत जुवती सब चोर।······। जहाँ मोहिं देखति तहँ टेरति, मैं नहिं जात दुहाई तोर—१३६८। (ग) जब लगि एक दुहौगे तब लौं चारि दुहौंगो नंद दुहाई—६६८।

संज्ञा स्त्री [हिं. दुहना] (१) **गाय-भैंस आदि को दुहने की क्रिया। (२) दुहने की मजदूरी।**

दुहाऊँ—क्रि. स. [हिं. दुहना का प्रे०] **दूध निकलवाऊँ।** उ.—कामधेनु छाँड़ि कहा अजा लै दुहाऊँ—१-१६६।

दुहाग—संज्ञा पुं० [सं. दुर्भाग्य, प्रा. दुब्भाग्ग] (१) **दुर्भाग्य, अभाग्य। (२) सोहाग की हानि, वैधव्य।**

दुहागा—वि. [हिं. दुहाग] **अभागा, भाग्यहीन।**

दुहागिन—वि. [हिं. दुहागी] (१) **बिधवा (२) अभागी।**

दुहागिल—वि. [वि. दुहाग+इल (प्रत्य.)] (१) **अभागा। (२) अनाथ, अनाश्रित। (३) सूना, खाली।**

दुहागी—वि. [सं. दुर्भागिन] **अभाग भाग्यहीन।**

दुहाजू—वि. पुं. [सं. द्विभार्य्य] **जो (पुरुष) पहली पत्नी के मर जाने पर दूसरा विवाह करे।**

वि. स्त्री.—**वह स्त्री जो पति के मरने पर दूसरा विवाह करे।**

दुहाना—क्रि. स. [हिं. दुहना प्रे.] **गाय-भैंस आदि को दुहने का काम दूसरे से कराना।**

दुहाव—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुहाना] (१) **एक प्रथा जिसमें विशेष त्योहारों पर असामियों की गाय-भैंसों का दूध मालिक दुहा लेता है। (२) वह दूध जो इस प्रथा के अनुसार मालिक को मिले।**

दुहावति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. दुहाना] **दुहाती है।** उ.—सूरदास प्रभु पास दुहावति, धनि-धनि श्री वृषभानु-लली—७३६।

दुहावन—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुहाना] **दुहाने के उद्देश्य से या दुहाने (के लिए)।** उ.—खरिक दुहावन जाति हौं, तुम्हरी सेवकाई—७१३।

दुहावनी—संज्ञा स्त्री [हिं. दुहाना] **दुहने की मजदूरी।**

दुहावैं—क्रि. स. [हिं. दुहाना] **दुहने का काम करायें, दूध निकलवायें।** उ.—सूरदास-प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावैं—१-१६८।

दुहि—क्रि स. [हिं. दुहना] (१) **दूध दुहकर। (२) सार या तत्व निचोड़कर।** उ.—पाछे पृथु को रूप हरि लीन्हें नाना रस दुहि काढ़े—सारा. २४।

दुहिता—संज्ञा स्त्री. [सं. दुहितृ] **कन्या, पुत्री।**

दुहितृपति—संज्ञा पुं. [सं.] **दामाद, जामाता।**

दुहिन—संज्ञा पुं. [सं. द्रुहण] **ब्रह्मा, विधाता।**

दुहिनि—वि. [हिं. दुहूँ+नि] **दोनों के।** उ.—अबहीं सुनि बसुदेव-देवकी हरषित ह्वै हैं दुहिनि हियौ—३०८६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुहियत—क्रि. स. [हिं. दुहना] **दुहते हैं, थन से दूध निकालते हैं।** उ.—(क) चहुँ ओर चतुरंग लच्छमी, कोटिक दुहियत धैन री—१०-१३९। (ख) साँझ कुतूहल होत है जहँ तहँ दुहियत गाइ—४६२।

दुहिहौं—क्रि. स. [हिं. दुहना] **दुहूँगा, दूध निकालूँगा।** उ.—मैं दुहिहौं मोहिं दुहन सिखावहु—४०१।

दुहीं—वि. [हिं दुहना] **जो दुह ली गयी हों, जिनका दूध दुहा जा चुका हो।** उ.—काल्हि तुम्हैं गो-दुहन सिखावैं, दुहीं सबै अब गाइ—४००।

दुही—क्रि. स. [हिं. दुहना] **दुह ली, (थन से) दूध निकाला।** उ.—सूर स्याम सुरभी दुही, संतनि हित-कारी—४०६।

दुहुँ—क्रि. वि [हिं. दो+हूँ (प्रत्य.)] **दोनों, दोनों ही।** उ.—मेरी पीर परम पुरुषोत्तम, दुख मेट्यौ दुहुँ घाँ कौ—१-११३।

वि. [हिं. दो] **दो, दोनों।** उ.— इत-उत देखत जनम गयौ। या झूठी माया कैं कारन, दुहुँ दृग अंध भयौ—१-२९१।

दुहुँधा—क्रि.वि. [हिं. दुहुँ=दो+धा=ओर] **दोनों ओर से।**

दुहुँन—वि. [हिं. दोनो] **एक और दूसरा, दोनों।** उ.—दोऊ लगत दुहुन तैं सुंदर भले अनोन्या आजु–सा-४५।

दुहुँनि—सर्व. [हिं. दो+नि (प्रत्य.) **दोनों ही ने।** उ.—(क) दुहुँनि मनोरथ अपनौ भाष्यौ—१-२६८। (ख) सुर-असुर बहुत ता ठौर ही मरि गए, दुहुँनि कौ गर्व यौं हरि नसायौ—८-८।

दुहूँ—वि. [हिं. दो+हूँ (प्रत्य.)] **दोनों।**

दुहेनू—वि. [हिं. दुहना] **दूध देनेवाली।**

दुहेल—संज्ञा पुं० [सं. दुर्हेल] **दुख, विपत्ति।**

दुहेला—वि. [सं. दुर्हेल] (१) **दुखद, कठिन, दुःसाध्य।** (२) **दुखी, दुखिया।**

संज्ञा पुं०—**विकट खेल, कठिन या दुःसाध्य कार्य।**

दुहेली—वि. स्त्री [हिं. दुहेला] (१) **दुखदायिनी।** (२) **दुखिया।**

दुहैंगे—क्रि. स. [हिं. दुहना] **दुहेंगे, दूध निकालेंगे।** उ.—सूर स्याम कह्यौ काल्हि दुहैंगे, हमहूँ तुम मिलि होड़ लगाई—६६८।

दुहैया—संज्ञा स्त्री [हिं. दुहाई] **शपथ, कसम, सौगंध।** उ.—(क) सूरदास प्रभु खेल्योइ चाहत, दाउँ दियौ करि नंद-दुहैया—१०-२४५। (ख) मानी हार सूर के प्रभु तब, बहुरि न करिहौं नँद दुहैया -७३५। (ग) दोउ सींग बिच ह्वै हौं आयौ, जहाँ न कोउ हो रखवैया। तेरौ पुन्य सहाय भयौ है उबरयौ बाबा नंद-दुहैया—१०-३३५। (घ) दै री मैया दोहनी, दुहिहौं मैं गैया। माखन खाए बल भयौ, करौं नंद-दुहैया—६६६।

संज्ञा पुं० [हिं. दुहना] **दुहनेवाला।** उ. अति रस काम की प्रीति जानिकै आवत खरिक दुहैया-७३३।

दुहोतरा—संज्ञा पुं. [सं. दौहित्र] **पुत्री का पुत्र, नाती।**

वि. [सं. द्वि, हिं. दो] **दो अधिक, दो ऊपर।**

दुहोतरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुहोतरा] **पुत्री की पुत्री।**

दुहौंगो—क्रि. स. [हिं. दुहना] **दुह लूँगा, (थन से) दूध निकालूँगा।** उ.—जब लौं एक दुहौंगे तब लौं चारि दुहौंगो, नंद दुहाई—६६८।

दुहौ—क्रि. स. [हिं. दुहना] **दुहो, (थन से) दूध निकालो।** उ.—(क) भोर दुहौ जनि नंद-दुहाई, उनसौं कहत सुनाइ—४००। (ख) ग्वाल एक दोहनि लै दीन्ही, दुहौ स्याम अति करौ चँड़ाई– ७१७।

दुहौगे—क्रि. स. [हिं. दुहना] **दुहोगे, थन से दूध निकालोगे।** उ.—जब लौं एक दुहौगे तब लौं, चारि दुहौगे नंद दुहाई–६६८।

दुह्य—वि. [सं.] **दुहने योग्य।**

संज्ञा पुं. [सं.] **ययाति और शर्मिष्ठा का एक पुत्र जिसने पिता को अपनी युवावस्था देना अस्वीकार कर दिया था।**

दुह्या—वि. स्त्री. [सं. दुह्य] **दुहने योग्य।**

दूँगड़ा, दूँगरा—संज्ञा पुं. [हिं. दौंगरा] **गर्मी की तपन के बाद होनेवाली हलकी वर्षा।**

दूँद—संज्ञा पुं. [सं. द्वंद्व] (१) **उपद्रव।** (२) **घोर शब्द।**

दूँदना—क्रि. अ. [हिं. दूँद] (१) **उपद्रव करना, उधम मचाना।** (२) **घोर शब्द करना।**

दू—वि. [हिं. दो] **दो।** उ.—सरबस मैं पहिलैं ही वारूँ नान्हीं नान्हीं दँतुली दू पर—१०-९२

दूआ—संज्ञा पुं. [देश.] **कलाई का एक गहना, पछेली।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा पुं. [हिं. दो+आ (प्रत्य.) **खेल की दुक्की ।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. दुआ] (१) **प्रार्थना । (२) आशीश ।**

दूइ—वि. [हिं. दो] **दो ।**

दूइज—संज्ञा स्त्री. [हिं. दूज] **दूज द्वितीया ।**

दूई—वि. [हिं. दो] **दो ।**

दूक—वि. [सं. द्वैक] **दो एक, कुछ, थोड़े ।**

दूकान—संज्ञा पुं. [हिं. दुकान] **दुकान ।**

दूख—संज्ञा पुं. [हिं. दुख] **कष्ट, पीड़ा ।**

दूखन—संज्ञा पुं. [सं. दूषण] **दोष, ऐब ।**

दूखना—क्रि. स. [सं. दूषण+ना] **दोष लगाना ।**

क्रि. अ. [हिं. दुखना] **कष्ट होना ।**

दूखित—वि. [हिं. दूषित] **जिसमें दोष हो ।**

वि. [हिं. दुखित] **जो दुखी हो, पीड़ित ।**

दूखी—वि. [हिं. दुखी] **दुखी हुई ।** उ. इते मान इहि जोग सँदेसनि सुनि अकुलानी दूखी—३०२६ ।

दूगुन—वि. [सं. द्विगुण] **दूना, दुगना ।**

दूज—संज्ञा स्त्री. [सं. द्वितीया, प्रा. दुइय, दुइज] **किसी पक्ष की दूसरी तिथि, दुइज, द्वितीया ।**

मुहा.—दूज का चाँद होना—(१) **कम दिखायी देनेवाला । (२) जो बहुत दिन बाद दिखायी दे ।**

दूजा—वि. [हिं. दो] **दूसरा, द्वितीय ।**

दूजी—वि. [हिं. दूजा] **दूसरे, दूसरी ।** उ.—सूर स्याम की इहै परेखो इक दुख दूजी हाँसी—३४०५ ।

दूजे—वि. [हिं. दूजा] **दूसरे, अन्य ।** उ.—दूजे करज दूरि करि दैयत, नैंकु न तामैं आवै—१-१४२ ।

दूजौ—वि. [हिं. दूजा] **दूसरा, द्वितीय, अन्य ।** उ.–(क) ऐसौ सूर नाहिं कोउ दूजौ, दूरि करै जम-दायौ–१–६७ । (ख) तुमहिं समान और नहिं दूजौ, काहि भजौं हौं दीन—१-१११ । (ग) कौरव छाँड़ि भूमि पर कैसैं दूजौ भूप कहावै—१-२७५ । (घ) सूरदास कारी कामरि पै, चढ़त न दूजौ रंग—१-३३२ ।

दूत—संज्ञा पुं. [सं.] **संदेश ले जानेवाला मनुष्य, चर ।** उ.—पठवौ दूत भरत कौं ल्यावन, बचन कह्यौ बिल-खाइ—९-४७ । (२) **प्रेमी-प्रेमिका का परस्पर संदेसा ले जाने वाला व्यक्ति ।**

दूतक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूत । (२) राजाज्ञा का प्रचार करनेवाला कर्मचारी ।**

दूतकत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **दूतक का काम ।**

दूतकर्म—संज्ञा पुं. [सं.] **दूत का काम ।**

दूतता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दूत का काम ।**

दूतत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **दूत का काम, दूतता ।** उ.—पांडव कौ दूतत्व कियौ पुनि उग्रसेन कौं राज दयौ—१-२६ ।

दूतपन—संज्ञा पुं. [हिं. दूत+पन] **दूत का काम ।**

दूतर—वि. [सं. दुस्तर] **कठिन, दुस्साध्य ।**

दूतावास—संज्ञा पुं. [सं.] **विदेशी दूत का वास-स्थान ।**

दूति, दूतिका, दूती—संज्ञा स्त्री [सं. दूती] **प्रेम-संदेसा ले जानेवाली स्त्री ।** उ.—(क) निदरि हमैं अधरनि रस पीवति, पढ़ी दूतिका भाइ—६५६ । (ख) ज्यों दूती पर-बधू भोरि कै लै पर-पुरुष दिखावै—१-४२ ।

दूत्य—संज्ञा पुं. [सं.] **दूत का भाव या कार्य ।**

दूदुह——संज्ञा पुं. [सं. दुँडभ] **पानी का साँप, डेंड़हा ।**

दूध—संज्ञा पुं० [सं. दुग्ध] (१) **पय, दुग्ध ।**

मुहा.—दूध उतरना—**थन या स्तन में दूध भर जाना ।** दूध का दूध और पानी का पानी करना—**ठीक-ठीक और निष्पक्ष न्याय करना ।** उ.—हम जातहिं वह उघरि परैगी दूध दूध पानी सौं पानी—१२६२ । दूध का बच्चा—**बहुत छोटा बच्चा जो दूध पर ही निर्भर हो ।** दूध का सा उबाल **शीघ्र ही शांत हो जानेवाला आवेग ।** दूध की मक्खी – **तुच्छ और तिरस्कृत वस्तु ।** दूध की मक्खी की तरह निकालना (निकालकर फेक देना)—**किसी को तुच्छ या तिरस्कार योग्य समझकर अलग कर देना ।** काढ़ि डार्यौ ज्यों दूध माँझ तैं माखी—**दूध की मक्खी की तरह बेकार समझकर अलग कर दिया ।** उ.—मनसा ज्यों बाचा कर्मना अब हम कहत नहीं कछु राखी। सूर काढ़ि डारयौ ब्रज तें ज्यों दूध माँझ त माखी—३४८६ । मुँह से दूध की गंध (बू) आना —**अबोध और अनुभवहीन होना ।** दूध के दाँत(दँतियाँ दँतुलियाँ) **छोटी अवस्था के दाँत ।** उ.—(क) कब द्वै दाँत दूध के देखौं, कब तोतरैं मुख बचन करै—१०–७६ । (ख) हरषित देखि दूध की दँतियाँ ···। तनक तनक सी दूध दँतुलिया—१०–८२ । दूध के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाँत न टूटना—**ज्ञान और अनुभव का अभाव होना।** दूध चढ़ना—(१) **स्तन में दूध कम हो जाना।** (२) **स्तन से अधिक दूध निकलना।** दूध चढ़ाना—**गाय-भैंस का दूध इस तरह चढ़ा लेना कि कम दुहा जा सके और उसके बछड़े के लिए बच जाय।** छठी का दूध याद आना—**बहुत कष्ट या हैरानी होना।** दूध छुड़ाना—**बच्चे की दूध पीने की आदत छुड़ाना।** दूध पीता—(१) **गोदी का, बहुत छोटा।** (२) **अबोध और अनुभवहीन।** किसी चीज का दूध पीना—**किसी वस्तु का सुरक्षित रहना।** दूध बढ़ाना—**बच्चे की दूध पीने की आदत छुड़ाना।** दूध भर आना—**अधिक ममता के कारण स्तन में दूध उतर आना।**

(२) **अनाज के हरे-भरे बीजों का रस।**

मुहा.—दूध पड़ना—**अनाज का तैयारी पर होना।**

(३) **पौधों-पत्तियों से निकलनेवाला सफेद पदार्थ।**

दूधचढ़ीं—वि. स्त्री [हिं. दूध + चढ़ना] **जिनका दूध पहले से अधिक बढ़ गया हो।** उ.—गैयाँ गनी न जाहिं तरुनि सब बच्छ बढ़ीं। ते चरहिं जमुन के तीर दूने दूध चढ़ीं—१०-२४

दूधपिलाई—संज्ञा स्त्री [हिं. दूध+पिलाना] (१) **दूध पिलानेवाली धाय।** (२) **ब्याह की रीति जिसमें माता वर को दूध पिलाने की सी मुद्रा बनाती है।** (३) **वह धन या नेग जो माता को इस रीति के बदले में मिलता है।**

दूधपूत—संज्ञा पुं. [हिं. दूध+पूत] **धन और संतान।** उ.—दूध-पूत की छाँड़ी आस।

दूधबहन—संज्ञा स्त्री. [हिं. दूध+बहन] **दूसरे की माता का दूध पीकर पलनेवाली लड़की जो उस स्त्री के पुत्र की 'दूध-बहन' कहलाती है।**

दूधभाई—संज्ञा पुं. [हिं. दूध+भाई] **दूसरे की माता का दूध पीकर पलन वाला लड़का जो उस स्त्री के पुत्र-पुत्रियों का 'दूधभाई' कहलाता है।**

दूधमुहाँ, दूधमुख—वि. [हिं. दूध+मुँहा, मुख] (१) **दूध पीता बच्चा।** (२) **अबोध और अनुभवहीन (व्यक्ति)।**

दूधा—संज्ञा पुं. [हिं. दूध] (१) **एक तरह का धान।** (२) **अन्न के कच्चे दानों का रस।**

दूधाभाती—संज्ञा स्त्री. [हिं. दूध+भात] **विवाह की एक रीति जिसमें विवाह के चौथे दिन वर-कन्या एक दूसरे को दूध-भात खिलाते हैं।**

दूधिया—वि. [हिं. दूध+इया (प्रत्य.)] (१) **दूध का बना हुआ।** (२) **दूध के रंग का।** (३) **कच्चे होने के कारण जिसका दूध सूखा न हो।**

संज्ञा पुं.—(१) **एक पत्थर।** (२) **एक मिठाई।**

दूधी—संज्ञा स्त्री. [हिं.दुद्धी] **एक तरह की घास।**

दूधो—संज्ञा पुं. [हिं. दूध] **दूध।** उ.—ताको कहा परेखो कीजै माँगत छाँछ, न दूधो—३२७८।

दून—वि. [हिं. दूना] **दुगुना, दूना।** उ.— ललित लट छिटकाति मुख पर देति सोभा दून—१०-१८४।

संज्ञा स्त्री.—(१) **दूने का भाव।**

मुहा—दून की लेना (हाँकना)—**बहुत बढ़-चढ़ कर बातें करना।** दून की सूझना—**बहुत बड़ी या असंभव बात ध्यान म आना।**

(२) **साधारण समय से कुछ जल्दी गाना।**

संज्ञा पुं. [देश.] **पहाड़ों के बीच या नीचे की समतल भूमि, तराई।**

दूनर—वि. [सं. द्विनम] **लचक कर दोहरा होनेवाला।**

दूना—वि. [सं. द्विगुण] **दुगना, दो बार उतना ही।**

मुहा—कलेजा (दिल) दूना होना—**मन में एक उमंग या जोश होना।** दिन दूना रात चौगुना—**प्रति पल बढ़ती या उन्नति होना।**

दूनी—वि. स्त्री. [हिं. दूना] **दुगुनी, दो गुनी।** उ.—(क) वा तैं दूनी देह धरी, असुर न सक्यौ सम्हारि—४३१। (ख) दिन प्रति लेत दान बृंदावन दूनी रीति चलाई—३२५२।

दूनैं, दूनौं, दूनौ—वि. [हिं. दूना] **दूना, दुगुना, बहुत अधिक।** उ० (क) उनके सिर लै गयौ उतारि। कहा पांडवनि आयौ मारि। बिन देखें ताकौं सुख मयौ। देखे तैं दूनौ दुख ठयौ—१-२८६। (ख) तहँ गैयाँ गनी न जाहिं, तरुनी बच्छ बढ़ी। जे चरहिं जमुन कैं तीर, दूनैं दूध चढ़ीं—१०-२४। (ग) यह सुख दास कैं नैननि दिन दिन दूनौ होइ—१०-५६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूब—संज्ञा स्त्री. [सं. दूर्वा] **एक प्रकार की प्रसिद्ध घास जिसे हिंदू मंगल द्रव्य मानते हैं और जिसका व्यवहार वे पूजन में करते हैं** । उ.—दधि-दूब-हरद, फल-फूल-पान कर कनक-थार तिय करतिं गान—६-१६६ ।

दूबदू—क्रि. वि. [हिं. दो या फ़ा. रूबरू] **आमने-सामने** ।

दूबर, दूबरा, दूबरो, दूबला—वि. [हिं. दुबला] (१) **दुबला-पतला, क्षीण, कृश** । उ.—तन स्थूल अरु दूबर होइ । परमातम कौं ये नहिं दोइ—५-४ । (२) **कमजोर, निर्बल** । (३) **दीन, दबैल** ।

दूबा—संज्ञा स्त्री. [हिं. दूब] **'दूब' नाम की घास** ।

दूबिया—वि. [हिं. दूब+इया] **हरी घास का सा रंग** ।

दूबे—संज्ञा पुं. [सं. द्विवेदी] **द्विवेदी ब्राह्मण** ।

दूभर—वि. [सं. दुर्भर=जिसका निबाहना कठिन हो] **जिस (काम) का करना बहुत कठिन हो** ।

दूमना—क्रि. अ. [सं. द्रुम] **हिलना-डोलना** ।

दूरंदेश—वि. [फ़ा.] **आगा-पीछा सोचनेवाला, दूर की बात सोचनेवाला, दूरदर्शी** ।

दूरंदेशी—वि. स्त्री [फ़ा.] **दूरदर्शिता** ।

दूर—क्रि. वि. [सं.] **समीप या निकट का उलटा** । उ.—(क) दूर देखि सुदामा आवत धाइ परस्यौ चरन—१-२०२ । (ख) अब रथ देख परत न धूर । दूर बढ़ि गो स्याम सुंदर बृज सँजीवन मूर—सा. ३८ ।

मुहा—दूर करना—(१) **हटाना, अलग करना** । (२) **मिटाना, न रहने देना** । उ.—जसुमति कोख आय हरि प्रगटे असुर-तिमिर कर दूर—सारा. ३६० । दूर क्यों जायँ (जाइए)—**दूर या अपरिचित की बात न करके निकट या परिचित का उदाहरण देना** । दूर भागना (रहना)—**बचे रहना, पास न जाना, संबंध न स्थापित करना** । दूर होना (१) **हट जाना, छूट जाना** । (२) **मिट जाना, नष्ट होना** । दूर पहुँचना—(१) **शक्ति या साधन के बाहर होना** । (२) **दूर की या महत्व की बात सोचना** । दूर की बात—(१) **महत्व की बात** । (२) **आगे होनेवाली बात** । (३) **दुःसाध्य बात** । दूर की कहना—**दूरदर्शिता की बात कहना** ।

वि.—**जो निकट न हो, जो फासले पर हो** ।

दूरगामी—वि. [सं.] **दूर तक चलने या जानेवाला** ।

दूरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दूरी, अंतर, फासला** ।

दूरत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **दूर होने का भाव, दूरी** ।

दूरदर्शक—वि. [सं.] **दूर तक देखनेवाला** ।

संज्ञा पुं.—**बुद्धिमान या विद्वान व्यक्ति** ।

दूरदर्शन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गिद्ध** । (२ , **विद्वान, पंडित** । (३) **समझदार, बुद्धिमान**

दूरदर्शिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दूर या आगे की बात सोचने की योग्यता या विशेषता, दूरंदेशी** ।

दूरदर्शी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गिद्ध** । (२) **पंडित** ।

वि.—**दूर या आगे की बात सोचनेवाला** ।

दूरदृष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दूर या भविष्य का विचार** ।

दूरबा—संज्ञा पुं. [सं. दूर्वा] **दूब नाम की घास** ।

दूरबीन—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **दूर की चीजें देखने का यंत्र** ।

दूरवर्ती—वि. [सं.] **दूर का, जो दूर हो** ।

दूरवीक्षण—संज्ञा पुं. [सं] **दूरबीन** ।

दूरस्थ—वि. [सं. [**जो दूर हो, दूर का** ।

दूरपात—संज्ञा पुं. [सं.] **अस्त्र जो दूर से मारा जाय** ।

दूरागत— वि. [सं.] **दूर से आया हुआ** ।

दूरि—क्रि. वि. [सं.] **अंतर पर, फासले पर, निकट नहीं** । उ.—(क) दूरि गयौ दरसन के ताईं, व्यापक प्रभुता सब बिसरी—१-११५ । (ख) जद्दपि सूर प्रताप स्याम को दानव दूरि दुरात—३३५१ ।

मुहा.—दूरि करन (करना) (१) **अलग करना, पास से हटाना** । (२) **मिटाना, नाश करना** । उ.—कलिमल दूरि करन के काजैं, तुम लीन्हौ जग मैं अवतार—१-४१ । दूरि करौ—**मिटाओ, नाश करो** । उ.—सूरदास की सबै अविद्या दूरि करौ नँदलाल—१-१५३ । दूरि धर्‌यौ—**छिपा कर या संचित करके रखा हुआ** । उ.—ठाढ़ी कृष्न कृष्न यौं बोलै । जैसैं कोऊ बिपति परे तैं, दूरि धर्‌यौ धन खोलै—१-२५६ ।

दूरिहिं—क्रि. वि. सवि. [हिं. दूर] **बहुत अंतर पर ही, दूर से ही** । उ.—वै देखौ रघुपति हैं आवत । दूरिहिं तैं दुतिया के ससि ज्यौं, ब्योम बिमान महा छबि छावत—६-१६७ ।

दूरी—क्रि. स. [हिं. दूर] **दूर होता है, जाता रहता है** ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.– अरु तैसियै गाल मसूरी । जो खातहिं मुख-दुख दूरी—१०-१८३ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. दूर+ई (प्रत्य.)] **बीच का अंतर।**

दूरोह—संज्ञा पुं. [सं.] **सूर्यलोक जहाँ जाना असंभव है।**

दूरोहण—संज्ञा पुं. [सं.] **सूर्य, रवि।**

दूर्वा—संज्ञा स्त्री [सं.] **'दूब' नाम की घास।**

दूर्वाष्टमी संज्ञा स्त्री [सं.] **भादों सुदी अष्टमी।**

दूलन—संज्ञा पुं० [सं. दोलन] **झूला, हिंडोला।**

दूलभ वि. [सं. दुर्लभ] **जो कठिनता से मिले।**

दूलह, दूल्हा—संज्ञा पुं० [सं. दुर्लभ, प्रा. दुल्लह] **(१) वर, दुलहा, पति, स्वामी। (२) प्रिय, प्रियतम।**

उ.—एकहिं एक परस्पर बूझतिजनु मोहन दूलह आए — २६५६ ।

दूश्य—संज्ञा पुं. [सं.] **तंबू, खमा।**

दूषक—संज्ञा पुं. [सं.] **(१ दोष लगानेवाला (मनुष्य)। (२) दोष उत्पन्न करनेवाला (पदार्थ)।**

दूषण—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) रावण का एक भाई जो शूर्पणखा की नाक और कान कटने के पश्चात श्री रामचंद्र के हाथ से मारा गया। (२) दोष, ऐब, अवगुण। (३) दोष लगाने की क्रिया या भाव।**

दूषणारि—संज्ञा पुं. [सं.] **दूषण दैत्य के शत्रु राम।**

दूषणीय—वि. [सं.] **दोष लगाने योग्य।**

दूषन—संज्ञा पुं. [सं. दूषण] **दोष, अपराध, पाप।**

उ.—जो माँगौ सो देहुँ तुरत हीं, हीरा रतन-भँडारी। रहु-रहु राजा, यौं नहिं कहिए, दूषन लागै भारी—८-१४। (ख) तब हरि कह्यौ हत्यौ बिन दूषन हलधर भेद बतायौ।

दूषना—क्रि. स. [सं. दूषण] **दोष या कलंक लगाना।**

दूषि, दूषिका—संज्ञा स्त्री. [सं. दूषिका] **आँख का मैल।**

दूषित—वि. [सं०] **जिसमें दोष हो, बुरा।**

दूष्य—वि. [सं०] **(१) दोष लगाने योग्य। (२) निंदा के योग्य। (३) तुच्छ, हेय।**

संज्ञा पुं.—**(१) वस्त्र, कपड़ा। (२) खेमा, तंबू।**

दूसर, दूसरा—वि. [हिं. दूसरा] **(१) दूसरा, भिन्न, अन्य।** उ०—आदि निरंजन, निराकार, कोउ हुतौ न दूसर—२-३६। **(२) अन्य, और।**

दूसरे, दूसरैं—वि. [हिं. दो, दूसरा] **दूसरा, द्वितीय**

उ.—दूसरैं कर बान न लैहों। सुनि सुग्रीव, प्रन मेरी, एकहिं बान असुर सब हैहौं—९-१५७।

दूहना—क्रि. स. [हिं. दुहना] **थन से दूध निकालना**

दूहनी - संज्ञा स्त्री. [हिं. दोहनी] **दूध दुहने का पात्र**

दूहा—संज्ञा पुं [हिं. दोहा] **'दोहा' नामक छंद।**

दूहिया—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह का चूहा।**

दृक—संज्ञा पुं. [सं०] **छेद, छिद्र।**

संज्ञा पुं. [सं. दृग्भू] **हीरा।**

दृकर्ण—संज्ञा पुं. [सं.] **साँप जो आँख से सुनता भी है**

दृक्क्षेप—संज्ञा पुं. [सं.] **देखना, अवलोकन।**

दृक्पथ—संज्ञा पुं. [सं.] **दृष्टि की पहुँच।**

मुहा.— दृक्पथ में आना—**दिखायी देना।**

दृक्पात—संज्ञा पुं. [सं.] **देखना, अवलोकन।**

दृक्श्रुति—संज्ञा पुं. [सं.] **साँप जो आँख से सुनता है।**

दृगंचल—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) पलक। (२) चितवन।**

दृग—संज्ञा पुं. [सं. दृक्] **नेत्र, आँख।** उ.—दृग देखत जनम गयौ। या झूठी माया कैं कारन, दुहुँ दृग अंध भयौ—१-२९१।

मुहा.—दृग डालना (देना)—**देखना।** दृग फेरना—**(१) आँख हटा लेना, न देखना। (२) अप्रसन्न हो जाना।**

(२) देखने की शक्ति, दृष्टि। (३) दो की संख्या

दृगमिचाव—संज्ञा पुं. [हिं. दृग+मीचना] **आँखमिचौनी नाम का खेल।**

दृगगात—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दृष्टि की गति या पहुँच।**

दृगगोचर—वि. [सं.] **जो आँख से दिखायी दे।**

दृग्भू—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) बज्र। (२) सूर्य। (३) साँप।**

दृग्वृत्त - संज्ञा पुं. [सं.] **क्षितिज।**

दृढ़—वि. [सं.] **(१) कसकर बँधा या मिला हुआ। (२) कड़ा, जो जल्दी न टूटे। (३) बलवान, हृष्टपुष्ट। (४) जो जल्दी नष्ट या विचलित न हो। (५) निश्चित, ध्रुव। (६) निश्चय या सिद्धांत पर अटल, निडर, कड़े दिल का।** उ.—मैं हूं याकौं दृढ़ देखौं। लखि बिस्वास उपदेसौं—४-६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रि. वि. दृढ़ता के साथ, अटल स्वर में। उ.—दुर्योधन से कह्यौ दूत ह्वै भक्त पच्छ दृढ़ बोले—सारा. ७७३।

संज्ञा पुं.—(१) लोहा। (२) विष्णु। (३) धृतराष्ट्र का एक पुत्र। (४) गणित का वह अंक जो दूसरे अंक से पूरा विभाजित न हो सके; जैसे १, ३ आदि।

दृढ़कर्मा- वि. [सं. दृढ़कर्मन्] धीरता और स्थिरता से अपने काम में लगा रहनेवाला।

दृढ़कारी—वि. [सं. दृढ़कारिन्] (१) दृढ़ता और स्थिरता से काम करनेवाला। (२) मजबूत करनेवाला।

दृढ़चेता—वि. [सं.-चेतस्] दृढ़ विचारवाला।

दृढ़ताइ, दृढ़ताई—संज्ञा स्त्री. [सं. दृढ़ता] (१) दृढ़ होने का भाव, उ.—(क) जीव न तजै स्वभाव जीव कौ, लोक बिदित दृढ़ताई। तौ क्यौं तजै नाथ अपनौं प्रन ? है प्रभु की प्रभुताई—१-२०७। (ख) दृढ़ताई मैं प्रगट कन्हाई-७६६। (२) मजबूती। (३) स्थिरता। (४) पक्कापन।

दृढ़त्व—संज्ञा पुं. [सं.] दृढ़ होने का भाव।

दृढ़धन्वा, दृढ़धन्वी—वि. [सं. दृढ़धन्वन्] (१) जो धनुष चलाने में दृढ़ हो। (२) जिसका धनुष दृढ़ हो।

दृढ़निश्चय—वि. [सं.] जो निश्चय पर डटा रहे।

दृढ़नेमि—वि. [सं.] जिसकी धूरी मजबूत हो।

दृढ़पाद—वि. [सं.] जो विचार का पक्का हो।

दृढ़प्रतिज्ञ—वि. [सं.] जो निश्चय पर डटा रहे।

दृढ़भूमि—संज्ञा स्त्री. [सं.] मन को स्थिर करने का अभ्यास।

दृढ़मुष्टि—वि. [सं.] (१) जोर से या कसकर पकड़ने वाला। (२) कंजूस, कृपण।

दृढ़व्रत—वि. [सं.] जो निश्चय पर डटा रहे।

दृढ़संध—वि. [सं.] जो संकल्प पर डटा रहे।

दृढ़ांग—वि. [सं.] जिसका अंग मजबूत हो, हृष्ट-पुष्ट।

दृढ़ाइ, दृढ़ाई—क्रि. स. [हिं. दृढ़ाना] दृढ़ या पक्का करके।

प्र.—दीन्हो दृढ़ाइ—दृढ़ कर दिया। उ.-पाछे बिबिध ज्ञान जननी को दीन्हों कपिल दृढ़ाइ। लेत दृढ़ाइ-मजबूत या दृढ़ कर लेते हैं। उ.-सूर प्रभु सन और यह कहि प्रेम लेत दृढ़ाई—३०२२।

संज्ञा स्त्री [हिं. दृढ़] दृढ़ता, मजबूती।

दृढ़ाना—क्रि. स. [हिं. दृढ़+ना (प्रत्य.)] दृढ़, पक्का या मजबूत करना।

क्रि. अ.—(१) कड़ा या दुष्ट होना। (२) स्थिर होना।

दृढ़ानो—क्रि. अ. [हिं. दृढ़ाना] स्थिर या दृढ़ हुआ है। उ.—पहिलो जोग कहा भयो ऊधो अब यह जोग दृढ़ानो —३०५६।

दृढ़ाय—क्रि. स. [हिं. दृढ़ाना] दृढ़ या पक्का करके। उ.—(क) करि उपदेस ज्ञान हरि भक्तिहि अरु बैराग्य दृढ़ाय-- सारा. १३६। (ख) देखि चरित्र बिनोद लाल के बिस्मित भे द्विजराय। अद्भुत केलि कृपा करि कीनी द्विज को ज्ञान दृढ़ाय—८०१।

दृढ़ायुध—वि. [सं.] अस्त्र ग्रहण करने में दृढ़।

दृढ़ायौ—क्रि. स. [हिं. दृढ़ाना] दृढ़ या पक्का किया। उ.—सुन कटु बचन गये माता पै तब उन ज्ञान दृढ़ायौ —सारा. ७३।

दृढ़ाव—संज्ञा पुं. [हिं. दृढ़ना+आव] दृढ़ता।

दृढ़ावत—क्रि. स. [हिं. दृढ़ाना] दृढ़ या पक्का करते हैं। उ.—कहुँ उपदेस कहूँ जैबे को कहूँ दृढ़ावत ज्ञान—सारा. ६६६।

दृत—वि. [सं.] सम्मानित, आवृत।

दृता—वि. स्त्री. [सं. दृत] जो (स्त्री) सम्मान योग्य हो।

दृन्भू—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वज्र। (२) सूर्य। (३) राजा।

दृप्त -वि. [सं.] (१) गर्व से ऐंठा या इतराया हुआ। (२) हर्ष से फूला या भरा हुआ।

दृप्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चमक, कांति। (२) प्रकाश। (३) तेज, तेजस्विता। (४) उग्रता। (५) गर्व।

दृप्र—वि. [सं.] (१) प्रबल। (२) घमंडी, गर्वी।

दृब्ध—वि. [सं.] (१) गुंथा हुआ (२) डरा हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृशा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आँख।**

दृशान—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रकाश, आभा।**

दृशि, दृशी—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) **दृष्टि।** (२) **प्रकाश।**

दृश्—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देखना, दर्शन।** (२) **दिखानेवाला।** (३) **देखनेवाला।**

संज्ञा स्त्री.—(१) **दृष्टि।** (२) **आँख।** (३) **दो की संख्या।**

दृश्य—वि. [सं.] (१) **जिसे देखा जा सके।** (२) **जो देखने योग्य हो, दर्शनीय।** (३) **सुंदर।** (४) **जानने योग्य।**

संज्ञा पुं.—(१) **देखने का पदार्थ या विषय।** (२) **मनोरंजक व्यापार, तमाशा।** (३) **नाटक।**

दृश्यमान—वि. [सं.] (१) **जो दिखायी देता हो।** (२) **चमकीला, प्रकाशयुक्त।** (३) **सुंदर, मनोरम।**

दृषत्, दृषद्—संज्ञा स्त्री [सं. दृषत्] **पत्थर, शिला।**

दृषद्वान—वि. [सं. दृषद्वत्] **पथरीला।**

दृष्ट—वि. [सं.] (१) **देखा हुआ।** (२) **जाना हुआ।** (३) **प्रत्यक्ष, प्रकट, दृश्य।**

संज्ञा पुं.—(१) **दर्शन।** (२) **साक्षात्कार।**

दृष्टकूट—संज्ञा पुं० [सं.] (१) **पहेली।** (२) **ऐसी कविता जिसका अर्थ शब्दों के साधारण अर्थ से स्पष्ट न हो, बल्कि प्रसंग या रूढ़ अर्थों से जाना जाय जो कवि को अभीष्ट हों। ऐसी कविता में एक ही शब्द का प्रयोग एक ही पद में विभिन्न अर्थों में किया जा सकता है। सूरदास की 'सहित्यलहरी' म ऐसे ही पद हैं।**

दृष्टमान—वि.—[सं. दृश्यमान] **प्रकट, व्यक्त, प्रत्यक्ष।** उ.—दृष्टमान नास सब होई। साची व्यापक नसै न सोई।

दृष्टवत्—वि. [सं.] (१) **प्रत्यक्ष या व्यक्त के समान।** (२) **लौकिक, सांसारिक।**

दृष्टवाद—संज्ञा पुं. [सं.] **एक दार्शनिक सिद्धांत जो केवल प्रत्यक्ष को मानता है।**

दृष्टव्य—वि. [सं.] **देखने योग्य,**

दृष्टांत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **उदाहरण।** (२) **एक अर्थालंकार।**

दृष्टार्थ—संज्ञा पुं. [सं.] **वह शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट**

दृष्टि—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) **देखने की शक्ति या**

मुहा.—दृष्टि मारी जाना—**देखने की शक्ति** [illegible] **जाना।**

(२) **देखने के लिए नेत्रों की प्रवृत्ति, अवलो**

मुहा.—दृष्टि करना (चलाना, देना, फेंकना, **नजर डालना, देखना।** दृष्टि चूकना—**नजर का** [illegible] **उधर होना।** दृष्टि फिरना—(१) **नेत्रों का** [illegible] **ओर हो जाना।** (२) **पहले की तरह प्रेम या** [illegible] **का भाव न रह जाना।** दृष्टि फेरना—(१) [illegible] **ओर देखना।** (२) **पहले की तरह प्रेम या** [illegible] **का भाव न रखना।** दृष्टि बचाना—(१) **सा**[illegible] **आना, सामना बचाना।** (२) **छिपाना, न दिख** [illegible] दृष्टि बाँधना—**ऐसा जादू करना कि कुछ का** [illegible] **दिखायी दे।** दृष्टि लगाना—(१) **टकटकी** [illegible] **देखना, ताकना।** (२) **नजर लगाना।**

(३) **नेत्र-ज्योति-प्रसार जिससे वस्तु के** [illegible] **आदि का बोध हो, दृक्पथ।**

मुहा.—दृष्टि पड़ना—**दिखाई देना।** उ.—([illegible] नैंकु दृष्टि जहँ पर गई, सिव-सिर टोना लागे ([illegible] —१-४४। (ख) मेरी दृष्टि परें जा दिन तें [illegible] मान हरि लीनो री। दृष्टि पर चढ़ना—(१) [illegible] **में सुंदर लगना, निगाह में जँचना।** (२) **आँ**[illegible] **खटकना।** दृष्टि बिछाना—**अत्यंत प्रेम या** [illegible] **प्रतीक्षा करना।** (२) **किसी के आने पर** [illegible] **प्रेम या श्रद्धा दिखाना।** दृष्टि में आना—[illegible] **पड़ना।** दृष्टि से उतरना (गिरना)—**पहले** [illegible] **प्रेम या श्रद्धा का पात्र न रह जाना।**

(४) **देखने के लिए खुली हुई आँख।**

मुहा. दृष्टि उठाना—**देखने के लिए आँख उ**[illegible] दृष्टि गड़ाना (जमाना)—**एकटक देखना।** [illegible] चुराना—**सामने न पड़ना।** दृष्टि जुड़ना (मि[illegible] **देखा देखी होना।** दृष्टि जोड़ना (मिलाना)—[illegible] **देखी करना।** दृष्टि फिसलना—**चमक-दमक के** [illegible] **नजर न ठहरना।** दृष्टि भर देखना—**जी** [illegible] **निहारना।** उ.—सूर श्रीगोपाल की छवि [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लखि लेहि । प्रानपति की निरखि सोभा पलक परन न देहि । दृष्टि मारना-(१) **आँख से इशारा करना। (२) आँख के इशारे से किसी काम के लिए मना करना** । दृष्टि में समाना-**अच्छा लगने के कारण ध्यान में बना रहना**। दृष्टि रखना--(१) **ध्यान रखना, निगरानी करना** (२) **देख-रेख में रखना, चौकसी रखना**। दृष्टि लगना-(१) **नजर का पड़ना, दिखायी देना। (२) देखादेखी के बाद प्रेम होना। (३) नजर लगना**। दृष्टि लगाना--(१) **टकटकी बाँधकर देखना। (२) ताकना। (३) प्रेम करना। (४) नजर लगाना**। दृष्टि लगाई—**टकटकी बाँधकर देखते रहे**। उ.--उनके मन को कह कहौं, ज्यौं दृष्टि लगाई । लैया नोई बृषभ सौं, गैया बिसराई—७१५। दृष्टि लड़ना—(१) **देखा-देखी होना। (२) प्रेम होना**। दृष्टि लड़ाना-(१) **खूब घूरना या ताकना**।

(५) **परख, पहचान, । (६) कृपादृष्टि। (७) आशा। (८) अनुमान । (९) उद्देश्य ।**

दृष्टिकूट—संज्ञा पुं. [हिं. दृष्टकूट] (१) **पहेली । (२) दृष्टकूट, जिनका अर्थ सरलता से न खुले ।**

दृष्टिकोण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वह अंग जिससे कोई बात सोची-समझी जाय । (२) किसी विषय में निश्चित मत । (३) नाटक का एक दृश्य ।**

दृष्टिक्षेप—संज्ञा पुं. [सं.] **दृष्टिपात, देखना ।**

दृष्टिगत—वि. [सं.] **जो दिखायी पड़ा हो ।**

दृष्टिगोचर—वि. [सं.] **जो देखा जा सके ।**

दृष्टिनिपात, दृष्टिपात—संज्ञा पुं. [सं.] **देखना ।**

दृष्टिपूत—वि. [सं] (१) **जो देखने में शुद्ध जान पड़े। (२) जिसके देखने से आँखें पवित्र हों।**

दृष्टिबंध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वह जादू या क्रिया जिससे देखनेवाले को कुछ का कुछ दिखायी पड़े। (२) हाथ की सफाई ।**

दृष्टिबंधु—संज्ञा पुं. [सं.] **जुगनू, खद्योत ।**

दृष्टिमान्—वि. [सं. दृष्टिमत्] **आँख या दृष्टिवाला ।**

दृष्टिरोध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दृष्टि की रोक या रुकावट, देखने की बाधा । (२) आड़, ओट ।**

दृष्टिवंत—वि. [सं. दृष्टि+वंत (प्रत्य.)] (१) **आँख या दृष्टिवाला । (२) ज्ञानी, ज्ञानवान् ।**

दृश्यमान—वि. [सं. दृश्यमान] **जो दिखाई पड़ रहा हो** । उ.—दृस्यमान बिनास सब होइ । साच्छी ब्यापक, नसै न सोइ—५-२ ।

दे—संज्ञा स्त्री. [सं. देवी] **स्त्रियों के लिए आदर सम्मान-सूचक शब्द, देवी** । उ.--यह छवि सूरदास सदा रहे बानी । नँदनंदन राजा राधिका दे रानी—१७६२ ।

देइ, देई—क्रि. स. [हिं. देना] **देता है, प्रदान करता है** । उ.—तद्यपि हरि तिहिं निज पद देइ—६-४ ।

संज्ञा स्त्री [सं. देवी] (१) **देवी। (२) स्त्रियों के लिए आदर या सम्मान-सूचक शब्द ।**

देउ—संज्ञा पुं. [सं. देव] (१) **देव, देवता । (२) पुरुषों के लिए आदर या सम्मान-सूचक शब्द ।**

देउर—संज्ञा पुं. [हिं. देवर] **पति का छोटा भाई ।**

देउरानी—संज्ञा स्त्री [हिं. देवरानी] **पति के छोटे भाई की पत्नी ।**

देख—संज्ञा स्त्री [हिं. देखना] **देखने की क्रिया या भाव ।**

मुहा.—देख में—**प्रत्यक्ष आँख के सामने ।**

क्रि. स.—(१) **देखकर। (२) उपाय करके ।**

मुहा.—देख लेंगे—**उपाय या प्रतिकार करेंगे, समझ लेंगे ।**

देखई—क्रि. स. [हिं. देखना] **देखता है** । उ.— परनि परेवा प्रेम की, (रे) चित लै चढ़त अकास । तहँ चढ़ि तीय जो देखई, (रे) भू पर परत निसास—१-३२५ ।

देखत—क्रि. स. [हिं. देखना] **देखने से, देखते ही, देखने में या पर** । उ.—(क) मोहन के मुख ऊपर वारी । देखत नैन सबै सुख उपजत, बार बार तातैं बलिहारी—१-२६ । (ख) काकैं द्वार जाइ होउँ ठाढ़ौ, देखत काहि सुहाउँ—१-२२८ ।

मुहा.—देखत-सुनत—**जानकारी प्राप्त करके, समझ-बूझ कर ।**

प्र.—देखत ही रैहौ—**सिर्फ देखते या ताकते रह जाओगे, कुछ कर न सकोगे** । उ—लैहौं छीनि दूध दधि माखन देखत ही तुम रैहौ—१०८९ ।

देखति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. देखना] **देखती है ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा.—देखति रहियौ—**निगरानी रखना, नजर या ध्यान रखना।** उ.—मथुरा जाति हौं बेचन दहियौ। मेरे घर कौ द्वार सखी री तब लौ देखति रहियौ—१०-३१३।

देखते—क्रि. स. [हिं. देखना] (१) **निहारते।** (२) **परखते।**

मुहा.—किसी के देखते—**किसी की उपस्थिति में, किसी के सामने।** देखते-देखते—(१) **आंखों के सामने।** (२) **तुरंत, तत्काल।** देखते रह जाना—**हक्का-बक्का रह जाना, चकित हो जाना।** हम भी देखते—**हम समझ लेते, हम उपाय या प्रतिकार करते।**

देखत्यौ—क्रि. स. [हिं. देखना] **देखता, उपाय करता, प्रतिकार करता।** उ.—हौं तौ न भयौ री घर देखत्यौ तेरी यौं अर, फोरतो बासन सब जानति बलैया—३७२।

देखन—संज्ञा स्त्री [हिं. देखना] (१) **देखने के उद्देश्य से, दृष्टिगोचर-हेतु।** उ.—सर-क्रीड़ा दिन देखन आवत, नारद, सुर तैंतीस—९-२०। (२) **देखने की क्रिया, भाव या ढंग।**

देखनहार, देखनहारा, देखनहारो, देखनहारौ—संज्ञा पुं. [हिं. देखना+हारा (प्रत्य.)] **देखनेवाला।**

देखनहारी—संज्ञा स्त्री [हिं. देखनहार] **देखनेवाली।**

देखना—क्रि. स. [सं. दृश्, द्रक्ष्यति, प्रा. देक्खइ] (१) **अवलोकन करना, निहारना, ताकना।**

यौ.—देखना-भालना—**जांच या निरीक्षण करना।**

मुहा.—देखना-सुनना—**पता लगाना, जानकारी प्राप्त करना।** देखना चाहिए—**कह नहीं सकते कि क्या होगा, फल की प्रतीक्षा करो।** (२) **जांच या निरीक्षण करना।** (३) **खोजना, ढूंढ़ना।** (४) **परखना, परीक्षा करना।** (५) **ध्यान या निगरानी रखना।** (६) **सोचना-विचारना।** (७) **भोगना, अनुभव करना।** (८) **पढ़ना, बांचना।** (९) **गुण-दोष का पता लगाना।** (१०) **संशोधन करना।**

देखनि, देखनी—संज्ञा स्त्री [हिं. देखना] (१) **देखने की क्रिया या भाव।** (२) **देखने का ढंग।**

देखने—क्रि. स. [हिं. देखना] **ताकने, निहारने।**

मुहा. देखने में (१) **ऊपरी या साधार[ण] बात, व्यवहार या लक्षण में।** (२) **रूप-रंग [या] आकृति में।**

देखभाल—संज्ञा स्त्री [हिं. देखना+भालना] (१) **जांच पड़ताल, निगरानी।** (२) **देखा-देखी, दर्शन।**

देखराई—संज्ञा स्त्री [हिं. दिखलाई] (१) **दर्शन।**

प्र.—देहु देखराई—**दिखला दो, प्रत्यक्ष करा दो।** उ.—ब्रज जाहु देहु गोपिन देखराई - ३४४३।

(२) **देखने का नेग, दिखाई।**

देखराना—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] **प्रत्यक्ष कराना।**

देखबी—क्रि. स. [हिं. देखना] **देखेंगे।** उ. सुदिन … जब देखबी बन बहुत बाल बिसाल—१८२८।

देखरावत—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] **दिखाते हैं, प्रत्य[क्ष] कराते हैं, समझाते हैं।** उ. (क) तीर चला[वन] सिष्य सिखावत धर निसान देखरावत—सारा. ६६० (ख) सूरदास प्रभु काम-सिरोमनि कोक-क[ला] देखरावत—१६०८।

देखरावना—क्रि. स. [हिं. दिखलाना] **प्रत्यक्ष करना।**

देख-रेख—संज्ञा स्त्री [हिं. देखना+सं. प्रेक्षण] **देखभाल, निगरानी, निरीक्षण।**

देखहिंगे—क्रि. स. [हिं. देखना] **देखेंगे, परखेंगे।** उ.—जब लौं एक दुहौंगे तब लौं, चारि दुहौंगो नंद दुहा[ई]। झूठहिं करत दुहाई प्रातहिं, देखहिंगे तुम्हरी अधिका[ई] —६६८।

देखाई—संज्ञा स्त्री [हिं. दिखाई] **देखने का नेग।**

देखाऊ—वि. [हिं. देखना] (१) **झूठी तड़क भड़[क] वाला, जो देखने में ही सुंदर लगे (काम का [न] हो)।** (२) **जो असली न हो, बनावटी।**

देखा—क्रि. स. [हिं. देखना] **निहारा, ताका, अवलोक[न]**

मुहा.--देखा चाहिए--**कह नहीं सकते कि आगे क्या होगा, फल की प्रतीक्षा करो।** देखा जायगा—(१) **फिर विचार किया जायगा।** (२) **पीछे जो कुछ करना होगा किया जायगा।**

देखादेखी—संज्ञा स्त्री. [हिं. देखना] **देखने की दशा [या] भाव, दर्शन, साक्षात्कार।**

क्रि. वि.—**दूसरों को देखकर, दूसरों के अनुसार**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखाना—क्रि. स. [हिं. दिखाना] **अवलोकन कराना।**

देखाभाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. देखभाल] (१) **जाँच-पड़ताल, निगरानी।** (२) **दर्शन, देखादेखी।**

देखाव—संज्ञा पुं. [हिं. देखना] (१) **दृष्टि की सीमा।** (२) **रंग-रूप दिखाने का भाव, बनाव।** (३) **तड़क-भड़क, ठाट बाट।**

देखावट—संज्ञा स्त्री. [हिं. दिखाना] (१) **रंग-रूप दिखाने की क्रिया या भाव।** (२) **ठाट-बाट।**

देखावना—क्रि. स. [हिं. दिखाना] **अवलोकन कराना।**

देखि—क्रि. स. [हिं. देखना] **देखकर।** उ.—पहिरे राती चूनरी, सेत उपरना सोहै (हो)। कटि लहँगा नीलौ बन्यौ, को जो देखि न मोहै (हो)—१-४४।

देखिबो, देखिबौ—संज्ञा पुं. [हिं. देखना] **देखना, देखने की क्रिया या भाव।** उ.—(क) पद-नौका की आस लगाए, बूड़त हौं बिनु छाँह। अजहूँ सूर देखिबौ करिहौ, बेगि गहौ किन बाँह—१-१७५। (ख) बहु रयौ देखिबो वहि भाँति—२६४५।

देखियत—क्रि. स. [हिं. देखना] **दिखायी देता हैं, दिखता है।** (क) गोबिंद चलत देखियत नीके—४३२। (ख) मन कठोर तन गाँठि प्रगट ही, छिद्र बिसाल बनाए। अन्तर सून्य सदा देखियत है, निज कुल बंस भुलाए—६६१।

देखियै- क्रि. स. [हिं. देखना] **देख लीजिए, निहारिए, दृष्टि डालिए।** उ.—सूरदास प्रभु समुझि देखियै, मैं बड़ तोहिं करि दीन्हौ—१-१९१।

देखी क्रि. स. [हिं. देखना] (१) **अवलोकन की।** (२) **पायी, अनुभव की।** उ.—जीवन-आस प्रबल स्तुति लेखी। साच्छात सो तुममैं देखी— १-२८४।

यौ.—देखी-सुनी— **न देखी है और न कभी सुनी है।** उ.—अनहोनी कहुँ भई कन्हैया देखी-सुनी न बात—१०-१८६।

देखे—क्रि. स. [हिं. देखना] **दीखे, दिखायी दिये, देखने पर, देखने से।** उ.—(क) गरुड़ चढ़े देखे नँदनंदन ध्यान चरन लपटानी—१-१५०। (ख) बिन देखें ताकौं सुख भयौ। देखे तें दूनौ दुख ठयौ —१-२८८।

मुहा.- देखे रहियौ—**खबरदारी रखना, ध्यान या निगरानी रखना।** उ.—(क) सूरदास बल सौं कहै जसुमति देखे रहियौ प्यारे—४१३। (ख) सूरस्याम कौं देखे रहियौ मारै जनि कोउ गाइ—६८०।

देखैं—क्रि. स. [हिं. देखना] **देखे, देखने से, देखते हैं।** उ.—बिनु देखैं, बिनुहीं सुनैं, ठगत न कोऊ बाच्यौ (हो)—१-४४।

देखैंगे —क्रि. स. [हिं. देखना] **देखेंगे, अवलोकन करेंगे।** उ.—नंदनंदन हमको देखैंगे, कैसैं करि जु अन्हैबौ—७७६।

देखौं—क्रि. स. [हिं. देखना] **देखता हूँ।** उ.—कौन सुनैं यह बात हमारी। समरथ और न देखौं तुम बिनु, कासौं बिथा कहौं बनबारी—१-१६०।

देखौ—क्रि. स. [हिं. 'देखना' का संबोधन रूप] **अवलोकन करो, देख कर ज्ञान प्राप्त करो।** उ.—प्रभु कौ देखौ एक सुभाइ। अति गंभीर उदार-उदधि हरि, जान-सिरोमनि राइ—२-८।

देखौआ—वि. [हिं. दिखाऊ] (१) **केवल ऊपरी या झूठी तड़क-भड़कवाला।** (२) **बनावटी, दिखावटी।**

देख्यौ—क्रि. स. भूत. [हिं. 'देखना'] (१) **देखा।** उ.—सुक नृप ओर कृपा करि देख्यौ—१-३४२। (२) **समझा, पाया, अनुभव किया।** उ.—हरि सौं मीत न देख्यौ कोई—१-१०।

देग—संज्ञा पुं. [फा.] **चौड़े मुँह का बड़ा बरतन।**

देगचा—संज्ञा पुं. [फा. देगचः] **छोटा देग।**

देत—क्रि. स. [हिं. देना] **देते ह, प्रदान करते हैं।** उ.—बिनु दीन्हैं ही देत सूर-प्रभु ऐसे हैं जदुनाथ गुसाईं—१-३।

देति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. देना] **देती है।**

प्र.—भरमाइ देति—**भ्रम में डाल देती हैं।** उ.— हरि, तेरौ भजन कियौ न जाइ। कह करौं, तेरी प्रबल माया देति मन भरमाइ—१-४५।

देत्यौ—क्रि. स. [हिं. देना] **देता, प्रदान करता।** उ.—सूर रोम प्रति लोचन देत्यौ, देखत बनत गुपाल —६४३।

देदीप्यमान—वि. [सं.] **प्रकाशपूर्ण, चमकदार।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देन—क्रि. स. [हिं. देना] देने को । उ.—अंबरीष कौं साप देन गयौ, बहुरि पठायौ ताकौं—१-११३ ।

मुहा—देने-लेने में होना-संबंध रखना । उ.—ये पांडव क्यौं गाड़िऐ, धरनीधर डोलैं । हम कछु लेन न देन मैं, ये बीर तिहारे—१-२३८ ।

संज्ञा स्त्री.—(१) देने की क्रिया या भाव । (२) दी हुई या प्रदान की हुई वस्तु या चीज ।

देनदार—संज्ञा पुं. [हिं. देना+फा. दार] ऋणी ।

देनदारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. देनदार] ऋणी होनेकी स्थिति ।

देनलेन—संज्ञा पुं. [हिं. देना+लेना] (१) सामान्य व्यवहार । (२) व्याज पर रुपया उधार देना ।

देनहार, देनहारा, देनहारो, देनहारौ—वि. [हिं. देना+हार (प्रत्य.)] देनेवाला, दाता ।

देनहारी—वि. स्त्री. [हिं. देनहारा] देनेवाली, दात्री ।

देना—क्रि. स. [सं. दान] (१) प्रदान करना । (२) सौंपना, हवाले करना । (३) थमाना, हाथ में देना । (४) रखना, डालना, लगाना । (५) मारना, प्रहार करना । (६) भोगने को प्रवृत्त करना, अनुभव कराना । (७) निकालना, उत्पन्न करना । (८) बंद करना, उड़काना ।

संज्ञा पुं.—ऋण जो चुकाना हो ।

देमान—संज्ञा पुं. [फ़ा. दीवान] मंत्री, दीवान ।

देय—वि. [सं.] देने या दान करने योग्य ।

देर, देरी—संज्ञा स्त्री. [फा. देर] (१) विलंब । (२) समय ।

देव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) स्वर्ग में रहनेवाले अमर प्राणी, देवता, सुर । (२) पूज्य व्यक्ति या सम्मानित व्यक्ति । (३) व्यक्ति जो बहुत तेजवान हो । (४) बड़ों के लिए सम्मानसूचक संबोधन । (५) राजा के लिए आदरसूचक संबोधन । (६) मेघ ।

संज्ञा पुं. [फ़ा.] दैत्य, दानव, राक्षस ।

देवअंशी—वि. [स. देव+अंशिन्] जो किसी देवता के अंश से उत्पन्न हो या किसी देवता का अवतार हो ।

देवऋण—संज्ञा पुं० [सं.] देवों के प्रति कर्तव्य, यज्ञादि ।

देवऋषि—संज्ञा पुं. [सं.] देवलोक के ऋषि, नारदादि ।

देवक—संज्ञा पं [सं.] देवता, सुर ।

देवकन्या—संज्ञा स्त्री [सं.] देव-पुत्री, देवी ।

देवकर्म, देवकार्य—संज्ञा पुं. [सं.] देवताओं को प्रसन्नता के लिए किये गये यज्ञादि कर्म ।

देवकी—संज्ञा स्त्री [सं.] कंस की चचेरी बहन जो वसुदेव को ब्याही थी । विवाह के बाद ही नारद के उकसाने पर कंस ने पति-सहित इसे बंदी कर लिया और बड़ी क्रूरता से इसके छः बालक मार डाले । इसीके आठवें गर्भ से श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था ।

देवकीनंदन—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण ।

देवकीपुत्र—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण ।

देवकीमातृ—संज्ञा पुं० [सं.] श्रीकृष्ण, जिनकी माता देवकी थी ।

देवकीय—वि. [सं.] देवता का, देवता-संबंधी ।

देवकीसुत—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण ।

देवकुंड—संज्ञा पुं. [सं.] प्राकृतिक जलाशय ।

देवगज—संज्ञा पुं. [सं.] ऐरावत ।

देवगण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देवताओं का वर्ग । (२) बहुत से देवताओं का समूह ।

देवगति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मृत्यु के बाद स्वर्ग-प्राप्ति । उ.—श्री रघुनाथ धनुष कर लीनो लागत बान देवगति पाई । (२) मृत्यु के बाद देवयोनि की प्राप्ति ।

देवगन—संज्ञा पुं. [सं. देवगण] देवताओं का वर्ग ।

देवगर्भ—संज्ञा पुं. [सं.] वह व्यक्ति जो देवता के वीर्य से उत्पन्न हुआ हो ।

देवगांधार—संज्ञा पुं. [सं.] एक राग का नाम ।

देवगांधारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक रागिनी ।

देवगायक, देवगायन—संज्ञा पुं. [सं.] गंधर्व ।

देवगिरा—संज्ञा स्त्री. [सं.] देववाणी, संस्कृत भाषा ।

देवगिरी—संज्ञा पुं. [सं.] एक रागिनी ।

देवगुरु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देवताओं के गुरु, बृहस्पति । (२) देवताओं के पिता, कश्यप ।

देवगुही—संज्ञा स्त्री. [सं.] सरस्वती ।

देवगृह—संज्ञा. पुं. [सं.] देवालय, मंदिर ।

देवचिकित्सक—संज्ञा पुं. [सं.] देवताओं के वैद्य, अश्विनीकुमार । (२) दो की संख्या ।

देवज—वि. [सं.] देवता से उत्पन्न ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवजुष्ट—वि. [सं.] देवता को चढ़ाया हुआ।

देवट—संज्ञा पुं. [सं.] शिल्पी, कारीगर।

देवठान—संज्ञा पुं. [सं. देवोत्थान] (१) विष्णु भगवान का सोकर उठना। (२) कार्त्तिक शुक्ला एकादशी जब भगवान विष्णु सोकर उठते हैं।

देवढ़ी—संज्ञा स्त्री [हिं. ड्योढ़ी] बाहरी द्वार, सिंहद्वार।

देवतरु—संज्ञा पुं. [सं.] देवताओं के पाँच वृक्षों—मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन—में एक।

देवतर्पण—संज्ञा पुं. [सं.] ब्रह्मा, विष्णु आदि देवों के नाम ले-ले कर तर्पण करने (पानी देने) की क्रिया।

देवता—संज्ञा पुं. [सं.] स्वर्ग के अमर प्राणी, सुर।

देवताधिप—संज्ञा पं. [सं.] देवराज इंद्र।

देवतीर्थ—संज्ञा पु. [सं.] (१) देवपूजा का समय। (२) उँगलियों का अग्र भाग जिससे होकर तर्पण का जल गिरता ह।

देवत्रयी—संज्ञा पुं. [सं.] ब्रह्मा, विष्णु और शिव।

देवत्व—संज्ञा पं. [सं.] देवता होने का भाव या धर्म।

देवदत्त—वि. [सं.] (१) देवता का दिया हुआ, देवता से प्राप्त। (२) देवता के लिए अर्पित।

संज्ञा पुं.— (१) देव-अर्पित वस्तु या संपत्ति। (२) शरीर की पाँच वायुओं में एक जिससे जँभाई आती है। (३) अर्जुन के शंख का नाम। (४) नागों का एक कुल।

देवदर्शन—संज्ञा पुं. [सं.] देवता का दर्शन।

देवदारु, देवद्दारु—संज्ञा पुं. [सं. देवदारु] एक वृक्ष।

देवदासी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) वेश्या। (२) मंदिर को दान की हुई कन्या जो वहाँ नाचती-गाती है।

देवदीप—संज्ञा पुं. [सं.] आँख, नेत्र।

देवदुआरौ—संज्ञा पुं. [सं. देव+द्वार] देवमंदिर, देव-मंदिर का द्वार। उ.—टोना-टामनि जंत्र मंत्र करि, ध्यायौ देव-दुआरौ री—१०-१३५।

देवदूत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आग, (२) पैगंबर।

देवदूती—संज्ञा स्त्री [सं.] स्वर्ग की अप्सरा।

देवदेव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ब्रह्मा। (२) विष्णु। (३) महेश। (४) गणेश।

देवद्रुम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन में एक। (२) देवदारु।

देवधन—संज्ञा पुं. [सं.] देवता को अर्पित धन।

देवघरा—संज्ञा पुं. [सं. देवगृह] देवालय, मंदिर।

देवधाम—संज्ञा पं. [सं.] तीर्थ-स्थान, देव-स्थान।

मुहा.—देवधाम करना – तीर्थयात्रा करना।

देवधामी—संज्ञा स्त्री [सं. देवधाम] तीर्थयात्रा। उ.—महरि वृषभानु की यह कुमारी। देवधामी करत, द्वार द्वारैं परत, पुत्र द्वै, तीसरैं यहै बारी—६६६।

देवधुनि—संज्ञा स्त्री [सं.] गंगा नदी।

देवधेनु—संज्ञा स्त्री [सं.] कामधेनु।

देवनंदी—संज्ञा पुं. [सं.] इंद्र का द्वारपाल।

देवन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) व्यवहार। (२) दूसरे से बढ़ने की इच्छा, जिगीषा। (३) खेल। (४) बगीचा। (५) कमल। (६) शोक, खेद। (७) कांति। (८) स्तुति।

देवनदी—संज्ञा स्त्री [सं.] गंगा या सरस्वती नदी।

देवना—संज्ञा पुं. [सं.] (१) खेल, क्रीड़ा। (२) सेवा।

देवनागरी—संज्ञा स्त्री [सं.] भारत की प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत, हिंदी आदि लिखी जाती हैं।

देवनाथ, देवनाथा—संज्ञा पुं. [सं. देवनाथ] (१) शिव, महादेव। (२) विष्णु। (३) श्रीकृष्ण। उ.—निदरि तुरत (ताहि) मार्‍यौ देवनाथा—२६१८।

देवनायक—संज्ञा पं. [सं.] देवराज इंद्र।

देवनि—संज्ञा पुं. [सं. देव+हिं. नि (प्रत्य.)] देवताओं (को)। उ.—फल माँगत फिरि जात मुकर ह्वै, यह देवनि की रीति—१-१७७।

देवनिकाय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देव-समूह। (२) स्वर्ग।

देवपति—संज्ञा पुं. [सं.] देवराज इन्द्र।

देवपत्नी—संज्ञा स्त्री. [सं.] देवता की स्त्री।

देवपथ—संज्ञा पुं. [सं.] छाया-पथ, आकाश।

देवपद्मिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] आकाशगंगा।

देवपर—संज्ञा पुं. [सं.] वह मनुष्य जो संकट पड़ने पर भी प्रयत्न न करे, भाग्य या देव पर विश्वास किये बैठा रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवपशु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवता के लिए अर्पित पशु।** (२) **देवता का उपासक।**

देवपात्र—संज्ञा पुं. [सं.] **आग, अग्नि।**

देवपालित—वि. [सं.] **जहाँ वर्षाजल से ही खेती आदि का काम चल जाय।**

देवपुत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **देवता का पुत्र।**

देवपुत्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] **देवता की कन्या।**

देवपुर—संज्ञा पुं. [सं.] **अमरलोक, अमरावती।**

देवपुरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अमरपुरी, अमरावती।**

देवबानी—संज्ञा स्त्री. [सं. देववाणी] **आकाशवाणी।**
उ.—देवबानी भई जीत भई राम की ताहू पै मूढ़ नाहीं सँभारे।

देवब्रह्म—संज्ञा पुं. [सं. देवब्रह्मन्] **नारद ऋषि।**

देवब्राह्मण—संज्ञा पुं. [सं.] **पुजारी, पंडा।**

देवभवन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवालय।** (२) **स्वर्ग।**

देवभाग—संज्ञा पुं. [सं.] **देवता के लिए निकला भाग।**

देवभाषा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **देववाणी, संस्कृत भाषा।**

देवभिषक्—संज्ञा पुं. [सं. देवभिषज्] **अश्विनीकुमार।**

देवभू, देवभूमि—संज्ञा पुं. [सं. देवभूमि] **स्वर्ग।**

देवभूति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **देवताओं का ऐश्वर्य।**

देवभृत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **इन्द्र।** (२) **विष्णु**

देवभोज्य—संज्ञा पुं. [सं.] **अमृत।**

देवमंजर—संज्ञा पुं. [सं.] **कौस्तुभ मणि।**

देवमंदिर—संज्ञा पुं. [सं.] **देवालय, मंदिर।**

देवमणि, देवमनि—संज्ञा पुं. [सं. देव+मणि] (१) **सभी देवों में श्रेष्ठ, श्रीकृष्ण।** उ.—तातैं कहत दयाल देवमनि, काहैं सूर बिसारयौ—१-१०१। (२) **सूर्य।** (३) **कौस्तुभ मणि।**

देवमाता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अदिति।**

देवमादन—संज्ञा पुं. [सं.] **देवताओं को मत्त या मतवाला करनेवाला, सोमरस।**

देवमानक—संज्ञा पुं. [सं.] **कौस्तुभ मणि।**

देवमाया—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **देवताओं की माया।** (२) **ईश्वर की अविद्या माया जो जीवों को भ्रम या बंधन में डालती और नाच नचाती है।**

देवमास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गर्भ का आठवाँ महीना।** (२) **देवताओं का एक महीना जो हमारे तीस वर्ष के बराबर होता है।**

देवमुनि—संज्ञा पुं. [सं.] **नारद मुनि।**

देवमूर्ति संज्ञा स्त्री. [सं.] **देवता की प्रतिमा या मूर्ति।**

देवयजन—संज्ञा पुं. [सं.] **यज्ञ की वेदी।**

देवयजनी संज्ञा स्त्री. [सं.] **पृथ्वी।**

देवयज्ञ—संज्ञा पुं. [सं.] **होम आदि कर्म।**

देवयात—वि. [सं.] **देवत्व को प्राप्त (प्राणी)।**

देवयान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जीवात्मा को ब्रह्मलोक ले जानेवाला मार्ग।** (२) **देवताओं का विमान।**

देवयानी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **शुक्राचार्य की कन्या जो राजा ययाति को ब्याही थी।**

देवयुग—संज्ञा पुं. [सं.] **सत्ययुग।**

देवयोनि—संज्ञा पुं. [सं.] **स्वर्ग आदि लोकों में रहनेवाले जीव जो देवों के अन्तर्गत माने जाते हैं।**

देवर—संज्ञा पुं. [सं.] **पति का छोटा भाई।** उ.—गौर बरन तुम देवर सखि री, कौन तिहारौ नाथ—९-४४।

देवरक्षित—वि. [सं.] **जिसकी देवता रक्षा करें।**

देवरथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवताओं का विमान या रथ।** (२) **सूर्य का रथ।**

देवरा—संज्ञा पुं. [सं. देव] **छोटा-मोटा देवता।**
संज्ञा पुं. [हिं. देवर] **पति का छोटा भाई।**

देवराज, देवराजा—संज्ञा पुं. [सं. देवराज] **इन्द्र।**

देवराज्य—संज्ञा पुं. [सं.] **स्वर्ग।**

देवरानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. देवर] **देवर की स्त्री।**
संज्ञा स्त्री. [हिं. देव+रानी] **इन्द्र की पत्नी शची।**

देवराय, देवराया, देवरायो, देवरायौ—संज्ञा पुं. [सं. देवराज] (१) **इन्द्र।** (२) **श्रीकृष्ण।** उ.—जय जय ध्वनि भई धाक त्रिभुवन गई कंस मारयौ निदरि देवरायौ— २६१५।

देवरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. देवरा] **छोटी-मोटी देवी।**

देवर्षि—संज्ञा पुं. [सं.] **वह जो ऋषि होने पर भी देवता माना जाता हो।**

देवल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक ऋषि जिन्होंने जल में पैर पकड़ने पर एक गंधर्व को ग्राह हो जाने का शाप दिया था।** (२) **पुजारी, पंडा।** (३) **धार्मिक**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति। (४) देवर। (५) नारद।

...संज्ञा पुं. [सं. देवालय] देवमंदिर।

देवलक—संज्ञा पुं. [सं.] पुजारी, पंडा, देवल।

देवला—संज्ञा पुं. [हिं. दीवा] छोटा दिया।

देवली—संज्ञा स्त्री. [हिं. देउली] छोटा दिया।

देवलोक—संज्ञा पुं. [सं.] स्वर्ग; भु, भुव आदि सात लोक। उ.—देवलोक देखत सब कौतुक बालकेलि अनुरागे—४१६।

देववक्त्र—संज्ञा पुं. [सं.] देवताओं का मुँह, अग्नि।

देववधू—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) देवी। (२) अप्सरा।

देववर्त्म—संज्ञा पुं. [सं.] आकाश।

देववाणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) संस्कृत भाषा। (२) आकाशवाणी।

देववाहन—संज्ञा पुं. [सं.] आग, अग्नि।

देवविहाग—संज्ञा पुं. [सं. देवविभाग] एक राग।

देववृक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन में एक वृक्ष। (२) देवदास।

देवव्रत—संज्ञा पुं. [सं.] भीष्मपितामह का नाम।

देवशत्रु—संज्ञा पुं. [सं.] असुर, राक्षस।

देवशिल्पी—संज्ञा पुं. [सं. देवशिल्पिन्] विश्वकर्मा।

देवश्रुत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ईश्वर। (२) नारद। (३) शास्त्र।

देवसद—संज्ञा पुं. [सं.] देवस्थान।

देवसदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देवता का घर। (२) देवालय, देव-मंदिर। (३) स्वर्ग।

देवसभा, देवसमाज—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) देवताओं की सभा। (२) राजसभा। (३) युधिष्ठिर की 'सुधर्मा' अद्भुत नामक सभा जो मयदानव ने बनायी थी।

देवसरि—संज्ञा स्त्री. [सं.] गंगानदी।

देवसुरा—संज्ञा स्त्री. [सं.] मदिरा, मद्य।

देवसेना—संज्ञा स्त्री. [सं.] देवताओं की सेना।

देवसेनापति—संज्ञा पुं. [सं.] कुमार कार्तिकेय, स्कंद।

देवस्थान—संज्ञा पुं. [सं.] देवालय, देवमंदिर।

देवस्व—संज्ञा पुं. [सं.] देव-अर्पित धन।

देवहरा—संज्ञा पुं. [हिं. देव + घर] देवालय, मंदिर।

देवहा—संज्ञा स्त्री. [सं. देवहा या देविका] सरयू नदी।

देवहू—संज्ञा स्त्री. [सं.] देवताओं का आह्वान।

देवहूति—संज्ञा स्त्री. [सं.] स्वायंभुव मनु की तीन कन्याओं में से एक जो कर्दम मुनि को ब्याही थी। इसके गर्भ से नौ कन्याएँ और एक पुत्र हुआ। सांख्य शास्त्र-कर्त्ता कपिल इन्हीं के पुत्र थे।

देवांगन, देवांगना—संज्ञा स्त्री. [सं. देवांगना] (१) देवताओं की स्त्री। उ.—जय जयकार करति देवांगन बरखन कुसुम अपार—सारा ७६४। (२) अप्सरा।

देवा—संज्ञा पुं. [सं. देव] देवता, सुर।

वि. [हिं. देना] (१) देनेवाला। (२) देनदार, ऋणी।

देवाजीव—संज्ञा पुं. [सं.] पुजारी, पंडा।

देवातिदेव—संज्ञा पुं. [सं.] विष्णु।

देवात्मा—संज्ञा पुं. [सं. देवात्मन्] देव-स्वरूप।

देवाधिप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) इन्द्र। (२) परमेश्वर।

देवान—संज्ञा पुं. [फ़ा. दीवान] (१) दरबार, राजसभा। (२) मंत्री, दीवान। (३) प्रबन्धक।

देवानंप्रिय—संज्ञा पुं. [सं.] देवताओं को प्रिय।

देवाना—वि. [हिं. दीवाना] पागल, उन्मत्त।

क्रि. स. [हिं. दिलाना] देने को प्रेरित करना।

देवानी—वि. स्त्री. [हिं. दिवानी] पागल, उन्मत्त। उ.—हमहूँ कौं अपराध लगावहिं ऐऊ भई देवानी—पृ० ३२४ (८६)।

देवानीक—संज्ञा पुं. [सं.] देवताओं की सेना।

देवानुचर—संज्ञा पुं. [सं.] विद्याधर आदि उपदेव जो देवताओं के साथ चलते हैं।

देवान्न—संज्ञा पुं. [सं.] यज्ञ का हवि, चरु।

देवायु—संज्ञा स्त्री. [सं.] देवताओं का दीर्घ जीवनकाल।

देवायुध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देवताओं का अस्त्र। (२) इंद्रधनुष।

देवाये—क्रि. स. [हिं. दिलाया] देने को प्रेरित किया, दिलाये। उ.—आप प्रभासु बिप्र बहुजन को बहुतक दान देवाये—सारा. ८३६।

देवायो—क्रि. स. [हिं. दिलाना] दिलाया, देने को प्रेरित किया। उ.—(क) नौलख दान दयौ राजा नृग बहु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक दान देवायो—सारा. ८२२। (ख) नाना बिधि कीन्ही हरि क्रीड़ा जदुकुल साप देवायो—८४२।

देवारण्य—संज्ञा पुं. [सं.] **देवताओं का उपवन।**

देवारि—संज्ञा पुं. [सं.] **देवताओं के शत्रु, राक्षस।**

देवमणि—संज्ञा पुं. [सं.] **देवता के लिए दान।**

देवाल—वि. [हिं. देना] **देनेवाला, दाता।**

देवालय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **स्वर्ग।** (२) **मंदिर।**

देवाला—संज्ञा पुं. [हिं. दिवाला] **दिवाला।**

संज्ञा पुं. [सं. देवालय] (१) **मंदिर।** (२) **स्वर्ग।**

देवाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. दिवाली] **दीपावली।**

देवालेई—संज्ञा स्त्री. [हिं. देना+लेना] **लेनदेन।**

देवावास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **स्वर्ग।** (२) **देवता का मंदिर, देवालय** (३) **पीपल का पेड़।**

देवाश्व—संज्ञा पुं. [सं.] **इन्द्र का घोड़ा, उच्चैःश्रवा।**

देवाहार—संज्ञा पुं. [सं.] **अमृत।**

देविका—संज्ञा स्त्री [सं.] **घाघरा नदी।**

देवी—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) **देवता की स्त्री।** (२) **दुर्गा।** (३) **पटरानी।** (४) **सुन्दर गुणोवाली स्त्री।**

देवीभागवत—संज्ञा पुं. [सं.] **एक पुराण।**

देवीभोया—संज्ञा पुं. [हिं. देवी+भोयना=भुलाना] **देवी का भक्त या माननेवाला, ओझा।**

देवेन्द्र—वि. [सं.] **देवराज, इंद्र।**

देवेश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवराज इंद्र।** (२) **परमेश्वर** (३) **शिव, महादेव।** (४) **विष्णु।**

देवेशय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **परमेश्वर।** (२) **विष्णु।**

देवेशी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पार्वती।** (२) **देवी।**

देवेष्ट—संज्ञा पुं. [सं.] **देवताओं को प्रिय।**

देवै—संज्ञा पुं. [सं. देवकी] **श्रीकृष्ण की माता देवकी।** उ.—(क) जो प्रभु नर-देहीं नहिं धरते। देवै गर्भ नहीं अवतरते—११८६। (ख) बारबार देवै कहै कबहूँ गोद खिलाए नाहिं—२६२५।

देवैया—संज्ञा पुं. [हिं. देना+ऐया] **देनेवाला, दाता।**

देवोत्तर—संज्ञा पुं. [सं.] **देव-अर्पित धन।**

देवोत्थान—संज्ञा पुं. [सं.] **कार्तिक शुक्ला एकादशी को विष्णु का शेष-शैया त्यागना।**

देवोद्यान—संज्ञा पुं. [सं.] **देवताओं का बगीचा।**

देश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **स्थान।** (२) **जनपद।** (३) **राष्ट्र।** (४) **शरीर का भाग, अंग।** (५) **एक राग।**

देशक—संज्ञा पुं. [सं.] **उपदेश देनेवाला, उपदेशक।**

देशगांधार—संज्ञा पुं. [सं.] **एक राग।**

देशज—वि. [सं.] **देश में उत्पन्न।**

संज्ञा पुं.—**वह शब्द जिसकी उत्पत्ति अज्ञात हो और जिसके मूल का पता न लगे।**

देशज्ञ—संज्ञा पुं. [सं.] **देश की रीति-नीति जाननेवाला।**

देशधर्म—संज्ञा पुं. [सं.] **देश का आचार-व्यवहार आदि।**

देशना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सीख, उपदेश।**

देशनिकाला—संज्ञा स्त्री. [हिं. देश+निकालना] **देश से निकाले जाने का दंड।**

देशभक्त—संज्ञा पुं. [सं.] **वह जो देश की उन्नति के लिए तन-मन-धन वार सके।**

देशभाषा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रान्त या प्रदेश की भाषा।**

देशस्थ—वि. [सं.] **देश में रहने वाला या स्थित।**

देशान्तर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विदेश परदेश।** (२) **ध्रुवों की उत्तर-दक्षिणी मध्यरेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी।**

देशांश—संज्ञा पुं. [सं देशांतर] **अन्य देश, परदेस।**

संज्ञा पुं. [सं. देश+अंश] **देश का भाग।**

देशाचार—संज्ञा पुं. [सं.] **देश का आचार व्यवहार।**

देशाटन—संज्ञा पुं. [सं.] **भ्रमण, यात्रा।**

देशिक—संज्ञा पुं. [सं.] **पथिक, बटोही।**

देशी, देशीय—वि. [सं. देशीय] (१) **देश का, देश से संबंधित।** (२) **अपने देश का, स्वदेशी।** (३) **अपने देश में बना हुआ।**

देश्य—वि. [सं.] (१) **देश का।** (२) **देशी।**

देस—संज्ञा पुं. [सं. देश] (१) **दिक्, स्थान।** (२) **पृथ्वी का प्राकृतिक विभाग, जनपद।** (३) **राज्य।** उ.—(क) हरि, हौं सब पतित-नि-पतितेस। और न सरि करिबैं कौ दूजौ, महामोह मम देस—१-१४१। (ख) हरीचंद सो को जग दाता सो घर नीच भरै। जौ गृह छाँड़ि देस बहु धावै, तउ वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिरै—१-२६४। (ग) छाँड़ि देस भय, यह कहि डाँट्यौ—१-२६०। (घ) उदै सारंग जान सारंग गयौ अपने देस—सा. ५६। (ङ) सकल देस ताकौं नृप दयौ—६-२।

सनिकारा, देसनिकारौ—संज्ञा पुं. [सं. देश+हिं. निकालना] **देश से निकाले जाने का दण्ड**। उ.—जो मैं लाल खिझावै। सो अपनौ कीनौ पावै। तिहिं दैहौं देस-निकारौ। ताकौं ब्रज नाहिंन गारौ—१०-१८३।

वाल, देसवाला—वि. [हिं. देश+वाला] **अपने देश का, स्वदेशी**।

वर—संज्ञा पुं. [सं. देश+अपर] **विदेश, परदेस**।

वरी—वि. [हिं. देसावर] **विदेश का, परदेसी**।

—वि. [सं. देशीय] (१) **अपने देश का**। (२) **अपने देश में बना हुआ या उत्पन्न**।

र—वि. [सं.] **अपने ही शरीर के भरण-भोषण में लगा रहनेवाला**।

—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **शरीर, तन**। उ.—हरि के जन की अति ठकुराई। निरभय देह राज-गढ़ ताकौं, लोक मनन-उतसाहु। काम, क्रोध, मद लोभ, मोह ये नर चौर तैं साहु—१-४०।

मुहा.—देह छूटना—**मृत्यु होना**। देह छोड़ना—**मरना**। देह धरना—**जन्म लेना**। देह धरि—**जन्म या अवतार लेकर**। उ.—सूर देह धरि सुरनि उधारन, भूमि-भार येई हरिहैं—१०-१५। देह लेना—**जन्म लेना**। देह बिसारना—शरीर की सुध न रखना।

(२) **शरीर का कोई अंग**। उ.—लिंग-देह नृप कौं निज गेह। दस इंद्रिय दासी सौं नेह—४-१२। (३) **जीवन, जिंदगी**। (४) **विग्रह**। (५) **मूर्ति, चित्र**।

—क्रि. स. [हिं. देना] **दो, प्रदान करो**। उ.—बहुत दुखित है (यह) तेरैं नेह। एक बेर इहिं दरसन देहु—६-२।

—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **गाँव, खेड़ा, मौजा**।

न—संज्ञा पुं. [फ़ा. देहक़ान] (१) **किसान**। (२) **गँवार**।

नी—वि. [हिं. देहकान] **गँवारू, देहाती**।

त—संज्ञा पुं. [सं.] **मृत्यु, मौत**।

देहद—संज्ञा पुं. [सं.] **पारा**।

देहधारक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शरीर धारण करनेवाला**। (२) **हाड़, हड्डियाँ**।

देह-धारण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शरीर का पालन-पोषण** (२) **जन्म**।

देहधारी—संज्ञा पुं. [सं. देहधारिन्] **शरीर धारण करनेवाला, जन्म लेने वाला**।

देहधि—संज्ञा पुं. [सं.] **चिड़ियों का पंख, पक्ष, डैना**।

देहपात—संज्ञा पुं. [सं.] **मृत्यु, मौत**।

देहभृत—संज्ञा पुं. [सं.] **जीव, प्राणी**।

देहयात्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **मरण, मौत, मृत्यु**। (२) **भरण-पोषण, पालन**। (३) **भोजन**।

देहर—संज्ञा स्त्री. [सं. देव+ह्रद] **नदी-किनारे की निचली भूमि**।

देहरा—संज्ञा पुं. [हिं. देव+घर] **देवालय, मंदिर**।

संज्ञा पुं. [हिं. देह] **शरीर, देह**। उ.—निसि के सुख कहे देत अधर नैना उर नख लागे छवि देहरा—२००१।

देहरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. देहली] **देहली, दरवाजे के नीचे की चौखट**। उ.—(क) भीतर तैं बाहर लौं आवत। घर-आँगन अति चलत सुगम भए, देहरि अँटकावत—१०-१२५। (ख) देहरि लौं चलि जात, बहुरि फिर-फिर इतहीं कौं आवै—१०-१२६। (ग) देहरि चढ़त परत गिरि-गिरि, कर-पल्लव गहति जु मैया—१०-१३१।

देहरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. देहर] **नदी किनारे की निचली भूमि**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. देहली] **द्वार के चौखटे की नीची लकड़ी, देहली**। उ.—(क) बसुधा त्रिपद करत नहिं आलस, तिनहिं कठिन भयौ देहरी उलँघना—१०-२२३। (ख) सूरदास अब धाम-देहरी चढ़ि न सकत प्रभु खरे अजान—१०-२२७।

देहला—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मदिरा, शराब**।

देहली—संज्ञा स्त्री. [सं.] **द्वार की निचली चौखट**।

देहली दीपक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देहली का दीपक जो बाहर-भीतर, दोनों ओर प्रकाश करता है**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौ.—देहली दीपक न्याय—**देहली दीपक के बाहर-भीतर फैले प्रकाश के समान दोनों ओर लगने-वाली बात।**

(२) **एक अर्थालंकार।**

देहवंत—वि. [सं. देहवान् का बहु.] **जिसके शरीर हो।**

संज्ञा पुं.—**वह जो शरीर धारण किये हो, प्राणी।**

देहवान्—वि. [सं.] **जो तनधारी हो।**

संज्ञा पुं.—(१) **शरीरधारी, जीव या प्राणी।** (२) **सजीव प्राणी।**

देहसार—संज्ञा पुं. [सं.] **मज्जा, धातु।**

देहांत—संज्ञा पुं. [सं.] **मौत, मृत्यु।**

देहांतर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूसरा शरीर।** (२) **दूसरे शरीर की प्राप्ति, पुनर्जन्म।**

देहात—संज्ञा पुं. [फा.] **गाँव, ग्राम।**

देहाती—वि. [हिं. देहात] (१) **गाँव में रहनेवाला** (२) **गाँव में होनेवाला।** (३) **गँवार, उजड्ड।**

देहातीत—वि. [सं.] (१) **जो शरीर से परे या स्वतंत्र हो।** (२) **जिसे शरीर का अभिमान न हो।**

देहात्मवादी—संज्ञा पुं. [सं. देहात्मवादिन्] **वह जो शरीर को ही आत्मा मानता हो।**

देहाध्यास—संज्ञा पुं. [सं.] **देह को ही आत्मा मानने-समझने का भ्रम।**

देहिं—क्रि. स. [हिं. देना] **देते हैं।**

प्र.—पीठि देहिं—**मान-सम्मान नहीं देते, आदर-सत्कार नहीं करते। भजन-भाव नहीं करते, नहीं मानते।** उ.—भक्तबिरह-कातर करुनामय डोलत पाछैं लागे। सूरदास ऐसे स्वामी कौं देहिं पीठि सो अभागे—१-८।

देहिंगी—क्रि. स. [हिं. देना] **देंगी, प्रदान करेंगी।**

प्र.—फल देहिंगी—**बदला देंगी, परिणाम भुगता-वेंगी।** उ.—लालन हमहिं करे जे हाल उहै फल देहिंगी हो—२४१६।

देहि—क्रि. स. [हिं. देना] **दो, प्रदान करो।**

देहीं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. देह] **शरीर में।** उ.—देहीं लाइ तिलक केसरि कौ जोबन मद इतराति—१०-२६०।

क्रि. स. [हिं. देना] **देते हैं, प्रदान करते हैं।**

देही—संज्ञा पुं. [सं. देहिन्] **जीवात्मा, आत्मा।**

संज्ञा पुं. [हिं. देह] (१) **शरीर, देह।** उ.—नर-देही दीनी सुमिरन कौं मो पापी तैं कछु न सरी—१-११६। (२) **शव।** उ.—भैया-बंधु-कुटुंब घनेरे तिनतैं कछु न सरी। लै देही घर-बाहर जारी, सिर ठोंकी लकरी—१-७१।

वि.—**जिसके शरीर हो, शरीरी।**

देहुँ—क्रि. स. [हिं. देना] **दूं, प्रदान करूं।** उ.—मैं देहुँ तोहिं सो लेहि—१-२२६।

देहु—क्रि. स. [हिं. देना] **दो, प्रदान करो।** उ. (क) सोऊँ सुनि बचन तुम्हारे देहु कृपा करि बाँह—१-५। (ख) तुम बिनु साँकरैं को काकौ। तुमहीं देहु बताइ देवमनि, नाम लेउँ धौं ताकौ—१-११३।

देहुगी—क्रि. स. [हिं. देना] **दोगी, प्रदान करोगी।** उ.—अंबर जहाँ बताऊँ तुमको। तौ तुम कहा देहुगी हमको—७६६।

देहेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] **देह में स्थित आत्मा।**

देहौं—क्रि. स. [हिं. देना] **दूँगा, समर्पित करूँगा।** उ.—रुक्म कह्यौ सिसुपालहिं देहौं, नाहीं कृष्न सौं काम—सारा. ६२८।

दैं—अव्य० [अनु०] (**क्रिया या व्यापार-सूचक**) से।

दै—क्रि. स. [हिं. देना] (१) **देकर।** उ.—पट कुचैल दुरबल द्विज देखत, ताके तंदुल खाए (हो)। संपति दै ताकी पतिनी कौं, मन अभिलाष पुराए (हो)-१-३। (२) **दे, प्रदान कर।** उ.—हलधर कहड़, लाउ मैया। मोकौ दै नहिं लेत कन्हैया—३६६। (३) **डालकर, मिलाकर, छोड़कर।** उ.—भात पसारि रोहिनी ल्याई। घृत सुगंधि तुरतै दै ताई—३६६।

प्र.—द तारी तार—**ताली और ताल बजाकर।** उ.—मोहिं देखि सब हँसत परस्पर, दै दै तारी तारी—१-१७५। दै कान—**कान देकर, ध्यान लगाकर।** उ.—और उपाय नहीं रे बौरे, सुनि तू यह दै कान—१-३०। दै लात—(१) **लात रखकर, खड़े होकर।** उ.—कैसे कहति लियौ छीकैं तैं ग्वाल कंध दै लात। (२) **लात मारकर, ठोकर देकर।** आगैं दै—**आगे करके।** उ.—आगे दै पुनि ल्यावत घर कौं—४२४।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैअ—संज्ञा पुं. [सं. दैव] **दैव ।**

दैआ—संज्ञा स्त्री. [हिं. दैया] **दैया ।**

दैउ—संज्ञा पुं. [सं. दैव] **दैव ।**

दैजा—संज्ञा पुं. [हिं. दायजा] **दहेज ।**

दैत—संज्ञा पुं. [सं. दैत्य] **दैत्य, दानव ।**

दैतारि, दैतारी—संज्ञा पुं. [सं. दैत्यारि] **विष्णु ।** उ.—(क) धन्य लियौ अवतार, कोखि धनि, जहँ दैतारी—४३१ । (ख) चरन पखारि लियौ चरनोदक धनि धनि कहि दैतारि—३०५० ।

दैतेय—वि. [सं.] **दिति से उत्पन्न ।**

संज्ञा पुं—**दिति से उत्पन्न दैत्य ।**

दैत्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कश्यप के दिति नामक पत्नी से उत्पन्न पुत्र, दैत्य ।** (२) **बहुत लंबे-चौड़े डील-डौल का मनुष्य ।** (३) **किसी काम में अति या असाधारणता करनेवाला ।** (४) **नीच, दुष्ट ।**

दैत्यगुरु—संज्ञा पुं. [सं.] **शुक्राचार्य ।**

दैत्यदेव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वरुण ।** (२) **वायु ।**

दैत्यपुरोधा—संज्ञा पुं. [सं.] **शुक्राचार्य ।**

दैत्यमाता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अदिति ।**

दैत्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दैत्य जाति की स्त्री ।** (२) **दैत्य की पत्नी ।** (३) **मदिरा ।**

दैत्यारि, दैत्यारी—संज्ञा पुं. [सं. दैत्य+अरि] (१) **दैत्यों के शत्रु ।** (२) **विष्णु या उनके राम-कृष्ण आदि अवतार ।** उ.—(क) चरन पखारि लियो चरनोदक धनि धनि कहि दैत्यारी—२५८७ । (ख) त्राहि-त्राहि श्रीपति दैत्यारी—२१५६ । (ग) भयौ पूरब फल सँपूरन लह्यौ सुत दैत्यारि—३०६१ । (३) **इन्द्र ।** (४) **सुर, देवता ।**

दैत्याहोरात्र—संज्ञा पुं. [सं.] **दैत्यों का एक रात-दिन जो मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है ।**

दैत्येंद्र—संज्ञा पुं. [सं.] **दैत्यों का राजा ।**

दैनंदिन—वि. [सं.] **प्रति दिन का, नित्य का ।**

क्रि. वि.—(१) **प्रतिदिन ।** (२) **दिनोंदिन ।**

दैनंदिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. दैनंदिन] **दैनिकी, डायरी ।**

दैन—वि. स्त्री [हिं. देना] **देनेवाली, प्रदान करनेवाली ।** उ.—गंग-तरंग बिलोकत नैन ।......। परम पवित्र, मुक्ति की दाता, भागीरथहिं भव्य बर दैन—६-१२ ।

संज्ञा स्त्री [हिं. देन] (१) **देने की क्रिया या भाव ।** (२) **दी हुई वस्तु ।**

मुहा.—लैन न दैन—**न लेन में न देने में, किसी तरह के संबंध में नहीं ।** उ.—ए गीधे नहिं टरत वहाँ तैं मोसौं लेन न दैन—पृ० ३१३-१८ ।

संज्ञा पुं. [सं.] **दीन होने का भाव, दीनता ।**

वि. [सं.] **दिन संबंधी, दिन का ।**

दैनिक—वि. [सं.] (१) **प्रति दिन का ।** (२) **नित्य होनेवाला ।** (३) **जो एक दिन में हो ।** (४) **दिन संबंधी ।**

संज्ञा पुं.—**एक दिन का वेतन ।**

दैनिकी—संज्ञा स्त्री [सं. दैनिक] **वह पुस्तिका जिसमें रोज के कार्य या विचार लिखें जायँ, डायरी ।**

दैनी—संज्ञा स्त्री [हिं. देना] **देनेवाली, प्रदान करनेवाली ।**

उ.—जय, जय, जय, जय माधव बेनी । जग हित प्रगट करी करुनामय, अगतिनि कौं गति दैनी—६-११ ।

दैनु—वि० [हिं. देना (समास-वत् प्रयोग)] **देनेवाला, प्रदान करनेवाला ।** उ.—सूर-स्याम संतन-हित-कारन प्रगट भए सुख-दैनु—१०-५०२ ।

संज्ञा पुं.—**देना, देने का भाव ।**

मुहा.—लैनु न दैनु—**लेना न देना, काम काज, उद्देश्य-प्रयोग या संबंध न होना, व्यर्थ ही ।** उ.—चलत कहाँ मन और पुरी तन जहाँ कछु लैन न दैनु—४६१ ।

दैन्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दीनता, दरिद्रता ।** (२) **विनीत भाव, विनम्रता ।** (३) **एक संचारी भाव, कातरता ।**

दैबै—संज्ञा स्त्री. [हिं. देना] **देने या प्रदान करने की क्रिया या भाव ।** उ.—तन दैबै तैं नाहिंन भजौं—६-५ ।

दैयत—क्रि. स. [हिं. देना] **देते हैं ।**

प्र—दूरि करि दैयत—**दूर कर देते हैं ।** उ.—दूजे करज दूरि करि दैयत, नैंकु न तामैं आवै—१-१४२ ।

संज्ञा पुं. [सं. दैत्य] **दानव, राक्षस ।** उ.—(क) मति हिय बिलख करौ सिय, रघुबर हतिहैं कुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैयत को—९-८४ । (ख) दासी हुती असुर दैयत की अब कुल-बधू कहावै—३०८८

दैया—संज्ञा पुं. [हिं. दैव] **दई, ईश्वर, विधाता ।**

मुहा.—दैया दैया—**रक्षा के लिए ईश्वर की पुकार, हे दैव, हे दैव !** उ.—ब्यानी गाइ बछुरुवा चाटति, हौं पय पियत पतूखिनि लैया । यहै देखि मोकौं बिजुकानी, भाजि चल्यौ कहि दैया दैया—१०-३३५ ।

अव्य.—**आश्चर्य, भय या दुख की अधिकता-सूचक, स्त्रियों के मुख से सहसा निकल पड़नेवाला एक शब्द, हे दैव, हे राम ।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. दाई] **धाय, दाई ।**

दैयागति—संज्ञा स्त्री. [हिं. दैवगति] **भाग्य, कर्म ।**

दैर्घ्य—संज्ञा पुं. [सं.] **दीर्घता, लंबाई ।**

दैव—वि. [सं.] (१) **देवता-संबंधी** (२) **देवता के द्वारा होनेवाला ।** (३) **देवता को अर्पित ।**

संज्ञा पुं.—(१) **भाग्य, होनी, प्रारब्ध ।** (२) **ईश्वर, विधाता ।**

मुहा.—दैव लगना—**बुरे दिन आना, ईश्वरीय कोप होना ।**

(३) **आकाश, आसमान ।** (४) **बादल, मेघ ।**

मुहा.—दैव बरसना—**पानी बरसना ।**

दैवकोविद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवी-देवताओं के विषय का ज्ञाता ।** (२) **ज्योतिषी ।**

दैवगति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दैवी घटना ।** (२) **भाग्य ।**

दैवचिंतक—संज्ञा पुं. [सं.] **ज्योतिषी ।**

दैवज्ञ—संज्ञा पुं. [सं.] **ज्योतिषी ।**

दैवतंत्र—वि. [सं.] **जो भाग्य के अधीन हो ।**

दैवत—वि. [सं.] **देवता का, देवता-संबंधी ।**

संज्ञा पुं.—(१) **देवता ।** (२) **दैव प्रतिमा ।**

दैवतपति—संज्ञा पुं. [सं.] **इंद्र ।**

दैवतीर्थ—संज्ञा पुं. [सं.] **उँगलियों का अग्र भाग ।**

दवदुर्विपाक—संज्ञा पुं. [सं.] **भाग्य का खोटापन ।**

दैवयोग—संज्ञा पुं. [सं.] **संयोग, इत्तिफाक ।**

दैवलेखक—संज्ञा पुं. [सं.] **ज्योतिषी ।**

दैववश, दैववशात्—क्रि. वि. [सं.] **संयोग से, अकस्मात ।**

दैववाणी—संज्ञा पुं. [सं.] **आकाशवाणी ।**

दैववादी—संज्ञा पुं. [सं] (१) **भाग्य के भरोसे रहकर परिश्रम न करनेवाला ।** (२) **आलसी ।**

दैवविद्—संज्ञा पुं. [सं.] **ज्योतिषी ।**

दैवविवाह—संज्ञा पुं. [सं.] **आठ प्रकार के विवाहों में एक जिसमें यज्ञ करनेवाला व्यक्ति ऋत्विज या पुरोहित को कन्यादान कर देता था ।**

दैवश्राद्ध—संज्ञा पुं. [सं.] **श्राद्ध जो देवताओं के लिए हो ।**

दैवसर्ग—संज्ञा पुं. [सं.] **देवताओं की सृष्टि ।**

दैवाकरि—संज्ञा पुं. [सं.] **सूर्य के पुत्र शनि और यम ।**

दैवाकरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सूर्य-पुत्री यमुना नदी ।**

दैवागत—वि. [सं.] (१) **सहसा होनेवाला, आकस्मिक ।** (२) **दैवी ।**

दैवात्—क्रि. वि. [सं.] **अकस्मात, संयोग से ।**

दैवात्यय—संज्ञा पुं. [सं.] **दैवी उत्पात ।**

दैविक—वि. [सं.] (१) **देवता का, देवता-संबंधी ।** (२) **देवताओं का दिया या रचा हुआ ।**

दैवी—वि. स्त्री. [सं.] (१) **देवता से सबंध रखनेवाली ।** (२) **देवताओं की की हुई ।** (३) **अकस्मात या संयोग से होनेवाली ।** (४) **देवता अर्पित ।**

संज्ञा स्त्री.—**दैव की विवाहिता पत्नी ।**

दैवीगति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दैव या ईश्वर-कृत बात या लीला ।** (२) **भावी, होनहार ।**

दैव्य—वि. [सं.] **देवता से संबंधित ।**

संज्ञा पुं.—(१) **दव ।** (२) **भाग्य, प्रारब्ध ।**

दैहिक—वि. [सं.] (१) **देह-संबंधी, शारीरिक ।** (२) **देह से उत्पन्न ।**

दैशिक—वि. [सं.] **देश या जनपद-संबंधी ।**

दैहैं—क्रि. स. [हिं. देना] **देंगे, प्रदान करेंगे ।** उ.—पहिरावन जो पाइहैं सो तुमहूँ दैहैं—२५७६ ।

दैहै—क्रि. स. [हिं. देना] **देगी, प्रदान करेगी ।** उ.—अजहुँ उठाइ राखि री मैया, माँगे तैं कह दैहै री । आवत ही लै जैहै राधा, पुनि पाछैं पछितैहै री—७११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहौं—क्रि. स. [हिं. देना] **दूँगो, प्रदान करूँगी** । उ.—बरष सात बीतैं हौं ऐहौं । एक रात तोकौं सुख देहौं —६-२ ।

प्र.—जान देहौं (१) **जाने दूँगा, भेजने की व्यवस्था कर दूँगा** । उ.—सूर स्याम तुम सोइ रहौ अब प्रात जान मैं देहौं-४२० । (२) **जान दे दूँगा, मर जाऊँगा** । तव सिर छत्र न देहौं—**तुझे राजा नहीं बना लूँगा । तुझे न पहना दूँगा** । उ.—तब लगि हौं बैकुंठ न जैहौं । सुनि प्रहलाद प्रतिज्ञा मेरी जब लगि तव सिर छत्र न देहौं—७-५ ।

...ना—क्रि अ. [देश.] **गुर्राना** ।

...की—संज्ञा स्त्री. [देश.] **धौंकनी** ।

...च, दोचन—संज्ञा स्त्री, [हिं. दोच] (१) **दुबधा** । (२) **कष्ट** । (३) **दबाब** ।

...चना—क्रि. स. [हिं. दोचना] **दबाव में डालना** ।

...चि—क्रि. स. [हिं. दोंचना] **दबाव में डालकर** । उ.—तंदुल माँगि दोंचि कलाई सो दीन्हों उपहार—सारा-८०६ ।

...र—सज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह का साँप** ।

दो - वि. [सं. द्वि] **एक और एक** ।

मुहा.—दो-एक—**कुछ, थोड़े** । दो-चार—**कुछ, थोड़े** । दो-चार होना—**मुलाकात होना** । दो दिन का - **बहुत ही थोड़े समय का** । दो दाने को फिरना (भटकना)—**बहुत ही निर्धन दशा में भिक्षा मांगते घूमना** । दो-दो बातें करना—(१) **थोड़ी बातचीत** । (२) **पूँछ ताँछ** । दो नावों पर पैर रखना—**दो साथ न रहनेवाले आश्रयों या पक्षों का सहारा लेना** । किसके दो सिर हैं—**किसमें इतना साहस या बल ह जो मरने से नहीं डरता** ।

संज्ञा पुं—**दो की संख्या** ।

संज्ञा पुं. [हिं. दव] **वन की आग, दावानल** । उ.—घर बन कछु न सुहाइ रैनि-दिन मनहुँ मृगी दो दाहै—२८०१ ।

दोआब, दोआबा—संज्ञा पुं. [फ़ा. दोआब] **दो नदियों के बीच की भूमि जो उपजाऊ होती है** ।

दोई—वि. [हिं. दो] (१) **दो** । (२) उ.—दोइ लख धेनु दई तेहि अवसर बहुतहिं दान दिवायो—सारा. ३६२ । (३) **भिन्न, अलग** । उ.—(क) ऊँच नीच हरि गनत न दोइ—१-२३६ । (ख) हरि हरि-भक्त एक, नहिं दोइ—१-२६० । (ग) सत्रु-मित्र हरि गनत न दोइ—२-५ । (२) **दोनों** । उ—कुरपति कह्यो अंध हम दोइ । बन मैं भजन कौन बिधि होइ —१-२८४ ।

दोउ, दोऊ—वि. [हिं. दो] **दोनों** । उ.—(क) उन दोउनि सौं भई लराई—१-२८६ । (ख) माया-मोह न छाँड़ै तृष्ना, ये दोऊ दुख-थाती—१-११८ ।

दोक—वि. [हिं. दो+का] **दो वर्ष का** ।

दोकड़ा, दोकरा—संज्ञा पुं. [हिं. दुकड़ा] **जोड़ा** ।

दोकला—वि. [हिं. दो+कल] **दो कल-पेंचवाला** ।

दोकोहा —वि. [हिं. दो + कोह = कूबर] **दो कूबरवाला** ।

संज्ञा पुं.—**दो कूबरवाला ऊँट** ।

दोख—संज्ञा पुं. [सं. दोष] **बुराई, ऐब** ।

दोखना—क्रि. स. [हिं. दोष+ना] **दोष लगाना** ।

दोखी—वि. [हिं. दोषी] (१) **जिसमें दोष या ऐब हो** । (२) **जो शत्रुता या वैर रखे** ।

दोगंग—संज्ञा स्त्री [हिं. दो+गंगा] **दो नदियों के बीच की भूमि** ।

दोगंडी—वि. [हिं. दो+गंडी] **झगड़ालू, उपद्रवी** ।

दोगला—वि. [फ़ा. दोगला] (१) **जो माता के वास्तविक पति से न पैदा हुआ हो, जारज** । (२) **जिसके माता-पिता भिन्न जाति के हों** ।

दोगुना—वि. [हिं. दुगना] **दूना, दुगना** ।

दोचंद—वि. [फ़ा.] **दूना, दुगना** ।

दोच—संज्ञा स्त्री [हिं. दबोच] (१) **दुबधा, असमंजस** । (२) **कष्ट, दुख** । उ.—मनहिं यह परतीति आई दूरि हरिहौ दोच । (३) **दबाव, दबाने का भाव** ।

दोचन—संज्ञा स्त्री [हिं. दबोचन] (१) **दुबधा, असमंजस** । (२)**दबाव, दबाये जान का भाव** । (३) **दुख, कष्ट** । उ.—ऐसी गति मेरी तुम आगे करत कहा जिय दोचन —१५१७ ।

दोचना—क्रि. स. [हिं. दोच] **जोर या दबाव डालना** ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोचित्ता—वि. [हिं. दो+चित्त] **जिसका ध्यान दो कामों या बातों में बँटा हो, जो एकाग्र न हो।**

दोचित्ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. दोचित्ता] **ध्यान का दो कामों या बातों में बँटा रहना।**

दोज—संज्ञा स्त्री. [हिं. दो] **दूज, दुइज ,द्वितीया।**

दोजख—संज्ञा पुं. [फ़ा. दोजख] **नरक।**

दोज़खी—वि. [हिं. दोजख] (१) **दोजख का।** (२) **पापी।**

दोजा—वि. [हिं. दो] **जिसका दूसरा विवाह हो।**

वि. [हिं. दूजा] **दूजा, दूसरा।**

दोज़ानू—क्रि. वि. [फ़ा.] **दोनों घुटने टेककर।**

दोजिया—वि. [दो+जी, जीव] **गर्भवती (स्त्री, मादा)**

दोजीवा—वि. [हिं. दो+जीव] **गर्भवती (स्त्री,मादा)।**

दोतरफा, दोतर्फा—वि. [हिं. दो+तरफ] **दोनों तरफ का, दोनों ओर से संबंधित।**

क्रि. वि.—**दोनों ओर या तरफ।**

दोतला, दोतल्ला—वि. [हि. दो+तल=दोतल्ला] **दो खंड का, जिसमें दो खंड या मंजिल हों।**

दोतही, दोता—संज्ञा स्त्री. [हिं. दो+तह] **मोटी चादर।**

दोतारा—संज्ञा पुं. [हिं. दो+तार] **एक तरह का दुशाला।**

संज्ञा पुं. [हिं. दो+तार=धातु] **एक बाजा।**

दोदना—क्रि. स. [हिं. (दोहराना)] **कही हुई बात से मुकरना या इनकार करना।**

दोदल—संज्ञा पुं० [हिं. द्विदल] **चने की दाल।**

दोदिला—वि. [हिं. दो+दिल] **जिसका चित्त या ध्यान दो कामों या बातों में बँटा हो, दोचित्ता।**

दोदिली—वि. [हिं. दोदिल] **दोचित्ती, दोचित्तापन।**

दोध— संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ग्वाला।** (२) **गाय का बछड़ा।** (३) **कवि जो पुरस्कार के लोभ से कविता लिखे।**

दोधक—संज्ञा पुं. [सं.] **एक वर्णवृत्त।**

दोधार—संज्ञा पुं. [हिं• दो+धार] **भाला, बरछा।**

दोधारा—वि. [हिं. दो+धार] **दोनों ओर धार वाला।**

दोधी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दूध] **एक पौष्टिक पेय।**

दोन—संज्ञा पुं. [हिं. दो] **दो पहाड़ों की बिचली भूमि।**

संज्ञा पं. [हिं. दो+नद] (१) **दो नदियों का संगम स्थल।** (२) **दो नदियों के बीच की भूमि।** (३) **दो वस्तुओं की संधि या मेल।**

दोनली—वि. [हिं. दो+नाल] **जिसमें दो नाल हों।**

दोना—संज्ञा पुं. [सं. द्रोण] (१) **पत्तों को मोड़कर बना हुआ गहरे कटोरे के आकार का पात्र।** उ.—दधि-ओदन दोना भरि दैहौं, अरु भाइनि मैं थपिहौं-९-१६४। (२) **दोने में रखे हुए व्यंजन।** उ.—बेसन के दस-बीसक दोना—३६७।

मुहा—दोना चढ़ाना—**समाधि पर फूल-मिठाई चढ़ाना।** दोना खाना [चाटना]– **बाजार की चाट-मिठाई खाना।**

दोनियाँ, दोनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दोना का स्त्री. अल्पा.] **छोटा दोना।** उ.—डारत, खात, लेत अपनैं कर, रुचि मानत दधि दोनियाँ–१०-२३८।

दोनों—वि. [हिं. दो] **एक और दूसरा, उभय।**

संज्ञा पुं. [हिं. दोना] **पत्तों का बना पात्र।** उ.—दधि ओदन भरि दोनों दैहौं अरु अंचल की पाग—२६४८।

मुहा दोनों की चाट पड़ना—**बाजारू चाट या मिठाई खाने का चस्का पड़ जाना।**

दोपट्टा—संज्ञा पुं. [हिं. दुपट्टा] **चादर, दुपट्टा।**

दोपलिया, दोपल्ली—वि. [हिं. दो+पल्ला+ई (प्रत्य.)] **जिसमें दो पल्ले हों।**

संज्ञा स्त्री—**एक तरह की हलकी महीन टोपी।**

दोपहर, दोपहरिया, दोपहरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दो+पहर] **मध्याह्नकाल।**

मुहा.—दोपहर ढलना— **दोपहर बीत जाना**

दोपीठा—वि. [हिं. दो+पीठ] **दोनों ओर एक सा, दोरुखा।**

दोफसली—वि. [हिं. दो+फसल] (१) **दोनों फसलों से संबंधित।** (२) **दोनों ओर काम देने योग्य।**

दोबल—संज्ञा पुं. [हिं. दुर्बल (?)] **दोष, अपराध।** उ.—(क) दोबल कहा देति मोहिं सजनी तू तो बड़ी सुजान। अपनी सी मैं बहुतै कीन्हीं रहति न तेरी आन। (ख) दोबल देति सबै मोही को उन पठयो मैं आयो—११६६।

दोबारा—क्रि. वि. [फ़ा.] **दूसरी बार या दफा।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोबाला—वि. [फ़ा.] दूना, दुगना ।

दोभाषिया—वि. [हिं. दो+भाषा] दो भिन्न भिन्न भाषाओं के जानकारों का मध्यस्थ जो एक को दूसरे का आशय समझा दे ।

दोमंजिला—वि. [फ़ा.] दो खंड का, दो खंडा ।

दोमट—संज्ञा स्त्री. [हिं. दो+मिट्टी] बालू मिली भूमि ।

दोमहला—वि. [हिं. दो+महल] दो खंड या मंजिल का ।

दोमुँहा—वि. [हिं. दो+मुँह] (१) जिसके दो मुँह हों । (२) दोहरी चाल चलने या बात करनेवाला ।

दोय—वि. [हिं. दो] दो । उ.—दोय खंभ बिश्वकर्मा बनाए काम-कुंद चढ़ाइ—२२७६ ।

वि. [हिं. दोनों] एक और दूसरा, दोनों ।

संज्ञा पुं. [हिं. दो] दो की संख्या

दोयम—वि. [फ़ा.] दूसरा, दूसरे दर्जे का ।

दोयल—संज्ञा पुं. [देश] बया पक्षी ।

दोरंगा—वि. [हिं. दो+रंग] (१) जिसमें दो रंग हों । (२) दोहरी चाल चलने या दावँ करनेवाला, दोनों पक्षों में लगा रहनेवाला ।

दोरंगी—संज्ञा स्त्री [हिं. दो+रंग+ई (प्रत्य.)] (१) दोनों ओर चलने या लगने का भाव । (२) छल-कपट ।

दोर—संज्ञा स्त्री [हिं. दो] जमीन जो दो बार जोती जाय ।

दोरसा—वि. [हिं. दो+रस] जिसमें दो स्वाद हों ।

दोराहा—संज्ञा पुं. [हिं. दो+राह] वह स्थान जहां से दो मार्ग भिन्न दिशाओं में जाते हों ।

दोरुखा—वि. [फ़ा. दोरुख] (१) दोनों ओर समान रूप-रंग का । (२) दोनों ओर भिन्न रूप-रंग का ।

दोर्दंड—संज्ञा पुं. [सं.] भुजदंड ।

दोल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) झूला । (२) डोली ।

दोलड़ा—वि. [हिं. दो+लड़] जिसमें दो लड़ हों ।

दोलड़ी—वि. स्त्री. [हिं. दोलड़] दो लड़वाली ।

दोला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) झूला । (२) चंडोल ।

दोलायमान—वि. [सं.] झूलता या हिलता हुआ ।

दोलायुद्ध—संज्ञा पुं. [सं.] युद्ध कभी जिसमें एक पक्ष की जीत हो, कभी दूसरे की, और निर्णय न हो सके ।

दोलिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) झूला । (२) डोली ।

दोलोही—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुलोही] वह तलवार जो लोहे के दो टुकड़ों को जोड़कर बनायी जाय ।

दोलोत्सव—संज्ञा पुं. [सं.] फागुन की पूर्णिमा को वैष्णवों द्वारा ठाकुर जी को फलों के हिंडोले पर झुलाये जाने का उत्सव ।

दोशाखा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] दो बत्तियों का शमादान ।

दोशाला—संज्ञा पुं. [हिं. दुशाला] बढ़िया शाल ।

दोष—संज्ञा पुं. संज्ञा [सं.] (१) बुरापन, अवगुण । उ.—सूरदास बिनती कह बिनवै दोषनि देह भरी—१-१३१ ।

मुहा.—दोष लगाना—बुराई बताना, बुराई का पता लगाना या बताना ।

(२) अभियोग, लांछन, कलंक ।

दोष देना (लगाना)—कलंक लगाना ।

यौ.—दोषारोपण—दोष लेना या लगाना ।

(३) अपराध । (४) पाप, पातक । उ.—मन-कृत-दोष अथाह तरंगिनि, तरि नहि सक्यौ, समायौ—१-६७ । (५) साहित्य में वे पाँच बातें जिनसे काव्य के गुण में क‌ ी हो जाती है - पद, पदांश, वाक्य, अर्थ और रस-‌ ोष ।

(६) कुफल, बुरा परिणाम, अमंगल । उ.—(क) छींक सुनत कुसगुन कह्यौ कहा भयौ यह पाप । अजिर चली पछितात छींक कौ दोष निवारन—५८६ । (ख) आइ अजिर निकसी नंदरानी बहुरी दोष मिटाइ—५४० ।

संज्ञा पुं. [सं. द्वेष] विरोध, शत्रुता, बैर ।

दोषक—संज्ञा पुं. [सं.] गाय का बछड़ा ।

दोषग्राही—वि. [सं. दोषग्राहिन्] दुष्ट, दुर्जन ।

दोषज्ञ—वि. [सं.] दोष का ज्ञाता, पंडित ।

दोषता—संज्ञा स्त्री. [सं.] दोष होने का भाव ।

दोषत्व—संज्ञा पुं. [सं.] दोष होने का भाव ।

दोषन—संज्ञा पुं. [सं. दूषण] दोष, अपराध । उ.—महरि तुमहिं कछु दोषन नाहीं ।

दोषना—क्रि. स. [सं. दूषण+ना] दोष लगाना ।

दोषपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] वह कागज जिस पर किसी के दोषों या अपराधों का विवरण लिखा हो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोषल—संज्ञा पुं. [सं.] **जिसमें दोष हो, दूषित।**
दोषा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **रात, रात्रि।** (२) **साँझ, संध्या।** (३) **भुजा, बाहु।**
दोषाकर—संज्ञा पुं. [सं.] **चंद्रमा।**
दोषाक्षर—संज्ञा पुं. [सं.] **लगाया हुआ अपराध**
दोषातिलक—संज्ञा पुं. [सं.] **दीप, दीपक।**
दोषारोपण—संज्ञा पुं. [सं. दोष+आरोपण] **दोष लगाना।**
दोषावह—वि. [सं.] **जिसमें दोष हों, दोषपूर्ण।**
दोषिक—वि. [सं. दूषित] **जिसमें दोष हों, दोषपूर्ण।**
संज्ञा पुं. [सं.] **रोग, बीमारी।**
दोषिन—वि. स्त्री. [हिं. दोषी] (१) **अपराधिनी।** (२) **पाप करनेवाली।**
दोषी—वि. [हिं.] (१) **अपराधी।** (२) **पापी।** (३) **अभियुक्त।** (४) **जिसमें अवगुण या बुराई हो।**
दोस—संज्ञा पुं. [सं. दोष] **अपराध, अवगुण।**
दोसदारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.दोस्तदारी] **मित्रता।**
दोसरता—संज्ञा पुं. [हिं. दूसरा+ता] **गौना।**
दोसा—संज्ञा स्त्री. [हिं. दोषा] (१) **रात, रात्रि।** (२) **संध्या।**
दोसाला—वि. [हिं. दो+साल] **दो वर्ष का।**
दोसी—संज्ञा पुं. [देश.] **दही।**
दोसती—संज्ञा स्त्री. [हिं. दो+सूत] **एक मोटा कपड़ा।**
दोसों—संज्ञा पुं. [हिं. दोष] **दोष बुराई।** उ.—सूर स्याम दरसन बिन पाये नयन देत मोहिं दोसों—१२२१।
दोस्त—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **मित्र, स्नेही।**
दोस्ताना—वि. [फ़ा.] **मित्रता-संबंधी।**
संज्ञा पुं.—**मित्रता, मित्रता का व्यवहार।**
दोस्ती—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **मित्रता, स्नेह।**
दोह—संज्ञा पुं. [सं. द्रोह] **बैर, द्वेष।**
दोहग, दोहगा—संज्ञा स्त्री. [सं. दुर्भाग्य] **वह स्त्री जिसको, पति के मरने पर दूसरे पुरुष ने रख लिया हो, उपपत्नी।**
दोहज—संज्ञा पुं. [सं.] **दूध**
दोहता—संज्ञा पुं. [सं. दौहित्र] **पुत्री का पुत्र, नाती।**
दोहती—संज्ञा स्त्री. [हिं. दोहता] **पुत्री की पुत्री।**
दोहत्थड़—संज्ञा पुं. [हिं. दो+हाथ] **दोनों हाथों से मारा गया थप्पड़।**
दोहत्था—क्रि. वि. [हिं. दो+हाथ] **दोनों हाथों से।**
वि.—**जो दोनों हाथों से हो या किया जाय।**
दोहद—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **गर्भवती की इच्छा, उकौना।** (२) **गर्भावस्था।** (३) **गर्भ।** (४) **एक प्राचीन कवि-श्रुति जिसके अनुसार सुंदर स्त्री के चरणाघात से अशोक, दृष्टिपात से तिलक, आलिंगन से कुर्वक, फूंक मारने से चंपा आदि वृक्ष फूलते हैं।**
दोहदवती दोहदान्विता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **गर्भवती।**
दोहन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दुहने-मथने का कार्य।** उ.—धनुष्र सौं टारि पर्बत किए एक दिसि, पृथी सम करि प्रजा सब बसाई। सुर-रिषिनि नृपति पुनि पृथी दोहन करी, आपनी जीविका सबनि पाई—४-११। (२) **दुहने का पात्र।**
दोहना—क्रि. स. [सं. दूषण] (१) **दोष लगाना।** (२) **तुच्छ ठहराना।**
क्रि. स. [हिं. दुहना] **(दूध) दुहना।**
दोहनि, दोहनी—संज्ञा स्त्री. [सं. दोहन] (१) **दूध दुहने की हांड़ी, मिट्टी अथवा धातु का वह पात्र जिसमें दूध दुहते हैं।** उ.—(क) मैं दुहिहौं मोहिं दुहन सिखावहु। कैसे गहत दोहनी घुटुवनि, कैसे बछरा थन लै लावहु—४०१। (२) **दूध दुहने की क्रिया।**
दोहर—संज्ञा स्त्री. [हिं. दो+घड़ी] **दोहरी चादर।**
दोहरना—कि. अ. [हिं, दोहरा] (१) **दो बार होना।** (२) **दो परतों का या दोहरा किया जाना।**
क्रि. स.—**दो परतों में या दोहरा करना।**
दोहरफ—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **धिक्कार, लानत।**
दोहरा—वि. पुं. [हिं. दो+हरा] (१) **दो तह या परत का।** (२) **दुगना, दूना।**
संज्ञा पुं.—(१) **सुपारी के टकड़े।** (२) **दोहा।**
दोहराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. दोहराना] **दोहराने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहराना—क्रि. स. [हिं. दोहरना] (१) **किसी बात को बार-बार कहना**। (२) **किसी कपड़े, कागज आदि की दो तहें करना**।

दोहल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **इच्छा**। (२) **गर्भ**।

दोहलवती—संज्ञा स्त्री [सं.] **गर्भवती स्त्री**।

दोहला—वि. [हिं. दो+हल्ला] **दो बार की ब्याई**।

दोहा—संज्ञा पुं. [हिं. दो+हा] (१) **एक छंद**। (२) **एक राग**।

दोहाई—संज्ञा स्त्री [हिं. दुहाई] (१) **घोषणा, सूचना**। उ.—किसलै कुसुम नव नूत दसहुँ दिसि मधुकर मदन दोहाई—२७८४।

मुहा.—फिरत दोहाई—**घोषणा फिर रही है**। उ.—बोलत बग निकेत गरजै अति मानो फिरत दोहाई—२८३६।

(२) **रक्षा, बचाव या सहायता के लिए पुकार**। (३) **शपथ, कसम**। उ.—आपु गई जसुमतिहिं सुनावन दै गई स्यामहिं नंद दुहाई—७५७।

दोहाग, दोहाग—संज्ञा पुं. [सं. दुर्भाग्य, हिं. दोहाग] **अभाग्य, दुर्भाग्य, भाग्यहीनता**।

दोहागा—वि. [हिं. दोहाग] **अभागा, भाग्यहीन**।

दोहान—संज्ञा पुं. [देश.] **जवान बैल**।

दोहित—संज्ञा पुं. [सं. दौहित्र] **बेटी का बेटा, नाती**।

दोहिन, दोहिनी—संज्ञा स्त्री [सं. दोहनी] **दूध दुहने का बरतन**। उ.—सूरदास नँद लेहु दोहिनी, दुहहु लाल की नाटी—१०-२५६।

दोही—संज्ञा पुं. [सं. दोहिन्] **दूध दुहनेवाला, ग्वाला**।

दोह्य—वि. [सं.] **दुहने योग्य**।

संज्ञा पुं. (१) **दूध**। (२) **मादा पशु जो दुही जाती है, स्त्री जिसके दूध होता है**।

दौ—अव्य. [सं. अथवा] **या, अथवा**।

संज्ञा पुं. [हिं. दव, दावा] **आग, अग्नि**। उ.—चल मोहन रथ बैठे सुफलकसुत चढ़न चहत यह सुनि चकित भई बिरह दौं लगाई—२५२५।

दौंकना—क्रि. अ. [हिं. दमकना] **चमकना-दमकना**।

दौंगरा—संज्ञा पुं. [हिं. दौ = आग] **वर्षा का पहला छींटा**।

दौंच—संज्ञा स्त्री. [हिं. दोच] (१) **दुबधा**। (२) **कष्ट**। (३) **दबाव**।

दौंचना—क्रि. स. [हिं. दबोचना] (१) **किसी न किसी प्रकार दबाव डालकर लेना**। (२) **लेने को अड़ना**।

दौंचि—क्रि. स. [हिं. दौंचना] **लेने के लिए अड़कर या दबाव डालकर**। उ.—तंदुल माँगि दौंचि कै लाई सो दीनो उपहार—सारा.।

दौंजा—संज्ञा पुं. [देश.] **मचान, पाड़**।

दौंरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दाँना] (१) **रस्सी**। (२) **रस्सी में बँधे बैलों की जोड़ी**। (३) **झुंड**।

दौ—संज्ञा स्त्री. [सं. दव] (१) **आग**। उ.—(क) पुनि जुरि दौ दीनी पुर लाइ। जरन लगे पुर लोग लुगाइ—४-१२। (ख) मेरे हियरे दौ लागति है जारत तनु को चीर—२६८६। (२) **ताप, जलन**।

दौड़—संज्ञा स्त्री. [हिं. दौड़ना] (१) **दौड़ने की क्रिया या भाव**।

मुहा.—दौड़ पड़ना—**तेजी से चलने लगना**। दौड़ दौड़ कर आना जाना—**जल्दी आना-जाना**।

(२) **धावा, चढ़ाई**। (३) **उद्योग में इधर-उधर फिरना, प्रयत्न**। (४) **वेग, द्रुतगति, तेजी**। (५) **पहुँच, गति की सीमा**। (६) **उद्योग या प्रयत्न की सीमा या पहुँच**। (७) **लंबाई, विस्तार**। (८) **दल, समूह**।

दौड़धपाड़, दौड़धूप—संज्ञा स्त्री. [हिं. दौड़+धूप] **किसी काम के लिए इधर-उधर दौड़ने की क्रिया या भाव, प्रयत्न, उद्योग, परिश्रम**।

दौड़ना—क्रि. अ. [सं. धोरण] (१) **बहुत तेजी से चलना**।

मुहा.—चढ़ दौड़ना—**धावा या चढ़ाई करना**।

(२) **सहसा प्रवृत्त हो जाना, जुट पड़ना**। (३) **प्रयत्न में इधर-उधर फिरना**। (४) **छा जाना**।

दौड़ाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. दौड़ना] (१) **दौड़ने की क्रिया या भाव**। (२) **दौड़-धूप**।

दौड़ादौड़—क्रि. वि. [हिं. दौड़+दौड़] **बिना कहीं रुके**।

दौड़ादौड़, दौड़ादौड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दौड़ना] (१) **दौड़धूप**। (२) **बहुत से लोगों का एक साथ दौड़ना**। (३) **हड़बड़ी, आतुरता**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौड़ान—संज्ञा स्त्री. [हिं. दौड़ना] (१) **दौड़ने की क्रिया या भाव।** (२) **वेग, झोंक।** (३) **सिलसिला।** (४) **बारी, पारी।**

दौड़ाना—क्रि. स. [हिं. दौड़ना का रुक.] (१) **दौड़ने में प्रवृत्त करना।** (२) **बार-बार आने-जाने को विवश करना।** (३) **हटाना।** (४) **फैलाना, पोतना।** (५) **फेरना, चलाना।**

दौत्य—संज्ञा पुं. [सं.] **दूत का काम।**

दौन—संज्ञा पुं. [सं. दमन] (१) **दबाना।** (२) **निग्रह, नियंत्रण।**

दौना—संज्ञा पुं. [सं. दमनक] **एक पौधा।**

संज्ञा पुं. [हिं. दोना] (१) **पत्तों का दोना।** (२) **दोने में रखा खाने का सामान।** उ.—बोलत नहीं रहत वह मौना। दधि लै छीनि खात रह्यौ दौना।

संज्ञा पुं. [सं. द्रोण] **एक पर्वत।**

क्रि. स. [सं. दमन] **दमन करना।**

दौनागिरि—संज्ञा पुं. [सं. द्रोणगिरि] **एक पर्वत जिस पर हनुमान जी लक्ष्मण जी के शक्ति लगने पर संजीवनी जड़ी लेने गये थे।** उ.—(क) दौनागिरि पर आहि सँजीवनि, बैद सुषेन बतायौ—६-१४६। (ख) दौनागिरि हनुमान सिधायौ—६-१५०।

दौर—संज्ञा पुं. [हिं. दौड़] **दौड़ने की क्रिया या भाव।**

प्र.—पर्यौ अधिक करि दौर—**प्राप्ति के लिए दौड़ पड़ा, दौड़कर उसे पा लिया या उसमें जा पड़ा।** उ.—माधौ जू मन माया बस कीन्हौ। लाभ-हानि कछु समुझत नाहीं ज्यौं पतंग तन दीन्हौ। गृह दीपक, धन तेल, तूल तिय, सुत ज्वाला अति जोर। मैं मतिहीन मरम नहिं जान्यौ, पर्यौ अधिक करि दौर—१-४६।

संज्ञा पुं. [अ.] (१) **चक्कर, भ्रमण, फेरा।** (२) **दिनों का फेर।** (३) **उन्नति का समय।**

यौ.—दौरदौरा—**प्रधानता, प्रबलता, अधिकार।**

(४) **प्रभाव, प्रताप।** (५) **बारी, पारी।** (६) **बार, दफा।**

दौरत—क्रि. अ. [हिं. दौड़ना] **दौड़ते हैं, दौड़ते (समय, में)** उ.—(क) दौरत कहा, चोट लगिहै कहुँ पुनि खेलिहौ सकारे—१०-२२६। (ख) कहति रोहिनी सोवन देहु न, खेलत-दौरत हारि गए री—१०-२४७। (ग) मोहन मुसकि गही दौरत मैं छूटि तनी छुँद रहित घाँघरी—२२६६। (घ) एक अँधेरो हिये की फूटी दौरत पहिर खराऊँ—३४६६।

दौरना—क्रि. अ. [हिं. दौड़ना] (१) **दौड़ना, दौड़ने में प्रवृत्त होना।** (२) **लगना, प्रवृत्त होना।**

दौरा—संज्ञा पुं. [अ. दौर] (१) **चक्कर, भ्रमण।** (२) **फेरा, गश्त।** (३) **जाँच-पड़ताल के लिए घूमना।** (४) **सहसा आ जाना।** (५) **ऐसी बात होना जो समय-समय पर होती हो।** (६) **ऐसा रोग जो समय समय पर हो।**

संज्ञा पुं. [सं. द्रोण] **बड़ा टोकरा।**

दौरादौर—क्रि. वि. [हिं. दौड़ना] (१) **लगातार, बिना थके या विश्राम लिये।** (२) **धुन से, तेजी से।**

दौरात्म्य—संज्ञा पुं. [सं.] **दुरात्मा होने का भाव, दुष्टता।**

दौरान—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **चक्र, फेरा।** (२) **दिनों का फेर।** (३) **बारी, पारी।** (४) **सिलसिला, झोंक।**

दौरि—क्रि. अ. [हिं. दौड़ना] **दौड़कर, लपककर।** उ.—(क) ज्यौं मृगा कस्तूरि भूलै, सु तौ ताकैं पास। भ्रमत हीं वह दौरि ढूँढै, जबहिं पावै बास—१-७०। (ख) तुम हरि साँकरे के साथी। सुनत पुकार, परम आतुर ह्वै, दौरि छुड़ायौ हाथी—१-११९२।

दौरित—संज्ञा पुं. [सं.] **क्षति, हानि।**

दौरिबे—संज्ञा स्त्री. [हिं. दौड़ना] **दौड़ने की क्रिया या भाव।** उ.— यह सुनत रिस भर्यौ दौरिबे को पर्यौ सूडि झटकत पटकि कूक पार्यौ—२४६२।

दौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. दौरा] **टोकरी, डलिया, चंगेरी।**

क्रि. अ. स्त्री. [हिं. दौड़ना, दौड़ी] (१) **भागी, तेजी से चली।** उ.—सूर सुनत संभ्रम उठि दौरी प्रेम मगन तन दसा बिसारे—१-२४०। (२) **दौड़कर, लपककर।** उ.—सूर सुकुवरी चंदन लीन्हें मिली स्याम को दौरी—२५८६।

मुहा.—फिरौगी दौरी दौरी— **परेशान और**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैरान होकर **मारी-मारी फिरोगी**। उ.—सूर सुनहु लैहैं छँड़ाइ सब अबहिं फिरौगी दौरी दौरी—१११४।

दौरे—क्रि. अ. बहु. भूत. [हिं. दौड़ना] **दौड़ पड़े, धाये**। उ.—अष्टी सहस किंकर-दल तेहिके दौरे मोहिं निहारि —६-१०४।

दौरैं—क्रि. अ. [हिं. दौड़ना] **दौड़ते हैं**। उ.—महासिंह निज भाग लेत ज्यों पाछे दौरैं स्वान—सारा. ६३७।

दौर्ग—वि. [सं.] (१) **दुर्ग-संबंधी**। (२) **दुर्गा संबंधी**।

दौर्जन्य—संज्ञा पुं. [सं.] **दुर्जनता, दुष्टता**।

दौर्बल्य—संज्ञा पुं. [सं.] **दुर्बलता, कमजोरी**।

दौर्भाग्य—संज्ञा पुं. [सं.] **दुर्भाग्य, अभागापन**।

दौर्मनस्य—संज्ञा पुं. [सं.] **चित्त का खोटापन**।

दौर्य—संज्ञा पुं. [सं.] **दूरी, अंतर**।

दौर्यौ—क्रि. वि. [हिं. दौड़ना] (१) **दौड़ता हुआ, भागता हुआ, द्रुत गति से चलता हुआ**। उ.—फिरि इत-उत जसुमति जो देखै, दृष्टि न परै कन्हाई। जान्यौ जात ग्वाल संग दौर्यौ, टेरति जसुमति धाई —४१३। (२) **दौड़ा, भागा**।

दौर्हार्द—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दुष्टता**। (२) **दुर्भाव**।

दौलत—संज्ञा स्त्री. [अ.] **धन, संपत्ति**।

दौलतखाना—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **निवास-स्थान**।

दौलतमंद—वि. [फ़ा] **धनी, संपन्न**।

दौलतमंदी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **संपन्नता**।

दौलति—संज्ञा स्त्री. [हिं. दौलत] **धन, संपत्ति**।

दौलाई—क्रि. स. [हिं. दव+लाना] **आग से जलायी**। उ.—हरि-सुत-बाहन-असन-सनेही मानहु अनल देह दौलाई—सा.उ.—२१।

दौवारिक—संज्ञा. पुं. [सं] **द्वारपाल**।

दौष्यंत, दौष्यंति—संज्ञा पुं. [सं.] **दुष्यंत का पुत्र भरत**।

दौहित्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लड़की का लड़का, नाती**। (२) **तलवार**।

दौहित्रिक—वि. [सं.] **दौहित्र से संबंधित**।

दौहृद—संज्ञा पुं. [सं.] **गर्भिणी की इच्छा**।

दौहृदिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **गर्भवती स्त्री**।

द्याऊँ—क्रि. स. [हिं. दिलाना (प्रे.)] **दिलाऊँ, (दूसरे को) देने के लिए प्रवृत्त करूँ**। उ—मेरे संग राजा पै आउ। द्याऊँ तोहि राज-धन-गाउँ—४-६।

द्याना—क्रि. स. [हिं. दिलाना] **दिलाना**।

द्याल—वि. [सं. दयालु] **जिसमें दया-भाव अधिक हो, दयावान, दयालु**। उ.—दीन के द्याल गोपाल, करुनामयी मातु सो सुनि, तुरत सरन आयौ—४-१०।

द्यावत—क्रि. स [हिं. दिलाना] **दिलवाते हैं**।

प्र.—गारी द्यावत—**गाली दिलवाते हैं**। उ.—सूर-स्याम सर्वग्य कहावत मात-पिता सौं द्यावत गारी—११३७। दरस नहिं द्यावत – **दर्शन नहीं देते, दर्शन नहीं कराती**। उ.—सूरस्याम कैसे तुम देखति मोहिं दरस नहिं द्यावत री—१६३४।

द्यावना—क्रि. स. [हिं. दिलाना] **दिलाना**।

द्यु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दिन**। (२) **आकाश**। (३) **स्वर्ग**। (४) **अग्नि**। (५) **सूर्यलोक**।

द्युग—वि. [सं.] **आकाश में चलनेवाला (पक्षी)**।

द्युचर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ग्रह**। (२) **पक्षी**।

द्युत – वि. [सं.] **प्रकाशवान**।

द्युति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कांति, चमक**। (२) **शोभा, छवि**। (३) **लावण्य**। (४) **किरण, राशि**।

द्युतिकर—वि. [सं.] **चमकनेवाला**।

संज्ञा पुं.— **ध्रुव (नक्षत्र)**।

द्युतधर—वि. [सं.] **प्रकाश धारण करनेवाला**।

संज्ञा पं.—**विष्णु**।

द्युतिमंत्र—वि. [हिं. द्युतिमान] **प्रकाशयुक्त**।

द्युतिमा—संज्ञा स्त्री. [सं. द्युति+मा (प्रत्य.)] **प्रकाश**।

द्युतिमान्—वि. [सं. द्युतिमत्] **चमकवाला**।

द्युत् संज्ञा पुं. [सं.] **किरण**।

द्युनिश – संज्ञा पं. [सं.] **दिन-रात**।

द्युपति – संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सूर्य**। (२) **इन्द्र**।

द्युपथ—संज्ञा पुं. [सं.] **आकाशमार्ग**।

द्युमणि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सूर्य**। (२) **मंदार**।

द्युमती—वि. स्त्री. [हिं. द्युमान्] **चमकीली**।

द्युमयी—संज्ञा स्त्री. [सं] **विश्वकर्मा की पुत्री जो सूर्य को ब्याही थी**।

द्युमान, द्युमान्—वि. [सं. द्युमत्, हिं. द्युमान्] **प्रकाशपूर्ण,**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांतियुक्त। उ.—तक्षक धनंजय पुनि देवदत्त अरु पौण्ड्र संख द्यु मान्–सारा. ६।

द्युम्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सूर्य**। (२) **अन्न**।

द्युलोक—संज्ञा पुं. [सं.] **स्वर्ग लोक**।

द्युवन्—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सूर्य**। (२) **स्वर्ग**।

द्युषद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवता**। (२) **ग्रह-नक्षत्र**।

द्युसद्म—संज्ञा पुं. [सं. द्युसद्मन्] **स्वर्ग**।

द्युसरित्—संज्ञा स्त्री. [सं.] **स्वर्ग की नदी, मंदाकिनी**।

द्युसिंधु—संज्ञा पुं. [सं.] **स्वर्ग की नदी, मंदाकिनी**।

द्यू—वि. [सं.] **जुआ खेलनेवाला, जुआरी**।

द्यूत—संज्ञा पुं. [सं.] **जुए का खेल**।

द्यूतकर, द्यूतकार—वि. [सं.] **जुआरी**।

द्यूतक्रीड़ा—संज्ञा [सं.] **जुए का खेल**।

द्यों—क्रि. स. [हिं. देना] **दूँ, प्रदान करूँ**।

प्र.—द्यों समझाये—**समझाये देता हूँ**। उ.—जो कहै मोहिं काहे तुम्ह ल्याये। ताको उत्तर द्यों समुझाये —१०३-३२।

द्यो—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **स्वर्ग**। (२) **आकाश**।

द्योकार—संज्ञा पुं. [सं.] **थवई, राजगीर**।

द्योत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रकाश**। (२) **धूप**।

द्योतक—वि. [सं.] (१) **प्रकाश करनेवाला**। (२) **बतानेवाला**। (३) **सूचित करनेवाला**।

द्योतन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बताने या दिखाने का काम**। (२) **प्रकाश करने या जलाने का काम**। (३) **दर्शन**। (४) **दीपक**।

द्योतित—वि. [सं.] **प्रकाशित**।

द्योतिरिंगण—संज्ञा पुं. [सं.] **जुगनू, खद्योत**।

द्योभूमि—संज्ञा पुं. [सं.] **पक्षी**।

द्योषद्—संज्ञा पुं. [सं.] **देवता**।

द्योहरा—संज्ञा पुं. [हिं. देवधरा] **देवालय, मंदिर**।

द्यौं—क्रि. स. [हिं. देना] **दूँ, प्रदान करूँ**। उ.—(क) नैंकु रहौ, माखन द्यौं तुमकौं—१०-१६७। (ख) सद दधि-माखन द्यौं आनी—१०-१८३।

द्यौ—क्रि. स. [हिं. देना] **दो, प्रदान करो**।

प्र.—द्यो डारी—**दे डालो, प्रदान कर दो**। उ.—चोली हार तुम्हहिं कौं दीन्हों, चीर हमहिं द्यौ डारी—७८८।

द्यौस—संज्ञा पुं. [सं. दिवस] **दिन**। उ.—(क) स्यार द्यौस, निसि बोलैं काग—१-२८६। (ख) चलत चितवत द्यौस जागत सपन सोवत राति—३०७०।

द्रगड़—संज्ञा पुं. [सं.] **एक तरह का बाजा, दगड़ा**।

द्रढिमा—संज्ञा स्त्री. [सं. द्रढिमन्] **दृढ़ता**।

द्रढिष्ठ—वि. [सं.] **बहुत दृढ़**।

द्रप—संज्ञा पुं. [सं. दर्प] **गर्व, अभिमान**। उ.—सात दिवस गोबर्धन राख्यो इंद्र गयौ द्रप छोड़ि—२५१५।

द्रप्स, द्रप्स्य—संज्ञा पुं [सं.] (१) **वह द्रव जो गाढ़ा न हो**। (२) **मट्ठा**। (३) **शुक्र**। (४) **रस**।

द्रवंती—संज्ञा स्त्री [सं.] **नदी**।

द्रव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बहाव**। (२) **दौड़, भाग**। (३) **वेग**। (४) **मदिरा**। (५) **रस**।

वि.—(१) **पानी की तरह तरल**। (२) **गीला**। (३) **पिघला हुआ**।

द्रवक—वि. [सं.] (१) **भागनेवाला**। (२) **बहनेवाला**।

द्रवज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रस से बनी वस्तु**। (२) **गुड़, राब आदि**।

द्रवण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गमन, दौड़**। (२) **बहाव**। (३) **पिघलने-पसीजने की क्रिया या भाव**। (४) **चित्त का द्रवित हो जाना**।

द्रवत—क्रि. अ. [हिं. द्रवना] **दया करते हैं, पसीज जाते हैं**। उ.—कहियत परम उदार कृपानिधि अंतर्यामी त्रिभुवन तात। द्रवत हैं आपु देत दास को रीझत हैं तुलसी के पात।

द्रवता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पिघलने-पसीजने का भाव**।

द्रवति—क्रि. अ. [हिं. द्रवना] **पसीजती है, दयार्द्र होती है, दया करती है**। उ.—कुलिसहुँ तैं कठिन छतिया चितै री तेरी अजहुँ द्रवति जो न देखति दुखारि—३६२।

द्रवत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **पिघलने-पसीजने का भाव**।

द्रवना—क्रि. अ. [सं. द्रवण] (१) **बहना** (२) **पिघलना**। (३) **पसीजना, दया करना**।

द्रविड़—संज्ञा पुं. [सं. तिरमिक] (१) **दक्षिण भारत का एक देश**। (२) **इस देश का रहनेवाला**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रविण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **धन** । (२) **कंचन** । (३) **बल** ।

द्रवित—वि. [हिं. द्रवना] **पुलकित, जो प्रेम से पसीज गया हो** । उ.– मनौ धेनु तृन छाँड़ि बच्छ-हित, प्रेम द्रवित चित स्रवत पयोधर—१०-१२४ ।

द्रवीभूत—वि. [सं.] (१) **जो पानी की तरह पतला या तरल हो गया हो** । (२) **गला या पिघला हुआ** । (३) **पसीजा हुआ, दया से युक्त** ।

द्रवै—क्रि. अ. [हिं. द्रवना] **पसीजे, दया दिखाये** । उ.—कह दाता जो द्रवै न दीनहिं देखि दुखित तत्काल —१-१५६ ।

द्रव्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वस्तु, पदार्थ** । (२) **वह पदार्थ जो गुण अथवा गुण और क्रिया का आश्रय हो** । (३) **सामान, सामग्री** । (४) **धन-दौलत** (५) **औषध** । (६) **मद्य** ।

वि.—**पेड़ का, पेड़ से संबंधित** ।

द्रव्यत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **द्रव्य का भाव** ।

द्रव्यवती—वि. स्त्री. [हिं. द्रव्यवान्] **धनी (स्त्री)** ।

द्रव्यवान्—वि. [सं. द्रव्यवत्] **धनी, धनवान** ।

द्रव्याधीश—संज्ञा पुं. [सं.] **कुबेर** ।

द्रष्टव्य—वि. [सं.] (१) **देखने योग्य** । (२) **जो दिखाया जाने को हो** । (३) **जिसे बताना-जताना हो** । (४) **प्रत्यक्ष कर्तव्य** ।

द्रष्टा—वि. [सं.] (१) **देखनेवाला** । (२) **भेंट या साक्षात् करनेवाला** । (३) **प्रकाशक** ।

द्रह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ताल, झील** । (२) **स्थान जहाँ जल काफी गहरा हो, दह** ।

द्राक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दाख, अंगूर** ।

द्राघिमा—संज्ञा पुं. [सं. द्राघिमन्] **दीर्घता** ।

द्राव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गति** । (२) **बहाव** । (३) **बहने-पसीजने या गलने-पिघलने की क्रिया** । (४) **अनुताप** ।

द्रावक—वि. [सं.] (१) **ठोस चीज को पिघलानेवाला** । (२) **बहाने या गलानेवाला** । (३) **चित्त को द्रवित कर देनेवाला** । (४) **चतुर** । (५) **चुरानेवाला** । (६) **हृदयग्राही** ।

द्रावण—संज्ञा पुं. [सं.] **गलाने-पिघलाने का भाव** ।

द्राविड़—वि. [सं.] **द्रविड़ देशवासी** ।

द्राविड़ी—संज्ञा स्त्री [सं. द्रविड़] **द्रविड़ जाति की स्त्री** ।

वि.—**द्रविड़ देश से संबंधित** ।

मुहा.—द्राविड़ी प्राणायाम - **सीधी तरह होनेवाले काम को बहुत घुमा-फिरा कर करना** ।

द्रावित—वि. [सं.] **पिघलाया या तरल किया हुआ** ।

द्रु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वृक्ष** । (२) **शाखा** ।

द्रुघण—संज्ञा पुं. [सं.] **कुठार, कुल्हाड़ी** ।

द्रुण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **धनुष** । (२) **खड्ग** ।

द्रुणा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **धनुष की ज्या या डोरी** ।

द्रुत—वि. [सं.] (१) **गला हुआ** । (२) **शीघ्र चलनेवाला, तेज** । (३) **भागा हुआ** ।

द्रुतगति—वि. [सं.] **तेज चलनेवाला** ।

संज्ञा स्त्री.—**तेज चाल** ।

द्रुतगामी—वि. [सं.] **तेज चलनेवाला** ।

द्रुतपद—संज्ञा पुं. [सं.] **एक छंद** ।

द्रुतविलंबित—संज्ञा पुं. [सं.] **एक वर्णवृत्त** ।

द्रुति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **द्रव** । (२) **गति** ।

द्रुनख—संज्ञा पुं. [सं.] **काँटा** ।

द्रुपद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक चंद्रवंशी राजा । द्रुपद की पुत्री द्रौपदी पाँडवों की ब्याही थी । उसके पुत्र शिखंडी को आगे करके अर्जुन ने भीष्म को मारा था । महाभारत के युद्ध में द्रुपद भी मारा गया था** । (२) **खड़ाऊँ** ।

द्रुपद-तनया—संज्ञा स्त्री. [सं. द्रुपद+तनया] **राजा द्रुपद की पुत्री, द्रौपदी** ।

द्रुपद-सुता—संज्ञा स्त्री. [सं. द्रुपद+सुता] **राजा द्रुपद की पुत्री, द्रौपदी** ।

द्रुपदात्मज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शिखंडी** । (२) **धृष्टद्युम्न** ।

द्रुपदी—संज्ञा स्त्री [सं. द्रौपदी] **राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी जो पाँडवों को ब्याही थी** ।

द्रुम—संज्ञा पु. [सं.] (१) **वृक्ष** । उ.—बोलत मोर सैल द्रुम चढ़ि-चढ़ि बग जु उड़त तरु डारैं—२८२० । (२) **पारिजात** । (३) **कुबेर** । (४) **रुक्मिणी से उत्पन्न श्री कृष्ण के एक पुत्र का नाम** ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रुम-डरिया—संज्ञा स्त्री. [सं. द्रुम+हिं. डाली] **पेड़ की डाल या शाखा।** उ. –अब कैं राखि लेहु भगवान। हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम-डरिया, पारधि साधे बान—१-९७।

द्रुमनख—संज्ञा पुं. [सं.] **काँटा।**

द्रुमशीर्ष—संज्ञा पुं. [सं.] **पेड़ का सिरा।**

द्रुमसार—संज्ञा पुं. [सं.] **अनार, दाड़िम।**

द्रुमारि—संज्ञा पुं. [सं.] **हाथी, गज।**

द्रुमालय—संज्ञा पुं. [सं.] **जंगल।**

द्रुमेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चंद्रमा।** (२) **पारिजात।**

द्रुह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पुत्र।** (२) **वृक्ष।**

द्रू—संज्ञा पुं. [सं.] **सोना, कंचन।**

द्रोण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पत्तों का दोना।** (२) **नाव, डोंगा।** (३) **काला कौआ।** (४) **बिच्छू।** (५) **मेघों का एक नायक।** (६) **वृक्ष, पेड़।** (७) **एक पर्वत।** (८) **महाभारत के प्रसिद्ध योद्धा द्रोणाचार्य।**

द्रोण-काक—संज्ञा पुं. [सं.] **काला कौआ।**

द्रोणगिरि—संज्ञा पुं. [सं.] **एक पर्वत जहाँ से हनुमान जी लक्ष्मण जी के लिए संजीवनी जड़ी लाये थे।**

द्रोणाचल—संज्ञा पुं. [सं.] **द्रोणगिरि नामक पर्वत।**

द्रोणाचार्य—संज्ञा पुं. [सं.] **महाभारत के प्रसिद्ध योद्धा जो कौरवों-पांडवों के गुरु थे।**

द्रोणि—संज्ञा पुं. [सं.] **द्रोण का पुत्र अश्वत्थामा।**

द्रोणि, द्रोणी—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) **डोंगी।** (२) **छोटा दोना।** (३) **काठ का प्याला।** (४) **दो पर्वतों की बिचली भूमि।** (५) **एक नदी।** (६) **द्रोणाचार्य की स्त्री, कृपी।**

द्रोन—संज्ञा पुं. [सं. द्रोण] **द्रोणाचार्य।**

द्रोह—संज्ञा पुं. [सं.] **वैर, द्वेष।**

द्रोहाट—वि. [सं.] **ऊपर से साधु भीतर से दोषी।**

द्रोही—वि. [सं. द्रोहिन] **द्रोह या बुराई करनेवाला।**

संज्ञा पुं.—**वैरी, शत्रु।**

द्रोहु—संज्ञा पुं. [सं. द्रोह] **द्रोह, वैर, द्वेष।**

द्रौणायन, द्रौणायनि, द्रौणि—संज्ञा पुं. [सं.] **द्रोणाचार्य का पुत्र, अश्वत्थामा।**

द्रौपद—संज्ञा पुं. [सं.] **राजा द्रुपद** [का] **पुत्र।**

द्रौपदि, द्रौपदी—संज्ञा स्त्री [सं. द्रौपदी] **राजा द्रुपद की कृष्णा नाम्नी कन्या जो अर्जुन को ब्याही थी, परंतु माता की आज्ञा से जिसे अन्य चारों पांडवों ने भी स्वीकार किया था।**

द्रौपदेव—संज्ञा पुं. [सं.] **द्रौपदी के पुत्र।**

द्वंद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जोड़ा, युग्म।** (२) **प्रति-द्वंद्वी।** (३) **द्वंद्व युद्ध।** (४) **झगड़ा-बखेड़ा, कलह।** (५) **दो परस्पर विरुद्ध चीजों का जोड़ा जैसे राग-द्वेष, सुख-दुख।** (६) **उलझन, जंजाल।** (७) **कष्ट, दुख।** उ.—बोलि लीन्हीं कदम के तर इहाँ आउ नारि। प्रगट भए तहाँ सबनि को हरि काम द्वंद निवारि। (८) **उपद्रव, ऊधम।** उ.—भोर होत उरहन लै आवति ब्रज की बधू अनेक। फिरत जहाँ तहँ द्वंद मचावत घर न रहत छन एक। (९) **रहस्य, भेद, गुप्त बात।** (१०) **भय, आशंका।** उ.—काम क्रोध लोभहिं परिहरै। द्वंदरहित उद्यम नहिं करै—३—१३। (११) **दुबधा, असमंजस।**

संज्ञा स्त्री [सं. दुंदुभी] **दुंदुभी।**

द्वंदज—वि. [सं. द्वंद्वज] **द्वंद से उत्पन्न।**

द्वंदर—वि. [सं. द्वंद्वालु] **झगड़ालू।**

संज्ञा पुं. [सं. द्वंद] **द्वंद।**

द्वंद्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जोड़ा, युग्म।** (२) **नर-मादा का जोड़ा।** (३) **दो परस्पर विरोधी चीजों का जोड़ा** (४) **रहस्य, भेद की बात।** (५) **लड़ाई, झगड़ा।** (६) **कलह, बखेड़ा।** (७) **समास का एक भेद।** (८) **दुर्ग, किला।**

द्वंद्वचर, द्वंद्वचारी—संज्ञा पुं. [सं.] **चकवा, चक्रवाक।**

वि.—**जोड़े के साथ रहनेवाला।**

द्वंद्वज—वि. [सं.] **सुख-दुख आदि द्वंद्वों से उत्पन्न (मनोवृत्ति)।**

द्वंद्वयुद्ध—संज्ञा पुं. [सं.] **दो पुरुषों का युद्ध।**

द्वय—वि. [सं.] **दो।**

द्वयता—संज्ञा स्त्री [सं. द्वय+ता (प्रत्य)] (१) **दो का भाव।** (२) **भेद-भाव।**

द्वाज—संज्ञा पुं. [सं.] **जारज संतान।**

द्वादश—संज्ञा पुं. [सं.] **बारह की संख्या या अंक।**

द्वादशलोचन—संज्ञा पुं. [सं.] **स्वामी कार्त्तिकेय।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वादशांग—वि. [सं.] जिसके बारह अंग हों।

द्वादशांशु—संज्ञा पुं. [सं.] बृहस्पति।

द्वादशास्त्र—संज्ञा पुं. [सं.] स्वामी कार्त्तिकेय।

द्वादशाक्षर—संज्ञा पुं. [सं.] विष्णु का एक मंत्र—ओं नमो भगवते वासुदेवाय।

द्वादशात्मा—संज्ञा पुं. [सं. द्वादशात्मन्] सूर्य, रवि।

द्वादशी—संज्ञा स्त्री [सं.] किसी पक्ष की बारहवीं तिथि।

द्वादस—वि. [सं. द्वादश] बारह, बारहवाँ।

संज्ञा पुं.—बारह की संख्या या अंक।

द्वादस अच्छर—संज्ञा पुं. [सं. द्वादशाक्षर] विष्णु का एक मंत्र—ओं नमो भगवते वासुदेवाय। उ.—द्वादस अच्छर मंत्र सुनायौ। और चतुरभुज रूप बतायौ —४-६।

द्वादसि, द्वादसी—संज्ञा स्त्री. [सं. द्वादशी] किसी पक्ष की बारहवीं तिथि। उ.—द्वादसि पोषै लै आहार। घटिका दोइ द्वादसी जान—६-५।

द्वापर—संज्ञा पुं. [सं.] बारह युगों में तीसरा युग जो ८६४००० वर्ष का माना जाता है।

द्वार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मुख, मुहाना। (२) दरवाजा।

मुहा.—द्वार खुलना—मार्ग या उपाय निकलना। द्वार-द्वार फिरना—(१) बहुतों के यहाँ जाना। (२) घर-घर भीख माँगना। द्वार लगना—(१) दरवाजा बंद होना। (२) आस लगाये द्वार पर खड़े रहना (३) छिपकर आहट लेने के लिए द्वार पर खड़े होना। द्वारे लागे—आशा से द्वार पर खड़े रहे। उ.—यह जान्यौ जिय राधिका द्वारे हरि लागे। गर्व कियो जिय प्रेम को ऐसे अनुरागे। द्वार लगाना—द्वार बंद करना।

(२) आँख, कान आदि इंद्रियों के छेद। (४) उपाय, साधन।

द्वारकंटक—संज्ञा पुं. [सं.] किवाड़, कपाट।

द्वारका—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक पुरानी नगरी जो काठियावाड़, गुजरात में है और सात पुरियों में मानी गयी है। जरासंध के उपद्रवों से तंग आकर श्रीकृष्ण यहीं आकर बसे थे।

द्वारकाधीश, द्वारकानाथ, द्वारकेश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) श्रीकृष्ण। (२) श्रीकृष्ण की मूर्ति जो द्वारका में है।

द्वारचार—संज्ञा पुं. [सं. द्वार+चार=व्यवहार] विवाह की एक रीति जो लड़कीवाले के यहाँ बारात पहुँचने पर की जाती है।

द्वारछेंकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. द्वार+छेंकना] (१) विवाह की एक रीति जिसमें वधू को साथ लेकर आते हुए वर का द्वार उसकी बहन रोकती है और कुछ नेग पाकर हट जाती है। (२) वह नेग जो इस रीति में बहन को दिया जाता है।

द्वारप—संज्ञा पुं. [सं.] द्वारपाल।

द्वार-पट—संज्ञा पुं. [सं.] द्वार पर टाँगने का परदा।

द्वारपाल—संज्ञा पुं. [सं.] ड्योढ़ीदार, दरबान, प्रतिहार।

द्वारपालक—संज्ञा पुं. [सं.] द्वारपाल।

द्वारपिंडी—संज्ञा स्त्री. [सं.] ड्योढ़ी, दहलीज।

द्वारपूजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] विवाह की एक रीति जिसमें कन्या पक्षवाले कलश आदि का पूजन करके वर का स्वागत करते हैं।

द्वारयंत्र—संज्ञा पुं. [सं.] ताला।

द्वारवती—संज्ञा स्त्री. [सं.] द्वारावती, द्वारका।

द्वारस्थ—वि. [सं.] जो द्वार पर बैठा हो।

द्वारा—संज्ञा पुं. [सं. द्वार] (१) द्वार, दरवाजा, फाटक। उ.—धेनु-रूप धरि पुहुमि पुकारी, सिव बिरंचि कैं द्वारा—१०-४।

यौ.—गृह-द्वारा—घर-द्वार, घर-गृहस्थी। उ.—गृह-द्वारा कहुँ है की नाहीं पिता-मातु-पति-बंधु न भाईं—१०८६।

(२) मार्ग, राह, पथ, रास्ता।

अव्य—[सं. द्वारात्] हेतु से, जरिये से।

द्वारावति, द्वारावती—संज्ञा स्त्री. [सं. द्वारावती] द्वारका जो काठियावाड़ गुजरात में स्थित है और जिसकी गणना चार धामों और सात पुरियों में है।

द्वारि—संज्ञा पुं [सं. द्वार] द्वार, दरवाजा। उ.—याकौं ह्याँ तैं देहु निकारि। बहुरि न आवै मेरे द्वारि—१-२८४।

द्वारिक—संज्ञा पुं. [सं.] द्वारपाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारिका—संज्ञा स्त्री. [सं. द्वारका] **काठियावाड़, गुजरात की एक प्राचीन नगरी जिसे श्रीकृष्ण ने, जरासंध के आक्रमणों से मथुरावासियों को बचाने के उद्देश्य से, अपनी राजधानीबनाया था ।**

द्वारिकाराइ—संज्ञा पुं. [सं. द्वारका+राय] **द्वारकानाथ, श्रीकृष्णचन्द्र ।** उ.–बन चलि भजौ द्वारिकाराय—१–२८४ ।

द्वारिकावासी—वि. [हिं. द्वारिका+वासी] **द्वारका में बसने वाले ।** उ.—हा जदुनाथ द्वारिका वासी जुग जुग भक्त आपदा फेरी – १–२५१ ।

द्वारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. द्वार+ई] **छोटा द्वार ।**

द्वारे—संज्ञा पुं. [सं. द्वार] **दरवाजा, द्वार ।** उ.—छोरे निगड़, सोआए पहरू, द्वारे कौ कपाट उघरयौ —१०-८ ।

द्वारैं—संज्ञा पुं. [सं. द्वार] **द्वार पर ।** उ.—सूरदास-प्रभु भक्त-बछल हरि, बलि-द्वारैं दरबान भयौ—१–२६ ।

द्वारयौ—संज्ञा पुं. [सं. द्वार] **द्वार पर ।** उ.—ताहि अपनी करी चले आगे हरी गये जहाँ कुबलिया मल्ल द्वारयौ – २५८८ ।

द्वास्थ—संज्ञा पुं. [सं.] **द्वारपाल ।**

द्वि—वि. [सं.] **दो ।**

द्विक—वि. [सं.] (१) **दो अंगों का ।** (२) **दोहरा ।** संज्ञा पुं.—(१) **काक ।** (२) **चकवा, कोक ।**

द्विकर्मक—वि. [सं.] (**क्रिया**) **जिसके दो कर्म हों ।**

द्विकल—संज्ञा पुं. [हिं. द्वि+कला] **छंदशास्त्र में दो मात्राओं का समूह ।**

द्विगु—संज्ञा पुं. [सं.] **समास का एक भेद ।**

द्विगुण—वि. [सं.] **दूना, दुगना ।**

द्विगुणित वि. [सं.] (१) **दूना, दुगना ।** (२) **दूना या दुगना किया हुआ ।**

द्विज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वह प्राणी जिसका जन्म दो बार हुआ हो ।** (२) **ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जिनको यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है ।** (३) **ब्राह्मण ।** (४) **सुदामा ।** उ.—रोर कै जोर तैं सोर घरनी कियौ चल्यौ द्विज द्वारिका-द्वार ठाढ़ौ —१-५ । (५) **दाँत** (क) उ.— रसना द्विज दलि दुखित होत बहु तउ रिस कहा करै । छमि सब छोभ जु छाँड़ि, छवौ रस लै समीप सँचरै—१-११७ । (ख) सुभग चिबुक द्विज-अधर नासिका १०-१०४ । (६) **पक्षी ।** उ.—निकट बिटप मानौ द्विज-कुल कूजत बय बल गई अनंग—१०६४ । (७) **चद्रंमा ।**

द्विजदंपति—संज्ञा पुं. [सं. द्विज+दंपती] **चांदी का पत्ता जिस पर लक्ष्मीनारायण का युगल चित्र खुदा रहता है और जो मृतक स्त्रियों के दशाह में ब्राह्मण को दान में दिया जाता है ।**

द्विजन्मा—वि. [सं. द्विजन्मन्] **जो दो बार जन्मा हो ।**

द्विजपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ब्राह्मण ।** (२) **चंद्रमा ।** (३) **कपूर ।** (४) **गरुड़ ।**

द्विजबंधु—संज्ञा पुं. [सं.] **संस्कार या कर्महीन द्विज ।**

द्विजब्रुव—संज्ञा पुं. [सं.] **संस्कार या कर्महीन द्विज ।**

द्विजराज, द्विजराय— संज्ञा पुं. [सं. द्विजराज] (१) **ब्राह्मण ।** (२) **चन्द्रमा ।** (३) **कपूर ।** (४) **गरुड़ ।**

द्विजलिंगी—संज्ञा पुं. [सं. द्विजलिंगिन्] **ब्राह्मण-वेशधारी निम्न वर्ग का मनुष्य ।**

द्विजवाहन—संज्ञा पुं. [सं.] **विष्णु ।**

द्विजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **द्विज की स्त्री ।**

द्विजाग्रज—संज्ञा पुं. [सं.] **ब्राह्मण ।**

द्विजाति - संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य जिन्हें यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है ।** (२) **पक्षी ।** (३) **दाँत ।**

द्विजिह्व—वि. [सं.] (१) **जिसके दो जीभें हों ।** (२) **इधर की उधर लगानेवाला, चुगलखोर ।** (३) **खल ।**

द्विजेंद्र, द्विजेश—संज्ञा पुं. [सं. द्विज+इन्द्र, +ईश] (१) **चंद्रमा ।** (२) **ब्राह्मण ।** (३) **कपूर ।** (४) **गरुड़ ।**

द्विजोत्तम—संज्ञा पुं. [सं.] **द्विजों में श्रेष्ठ, ब्राह्मण ।**

द्वितय—वि. [सं.] (१) **जिसके दो अंश या भाग हों ।** (२) **दोहरा ।**

द्वितिय—वि. [सं. द्वितीय] **दूसरा, द्वितीय ।** उ.—प्रथम ज्ञान, विज्ञानक द्वितिय मत, तृतीय भक्ति कौ भाव—२-३८ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितिया—वि. [सं. द्वितीया] **दूसरा।** उ.- (क) तब शिव-उमा गए ता ठौर, जहाँ नहीं द्वितिया कोउ और—१-२२६। (ख) कोउ कहै हरि-इच्छा दुख होइ। द्वितिया दुखदायक नहिं कोई—१-२६०।

द्वितीय—वि. [सं.] **दूसरा।**

संज्ञा पुं.—**पुत्र, लड़का।**

द्वितीयक—वि. [सं.] (१) **दूसरे स्थान का।** (२) **अप्रधान।**

द्वितीया—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पक्ष की दूसरी तिथि, दूज।**

द्वितीयाश्रम—संज्ञा पुं. [सं.] **गृहस्थाश्रम।**

द्वित्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दो का भाव** (२) **दोहरे होने का भाव।**

द्विदल—वि. [सं.] (१) **जिसमें दो दल हों।** (२) **जिसमें दो पत्ते हों।** (३) **जिसमें दो पंखुड़ियाँ हों।**

संज्ञा पुं.—**वह अन्न जिसमें दो दल हों।**

द्विदेवता—वि. [सं.] **दो देवताओं का।**

द्विदेह—संज्ञा पुं. [सं.] **गणेश।**

द्विधा—क्रि. वि. [सं.] (१) **दो प्रकार या तरह से।** (२) **दो खंड या भागों में।**

द्विधातु—वि. [सं.] **दो धातुओं का बना हुआ।**

द्विप—संज्ञा पुं. [सं.] **हाथी।** उ. - द्विप दंत कर कलित, भेष नटवर ललित मल्ल उर सल्ल तल ताल बाजैं —३०७७।

द्विपक्ष—वि. [सं.] **जिसके दो पर या पक्ष हों।**

संज्ञा पुं.—(१) **पक्षी।** (२) **महीना।**

द्विपथ—संज्ञा पुं. [सं.] **स्थान जहाँ दो पक्ष मिलते हों।**

द्विपद—वि. [सं.] (१) **जिसके दो पैर हों।** (२) **जिसमें दो पद या शब्द हों।** (३) **जिसमें दो चरण हों (गीत)।**

संज्ञा पुं.—(१) **दो पैर का प्राणी।** (२) **मनुष्य।**

द्विपदी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दो पदों का गीत।**

द्विपाद—वि. [सं.] (१) **दो पैरोंवाला।** (२) **दो पद या शब्दवाला।** (३) **दो चरणवाला (गीत)।**

संज्ञा पुं. (१) **दो पैरवाला प्राणी।** (२) **मनुष्य।**

द्विपायी—संज्ञा पुं. [सं. द्विपायिन्] **हाथी।**

द्विपास्य—संज्ञा पुं. [सं.] **गजमुख, गणेश।**

द्विबाहु—वि. [सं.] **दो भुजाओंवाला।**

द्विभाव—संज्ञा वि. [सं.] **दो भाव, दुराव, छिपाव।**

वि.—**दो भाव रखनेवाला।**

द्विभाषी—वि. [हिं. दुभाषिन्] **दो भाषाएँ जाननेवाला।**

द्विभुज—वि. [सं.] **जिसके दो हाथ हों।**

द्विमातृ—संज्ञा पुं. [सं.] **(दो माताओं से उत्पन्न) जरासंध।**

द्विमातृज—संज्ञा पुं. [सं.] **(दो माताओं के गर्भ से उत्पन्न होनेवाला)** (१) **जरासंध।** (२) **गणेश।**

द्विमात्र—संज्ञा पुं. [सं.] **दीर्घ मात्रा का वर्ण।**

द्विमुख—वि. [सं.] **जिसके दो मुख हों।**

संज्ञा पुं.—**दो मुँहवाला साँप, गूँगी।**

द्विमुखी—वि. स्त्री. [सं.] **जिसके दो मुख हों।**

द्विरद—वि. [सं.] **दो दाँतोंवाला।**

संज्ञा पुं.—(१) **हाथी।** उ.—द्विरद को दंत उपटाय तुम लेते हे, वहै बल आजु काहे न सँभारौ। —२६०२। (२) **दुर्योधन का एक भाई।**

द्विरदाशन—संज्ञा पुं. [सं.] **सिंह।**

द्विरसन—संज्ञा पुं. [सं.] **साँप।**

द्विरागमन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूसरी बार आना।** (२) **वधू का पति के घर दूसरी बार आना, गौना, दोंगा।**

द्विराय—संज्ञा पुं [सं.] **हाथी।**

द्विरुक्त—वि. [सं.] **दो बार या दूसरी बार कहा हुआ।**

द्विरुक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दो बार कथन।**

द्विरूढ़ा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **स्त्री जिसका एक बार एक पति से और दूसरी बार दूसरे से विवाह हो।**

द्विरेफ—संज्ञा पुं. [सं.] **भौंरा, भ्रमर।**

द्विविंदु—संज्ञा पुं. [सं.] **विसर्ग।**

द्विविद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक बंदर जो रामचंद्र की सेना का सेनापति था।** उ.—नल - नील - द्विविद, केसरि, गवच्छ। कपि कहे कछुक, हैं बहुत लच्छ—९-१६६। (२) **एक बंदर जो नरकासुर का मित्र था और बलदेव जी द्वारा मारा गया था।** उ.—राम दल मारि सो वृच्छ चुरकुट कियौ द्विविद सिर फट गयौ लगत ताके—१०३-४५।

द्विविध—वि. [सं.] **दो प्रकार का।**

क्रि. वि.—**दो रीति या प्रकार से।**

द्विविधा—संज्ञा पुं. [सं. द्विविध] **दुबधा।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेद— वि. [सं.] **दो वेद पढ़नेवाला।**

द्विवेदी—संज्ञा पुं. [सं. द्विवेदिन्] **ब्राह्मणों की उपजाति।**

द्विशिर—वि. [सं.] **जिसके दो सिर हों।**

मुहा.—कौन द्विशिर है—**किसके दो सिर हैं? किसको मरने का डर नहीं है?**

द्विशीर्ष—वि. [सं.] **जिसके दो सिर हों।**

द्विष, द्विषत्, द्विष्— वि. [सं.] **द्वेष रखनेवाला।**

संज्ञा पुं.—**शत्रु, वैरी, विरोधी, द्वेषी।**

द्विष्ट—वि. [सं.] **जिसमें द्वेष हो।**

द्वीप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **थल का वह भाग जो चारों तरफ जल से घिरा हो।** (२) **पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े विभाग।** उ.—सातौ द्वीप राज ध्रुव कियौ। सीतल भयौ मातु कौ हियौ—४-९। (३) **आधार।**

द्वीपवती—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **एक नदी।** (२) **भूमि।**

द्वीपी—संज्ञा पुं. [सं. द्वीपिन्] (१) **बाघ।** (२) **चीता।**

द्वीश—वि. [सं.] (१) **जो दो का स्वामी हो।** (२) **जिसमें दो स्वामी हों।** (३) **जो दो स्वामियों या देवताओं के लिए हो।**

द्वेष—संज्ञा पुं. [सं.] **शत्रुता, वैर।** उ.—मिटि गए राग-द्वेष सब तिनके जिन हरि प्रीति लगाई—१-३१८।

द्वेषी—वि. [सं. द्वेषिन्] (१) **द्वेष या वैरभाव रखने या करनेवाला।** (२) **शत्रु।**

द्वेष्टा—वि. [सं. द्वेष] (१) **द्वेषी।** (२) **शत्रु।**

द्वै—वि. [सं. द्वय]। (१) **दो, दोनों, भेद।** उ.—सलिल लौं सब रंग तजि कै, एक रंग मिलाइ। सूर जो द्वै रंग त्यागै, यहै भक्त सुभाइ—१-७०। (२) **भिन्न, अलग** उ.—सूरदास-सरवरि को करिहै, प्रभु पारथ द्वै नाहीं—१-२६९।

द्वैक—वि. [हिं. दो+एक] **दो-एक, एक-आध, बहुत कम (संख्यावाचक)।** उ.—(क) जसुमति मन अभिलाष करै। कब मेरौ लाल घुटुरुवनि रेंगै, कब धरनी पग द्वैक धरै—१०-७६। (ख) पुनि क्रम-क्रम भुज टेकि कै, पग द्वैक चलावै—१०-११२। (ग) कबहुँ कान्ह-कर छाँड़ि नंद, पग द्वैक रिंगावत—१०-१२२। (घ) यह कहियौ मेरी कही, कमल पठाए कोटि। कोटि द्वैक जलहीं धरे, यह विनती इक छोरि—१०-५८९। (ङ) द्वैक पग धारि हरि-सँमुख आयौ—३०७९।

द्वैगुणिका—वि. [सं.] **दूना सूद-ब्याज लेनेवाला।**

द्वैज—संज्ञा स्त्री. [सं. द्वितीय, प्रा. दुइय] **द्वितीया, दूज।**

वि.—**द्वितीया का, दूज का।** उ.—(क) सीपज-माल स्याम उर सोहै, बिच बघ-नहँ छवि पावै री। मनौ द्वैज ससि नखत सहित है, उपमा कहत न आवै री—१०-१३९। (ख) गनहु द्वैज दिन सोधि कै हरि होरी—२४५५।

द्वैत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दो का भाव, युगल।** (२) **अपने-पराये का भेद-भाव।** (३) **दुबधा, भ्रम।** (४) **अज्ञान।** (५) **द्वैतवाद।**

द्वैतवन—संज्ञा पुं. [सं.] **एक वन जिसमें युधिष्ठिर कुछ समय तक रहे थे।**

द्वैतवाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक दार्शनिक सिद्धांत जिसमें आत्मा-परमात्मा या जीव ईश्वर को भिन्न माना जाता है।** (२) **एक दार्शनिक सिद्धांत जिसमें शरीर और आत्मा को भिन्न माना जाता है।**

द्वैध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विरोधी।** (२) **कूटनीति।**

द्वैपद—वि. [सं.] **दो पैर वाले।** उ.—ए षटपद वै द्वैपद चतुर्भुज काइ भाँति भेद नहिं भ्रातनि—३१७३।

द्वैपायन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वेदव्यास का नाम क्योंकि इनका जन्म जमुना नदी के एक द्वीप में हुआ था।** (२) **वह तालाब जिसमें युद्ध से भागकर दुर्योधन छिपा था।**

द्वैमातुर—वि. [सं.] **जिसकी दो माताएँ हों।**

संज्ञा पुं.—(१) **गणेश।** (२) **जरासंध।**

द्वैवार्षिक—वि. [सं.] **जो प्रति दूसरे वर्ष हो।**

द्वैविध्य—संज्ञा पुं. [सं.] **दुबधा।**

द्वैहै—क्रि. स. [हिं. दुहना] **दुहेगा।** उ.—कहियहु बेगि पठवहिं गृह गाइनि को द्वैहै—२७०९।

द्वौ—वि. [हिं. दो + ऊ दोउ] **दोनों।**

संज्ञा पुं. [सं. दव] **दावा, दावाग्नि।**

ध

ध—**देवनागरी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण जो दंतमूल से उच्चरित होता है।**

धंगर—संज्ञा पुं. [देश] **चरवाहा, ग्वाला।**

धंगा—संज्ञा पुं. [देश.] **झांखी।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धंदर—संज्ञा पुं. [देश.] **एक धारीदार कपड़ा ।**

धंधक, धंधरका—संज्ञा पुं. [हिं. धंधा] **काम-धंधे का झगड़ा, बखेड़ा या जंजाल ।**

संज्ञा पुं. [अनु.] **एक तरह का ढोल ।**

धंधकधोरी, धंधरकधोरी—वि. [हिं. धंधक + धोरी] **जो हर समय काम के झगड़े में पड़ा रहे ।**

धंधका—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह का ढोल ।**

धंधला—संज्ञा पुं. [हिं. धंधा] (१) **छल-कपट ।** (२) **बहाना ।**

धंधलाना—क्रि. अ. [हिं. धँधला] **छल-कपट करना ।**

धंधा—संज्ञा पुं. [सं. धन-धान्य] (१) **काम-काज ।** (२) **कार-बार, व्यवसाय, रोजगार ।**

धंधार—वि. [देश.] **अकेला, एकाकी ।**

धंधारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धंधा] **गोरखपंथी साधुओं के पास रहनेवाला 'गोरखधंधा' ।**

संज्ञा स्त्री.—[हिं. धंधार] (१) **एकांत ।** (२) **सन्नाटा ।**

धंधाला—संज्ञा स्त्री. [हिं. धंधा] **कुटनी, दूती ।**

धंधोर—संज्ञा पुं. [अनु० धायँ धायँ] (१) **होली, होलिका ।** (२) **आग की लपट, ज्वाला ।**

धँस—संज्ञा पुं. [हिं. धँसना] **डुबकी, गोता ।**

धँसन—संज्ञा स्त्री. [हिं. धँसना] **धँसने की क्रिया, ढंग या गति ।**

धँसना—क्रि. अ. [सं. दंशन] (१) **गड़ना, चुभना ।**

मुहा.—जी (मन) में धँसना—(१) **मन पर प्रभाव डालना ।** (२) **बराबर ध्यान पर चढ़ा रहना ।**

(२) **जगह बनाकर बढ़ना या पैठना ।** (३) **धीरे-धीरे नीचे जाना या उतरना ।** (४) **नीचे की ओर दब या बैठ जाना ।** (५) **गड़ी चीज का खड़ी न रह कर बैठ या दब जाना ।**

क्रि. अ. [सं. ध्वंसन] **नष्ट होना, मिटना ।**

धँसनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. धसन] **घुसने-पैठने की क्रिया, रीति या चाल ।**

धँसान—संज्ञा स्त्री. [हिं. धँसना] (१) **धसने की क्रिया या ढंग ।** (२) **दलदल ।** (३) **ढाल, उतार ।**

धँसाना—क्रि. स. [हिं. धँसना] (१) **गड़ाना, चुभाना, घुसाना ।** (२) **प्रवेश करना, पैठाना ।** (३) **नीचे की ओर बैठाना ।**

धँसायौ—क्रि. अ. [हिं. धँसना] **धँसा लिया, डुबा लिया, बूड़ गए ।** उ.—हम सँग खेलत स्याम जाइ जल माँझ धँसायौ—५८६ ।

धँसाव—संज्ञा पुं. [हिं. धँसना] (१) **धँसने की क्रिया या भाव ।** (२) **दलदल ।**

धँसि—क्रि. अ. [हिं. धँसना] **धस-पैठकर, डूबकर ।**

प्र.—धँसि लैहौं—**डूब जाऊँगी ।** उ.—जो न सूर कान्ह आइहैं तौ जाइ जमुन धँसि लैहौं—२५५० ।

धँसी—क्रि. अ. [हिं. धसना] (१) **गड़ गयी, चुभी ।**

मुहा.—मन महँ धँसी—**हृदय में अंकित हो गयी, चित्त से न हट सकी ।** उ.—मन महँ धँसी मनोहर मूरति टरति नहीं वह टारे ।

(२) **नीचे उतरी, नीचे आयी ।** उ.—पंति पहिचानि धँसी मंदिर मैं सूर तिया अभिराम । आवहु कंत लखहु हरि को हित पाँव धारिए धाम ।

धँसे—क्रि. अ. [हिं. धँसना] **घुसे, गड़े, दब गये ।** उ.—गयौ कूदि हनुमंत जब सिंधु-पारा । सेष के सीस लागे कमठ पीठि सौं, धँसे गिरिवर सबै तासु भारा—६-७६ ।

धउरहर—संज्ञा पुं. [हिं. धौरहर] **ऊँची अटारी, बुर्ज ।**

धक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **दिल धड़कने का शब्द या भाव ।**

मुहा.—जी धक-धक करना—**भय आदि से जी धड़कना ।** जी धक हो जाना—(१) **डर से दहल जाना ।** (२) **चौंक पड़ना ।** जी धक (से) होना—(१) **घबराहट होना ।** (२) **भय होना ।**

(२) **उमंग, चाव, चोप ।**

क्रि. वि.—**अचानक, सहसा, एकबारगी ।**

धकधकात—क्रि. अ. [हिं. धकधकाना] **भय या घबराहट से (हृदय) धड़कता है ।** उ.—(क) टटके चिन्ह पाछिले न्यारे धकधकात उर डोलत है—२११० । (ख) धकधकात उर नयन स्रवत जल सुत अँग परसन लागे—२४७३ । (ग) सकसकात तन धकधकात उर अकबकात सब ठाढ़े—२६६६ । (घ) धकधकात जिय बहुत सँभारै ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धकधकाना—क्रि. अ. [अनु. धक्] (१) **भय, घबराहट आदि से (हृदय का) जोर जोर धड़कना । (२) (आग का) लपट के साथ जलना ।**

धकधकाहट—संज्ञा स्त्री. [अनु. धक] (१) **हृदय के धड़कने की क्रिया या भाव, धड़कन । (२) खटका, आशंका । (३) सोचविचार, आगा-पीछा ।**

धकधकी—संज्ञा स्त्री. [अनु. धक] (१) **हृदय के धड़कने की क्रिया या भाव, धड़कन ।** उ.— (क) आये हौ सुरति किए ठाठ करख लिए सकसकी धकधकी हिये—२६०६ । (ख) आवत देख्यौ बिप्र जोरि कर रुक्मिनि धाई । कहा कहैगौ आनि हिए धकधकी लगाई—१० उ. ८ । (२) **गले और छाती के बीच का गढ़ा जिसमें धड़कन मालूम होती है, धुकधकी ।**

मुहा.—धकधकी धड़कना—**जी धकधक करना, खटका या आशंका होना ।**

धकना—क्रि. अ. [हिं. दहकना] **दहक कर जलना ।**

धकपक—संज्ञा स्त्री. [अनु०] **जी की धड़कन, धकधकी ।**

क्रि. वि.—**डरते हुए या धड़कते जी से ।**

धकपकाना—क्रि. अ. [अनु. धक] **डरना, भयभीत होना ।**

धकपेल—संज्ञा स्त्री. [अनु. धक + पेलना] **धक्कमधक्का ।**

धका—संज्ञा पुं. [हिं. धक्का] (१) **टक्कर । (२) झोंका ।**

धकाधकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धक्का] **धक्कमधक्का ।**

धकाधकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धक्का] **रेल-पेल ।**

धकाना—क्रि. स. [हिं. दहकाना] **जलाना, सुलगाना ।**

धकार—संज्ञा पुं. [हिं. ध + कार] **'ध' अक्षर ।**

धकारा, धकारो—संज्ञा पुं. [अनु. + धक] **खटका, आशंका ।** उ.—तुम तो लीला करत सुरन मन परो धकारो ।

धकियाना—क्रि. स. [हिं. धक्का] **धक्का देना, ढकेलना ।**

धकेलना—क्रि. स. [हिं. धक्का] **ठेलना, धक्का देना ।**

धकेल्—वि. [हिं. धकेलना] **धक्का देनेवाला ।**

धकैत—वि. [हिं. धक्का+ऐत] **धक्कमधक्का करनेवाला ।**

धकोना—क्रि. स. [हिं. धकियाना] **धक्का देना ।**

धक—संज्ञा स्त्री. [हिं. धक] **(जी) धड़कने का भाव ।**

धकपक—संज्ञा स्त्री. [हिं. धकपक] **धड़कन, धकधकी ।**

क्रि. वि.—**धड़कते हुए जी से, भयभीत होकर ।**

धका—संज्ञा पं. [सं. धम, हिं. धमक, धौंक] (१) **टक्कर, रेला । (२) ढकेलने की क्रिया, चपेट । (३) (भीड़ की) कसमकस । (४) दुख की चोट, संताप । (५) विपत्ति, दुर्घटना । (६) हानि, घाटा ।**

धकामुकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धक्का + मुक्की] **धक्के-घूँसे की मारपीट ।**

धगड़, धगड़ा—संज्ञा पुं. [सं. धव = पति] **जार, उपपति ।**

धगड़बाज—वि. स्त्री. [हिं. धग + फ़ा. बाज] **उपपति से प्रेम करनेवाली, व्यभिचारिणी ।**

धगड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धगड़ा] **व्यभिचारिणी ।**

धगधागना—क्रि. अ. [अनु.] **(जी का) धकधक करना ।**

धगधाग्यो, धगधाग्यौ—क्रि. अ. [हिं. धगधगाना] **(जी) धड़कने लगा ।** उ.—जब राजा तेहि मारन लाग्यौ । देवी काली मन धगधाग्यौ ।

धगरिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. धाँगर] **धाँगर स्त्री जो बच्चों के जन्मने पर उनकी नाल काटती है ।**

धगरी—वि. [हिं. धगड़ी] (१) **पति की दुलारी या मुँह-लगी । (२) व्यभिचारिणी, कुलटा ।**

धगा—संज्ञा पुं. [हिं. तागा, धागा] **बटा हुआ सूत, डोरा, तागा ।** उ.—सूरदास कंचन अरु काँचहिं, एकहिं धगा पिरोयौ—१-४३ ।

धगुला—संज्ञा पुं. [देश.] **हाथ में पहनने का कड़ा ।**

धगाड़—संज्ञा पुं. [हिं. धगड़] **जार, उपपति ।**

धचकचाना—क्रि. स. [अनु.] **डराना, दहलाना ।**

धचकना—क्रि. अ. [अनु.] **दलदल-कीचड़ में फँसना ।**

धचका—संज्ञा पुं. [अनु.] **धक्का, झटका, आघात ।**

धज—संज्ञा स्त्री. [सं. ध्वज = चिन्ह, पताका] (१) **सजावट, बनाव । (२) सुंदर या आकर्षक ढंग । (३) बैठने-उठने की रीति, ठवन । (४) ठसक, नखरा । (५) रूप-रंग, शोभा । (६) डील-डौल, बनावट, आकृति ।**

धजा—संज्ञा स्त्री. [सं. ध्वज] (१) **ध्वजा, पताका । (२) कतरन, धज्जी । (३) रूपरंग, डील-डौल ।**

धजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धज्जी] **धज्जी ।**

धजीला—वि. [हिं. धज+ईला (प्रत्य.)] **सुंदर, सजीला ।**

वि.—**धज्जीधारी, जो फटे कपड़े पहने हो ।**

धज्जियाँ—संज्ञा स्त्री. [सं. धटी] (१) **कपड़े-कागज की लंबी कतरन । (२) लोहे-लकड़ी की कटी-फटी लंबी पट्टियाँ ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा.—धज्जियाँ उड़ना—(१) टुकड़े-टुकड़े या खील-खील होना। (२) (किसी के) दोषों का खूब भंडाफोड़ होना या दुर्गति होना। धज्जियाँ उड़ाना—(१) टुकड़े-टुकड़े या खील-खील करना। (२) (किसी के) दोषों का खूब भंडाफोड़ करना या दुर्गति करना। (३) मार-मार या काट-काट कर टुकड़े करना। धज्जियाँ लगना—कपड़ों का कटा-फटा होना, गरीबी आना। धज्जियाँ लगाना—फटे पुराने कपड़े पहनना।

...जी—संज्ञा स्त्री [सं. धटी] कपड़े कागज या लोहे-लकड़ी की कटी-फटी पट्टी।

मुहा.—धज्जी हो जाना—सूखकर बहुत दुबला-पतला या ठठरी हो जाना।

...—संज्ञा पुं. [सं.] तुला, तराजू।

...टिका—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) वस्त्र। (२) कौपीन।

...टी—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) चीर, वस्त्र। (२) कौपीन।

वि. [सं. घटिन्] तौलनेवाला।

संज्ञा पुं.—(१) तुला राशि। (२) शिव।

...ड़ंगा—वि. [हिं. धड़+अंग] नंगा।

...ड़—संज्ञा पुं. [सं. धर=धारण करनेवाला] (१) शरीर का मध्य भाग। (२) पेड़ का तना, पैंड़ी।

संज्ञा स्त्री [अनु.] सहसा गिरने जैसा शब्द।

...ड़क—संज्ञा स्त्री [अनु. धड़] (१) हृदय की धड़कन या स्पंदन। (२) हृदय के धड़कने का शब्द। (३) भय, आशंका आदि से जी का धकधक करना। (४) खटका, आशंका। (५) साहस, हिम्मत।

यौ.—बेधड़क-बिना किसी खटके या संकोच के।

...ड़कन—संज्ञा स्त्री [हिं. धड़क] हृदय का स्पंदन।

...ड़कना—क्रि. अ. [हिं. धड़क] (१) छाती का धकधक करना या काँपना।

मुहा.—छाती (जी, दिल) धड़कना—भय, खटके या आशंका से जी का दहलना या काँपना।

(२) भारी चीज के गिरने का शब्द होना।

...ड़का—संज्ञा पुं. [अनु. धड़] (१) हृदय की धड़कन। (२) हृदय के स्पंदन का शब्द। (३) भय, खटका। (४) सहसा गिरने का शब्द। (५) खेत का धोखा या नकली पुतला।

धड़काना—क्रि. स. [हिं. धड़क] (१) जी धकधक कराना। (२) डराना, दहलाना। (३) धड़धड़ शब्द कराना।

धड़क्का—संज्ञा पुं. [हिं. धड़का] (१) धड़कन। (२) अंदेशा।

धड़टूटा—वि. [हिं. धड़+टूटना] (१) जिसकी कमर झुकी हुई हो। (२) कुबड़ा।

धड़धड़—संज्ञा स्त्री. [अनु.] गिरने-छूटने का शब्द।

क्रि. वि.—(१) धड़धड़ शब्द करके। (२) बेधड़क।

धड़धड़ाना—क्रि. अ. [अनु. धड़] धड़धड़ शब्द करना।

धड़ल्ला—संज्ञा पुं. [अनु. धड़.] (१) धड़धड़ शब्द, धड़ाका।

मुहा.—धड़ल्ले से—निडर होकर, बेधड़क।

(१) भीड़भाड़, धूमधाम। (२) बड़ी भीड़।

धड़वाई—संज्ञा पुं. [हिं. धड़ा] तौलनेवाला।

धड़ा—संज्ञा पुं. [सं. धट] (१) तराजू का बाट, बटखरा।

मुहा.—धड़ा करना (बाँधना)—तौलने के पहले तराजू के दोनों पलड़ों को तौल में बराबर कर लेना। धड़ा बाँधना—कलंक या दोष लगाना।

(२) एक तौल। (३) तराजू, तुला।

संज्ञा पुं. [हिं. धड़क्का] दल, झुंड, समूह।

धड़ाक, धड़ाका—संज्ञा पुं. [अनु. धड़] धड़धड़ शब्द।

मुहा.—धड़ाक (धड़ाके) से—चटपट, बेखटके।

धड़ाधड़—क्रि. वि. [अनु. धड़] (१) धड़धड़ शब्द के साथ। (२) लगातार, जल्दी जल्दी, ताबड़तोड़।

धड़बंदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धड़ा+फ़ा. बंदी] (१) धड़ा बाँधना। (२) दोनों पक्षों का अपने को समान सबल बनाना।

धड़ाम—संज्ञा पुं. [अनु. धड़] कूदने-गिरने का शब्द।

धड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. धटिका, धटी] (१) एक तौल।

मुहा—धड़ी भर (धड़ियों)—बहुत सा, ढेर का ढेर। धड़ी भरना—तौलना। धड़ीधड़ी करके लुटना—सब कुछ लुट जाना। धड़ी धड़ी करके लूटना—सब कुछ लूट लेना।

(२) पाँच सौ की रकम (३) रेखा, लकीर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धत—संज्ञा स्त्री. [सं. रत, हिं. लत] (१) **लत, बुरी बान, कुटेव।** (२) **जिद, रट, रटन।**

धतकारना—क्रि. स. [अनु. धत्] (१) **तिरस्कार या अपमान के साथ हटाना।** (२) **धिक्कारना।**

धता—वि. [अनु. धत्] **जो दूर हो गया हो।**

मुहा—धता बताना—(१) **चलता करना, हटाना।** (२) **धोखा देकर टाल देना, टालटूल करना।**

धतिया—वि. [हिं. धत] (१) **बुरी लतवाला।** (२) **जिद्दी हठी।**

धतींगड़, धतीगड़ा—संज्ञा पुं. [देश.] **बेडौल, मुस्टंड।**

धतूर,—संज्ञा पुं. [अनु. धू+सं.तूर] **धूतू या नरसिंहा नामक बाजा, तुरही।** उ.—दसएँ मास मोहन भए मेरे आँगन बाजै धतूर।

धतूर, धतूरा, धत्त र—संज्ञा पुं. [सं. धुस्तूर, हिं. धतूरा] **एक पौधा जिसके फल शिवजी पर चढ़ाये जाते हैं।**

मुहा.—धतूरा खाये फिरना—**पागल की तरह घूमना।** उ.—सूरदास प्रभु दरसन कारन मानहुँ फिरत धतूरा खाये—३३०३।

धत्—अव्य. [अनु.] **दुतकारने का शब्द।**

धधक—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **आग बढ़ने का भाव।** (२) **आँच, लपट।**

धधकना—क्रि. अ. [हिं. धधक] **आग का दहकना या लपट के साथ जलना।**

धधकाना—क्रि. स [हिं. धधकना] **आग को दहकाना।**

धनंजय-वि. [सं.] **धन जीतने या प्राप्त करनेवाला।**

संज्ञा पुं.—(१) **अग्नि।** (२) **अर्जुन का एक नाम।** (३) **विष्णु।** (४) **शरीर की पांच वायुओं में एक।**

धन—संज्ञा पुं. [सं.] **संपत्ति, द्रव्य, दौलत।**

मुहा.—धन उड़ाना—**धन को चटपट खर्च कर डालना।**

(२) **गैयों आदि का समूह।** (३) **अत्यंत प्रिय पात्र, जीवन-सर्वस्व।** उ.—सिव कौ धन, संतनि कौ सरबस महिमा वेद-पुरान बखानत—१-११४। (४) **मूल, पूंजी।** (५) **कच्ची धातु।**

वि. [हिं. धन्य] (१)**धन देनेवाला।** (२) **प्रशंसापात्र।**

संज्ञा स्त्री. [सं. धनी] **युवती, वधू।** उ.—(क) गायौ गीध, अजामिल गनिका, गायौ पारथ-धन रे—१-६६। (ख) सूरदास सोभा क्यौं पावै पिय विहीन धन मटके—१-२६२। (ग) एकटक सिव धरे नैनन लागत स्याम सुता-सुत-धन आई—सा.-उ. ३०।

धनक—संज्ञा पुं. [सं.] **धन की इच्छा।**

संज्ञा पुं. [सं. धनु] **धनुष, कमान।**

धनकुट्टी—संज्ञा स्त्री. [हिं.धान+कूटना] (१) **धान कूटने की क्रिया।** (२) **धान कूटने की ओखली या मूसल।**

मुहा.—धनकुट्टी करना—**बहुत मारना-पीटना।**

धनकुबेर—संज्ञा पुं. [सं.] **बहुत धनी आदमी।**

धनकेलि—संज्ञा पुं. [सं.] **कुबेर।**

धनतेरस—संज्ञा स्त्री. [हिं. धन+तेरस] **कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी जब रात में लक्ष्मी जी की पूजा होती है।**

धनदंड—संज्ञा पुं. [सं.] **जुरमाना।**

धनद—वि. [सं.] **धन देनेवाला।**

संज्ञा पुं.—(१) **कुबेर।** उ.—रामदूत दीपत नक्षत्र में पुरी धनद रुचि रुचि तम हारी—सा. ६८। (२) **अग्नि।**

धनदतीर्थ—संज्ञा पुं. [सं.] **व्रज के अंतर्गत एक तीर्थ।**

धनदा—वि. स्त्री. [सं.] **धन देनेवाली, दात्री।**

संज्ञा स्त्री.—**आश्विन कृष्ण एकादशी का नाम।**

धनदेव—संज्ञा पुं. [सं.] **कुबेर।**

धनधान्य—संज्ञा पुं. [सं.] **धन-अन्न आदि।**

धनधाम—संज्ञा पुं. [सं.] **घर-बार और रुपया-पैसा।**

धननाथ—संज्ञा पुं. [सं.] **कुबेर।**

धनपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कुबेर।** उ.—सुमना-सुत लै कमल सुमंजित धनपति धाम को नाम सँवारे—सा. उ. १०। (२) **एक वायु का नाम।**

धनपति-धाम—संज्ञा पुं. [सं.] **अलकापुरी।**

धनपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **बहीखाता।**

धनपात्र—संज्ञा पुं. [सं.] **धनी, धनवान्।**

धनपाल—वि. [सं.] **धन की रक्षा करनेवाला।**

संज्ञा पुं.—**कुबेर।**

धनमद—संज्ञा पुं. [सं.] **धन का अभिमान।** उ.—धन-मद मूढ़नि अभिमानिनि मिलि लोभ लिए दुर्बचन सहै—१-५३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवंत—वि. [हिं. धनवान्] धनी । उ.–आपुन रंक भई हरि-धन को हमहिं कहति धनवंत—१३२४ ।

न्वंतरि—संज्ञा पुं. [सं. धन्वंतरि] देवताओं के वैद्य जो समुद्र से निकले चौदह रत्नों में माने जाते हैं ।

नवती—वि. स्त्री. [सं.] जिसके पास खूब धन हो ।

नवा—संज्ञा पुं. [सं. धन्वा] धनुष, कमान ।

नवान, धनवान्—वि. [सं. धनवान्] धनी ।

शाली—वि. [सं. धनशालिन्] धनी, धनवान ।

यक—वि. [सं.] धन की इच्छा रखनेवाला ।

स्वामी—संज्ञा पुं. [सं.] कुबेर ।

हर—वि. [सं.] धन का हरण करनेवाला ।

संज्ञा पुं.—चोर, लुटेरा । उ.—धनहर-हित-रिपु सुत-सुख पूरत नैनन मद्ध लगावै—सा.-७६ ।

हीन—वि. [सं.] निर्धन, दरिद्र ।

नि—संज्ञा स्त्री. [हिं. धनि = स्त्री] युवती, वधू ।

ढ्य—वि. [सं.] मालदार, धनवान् ।

धिप—संज्ञा पुं. [सं.] कुबेर ।

ध्यक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) खजांची । (२) कुबेर ।

ना—क्रि. अ. [सं. धेनु] गाय का गाभिन होना ।

र्थी—वि. [सं. धनार्थिन्] धन चाहनेवाला ।

श्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक रागिनी जिसका प्रयोग वीर रस में विशेष होता है और जो दिन के दूसरे या तीसरे पहर में गायी जाती है ।

नि—संज्ञा स्त्री. [सं. धनी] युवती, वधू । उ.—सूरदास शोभा क्यौं पावै, पिय-विहीन धनि मटकै—१-२६२ ।

वि. [सं. धन्य] पुण्यवान, सुकृती, प्रशंसनीय, कृतार्थ । उ.—(क) धनि मम गृह, धनि भाग हमारे, जौ तुम चरन कृपानिधि धारे—१-३४३ । (ख) सूरदास धनि-धनि वह प्रानी जो हरि को व्रत लै निबह्यौ—१-८ । (ग) गरुड़ त्रास तैं जौ ह्याँ आयौ ।······। धनि रिषि साप दियौ खगपति कौं ह्याँ तब रह्यौ छपाई—५७३ ।

निक—वि. [सं.] धनी, धनवान् ।

संज्ञा पुं.—(१) धनी व्यक्ति । (२) पति । (३) महाजन ।

निका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) धनी स्त्री । (२) युवती ।

धनिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] धनी होने का भाव ।

धनियाँ—वि. [सं. धनिक] (१) स्वामी, रक्षक, आश्रयदाता । उ.—(क) निरखि निरखि मुख कहति लाल सौं मो निधनी के धनियाँ—१०-८१ । (ख) नैंकु रहौ माखन देउँ मेरे प्रान-धनियाँ—१०-१४५ । (२) पति, प्रिय । (३) आढ्य, संपन्न । उ.—मिस्री, दधि, माखन मिस्रित करि, मुख नावत छबिधनियाँ—१०-२३८ ।

संज्ञा स्त्री. [सं. धनिका] युवती, वधू । उ.—सूर-स्याम देखि सबै भूलीं गोप-धनियाँ—१०-१४५ ।

संज्ञा पुं. [सं. धन्याक, धनिका] एक छोटा पौधा जिसके छोटे छोटे फल सुखाकर मसाले के काम में आते हैं ।

धनियामाल—संज्ञा स्त्री. [हिं. धनी + माला] गले का एक गहना ।

धनिष्ठ—वि. [सं.] धनी ।

धनिष्ठा—संज्ञा स्त्री. [सं.] तेईसवाँ नक्षत्र ।

धनी—वि. [सं. धनिन्] (१) धनवान । (२) दक्षता-संपन्न, गुणवान ।

संज्ञा पुं.—(१) धनवान व्यक्ति । (२) अधिपति, स्वामी । (३) महाजन, पालक, रक्षक । उ.—कहा कमी जाके राम धनी—१-३६ । (४) पति, स्वामी ।

संज्ञा स्त्री. [सं.] युवती, वधू । उ.—(क) देखहु हरि जैसे पति आगम सजति सिंगार धनी—२४६१ । (ख) बहुरीं सब अति आनंद, निज गृह गोप-धनी—१०-२४ ।

धनु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) धनुष, कमान । उ.—मनु मदन धनु-सर सँधाने देखि घन-कोदंड–१-३०७ । (२) एक राशि । (३) एक नाप जो चार हाथ की होती है ।

धनुआ—संज्ञा पुं. [सं. धन्वा] धनुष ।

धनुइ, धनुई—संज्ञा स्त्री. [हिं. धनुष] छोटा धनुष ।

धनुक—संज्ञा पुं. [सं.धनुष] धनुष ।

धनुर्गुण—संज्ञा पुं. [सं.] धनुष की डोरी ।

धनुर्ग्रह – संज्ञा पुं. [सं.] (१) धनुर्धर । (२) धनुर्विद्या ।

धनुर्द्धर, धनुर्द्धारी—वि. [सं.] धनुष चलानेवाला ।

धनुर्यज्ञ—संज्ञा पुं. [सं.] एक यज्ञ जिसमें धनुष की पूजा और धनुर्विद्या की परीक्षा होती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनुर्विद्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] **धनुष चलाने की विद्या।**

धनुर्वेद—संज्ञा पुं. [सं.] **एक शास्त्र जिसमें धनुष चलाने की विद्या का वर्णन है।**

धनुष, धनुस, धनुस्—संज्ञा पुं. [सं. धनुस्] (१) **कमान।** (२) **एक राशि।** (३) **एक लग्न।**

धनुष-टंकार—संज्ञा स्त्री. [सं.] **'टन' का शब्द जो धनुष की डोरी को खींचकर छोड़ देने से होता है।**

धनुषशाला—संज्ञ स्त्री. [हिं. धनुष+शाला] **वह स्थान जहाँ परीक्षा या यज्ञ का धनुष रखा हो।** उ.—धनुषशाला चले नंदलाला—**२५८४।**

धनुहाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. धनु + हाई] **धनुष की लड़ाई।**

धनुहियाँ, धनुहिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. धनुष] **छोटा धनुष, छोटी कमान।** उ.—(क) करतल-सोभित बान धनुहियाँ—**६-१६।** (ख) जैसे बधिक गँवहिते खेलत अंत धनुहिया तानै—**३३६६।**

धनुहीं, धनुही—संज्ञा स्त्री [हिं. धनुष] **छोटी कमान।** उ.- धनुहीं-बान लए कर डोलत—**६-२०।**

धनेश, धनेस—संज्ञा पुं. [सं. धनेश] (१) **धन का स्वामी या रक्षक।** (२) **कुबेर।**

धनेश्वर, धनेस्वर—संज्ञा पुं. [सं. धनेश्वर] (१) **धन का स्वामी।** (२) **कुबेर।**

धनैषी—वि. [सं. धनैषिन्] **धन चाहनेवाला।**

धन्न—वि. [सं. धन्य] **धन्य।**

धन्नासेठ—संज्ञा पुं. [हिं. धन+सेठ] **बहुत धनी।**

धन्नी—संज्ञा स्त्री. [सं. (गो) धन] (१) **गाय-बैलों की एक जाति।** (२) **घोड़े की एक जाति।** (३) **बेगार का आदमी।**

धन्य—वि. [सं.] (१) **पुण्यवान्, प्रशंसा करने या साधुवाद देने के योग्य।** उ.—(क) धन्य भाग्य, तुम दरसन पाए—**१-३४१।** (ख) धन्य-धनि कह्यौ पुनि लच्छमी सौं सबनि—**८-८।** (२) **धन देनेवाला।**

धन्यवाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **साधुवाद, प्रशंसा।** (२) **उपकार के प्रत्युत्तर में कहा जानेवाला कृतज्ञता-सूचक शब्द।**

धन्या—वि. स्त्री. [सं.] **बड़ाई या प्रशंसा के योग्य।**

संज्ञा स्त्री.—(१) **उपमाता।** (२) **वनदेवी।**

धन्वंतर—संज्ञा पुं. [सं.] **चार हाथ की नाप।**

धन्वंतरि, धन्वंत्रि—संज्ञा पुं. [सं. धन्वंतरि] **देव-वैद्य जो चौदह रत्नों के साथ समुद्र से निकले थे।** उ.—चतुर धन्वंत्रि आयौ समुद्र सौं निकसि सुरा अरु अमृत नि संग लायौ—**८-८।**

धन्व—संज्ञा पुं. [सं.] **धनुष, कमान।**

धन्वा—संज्ञा पुं. [सं. धन्वन्] (१) **धनुष।** (२) **रेगिस्तान।** (३) **सूखी जमीन।** (४) **आकाश, अंतरिक्ष।**

धन्वाकार—वि. [सं.] **धनुष की तरह गोलाई के सा झुका हुआ।**

धन्वायी—वि. [सं. धन्वायिन्] **धनुर्द्धर।**

धन्विन—वि. [सं.] **सुअर, शूकर।**

धन्वी—वि. [सं. धन्विन्] (१) **धनुर्द्धर।** (२) **चतुर।**

धप—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **भारी और मुलायम चीज के गिरने का शब्द।**

संज्ञा पुं.—**धौल, धपड़, तमाचा।**

धपना—क्रि. अ. [हिं. धाप] (१) **दौड़ना।** (२) **लपकना।**

धपाना—क्रि. स. [हिं. धपना] (१) **दौड़ाना।** (२) **घुमाना।**

धपि—क्रि. अ. [हिं. धपना] **झपटकर, लपककर।** उ.—सीला नाम ग्वालिनी तेहि गह्रे कृष्न धपि धाइ हो—२४४६।

धप्पा—संज्ञा पुं. [अनु. धप] (१) **थप्पड़।** (२) **हानि, घाटा।**

धप्पाड़—संज्ञा स्त्री. [हिं. धप] **दौड़।**

धब—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **भारी और मुलायम चीज के गिरने का शब्द।** (२) **मोटे-फपफस आदमी के पैर रखने का शब्द।**

धबला—संज्ञा पुं. [देश.] **स्त्रियों का लँहगा।**

धब्बा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) **दाग, निशान।** (२) **कलंक।** **मुहा.**—नाम में धब्बा लगना—**कलंक लगना।** नाम में धब्बा लगाना—**कलंक या दोष लगाना।**

धम—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **भारी चीज गिरने का शब्द।**

धमक—संज्ञा स्त्री. [अनु. धम] (१) **भारी चीज गिरने का शब्द।** (२) **जोर से पैर रखने का शब्द।** (३) **भारी चीज के चलने-लुढ़कने से होनेवाला शब्द।** (४) **चोट, आघात।** (५) **भारी शब्द का हृदय पर**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आघात, **वहल ।**

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **धौंकनेवाला (२) लोहार ।**

धमकना—क्रि. अ. [हिं. धमक] (१) **धमाका करना ।**

मुहा.—आ धमकना—**जोर-शोर से आना ।** जा धमकना—**जोर-शोर से जा पहुँचना ।**

(२) **रह रह कर दर्द करना, व्यथित होना ।**

धमकाना—क्रि. स. [हिं. धमक] (१) **डराना ।** (२) **डाँटना ।**

धमकि—क्रि. अ. [हिं. धमकना] **धमाका करके ।** उ.—धमकि मारयौ घाउ गमकि हृदय रह्यौ झमकि गहि केस लै चले ऐसे- २६२१ ।

धमकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धमकाना] **डाँट-डपट, घुड़की ।**

मुहा.—धमकी में आना—**डरकर कोई काम करना ।**

धमक्का—संज्ञा पुं. [हिं. धमाका] (१) **आघात ।** (२) **घूँसा ।**

धमगजर, धमगज्जा—संज्ञा पुं. [अनु. धम+गर्जन] (१) **उधम, उत्पात ।** (२) **लड़ाई, युद्ध ।**

धमधमाना—क्रि. अ. [अनु. धम] **'धम धम' शब्द करना ।**

धमधूसर—वि. [अनु. धम+सं. धूसर] **मोटा और बेडौल ।**

धमन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हवा से फूँकने का काम ।** (२) **फुँकनी, धौंकनी ।**

धमना—क्रि. स. [सं. धमन] **धौंकना, फूँकना ।**

धमनि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **धमनी ।** (२) **शब्द ।**

धमनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **शरीर की छोटी-बड़ी नाड़ी ।**

धमसा—संज्ञा पुं. [देश.] **धौंसा, नगाड़ा ।**

धमाका—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) **भारी चीज गिरने का शब्द ।** (२) **घूँसा** (३) **तोप-बन्दूक या पटाखे का शब्द ।** (४) **आघात, धक्का ।**

धमाचौकड़ी—संज्ञा स्त्री. [अनु. धम+हिं. चौकड़ी] (१) **कूद-फाँद, उछल-कूद ।** (२) **मार-पीट ।**

धमाधम—कि. वि. [अनु.] (१) **'धमधम' शब्द के साथ ।** (२) **कई बार धमाके के साथ ।**

संज्ञा स्त्री.—(१) **कई बार 'धमधम' शब्द ।** (२) **मार-पीट ।**

धमाना—क्रि. स. [देश.] **जोर से हवा करना, धौंकना ।**

धमार, धमारि, धमारी, धमाल—संज्ञा स्त्री. [अनु. हिं. धमार] (१) **उछल-कूद, धमाचौकड़ी ।** (२) **नटों की कलाबाजी ।**

संज्ञा पुं.—(१) **होली में गाने का एक ताल ।** (२) **होली में गाने का एक तरह का गीत ।** उ.—(क) एक गावत है धमारि एक एकनि देति गारि गारी—२४२६ । (ख) जुगल किसोर चरन रज माँगौं गाऊँ सास धमार—२४४७ ।

धमारिया, धमारी—[हिं. धमार] **उपद्रवी, उत्पाती ।**

संज्ञा पुं.—(१) **कलाबाज नट ।** (२) **धमार का गायक ।**

धमूका —संज्ञा पुं. [अनु. धाम] (१) **धमाका ।** (२) **घूँसा ।**

धम्माल—संज्ञा स्त्री. [हिं. धम] (१) **उछलकूद ।** (२) **कलाबाजी ।**

धम्मिल—संज्ञा पुं. [सं.] **बँधे हुए बाल, जूड़ा ।**

धर—वि. [सं.] (१) **धारण करने या सँभालनेवाला ।** उ.—(क) रवि दो धर रिपु प्रथम बिकासो ।...... । पतनी लै साराँगधर सजनी साराँगधर मन खैंचो—सा. ४८ । (ख) गिरिधर, ब्रजधर, मुरलीधर, धरनीधर, माधौ पीताम्बरधर---५७२ । (२) **ग्रहण करने या थामनेवाला ।**

संज्ञा पुं.—(१) **पर्वत, पहाड़ ।** (२) **कच्छप जो धरा को धारण किये है ।** (३) **विष्णु ।** (४) **श्रीकृष्ण ।**

संज्ञा पुं. [हिं. धड़] **शरीर का मध्य भाग, धड़ ।** उ.—(क) राहु सिर, केतु धर कौ भयौ तबहिं तैं, सूर-ससि कौं सदा दुःखदाई—८-८ । (ख) राहु-सिर, केतु धर भयौ यह तबहिं सूर-ससि दियौ ताकौं बताई—८-६ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. धरना] **धरने-पकड़ने की क्रिया ।**

यौ.—धर-पकड़—**बंदी बनाने की क्रिया, गिरफ्तारी ।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. धरा] (१) **धरती, पृथ्वी ।** उ.—(क) माधौ जू, यह मेरी इक गाइ ।...... । व्योम, धर, नद, सैल, कानन इते चरि न अघाइ—१-५५ । (ख) धर बिधंसि नल करत किरषि हल बारि बीज बिथरै—१-११७ । (ग) उबर्यौ स्याम महरि बड़भागी । बहुत दूरि तैं आइ पर्यौ धर धौं कहुँ चोट न लागी—१०-७६ । (घ) लोटत धर पर रयान गर्व गयौ—३४०६ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **रखकर।** उ.—सुचही-पति पितु प्रिया पाइ पर धर सिर आप मनावो—सा. ६। (२) **पकड़कर, ग्रहण करके।**

मुहा.—धर दबाना (दबोचना)—**बलपूर्वक पकड़कर अपने अधिकार में कर लेना।** (२) **तर्क या विवाद में हराना।** धर-पकड़ कर—**जबरदस्ती।**

धरई—क्रि. स. [हिं. धरना] **रखता है, धरता है।**

मुहा.—नहिं चित्त धईई—**ध्यान नहीं रखता है।** उ.—बीज बोइये जोइ अंत लोनिये सोइ समुझि यह बात नहिं चित्त धरई—१० उ. २१। गवैं जिय धरई—**मन में बहुत अभिमान रखता है।** उ.—गगन सिखर उतरै चढ़ै गवैं जिय धरई—२८६८।

धरक—संज्ञा स्त्री. [हिं. धड़क] (१) **भय, आशंका।** (२) **साहस।**

धरकना—क्रि. अ. [हिं. धड़कना] (**हृदय का**) **स्पंदन करना।**

धरकि—क्रि. अ. [हिं. धड़कना] **स्पंदन करके।**

प्र.—छतियाँ धरकि रही—**आवेग आदि के कारण छाती धड़क रही है।** उ.—सेज रचि पचि साज्यौ सघन कुंज निकुंज चित चरनन लाग्यौ छतियाँ धरकि रही—२२३६।

धरकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धड़क] **धड़कन, धुकधुकी।** उ.—कछु रिस कछु नागर जिय धरकी—पृ. ३१७ (६८)।

धरके—क्रि. अ. [हिं धड़कना] **भय से धड़कने या स्पंदन करने लगे।** उ.—सूरदास प्रभु आइ गोकुल प्रगट भए, संतनि हरष, दुष्ट-जन-मन धरके—१०-३०।

धरकौ—संज्ञा स्त्री. [हिं. धड़क (अनु.)] (१) **डर, भय।** उ.—माखन खान जात पर घर कौ। बाँधत तोहिं नैंकु नहिं धरकौ—३९१। (२) **आशंका, खटका।**

धरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रखने, थामने, धारण करने आदि की क्रिया।** (२) **पुल, बाँध।** (३) **संसार।**

धरणि, धरणी—संज्ञा स्त्री [सं. धरणि] **पृथ्वी।** उ.—(क) सूर तुरत मधुबन पग धारे धरणी के हितकारि—२५३३। (ख) धरणि उमँगि न माति धर मैं यती योग बिसारि—पृ. ३४७ (५४)।

धरणिधर, धरणीधर—संज्ञा पुं. [सं. धरणि] (१) **पृथ्वी को धारण करनेवाला।** (२) **कच्छप।** (३) **पर्वत।** (४) **विष्णु।** (५) **श्रीकृष्ण।** (५) **शिव।** (६) **शेषनाग।**

धरण पूर—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र, सागर।**

धरणीसुत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मंगल।** (२) **नरकासुर।**

धरणीसुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सीता जी।**

धरत—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **धारण करता है।** उ.—अबिहित बाद-बिबाद सकल मत इन लगि भेष धरत—१-५५। (२) **रखता है।** उ.—बान भीर सुजान निकसत धरत धरनी पाइ—सा. १८।

धरता—संज्ञा पुं. [हिं. धरना] (१) **देनदार, ऋणी।** (२) **धर्मार्थ की गयी कटौती।** (३) **कार्य-भार लेनेवाला।**

यौ.—कर्ता-धरता—**सब कुछ करने-धरनेवाला।**

क्रि. स. भूत—(१) **धारण करता।** (२) **पकड़ता।**

धरतिं—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **आरोपित करती हैं, अंगीकार करती हैं।** (२) **धारण करती हैं, स्थापित करती हैं।** उ.—मन ही मन अभिलाष करतिं सब हृदय धरतिं यह ध्यान १०–२७२।

धरति—क्रि.स. [हिं.धरना] (१) **रखती है, सहारा लेती है।**

प्र.—धरति न धीर—**धीरज नहीं रखती; धैर्य न रख सकी।** उ.—पुत्र-कबंध अंक भरि लीन्हौ, धरति न इक छिन धीर—१–२६।

(२) **स्थित या स्थापित करती है।** उ.—कमल पर बज्र धरति उर लाइ—२५५५। (३) **पकड़ने का प्रयत्न करती हुई।** उ.—रोस कै कर दाँवरी लै फिरति घर घर धरति—२६६६।

धरती—संज्ञा स्त्री [सं. धरित्री] (१) **धरती।** (२) **स्थावर संपत्ति, गाँव-गिराँव, धाम।** उ.—जौवन-रूप राज-धन-धरती जानि जलद की छाहीं—२-२३। (३) **संसार, जगत।**

क्रि. स. भूत [हिं. धरना] (१) **धारण करती।** (२) **स्थिर या स्थापित करती।** (३) **पकड़ती, थामती।**

धरते—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **आरोपित करते, अवलंबन करते, अंगीकार करते।** उ.—सूर-स्याम तौ धोर कहातौ जो तुम इती निठुराई धरते—२७३८। (२) **ग्रहण करते।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र.—देह धरते—**अवतार लेते।** उ.—जौ प्रभु नर-देही नहीं धरते। देवै गर्भ नहीं अवतरते—११८६।

धरतौ—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **धरता, रखता।**

मुहा.—पग धरतौ—**चलता, आगे बढ़ता।** उ.—मुख मृदु-वचन जानि मति जानहु, सुद्ध पंथ पग धरतौ—१-२०३।

(२) **पकड़ता, हथियाता, ग्रहण करता।** उ.—जौ तू राम-नाम-धन धरतौ। अबकौ जन्म, आगिलौ तेरौ, दोऊ जन्म सुधरतौ—१-२९७।

धरधर—संज्ञा पुं. [हिं. धराधर] (१) **पृथ्वी को धारण करने वाले।** (२) **शेषनाग।** (३) **पर्वत।** (४) **विष्णु।**

संज्ञा स्त्री [अनु धड़धड़] **जलधारा के गिरने का शब्द।** उ.—बाजत सब्द नीर को धरधर—१०५७।

धरधरा—संज्ञा पं. [अनु.] **धड़कन, धकधकाहट।**

धरधराना—क्रि. अ. [हिं. धड़धड़ाना] **'धड़धड़' शब्द होना।**

क्रि. स.—**'धड़धड़' शब्द करना।**

धरन—क्रि. स. [हिं. धरना] **धर, रख।** उ.—पग न इत उत धरन पावत, उरझि मोह-सिवार—१-९९।

प्र.—देह धरन—**अवतार धारण करने की क्रिया या भाव, अवतार धारण करनेवाला।** उ.—भक्त हते देह धरन पुहुमी कौ भार हरन जनम-जनम मुक्तावन—१०-१५१।

संज्ञा स्त्री. [हिं धरना] (१) **धारण करने या उठानेवाला उसकी क्रिया या भाव।** उ.—(क) बूड़तहिं ब्रज राखि लीन्हौं, नरहिं गिरिवर धरन—१-२०२। (ख) परसि गंगा भई पावन, तिहूँ पुर धर-धरन। ......जासु महिमा प्रगट केवट, धोइ पग सिर धरन—१-३०८। (२) **रखने या स्थित करने की क्रिया या भाव।** उ.—मुरली अधर धरन सीखत हैं बनमाला पीताम्बर काछे—५०७। (३) **लकड़ी-लोहे की कड़ी, धरनी।** (४) **गर्भाशय को जकड़नेवाली नस।** (५) **गर्भाशय।** (६) **टेक, हठ, जिद।**

संज्ञा स्त्री. [सं. धरणि] **धरती, जमीन।**

धरना—क्रि. स. [सं. धारण] (१) **पकड़ना, थामना, ग्रहण करना।** (२) **रखना, स्थित या स्थापित करना।** (३) **पास या रक्षा में रखना।** (४) **पहनना, धारण करना।** (४) **आरोपित करना, अवलंबन करना।** (६) **आश्रय ग्रहण करना, सहायता के लिए घेरना।** (७) **किसी स्त्री को रखेली की तरह रखना।** (८) **गिरवीं या रेहन रखना।**

संज्ञा पुं.—**कोई बात पूरी कराने के लिए अड़कर या हठ करके बैठना।**

धरनि—संज्ञा स्त्री. [सं. धरणी] **पृथ्वी।** उ.—(क) धरनि पत्ता गिरि परे तैं फिर न लागै डार-१-८८। (ख) कागद धरनि, करै द्रुम लेखनि जल-सायर मसि घोरै—१-१२५। (ग) चलत पद-प्रतिबिंब मनि आँगन घुटरुवनि करनि। जलज-संपुट सुभग छबि भरि लेति उर जनु धरनि—१०-१०९।

संज्ञा स्त्री. [हिं. धरन] **टेक, हठ, अड़, जिद।** उ.—(क) एक अधार साधु संगति कौ रचि-पचि मति सँचरी। याहू सौंज संचि नहिं राखी अपनी धरनि धरी—१-१३०। (ख) सूर जबहिं आवतिं हम तेरैं तब तब ऐसी धरनि धरी री—१६२४। (ग) ज्यों चातक स्वातिहिं रट लावै तैसिय धरनि धरी—पृ.३२९ (८२)। (घ) ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी—३०१०।

धरनिधर—संज्ञा पुं. [सं. धरणि] (१) **पृथ्वी को धारण करनेवाला।** (२) **कच्छप।** (३) **शेषनाग।** (४) **पर्वत।**

धरनिपति—संज्ञा पुं. [सं धरणि+पति] **पृथ्वी के स्वामी।** उ.—रुद्रपति, छुद्रपति, लोकपति, वोकपति धरनिपति गगनपति, अगमबानी—१५२२।

धरनी—संज्ञा स्त्री. [सं. धरणी] **पृथ्वी, धरती।** उ.—बान भरि सुजान निकसत धरत धरनी पाइ—सा. ३८।

क्रि. स. [हिं. धरना] **धरना, रखना।** उ.—मेरी कैंती बिनती करनी। पहिलैं करि प्रनाम पाइनि परि, मनि रघुनाथ हाथ लै धरनी—९-१०१।

धरनीधर—संज्ञा पुं. [सं. धरणिधर] (१) **पृथ्वी को धारण करनवाले।** (२) **कच्छप।** (३) **शेषनाग।** (४) **पर्वत।** (५) **विष्णु या उनके अवतार।** उ.—गिरिधर, ब्रजधर, मुरलीधर, धरनीधर, माधौ, पीतांबरधर—५७२।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरनेत, धरनैत—संज्ञा पुं. [हिं. धरना+एत, ऐत (प्रत्य.)] **अड़ने या धरना देनेवाला।**

धर-पकड़—संज्ञा स्त्री. [हिं. धरना+पकड़ना] **अपराधी या शत्रु वर्ग के व्यक्ति को पकड़ने की क्रिया या भाव।**

धरम—संज्ञा पुं. [सं. धर्म] (१) **धर्म, कर्तव्य।** (२) **धर्मराज, यमराज।** उ.—(क) जीव, जल-थल जिते, वेष धरि धरि तिते अटत दुरगम अगम अचल भारे। मुसल मुदगर हनत, त्रिबिध करमनि गनत, मोहि दंडत धरम-दूत हारे—१-१२०। (ख) आज रन कोपो भीम कुमार। कहत सबै समुझाय सुगो सुत-धरम आदि चित धार—सा. ७४। (३) **धर्मात्मा, धर्म की गति समझनेवाला।**

धरमसार—संज्ञा स्त्री. [सं. धर्मशाला] (१) **धर्मशाला।** (२) **सदाव्रत।**

धरमसुत—संज्ञा पुं. [सं. धर्मसुत] **धर्म के पुत्र युधिष्ठिर।** उ.—रही न पैज प्रबल पारथ की, जब तैं धरमसुत घरनी हारी—१-२४८।

धरमाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. धर्म+आई (प्रत्य.)] **धार्मिकता।**

धरमी—वि. [सं. धर्मिन्] (१) **धर्माचरण करनेवाला, धर्मात्मा।** (२) **किसी धर्म में विश्वास रखनेवाला।**

धरवाना—क्रि. स. [हिं. धरना का प्रे.] (१) **पकड़ाना।** (२) **रखवाना।**

धरवायौ—क्रि. स. [हिं. धरवाना] **धराया, रखाया, अंगीकार कराया, अवलंबन दिया**—उ.—माता कौं परमोधि, दुहुँनि धीरज धरवायौ—५८६।

धरषना—क्रि. स. [सं. धर्षण] **दबाना, मल डालना।**

धरसना—क्रि. अ. [सं. धर्षण] **डर जाना, दब जाना।**

क्रि. स.—**अपमानित करना।**

धरसनी—संज्ञा स्त्री. [सं. धर्षणी] **कुलटा स्त्री।**

धरहर—संज्ञा स्त्री. [हिं. धरना+हर] (१) **धर-पकड़, गिरफ्तारी।** (२) **बीच-बचाव।** (३) **रक्षा, बचाव।** (४) **धैर्य, धीरज।**

धरहरना—क्रि. अ.—[अनु.] **'धड़-धड़' शब्द करना।**

धरहरा—संज्ञा पुं.—[सं. धवलगृह] **मीनार, धौरहर।**

धरहरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. धरना+हर (प्रत्य.)=धरहर] (१) **धरपकड़, गिरफ्तारी।** (२) **बीच-बचाव, लड़नेवालों को रोकने का काम।** (३) **बचाने का काम, रक्षा।** उ.—(क) भीषम, द्रोन, करन, अस्थामा, सकुनि सहित काहू न सरी। महापुरुष सब बैठे देखत, केस गहत धरहरि न करी—१-२४६। (ख) कहा भीम के गदा धरैं कर, कहा धनुष धरैं पारथ। काहु न धरहरि करी हमारी, कोउ न आयौ स्वारथ—१-२५६। (ग) जब जमजाल पसार परैगौ हरि बिनु कौन करैगौ धरहरि—१-३१२।

धरहरिया—संज्ञा पुं. [हिं. धरहरि] (१) **बीच-बचाव करनेवाला।** (२) **बचाव या रक्षा करनेवाला।**

धरहु—क्रि. स. [हिं. धरना] **धरो, रखो।** उ.—उर ते सखी दूरि करु हारहिं कंकन धरहु उतारि—२६८२।

धरा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पृथ्वी, धरती।** उ.—काँपन लागी धरा, पाप तैं ताड़ित लखि जदुराई—१-२०७। (२) **संसार, जगत।** (३) **गर्भाशय।** (४) **नाड़ी।**

धराइ—क्रि. स. [हिं. धरना] **धर कर, धारण करके।** उ.—रंक चलै सिर छत्र धराइ—१-१। (२) **शोध कराकर।** उ.—मेरे कहैं बिप्रनि बुलाइ, एक सुभ घरी धराइ, बागे चीरे बनाइ, भूषन पहिरावौ—१०-६५।

धराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. धरा+ई (प्रत्य.)] **पृथ्वी पर।** उ.—सुरपति पूजा मेटि धराई—१०१७।

क्रि. स. [हिं. धराना] **रखायी, स्थापित की।**

धराउर—संज्ञा पुं. [हिं. धरोहर] **थाती, अमानत।**

धराऊ—संज्ञा पुं. [हिं. धराना] **स्थित करानेवाला, रखानेवाला, देनेवाला।** उ.—भागि चलौ, कहि गयौ उहाँ तैं, काटि खाइ रे हाऊ। हौं डरपौं, काँपौं अरु रोवौं, कोउ नहिं धीर धराऊ—४८१।

वि. [हिं. धरना+आऊ (प्रत्य.)] **मामूली से बहुत अच्छा, बहुमूल्य।**

धराए—क्रि. स. [हिं. 'धरना' का प्रे.] (१) **स्थित कराये।** (२) **रखाये।** उ.—मेरी देह छुटत जम पठए, जितक दूत घर मौं। लै लै ते हथियार आपने, सान धराए त्यौं—१-१५१।

धराक, धराका—संज्ञा पुं. [हिं. धड़ाका] **'धड़धड़' शब्द।**

धरातल—संज्ञा पं. [सं.] (१) **पृथ्वी।** (२) **सतह।** (३) **लंबाई-चौड़ाई का गुणनफल।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरात्मज— संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मंगल** । (२) **नरकासुर** ।

धरात्मजा— संज्ञा स्त्री. [सं.] **सीता जी** ।

धराधर, धराधरन – संज्ञा पुं. [सं. धराधर] (१) **शेषनाग जो पृथ्वी को धारण करता है** । उ.—उछरत सिंधु, धराधर काँपत, कमठ पीठ अकुलाइ—१०-६४ । (२) **विष्णु या उनके श्रीकृष्ण आदि अवतार** । उ.—सूर स्याम गिरिधर धराधर हलधर यह छवि सदा थिर रहौ मेरैं जियतौ— ३७३ ।

धराधरन-धर-रिपु— संज्ञा पुं. [सं. धरा (=पृथ्वी)+धरन (=धारण करनेवाला, शेषनाग)+धर (शेषनाग को धारण करनेवाला, शिवजी)+रिपु (शिवजी का शत्रु काम) **कामदेव** । उ.—धराधरनधर-रिपु तन लीनो कहो उदधि-सुत बात –सा. ८ ।

धराधार—संज्ञा पुं. [सं.] **शेषनाग** ।

धराधारधारी—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव जी** ।

धराधिपति—संज्ञा पुं. [सं. धरा+अधिपति] **राजा** ।

धराधीश—संज्ञा पुं. [सं.] **राजा** ।

धराना—क्रि. स. [हिं. 'धरना' का प्रे.] (१) **पकड़ाना, थमाना** । (२) **रखाना, स्थित कराना** । (३) **ठहराना, निश्चित कराना** ।

धरापुत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **मंगल ग्र ह** ।

धरापुत्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सीता जी** ।

धराये—क्रि. स. [हिं. धराना] **रखवाये, स्थापित कराये** । उ.—मंगल कलश धराये द्वारे बंदनबार बँधाई—सारा. २६६ ।

धरायो,धरायौ—क्रि. स. [हिं धराना] (१) **धराया, रखाया, निर्धारित कराया** । उ.–(क) बहुरौ एक पुत्र तिन जायौ । नाम पुररुवा ताहि धरायौ—६-२ । (ख) पहिलो पुत्र रुक्मिनी जायौ, प्रद्युम्न नाम धरायौ–सारा. ६८६ । (२)**रखवाया, धारण कराया** । उ.—गरुड़-त्रास तैं जौ ह्याँ आयौ । तौ प्रभु-चरन- कमल फन-फन प्रति अपनैं सीस धरायौ— ५७३ ।

धरावत—क्रि. स. [हिं. धरावना] **रखाते हैं, निर्धारित कराते हैं** । उ.—जो परि कृष्ण कूबरिहिं रीझे तो सोइ किन नाम धरावत—२२६३ ।

धरावन—संज्ञा स्त्री. [हिं. धरावना] (१) **धराने या रखाने की क्रिया या भाव** । (२) **धराने-रखाने वाले** ।

प्र.—देह-धरावन—**अवतार लेनेवाले** । उ.—दीन-बन्धु असरन के सरन, सुखनि जसुमति के कारन देह धरावन—१०-२५१ ।

धरावना—क्रि. स. [हिं. धराना] (१) **पकड़ाना, थमाना** । (२) **स्थित कराना, रखाना** । (३) **ठहराना, निश्चित करना** ।

धराशायी - वि. [सं. धराशायिन्] **जमीन पर गिरा या पड़ा हुआ** ।

धरासुत—संज्ञा पुं. [सं.] **मंगल ग्रह** ।

धरासुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सीताजी** ।

धरासुर—संज्ञा पुं. [सं.] **ब्राह्मण (देवता)** ।

धरास्त्र—संज्ञा. पुं. [सं.] **एक तरह का अस्त्र** ।

धराहर – संज्ञा. पुं. [हिं. धुर+धर] **मीनार, धौराहर** ।

धराहिं—क्रि. स. [हिं. धरना] **धरें, रखें** । उ.—यह लालसा अधिक मेरैं जिय जो जगदीस कराहिं । मो देखत कान्हर इहिं आँगन, पग द्वै धरनि धराहिं—१०-७५ ।

धराहीं—क्रि. स. [हिं. धरना] **आरोपित करें, अवलंबन करें** । उ.—अबला सार ज्ञान कहा जानैं कैसैं ध्यान धराहीं—३३१२ ।

धरि—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **धारण करके, (रूप) धर कर, रख कर** । उ.—(क) भक्तबछल बपु धरि नरकेहरि, दनुज दह्यौ, उर दरि, सुर-साँई—१-६ । (ख) रहि न सके नरसिंह रूप धरि, गहि कर असुर पछार्‌यौ—१-१०६ । (२) **जबरदस्ती पकड़ कर** । उ.—जिन लोगनि सौं नेह करत है, तेई देख घिनैं-हैं । घर के कहत सबारे काढ़ौ, भूत होहि धरि खैहैं—१-८६ । (ख) बालक-बच्छ लै गयौ धरि—४८५ । (३) **स्थापित करके, जमाकर, ठहराकर** । उ.—सतगुरु कौ उपदेस हृदय धरि जिन भ्रम सकल निवार्‌यौ—१-३३६ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. धरन] **टेक, आश्रय, सहारा, रक्षा का उपाय** । उ.—अब मोकौं धरि रही न कोऊ तातैं जाति मरी—१-२५४ ।

धरिऐ—क्रि. स. [हिं. धरना] **अंगीकार कीजिए, अवलंबन**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीजिए । उ.—सरन आए की प्रभु, लाज धरिऐ—१–११० ।

धरित्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] **धरती, पृथ्वी** ।

धरिबो—संज्ञा स्त्री. [हिं. धरना] **लेने या रखने की क्रिया या भाव** । उ.—दूरि न करहि बीन धरिबो—२८६० ।

धरिया—क्रि. स. [हिं. धरना] **धरना, रखना, स्थित करना** । उ.—नवल किसोर नवल नागरिया । अपनी भुजा स्याम-भुज ऊपर, स्याम-भुजा अपनैं उर धरिया —६८८ ।

धरिहैं—क्रि. स.[हिं. धरना] (१) **स्त्री को रखेली की भाँति रखेंगे** । उ.—राधा को तजिहैं मनमोहन कहा कंस दासी धरिहैं—२६९७ । (२) **लेंगे, धारण करेंगे**। उ.—कनक-दंड आपुन कर धरिहैं—११६१ ।

धरिहै—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **अंगीकार करे, सुने, स्वीकार करे, माने** । उ.—भए अपमान उहाँ तू मरिहै । जौ मम बचन हृदय नहिं धरिहै – ४–५ । (२) **धारण करेगा, ग्रहण करेगा** । उ.—भऐं अस्पर्स देव-तन धरिहै—८–२ ।

धरिहौ—क्रि. स. [हिं. धरना] **धरोगे, स्थापित करोगे, रखोगे** । उ.—या बिधि जौ हरि-पद उर धरिहौ । निस्संदेह सूर तौ तरिहौ—१–३४२ ।

धरी—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **धारण की, स्थिर की, रखी** । उ.—(क) ऐसी को करी अरु भक्त काजैं । जैसी जगदीस जिय धरी लाजैं—१-५ । (ख) सदा सहाइ करी दासनि की जो उर धरी सोइ प्रति-पारी—१-१६० । (२) **बसायी, स्थापित की** । उ.—मनसा-बाचा कर्म अगोचर सो मूरति नहिं नैन धरी—१-११५ । (३) **ठहरायी, स्थिर की** । उ.—तब रिषि कृपा ताहि पर धरी—६-३ ।

प्र.—आनि धरी—**पकड़ लाया, आकर पकड़ा** । उ.—सभा मँझार दुष्ट दुस्सासन द्रौपदि आनि धरी—१-१६ । मौन धरी—**चुप्पी साधी, विरोध नहीं किया**। उ.—अर्जुन भीम महाबल जोधा इनहूँ मौन धरी—१-२५४ । मन धरी—**विचार किया, निश्चय किया, इच्छा की** । उ.—कृपा तुम करी मैं भेंट कौं मन धरी नहीं कछु बस्तु ऐसी हमारैं—४-११ । देह धरी—(१) **अवतार लिया** । (२) **शरीर बढ़ाया** । उ.—जो वह देह धरी जोजन लौं—१०-५३ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. धरना] **रखैल, रखेली स्त्री**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. ढार] **कान का एक गहना**।

धरे—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **धारण किये हुए, रखे हुए, पकड़े हुए** । उ.—चक्र धरे बैकुंठ तैं धाए, वाकी पैज सरै—१-८२ । (ख) खड़ग धरे आवै तुम देखत अपनैं कर छिन माहँ पछारै—१०-१० । (२) **पकड़े हुए, पकड़ कर** । उ.—वह देवता कंस मारैगौ केस धरे धरनी घिसियाइ—५३१ ।

प्र.—मन धरे—**ध्यान लगाये, चित्त रमाये**। उ.—(क) बिषयी भजे, बिरक्त न सेए, मन धन-धाम धरे—१-१६८ । (ख) सूरदास स्वामी मनमोहन, तामैं मन धरे—४८३ । बेष धरे—**वेश बनाये, सजे-सजाये**। उ.—सुन्दर बेष धरे गोपाल—४७४ । दोष धरे—**दोष लगाये**—उ.—सूरदास गथ खोटो काहे पारखि दोष धरे—पृ० ३३१ (५) । देह धरे को—**जन्म लेने का** । उ.—देह धरे को यह फल प्यारी—१२२६ ।

धरेल, धरेली—संज्ञा स्त्री. [हिं. धरना] **रखैल, रखेली**।

धरेला—संज्ञा पुं. [हिं. धरना] **वह प्रेमी जिसे बिना विवाह के ही पति-रूप में ग्रहण कर लिया गया हो**।

धरैं—क्रि. स. [हिं. धरना] **धरने से, पकड़ने या ग्रहण करने से** । उ.—कहा भीम के गदा धरैं कर, कहा धनुष धरैं पारथ—१-२५६ । (२) **धारण करते हैं**। (३) **रखते हैं**। उ.—इक दधि गोरोचन-दूब सबके सीस धरैं—१०-२४ ।

धरै—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **धरता है, रखता है**। उ.—कौन बिभीषन रंक-निसाचर, हरि हँसि छत्र धरै—१-३५ । (२) **धारण करता है, आरोपित करता है, अंगीकार करता है** । उ.—(क) ब्रज-जन राखि नंद कौ लाला, गिरिधर बिरद धरै—१-३७ । (३) **ध्यान लगाये** । उ.—जो घट अंदर हरि सुमिरै । ताकौ काल रूठि का करिहै, जो चित चरन धरै—१०-८२।

धरैगौ—क्रि. स. [हिं. धरना] **धरेगा, रखेगा, धारण करेगा** । उ.–जौ हरि-ब्रत निज उर न धरैगौ । तौ को अस त्राता जु अपन करि, कर कुठावँ पकरैगौ—१-७५ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरैया—संज्ञा पुं. [हिं. धरना] **धरनेवाला, रखनेवाला** उ.—भक्ति-हेत जसुदा के आगैं, धरनी चरन धरैया—१०-१३१।

संज्ञा पुं—**पकड़नेवाला।**

धरैहौ—क्रि. स. [हिं. धरना] **रखोगे, धरोगे।**

मुहा.—नाम धरैहौ—**बदनामी कराओगी।** उ.—तुम हौ बड़े महर की बेटी कुल जनि नाम धरैहौ—१४९८।

धरो—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **रखो।** (२) **पकड़ो।**

धरोड़, धरोहर—संज्ञा स्त्री. [हिं. धरना, धरोहर] **थाती, अमानत।**

धरौं—क्रि. स. [हिं. धरना] **धरता हूँ, रखता हूँ, रखूँ।** उ.—छहौं रस जौ धरौं आगै, तऊ न गंध सुहाइ—१-५६।

प्र.—भरि धरौं अँकवारि—**छाती से लगाकर रखूँ, पकड़कर छाती से लगा लूँ।** उ.—कोउ कहति, मैं देखि पाऊँ, भरि धरौं अँकवारि—१०-२७३।

धरौ—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **पकड़ो।** उ.—भरत पंथ पर देख्यौ खरौ। वाकैं बदले ताकौं धरौ—५-४। (२) **धरो, रखो, अपनाओ।**

प्र.—चित धरौ (१) **विचारो, सोचो।** उ.—(क) हमारे प्रभु, औगुन चित न धरौ—१-२२०। (२) **ध्यान करो।** उ.—हरि-चरनारविंद उर धरौ—१-२२४। मेरी इच्छा धरौ—**मेरी चाहना रखते हो, मुझे पाना चाहते हो।** उ.—जौ तुम मेरी इच्छा धरौ। गंधर्बनि कैं हित तप करौ—९-२।

(३) **स्त्री को बिना विवाह के पत्नी की तरह रख लो।** उ.—ब्याहौ बीस धरौ दस कुबजा अंतहु स्याम हमारे—३३४२।

धरौवा—संज्ञा पुं [हिं. धरना] **बिना विवाह के स्त्री रख लेने की चाल या रीति।**

धर्ता—संज्ञा पुं. [सं. धर्तृ] (१) **धारण करनेवाला।** (२) **कोई काम या दायित्व अपने ऊपर लेनेवाला।**

धर्ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. धरती] (१) **पृथ्वी।** (२) **संसार।**

धर्म—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वह जो धारण किया जाय, प्रकृति, स्वभाव।** (२) **पारलौकिक सुख के लिए किया गया शुभ कर्म।** (३) **उचित व्यवहार या कर्म, कर्तव्य।** (४) **सुकृत, सदाचार, सत्कर्म, पुण्य।**

मुहा.—धर्म खाना—**धर्म की शपथ खाना।** (१) **धर्म के विरुद्ध व्यवहार करना।** (२) **स्त्री का सतीत्व नष्ट करना।** धर्म लगती (से) कहना—**सत्य-सत्य बात कहना।**

(५ **ईश्वर, परलोक आदि के संबंध में विशेष रूप का विश्वास और आराधना की प्रणाली-विशेष, मत, संप्रदाय, पंथ।** उ.—धर्म-कर्म अधिकारिनि सौं कछु नाहिंन तुम्हरौ काज—१-२१५। (६) **नीति, न्याय व्यवस्था, कानून।** (७) **उचित-अनुचित का विभेद करनेवाली न्यायबुद्धि, विवेक, ईमान।** उ.—कहयौ तुम बाँटि पर हमैं बिस्वास है, देहु बाँटि जो धर्म होई—८-८। (८) **धर्मराज, यमराज।** (९) **धर्म-शास्त्र।** उ.—धर्म कहैं, सर-सयन गंग-सुत तेतिक नाहिं सँतोष—१-२१५। (१०) **वह गुण या वृत्ति जो उपमेय और उपमान में समान हो (अलंकारशास्त्र)।**

धर्म-अँकुर—संज्ञा पुं. [सं. धर्म+अंकुर] **धर्म रूपी अँखुआ या कल्ला।** उ.—अदभुत राम नाम के अंक। धर्म-अँकुर के पावन द्वै दल, मुक्ति-बधू-ताटंक—१-९०।

धर्म-कर्म—संज्ञा पुं. [सं.] **वह कर्म जिसका करना आवश्यक कहा गया हो।**

धर्मक्षेत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कुरुक्षेत्र।** (२) **भारतवर्ष।**

धर्मग्रंथ—संज्ञा पुं. [सं.] **वह पुस्तक जिसमें आचार-व्यवहार और पूजा-उपासना आदि विषयों की शिक्षा या चर्चा हो।**

धर्मचक्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **धर्म का समूह।** (२) **गौतम बुद्ध की धर्म-शिक्षा।** (३) **बुद्धदेव।**

धर्मचर्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] **धर्म का आचार-व्यवहार।**

धर्मचारी—वि. [सं. धर्मचारिन्] **धर्म-कर्म करनेवाला।**

धर्मचिंतन—संज्ञा पुं. [सं.] **धर्म-संबंधी विचार।**

धर्मज—वि. [सं.] **धर्म से उत्पन्न।**

संज्ञा पुं.—(१) **धर्मपत्नी से उत्पन्न प्रथम पुत्र।** (२) **धर्मराज के पुत्र युधिष्ठिर।** (३) **नर-नारायण।**

धर्मजीवन—संज्ञा पुं. [सं.] **धर्म कर्म कराकर जीविका अर्जित करनेवाला ब्राह्मण।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मज्ञ—वि. [सं.] धर्म का तत्व समझनेवाला।

धर्मतः—अव्य. [सं.] धर्म का ध्यान रखते हुए।

धर्मदान—संज्ञा पुं. [सं.] शुद्ध-धर्मबुद्धि से निस्वार्थ दिया जानेवाला दान।

धर्मदार, धर्मदारा—संज्ञा स्त्री. [सं.] धर्मपत्नी।

धर्मद्रवी—संज्ञा स्त्री. [सं.] गंगा नदी।

धर्मधक्का—संज्ञा पुं. [हिं. धर्म+हिं. धक्का] (१) धर्म के लिए सहा गया कष्ट। (२) व्यर्थ का कष्ट।

धर्मध्वज—संज्ञा पुं. [सं.] धार्मिकों-सा वेश बनाकर ठगने वाला, पाखंडी।

धर्मनाम—संज्ञा पुं. [सं.] विष्णु।

धर्मनिष्ठ—वि. [सं.] धर्म में श्रद्धा रखनेवाला।

धर्मनिष्ठा—संज्ञा स्त्री. [सं.] धर्म में श्रद्धा या आस्था।

धर्मपति—संज्ञा पुं. [सं.] धर्मात्मा। (२ वरुण।

धर्मपत्नी—संज्ञा स्त्री. [सं.] विवाहिता स्त्री।

धर्मपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] गूलर का वृक्ष।

धर्मपरिणाम—संज्ञा पुं. [सं.] एक धर्म के पश्चात् दूसरे निश्चित धर्म की प्राप्ति।

धर्मपाल—संज्ञा पुं. [सं.] धर्म का पालन करनेवाला।

धर्मपीठ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) धर्म का मुख्य स्थान जहाँ धर्म की व्यवस्था मिल सके। (२) काशी।

धर्मपीड़ा—संज्ञा स्त्री [सं.] धर्म के विरुद्ध आचरण।

धर्मपुत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) राजा पांडु की पत्नी कुंती के गर्भ से उत्पन्न धर्मदेव के पुत्र युधिष्ठिर। उ.—धर्मपुत्र, तू देखि विचार—१-२६१। (२) नर-नारायण। (३) वह पुत्र जिसे धर्मानुसार ग्रहण किया गया हो।

धर्मपुरी—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) यमलोक। (२) न्यायालय।

धर्मप्राण—वि. [सं.] धर्म को प्राण से भी प्रिय समझने वाला, बहुत धर्मात्मा।

धर्मबुद्धि संज्ञा स्त्री [सं.] भले-बुरे का विचार।

धर्मभाणक—संज्ञा पुं. [सं.] कथा सुनानेवाला।

धर्मभिक्षुक—संज्ञा पुं. [सं.] वह जिसने केवल धर्म-पालन के लिए भिक्षा लेना आरंभ किया हो।

धर्मभीरु—वि. [सं.] जो अधर्म से डरे।

धर्मयुग—संज्ञा पुं. [सं.] सत्ययुग।

धर्मयुद्ध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह युद्ध जिसमें किसी तरह का अन्याय या नियम-भंग न हो। (२) धर्म की रक्षा के लिए किया जानेवाला युद्ध।

धर्मराइ—संज्ञा पुं. [सं. धर्म+हिं. राय] धर्मराज, यमराज। उ.—बिदुर सु धर्मराइ अवतार—३-५।

धर्मराज, धर्मराय—संज्ञा पुं. [सं. धर्मराज] (१) धर्म-पालक, राजा। (२) युधिष्ठिर। (३) यमराज।

धर्मलुप्तोपमा—संज्ञा स्त्री [सं.] वह उपमा जिसमें उपमेय-उपमान के समान गुण का कथन न हो।

धर्मवाहन—संज्ञा पुं. [सं.] धर्मराज का वाहन, भैंसा।

धर्मविवेचन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) धर्म-संबंधी विचार। (२) धर्म-अधर्म का विचार।

धर्मवीर—संज्ञा पुं. [सं.] वह जो धर्म करने में साहसी हो।

धर्मशाला—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) वह मकान जो यात्रियों के निःशुल्क रहने के लिए बनवाया गया हो। (२) न्यायालय।

धर्मशास्त्र—संज्ञा पुं. [सं.] वह ग्रंथ जिसमें मानव-समाज-विशेष के आचार-व्यवहारों का उल्लेख हो।

धर्मशास्त्री—संज्ञा पुं. [सं.] धर्मशास्त्र का पंडित।

धर्मशील—वि. [सं.] धर्मानुसार कर्म करनेवाला।

धर्मशीलता—संज्ञा स्त्री [सं.] धर्माचरण का भाव।

धर्मसंकट—संज्ञा पुं. [सं.] ऐसी स्थिति जिसमें हर तरह से कुछ न कुछ हानि या संकट हो।

धर्मसभा—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) वह सभा जिसमें धर्म-संबंधी विचार हो। (२) न्यायालय।

धर्मसार—संज्ञा स्त्री [सं. धर्मशाला] धर्मशाला। उ.—राजा इक पंडित पौरि तुम्हारी। ......। हूँठ पैंड है बसुधा हमकौ तहाँ रचौं धर्मसारी (ध्रमसारी)—८-१४।

धर्मसुत—संज्ञा पुं. [सं.] धर्मराज के पुत्र युधिष्ठिर।

धर्म-सुधन—संज्ञा पुं. [सं.] धर्म रूपी संपत्ति या निधि। उ.—पाप उजीर कह्यो सोइ मान्यौ, धर्म-सुधन लुट्यौ—१-६४।

धर्मसुवन—संज्ञा पुं. [सं.] धर्मराज के पुत्र युधिष्ठिर। उ.—सूरस्याम मिलि धर्मसुवन-रिपु ता अवतारहिं सलिल बहावै—सा. उ. २१।

धर्मसेतु—संज्ञा पुं. [सं.] सेतु की तरह धर्म को धारण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म का निर्वाह—करनेवाला । उ.— धर्मसेतु ह्वै धर्म बढ़ायौ भुवि को धारण कीन्हो—सारा. ३४६ ।

धर्मस्थ—संज्ञा पुं. [सं.] **न्यायकर्त्ता, न्यायाधीश** ।

धर्मांध—वि. [सं.] **जो धर्म के नाम पर उचित अनुचित सभी कार्य करने को तत्पर हो** ।

धर्मा—संज्ञा पुं. [सं.] **धर्म, नीति** । उ.— जज्ञ करत बैरोचन कौ सुत, वेद-बिहित-बिधि-कर्मा । सो छलि बाँधि पताल पठायौ, कौन कृपानिधि धर्मा—१-१०४ ।

धर्माचार्य—संज्ञा पुं. [सं.] **धर्म-शिक्षक** ।

धर्मात्मा—वि. [सं. धर्मात्मन्] **धर्म करनेवाला** ।

धर्माधिकरण—संज्ञा पुं. [सं.] **न्यायालय** ।

धर्माधिकारी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **धर्म-अधर्म का निर्णायक** । (२) **दान का प्रबंधक या अध्यक्ष** ।

धर्माध्यक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] **धर्माधिकारी** ।

धर्मारण्य—संज्ञा पुं. [सं.] **तपोवन** ।

धर्मार्थ—क्रि. वि. [सं.] **धर्म या परोपकार के लिए** ।

धर्मावतार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बहुत धर्मात्मा** । (२) **धर्म-अधर्म का निर्णायक** । (३) **युधिष्ठिर** ।

धर्मासन—संज्ञा पुं. [सं.] **न्यायाधीश का आसन** ।

धर्मिणी—वि. [सं.] **धर्म करनेवाली** ।

धर्मिष्ठ—वि. [सं.] **धर्म में श्रद्धा रखनेवाला** ।

धर्मी—वि. [सं. धर्मिन्] (१) **जिसमें धर्म हो** । (२) **धार्मिक, धर्म करनेवाला** । (३) **धर्म का अनुयायी** ।

संज्ञा पुं.—(१) **धर्म का आधार** । (२) **धर्मात्मा** ।

धर्मीपुत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **नाटक का अभिनेता** ।

धर्मीले—वि. [हिं. धर्मी] **धर्मात्मा, पुण्यात्मा** । उ.—मधुबन के सब कृतज्ञ धर्मीले—३०५५ ।

धर्मोन्मत्त—वि. [हिं. धर्म+उन्मत] **जो धर्म के नाम पर उचित-अनुचित, सभी कुछ कर सके** ।

धर्मोपदेश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **धर्म की शिक्षा या उपदेश** । (२) **धर्म की व्यवस्था** ।

धर्मोपदेशक—संज्ञा पुं. [सं.] **धर्म की शिक्षा देनेवाला** ।

धर्मोपाध्याय —संज्ञा पुं. [सं.] **पुरोहित** ।

धर्म्य—वि. [सं.] **जो धर्म के अनुसार हो** ।

धरयौ—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **धारण किया, उठाया** । उ.—ग्वालनि हेत धरयौ गोबर्धन, प्रगट इंद्र कौ गर्ब प्रहारयौ—१-१४ । (२) **रखा, निश्चित किया** । उ.—(क) पतित-पावन हरि बिरद तुम्हारौ कौनैं नाम धरयौ—१-२३ । (ख) नाम सुद्युम्न ताहि रिषि धरयौ—६-२ । (ग) गोपिन नावँ धरयौ नवरंगी—२६७५ । (३) **रखा, स्थापित किया** । उ.—दच्छ-सीस जो कुंड मैं जरयौ । ताके बदलैं अज-सिर धरयौ—४-५ । (४) **निर्धारित या निश्चित किया** । उ.—बिप्र बुलाइ नाम लै बूझयौ रासि सोधि इक सुदिन धरयौ—१०-८८ । (५) **पकड़ा, थामा, रोका** । उ.—आगैं हरि पाछैं श्रीदामा, धरयौ स्याम हँकारि—१०-२१३ ।

प्र.—धरयौ रहै—**रखा रहता है** । उ.—मेरे कुँवर कान्ह बिनु सब कुछ वैसेहि धरयौ रहै—२७११ । धरयौ रहि जैहै—**रखा रह जायगा, पड़ा रह जायगा** । उ.—यह व्यापार तुम्हारौ ऊधौ ऐसेहिं धरयौ रहि जैहै—३००५ ।

धर्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अविनय, धृष्टता** । (२) **असहनशीलता** । (३) **अधीरता** । (४) **अशीलता** । (५) **दबाव, बंधन, रोक** । (६) **हिंसा** । (७) **अपमान** ।

धर्षक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दमन करनेवाला** । (२) **अपमान करनेवाला** । (३) **सतीत्व हरण करनेवाला** । (४) **अभिनय करनेवाला** ।

धर्षकारी—वि. [सं. धर्षकारिन्] (१) **दमन करनेवाला** । (२) **अपमान या तिरस्कार करनेवाला** ।

धर्षकारिणी—वि. [सं.] **व्यभिचारिणी** ।

धर्षण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अपमान** । (२) **असहनशीलता** ।

धर्षित—वि. [सं.] (१) **अपमानित** । (२) **पराजित** ।

धर्षी—वि. [सं. धर्षिन्] (१) **अपमान करनेवाला** । (२) **हरानेवाला** । (३) **नीचा दिखानेवाला** ।

धव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पति, स्वामी** । (२) **पुरुष** ।

धवनी—संज्ञा स्त्री. [सं. धमनी] **धौंकनी, भाथी** ।

धवर—वि. [सं. धवल] **सफेद, उजला** ।

धवरहर—संज्ञा पुं. [हिं धुर+घर] **मीनार, धौराहर** ।

धवरा—वि. [सं. धवल] **उजला, सफेद** ।

धवराहर—संज्ञा पुं. [हिं. धुर+घर] **मीनार, धौराहर** ।

धवरी—वि. स्त्री. [हिं. धवल] **सफेद, उजली** । उ.— कबहुँक लै लै नाउ मनोहर धवरी धेनु बुलावते—२७३५ ।

संज्ञा स्त्री.—**सफेद रंग की गाय** ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धवल—वि. [सं.] (१) **सफेद, उज्ज्वल**। उ. धवल बसन मिल रहे अंग में सूर न जानो जात—सा. ७६। (२) **निर्मल, स्वच्छ**। (३) **सुंदर**।

धवलगिरि—संज्ञा पुं. [सं.] **हिमालय की एक चोटी**।

धवलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सफेदी, उजलापन**।

धवलत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **सफेदी, उज्ज्वलता**।

धवलना—क्रि. स. [सं. धवल] **उजालना, उज्ज्वल करना, चमकाना, निखारना**।

धवलपक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शुक्ल पक्ष**। (२) **हंस**।

धवलांग—संज्ञा पुं. [सं.] **हंस**।

धवला—वि. स्त्री. [सं. धवल] **सफेद, उजली**।

संज्ञा स्त्री.—**सफेद रंग की गाय**।

संज्ञा पुं.—**सफेद रंग का बैल**।

धवलाई—संज्ञा स्त्री. [सं. धवल+आई] **सफेदी**।

धवलागिरि—संज्ञा पुं. [सं. धवल+गिरि] **हिमालय की एक प्रसिद्ध चोटी**।

धवलित—वि. [सं.] **जो साफ किया गया हो**।

धवलिया—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **उज्ज्वलता**। (२) **सफेदी**।

धवली—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सफेद गाय**।

धवलीकृत—वि. [सं.] **जो सफेद किया गया हो**।

धवलीभूत—वि. [सं.] **जो सफेद हुआ हो**।

धवलोत्पल—संज्ञा पुं. [सं.] **कुमुद**।

धवा—संज्ञा पुं. [सं. धव] (१) **पति**। (२) **पुरुष**।

धवाए—क्रि. स. [हिं. धवाना] **दौड़ाए**। उ.—तिनके काज अहीर पठाए। बिलम करहु जिनि तुरत धवाए—१० २१।

धवाएक—संज्ञा पुं. [सं.] **वायु**।

धवाना—क्रि. स. [हिं. धाना का प्रे.] **दौड़ाना**।

धस—संज्ञा पुं. [हिं. धँसना] **डुबकी, गोता**।

धसक—संज्ञा स्त्री. [हिं. धसकना] **डाह, ईर्ष्या**।

धसकना—क्रि. अ. [हिं. धँसना] (१) **नीचे को खसक जाना**। (२) **डाह या ईर्ष्या करना**।

धसका—संज्ञा पुं. [हिं. धसक] **शोक आदि का आघात**।

धसना—क्रि. अ. [सं. ध्वंसन] **नष्ट होना, मिटना**।

क्रि. अ. [हिं. धँसना] **नीचे खसकना या दबना**।

धसनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. धँसन] **धँसने की क्रिया या ढंग**।

धसमसाना—क्रि. अ. [हिं. धसना] **धरती में धँसना**।

धसाऊ—संज्ञा [हिं. धँसना] **धँसने की क्रिया, भाव या ढंग**। उ. मथि समुद्र सुर असुरनि कैं हित मंदर जलधि धसाऊ—१०-२२१।

धसान—संज्ञा स्त्री. [हिं. धँसान] **धँसने की क्रिया या ढंग**।

धसाना—क्रि. स [हिं. धँसना] (१) **गड़ाना, चुभाना**। (२) **प्रवेश कराना**। (३) **नीचे की ओर बैठाना**।

धसाव—संज्ञा पुं. [हिं. धँसाव] **धँसने की क्रिया या भाव**।

धसि—क्रि. अ. [हिं. धँसना] **डूबकर, गोता मारकर**।

प्र.—धसि लीजै—**डूब मरिए** उ.—कै दहिए दारुन दावानल जाइ जमुन धसि लीजै—२८६४।

धसी—क्रि. अ. [हिं. धसना] **जल में प्रविष्ट हुई**।

धाँधना—क्रि. स. [देश.] (१) **बंद करना, उड़काना, भेड़ना**। (२) **बहुत ज्यादा खा लेना**।

धाँधल—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **उधम, उपद्रव**। (२) **छल-कपट, धोखा**। (३) **बहुत जल्दी, उतावली**।

धाँधलपन—संज्ञा पुं. [हिं धाँधल+पन] (१) **शरारत**। (२) **धोखेबाजी**।

धाँधली—संज्ञा स्त्री. [हिं. धाँधल+ई] **बेइमानी, गड़बड़**।

धाँस—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **मिर्च, तंबाकू आदि की गंध**।

धा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ब्रह्मा**। (२) **बृहस्पति**।

वि.—**धारण करनेवाला**।

प्रत्य.—**तरह, भाँति, प्रकार**।

संज्ञा पुं. [अनु.] **तबले का एक बोल**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. धाय] **धाय, दाई,**।

संज्ञा. पुं. [हिं. धव] (१) **पति, स्वामी**। (२) **पुरुष**।

धाइ—क्रि. अ. [हिं. धाना] **दौड़कर, भाग कर**। उ.—(क) पाइ पियादे धाइ ग्राह सौं लीन्हौ राखि करी—१-१६। (ख) जोग को अभिमान करिहै ब्रजहिं जैहै धाइ—२६१४।

संज्ञा स्त्री. [हिं. धाय] **धाय, दाई**।

धाई—क्रि. अ. [हिं. धाना] **दौड़ पड़ी, चल दी**। उ.—इतनी सुनत कुंति उठि धाई, बरषत लोचन नीर—१-२६।

अव्य.—**दौड़कर**। उ.—पहुँचे आइ निकट खबर कैं, सुग्रीव आयौ धाई—६-१०२।

संज्ञा स्त्री. [हिं. धाय] **धाय, दाई**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धाउ—क्रि. अ. [हिं. धाना] **धाओ, दौड़ो, जल्दी करो।** उ.—सीतल चंदन कटाउ, धरि खराद रंग लाउ, बिबिध चौकी बनाउ, धाउ रे बनैया—१०-४१।

संज्ञा पुं. [सं. धाव] **नाच का एक प्रकार।**

धाऊँ—क्रि. अ. [हिं. धाना] **दौड़ूँ, चलूँ, भागूँ, घूमूँ।** उ.—(क) हय-गयंद उतरि कहा गर्दभ चढ़ि धाऊँ।...।अंब सुफल छाँड़ि, कहा सेमर कौं धाऊँ—१-१६६। (ख) जहँ जहँ भीर परै भक्तनि कौं, तहाँ तहाँ उठि धाऊँ—१-२४४। (२) **आक्रमण करूँ।** उ.—स्यंदन खंडि महारथि खंडौं, कपिध्वज सहित गिराऊँ। पांडव-दल-सन्मुख ह्वै धाऊँ, सरिता-रुधिर बहाऊँ—१-२७०।

—संज्ञा पुं. [सं. धावन] **हरकारा।**

—क्रि. अ. भूत. [हिं. धाना] **दौड़े, भागे।** उ.—सिव-बिरंचि मारन कौं धाए यह गति काहू देव न पाई—१-३।

—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) **भोजन।** (२) **अनाज।**

संज्ञा स्त्री. (१) **प्रसिद्धि, शोर।** उ.—(क) अपनी पत्रावलि सब देखत, जहँ तहँ फेनि पिराक। सूरदास प्रभु खात ग्वाल सँग, ब्रह्मलोक यह धाक—४६४। (ख) अमर जय ध्वनि भई धाक त्रिभुवन गई कंस मार्‌यौ निदरि देवरायौ—२६१५। (२) **रोब, दबदबा, आतंक।**

संज्ञा. पुं. [हिं. ढाक] **पलाश।**

—संज्ञा पुं. [हिं. धाक] (१) **जिसकी खूब धाक हो।** (२) **बहुत बली या प्रभावशाली।**

—क्रि. अ. [हिं. धाक] **धाक या रोब जमाना।**

—संज्ञा पुं. [देश.] **पलाश का पेड़।**

—संज्ञा पुं. [हिं. तागा] **डोरा, तागा।**

—संज्ञा स्त्री. [हिं. दहाड़] **जोर का शब्द।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. धार] (१) **आक्रमण, चढ़ाई।** **मुहा.**—धाड़ पड़ना—**बहुत जल्दी होना।** (२) **झुंड, समूह, जत्था।**

—क्रि. अ. [हिं. दहाड़ना] **जोर से चिल्लाना।**

—संज्ञा पुं. [हिं. धाड़] **लुटेरा, डाकू।**

—वि. [सं.] **धातु का, धातु-संबंधी।**

—संज्ञा पुं. [सं. धातृ] (१) **ब्रह्मा।** (२) **महेश।** (३) **शिव।** (४) **शेषनाग।**

वि.—(१) **पालक।** (२) **रक्षक।** उ.—सूर प्रभु मुनि हँसत प्रीति उर मैं बसत इन्द्र कौ कसत हरि जगत धाता—६५५। (३) **धारण करनेवाला।**

धातु—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **गेरू, खड़िया आदि पदार्थ जो प्रायः उपरस कहलाते हैं। पूर्वकाल में इनका चित्रकारी में भी उपयोग किया जाता था।** उ.—(क) बनमाला तुमकौं पहिरावहिं, धातु-चित्र तनु-रेखहिं—४२६। (ख) मुकुट उतारि धर्‌यौ लै मंदिर, पोंछति है अंग धातु—५११। (२) **एक खनिज पदार्थ।** (३) **शरीर को धारण करनेवाला द्रव्य।** (४) **शुक्र, वीर्य।**

संज्ञा पुं.—(१) **भूत, तत्व।** उ.—जाके उदित नचत नाना बिधि गति अपनी-अपनी। सूरदास सब प्रकृति धातुमय अति बिचित्र सजनी। (२) **शब्द का मूल।** (३) **परमात्मा।**

धातुराग—संज्ञा पुं. [सं.] **धातु से निकले ईंगुर आदि रंग।**

धातुवाद—संज्ञा पुं. [सं.] **रसायन बनाने का काम।**

धातुवादी—संज्ञा पुं. [सं.] **रसायनी, कीमियागर।**

धातू—संज्ञा पुं. [सं. धातु] **धातु।**

धात्र—संज्ञा पुं. [सं.] **पात्र, बरतन।**

धात्रिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आँवला।**

धात्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **माता।** (२) **धाय, दाई।** (३) **भगवती, गायत्री।** (४) **गंगा।** (५) **पृथ्वी।** (६) **सेना।** (७) **गाय।**

धात्रेयी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **धाय, दाई।**

धात्वर्थ—संज्ञा पुं. [सं.] **(शब्द का) धातु से ज्ञात अर्थ।**

धाधना—क्रि. स. [देश.] **देखना।**

धाधे—क्रि. स. [हिं. धाधना] **देखने लगे।** उ.—सूरज प्रभु लख धीर रूप कर चरन कमल पर धाधे—सा. ६।

धान—संज्ञा पुं. [सं. धान्य] (१) **चावल।** (२) **अन्न।** उ.—करुपति कह्यौ, धान मम खाइ। पांडु सुतनि की करत सहाइ—१-२८४।

धानक—संज्ञा पुं. [सं.] **धनिया।**

संज्ञा पुं. [सं. धानुष्क] (१) **धनुष चलानेवाला, कमनैत, धनुर्द्धारी।** (२) **रुई धुननेवाला, धुनिया।**

धानकी—संज्ञा पुं. [हिं. धानुक] (१) **धनुर्द्धारी।** (२) **कामदेव।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धानपान—संज्ञा पुं. [हिं. धान+पान] **विवाह की एक रीति जिसमें वर-पक्ष की ओर से कन्या के घर धान, हल्दी आदि भेजी जाती है।**

धानमाली—संज्ञा पुं. [सं.] **दूसरे के चलाये अस्त्र को रोकने की एक क्रिया।**

धाना—संज्ञा स्त्री [हिं. धान] (१) **धान**। (२) **अनाज**। (३) **भुना हुआ धान या जौ**। (४) **सत्तू**। (५) **धनिया**।

क्रि. अ. [हिं. धावन] (१) **दौड़ना, भागना**। (२) **प्रयत्न करना**।

धानाचूर्ण—संज्ञा पुं. [सं.] **सत्तू**।

धानी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **स्थान, जगह**। (२) **वह जिसमें कोई चीज या वस्तु रखी जाय**। (३) **धनिया**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. धान+ई] **हलका हरा रंग**।

वि.—**धान की पत्ती-सा हलके हरे रंग का**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. धान्य] (१) **धान**। (२) **अन्न**। (३) **धनिया**।

धानुक—संज्ञा पुं. [सं. धानुष्क] **धनुष चलानेवाला**।

धानुष्क—संज्ञा पुं. [सं.] **धनुर्द्धारी, धनुर्धर, कमनैत**।

धान्य, धान्यक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **धान**। (२) **अन्न**।

धान्यपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चावल**। (२) **जौ**।

धान्यराज—संज्ञा पुं. [सं.] **जौ**।

धान्याकृत—संज्ञा पुं. [सं.] **किसान, खेतिहर, कृषक**।

धान्यारि—संज्ञा पुं. [सं.] **चूहा, मूषक**।

धाप—संज्ञा पुं. [हिं. टप्पा] **लंबा-चौड़ा मैदान**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. धापना] **तृप्ति, संतोष, छकना**।

धापना—क्रि. अ. [सं. तर्पण] **तृप्त होना, अघाना**।

क्रि. स.—**तृप्त या संतुष्ट करना**।

क्रि. अ. [सं. धावन] **दौड़ना, भागना**।

धापहु—क्रि. अ. [हिं. धापना=दौड़ना] **दौड़ो, भागो**। उ.—द्रुमन चढ़े सब सखा पुकारत मधुर सुनावहु बैन। जनि धापहु बलि चरन मनोहर कठिन काँट मग ऐन।

धापी—क्रि. अ. [सं. तर्पण] **संतुष्ट या तृप्त हुई, अघाकर**। उ.—(क) भच्छि अभच्छ, अपान पान करि, कबहुँ न मनसा धापी—**१-१४०**। (ख) दूतन कह्यौ बड़ौ यह पापी। इन तौ पाप किए हैं धापी—६-४।

धावा—संज्ञा पुं. [देश.] **मकान की अटारी**।

धाभाई—संज्ञा पुं. [हिं. धा=धाय+भाई] **दूधभाई**।

धाम—संज्ञा पुं. [सं. धामन्] (१) **गृह, घर, स्थान**। उ.—(क) धाम धुआँ के कहौ कौन पै बैठी कहाँ अथाई। (ख) अरध बीच दै गये धाम को हरि अहार चलि जात—सा. २३। (२) **देवस्थान, पुण्यस्थान**। उ.—तौ लगि यह संसार सगौ है जौ लगि लेहि नाम। इतनी जउ जानत मन मूरख, मानत याहि धाम—१-७६। (३) **निधि, आलय, आकर**। उ.—बैकुंठनाथ सकल सुखदाता, सूरदास सुखधाम—१-६२। (४) **देह, शरीर, तन**। (५) **शोभा**। (६) **प्रभाव**। (७) **ब्रह्म**। (८) **परलोक**। (९) **स्वर्ग**। (१०) **अवस्था, गति**।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक प्रकार के देवता**। (२) **विष्णु**।

धामन—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह का बाँस**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. धामिन] **एक तरह का साँप**।

संज्ञा पुं. बहु. [हिं. धाम] **घरों-मकानों पर**। उ.—अति संभ्रम अंचल चंचल गति धामन ध्वजा विराजत—२५६१।

धामा—संज्ञा पुं. [हिं. धाम] **भोजन का निमंत्रण**।

धामिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. धाना] **एक तरह का साँप**।

धामिया—संज्ञा पुं. [हिं. धाम] **एक पंथ**।

धामीनिधि—संज्ञा पुं. [सं.] **सूर्य**।

धायँ—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **तोप-बंदूक पटाखा आदि छूटने का शब्द**।

धाय—संज्ञा स्त्री. [सं. धात्री] **दाई, धात्री**।

क्रि. अ. [हिं. धाना] **दौड़कर**।

धाया—क्रि. अ. [हिं. धाना] **दौड़ा, भागा**। उ.—सुनि सब्द तुरतहिं उठि धाया—४३६।

धायी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धाय] **दाई, धात्री**।

धायौ—क्रि. अ. [हिं. धाना] (१) **दौड़ा, भागा**। उ.—छाँड़ि सुखधाम अरु गरुड़ तजि साँवरो पवन के गवन तैं अधिक धायौ—**१-५**। (२) **दौड़-धूप की**। उ.—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छलबल करि जित-तित हरि पर-धन धायौ सब दिन रात —१-२१६। (३) चाल चला। उ.—टेढ़ी चाल, पाग सिर टेढ़ी टेढ़ैं टेढ़ैं धायौ—१-३०१।

धाय्य—संज्ञा पुं. [सं.] **पुरोहित।**

धार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **तेज वर्षा।** उ.—सलिल अखंड धार धर टूटत कियौ इंद्र मन सादर—६४६। (२) **वर्षा का इकट्ठा किया हुआ जल।** (३) **ऋण।** (४) **प्रदेश।**

वि. [सं.] **गहरा, गंभीर।**

संज्ञा स्त्री. [सं. धारा] (१) **(जल आदि) द्रव पदार्थ के गिरने या बहने का तार।** उ.—(क) रुधिर-धार रिपि आँखिन ढरी—९-३। (ख) बिबिध सस्त्र छूटत पिचकारी चलत रुधिर की धार—सारा. २६। (ग) मनहुँ सुरसरी धार सरस्वति-जमुना मध्य बिराजै—सारा. १७३। (घ) एक धार दोहनि पहुँचावत एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी। (ङ) माया-लोभ-मोह हैं चाँड़े काल-नदी की धार—१-८४।

मुहा.—धार चढ़ाना—**किसी देवी-देवता, नदी, वृक्ष आदि पर दूध, जल आदि चढ़ाना।** पय धार चढ़ावो—**दूध चढ़ाओ।** उ.—सुर-समूह पय धार परम हित आश्रत अमल चढ़ावो—सा. ६। धार टूटना—**धार का प्रवाह खंडित हो जाना।** धार देना—(१) **दूध देना।** (२) **उपयोगी काम करना।** धार निकालना—**दूध दुहना।** धार बँधना—**धार बँधकर गिरना।**

(२) **पानी का सोता या स्रोत।** (३) **तलवार, चाकू आदि की बाढ़।** उ.—निकट आयुध बधिक धारे, करत तीच्छन धार। अजानायक मगन क्रीड़त चरत बारंबार—१-३२१।

मुहा.—धार बँधना—**मंत्र आदि के बल से हथियार की धार का बेकार हो जाना।** धार बाँधना—**मंत्र आदि के बल से हथियार की धार को बेकार कर देना।**

(४) **किनारा, छोर, सिरा।** (५) **सेना।** (६) **डाका, आक्रमण।** (७) **ओर, तरफ, दिशा।** उ.—(क) बिबिध खिलौना भाँति के (बहु) गज-मुक्ता चहुँ धार—१०-४२। (ख) महर पैठत सदन भीतर छींक बाईं धार—५२४। (८) **सीमा, निधि, राशि।** उ.—दरसन को तरसत हरि लोचन तू सोभा की धार—२२१२।

क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **धरकर, रखकर।**

प्र.—चित धार—**ध्यान लगाकर।** उ.—(क) कहौं, सुनौ सो अब चित धार—१-२३०। (ख) राजा, सुनौ ताहि चितधार—४-५।

(२) **धारण करके।** उ.—दत्तात्रेयऽरु पृथु बहुरि, जज्ञपुरुष बपु धार—२-३६।

धारक—वि. [सं.] (१) **धारण करनेवाला।** (२) **रोकनेवाला।** (३) **ऋण लेनेवाला।**

संज्ञा पुं. [सं.] **कलश, घड़ा।**

धारण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **किसी पदार्थ को अपने ऊपर लेने, रखने या थामने की क्रिया या भाव।** (२) **पहनने की क्रिया या भाव।** (३) **सेवन करने की क्रिया या भाव।** (४) **ग्रहण या अंगीकार करने की क्रिया या भाव।** (५) **ऋण लेने की क्रिया या भाव।** (६) **शिव जी का एक नाम।**

धारणा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **धारण करने की क्रिया या भाव।** (२) **बुद्धि, समझ।** (३) **दृढ़ सम्मति या निश्चय।** (४) **मर्यादा।** (५) **स्मृति, याद।** (६) **योग का एक अंग जिसमें मन में केवल ब्रह्म का ही ध्यान रहता है।**

धारणाशाली—वि. [सं.] **तीव्र धारणा-शक्तिवाला।**

धारणिक—संज्ञा पुं. [सं.] **ऋणी।**

धारणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नाड़ी।** (२) **पंक्ति, श्रेणी।** (३) **पृथ्वी।** (४) **सीधी रेखा।**

धारणीय—वि. [सं.] **धारण करने के योग्य।**

धारत—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **धरते हैं, रखते हैं।**

प्र.—पग धारत—**पैर रखते हैं, जाते हैं।** उ.—कौन जाति अरु पाँति बिदुर की, ताही कै पग धारत—१-१२। ध्यान धारत—**ध्यान लगाते हैं।** उ.—सनक संकर ध्यान धारत निगम आगम बरन—१-३०८।

धारति—क्रि. स. [हिं. धारना] (१) **धारण करती है, रखती है, अपनाती है।** उ.—(क) बार-बार कुलदेव मनावति, दोउ कर जोरि सिरहिं लै धारति—१०-२००। (ख) कर अपनैं उर धारतिं, आपुन ही चोली धरि फारि—१०-३०४।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारन—संज्ञा पुं. [सं. धारण] **धारण करनेवाला।** उ.—संभु-पतनी-पितां धारन बक बिदारन बीर—सा. ६३।

धारना—संज्ञा स्त्री. [सं. धारण] **धारणा योग, के आठ अंगों में से एक, मन की वह स्थिति जिसमें केवल ब्रह्म का चिंतन रहता है।** उ.—(क) प्रत्याहार-धारना-ध्यान। करै जु छाँड़ि वासना आन—२-२१। (ख) जोग धारना करि तनु त्याग्यौ। सिव-पद-कमल हृदय अनुराग्यौ—४-५। (ग) तन दैबै तै नाहिंन भजौं। जोग धारना करि इहिं तजौं—६-५। (घ) आसन बैसन ध्यान धारना मन आरोहण कीजै—२४६१।

संज्ञा पुं.—**धारण करने की क्रिया, ग्रहण, अपने ऊपर लेना।** उ.—तब गंगा जू दरसन दियौ। कह्यौ, मनोरथ तेरौ करौं। पै मैं जब अकास तैं परौं। मोकौं कौन धारना करै ? नृप कह्यौ, संकर तुमकौं धरै—६-१०।

धारयित—संज्ञा पुं. [सं. धारयितृ] **धारण करनेवाला।**

धारयित्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **धारण करनेवाली।** (२) **पृथ्वी।**

धारांग—संज्ञा पुं. [सं.] **खड्ग, तलवार।**

धारा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **लकीर, रेखा।** उ.—(क) राजति रोम राजी रेख। नील घन मनु धूम-धारा, रही सूच्छम सेष—६३५। (ख) रोमावली-रेख अति राजति। सूच्छम वेष धूम की धारा नव घन ऊपर भ्राजति—६३८। (२) **अखंड प्रवाह, धार।** उ.—उर-कलिंद तैं धँसि जल-धारा, उदर-धरनि परवाह—६३८। (३) **हथियार की धार या बाढ़।** (४) **सोता, झरना, स्रोत।** (५) **बहुत अधिक वर्षा।** (६) **झुंड, समूह।** (७) **सोना या उसका अगला भाग।** (८) **उन्नति।** (९) **यश, कीर्ति।** (१०) **पहाड़ की चोटी।** (११) **घोड़े की चाल।**

क्रि. स. [हिं. धारना] **धारण किया।** उ.—चारि भुजा मम आयुध धारा—१० उ० ४४।

धाराट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चातक।** (२) **मेघ।** (३) **अच्छी चालवाला घोड़ा।** (४) **मस्त हाथी।**

धाराधर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बादल।** (२) **तलवार।**

धारा-प्रवाह—वि. [सं.] **जो धारा की तरह बराबर चलता रहे।**

धारायंत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **फुहारा।**

धाराल—वि. [सं.] **तेज धारवाला।**

धाराली—संज्ञा स्त्री. [सं. धाराल] (१) **तलवार।** (२) **कटार।**

धरावनि—संज्ञा पुं. [सं.] **वायु, हवा।**

धारावर—संज्ञा पु. [सं.] **मेघ, बादल।**

धारावाहिक, धारावाही—वि. [सं.] **धारा के समान बराबर बढ़नेवाला।**

धारासार—वि. [सं.] **बराबर पानी बरसना।**

धारि—क्रि. स. [हिं. धारना] (१) **धारण करके, उठाकर।** उ.—गिरि कर धारि इंद्र-मद मर्द्यौ, दासनि सुख उपजाए—१-२७। (२) **पहनकर।** उ.—जीरन पट कुपीन तन धारि। चल्यौ सुरसरी सीस उघारि–१-३४१।

प्र.—देह (बपु) धारि—**शरीर धारण करके, जन्म लेकर।** उ.—(क) नर-बपु धारि नाहिं जन हरि कौं, जम की मार सो खैहै—१-८६। (ख) कहत प्रहलाद के धारि नरसिंह बपु निकसि आये तुरत खंभ फारी—७-६। (ग) सूरदास प्रभु भक्त-हेत ही देह धारि कै आयौ—३४६। चित धारि—**चित्त में सोंचकर, ठहराकर।** उ.—पर्‌यौ भव-जलधि मैं, हाथ धरि, काढ़ि मम दोष जनि धारि चित काम-कामी—१-२१४।

संज्ञा स्त्री. [सं. धारा] **समूह, झुंड।**

धारिणी—वि. [सं.] **धारण करनेवाली।**

संज्ञा स्त्री. (१) **धरती, पृथ्वी।** (२) **प्रमुख देवताओं की स्त्रियाँ।**

धारी—क्रि. स. [हिं. धारना] (१) **धारण करके, उठाकर।** उ.—राख्यौ गोकुल बहुत बिघन तैं, कर-नख पर गोवर्धन धारी—१-२२।

(१) **निश्चित की, सोची, विचारी।** उ.—महाराज दसरथ मन धारी। अवधपुरी कौ राज राम दै, लीजै ब्रत बनचारी – ६-३०।

प्र.—दियौ धारी—**रख दिया, धारण करा दिया।** उ.—भयौ हलाहल प्रगट प्रथम ही मथत जब, रुद्र कै कंठ दियौ ताहि धारी—८-८।

वि. [सं. धारिन्] (१) **धारण करनेवाले।** उ.—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महा. सुभट रनजीत पवनसुत, निडर बज्र-बपु-धारी—९-११५। (२) **ग्रंथ का तात्पर्य समझनेवाला।** (३) **ऋण लेनेवाला।**

संज्ञा स्त्री. [सं. धारा] (१) **सेना।** (२) **समूह।** (३) **रेखा।**

धारीदार—वि. [हिं. धारी+फ़ा. दार] **जिसमें रेखाएँ हों।**

धारे—क्रि. स. [हिं. धारना] **धारण किये, हाथ में लिये।** उ.—(क) निकट आयुध बधिक धारे करत तीच्छन धार १-३३१। (ख) ते सब ठाढ़े सस्त्रनि धारे—४-१२।

प्र.—पग धारे—**पधारे, गये।** उ.—(क) गरुड़ छाँड़ि प्रभु पायँ पियादे गज-कारन पग धारे—१-२५। (ख) ध्रुव निज पुर कौं पुनि पग धारे—४-६। (ग) सूर तुरत मधुबन पग धारे धरनी के हितकारि—२५३३। बपु धारे—**शरीर धारण किये, जन्म लिये।** उ.—जब जब प्रगट भयौ जल थल मैं, तब तब बहुबपु धारे—१-२७। ब्रत धारे—**व्रत किये।** उ.—ब्याध, गीध, गौतम की नारी, कहौ कौन ब्रत धारे—१-१५८।

संज्ञा पुं. बहु. [हिं. धारा] **अनेक प्रवाह।** उ.—सुमिरि सुमिरि गर्जत जल छाँड़त अस्रु सलिल के धारे—२७६१।

धारैं—क्रि. स. [हिं. धारना] **ग्रहण करें, लावें, अपनावें।** उ.—(क) हरि हरि नाम सदा उच्चारैं। जिह्वा और न मन मैं धारैं—७-२। (ख) बिनु अपराध पुरुष हम मारैं। माया-मोह न मन मैं धारैं—६-२।

धारै—क्रि. स. [हिं. धारना] **धारण करे।** उ.—अबरन, बरन सुरति नहिं धारै। गोपिनि के सो बदन निहारै—१०-३।

धारोष्ण—संज्ञा पुं. [सं.] **थन से निकला ताजा दूध जो कुछ देर तक गरम रहता है।**

धारौं—क्रि. स. [हिं. धारना] **धारण करूँगा, पहनूँगा।** उ.—राज-छत्र नाहीं सिर धारौं—१-२६१।

धारौ—क्रि. स. [हिं. धरना] (१) **ग्रहण करो, अपनाओ।** उ.—सूर सुमारग फेरि चलैगौ बेद बचन उर धारौ—१-१६२। (२) **ग्रहण किया, अपनाया।** उ.—उन यह बचन हृदय नहिं धारौ—३-६। (३) **उठाया, धारण किया।** उ.—भक्त बछल प्रभु नाम तुम्हारौ। जल संकट तैं राखि लियौ गज ग्वालनि हित गोबर्धन धारौ—१-१७२। (४) **रखो, दूसरे को पहनाओ।** उ.—चौदह वर्ष रहैं बन राघव, छत्र भरत सिर धारौ—९-३०।

धार्म—वि. [सं.] **धर्म-संबंधी।**

धार्मिक—वि. [सं.] (१) **धर्म-संबंधी।** (२) **धर्मात्मा।**

धार्मिकता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **धार्मिक होने का भाव।**

धार्मिक्य—संज्ञा पुं. [सं.] **धार्मिक होने का भाव।**

धार्य—संज्ञा पुं. [सं.] **वस्त्र, कपड़ा।**

वि. [सं.] **धारण करने योग्य, धारणीय।**

धार्‌यौ—क्रि. स. [हिं. धारना] (१) **धारण किया, उठाया।** उ.—कोमल कर गोबर्धन धार्‌यौ जब हुते नंद-दुलारे—१-२५। (२) **लिया, ग्रहण किया।**

प्र.—जन्म धार्‌यौ—**जन्म लिया, शरीर धारण किया।** उ.—जिहिं-जिहिं जोनि जन्म धार्‌यौ, बहु जोर्‌यौ अघ कौ भार—१-६८। पग धार्‌यौ—**आया, गया।** उ.—जहाँ मल्ल तहँ को पग धार्‌यौ—२६४३। (३) **अपनाया, ठाना।** उ.—(क) मन चातक जल तज्यौ स्वाति-हित, एक रूप ब्रत धार्‌यौ—१-२१०। (ख) मरन भूलि, जीवन थिर जान्यौ, बहु उद्यम जिय धार्‌यौ—१-३३६।

धावक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हरकारा।** (२) **धोबी।**

धावण—संज्ञा पुं. [सं. धावन] **दूत, हरकारा।**

धावत—क्रि. अ. [हिं. धाना] **भागते हैं, दौड़ पड़ते हैं।** उ.—(क) संकट परैं तुरत उठि धावत, परम सुभट निज पन कौं—१-६। (ख) धावत कनक-मृगा कैं पाछैं राजिवलोचन परम उदारी—१०-१६८।

धावति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. धाना] **धाती है, दौड़ती है, भागती है।** उ.—(क) सखि री, काहैं गहरु लगावति। सब कोऊ ऐसौ सुख सुनिकै क्यौं नाहिंन उठि धावति—१०-२३। (ख) निठुर भए सुत आजु, तात की छोह न आवति। यह कहि कहि अकुलाइ, बहुरि जल भीतर धावति—५८६।

धावन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बहुत शीघ्र जाने की क्रिया, दौड़कर जाना।** उ.—गजहित धावन, जन-मुकरावन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेद बिमल जस गावत—८-४ । (२) दूत, हरकारा, संदेशवाहक । उ.—(क) दससिर बोलि निकट बैठायौ, कहि धावन सति भाउ । उद्यम कहा होत लंका कौं, कौनैं कियौ उपाउ—६-१२१ । (ख) द्विविद करि कोप हरि पुरी आयौ । नृप सुदच्छिण जरयौ जरी वारानसी धाय धावन जबहि यह सुनायौ—१०३-४५ । (३) धोने या साफ करने का काम । (४) वह चीज जिससे गंदी वस्तु को साफ किया जाय ।

धावना—क्रि. अ. [सं. धावन] दौड़ना, भागना ।

धावनि—संज्ञा स्त्री. [सं. धावन = गमन] (१) जल्दी चलने की क्रिया, दौड़ । उ.—वा पट पीत की फहरानि । कर धरि चक्र, चरन की धावनि, नहिं बिसरत वह बानि—१-२७९ । (२) धावा, चढ़ाई ।

धावरा—वि. [सं. धवल] उज्ज्वल, सफेद ।

धावरी—संज्ञा स्त्री. [सं. धवल] सफेद गाय, धौरी ।
वि.—सफेद, उजली, उज्ज्वल ।

धावहिंगे—क्रि. अ. [हिं. धावना] दौड़ पड़ेंगे । उ.—अब के चलते जानि सूर प्रभु सब पहिले उठि धावहिंगे—२७८६ ।

धावहिं—क्रि. अ. [हिं. धाना] दौड़ते हैं । उ.—बाल बिलख मुख गौ न चरति तृन बछ पय पियन न धावहिं—३५२७ ।

धावहु—क्रि. अ. [सं. धावन] दौड़ो, भागो, तेजी से जाओ । उ.—अस्व देखि कह्यौ, धावहु, धावहु । भागि जाहि मति, बिलँब न लावहु—६-६ ।

धावा—संज्ञा पुं. [सं. धावन] (१) आक्रमण, चढ़ाई । (२) किसी काम के लिए जल्दी से जाना ।
मुहा.—धावा मारना—जल्दी-जल्दी घूम आना ।
क्रि. अ. भूत. [हिं. धाना] दौड़ा, भागा, लपका ।

धावैं—क्रि. अ. [हिं. धाना] दौड़ते हैं, भागते हैं । उ.—औरनि कौं जम कैं अनुसासन, किंकर कोटिक धावैं । सुनि मेरी अपराध अधमई, कोऊ निकट न आवैं—१-१९७ ।

धावै—क्रि. अ. [हिं. धाना] (१) दौड़े, जाय । उ.—(क) रूप-रेख-गुन-जाति-जुगति-बिनु निरालंब कित धावै—१-२ । (२) दौड़ता है, मारा मारा फिरता है । उ.—कहूँ ठौर नहि चरन-कमल बिनु, भृंगी ज्यौं दसहूँ दिसि धावै—१-२३३ ।

धाह—संज्ञा स्त्री. [सं. अनु.] जोर से चिल्लाकर रोना, धाड़ । उ.—देखे नंद चले घर आवत । पैठत पौरि छींक भई बाएँ, दहिनैं धाह सुनावत—५४१ ।

धाही—संज्ञा स्त्री. [हिं. धाम] दाई, धात्री ।

धिंग—संज्ञा स्त्री. [अनु. धींगी] उधम, उपद्रव ।

धिंगरा—संज्ञा पुं. [हिं. धींगरा] मोटा ताजा, मुस्तंडा ।

धिंगा—वि. [सं. दृढ़ांग] (१) दुष्ट । (२) निर्लज्ज ।

धिंगाई—संज्ञा स्त्री. [सं. दृढ़ांगी] (१) शरारत, दुष्टता । उ.—जानि बूझि इन करी धिंगाई । मेरी बाँ... पर्वतहिं चढ़ाई । (२) निर्लज्जता ।

धिंगाना—क्रि. स. [हिं. धिंगा] उधम मचाना ।

धिंगी—वि. [हिं. धिंगा] दुष्ट या निर्लज्ज (स्त्री) ।

धिआ—संज्ञा स्त्री. [सं. दुहिता, प्रा. धीआ] बेटी, कन्या ।

धिआन, धिआना—संज्ञा पुं. [सं. ध्यान] ध्यान ।

धिआना—क्रि. स. [हिं. ध्यावना] ध्यान लगाना ।

धिक—अव्य. [सं. धिक्] धिक्, लानत । उ.—(क) प्रभु जू, बिपदा भली बिचारी । धिक यह राज बिमुख चरननि तैं, कहति पांडु की नारी—१-२८२ । (ख) धिक तुम, धिक या कहिबे ऊपर । जीवित रहिहौ कौ लौं भू पर—१-२८४ ।

धिकना—क्रि. अ. [हिं. दहकना] खूब गरम होना ।

धिकाना—क्रि. स. [हिं दहकाना] खूब गरम करना ।

धिक्—अव्य. [सं.] (१) तिरस्कार सूचक शब्द । (२) निंदा, शिकायत ।

धिक्कार—संज्ञा स्त्री. [सं.] तिरस्कार या घृणा सूचक शब्द, लानत, फटकार ।

धिक्कारना—क्रि. स. [सं. धिक्] बहुत बुरा-भला कहना ।

धिक्कृत—वि. [सं.] जो धिक्कारा जाय ।

धिग—अव्य. [सं. धिक्] धिक्, धिक्कार, लानत । उ.—(क) धिग धिग मेरी बुद्धि, कृष्न सौं बैर बढ़ायौ—४८... (ख) धिग धिग मोहि तोहि सुन सजनी धिग जेहि है... बोलाई—सा. ४७ ।

धिय, धिया—संज्ञा स्त्री. [सं. दुहिता, प्रा. धीआ] (१) कन्या, बेटी । (२) लड़की, बालिका ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धिक्कार—संज्ञा स्त्री. [सं. धिक्कार] **घृणा या तिरस्कार-सूचक शब्द ।**

धिरना—क्रि. स. [हिं. धिरवना] **डाँटना, धमकाना ।**

धिरयौ—क्रि. स. भूत. [हिं. धिरना] **डाँटा, धमकाना ।** उ.—सूर नंद बलरामहिं धिरयौ तब मन हरष कन्हैया —१०-२१७ ।

धिरवति—क्रि. स. [हिं. धिरवना] **धमकाती है ।** उ.—मुख झगरति आनँद उर धिरवति है घर जाहु—१०२६ ।

धिरवना—क्रि. स. [सं. धर्षण] **डराना-धमकाना ।**

धिराना—क्रि. स. [हिं. धिरवना] **भय दिखाना ।**

धिरावति—क्रि. स. [हिं. धिरवना] **डराती-धमकाती है ।** उ.—जाति-पाँति सों कहा अचगरी यह कहिं सुतहिं धिरावति ।

क्रि. अ. [सं. धीर] (१) **धीमा होना ।** (२) **स्थिर होना ।**

धिरावै—क्रि. स. [हिं. धिराना] **डराता-धमकाता है ।** उ.—भ्राता मारन मोहिं धिरावै देखे मोहिं न भावत ।

धिषणा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बृहस्पति ।** (२) **शिक्षक ।**

वि.—**बुद्धिमान, समझदार ।**

धिषणा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बुद्धि ।** (२) **वाक्शक्ति ।** (३) **स्तुति ।**

धींग—वि. [सं. दृढ़ांग] (१) **हट्टा-कट्टा ।** (२) **ढीठ, धृष्ट, उपद्रवी,** । उ.—धींग तुम्हारौ पूत धींगरी हमकौ कीन्हीं—१८७० । (३) **कुमार्गी, पापी ।**

संज्ञा पुं.—**हट्टा-कट्टा मनुष्य ।** उ.—धींगरी धींग चाचरि करै मोहिं बुलावत साखि ।

धींगधुकड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धींग] **शरारत, पाजीपन ।**

धींगड़ा, धींगरा—संज्ञा पुं. [सं. डिंगर] (१) **हट्टा-कट्टा ।** (२) **दुष्ट ।**

धींगरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धींगरा] **दुष्टा, उपद्रव करने वाली ।** उ.—धींग तुम्हरौ पूत धींगरी हमकौ कीनी—१०७० ।

धींगा—संज्ञा पुं. [सं. डिंगर] **पाजी, उपद्रवी ।**

धींगाधींगी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धींग](१) **दुष्टता, पाजीपन ।** (२) **जबरदस्ती ।**

धींगामुश्ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. धींगा+मस्ती] (१) **दुष्टता, पाजीपन ।** (२) **जबरदस्ती लड़ना या हाथाबाँही करना ।**

धींद्रिय—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आँख, कान आदि इंद्रियाँ जिनसे किसी बात का ज्ञान प्राप्त किया जाय ।**

धींवर—संज्ञा पुं. [हिं. धीवर] **केवट, मल्लाह ।**

धी—संज्ञा स्त्री. [सं. दुहिता, प्रा. धीआ] **पुत्री, बेटी ।** उ.—पुर कौं देखि परम सुख लह्यौ । रानी सौं मिलाप तहँ भयौ । तिन पूछ्यौ तू काकी धी है ? उन कह्यौ नहिं सुमिरन मम ही है—४-१२ ।

संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बुद्धि** (२) **मन ।** (३) **कर्म ।**

धीआ—संज्ञा स्त्री. [सं. दुहिता] **पुत्री, बेटी ।**

धीजना—क्रि. स. [सं. धृ, धैर्य] (१) **ग्रहण या स्वीकार करना ।** (२) **धीरज रखना ।** (३) **प्रसन्न या संतुष्ट होना ।**

धीत—वि. [सं.] (१) **जो पिया गया हो ।** (२) **जिसका तिरस्कार हुआ हो ।** (३) **जिसकी पूजा-आराधना की जाय ।**

धीदा—संज्ञा स्त्री. [सं. दुहिता] (१) **कन्या ।** (२) **पुत्री ।**

धीपति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बृहस्पति ।**

धीम—वि. [हिं. धीमा] (१) **सुस्त ।** (२) **हलका, धीमा ।**

धीमर—संज्ञा पुं. [सं. धीवर] **केवट, मल्लाह ।**

धीमा—वि. [सं. मध्यम] **जिसकी चाल तेज न हो ।** (२) **जो तीव्र या उग्र न हो, हलका ।** (३) **जो ऊँचा या तेज न हो ।** (४) **जिसका जोर कम हो गया हो ।**

धीमान, धीमान्—संज्ञा पुं. [सं. धीमत्] (१) **बृहस्पति ।** (२) **बुद्धिमान, समझदार ।**

धीय—संज्ञा स्त्री. [हिं. धी] **पुत्री, कन्या ।**

संज्ञा पुं.—**जमाई, दामाद, जामाता ।**

धीया—संज्ञा स्त्री. [हिं. धी] **लड़की, बेटी ।**

धीर—वि. [सं.] (१) **दृढ़ और शांत चित्तवाला ।** उ.—उ.—इत भगदत्त, द्रोन, भूरिश्रव तुम सेनापति धीर—१-२६९ । (२) **बली, शक्तिशाली ।** (३) **विनीत, नम्र ।** (४) **गंभीर ।** (५) **सुंदर, मनोहर ।** (६) **मंद ।**

संज्ञा पुं. [सं. धैर्य] (१) **धीरज ।** (२) **संतोष ।**

धीरक—संज्ञा पुं. [सं. धैर्य] **धीरज, ढारस ।** उ.—राज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवनि गाईं व्याकुल ह्वै, दै दै तिनकौं धीरक। मागध हति राजा सब छोरे, ऐसे प्रभु पर-पीरक—१-११२।

धीरज—संज्ञा पुं. [सं. धैर्य] (१) धैर्य, धीरता, चित्त की स्थिरता। उ.—(क) सूर पतित जब सुन्यौ बिरद यह, तब धीरज मन आयौ—१-१२५। (ख) जननि कैसे धरयौ धीरज कहति सब पुर बाम—२५६५। (२) उतावली न होने का भाव, सब्र, संतोष। (३) आशा, सांत्वना। उ.—इतनेहि धीरज दियौ सबन कौ अवधि गए दै आस—२५३४।

धीरजमान—संज्ञा पुं. [सं. धीर] धैर्यवान, धीर।

धीरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चित्त की दृढ़ता या स्थिरता, धैर्य। (२) संतोष।

धीरत्व—संज्ञा पुं. [सं.] धीर होने का भाव।

धीरना—क्रि. अ. [हिं. धीर] धीरज रखना।

क्रि. स.—धीरज बँधाना, धीरज रखाना।

धीरललित—संज्ञा पुं. [सं.] वह नायक जो सदा सजा-सजाया और प्रसन्न रहे।

धीर शांत—संज्ञा पुं. [सं.] वह नायक जो शील, दया, गुण और पुण्यवान हो।

धीरा—संज्ञा स्त्री. [सं.] वह नायिका जो नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर ताने से अपना क्रोध प्रकट करे।

वि. [सं. धीर] मंद, धीमा।

संज्ञा पुं. [सं. धैर्य] धीरज, धैर्य।

धीराधीरा—संज्ञा स्त्री. [सं.] वह नायिका जो नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से अपना क्रोध जता दे।

धीरे—क्रि. वि. [हिं. धीर] (१) धीमी चाल या गति से। (२) चुपके से जिससे किसी को पता न चले।

धीरोदात्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह नायक जिसमें दया, क्षमा, वीरता, धीरता आदि सद्गुण हों। (२) वीर-रस-प्रधान नाटक का नायक।

धीरोद्धत—संज्ञा पुं. [सं.] वह प्रबल शक्तिवाला नायक जो दूसरे का गर्व न सहकर अपने ही गुणों का बखान किया करे।

धीर्य—संज्ञा पुं. [सं. धैर्य] धीरज, धीरता।

धीवर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मल्लाह, मछुआ, केवट। उ.—बार-बार श्रीपति कहैं, धीवर नहिं मानै—९-४२। (२) सेवक।

धीवरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मल्लाह या केवट की स्त्री। (२) मछली पकड़ने की कँटिया।

धुँकार—संज्ञा स्त्री. [सं. ध्वनि+कार] गरज, गड़गड़ाहट।

धुँगार—संज्ञा स्त्री. [सं. धूम्र+आधार] बघार, तड़का, छौंक।

धुँगारना—क्रि. स. [हिं. धुँगार] छौंकना, बघारना।

क्रि. स. [अनु.] मारना, पीटना।

धुँगारी—क्रि. स. [हिं. धुँगारना] छौंक या बघारकर। उ.—छाँछ छबीली धरी धुँगारी। झहरैं उठत झार की न्यारी।

धुँज, धुंजैं—वि. [हिं. धुंध] धुँधली या मंद दृष्टि। उ.—सूरदास प्रभु तुम्हरै दरस को मग जोवत अँखियाँ भइ धुंजैं—२७२१।

धुँद—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुंध] आँधी से होनेवाला अँधेरा।

धुँदा—वि. [हिं. धुंध] अंधा।

धुँध, धुँधक—संज्ञा स्त्री. [सं. धूम्र+अंध] (१) हवा में उड़ती हुई धूल। (२) इस धूल से होनेवाला अँधेरा। (३) मंद दृष्टि का रोग।

धुँधका—संज्ञा पुं. [हिं. धुआँ] धुआँ निकलने का छेद।

धुँधकार—संज्ञा पुं. [हिं. धुँकार] (१) गरज गड़गड़ाहट। (२) अँधेरा, अंधकार।

धुँधर—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुंध] (१) गर्द, गुबार। (२) धूल के उड़ने से होनेवाला अँधेरा। उ.—तृनावर्त विपरीत महाखल सो नृपराय पठायौ। चक्रवात ह्वै सकल घोष मैं रज धुंधर ह्वै छायौ—सारा. ४२८।

धुँधराना—क्रि. अ. [हिं. धुँधलाना] धुँधला पड़ना।

धुँधलका—वि. [हिं. धुँधला] धुएँ के रंग का।

धुँधला—वि. [हिं. धुंध+ला] (१) धुएँ की तरह हलका काला। (२) जो साफ न दिखायी दे। (३) कुछ-कुछ अँधेरा।

धुँधलाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुँधला+ई] धुँधलापन।

धुँधलाना—क्रि. अ. [हिं. धुँधला] धुँधला पड़ना।

धुंधलापन—संज्ञा पुं. [हिं. धुँधला+पन] (१) अस्पष्ट होने का भाव। (२) कम दिखायी देने का भाव। (३) हलका अंधकार होने का भाव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धुँधली—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुंध] **मंद ज्योति ।**

धुँधाना—क्रि. अ. [हिं. धुंध+आना (प्रत्य.)] **(१) धुआँ देते हुए जलना । (२) धुँधला होना ।**

क्रि. स.—**किसी चीज में धुआँ लगाना ।**

धुंधार—वि.—[हिं. धुआँधार=धुआँ+धार] **धुएँ से भरा हुआ, धूममय ।** उ.—अति अगिनि-झार, भंभार धुंधार करि, उचटि अंगार झंझार छायौ—५९६ ।

धुंधि—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुंध] **धुँधलापन, हलका अंधकार ।** उ.—धुरवा धुंधि बढ़ी दसहूँ दिसि गर्जि निसान बजायौ —२८१९ ।

धुंधु—संज्ञा पुं. [सं.] **एक राक्षस जो कुवलयाश्व द्वारा मारा गया था ।**

धुंधुकार—संज्ञा पुं. [हिं. धुंधु+कार] (१) **अँधेरा ।** (२) **धुँधलापन ।** (३) **नगाड़े की गड़गड़ाहट ।** (४) **गरज ।**

धुंधुरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुंध] **गर्द-गुबार, धूल या आँधी के कारण होनेवाला अंधकार ।**

धुंधुरित—वि. [हिं. धुंधुरि] (१) **धुँधला किया हुआ ।** (२) **धुँधली या मंद दृष्टिवाला ।**

धुंधुरी—संज्ञा स्त्री. [सं. धुंधुरि] (१) **आँधी से होनेवाला अँधेरा ।** (२) **धुँधलापन ।** (३) **दृष्टि मंद होने या कम दिखायी देने का रोग ।**

धुँधुवाना—क्रि. अ. [हिं. धुआँ] **धुआँ करना ।**

धुँधेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुंधुरि] **अँधेरा, धुँधलापन ।**

धुँधेला—वि. [हिं. धुंध+एला] (१) **दुष्ट ।** (२) **छली ।**

धुँरवा—संज्ञा पुं. [हिं. धुरवा] **बादल, मेघ ।** उ.—उड़त धूरि धुँरवा धुर दीसत सूल सकल जलधार —१० उ. २ ।

धुआँ—संज्ञा पुं. [सं. धूम्र] (१) **धूम ।** उ.—धाम धुआँ के कहो कवन कै कवनै धाम उठाई ३३४३ ।

मुहा.—धुआँ देना—(१) **धुआँ निकालना ।** (२) **धुआँ पहुँचाना ।** धुआँ काढ़ना (निकालना)—**बढ़बढ़कर बातें करना, शेखी हाँकना ।** धुआँ रमना—**धुएँ का छाया रहना ।** मुँह धुआँ होना—**चेहरा फीका पड़ जाना ।** (किसी चीज का) धुँआ होना—**उस चीज का काला पड़ जाना ।**

(१) **भारी समूह ।** (२) **धुर्रा, धज्जी ।**

धुआँदाना—संज्ञा पुं. [हिं. धुआँ+दान] **धुआँ घर से बाहर निकालने का छेद ।**

धुआँधार—वि. [हिं. धुआँ+धार] (१) **धुएँ से भरा हुआ ।** (२) **तड़क-भड़कदार, भड़कीला ।** (३) **धुएँ के से रंग का, काला ।** (४) **बड़े जोर का, प्रचंड, घोर, बहुत प्रभावशाली ।**

धुआँना—क्रि. अ. [हिं. धुआँ+आना] **धूएँ की गंध आ जाने से स्वाद बिगड़ जाना ।**

धुआँयँध—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुआँ+गंध] (१) **धुएँ की सी गंध ।** (२) **बदहज्मी की डकार, धूम ।**

धुआँरा - संज्ञा पुं. [हिं. धुआँ] **धुँआ बाहर जाने का छेद ।**

धुआँस—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुवाँस] **उरद का आटा जिससे पापड़ या कचौड़ी बनती है ।**

धुआँसा—संज्ञा पुं. [हिं. धुआँ] **धुएँ की कालिख ।**

वि.—**धुएँ की सी गंधवाला ।**

धुआवत—क्रि. स. [हिं. धुलाना] **धुलाती है ।** उ.—हरि स्रम-जल अंतर तनु भीजे ता लालच न धुआवत सारी—३४२५ ।

धुईं—संज्ञा स्त्री. [हिं. धूनी] **धूनी ।** उ.—मनहुँ धुईं निर्धूम अगिनि पर तप बैठे त्रिपुरारि—१६८६ ।

धुएँ—संज्ञा पुं. [हिं. धुआँ] **'धुआँ' का विभक्ति के संयोग के उपयुक्त रूप ।**

मुहा.—धुएँ का धौरहर—**थोड़े समय में नष्ट हो जानेवाली चीज ।** धुएँ के बादल उड़ाना—**गढ़-गढ़ कर बातें बनाना, गप हाँकना ।** धुएँ उड़ाना (बिखेरना)—**टुकड़े-टुकड़े करना, नाश करना ।**

धुकड़पुकड़—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) **घबराहट ।** (२) **आगा-पीछा, पशोपेश ।**

धुकड़ी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **छोटी थैली, बटुआ ।**

धुकत—क्रि. अ. [हिं. झुकना, धुकना] **झुकता है, नीचे की ओर ढलता है, नवता है ।** उ.—डगमगात गिरि परत पानि पर, भुज भ्राजत नँदलाल । जनु सिर पर ससि जानि अधोमुख, धुकत नलिनि नमि नाल—१०-१४४ ।

धुकधुकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुकधुक (अनु.)] (१) **पेट और छाती के बीच का भाग ।** (२) **कलेजा, हृदय ।** (३) **कलेजे की धड़कन, कंप ।** उ.—(क) बिधि बिहँसत,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरि हँसत हेरि हेरि, जसुमति की धुकधुकी सु उर की—१०-१८० । (ख) तनु अति कँपति बिरह अति व्याकुल उर धुकधुकी स्वेद कीन्ही—३४४६ । (४) डर, भय । (५) छाती का एक गहना, पदिक, जुगनू ।

धुकना—क्रि. अ. [हिं. झुकना] (१) **झुकना, नवाना ।** (२) **गिर पड़ना ।** (३) **झपटना, वेग से टूट पड़ना ।**

धुकरना—क्रि. अ. [अनु.] **शब्द करना ।**

धुकान—संज्ञा स्त्री. [हिं. धमकाना] **गर्जना, घोर शब्द ।**

धुकाना—क्रि. स. [हिं. धुकना] (१) **झुकाना, नवाना ।** (२) **गिराना ।** (३) **पटकना, हराना ।**

क्रि. स. [सं. धूमकरण] **धूनी देना ।**

धुंकार, धुकारी—संज्ञा स्त्री. ['धु' से अनु.] **नगाड़े का शब्द ।**

धुकि—क्रि. अ. [हिं. झुकना] **चक्कर खाकर गिरता है, गिरकर ।** उ.—(क) लेति उसास नयन जल भरि भरि, धुकि सो परै धरि धरनी—६-७३ । (ख) रुंड पर रुंड धुकि परे धरि धरणि पर गिरत ज्यों संग कर बज्र मारे —१० उ. २१ ।

धुकन—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **घोर शब्द ।** (२) **नगाड़े का घोर शब्द ।**

धुकना—क्रि. अ. [हिं. धुकना] (१) **झुकना ।** (२) **गिरना ।**

धुकारना—क्रि. स. [हिं. धुकाना] (१) **झुकाना ।** (२) **गिराना ।**

धुगधुगी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुकधुकी] **धड़कन, स्पंदन ।**

धुज—संज्ञा पुं. [सं. ध्वजा] **पताका ।** उ.—हुमासन धुज जात उन्नत बहयौ हर दिसि बाउ—सा. उ. ४० ।

धुजा—संज्ञा स्त्री. [हिं. ध्वजा] **पताका, झंडा ।** उ.—(क) धर्म-धुजा अंतर कछु नाहीं, लोक दिखावत फिरतौ—१-२०३ । (ख) गरजत रहत मत्त गज चहुँ दिसि छत्र-धुजा चहुँ दीस—६-७५ ।

धुजानी—संज्ञा स्त्री. [सं. ध्वजा] **सेना ।**

धुजिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. ध्वजा] **सेना, फौज ।**

धुड़ंग, धुड़ंगा—वि. [हिं. धूर + अंग] **नंगा ।**

धुत—अव्य. [हिं. दुत] (१) **घृणा या तिरस्कार-सूचक शब्द ।** (२) **घृणा या तिरस्कार से हटाने का शब्द ।**

धुतकार—संज्ञा स्त्री. [हिं. दुतकार] **तिरस्कार, फटकार ।**

धुतकारना—क्रि. स. [हिं. दुतकारना] (१) **घृणा या तिरस्कार से हटाना ।** (२) **धिक्कारना ।**

धुताई—संज्ञा स्त्री. [सं. धूर्त्तता] **वंचकता, चालबाजी, ठगपना, चालाकी ।** उ.—तोसौं कहा धुताई करिहौं। जहाँ करी तहँ देखी नाहीं, कह तोसौं मैं लरिहौं—५३७ ।

धुतू—संज्ञा पुं. [हिं. धूतू] **'तुरही' नामक बाजा ।**

धुतूरा—संज्ञा पुं. [हिं. धतूरा] **धतूरे का पेड़ ।**

धुत्ता—संज्ञा पुं. [सं. धूर्त्तता] **छल-कपट, दुष्टता ।**

धुधकार, धुधुकारी धुधुकी—संज्ञा स्त्री. ['धुधु' से अनु] (१) **'धू-धू' की ध्वनि ।** (२) **गरज, गड़गड़ाहट ।**

धुन—संज्ञा पुं. [सं.] **काँपने की क्रिया या भाव, कंपन ।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. धुनना] (१) **लगन, तीव्र इच्छा ।**

यौ.—धुन का पक्का—**सच्ची लगनवाला जो किसी काम को शुरू करके किसी भी दशा में अधूरा न छोड़े ।**

(२) **मन की मौज, तरंग** (३) **सोच-विचार, चिंता ।**

संज्ञा स्त्री. [सं. ध्वनि] (१) **गाने का तर्ज या ढंग ।** (२) **एक राग ।** (३) **ध्वनि ।**

धुनकना—क्रि. स. [हिं. धुनना] (१) **धुनकी से रुई साफ करना ।** (२) **खूब मराना-पीटना ।**

धुनकी—संज्ञा स्त्री. [सं. धनुस्] (१) **रुई साफ करने का धनुष की तरह का एक औजार, पिंजा, फटका ।** (२) **छोटा धनुष ।**

धुनति—क्रि. स. [हिं. धुनना] **मारती-पीटती है ।**

मुहा.—सिर धुनति—**शोक या पश्चाताप की अधिकता से सिर पीटती है ।** उ.—बारबार सिर धुनति बिसूरति बिरह ग्राह जनु भखियाँ—२७६६ ।

धुनना—क्रि. स. [हिं. धुनकी] (१) **धुनकी से रुई साफ करना ।** (२) **खूब मारना-पीटना ।**

मुहा.—सिर धुनना—**शोक या पश्चाताप की अधिकता से सिर पीटकर रोना या विलाप करना ।**

(३) **बार बार कहते जाना ।** (४) **बराबर काम करते जाना ।**

धुनवाना—क्रि. स. [हिं. धुनना] **धुनने का काम दूसरे से कराना ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धुनकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुनकी] धुनकी ।

धुना—संज्ञा पुं. [हिं. धुनना] रुई धुननेवाला ।

धुनि—संज्ञा स्त्री. [सं. ध्वनि] । ध्वनि, शब्द ।

संज्ञा स्त्री. [सं.] नदी ।

क्रि. स. [हिं. धुनना] धुनकर, पीटकर ।

मुहा.—माथौ (सिर) धुनि—शोक या पश्चात्ताप से माथा या सिर पीटकर, पछताकर । उ.—(क) फटकि पूँछ माथौ धुनि लौटै लखी न राघव नारि—९-७५ । (ख) हरि बिन को पुरवै मो स्वारथ ? मीड़त हाथ, सीस धुनि ढोरत, रुदन करत नृप, पारथ —१-२८७ । (ग) इतनौ बचन सुनत सिर धुनि कै बोली सिया रिसाइ—९-७७ । (घ) सभा माँझ असुरनि के आगैं सिर धुनि धुनि पछितायौ—१०-६० । (ङ) रोहिनि चितै रही जसुमति तन सिर धुनि धुनि पछितानी—३९५ ।

धुनियत—क्रि. स. [हिं. धुनना] पीटते हैं ।

मुहा.—सिर धुनियत—शोक या पश्चात्ताप से सिर पीटते हैं । उ.—ह्वाँऊ जाई अकाज करैगे गुन गुनि गुनि सिर धुनियत—पृ. ३२६ (५८) ।

धुनियाँ—संज्ञा पुं. [हिं. धुनना] रुई धुनकनेवाला ।

धुनी—संज्ञा स्त्री. [सं. ध्वनि] ध्वनि, शब्द । उ.—ग्रह-लगन-नषत-पल सोधि, कीन्ही बेद-धुनी—१०-२४ ।

संज्ञा स्त्री. [सं.] नदी ।

धुनीनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] सागर, समुद्र ।

धुनेहा—संज्ञा पुं. [हिं. धुनियाँ] रुई धुननेवाला ।

धुनै—क्रि. स. [हिं. धुनना] धुनता है, पीटता है ।

मुहा.—सीस धुनै—शोक या पश्चात्ताप से सिर धुनता है । उ.—नगन न होति चकित भयौ राजा सीस धुनै कर मारै—१-२५७ ।

धुपधुप—वि. [हिं. धूप] (१) साफ । (२) चमकीला ।

धुपना—क्रि. अ. [हिं. धुलना] धोया जाना, धुलना ।

धुपाना—क्रि. स. [हिं. धूप=एक सुगंधित पदार्थ] धूप के धुएँ से सुगंधित करना ।

क्रि. स. [हिं. धूप=सूर्य का ताप] धूप दिखाकर सुखाना या तपाना ।

धुपैना—संज्ञा पुं. [हिं. धूप+एना (प्रत्य.)] 'धूप' नामक सुगंधित पदार्थ सुलगाने का पात्र, धूपदानी ।

धुप्पस—संज्ञा स्त्री. [देश.] बनावटी धौंस ।

धुबला—संज्ञा पुं. [सं.] लहँगा, घाघरा ।

धुमई—वि. [सं. धूम्र+ई (प्रत्य.)] धुएँ के रंग का ।

संज्ञा पुं.—धुएँ के से रंग का बैल ।

धुमरा—वि. [हिं. धूमिल] (१) धुएँ की तरह लाली लिये हल्के काले रंग का । (२) धुँधला ।

धुमला—संज्ञा पुं. [सं. धूम्र+ला] अंधा ।

धुमलाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. धूमिल+आई (प्रत्य.)] (१) धूमिल होने का भाव । (२) अँधेरा, अंधकार ।

धुमारा—वि. [सं. धूम्र+आरा] धुएँ के रंग का ।

धुमिला—वि. [हिं धूमिल] (१) धुँधला । (२) धुएँ के रंग का ।

धुमिलाना—क्रि. अ. [हिं. धूमिल] धूमिल या काला होना ।

धुरंधर—वि. [सं.] (१) भारी, बड़ा । (२) श्रेष्ठ ।

संज्ञा पुं.—बोझ ढोनेवाला ।

धुर—संज्ञा पुं. [सं. धुर्] (१) गाड़ी का धुरा । (२) मुख्य स्थान । (३) भार, बोझ । (४) बैलों के कंधे का जुआ । (५) आरंभ । उ.—धुर ही ते खोटो खायौ है लिए फिरत सिर भारी—३३४० ।

मुहा.—धुर सिरे से—बिलकुल नये सिरे से ।

अव्य.—(१) बिलकुल सीधा, न इधर का न उधर का । (२) बहुत दूर, एकदम छोर या सीमा पर । उ.—उड़त धूरि धुरवा धुर दीसत सूल सकल जलधार—३४९५ ।

वि. [सं. ध्रुव] दृढ़, पक्का ।

धुरजटी—संज्ञा पुं. [सं. धूर्जटी] शिव, महादेव ।

धुरना—क्रि. स. [सं. धूर्वण] (१) मारना-पीटना । (२) बजाना ।

धुरपद—संज्ञा पुं. [सं. ध्रुपद] एक प्रकार का गीत । उ.—ध्रुवा छंद धुरपद जस हरि को हरि ही गाय सुनावत—१०७२ ।

धुरवा—संज्ञा पुं. [सं. धुर्+वाह] बादल, मेघ । उ.—(क) उड़त धूरि धुरवा धुर दीसत सूल सकल जलधार—३४९५ । (ख) धुरवा धुंधि बढ़ी दसहूँ दिसि गर्जि निसान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैजायौ—२८१६। (ग) कारी घटा देखि धुरवा जनु बिरह लयौ करता जनु—२८७२।

धुरा—संज्ञा पुं. [सं. धुर] **पहिये, गाड़ी आदि के बीचोंबीच का डंडा, अक्ष।**

संज्ञा पुं. [सं.] **भार, बोझ।**

धुरियाधुरंग—वि. [देश.] (१) **जिस गाने के साथ बाजे की जरूरत न हो।** (२) **अकेला।**

धुरियाना—क्रि. स. [हिं. धूर] (१) **धूल डालना।** (२) **दोष दबाना।**

क्रि. अ.—(१) **धूल का डाला जाना।** (२) **दोष का दबाया जाना।**

धुरियामलार—संज्ञा पुं. [देश.] **एक राग।**

धुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुरा] **छोटा धुरा।**

धुरीण, धुरीन—वि. [सं. धनुरण] (१) **बोझ या भार सँभालनेवाला।** (२) **मुख्य, प्रधान।** (३) **भारी।**

धुरेंडी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुलेंडी] **होली जलने के दूसरे दिन मनाया जानेवाला एक त्योहार।**

धुरे—क्रि. स. [हिं. धुरना] **बजाये।** उ.—पहुँचे जाइ राजगिरि द्वारे धुरे निसान सुदेस—१० उ. ४८।

धुरेटना—क्रि. स. [हिं. धुर+एटना] **धूल लगाना।**

धुर्—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पशुओं के कंधे पर रखा जानेवाला जुआ** (२) **बोझ, भार।** (३) **पहिए का धुरा।** (४) **धन-संपत्ति।**

धुर्य—वि. [सं.] (१) **धुरंधर।** (२) **श्रेष्ठ।**

धुर्रा—संज्ञा पुं. [हिं. धूर] **कण, रजकण।**

धुर्रे—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. धुर्रा] **छोटे-छोटे कण।**

मुहा.—धुर्रे उड़ाना [उड़ा देना]—(१) **नष्ट-भ्रष्ट कर डालना।** (२) **बहुत अधिक मारना-पीटना।**

धुलना—क्रि. अ. (हिं. धोना) **धोया जाना।**

धुलवाना—क्रि. स. [हिं. धुलना का प्रे.] **धोने का काम दूसरे से कराना।**

धुलाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. धोना] **धोने का काम, भाव या मजदूरी।**

धुलाना—क्रि. स. [सं. धवल] **धोने का काम कराना।**

धुलेंडी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धूल+उड़ाना] (१) **होली जलने के दूसरे दिन मनाया जानेवाला एक त्योहार जिस दिन खूब रंग चलता है।** (२) **उक्त त्योहार का दिन।**

धुव—संज्ञा पुं. [सं. ध्रुव] (१) **ध्रुवतारा।** (२) **ध्रुव।**

संज्ञा पुं. [हिं.] **कोप, क्रोध, गुस्सा।**

धुवक—संज्ञा पुं. [सं. ध्रुवक] **गीत की टेक।**

धुवन—संज्ञा पुं. [सं.] **आग।**

वि.—**चलाने, कँपाने या हिलानेवाला।**

धुवाँ—संज्ञा पुं. [हिं. धुआँ] **धूम, धुआँ।**

धुवाँधज—संज्ञा पुं. [सं. धूम्र+ध्वज] **अग्नि।**

धुवाँरा—संज्ञा पुं. [हिं. धुआँ+द्वार] **धुआँ निकलने का ...**

धुवाँस—संज्ञा स्त्री. [हिं. धूर+माष] **उरद का आटा जिससे पापड़ या कचौड़ी बनती है।**

धुवाए—क्रि. स. [हिं धुलाना] **धुलाए,** (जल से) **पखराए।** उ.—कनक-थार मैं हाथ धुवाए—३९६।

धुवाना—क्रि. स. [हिं. धुलाना] **धुलवाना।**

धुस्तूर—संज्ञा पुं. [सं.] **धतूरा।**

धुस्स—संज्ञा पुं. [सं. ध्वंस] (१) **ढेर, टीला।** (२) **बाँध।**

धूँध, धूँधि—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुंध] **धूलभरी आँधी के कारण होनेवाला अँधेरा।** उ.—धूम धुंध छाई ... अंबर चमकत बिच बिच ज्वाल—६१५।

धूँधर—वि. [सं. धुंध] **धुँधला।**

संज्ञा स्त्री.—**हवा में छाई हुई धूल।** (२) **धूल के कारण होनेवाला अँधेरा।**

धूँमना—क्रि. अ. [देश.] **जोर का शब्द करना।**

धूँसा—संज्ञा पुं. [हिं. धौंसा] **बड़ा नगाड़ा, डंका।**

धू—वि. [सं. ध्रुव] **स्थिर, अचल।**

संज्ञा पुं.—(१) **ध्रुव तारा।** (२) **भक्त ध्रुव।** (३) **धुरी।**

धूई—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुआँ] **धूनी।**

धूक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वायु।** (२) **काल।**

धूजट—संज्ञा पुं. [हिं. धूर्जटी] **शिव, महादेव।**

धूत—वि. [सं.] (१) **हिलता या काँपता हुआ।** (२) ... **डाँटा गया हो।** (३) **छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।**

वि. [सं. धूर्त्त] (१) **धूर्त्त, काइयाँ।** उ.—(क) ... लंपट, धूत, पूत दमरी कौ, बिषय-जाप कौ जापी—१-१४०। (ख) ऐसेई जन धूत कहावत। (ग) सूरस्याम ... दीन्हैं ही बनिहै बहुत कहावत धूत—५३६। (घ) ... धौल लंपट जैसे हरि तैसे और न जानैं—३३४...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) मायावी, छली, कपटी। उ.—भए पांडवनि के हरि दूत। गए जहाँ कौरवपति धूत—१-२३७।

...ना—क्रि. स. [हिं. धूर्त] धोखा देना।

...पाप—वि. [सं.] जिसके पाप दूर हो गये हों।

...पा—संज्ञा स्त्री. [सं.] काशी की एक प्राचीन नदी जो अब सूख गयी है।

...—संज्ञा स्त्री. [सं. पत्नी, भार्या।

...—क्रि. स. [हिं; धूतना] धूर्तता करके, धोखा देकर, ठगकर। उ.—हौं तव संग जरौंगी, यौं कहि, तिया धूति धन खायौ—२-३०।

...-संज्ञा स्त्री. [देश.] एक चिड़िया।

...-वि. [सं. धूर्त्त] धोखा देनेवाला, धूर्त्त।

...—संज्ञा स्त्री. [सं. धूर्त्तता] वंचकता, चालबाजी, ठगपना। उ.—तुमसौं धूत्यौ कहा करौं, धूत्यौ नहिं देख्यौ—५८६।

...—संज्ञा पुं. [अनु.] आग की लपट उठने का शब्द।

...-वि. [सं.] कंपित।

...—संज्ञा पुं. [सं.] हिलाने-डुलानेवाला।

...ना—क्रि. स. [हिं. धूनी] जलाकर धूनी देना।

क्रि. स. [हिं. धुनना] (१) रुई साफ करना। (२) मारना-पीटना।

...त—क्रि. स. [हिं. धुनना] धूनी देते हैं।

...—संज्ञा स्त्री. [हिं. धुआँ] (१) किसी सुगंधित द्रव्य या साधारण वस्तु को जलाकर उठाया हुआ धुआँ।

मुहा.—धूनी देना—जलाकर धुआँ उठाना और उससे सेंकना।

(२) वह आग जिसे तापने या शरीर को तपाने के लिए साधु चारों ओर जलाये रहते हैं।

मुहा.—धूनी जगना (लगना)—(साधुओं के तापने की) आग जलना। धूनी जगाना (लगाना)—(१) साधुओं का अपने सामने आग जलाना। (२) शरीर तपाना। (३) साधु या विरक्त होना। धूनी रमाना—(१) आग से शरीर को तपाना। (२) साधु या विरक्त होना।

...—संज्ञा पुं. [सं.] सुगंधित पदार्थों का धुआँ। उ.—प्रति-प्रति गृह तोरन ध्वजा धूप। सजे सजल कलस अरु कदलि यूप—९-१६६।

संज्ञा स्त्री.—(१) वह द्रव्य जिसका धुआँ सुगंधित हो। (२) सूर्य का प्रकाश और ताप, घाम।

मुहा.—धूप खाना—धूप में खड़े होना, धूप में तपना। धूप खिलाना—धूप में तपाना। धूप चढ़ना—(१) धूप फैलना। (२) ज्यादा समय बीतना। धूप दिखाना—धूप में रखना या तपाना। धूप में बाल सफेद करना—बूढ़ा होना, पर जीवन का अनुभव न होना। धूप लेना—धूप में खड़े होना।

धूपघड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धूप+घड़ी] धूप में छाया से समय जानने का यंत्र।

धूपछाँह—संज्ञा स्त्री. [हिं. धूप+छाँह] एक कपड़ा जिसमें एक स्थान पर कभी एक रंग जान पड़ता है, कभी दूसरा।

धूपदान—संज्ञा पुं. [सं.धूप+आधान] 'धूप' नामक सुगंधित द्रव रखने या जलाने का पात्र।

धूपदानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धूपदान] 'धूप' नामक सुगंधित द्रव्य रखने या जलाने का छोटा पात्र।

धूपन—संज्ञा पुं. [सं.] धूप देने की क्रिया।

धूपना—क्रि. अ. [सं. धूपन] सुगंधित द्रव्य जलने से धुआँ उठना।

क्रि. स.—गंध-द्रव्य जलाकर उसके धुएँ से वातावरण को सुगंधित करना।

क्रि. स. [सं. धूपन] दौड़ना, हैरान होना।

धूपपात्र—संज्ञा पुं. [सं.] धूप जलाने का पात्र।

धूपबत्ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. धूप+बत्ती] गंध द्रव्य लगी सींक या बत्ती जिसको जलाने से वातावरण सुगन्धित हो जाता है।

धूपवास—संज्ञा पुं. [सं.] स्नान के पीछे सुगंधित धुएँ में कुछ काल तक रहकर शरीर को बसाने की प्राचीन प्रथा।

धूपायित, धूपित—वि. [सं.] (१) धूप या सुगंधित धुएँ से बसाया हुआ। (२) हैरान या थका हुआ, श्रांत।

धूम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) धुआँ, धूआँ। उ.—बादर-छाहैं, धूम-धौराहर, जैसैं थिर न रहाहीं—१-३१९।

मुहा.—धूम के हाथी—तुरंत नष्ट हो जाने या किसी उपयोग में न आनेवाली वस्तु। उ.—देखत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भले काज को जैसे होत धूम के हाथी—३३२० ।

(२) अजीर्ण की डकार । (३) विशेष पदार्थों का धुआँ जो रोगियों के लिए प्रस्तुत किया जाता है । (४) धूमकेतु । ५) उल्कापात ।

संज्ञा स्त्री.—(१) रेलपेल, हलचल । (२) उपद्रव, उत्पात । (३) भीड़-भाड़, ठाटबाट, सजधज । (४) शोरगुल, कोलाहल (५) प्रसिद्ध, जनरव ।

धूमक—संज्ञा पुं. [सं.] धुआँ, धूम ।

धूमकधैया—संज्ञा स्त्री [हिं. धूम] (१) उपद्रव, उत्पात । (२) मार-पीट । (३) कूटना-पीटना ।

धूमकेतन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अग्नि । (२) केतु ग्रह ।

धूमकेतु - संज्ञा पुं. [सं.] (१) अग्नि । (२) केतु ग्रह, पुच्छल तारा । (३) शिव । ४) घोड़ा जिसकी पूँछ में भवँरी हो । (५) रावण की सेना का एक राक्षस ।

धूमग्रह —संज्ञा पुं. [सं.] राहु ग्रह ।

धूमज—संज्ञा पुं. [सं.] धुएँ से बनाबा दल ।

धूमदर्शी —वि. [सं. धूमदर्शिन्] जिसे धुँधला दिखायी दे ।

धूमधर—संज्ञा पुं. [सं.] अग्नि, आग ।

धूमधाम—संज्ञा स्त्री [हिं. धूम+धाम (अनु.)] ठाट-बाट, साज-बाज और तैयारी, समारोह ।

धूमधामे—वि. [हिं. धूमधाम] जो खूब धूमधाम से हो ।

वि. [हिं. धूम] नटखट, उपद्रवी ।

धूमध्वज—संज्ञा पुं. [सं.] आग, अग्नि ।

धूमपथ—संज्ञा पुं. [सं.] धुआँ निकलने का रास्ता ।

धूमप्रभा—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक नरक जहाँ सदा धुआँ भरा रहता ह ।

धूमयोनि—संज्ञा पुं [सं.] धुएँ से बना बादल ।

धूमर—वि. [हिं. धूमल] धुएँ के रंग का ।

संज्ञा स्त्री.—धुमैले रंग की गाय । उ.—धौरी धूमर काजर कारी कहि कहि नाम बुलावै-१-७६ ।

धूमरज—संज्ञा पुं. [सं.] धुएँ की कालिख ।

धूमरा—वि. [सं, धूम] धुएँ के रंग का ।

धूमरि, धूमरी—वि. स्त्री. [सं. धूमल] धुएँ के रंग की, लालिमा युक्त काले रंग की । उ.—(क) अपनी अपनी गाइ ग्वाल सब आनि करौ इकठौरी । धौरी धूमरि, राती, रौंछी, बोल बुलाइ चिन्हौरी । (ख) आपुस मैं सब करत कुलाहल, धौरी, धूमरि, धेनु बुलाए—४४७ ।

धूमल—वि. [सं.] धुएँ के रंग का ।

धूमला—वि. [सं. धूमल] (१) धुएँ के रंग का । (२) धुँधले रंग का, जो चटक न हो । (३) मलिन कांति-वाला, जिसकी कांति फीकी पड़ गयी हो ।

धूमवान—वि. [सं. धूमवत्] धुएँ से युक्त ।

धूमसी—संज्ञा स्त्री. [सं.] उरद का आटा, धुआँस ।

धूमांग—वि. [सं.] धुएँ के से अंगवाला ।

धूमाग्नि—संज्ञा स्त्री. [सं.] आग जिसमें लपट न हो ।

धूमाभ—वि. [सं.] धुएँ के रंग का ।

धूमावती—संज्ञा स्त्री [सं.] दस महाविद्याओं में एक ।

धूमित—वि.—[सं.] जिसमें धुआँ लगा हो ।

धूमिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] दिशा जिसमें सूर्य जाने को हो ।

धूमिल—वि. [सं. धूमल] (१) धुएँ के रंग का । (२) धुँधला । उ.—मुख अरबिंद धार मिलि सोभित धूमिल नील अगाध । मनहुँ बाल-रवि रस समीर संकित तिमिर कूट ह्वै आध ।

धूमी—वि. [सं. धूमिन्] धुएँ से भरा हुआ ।

धूमोत्थ—वि. [सं.] धुएँ से निकला हुआ ।

धूम्र—वि. [सं.] धुएँ के रंग का ।

संज्ञा पुं.—(१) ललाई लिए काला रंग, धुएँ का रंग । (२) शिव जी । (३) श्रीराम की सेना का एक भालू ।

धूम्र —संज्ञा पुं. [सं.] ऊँट ।

धूम्रलोचन—संज्ञा पुं. [सं.] कबूतर ।

धूम्रवर्ण—वि. [सं.] धुएँ के रंग का ।

संज्ञा पुं.—ललाई लिये काला रंग ।

धूम्रवर्ण – संज्ञा स्त्री. [सं.] अग्नि की एक जिह्वा ।

धूम्राक्ष – वि. [सं.] जिसकी आँखें धुँधले रंग की हों ।

धूर—संज्ञा स्त्री [हिं. धूल] धूल, रेणु, रज ।

अव्य. [हिं. धुर] सीधा, न इधर न उधर ।

धूरजटी—संज्ञा पुं. [सं. धूर्जटि] शिवजी, महादेव ।

धूरडाँगर—संज्ञा पुं. [देश.] सींगवाला चौपाया ।

धूरत—वि. [सं. धूर्त्त] (१) धोखा देनेवाला । (२) धूर्त ।

धूधान—संज्ञा पुं. [हिं. धूल+धान] गर्द का ढेर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूरधानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धूरधान] (१) **गर्द की ढेरी।** (२) **नाश।**

धूरसंझा—संज्ञा स्त्री. [सं. धूलि+संध्या] **संध्या।**

धूरा—संज्ञा स्त्री. [हिं. धूल] **धूल, गर्द, चूरा, रज।**

मुहा.—धूरा देना—**अपने अनुकूल करना।**

धूरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. धूल] **धूल, रज, गर्द।** उ.—(क) ससि सन्मुख जो धूरि उड़ावै उलटि ताहि कैं मुख परै —१-२३४। (ख) हरि की माया कोउ न जानै, आँखि धूरि सी दीन्हीं—६६४।

मुहा.—धूरि बटोरत—**व्यर्थ का काम करना, बेमतलब का काम करना।** उ.—मग-मग धूरि बटोरत—**व्यर्थ ही मारा मारा घुमता है।** उ.—कबहूँ मग-मग धूरि बटोरत, भोजन कौ बिलखात—२-२२।

धूर्जटि—संज्ञा पुं. [सं.] **शिवजी, महादेव।**

धूर्त—वि. [सं.] (१) **छली।** (२) **धोखेबाज।**

संज्ञा पुं.—(१) **एक प्रकार का शठ नायक (साहित्य)।** (२) **धतूरा।** (३) **जुआरी।** (४) **काँइयाँ।**

धूर्तक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जुआरी।** (२) **गीदड़।**

धूर्तता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **चालाकी, ठगपना।**

धूर्य—वि. [सं.] **बोझ ढोनेवाला, भारवाही।**

धूर्य—संज्ञा पुं. [सं] **विष्णु।**

धूल—संज्ञा स्त्री. [सं. धूलि] **रज, गर्द, रेणु।**

मुहा.—(कहीं) धूल उड़ना—(१) **तबाही आना।** (२) **चहल पहल न रहना।** (किसी की) धूल उड़ना—(१) **बुराइयों का प्रकट किया जाना।** (२) **उपहास होना।** (किसी की) धूल उड़ाना—(१) **दोषों को प्रकट करना।** (२) **हँसी उड़ाना।** धूल उड़ाते फिरना—(१) **मारे-मारे घूमना।** (२) **दीन दशा में परेशान घूमना।** धूल की रस्सी बटना—**बेकार का परिश्रम करना।** धूल चाटना—(१) **बहुत बिनती करना।** (२) **बहुत नम्रता दिखाना।** धूल छानना—**मारे-मारे घूमना।** धूल झड़ना—**मार पड़ना, पिटना।** धूल झाड़ना—(१) **मारना-पीटना।** (२) **खुशामद करना।** धूल डालना—(१) **(किसी बात को) दबाना या फैलने न देना।** (२) **ध्यान देना।** धूल फाँकना—(१) **मारे-मारे फिरना।** (२) **सरासर झूठ बोलना।** धूल बरसना—**चहल-पहल या रौनक न रहना।** धूल में मिलना—**नष्ट हो जाना।** धूल में मिलाना—**नष्ट करना।** (कहीं की) धूल ले डालना—**(कहीं पर) बहुत बार पहुँचना।** पैर की धूल—**बहुत तुच्छ चीज।** धूल सिर पर डालना—**बहुत पछताना।**

(२) **धूल के बराबर तुच्छ चीज।**

मुहा.—धूल समझना—**कुछ न गिनना।**

धूलक—संज्ञा पुं. [सं.] **जहर, विष।**

धूलधानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धूल+धान] **नाश, विनाश।**

धूला—संज्ञा पुं. [देश.] **टुकड़ा, खंड।**

धूलि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **धूल, गर्द, रज।**

धूलिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कणों की झड़ी।** (२) **कुहरा।**

धूलिध्वज—संज्ञा पुं. [सं.] **वायु।**

धूसना—क्रि. स. [सं. ध्वंसन] (१) **मसलना।** (२) **ठूसना।**

धूसर—वि. [सं.] (१) **धूल से सना हुआ, धूल से भरा हुआ, जिसके धूल लगी हो।** उ.—(क) हौं बलि जाउँ छबीले लाल की। धूसर धूरि घुटुरुवनि रेंगनि, बोलनि बचन रसाल की—१०-१०५। (ख) सखि री, नंदनंदन देखु। धूरि धूसर जटा जुटली, हरि किए हर-भेषु—१०-१७०। (ग) बिहरत बिबिध बालक संग। डगनि डगमग पगनि डोलत, धूरि-धूसर अंग—१०-१८४।

यौ.—धूल-धौसर—**धूल से सना या भरा हुआ।**

(२) **धूल के रंग का, मटमैला, मटीला।**

संज्ञा पुं.—(१) **मटमैला या मटीला रंग।** (२) **गधा।** (३) **ऊँट।**

धूसरा—वि. [सं. धूसर] (१) **मटमैला, मटीला।** (२) **जिसमें धूल लगी हो, धूल से भरा हुआ।**

धूसरित—वि. [सं.] (१) **जो धूल से मटमैला हो गया हो।** (२) **जिसमें धूल लगी हो।**

धूसरे, धूसरो, धूसल, धूसला, धूसलो—वि. [सं. धूसर] (१) **मटीला।** (२) **धूल भरा।**

धृक, धृग अव्य [सं. धिक्, पु. हिं. धृक] **धिक, लानत, धिक्कार।** उ.—(क) धृग तव जन्म, जियन धृग तेरौ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कही कपट-मुख बाता—६-४६ । (ख) तुमहिं बिना मन धृक अरु धृक घर। तुमहिं बिना धृक धृक माता पितु धृक धृक कुल की कान लाज डर—१२६६। (ग) धृग मोको धृग मेरी करनी तब हीं क्यों न मरयौ —२५५२। (घ) मार मार कहि गारि दै धृग गाइ चरैया—२५७५। (ग) मारि डारे कहा बंदि को जीवन धृग मीच हमको नहीं मनन भूल्यौ—२६२४।

धृत—वि. [सं.] (१) पकड़ा हुआ। (२) ग्रहण या धारण किया हुआ। (३) स्थिर या निश्चित किया हुआ। (४) पतित, पापी।

धृतराष्ट्र—संज्ञा पुं. [सं.] दुर्योधन के पिता जो विचित्रवीर्य के पुत्र थे।

धृतराष्ट्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] धृतराष्ट्र की स्त्री।

धृतव्रत—संज्ञा पुं. [सं.] व्रत करनेवाला।

धृतात्मा—वि. [सं. धृतात्मन्] धीर, धैर्यवान्।
संज्ञा पुं.—(१) धीर व्यक्ति। (२) विष्णु।

धृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) धरने पकड़नेवाला। (२) स्थिर रहने की क्रिया या भाव। (३) धैर्य, धीरता।

धृती—वि. [सं. धृतिन्] धीर, धैर्यवान्।

धृष्ट—वि. [सं.] (१) निर्लज्ज। (२) अनुचित साहस करनेवाला, ढीठ, उद्धत।

धृष्टता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) ढिठाई। (२) निर्लज्जता।

धृष्टद्युम्न—संज्ञा पुं. [सं.] राजा द्रुपद का पुत्र जो पांडवों की सेना का नायक था।

धृष्णता—संज्ञा स्त्री. [सं.] धृष्टता।

धृष्णत्व—संज्ञा पुं. [सं.] धृष्टता।

धृष्णि—संज्ञा पुं. [सं.] किरण।

धृष्णु—वि. [सं.] (१) ठीठ, उद्धत। (२) प्रगल्भ।

धेन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नद। (२) समुद्र।

धेन, धेनु—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) हाल की बच्चाजनी गाय, सवत्सा गाय। (२) गाय। उ.—कदली कंटक, साधु असाधुहिं, केहरि कैं सँग धेनु बँधाने। यह बिपरीत जानि तुम जन की, अंतर दै बिच रहे लुकाने—१-२१७।

धेनुक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक राक्षस जिसे बलदेव जी ने मारा था। उ.—धेनुक असुर तहाँ रखवारी।...... पकरि पाइँ बलभद्र फिरायौ। मारि ताहि तरु माहिं गिरायौ—४६६। (२) एक तीर्थ।

धेनुमती—संज्ञा स्त्री. [सं.] गोमती नदी।

धेनुमुख—संज्ञा पुं. [सं.] गोमुख नामक बाजा।

धेनुष्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] गाय जो बंधक रखी हो।

धेय—वि. [सं.] (१) धारण करने योग्य। (२) लालन-पालन करने योग्य। (३) पीन योग्य।

धेयना—क्रि. अ. [सं. ध्यान] ध्यान करना।

धेरा—वि. [देश.] भेंगा।

धेलचा, धेला—संज्ञा पुं. [हिं. अधेला] आधा पैसा

धेली—संज्ञा स्त्री. [हिं. अधेल] आधा रुपया।

धैंताल—वि. [अनु. धैं+हिं. ताल] (१) चपल, चंचल। (२) उजड्ड, गँवार।

धैन—संज्ञा स्त्री. [सं. धेनु] गाय, धेनु। उ.—चहुँ ओर चतुरंग लच्छमी, कोटिक दुहियत धैन री—१०-१३६।

धैनव—वि. [सं.] गाय से उत्पन्न।
संज्ञा पुं.—गाय का बछड़ा।

धैना—संज्ञा स्त्री. [हिं. धरना या धंधा] (१) आदत, स्वभाव। (२) काम-धंधा।

धैनु—संज्ञा स्त्री. [सं. धेनु] गाय, धेनु। उ.—बार-बार हरि कहत मनहिं मन, अबहिं रहै सँग चारत धेनु—५०१।

धैबो—संज्ञा स्त्री. [हिं. धाना] धाने या दौड़ने की क्रिया। उ.—कैसे हार तोरि मेरो डारयौ बिसरत नाहीं रिसकर धैबो—१०५२।

धैया—संज्ञा पुं. [हिं. धाय] धाय, दाई, दूध पिलाकर पालनेवाली। उ.—धन्य जसोमति त्रिभुवनपति धैया—२६३१।

धैर्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) धीरज, धीरता, चित्त की स्थिरता। (२) उतावली या हड़बड़ी न करने का भाव, संतोष। (३) चित्त में आवेश या उद्वेग न उत्पन्न होने का भाव।

धैवत—संज्ञा पुं. [सं.] संगीत का छठा स्वर।

धैहौं—क्रि. अ. [हिं. धाना] धाऊँगा, दौड़ूँगा, तेजी से जाऊँगा। उ.—(क) करिहौं नहिं बिलंब कछु अब, उठि रावन सन्मुख ह्वै धैहौं—६-१५७। (ख) देखि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप रहिं न सकिहौं रथ तैं धैहों धर धाइ––२४८५ ।

धौंधा—संज्ञा पुं. [सं. ठुंढि] (१) **बेडौल पिंड, लोंदा** । (२) **भद्दा और बेडौल शरीर** ।

मुहा.—मिट्टी का लांदा—(१) **मूर्ख** । (२) **निकम्मा** ।

धो—क्रि. स. [हिं. धोना] (१) **पानी से साफ करो, पखारो** । (२) **दूर करो, हटाओ, मिटाओ, मिटा दो** ।

मुहा.—धो बहाओ—**मिटा दो, न रहने दो** ।

धोइ—क्रि. स. [हिं. धोना] **धोकर** । उ.––चरन धोइ चरनोदक लीन्हौं—१-२३६ । (२) **बहाकर, मिटाकर** ।

उ.—मेघ परस्पर यहै कहत हैं धोइ करहु गिरि खादर––९४६ ।

प्र.—धोइ डारै—**दूर कर दिये, हटाये, मिटा दिये** । उ.––पतित अजामिल, दासी कुब्जा, तिनके कलिमल डारे धोइ—१-६५ । धोइ डारौं––**मिटा दूँ, बहा दूं** । उ.––जल बरषि ब्रज धोइ डारौं लोग देउँ बहाइ—९४३ ।

धोइऐ—क्रि. स. [हिं. धोना] **धो डालो** । उ.— लाल उठौ मुख धोइऐ, लागी बदन उघारन—४३६ ।

धोई—क्रि. स. [हिं. धोना] (१) **धो लेना, छुड़ा सकना** । उ.—सेत, हरौ, रातौ अरु पियरौ रंग लेत है धोई । कारौ अपनौ रंग न छाँड़ै, अनरँग कबहुँ न होई—१-६३ । (२) **धोकर** । उ.––पहिले ही चढ़ि रह्यौ स्याम रँग छूटत नहिं देख्यौ धोई—३१४८ ।

वि.—(१) **धोकर साफ की हुई** । (२) **जो धो डाली गयी हो, स्वच्छ** । (३) **धोकर छिलका उतारी हुई (दाल)** ।

संज्ञा स्त्री.—**धुली हुई उरद या मूंग की दाल** ।

संज्ञा पुं.—[हिं. थवई] **राजगीर, कारीगर** ।

धोए—क्रि. स. [हिं. धोना] **पखारे** । उ.—तेल लगाइ कियौं रुचि-मर्दन, बस्तर मलि-मलि धोए—१-५२ ।

धोकर—संज्ञा पुं. [हिं. धोखा] **छल-कपट, धोखा** ।

धोकड़—वि. [देश.] **हट्टा-कट्टा, मोटा-ताजा** ।

धोकर—क्रि. स. [हिं. धोना] **पानी से पखारकर** ।

मुहा.—हाथ धोकर पीछे पड़ना—**सब काम छोड़कर पीछे लग जाना, पूरी शक्ति से या सब ओर से निश्चित होकर परेशान करने में प्रवृत्त होना** ।

धोख, धोखा—संज्ञा पुं. [सं. धूकत = धूर्त्तता, हिं. धोखा] (१) **छल, धूर्त्तता, दगा** । (२) **भ्रम, भुलावा** । उ. आजु सखी अरुनोदय मेरे नैनन धोख भयौ । की हरि आजु पंथ यहि गौने कीधौं स्याम जलद उनयौ—१६६६ ।

मुहा. – धोखा खाना—**ठगा जाना** । धोखा देना—(१) **भ्रम या भुलावे में डालना, छलना** । (२) **विश्वासघात करना** । (३) **वियोग या मृत्यु द्वारा दुख देना** ।

(३) **भ्रम, भ्रांति, भूल, मिथ्या प्रतीति** ।

मुहा.—धोखा खाना—**कुछ का कुछ समझना** । धोखा पड़ना—**भूल-चूक या भ्रम होना** ।

(४) **भ्रम में डालने की असत् या मायामय वस्तु** ।

मुहा.—धोखा खड़ा करना (रचना)—**भ्रम में डालने या भुलावा देने के लिए माया का आडंबर खड़ा करना** ।

(५) **जानकारी का अभाव, अज्ञान** । (६) **हानि या अनिष्ट की संभावना** ।

मुहा.—धोखा उठाना–**भ्रम या असावधानी से हानि उठाना या कष्ट सहना** ।

(७) **संशय, कुछ का कुछ होने की आशंका** ।

मुहा.—धोखा पड़ना—**सोचा कुछ हो, पर होना कुछ और** ।

(८) **भूल-चूक, कसर, त्रुटि** ।

मुहा—धोखा लगना—**कमी या कसर होना** । धोखा लगाना— **कमी या कसर करना** ।

(९) **खेत म पक्षियों को डराने-भगाने के लिए खड़ा किया जानेवाला पुतला** । (१०) **फलवाले पेड़ों पर रस्सी से बांधी गयी लकड़ी जिससे 'खटखट' शब्द करके चिड़ियों को भगाया जाता है, खटखटा** (११) **बेसन का एक पकवान** ।

धोखे—संज्ञा पुं. [हिं. धोखा] (१) **'धोखा' का विभक्ति-संयोग के उपयुक्त रूप** । (२) **भ्रम में डालनेवाली चीज** ।

मुहा.—धोखे की टट्टी–(१) **वह परदा या ओट**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसके पीछे छिपकर शिकार खेला जाता है। (२) भ्रम में डालनेवाली चीज। (३) निरर्थक या सारहीन वस्तु।

(२) भ्रम, भ्रांति, असत् धारणा। उ.—आसन देइ बहुत करि बिनती सुत धोखे तव बुद्धि हेराई—१० उ. ११३। (२) जानकारी के अभाव या अज्ञान में।

धोखेबाज—वि. [हिं. धोखा+फा. बाज] छली-कपटी।

धोखेबाजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धोखेबाज] छल-कपट।

धोखैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं धोखा] (१) भ्रम, मिथ्या प्रतीति। उ—.नील पाट पिरोइ मनि गन फनिग धोखैं जाइ—१०-१७०। (२) अज्ञान या जानकारी के अभाव में।

मुहा.—धोखैं ही धोखैं—अज्ञानता की स्थिति में, भ्रम या असावधानी की दशा में। उ.-धोखैं ही धोखैं डहकायौ। समुझि न परी, बिषय-रस गीध्यौ, हरि-हीरा घर माँझ गँवायौ—१-३२६।

(३) भूल-चूक में, प्रमाद में। उ.—लियौ न नाम कबहुँ धोखैं हूँ सूरदास पछितायौ—२-३०।

धोखो, धोखौ—संज्ञा पुं. [हिं धोखा] (१) छल-कपट। (२) भ्रम।

धोड़—संज्ञा पुं. [सं.] एक तरह का साँप।

धोतर—संज्ञा पुं. [सं. अधोवस्त्र] एक मोटा कपड़ा।

धोती—संज्ञा स्त्री. [सं. अधोवस्त्र] एक वस्त्र जो पुरुष कमर के नीचे का अंग और स्त्रियाँ सारा शरीर ढकने के लिए पहनती हैं।

मुहा.—धोती बाँधना—(१) धोती पहनना। (२) कमर कसकर तैयार होना। धोती ढीली करना—डरकर भागना। धोती ढीली होना—भयभीत होना।

संज्ञा स्त्री. [सं. धोती] योग की एक क्रिया जिसमें कपड़े की एक लंबी धज्जी मुँह से निगलते हैं।

धोना—क्रि. स. [सं. धावन] (१) पानी से साफ करना, पखारना।

मुहा.—(किसी चीज से) हाथ धोना- (उस चीज को) गँवा बैठना।

यौ.—धोना-धाना-धोकर सफाई करने की क्रिया।

धोप—संज्ञा स्त्री. [सं. धूर्वा या धर्वन] खड्ग, तलवार।

धोब—संज्ञा पुं. [हिं. धोना] धोये जाने की क्रिया।

मुहा.—धोब पड़ना—धोया जाना।

धोबइन, धोबन, धोबिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. धोबी] (१) कपड़ा धोनेवाली स्त्री। (२) धोबी की स्त्री।

धोबिघटा—संज्ञा पुं. [हिं. धोबी+घाट] वह घाट जहाँ धोबी कपड़े धोते हों।

धोबी—संज्ञा पुं. [हिं. धोना] कपड़े धोनेवाला।

मुहा.—धोबी का कुत्ता—निकम्मा या व्यर्थ व्यक्ति, व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला व्यक्ति। धोबी का छैला—(१) मँगनी की या पराई चीज पहनने वाला। (२) मँगनी की या पराई चीज पर घमंड करने या इतरानेवाला।

धोय—क्रि. स. [हिं. धोना] (१) धोकर, पखारकर। उ. सूरदास हरि कृपा-बारि सौं कलिमल धोय बहावै। (२) दूर करके, मिटाकर। उ.—साधन मंत्र जंत्र उद्यम बल यह सब डारौ धोय। जो कछु लिखि राखी नँदनंदन मेटि सकै नहिं कोय।

धोयौ—क्रि. स. [हिं. धोना] धोया। उ.—धोयौ चाहत कीच भरौ पट, जल सौं रुचि नहिं मानौं—१-१६४।

धोर—संज्ञा पुं. [सं. धर=किनारा] (१) निकटता, समीपता। (२) किनारा, धार, बाढ़।

धोरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सवारी (२) दौड़।

धोरणि—संज्ञा स्त्री. [सं.] श्रेणी, परंपरा।

धोरी—संज्ञा पुं. [सं. धौरेय] (१) भार उठानेवाला। (२) बैल। (३) प्रधान, मुखिया। (४) बड़ा, श्रेष्ठ या महान व्यक्ति।

धोरे, धोरैं—क्रि. वि. [सं. धर=किनारा] पास, निकट, समीप। उ.—अपराधी मतिहीन नाथ हौं चूक परी निज धोरैं।

यौ.—धोरे-धोरे—आस-पास।

धोवत—क्रि. स. [हिं. धोना] धोता है, (पानी से) स्वच्छ करता है, पखारता है। उ.—(क) त्रियाचरित मतिमंत न समुझत, उठि प्रच्छालि मुख धोवत—६-३१। (ख) नृपति रजक अंबर नृप धोवत—२५७४।

धोवती—संज्ञा स्त्री. [सं. अधोवस्त्र) धोती।

क्रि. स. [हिं. धोना] धोती, पखारती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धोवन—संज्ञा पुं. [हिं. धोना] (१) **धोने का भाव**। (२) **वह पानी जिससे कोई चीज धोयी गयी हो**।

धोवना—क्रि. स. [हिं. धोना] **धोना**।

धोवा—संज्ञा पुं. [हिं. धोना] (१) **धोवन** । (२) **जल**।

धोवाना—क्रि. स. [हिं. धोना] **धुलाना**।

क्रि. अ.- **धुलना, धोया जाना**।

धोवै—क्रि. स. [हिं. धोना] **धोता है, पखारता है, प्रक्षालन करता है**। उ.—इतनक मुख माखन लपटान्यौ, डरनि आँसुवनि धोवै—३४७।

धोंसा—संज्ञा पुं. [हिं. ठोस] **गुड़ की भेली**।

धौं—अव्य. [सं. अथवा, हिं. दँव, दहुँ] (१) **संशयात्मक प्रश्नों के साथ प्रायः प्रयुक्त एक अव्यय, न जाने, कौन जाने, कह नहीं सकते**। उ.—(क) कलानिधान सकल गुन सागर गुरु धौं कहा पढ़ाए हो ? —१-७। (ख) काकी तिनकौं उपमा दीजै, देह धरे धौं कोइ —६-४५। (२) **कि, किधौं, या, अथवा**। उ.—गुनत सुदामा जात मनहिं मन चीन्हैंगे धौं नाहीं। (३) **तो, भला, कहो**। उ.—(क) भुवन चोदह खुरनि खूँदति. सु धौं कहाँ समाइ—१-५६। (ख) यह गति भई सूर की ऐसी स्याम मिलैं धौं कैसे—१-२६३। (ग) कहत बनाइ दीप की बतियाँ कैसैं धौं हम नासत—२-२५। (४) **कि**। (५) **'तो' (जोर देने के लिए)**। उ.-(क) को करि सकै बराबरि मेरी सो धौं मोहिं बताउ–१-१४५ (ख) अब धौं कहो, कौन दर जाऊं–१-१६५। (ग) कहि धौं सुक, कहा अब कीजै, आपुन भए भिखारि —८-१४।

धौंक—सं. स्त्री. [हिं धौंकना] (१) **आग सुलगाने के लिए भाथी से निकाला गया हवा का झोंका**। (२) **गरम हवा का झोंका, लू**।

धौंकना—क्रि. स. [सं. धम] (१) **आग बढ़ाने के लिए भाथी से हवा का झोंका पहुँचाना**। (२) **(किसी के ऊपर) भार डालना**। (३) **किसी पर दंड लगाना**।

धौंकनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धौंकना] **आग फूंकने की नली या भाथी**।

मुहा.—धौंकनी लगना—**सांस फूलना**।

धौंका—संज्ञा पुं. [हिं. धौंकना] **लू का झोंका**।

धौंकिया—संज्ञा. पुं. [हिं. धौंकना] **आग फूँकनेवाला**।

धौंकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धौंकना] **धौंकनी**।

धौंज, धौंजा—संज्ञा स्त्री. [हिं. धौंजना] (१) **दौड़-धूप**। (२) **घबराहट, हैरानी, व्याकुलता**।

धौंजना—क्रि. अ. [सं. ध्वंजन] **दौड़ना-धूपना**।

क्रि. स. **रौंदना, मसलना**।

धौंताल, धौंताली—वि. [हिं. धुन+ताल] (१) **धुनी, धुन में लगा हुआ**। (२) **चुस्त, चालाक**। (३) **साहसी, हिम्मती**। (४) **मजबूत**। (५) **तेज, पटु**। (६) **उपद्रवी, उधमी**।

धौंधौंमार—संज्ञा स्त्री. [अनु. धमधम+हिं. मार] **उतावली**।

धौंर—संज्ञा स्त्री. [सं. धवल] **सफेद ईख**।

धौंस—संज्ञा स्त्री. [सं. दंश] (१ **धमकी, घुड़की**। (२) **धाक, रोबदाब**। (३) **भुलावा, झाँसापट्टी**।

धौंसना—क्रि. स. [हिं. धौंस] (१) **दबाना, दमन करना**। (२) **धमकी या घुड़की देना**। (३) **मारना-पीटना**।

धौंसपट्टी—संज्ञा स्त्री. [हिं. धौंस+पट्टी] **भुलावा, झांसा**।

मुहा.—धौंसपट्टी में आना—**भुलावे में आना**।

धौंसा—संज्ञा पुं. [हिं. धौंसना] (१) **बड़ा नगाड़ा, डंका**।

मुहा.—धौंसा देना (बजाना)—**चढ़ाई का डंका बजाना या घोषणा करना**।

(२) **शक्ति, सामर्थ, क्षमता**।

धौंसि—क्रि. स. [हिं. धौंसना] **धमकी या घुड़की देने के लिए, डराने-धमकाने के लिए**। उ.—राजा बड़े, बात यह समझी, तुमको हम पै धौंसि पठायौ।

धौंसिया—संज्ञा पुं. [हिं धौंसना] (१) **धौंस जमानेवाला**। (२) **झाँसापट्टी या धोखा देनेवाला**। (३) **नगाड़ा बजानेवाला**।

धौत—वि. [सं.] (१) **सना हुआ, भरा हुआ, नहाया हुआ**। उ.—(क) धूरि धौत तन, अंजन नैननि, चलत लटपटी चाल—१०-११४। (ख) धूसरि धूरि धौत तनु मंडित मानि जसोदा लेत उछंगना। (२) **धोया हुआ, साफ**। (३) **उजला, सफेद**।

संज्ञा पुं.—**रूपा, चांदी**।

धौतशिला—संज्ञा स्त्री. [सं.] **स्फटिक, बिल्लौर**।

धौतात्मा—वि. [सं. धौतात्मन्] **पवित्रात्मा**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धौति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) शुद्धि । (२) योग में शरीर को भीतर-बाहर से शुद्ध करने की क्रिया ।

धौम्य—संज्ञा पुं. [सं.] पांडवों के पुरोहित ।

धौर—संज्ञा पुं. [हिं. धवल) एक सफेद चिड़िया ।

धौरहर—संज्ञा पुं. [हिं. धौराहर] बुर्ज, मीनार ।

धौरा—वि. [सं. धवल] (१) सफेद, उजला । (२) सफेद रंग का बैल । (३) एक तरह का पंडुक नामक पक्षी ।

धौरादित्य—संज्ञा पुं. [सं.] एक तीर्थ का नाम ।

धौराहर—संज्ञा पुं. [हिं. धुर=ऊपर+घर] भवन का खंभे-सा ऊँचा भाग जिस पर भीतरी सीढ़ियों द्वारा चढ़ते हैं, ऊँची अटारी, धरहरा, बुर्ज, मीनार । उ.—जीवन जन्म अल्प सपनौ सौ, समुझि देखि मन माहीं । बादर-छाँह, धूम-धौराहर, जैसैं थिर न रहाहीं—१-३१६ ।

धौरिय—संज्ञा पुं. [सं. धौरेय] बैल ।

धौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. धौरा] सफेद रंग की गाय, कपिला । उ.—(क) बाँह उठाइ काजरी-धौरी गैयनि टेरि बुलावत—१०-११७ । (ख) बाँह उचाइ काल्हि की नाईं धौरी धेनु बुलावहु—१०-१७६ ।

वि.—सफेद, उजली, धवल ।

धौरे—क्रि. वि. [हिं. धोरे] निकट, पास, समीप ।

धौरेय—वि. [सं.] रथ आदि खींचनेवाला ।

संज्ञा पुं.—रथ या गाड़ी खीचनेवाला बैल ।

धौर्त्य—संज्ञा पुं. [सं.] धूर्तता ।

धौल—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) चाँटा, थप्पड़ । (२) हानि ।

संज्ञा स्त्री. [सं. धवल] सफेद ईख ।

वि.—उजला, सफेद, श्वेत ।

मुहा.—धौल धूत—पक्का धूर्त या काँइयाँ । उ.—धूत धौल लंपट जैसे हार तैसे और न जानै—३४६६ ।

संज्ञा पुं. [हिं. धोराहर] धरहरा, बुर्ज, मीनार ।

धौल-धक्कड़, धौल-धक्का, धौल-धप्पड़, धौल-धप्पा—संज्ञा पुं. [हिं. धौल+धक्का] (१) मारपीट, दंगा । (२) आघात, चपेट ।

धौलहर, धौलहरा—संज्ञा पुं. [हिं. धौराहर] बुर्ज, मीनार ।

धौला—वि. [सं. धवल] सफेद, उजला ।

संज्ञा पुं.—सफेद रंग का बैल ।

धौलाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. धौल+आई] सफेदी ।

धौलागिरि—संज्ञा पुं. [सं. धवलगिरि] एक पर्वत । उ.—धौलागिरि मानौ धातु चली बहि—२४१६ ।

धौली—संज्ञा पुं [सं. धवलगिरि] उड़ीसा का एक पर्वत ।

ध्याइ—क्रि. स. [हिं. ध्याना] (१) ध्यान करके । (२) स्मरण करके, सुमिरकर । उ.—जातैं ये परगट भए आइ, ताकौं तू मन मैं निज ध्याइ—४-५ ।

ध्याई—क्रि. स. [हिं. ध्याना] ध्यान लगाकर, स्मरण करके । उ.—द्रुपद-सुता समेत सब भाई । उत्तर … गए हरि ध्याई—१-२८८ ।

ध्याऊँ—क्रि. स. [हिं. ध्याना] ध्यान करूँ, स्मरण करूँ, कामना करूँ, ध्यान में लाऊँ । उ.—स्याम-बल-राम बिनु दूसरे देव कौं, स्वप्न हूँ माहिं नहिं हृदय ल्याऊँ । यहै जप, यहै तप, यहै मम नेम-व्रत, यहै मम प्रेम, फल यहै ध्याऊँ—१-१६७ ।

ध्याए—क्रि. स. [हिं. ध्याना] (१) ध्यान किया । (२) स्मरण किया । उ.—जब गज गह्यौ ग्राह जल-भीतर, तब हरि कौं उर ध्याए (हो)—१-७ ।

ध्यात—वि. [सं.] ध्यान किया या विचारा हुआ ।

ध्याता—वि. [सं. ध्यातृ] (१) ध्यान करनेवाला । (२) विचार करनेवाला ।

ध्यान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अंतःकरण में किसी वस्तु या व्यक्ति को उपस्थित करने की क्रिया या भाव ।

मुहा.—ध्यान में डूबना (मग्न होना)—इतनी एकाग्रता से ध्यान करना कि अन्य विषयों का बोध न रहे । ध्यान धरना—रूप आदि का स्मरण करना । ध्यान में लगना—स्मरण करके मग्न हो जाना ।

(२) सोच-विचार, चिंतन, मनन । (३) भावना, प्रत्यय, विचार ।

मुहा.—ध्यान आना—विचार उत्पन्न होना । ध्यान जमना—विचार स्थिर होना । ध्यान बँधना—विचार का बहुत देर तक बना रहना । ध्यान रखना—न भूलना । ध्यान लगाना—बराबर ख्याल बना रहना ।

(४) चित्त, मन ।

मुहा.—ध्यान में न लाना—(१) चिंता या परवाह न करना । (२) सोच-विचार न करना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) चेतना की प्रवृत्ति, चेत।

मुहा.—ध्यान जमना—**चित्त का एकाग्र होना**। ध्यान जाना—**बोध होना**। ध्यान दिलाना—**दिखाना, बताना या सुझाना**। ध्यान देना—**ख्याल करना, गौर करना**। ध्यान पर चढ़ना—**चित्त से न हटना**। ध्यान बँटना—**चित्त का एकाग्र न रहना**। ध्यान बँटाना—**चित्त को एकाग्र न रहने देना**। ध्यान बँधना—**चित्त एकाग्र होना**। ध्यान लगना—**चित्त एकाग्र होना**। ध्यान लगाना—**चित एकाग्र करना**।

(६) **समझ, बुद्धि**।

मुहा.—ध्यान पर चढ़ना (में आना)—**समझ में आना**। ध्यान में जमना—**विश्वास के रूप में मन में स्थिर होना**।

(७) **धारणा, स्मृति, याद**।

मुहा.—ध्यान आना—**याद होना**। ध्यान दिलाना—**याद दिलाना**। ध्यान पर चढ़ना—**याद होना**, ध्यान रखना—**याद रखना**। ध्यान रहना—**याद रहना**। ध्यान से उतरना—**याद न रहना, भूल जाना**।

(८) **चित्त को एकाग्र करके किसी ओर लगाना**।

मुहा.—ध्यान छूटना—**चित्त की एकाग्रता न रहना**। उ.—देखन लग्यौ सुत मृतक जान। रुदन करत छूट्यौ रिषि ध्यान। ध्यान धरना—**चित्त को एकाग्र करके आराध्य की ओर लगाना**।

...ना—क्रि. स. [हिं. ध्यान] **ध्यान करना**।

...योग—संज्ञा पुं. [सं.] **योग जिसका प्रधान-अंग ध्यान हो**।

...—क्रि. स. [सं. ध्यान] (१) **ध्यान करना** (२) **सुमरना, स्मरण करना**।

संज्ञा स्त्री.—**राधा की एक सखी का नाम**। उ.—...र्वी रंभा कृष्णा ध्याना मैना नैना रूप—१५८०।

...—वि. [सं.] **जिसकी प्राप्ति ध्यान से हो**।

...—वि. [सं.ध्यानिन्] **जो ध्यान में हो**।

...—वि. [सं] **साँवला, श्यामल**।

...—क्रि. स. [हिं ध्याना] **ध्यान लगाकर**।

..., ध्यायौ—क्रि. स. [हिं.ध्यान] (१) **ध्यान किया**। उ.—सूर प्रभु-चरन चित चेति चेतन करत, ब्रह्म-सिव-सेस-सुक-सनक ध्यायौ—१-११६। (ख) मैं तो एक पुरुष कौं ध्यायौ। अरु एकहिं सौं चित्त लगायौ—४-३। (ग) तैं गोविन्द चरन नहिं ध्यायौ—४-६। (२) **स्मरण किया, सुमरा**। उ.—हरिहिं मित्र-बिंदा चित ध्यायौ। हरि तहँ जाइ बिलंब न लायौ।

ध्यावत—क्रि. स. [हिं. ध्याना] **ध्यान करते हैं**। उ.—(क) नारदादि सनकादि महामुनि, सुमिरत मन-बच ध्यावत—६-११३। (ख) सनक संकर जाहि ध्यावत निगम अबरन बरन।

ध्यावै—क्रि. स. [हिं. ध्याना] **ध्यान करे**। उ.—कमल-नैन कौ छाँड़ि महातम, और देव कौ ध्यावै १-१६८ (२) **ध्यान लगाता है**। उ.—एक निरंतर ध्यावै ज्ञानी। पुरुष पुरातन सो निर्बानी—१०-३।

ध्येय—वि. [सं.] (१) **ध्यान करने योग्य**। (२) **जिसका ध्यान या स्मरण किया जाय**।

ध्रमसारी—संज्ञा स्त्री. [सं. धर्मशाला] **धर्मशाला**। उ.—तीन पैग बसुधा दै मोकौं, तहाँ रचौं ध्रमसारी—८-१४।

ध्रुपद—संज्ञा पुं. [सं. ध्रुवपद] **एक प्रकार का गीत**।

ध्रुव—वि. [सं.] (१) **एक ही स्थान पर अचल या स्थिर रहनेवाला**। (२) **सदा एक ही अवस्था में रहनेवाला**। (३) **निश्चित, पक्का**।

संज्ञा पुं. (१) **आकाश**। (२) **पर्वत**। (३) **खंभा**। (४) **बरगद का वृक्ष**। (५) **विष्णु**। (६) **हर**। (७) **ध्रुवतारा**। (८) **राजा उत्तानपाद का सुनीति के गर्भ से उत्पन्न पुत्र जो छोटी ही अवस्था में विमाता सुरुचि द्वारा तिरस्कृत होकर तप करने चला गया था। बालक की इस दृढ़ता से भगवान शीघ्र ही प्रसन्न हुए और उन्होंने वर दिया—सब लोकों और नक्षत्रों से ऊपर तुम सदा अचल भाव से स्थित रहोगे**। उ.—ध्रुवहिं अभै पद दियौ मुरारी—१-२८। (९) **पृथ्वी के वे दोनों सिरे जिनसे अक्षरेखा जाती मानी गयी है**।

ध्रुवता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **स्थिरता, अचलता**। (२) **दृढ़ता**। (३) **दृढ़ निश्चयता**।

ध्रुवतारा—संज्ञा पुं. [सं. ध्रुव+हिं. तारा] **एक तारा जो सदा ध्रुव अर्थात् मेरु के ऊपर रहता है**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्रुवदर्शक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सप्तर्षि मंडल।** (२) **कुतुबनुमा।**

ध्रुवदर्शन—संज्ञा पुं. [सं.] **विवाह की एक प्रथा जिसमें वर-वधू के संबंध की दीर्घता की कामना से ध्रुवतारा दिखाया जाता है।**

ध्रुवनंद—संज्ञा पुं. [सं.] **नंद जी के एक भाई का नाम।**

ध्रुवपद—संज्ञा पुं. [सं.] **ध्रुपद गीत।**

ध्रुवलोक—संज्ञा पुं. [सं.] **वह लोक जिसमें ध्रुव स्थित हैं।**

ध्रुवा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **ध्रुपद गीत।** (२) **सती।**

ध्रुवीय—वि. [सं.] (१) **ध्रुव-संबंधी।** (२) **ध्रुव प्रदेश का।**

ध्वंस—संज्ञा पुं. [सं.] **नाश, हानि, क्षय।**

ध्वंसक—वि. [सं.] **नाश करनेवाला।**

ध्वंसन—संज्ञा पुं. [सं.] **नाश करने की क्रिया या भाव।**

ध्वंसित—वि. [सं.] **नष्ट किया हुआ।**

ध्वंसी—वि. [सं. ध्वंसिन्] **नाश करनेवाला।**

ध्वज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चिह्न।** (२) **निशान, झंडा।** (३) **ध्वजा लेकर चलनेवाला।** (४) **दर्प, गर्व।**

ध्वजवान—वि. [सं.] (१) **जो ध्वजा लिये हो।** (२) **चिह्नवाला।**

ध्वजा—संज्ञा स्त्री. [सं. ध्वज] (१) **पताका, झंडा, निशान।** उ.—(क) द्रुपदकुमार होइ रथ आगै धनुष गहौ तुम बान। ध्वजा बैठि हनुमत गल गाजै प्रभु हाँकै रथ यान—१-२७५। (ख) प्रति-प्रति गृह तोरन ध्वजा धूप—६-१६६। (ग) उड़त ध्वजा तनु सुरति बिसारे अंचल नहीं सँभारति—२५६२।

ध्वजिक—वि. [सं.] **पाखंडी, आडंबरी।**

ध्वजी—वि [सं. ध्वजिन्] (१) **ध्वजवाला, चिह्नवाला।**

संज्ञा पुं.—(१) **संग्राम, रण।** (२) **ध्वजा लेकर चलनेवाला।**

ध्वनि, ध्वनी—संज्ञा स्त्री. [सं. ध्वनि] (१) **शब्द, नाद, आवाज।** उ.—(क) किंकिनि सब्द चलत ध्वनि रुनझुन ठुमुक-ठुमक गृह आवै—२५४६। (ख) गाये जु गीत पुनीत बहु बिधि वेद रवि सुंदर ध्वनी—१७०३। (२) **आवाज, गूंज।** (३) **वह काव्य जिसमें व्यंग्यार्थ की प्रधानता हो।** (४) **आशय, गूढ़ार्थ।**

ध्वनिग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] **कान।**

ध्वनित—वि. [सं.] (१) **प्रकट किया हुआ।** (२) **बजाया हुआ।**

संज्ञा पुं.—**मृदंग जैसा एक बाजा।**

ध्वन्य—संज्ञा पुं. [सं.] **व्यंग्यार्थ।**

ध्वन्यात्मक—वि. [सं.] (१) **ध्वनिमय।** (२) [illegible] **जिसमें व्यंग्य की प्रधानता हो।**

ध्वन्यार्थ—संज्ञा पुं. [ध्वन्यर्थ] **वह अर्थ जिसका बोध की अभिधा शक्ति से न होकर व्यंजना से हो।**

ध्वस्त—वि. [सं.] (१) **गिरा हुआ, च्युत।** (२) **टूटा-फूटा, भग्न।** (३) **नष्ट-भ्रष्ट।** (४) **पराजित।**

ध्वस्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नाश, विनाश।**

ध्वांत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अंधकार।** (२) **एक नरक** [illegible]

ध्वांतचर—संज्ञा पुं. [सं.] **निशाचर, राक्षस।**

ध्वांतवित्त—संज्ञा पुं. [सं.] **जुगनूं, खद्योत।**

ध्वांतशत्रु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सूर्य।** (२) **अग्नि।**

ध्वान—संज्ञा पुं. [सं.] **शब्द।**

न

न—**देवनागरी वर्णमाला का बीसवां और तवर्ग का पाँचवां व्यंजन वर्ण जिसका उच्चारण स्थान दंत है।**

नंग—संज्ञा पुं. [हिं. नंगा] (१) **नंगापन।** (२) **गुप्तांग।**

वि.—**लुच्चा, बदमाश और बेहया।**

नंगता—वि. [हिं. नंगा] (१) **वस्त्रहीन।** (२) **निर्लज्ज** [illegible]

नंग-धड़ंग—वि. [हिं. नंगा+अनु. धड़ंग] **बिलकुल नंगा।**

नँगपैरा—वि. [हिं. नंगा+पैर] **जो नंगे पैर हो।**

नंगा—वि. [सं. नग्न] (१) **जिसके शरीर पर वस्त्र न हो।** (२) **निर्लज्ज, बेहया।** (३) **लुच्चा।** (४) **ढका हुआ न हो, खुला हुआ।**

संज्ञा पुं.—(१) **शिव, महादेव।** (२) **एक** [illegible]

नंगाझोरी, नंगाझोली—संज्ञा स्त्री. [हिं. नंगा+झोली] **कपड़े खुलवाकर ली जानेवाली तलाशी।**

नंगाबुंगा—वि. [हिं. नंगा+बुंगा (अनु.)] (१) **वस्त्रहीन।** (२) **खुला हुआ।**

नंगाबुच्चा, नंगाबूचा—वि. [हिं. नंगा+बूचा] **निर्धन।**

नंगालुच्चा—वि. [हिं. नंगा+लुच्चा] **बेहया और नीच।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नँगियाना, नँग्याना—क्रि. स. [हिं. नंगा] (१) **नंगा करना।** (२) **सब कुछ छीन लेना।**

नँगियावन—संज्ञा स्त्री. [हिं. नँगियाना] (१) **नंगा करने की क्रिया।** (२) **सब कुछ ले लेने की क्रिया।**

नंगी—वि. [हिं. नंगा] **वस्त्रहीन** उ.—पारथ-तिय कुरुराज सभा मैं बोलि करन चहै नंगी। स्रवन सुनत करुना-सरिता भए, बाढ़यौ बसन उमंगी—१-२१।

नंदंत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पुत्र।** (२) **राजा।** (३) **मित्र।**

नंद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हर्ष, आनंद।** (२) **नौ निधियों में एक।** (३) **धृतराष्ट्र का एक पुत्र** (४) **वसुदेव का मदिरा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।** (५) **विष्णु।** (६) **एक तरह का मृदंग।** (७) **बाँसुरी का एक भेद।** (८) **एक राग।** (९) **लड़का, पुत्र।** (१०) **गोकुल में बसने वाले गोपों के नायक जिनके यहाँ श्रीकृष्ण का बाल्यकाल बीता था। यशोदा इनकी स्त्री थी। बालक कृष्ण को ये पुत्रवत् मानते थे और स्वभावतः उनके प्रति इनके हृदय में अगाध वात्सल्य था।**

नंदक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रीकृष्ण की तलवार।** (२) **राजा नंद जिन्होंने श्रीकृष्ण का पालन किया था।**

वि.—(१) **आनंददायक।** (२) **कुल-पालक।**

नंदकिशोर, नंदकिसोर—संज्ञा पुं. [सं. नंद+किशोर] **श्रीकृष्ण।**

नंदकुँवर, नंदकुमार—संज्ञा पुं. [सं. नंद+कुमार] **नंद जी के पुत्र, श्रीकृष्ण।**

नंदगाँव, नंदग्राम—संज्ञा पुं. [सं. नंदिग्राम] (१) **वृंदावन के निकट एक गाँव जहाँ नंद आदि गोप रहते थे।** उ.—हिलिमिलि चले सकल ब्रजवासी नंदगाँव फिरि आयो—सारा० ५३३। (२) **अयोध्या के निकट एक गाँव जहाँ चित्रकूट से लौटकर भरत चौदह वर्ष रहे थे।**

नंदथु—संज्ञा पुं. [सं.] **आनंद देनेवाला, पुत्र।**

नंददुलारे—संज्ञा पुं. [सं. नंद+हिं. दुलारे] **नंद के प्यारे नंदजी के प्यारे-दुलारे पुत्र, नंदजी के यहाँ रहते समय का श्रीकृष्ण का बाल-रूप।** उ.—कोमल कर गोवर्धन धारयौ जब हुते नंददुलारे—१-२५।

नंदनंद, नंदनंद, नंद-नंदन, नंदनंदन—संज्ञा पुं. [सं. नंद+नंदन] **नंदजी द्वारा पुत्र के समान पाले जानेवाले बालक श्रीकृष्ण।**

नंदनंदिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नंदजी की कन्या, योगमाया।**

नंदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पुत्र।** उ.—पारथ-सीस सोधि अष्टाकुल, तब जदुनंदन ल्याए—१-२९। (२) **इंद्र का उपवन।** (३) **कामाख्या देश का एक पर्वत।** (४) **शिवजी।** (५) **विष्णु।** (६) **केसर।** (७) **चंदन।** (८) **एक अस्त्र।** (९) **मेघ, बादल।**

वि.—**आनंद या संतोष देनेवाला।**

नंदनप्रधान—संज्ञा पुं. [सं.] **नंदन वन के स्वामी, इंद्र।**

नंदनमाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक तरह की माला जो श्रीकृष्ण को विशेष प्रिय थी।**

नंदनवन—संज्ञा पुं. [सं.] **इंद्र की वाटिका।**

नंदना—क्रि. अ. [सं. नंद] **प्रसन्न या संतुष्ट होना।**

संज्ञा स्त्री. [सं. नंद=बेटा] **पुत्री, लड़की।**

नंदनायक—संज्ञा पुं. [सं.] **गोपपति नंद।** उ.—साँचैहिं सुत भयौ नँदनायक कैं हौं नाहीं बौरावति—१०-२३।

नंदनी—संज्ञा स्त्री. [सं. नंदिनी] **कन्या, पुत्री।** उ.—मित्र-बिंदा यक नृपति नंदनी ताकौ माधव ब्याये—सारा. ६५५।

नँदरनियाँ, नँदरानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नंदरानी] **यशोदा।** उ. नंद जू के बारे कान्ह छाँड़ि दै मथनियाँ। बार बार कहति मातु जसुमति नँदरनियाँ—१०-१४५।

नँदरैया—संज्ञा पुं. [सं. नंद + हिं. राय] (१) **नंदराय, श्रीकृष्ण।** (२) **नंद जी।** उ.—(क) देखत प्रगट धरयौ गोबर्धन चकित भए नँदरैया—९६५। (ख) लकुटनि टेकि सबन मिलि राख्यौ अरु बाबा नँदरैया—१०७१।

नंदलाल—संज्ञा पुं. [सं. नंद+हिं. लाल] **श्रीकृष्ण।**

नंदसुत—संज्ञा पुं. [सं.] **श्रीकृष्ण।**

नंदा—संज्ञा पुं. [सं. नंद] (१) **पुत्र, बेटा।** उ.—आँगन खेलैं नंद के नंदा—१०-११७। (२) **बरवा छंद का एक नाम।**

संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दुर्गा, योगमाया।** (२) **गौरी।** (३) **एक तरह की कामधेनु।** (४) **प्रतिपदा,**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षष्ठी या एकादशी तिथि। (५) संपत्ति। (६) एक अप्सरा। (७) पति की बहन, ननद। (८) एक तीर्थ। (९) राधा की एक सखी का नाम। उ.—कहि राधा किन हार चोरायौ।..........। सुखमा सीला अवधा नंदा बृंदा जमुना सारि—१५८०।

नंदातीर्थ—संज्ञा पुं. [सं.] **हेमकूट पर्वत का एक तीर्थ।**

नंदात्मज—संज्ञा पुं. [सं.] **श्रीकृष्ण।**

नंदात्मजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **योगमाया।**

नंदादेवी—संज्ञा स्त्री [सं.] **हिमालय की एक चोटी।**

नंदि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आनंद।** (२) **आनंदमय ब्रह्म।**

नंदिक—संज्ञा पुं. [सं.] **आनंद, हर्ष।**

नंदिका—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव, महादेव।**

नंदिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **इंद्र की नंदनवाटिका।** (२) **प्रतिपदा, षष्ठी या एकादशी तिथि।**

नंदिकेश, नंदिकेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव के द्वारपाल।**

नंदिग्राम—संज्ञा पुं. [सं.] **अयोध्या के निकट एक गाँव जहाँ श्रीराम के वनवास की अवधि भर भरत जी तप करते रहे।**

नंदिघोष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अर्जुन का रथ जो उन्हें अग्निदेव से मिला था।** (२) **शुभ घोषणा।**

नंदित—वि. [सं.] **सुखी, प्रसन्न।**

वि. [हिं. नादना] **बजता हुआ।**

नंदितूर्य—संज्ञा पुं. [सं.] **एक प्राचीन बाजा।**

नंदिन—संज्ञा स्त्री. [सं. नंदिनी] **पुत्री, बेटी।**

नंदिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पुत्री, बेटी।** (२) **उमा।** (३) **गंगा का एक नाम।** (४) **दुर्गा का एक नाम।** (५) **ननद।** (६) **वसिष्ठ की कामधेनु जिसकी राजा दिलीप ने सेवा की थी।** (७) **पत्नी।**

नंदिमुख—संज्ञा पुं. [सं.] **शिवजी का एक नाम।**

नंदिरुद्र—संज्ञा पुं. [सं.] **शिवजी का एक नाम।**

नंदिवर्द्धन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शिव, महादेव।** (२) **पुत्र, बेटा।** (३) **मित्र।**

वि.—**आनंद या हर्ष बढ़ानेवाला।**

नंदी—संज्ञा पुं. [सं. नंदिन्] (१) **शिव के एक प्रकार के गण। इनके तीन वर्ग हैं—कनकनंदी, गिरिनंदी और शिवनंदी।** उ.—दच्छ देखि अतिसय दुख तए।...जज्ञ भाग याकौं नहिं दीजै।.. ....। नंदी-हृदय भयौ सुनि ताप। दियौ ब्राह्मननि कौं तिन साप-४-५। (२) **शिव का द्वारपाल।** (३) **विष्णु।**

वि.—**हर्ष या आनंद बढ़ानेवाला।**

नंदीपति—संज्ञा पुं. [सं.] **शिवजी, महादेव।**

नंदीमुख – संज्ञा पुं. [सं. नंदिमुख] **शिवजी का एक नाम।**

संज्ञा पुं. [सं. नांदीमुख] **एक प्रकार का श्राद्ध।**

नंदीश, नंदीश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] **शिवजी।**

नंदेउ, नंदेऊ, नंदोई—संज्ञा पुं. [हिं. नंदोई] **ननद के पति।**

न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **उपमा।** (२) **रत्न।** (३) **सोना।**

अव्य.—(१) **नहीं, मत।** उ.—(क) इहि राजस को को न बिगोयौ—१-५४। (ख) पवन न भई पताका अंबर भई न रथ के अंग—२५४०। (२) **कि नहीं, या नहीं (प्रश्नवाचक वाक्य-प्रयोग)।**

नइयो—क्रि. स. [हिं. नवाना] **नवाइयो, झुकाइयो।** उ.—ताको पूजि बहुरि सिर नइयो अरु कीजो परनाम—सारा. ५५३।

नइहर—संज्ञा पुं. [हिं. नैहर] **माता का घर, पीहर।**

नई—वि. [सं. नया] **नीतिज्ञ, नीतिवान्।**

वि.—स्त्री. [हिं. नया] **नवीन, नव।** उ.—(क) मातु-पिता भैया मिले नई रुचि नई पहिचानि-१-३२५। (ख) सूर के प्रभू की नित्य लीला नई संकै कहि कौन यह कछुक गाई—८-१६।

संज्ञा स्त्री.—**नयी बात, नवीन घटना।** उ.—नई न करन कहत प्रभु तुम हौ सदा गरीब-निवाज—१-१०८।

संज्ञा स्त्री. [हिं. नदी] **नदी, सरिता।**

नउँजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. लीची] **लीची नामक फल।**

नउ—वि. [सं. नव] (१) **नया, नवीन।** (२) **नौ (संख्या)।**

नउआ—संज्ञा पुं. [हिं. नाऊ] **नाऊ, नाई।** उ.—दि... तुरत नउआ (नौआ) को घुरकी—७-१८०।

नउका – संज्ञा स्त्री. [सं. नौका] **नाव, नौका।**

नउत—वि. [हिं. नवना] **नीचे को झुका हुआ।**

नउरंग—संज्ञा स्त्री. [हिं. नारंगी] **नारंगी।**

नउर—संज्ञा पुं. [हिं. नेवला] **नेवला।**

नउलि—वि. [सं. नवल] **नया, नवीन।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए—वि. [हिं. नया] **नवीन, नूतन।** उ.—(क) इहाँ अपसगुन होत नित नए—१-२८६। (ख) सिर दधि-माखन के माट गावत गीत नए—१०-२४। (ग) चाड़ सरै पहिचानत नाहीं प्रीतम करत नए—२९९३। (घ) इहाँ अटक अति प्रेम पुरातन वहाँ अति नेह नए —३१४१।

क्रि. अ. [हिं. नवना] **झुके।** उ.—ह्वै आधीन पंच ते न्यारे कुल लज्जा न नए री—पृ. ३३५ (४३)।

नएपंज—संज्ञा पुं. [देश.] **जवान घोड़ा।**

नओढ़—संज्ञा स्त्री. [हिं. नवोढ़ा] **वह नायिका जो लज्जा या भय से नायक के पास न जाना चाहती हो।**

नकटा—वि. [हिं. नाक+कटना] (१) **कटी नाकवाला।** (२) **जिसकी दुर्दशा या अप्रतिष्ठा हुई हो।** (३) **निर्लज्ज, बेहया।**

नकटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाक+कटना] (१) **नाक कटने की क्रिया।** (२) **अप्रतिष्ठा, दुर्दशा।**

वि. स्त्री.—(१) **जिसकी नाक कटी हो।** (२) **जिसकी दुर्दशा या अप्रतिष्ठा हुई हो।** (३) **निर्लज्ज।**

नकघिसनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाक+घिसना] (१) **जमीन पर नाक रगड़ने की क्रिया।** (२) **बहुत अधिक दीनता।**

नकचढ़ा वि. [हिं नाक+ चढ़ना] **चिड़चिड़े मिजाज का।**

नकटा—वि. [हिं. नाक+कटना] (१) **जिसकी नाक कटी हो।** (२) **जिसकी अप्रतिष्ठा या दुर्दशा हुई हो।** (३) **निर्लज्ज, बेहया।**

संज्ञा पुं.—(१) **वह जिसकी नाक कटी हो।** (२) **एक तरह का गीत।** (३) **उक्त गीत गाने का अवसर।**

नकटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नकटा] **वह जिसकी नाक कटी हो।** उ.- कच खुभि आँधरे काजर नकटी पहिरै बेसरि —३०२६।

नकतोड़ा—संज्ञा पुं. [हिं नाक+तोड़=गति] **नाक-भौं चढ़ाकर बात करना।**

नकतोड़े—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. नकतोड़ा] **नखरे।**

मुहा.—नकतोड़े उठाना—**नखरे सहना।** नकतोड़े तोड़ना—**बहुत ज्यादा नखरे दिखाना या अनखना कर काम करना।**

नकद—संज्ञा पुं. [अ. नक़द] **तैयार रुपया-पैसा।**

वि.—(१) (रुपया-पैसा) **जो तैयार हो और तुरंत काम में लाया जा सके।** (२) **खास. तुरंत, तैयार।**

क्रि. वि.—**तुरंत रुपया-पैसा देकर या लेकर।**

नकदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नकद] **रुपया-पैसा, रोकड़।**

नकना—क्रि. स. [हिं. नाकना] (१) **लाँघना, फाँदना, उल्लंघन करना।** (२) **चलना।** (३) **छोड़ना।**

क्रि. अ. [हिं. नकियाना] **नाक में दम होना।**

क्रि. स.—**नाक में दम करना।**

नकफूल—संज्ञा पुं. [हिं. नाक+फूल] **नाक में पहनने का फूल या कील नामक गहना।**

नकब—संज्ञा पुं. [अ. नक़ब] **दीवार में चोरी के उद्देश्य से लगाई गयी सेंध।**

नकबानी—संज्ञा स्त्री. [हिं नाक+बानी (?)] **नाक में दम, हैरानी, परेशानी।** उ.—उतै देखि धावै, इत आवै, अचरज पावै, सूर सुरलोक ब्रजलोक एक ह्वै रह्यौ। बिवस ह्वै हार मानी, आपु आयौ नकबानी, देखि गोप-मंडली कमंडली चितै रह्यौ—४८४।

नकबेसर—संज्ञा स्त्री. [हिं नाक+बेसर] **नाक में पहनने की बेसर या छोटी नथ।**

नकमोती—संज्ञा पुं. [हिं नाक+मोती] **नाक में पहनने का लटकना या मोती।**

नकल—संज्ञा स्त्री. [अ. नक़ल] (१) **सच्चे या खरे की अनुकृति।** (२) **असली के अनुरूप वस्तु बनाने की क्रिया।** (३) **प्रतिलिपि।** (४) **वेश, हाव-भाव का अनुकरण।** (५) **हास्यास्पद, धजा या आकृति।** (६) **हास्यपूर्ण बातचीत या चुटकुला।**

नकलनवीस—संज्ञा पुं. [हि. नकल+फ़ा. नवीस] **लेख आदि की नकल करके जीविका कमानेवाला।**

नकलनवीसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नकल नवीस] **नकल-नवीस का काम या पद।**

नकली—वि. [अ.] (१) **कृत्रिम, बनावटी।** उ.—मानुष-जनम पोत नकली ज्यौं, मानत भजन-बिना बिस्तार —१-४१। (२) **खोटा, जाली, झूठा।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकसीर—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाक+सं. क्षीर=जल] **नाक से रक्त बहना।**

नकाना—क्रि. अ. [हिं नकियाना] **बहुत परेशान होना।**

क्रि. स.—**नाक में दम करना, बहुत परेशान करना।**

नकाब—संज्ञा स्त्री. [अ. नक़ाब] (१) **चेहरा छिपाने का कपड़ा या जाली।** (२) **घूंघट।**

नकार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **'न' या 'नहीं' का बोधक शब्द या वाक्य।** (२) **अस्वीकृति, इनकार।** (३) **'न' अक्षर।**

नकारना—क्रि. अ. [हिं. न+करना] **इनकार करना।**

नकारा—वि. [हिं. न+कार्य] **बुरा, खराब।**

नकारात्मक—वि. [सं. नकार+आत्मक] (१) **अस्वीकृति-सूचक (उत्तर या कथन)।** (२) **जिसमें 'नहीं' हो।**

नकाशना—क्रि. स. [अ. नक्काशी] **नक्काशी बनाना।**

नकियाना—क्रि. अ. [हिं. नाक] (१) **नाक से बोलना या उच्चारण करना।** (२) **दुखी या हैरान होना।**

क्रि. स.—**दुखी, परेशान या तंग करना।**

नकीब—संज्ञा पुं. [अ. नक़ाब] (१) **बादशाही दरबारी चारण जो किसी को उपाधि या पद मिलने या किसी के आने की घोषणा करते हैं।** उ.—आसा कैं सिंहासन बैठ्यौ, -छत्रदंभ सिर तान्यौ। अपजस अति नकीब कहि टेर्यौ, सब सिर आयसु मान्यौ—१-१४१। (२) **कड़खा गानेवाला पुरुष, कड़खैत।**

नकुट—संज्ञा पुं. [सं.] **नाक, नासिका।**

नकुड़ा, नकुरा—संज्ञा पुं. [सं. नक्र+पुट, प्रा. नक्कउड़] **नथना।** (२) **नाक का अगला भाग।**

नकुल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **राजा पांडु के चौथे पुत्र जो उनकी पत्नी माद्री के गर्भ से अश्विनीकुमारों द्वारा उत्पन्न हुए थे। इनका नाम तंत्रिपाल भी था। ये बहुत सुंदर थे। पशु-चिकित्सा का इन्हें अच्छा ज्ञान था। इनका विवाह चेदिराज की कन्या करेणमती से हुआ था जिससे इनके निरमित्र नामक पुत्र था। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में इन्होंने पश्चिम प्रदेशों पर विजय पायी थी।** (२) **नेवला नामक जंतु।** (३) **बेटा, पुत्र।** (४) **शिव, महादेव।** (५) **एक प्राचीन बाजा।**

वि.—**जिसका कुल-परिवार न हो।**

नकुलक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक प्राचीन गहना।** (२) **थैली।**

नकुला—संज्ञा स्त्री. [सं.] **गौरी, पार्वती।**

संज्ञा पुं. [सं. नकुल] **नेवला।**

नकुली—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **केसर।** (२) **नेवले की मादा।** (३) **रुपया-पैसा रखने की थैली।**

नकुवा—संज्ञा पुं. [हिं. नाक+उवा (प्रत्य.)] (१) **नाक नासिका।** (२) **तराजू की डंडी का छेद।**

नकेल—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाक] **भालू या ऊँट की नाक में बँधी रस्सी या लगाम।**

मुहा.—किसी की नकेल हाथ में होना—**किसी की कोर दबी होने या स्वार्थ अटका रहने के कारण वश या अधिकार में होना।**

नक्कना—क्रि. स. [सं. लंघन] **लाँघना, नांघना।**

नक्का—संज्ञा पुं. [हिं. नाक] (१) **सुई का छेद।** (२) **कौड़ी।**

नक्कार—संज्ञा पुं. [सं.] **तिरस्कार, अवज्ञा।**

नक्कारखाना—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **नौबत बजने की जगह।**

मुहा.—नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है—(१) **बहुत शोरगुल या भीड़-भाड़ में कही हुई बात कौन सुनता है?** (२) **बड़े लोगों के बीच में छोटों की बात कौन सुनता है?**

नक्कारची—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **नगाड़ा बजानेवाला।**

नक्कारा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **नगाड़ा, नौबत, डंका।**

मुहा.—नक्कारा बजाते फिरना—**(किसी बात को) चारों ओर कहते फिरना।** नक्कारा बजाकर—**खुल्लम-खुल्ला, डंके की चोट पर।** नक्कारा हो जाना—**बहुत फूल जाना, फूलकर नगाड़ा हो जाना।**

नक़्क़ाल—वि. [अ.] (१) **नकल करनेवाला।** (२) **बहुरूपिया।**

नक़्क़ाली—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **नकल करने का काम।** (२) **बहुरूपियापन।**

नक्काश—संज्ञा पुं. [अ.] **नक्काशी करनेवाला।**

नक्काशी—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **धातु, पत्थर आदि पर बेल-बूटे बनाना।** (२) **बेल-बूटे।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...शीदार—वि. [अ. नक्काशी + फ़ा. दार] जिस पर बेलबूटे का या कारीगरी का काम किया गया हो।

...—वि. [हिं. नाक] (१) बड़ी नाकवाला। (२) अपनी प्रतिष्ठा का बहुत अधिक ध्यान करनेवाला। (३) सबसे अलग और उलटा काम करनेवाला।

...—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संध्याकाल। (२) रात। (३) एक व्रत।

वि.— लज्जित, शरमाया हुआ।

...—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रात को घूमनेवाला। (२) राक्षस।

...री—वि. [सं. नक्तचारिन्] रात में घूमनेवाला।

... वि. [सं.] जिसे रात में दिखायी न दे।

...—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ग्राह नामक जल-जंतु। उ.—...हू तै न्यारै कीनौ चक्र नक्र सीस दीनौ, देवकी के प्यारे लाल ऐंचि लाए थल मैं—८–५। (२) घड़ियाल। (३) नाक, नासिका।

...-संज्ञा पुं. [सं.] घड़ियाल, ग्राह, मगर।

...—वि. [अ. नक़्श] अंकित, चित्रित, खचित।

मुहा.— मन में नक्श करना—किसी बात का निश्चय करना। मन में नक्श कराना—कोई बात मन में बैठाना। नक्श होना—पूरा पूरा निश्चय हो जाना।

संज्ञा पुं. [अ.] (१) चित्र, तसवीर (२) कलम-कूची आदि से बनाया गया बेल-बूटे, फूल पत्ती आदि का काम। (२) मोहर, छापा। (३) जादू-टोना।

...—संज्ञा पुं. [अ. नकशा] (१) चित्र, तसवीर। (२) बनावट-आकृति। (३) वस्तु या पदार्थ का स्वरूप। (४) चाल-ढाल। (५) दशा, अवस्था। (६) ढाँचा। (७) मानचित्र।

...—संज्ञा पुं. [सं.] तारा या तारों का समूह जो चंद्रमा के पथ में पड़ता हो। इनकी संख्या हमारे यहाँ सत्ताइस मानी गयी है; यथा— अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद, रेवती। इनके अतिरिक्त एक 'अभिजित' नक्षत्र और था जो अब 'पूर्वाषाढ़ा' के ही अंतर्गत माना जाता है।

नक्षत्रदर्श—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नक्षत्रों को देखनेवाला। (२) ज्योतिषी।

नक्षत्रदान—संज्ञा पुं. [सं.] भिन्न-भिन्न नक्षत्रों में अलग-अलग पदार्थों का दान।

नक्षत्रनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा।

नक्षत्रप, नक्षत्रपति—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा।

नक्षत्रपथ—संज्ञा पुं. [सं.] नक्षत्रों के चलने का मार्ग।

नक्षत्रमाला- संज्ञा स्त्री. [सं.] २७ मोतियों की माला।

नक्षत्रराज—संज्ञा पुं. [सं.] नक्षत्रों का स्वामी, चंद्रमा।

नक्षत्रलोक—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रलोक से ऊपर का लोक जिसमें नक्षत्र हैं।

नक्षत्रवृष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] तारा टूटना।

नक्षत्रसाधक— संज्ञा पुं. [सं.] शिवजी, महादेव।

नक्षत्री—संज्ञा पुं. [सं. नक्षत्रिन्] (१) चंद्र। (२) विष्णु।

वि. [सं. नक्षत्र+ई] भाग्यशाली, जो अच्छे नक्षत्र में जन्मा हो।

नक्षत्रेश, नक्षत्रेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा।

नख—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नाखून। (२) एक गंधद्रव्य। (३) खंड।

संज्ञा स्त्री. [फ़ा. नख] बटा हुआ तागा, डोर।

नखक्षत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नाखून गड़ने से बन जानेवाला चिह्न। (२) स्त्री के शरीर पर का चिह्न जो पुरुष के नाखून से बन जाय।

नखचारी—वि. [सं. नखचारिन्] पंजे के बल चलनेवाला।

नखच्छत—संज्ञा पुं. [सं.नखक्षत] नाखून गड़ाने का चिह्न।

नखत—संज्ञा पुं. [सं. नक्षत्र] नक्षत्र। उ.— नखत उत्तरा आप बिचारेउ काल कंस को आयउ—सारा. ५२५।

नखतर—संज्ञा पुं. [सं. नक्षत्र] तारा, नक्षत्र।

नखतराज, नखतराय—संज्ञा पुं. [सं. नक्षत्र] चंद्रमा।

नखन—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. नख] नाखून। उ.—कर कपोल भुज धरि जंघा पर लेखनि भाई नखन की रेखनि—२७२२।

नखना—क्रि. अ. [हिं. नाखना] लाँघ जाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रि. स.—**लांघना, पार करना ।**

क्रि. स. [सं. नष्ट] **नष्ट करना ।**

नखनि—संज्ञा पुं. [सं. नख+नि (प्रत्य.)] **नखों से** । उ.—नरहरि रूप धर्यौ करुनाकर, छिनक माहिं उर नखनि बिदार्यौ—१-१४ ।

नख-प्रकास—संज्ञा पुं. [सं. नख+प्रकाश]—**नाखून की छटा, सुंदरता या ज्योति** । उ.—सूर स्याम-पद-नख-प्रकास बिनु, क्यौं करि तिमिर नसावै—१-४८ ।

नखरा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **(१) नाज, चोचला, हाव-भाव । (२) चुलबुलापन । (३) बनावटी इनकार ।**

नखरीला—वि. [फ़ा. नखरा+ईला] **नखरा करनेवाला ।**

नखरेखा—संज्ञा स्त्री. [सं. नख+रेख] **(१) नख गड़ने का चिह्न । (२) कश्यप की एक पत्नी जो बादलों की माता थी ।**

नखरेबाज—वि. [फ़ा.] **बहुत नखरा करनेवाला ।**

नखरेबाजी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. नखरा+बाजी] **नखरा करने की क्रिया या भाव ।**

नखरेट, नखरौटा—संज्ञा स्त्री. [सं. नख+हिं. खरोट] **नाखून की खरोट, नाखून गड़ने का चिह्न ।**

नखबिंदु—संज्ञा पुं. [सं.] **नाखूनों पर मेंहदी या महावर से बनाया जानेवाला गोल या चंद्राकार चिह्न ।**

नखविष—वि. [सं.] **जिसके नाखूनों में विष हो ।**

नखशिख, नखसिख—संज्ञा पुं. [सं. नख+शिख] **पैर के नख से सिर तक, शरीर के सारे अंग ।**

मुहा.—नखशिर से—**(१) सिर से पैर तक । (२) बहुत बुरी तरह से, फूट-फूटकर, रोम-रोम से ।** उ.—(क) मनसिज मन हरन हँसि साँवरो सुकुमार रासि नखसिख अंग-अंग निरखि सोभा की सींव नखीरी—२४६२ । (ख) संकर कौ मन हर्यौ कामिनी, सेज छाँड़ि भू सोयौ । चारु मोहिनी आइ आँध कियौ, तब नख-शिख तैं रोयौ—१-४३ ।

नखहिं—संज्ञा पुं. [सं. नख+हिं (प्रत्य.)] **हाथ के नखों पर ।** उ.—बूड़तहिं ब्रज राखि लीन्हौ, नखहिं गिरिवर धरन—१-२०२ ।

नखांक—संज्ञा पुं [सं.] **नाखून गड़ने का चिह्न ।**

नखास—संज्ञा पुं. [अ. नख्खास] **कबाड़ी बाजार ।**

नखायुध—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) नखों से शरीर फाड़ डालनेवाले हिंसक पशु । (२) नृसिंह ।**

नखियाना—क्रि. स. [हिं. नख+इयाना] **नाखून गड़ाना ।**

नखी—वि. [सं. नखिन्] **नाखून से चीरने-फाड़नेवाला ।**

नखोटना—क्रि. स. [सं. नख+ओटना (अनु.)] **नाखून से नोचना या खरोचना ।**

नखोटै—क्रि. स. [हिं. नखोटना] **नखों से नोचता है ।** उ.—कान्ह बलि जाऊँ, ऐसी आरि न कीजै ।......। धरनि पर लोटै, माता को चीर नखोटै—१०-१८...

नख्खास—संज्ञा पुं. [अ. नख्ख़ास] **कबाड़ी बाजार ।**

नग—वि. [सं.] **न चलनेवाला, अचल, स्थिर ।**

संज्ञा पुं.—**(१) पहाड़, पर्वत ।** उ.—सुंदर आन... नग पै नगपति धन कहि लजत न गात—सा. ६... **(२) पेड़, बृक्ष । (३) साँप । (४) सूर्य, रवि । (...) सात की संख्या ।**

संज्ञा पुं. [फ़ा. नगीना] **(१) पत्थर या शीशे का रंगीन टुकड़ा, नगीना ।** उ.—इते मान यह ... महा सठ, हरि-नग बदलि, बिषय-बिष आनत—१-११४ । **(२) संख्या ।**

नगज—वि. [सं. नग+ज] **जो पर्वत से उत्पन्न हो ।**

नगजा—वि. [सं. नगज] **पर्वत से उत्पन्न होनेवाली ।**

संज्ञा स्त्री.—**(हिमालय-कन्या) पार्वती ।**

नगण—संज्ञा पुं. [सं.] **पिंगल शास्त्र का एक 'गण' जिसमें तीनों अक्षर लघु होते हैं, जैसे 'कमल' ।**

नगण्य—वि. [सं.] **साधारण, तुच्छ, गया-बीता ।**

नगदंती—संज्ञा स्त्री. [सं.] **विभीषण की स्त्री ।**

नगद—संज्ञा पुं. [हिं. नकद] **तैयार रुपया-पैसा ।**

नगदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नकद] **तैयार रुपया-पैसा ।**

नगधर, नगधरन—संज्ञा पुं. [सं. नग+हिं. धरना] **(गोवर्द्धन) पर्वत को उठानेवाले श्रीकृष्ण ।**

नगनंदनो—संज्ञा स्त्री. [सं.] **हिमालय-कन्या पार्वती ।**

नगन—वि. [सं. नग्न] **(१) वस्त्रहीन ।** उ.—दुस्... सन गहि केस द्रौपदी, नगन करन कौ ल्यायौ—१-... **(२) जिसके ऊपर आवरण न हो ।**

नगनी—संज्ञा स्त्री. [सं. नग्ना] **(१) छोटी आयु की बालिका । (२) पुत्री, बेटी ।** उ.—रवि तनया ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहि बिग्राहि। कच कह्यौ तू गुरु नगनी आहि। (३) **वस्त्रहीन स्त्री।**

गपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सुमेरु**। उ.—चतुरानन बल सँभारि मेघनाद आयौ। मानौ घन पावस मैं नगपति है छायौ—९-९६। (२) **हिमालय पर्वत**। (३) **चंद्रमा**। (४) **कैलाश के स्वामी शिवजी**। उ.—सुंदर आखर नग पै नगपति घन कहि लजत न गात—सा. ६२।

भिद—संज्ञा पुं. [सं.] (**पर्वतों के पंख काटनेवाले) इंद्र**।

जू—वि. [सं.] **जो पर्वत से उत्पन्न हुआ हो**।

र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शहर**। उ.—(क) जनम गहिबी करत गयौ। काया-नगर बड़ी गुंजाइस नाहिन कछु बढ़यौ—१-६४। (ख) नगर नीक औ काम बीच ते गोग्रह अंत भरे—सा. ८०। (२) **संसार**।

रनायिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वेश्या**।

रनारि, नगरनारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वेश्या**।

रपाल—संज्ञा पुं. [सं॰] **नगर-रक्षक अधिकारी**।

रमार्ग—संज्ञा पुं. [सं.] **नगर का राजमार्ग**।

रवासी—संज्ञा पुं. [सं.] **नगर का रहनेवाला**।

रविवाद—संज्ञा पुं. [सं.] **दुनिया के झगड़े-टंटे**।

रहा—वि. [हिं. नगर +हा] **शहर में रहनेवाला**।

राई—संज्ञा स्त्री. [हिं. नगर+आई (प्रत्य.)] (१) **नागरिकता, नागरिकों की शिष्टता-विशिष्टता**। (२) **चतुराई, चालाकी**। उ.—चारौं नैन भए इक ठाहर, मन हीं मन दुहुँ रुचि उपजाई। सूरदास स्वामी रति-नागर, नागरि देखि गई नगराई—७२०।

राध्यक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] **नगर-रक्षक अधिकारी**।

री—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नगर, शहर**। उ.—मथुरा नगरी कान्ह राजा, सूर मनहिं बधावना—५७७।

संज्ञा पुं. [सं. नगरिन्] **नगर में रहनेवाला**।

ड़ा, नगारा—संज्ञा पुं. [फ़ा. नक्कारा] **डंका, धौंसा**।

धिप - संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हिमालय पर्वत**। (२) **सुमेरु पर्वत**।

रि—संज्ञा पुं. [सं. नग=पर्वत+अरि] **इन्द्र जिन्होंने पर्वतों के पंख काट डाले थे**।

नी—संज्ञा स्त्री. [सं. नग=पर्वत+ई (प्रत्य.)] (१) **रत्न, नग, नगीना**। (२) **पर्वत-पुत्री पार्वती**। (३) **पहाड़िन**।

नगीच—क्रि. वि. [हिं. नजदीक] **निकट, पास**।

नगीना—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **रत्न, मणि**।

मुहा.—नगीना सा— **बहुत छोटा और सुन्दर**।

नगेंद्र, नगेश—संज्ञा पुं. [सं.] **पर्वतराज, हिमालय**।

नगौक—संज्ञा पुं. [सं. नगौकस्](१) **पक्षी**। (२) **कौआ**।

नग्न—वि. [सं.] (१) **जिसके शरीर पर वस्त्र न हो**। (२) **जिसके उपर आवरण न हो**।

नग्नता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नंगे होने का भाव**। (२) **नीचता, निर्लज्जता, दुष्टता**।

नघना—क्रि. स. [सं. लंघन] **लाँघना, नांघना**।

नघाना—क्रि. स. [सं. लंघन] **लांघना, फाँदना**।

नघावत—क्रि. स. [हिं. नाँघना] **नांघने में, आरपार जाने में, लाँघते हैं**। उ.—घर-आँगन अति चलत सुगम भए, देहरि अँटकावत। गिरि गिरि परत, जात नहिं उलँघी, अति स्रम होत नघावत—१०-१२५।

नचत—क्रि. अ. [हिं. नाचना] **नाचते (हैं)**। उ.—नचत हैं सारंग सुंदर करत सब्द अनेक—सा. ६४।

नचना—क्रि. अ. [हिं. नाचना] **नृत्य करना, नाचना**।

वि.—(१) **नाचनेवाला**। (२) **चक्कर खानेवाला**।

नचनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाचना] **नाच, नृत्य**।

नचनियाँ—संज्ञा पुं. [हिं. नाचना] **नाचनेवाला**।

नचनी—वि. स्त्री. [हिं. नचना] (१) **नाचनेवाली**। (२) **चक्कर खानेवाली**।

नचवैया—संज्ञा पुं. [हिं. नाच] **नाचनेवाला**।

नचाइ—क्रि. स. [हिं. नाचना का प्रे.] **नचाना**। उ.—प्रम सहित पग बाँधि घूँघरू, सक्यौ न अंग नचाइ—१-१५५।

नचाई—क्रि. स. [हिं. नचाना] **नाचने को प्रवृत्त किया, दूसरे को नचाया**। उ.—सो मूरति तैं अपनैं आँगन, चुटकी दै जु नचाई—३६३।

नचाना—क्रि. स. [हिं. नाचना का प्रे.] (१) **दूसरे को नाचने में प्रवृत्त करना**। (२) **किसी से बार-बार उठने बैठने या इधर-उधर जाने का काम कराना**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा.—नाच नचाना—(१) **बार-बार उठने-बैठने का काम कराना।** (२) **उठा-बैठा कर या दौड़ा-घुमाकर परेशान करना।**

(३) **चक्कर खिलाना, घुमाना।**

मुहा.—आँखें (नयन, नेत्र) नचाना—**चंचलता के साथ इधर उधर बार-बार देखना।**

(४) **इधर-उधर दौड़ा-फिराकर हैरान करना।**

नचावई—क्रि. स. [हिं. नचाना] **नचाती है, नाचने को प्रेरित करती है।** उ.—जसुमति सुतहिं नचावई छबि देखति जिय तैं—१०-१३४।

नचावत—क्रि. स. [सं. नृत्य, हिं. नाच] (१) **नचाते हैं।** उ.—चुटकी दै-दै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसुकात —१०-२१५। (२) **घुमाती हुई।** उ.—हाथ नचावत आवति ग्वारिनि जीभ करै किन थोरी—१०-२६३। (३) **घुमाते हैं, चक्कर खिलाते हैं, दौड़ाते फिराते हैं।** उ.—कबहूँ सधे अस्व चढ़ि आपुन नाना भाँति नचावत—सारा. १६०।

नचावहीं—क्रि. स. [हिं. नचाना] **नचाती हैं, नाचने को प्रेरित करती हैं।** उ.—चुटकी देतिं नचावहीं सुत जानि नन्हैया—१०-११६।

नचावहुगे—क्रि. स. [हिं. नचाना] **नाचने को प्रेरित करोगे।**

मुहा.—नाच नचावहुगे—**हैरान-परेशान करोगे।** उ.—तब चरित्र हमहीं देखैंगी जैसे नाच नचावहुगे —१६७८।

नचावै—क्रि. स. [हिं. नचाना] **नाचने को प्रेरित करे।**

मुहा.—नाच नचावै—**हैरान-परेशान करनेवाले काम करावे।** उ.—माया नटी लकुटि कर लीन्हे कोटिक नाच नचावै—१-४२।

नचिकेता—संज्ञा पं. [सं. नचिकेतस्] (१) **वाजश्रवा ऋषि का पुत्र जिसने मृत्यु से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था।** (२) **अग्नि।**

नचिबौ—संज्ञा पुं. [हिं. नाचना] **नाचने की क्रिया या भाव।** उ.—सूरदास प्रभु हरि-सुमिरन बिनु जोगी-कपि ज्यौं नचिबौ—१-५६।

नचीला—वि. [हिं. नाच] **घुमक्कड़, चंचल।**

नचौहाँ—वि. [हिं. नाचना+औहाँ (प्रत्य.] (१) **नाचने-वाला।** (२) **चंचल, अस्थिर।**

नच्यौ—क्रि. अ. [हिं. नाच](१) **नाचना, नाच करना।**

प्र.—उघरि नच्यौ चाहत हौं—**नंगे नाचना चाहता हूँ, निर्लज्जता का व्यवहार करना चाहता हूँ।** उ.—हौं तौ पतित सात पीढ़िनि कौ, पतितै ह्वै निस्तरिहौं। अब हौं उघरि नच्यौ चाहत हौं, तुम्हें बिरद बिन करि—१-१३४।

(२) **स्थिर न रहा, चंचलता दिखायी।** उ.—तिहारे आगै बहुत नच्यौ। निसि दिन दीनदयाल देवमनि, बहु बिधि रूप रच्यौ—१-१७४।

नछत्र—संज्ञा पुं. [सं. नक्षत्र] **चन्द्रमा के पथ में पड़नेवाले तारे जिनके विभिन्न नाम रखे गये हैं।** उ.—रामचन्द्र दीपत नछत्र में पुरी धनद रुचि रुचि तम हारी—सा. ६८।

नछत्री—वि. [सं. नक्षत्र+ई (प्रत्य.)] **जिसका जन्म अच्छे नक्षत्र में हुआ हो, भाग्यवान।**

नजदीक - क्रि. वि. [फ़ा. नजदीक] **निकट, पास।**

नजदीकी—वि. [हिं. नजदीक] **निकट या पास का।**

नजम—संज्ञा स्त्री. [अ. नज़्म] **कविता, पद्य।**

नजर—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **दृष्टि, चितवन।**

मुहा.—नजर आना—**दिखायी देना।** नजर करना—**देखना।** नजर पर चढ़ना—**अच्छा लगना, भा जाना।** नजर पड़ना—**दिखायी पड़ना।** नजर फेंकना—(१) **दूर तक देखना।** (२) **सरसरी तौर से देखना।** नजर बाँधना—**जादू-टोने से कुछ का कुछ दिखाना।**

(२) **कृपा-दृष्टि, दया-दृष्टि।**

मुहा.—नजर रखना—**दया दृष्टि बनाये रखना।**

(३) **निगरानी, देखरेख।** (४) **ध्यान, ख्याल।** (५) **परख, पहचान।** (६) **कुदृष्टि जो किसी सुंदर वस्तु या प्राणी पर पड़कर उसको हानि पहुँचा सके।**

मुहा.—नजर उतारना—**टोना-टुटका करके कुदृष्टि का कुप्रभाव दूर करना।** नजर खाना (खा जाना)—**कुदृष्टि का कुफल भुगतना।** नजर जलाना (झाड़ना)—**कुदृष्टि का कुप्रभाव दूर करना।** नजर लगाना—**कुदृष्टि डालकर हानि पहुँचाना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) भेंट, उपहार। (२) अधीनस्थ कर्मचारी या प्रजावर्ग की ओर से भेंट में दिया जानेवाला धन आदि।

नजरना—क्रि. अ. [अ. नजर + हिं. ना (प्रत्य.)] (१) देखना। (२) कुदृष्टि डालना (३) कुदृष्टि लग जाना।

नजरबंद—वि. [अ. नजर + फा. बंद] (१) जिस पर कड़ी निगरानी रखी जाय। (२) जो ऐसे स्थान पर निगरानी में रखा जाय जहाँ कोई आ-जा न सके।

संज्ञा पुं.—जादू-टोने से दृष्टि बाँधकर किया जानेवाला खेल।

नजरबंदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नजरबंद] (१) किसी पर कड़ी निगरानी रखने का भाव। (२) कड़ी निगरानी का दंड। (३) जादूगरी, बाजीगरी।

नजराना—क्रि. स. [हिं. नजर+आनना (प्रत्य.)] (१) भेंट-उपहार में देना। (२) नजर लगाना, कुदृष्टि डालना।

नजराना—क्रि. अ. [हिं. नजर] नजर लग जाना, कुदृष्टि के कुप्रभाव में आ जाना।

क्रि. स.—नजर लगाना।

संज्ञा पुं.—(१) भेंट, उपहार। (२) भेंट या उपहार-स्वरूप दी जानेवाली वस्तु।

नजरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. नजर] (१) दृष्टि, चितवन। (२) दया-दृष्टि। (३) निगरानी। (४) ध्यान, ख्याल। (५) परख। (६) कुदृष्टि जो किसी सुंदर वस्तु या प्राणी को हानि पहुँचा सके।

नजला—संज्ञा पुं. [अ. नज़लः] जुकाम, सरदी।

नजाकत—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. नज़ाकत] सुकुमारता।

नजात—संज्ञा स्त्री. [अ.] छुटकारा, मुक्ति।

नजारा—संज्ञा पुं. [अ. नज़ारा] (१) दृष्टि। (२) दृश्य।

नजिकाई—क्रि. अ. [हिं. नजिकाना] निकट आना। उ.—मरन अवस्था जब नजिकाई।

नजिकाना—क्रि. अ. [हिं. नजदीक+आना (प्रत्य.)] निकट आना, नजदीक पहुँचना।

नजीक—क्रि. वि. [फ़ा. नजदीक] निकट, पास।

नजीर—संज्ञा स्त्री. [अ. नज़ीर] उदाहरण, मिसाल।

नजूम—संज्ञा पुं. [अ.] ज्योतिष विद्या।

नजूमी—संज्ञा पुं. [अ.] ज्योतिषी।

नट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नाटक का अभिनेता। (२) एक जाति जिसका काम गाना-बजाना है। (३) एक नीच जाति जो रस्सी और बाँस पर खेल-तमाशे और कसरत करके पेट पालती है। उ.—मन मेरैं नट के नायक ज्यौं नितहीं नाच नचायौ—१-२०५। (४) एक राग। (५) अशोकवृक्ष।

नटई—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) गला। (२) गले की घंटी।

नटकनि—संज्ञा स्त्री. [सं. नट] नट की कला, नृत्य, नाच। उ.—लज्जित मनमथ निरखि बिमल छबि, रसिक रंग भौंहनि की मटकनि। मोहनलाल, छबीलौ गिरिधर, सूरदास बलि नागर नटकनि—६१८।

नटखट—वि. [हिं. नट+अनु. खट] उपद्रवी, ऊधमी।

नटखटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नटखट] शरारत, ऊधम।

नटचर्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] अभिनय।

नटता—संज्ञा स्त्री. [सं.] नट की क्रिया या भाव।

नटन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नृत्य। (२) अभिनय।

नटना—क्रि. अ. [सं. नट] (१) अभिनय करना। (२) नाचना। (३) कहकर मुकर जाना।

क्रि. स. [सं. नष्ट] नष्ट करना।

क्रि. अ.—नष्ट हो जाना।

नटनागर—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण। उ.—नटनागर पट पै तब ही ते लटक रह्यौ मन मेरौ—सा. ४२।

नटनारायण—संज्ञा पुं. [सं.] एक राग।

नटनि—संज्ञा स्त्री. [सं. नर्तन] नृत्य, नाच।

संज्ञा स्त्री. [हिं. नटना] मुकरने की क्रिया या भाव, अस्वीकृति।

संज्ञा स्त्री. [हिं. नटनी] नट जाति की स्त्री।

नटनी—संज्ञा स्त्री. [सं. नट+नी (प्रत्य.)] (१) नट की स्त्री। (२) नट जाति की स्त्री। उ.—ज्यों नटनी कर लिए लकुटिया कपि ज्यौं नाच नचावै—३०८८।

नटमल—संज्ञा पुं. [सं.] एक राग।

नटमल्लार—संज्ञा पुं. [सं.] एक राग।

नटराज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) महादेव। (२) श्रीकृष्ण।

नटवति—क्रि. स. [हिं. नटवना] अभिनय करती है, स्वाँग भरती है। उ.—एक ग्वालि नटवति बहु लीला एक कर्म गुन गावति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नटवना—क्रि. स. [सं. नटन] **अभिनय या स्वांग करना।**

नटवर—संज्ञा पं. [सं.] (१) **नाट्य-कला में बहुत दक्ष व्यक्ति।** उ.—कटि तट पट पियरो नटवर बपु साधे सुख रुख जीके—सा. १००। (२) **मुख्य नट।** (३) **श्रीकृष्ण जो नाट्य कला के आचार्य विख्यात हैं।**

वि.—(१) **नाट्यकला में दक्ष।** उ.—सूरदास प्रभु मुरलि बजावत, ब्रज आवत नटवर गोपाल—४७२। (२) **बहुत चतुर, चालाक।**

नटवा—संज्ञा पुं. [सं. नट] **नट।** उ.—वेष धरि-धरि हरयौ पर-धन, साधु-साधु कहाइ। जैसैं नटवा लोभ-कारन करत स्वाँग बनाइ—१-४५।

वि. [हिं. नाटा] **नाटे कद का।**

नटसार, नटसारा—संज्ञा स्त्री. [सं. नाट्यशाला] **वह स्थान जहाँ नाटक का अभिनय हो।**

नटसाल—संज्ञा स्त्री. [सं. नट+हिं. सालना] (१) **चुभे हुए काँटे का वह भाग जो टूटकर शरीर में ही रह गया हो।** (२) **बाण की गाँसी जो टूटकर शरीर में रह जाय।** (३) **बहुत छोटी फाँस जो निकल न सके।** (४) **कसक, पीड़ा।**

नटांतिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **लज्जा, लाज, शर्म।**

नटिन, नटिनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नटनी] **नट की स्त्री।**

नटी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नट जाति की स्त्री।** (२) **नाचनेवाली, नर्तकी।** (३) **अभिनय करनेवाली।** (४) **नचानेवाली।** उ.—माया नटी लकुटि कर लीन्हे कोटिक नाच नचावै—१-४२ (५) **वेश्या।**

नटुआ, नटुवा—संज्ञा पुं. [हिं. नट] **नट।**

संज्ञा—स्त्री. [हिं. नटई] (१) **गला।** (२) **गले की घंटी।**

नटेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **महादेव।** (२) **श्रीकृष्ण।**

नट्ट—संज्ञा पुं. [सं. नट] **नट।**

नट्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक रागिनी।**

नठना—क्रि. अ. [सं. नष्ट] **नष्ट होना।**

क्रि. स.—**नष्ट करना।**

नड़—संज्ञा पुं. [सं.] **नरसल, नरकट।**

नढ़ना—क्रि. स. [हिं. नाथना] (१) **गूँथना।** (२) **बाँधना।**

नत—वि. [सं.] (१) **झुका हुआ।** (२) **विनीत।**

नतन—संज्ञा पुं. [सं.] **नत होने की क्रिया या भाव।**

नतपाल—संज्ञा पुं. [सं. नत+पालक] **प्रणाम करनेवाले का पालक, प्रणतपाल, शरणपाल।**

नतमस्तक—वि. [सं.] **(लज्जा, संकोच, विनय आदि से) जिसका मस्तक झुका हुआ हो।**

नत-माथ—वि. [सं. नत+हिं. माथा] **(लज्जा, संकोच, विनय आदि से) जिसका मस्तक झुका हुआ हो।**

नतर, नतरक, नतरु, नतरुक—क्रि. वि. [हिं. न+तो] **नहीं तो, अन्यथा।** उ.—तजि अभिमान, राम कहि बौरे, नतरुक ज्वाला तचिबौ—१-५६।

नति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **झुकाव, उतार।** (२) **प्रणाम।** (३) **विनय।** (४) **नम्रता।**

नतिनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाती] **लड़की की लड़की।**

नतीजा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **परिणाम, फल।**

नतु—क्रि. वि. [हिं. न+तो] **नहीं तो।**

नतैत—संज्ञा पुं. [हिं. नाता] **संबंधी, नातेदार।**

नत्थ, नथ—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाथना, नथ] **नथ नामक गहना जो नाक में पहना जाता है और हिंदुओं में सौभाग्य का चिन्ह समझा जाता है।** उ.—(क) नासा नथ मुकुता की सोभा रह्यौ अधर तट जाइ—१०७६। (ख) भाल तिलक अंजन चख नासा बेसरि नथ में फूली—३२२१।

नथना, नथुना—संज्ञा पुं. [सं. नस्त] (१) **नाक का छेद।** (२) **नाक का अगला भाग।**

मुहा.—नथना फुलाना—**क्रोध करना।** नथना फूलना—**क्रोध आना।**

क्रि. अ.—[हिं. नाथना] **नाथा जाना, एक सूत्र में बँधना।** (२) **छिदना, छेदा जाना।**

नथनी, नथिया, नथुनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नथ] (१) **नाक में पहनने की छोटी नथ।** उ.—(क) मोतिनि सहित नासिका नथुनी कंठ-कमल-दल-माल की—१०-१०५। (ख) साराँग-सुत-छबि बिन नथुनी रस-बिंदु बिना अधिकात—सा. ५२। (२) **बुलाक।** (३) **तलवार की मूठ का छल्ला।** (४) **नथ-जैसी गोल चीज।**

नद—संज्ञा पुं. [सं.] **पुल्लिंगवाची नामवाली नदी।**

नदन—संज्ञा पुं. [सं.] **शब्द करना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नद-नदी-पति—संज्ञा पुं. [सं.] समुद्र, सिंधु।

नदना—क्रि. अ. [सं. नदन] (१) पशुओं का रँभाना या बँवाना। (२) बजना, शब्द करना।

नदनु- संज्ञा पुं. [सं.] (१) मेघ। (२) शब्द। (३) सिंह।

नदराज—संज्ञा पुं. [सं.] सागर, समुद्र।

नदान—वि. [फ़ा. नादान] (१) नासमझ, अनजान। (२) बहुत छोटी अवस्था का जब संसार का ज्ञान न हो।

नदारद—वि. [फ़ा.] गायब, लुप्त।

नदि—संज्ञा स्त्री. [सं.] स्तुति।

नदि, नदिया, नदी—संज्ञा स्त्री. [सं. नदी] (१) सरिता, तटिनी। उ.—इक नदिया इक नार कहावत मैलौ नीर भरौ। जब मिलि गए तब एक बरन ह्वै, गंगा नाम परयौ—१-२२०।

मुहा.—नदी-नाव-संयोग—ऐसा संयोग जो संयोग से ही हो जाय और बार-बार न हो।

(२) किसी बहनेवाली चीज का प्रवाह।

नदीकांत—संज्ञा पुं. [सं.] समुद्र, सागर।

नदीज—वि. [सं.] जो नदी से जन्मा हो।

नदीपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) समुद्र। (२) वरुण।

नदीमुख—संज्ञा पुं. [सं.] नदी का मुहाना।

नदीशो—संज्ञा पुं. [सं.] समुद्र।

नधना—क्रि. अ. [सं. नद्ध = बँधा हुआ + हिं. ना (प्रत्य.)] (१) गाड़ी आदि में जुतना।

मुहा.—काम में नधना—काम में जुतना।

(२) जुड़ना। (३) काम का ठन जाना।

नन्हका, ननका—वि. [हिं. नन्हा] छोटा।

नकारना—क्रि. अ. [हिं. न+करना] मंजूर न करना, इनकार करना।

ननँद, ननद, ननदी—संज्ञा स्त्री. [सं. ननंद] पति की बहिन। उ.—(क) ननदी तौ न दियै बिनु गारी नैंकहु रहति—१४६२। (ख) जिय परी ग्रंथ कौन छोरै निकट ननँद न सास—पृ. ३४५ (५७)।

ननदोइ, ननदोई—संज्ञा पुं. [हिं. ननद+ओई (प्रत्य.)] ननद का पति।

ननसार, ननसाल—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाना+शाला] नाना का घर, ननिहाल। उ.—असुरनि बिस्वरूप सौं कह्यौ। भली भई तू सुर गुरु भयौ। तुव ननसाल माहिं हम आहिं। आहुति हमैं देत क्यौं नाहिं—६-५।

नना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) माता। (२) कन्या।

ननिहाल—संज्ञा पुं. [हिं. नाना+आलय] नाना का घर।

नन्ना—संज्ञा पुं. [हिं. नाना] नाना।

वि. [हिं. नन्हा] छोटा, नन्हा।

नन्हा—वि. [सं. न्यंच] छोटा।

मुहा.—नन्हा सा—बहुत छोटा।

नन्हाइ, नन्हाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. नन्हा+ई (प्रत्य.)] (१) छोटापन। (२) हेठी, बदनामी। उ.—(क) ब्रज-परगन-सिकदार महर तू ताकी करत नन्हाई—१०-३२६। (ख) नंद महर की करै नन्हाई—३९१।

नन्हैया—वि. [हिं. नन्हा+ऐया (प्रत्य.)] बहुत छोटा। उ.—(क) चुटकी देहिं नचावहीं सुत जानि नन्हैया—१०-११६। (ख) पाँच बरस कौ मेरौ नन्हैया अचरज तेरी बात—१०-२५७। (ग) तृनावर्त पूतना पछारी, तब अति रहे नन्हैया—४२८।

नपाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाप+आई (प्रत्य.)] नापने का काम, भाव या वेतन।

नपुंसक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पुरुषत्वहीन व्यक्ति। (२) वह जो न स्त्री हो न पुरुष, क्लीव। (२) कायर।

नपुंसकता—संज्ञा स्त्री. [सं.] नपुंसक होने का भाव।

नपुंसकत्व—संज्ञा पुं. [सं.] नपुंसक होने का भाव।

नपुआ—संज्ञा पुं. [हिं. नाप+उआ (प्रत्य.)] कोई वस्तु नापने का पात्र।

नफर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] दास, सेवक।

नफरत - संज्ञा स्त्री. [अ. नफ़रत] घिन, घृणा।

नफरी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] मजदूर का एक दिन का काम या वेतन।

नफा—संज्ञा पुं. [अ. नफ़ा] लाभ, फायदा। उ.—(क) होतौ नफा साधु की संगति मूल गाँठि नहिं टरतौ—१-२९७। (ख) सुनहु सूर हमसौं हठ माँड़ति कौन नफा करि लैहौ—१११८। (ग) गुप्त प्रीति काहे न करी हरि सौं प्रगट किए कछु नफा बढ़ैहै—११९२। (घ) लै आए हौ नफा जानि कै सबै बस्तु अकरी—३१०४। (ङ) प्रेम बनिज कीन्हौं हुतौ नेह नफा जिय जानी—३१४६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नफासत—संज्ञा स्त्री. [अ. नफ़ासत] **बढ़ियापन।**
नफीरी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. नफ़ीरी] **तुरही, शहनाई।**
नफीस—वि. [अ. नफ़स] **बढ़िया, सुंदर।**
नफो—संज्ञा पुं. [अ. नफ़ा] **लाभ, नफा।** उ.—तहीं दीजै मुर परैना नफो तुम कछु खाहु—३००३।
नबी—संज्ञा पुं. [अ.] **ईश्वरीय दूत, पैगंबर।**
नबेड़ना—क्रि. स. [हिं. निपटाना] (१) **निपटाना, तय करना।** (२) **चुन लेना, छांट लेना।**
नब्ज—संज्ञा स्त्री. [अ. नब्ज़] **नाड़ी।**

मुहा.—नब्ज चलना—**शरीर में प्राण होना।** नब्ज छूटना (न रहना)—**शरीर में प्राण न रहना।**

नब्बे—संज्ञा पुं. [सं. नवति] **संख्या जो सौ से दस कम हो।**
नभःकेतन—संज्ञा पुं. [सं.] **सूर्य।**
नभःसरित—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आकाशगंगा।**
नभःसुत—संज्ञा पुं. [सं.] **पवन, हवा।**
नभ—संज्ञा पुं. [सं. नभसर] (१) **आकाश नामक तत्व।** (२) **आकाश।** उ.—चलति नभ चितै नहिं तकति धरनी—६६८। (३) **शून्य।** (४) **सावन मास।** (५) **भादो मास।** (६) **आश्रय, आधार।** (७) **निकट, पास।** (८) **शिव, महादेव।** (९) **जल।** (१०) **मेघ, बादल।** (११) **वर्षा।**
नभग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पक्षी।** (२) **हवा।** (३) **बादल।**

वि.—**आकाश में विचरनेवाला, आकाशगामी।**

नभगनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] **गरुड़।**
नभगामी—संज्ञा पुं. [सं. नभोगामिन्] (१) **चंद्र।** (२) **सूर्य।** (३) **तारा।** (४) **पक्षी।** (५) **देवता।** (६) **हवा।** (७) **बादल।**
नभगेश—संज्ञा पुं. [सं.] **गरुड़।**
नभचर—संज्ञा पुं. [सं. नभश्चर] (१) **पक्षी।** (२) **बादल।** (३) **हवा।** (४) **सूर्य, चंद्र आदि ग्रह।** (५) **देवता।**
नभधुज, नभध्वज—संज्ञा पुं. [सं. नभध्वज] **बादल।**
नभश्चक्षु—संज्ञा पुं. [सं. नभश्चक्षुस्] **सूर्य।**
नभश्चर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पक्षी।** (२) **बादल।** (३) **हवा।** (४) **सूर्य, चंद्र आदि ग्रह।** (५) **देवता।**
नभस्थल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आकाश।** (२) **शिव।**
नभस्थित—वि. [सं.] **आकाश में ठहरा हुआ।**
नभोगति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पक्षी।** (२) **बादल।** (३) **हवा।** (४) **सूर्य, चंद्र आदि ग्रह।** (५) **देवता।**
नम—वि. [फा.] **गीला, तर, आर्द्र।**

संज्ञा पुं. [सं. नमस्] **नमस्कार, प्रणाम।**

नमक—संज्ञा पुं. [फा.] (१) **नोन, लवण।**

मुहा.—नमक अदा करना—**स्वामी के उपकार का बदला चुकाना।** (किसी का) नमक खाना, (**किसी का**) **दिया खाना।** नमक-मिर्च मिलाना (लगाना)—(**बात को**) **बढ़ा-घटाकर कहना।** नमक फूटकर निकलना—**उपकार न मानने का दैवी दंड मिलना।** नमक से अदा होना—**स्वामी के उपकार से उऋण होना।** कटे पर नमक छिड़कना - **दुखी को और जलाना।** नमक का सहारा— (१) **बहुत थोड़ी सहायता।** (२) **बहुत थोड़ा लाभ।**

(२) **सलोनापन, लावण्य।**

नमकहराम—वि. [फ़ा. नमक+अ. हराम] **जो किसी का अन्न खाकर उसी को हानि पहुँचावे, कृतघ्न।**
नमकहरामी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नमक हराम+ई (प्रत्य.)] **नमकहराम होने का भाव, कृतघ्नता।**
नमकहलाल—वि. [फ़ा. नमक+अ. हलाल] **जो किसी का नमक खाकर बदले में उसका भला भी करे।**
नमकहलाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. नमकहलाल] **नमकहलाल होने का भाव, स्वामिभक्ति।**
नमकीन—वि. [हिं. नमक] (१) **नमक के स्वादवाला।** (२) **जिसमें नमक पड़ा हो।** (३) **सलोना।**

संज्ञा पुं.—**नमकीन पकवान।**

नमत—वि. [सं.] **नम्र, जो झुकता हो, विनयी।**

संज्ञा पुं.— **स्वामी, प्रभु, मालिक।**

नमदा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **जमाया हुआ ऊनी कंबल।**
नमन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रणाम, नमस्कार।** उ.—पर्वत बहुत नमनि करि पूजा यह विनती करवाये—सारा. ६१७। (२) **झुकाव।**
नमना—क्रि. अ. [सं. नमन] (१) **झुकना।** (२) **प्रणाम या नमस्कार करना, नम्रता दिखाना।**
नमनीय—वि. [सं.] (१) **नमस्कार या प्रणाम करने**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के उपयुक्त । (२) **जो झुक सके या झुकाया जा सके ।**

नमनीयता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **'नमनीय' होने का भाव ।**

नमस्—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) झुकना । (२) प्रणाम ।**

नमसकार, नमस्कार—संज्ञा पुं. [सं. नमस्कार] **प्रणाम, अभिवादन ।** उ.—नमसकार मेरो जदुपति सौं कहियौ गहिकै पाय—३४६४ ।

नमस्कार्य—वि. [सं.] (१) **जो नमस्कार के योग्य हो, पूज्य ।** (२) **जिसे नमस्कार किया जाय ।**

नमस्ते—वाक्य [सं.] **आपको नमस्कार है ।** उ.—नमो नमस्ते बारंबार—१० उ०-१३० ।

नमाइ—क्रि. स. [हिं. नमाना] **झुकाकर, नम्रता प्रदर्शित करके ।** उ.—हरष अक्रूर हृदय नमाइ—२५५६ ।

नमाज—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. नमाज़] **मुसलमानी प्रार्थना ।**

नमाजी—वि. [हिं. नमाज] **नमाज पढ़नेवाला ।**

नमाना—क्रि. स. [सं. नमन] (१) **झुकाना, नम्रता दिखाना** (२) **दबाकर वश में करना ।**

नमामि—वाक्य [सं.] **मैं नमस्कार करता हूँ ।**

नमि—क्रि. अ. [हिं. नमना] **झुकाकर, नीची करके ।** उ.—जनु सिर पर ससि जानि अधोमुख, धुकत नलिनि नमि नाल—१०-११४ ।

नमित—वि. [सं.] **झुका हुआ ।** उ.—(क) भू भृत सीस नमित जो गर्वगत, सींच्यौ नीर—९-२६ । (ख) नमित मुख इमि अधर सूचत, सकुच मैं कछु रोष—३५० ।

नमी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **गीलापन, तरी, आर्द्रता ।**

नमुचि—संज्ञा पुं. [सं.] **कामदेव ।**

नमूना—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **बानगी ।** (२) **आदर्श ।** (३) **ढाँचा ।**

नमो—संज्ञा पुं. [सं. नमस्] **नमस्कार है, प्रणाम करता हूँ, नमता हूँ ।** उ.—(क) नमो नमो हे कृपानिधान—२-३२ । (ख) नमो-नमो भक्तनि-भयहारी—७-२ । (ग) हरि-हर संकर नमो-नमो—१०-१७१ ।

नम्य—वि. [सं.] **जो झुकाया जा सके ।**

नम्र—वि. [सं.] (१) **विनीत ।** (२) **झुका हुआ ।**

नम्रता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नम्र होने का भाव ।**

नय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नीति ।** (२) **नम्रता ।**

संज्ञा स्त्री. [सं. नद] **नदी ।** उ.—(क) रंभापति-सुत-सत्रु-पिता ज्य नयौ अहि अंत न तोलै—सा.४३ । (ख) सुछ बसन नय उर के रस सें मिले लाल मुख पोछो—सा. ८३ ।

नयकारी—संज्ञा पुं. [सं. नृत्यकारी] (१) **नर्तकों का नायक या मुखिया ।** (२) **नाचनेवाला, नचनिया ।**

नयन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नेत्र, आँख ।** उ.—(क) नयन ठहरात नहिं बहुत अति तेज सी—१४८७ । (ख) काहे को लेति नयन जल भरि भरि नयन भरें ते कैसे सूल टरैगो—२८७० ।

मुहा.—निरखि नयन भरि—**भली भाँति देख ले, नेत्रों में छबि भर ले ।** उ.—निरखि सरूप बिवेक-नयन भरि, या सुख तै नहिं और कछू अब—१-६६ ।

(२) **ले जाना ।**

नयनगोचर—वि. [सं.] **दिखायी पड़नेवाला ।**

नयनपट—संज्ञा पुं. [सं.] **आँख का पलक ।**

नयना—क्रि. अ. [सं. नमन] (१) **नम्र होना ।** (२) **झुकना, लटकना ।**

संज्ञा पुं.—**नेत्र, आँख ।**

नय-नागर—वि. [सं.] **नीति में बहुत चतुर ।**

नयनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आँख की पुतली ।**

वि. स्त्री.—**आँखवाली ।**

नयनूँ—संज्ञा पुं. [सं. नवनीत] **मक्खन ।**

नयर—संज्ञा पुं. [सं. नगर] **नगर, शहर, पुर ।**

नयशील—वि. [सं.] (१) **नीतिज्ञ ।** (२) **विनीत ।**

नया—वि. [सं. नव] (१) **नवीन, नूतन ।**

मुहा.—नया लिखना—**पुराना हिसाब साफ करके नया चालू करना ।**

यौ०—नया-नवेला—**नवयुवक, नौजवान ।**

(२) **जो थोड़े ही समय से ज्ञात हुआ हो ।** (३) **जो पहले व्यवहार में न आया हो, कोरा ।** (४) **जिसका आरंभ फिर से या हाल ही में हुआ हो ।**

नयापन—संज्ञा पुं. [हिं. नया+पन (प्रत्य.)] **नवीनता ।**

नयौ—वि. [हिं. नया] **नवीन, नूतन ।**

मुहा.—लिखत नयौ—**पुराना हिसाब साफ या बंद करके नया चालू करना ।** उ.—बरस दिवस करि होत पुरातन फिरि फिरि लिखत नयौ—१-२९८ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रि. अ. [हिं. नयना] **झुक गया, मिट गया, जाता रहा।** उ.—अंबर हरत द्रौपदी राखी, ब्रह्म-इन्द्र कौ मान नयौ—१-२६।

नर—संज्ञा पु. [सं.] (१) **विष्णु** (२) **शिवजी।** (३) **अर्जुन।** (४) **पुरुष।** उ.—सूरदास-प्रभु-रूप चकित भए पंथचलत नर बाम—६-४४।

वि.—**जो पुरुष वर्ग का प्राणी हो।**

संज्ञा पुं. [हिं. नल] **पानी आदि का नल।**

नर-अवतार—संज्ञा पुं. [सं. नर+अवतार] **मनुष्य-जन्म-मनुष्य-योनि।** उ.—नहिं अस जनम बारंबार। पुरबलौ धौं पुन्य प्रगट्यौ, लह्यौ नर-अवतार—१-८८।

नरई—संज्ञा स्त्री. [देशज] **गेहूँ आदि की बाल का डंठल।**

नरकंत—संज्ञा पुं. [सं नरकांत] **राजा, नृप।**

नरक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वह स्थान जहाँ पापी पाप का फल भोगने जाता है।** (२) **बहुत गंदा स्थान।** (३) **कष्टदायी स्थान।** (४) **एक असुर।**

नरकगति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पाप जिससे नरक भोगना हो।**

नरकगामी—वि. [सं.] **नरक में जानेवाली।**

नरक चतुर्दशी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी जब घर का सारा कूड़ा-करकट साफ किया जाता है।**

नरकट—संज्ञा पुं. [सं. नलकट] **एक पौधा।**

नरकपति—संज्ञा पुं. [सं.] **यमराज।** उ.—गढ़वै भयौ नरकपति मोसौं दीन्है रहत किवार—१-१४१।

नरकारि—संज्ञा पं. [सं.] **विष्णु या उनके अवतार।**

नरकासुर—संज्ञा पु. [सं.] **एक दैत्य जो बाराह भगवान के पृथ्वी के साथ गमन करने पर जन्मा था। जब यह प्राग्ज्योतिषपुर का राजा बना तब इसने बहुत अत्याचार किया। अंत में श्रीकृष्णए ने इसको मारकर सोलह हजार बंदिनी युवतियों का उद्धार किया था।** उ.—नरकासुर को मारि स्यामघन सोरह सहस त्रिय लाये—सारा. ६५८।

नरकी—वि. [हिं. नारकी] **नरक भोगनेवाला, पापी।**

नरकुल—संज्ञा पुं. [सं. नल] **नरकट का पौधा।**

नरकेशरी, नरकेसरी—संज्ञा पुं. [सं.] **नृसिंह भगवान।**

नरकेहरि, नरकेहरी—संज्ञा पुं. [सं नरकेसरी] **नृसिंह।**

नरगिस—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **एक पौधा जिसके फूल के साथ कवि आँख की उपमा देते हैं।**

नरगिसी—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **नरगिस के सफेद फूल के रंग का।** (२) **नरगिस-संबंधी।**

नरतात—संज्ञा पुं. [सं.] **राजा, नृप, नृपति।**

नरत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **नर के गुण-युक्त होने का भाव।**

नरद—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. नर्द] **चौसर खेलने की गोटी।**

संज्ञा स्त्री. [सं. नर्द] **शब्द, ध्वनि, नाद।**

नरदन—संज्ञा स्त्री. [सं. नर्दन] **गरजना, शब्द करना।**

नरदारा—संज्ञा पुं. [सं. नर+दारा] (१) **नपुंसक।** (२) **कायर।** (३) **जो पुरुष स्त्रियों सा कार्य करे।**

नरदेव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **राजा।** (२) **ब्राह्मण।**

नरनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] **राजा, नृपति, भूपाल।**

नरनायक—संज्ञा पुं. [सं.] **राजा, नृप, नृपाल।**

नर-नारायण—संज्ञा पुं. [सं.] **नर-नारायण नामक दो ऋषि जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं।**

नर-नारि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अर्जुन की स्त्री द्रौपदी।**

नरनाह—संज्ञा पुं. [सं. नर+नाथ=स्वामी] **नरपति, राजा, नृप, नृपाल।** उ.—ब्रह्मा कह्यो, सुनौ नरनाह। तुमसौं नृप जग मैं अब नाह—६-४।

नरनाहर—संज्ञा पुं. [सं. नर+हिं. नाहर] **नृसिंह।**

नरपति—संज्ञा पुं. [सं.] **राजा, नृपति, भूप।** उ.—(क) नरपति एक पुरुरवा भयौ—६-२। (ख) नरपति ब्रह्म-अंस सुख रूप—४१२।

नरपशु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नृसिंह भगवान।** (२) **वह जो मनुष्य होकर भी पशु का आचरण करे।**

नरपाल—संज्ञा पुं. [सं. नृपाल] **राजा, नृप।**

नरपिशाच—संज्ञा पुं. [सं.] **बड़ा दुष्ट और नीच।**

नर-बपु—संज्ञा पुं. [सं. नर+बपु] **मनुष्य-शरीर, मनुष्य-जन्म, मनुष्य-योनि।** उ.—नर-बपु धारि नाहिं जन हरि कौ, जम की मार सो खैहै—१-८६।

नरभक्षी—वि. [सं. नरभक्षिन्] **मनुष्यों को खानेवाला।**

संज्ञा पुं.—(१) **हिंसक पशु।** (२) **राक्षस, दैत्य।**

नरम—वि. [फ़ा. नर्म] **मुलायम।**

नरमा—संज्ञा स्त्री. [हिं. नरम] (१) **सेमर की रुई।** (२) **कान का निचला भाग, लौल।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरमाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. नरम] मुलायमियत ।

नरमाना—क्रि. स. [हिं. नरम+आना (प्रत्य)] (१) नरम करना । (२) शान्त या धीमा करना ।

क्रि. अ.—(१) नरम होना । (२) शांत होना ।

नरमी—संज्ञा स्त्री. [हिं नरम] मुलायमियत, कोमलता ।

नरमे—वि. [हिं. नरम] मुलायम, कोमल । उ.—माथ नाइ करि जोरि दोउ कर रहे बोलि लीन्हों निकट बचन नरमे—२४६६ ।

नरमेध—संज्ञा पुं. [सं.] एक यज्ञ जिसमें मनुष्य के मांस की आहुति दी जाती थी ।

नरलोक—संज्ञा पुं. [सं.] संसार, मृत्युलोक ।

नरवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. नरई] गेहूँ की बाल का डंठल । उ.—बालि छाँड़ि कै सूर हमारे अब नरवाई को लुनै —३१५८ ।

नरवाह, नरवाहन—संज्ञा पुं. [सं.] सवारी जिसे मनुष्य खींचता या ढोता हो ।

नरव्याघ्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मनुष्यों में श्रेष्ठ । (२) एक जल-जंतु जिसका निचला शरीर मनुष्य-सा और ऊपरी बाघ-सा होता है ।

नरशक्र—संज्ञा पुं. [सं. नर+शक्र] राजा, नरेंद्र ।

नरसल—संज्ञा पुं. [हिं. नरकट] नरकट का पौधा ।

नरसिंगा, नरसिंघा—संज्ञा पुं. [हिं. नर=बड़ा+सिंघा=सींग का बाजा] तुरही की तरह का एक बाजा जो फूँककर बजाया जाता है ।

नरसिंघ, नरसिंह—संज्ञा पुं. [सं. नृसिंह] नृसिंह ।

नरसों—क्रि. वि. [हिं. अतरसों] पिछले परसों के पहले और अगले परसों के बाद का दिन ।

नरहरि, नरहरी—संज्ञा पुं. [सं. नरहरि] नृसिंह भगवान । उ.—फटि तब खंभ भयौ द्वै फारि । निकसे हरि नरहरि-वपु धारि—७-२ ।

संज्ञा पुं. [सं. नरहरी] १९ मात्राओं का एक छंद ।

नरहरिरूप—संज्ञा पुं. [सं. नर+हरि+रूप] विष्णु का चौथा अवतार जिसका आधा शरीर मनुष्य का और आधा सिंह का था ।

नरांतक—संज्ञा पुं. [सं.] रावण का एक पुत्र जो अंगद के हाथ से मारा गया था ।

नराच—संज्ञा पु. [सं. नाराच] (१) बाण । (२) एक छंद ।

नराचिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक छंद ।

नराज—वि. [हिं. नाराज] रुष्ट, अप्रसन्न ।

नराजना—क्रि. स. [हिं. नाराज] अप्रसन्न करना ।

क्रि. अ.— नाराज या अप्रसन्न होना ।

नराट—संज्ञा पुं. [सं. नरराट्] राजा, नृप ।

नराधिप—संज्ञा पुं. [सं.] राजा, नृपाल ।

नरायन—संज्ञा पुं. [सं. नारायण] विष्णु, भगवान् ।

नरिंद, नरिंद्र—संज्ञा पुं. [सं. नरेंद्र] राजा ।

नरिअर, नरियर—संज्ञा पुं. [हिं. नारियल] नारियल ।

नरियाना—क्रि. अ. [सं. नर्दन] शब्द करना, चिल्लाना ।

नरी—संज्ञा स्त्री. [सं. नलिका] नली, पुपली ।

संज्ञा स्त्री. [सं. नर] स्त्री, नारी ।

नरु—संज्ञा पुं. [हिं. नर] मनुष्य, नर ।

नरुई—संज्ञा स्त्री. [हिं. नली] छोटी नली ।

नरेंद्र—संज्ञा पुं. [सं.] राजा, नरपति, नरेश ।

नरेश, नरेस—संज्ञा पुं. [सं.] राजा, नरपति, नरेंद्र ।

नरों—क्रि. वि. [हिं. नरसों] पिछले परसों के पहले और अगले परसों के बाद का दिन ।

नरोत्तम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ईश्वर । (२) श्रेष्ठ नर ।

नर्क—संज्ञा पुं. [सं. नरक] नरक ।

नर्कुटक—संज्ञा पुं. [सं.] नाक, नासिका ।

नर्त्त—संज्ञा पुं. [सं.] नाचनेवाला ।

नर्त्तक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नाचनेवाला, नट । (२) चारण, बंदीजन । (३) शिव जी का एक नाम ।

नर्त्तकी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नाचनेवाली । (२) वेश्या ।

नर्त्तन—संज्ञा पुं. [सं.] नाच, नृत्य ।

नर्त्तनशाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] नाचघर ।

नर्दन—संज्ञा स्त्री. [सं.] नाद, गरजन ।

नर्म—संज्ञा पुं. [सं. नर्मन्] (१) परिहास, हँसी-ठट्ठा । (२) हँसोड़ या विनोदी मित्र ।

नर्मट—संज्ञा पुं. [सं.] रवि, सूर्य ।

नर्मठ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) विनोदी । (२) उपपति ।

नर्मदा—संज्ञा पुं. [सं.] मध्यदेश की एक नदी ।

नर्मदेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] नर्मदा नदी से निकले हुए अंडाकार शिवलिंग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर्मसचिव, नर्मसुहृद, नर्मसहचर—संज्ञा पुं. [सं.] **राजा का मित्र, विदूषक।**

नल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रामचंद्र जी की सेना का एक बंदर जो विश्वकर्मा का पुत्र माना जाता है और जो ऋतुध्वज ऋषि के शाप-वश घृताची के गर्भ से जन्मा था। प्रसिद्धि है कि नील की सहायता से समुद्र पर पुल इसी ने बाँधा था।** (२) **निषध देश के राजा वीरसेन का पुत्र जिसका विवाह दमयंती से हुआ था।**

संज्ञा पुं. [सं. नाल] **लंबी पोली छड़।**

नलक—संज्ञा पुं. [सं.] **लंबी पोली हड्डी।**

नलका—संज्ञा स्त्री. [सं. नलिका] **नली, नाल।**

नलकूबर—संज्ञा पुं. [सं.] **कुबेर का पुत्र, जिसे नारद ने उस समय अर्जुन वृक्ष हो जाने का शाप दिया था जब वह मदमाता होकर गंगा में स्त्रियों के साथ विहार कर रहा था। रामायण के अनुसार, एक बार रंभा अप्सरा को नलकुबेर के यहाँ जाते देखकर, रावण उठा ले गया था। इस पर रावण को उसने शाप दिया कि किसी भी स्त्री के साथ बलात्कार करने पर तू तुरंत मर जायगा। सूरदास ने भी इसी कथा की ओर संकेत किया है।** उ.—त्रिजटी सीता पै चलि आई। मन मैं सोच न करि तू माता, यह कहि कै समुझाइ। नलकूबर कौ साप रावनहिं, तो पर बल न बसाई—९-८०।

नलद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मकरंद।** (२) **खस।**

नलसेतु—संज्ञा पुं. [सं.] **रामेश्वर के निकटवर्ती समुद्र पर बना पुल जो श्री राम ने नल-नील से बनवाया था।**

नलिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नली।** (२) **'नाल' या 'नालक' नामक एक प्राचीन अस्त्र।** (३) **तीर रखने का तर्कश।**

नलिन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कमल।** (२) **जल, पानी।**

नलिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कमलिनी।** (२) **वह स्थान जहाँ कमल अधिक हों।** (३) **नदी।**

नलिनीरुह—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल की नाल।**

नली—संज्ञा स्त्री. [हिं. नल] **पतला नल।**

नव—संज्ञा पुं. [सं.] **स्तोत्र, स्तव।**

वि. [सं.] **नया, नूतन, नवीन।**

वि. [सं. नवन्] **दस से एक कम।** उ.—आँखि, नाक, मुख, मूल दुवार। मूत्र, स्रौन नव पुर को द्वार—४-१२।

नवकुमारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नौ-रात्र में पूजनीय नौ देवियाँ—कुमारिका, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, काली, चंद्रिका, शांभवी दुर्गा और सुभद्रा।**

नवखँड, नवखंड—संज्ञा पुं. [सं. नवखंड] **भूमि के नौ विभाग; यथा—भरत, इलावृत, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश।** उ.—नव नवखँड अधिकारी। नव जोगेस्वर ब्रह्म बिचारी—५-२।

नवग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] **फलित ज्योतिष में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ग्रह।**

नवछावरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. न्योछावर] **निछावर।** उ.—लेति बलाइ करति नवछावरि बलि भुजदंड कनक ...त्रासी।

नवजात—वि. [सं.] **हाल का जनमा हुआ।**

नवजोबनियाँ—संज्ञा स्त्री. [सं. नव+यौवन] **नवयुवती।** उ.—बहुरि गोकुल काहे को आवत भावत नवजोबनियाँ—२८७९।

नवतन—वि. [सं. नवीन] **नया, ताजा, नवीन।**

नवता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नयापन, नवीनता।**

नवति—वि. [सं.] **नब्बे।**

नवदंड—संज्ञा पुं. [सं.] **राजा के तीन छत्रों में एक।**

नवदल—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल का पत्ता जो उसके केसर के पास होता है।**

नवदुर्गा—संज्ञा पुं. [सं.] **नौ दुर्गाएँ जिनकी नवरात्र में नौ दिनों तक क्रमशः पूजा होती है; यथा—शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, और सिद्धिदा।**

नवद्वार—संज्ञा पुं. [सं.] **शरीर के नौ द्वार, यथा—दो आँख, दो कान, दो नथुने, मुख, गुदा, लिंग या भग।**

नवद्वीप—संज्ञा पुं. [सं.] **बंगाल का एक नगर।**

नवधा अंग—संज्ञा पुं. [सं.] **शरीर के नौ अंग; यथा—दो नेत्र, दो कान, दो हाथ, दो पैर, और एक नासिका।**

नवधाभक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नौ प्रकार की भक्ति**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथा—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, बंदन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन ।

नवन—संज्ञा पुं. [सं. नमन] (१) **प्रणाम** । (२) **झुकाव** ।

नवना—क्रि. अ. [सं. नमन] (१) **झुकना** । (२) **नम्र या विनीत होना** ।

नवनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. नवना] (१) **झुकने की क्रिया या भाव** । (२) **नम्रता, दीनता** ।

नवनिधि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कुबेर के नौ प्रकार के रत्न—पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद नील और वर्च्च** ।

नवनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मक्खन, नवनीत** ।

नवनीत, नवनीति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मक्खन** । उ.-अतिहिं ए बाल हैं भोजन नवनीति के जानि तिन्हे तीन्हें जात दनुज पासा—२५५१ । (२) **श्रीकृष्ण** ।

नवनीतक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **घी** । (२) **मक्खन** ।

नवप्रसूत—वि. [सं.] **हाल का जनमा हुआ** ।

नवप्राशन—संज्ञा पुं. [सं.] **नया अन्न-फल खाना** ।

नवम—वि. [सं.] **नवां** । उ.—नवम मास पुनि बिनती करै—३-१३ ।

नवमल्लिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **चमेली** । (२) **नेवारी** ।

नवमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **किसी पक्ष की नवीं तिथि** ।

नवयुवक, नवयुवा—संज्ञा पुं. [सं.] **तरुण, जवान** ।

नवयुवती, नवयौवना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **तरुणी** ।

नवरंग—वि. स्त्री., पुं. [सं. नव+हिं. रंग] (१) **सुंदर, रूपवान्** । उ.—सूरदास जुग भरि बीतत छिनु । हरि नवरंग कुरंग पीव बिनु । (२) **नये ढंग की, नवेली, नयी शोभावाली** । उ.—आज बनी नवरंग किसोरी ।

नवरंगी—वि. स्त्री., पुं. [हिं. नवरंग+ई (प्रत्य.)] (१) **रंगीली, हँसमुख** । उ.—नाइनि बोलहु नवरंगी (हो), ल्याउ महावर वेग । लाख टका अरु झूमका (देहु), सारी दाइ कौं नेग—१०-४० । (२) **नित्य नये आनंद करनेवाला, रंगीला** । उ.—(क) ऐसे हैं त्रिभंगी नवरंगी सुखदाई री—१४६४ । (ख) गोपिन नाम धरयौ नवरंगी—३६७५ ।

नवरत्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूंगा, लहसुनिया, पद्मराग या पुखराज और नीलम** । (२) **गले का हार जिसमें नौ तरह के रत्न हों** । (३) **एक तरह की चटनी** ।

नवरस—संज्ञा पुं. [सं.] **काव्य के नौ रस—शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्‌भुत और शांत** ।

नवरात्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नौ दिन तक होनेवाला एक यज्ञ** । (२) **नवदुर्गा का व्रत, घटस्थापन और पूजन जो चैत्र शुक्ला और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक, वर्ष में दो बार होता है** ।

नवल—वि. [सं.] (१) **युवा, युवती, जवान** । उ—प्रात भयौ जागौ गोपाल । नवल सुंदरी आईं, बोलत तुमहिं सबै ब्रजबाल—१०-२०६ । (२) **कांति-युक्त, सुंदर** । उ.—(क) ना जानौं करिहौ अब कहा तुम नागर नवल हरी—१-१३० । (ख) नागर नवल कुँवर बर सुंदर, मारग जात लेत मन जोइ—१०-२१० ।(३) **नया, नवीन, ताजा** । उ.—(क) पवन सधावन भवन छोड़ावन नवल रिसाल पठायौ—२९९९ । (ख) एकादस लैं मिलौ बेगहूँ जानहु नवल रसाल—सा०२९ । (४) **शुद्ध, स्वच्छ** ।

नवलकिशोर, नवलकिसोर—संज्ञा पुं. [सं.] **श्रीकृष्ण** ।

नवला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **तरुणी, नवयुवती** । उ.—नित नवला नवसत साजि कै अरु वह भावक राखी —२८७६ । (२) **राधा की एक सखी का नाम** । उ.—स्यामा कामा चतुरा नवला प्रमदा सुमदा नारि —१५८० ।

नवविंश—वि. [सं.] **उनतीसवां** ।

नवविंशति—वि. [सं.] **उनतीस** ।

नवविष—संज्ञा पुं. [सं.] **नौ प्रकार के विष—वत्सनाभ, हारिद्रक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृंगक, कालकूट, हलाहल और ब्रह्मपुत्र** ।

नवशक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नौ शक्तियां—प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नंदिनी, सुप्रभा, विजया और सर्वसिद्धिदा** ।

नवशिक्षित—वि. [सं.] (१) **जिसने नयी तरह की शिक्षा पायी हो** । (२) **जो हाल ही में शिक्षा पा चुका हो** ।

नवशोभा—वि. [सं.] **नयी शोभावाला, युवक** ।

नवसंगम—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रथम समागम** ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवसत—संज्ञा पुं. [सं. नव+हिं. सत=सप्त, सात] **नौ और सात, सोलह शृंगार**। उ.—(क) नवसत साजि भईं सब ठाढ़ी को छबि सकै बखानी—पृ. ३४३ (२३)। (ख) नित नवला नवसत साजि कै अरु वह भावक राखी—२८७६।

वि.—**सोलह, षोडश**।

नवसप्त—संज्ञा पुं. [सं.] **नौ और सात, सोलह शृंगार**।

वि.—**सोलह, षोडश**।

नवसर—वि. [हिं. नौ+सं. सृक] **नौ लड़ों का (हार)**। उ.—कंठसिरी दुलरी तिलरी को और हार इक नवसर।

वि. [सं. नव+वत्सर] **नयी उम्रवाला, नव वयस्क**। उ.—सूर स्याम स्यामा नवसर मिलि रीझे नंदकुमार।

नवससि—संज्ञा पुं. [सं. नवशशि] **दूज का चांद**।

नवाँ—वि. [सं. नवम] **जो गिनती में नौ के स्थान पर हो, नौवाँ, नवम्**।

नवा—वि. [हिं. नया] **नया, नूतन**।

नवाई—क्रि. स. [हिं. नाना, नवाना] **झुकायी, नम्रता दिखायी**। उ.—काया हरि कैं काम न आई ······। चरन-कमल सुंदर जहँ हरि के, क्यौंहुँ न जाति नवाई—१-२९५।

संज्ञा स्त्री. [हिं. नवना] **विनीत होने का भाव**।

वि.—**नया, नवीन**। उ.—यह मति आप कहाँ धौं पाई। आजु सुनी यह बात नवाई।

नवाए—क्रि. स. बहु. [हिं. नवाना] **झुकाये, विनय दिखायी, अधीनता स्वीकार की**। उ.—पुनि प्रहलाद राज बैठाए। सब असुरनि मिलि सीस नवाए—७-२।

नवागत—वि. [सं.] **नया आया हुआ, जो अभी ही आया हो, नवागंतुक**।

नवाज—वि. [फ़ा.] **दया दिखानेवाला**।

नवाजना—क्रि. स. [फ़ा. नवाज] **दया दिखाना**।

नवाजिश—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **कृपा, दया**।

नवाड़ा—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह की नाव**।

नवाना—क्रि. स. [सं. नवन] **झुकाना**।

नवान्न—संज्ञा पं. [सं.] (१) **नयी फसल का अनाज**। (२) **ताजा पका अन्न**। (३) **एक तरह का श्राद्ध**।

नवाब—संज्ञा पुं. [अ. नव्वाब] (१) **बादशाह का प्रतिनिधि शासक**। (२) **प्रतिनिधि शासकों की उपाधि**।

वि.—(१) **बहुत ठाट-बाट से रहनेवाला**। (२) **ठसक-लापरवाही दिखाने में ही शान समझनेवाला**।

नवाबी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नवाब+ई (प्रत्य.)] (१) **नवाब का पद, काम या भाव**। (२) **नवाबों का राज्य काल**। (३) **नवाब का शासन या अधिकार**। (४) **अमीरों का तत्व-हीन ठाठ-बाट**।

नवायौ—क्रि. स. [हिं. नवाना] **नवाया, झुकाया**। उ.—(क) राजा उठि कै सीस नवायौ १-३४३। (ख) उठि कै सबहिनि माथ नवायौ—४-५।

नवासा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **बेटी का बेटा**।

नवासी—वि. [सं. नवाशीति] **एक कम नब्बे**।

संज्ञा स्त्री. [फ़ा. नवासा] **बेटी की बेटी**।

नवावति—क्रि. स. [हिं. नवाना] **नवाती है, झुकाती है**। उ.—मुरली तऊ गुपालहिं भावति। ······। अधीन सुजान कनौड़े, गिरिधर नार नवावति—६५।

नवावै—क्रि. स. [हिं. नवाना] (१) **झुकाता है, नवाता है**। (२) **अधीन करता है, नीचा दिखाता है, (गर्व) चूर करता है**। उ.—बालक-बच्छ ब्रह्म हरि लै गयौ, ताकौ गर्व नवावै—४८२।

नवीन—वि. [सं.] (१) **ताजा, नया, नूतन**। (२) **विचित्र, अपूर्व**। (३) **युवक, तरुण**।

नवीनता—संज्ञा स्त्री. [सं. नवीन] **नूतनता, नयापन**।

नवीस—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **लिखनेवाला, लेखक**।

नवीसी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **लिखने की क्रिया या भाव**।

नवेद—संज्ञा स्त्री [सं. निवेदन] (१) **न्योता, निमंत्रण**। (२) **निमंत्रणपत्र**।

नवेला—वि. [सं. नवल] (१) **नवीन**। (२) **तरुण**।

नवेली—वि. [सं. नवल] (१) **नयी**। (२) **तरुणी**।

संज्ञा स्त्री.—**नयी स्त्री, नवयुवती**। उ.—आपुन बनी नवेली नगर रही खेलाइ—२६७६।

नवै—क्रि. अ. [हिं. नवना] **झुके**। उ.—तिनको धरैं निसिबासर औरहिं नवै न सीस—३१३०।

नवोढ़ा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नवविवाहिता स्त्री**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नववधू। (२) नवयौवना। (३) वह नायिका जो लज्जा-भय से नायक के पास न जाना चाहती हो।

नवोत्थान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नये सिरे से होनेवाली उन्नति, पुनः उत्थान। (२) नवजागृति।

नवोत्थित वि. [सं.] नवजाग्रत, नवोन्नत।

नवोदित—वि. [सं.] हाल में ही अस्तित्व में आया हुआ, जिसने हाल ही में उन्नति की हो।

नवौ—वि. [सं. नव] कुल नौ, नव में से सब। उ.—नव सुत नवौ खंड नृप भए—५-२।

...—वि. [सं.] (१) नया। (२) स्तुति-योग्य।

...ना—क्रि. अ. [हिं. नाश] नष्ट या बर्बाद होना।

...—संज्ञा पुं. [फ़ा. या अ. नशः] (१) मादक द्रव्य-पान की स्थिति।

मुहा.—नशा उतरना—नशे का प्रभाव न रह जाना। नशा किरकिरा हो जाना—किसी अप्रिय बात या घटना के कारण नशे का आनंद न उठा सकना। नशा चढ़ना—मादक द्रव्य-सेवन से नशा होना। (आँखों) में नशा छाना—नशे की मस्ती होना। नशा जमना—खूब नशा होना। नशा टूटना—नशा उतरना। नशा हिरन होना—किसी असंभावित घटना या प्रसंग से नशा जमने के पहले ही उतर जाना।

(२) मादक द्रव्य जिसके सेवन से नशा हो।

यौ.—नशा-पानी—मादक द्रव्य-सेवन का आयोजन या प्रबंध, नशे का सामान।

(३) धन, विद्या, रूप आदि का गर्व या घमंड।

मुहा.—नशा उतारना—घमंड दूर करना, गर्व दूर करना।

...ाई—क्रि. स. [हिं. नशाना] नष्ट होना। उ.—(क) जाति महति पति जाइ न मेरी अरु परलोक नशाई री—१२०३। (ख) प्रात के समै ज्यों भानु के उदय तें ...उदय होइ जात उडगन नशाई—१०३०।

...ाना—क्रि. स. [सं. नशा] नष्ट या बरबाद करना।

क्रि. अ.—खो जाना।

...ानी—क्रि. स. स्त्री. [हिं. नशाना] नष्ट हो गयी। उ.—दृष्टि न दई रोम रोमनि प्रति इतनहिं कला नशानी—१३२१।

नशावरो—क्रि. स. [हिं. नशावना] (१) नष्ट करते। (२) मिटाते, दूर करते। उ.—आगम सुख उपचार बिरह ज्वर बासर ताप नशावते—२७३५।

नशावन—वि. [सं. नाश] नाश करनेवाला।

नशीन—वि. [फ़ा.] बैठनेवाला।

नशीनी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] बैठने की क्रिया या भाव।

नशीला—वि. [फ़ा. नशा+ईला (प्रत्य.)] (१) नशा लानेवाला। (२) जिस पर नशे का प्रभाव हो।

नशेबाज—संज्ञा पुं. [फ़ा. नशेबाज़] जिसे नशीला द्रव्य सेवन करने की आदत हो।

नशोहर—वि. [सं. नाश+ओहर] नाश करनवाला।

नश्तर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) छोटा तेज चाकू जो चीर फाड़ के काम आता है। (२) फोड़ा आदि चीरने-फाड़ने की क्रिया या भाव।

नश्वर - वि. [सं.] नष्ट हो जानेवाला।

नश्वरता—वि. [सं.] नश्वर होने का भाव।

नष—संज्ञा पुं. [सं. नख] नख, नाखून।

नषत—संज्ञा पुं. [सं. नक्षत्र] नक्षत्र, तारा।

नष-शिष—संज्ञा पुं. [सं. नखशिख] (१) नख से शिख तक अंग। (२) इन अंगों का वर्णन।

नष्ट—वि. [सं.] (१) जो दिखायी न दे। (२) जिसका नाश हो गया हो। (३) नीच, अधम। (४) व्यर्थ, निष्फल। (५) धनहीन।

नष्टता—संज्ञा पुं. [सं.] नष्ट होने का भाव।

नष्ट-भ्रष्ट—वि. [सं.] टूटा-फूटा और नष्ट।

नष्टा—संज्ञा स्त्री. [सं.] दुराचारिणी, वेश्या।

नष्टात्मा—वि. [सं.] दुष्ट, नीच, अधम।

नष्टार्थ—वि. [सं.] धनहीन, दरिद्र।

नष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] नाश, विनाश।

नसंक—वि. [सं. निःशंक] निडर, निर्भय।

नस—संज्ञा स्त्री. [सं. स्नायु] शरीर-तंतु, शरीर की रक्तवाहिनी नलियों का लच्छा।

मुहा.—नस चढ़ना (भड़कना)—नस का अपने स्थान से इधर-उधर हटकर पीड़ा करना। नस-नस ढीली होना—(१) थकावट आना। (२) पस्त होना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नस नस में—**सारे शरीर में**। नस-नस फड़क उठना—**बहुत प्रसन्नता या उमंग होना**।

(२) **पत्ते-पत्तियों का रेशा या तंतु**।

नसतरंग—संज्ञा पुं. [हिं. नस+तरंग] **एक बाजा**।

नसना—क्रि. अ. [सं. नशन] (१) **नष्ट या बरबाद होना**। (२) **खराब होना**।

नसर—संज्ञा स्त्री. [अं.] **गद्य, 'प्रोज़' (अँग्रेजी)**।

नसल—संज्ञा स्त्री. [अं.] **वंश, कुल**।

नसहा—वि. [हिं. नस+हा] **जिसमें नसें हों**।

नसा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नाक, नासा, नासिका**।

संज्ञा पुं. [फ़ा. नशा] **नशा, मद**।

नसाइ—क्रि. स. [हिं. नसाना] **नष्ट हो जाय**। उ.—सूर हरि कौ भजन करि लै, जनम-मरन नसाइ—१-३१५।

नसाई—क्रि. स. [हिं. नसाना] (१) **नाश किया**।

प्र.—देउँ नसाई—**नाश कर दूं**। उ.—अंग याकौ मैं देउँ नसाई—१०-५७।

(२) **दूर कर दी**। उ.—सूर धन्य ब्रज जन्म लियौ हरि, धरनी की आपदा नसाई—३८३।

नसाना—क्रि. अ. [हिं. नसना का प्रे०] (१) **नष्ट या बरबाद हो जाना**। (२) **बिगड़ना, खराब होना**।

नसानी—क्रि. अ. [हिं. नसाना] **नाश की, दूर की, नष्ट की**। उ.—जानत नाहिं जगतगुरु माधौ, इहिं आए आपदा नसानी—१०-२५८।

नसायौ—क्रि. स. [हिं. नासना] **नष्ट किया, दूर किया**। उ.—सूरदास द्विज दीन सुदामा, तिहिं दारिद्र नसायौ—१-२०।

नसावत—क्रि. स. [हिं. नसाना] **मिटाते हो, नष्ट करते या कराते हो, दूर करते-कराते हो**। उ.—(क) कत अपनी परतीति नसावत, मैं पायौ हरि हीरा। सूर पतित तबहीं उठिहै, प्रभु, जब हँसि दैहौ बीरा—१-१३४। (ख) सूर स्याम नागर नारिनि कौं बासर-बिरह नसावत—४७६।

नसावन—वि. [हिं. नसाना] **दूर या नाश करनेवाला**।

नसावना—क्रि. अ. [हिं. नसाना] **नष्ट होना**।

नसावहु—क्रि. स. [हिं. नसाना] **नाश करो, नष्ट करो, दूर करो**। उ.—मोकौं मुख दिखराइ कै, त्रय ताप नसावहु—१०-२३२।

नसावै—क्रि. अ. [हिं. नसाना] **दूर करे या करता है, नसता है**। उ.—(क) अस्मय-तन गौतम-तिया कौ साप नसावै—१-४। (ख) सूर स्याम-पद-नख-प्रकास बिनु, क्यौं करि तिमिर नसावै—१-४८।

नसाहिं—क्रि. अ. [हिं. नसाना] **नष्ट होते हैं, नसाते हैं**। उ.—अतिहिं मगन महा मधुर रस, रसन मध्य समाहिं। पदुम-बास सुगंध-सीतल, लेत पाप नसाहिं—१-३३८।

नसीठ—संज्ञा पुं. [देश.] **असगुन, बुरा शकुन**।

नसीनी—संज्ञा स्त्री. [. निःश्रेणी] **सीढ़ी, जीना**।

नसीब—संज्ञा पुं. [अ.] **भाग्य, किस्मत, तकदीर**।

नसीबजला—वि. [अ. नसीब+हिं. जलना] **अभागा**।

नसीबवर—वि. [अ.] **भाग्यवान्**।

नसीबा—संज्ञा पुं. [अ. नसीब] **भाग्य**।

नसीला—वि. [हिं. नस+ईला] **नसदार**।

नसीहत—संज्ञा स्त्री. [अ.] **सीख, उपदेश**।

नसेनी—संज्ञा स्त्री. [सं. श्रेणी] **सीढ़ी**।

नसै—क्रि. अ. [हिं. नसना] **नष्ट हो, बरबाद हो**। उ.—(क) क्रम क्रम करि सबकी गति होइ। मेरौ भक्त न नहिं कोइ—३-१३। (ख) दृस्यमान बिनास सब होइ, साच्छी ब्यापक, नसै न सोइ—५-२।

नस्य—संज्ञा पुं. [सं.] **नास, सुँघनी**।

नहँ—संज्ञा पुं. [हिं. नख] **नख, नाखून**। उ.—... माल स्याम-उर सोहै, बिच बघ-नह छबि पावै री—१०-१३६।

नहछू—संज्ञा पुं. [सं. नखक्षौर] **विवाह की एक रीति जिसमें वर के नाखून-बाल कटाकर मेंहदी ... लगायी जाती है**।

नहन—संज्ञा पुं. [देश.] **पुरवट खींचने की मोटी रस्सी**।

नहना—क्रि. [हिं. बाँधना] **काम में लगाना, जोतना**।

नहर—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **सिंचाई आदि के लिए बनाया गया जलमार्ग**। उ.—राम अरु ... सुभट ताके हते रुधिर के नहर सरिता बहाई।

नहरुआ, नहरुवा, नहरू—संज्ञा पुं. [देश.] **एक रोग**।

नहला—संज्ञा पुं. [हिं. नौ] **नौ बिंदी का ताश**।

नहलाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. नहलाना+ई] (१) **नहलाने की क्रिया या भाव**। (२) **नहलाने से प्राप्त धन**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहलाना, नहवाना—क्रि. सं. [हिं. 'नहाना' का सक०] **स्नान कराना, स्नान करने को प्रवृत्त करना।**

नहसुत—क्रि. स. [सं. नखसुत] **नख की रेखा या निशान। नखाग्र भाग।** उ.—नहसुत कील कपाट सुलछन दै दृग द्वार अगोट—२२१८।

नहाँ—संज्ञा पुं. [हिं. नख] **नख, नहँ, नाखून।** उ.—उर बघनहाँ, कंठ कठुला, झँडूले बार, बेनी लटकन मसि-बुंदा मुनि-मनहर—१०-१५१।

नहाए—क्रि. अ. बहु. [हिं. नहाना] **स्नान किया।** उ.—दुहुँ तब तीरथ माहिं नहाए—३-१३।

न्हान—संज्ञा पुं. [सं. स्नान] (१) **नहाने की क्रिया।** (२) **पर्व जब स्नान का महत्व हो।**

नहाना—क्रि. अ. [सं. स्नान, प्रा. हाराण, बुं० हनाना] (१) **स्नान करना।** (२) **तर या शराबोर हो जाना।**

नहार—वि. [फ़ा.] **निराहार, बासी मुँह।**

नहारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. नहार] **जलपान, नाश्ता।**

नहाहीं—क्रि. अ. [हिं. नहाना] **नहाती हैं, स्नान करती हैं।** उ.—प्रातहिं तैं इक जाम नहाहीं। नेम धर्म हीं मैं दिन जाहीं—७६६।

नहिं—अव्य. [हिं. नहीं] **नहीं।**

नहिअन, नहियाँ—संज्ञा पुं. [हिं. नह=नख] **पैर की छोटी उँगली का एक गहना।**

नहीं—अव्य. [सं. नहिं] **अस्वीकृति या निषेध-सूचक एक अव्यय।**

नहुष—संज्ञा पुं. [सं.] **अयोध्या का इक्ष्वाकुवंशी एक राजा जो अंबरीष का पुत्र और ययाति का पिता था। एक बार इंद्रासन मिलने पर यह इंद्राणी पर मोहित हो गया। बुलाने पर इंद्राणी ने कहलाया–सप्तर्षियों से पालकी उठवाकर हमारे यहाँ आओ तो तुम्हारी इच्छा पूरी हो सकती है। पालकी लेकर सप्तर्षि धीरे-धीरे चल रहे थे। नहुष ने अधीर होकर 'सर्प सर्प' (जल्दी चलने को) कहा। अगस्त्य मुनि ने इस पर नहुष को सर्प हो जाने का शाप दे दिया। युधिष्ठिर ने इस योनि से उसका उद्धार किया।**

नहैहौं—क्रि. अ. [हिं. नहाना] **नहाऊँगा, स्नान करूँगा।** उ.—(क) गहि तन हिरनकसिप कौ चीरौं, फारि उदर तिहिं रुधिर नहैहौं—७-५। (ख) सूरदास है साखि जमुन-जल सौंह देहु जु नहैहौं—४१२।

नहूसत—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **खिन्नता, मनहूसी, उदासीनता।** (२) **अशुभ लक्षण।**

नाउँ—संज्ञा पुं. [हिं. नाम] **नाम।** उ.—अब झूठौ अभिमान करति है, झुकति जौ उनकैं नाउँ—६-७७।

नाँगा—वि. [हिं. नंगा] **नग्न, वस्त्रहीन।**

नाँगी—वि. स्त्री. [हिं. नंगा] **नंगी, नग्न, वस्त्ररहित।** उ.—(क) तुम यह बात अचंभौ भाषत, नाँगी आवहु नारी—७८८। (ख) जल भीतर जुवती सब नाँगी ७६६।

नाँगे—वि. [हिं. नंगा] (१) **नंगा, नग्न, वस्त्रहीन।** (२) **आवरणरहित, खुला हुआ, जो ढका न हो।** उ.—(क) सोई हरि काँधे कामरि, काछ किए नाँगे पाइनि, गाइनि टहल करैं—४५३। (ख) सूरदास प्रभु नाँगे पायँन दिनप्रति गैया चारीं—३४१२।

नाँगौ—वि. [हिं नंगा] **नंगा, वस्त्ररहित।** उ.—अर्द्ध-निसा नृप नाँगौ धायौ—६-२।

नाँघना—क्रि. स. [हिं. लाँघना] **उछलकर पार जाना।**

नाँचौ—क्रि. अ. [हिं. नाचना] (१) **हर्ष के मारे स्थिर न रहो, हृदयोल्लास के कारण अंगों को गति दो।** उ.—सूरदास प्रभु हित कै सुमिरौ जौ, तौ आनँद करिकै नाँचौ—१८३।

नाँठना—क्रि. अ. [सं. नष्ट] **नष्ट हो जाना।**

नाँद—संज्ञा स्त्री. [सं. नंदक] **बड़ा और चौड़ा पात्र।**

नाँदना—क्रि. अ. [सं. नाद] (१) **शब्द या शोर करना।** (२) **छींकना।**

क्रि. अ. [सं. नंदन] **प्रसन्न या आनंदित होना।**

नांदी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आशीर्वादात्मक पद्य जो नाटकाभिनय के आरंभ में सूत्रधार कहता है।**

नांदीमुख—संज्ञा पुं. [सं.] **एक श्राद्ध (वृद्धिश्राद्ध) जो पुत्रजन्म, विवाह आदि मंगल अवसरों पर किया जाता है।** उ.—तब न्हाइ नंद भए ठाढ़े अरु कुस हाथ धरे। नांदीमुख पितर पुजाइ, अंतर सोच हरे—१०-२४।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाँदीमुखी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक वर्णवृत्त।**

नाँयँ—अव्य. [हिं. नहीं] **नहीं।**

नाँव—संज्ञा पुं. [हिं. नाम] **नाम, संज्ञा।** उ.—कुमति तासु रानी कौ नाँव—४-१२।

नाँह—वाक्य [हिं. न+आइ=है] **नहीं है।** उ.—मेरो मन पिय-जीव बसत है, पिय को जीव मो मैं नाँह—१६७४।

ना—अव्य [सं.] **न, नहीं।** उ.—(क) बयरोचन-सुत को सुभाव संग देखि परत ना मित्त—सा. ८६। (ख) ना जानौं करिहौ अब कहा तुम—१-१३०। (ग) जसुमति बिकल भई छिन कल ना—१०५४।

नाइ—क्रि. स. [हिं. नवाना, नाना] (१) **नवाकर, नम्र होकर।** उ.— सुकदेव हरि चरननि सिर नाइ। राजा सौं बोलौ या भाइ—२-१। (२) **नीचा करके, नीचे झुकाकर।** उ.—गहि असुर धाइ, पुनि नाइ निज जंघ पर, नखनि सौं उदर डार्‌यौ बिदारी—७-६। (३) **डालकर।** उ.—कनक थार भरि खीर धरी लै, तापर घृत-मधु नाइ—१०-८६।

संज्ञा पुं. [हिं. नाव] **नाव, नौका।** उ.—तुम बिनु ब्रजबासी ऐसे जीवैं ज्यौं करिया बिन नाइ—२८४४।

नाइक—संज्ञा पुं. [सं. नायक] **नायक।**

नाइन—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. नाई] (१) **नाई जाति की स्त्री** (२) **नाई की पत्नी।**

नाइहो, नाइहौ—क्रि. स. [हिं. नवाना, नाना] **झुकाओगे।** उ.—करि करि समाधान नीकी बिधि मोहि को माथौ नाइहो—२६४२।

नाईं—संज्ञा स्त्री. [सं. न्याय] **समान दशा, एक सी स्थिति।**

वि.—**समान, तुल्य, तरह।** उ.— (क) रावन अरि कौ अनुज बिभीषन, ताकौं मिले भरत की नाईं—१-३। (ख) खम करत स्वान की नाईं—१-१०३। (ग) भ्रमि आयौ कपि गुंजा की नाईं—१-१४७। (घ) बादत बड़े सूर की नाईं—२५६०।

नाई—संज्ञा पुं. [सं. नापित] **नाऊ, हज्जाम।**

वि. [हिं. नाईं] **समान, तुल्य, तरह।** उ.—आत अति बोल झोल तनु डार्‌यौ अनल भँवर की नाई—३१७७।

क्रि. स. [हिं. नवाना, नाना] (१) **झुकाकर, नम्र होकर।** उ.—सूर दीन प्रभु प्रगट-बिरद सुनि अजहुँ दयाल पतत सिर नाई—१-६। (२) **घुसेड़कर, ठूंस कर।** उ.—मुख चुम्यौ, गहि कंठ लगायौ, बिष लपट्यौ अस्तन मुख नाई—१०-५१। (३) **छोड़कर, ऊपर से डालकर, मिलाकर।** उ.—अति प्यौसर सरस बनाई। तिहि सोंठ-मिरिचि रुचि नाई—१०-१८३।

नाउँ—संज्ञा पुं. [हिं. नाम] (१) **नाम।** उ.–तुम कृपालु करुनानिधि, केसव, अधम उधारन नाउँ—१-१२८। (२) **चिह्न, नाम निशान।** उ.—इंद्रहिं पेलि करी गिरि पूजा सलिल बरषि ब्रज नाउँ मिटावहि—९४७।

नाउ—संज्ञा पुं. [हिं. नाम] **नाम, संज्ञा।** उ.–पतित-उधारन है हरि-नाउ—६-३।

संज्ञा पुं. [हिं. नाव] **नाव, नौका।** उ.—दीख नाउ कागर की को देखौ चढ़ि जात—३२८२।

नाउत—संज्ञा पुं. [देश.] **झाड़-फूंक करनेवाला।**

नाउन—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. नाऊ] (१) **नाऊ जाति की स्त्री।** (२) **नाऊ की पत्नी।**

नाउम्मेद—वि. [फ़ा.] **निराश।**

नाउम्मेदी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **निराशा।**

नाऊँ—क्रि. स. [हिं. नाना, नवाना] **नवाता हूं, झुकाता हूँ।** उ.—हरि, हरि-भक्तनि कौं सिर नाऊँ—१-२६०।

संज्ञा पुं. [हिं. नाम] **नाम।** उ.—जानि लई मेरे जिय की उन गर्व-प्रहारन उनको नाऊँ—१६५४।

नाऊ—संज्ञा पुं [सं. नापित] **नाई, हज्जाम।**

नाए—क्रि. स. [सं. नवाना] (१) **झुकाये।** (२) **डाले।**

मुहा.—मुख नाए— **मुख में डाले, खाये।** उ.—गोबिंद गाढ़े दिन के मीत।.....। लाखा गृह पांडवनि उबारे, साक-पत्र मुख नाए—१-१३१।

नाक—संज्ञा स्त्री. [सं. नक, पा. नक्क] (१) नासिका।

मुहा.—नाक कटना—**अप्रतिष्ठा होना।** नाक कटाना— **अप्रतिष्ठा कराना।** नाक का बाल—**बहुत घनिष्ठ मित्र या सहायक।** नाक घिसना—**बहुत बिनती करना।** नाक चढ़ना—**क्रोध आना।** नाक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ़ाना–(१) क्रोध करना। (२) अरुचि दिखाना। नाकों चने चबवाना—खूब तंग या हैरान करना। नाक तक खाना– ठूँस-ठूँसकर खाना। नाक न दी जाना—बहुत दुर्गंध आना। नाक पकड़ते दम निकलना—बहुत ही दुबला होना। नाक पर गुस्सा रहना—बहुत जल्दी गुस्सा आना। नाक पर मक्खी न बैठने देना–(१) बहुत साफ तबियत का आदमी होना, बहुत साफ हिसाब किताब रखनेवाला। (२) बहुत साफ-सुथरा रहना। (३) दूसरे का जरा भी अहसान न लेना। (किसी की) नाक पर सुपारी तोड़ना—बहुत तंग या हैरान करना। नाक–भौं चढ़ाना (सिकोड़ना)–(१) अरुचि या अप्रसन्नता दिखाना। (२) चिढ़ना और घिनाना। नाक में दम रखना–बहुत तंग या हैरान करना। नाक रगड़ना–बहुत बिनती करना। नाक रगड़े का बच्चा—वह पुत्र जो देवताओं की बहुत पूजा-सेवा और मनौती करने पर हुआ हो। नाकों आना–बहुत तंग या हैरान होना। नाक में बोलना—नकियाना, बहुत महीन आवाज में बोलना। नाक लगाकर बैठना–बड़ी इज्जतवाला बनना। नाक सिकोड़ना—अरुचि दिखाना, घिनाना।

(२) नाक का मल। (३) प्रतिष्ठा या शोभा की वस्तु। (४) मान, प्रतिष्ठा।

मुहा.—नाक रख लेना–मान की रक्षा करना।

संज्ञा स्त्री. [सं. नक्र] एक जलजंतु।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) आकाश। (२) स्वर्ग। उ.—नाक निरै सुख-दुःख सूर नहिं, जिहिं की भजन प्रतीति—२-१२।

नाकनटी संज्ञा स्त्री. [सं.] स्वर्गीय नर्तकी, अप्सरा।

नाकना—क्रि. स. [सं. लंघन; हिं. लाँघना, नाँघना] (१) उछलकर पार करना, लाँघना, डांकना। (२) बढ़ जाना, मात कर देना।

नाकबुद्धि—वि. [हिं. नाक+बुद्धि] तुच्छ बुद्धि, ओछी समझ का। उ.—अपनो पेट दियो तैं उनको नाकबुद्धि तिय सबै कहै री।

नाका—संज्ञा पुं. [हिं. नाकना] (१) मुहाना, प्रवेशद्वार। (२) मुख्य स्थान। (३) नगर का प्रवेशद्वार। (४) चौकी। (५) सुई का छेद।

संज्ञा पुं [सं. नक्र] एक जलजंतु।

नाकाबिल—वि. [फ़ा. ना+अ. काबिल] अयोग्य।

नाकी—संज्ञा पुं. [सं. नाकिन्] देवता।

नाकु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दीमक का ढूह, वल्मीक। (२) टीला, भीटा। (३) पर्वत।

नाकुल – वि. [सं.] नेवला-संबंधी।

संज्ञा पुं—नकुल की संतति।

नाकुली—वि. [सं. नकुल] नकुल का बनाया हुआ।

नाकेश—संज्ञा पुं [सं.] स्वर्ग का स्वामी, इन्द्र।

नाक्षत्र—वि. [सं.] नक्षत्र-संबंधी।

नाखत—क्रि. स. [हिं. नाखना] नाश या नष्ट करते हैं। उ.—जे नखचंद्र भजन खल नाखत रमा हृदय जेहि परसत—१३४२।

नाखना—क्रि. स. [सं. नष्ट] (१) नाश या नष्ट करना। (२) फेंकना, गिराना, डालना।

क्रि. स. [हिं. नाकना] लाँघना, उल्लंघन करना।

नाखि—क्रि. स. [हिं. नाखना] नष्ट करके।

प्र.—डारै नाखि—नष्ट कर दिये। उ.—प्रथम ऊधौ आनि दै हम सगुन डारै नाखि—३०४८।

नाखी—क्रि. स. [हिं. नाखना] फेंकी, गिरायी, डाली।

प्र.—दियो नाखी—गिरा दिया, फेंक दिया, डाल दिया। उ.—जब सुरपति व्रज बोरन लीनो दियो क्यों न गिरि नाखी—२७३६।

क्रि. स. [हिं. नाकना] लाँघी, पार की। उ.—पाछे तैं सीय हरी विधि मरजाद राखी। जो पै दसकंध बली रेख क्यौं न नाखी।

नाखुश—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] नाराज, अप्रसन्न।

नाखुशी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] नाराजी, अप्रसन्नता।

नाखून—संज्ञा पुं. [फ़ा. नाखुन] नख, नहँ।

नाखै—क्रि. स. [हिं. नाखना] नष्ट कर दे, मिटा दे। उ.—जो हरि-चरित ध्यान उर राखै। आनँद सदा दुखित-दुख नाखै—३६१।

नाख्यो, नाख्यौ—क्रि. स. [हिं.नाखना] (१) हटा दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोड़ दिया, दूर कर दिया, टाल दिया, मिटा दिया। उ.—भारत में मेरौ प्रन राख्यौ। अपनौ कह्यौ दूरि करि नाख्यौ—१-२७७। (२) **नष्ट कर दिया, नाश कर दिया।** उ.—(क) आये स्याम महल ताही के नृपति महल सब नाख्यो—२६३४। (ख) मात-पिता हित प्रीति निगम पथ तजि दुख-सुख भ्रम नाख्यौ—३०१४।

नाग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सर्प, साँप।** (२) **कद्रू से उत्पन्न कश्यप की संतान जो पाताल में रहती है।** (३) **एक ऐतिहासिक जाति।** (४) **हाथी।** उ.—रोवैं बृषभ, तुरग अरु नाग—१-२८६। (५) **कंस का कुबलयापीड़ हाथी जिसे बलराम और श्रीकृष्ण ने मारा था।** उ—सूरदास प्रभु सुर सुखदायक मार्यौ नाग पछारी—२५६४। (६) **पान, तांबूल।** (७) **बादल।** (८) **आठ की संख्या।** (९) **दुष्ट और क्रूर मनुष्य।**

नाग-कन्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नाग-जाति की युवती जो बहुत सुन्दर मानी जाती है।**

नागचूड़—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव, महादेव।**

नागजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नाग-कन्या।**

नागझाग—संज्ञा पुं. [हिं. नाग+झाग] **अफीम।**

नागधर—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव, महादेव।**

नागध्वनि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक संकर रागिनी।**

नागनक्षत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **अश्लेषा नक्षत्र।**

नागनग—संज्ञा पुं. [सं.] **गजमुक्ता।**

नागपंचमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सावन सुदी पंचमी जब नाग-पूजन होता है।**

नागपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सर्पराज वासुकि।** (२) **हस्तिराज ऐरावत।**

नागपाश—संज्ञा पुं. [सं.] **वरुण का एक अस्त्र।**

नागपुर—संज्ञा पुं. [सं.] **सर्प नगरी भोगवती जो पाताल लोक में है।**

नागफनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाग-फन] (१) **एक कटीला पौधा।** (२) **एक बाजा।** (३) **कान का एक गहना।** (४) **नागा साधु का कौपीन।**

नागबंधु—संज्ञा पुं. [सं.] **पीपल का पेड़।**

नागबेल—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पान की बेल।**

नाग-यज्ञ—संज्ञा पुं. [सं.] **जनमेजय का यज्ञ जिसमें नागों की आहुतियाँ देकर नाग जाति का विनाश किया गया था।**

नागरंग—संज्ञा पुं. [सं.] **नारंगी।**

नागर—वि. [सं.] (१) **नगर में रहनेवाला।** (२) **नगर से संबंध रखनेवाला।**

संज्ञा पुं.—(१) **नगर म रहनेवाला मनुष्य।** (२) **चतुर, सभ्य और सज्जन व्यक्ति।** (३) **देवर** (४) **गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति।**

नागरक्त—संज्ञा पुं. [सं.] **सिंदूर।**

नागरता, नागरताई—संज्ञा स्त्री. [सं. नागरता] (१) **नागरिकता।** (२) **नगर का सभ्य और शिष्ट व्यवहार।** उ.—नागरता की रासि किसोरी—२३१०। (३) **चतुरता।** उ.—नवनागर तबहीं पहिचाने नागरि नागरिताई - २२७५।

नागरबेल—संज्ञा स्त्री. [सं. नागवल्ली] **पान की बेल।**

नागराज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सर्पों का राजा बासुकि।** (२) **शेषनाग।** (३) **हस्तिराज ऐरावत।**

नागरि—वि. [सं. नागरी] (१) **नगर की रहनेवाली।** (२) **सुन्दर, चतुर।** उ.—काम क्रोधऽरु लोभ मोह्यौ, ठग्यौ नागरि नारि—१-३०६।

संज्ञा स्त्री.—(१) **नगर की रहनेवाली स्त्री।** (२) **चतुर नारी।**

नागरिक—वि. [सं.] (१) **नगर-संबंधी।** (२) **नगर में रहनेवाला।** (३) **चतुर।** (४) **सभ्य।**

संज्ञा पुं.—(१) **नगर-निवासी।** (२) **सभ्य और सज्जन व्यक्ति।**

नागरिकता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **'नागरिक' होने का भाव।**

नागरिया—संज्ञा स्त्री. [सं. नागरी] **युवती, नागरी।** उ.—नवल किसोर नवल नागरिया। अपनी भुज स्याम-भुज ऊपर, स्याम भुजा अपनैं उर धरिया—६८८।

नागरी—संज्ञा स्त्री. [सं. पुं. नागर] (१) **चतुर और शिष्ट स्त्री।** उ.—नैननि भुकी सु मन मैं हँसी नागरी, उरहनौ देत रुचि अधिक बाढ़ी—१०-३०७। (२) **नगर में रहनेवाली स्त्री।** (३) **देवनागरी लिपि।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि.—**चतुर और शिष्ट**—उ.—श्री मदन मोहन लाल सँग नागरी ब्रजबाल—६२३।

नागरीट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लंपट**। (२) **जार**।

नागरेणु—संज्ञा पुं. [सं.] **सिंदूर**।

नागलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पान की लता, पान**।

नागलोक—संज्ञा पुं. [सं. नाग+लोक] **पाताल जहाँ कद्रू से उत्पन्न कश्यप के 'नाग' नामक पुत्र रहते हैं।**

नागवल्लरी, नागवल्ली—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पान**।

नागवार—वि. [फ़ा.] **जो अच्छा न लगे, अप्रिय**।

नागांतक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पक्षिराज गरुड़**। (२) **मयूर, मोर**। (३) **सिंह, केहरी**।

नागा—संज्ञा पुं. [सं. नग्न] **एक संप्रदाय के साधु जो नंगे रहते हैं**।

संज्ञा पुं. [अ० नागः] **कार्यक्रम-भंग, अन्तर**।

नागार्जुन—संज्ञा पुं. [सं.] **एक प्राचीन बौद्ध महात्मा**।

नागाशन—संज्ञा पं. [सं.] (१) **पक्षिराज गरुड़**। (२) **मोर, मयूर**। (३) **सिंह**।

नागिन, नागिनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाग] **नाग की मादा**।

नागेंद्र, नागेरा, नागेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शेषनाग**। (२) **वासुकि**। (३) **ऐरावत**।

नाघ्यौ—क्रि. स. [हिं. लाँघना, नाँघना] **लांघा, पार किया**। उ.—जान्यौ नहीं निसाचर कौ छल, नाघ्यौ धनुष-प्रकार—९-८२।

नाच—संज्ञा पुं. [सं. नृत्य, प्रा. णाच्च, अथवा सं. नाट्य] (१) **उमंग या उल्लास के कारण सामान्य उछल-कूद अथवा संगीत के ताल-स्वर के अनुसार अंगों की गति**।

मुहा.—नाच काछना—**नाचने को तैयार होना**। उ.—मैं अपनौ मन हरि सौं जोर्यौ।...... । नाच कछ्यौ घूँघट छोर्यौ तब लोक-लाज सब फटकि पछोर्यौ। नाच दिखाना—(१) **किसी के सामने नाचना**। (२) **उछलना-कूदना**। (३) **विचित्र व्यवहार करना**। नाच नचाना—(१) **मनचाहा काम करा लेना**। (२) **तंग, हैरान या परेशान करना**। नाच नचायौ—**तंग या हैरान किया**। उ.—इक कौ आनि ठेलत पाँच। करुनामय कित जाउँ कृपानिधि, बहुत नचायौ नाच—१-१९६। नाच नचावै—**मनचाहा आचरण या व्यवहार करने पर विवश करें**। उ.—इक मन अरु ज्ञानेंद्री पाँच। नर कौं सदा नचावैं नाच—५-४। नाच नचावै—**मनचाहा काम करने को विवश करती है**। उ.—(क) माया नटी लकुटि कर लीन्हे कोटिक नाच नचावै—१-४२। (ख) जो कछु कुबिजा के मन भावै सोई नाच नचावै—३४४१।

(२) **खेल, क्रीड़ा**। (३) **काम-धंधा**।

नाच-कूद—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाच+कूद] (१) **नाच-तमाशा**। (२) **प्रयत्न करने को हाथ-पैर मारना**। (३) **क्रोध में उछलना-कूदना**।

नाचघर—संज्ञा पुं. [हिं. नाच+घर] **नृत्यशाला**।

नाचत—क्रि. अ. [हिं. नाचना] (१) **नाचते हैं**। (२) **इधर से उधर फिरते हैं, स्थिर नहीं रहते**। उ.—ब्रह्मा-महादेव-सुर-सुरपति नाचत फिरत महा रस भोयौ—१—५४।

नाचना—क्रि. अ. [हिं. नाच] (१) **उमंग या उल्लास से अंगों को गति देना**। (२) **थिरकना, नृत्य करना**। (३) **चक्कर काटना, घूमना-फिरना**।

मुहा.—सिर पर नाचना—(१) **घेरना, ग्रसना, प्रभाव डालना**। (२) **पास या निकट आना**। आँख के सामने नाचना—**ध्यान में ज्यों का त्यों बना रहना**।

(४) **दौड़ना-धूपना, घूमना-फिरना**। (५) **थर्राना, काँपना**। (६) **क्रोध में उछलना-कूदना और हाथ पैर पटकना**।

नाचमहल—संज्ञा पुं. [हिं. नाच+महल] **नाचघर**।

नाच-रंग—संज्ञा पुं. [हिं.नाच+रंग] **आमोद-प्रमोद**।

नाचार—वि. [फ़ा.] (१) **लाचार**। (२) **व्यर्थ**।

क्रि. वि.—**विवश होकर, हारकर, लाचारी से**।

नाची—क्रि. अ. [हिं. नाचना] (१) **उमंग या उल्लास में अंगों को गति दी**। (२) **नृत्य करने या थिरकने लगी**। (३) **चक्कर मारने या घूमने लगी**।

मुहा.—सीस पर नाची—(१) **ग्रस लिया, आक्रांत कर लिया, प्रभावित किया**। उ.—रावन सौ नृप जात न जान्यौ, माया बिषम सीस पर नाची—१-१८।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाचीज—वि. [फ़ा. नाचीज़] तुच्छ, निकम्मा।

नाचे—क्रि. अ. बहु. [हिं. नाचना] (१) इधर-उधर दौड़ते-घूमते फिरे; जैसा कहा, वैसा किया। उ.—प्रीति के वचन बाचे, बिरह अनल आँचे, अपनी गरज को तुम एक पाइँ नाचे—२००३।

यौ०—नाचे-गाए—आमोद-प्रमोद से। उ.—ना जानौं अब भलो मानिहै ऊधौ नाचे-गाए—३४०३।

नाचै—क्रि. अ. [हिं. नाचना] (१) इधर-उधर भटकना, स्थिर न रहना। (२) जन्म लेकर सांसारिक झगड़ों में पड़कर दौड़-धूप करे। उ.—जाइ समाइ सूर वा निधि मैं, बहुरि जगत नहिं नाचै—१-८१।

नाच्यौ—क्रि. अ. [हिं. नाचना] नाचा, नृत्य किया। उ.—अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल—१-१५३।

नाज—संज्ञा पुं. [हिं. अनाज] (१) अनाज। (२) भोजन।

संज्ञा पुं. [फ़ा. नाज़] (१) ठसक, नखरा, चोंचला।

यौ.—नाज-अदा या नाज-नखरा—(१) नखरा, चोंचला, हाव-भाव। (२) चटक-मटक।

मुहा.—नाज उठाना—नखरे या चोंचले सहना। नाज से पालना—बड़े लाड़-प्यार से पालना।

(२) गर्व, घमंड, अभिमान, गरूर।

नाजनी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. नाज़नी] सुंदर स्त्री।

नाजायज—वि. [अ. नाजायज़] अनुचित, नियम-विरुद्ध।

नाजु—संज्ञा पुं. [हिं. अनाज] भोजन, खाना, खाद्य पदार्थ। उ.—राखौ रोकि पाइ बंधन कै, अरु रोकौ जल नाजु—७८।

नाजुक—वि. [फ़ा. नाज़ुक] (१) कोमल, सुकुमार। (२) महीन, बारीक (३) सूक्ष्म। (४) जरा सी ठेस से ही टूट जानेवाली। (५) जिसमें हानि होने का डर हो।

नाजो—वि. स्त्री. [हिं. नाज] (१) दुलारी। (२) कोमलांगी।

नाट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नृत्य, नाच। (२) नकल, स्वाँग। उ.—यह ब्यवहार आजु लौं है ब्रज कपट नाट छल ठानत—२७०३। (३) एक राग।

नाटक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रदर्शन, अभिनय। उ.—बदन उघारि दिखायौ अपनौ नाटक की परिपाटी—१०-२५४। (२) अभिनय करनेवाला। (३) वह ग्रंथ जिसका अभिनय किया जा सके।

नाटकशाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] स्थान जहाँ अभिनय हो।

नाटकावतार—संज्ञा पुं. [सं.] एक नाटक के बीच दूसरे नाटक का अभिनय।

नाटकी—संज्ञा पुं. [हिं. नाटक] नाटक करनेवाला।

नाटकीय—वि. [सं.] नाटक-संबंधी।

नाटना—क्रि. अ. [सं. नाट्य = बहाना] वचन देकर फि[र] मुकर जाना, वादे से इनकार करना।

नाटवसंत—संज्ञा पुं. [सं.] एक राग।

नाटा—वि. [सं. नत] छोटे कद का।

नाटिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नाटक का एक भे[द] जिसमें चार अंक होते हैं। (२) एक रागिनी।

नाटित—वि. [सं.] जिसका अभिनय हुआ हो।

नाटी—वि. स्त्री. [हिं. पुं. नाटा] छोटी, जो ऊँची न हो।

संज्ञा स्त्री.—छोटे डील की गाय। उ.—सूरदा[स] नँद लेहु दोहिनी, दुहहु लाल की नाटी—१०-२५६।

नाट्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नटों का काम। (२) अभिनय। (३) स्वाँग, नकल।

नाट्यकार—संज्ञा पुं. [सं.] नाटक करनेवाला, नट।

नाट्यरासक—संज्ञा पुं. [सं.] एक अंक का उपरूपक।

नाटकशाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] स्थान जहाँ नाटक हो।

नाठ—संज्ञा पुं. [सं. नष्ट, प्रा. नट्ठ] नाश, ध्वंस।

नाठना—क्रि. स. [सं. नष्ट, प्रा. नट्ठ] नष्ट करना।

क्रि. अ.—नष्ट या ध्वस्त होना।

क्रि. अ. [हिं. नाटना] हट जाना, भागना।

नाड़ा—संज्ञा पुं. [सं. नाड़] इजारबंद, नीबी।

नाड़िया—संज्ञा पुं. [सं. नाड़ी] नाड़ी पकड़नेवाला, वैद्य।

नाड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नली। (२) धमनी।

मुहा.—नाड़ी चलना—कलाई की नाड़ी में ग[ति] होना जो जीवन का लक्षण है। नाड़ी छूटना—(१) नाड़ी न चलना। (२) मूर्च्छा आना। (३) मृ[त्यु] होना।

(३) ज्ञान, शक्ति और श्वास वाहिनी नलि[काएँ]। (४) वर-वधू की गणना बैठाने में कल्पित चक्रों [में] स्थित नक्षत्र-समूह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नात—संज्ञा पुं. [सं. ज्ञाति, प्रा० णाति] (१) **नातेदार, संबंधी**। (२) **नाता, संबंध**। उ.—(क) राखो मोहिं नात जननी को मदनगुपाल लाल मुख फेरो—२५३२। (ख) होहु बिदा घर जाहु गुसाईं माने रहियौ नात—२६५७। (ग) सूर प्रभु यह सुनहु मोसों एकहीं सों नात—२६१७।

नातरि, नातरु—अव्य. [हिं. न+तो+अरु] **और नहीं तो, अन्यथा**। उ.—(क) गाइ लेहु मेरे गोपालहिं। नातरु काल-व्याल लेतै हैं, छाँड़ि देहु तुम सब जंजालहिं—१-७४। (ख) जा सहाइ पांडव-दल जीतौं, अर्जुन कौ रथ लीजै। नातरु कुटुँब सकल संहरि कै, कौन काज अब जीजै—१-२६६। (ग) कोउ खवावै तो कछु खाहिं। नातरु बैठे ही रहिं जाहिं—५-२।

नातवाँ—वि. [फ़ा.] **निर्बल, दुर्बल, अशक्त**।

नाता—संज्ञा पुं. [हिं. नात] (१) **संबंध, रिश्ता**। (२) **संबंध, लगाव**। उ.—(क) अपनी प्रभु भक्ति देहु जासौं तुम नाता—१-१२३। (ख) सूरदास श्री रामचंद्र बिनु कहा अजोध्या नाता—६-४६।

नातिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाती] **लड़की की लड़की**।

नाती—संज्ञा पुं. [सं. नप्तृ, प्रा. नत्ति] **लड़की का लड़का**। उ.—सुत के सुत नाती पतिनी की महिमा कहिय न जाई—८३६।

नाते—क्रि. वि. [हिं. नाता] (१) **संबंध से**। उ.—मिलि किन जाहु बटाऊ नाते—२५२८। (२) **हेतु, वास्ते, लिए**। उ.—दूध-दही के नाते अनवत बातें बहुत गुपाल।

संज्ञा पुं. बहु.—**बहुत से संबंध या रिश्ते**। उ.—झूठे नाते जगत के सुत-कलत्र-परिवार—२-२६।

नातेदार—वि. [हिं. नाता+दार] **सगे-संबंधी**।

नातै—क्रि. वि. [हिं. नाता] **संबंध से, संबंध के कारण**। उ.—(क) पुनि पुनि तुमहिं कहत कत आधे कछुक सकुच है नातै—३०२४। (ख) उग्रसेन बैठारि सिंहासन लोग कहत कुल नातै ३३२४।

नातौ—संज्ञा पुं. [हिं. नात] (१) **कौटुंबिक घनिष्ठता, जाति-संबंध, रिश्ता**। उ.—(क) जग मैं जीवन ही कौ नातौ—१-३०२। (ख) रघुपति चित्त बिचार करयौ। नातौ मानि सगर सागर सौं, कुस-साथरी परयौ—६-१२२। (ग) हमहिं तुमहिं सुत-तात को नातौ और परयौ है आइ—२६५१। (२) **लगाव, संबंध**। उ.—तब तैं गृह सौं नातौ टूटयौ जैसैं काँचो सूत री—१०-१३६।

नात्र—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव**।

नाथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रभु, स्वामी**। उ.—तहँ सुख मानि बिसारि नाथ पद अपनैं रंग बिहरतौ—१-२०३। (२) **पति**। उ०—कौन बरन तुम देवर सखि री, कौन तिहारौ नाथ—६-४४। (३) **गोरखपंथियों की उपाधि या पदवी जो उनके नामों से मिली रहती है**। (४) **पशुओं को नाथने की रस्सी**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. नथ] **नाक में पहनने की नथ**।

नाथत—क्रि. स. [हिं. नाथ, नाथना] **नाक छेदकर वश में करते है, नाथते हैं**। उ.—नाथत ब्याल बिलंब न कीन्हौ—५५७।

नाथता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रभुता, स्वामीपन**।

नाथत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रभुत्व, स्वामित्व**।

नाथन—संज्ञा पुं. [सं.] **नाथने की क्रिया या भाव**। उ.—सात बैल नाथन के कारन आप अजोध्या आये—सारा. ६५५।

नाथना—क्रि. स. [हिं. नाथ] (१) **पशुओं को वश में रखने के लिए नाक छेदकर उसमें रस्सी डालना**।

मुहा.—नाक पकड़कर नाथना—**बल से वश में करना**।

(२) **वस्तु को छेदकर तागा डालना, नत्थी करना**।

नाथद्वारा—संज्ञा पुं. [सं. नाथद्वार] **उदयपुर में वल्लभ-संप्रदायी वैष्णवों का मंदिर जहाँ श्रीनाथजी की मूर्ति स्थापित है**।

नाथा—संज्ञा पुं. [सं. नाथ] **नाथ, स्वामी**। उ.—बानर बन बिघन कियौ, निसिचर कुल नाथा ९-६६।

नाथि—क्रि. स. [हिं. नाथना] **नाथकर, नाक छेदकर, वश में करके**। उ.—(क) नाग नाथि लै आइहैं, तब कहियौ बलराम—५८६। (ख) काली ल्याए नाथि, कमल ताही पर ल्याए—५८६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाथियाँ—क्रि. स. [हिं. नाथना] **नाथ लिया, नाक छेदकर वश में कर लिया।** उ.—(तब) धाइ धायौ, अहि जगायौ, मनौ छूटै हाथियाँ। सहस फन फुफुकार छाँड़े, जाइ काली नाथियाँ —५७७।

नाथे—क्रि. वि. [हिं. नाथना] **नाथे हुए, वश में किये हुए।** उ.—आवत उरग नाथे स्याम—१०-५६३।

नाथै—संज्ञा पुं. [सं. नाथ] **नाथ, स्वामी।** उ.—कहि कुसलातैं साँची बातैं आवन कह्यौ हरिनाथै—३४४१।

नाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शब्द, ध्वनि।** उ.—तृष्ना नाद करत घट भीतर, नाना बिधि दै ताल—१-१५३। (२) **वर्णों का अव्यक्त मूल रूप।** (३) **सानुनासिक स्वर।** (४) **संगीत।**

नादना—क्रि. स. [हिं. नाद] **बजाना, ध्वनि निकालना।**

क्रि. अ.—(१) **बजना।** (२) **चिल्लाना, गरजना।**

क्रि. अ. [सं. नंदन] **प्रफुल्लित होना, लहलहाना।**

नादान—वि. [फ़ा.] **अनजान, नासमझ।**

नादानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नादान] **नासमझी।**

नादार—वि. [फ़ा.] **निर्धन, कंगाल।**

नादारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **गरीबी, निर्धनता।**

नादित—वि. [सं.] **शब्द करता या बजाया हुआ।**

नादिया—संज्ञा पुं. [सं.] **बैल, नंदी।**

नादिर—वि. [फ़ा.] **अनोखा, अद्‌भुत।**

नादिहंद—वि. [फ़ा.] **न देनेवाला।**

नादी—वि. [सं. नादिन] **शब्द करन या बजनेवाला।**

नादेय—वि. [सं.] **नदी में होनेवाला।**

नाधना—क्रि. स. [हिं. नाथना] (१) **रस्सी आदि से पशु को गाड़ी में जोतना या बांधना।** (२) **जोड़ना, संबद्ध करना।** (३) **गूंथना, पिरोना।** (४) **काम आरम्भ करना।**

नाधे—क्रि. स. [हिं. नाधना] **ठाना है, आरंभ किया है।** उ.—मेरी कही न मानत राधे। ये अपनी मति समुझत नाहीं, कुमति कहा पन नाधे।

नाधौ—क्रि. स. [हिं. नाधना] **ठाना (है), आरंभ किया (है)।** उ.—नैननि नाधौ है झर—२७६४।

नाध्यौ—क्रि. स. [हिं. नाधना] **आरंभ किया, (किसी काम को) ठाना या अनुष्ठित किया।** उ.—काहे कौं कलह नाध्यौ, दारुन दाँवरि बाँध्यौ, कठिन लकुट लै तैं त्रास्यौ मेरैं भैया—३७२।

नानक—संज्ञा पुं. [सं.] **पंजाब के एक प्रसिद्ध महात्मा जो सिख संप्रदाय के आदि गुरु थे।**

नानस—संज्ञा स्त्री. [हिं. ननिया सास] **सास की माँ।**

नानसरा—संज्ञा पुं. [हिं. ननिया ससुर] **पति या पत्नी का नाना।**

नाना—वि. [सं.] (१) **अनेक प्रकार के, विविध।** उ.—सखा लिए संग प्रभु रंग नाना करत देव नर कौतुक लखहि करत ब्याला—२५८४। (२) **अनेक, बहुत (संख्यावाचक)।** उ.—सूरदास-प्रभु अपने जन के नाना त्रास निवारे—१-१०। (३) **अधिक, बहुत (परिमाणवाचक)।** उ.—पांडु-सुत बिपति-मोचन महादास लखि, द्रौपदी-चीर नाना बढ़ायौ—१-११६।

संज्ञा पुं. [देश.] **माता का पिता, मातामह।**

क्रि. स. [सं. नमन] (१) **झुकाना।** (२) **नीचा करना।** (३) **डालना, छोड़ना।** (४) **घुसाना।**

संज्ञा पुं. [अ.] **पुदीना।**

नानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाना] **माता की माँ, मातामही।** उ.—कहा कथन मोसी के आगे जानत नानी नानन—३३२६।

मुहा.—नानी मर जाना (याद आना)—**प्राण सूख जाना, मुसीबत आ जाना, संकट पड़ जाना।**

ना-नुकर—संज्ञा पुं. [हिं. न+करना] **नाहीं, इनकार।**

नान्ह—वि. [हिं. नन्हा] (१) **छोटा, थोड़ी उम्र का।** उ.—चले बन धेनु चारन कान्ह। गोप-बालक कछु सयाने नंद के सुत नान्ह—६१०। (२) **नीच, क्षुद्र।** (३) **महीन, सूक्ष्म।**

मुहा.—नान्ह कातना—(१) **महीन काम करना।** (२) **कठिन या दुष्कर कार्य करना।**

नान्हरिया—वि. [हिं. नान्ह] **छोटा, नन्हा।** उ.—नान्हरिया गोपाल लाल तू वेगि बड़ौ किन होहि—१०-७४।

नान्हा—वि. [हिं. नन्हा] (१) **छोटा, लघु।** (२) **पतला, महीन।** (३) **नीच, क्षुद्र।**

यौ०—नान्हा बारा—**छोटा बालक।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नान्हि, नान्हीं, नान्ही—वि. स्त्री. [हिं. नान्ह] **नन्ही, छोटी**। उ.—(क) माता दुखित जानि हरि बिहँसे, नान्हीं दँतुलि दिखाइ—१०-८१। (ख) ठाढ़े हरि हँसत नान्हि दँतियन छबि छाजै—१०-१४६। (ग) नान्हीं एड़ियनि-अरुनता फलबिंब न पूजै—१०-१३४।

नान्हे—वि. [हिं. नन्हा] (१) **छोटे, नन्हे**। उ.—हौं वारी नान्हे पाइनि की दौरि दिखावहु चाल—१०-२२३।

मुहा.—नान्हे-नून्हे—**छोटे-मोटे, बहुत साधारण**। उ.—अबलौं नान्हे-नून्हे तारे, ते सब बृथा अकाज। साँचै बिरद सूर के तारत, लोकनि-लोक अवाज—१-६६।

(२) **नीच, क्षुद्र**। उ.—खेलत खात रहे ब्रज भीतर। नान्हें लोग तनक धन ईतर—१०४२।

नान्हो—वि. [हिं. नन्हा] **तुच्छ, साधारण**। उ.—सत्रु नान्हो जानि रहे अब लौं बैठि जन आपने को मारि डारौं—२६०२।

नाप—संज्ञा स्त्री. [हिं. माप] (१) **माप, परिमाण**। (२) **नापने का काम**। (३) **मान**। (४) **नपना, पैमाना**।

नापना—क्रि. स. [हिं. मापना] (१) **मापना**। (२) **अंदाजना**।

नापसंद—वि. [फ़ा.] **अप्रिय, अरुचिकर**।

नापाक—वि. [फ़ा.] (१) **अपवित्र**। (२) **गंदा**।

नापाकी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **अपवित्रता**। (२) **गंदगी**।

नापित—संज्ञा पुं. [सं.] **नाऊ, नाई, हज्जाम**।

नापी—क्रि. स. [हिं. नापना] **थाह ली, अनुमान किया**। उ.—जेतिक अधम उधारे प्रभु तुम, तिनकी गति मैं नापी—१-१४०।

नाबालिग—वि. [अ.+फ़ा.] **छोटी अवस्था का**।

नाबूद—वि. [फ़ा.] **जिसका अस्तित्व न रहा हो**।

नाभ—संज्ञा स्त्री. [सं. नाभि (समासांत रूप)] **नाभि**।

नाभा—संज्ञा पुं.—**'भक्तमाल' के रचयिता**।

नाभाग—संज्ञा पुं [सं.] **राजा ययाति के पुत्र जो राजा दशरथ के पितामह थे**।

नाभि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **ढोंढी, तुंबी, तोंदी**। उ.—नाभि-ह्रद, रोमावली-अलि, चले सहज सुभाव—१-३०७ (२) **कस्तूरी**।

संज्ञा पुं.—(१) **प्रधान व्यक्ति**। (२) **महादेव**। (३) **आग्नीध्र राजा का पुत्र जिसकी पत्नी मेरुदेवी के गर्भ से ऋषभदेव का जन्म हुआ था जो विष्णु के चौबीस अवतारों में माने जाते हैं**। उ.—प्रियव्रत कैं अग्नीध्र सु भयौ। नाभि जन्म ताही तैं लयौ—५-२।

नाभिकमल - संज्ञा पुं. [सं.] **प्रलयोपरांत वट-शायी बालरूप नारायण की नाभि से उत्पन्न कमल जिससे ब्रह्मा की उत्पत्ति मानी जाती है**। उ.—नाभि-कमल तैं ब्रह्मा भयौ—६-२।

नाभिज संज्ञा पुं. [सं.] **नाभि से उत्पन्न ब्रह्मा**।

नाभी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **तोंदी, ढोंढी**।

नाभ्य—वि. [सं.] **नाभि का, नाभि-संबंधी**।

नामंजूर—वि. [फ़ा+अ.] **अस्वीकृत**।

नाम—संज्ञा पुं. [सं. नामन्] (१) **वह शब्द जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि का बोध हो; संज्ञा**। उ.—नाम सुनीति बड़ी तिहिं दार—४-६।

मुहा.—नाम उछलना—**निंदा या बदनामी होना**। नाम उछालना—**निंदा या बदनामी कराना**। नाम उठ जाना (उठना)—**चर्चा या स्मरण तक न होना, चिह्न भी न रहना**। नाम करना—**पुकारने का नाम निश्चित करना**। (किसी का) नाम करना—**दूसरे के नाम पर दोष लगाना**। (किसी बात का) नाम करना—**दिखाने या उलाहना छुड़ाने के लिए अथवा कहने भर को कुछ कर देना**। नाम का—(१) **नामधारी**। (२) **कहने-सुनने भर को**। नाम के लिए (को) (१) **कहने-सुनने भर को** (२) **उपयोग या व्यवहार के लिए नहीं**। (३) **बहुत थोड़ा**। नाम चढ़ना - **किसी सूची आदि में नाम लिखा जाना**। नाम चढ़ाना—**नाम लिखाना**। नाम चमकाना—**अच्छा नाम या यश होना**। नाम चलना—(१) **याद बनी रहना**। (२) **वंश के लोग जीवित रहना**। नाम चार को—(१) **कहने-सुनने भर को**। (२) **बहुत थोड़ा**। नाम जगाना—(१) **ऐसा काम करना कि लोग चर्चा करने लगें**। (२) **ऐसा काम करना कि लोगों में याद बनी रहे**। नाम जगायौ—**ऐसा काम किया कि चारों ओर चर्चा होने लगी**। उ.—त्रिभुवन मैं अति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम जगायौ फिरत स्याम संग ही—पृ. ३२२। (८) नाम जपना—**बार-बार नाम लेना**। नाम देना—**नाम रखना**। नाम धरता – **नामकरण करनेवाला**। नाम धरति हैं– **दोष लगाती हैं, बदनाम करती हैं**। उ.—ब्रज-बनिता सब चोर कहतिं तोहिं लाजनि सकुचि जात मुख मेरौ। आजु मोहिं बलराम कहत हे, झूठहिं नाम धरति हैं तेरौ—३९९। (किसी का) नाम धरना—(१) **नामकरण करना**। (२) **बदनामी करना, दोष लगाना**। (३) **वस्तु का दाम स्थिर करना**। नाम धराना—(१) **नामकरण कराना**। (२) **निंदा या बदनामी कराना**। नाम धरायौ— **निंदा या बदनामी करायी**। उ.— गोपराइ के गेह पुत्र ह्वै नाम धरायौ—११३५। नाम धरावत— **नामकरण कराते हैं, नाम रखाते ह**। उ.—जो परि कृष्ण कुवरिहिं रीझे तो सोई किन नाम धरावत—३०९३। नाम धरै— **निंदा या बदनामी करे**। उ.—रिषि कह्यौ ताहि, दान-रति देहि। मैं बर देहुँ तोहि सो लेहि। तू कुमारिका बहुरौ होइ। तोकौं नाम धरै नहिं कोई—१-२२९। नाम धरैहौ—**बदनामी या निंदा करायेगी**। उ.—तुम हौ बड़े महर की बेटी कुल जनि नाम धरैहौ—१४९८। नाम धरयौ—(१) **नामकरण किया**। उ.- पतित पावन-हरि बिरद तुम्हारौ, कौनैं नाम धरयौ—१-१३३। (२) **नाम लगाया, दोषारोपण किया। दोषी ठहराया**। उ.- बल मोहन कौ नाम धरयौ, कह्यौ पकरि मँगावन—५८९। नाम न लेना- (१) **अरुचि, घृणा या क्रोध से चर्चा तक न करना**। (२) **लज्जा-संकोच से नामोच्चार न करना**। तो मेरा नाम नहीं— **तो मुझे तुच्छ समझना**। नाम निकल जाना (निकलना) – (१) **किसी बुरी-भली बात के कर्त्ता या सहयागी के रूप में बदनाम हो जाना**। (२) **नाम का प्रकाशित होना**। नाम निकलवाना—(१) **बदनामी कराना**। (२) **तंत्र-मंत्र से अपराधी का पता लगवाना**। (३) **किसी नामावली से नाम कटवा देना**। (४) **नाम प्रकाशित करा देना**। नाम पड़ना–**नाम रख जाना, नाम निश्चित हो जाना**। (किसी के) नाम—(१) **किसी के लिए निश्चय या कानून द्वारा सुरक्षित**। (२) **किसी के संबंध में**। (३) **किसी को संबोधन करके**। किसी के नाम पर—(१) **किसी के स्मारक-रूप में**। (२) **पुण्य-दान के लिए किसी देवी-देवता आदि के तोष के लिए**। किसी के नाम पड़ना—(१) **किसी के लिए निश्चित या निर्धारित किया जाना, किसी के नाम लिखा जाना**। (२) **किसी को सौंपा जाना**। किसी के नाम डालना—(१) **किसी के लिए निश्चित या निर्धारित करना**। (२) **किसी को सौंपना**। (किसी के) नाम पर मरना (मिटना)—(**किसी के प्रति इतना प्रेम होना कि अपने हानि-लाभ की जरा भी चिंता न करना**। (किसी के) नाम पर बैठना—(१) **किसी की सहायता या दया के भरोसे पर संतोष करना**। (२) **किसी के आसरे पर जरूरी काम भी न करना**। (बड़ा) बड़ौ नाम— **बहुत प्रसिद्ध या विख्यात होना**। उ.— नव लख धेनु दुहत हैं नित प्रति, बड़ौ नाम है नंद महर कौ—१०-३३३। नाम बद (बदनाम) करना— **बदनामी कराना, कलंक लगाना**। नाम बाकी रहना—(१) **कहीं चले जाते या मरने के बाद भी लोगों को नाम का स्मरण रहना**। (२) **सब-कुछ मिट जाना, केवल नाम भर रह जाना**। नाम बिकना—(१) **नाम प्रसिद्ध हो जाने के कारण ही उससे संबंधित वस्तु का आदर होना**। (२) **किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम पर वस्तु-विशेष का नाम रखकर उसे बेचना**। नाम बिगाड़ना—(१) **बुरा काम करके बदनाम होना** (२) **दोष या कलंक लगाना**। नाम मिटना—(१) **नाम का स्मरण भी न रह जाना**। (२) **चिह्न तक मिट जाना**। नाम मात्र को—**बहुत ही थोड़ा**। नाम भयौ— **नाम हुआ, श्रेय मिला**। उ.—गनिका तरी आपनी करनी नाम भयौ प्रभु तेरौ–१-१३२। नाम रखना—(१) **नामकरण करना**। (२) **अच्छा काम करके यश बनाये रखना**। (३) **बदनामी करना**। नाम लगना **दोष, बुराई या अपराध के सिलसिले में नाम लिया जाना**। नाम लगाना – **दोष, बुराई या अपराध का जिम्मेवार ठहराना, दोष मढ़ना**। नाम लेकर—(१) **नाम के प्रभाव से**। (२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम का स्मरण करके। नाम लेना—(१) नाम का उच्चारण करना। (२) जपना या स्मरण करना। (३) गुण गाना, प्रशंसा करना। (४) जिक्र या चर्चा करना। (५) दोष या अपराध लगाना। नाम लीन्हौ—भय या आतंक दिखाने के लिए नाम का उच्चारण किया। उ.—यह कह्यौ नंद, नृप बंदि, अहि-इन्द्र पै गयौ मेरौ नंद, तुव नाम लीन्हौ – ५८४। नाम-निशान—चिह्न, पता, खोज। नाम-निशान मिट जाना (मिटना)—ऐसा चिह्न तक न रह जाना जिससे कुछ पता चल सके। नाम-निशान न होना—ऐसा कोई चिह्न न होना जिससे पता चलाया जा सके। नाम से—(१) चर्चा या जिक्र से। (२) संबंध बताकर। (३) स्वामी या मालिक मानकर। (४) नाम के प्रभाव से। (५) नाम सुनते ही। नाम से काँपना—नाम सुनते ही डर जाना। नाम होना—(१) दोष या कलंक लगना। (२) नाम प्रसिद्ध होना। (३) कार्य-संपादन का श्रेय मिलना।

(२) सुनाम, कीर्ति, यश, ख्याति।

मुहा.—नाम कमाना (करना)—प्रसिद्ध होना। नाम को मरना—(१) यश या बड़ाई पाने के लिए जी-जान से कोशिश करना। (२) यश या कीर्ति बनाये रखने के लिए जी-जान से कोशिश करना। नाम चलना—यश या कीर्ति बनी रहना। नाम जगना—यश या कीर्ति फैलना। नाम जगाना—यश या कीर्ति फैलना। नाम डुबाना—यश या कीर्ति मिटाना। नाम डूबना—यश या कीर्ति न रह जाना। नाम पाना—यश या कीर्ति मिलना। नाम रह जाना—यश या कीर्ति की चर्चा होना। नाम से पुजना—यश या कीर्ति के कारण ही आदर होना। नाम से बिकना—यश या कीर्ति के कारण ही बिकना। नाम ही नाम रह जाना—पिछले यश की चर्चा भर रह जाना, वास्तविक काम या मूल्य न रह जाना।

(३) ईश्वर या इष्टदेव का नाम। उ.—पतित पावन जानि सरन आयौ। उदधि-संसार सुभ नाम-नौका तरन अटल अस्थान निजु निगम गायौ—१-११६।

मुहा.—नाम आना—ईश्वर का नाम मुख से उच्चरित होना। नाम आयौ—ईश्वर का नाम मुख से उच्चरित हुआ। उ.—ग्रस्यौ गज ग्राह लै चल्यौ पाताल कौं, काल कैं त्रास मुख नाम आयौ—१-५। नाम जपना—(१) भक्ति या प्रेम से ईश्वर का बार-बार नाम लेना। (२) जाप करना, माला फेरना। नाम देना—इष्टदेव का या सांप्रदायिक मंत्र देना। नाम न लेना—ईश्वर का स्मरण न करना। नाम (पर)—ईश्वर के निमित्त। नाम पर बैठना—ईश्वर के सहारे रहकर संतोष करना। नाम पुकारना—ईश्वर का नाम जोर से लेना। नाम लेकर—देवी-देवता, इष्टदेव या ईश्वर का स्मरण करके। नाम लेना—(१) देवी-देवता या ईश्वर का स्मरण करना। (२) जाप करना, माला फेरना। (३) कीर्तन या ईश्वर-चर्चा करना। नाम से—(१) ईश्वर की कथा-वार्ता, कीर्तन-चर्चा से। (२) ईश्वर का नाम लेकर। (३) देवी-देवता के उपयोग या सेवा के लिए। (४) ईश्वर के नाम के प्रभाव से। (५) ईश्वर के नाम का उच्चारण करते ही। नाम लीजै—ईश्वर का स्मरण या जाप कीजिए। उ.—(सनकादि) कह्यौ, यह ज्ञान, ग्रह ध्यान, सुमिरन यहै, निरखि हरि रूप मुख नाम लीजै—४-११।

नामक—वि. [सं.] नाम धारण करनेवाला।

नामकरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नाम रखने का काम। (२) हिंदुओं के सोलह संस्कारों में पाँचवां जब बच्चे का नाम रखा जाता है।

नाम-कीर्तन—संज्ञा पुं. [सं.] ईश्वर का जप-भजन।

नाम-ग्राम—संज्ञा पुं. [सं.] नाम और पता।

नामज़द—वि. [फ़ा. नामज़द] (१) जिसका नाम किसी पद के लिए प्रस्तावित हुआ हो। (२) प्रसिद्ध।

नामदेव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कृष्णोपासक वामदेव जी के नाती जिनकी कथा भक्तमाल में है। बचपन से ही कृष्ण में इनकी सच्ची भक्ति थी। एक बार बाहर जाते समय वामदेव जी अपने इस छोटे दौहित्र से भगवान श्रीकृष्ण को प्रतिदिन दूध चढ़ाने को कहते गए। नामदेव ने दूसरे दिन दूध सामने रखकर प्रतिमा से पीने की प्रार्थना की और उसके न पीने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर वे आत्महत्या करने को तैयार हुए। भक्त की रक्षा के लिए भगवान ने प्रकट होकर दूध पी लिया। लौटने पर नाना वामदेव यह अद्भुत व्यापार देख बड़े चकित हुए। धीरे-धीरे इनकी प्रसिद्धि चारों ओर हो गयी। (२) **महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध कवि।**

नामधन—संज्ञा पुं. [सं.] **एक संकर राग।**

नाम-धराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाम+धरना] **निंदा।**

नाम-धाम—संज्ञा पुं. [हिं. नाम+धाम] **पता-ठिकाना।**

नामधारी—वि. [सं.] **नाम धारण करनेवाला।**

नाम-निशान—संज्ञा पुं. [हिं. नाम+फ़ा. निशान] **चिह्न, पता-ठिकाना।**

नाम बोला—संज्ञा पुं. [हिं. नाम+बोलना] **विनयपूर्वक नाम जपने या स्मरण करनेवाला।**

नाम-राशि, नामरासि, नामारासी—संज्ञा पुं. [सं. नाम-राशि] **एक ही नाम और विचारवाले व्यक्ति।**

नामर्द—वि. [फ़ा.] (१) **नपुंसक। कायर।**

नामर्दी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **नपुंसकता।** (२) **कायरता।**

नामलेवा—संज्ञा पुं. [हिं. नाम+लेना] (१) **नाम लेने या स्मरण करनेवाला।** (२) **उत्तराधिकारी।**

नामवर—वि. [फ़ा.] **नामी, प्रसिद्ध।**

नामवरी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **कीर्ति, प्रसिद्धि।**

नामशेष—वि. [सं.] **जिसका केवल नाम ही रह गया हो, नष्ट।** (२) **मृत, गत।**

नामांकित—वि. [सं.] **जिस पर नाम पड़ा हो।**

नामा—वि. [सं.] **नामवाला, नामधारी।**

संज्ञा पुं.—**नाई जाति का एक भक्त जिसका छप्पर भगवान ने छाया था।** उ.—कलि मैं नामा प्रगट ताकी छानि छवावै—१-४

नामाकूल—वि. [फ़ा. ना+अ. माक़ूल] (१) **नालायक, अयोग्य।** (२) **अनुचित।**

नामावली—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नाम-सूची।**

नामिक—वि. [सं.] **नाम संबंधी, नाम का।**

नामित—वि. [सं.] **झुकाया हुआ।**

नामी—वि. [हिं. नाम+ई (प्रत्य.)] (१) **नामक, नामधारी।** (२) **प्रसिद्ध, विख्यात।** उ.—(क) पापी परम, अधम, अपराधी, सब पतितनि मैं नामी—१-१४८। (ख) सुत कुबेर के ये दोउ नामी—३६१। (ग) एक कुवलिया त्रिभुवनगामी। ऐसे और कितिक हैं नामी—२४५६।

नामी-गिरामी—वि. [फ़ा.] **प्रसिद्ध, विख्यात।**

नामुनासिब—वि. [फ़ा.] **अनुचित, अयोग्य।**

नामुमकिन—वि. [फ़ा. ना+अ. मुमकिन] **असंभव।**

नाम्ना—वि. [सं.] **नामधारी, नामवाली।**

नायँ—संज्ञा पुं. [हिं. नाम] **नाम।**

अव्य. [हिं. नहीं] **नहीं।**

नाय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नीति।** (२) **उपाय।**

नायक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सरदार, नेता, अगुआ।** उ.—(क) हरि, हौं सब पतितनि को नायक—१-१४६। (ख) मन मेरैं नट के नायक ज्यौं नितहीं नाच नचायौ—१-२०५। (२) **अधिपति, स्वामी।** उ.—तुम कृतज्ञ, करुनामय, केसव, अखिल लोक के नायक—१-१७७। (३) **श्रेष्ठ व्यक्ति।** (४) **किसी ग्रंथ का सर्वप्रमुख पुरुष पात्र।** (५) **श्रृंगार का आलंबन या साधक।** (६) **कलावंत।** (७) **एक वर्णवृत्त।** (८) **एक राग।**

नायका—संज्ञा स्त्री. [सं. नायिका] **कुटनी, दूती।**

नायकी—संज्ञा पुं. [सं.] **एक राग का नाम।**

नायकी कान्हड़ा—संज्ञा पुं.—**एक राग का नाम।**

नायकी मल्लार—संज्ञा पुं. [सं. नायक+मल्लार] **एक राग।**

वि.—**दयालु, दया कार्य में रहनेवाले।**

नायन—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाई] **नाई की स्त्री।**

नायब—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **मुख्तार।** (२) **सहकारी।**

नायबी—संज्ञा स्त्री. [अ. नायब+ई (प्रत्य.)] (१) **नायब का पद।** (२) **नायक का काम।**

नायिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **रूप गुणवती स्त्री।** (२) **श्रेष्ठ स्त्री।** (३) **ग्रंथ की सर्वप्रमुख स्त्री पात्री।**

नायो, नायौ—क्रि. स. [हिं. नाना] (१) **झुकाया, नवाया।** उ.—अबल प्रह्लाद, बलि दैत्य सुखहीं भजत, दास ध्रुव चरन चित-सीस नायौ—१-११६। (२) **डाला, छोड़ा।** उ.—(क) सुत-तनया-बनिता-बिनोद-रस, इहिं जुर-जरनि जरायौ। मैं अग्यान अकुलाइ, अधिक लै, जरत माँझ घृत नायौ—१-१५४। (ख) तामें मिलि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्री करि दै कपूर पुट जावन नायो—११७६। (ख) (३) **पड़ा हुआ, फेंका हुआ।** उ.—दै करि साप पिता पहँ आयौ। देख्यौ सर्प पिता-गर नायौ—१-२९०।

नारंग—संज्ञा पुं. [सं] (१) **नारंगी।** (२) **गाजर।**

नारंगी—संज्ञा स्त्री. [सं. नारंग, या अ. नारंज] (१) **नीबू की जाति का एक फल।** (२) **पीलापन लिये लाल रंग।**

वि.—**पीलापन लिये लाल रंगवाला।**

नार—संज्ञा पुं. [सं. नाल] **उल्व नाल, आँवल, नाल।** उ.—(क) जसुदा नार न छेदन दैहौं—१०-१५। (ख) बेगहिं नार छेदि बालक कौ, जाति बयारि भराई—१०-१६।

संज्ञा स्त्री. [सं. नाल, नाड] (१) **जुलाहों की ढरकी नाल।** (२) **गला, गरदन, ग्रीवा।**

मुहा.—नार नवाना (नीची करना) (१) **सिर या गरदन झुकाना।** (२) **लज्जा, संकोच या मान से दृष्टि नीची करना।** नार नावति—**लज्जा या संकोच से दृष्टि नीचे करती है।** उ.—समुझि निज अपराध करनी नार नावति नीचि। नार नीची करि—**लाजे, संकोच या मान से दृष्टि नीची करके।** उ. मान मनायो राधा प्यारी। ····। कत ह्वै रही नार नीची करि देखत लोचन भूले।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नर-समूह।** (२) **हाल का जन्मा बछड़ा** (३) **जल, पानी।**

वि.—(१) **नर संबंधी।** (२) **नारायण-संबंधी।**

संज्ञा पुं. [हिं. नाला] (१) **नाला।** उ.—इक नदिया इक नार कहावत, मैलो नीर भरौ। जब मिलि गए तब एक बरन ह्वै, गंगा नाम परौ—१-२१०। (२) **नारा, नाला, इजारबन्द, नीबी।**

संज्ञा स्त्री. [सं. नारी] (१) **स्त्री।** (२) **पत्नी।** उ.—(क)··धर्मपुत्र कौं जुआ खिलाए। तिन हार्‌यौ सब भूमि-भँडार। हारी बहुरि द्रौपदी नार—१-२४६। (ख) नाम सुनीति बड़ी तिहिं दार। सुरुचि दूसरी ताकी नार—४-९।

नारक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नरक।** (२) **वह प्राणी जो नरक में रहता हो।**

नारकी—वि. [सं. नारकिन्] (१) **नरक-संबंधी।** (२) **नरक भोगनेवाला प्राणी, पापी।**

नारकीट—संज्ञा पुं. [सं.] **वह जो आशा देकर निराश करे।**

नारति—क्रि. स. [हिं. नारना] **थाह लगाती है, भाँपती है।** उ.—राधा मन मैं यहै बिचारति।·······मोहू ते ये चतुर कहावति ये मन ही मन मोकौं नारति।

नारद—संज्ञा पुं. [सं.] **एक देवर्षि जो ब्रह्मा के पुत्र कहे जाते हैं। नाना लोकों में विचरना और एक का संवाद दूसरे तक पहुँचाना, इनका कार्य बताया गया हैं। ये बड़े हरिभक्त माने जाते हैं। कहीं कहीं कलह कराने में भी इनका हाथ रहना कहा गया है। इसी से इधर की उधर लगाने वाले को 'नारद' कहते हैं।**

नारना—क्रि. स. [सं. ज्ञान, प्रा. णाण+हिं. ना] **थाह का पता लगाना, भाँपना, ताड़ जाना, अंदाजना।**

नारबेवार—संज्ञा पुं. [हिं. नार + सं. विवार=फैलाव] **आँवल नाल, नाल और खेड़ी आदि।**

नारांतक—संज्ञा पुं. [सं.] **रावण का एक पुत्र।**

नारा—संज्ञा पुं. [सं. नाल, हिं. नार] (१) **नाला, इजारबंद, नीबी।** उ.—नारा सूथन जघन बाँधि नारा बँद तिरनी पर छबि भारी—पृ. ३४५ (४०)। (२) **लाल रँगा सूत, मौली।** (३) **नाला जिसमें पानी बहता है।**

नाराइन—संज्ञा पुं. [सं. नारायण] **नारायण, विष्णु।**

नाराच—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लोहे का तीर जिसमें पांच पंख होते हैं और जिसका चलाना कठिन होता है।** (२) **वह दुर्दिन जब अंधड़ आदि चले।** (३) **एक वर्णवृत्त।**

नाराज—वि. [फ़ा.] **रुष्ट, अप्रसन्न।**

नाराजगी, नाराजी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **अप्रसन्नता।**

नारायण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विष्णु, ईश्वर।** (२) **पूस का महीना।** (३) **एक अस्त्र का नाम।** (४) **अजामिल के पुत्र का नाम।**

नारायणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दुर्गा।** (२) **लक्ष्मी।** (३) **गंगा।** (४) **श्रीकृष्ण की सेना का नाम।**

नारायणीय—वि. [सं.] **नारायण संबंधी।**

नारायन—संज्ञा पुं. [सं. नारायण] (१) **ईश्वर, विष्णु।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) **अजामिल के पुत्र के नाम**। उ.—सुतहित नाम लियौ नारायन, सो बैकुंठ पठायौ—१-१०४।

नारायन-बानी—संज्ञा स्त्री. [सं. नारायण+वाणी] **'नारायण' नाम का उच्चारण**। उ.—अजामील द्विज सौं अपराधी, अंतकाल बिडरै। सुत-सुमिरत नारायन-बानी, पार्षद धाइ परैं—१-८२।

नारि—संज्ञा स्त्री. [हिं. नारी] **स्त्री, नारी**।

नारिकेर, नारिकेल—संज्ञा पुं. [सं. नारिकेल] **नारियल**।

नारि-पर—संज्ञा स्त्री. [सं. नारी-पर] **दूसरे की स्त्री**। उ.—पंजा पंच प्रपंच नारि-पर भजत, सारि फिरि सारी—१-६०।

नारियल—संज्ञा पुं. [सं. नारिकेल] **एक प्रसिद्ध पेड़**।

नारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **स्त्री**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. नार] **हल बाँधने की रस्सी**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. नाड़ी] **हठयोग में ज्ञान, शक्ति और श्वास-प्रश्वास-वाहिनी नालियाँ**। उ.—इंगला पिंगला सुष्मना नारी—३३०८।

नारौ—संज्ञा पुं. [सं. नाल, हिं. नाला] **बरसाती या गंदा पानी बहने का प्राकृतिक मार्ग, नाला**। उ.—गरजत क्रोध-लोभ कौ नारौ, सूझत कहूँ न उतारौ—१-२०६।

नालंदा—संज्ञा पुं. [सं.] **बिहार का एक प्राचीन क्षेत्र जहाँ प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था**।

नाल—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली, लंबी डंडी, डाँड़ी**। उ.—(क) बह्मा यौं नारद सौं कह्यौ। जब मैं नाभि-कमल मैं रह्यौ। खोजत नाल कितौ जुग गयौ। तौहू मैं कछु मरम न लयौ—२-३७। (ख) जाकैं नाल भए ब्रह्मादिक, सकल जोग-ब्रत साध्यौ हो—१०-१२८। (२) **पौधे का डंठल**। (३) **गेहूँ, जौ आदि की पतली डंडी**। (४) **नली**।

संज्ञा पुं.—(१) **आँवल नाल, उल्व नाल**।

मुहा.—नाल काटनेवाली—**बड़ी-बूढ़ी**। कहीं नाल गड़ना—(१) **उस स्थान पर जन्मभूमि-जैसा इतना प्रेम होना कि वहाँ से जल्दी न हटना**। (२) **उस स्थान पर दावा या अधिकार होना**।

संज्ञा पुं. [अ.] (१) **लोहे का अर्द्धचंद्राकार टुकड़ा जो पशुओं के खुरों या टापों में जड़ा जाता है**। (२) **पत्थर का भारी टुकड़ा जिसमें दस्ता लगा हो**। (३) **रुपया जो जुआरियों से अड्डेवाला लेता है**।

नालकी—संज्ञा स्त्री. [सं. नाल=डंडा] **खुली हुई पालकी जिसमें दूल्हा बैठकर ब्याहने जाता है**।

नाला—संज्ञा पुं. [सं. नाल] (१) **प्राकृतिक या गंदे पानी के बहने का छोटा जलमार्ग**। (२) **नाड़ा, नीवी**।

नालायक—वि. [फ़ा. ना+अ. लायक] **निकम्मा, मूर्ख**।

नालिश—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **अभियोग, फरियाद**।

नाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाला] **प्राकृतिक या गंदा जल बहने का पतला मार्ग, मोरी**।

संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नाड़ी**। (२) **कमल**।

नालौट—वि. [हिं. न+लौटना] **बात कहकर या वादा करके मुकर जानेवाला**।

नाव—संज्ञा स्त्री. [सं. नौका] **नौका, किश्ती**। उ.—(क) लै भैया केवट, उतराई। महाराज रघुपति इत ठाढ़े, तैं कत नाव दुराई—९-४०। (ख) दुई तरंग दुइ नाव-पाँव धरि ते कहि कवननि मूठे—३२८०।

मुहा.—बालू में नाव चलाना—**बालू में नाव चलाने जैसा व्यर्थ और मूर्खता का प्रयत्न करना**। सिकता (=सिकता=बालू) हठि नाव चलावहु—**मूर्खता का और निष्फल प्रयत्न कर रहे हो**। उ.—सूर सिकत हठि नाव चलावहु ये सरिता है सूखी। सूखे में नाव नहीं चलती—**बिना खर्च किये या उदारता दिखाये नाम नहीं होता**। नाव में धूल उड़ाना—(१) **सरासर झूठ बोलना**। (२) **झूठा अपराध लगाना**।

संज्ञा पुं. [हिं. नाम] **नाम**। उ.—(क) गोपिनि नाव धरयो नवरंगी—२६७५। (ख) यह सुख सखी निकसि तजि जइए जहाँ सुनीय नाव न—२८६६।

नावक—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **एक तरह का छोटा बाण या तीर**। (२) **मधुमक्खी का डंक**।

संज्ञा पुं. [सं. नाविक] (१) **केवट, मल्लाह**। (२) **मल्लाह जिसने श्रीराम को नाव पर चढ़ाकर गंगा पार किया था**। उ.—पुनि गौतम घरनी जानत है, नावक सबरी जान—सारा. ६८६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नावत—क्रि. स. [हिं. नाना] (१) (किसी छिद्र आदि में) डालता है, छोड़ता है। उ.—(क) माखन तनक आपनैं कर लै, तनक बदन मैं नावत—१०-१७७। (ख) जूठौ लेत सबनि के मुख कौ, अपनैं मुख मैं नावत—४६८। (२) झुकाते या नवाते हैं। उ.—सूर सीस नीचे क्यों नावत अब काहे नहिं बोलत—३१२१।

नावति—क्रि. स. [हिं. नाना] देती है, डालती है, घुसाती है। उ.—भरयौ चुरू मुख धोइ तुरत हीं पीरे पान-बिरी मुख नावति—५१४।

नावना—क्रि. स. [सं. नामन] (१) झुकाना, नवाना। (२) डालना, फेंकना। (३) घुसाना, प्रविष्ट कराना।

नावर, नावरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाव] (१) नाव, नौका। (२) नाव-क्रीड़ा जिसमें नाव को जल में चक्कर खिलाते हैं।

नावाकिफ—वि. [फ़ा. ना+अ. वाकिफ] अनजान।

नाविक—संज्ञा पुं. [सं.] केवट, माँझी, मल्लाह।

नावैं—क्रि. स. [हिं. नाना] डालते हैं, घुसाते हैं, प्रविष्ट कराते हैं। उ.—जल-पुट आनि धरनि पर राख्यौ, गहि आन्यौ वह चंद दिखावै। सूरदास प्रभु हँसि मुसुक्याने, बार-बार दोऊ कर नावैं—१०-१९१।

नावै—क्रि. स. [हिं. नाना] (१) नवाता है, झुकाता है, नम्रतापूर्वक बंदना करता है। उ.—उग्रसेन की आपदा सुनि-सुनि बिलखावै; कंस मारि, राजा करै, आपहु सिर नावै १-४। (२) डालता है, छोड़ता है। उ.—महामूढ़ सो मूल तजि, साखा जल नावै—२-६।

नाश—संज्ञा पुं. [सं.] ध्वंस, बरबादी।

नाशक—वि. [सं.] (१) नाश करनेवाला। (२) मारनेवाला। (३) दूर कर देनेवाला।

नाशकारी—वि. [सं. नाशकारिन्] नाश करनेवाला।

नाशन—वि. [सं.] नाश करनेवाला।

संज्ञा पुं.—नाश करने की क्रिया या भाव।

नाशना—क्रि. स. [सं. नाश] नाश करना।

नाशपाती—संज्ञा स्त्री. [तु.] एक प्रसिद्ध फल।

नाशवान्—वि. [सं.] जो नष्ट हो जाय, नश्वर।

नाशित—वि. [सं.] जिसका नाश किया गया हो।

नाशी—वि. [सं.] (१) नाश करनेवाला, नाशक। (२) नष्ट होनेवाला, नश्वर।

क्रि. स. [हिं. नाशना] नष्ट हो गयी, दूर हो गयी। उ.—ता दिन ते नींदौ पुनि नाशी चौंकि परति अधिकारै—३०४५।

नाश्ता—संज्ञा पुं. [फ़ा.] कलेवा, जलपान।

नाश्य—वि. [सं.] जो नाश के योग्य हो।

नास—संज्ञा स्त्री. [सं. नासा] सुँघनी।

संज्ञा पुं. [सं. नाश] नाश। उ.—जिनके दरस-परस करुना ते दुख-दरिद्र के नास—सारा. ८०८।

नासत—क्रि. स. [हिं. नासना] नाश करते हैं। उ.—भगत-बिरह कौ अतिहीं कादर, असुर-गर्ब-बल नासत—१-३१।

नासना—क्रि. स. [हिं. नाश] (१) नष्ट करना, नाश करना। (२) मार डालना, वध करना।

नासमझ—वि. [फ़ा. ना+समझ] मूर्ख, बुद्धिहीन।

नासमझी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नासमझ] मर्खता।

नासा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नाक, नासिका। उ.—जलचर-जा-सुत-सुत सम नासा धरे अनासा हार—सा.३५। (२) नाक का छेद, नथना।

नासाग्र—संज्ञा पुं. [सं.] नाक की नोक।

नासापुट—संज्ञा पुं. [सं.] नाक का परदा। उ. हम पर रिस करि करि आवलोकत नासापुट फरकावत।

नासाबेध—संज्ञा पुं. [सं.] नथुने का छेद जिसमें नथ आदि पहनी जाती है।

नासि—क्रि. स. [हिं. नासना] नष्ट करके, मारकर। उ.—कौरो-दल नासि-नासि कीन्हौं जन-भायौ—१-२३।

नासिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] नाक, नासा।

वि.—श्रेष्ठ, मुख्य, प्रधान।

नासी—क्रि. स. [हिं. नासना] नाश कर दी, बरबाद कर दी। उ. इहाँ आइ सब नासी—१-१९२।

नासीर—संज्ञा पुं. [सं.] सेनानायक के आगे चलनेवाला सैन्यदल।

नासूर—संज्ञा पुं. [अ.] एक भयानक रोग।

नासै—क्रि. स. [हिं. नासना] नाश करता है, दूर करता है। उ.—(क) उर बनमान बिचित्र बिमोहन, भृगु-भँवरी भ्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौं नासै—१-६६ । (ख) कोटि ब्रह्मांड छनहिं मैं नासै, छनहीं मैं उपजावै—४८२ ।

नास्तिक—संज्ञा पुं. [सं.] **ईश्वर को न माननेवाला ।**

नास्तिकता—संज्ञा पुं. [सं.] **ईश्वर को न मानने का भाव, नास्तिक होने की बुद्धि ।**

नास्तिवाद—संज्ञा पुं. [सं.] **नास्तिकों का तर्क ।**

नास्य—वि. [सं.] **नासिका का, नासिका-संबंधी ।**

नास्यौ—क्रि. स. [हिं. नासना] (१) **नष्ट कर दिया ।** उ.—जिहिं कुल राज द्वारिका कीन्हौ, सो कुल साप तैं नास्यौ—१-१५ । (२) **फेंका, बरबाद किया ।** उ.—मेरैं भैया कितनौ गोरस नास्यौ—३७५ ।

नाह—क्रि. अ. [हिं. न+आह=है] **नहीं है, न है ।** उ.—ब्रह्मा कह्यौ, सुनो नर-नाह । तुम सौं नृप नग मैं अब नाह—६-४ ।

संज्ञा पुं. [सं. नाथ] (१) **नाथ, स्वामी, मालिक ।** (२) **पति** । उ.—जाहु नाह, तुम पुरी द्वारिका कृष्ण-चन्द्र के पास—सारा. ८०८ ।

संज्ञा पुं. [सं. नाम] **पहिए का छेद ।**

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बंधन** । (२) **फंदा** ।

नाहक—क्रि. वि. [फा. ना+अ. हक] **वृथा, व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।** उ.— (क) सूरदास भगवंत-भजन बिनु, नाहक जनम गँवायौ—१-७६ । (ख) ऐसौ को अपने ठाकुर कौ इहिं बिधि महत घटावै । नाहक मैं लाजनि मरियत है, इहाँ आइ सब नासी—१-१६२ ।

नाहट—वि. [देश] **बुरा, नटखट ।**

नाहनूह—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाहीं] **इनकार ।**

नाहर, नाहरू—संज्ञा पुं. [सं. नरहरि] (१) **सिंह, शेर** । उ.—तुमहिं दूर जानत नर नाहर—१० उ.-१२६ । (२) **बाघ** ।

नाहिं— अव्य. [हिं. नहीं] **निषेध या अस्वीकृति सूचक अव्यय, न, नहीं ।** उ.—ऐसौ सूर नाहिं कोउ दूजौ, दूरि करै जम-दायौ—१-६७ ।

नाहिंन, नाहिनैं, नाहिनै—वाक्य [हिं. नाहीं] **नहीं है, नहीं** । उ.—(क) नाहिनैं जगाइ सकति सुनि सुबात सजनी—८१६ । (ख) नाहिंन नैन लगे निसि इहिं डर—२०७३ । (ग) नाहिंन तेरौ अति हठ नीकौ—३३५६ । (घ) नाहिनैं अब ब्रज नंदकुमार—४००४ ।

नाहीं—अव्य. [सं. नहिं, हिं. नहीं] (१) **निषेध या अस्वीकृति-सूचक अव्यय** । उ.—हाँ नाहीं नहिं कहत हौ मेरी सौं काहे—२६३८ । (२) **उपस्थित न होना, नहीं है** । उ.—हमता जहाँ तहाँ प्रभु नाहीं, सो हमता क्यौं मानौं—१-११ ।

नाहुष — संज्ञा पुं. [सं.] **नहुष का पुत्र ययाति ।**

निंद—संज्ञा स्त्री. [सं. निद्रा,] **निद्रा, नींद** । उ.—(क) तुरत जाइ पौढ़े दोउ भैया, सोवत आई निंद—१०-२३० । (ख) पौढ़े जाय दोउ सैया पर सोवत आई निंद—सारा० ५०७ ।

वि. [सं. निंद्य] **निंदा-योग्य, निंदनीय ।**

निंदक—संज्ञा पुं. [सं. निंदक] **निंदा करनेवाला** । उ.—साधु-निंदक, स्वाद-लँपट, कपटी, गुरु-द्रोही । जेते अपराध जगत, लागत सब मोहीं—१-१२४ ।

निंदत—क्रि. स. [हिं. निंदना] **निंदा करता है, बुरा कहते हैं ।** उ.—(क) निंदत मूढ़ मलय-चंदन कौं, राख अंग लपटावै—२-१३ । (ख) हरि सबके मन यह उपजाई सुरपति निंदत, गिरिहिं बड़ाई ।

निंदति — क्रि. स. [हिं. निंदना] **निंदा करती है, बुरा कहती है** । उ.—ललना लै लै उछंग, अधिक लोभ लागैं । निरखतिं निंदति निमेष करत ओट आगे—१०-६० ।

निंदन—संज्ञा पुं. [सं.] **निंदा करने का काम ।**

निंदना—क्रि. स. [सं. निंदन] **निंदा करना, बुरा कहना, बदनाम करना ।**

निंदनीय— वि. [सं.] **बुरा, निंदा-योग्य ।**

निंदरना—क्रि. स. [सं. निंदना] **निंदा करना, निंदना ।**

निंदरिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. नींद] **निद्रा, नींद** । उ.—(क) मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहैं न आनि सुवावै—१०-४३ । (ख) सूर स्याम कछु कहत-कहत ही बस कर लीन्हे आइ निंदरिया—१०-२४६ ।

निंदा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दोष-कथन, अपवाद** । उ.—निंदा जग उपहास करत, मग बंदीगन जस गावत—१-१४१ । (२) **बदनामी, कुख्याति ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निंदासा—वि. [हिं. नींद] **जिसे नींद आ रही हो, जो उनींदा हो ।**

निंदास्तुति —संज्ञा स्त्री. [सं.] **निंदा के बहाने स्तुति ।**

निंदि क्रि. स. [हिं. निंदना] **निंदा करके ।** उ.—(क) मोकौं निंदि परअ्रतहिं बंदत—१०४२ । (ख) जाकौं निंदि वंदियै सो पुनि वह ताको निदरै - ११५६ ।

निंदित—वि. [सं.] **जिसे बुरा कहा गया हो ।**

निंदिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. नींद] **नींद, ऊँघ ।**

निंद्य—वि. [सं.] (१) **बुरा ।** (२) **निंदनीय ।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. निंदा] **बदनामी, बुराई ।** उ.—कहा भए जो आप स्वारथी नैननि अपनी निंद्य कराई—पृ. ३३१ (१) ।

निंब—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नीम का पेड़ ।**

निंबरिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. नीम+बारी] **बारी जिसमें सब या अधिकांश पेड़ नीम के ही हों ।**

निंबादित्य, निंबार्क—संज्ञा पुं. [सं.] **निंबार्क संप्रदाय के आदि आचार्य जिनकी गद्दी वृन्दावन के पास 'ध्रुव' पहाड़ी पर है ।**

निंबू—संज्ञा पुं. [सं.] **नीबू ।**

निः—अव्य. [सं. निस्] (१) **नहीं ।** (२) **रहित ।**

निःक्षोभ—वि. [सं.] **जिसको क्षोभ न हो ।**

निःशंक—वि. [सं.] **निर्भय, निडर ।**

निःशब्द—वि. [सं.] **शब्दरहित ।**

निःशुल्क—वि. [सं.] **बिना शुल्क का ।**

निःशेष—वि. [सं.] (१) **सब ।** (२) **समाप्त ।**

निःशोक—वि. [हिं. निः+शोक] **शोकरहित, अशोक ।** उ.—ताको दर्शन देखि भयौ अज सब बातन निःशोक-सारा. १३ ।

निःश्रेयस—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **मुक्ति, मोक्ष ।** (२) **मंगल, कल्याण ।** (३) **भक्ति ।** (४) **विज्ञान ।**

निःश्वास—संज्ञा पुं. [सं.] **साँस ।**

निःसंकल्प—वि. [सं.] **इच्छा-रहित ।**

निःसंकोच—क्रि. वि. [सं.] **बिना संकोच के, बेधड़क ।**

निःसंग—वि. [सं.] (१) **निर्लिप्त ।** (२) **जो लगाव या मेल न रखता हो ।**

निःसंतान—वि. [सं.] **जिसके संतान न हो ।**

निःसंदेह—वि. [सं.] **जिसे या जिसमें संदेह न हो ।**

निःसंशय—वि. [सं.] **शंका या संशय-रहित ।**

निःसत्व—वि. [सं.] (१) **जिसकी कुछ असलियत न हो ।** (२) **तत्व या सार-रहित ।**

निःसार—वि. [सं.] (१) **जिसमें सार या तत्व न हो ।** (२) **जिसकी कुछ असलियत न हो ।** (३) **महत्वहीन ।**

निःसीम—वि. [सं.] **जिसकी सीमा न हो, असीम ।**

निःसृत—वि. [सं.] **निकला हुआ ।**

निस्पंद—वि. [सं.] **स्पंदनरहित, निश्चल ।**

निःस्पृह—वि. [सं.] (१) **इच्छारहित ।** (२) **निर्लोभ ।**

निःस्व—वि. [सं.] **धनहीन, दरिद्र ।**

निःस्वार्थ—वि. [सं.] (१) **जो लाभ, सुख या सुविधा का ध्यान न रखता हो ।** (२) **जो (कार्य-व्यापार) लाभ, सुख या सुविधा के लिए न किया गया हो ।**

नि—अव्य० [सं.] **एक उपसर्ग जो अनेक अर्थों का द्योतक है; यथा—**(१) **समूह ।** (२) **अत्यन्त ।** (२) **नित्य ।** (४) **अंतर्भाव ।** (५) **समीप ।**

संज्ञा पुं—**निषाद स्वर का संकेत ।**

निअर—अव्य. [सं निकट, प्रा. निअड] **समीप, पास ।**

निअराना—क्रि. स. [हिं. निअर] **समीप पहुँचना ।**

क्रि. अ.—**निकट या पास आना ।**

निअरानी—क्रि. स. स्त्री. [हिं. निअराना] **निकट आ गयी ।** उ.—ताकी मृत्यु आइ निअरानी—१०उ०-४४ ।

निअरे—अव्य. [हिं. निअर] **निकट, समीप ।** उ.—वैं तो भूषन परखन लागीं तब लगि निअरे आए—३४४१ ।

निआउ—संज्ञा पुं. [सं. न्याय] **नीति, न्याय ।**

निआर्थी—वि. [सं. निः+अर्थी] **निर्धन, गरीब ।**

संज्ञा स्त्री.—**निर्धनता, गरीबी ।**

निआन—संज्ञा पुं. [सं. निदान] **अंत, परिणाम ।**

अव्य.—**अंत में ।**

निआमत—संज्ञा स्त्री. [अ.] **अलभ्य पदार्थ ।**

निआरा—वि. [हिं न्यारा] **अद्‌भुत, न्यारा ।**

निकंटक—वि. [सं. निष्कंटक] **कंटकरहित ।**

निकंदन—संज्ञा पुं. [सं. नि+कंदन=नाश, वध] **नाश करनेवाले ।** उ.—(क) सूरदास प्रभु कंस निकंदन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवनि करन सनाथ - २५३४। (ख) सूरदास प्रभु दुष्ट-निकंदन धरनी भार उतारनकारी—२५८६।

निकंदना—क्रि. स. [हिं. निकंदन] **नष्ट करना।**

निकंदा—वि. [सं. नि+कंदन=नाश, वध] **नाश करने वाले, वध करनेवाले।** उ.—सूरदास बलि गई जसोदा, उपज्यौ कंस-निकंदा—१०-१६२।

निकट—क्रि. वि. [सं.] **समीप, पास।** उ.-बंसीबट के निकट आजु हो नेक स्याम मुख हेरो–सा० ४२।

वि.—(१) **पास का।** (२) **जिसमें अंतर न हो।**

निकटता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **समीपता, सामीप्य।**

निकटपना—संज्ञा पुं. [सं निकट+हिं. पना] **निकटता, सामीप्य।**

निकटवर्ती—वि. [हिं. निकट] **पासवाला।**

निकटस्थ—वि. [सं.] **निकट या पास का।**

निकम्मा—वि. [सं. निष्कर्म, प्रा. निकम्म,] **जो कुछ न करे-धरे, जो कुछ करने-धरने योग्य न हो।** उ.–बड़ौ कृतघ्नी, और निकम्मा, बेधन, राँकौ–फीकौ–१-१८६।

निकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समूह।** उ.—भृकुटी सूर गही कर सारँग निकर कटाछनि चोर—सा०उ० १६। (२) **राशि।**

निकरई—क्रि. अ. [हिं. निकारना] **निकलती है।** उ.-किरनि सकति भुज भरि हनै उर तें न निकरई—२८६१।

निकरना—क्रि. अ. [हिं. निकलना] **बाहर आना।**

निकरि—क्रि. अ. [हिं. निकलना] **निकलकर।** उ.—मानौ निकरि तरनि रंध्रनि तैं उपजी है अति आगि—६-१५८।

निकरी—क्रि. अ. [हिं. निकरना] **निकली।**

प्र०—जात निकरी-**निकले जाते हैं।** उ.–सूरदास प्रभु वेगि मिलहु किनि नातरु प्रान जात निकरी—३१८८।

निकरै—क्रि. अ. [हिं. निकलना] (१) **निकलता है।** (२) **जाकर बसता है।** उ.—अरजुन के हरि हुते सारथी, सोऊ बन निकरै—१-२६४।

निकर्मा—वि. [सं. निष्कर्मा] **जो काम न करे, आलसी।**

निकलंक—वि. [सं. निष्कलंक] **दोषरहित, निर्दोष।** उ.—आनन रही ललित पय छींटैं, छाजति छबि तृन तोरैं। मनौ निकसे निकलंक कलानिधि दुग्धसिंधु मधि थोरै —७३२।

निकलंकी—संज्ञा पुं. [सं. निष्कलंक] **विष्णु का दसवाँ अवतार जो कलि के अंत में होगा, कल्कि अवतार।**

वि.—**कलंकरहित, निर्दोष।**

निकलना—क्रि. अ. [हिं. निकालना] (१) **बाहर आना।**

मुहा.—निकल जाना-(१) **बहुत आगे बढ़ जाना।** (२) **नष्ट हो जाना, ले लिया जाना।** (३) **कम हो जाना।** (४) **न पकड़ा जाना।** (स्त्री का) निकल जाना—**स्त्री का घर छोड़कर किसी पुरुष के साथ चले जाना।**

(२) **व्याप्त या लगी हुई चीज का अलग होना।** (३) **आर-पार होना।** (४) **कक्षा आदि में उत्तीर्ण होना।** (५) **जाना, गुजरना।** (६) **उदय होना।** (७) **उत्पन्न होना।** (८) **दिखायी पड़ना।** (९) **किसी ओर को बढ़ा हुआ होना।** (१०) **ठहराया जाना, निश्चित होना।** (११) **प्रकट या स्पष्ट होना।** (१२) **अलग होना।** (१३) **आरंभ होना।** (१४) **प्राप्त या सिद्ध होना।** (१५) **प्रश्न या समस्या का हल होना।** (१६) **फैलाव होना।** (१७) **प्रचलित होना।** (१८) **प्रकाशित होना।** (१९) **छूट जाना।** (२०) **नयी बात ज्ञात होना।** (२१) **प्रमाणित होना।** (२२) **संबंध न रखना।** (२३) **अपने को बचा जाना।** (२४) **मुकरना, नटना।** (२५) **शरीर से उत्पन्न होना।** (२६) **बिक जाना।** (२७) **हिसाब बाकी होना।** (२८) **टूट या फटकर अलग होना।** (२९) **दूर होना, मिट जाना।** (३०) **बीतना, गुजरना।**

निकलवाना, निकलाना—क्रि. स. [हिं. निकालना का प्रे.] **निकालने का काम दूसरे से कराना।**

निकषा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कसौटी।** (२) **सान चढ़ाने का पत्थर।**

निकषण संज्ञा पुं. [सं.] **सान या कसौटी पर चढ़ाना।**

निकषा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सुमालि की पुत्री और विश्रवा की पत्नी जिसके गर्भ से रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण जन्मे थे।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकसत—क्रि. अ. [हिं. निकलना] (१) **निकलते ही, निकलते हैं** । उ.—(क) जब लगि डोलत, बोलत, चितवत, धन-दारा हैं तेरे । निकसत हंस, प्रेत कहि तजिहैं, कोउ न आवै नेरे—१-३१६ । (ख) सूरदास जम कंठ गहे तैं, निकसत प्रान दुखारे—१-३३४ । (२) **उधार निकलते हैं, उधार बाकी हैं** । उ.—लेखौ करत लाख ही निकसत को गनि सकत अपार—१-१९६ ।

निकसन—संज्ञा स्त्री. [हिं. निकलना, निकसना] **निकलने, छुटकारा पाने, बचने** । उ.—अब भ्रम-भँवर परयौ ब्रजनायक, निकसन की सब बिधि की—१-२१३ ।

क्रि. अ.– **निकलने** । उ.—तलफि तलफि जिय निकसन लागे पापी पीर न जानी—३०५९ ।

निकसना—क्रि. अ. [हिं. निकलना] **निकलना** ।

निकसबी—क्रि. अ. [हिं. निकलना] **निकलूँ** । उ.—निकसबी हम कौन मग हो कहै बारी बैस - सा० १७ ।

निकसि—क्रि. अ. [हिं. निकसना] । (१) **प्रकट होकर, अवतरित होकर** । उ.— बहुत सासना दई प्रहलादहिं, ताहि निसंक कियौ । निकसि खंभ तैं नाथ निरंतर, निज जन राखि लियौ—१-३८ । (२) **निकलकर, बाहर आकर** । उ.—रथ तैं उतरि चक्र कर लीन्हौ, सुभट सामुहैं आए । ज्यौं कंदर तैं निकसि सिंह, झुकि, गज-जूथनि पर धाए—१-२७४ ।

निकसिहैं— क्रि. अ. [हिं. निकलना, निकसना] **निकलेंगे** ।

प्र.–आइ निकसिहैं–**आ निकलेंगे, आ जायँगे, उपस्थित हो जायँगे** । उ.— अबहिं निवछरौ समय, सुचित है, हम तौ निधरक कीजै । औरौ आइ निकसिहैं तातैं, आगैं है सो लीजै—१-१९१ ।

निकसे—क्रि. अ. [हिं. निकलना] (१) **प्रकट हुए, आविर्भूत हुए** । उ.—निकसे खंभ-बीच तैं नरहरि, ताहि अभय पद दीन्हौ—१-१०४ । (२) **निकले, बाहर आए** । उ.—आइ गई कर लिए कमोरी, घर तैं निकसे ग्वाल । ......। भुज गहि लियौ कान्ह इक बालक, निकसे ब्रज की खोरि—१०-२७० । (३) **गये, प्रस्थान किया** । उ.—बारक इन बीथिन ह्वै निकसे मैं दूरि झरोखनि झाँक्यो—२५४६ ।

निकसै—क्रि. अ. [हिं. निकलना] **जन्म लेने पर, उत्पन्न होने पर** । उ.—जैसैं जननि-जठर-अंतरगत सुत अपराध करै । तौऊ जतन करै अरु पोषै, निकसै अंक भरै —१-११७ ।

निकस्यौ—क्रि. अ. [हिं. निकलना, निकसना] **निकला, बाहर आया** । उ.—रथ तैं उतरि चलनि आतुर ह्वै, कच रज की लपटानि । मानौ सिंह सैल तैं निकस्यौ, महा मत्त गज जानि—१-२७९ ।

निकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. नीक+आई (प्रत्य.)] (१) **सुन्दरता, सौंदर्य** । उ.—(क) सुन्दर स्याम निकाई कौ सुख, नैना ही पै जानै -- ७३० । (ख) अरुन अधर नासिका निकाई बदत परस्पर होड़—१३५७ । (२) **भलाई, अच्छापन** ।

निकाज—वि. [हिं. नि+काज] **निकम्मा, बेकाम, अकर्मण्य** । उ.—ताहूँ सकुच सरन आए की होत जु निपट निकाज—१-१८१ ।

निकाम—क्रि. वि. [हिं. नि+काम] **व्यर्थ, निष्प्रयोजन** ।

वि.—(१) **निकम्मा** । (२) **बुरा, खराब** ।

वि. [सं.] (१) **अभिलषित** । (२) **पर्याप्त** ।

निकाय— संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समूह** । (२) **राशि** । (३) **निलय, वासस्थान** । (४) **ईश्वर** ।

निकार संज्ञा पुं. [सं.] **हार** । (२) **अपमान** । (३) **अपमान, मानहानि** । (४) **तिरस्कार** ।

संज्ञा पुं. [हिं. निकालना] (१) **निकालने का काम** । (२) **निकलने का द्वार, निकास** ।

क्रि. स.—**निकालकर, निष्कासित करके** ।

निकारण—संज्ञा पुं. [सं.] **वध, मारण** ।

निकारना—क्रि. स. [हिं. निकालना] **निकालना** ।

निकारि—क्रि. स. [सं. निष्कासन, हिं. निकालना, निकासना, निकारना] **निकाल, निकालकर** । उ.—याकौं ह्याँ तैं देहु निकारि । बहुरि न आवै मेरे द्वारि —१-२८४ ।

निकारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. निकालना] **निकालने की क्रिया, निकालना, निष्कासन** । उ.—अपने सुत कौं राज दिवायौ, हमकौं देस निकारी—६-४४ ।

निकारौ—क्रि. स. [हिं. निकालना] **निकालो, भीतर से**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर लाओ। असुर सौं हेत करि, करौ सागर मथन तहाँ तैं अमृत कौं पुनि निकारौ—८-८।

निकारयौ—क्रि. स. [हिं. निकालना, निकासना] **निकाला, निकाल दिया।** उ.—काल-अवधि पूरन भई जा दिन, तनहूँ त्यागि सिधारयौ। प्रेत-प्रेत तेरौ नाम परयौ, जब जेंवरि बाँधि निकारयौ—१-३३६।

निकालना—क्रि. स. [सं. निष्कासन, हिं. निकासना] (१) **भीतर से बाहर लाना।** (२) **व्याप्त या ओतप्रोत वस्तु को अलग करना।** (३) **एक ओर से दूसरी ओर ले जाना।** (४) **ले जाना।** (५) **किसी ओर को बढ़ा देना** (६) **निश्चित करना, ठहराना।** (७) **उपस्थित करना।** (८) **स्पष्ट या प्रकट करना।** (९) **चलाना, आरंभ करना।** (१०) **सबके सामने लाना।** (११) **घटना, कम करना।** (१२) **जुड़ा या लगा न रहने देना।** (१३) **समूह से अलग करना।** (१४) **काम से अलग करना।** (१५) **पास न रखना।** (१६) **बेंचना, खपाना।** (१७) **सिद्ध करना।** (१८) **निर्वाह करना।** (१९) **प्रश्न या समस्या का हल करना।** (२०) **फैलाना।** (२१) **प्रचलित करना।** (२२) **नयी बात प्रकट करना।** (२३) **उद्धार करना।** (२४) **प्रकाशित करना।** (२५) **रकम जिम्मे ठहराना।** (२६) **बरामद करना।** (२७) **दूर करना** (२८) **दूसरे से अपनी वस्तु ले लेना।** (२९) **सुई से काढ़ना।** (३०) **सिखाना, शिक्षा देना।**

निकाला—संज्ञा पुं. [हिं. निकालना] (१) **निकालने का काम।** (२) **निकाले जाने का दंड, निष्कासन, निर्वासन।**

निकाश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आकृति।** (२) **समानता।**

निकास—क्रि. स. [हिं. निकासना] **निकालना।**

प्र.—देहु निकास—**निकाल दो, बाहर कर दो, हटा दो।** उ.—भृगु कह्यो, करत जज्ञ ये नास। इनकौं ह्याँ तैं देहु निकास—४-५।

संज्ञा पुं.—(१) **निकालने की क्रिया या भाव।** (२) **वह स्थान या छिद्र जहाँ से कुछ निकले।** (३) **द्वार, दरवाजा।** (४) **खुला स्थान, मैदान।** उ.—(क) खेलत बनै घोष निकास—१०-२४४। (ख) खेलन चले कुँवर कन्हाई। कहत घोष-निकास जैये, तहाँ खेलैं धाइ—५३२। (५) **उद्गम, मूल स्थान।** (६) **वंश का मूल।** (७) **बचाव का मार्ग या उपाय।** (८) **निर्वाह का ढंग या सिलसिला।** (९) **आय का मार्ग या साधन।** (१०) **आय, आमदनी।**

निकासत—क्रि. स. [हिं. निकासना] **निकालता है।**

निकासना—क्रि. स. [हिं. निकालना] **निकालना।**

निकासी—संज्ञा स्त्री. [हिं. निकास] (१) **प्रस्थान, रवानगी।** (२) **लाभ का धन।** (३) **आय।** (४) **बिक्री, खपत।**

निकाह—संज्ञा पुं. [अ.] **विवाह (मुसलमान)।**

निकियाना—क्रि. स. [देश.] **धज्जियाँ अलग करना।**

निकिष—वि. [सं. निकृष्ट] **बुरा, नीच, अधम।**

निकुंज—संज्ञा पुं. [सं.] **लतागृह, लता-मंडप।** उ.—सघन निकुंज सुरत संगम मिलि मोहन कंठ लगायौ—सारा. ७१८।

निकुंजबिहारी—संज्ञा पुं. [सं. निकुंजविहारी] **शीतल निकुंजों में विहार करनेवाले, श्रीकृष्ण।** उ.—तुम अविगत, अनाथ के स्वामी, दीन दयाल, निकुंज-बिहारी—१-१६०।

निकुंभ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कुंभकर्ण का एक पुत्र जिसे हनुमान ने मारा था।** (२) **एक राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।** (३) **महादेव का एक गण।**

निकुंभिला—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मेघनाद की आराध्या देवी।**

निकृत—वि. [सं.] (१) **बहिष्कृत, निष्कासित।** (२) **तिरस्कृत।** (३) **नीच।** (४) **वंचित।**

निकृति—वि. [सं.] (१) **निष्कासन।** (२) **तिरस्कार।** (३) **नीचता।** (४) **वंचकता।**

निकृती—वि. [सं. निकृतिन्] **नीच, दुष्ट।**

निकृष्ट—वि. [सं.] **बुरा, नीच, अधम।**

निकृष्टता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बुराई, नीचता।**

निकेत, निकेतन—संज्ञा पुं. [सं.] **घर, मकान, स्थान।** उ.—(क) गुरु-ब्राह्मन अरु संत-सुजन के, जात न कबहुँ निकेत—२-१५। (ख) बहुरौ ब्रह्मा सुरनि समेत नरहरि जू के जाइ निकेत—७-२।

निकोसना—क्रि. स. [सं. निस्+कोश] (१) **दाँत निकालना।** (२) **दाँत पीसना, किटकिटाना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरौनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. निराना] (१) निराने का काम। (२) निराने की मजदूरी।

निक्का—वि. [सं. न्यक्क=नत] छोटा-रूप में।

निक्षिप्त—वि. [सं.] (१) फेंका हुआ। (२) डाला या छोड़ा हुआ। (२) धरोहर रखा हुआ।

निक्षेप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) फेंकने-डालने की क्रिया या भाव। (२) चलाने की क्रिया या भाव। (३) पोंछने की क्रिया या भाव। (४) धरोहर, अमानत।

निक्षेपण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) फेंकना, डालना। (२) छोड़ना, चलाना। (३) त्यागना।

निक्षेपी—वि. [सं. निक्षेपिन्] (१) फेंकने, छोड़ने या त्यागनेवाला। (२) धरोहर रखनेवाला।

निक्षेप्य—वि. [सं.] फेंकने, छोड़ने या त्यागने योग्य।

निखंग—संज्ञा पुं. [सं. निषंग] तरकश, तूणीर।

निखंगी—वि. [हिं. निषंगी] तीर चलानेवाला।

निखंड—वि. [सं. निस्+खंड] ठीक, बीचोबीच।

निखट्टर - वि. [हिं. नि+कट्टर] (१) कड़े या कठोर जी का। (२) निर्दय, निष्ठुर।

निखट्टू—वि. [हिं. नि+खटना] निकम्मा, आलसी।

निखनन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) खोदना। (२) गाड़ना।

निखरना—क्रि. अ. [सं. निक्षरण] (१) निर्मल, स्वच्छ या झकाझक होना। (२) रंगत खुलना।

निखरवाना—क्रि. स. [हिं. निखारना] स्वच्छ कराना।

निखरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. निखरना] पक्की रसोई।

वि.— साफ, स्वच्छ, झकाझक।

क्रि. अ.—(१) झकाझक हुई। (२) रंगत खुली।

निखर्व—वि. [सं.] दस हजार करोड़।

निखवख—वि. [सं. न्यक्ष=सारा] सब, सारा।

निखाद—संज्ञा पुं. [हिं. निषाद] एक अनार्य जाति।

निखार—संज्ञा पुं.[हिं. निखरना](१)निर्मलपन, स्वच्छता। (२) सजाव, शृंगार, रंगत।

निखारना—क्रि. स. [हिं. निखरना] (१) स्वच्छ करना। (२) पावन या पवित्र करना।

निखालिस—वि. [हिं. नि+अ. ख़ालिस] विशुद्ध।

निखिल—वि. [सं.] सब, सारा, संपूर्ण।

निखेध—संज्ञा पुं. [हिं. निषेध] वर्जन, मनाही।

निखेधना—क्रि. स. [हिं. निषेध] मना करना।

निखोट—वि. [हिं. नि+खोट] (१) निर्दोष। (२) जिसमें झगड़ा-टंटा न हो, साफ।

क्रि. वि.—बिना संकोच के, बेधड़क।

निखोटना—क्रि. स. [हिं. नख] नोचना-खसोटना।

निखोटै—क्रि. स. [हिं. निखोटना] नोचता-खसोटता है, खींचता है। उ.—बरजत बरजत बिरुझाने। करि क्रोध मनहिं अकुलाने। कर धरत धरनि पर लोटै। माता कौ चीर निखोटै—१०-१८३।

निखोड़ा—वि. [देश.] कठोर, निर्दय।

निखोरना—क्रि. स. [हिं. नि+खोदना] नोचना।

निगंध—वि. [सं. निर्गंध] गंधहीन।

निगड़—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बेड़ी। उ.—(क) छोरे निगड़ सोआए पहरू, द्वारे कौ कपाट उघरयौ—१०-८। (ख) निगड़ तोरि मिलि मात-पिता को हरष अनल करि दुखहि दहो —२६४४। (२) जंजीर।

निगति—संज्ञा पुं. [हिं. नि+गति] पापी जिसे अच्छी गति न मिल सके।

संज्ञा स्त्री.—(१) दुर्दशा, कुदशा (२) बुरी गति।

निगद—संज्ञा पुं. [सं.] भाषण, कथन।

निगदित—वि. [सं.] कहा हुआ, कथित।

निगम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मार्ग (२) वेद। उ.—सूर पूरन ब्रह्म निगम नाहीं गम्य तिनहिं अक्रूर मन यह बिचारै —२५५१। (३) हाट-बाजार। (४) मेला। (५) व्यापार। (६) कायस्थों का एक भेद।

निगम-ऐन—संज्ञा पुं. [सं. निगम+अयन] वेद का बताया हुआ धर्म-पथ, वेद-वर्णित धर्म-मार्ग, निर्वाण। उ.—दीन जन क्यौं करि आवै सरन?……। परम अनाथ, बिवेक-नैन बिनु, निगम-ऐन क्यौं पावै—१-४८।

निगम-द्रुम—संज्ञा पुं. [सं. निगम+द्रुम] वेद रूपी वृक्ष। उ.—माधौ, नैंकु हटकौ गाइ।……। छुधित अति न अघाति कबहूँ, निगम-द्रुम दलि खाइ —१-५६।

निगमन—संज्ञा पुं. [सं.] सिद्ध की जानेवाली बात को सिद्ध करके परिणामस्वरूप उसको दोहराना।

निगमनि—संज्ञा पुं. [सं. निगम+नि (प्रत्य.)] वेदों में, धर्म-शास्त्रों में। उ.—तातैं बिपति-उधारन गायौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्रवननि साखि सुनी भक्तनि मुख, निगमनिं भेद बतायौ—१-१८८।

निगमनिवासी—संज्ञा पुं. [सं.] **विष्णु, नारायण।**

निगमागम—संज्ञा पुं. [सं.] **वेद-शास्त्र।**

निगर—संज्ञा पुं. [सं.] **भोजन।**

वि. [सं. निकर] **सब, सारा।**

संज्ञा पुं.—(१) **समूह।** (२) **राशि।** (३) **निधि।**

निगरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भक्षण।** (२) **गला।**

निगराँ—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **रक्षक।** (२) **निरीक्षक।**

निगरा—वि. [हिं. नि+सं. गरण] **विशुद्ध।**

निगराना—क्रि. स. [सं. नय+करण] (१) **निर्णय करना।** (२) **अलग करना।** (३) **स्पष्ट करना।**

निगरानी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **देख-रेख, निरीक्षण।**

निगरू—वि. [सं. नि.+गुरु] **जो भारी न हो।**

निगलना—क्रि. स. [सं. निगरण] (१) **लीलना, गटकना।** (२) **खाना।** (३) **दूसरे का धन मारकर पचा जाना।**

निगाली—संज्ञा स्त्री. [देश.] **हुक्के की नली।**

निगाह—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **दृष्टि, नजर।** (२) **देखने की रीति या क्रिया, चितवन।** (३) **कृपादृष्टि।** (४) **ध्यान, विचार।** (५) **परख, पहचान।**

निगिम—वि. [सं. निगुह्य] **अत्यंत प्रिय।**

निगुंफ—संज्ञा पुं. [सं.] **गुच्छा, समूह।**

निगुण, निगुन—वि. [सं. निर्गुण] (१) **जो सत्व, रज और तम, तीनों गुणों से परे हो।** (२) **जिसम कोई गुण न हो।**

निगुनी—वि. [हिं. नि+गुनी] (१) **जो गुणी न हो, गुणहीन।** (२) **जो सत, रज, तम से परे हो।**

निगुरा—वि. [हिं. नि+गुरु] **जिसने गुरु-मंत्र न लिया हो।**

निगूढ़—वि. [सं.] **अत्यंत गुप्त, अगम।**

निगूढ़ार्थ—वि. [सं.] **जिसका अर्थ छिपा हो।**

निगूहन—संज्ञा पुं. [सं.] **गोपन, छिपाव।**

निगृहीत—वि. [सं.] (१) **जो पकड़ा या घेरा गया हो।** (२) **जिस पर आक्रमण हुआ हो।** (३) **पीड़ित, दुखी।** (४) **दंडित।**

निगोड़ा—वि. [हिं. निगुंण] (१) **जिसके ऊपर कोई न हो।** (२) **जिसके आगे-पीछे कोई न हो,** (३) **दुष्ट, नीच।** **गाली (स्त्री.)** उ.—मूकू, निंद, निगोड़ा, भौंड़ा, कायर, काम बनावै—१-१८६।

निग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रोक, रुकावट।** (२) **दमन।** (३) **चिकित्सा,** (४) **दंड।** (५) **पीड़ा देने की क्रिया या भाव।** (६) **बंधन।** (७) **डाँट-फटकार।**

निग्रहण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रोकने-थामने का काम।** (२) **दंड देने या सताने का काम।**

निग्रहना—क्रि. स. [सं. निग्रहण] (१) **पकड़ना, थामना गहना।** (२) **रोकना।** (३) **दंड देना।** (४) **सताना।**

निग्रही—वि. [सं. निग्राहिन्] (१) **रोकने, दबाने या वश में रखनेवाला।** (२) **दंड देने या दमन करनेवाला।**

निग्रहौं, निग्रहौं—क्रि. स. [हिं. निग्रहना] **पकड़ूँ, थाम लूँ, गहूँ।** उ.—कंस केस निग्रहों पुहुमि को भार उतारौं—११३८।

निग्रह्यो, निग्रह्यौ—क्रि. स. [हिं. निग्रहना] **पकड़ा, थामा, गहा।** उ.—तब न कंस निग्रह्यो पुहुमि को भार उतार्यो—११३९।

निघंटु—संज्ञा पं [सं.] (१) **वैदिक शब्द-कोश।** (२) **विषय-विशेष के शब्दों का संग्रह मात्र।**

निघटत—क्रि. अ. [हिं. निघटना] **घटता है।** उ.—भरे रहत अति, नीर न निघटत, जानत नहिं दिन-रैन—२७६८।

निघटति—क्रि. अ. [हिं. निघटना] **घटती है।** उ.—सँदेसनि क्यों निघटति दिन-राति—३१८५।

निघटना—क्रि. अ. [हिं. नि+घटना] **घटना, कम होना।**

निघटी—क्रि. अ. [हिं. निघटना] **घटी, समाप्त हुई, व्यतीत हुई।** उ.—(क) निसि निघटी रवि-रथ रुचि साजी। चंद मलिन चकई रति-राजी—१०-२३३। (ख) जागहु जागहु नंदकुमार। रवि बहु चढ़्यौ रैनि सब निघटी, उचटे सकल किवार—४०८।

निघरघट—वि. [हिं. नि+घर+घाट] (१) **जो घर-घाट का न हो, जिसका ठौर-ठिकाना न हो।** (२) **निर्लज्ज।**

मुहा.—निघरघट देना—**पकड़े और लज्जित किये जाने पर झूठी बातें बनाना।**

निघरा—वि. [हिं. नि+घर] (१) **जिसके घर-बार या ठौर-ठिकाना न हो।** (२) **नीच, दुष्ट, निगोड़ा।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निघर्षण—संज्ञा पुं. [सं.] **घिसना, रगड़ना।**
निघात—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रहार।** (२) **अनुदात्त स्वर।**
निघाति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **लौहदंड।** (२) **निहाई।**
निघ्न—वि. [सं.] (१) **वशीभूत।** (२) **आश्रित।**
निचय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समूह।** (२) **निश्चय, दृढ़ विचार।** (३) **संचय, संग्रह।**
निचल—वि. [सं. निश्चल] **अचल, निश्चल।**
निचला—वि. [हिं. नीचा+ला (प्रत्य.)] **नीचे का।**
वि. [सं. निश्चल] (१) **अचल।** (२) **स्थिर।**
निचाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. नीच+आई (प्रत्य.)] (१) **नीचा होने का भाव, नीचापन।** (२) **नीचे का विस्तार।** (३) **नीच होने का भाव, नीचता, ओछापन।**
निचान—संज्ञा स्त्री. [हिं. नीचा] (१) **नीचे की ओर दूरी या विस्तार।** (२) **ढाल, ढलान।**
निचिंत—वि. [सं. निश्चिंत] **चिंतारहित।**
निचित—वि. [सं.] (१) **संचित।** (२) **निर्मित।**
निचुड़ना—क्रि. अ. [सं. नि+च्यवन=चूना] (१) **भीगी या रसीली चीज का इस प्रकार दबना कि पानी या रस छटकर या टपककर निकल जाय।** (२) **रस या सार-रहित होना।** (३) **(शरीर का) तेज या शक्ति से रहित होना।**
निचै—संज्ञा पुं. [सं. निचय] (१) **समूह।** (२) **निश्चय, दृढ़ विचार।** (२) **संचय।**
निचोई—वि. [हिं. निचोना, निचोड़ना] **जिसमें रस आदि निचोड़ा गया हो।** उ.—चौराई लाल्हा अरु पोई। मध्य मेलि निबुआनि निचोई—३६६।
निचोड़, निचोर—संज्ञा पु. [हिं. निचोड़ना] (१) **(जल, रस आदि) वस्तु जो निचोड़ने से निकले।** (२) **सार, सत।** (३) **कथन का तात्पर्य या सारांश।**
निचोड़ना, निचोना, निचोरना—क्रि. स. [हिं. निचुड़ना] (१) **भीगी या रसीली चीज को दबाकर पानी या रस टपकाना।** (२) **किसी वस्तु का सार ले लेना।** (३) **सर्वस्व हर लेना।**
निचोयो—क्रि. स. [हिं. निचोना] **निचोड़ने से।** उ.—सूरदास क्यों नीर चुवत है नीरस बसन निचोयो-३४८२।
निचोरौं—क्रि. स. [हिं. निचोड़ना] **निचोड़ लूं, रस-पदार्थ निकाल लूं।** उ.—कहौ तौ चंद्रहिं लै अकास तैं, लछिमन मुखहिं निचोरौं—६-१४८।
निचोल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ढीला-ढाला कुरता, अंगा।** उ.—(क) सिर चौतनी, डिठौना दीन्हौ, आँखि आँजि पहिराइ निचोल—१०-६४। (ख) ओढ़े पीरी पावरी हो पहिरे लाल निचोल—८६३। (२) **ढकने का कपड़ा।** (३) **स्त्री की ओढ़नी।** (४) **लहँगा, घाघरा।** (५) **अधोवस्त्र।** (६) **वस्त्र।**
निचोलक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अंगा।** (२) **कवच।**
निचोवना—क्रि. स. [हिं. निचोना] **निचोड़ना।**
निचौहाँ—वि. [हिं. नीचा+औहाँ (प्रत्य.)] **नीचे को झुका हुआ, नमित।**
निचौहीं—वि. स्त्री. [हिं. निचौहाँ] **नीचे की ओर झुकी हुई।** उ.—सखिनि मध्य करि दीठि निचौहीं राधा सकुच भरी।
निचौहैं—क्रि. वि. [हिं. निचौहाँ] **नीचे की ओर।**
निछत्र—वि. [सं. निः+छत्र] (१) **जो छत्रहीन हो।** (२) **बिना राज्य या राज्यचिह्न का।**
वि. [सं. निः+क्षत्र] **क्षत्रियों से हीन, क्षत्रियरहित।** उ.—मारयौ मुनि बिनहीं अपराधहिं, कामधेनु लै आऊ। इकइस बार निछत्र करी छिति, तहाँ न देखे हाऊ—१०-२२१।
निछनियाँ—क्रि. वि. [हिं. निछान (नि=नहीं+छान=जो छानने से निकले)] **एकदम, पूर्ण रूप से, बिलकुल।** उ.—जसुमति दौरि लिए हरि कनियाँ। आजु गयौ मेरौ गाइ चरावन, हौं बलि जाउँ निछनियाँ—४१८।
निछल—वि. [सं. निश्छल] **छल-कपटरहित।**
निछला—वि. [हिं. निछल] **एकमात्र, केवल।**
निछान - क्रि. वि. [हिं. नि+छान] **एकदम, बिलकुल।**
वि.—(१) **विशुद्ध, खालिस।** (२) **एकमात्र, केवल।**
निछावर, निछावरि—संज्ञा स्त्री. [सं. न्यास+अवर्त्त=न्यासावर्त्त, हिं. निछावर] (१) **वारफेरा, उतारा।** उ.—अब कहा करौं निछावरि, सूरज सोचति अपनैं लालन जू पर—१०-६२।
मुहा.—निछावर करना—**छोड़ देना, त्यागना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निछावर होना—(१) **त्याग दिया जाना । (२) प्राण त्यागना, मर जाना ।**

(२) **वह धन या वस्तु जो उतारा या वाराफेरा करके दी जाय । (३) इनाम, नेग ।**

निछोह, निछोही—वि. [हिं. नि+छोह] (१) **जिसे प्रेम न हो, प्रेम-रहित । (२) निष्ठुर, निर्दय ।**

निज—वि. [सं.] (१) **अपना, स्वकीय ।** उ.—बासुदेव की बड़ी बड़ाई। जगत-पिता, जगदीस, जगतगुरु, निज भक्तनि की सहत ढिठाई—१-३ । (२) **मुख्य, प्रधान ।** उ.—परम चतुर निज दास स्याम के संतत निकट रहत हौ । (३) **ठीक, सही, वास्तविक ।**

अव्य—(१) **ठीक ठीक । (२) विशेष रूप से ।**

निजकाना—क्रि. अ. [फ़ा. नजदीक] **समीप आना ।**

निजी—वि. [हिं. निज] **निज का, खास अपना ।**

निजु—अव्य. [सं. निज] (१) **निश्चय, ठीक-ठीक, सही-सही । (२) विशेष करके, मुख्यतः, खास करके ।** उ.—(क) पतित पावन जानि सरन आयौ । उदधि-संसार सुभ नाम-नौका तरन, अटल अस्थान निजु निगम गायौ—१-११६ । (ख) उ.—बान बरषा सुरसरी-सुवन रनभूमि आए । ·········· । कह्यौ करि कोप प्रभु अब प्रतिज्ञा तजौ, नहीं तौ जुद्ध निजु हम हराए—१-२७१ ।

निजू—वि. [हिं. निज] **निज का, निजी ।**

निजोर—वि. [हिं. नि+फ़ा जोर] **निर्बल ।**

निझरना—क्रि. अ. [हिं. नि+झरना] (१) **टूटकर गिरना । (२) सार-वस्तु से रहित हो जाना । (३) अपने को दोष से बचा जाना ।**

निझरि—क्रि. अ. [हिं. निझरना] (१) **निचुड़ गये, (बरस-बरस कर) खाली हो गये ।** उ.—भुव पर एक बूँद नहिं पहुँची निझरि गए सब मेह—६७१ । (२) **अपने को निर्दोष प्रमाणित करके ।** उ.—सदा चतुराई फबती नाहीं अति ही निझरि रही हो—१५२७ ।

निझाना—क्रि. अ. [देश.] **आड़ से छिपकर देखना ।**

निझोटना—क्रि. स. [देश.] **खींच या झपटकर छीनना ।**

निटर—वि. [देश.] **जो (खेत) उपजाऊ न रहा हो, जिसकी उर्वरा शक्ति चुक गयी हो ।**

निटोल—संज्ञा पुं. [हिं. नि+टोला] **टोला, मोहल्ला ।** उ.—किंकिरिनि की लाज धरि ब्रज सुबस करो निटोल—३४७५ ।

निठल्ला—वि. [हिं. नि+टहल] (१) **जिसके पास काम-धंधा न हो । (२) बेरोजगार । (३) निकम्मा ।**

निठल्लू—वि. [हिं. निठल्ला] **निकम्मा ।**

निठुर—वि. [सं. निष्ठुर] **निर्दय, कठोर ।** उ.—(क) बड़ौ निठुर बिधना यह देख्यौ—६४३ । (ख) तनक हँस मन दै जुवतिनि को निठुर ठगोरी लाइ—२५३३ ।

निठुरई—संज्ञा स्त्री. [हिं. निठुरता] **निर्दयता ।**

निठुरता—संज्ञा स्त्री. [सं. निष्ठुरता] **निर्दयता ।**

निठुराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. निठुर] **निठुरता, क्रूरता, निर्दयता ।** उ.—(क) हठ करि रहे, चरन नहिं छाँड़े, नाथ तजौ निठुराई—६-५३ । (ख) अब अपने घर के लरिका सौं इती करति निठुराई—३६३ । (ग) ऐसे में न सूझ्यौ करै अति निठुराई धरै उनै उनै घटा देखो पावस की आई है—२८२७ ।

निठराउ, निठराऊ, निठराव—संज्ञा पुं. [हिं. निठराव] **निठुरता, क्रूरता, निर्दयता ।** उ.—सोऊ तौ बूझै ते बोलत इनमें इह निठराउ—पृ. ३३२ (१६) ।

निठोर, निठौर—संज्ञा पुं. [हिं. नि+ठौर] (१) **बुरा स्थान, कुठौर । (२) बुरा दाँव, बुरी दशा ।**

मुहा.—निठौर पड़ा—**बुरी दशा या स्थिति में पड़ना ।** परी निठोर—**बुरी दशा या स्थिति में पड़ गयी ।** उ.—बहुरि बन बोलन लागे मोर ।·····। जिनको पिय परदेस सिधारो सो तिय परी निठोर—२१३७ ।

निडर—वि. [हिं. उप. नि+डर] (१) **जिसे डर न हो, निशंक, निर्भय । (२) साहसी । (३) धृष्ट, ढीठ ।** उ.—तुम प्रताप-बल बदत का काहू, निडर भए घर-चेरे—१-१७० ।

निडरता—संज्ञा स्त्री. [हिं. निडर] **निर्भयता, निर्भीकता ।**

निडरपन, निडरपना—संज्ञा पुं. [हिं. निडर+पन (प्रत्य.)] **निडर होने का भाव, निर्भयता ।**

निढाल—वि. [हिं. नि+ढाल = गिरा हुआ] (१) **थकामाँदा, शिथिल, पस्त । (२) उत्साहहीन ।**

निढ़िल—वि. [हिं. नी+ढीला] (१) **जो ढीला न हो, कसा या तना हुआ । (२) कड़ा ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नितंब—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कमर का पिछला उभरा हुआ भाग।** (२) **कंधा।** (३) **तट, तीर।**

नितंबिनि, नितंबिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. नितंब] **सुंदर स्त्री।** उ.- निरखति बैठि नितंबिनि पिय सँग सार-सुता की ओर—१६१८।

नित—अव्य. [सं. नित्य] (१) **प्रति दिन।** (२) **सदा।**

नितल—संज्ञा पुं. [सं.] **सात पातालों में एक।**

नितांत—वि. [बंगाली] (१) **बहुत-अधिक।** (२) **निपट।**

निति, नित्त - अव्य. [सं. नित्य] **प्रति दिन, नित्य।** उ.—मुख कटु बचन, नित्त पर-निंदा, संगति-सुजस न लेत—२-१५।

नित्य—वि० [सं.] (१) **जो सदा बना रहे, अविनाशी।** (२) **प्रति दिन का, रोज का।**

अव्य०—(१) **प्रतिदिन।** (२) **सदा, सर्वदा।**

नित्यकर्म—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रति दिन का काम।** (२) **प्रति दिन किया जानेवाला धर्म-कर्म।**

नित्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अनश्वरता।**

नित्यदा—अव्य. [सं.] **सदा, सर्वदा।**

नित्यप्रति—अव्य० [सं.] **प्रति दिन, हर रोज।**

नित्ययौवना—संज्ञा. स्त्री. [सं.] **द्रौपदी।**

वि.—**जिसका यौवन सदा बना रहे।**

नित्यशः—अव्य. [सं.] (१) **प्रति दिन।** (२) **सदा।**

निथंभ—संज्ञा पुं. [हिं. नि+सं. स्तंभ] **खंभा, स्तंभ।**

निथरना—क्रि. अ. [हिं. नि+थिरना] **थिरकर साफ होना।**

निथार—संज्ञा पुं. [हिं. निथरना] (१) **घुली चीज जो तल पर बैठ जाय।** (२) **घुली चीज के तल पर बैठ जाने से साफ हो जानेवाला जल।**

निथारना—क्रि. स. [हिं. निथरना] **थिराकर साफ करना।**

निदई—वि. [सं. निर्दय] **कठोर, क्रूर।**

निदरना—क्रि. स. [सं. निरादर] (१) **अपमान करना।** (२) **त्याग करना।** (२) **तुच्छ ठहराना, बढ़ जाना।**

निदरि—क्रि. स. [हिं. निदरना] (१) **निरादर करके, अपमान करके।** (२) **मात करके, पराजित करके, तुच्छ ठहराकर।** उ.—चरन की छबि देखि डरप्यौ अरुन गगन छपाइ। जानु करभा की सबै छबि निदरि लई छँड़ाइ—१०-२३४। (३) **तिरस्कार करके, त्याग कर।** उ—(क) निदरि चले गोपाल आगे बकासुर कै पास—४२७। (ख) निदरि हमैं अधरनि रस पीवति पढ़ी दूतिका भाइ—६५५६।

निदरिहौं—क्रि. स. [हिं. निदरना] **निरादर करूंगा।** उ.—लोग कुटुंब जग के जे कहियत पेला सबै निदरिहौं—१५१८।

निदरी—क्रि. स. [हिं.] निदरना **तिरस्कार किया, उपेक्षा की, चिंता नहीं की।** उ—सूर स्याम मिलि लोक-बेद की मर्यादा निदरी—पृ० ३३६ (५०)।

निदरे—क्रि. स. [हिं. निदरना] **निरादर या तिरस्कार किया।** उ.—ऐसे ढीठ भए तुम डोलत निदरे ब्रज की नारि—१५०७।

निदरौगे—क्रि. स. [हिं. निदरना] **निरादर करोगे।** उ.—सूर स्याम मोहू निदरौगे देत प्रेम की गारि—१५०७।

निदर्शन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दिखाने या प्रदर्शित करने का कार्य।** (२) **उदाहरण।**

निदर्शना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक अर्थालंकार।**

निदहना—क्रि. स. [सं. निदहन] **जलाना।**

निदाघ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ताप।** (२) **धूप, घाम।** (३) **ग्रीष्मकाल।**

निदान—अव्य. [सं.] **अंत में, आखिर।** उ.—बहुरौ नृप करिकै मध्यान। दीनौ ताकौं छाँड़ि निदान—६-१३।

वि.—**बहुत ही गया-बीता, निकृष्ट।**

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कारण।** (२) **आदि कारण।** (३) **रोग का लक्षण।** (४) **अंत।**

निदेश, निदेस—संज्ञा पुं. [सं. निदेश] (१) **शासन।** (२) **आज्ञा।** (३) **कथन।**

निदेशी—वि. [हिं. निदेश] **आज्ञा देनेवाला।**

निदोष—वि. [सं. निर्दोष] **दोषरहित।**

निद्र—संज्ञा पुं. [सं.] **एक अस्त्र।**

निद्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नींद।**

निद्रायमान—वि. [सं.] **सोता हुआ।**

निद्रालु—वि. [सं.] **सोनेवाला।**

निद्रित—वि. [सं.] **सोया हुआ, सुप्त।**

निधड़क—क्रि. वि. [हिं. नि+धड़क] (१) **बेरोक-टोक।** (२) **बिना संकोच या भय के।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निधन—वि. [हिं. नि+धन] **निर्धन, धनहीन, दरिद्र।** उ.—परम उदार, चतुर चिंतामनि, कोटि कुबेर निधन कौं—१-६।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नाश।** (२) **मरण।**

निधनपति—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रलयकर्त्ता, शिवजी।**

निधनियाँ—वि. स्त्री. [सं. निर्धन] **निर्धन स्त्री, गरीब, कंगाल।** उ.—आरि जनि करौ, बलि-बलि जाउँ हौं निधनियाँ—१०-१४५।

निधनी—वि. स्त्री. [सं. निर्धन] **धनहीन, गरीब, दरिद्र, कंगाल।** । उ.- (क) जननी देखि छबि, बलि जाति। जैसैं निधनी धनहिं पाएँ, हरष दिन अरु राति—१०-७१। (ख) मो निधनी कौ धन रहै, किलकत मनमोहन—१०-७२।

निधरक—क्रि. वि. [हिं. निधड़क] (१) **बेरोक, बिना रुकावट।** (२) **बिना संकोच के, बिना आगा-पीछा सोंचे।** (३) **निश्चित, निशंक।** उ.—(क) निधरक रहौ सूर के स्वामी, जनि मन जानौ फेरि। मन-ममता रुचि सौं रखवारी, पहिलैं लेहु निबेरि--१-५१। (ख) निधरक भए पांडु-सुत डोलत, हुतौ नहीं डर काकौ—१-११३। (ग) अवहिं निबछरौ समय, सुचित ह्वै, हम तौ निधरक कीजै—१-१९१।

निधरके—क्रि. वि. [हिं. निधड़क] **निशंक, निश्चित।** उ.—नै जानत हम सरि को त्रिभुवन ऐसे रहत निधरके री—पृ. ३२२ (११)।

निधान, निधानी—संज्ञा पुं. [सं. निधान] (१) **आधार।** (२) **निधि।** उ.—सखा हँसत मन ही मन कहि कहि ऐसे गुननि निधानी—१५५८।

निधि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **धन, संपत्ति।** (२) **कुबेर की नौ निधियाँ—पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और वर्च्च।** (३) **आधार, घर।** (४) **विष्णु, परमात्मा।** उ.—जाइ समाइ सूर वा निधि मैं, बहुरि जगत नहिं नाचै—१-८१। (५) **नौ की संख्या।**

निधिनाथ, निधिप, निधिपति, निधिपाल, निधीश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] **निधियों के नाथ, कुबेर।**

निनय—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नम्रता।**

निनरा, निनरे—वि. [सं. नि+निकट, प्रा० निनिअड़] **न्यारा, अलग।** उ.—मानहु बिबर गए चलि कारे तजि केंचुल भए निनरे री।

निनाद—संज्ञा पुं. [सं.] **शब्द, आवाज।**

निनादना—क्रि. अ. [सं. निनाद] **शब्द करना।**

निनादित—वि. [सं.] **ध्वनित, शब्दित।**

निनादी—वि. [सं. निनादिन्] **शब्द करनेवाला।**

निनान—संज्ञा पुं. [सं. निदान] (१) **अंत।** (२) **लक्षण।**

क्रि. वि.—**अंत में, आखिर।**

वि.—(१) **बुरा।** (२) **बिलकुल, एकदम।**

निनाना—क्रि. स. [हिं. नवाना] **झुकाना, नवाना।**

निनार, निनारा—वि. [सं. निः+निकट, प्रा. निनिअड़, हिं. निनर] (१) **भिन्न, न्यारा** (२) **हटा हुआ।** (३) **अनोखा।**

निनारी—वि. स्त्री. [हिं. निनारा] (१) **अनोखी, विलक्षण।** उ.—साझै भाग नहीं काहू को हरि की कृपा निनारी—२६३५। (२) **विशेष, विशिष्ट।** उ.—जैसी मोपै स्याम करत हैं तैसी तुम करहु कृपा निनारी—१० उ०-४२।

निनारे—वि. [हिं. निनारा] **अलग रहकर, दूर रहकर।** उ.—वै जलहर हम मीन बापुरी कैसे जिवहिं निनारे—१० उ०-८३।

निनावँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. नि=बुरा+नाँव=नाम] (१) **वह वस्तु जिसका नाम लेना अशुभ समझा जाय।** (२) **चुड़ैल, भुतनी।**

निनौरा—संज्ञा पुं. [हिं. नानी+औरा] **ननिहाल।**

निन्यानबे—वि. [सं. नवनवति, प्रा० नवनवइ] **सौ से एक कम।** उ.—बहुरि नृप जज्ञ निन्यानबे करि, सतम जज्ञ कौं जबहिं आरंभ कीन्हौ—४-११।

मुहा.—निन्यानबे के फेर में पड़ना—**धन बढ़ाने की चिंता या उपाय में लगे रहना।**

निन्हियाना—क्रि. अ. [अनु. नी नीं] **दीनता दिखाना।**

निपंक, निपंग—वि. [सं. नि+पंगु] **अपाहिज, पंगु।**

निपजना—क्रि. अ. [सं. निष्पद्यते, प्रा० निपज्जइ] (१) **उगना, उत्पन्न होना।** (२) **पकना, बढ़ना, पुष्ट होना।** (३) **बनना, तैयार होना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निपजी—क्रि. अ. [हिं. निपजना] **बढ़ी, पुष्ट हुई, परिपक्व हुई।** उ.—भली बुद्धि तेरैं जिय उपजी। ज्यौं ज्यौं दिनी भई त्यौं निपजी—१०-३६१।

संज्ञा स्त्री. [हिं. निपजना] (१) **लाभ।** (२) **उपज।**

निपत्र—वि. [सं. निष्पत्र] **जिसमें पत्ते न हों, ठूँठ।**

निपट—अव्य. [हिं. नि+पट] (१) **निरा, विशुद्ध, केवल, एकमात्र।** (२) **सरासर, नितांत, बहुत अधिक, पूर्ण, बिलकुल।** उ.—(क) सूरदास जो चरन-सरन रह्यो, सो जन निपट नींद भरि सोयौ—१-५४। (ख) करि हरिसौं सनेह मन साँचौ। निपट कपट की छाँड़ि अटपटी, इंद्रिय बस राखहि किन पाँचौ?—१-८३। (ग) नैनन निपट कठिन ब्रत ठानी—३०३७।

निपटना—क्रि. अ. [सं. निवर्त्तन] (१) **छुट्टी पाना।** (२) **समाप्त होना।** (३) **खत्म होना।** (४) **शौचादि से छुट्टी पाना।**

निपटाना—क्रि. स. [हिं. निपटना] (१) **समाप्त करना।** (२) **चुकाना।** (३) **तय करना।**

निपतन—संज्ञा पुं. [सं.] **गिरना, अधःपतन।**

निपतित—वि. [सं.] **गिरा हुआ, पतित।**

निपँगुरे—वि. [हिं. नि+पंगु] **अपाहिज, पंगु।**

निपात—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नाश, विनाश।** उ.—और नैंकु छवै देखें स्यामहिं, ताकौं करौं निपात—३७५। (२) **मृत्यु, क्षय।** उ.—कंस निपात करौगे तुमहीं हम जानी यह बात सही परि-४२६। (३) **पतन, गिराव।** (४) **वह शब्द जो सामान्य व्याकरणिक नियमों के अनुसार न हो।**

निपातन—संज्ञा पुं. [सं.] **गिराने, नाश करने या मार डालने का काम।**

निपातना—क्रि. स. [हिं. निपातन] (१) **गिराना।** (२) **नष्ट करना।** (३) **वध करना।**

निपातहु—क्रि. स. [हिं. निपातना] **वध करो।** उ.—सूरदास प्रभु कंस निपातहु—२५५८।

निपाता—संज्ञा पुं. [सं. निपात] **वध, नाश।** उ.—जैसौ दुख हमको एहि दीन्हो तैसे याको होत निपाता-१४२७।

निपाती—वि. [सं. निपातिन्] (१) **गिराने या चलानेवाला।** (२) **मारने या घात करनेवाला।**

संज्ञा पुं.—**शिव, महादेव।**

वि. [हिं. नि+पाती] **बिना पत्ती का, ठूँठ।**

क्रि. स. [हिं. निपातना] **मारा, वध किया, मार गिराया।** उ.—(क) पय पीवत पूतना निपाती, तृनावर्त इहिं भाँत—५०८। (ख) कपटरूप की त्रिया निपाती, तबहिं रह्यौ अति छौना—६०१। (ग) केसी अघ पूतना निपाती लीला गुननि अगाध—२५८०। (घ) सूपनखा ताड़का निपाती सूरदास यह बानि—३२३८।

निपात्यो—क्रि. स. [हिं. निपातना] **मारा, वध किया।** उ.—वत्सासुर को इहाँ निपात्यो—३४०६।

निपान—संज्ञा पुं. [सं.] **तालाब।**

निपीड़क—वि. [सं.] (१) **पीड़ा देनेवाला।** (२) **मलने-दलनेवाला।** (३) **पेरने-निचोड़नेवाला।**

निपीड़न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पीड़ा देना।** (२) **मलना-दलना।** (३) **पेरना-निचोड़ना।**

निपीड़ना—क्रि. स. [सं. निपीड़न] (१) **मलना-दलना, दबाना।** (२) **पीड़ा या कष्ट देना।**

निपीड़ित—वि. [सं.] (१) **पीड़ित।** (२) **दलित, दला-मला।** (३) **पेरा या निचोड़ा हुआ।**

निपुण—वि. [सं.] **दक्ष, कुशल, चतुर।**

निपुणता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दक्षता, कुशलता।**

निपुणाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. निपुण+आई] **दक्षता।**

निपुत्री—वि. [हिं. नि+पुत्री] **संतानरहित।**

निपुन—वि. [सं. निपुण] **चतुर, कुशल।**

निपुनइ, निपुनई, निपुनता, निपुनाई—संज्ञा स्त्री. [सं. निपुण] **निपुणता, दक्षता।**

निपूत, निपूता—वि. [सं. निष्पुत्र] **पुत्रहीन।**

निपूती—वि. स्त्री. [हिं. निपूता] **स्त्री जिसके पुत्र न हो, पुत्रहीना स्त्री।**

निपोड़ना, निपोरना—क्रि. स. [सं. निष्पुट, प्रा. निप्पुड+ना (प्रत्य.)] **खोलना, उघारना।**

मुहा.—खीस (दाँत) निपोरना—(१) **व्यर्थ हँसना।** (२) **निर्लज्जता से हँसना।**

निफन—वि. [सं. निष्पन्न, पा. निष्फन्न] **पूरा, संपूर्ण।**

क्रि. वि.—**अच्छी तरह, पूर्ण रूप से।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निफरना—क्रि. अ. [हिं. निफारना] **छिदकर, चुभकर या धँसकर आरपार होना।**

क्रि. अ. [सं. नि+स्फुट] **प्रकट या स्पष्ट होना।**

निफल—वि. [सं. निष्फल, प्रा. निप्फल] **व्यर्थ, निरर्थक।** उ.—राख्यौ सुफल सँवारि, सान दै, कैसैं निफल करौं वा बानहिं—६-६५।

निफाक—संज्ञा पुं. [अ. निफ़ाक़] (१) **विरोध, द्रोह।** (२) **बिगाड़, अनबन।**

निफारना—क्रि. स. [हिं. नि+फाड़ना] **बेध या छेदकर आरपार करना।**

क्रि. स. [सं. नि+स्फुट] **प्रकट या स्पष्ट करना।**

निफालन—संज्ञा पुं. [सं.] **दृष्टि।**

निफोर—वि. [सं. नि+स्फुट] **साफ, प्रकट, स्पष्ट।**

निबंध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बंधन।** (२) **लेख, प्रबंध।** (३) **गीत।** (४) **वह वस्तु जिसे देने को वचनबद्ध हो।**

निबंधन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बंधन।** (२) **कर्त्तव्य।** (३) **कारण।** (४) **व्यवस्था, नियम।** (५) **गाँठ।** (६) **वीणा या सितार की खूँटी।**

निबंधनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बंधन।** (२) **बेड़ी।**

निबकौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नीम, नीम+कौड़ी] **नीम का फल या बीज, निबौली, निबौरी।**

निबटना—क्रि. अ. [सं. निवर्त्तन, प्रा. निवट्टना] (१) **छुट्टी पाना, निवृत्त होना।** (२) **पूरा या समाप्त होना।** (३) **तै या निर्णय होना।** (४) **चुकना, अदा होना।** (५) **शौच से निवृत्त होना।**

निबटाना—क्रि. स. [हिं. निबटना] (१) **छुट्टी दिलाना, निवृत्त कराना।** (२) **पूरा या समाप्त करना।** (३) **तै या निर्णय करना।** (४) **खतम करना।** (५) **चुकाना, अदा करना!**

निबटाव, निबटेरा—संज्ञा पुं. [हिं. निबहना] (१) **निबटने का भाव या क्रिया।** (२) **निर्णय, फैसला।**

निबड़ना—क्रि. अ. [हिं. निबटना] **समाप्त या खतम होना।**

निबद्ध—वि. [सं.] (१) **बंधा हुआ।** (२) **रुका हुआ।** (३) **गुथा हुआ।** (४) **जड़ा हुआ।**

संज्ञा पुं.—**गीत जिसमें गति समय, ताल, गमक आदि का पूरा ध्यान रखा जाय।**

निबर—वि. [सं. निर्बल] **बल या शक्तिहीन।**

निबरना—क्रि. अ. [सं. निवृत्त, प्रा. निबिड्ड] (१) **बंधी-टँकी चीज का छूटकर अलग होना।** (२) **मुक्ति या उद्धार पाना।** (३) **छुट्टी या अवकाश पाना।** (४) **(काम) पूरा या समाप्त होना।** (५) **फैसला या निर्णय होना।** (६) **उलझन या अड़चन दूर होना।** (७) **दूर होना, रह न जाना।**

निबरी—क्रि. अ. [हिं. निबरना] (१) **(काम) पूरा हो जायगा, निवृत्ति मिल जायगी**—उ.—सूरदास बिनती कह बिनवै, दोषनि देह भरी। अपनौ बिरद सम्हारहुगे तौ यामैं सब निबरी—१-१३०। (२) **खतम हो जाना, रह न जाना।** उ.—अब नीकै कै समुझि परी। जिन लगि हती बहुत उर आसा सोऊ बात निबरी। (३) **मुक्त हो गयी।**

निबेरैं—क्रि. अ. [हिं. निबरना] **मिली-जुली वस्तुओं को अलग करने से।** उ.—नैना भए पराए चेरे।······। त्यौं मिलि गए दूध पानी ज्यौं निबरत नहीं निबेरैं—२३६५।

निबेरैंगे—क्रि. अ. [हिं. निबरना] **मुक्त होंगे, बचे रहेंगे, पार पायेंगे।** उ.—कबलौं कहौ पूजि निबरैंगे बचिहैं बैर हमारे।

निबल—वि. [सं. निर्बल] **बल या शक्तिहीन।**

निबहत—क्रि. अ. [हिं. निबहना] **निभ सकता है।** उ.—कैसे है निबहत अबलनि पै कठिन जोग को साजु—३२३५।

निबहन—संज्ञा पुं. [हिं. निबहना] **निभने की क्रिया या भाव।**

प्र०—निबहन पैहौं—**छुटकारा मिल सकेगा, बचा जा सकेगा।** उ.—स्याम गए देखै जनि कोई। सखियनि सौं निबहन किमि पैहौं इन आगे राखौं रस गोई। निबहन पैहौं—**छुटकारा पा सकोगे, बच सकोगे।** उ.—मेरे हठ क्यों निबहन पैहौ। अब तौ रोकि सबनि कौ राख्यौ कैसे कै तुम जैहौ।

निबहना—क्रि. अ. [हिं. निबाहना] (१) **मुक्ति या पार पाना, बच निकलना।** (२) **निर्वाह, पालन या रक्षा होना।** (३) **(काम) पूरा होना या निभना।** (४) **(बात या वचन का) पालन होना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है। इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर छै नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड लगेगा।

१००००.६.५६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रक—नवभारत प्रेस, लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्रजभाषा सूर-कोश

(छठा खंड)

निर्देशक

डॉ० दीनदयालु गुप्त, एम० ए०, एल-एल० बी०, डी० लिट्०,

प्रोफेसर तथा अध्यक्ष हिंदी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

संपादक

डॉ० प्रेमनारायण टंडन, पी-एच० डी०

प्राध्यापक, हिंदी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

प्रकाशक

लखनऊ विश्वविद्यालय

छठे खंड की शब्द-संख्या—६२७४

छहों खंडों की शब्द-संख्या—३३८७५

मूल्य—साढ़े तीन रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या १/१३५ VI
पुस्तक संख्या
आगत पञ्जिका संख्या ३५,५६८

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१,२६८
८-१-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक सं०..............
आगत सं०..............
दिनांक..............
गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५,५६८
८-१-६१

निबही—क्रि. अ. [हिं. निबाहना] (१) **निभी है, बीती है।** उ.—सुमिरन, ध्यान, कथा हरिजू की, यह एकौ न रही। लोभी, लंपट, बिषयिनि सौं हित, यौं तेरी निबही —१-३२४। (२) **निर्वाह किया, पालन किया, रक्षा की।** उ.—रही ठगी चेटक सौ लाग्यौ, परि गई प्रीति सही।......। सूर स्याम पै ग्वालि सयानी सरबस दै निबही—१०-२८१।

निबहैगी—क्रि. अ. [हिं. निबहना] **निर्वाह हो जायगा।** उ.—हम जान्यौ ऐसेहिं निबहैगी उन कछु औरै ठानी - ३३५६।

निबहौं—क्रि. अ. [हिं. निबाहना, निबहना] **पार पाऊँगा, मुक्ति या छुटकारा पाऊँगा।** उ.—माधौ जू, सो अपराधी हौं। जनम पाइ कछु भलौ न कीन्हौ, कहौ सु क्यों निबहौं - १-१५१।

निबहौगे—क्रि. अ. [हिं. निबहना] **पार पाओगे, बचोगे, छूटी पाओगे, छुटकारा मिलेगा।** उ.—लरिकनि कौं तुम सब दिन झुठवत मोसौं कहा कहौगे। मैया मैं माटी नहिं खाई, मुख देखौं, निबहौगे—१०-२५३।

निबह्यौ—क्रि. अ. [हिं. निबाहना] **निर्वाह किया, पूरा किया, पाला।** उ.—सूरदास धनि धनि वह प्रानी, जो हरि कौ व्रत लै निबह्यौ— २-८।

निबारयौ—क्रि. स. [हिं. निवारना] **रोका, दूर किया, हटाया।** उ.—दुर्बासा कौ साप निवारयौ, अंबरीष-पति राखी—१-१०।

निबाह—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाह] (१) **निबाहने की क्रिया या भाव।** (२) **संबंध, क्रम या परंपरा का निर्वाह।** उ.—कीन्हे नेह-निबाह जीव जड़ ते इत उत नहिं चाहत—१-२१०। (३) **(वचन आदि का) पालन या पूर्ति।** (४) **छुटकारे या बचाव का ढंग।**

निबाहक—वि. [सं. निर्वाहक] **निबाह करनेवाला।** उ.—स्याम गरीबनि हूँ के गाहक। दीनानाथ हमारे ठाकुर, साँचे प्रीति-निबाहक—१-१९।

निबाहन—संज्ञा पुं. [हिं. निबाहना] (१) **निबाहने की क्रिया या भाव।** (२) **संबंध या परंपरा का निर्वाह।**

निबाहना—क्रि. स. [सं. निर्वाहन] (१) **किसी बात, क्रम या संबंध को बनाये रखना।** (२) **(बात या वचन) पूरा या पालन करना।** (३) **(कार्य) करते रहना।**

निबाहि—क्रि. स. [हिं. निबाहना] **निभा देना।** उ०—करि हियाव, यह सौंज लादि कै, हरि कैं पुर लै जाहि। घाट-बाट कहुँ अटक होइ नहिं, सब कोउ देहि निबाहि—१-३१०।

निबाहु—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाह] **छुटकारे का ढंग, बचाव या रास्ता।** उ.—कोउ कहति अहि काम पठयौ, डसै जिनि यह काहु। स्याम-रोमावली की छबि, सूर नाहिं निबाहु—६३६।

निबाहे—क्रि. स. [हिं. निबाहना] **व्यतीत किये, निभा दिये।** उ.—तीन्यौ पन मैं ओर निबाहे, इहै स्वाँग कौं काछे—१-१३६।

निबाहो—क्रि. स. [हिं. निबाहना] **निर्वाह करो, संबंध की रक्षा करो।** उ.—निबाहौ बाँह गहे की लाज-१-२५५।

निबाहौं—क्रि. स. [हिं. निबाहना] **निर्वाह करूँ, पालन करूँ।** उ.—यह परतिज्ञा जौ न निबाहौं तौ तनु अपनौ पावक दाहौं।

निबाह्यौ—क्रि. स. [हिं. निबाहना] **निर्वाह किया, पाला, चरितार्थ किया।** उ.—तीनौं पन भरि ओर निबाह्यौ तऊ न आयौ बाज—१-९६।

निबिड़—वि. [सं. निविड़] **घना, घनघोर।** उ.—बहुत निबिड़ तम देखि चक्र धरि धरेउ हाथ समुहायौ—सारा. ८५५।

निबुकना—क्रि. अ. [सं. निर्मुक्त, प्रा. निम्मुक्त] (१) **बंधन से मुक्ति पाना।** (२) **बंधन का ढीला होकर खिसकना।**

निबृत्त—वि. [सं. निवृत्त] **जिसे छुटकारा मिल चुका हो।**

क्रि. प्र.—निवृत्त कियौ—**छुटकारा दिलाया।** उ.—दुखित जानि दोउ सुत कुबेर के नारद-साप निवृत्त कियौ—१-२६।

निबेड़ना, निबेरना—क्रि. स. [सं. निवृत्त, प्रा. निव्विड्ड] (१) **(बंधन आदि से) छुड़ाना।** (२) **मिली-जुली वस्तुओं को अलग करना।** (३) **सुलझाना।** (४) **निर्णय करना।** (५) **दूर करना।** (६) **पूरा करना।**

निबेरहु - क्रि. स. [हिं. निबेरना] **निर्णय करो।** उ.—सूरदास वह न्याउ निबेरहु हम तुम दोऊ साहु—३३६८।

निबेड़ा, निबेरा—संज्ञा पुं. [हिं. निबेड़ना] (१) **मुक्ति,**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुटकारा। (२) **बचाव, उद्धार**। (३) **अलगाव**। (४) **सुलझाव**। (५) **भुगतान, समाप्ति**। (६) **निर्णय**।

निबेरि—क्रि. स. [हिं. निबेरना] **अलग करके, छाँटकर, चुनकर**। उ.—बड़ौ भयौ अब दुहत रहौंगो, अपनी धेनु निबेरि—४००।

निबेरी—क्रि. स. [हिं. निबेरना] **मिली हुई वस्तुओं को अलग करना, छांटना, चुनना**।

प्र. - सकै निबेरी—**छांट या अलग कर सकता है**। उ.—ग्वालिनि घर गए जानि साँझ की अँधेरी। मंदिर मैं गए समाइ, स्यामल तनु लखि न जाइ, देह गेह रूप, कहौ को सकै निबेरी—१०-२७५।

निबेरे—क्रि. स. [सं. निबेरना] **मिली-जुली वस्तुओं को अलग करने या छांटने से**। उ.—नैना भए पराये चेरे।……। तउ मिलि गए दूध पानी ज्यों निबरत नाहिं निबेरे।

निबेरो, निबेरौ—क्रि. स. [हिं. निबेरना] **छांट कर अलग करो, चुन लो, बिलगा लो**। उ.—न्यारौ जूथ हाँकि लै अपनौ न्यारी गाई निबेरौ—१०-२१६।

संज्ञा पुं.—(१) **छुटकारा, मुक्ति, उद्धार, बचाव**। उ.—व्याकुल अति भवजाल बीच परि प्रभु के हाथ निबेरो। (२) **निर्णय, फैसला, निबटेरा**। उ.—जैसे बरत भवन तजि भजिए तैसहि गए फेरि नहिं हेर्यौ। सूर स्याम रस रसे रसीले अब को करै निबेरो!

निबैहै—क्रि. स. [हिं. निबाहना] **निबाह करेगा, छांटेगा, चुनेगा**। उ.—गुननिधान तजि सूर साँवरे को गुनहीन निबैहै—३१०५।

निबौरी, निबौली—संज्ञा स्त्री. [हिं. निबकौरी] **नीम का फल या बीज**। उ.—दाख दाड़िम छाँड़ि कै कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै—३१०५।

निभ—संज्ञा पुं. [सं०] **प्रभा, प्रकाश**।

वि.—**तुल्य, समान**।

निभना—क्रि. अ. [हिं. निबहना] (१) **बच निकलना, छुटकारा पाना**। (२) **निर्वाह होना**। (३) **गुजारा या निर्वाह होना**। (४) **चलना या पूरा होना**। (५) **क्रम, संबंध या परंपरा का पालन होना**।

निभरम—वि. [सं. निर्भ्रम] **भ्रम या शंकारहित**।

क्रि. वि.—**निःशंक, बेधड़क, बेखटके**।

निभरमा—वि. [सं. निर्भ्रम] **जिसकी मर्यादा या लज्जा न रह गयी हो, अविश्वस्त**।

निभरोस—वि. [हिं. नि+भरोसा] **हताश, निराश**।

निभरोसी—वि. [हिं. नि+भरोसा] (१) **हताश, निराश**। (२) **निराश्रित, निराधार**।

निभाउँ—वि. [सं. निः+भाव] **भावहीन, भावनाहीन**। उ.—काकैं द्वार जाइ होउँ ठाढ़ौ, देखत काहि सुहाउँ। असरन-सरन नाम तुम्हरौ, हौं कामी, कुटिल, निभाउँ—१-१२८।

निभागा—वि. [हिं. नि + भाग्य] **अभागा**।

निभाना—क्रि. स. [हिं. निबाहना] (१) **संबंध, परंपरा या क्रम बनाये रखना**। (२) **(काम या प्रयत्न) करते चलना**। (३) **बात या वचन का पालन करना**।

निभाव—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाह] **निर्वाह, निबाह**।

निभूत—वि. [सं.] **बीता हुआ, व्यतीत**।

निभृत—वि. [सं.] (१) **रखा या धरा हुआ**। (२) **अटल, निश्चल**। (३) **छिपा हुआ**। (४) **बंद किया हुआ**। (५) **विनीत, नम्र**। (६) **शांत, धीर**। (७) **निर्जन, एकांत**। (८) **पूर्ण, युक्त**।

निभ्रांत—वि. [सं. निर्भ्रांत] **भ्रमरहित**।

निमंत्रण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बुलावा, आह्वान**। (२) **भोजन का बुलावा, न्योता**।

निमंत्रना—क्रि. स. [सं. निमंत्रण] **न्योता देना**।

निमंत्रित—वि. [सं.] **जिसे बुलाया गया हो**।

निम—संज्ञा पुं. [सं.] **शलाका, शंकु**।

संज्ञा पुं. [सं. निमि] **राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र जिनसे मिथिला का विदेह वंश चला माना गया है। इनका स्थान मनुष्य की पलकों पर माना गया है।** उ.—मैं बिधना सों कहौं कछू नहिं नितप्रति निम को कोसौं—१४०७।

निमकौरी - संज्ञा स्त्री. [हिं. नीम+कौड़ी] **निबौली**।

निमग्न—वि. [सं.] (१) **डूबा हुआ**। (२) **तन्मय**।

निमज्जक—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्री गोताखोर**।

निमज्जन—संज्ञा पुं. [सं.] **गोता लगाकर या डुबकी मार कर किया जानेवाला स्नान, अवगाहन**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निमज्जना—क्रि. अ. [सं. निमज्जन] **गोता लगाना।**
निमज्जित—वि. [सं.] (१) **डूबा हुआ।** (२)**नहाया हुआ।**
निमत्ता—वि. [हिं. नि+मत्त] **जो उन्मत्त न हो।**
निमान—संज्ञा पुं. [सं. निम्न] (१) **गड्ढा।** (२) **जलाशय।**
निमाना—वि. [सं. निम्न] (१) **ढलुवाँ, ढाल।** (२) **सीधा-सादा, सरल, विनीत।** (३) **दब्ब।**
निमि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दत्तात्रेय के पुत्र, एक ऋषि।** (२) **राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र जिनसे मिथिला का राजवंश चला माना गया है। इनका स्थान मनुष्य की पलकों पर कहा जाता है।** उ.—पलक वोट निमि पर अनखाती यह दुख कहा समाइ—३४४४। (३) **आँख का झपकना, निमेष।**
निमित—संज्ञा पुं. [सं. निमित्त] **के लिए, हेतु, कारण।** उ.—अस्व-निमित उत्तर दिसि कैं पथ गमन धनंजय कीन्हौं—१-२६।
निमित्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हेतु, लिए, वास्ते, कारण।** उ.—(क) मेरौ बचन मानि तुम लेहु। सिव-निमित्त आहुति जनि देहु—४-५। (ख) वाहि निमित्त सकल तीर्थ स्नान करि पाप जो भयो सो सब नसाई—१० उ०-५८।
निमित्तक—वि. [सं.] **जनित, सहेतुक।**
निमिराज—संज्ञा पुं. [सं.] **निमिवंशी राजा जनक।**
निमिष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आँख मिचना या झपकना, निमेष।** (२) **क्षण भर का समय, पलक मारने भर का समय।** उ.—(क) सूरदास प्रभु आपु बाहुबल कियौ निमिष मैं कीर—६-१५८। (ख) सूर हरि की निरखि सोभा, निमिख तजत न मात—१०-१००।
निमिषहूँ—संज्ञा पुं. [सं. निमिष+हूँ (प्रत्य.)] **पल भर भी, क्षण मात्र को भी।** उ.—बिमुख भए अकृपा न निमिषहूँ, फिर चितयौं तौ तैंसैं—१-८।
निमिषित—वि. [सं.] **मिचा या मुँदा हुआ।**
निमिषौ—संज्ञा पुं. [सं. निमिष] **पल भर को भी।** उ.—स्वाद पर्यो निमिषौ नाहिं त्यागत ताही माँझ समाने—पृ० ३२८ (७२)।
निमीलन—संज्ञा पुं. [सं.] **पलक मारना, निमेष।**
निमीलिका—संज्ञा स्त्री. [सं०] **आँख की झपक।**
निमीलित—वि. [सं.] (१) **ढका हुआ।** (२) **मृत।**

निमुहाँ—वि. [हिं. नि+मुँह] **कम बोलनेवाला।**
निमेक, निमेख, निमेष—संज्ञा पुं. [सं. निमेष] (१) **पलक का गिरना, आँख का झपकना।** उ.—(क) सूर प्रभु की निरखि सोभा तजे नैन निमेष—६३५। (ख) सूर निरखि नारायन इकटक भूले नैन निमेक—पृ० ३४७ (५१)। (ग) मनहुँ तुम्हारे दरसन कारन भूले नैन निमेष—२५६१। (२) **पलक झपकने भर का समय।**
निमेषक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पलक।** (२) **जुगनूँ।**
निमेषण—संज्ञा पुं. [सं.] **पलक गिरना, आँख मुँदना।**
निमेषै—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पलक झपकना भी, पलक गिरना तक।** उ.—अब इहिं बिरह अगर जो करी हम बिसरी नैन निमेषै—३१६०।
निमोना—संज्ञा पुं. [सं. नवान्न] **चने या मटर के पिसे हुए हरे दानों को हल्दी-मसाले के साथ घी में भूनकर बनाया हुआ रसदार व्यंजन।** उ.—बहुत मिरच दैं किए निमोना। बेसन के दस-बीसक दोना—१०-३६६।
निमौनी—संज्ञा स्त्री. [सं. नवान्न] **वह दिन जब पहली बार ईख काटी जाती है।**
निम्न—वि. [सं.] (१) **नीचा।** (२) **तुच्छ।**
निम्नग—वि. [सं.] **नीचे जाने या बहनेवाला।**
निम्नगा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नदी।**
वि.—**नीचे की ओर जाने या बहनेवाली।**
निम्लोचनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वरुण की नगरी का नाम।**
निम्नोक्त—वि. [सं.] **नीचे कहा हुआ।**
नियंतव्य—वि. [सं.] **नियंत्रित होने योग्य।**
नियंता—संज्ञा पुं. [सं. नियंतृ] (१)**नियामक, व्यवस्थापक।** (२) **कार्य-विधायक।** (३) **नियमानुसार चलानेवाला।** (४) **ईश्वर, परमात्मा।**
नियंत्रण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नियमित या व्यवस्थित करना।** (२) **देख-रेख में कार्य चलाना।**
नियंत्रित—वि. [सं.] (१) **जिस पर नियंत्रण हो।** (२) **जो नियमानुकूल हो, व्यवस्थित।**
नियत—वि. [सं.] (१) **नियमबद्ध।** (२) **स्थिर, निश्चित।** (३) **स्थापित, नियोजित।**
संज्ञा स्त्री. [अ. नीयत] **भाव, उद्देश्य इच्छा।**
नियतात्मा—वि. [सं. नियतात्मन्] **संयमी, जितेंद्रिय।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियताप्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नाटक में सबको छोड़कर केवल एक ही उपाय से फल प्राप्ति का निश्चय।**

नियति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **निश्चित या बद्ध होने का भाव।** (२) **ठहराव, स्थिरता।** (३) **भाग्य, अदृष्ट।** (४) **अवश्य होनेवाली बात।**

नियतिवाद—संज्ञा पुं. [सं.] **एक सिद्धांत जिसके अनुसार विश्वास किया जाता है कि जो कुछ संसार में घटित होता है, वह पूर्व निश्चित और अटल है।**

नियम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रतिबंध, नियत्रण।** (२) **दबाव, शासन।** (३) **बँधा हुआ क्रम या विधान, परंपरा।** (४) **निश्चित रीति या व्यवस्था।** (५) **शर्त, प्रतिबंध।** (६) **एक अर्थालंकार।** (७) **योग के आठ नियमों में एक-शौच, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान—इनका निर्वाह या पालन 'नियम' कहा जाता है।** उ.—अनुसूया के गर्भ प्रगट ह्वै कियौ योग आराधि। यम अरु नियम प्रान प्रत्याहार धारन ध्यान समाधि—सारा० ६०।

नियमतः—क्रि. वि. [सं.] **नियम के अनुसार।**

नियमन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **क्रम, विधान या व्यवस्था बाँधना।** (२) **शासन, नियंत्रण।**

नियमबद्ध—वि. [सं.] **नियमों से बँधा हुआ।**

नियमित—वि. [सं.] (१) **क्रम, विधान या नियम से बद्ध।** (२) **नियम के अनुसार।**

नियमी—वि. [सं.] **नियम का निर्वाह करनेवाला।**

नियर—अव्य. [सं. निकट, प्रा. निअड] **पास, समीप।**

नियराई—क्रि. अ. [हिं. नियरआना] **निकट पहुँची, पास आई।** उ.—(क) मरन-अवस्था जब नियराई—४-१२। (ख) प्रगट भई तहँ आइ पूतना, प्रेरित काल-अवधि नियराई—**१०-५०।**

नियराना—क्रि. अ. [हिं. नियर+आना (प्रत्य.)] **निकट, पास या समीप आना-पहुँचना।**

नियरानी—क्रि.अ. [हिं.नियराना] **निकट आ गयी, पास आ पहुँची।** उ.—अब तौ जरा निपट नियरानी, कर्यौ न कछुवै कान—**१-५७।**

नियरान्यो—क्रि. अ. [हिं. नियराना] **निकट आ गया।** उ.—मधुबन ते चल्यो तबहिं गोकुल नियरान्यो—**२६४६।**

नियरे, नियरैं—अव्य. [हिं. नियर] **समीप, पास।** उ.—(क) भक्ति पंथ मेरे अति नियरैं जब तब कीरति गाई—१-६३।(ख)भवसागर मैं पैरि न लीन्हौ।....। अतिगंभीर, तीर नहिं नियरैं, किहिं बिधि उतर्यौ जात—१-१७५।

नियाई—वि. [सं. न्यायी] **न्याय करनेवाला।**

नियाज—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) **इच्छा।** (२) **दीनता।** (३) **बड़ों का प्रसाद।** (४) **बड़ों से भेंट।**

नियान—संज्ञा पुं. [सं. निदान] **अंत, परिणाम।**
अव्य.—**अंत में, आखिर।**

नियाम—संज्ञा पुं. [सं.] **नियम।**

नियामक—संज्ञा पुं. [सं.](१)**नियम निश्चित करनेवाला।** (२) **विधान या व्यवस्था करनेवाला।**

नियामत—संज्ञा स्त्री. [अ. नेअमत] (१) **अलभ्य या दुर्लभ वस्तु।** (२) **उत्तम भोजन।** (३) **धन-संपत्ति।**

नियामिका—वि. स्त्री. [सं.] **नियम, विधान या व्यवस्था बाँधनेवाली।**

नियारा—वि. [सं. निर्निकट, प्रा. निन्निअड़] **अलग, भिन्न।**

नियारिया—संज्ञा पुं.[हिं. नियारा] (१) **मिली-जुली वस्तुओं को अलग करनेवाला।** (२) **चतुर व्यक्ति।**

नियारे—[हिं. न्यारा] (१) **जो निकट या समीप न हो, दूर।** उ.—इन अँखियनि आगैं तैं मोहन, एकौ पल जनि होहु नियारे—१०-२६६। (२) **अलग, पृथक्, साथ न रहना।** उ.—पाँच-पचीस साथ अगवानी, सब मिलि काज बिगारे। सुनी तगीरो, बिसरि गई सुधि, मो तजि भए नियारे—**१-१४३।**

नियाव—संज्ञा पुं. [सं. न्याय] **न्याय।**

नियुक्त—वि. [सं.] (१) **किसी काम में लगाया हुआ।** (२) **तत्पर किया हुआ, प्रेरित।** (३) **निश्चित या स्थिर किया हुआ।**

नियुक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नियुक्त होना, तैनाती।**

नियोक्ता—संज्ञा पुं. [सं. नियोक्तृ] (१) **कार्य में लगाने या नियोजित करनेवाला।** (२) **नियोग करनेवाला।**

नियोग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **किसी काम में लगाना।** (२) **एक प्राचीन प्रथा जिसके अनुसार निसंतान स्त्री, देवर या पति के अन्य गोत्रज से संतान उत्पन्न करा लेती थी।** (३) **आज्ञा।** (४) **निश्चय।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियोगी—वि. [सं.] **नियोग करनेवाला।**

नियोजक—वि. [सं.] **काम में लगानेवाला।**

नियोजन—संज्ञा पुं. [सं.] **काम में लगाना।**

नियोजित—वि. [सं.] **नियुक्त किया हुआ।**

निरंकार—संज्ञा पुं. [सं. निराकार] (१) **ब्रह्म।** (२) **आकाश।**

निरंकुश, निरंकुस—वि. [सं. निरंकुश] **जिस पर किसी का अंकुश, प्रतिबंध या दबाव न हो, स्वेच्छाचारी।** उ—माधौ जू, मन सबही बिधि पोच। अति उनमत्त, निरंकुस, मैगल, चिंतारहित, असोच—१-१०२।

निरंग—वि. [सं.] (१) **अंगरहित।** (२) **खाली, निरा, केवल।** (३) **रूपक अलंकार का भेद।**

वि.—[हिं. नि+रंग] (१) **बदरंग।** (२) **फीका।**

निरंजन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **परमात्मा, ईश्वर।** उ.—(क) आदि निरंजन, निराकार, कोउ हुतौ न दूसर—२-३६। (ख) अलख निरंजन ही को लेखो—३४०८। (२) **शिव जी।**

वि.—(१) **बिना अंजन या काजल का।** (२) **दोष या कल्मष रहित।** (२) **माया से निर्लिप्त।**

निरंजनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **साधुओं का एक संप्रदाय।**

संज्ञा स्त्री. [सं. नीरांजनी] **आरती।**

निरंतर—क्रि. वि. [सं.] **लगातार, सदा, बराबर।**

वि.—(१) **अंतररहित।** (२) **निबिड़, घना।** (३) **अविचल, स्थायी।** (४) **प्रत्यक्ष, प्रकट, जो अंतर्धान न हो।** उ.—निकसि खंभ तैं नाथ निरंतर, निज जन राखि लियौ—१-३८।

संज्ञा पुं.— (१) **ब्रह्म, ईश्वर।** (२) **विष्णु।**

निरंध—वि. [सं.] (१) **बिलकुल अंधा।** उ.—करि निरंध निबहै दै माई आँखिनि रथ-पद धूरि—२६६३। (२) **महामूर्ख।** (३) **घनघोर अंधकार।**

वि. [सं. निरंधस्] **बिना अन्न का।**

निरंबु—वि. [सं.] (१) **बिना पानी का, निर्जल।** (२) **बिना पानी या जल पिये।**

निरंभ—वि. [सं. निरंभस्] (१) **निर्जल।** (२) **जिस (व्रत, साधना) में बिना पानी पिये रहा जाय।**

निरंश, निरंस—वि. [सं.] **जिसे अपना प्राप्य भाग न मिला हो।** उ.-सेष सहसफन नाथिज्यों सुरपतिकरे निरंस१११२।

निरअंतर—क्रि. वि. [सं. निरंतर] **लगातार, सदा।** उ.—उरझ्यौ बिबस कर्म निरअंतर, स्रमि सुख-सरनि चह्यौ—१-१६२।

निरउत्तर—वि. [सं. निरुत्तर] **जो उत्तर न दे सके। मौन, चुप।** उ.—निरउत्तर भई ग्वालि बहुरि कह कछू न आयो—१०७२।

निरक्षर— वि. [सं.] (१) **अशिक्षित।** (२) **मूर्ख।**

निरखत—क्रि. स. [हिं. निरखना] **ताकते या देखते हैं।** उ.—(क) जद्यपि बिद्यमान सब निरखत, दुःख सरीर भर्यौ—१-१००। (ख) दुष्ट-सभा पिसाच दुरजोधन, चाहत नगन करी। भीषम, द्रोन, करन, सब निरखत, इनतैं कछु न सरी—१-२५४।

निरखना—क्रि. स. [सं. निरीक्षण] **देखना, ताकना।**

निरखनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. निरखना] **देखने की क्रिया या भाव।** उ.—सुंदर बदन तडाग रूपजल निरखनि पुट भरि पीवत—पृ. ३३५ (४६)।

निरखि—क्रि. स. [हिं. निरखना] **देखकर, देखदेख।** उ.— (क) इतनी सुनत कुंति उठि धाई, बरषत लोचन नीर। ……। त्यागति प्रान निरखि सायक धनु, गति-मति-बिकल-सरीर—१-२६। (ख) सुंदर बदन री सुख सदन स्याम के निरखि नैन-मन थाक्यो—२५४६।

निरखो, निरखौ—क्रि. स. [हिं. निरखना] (१) **देखो, निहारो।** उ.—बिछुरन भेंट देहु ठाढ़े ह्वै निरखो घोष जन्म को खेरो-२५३२। (२) **सोचो, समझो, विचारो।** उ.—यह भावी कछु और काज है, को जो याकौ मेटन-हारौ। याको कहा परेखौ-निरखौ, मधु-छीलर, सरितापति खारौ—६-३६।

निरग—संज्ञा पुं. [सं. नृग] **राजा नृग।**

निरगुन—वि. पुं [सं. निर्गुण] **सत्व, रज और तम-निश्चय रूप से जो इन तीनों गुणों से परे हो।** उ.—बेद-उपनिषद जासु कौं निरगुनहिं बतावै। सोइ सगुन ह्वै नंद की दाँवरी बँधावै—१-४।

निरगुनिया, निरगुनी—वि. [सं. निर्गुण] **जिसमें गुण न हो, जो गुणी न हो, अनाड़ी।**

निरघात—संज्ञा पुं.[सं. निर्घात] (१) **नाश।** (२) **आघात।**

निरचू—वि. [सं. निश्चित] **जिसे छुट्टी मिल गयी हो।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरच्छ—वि. [सं. निरक्षि] **बिना आँख का, अंधा ।**

निरच्छर—वि. [सं. निरक्षर] **अपढ़, मूर्ख ।**

निरजल—वि. [सं. निर्जल] (१) **जिसमें जल न हो । (२) जिस (व्रत आदि) में जल न ग्रहण किया जाय ।**

निरजीव—वि. [सं. निर्जीव] (१) **जीवरहित, मृतक, प्राणहीन ।** उ.—(क) कंस, केसि, चानूर, महाबल करि निरजीव जमुन-जल बोयौ—१-५४ । (ख) पटक्यो सिला खरिक के आगे छिन निरजीव करायो—सारा. ४२६ । (२) **अशक्त, उत्साहहीन ।**

निरझर—संज्ञा पुं. [सं. निर्झर] **झरना ।**

निरझरनी—संज्ञा स्त्री. [सं. निर्झरिणी] **नदी ।**

निरझरी—संज्ञा स्त्री. [सं. निर्झरी] **पहाड़ी नदी ।**

निरत - वि. [सं.] **किसी काम में लीन ।**

संज्ञा पुं. [सं. नृत्य] **नाच, नृत्य ।**

निरतत—क्रि. अ. [सं. नर्त्तन] **नाचता है, नृत्य करते हैं ।** उ.—(क) कोउ निरतत कोउ उघटि तार दै, जुरी व्रज-बालक-सेनु—४४८ । (ख) सूर स्याम काली पर निरतत, आवत हैं व्रज ओक—५६५ ।

निरतना—क्रि. स. [सं. नर्त्तन] **नाचना, नृत्य करना ।**

निरति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बहुत अधिक प्रीति या रति । (२) लीनता, लिप्तता ।**

निरदइ, निरदई—वि. [सं. निर्दय] **दयाहीन, निष्ठुर ।** उ.—(क) उलटे भुज बाँधि तिन्हैं लकुट लिए डाँटै । नैंकहुँ न थकत पानि, निरदई अहीरी—३४८ । (ख) है निरदई, दया कछु नाहीं—३६१ । (ग) को निरदई रहै तेरैं घर—३६८ ।

निरदय, निरदै—वि. [सं. निर्दय] **दयारहित, निष्ठुर ।** उ.—(क) लघु अपराध देखि बहु सोचति, निरदय हृदय बज्र सम तोर—३५७ । (ख) सब निरदै सुर असुर सैल सखि सायर सर्प समेत—२८५६ ।

निरदोष, निरदोषी— वि. [सं. निर्दोष] **जो दोषी न हो ।**

निरधन—वि. [सं. निर्धन] **धनहीन, दरिद्र ।** उ.— सोइ निरधन, सोइ कृपन दीन हैं, जिन मम चरन बिसारे—१-२४२ ।

निरधातु— वि. [सं. निर्धातु] **शक्तिहीन, निर्बल ।**

निरधार—संज्ञा पुं. [सं. निर्धारण] (१) **निश्चय करने का कार्य । (२) निश्चित करने का भाव ।**

वि.—(१) **निश्चित, जो टल न सके ।** स.—सप्तम दिन मरिवौ निरधार—१-२९० । (२) **निश्चय ही ।** उ.—कह्यौ, आइहैं हरि निरधार—१० उ.-३७ ।

निरधारना—क्रि. स. [सं. निर्धारण] (१) **निश्चय या स्थिर करना । (२)मन में समझना या धारण करना ।**

निरनउ—संज्ञा पुं. [सं. निर्णय] **निर्णय ।**

निरनुनासिक—वि. [सं.] **जिस वर्ण में अनुस्वार न हो ।**

निरनै—संज्ञा पुं. [सं निर्णय] **फैसला, निर्णय ।**

निरन्न—वि. [सं.] (१) **अन्नरहित ।** (२) **निराहार ।**

निरन्ना—वि. [सं. निरन्न] **जो अन्न न खाये हो ।**

निरपना—वि. [हिं. निर+अपना] **जो अपना न हो ।**

निरपराध—वि. [सं.] **जो अपराधी न हो ।**

क्रि. वि.—**बिना अपराध के ।**

निरपवाद—वि. [सं.] **जिसकी बुराई न हो ।**

निरपेक्ष—वि. [सं.] (१) **जिसे किसी बात की इच्छा न हो । (२) जो किसी पर निर्भर न हो । (३) तटस्थ ।**

निरपेक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **इच्छा न होना । (२) तटस्थता । (३) अवज्ञा । (४) निराशा ।**

निरपेक्षित—वि. [सं.] (१) **जिसकी इच्छा न की जाय । (२) जिससे संबंध न रखा जाय ।**

निरपेक्षी— वि. [सं. निरपेक्षिन्] (१) **इच्छा न रखने वाला । (२) लगाव या संबंध न रखनेवाला ।**

निरबंस- वि. [सं. निर्वंश] **जिसके आगे वंश चलाने वाला कोई न हो ।** उ.—मरौ वह कंस, निरबंस वाकौ होइ, करयौ यह गंस तोकौं पठायौ—५५१ ।

निरबंसी— वि. [सं. निर्वंश] **जिसके संतान न हो ।**

निरबर्ती—वि. [सं. निवृत्त] **त्यागी, विरागी ।**

निरबल—वि. [सं. निर्बल] **कमजोर, शक्तिहीन ।**

निरबहना—क्रि. अ. [हिं. निभना] **निभ जाना ।**

निरबहिऐ— क्रि. स. [हिं. निबाहना] **निर्वाह कीजिए, निभाइए, बचाइए ।** उ.—ऐसैं कहौं कहाँ लगि गुन-गन लिखत अंत नहिं लहिऐ । कृपासिंधु उनहीं के लेखैं मम लज्जा निरबहिऐ—१-११२ ।

निरबान—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाण] **मोक्ष, मुक्ति ।**

निरबाहत—क्रि. स. [सं. निर्बहना, हिं. निबाहना] **निबाह**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं, निभा लेते हैं, रक्षा कर लेते हैं। उ.—सूरदास हरि बोलि भक्त कौं, निरबाहत गहि बहियाँ—६-१६।

निरबाहु—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाह] **पालन, निर्वाह।** उ.—(क) हौं पुनि मानि कर्म कृत रेखा, करिहौं तात-बचन निरबाहु—६-३४। (ख) सूर सब दिन चोर को कहुँ होत है निरबाहु—१२८०।

निरबिकार—वि. [सं. निर्विकार] **दोष-रहित।**

निरबेद—संज्ञा पुं. [सं. निर्वेद] (१) **दुख।** (२) **वैराग्य।**

निरबेरा—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाह](१)**मुक्ति।** (२) **उद्धार।**

निरभय—वि. [सं. निर्भय] **निर्भय, निडर।** उ.—बिविध आयुध धरे, सुभट सेवत खरे, छत्र की छाहँ निरभय जनायौ—६-१२६।

निरभर—वि. [सं. निर्भर] **अवलंबित, आश्रित।**

निरभिमान—वि. [सं.] **अभिमान रहित।**

निरभिलाष—वि. [सं.] **अभिलाषा रहित।**

निरभैं—वि. [सं. निर्भय] **निर्भय, निडर।** उ.—होउँ बेगि मैं सबल सबनि मैं, सदा रहौं निरभैं री—१७६।

निरभ्र—वि. [सं.] **मेघशून्य, निर्मल।**

निरमना—क्रि. स. [सं. निर्माण] **निर्माण करना।**

निरमर, निरमल—वि. [सं. निर्मल] **स्वच्छ, निर्मल।** उ.—पूँगीफल-जुत जल निरमल धरि, आनी भरि कुंडी जो कनक की—६-२५।

निरमान—संज्ञा पुं. [सं. निर्माण] **रचना, निर्माण।** उ.—नख, अँगुरी, पग, जानु, जंघ, कटि, रचि कीन्हौ निरमान—६४३।

निरमाना—क्रि. स. [सं. निर्माण] **निर्माण करना।**

निरमायल—संज्ञा पुं. [सं. निर्माल्य] **देवार्पित वस्तु जो विसर्जन के पूर्व 'नैवेद्य' और पश्चात 'निर्माल्य' कहलाती है। शिव जी के अतिरिक्त सब देवताओं के निर्माल्य—पुष्प और मिष्ठान्न—ग्रहण किये जाते हैं।** उ.—(क) अब तौ सूर यहै बनि आई, हर कौ निज पद पाऊँ। ये दससीस ईस निरमायल, कैसैं चरन छुवाऊँ—६-१३२। (ख) हरि के चलत भईं हम ऐसी मनहु कुसुम निरमायल दाम—२५३०।

निरमूल—वि. [सं. निर्मूल] **जड़रहित, मूलरहित।**

निरमूलना—क्रि. स. [सं.निर्मूलन] (१) **जड़ से उखाड़ना।** (२) **नष्ट कर देना।**

निरमोल—वि. [सं. उप. निस्, निर+हिं. मोल] (१) **अनमोल, अमूल्य।** (२) **बहुत बढ़िया।** उ.—ताहि कैं हाथ निरमोल नग दीजियै, जोइ नीकैं परखि ताहि जानै—१-२२३।

निरमोलक—वि. [हिं. निरमोल] (१) **अमूल्य, अनमोल।** उ.—तुम्हरैं भजन सबहि सिंगार। जो कोउ प्रीति करै पद-अंबुज, उर मंडत निरमोलक हार—१-४१।

निरमोही—वि. [हिं. निर्मोही] **जिसमें मोह-ममता न हो, निर्दय, कठोर-हृदय।** उ.—ऐसी निरमोही माई महरि जसोदा भई बाँध्यौ है गोपाल लाल बाँहनि पसारि—३६२।

निरर्थ, निरर्थक—वि. [सं.] (१) **अर्थहीन।** (२) **व्यर्थ।** (३) **निष्फल।**

निरलज्ज—वि. [सं. निर्लज्ज] **लज्जाहीन, बेशर्म।** उ.—तृष्ना बहिनि, दीनता सहचरि, अधिक प्रीतिबिस्तारी। अति निसंक, निरलज, अभागिनि, घर घर फिरत न हारी—१-१७३।

निरवद्य—वि. [सं.] **जिसे कोई बुरा न कहे।**

निरवधि—वि. [सं.] (१) **असीम।** (२) **निरंतर।**

निरवयव—वि. [सं.] **अंगरहित, निराकार।**

निरावलंब—वि. [सं.] **आधार या आश्रय-रहित।**

निरवाना—क्रि.स.[हिं. निराना] **निराने को प्रेरित करना।**

निरवार—संज्ञा पुं. [हिं. निरवारना] (१) **मुक्ति, छुटकारा, बचाव।** उ.—यही सोच सब पगि रहे कहूँ नहीं निरवार। (२) **अलग करने, छुड़ाने या सुलझाने का काम।** (३) **निबटारा फैसला।**

निरवारना—संज्ञा पुं. [सं. निवारण] (१) **अलग-अलग करते हैं।** उ.—ए दोउ नीर खीर निरवारत इनहिं बधायौ कंस—३०४६। (२) **उलझी चीज को सुलझाते हैं।** उ.—कबहूँ कान्ह आपने कर सों केस-पास निरवारत। (३) **टालना, रोकना।** (४) **बंधन से मुक्त करना।** (५) **त्यागना।** (६) **निर्णय या फैसला करना।**

निरवारि—क्रि. स. [हिं. निरवारना] **बंधन खोलना, छुड़ाना, मुक्त करना।** उ.—कोउ कहति मैं बाँधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राखौं, को सकैं निरवारि—१०-२७३।

निरवारिहौं—क्रि. स. [हिं. निरवारना] **मुक्त करूंगा। छुड़ाऊँगा।** उ.—कंस कौं मारिहौं, धरनि निरवारिहौं, अमर उद्धारिहौं, उरग-घरनी—५५१।

निरवारैं—क्रि. स. [हिं. निरवारना] **गाँठ आदि छुड़ाते हैं, सुलझाते हैं।** उ.—चोली छोरैं हार उतारैं। कर सौं सिथिल केस निरवारैं—७६६।

निरवारौ—संज्ञा पुं. [हिं. निरवारना] **फैसला, निबटेरा, निर्णय।** उ.—कै हौं पतित रहौं पावन हैं, कै तुम बिरद छुड़ाऊँ। द्वै मैं एक करौं निरवारौ, पतितनि-राव कहाऊँ—१-१७६।

निरवाहु—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाह] **निबाह, पालन।**

निरवाहना—क्रि. अ. [सं. निर्वाह] **निभाना।**

निरशन—संज्ञा पुं. [सं.] **लंघन, उपवास।**

वि.—**जिसने खाया न हो, जिसमें खाया न जाय।**

निरसंक—वि. [सं. निःशंक] **भय, संकोच-रहित।**

निरस—वि. [सं.] (१) **जिसमें रस न हो।** (२) **जिसमें स्वाद न हो।** (३) **सारहीन।** (४) **जिसमें आनंद न हो, शुष्क।** स.—ऊधौ प्रेमरहित जोग निरस काहे को गायो—३०५७। (५) **दया-ममता-स्नेह-रहित।** उ.—संकित नंद निरस बानी सुनि बिलम करत कहा क्यों न चलैं—२६४७। (६) **रूखा-सूखा, जिसमें जल या तरी न हो।** (७) **विरक्त।**

निरसन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूर करना, हटाना।** (२) **रद या अस्वीकार कर देना।** (३) **निराकरण।**

निरस्त—वि. [सं.] (१) **फेंका या छोड़ा हुआ (तीर आदि)।** (१) **त्यागा या अलग किया हुआ।** (३) **रद या अस्वीकार किया हुआ।** (४) **अस्पष्ट रूप से उच्चरित।**

निरस्त्र—वि. [सं.] **अस्त्रहीन, निहत्था।**

निरहार—वि. [सं. निराहार] **आहार रहित, जिसने भोजन न किया हो।** उ.—एकादसी करैं निरहार—६-४।

निरा—वि. [सं. निरालय, पू. हिं. निराल] (१) **खालिस, शुद्ध।** (२) **केवल, एकमात्र।** (३) **निपट, बिलकुल।**

निराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. निराना] **निराने का काम यादाम।**

निराकरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **छाँटकर अलग करना।** (२) **हटाकर दूर करना।** (३) **मिटाना, रद करना।** (४) **दोष का शमन या निवारण** (५) **युक्ति या तर्क का खंडन।**

निराकांक्ष, निराकांक्षी—वि. [सं.] **जिसे आकांक्षा न हो।**

निराकांक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **इच्छा का अभाव।**

निराकार—संज्ञा पुं. [सं.] **ब्रह्म या ईश्वर जो आकार-रहित है।** उ.—आदि निरंजन, निराकार, कोउ हुतौ न दूसर—२-३६।

वि.—**जिसका कोई आकार न हो।**

निराकुल—वि. [सं.] (१) **जो आकुल या घबराया हुआ न हो।** (२) **बहुत आकुल या घबराया हुआ।**

निराकृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आकृति रहित।**

निराक्रंद—वि. [सं.] **जो रक्षा या सहायता न करे।**

निराखर—वि. [सं. निरक्षर] (१) **बिना अक्षर का।** (२) **मौन।** (३) **अपढ़, अशिक्षित।**

निराट—वि. [हिं. निरा] **अकेला, एकमात्र।**

निरातंक—वि. [सं.] (१) **निर्भय।** (२) **नीरोग।**

निरातपा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **रात, रात्रि।**

निरादर—संज्ञा पुं. [सं.] **अपमान, बेइज्जती।** उ.—यहै कहत ब्रज कौन उबारै सुरपति किए निरादर—९४६।

निराधार—वि. [सं.] (१) **आश्रय या आधार-रहित।** (२) **बेजड़-बुनियाद का।** (३) **बिना अन्न-जल के।**

निरानंद—वि. [सं.] **आनंदरहित।**

संज्ञा पुं.—(१) **आनंद का अभाव।** (२) **दुख।**

निराना—क्रि. स. [सं. निराकरण] **खेत से घास-फूस खोदकर दूर करना या निकालना।**

निरापद—वि. [सं.] (१) **हानि या आपदा से सुरक्षित।** (२) **जहाँ हानि या विपत्ति का भय न हो, सुरक्षित।**

निरापन—वि. [हिं. नि + अपना] **पराया, बेगाना।**

निरामय—वि. [सं.] **जिसे कोई रोग न हो, नीरोग।**

निरामिष—वि. [सं.] (१) **जिसमें मांस न मिला हो।** (२) **जो मांस न खाय।**

निरार, निरारा—वि. [हिं. निराला] **निराला।**

निरालंब—वि. [सं.] (१) **बिना किसी आधार के, निराधार।** (२) **बिना ठौर-ठिकाने के, निराश्रय।**

निरालस, निरालस्य—वि. [हिं. नि + आलस्य] **फुर्तीला।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा पुं.—**आलस्य का अभाव।**

ताला—संज्ञा पुं. [सं. निरालय] **एकांत या निर्जन स्थान।**

वि.—(१) **निर्जन। (२) अद्‌भुत। (३) अनोखा।**

वलंब—वि. [सं.] **बिना आश्रय या आधार का।**

नाशा—वि. [हिं. नि+आशा] **जिसे आशा न हो।**

राशा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आशा का अभाव।**

राशी—वि. [सं. निराशा] (१) **जिसे आशा न हो। (२) विरह, उदासीन।**

राश्रय—वि. [सं.] (१) **आश्रय या आधार-रहित। (२) जिसे ठौर-ठिकाना न हो, अशरण।**

रास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **खंडन। (२) दूर करना।**

वि. [हिं. निराश] **निराश।** उ.—(क) ताकत नहीं तरनिजा के तट तरुवर महा निरास—सा. २६। तिपीपी पल माँझ कीनो निपट जीव निरास—सा. ३८। (ग) सात दिवस जल बरषि सिराने ताते भए निरास—६७४।

रासन—वि. [सं.] **आसनरहित।**

संज्ञा पुं.-(१) **दूर करना, निराकरण। (२) खंडन।**

रासा—संज्ञा स्त्री. [सं. निराशा] **नाउम्मेदी, निराशा।**

रासी—वि. [सं. निराशा] (१) **हताश, नाउम्मेद। (२) उदासीन, विरक्त।** उ.—आप काज कौन हमको तजि तब ते भए निरासी—पृ. ३२५ (४२)। (३) **जहाँ या जिसमें चित्त को आनंद न मिले, वेरौनक।** उ.—सूर स्याम बिनु यह बन सूने ससि बिनु रैनि निरासी—३४२२।

राहार—वि. [सं.] (१) **जो बिना भोजन किये हो। (२) जिस (व्रत आदि) में भोजन किया ही न जाय।**

रिच्छ—वि. [सं.] **जिसे कोई इच्छा न हो।**

रिच्छना—क्रि. स. [सं. निरीक्षण] **देखना।**

री—वि. स्त्री. [हिं. निरा] (१) **विशुद्ध। (२) केवल।**

रीक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] **देखरेख करनेवाला।**

रीक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देखरेख, निगरानी। (२) देखने की मुद्रा या रीति, चितवन।**

रीक्षित—वि. [सं.] **निरीक्षण किया हुआ।**

रीश—वि. [सं.] (१) **अनाथ। (२) नास्तिक।**

रीश्वरवाद—संज्ञा पुं. [सं.] **वह सिद्धांत जिसमें ईश्वर का अस्तित्व न माना जाय।**

निरीश्वरवादी—संज्ञा पुं. [सं.] **ईश्वर का अस्तित्व न माननेवाला, नास्तिक।**

निरीह—वि. [सं.] (१) **जो इच्छा या चेष्टा न करे, (२) विरल। (३) तटस्थ। (४) शांतिप्रिय।**

निरुआर—संज्ञा पुं. [हिं. निरुवार] **निर्णय, फैसला।** उ.—साँच-झूठ होइहै निरुवार—१० उ०-४४।

निरुआरना—क्रि. स. [हिं. निरुवारना] (१) **निर्णय करना। (२) सुलझाना, (३) मुक्त करना, छुड़ाना।**

निरुक्त—वि. [सं.] (१) **व्याख्या किया हुआ। (२) नियुक्त, स्थापित, प्रतिष्ठित।**

संज्ञा पुं.—**छह वेदांगों में चौथा अंग।**

संज्ञा स्त्री.—[सं. निरुक्ति] **एक काव्यालंकार।** उ.—यह निरुक्त की अवध बाम तू भइ 'सूर' हत सखी नवीन—सा. ६६।

निरुक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **शब्द की व्युत्पत्ति।**

निरुच्छ्वास—वि. [सं.] **सँकरा, संकीर्ण (स्थान)।**

निरुज—वि. [हिं. नीरुज] **नीरोग।**

निरुत्तर—वि. [सं.] (१) **जिसका कुछ उत्तर न दिया जा सके, लाजवाब।** (२) **जो उत्तर न दे सके।**

निरुत्साह—वि. [सं.] **जिसमें उत्साह न हो।**

निरुत्सुक—वि. [सं.] **जो उत्सुक न हो।**

निरुद्ध—वि. [सं.] **रुका या बँधा हुआ।**

संज्ञा पुं [सं.] **योग की पाँच मनोवृत्तियों क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध—में एक जिसमें चित्त अपनी प्रकृति में ही स्थिर हो जाता है।**

निरुद्देश्य—वि. [सं.] **उद्देश्यहीन।**

क्रि. वि.—**बिना किसी उद्देश्य के।**

निरुद्यम—वि. [सं.] **जिसके पास काम न हो।**

निरुद्यमी—वि. [हिं. निरुद्यम] **जो काम न करता हो।**

निरुद्योग—वि. [सं.] **जिसके पास उद्योग न हो।**

निरुद्योगी—वि. [हिं. निरुद्योग] **जो उद्योग न करे।**

निरुपम—वि. [सं.] **अनुपम, बेजोड़।**

निरुपयोगी—वि. [सं.] **जो उपयोग में न आ सके।**

निरुपाधि—वि. [सं.] (१) **बाधारहित। (२) मायारहित।**

संज्ञा पुं—**ब्रह्म, ईश्वर।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरुपाय—वि. [सं.] (१) **जिसका कोई उपाय न हो।** (२) **जो उपाय कर ही न सके।**

निरुवरना—क्रि. अ. [सं. निवारण] **बाधा दूर होना।**

निरुवार—संज्ञा पुं. [सं. निवारण] (१) **छुड़ाना या मुक्त करना।** (२) **बचाव, छुटकारा।** (३) **बाधा या झंझट दूर करना।** (४) **निबटाना।** (५) **निर्णय।**

निरुवारत—क्रि. स. [हिं. निरुवारना] **सुलझाकर अलग करना या हटाना।** उ. दीरघ लता अपने कर निरुवारत—२०६८।

निरुवारना—क्रि. स. [हिं. निरुवार] (१) **बंधन आदि से मुक्त करना।** (२) **फँसी या उलझी वस्तुओं का सुलझाना।** (३) **निबटाना, निर्णय करना।**

निरुवारति—क्रि. स. [हिं. निरुवारना] **सुलझाती है, (फँसी या उलझी लटों को) अलग करती है।** उ.—जसुमति राधा कुंवर सँवारति। बड़े बार सीमंत सीस के, प्रेम सहित निरुवारति —७०४।

निरूढ़—वि. [सं.] (१) **उत्पन्न।** (२) **प्रसिद्ध, विख्यात।** (३) **कुँआरा, अविवाहित।**

निरूढ़ा—वि. [सं] **अविवाहिता, कुँआरी।**

निरूढ़ि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **ख्याति, प्रसिद्ध, कीर्ति।**

निरूप—वि. [हिं. नि+रूप] (१) **रूप।** उ.—मोहन माँग्यो अपनो रूप। यहि व्रज बसत अँचै तुम बैठी ता बिन उहाँ निरूप—३१८२। (२) **कुरूप।**

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वायु।** (२) **आकाश।**

निरूपक—वि. [सं.] **विषय की विवेचना करनेवाला।**

निरूपण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आकाश।** (२) **विवेचन।**

निरूपना—क्रि. अ. [सं. निरूपण] **निश्चित करना।**

निरूपम—वि. [सं. निरुपम] **अनुपम, बेजोड़।**

निरूपि—क्रि. अ. [हिं. निरूपना] **निर्णय करके, ठहराकर, विचार करके, निश्चित करके।** उ.—गर्ग निरूपि कह्यौ सब लच्छन, अविगत हैं अविनासी—१०-८७।

निरूपित—वि. [सं.] **जिसकी विवेचना हो चुकी हो।**

निरूप्य—वि. [सं.] **जो विवेचन के योग्य हो।**

निरेखना—क्रि. स. [सं. निरीक्षण] **देखना, निरखना।**

निरै—संज्ञा पुं. [सं. निरय] **नरक।** उ.—औरौ सकल सुकृत श्रीपति हित, प्रति-फल-हित सुप्रीति। नाक निरै, सुख-दुख, सूर नहिं, जेहि की भजन प्रतीति—२-१२।

निरैठा—वि. [सं. निर्+ईहा या इष्ट] **मस्त, मनमौजी।**

निरोग, निरोगी—वि. [सं. नीरोग] **रोगरहित।**

निरौठा—वि. [देश०] **कुरूप, बदसूरत।**

निरोध—संज्ञा पुं [सं.] (१) **रोक, रुकावट।** (२) **घेरा।** (३) **नाश।** (४) **चित्त-वृत्ति का निग्रह।**

निरोधक—वि. [सं.] **रोकनेवाला।**

निरोधन—संज्ञा पुं. [सं.] **रोक, बंधन, अवरोध।**

निरोधी—वि. [सं. निरोधन] **रुकावट डालनेवाला।**

निर्ख—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **भाव, दर।**

निर्खन—क्रि. स. [हिं. निरखना] **देखना।** उ.—लरिक निर्खन लग्यो, मटक सब भूलि गयो—२६०६।

निर्गंध—वि. [सं.] **जिसमें गंध न हो।**

निर्गत—वि. [सं.] **निकला या बाहर आया हुआ।**

निर्गम—संज्ञा पुं. [सं.] **निकास।**

निर्गमन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **निकलना।** (२) **द्वार।**

निर्गमना—क्रि. अ. [सं. निर्गमन] **बाहर निकलना।**

निर्गर्व—वि. [सं.] **जिसे गर्व न हो।**

निर्गुण, निर्गुन—संज्ञा पुं. [सं. निर्गुण] **सत्व, रज, तम—इन तीनों गुणों से परे, परमेश्वर।**

वि.—(१) **जो सत्व, रज और तम नामक गुणों से परे हो।** (२) **जिसमें कोई गुण ही न हो।**

निर्गुणता, निर्गुनता—संज्ञा स्त्री. [सं. निर्गुणता] **निर्गुण होने की क्रिया या भाव।**

निर्गुणिया, निर्गुनिया—वि. [सं. निर्गुण+इया (प्रत्य.)] **वह जो निर्गुण ब्रह्म का उपासक हो।**

निर्गुणी, निर्गुनी—वि. [सं. निर्गुण] **गुणरहित।**

निर्गूढ़—वि. [सं.] **जो बहुत ही गूढ़ हो, अगम।**

निर्ग्रंथ—वि. [सं.] (१) **निर्धन।** (२) **असहाय।**

निर्घंट—संज्ञा पुं. [सं.] **शब्द या ग्रंथ-सूची।**

निर्घात—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विनाश।** (२) **आघात।**

निर्घिन—वि. [सं. निर्घृण] **जिसे गंदी वस्तुओं और बुरे कामों से घृणा न हो।** उ.—निर्घिन, नीच, कुलज, दुर्बुद्धी, भौंदू, नित कौ रोऊ—१-१२६।

निर्घृण—वि. [सं.] (१) **जिसे घृणा न हो।** (२) **जिसे लज्जा न हो।** (३) **अयोग्य।** (४) **निर्दय।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्घोष—संज्ञा पुं. [सं.] **शब्द, आवाज ।**
वि.—**जिसमें शब्द या आवाज न हो ।**

निर्छल—वि. [सं. निश्छल] छल-कपट-रहित ।

निर्जन—वि. [सं.] **जहाँ कोई न हो, सूनसान ।**

निर्जर—वि. [सं.] **जो कभी बुड्ढा न हो ।**
संज्ञा पुं.—(१) **देवता ।** (२) **अमृत ।**

निर्जल—वि. [सं.] (१) **जिसमें जल न हो ।** (२) **(व्रत आदि) जिसमें जल भी न ग्रहण किया जाय ।**

निर्जित—वि. [सं.] **पूरी तरह जीता हुआ ।**

निर्जीव—वि. [सं.] (१) **प्राणहीन ।** (२) **उत्साहहीन ।**

निर्ज्वाला—वि. [हिं. नि + ज्वाला] **ज्वालारहित ।**
उ.—मानहु काम अग्नि निर्ज्वाला भई—२३०८ ।

निर्झर—संज्ञा पुं. [सं.] **झरना, सोता ।**

निर्झरिणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नदी ।** (२) **झरना ।**

निर्णय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **उचित-अनुचित का निश्चय ।** (२) **फैसला, निबटारा ।** (३) **सिद्धांत से परिणाम निकालना ।**

निर्णायक—संज्ञा पुं. [सं.] **निर्णय करनेवाला ।**

निर्णीत—वि. [सं.] **जिसका निर्णय हो चुका हो ।**

निर्त—संज्ञा पुं. [सं. नृत्य] **नाच, नृत्य ।**

निर्तक—संज्ञा पुं. [सं. नर्त्तक] **नाचनेवाला, नट ।**

निर्तत—क्रि. अ. [हिं. निर्तना] **नाचता है, नृत्य करता है ।** उ.—चलित कुंडल गंड-मंडल, मनहुँ निर्तत मैन —१-३०७ ।

निर्तना—क्रि. अ. [सं. नृत्य] **नाचना, नृत्य करना ।**

निर्दंभ—वि. [सं.] **जिसे दंभ या गर्व न हो ।**

निर्दई, निर्दय, निर्दयी—वि. [सं. निर्दय] **निष्ठुर ।**

निर्दयता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **निष्ठुरता, कठोरता ।**

निर्दयपन—संज्ञा पुं. [हिं. निर्दय+पन] **कठोरता ।**

निर्दहना—क्रि. स. [सं. दहन] **जला देना ।**

निर्दिष्ट—वि. [सं.] (१) **जो बताया जा चुका हो ।** (२) **जो नियत या ठहराया जा चुका हो ।**

निर्देश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आज्ञा ।** (२) **कथन ।** (३) **वर्णन ।** (४) **निश्चित करना ।**

निर्देशक—संज्ञा पुं. [सं.] **निर्देश करनेवाला ।**

निर्देशन—संज्ञा पुं. [सं.] **निर्देश करने का भाव ।**

निर्दोष, निर्दोषी—वि. [सं. निर्दोष] (१) **जिसमें कोई दोष न हो ।** (२) **जो अपराधी न हो ।**

निर्दोषता—संज्ञा स्त्री. [सं. निर्दोष+ता (प्रत्य.)] **दोष या दोषी न होने का भाव ।**

निर्द्वंद, निर्द्वंद्व—वि. [सं.] (१) **जिसकी रोक-टोक करनेवाला न हो ।** (२) **राग-द्वेष आदि से परे ।**

निर्धंधा—वि. [सं.] **बेरोजगार ।**

निर्धन—वि. [सं.] **धनहीन, कंगाल, दरिद्र ।**

निर्धनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **धनहीनता, दरिद्रता ।**

निर्धर्म—वि. [सं.] **जो धर्म से रहित हो ।**

निर्धार, निर्धारण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **निश्चित या स्थिर करना ।** (२) **निश्चय, निर्णय ।** (३) **गुण कर्म आदि के विचार से छाँटना या अलग करना ।**

निर्धारक—संज्ञा पुं. [सं.] **निश्चय करनेवाला ।**

निर्धारना—क्रि. स. [सं. निर्धारण] **निश्चित करना ।**

निर्धारित—वि. [सं.] **स्थिर या निश्चित किया हुआ ।**

निर्धूत—वि. [सं.] (१) **धोया हुआ ।** (२) **खंडित ।** (३) **त्यक्त ।**

निर्धूम—वि. [हिं. निः+धूम] **आग जिसमें धुआँ न हो ।**
उ.—(क) नई दोहनी पोंछि पखारी धरि निर्धूम खीरनि पर तायो—११७६ । (ख) मनहुँ धुईं निर्धूम अग्नि पर तप बैठे त्रिपुरारी—१६८६ ।

निर्निमेष—क्रि. वि. [सं.] **बिना पलक झपकाये ।**
वि.—**जो पलक न गिराये, जिसमें पलक न गिरे ।**

निर्पक्ष—वि. [सं. निष्पक्ष] **पक्षपात-रहित ।**

निर्फल—वि. [सं. निष्फल] **व्यर्थ, फलरहित ।**

निर्बंध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रुकावट** (२) **हठ, आग्रह ।**

निर्बल—वि. [सं.] **बलहीन, कमजोर ।**

निर्बलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कमजोरी, शक्तिहीनता ।**

निर्बहना—क्रि. अ. [सं. निर्बहन] (१) **पार या दूर होना ।** (२) **क्रम निभना या उसका पालन होना ।**

निर्बाण, निर्बान—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाण] **मुक्ति, मोक्ष ।**
उ.—सोइ तुम उपदेशहू जो लहैं पद निर्बान—२६२४ ।

निर्बाध, निर्बाधित—वि. [सं.] **बाधारहित ।**

निर्बाह—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाह] **निश्चय के अनुसार किसी बात का पालन ।** उ.—भक्ति-भाव की जो तोहिं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाह। तोसौं नहिं ह्वैहै निर्बाह—४-८६।

निर्विष—वि. [सं. निर्विष] **विषरहित**। उ.—अति बल करि करि काली हार्‌यौ। लपटि गयौ सब अंग-अंग प्रति, निर्विष कियौ सकल बल झार्‌यौ—५७४।

निर्वीर—वि. [सं. निर्वीर्य] **वीर्यहीन, निस्तेज**। उ.—जे जे जात, परत ते भूतल, ज्यौं ज्वाला-गत चीर। कौन सहाइ, जानियत नाहीं, होत बीर निर्बीर—१-२६६।

निर्बुद्धि—वि. [सं.] **बुद्धिहीन, मूर्ख**।

निर्वेद—संज्ञा पुं [सं. निर्वेद] **विरक्ति या वैराग्य नामक एक संचारी भाव**। उ.—सूरज प्रभु ते कियो चाहियत हैं निर्वेद बिसेषी—पा. ४६।

निर्बोध—वि. [सं.] **अनजान, अज्ञान**।

निर्भय—वि. [सं.] **जिसे कोई डर न हो, निडर**।

निर्भयता—संज्ञा स्त्री. [सं] **निडरता**।

निर्भर—वि. [सं.] (१) **भरा-पुरा, पूर्ण**। (२) **मिला हुआ**। (३) **अवलंबित, आश्रित**।

निर्भीक—वि. [सं.] **निडर**।

निर्भीकता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **निडरता, निर्भयता**।

निर्भीत—वि. [सं.] **निडर, निर्भय**।

निभ्रम—वि. [सं.] **भ्रम या शंकारहित**।

क्रि. वि.—**बेखटके, निसंकोच**। उ.—स्यामा स्याम सुभग जमुना-जल निभ्रम करत विहार।

निर्भ्रांत—वि. [सं.] **भ्रम या संदेहरहित**।

निर्मना—क्रि. स. [सं. निर्माण] **रचना, बनाना**।

निर्मम—वि. [सं.] **जिसे दया-ममता न हो**।

निर्मल—वि. [सं.] (१) **स्वच्छ**। (२) **शुद्ध, पवित्र**। (३) **निर्दोष, दोषरहित**। उ.—भक्तनि-हाट बैठि अस्थिर ह्वै, हरि नग निर्मल लेहि—१-३१०।

निर्मलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सफाई**। (२) **शुद्धता, पवित्रता**। (३) **निष्कलंकता**।

निर्माण—संज्ञा पुं. [सं.] **रचना, बनावट**।

निर्माता—संज्ञा पुं. [सं.] **रचने या बनानेवाला**।

निर्मान—संज्ञा पुं. [सं. निर्माण] **रचने या बनाने की क्रिया**। उ.—संकर प्रगट भए भृकुटी ते करी सृष्टि निर्मान—सारा. ६५।

निर्माना—क्रि. स. [सं. निर्माण] **रचना, बनाना**।

निर्मायक—संज्ञा पुं. [सं.] **निर्माण करनेवाला**।

निर्माल, निर्माल्य—संज्ञा पुं. [सं. निर्माल्य] **देवता पर चढ़ायी गयी वस्तु देवार्पित वस्तु; अर्पण के पूर्व 'नैवेद्य' और पश्चात् 'निर्माल्य' कही जाती है। शिव के अतिरिक्त सभी देवताओं का 'निर्माल्य' प्रसाद-रूप में ग्रहण किया जाता है**।

निर्मायौ—क्रि. स. [हिं. निर्माना] **रचा, बनाया, उत्पन्न किया**। उ.—ब्रह्म रिषि मरीचि निर्मायौ। रिषि मरीचि कस्यप उपजायौ—३-६।

निर्मित—वि. [सं.] **बनाया या रचा हुआ**।

निर्मुक्त—वि. [सं.] **जो मुक्त हो, स्वच्छंद**।

निर्मुक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **छुटकारा**। (२) **मोक्ष**।

निर्मूल—वि. [सं.] (१) **जिसमें जड़ न हो**। (२) **जिसकी जड़ तक न रह गयी हो**। (३) **जिसका आधार न हो**। (४) **जो सर्वथा नष्ट हो गया हो**।

निर्मूलन—संज्ञा पुं. [सं.] **निर्मूल होना या करना**।

निर्मूल्यो—वि. [सं.] **निर्मूल, नष्ट**। उ.—मरै वह कंस निर्बंस बिधना करै, सूर क्योंहूँ, होइ निर्मूल्यो—२६२५।

निर्मोल, निर्मोलि—वि. [हिं. निः+मोल] **बहुत अधिक मूल्य का**। उ.—नैना लोभहिं लोभ भरे······। जोइ देखैं सोइ सोइ निर्मोलैं कर लै तहीं धरैं।

निर्मोह, निर्मोहिया, निर्मोही—वि. [सं. निर्मोह] **जिसके मन में मोह-ममता न हो**। उ.—हरि निर्मोहिया सों प्रीति कीनी काहे न दुख होइ—२४०६।

निर्मोहिनी—वि. स्त्री. [हिं. निर्मोही+इनी (प्रत्य.)] **जिस (स्त्री) में मोह-ममता न हो, निर्दय**।

निर्यात—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वह जो कहीं से बाहर जाय**। (२) **देश से माल के बाहर जाने की क्रिया**।

निर्यास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वृक्षों से बहनेवाला रस**। (२) **बहना, झरना, क्षरण**।

निर्युक्तिक—वि. [सं.] **युक्तिरहित**।

निर्लज्ज—वि. [सं.] **जिसको लाज-शर्म न हो**।

निर्लज्जता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बेशर्मी, बेहयाई**।

निर्लिप्त—वि. [सं.] (१) **राग-द्वेष से मुक्त**। (२) **जो किसी से संबंध न रखता हो**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्लेप—वि. [सं.] **संबंध न रखनेवाला, निर्लिप्त ।**

निर्लोभि, निर्लोभी—वि [सं.] **लोभ-लालच नकरनेवाला ।**

निर्वंश, निर्वंस—वि. [सं. निर्वंश] **जिसके वंश में कोई न हो ।** उ.—(क) करत है गंग निर्वंश जाहीं—२५५६ । (ख) इनको कपट करै मथुरापति तौ ह्वै है निर्वंस—२५६७ ।

निर्वचन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **निश्चित रूप से बात कहना ।** (२) **शब्द की रचना या व्युत्पत्ति-विवेचन ।**

निर्वसन—वि. [सं.] **नंगा, वस्त्रहीन ।**

निर्वहण, निर्वहन—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाह] **निर्वाह ।**

निर्वहना—क्रि. अ. [सं. निर्वहन] **निभना, पालन होना ।**

निर्वाक वि. [सं.] **जो मौन या चुप हो ।**

निर्वाक्य—वि. [सं.] **जो बोल न सके, गूँगा ।**

निर्वाण, निर्वान—वि. [सं. निर्वाण] (१) **बुझा हुआ ।** (२) **अस्त, डूबा हुआ ।** (३) **धीमा पड़ा हुआ ।** (४) **मरा हुआ ।**

संज्ञा पुं. [सं. निर्वाण] (१) **बुझना ।** (२) **समाप्ति ।** (३) **अस्त, डूबना ।** (४) **शांति,** (५) **मुक्ति, मोक्ष ।** उ.—(क) यह सुनि कै तिहिं उपज्यौ ज्ञान । पायौ पुनि तिहिं पद-निर्वान—४-१२ । (ख) सूर प्रभु परस लहि लह्यौ निर्वान तेहि सुरन आकास जै जैत यह धुनि सुनाई—२६०८ ।

निर्वासक संज्ञा पुं. [सं.] **देशनिकाला देनेवाला ।**

निर्वासन--संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वध ।** (२) **देशनिकाला ।**

निर्वाह--संज्ञा पुं. [सं.] (१) **क्रम या परंपरा का पालन ।** (२) **(वचन आदि का) निर्वाह ।** (३) **समाप्ति ।**

निर्वाहक—वि. [सं.] **निर्वाह करने या निभानेवाला ।**

निर्वाहना--क्रि. अ. [सं. निर्वाह] **निभाना ।**

निर्विकल्प—वि. [सं.] **स्थिर, निश्चित ।**

निर्विकार—वि. [सं.] **जिसमें दोष या परिवर्तन न हो ।**

निर्विघ्न—वि. [सं.] **जिसमें विघ्न न हो ।**

क्रि. वि.—**बिना किसी विघ्न या बाधा के ।**

निर्विचार—वि. [सं.] **विचाररहित ।**

निर्विवाद—वि. [सं.] **बिना विवाद या झगड़े का ।**

निर्विष—वि. [सं.] **जिसमें विष न हो ।**

निर्वीर्य—वि. [सं.] **जिसमें बल और तेज न हो ।**

निर्वेद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अपमान ।** (२) **वैराग्य ।** (३) **दुख, विषाद ।**

निर्वेदी—संज्ञा पुं. [सं. निः + वेद] **वह (ब्रह्म) जो वेदों से भी परे है ।**

निर्व्यलीक—वि. [सं.] **छल-कपट-रहित ।**

निर्व्याज—वि. [सं.] (१) **निष्कपट ।** (२) **बाधारहित ।**

निर्व्याधि—वि. [सं.] **रोग या व्याधि से मुक्त ।**

निर्हरण—संज्ञा पुं. [सं.] **शव जलाना ।**

निर्हेतु—वि. [सं.] **जिसमें हेतु या कारण न हो ।**

निलज—वि. [सं. निर्लज्ज] **लज्जाहीन, बेशर्म ।** उ.—हौं तौ जाति गँवार, पतित हौं, निपट निलज, खिसिआनौ—१-१६६ ।

निलजइ, निलजई—संज्ञा स्त्री. [सं. निर्लज्ज + ई(प्रत्य.)] **निर्लज्जता, बेशर्मी, बेहयाई ।**

निलजता, निलजताई--संज्ञा स्त्री. [सं. निर्लज्जता] **बेशर्मी, बेहयाई, निर्लज्जता ।**

निलजी—वि. स्त्री [हिं. निर्लज्ज] **लाजहीन (स्त्री) ।**

निलज्ज—वि. [सं. निर्लज्ज] **लज्जाहीन, बेशर्म ।** उ.—इनकैं गृह रहि तुम सुख मानत । अति निलज्ज, कछु लाज न आनत—१-२८४ ।

निलय, निलै—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **घर ।** उ.— नील निलै मिलि घंटा बिबिधि दामिन मनो षोडस सृंगार सोभित हरि हीन – सा. उ. ३८ । (२) **स्थान ।**

निवछरा, निवछरो, निवछरौ—वि. [सं. निवृत्त] **(ऐसासमय) जब बहुत काम-काज न हो, फुर्सत का या खाली (समय) ।** उ.—अबहिं निवछरौ समय, सुचित ह्वै, हम तौ निधरक कीजै—१-१६१ ।

निवरा—वि. स्त्री. [सं.] **जिसके वर न हो, कुमारी ।**

निवसथ – संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गांव ।** (२) **सीमा ।**

निवसन—संज्ञा पुं. [सं. निस् + वसन] (१) **घर ।** (२) **वस्त्र ।**

निवसना—क्रि. अ. [हिं. निवास] **रहना, निवास करना ।**

निवह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समूह ।** (२) **एक वायु-रूप ।**

निवाई—वि. [सं. नव] (१) **नया, नवीन ।** (२) **अनोखा, अद्भुत ।** उ.—पुनि लक्ष्मी यों विनय सुनाई । डरौं रूप यह देखि निवाई ।

निवाज—वि. [फ़ा. निवाज़] **अनुग्रह करनेवाला, कृपालु ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उं.— खंभ फारि हरनाकुस मार्यौ, जन प्रहलाद निवाज —१-२५५।

निवाजना—क्रि. स. [हिं. निवाज] **कृपा करना।**

निवाजिश—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **कृपा, दया।**

निवाजैं—वि. [हिं. निवाजना] **अनुग्रह करें, कृपा करके अपना लें।** उ.—जाकौं दीनानाथ निवाजैं। भव-सागर मैं कबहूं न भूकै, अभय निसाने बाजैं—१-३६।

निवाज्यो, निवाज्यौ—क्रि. स. [हिं. निवाजना] **कृपा करके अपना लिया।** उ.—सकट तृना इनहीं संहार्यौ काली इनहिं निवाज्यो—२५८१।

निवाड़—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. नवार] **मोटे सूत की बिनी पट्टी।**

निवान—संज्ञा पुं. [सं. निम्न] **भुकाना, नीचे करना।**

निवार—संज्ञा पुं. [सं. नीवार] **तिन्नी का धान, पसही।**

निवारक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रोकनेवाला।** (२) **मिटाने या नष्ट करनेवाला।**

निवारति—क्रि. स. [हिं. निवारना] **दूर करती है, मिटाती है।** उ.—झझकि उठयौ सोवत हरि अबहीं, (जसुमति) कछु पढ़ि पढ़ि तन-दोष निवारति—१०-२००।

निवारण, निवारन—संज्ञा पुं. [सं. निवारण] (१) **रोकने की क्रिया।** (२) **मिटाने, हटाने या दूर करने की क्रिया।** (३) **छुटकारा, निवृत्ति।** (४) **निवृत्ति या छुटकारा दिलानेवाला।** उ.—तीनि लोक के ताप-निवारन, सूर स्याम सेवक सुखकारी—१-३०। (५) **हटाने, दूर करने या मिटाने के उद्देश्य से।** उ.—अजिर चली पछितातिं छींक कौ दोष निवारन—५८६।

निवारना—क्रि. स. [सं. निवारण] (१) **रोकना, हटाना।** (२) **बचाना।** (३) **निषेध या मना करना।**

निवारहु—क्रि. स. [हिं. निवारना] **रोको, दूर करो, हटाओ, छोड़ो।** उ.—लेहु मातु, सहिदानि मुद्रिका, दई प्रीति करि नाथ। सावधान ह्वै सोक निवारहु, ओड़हु दच्छिन हाथ—६-८३।

निवारि—क्रि. स. [हिं. निवारना] **छोड़कर, रोककर, त्यागकर।** उ.—अपनी रिस निवारि प्रभु, पितु मम अपराधी, सो परम गति पाई—७·४।

निवारी—क्रि. स. [हिं. निवारना] (१) **हटायी, दूर की, नष्ट की।** उ.—(क) लाखा-गृह तैं, सत्रु-सैन तैं, पांडव-बिपति निवारी—१-१७। (ख) सरनागत की ताप निवारी—१-२८। (२) **त्याग दी, छोड़ दी।** उ.—रावन हरन सिया कौ कीन्हो, सुनि नँदनंदन नींद निवारी—१०-१६८।

प्र.—सकै निवारी—**हटा सकता है, रोक सकता है।** उ.—कबहूँ जुवाँ देहिं दुख भारी। तिनकौं सो नहिं सकै निवारी—३-१३।

संज्ञा स्त्री. [सं. नेपाली] **जूही की जाति का एक पौधा या उसका फूल जो सफेद होता है।**

निवारे—क्रि. स. [हिं. निवारना] (१) **दूर किये, नष्ट किये, हटाये।** उ.—सूरदास प्रभु अपने जन के नाना त्रास निवारे—१·१०। (२) **रोक दिये, काट दिये।** उ.—रुक्मिनी भय कियो स्याम धीरज दियो, बान से बान तिनके निवारे—१० उ०-२१।

निवारैं—क्रि. स. [हिं. निवारना] **रोकें, मना करें।** उ.—पुनि जब अष्ट बरष कौ होइ। इत-उत खेल्यौ चाहै सोइ। माता-पिता निवारैं जबहीं। मन मैं दुख पावै सो तबहीं—३-१३।

निवारै—क्रि. स. [हिं. निवारना] **छोड़ती या त्यागती है।** उ.—जब तैं गंग परी हरि-पग ते बहिबो नहीं निवारै—३१८६।

निवारौं—क्रि. स. [हिं. निवारना] **दूर करूँ, हटाऊँ, नाश करूँ।** उ.—करौं तपस्या, पाप निवारौं—१-२६१।

निवारौ—क्रि. स. [हिं. निवारना] (१) **दूर करो।** उ.—प्रभु, मेरे गुन-अवगुन न बिचारौ। कीजै लाज सरन आए की, रवि-सुत त्रास निवारौ—१-१११। (२) **मिटाया, हटाया, दूर किया।** उ.—(क) कियौ न कबहूँ बिलंब कृपानिधि, सादर सोच निवारौ—१-१५७। (ख) अंबरीष कौ साप निवारौ—१-१७२।

निवार्यौ—क्रि. स. [हिं. निवारना] **मिटाया, हटाया, दूर किया।** उ.—भयौ प्रसाद जु अंबरीष कौं, दुरबासा कौ क्रोध निवार्यौ—१-१४। (२) **दूर किया, हटाया।** उ.—सतगुरु कौ उपदेस हृदय धरि, जिन भ्रम सकल निवार्यौ—१-३३६। (३) **बचाया, रक्षा की।** उ.—मेघ बारि तैं हमैं निवार्यौ—३४०६।

निवाला—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **कौर, ग्रास।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवास—संज्ञा पुं. [सं.] **रहने की क्रिया या भाव।** (२) **वास-स्थान, गृह, घर।** उ.—सूरदास के प्रभु बहुरि, गए बैकुंठ-निवास— ३-११। (३) **वस्त्र, कपड़ा।**

निवासित—वि. [सं. निवास] **बसा या बसाया हुआ।**

निवासी—संज्ञा पुं. [सं. निवासिन] **रहने-बसनेवाला।**

निवास्य—वि. [सं.] **रहने-बसने योग्य।**

निविड़—वि. [सं.] (१) **घना।** (२) **गहरा।**

निविष्ट—वि. [सं.] (१) **एकाग्र।** (२) **एकाग्र चित्त-वाला।** (३) **घुसा हुआ।** (४) **स्थित।**

निवृत्त—वि. [सं.] **छूटा हुआ या अलग।** (२) **विरक्त।** (३) **जो छुट्टी पा चुका हो।**

निवृत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **मुक्ति, छुटकारा।** (२) **विरक्ति, 'प्रवृत्ति' का विपरीतार्थक।**

निवेद—संज्ञा पुं. [सं. नैवेद्य] **देवता का भोग।**

निवेदक—संज्ञा पुं. [सं.] **निवेदन करनेवाला, प्रार्थी।**

निवेदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रार्थना।** (२) **समर्पण।**

निवेदना—क्रि. स. [हिं. निवेदन] (१) **बिनती या प्रार्थना करना।** (२) **समर्पण करना, नैवेद्य चढ़ाना।**

निवेदित—वि. [सं.] (१) **निवेदन किया हुआ।** (२) **चढ़ाया या अर्पित किया हुआ।**

निवेरत—क्रि. स. [हिं. निवेरना] **वसूल करना, लेना, संग्रह करना।** उ.—सूर मूर अक्रूर गयौ लै ब्याज निवेरत ऊधौ—३२७८।

निवेरना—क्रि. स. [हिं. निवेड़ना] (१) **लेना, वसूलना।** (२) **निवटाना।** (३) **खत्म करना।** (४) **चुनना, छाँटना।** (५) **हटाना, दूर करना।**

निवेरा—वि. [हिं. निवेड़ना] (१) **चुना या छाँटा हुआ।** (२) **नया, अनोखा।**

निवेरि—क्रि. स. [हिं. निवेड़ना] **खत्म करके।**

प्र.—आए निवेरि— **खत्म कर आये।** उ.—सूरदास सब नातो ब्रज को आए नंद निवेरि—२८७५।

निवेरी—वि. [हिं. निवेरा] (१) **चुनी-छँटी हुई।** उ.—आजु भई कैसी गति तेरी ब्रज में चतुर निवेरी। (२) **नयी, अनोखी।** उ.—मैं कह आजु निवेरी आई? बहुतै आदर करति सबै मिलि पहुने की कीजै पहुनाई।

निवेश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विवाह।** (२) **घर, गृह।**

निशंक—वि. [सं. निःशंक] **निडर, निर्भय।** उ.—परम निशंक समर सरिता तट क्रीड़त यादववीर—१०३.-१०२।

निश, निशा—संज्ञा स्त्री. [सं. निशा] (१) **रात्रि, रात।** (२) **मेष, वृष, मिथुन आदि छह राशियाँ।**

निशांत—संज्ञा पुं. [सं. निशा + अंत] **प्रभात।**

निशाकर—संज्ञा पुं. [सं.] **चंद्रमा।**

निशाचर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **राक्षस।** (२) **उल्लू।** (३) **चोर।**

वि.—**जो रात में चले या विचरण करे।**

निशाचरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **राक्षसी।** (२) **कुलटा।**

निशाचारी—संज्ञा पुं. [सं. निशाचारिन्] (१) **शिव, महादेव।** (२) **राक्षस।** (३ **उल्लू।** (४) **चोर।**

निशान—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **चिह्न।** (२) **किसी पदार्थ से अंकित चिह्न।** (३) **प्राकृतिक चिह्न या दाग।** (४) **विगत घटना या वस्तु सूचक चिह्न।**

यौ.—नाम-निशान— (१) **शेष चिह्न।** (२) **शेषांश।**

(५) **पता-ठिकाना।** (६) **लक्ष्य, निशाना।** उ.—तीर चलावत शिष्य सिखावत धर निशान देखरावत—सारा. १६०। (७) **ध्वजा, पताका, झंडा।**

निशापति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चंद्र।** (२) **कपूर।**

निशाना—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **लक्ष्य।** (२) **वह जिसे लक्ष्य करके कोई व्यंग्य या आक्षेप किया जाय।**

निशानाथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चंद्र।** (२) **कपूर।**

निशानी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **चिह्न, निशान।** उ.—आपुहिं हार तोरि चोली बँद उर नख घात बनाइ निशानी—१०५७। (२) **स्मृति-चिह्न, यादगार।** (३) **निशान, पहचान।**

निशापति—संज्ञा पुं. [सं.] **चंद्रमा।**

निशामुख—संज्ञा पुं. [सं.] **संध्या का समय।**

निशावसान—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रभात, तड़का।**

निशास्ता—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **भीगे गेहूँ का सत।**

निशि - संज्ञा स्त्री. [सं.] **रात, रात्रि।** उ.—निशि दिन रहत सूर के प्रभु बिनु मरिबो तऊ न जात जियो—२५४५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निशिकर—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा ।
निशिचर, निशिचारी—संज्ञा पुं. [सं. निशाचर] (१) राक्षस । (२) उल्लू । (३) चोर ।
निशित—वि. [सं.] सान पर चढ़ाया हुआ, तेज ।
निशिदिन—क्रि. वि. [सं.] (१) रातदिन । (२) सदा ।
निशिनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा ।
निशिपाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चंद्र । (२) एक छंद ।
निशिवासर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रातदिन । (२) सदा ।
निशीथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रात । (२) आधी रात ।
निशीथिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] रात, रात्रि ।
निशुंभ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वध, हिंसा । (२) एक असुर जो कश्यप की स्त्री दनु के गर्भ से जन्मा था । इसने इंद्र तक को जीत लिया था; पर दुर्गा के हाथ से मारा गया था ।
निशुंभन—संज्ञा पुं. [सं.] वध, मारना ।
निशुंभमर्दिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] दुर्गा ।
निश्चय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संदेहरहित धारणा । (२) विश्वास । (३) निर्णय । (४) दृढ़ विचार ।
निश्चयात्मक—वि. [सं.] जो बिलकुल निश्चित हो ।
निश्चल—वि. [सं.] (१) अचल । (२) स्थिर ।
निश्चलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] स्थिरता, दृढ़ता ।
निश्चिंत—वि. [सं.] चिंतारहित, बेफिक्र ।
निश्चिंतई, निश्चिंतता—संज्ञा स्त्री. [सं. निश्चिंतता] निश्चिंत होने का भाव, बेफिक्री ।
निश्चित—वि. [सं.] (१) तै किया हुआ । (२) दृढ़ ।
निश्चेष्ट—वि. [सं.] (१) अचेत । (२) अचल ।
निश्चै—संज्ञा पुं. [सं. निश्चय] (१) निश्चित धारणा । (२) विश्वास, यकीन । (३) निर्णय ।
निश्छल—वि. [सं.] छल-कपट-रहित ।
निश्रेयस—संज्ञा पुं. [सं. निःश्रेयस] (१) मोक्ष । (२) कष्ट अथवा दुख का पूर्ण अभाव । (३) व्यापार ।
निश्वास—संज्ञा पुं. [सं.] नाक या मुँह से बाहर निकलने वाली श्वास या इसके बाहर निकलने का व्यापार ।
निश्शंक—वि. [सं.] (१) निडर । (२) शंकारहित ।
निश्शक्त—वि. [सं.] शक्तिहीन, निर्बल ।
निश्शेष—वि. [सं.] जिसमें कुछ बाकी न हो ।

निषंग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तरकश, तूणीर । (२) खड्ग । (३) एक बाजा जो मुँह से बजाया जाता था ।
निषंगी—वि. [सं. निषंगिनि] तीर या खड्गधारी ।
निषद—संज्ञा पुं. [सं.] निषाद स्वर (संगीत) ।
निषध—संज्ञा पुं. [सं.] संगीत का सातवाँ स्वर ।
निषाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक प्राचीन अनार्य जाति । (२) संगीत का सातवाँ स्वर जिसका संक्षिप्त रूप 'नि' है ।
निषादी—संज्ञा पुं. [सं. निषादिन्] हाथीवान, महावत ।
निषिद्ध—वि. [सं.] (१) जिसके लिए निषेध या मना किया जाय । (२) बुरा, दूषित ।
निषेक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) छिड़कना । (२) डुबाना । (३) अरक उतारना । (४) गर्भ धारण कराना ।
निषेध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मनाही । (२) बाधा ।
निषेधक—संज्ञा पुं. [सं.] मना करनेवाला ।
निषेधात्मक—वि. [सं.] नकारात्मक ।
निष्कंटक—वि. [सं.] जिसमें बाधा-झंझट न हो ।
निष्कंप—वि. [सं.] जिसमें कंप न हो, स्थिर ।
निष्कपट—वि. [सं.] छल-कपट-रहित, सीधा ।
निष्कपटता—संज्ञा स्त्री. [सं.] निश्छलता, सरलता ।
निष्कर्म, निष्कर्मा—वि. [सं. निष्कर्मन्] (१) जो काम में लीन न हो । (२) निकम्मा ।
निष्कर्मण्य—वि. [सं.] अयोग्य, निकम्मा ।
निष्कर्ष—संज्ञा पुं. [सं.] तत्व, सार, सारांश ।
निष्कलंक, निष्कलंकित निष्कलंकी—वि. [सं. निष्कलंक] कलंक या दोषरहित ।
निष्कल—वि. [सं.] (१) कलाहीन । (२) अंगहीन । (३) वीर्यहीन, वृद्ध (४) सारा, समूचा ।
निष्काम—वि. [सं.] (१) कामनारहित, आसक्तिरहित, निस्वार्थ । उ.—यम, नियमासन, प्रानायाम । करि अभ्यास होइ निष्काम—२-२१ । (२) (काम) जो निस्वार्थ भाव से किया जाय ।
निष्कामता—संज्ञा स्त्री. [सं.] निष्काम होने का भाव ।
निष्कामी—वि. [सं. निष्कामिन्] व्यक्ति जो कामना या आसक्तिरहित हो । उ.—निष्कामी वैकुंठ सिधावै । जनम-मरन तिहिं बहुरि न आवै—३-१३ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्काशन, निष्कासन—संज्ञा पुं. [सं.] **बहिष्कार।**

निष्काशित, निष्कासित—वि. [सं.](१) **बाहर निकाला हुआ, बहिष्कृत।** (२) **जिसकी निंदा हो, निंदित।**

निष्क्रमण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बाहर निकालना।** (२) **हिंदू-बच्चे का वह संस्कार जिसमें चार महीने का होने पर उसे घर से बाहर लाकर सूर्य-दर्शन कराया जाता है।**

निष्क्रय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वेतन।** (२) **बिक्री।**

निष्क्रिय—वि. [सं.] **क्रिया या चेष्टा रहित।**

निष्क्रियता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **निष्क्रिय होने का भाव।**

निष्ठ—वि. [सं.] (१) **स्थित।** (२) **तत्पर, संलग्न।**

निष्ठा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **स्थिति, ठहराव।** (२) **चित्त जमना।** (३) **विश्वास।** (४) **श्रद्धा-भाव, पूज्य बुद्धि।** (५) **ज्ञान की अंतिम अवस्था जब ब्रह्म और आत्मा की एकता हो जाती है।**

निष्ठावान—वि. [सं. निष्ठा] **जिसमें श्रद्धा-भाव हो।**

निष्ठुर—वि. [सं.] (१) **कड़ा।** (२) **कठोर, निर्दयी।**

निष्ठुरता—संज्ञा स्त्री. [सं.](१) **कड़ापन।** (२) **निर्दयता।**

निष्णात, निष्णात्—वि. [सं.] **कुशल, दक्ष, चतुर।**

निष्पंद—वि. [सं.] **जिसमें कंप या धड़कन न हो।**

निष्पक्ष—वि. [सं.] **जो किसी के पक्ष में न हो।**

निष्पक्षता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **निष्पक्ष होने का भाव।**

निष्पत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **अंत, समाप्ति।** (२) **हठ योग में नाद की अंतिम अवस्था।** (३) **निश्चय।**

निष्पन्न—वि. [सं.] **जो पूरा या समाप्त हो चुका हो।**

निष्प्रभ—वि. [सं.] **तेज या प्रभा से रहित।**

निष्प्रयोजन—वि. [सं.] (१) **उद्देश्य या स्वार्थरहित।** (२) **व्यर्थ, निरर्थक।** (२) **जिससे कुछ लाभ न हो।**

निष्प्राण—वि. [सं.] (१) **निर्जीव।** (२) **हताश।**

निस्पृही—वि. [सं. निस्पृह] **इच्छा न रखनेवाला।**

निष्फल—वि. [सं.] **व्यर्थ, निरर्थक।**

निसंक- वि. [सं. निःशंक, हिं. निशंक] **निर्भय, निडर।** उ.—(क) अति निसंक, निरलज्ज, अभागिनि घर-घर फिरति बही—१-१७३। (ख) निपट निसंक बिवादनि सम्मुख, सुनि सुनि नंद रिसात—१०-३२६।

निसंस—वि. [सं. नृशंस] **क्रूर, निर्दय।**

निसंसना—क्रि. अ. [सं. निःश्वास] **हाँफना।**

निस—संज्ञा स्त्री. [सं. निशि] **रात।**

निसक—वि. [सं. निःशक्त] **निर्बल, शक्तिहीन।**

निसकर—संज्ञा पुं. [सं. निशाकर] **चंद्रमा।**

निसचय—संज्ञा पुं. [सं.निश्चय] **दृढ़ विचार या धारणा।**

निसत—वि. [सं. निसत्य] **असत्य, मिथ्या।**

निसतरना—क्रि. अ. [सं. निस्तार] **छुट्टी या मुक्ति पाना।**

निसतार—संज्ञा पुं. [सं. निस्तार] **मुक्ति, छुटकारा।**

निसद्योस—क्रि. वि. [सं. निशि + दिवस] **सदा, नित्य।**

निसरौंगी—क्रि. अ. [हिं. निसरना] **निकलोगी, बाहर आओगी।** उ.—गहि गहि बाँह सबनि करि ठाढ़ी कैसेहूँ घर ते निसरौंगी—१२८६।

निसनेह, निसनेहा—वि. [हिं. नि + स्नेह] **निर्मोही।**

निसबत—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **संबंध।** (२) **तुलना।**

निसमानी—वि. [हिं. निस = नहीं + मन] **जिसके होश-हवास ठिकाने न हों, विकल।**

निसरना—क्रि. अ. [सं. निःस्रवण] **बाहर निकलना।**

निसर्ग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **स्वभाव।** (२) **आकृति, रूप।** (३) **प्रकृति।** (४) **सृष्टि।**

निसवादिल—वि. [सं. निःस्वाद] **जिसमें स्वाद न हो।**

निसवासर—क्रि. वि. [सं. निशि + वासर] **सदा, नित्य।**

निसस—वि. [सं. निःश्वास] **अचेत, बेहोश।**

निसहाय—वि. [सं. निस्सहाय] **असहाय।**

निसाँक— वि. [सं. निःशंक] **बेखटके, बेफिक्र।**

निसाँस, निसाँसा—संज्ञा पुं. [सं. निःश्वास] **ठंढी या लंबी साँस।**

वि.—**बेदम, मृतकप्राय, मरण-तुल्य।**

निसा—संज्ञा स्त्री. [सं. निशा] **रात, रात्रि।**

निसाकर—संज्ञा पुं. [सं. निशाकर] **चंद्रमा।**

निसाचर—संज्ञा पुं. [सं. निशाचर] **निशाचर।**

निसाचरि – संज्ञा स्त्री.[सं.निशाचरी] **राक्षसी, निशाचरी।** उ.—रखवारी कौं बहुत निसाचरि, दीन्हीं तुरत पठाइ—९-६१।

निसाथा—वि. [हिं. नि + साथ] **अकेला।**

निसान—संज्ञा पुं. [फा. निशान] **नगाड़ा, धौंसा।** उ.—(क) हरि, हौं सब पतितनि कौ राजा। निंदा पर-मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरि रह्यौ जग, यह निसान नित बाजा—१-१४४। (ख) धुरवा धुंधि बढ़ी दसहूँ दिसि गर्जि निसान बजायो—२८१६।

निसानन—संज्ञा पुं. [सं. निशानन] **संध्या, प्रदोष काल।**

निसाना—संज्ञा पुं. [फ़ा. निशाना] **लक्ष्य, निशाना।**

निसानाथ—संज्ञा पुं. [सं. निशानाथ] **चंद्रमा।**

निसानी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. निशानी] (१) **निशान।** (२) **स्मृतिचिह्न।**

निसाने—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **नगाड़े, धौंसे।** उ.—जाकौ दीनानाथ निवाजैं। भव-सागर मैं कबहुँ न झूकै, अभय निसाने बाजैं—१-३६।

निसापति—संज्ञा पुं. [सं. निशापति] **चंद्रमा।**

निसाफ—संज्ञा पुं. [अ. इंसाफ] **न्याय।**

निसार—संज्ञा पुं. [अ.] **निछावर, उतारा।**

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समूह।** (२) **एक वृक्ष।**

वि. [सं. निस्सार] **तत्व या साररहित।**

निसारना—क्रि. स. [सं. निःसरण] **निकालना।**

निसास—संज्ञा पुं. [सं. निःश्वास] **ठंडी या लंबी साँस।**

वि.—**अचेत, बेदम।** उ.—परनि परेवा प्रेम की, (रे) चित लै चढ़त अकास। तहँ च्ढ़ि तीय जो देखई, (रे) भू पर परत निसास—१-३२५।

निसासी—वि. [सं. निःश्वांस] **बेदम, अचेत।**

निसि—संज्ञा स्त्री. [सं. निशि] **रात।** उ.—राका निसि केते अंतर ससि निमिष चकोर न लावत—१-२१०।

निसिअर—संज्ञा पुं. [सं. निशाकर] **चंद्रमा।**

निसिचर—संज्ञा पुं. [सं. निशाचर] **राक्षस।** उ.—जब देख्यौ दिव्यबान निसिचर कर तान्यौ। छाँड़चौ तब सूर हनू ब्रम्ह-तेज मान्यौ—६-९६।

निसिचरी—संज्ञा स्त्री. [सं. निशाचरी] **राक्षसी, निशाचरी।** उ.—तहँ इक अद्भुत देखि निसिचरी सुरसा-मुख-बिस्तार—९-७४।

निसिचारी—संज्ञा पुं. [सं. निशाचारी] **राक्षस।**

निसिदिन—क्रि. वि. [सं. निशिदिन] (१) **रात दिन, आठो पहर।** (२) **सदा-सर्वदा, नित्य।**

निसिनाथ, निसिनाह—संज्ञा पुं. [सं. निशानाथ] **चंद्र।**

निसि निसि—संज्ञा स्त्री. [सं. निशि-निशि] **आधी रात।**

निसिपति—संज्ञा पुं. [सं. निशिपति] **चंद्रमा।** उ.—बृष है लग्न, उच्च के निसिपति, तनहिं बहुत सुख पैहैं—१०-८६।

निसिपाल—संज्ञा पुं. [सं. निशिपाल] **चंद्रमा।**

निसिमनि—संज्ञा पुं. [निशामणि] **चंद्रमा।**

निसिमुख—संज्ञा पुं. [सं. निशामुख] **संध्याकाल।**

निसियर—संज्ञा पुं. [सं. निशाकर] **चंद्रमा।**

निसिवासर—क्रि. वि. [सं. निशि+वासर] (१) **रात दिन, आठो पहर,** (२) **सदा, सर्वदा, नित्य।**

निसीठा—वि. [सं. निः+हिं. सीठा] **सारहीन, थोथा।**

निसीथ—संज्ञा पुं. [सं. निशीथ] **आधी रात।**

निसुंभ—संज्ञा पुं. [सं. निशुंभ] **'निशुंभ' नामक दैत्य।**

निसु—संज्ञा स्त्री. [सं. निशि] **रात, रात्रि।**

निसुका—वि. [सं. निस्वक्] **निर्धन, गरीब।**

निसूदक—वि. [सं.] **हिंसा करनेवाला।**

निसूदन—संज्ञा पुं. [सं.] **वध या हिंसा करना।**

निसृत वि. [सं. निःसृत] **निकला हुआ।**

निसृष्ट—वि. [सं.] (१) **जो छोड़ दिया गया हो।** (२) **मध्यस्थ।** (३) **भेजा हुआ।** (४) **दिया हुआ।**

निसेनी—संज्ञा स्त्री. [सं. निःश्रेणी] **सीढ़ी, जीना।**

निसेष—वि. [सं. निःशेष] **जिसमें कुछ शेष न हो।**

निसेस—संज्ञा पुं. [सं. निशेश] **चंद्रमा।**

निसैनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. निसेनी] **सीढ़ी, जीना।**

निसोग—वि. [सं. निःशोक] **शोक-चिंता-रहित।**

निसोच—वि. [सं. निःशोच] **चितारहित, बेफिक्र।**

निसोत, निसोता—वि. [सं. निसंयुक्त] (१) **जिसमें किसी चीज का मेल न हो, विशुद्ध।** (२) **असली, सच्चा।**

निसोध, निसोधु—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुध] **खबर, संदेश।**

निंस्चय—संज्ञा पुं. [सं. निश्चय] (१) **दृढ़ विचार, अटल संकल्प।** (२) **पूर्ण विश्वास।** उ.—तब लगि सेवा करि निस्चय सौं, जब लगि हरियर खेत—१-३२२।

प्र.—निस्चय करि—**अवश्य ही।** उ.—ज्यौं-त्यौं कोउ हरि-नाम उच्चरै। निस्चय करि सो तरै पै तरै—६-४।

निस्चै—संज्ञा पुं. [सं. निश्चय] (१) **पक्का विचार, दृढ़ संकल्प।** (२) **पूर्ण विश्वास, अटल विश्वास।** उ.—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जो जन निस्चै करि सेवै, हरि निज बिरद सँभारै। सूरदास प्रभु अपने जन कौं, उर तैं नैंकु न टारै—१-२५७।

निस्तंतु—वि. [सं.] **जिसके कोई संतान न हो।**

निस्तंद्र—वि. [सं.] **जिसमें आलस्य न हो।**

निस्तत्व वि. [सं.] **तत्व या सार-रहित।**

निस्तब्ध—वि. [सं.] (१) **जिसमें गति या हलचल न हो।** (२) **जड़वत्।** (३) **शांत।**

निस्तब्धता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **स्तब्ध होने का भाव।** (२) **सन्नाटा, पूर्ण शांति।**

निस्तरंग—वि. [सं.] **जिसमें तरंग न हो, शांत।**

निस्तर, निस्तरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **छुटकारा, उद्धार, मुक्ति।** (२) **पार जाने या होने की क्रिया या भाव।**

निस्तरतौ—क्रि. अ. [हिं. निस्तरना] **निस्तार पाता, मुक्त होता, छूट जाता।** उ.—मोतैं कछू न उबरी हरि जू, आयौ चढ़त-उतरतौ। अजहूँ सूर पतित-पद तजतौ, जौ औरहु निस्तरतौ—१-२०३।

निस्तरना—क्रि. अ. [सं. निस्तार] **छुटकारा पाना।**

निस्तरिहैं—क्रि. अ. [हिं. निस्तरना] **छुटकारा पायँगे, मुक्त होंगे, छूट जायँगे।** उ.—जो कहौ, कर्मयोग जब करिहैं। तब ये जीव सकल निस्तरिहैं—७-२।

निस्तरिहौं—क्रि. अ. [हिं. निस्तरना] **पार जाऊँगा, मुक्त होऊँगा।** उ.—हौं तौ पतित सात पीढ़िन कौ, पतितै ह्वै निस्तरिहौं—१-१३४।

निस्तल—वि. [सं.] (१) **जिसका तल न हो।** (२) **जिसके तल की थाह न हो, अथाह, गहरा।**

निस्तार—संज्ञा पुं. [सं.] **छुटकारा, बचाव, मोक्ष, उद्धार।** उ.—(क) बिन हरि भजन नाहिं निस्तार—४-१२। (ख) बिना कृपा निस्तार न होइ—७-२।

निस्तारक—संज्ञा पुं. [सं.] **बचाने या छुड़ानेवाला।**

निस्तारण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बचाना, छुड़ाना, उद्धार करना।** (२) **पार करना।** (३) **जीतना।**

निस्तारत क्रि. स. [सं. निस्तर+ना (प्रत्यय)] **छुड़ाते हो, मुक्त करते हो, उद्धारते हो।** उ. -मोसौ कोउ पतित नाहिं अनाथ-हीन-दीन। काहे न निस्तारत प्रभु, गुननि अंगनि-हीन—१-१८२।

निस्तारन—संज्ञा पुं. [सं. निस्तारण] (१) **निस्तार करने का भाव।** (२) **निस्तार करने या मुक्ति दिलाने वाला।**

उ.—बरुन बिषाद नंद-निस्तारन—६८२।

निस्तारना—क्रि. स. [हिं. निस्तरना] **मुक्त करना।** (२) **पार करना।**

निस्तारा—क्रि. स. [हिं. निस्तारना] **उद्धार किया, मुक्त किया।** उ.—अंध कूप ते काढ़ि बहुरि तेहि दरसन दै निस्तारा—१० उ.-८०।

निस्तारो, निस्तारौ—क्रि. स. [हिं. निस्तारना] **उद्धार करो, मुक्ति प्रदान करो, छुड़ाओ।** उ.—कै प्रभु हार मानि कै बैठौ, कै अबहीं निस्तारौ—१-१३६।

निस्तीर्ण—वि. [सं.] **जिसका निस्तार हो चुका हो।**

निस्तेज -वि. [सं. निस्तेजस्] **तेजहीन, मलिन।**

निस्नेह—वि. [सं.] **जिसमें प्रेम न हो।**

निस्पंद—वि. [सं.] **जिसमें कंप या धड़कन न हो।**

निस्पृह—वि. [सं.] **लोभ या इच्छारहित।**

निस्पृहता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कामनारहित होने का भाव।**

निस्पृही—वि. [सं. निस्पृह] **लोभ-लालसारहित।**

निस्स्राव—संज्ञा पुं. [सं.] **वह जो बहकर निकले।**

निस्वन, निस्वान—संज्ञा पुं. [सं.] **शब्द, रव, नाद।**

निस्वास—संज्ञा पुं. [सं. निःश्वास] **नाक या मुँह से बाहर आनेवाली साँस।**

निस्संकोच—वि. [सं.] **लज्जा या संकोचरहित।**

निस्संतान—वि. [सं.] **जिसके संतान न हो।**

निस्संदेह—क्रि. वि. [सं.] **अवश्य, बेशक।**

वि.— **जिसमें शक-संदेह न हो।**

निस्संबल—वि. [सं.] **जिसके ठौर-ठिकाना न हो।**

निस्सरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **निकलने का मार्ग।** (२) **निकलने का भाव या कार्य।**

निस्सहाय—वि. [सं.] **असहाय, निरवलंब।**

निस्सरै—क्रि. अ. [हिं. निसरना] **निकलता है, बाहर आता है।** उ.—जा बन की नृप इच्छा करै। ताही द्वार होइ निस्सरै—४-१२।

निस्सार—वि. [सं.] (१) **गूदा या साररहित।** (२) **तत्व या साररहित।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निस्सीम—वि. [सं.] **बहुत अधिक, असीम।**

निस्सृत—संज्ञा पुं. [सं.] **तलवार का एक हाथ।**

निस्वादु—वि. [सं.] **जिसमें स्वाद न हो।**

निस्वार्थ—वि. [सं.] **जिसमें स्वार्थ का भाव न हो।**

निहंग, निहंगम—संज्ञा पुं. [सं. निःसंग] **साधु।**

वि.—**अकेला, एकाकी रहने-विचरनेवाला।**

निहंग-लाड़ला—वि. [हिं. निहंग + लाड़ला] **जो दुलार के कारण बहुत ढीठ हो गया हो।**

निहंता—वि. [सं. निहंतृ] **मारनेवाला, विनाशक।**

निहकरमा, निहकरमी, निहकर्मा, निहकर्मी—वि. [सं. निष्कर्मा] (१) **निकम्मा।** (२) **जो काम में लिप्त न हो।**

निहकलंक—वि. [सं. निष्कलंक] **निर्दोष, निष्कलंक।** उ.—लै उछंग उपसंग हुतासन, निहकलंक खुराई—९-१६२।

निहकाम—वि. [सं. निष्कामी] (१) **जिसमें कामना न हो।** (२) **जो काम कामना से न किया जाय।**

निहकामी—वि. [सं. निष्कामी] **जिसमें कामना या आसक्ति न हो।** उ.—प्रभु हैं निरलोभी निहकामी—१००५।

निहचय—संज्ञा पुं. [सं. निश्चय] **दृढ़ धारणा।**

निहचल—वि. [सं. निश्चल] **स्थिर, अचल।**

निहचिंत—वि. [सं. निश्चिंत] **निश्चित, चिंतारहित, बेफिक्र।** उ.—जदुपति कह्यौ वैरि हौं आनौ, तुम जेंवहु निहचिंत भए—४३८।

निहचीत—वि. [सं. निश्चिंत] **चिंतारहित, चिंता से मुक्त।** उ.—गोविंद गाढ़े दिन के मीत। गज अरु ब्रज प्रहलाद द्रौपदी, सुमिरत ही निहचीत—१-३१।

निहचै—संज्ञा पुं. [सं. निश्चय] **दृढ़ विश्वास।** उ.—निहचै एक असल पै राखें, टरै न कबहूँ टारै—१-१४२।

निहत—वि. [सं.] (१) **फेंका हुआ।** (२) **हत, नष्ट।**

निहत्था—वि. [हिं. नि + हाथ] (१) **जिसके हाथ में अस्त्र-शस्त्र न हो।** (२) **जिसका हाथ खाली हो।**

निहनना—क्रि. स. [हिं. हनना] **मार डालना।**

निहपाप—वि. [सं. निष्पाप] **जो पापी न हो।**

निहफल—वि. [सं. निष्फल] **व्यर्थ, निरर्थक।**

निहाई—संज्ञा स्त्री. [सं. निघाति] **लोहे का एक औजार जिस पर रखकर कोई धातु कूटी पीटी जाती है।**

निहाउ—संज्ञा पुं. [सं. निघाति] **लोहे का घन।**

निहायत—वि. [अ.] **बहुत अधिक।**

निहार—क्रि. स. [हिं. निहारना] (१) **देखकर, अवलोक कर।** उ.—तबहूँ गयौ न क्रोध-बिकार। महादेव हू फिरे निहार—७-२। (२) **बचाकर, सावधानी से बचकर।** उ.—भरत चलै पथ जीव निहार। चलै नहीं ज्यौं चलैं कहार—५-४।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पाला।** (२) **ओस।** (३) **हिम।**

निहारत—क्रि. स. [हिं. निहारना] **देखती है, ताकती है।** उ.—झूठौ मन, झूठी सब काया, झूठी आरभटी। अरु झूठनि के बदन निहारत मारग फिरत लटी—१-६८।

निहारति—क्रि. स. [हिं. निहारना] **देखती-ताकती है।** उ.—नावसत साजि सिंगार बनी सुंदरि आतुर पंथ निहारति—२५६२।

निहारना—क्रि. स. [सं. निभालन = देखना] **देखना।**

निहारनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. निहारना] **निहारने की क्रिया या भाव, चितवनि।**

निहारि—क्रि. स. [हिं. निहारना] **देखकर, देखदेख, ताककर।** उ.—काकौ बदन निहारि द्रौपदी दीन दुखी संभरिहै?—१-२९।

निहारिका—संज्ञा स्त्री. [सं. नीहारिका] **आकाश में कुहरे-सी फैली हुई प्रकाश-रेखा।**

निहारी—क्रि. स. [हिं. निहारना] **देखा, निहारा, ताका।** उ.—अँधियारी आई तहँ भारी। दनुजसुता तिहिं न निहारी—९-१७४।

निहारे—क्रि. स. [हिं. निहारना] **ध्यानपूर्वक देखा, दृष्टि डाली।** उ.—आइ निकट श्रीनाथ निहारे, परी तिलक पर दीठि—१-२७४।

निहारैं—क्रि. स. [हिं. निहारना] **देखते हैं, ताकते हैं।** उ.—दोऊ ताकी ओर निहारैं—६-४।

निहारै—क्रि. स. [हिं. निहारना] **निहारता है, ताकता है।** उ.—षोड़स जुक्ति, जुवति चित षोडस, षोड़स बरस निहारै—१-६०।

निहारौ—क्रि. स. [हिं. निहारना] **देखो, अवलोको।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—याकौ सुंदर रूप निहारौं—७-७ ।
रयौ—क्रि. स. [हिं. निहारना] (१) **देखा।** उ.—तोरि कोदंड मारि सब जोधा तब बल-भुजा निहारयौ--२५८६ । (२) **देख-समझ सका** । उ.—थनि कै गरल लगाय उरोजन कपट न कोउ निहारयौ ।

ल, निहाला—वि. [फ़ा] **पूर्ण संतुष्ट और प्रसन्न।** उ.—(क) जैसैं रंक तनक धन पाए ताहि महा वह होत निहाल—१३२३ । (ख) जन्म मरन नैं रहि गयौ वह कियौ निहाला—२५७७ ।

ली—संज्ञा स्त्री. [फा.] **गद्दा, तोशक** ।

त—संज्ञा पुं. [सं. निघाति] **लोहे का घन।**

श्चय—संज्ञा पुं. [सं. निश्चय] **दृढ़ धारणा।**

श्चित—वि. [सं. निश्चित] **चितारहित।**

हित—वि. [सं.] **रखा, पड़ा या छिपा हुआ।**

तार्थ—संज्ञा पुं. [सं.] **वाक्य का अर्थ जो महत्वपूर्ण तो हो, पर जल्दी न खुले** ।

ुकना—क्रि. अ. [हिं. नि + झुकना] **झुकना** ।

ुड़ना, निहुरना—क्रि. अ. [हिं. नि+होड़न] **झुकना** ।

ुड़ाना, निहुराना—क्रि. स. [हिं. निहुरना] **झुकाना, नवाना, नीचे या नम्र करना।**

ोर—संज्ञा पुं. [हिं. निहोरा] (१) **अनुग्रह, कृतज्ञता।** (२) **विनती, प्रार्थना** । उ.—(क) प्रभु, मोहिं राखियै इहिं ठौर । केस गहत कलेस पाऊँ, करि दुसासन जोर । करन, भीषम, द्रोन मानत नाहिं कोउ निहोर—१-२५३ । (ख) चितै रघुनाथ बदन की ओर । रघुपति सौं अब नेम हमारौ बिधि सौं करति निहोर—६-२३ । (ग) लाइ उरहिं, बहाइ रिस जिय, तजहु प्रकृति कठोर । कछुक करुना करि जसोदा करतिं निपट निहोर—१०-३६४ । (घ) माखन छेरि देतिं अपनैं कर, कछु कहि बिधि सौं करतिं निहोर—१०-३६८ । (३) **भरोसा, आसरा** ।

क्रि. वि.—(१) **द्वारा, बदौलत।** (२) **वास्ते** ।

ोरना—क्रि. स. [हिं. मनुहार] (१) **विनय या प्रार्थना करना** । (२)**मनौती करना, मनाना** । (३)**कृतज्ञ होना।**

ोरा—संज्ञा पुं. [हिं. मनुहार] (१) **कृतज्ञता, उपकार** । (२) **बिनती, प्रार्थना** । (३) **भरोसा, आसरा** ।

निहोरि—क्रि. स. [हिं. निहोरना] **मनौती मानकर।** उ.—ग्वालिन चली जमुना बहोरि । वाहि सब मिलि कहत आवहु कछू कहति निहोरि ।

निहोरी—क्रि. स. [हिं. निहोरना] **प्रार्थना की, विनय की, खुशामद की** । उ.—मोहिं भयौ माखन पछितावौ रीती देखि कमोरी । जब गहि बाँह कुलाहल कीनी, तब गहि चरन निहोरी—१०-२८६ ।

संज्ञा पुं.—**प्रशंसा, कृतज्ञता-प्रदर्शन** । उ.—दै मैया भौंरा चक डोरी ।......। मैया बिना और को राखै, बार-बार हरि करत निहोरी—१०-६६९ ।

निहोरे—संज्ञा पुं. [हिं. निहोरा] **मनाने या बहलाने के लिए कहे गये वचन या किये गये कार्य।** उ.—बरा कौर मेलत मुख भीतर, मिरिच दसन टकटौरै ।.....। सूर स्याम कौं मधुर कौर दै कीन्हें तात निहोरे—१०-२२४ ।

निहोरो, निहोरौ—संज्ञा पुं. [हिं. निहोरा] **अनुग्रह, कृतज्ञता, एहसान, उपकार।** उ.—(क) गीध, व्याध, गज, गौतम की तिय, उनकौ कौन निहोरौ । गनिका तरी आपनी करनी, नाम भयौ प्रभु तोरौ—१-१३२ । (ख) बिप्र सुदामा कियौ अजाची, प्रीति पुरातन जानि । सूरदास सौं कहा निहोरौ, नैननि हूँ की हानि—१०-१३५ । (ग) कह दाता जो द्रवै न दीनहिं देखि दुखित ततकाल । सूर स्याम कौ कहा निहोरौ चलत बेद की चाल—१-१५६ ।

नींद—संज्ञा स्त्री. [सं निद्रा] **सोने की अवस्था, निद्रा।** उ.—गोबिंद गुन चित बिसारि, कौन नींद सोयौ—१-३३० ।

मुहा.—नींद उचटना—**फिर नींद न आना।** नींद उचाटना—**नींद न आने देना।** नींद उचाट होना—**नींद टूटने पर फिर न आना।** नींद जाना—**नींद न आना।** नींद गई—**नींद आती ही नहीं।** उ.—कहा करौं चलत स्याम के पहिलेहि नींद गई दिन चार—२७६५ । नींद पड़ना—**नींद आना।** नींद भरना—**पूरी नींद सोना।** नींद भर सोना—**जी भरकर सोना।** नींद लेना—**सो जाना।** नींद लीन्हीं—**सोयी।** उ.—जब तें प्रीति स्याम सों कीन्हीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता दिन तें मेरे इन नैननि नैंकहुँ नींद न लीन्हीं। नींद संचारना—**नींद आना**। नींद हराम करना—**सोने न देना**। नींद हराम होना—**सो न सकना**।

नींदड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नींद] **नींद, निद्रा**।

नींदति—क्रि. स. [हिं. निंदना] **निंदा करती है**। उ.—नींदति सैल उदधि पन्नग को श्रीपति कमठ कठोरहिं —२८६२।

नींदना—क्रि. अ. [हिं. नींद] **नींद लेना, सोना**।

क्रि. स.—[हिं. निंदना] **निंदा करना**।

नींदरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नींद] **निंद, नींद्रा**।

नींदौ—संवि. स्त्री. सवि. [हिं. नींद] **नींद भी**। उ.—ता दिन ते नींदौ पुनि नासी चौंकि परति अधिकारे—३०४५।

नींब—संज्ञा पुं. [सं. निंब] **नीम का पेड़**। उ.-(क) नींब लगाइ अंब क्यौं खावैं—१०४२। (ख) ता ऊपर लिखि जोग पठावत खाहु नींब तजि दाख-३३२१।

नींव—संज्ञा स्त्री. [हिं. नीव] (१) **मकान आदि की नीव** (२) **कार्य का प्रारंभिक भाग**।

नीक—वि. [सं. निक्त = स्वच्छ, साफ; फा. नेक] (१) **ठीक, स्वस्थ**। उ.—घायल सबै नीक ह्वै गए —४-५। (२) **भला, सुंदर**।

संज्ञा पुं.—**अच्छापन, उत्तमता**।

नीकन—संज्ञा पुं. **नेत्र**। उ.—(क) सारँग सुत नीकन ते बिछुरत सर्प वेलि रस जाई—सा. १६। (ख) नीकन अधिक दिपत हुत ताते अंतरिच्छ छवि भारी —सा० ५१।

नीका—वि. [हिं. नीक] **अच्छा, भला, उत्तम**।

नीकी—वि. स्त्री. [हिं. नीका] **अच्छी, भली**। उ. —(क) होरी खेलन की बिधि नीकी। (ख) माखन खाइ, निदरि नीकी बिधि यह तेरे सुत की घात—१०-३०६।

नीके—वि. [हिं. नीक] (१) **ठीक, स्वस्थ, सुचित्त**। उ.—लोग सकल नीके जब भए। नृप कन्या दै, गृह कौं गए—६-२। (२) **भले, अच्छे**। उ.—इतने काज किये हरि नीके—२६४३।

क्रि. वि.—**अच्छी तरह, भली भाँति**। उ.—हरि की भक्ति करो सुत नीके जो चाहो सुख पायो।

नीकैं—क्रि. वि. [हिं. नीक] **अच्छी तरह, भली भाँति**। उ.—नीकैं गाइ गुपालहिं मन रे। जा गाए निर्भय पद पाए अपराधी अनगन रे—१-६६।

नीकौ वि. [हिं. नीका] (१) **भला, अच्छा, श्रेष्ठ**। उ.—(क) कोउ न समरथ अघ करिबे कौं, खैंचि कहत हौं लीकौ। मरियत लाज सूर पतननि मैं, मोहूँ तैं को नीकौ—१-१३८। (ख) हम तैं बिदुर कहा है नीकौ—१-२४३। (२) **अनुकूल, उत्तम**। उ.—यक ऐसेहि झकझोरति मोको पायो नीको दाउँ —१६१३।

मुहा.—दोष देन कौं नीकौ—**दोष देने को सदा तैयार, दूसरों के दोष निकालने में तेज**। उ.—महा कठोर, सुन्न हिरदैं कौ, दोष देन कौं नीको—१-१८६।

नीच—वि. [सं.] (१) **जाति, गुण, कर्म आदि में घट कर होना, क्षुद्र तुच्छ**। (२) **निम्न श्रेणी का, बुरा**।

संज्ञा पुं.—**नीच मनुष्य, क्षुद्र व्यक्ति**।

नीचता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नीचपन**। (२) **ओछापन**।

नीचा—वि. [सं. नीच] (१) **ऊँचे का उलटा**। **गहरा**। (२) **जो कम ऊँचा हो**। (३) **बहुत लटकता हुआ**। (४) **झुका हुआ, नत**। (५) **जो जोर का न हो, धीमा**। (६) **जो जाति, पद आदि में घटकर हो**।

मुहा.—नीचा-ऊँचा—(१) **भला-बुरा**। (२) **हानि लाभ**। (३) **सुख-दुख**। नीचा खाना—(१) **अपमानित होना**। (२) **पराजित होना**। (३) **लज्जित होना**। नीचा दिखाना—(१) **अपमानित करना**। (२) **पराजित करना**। (३) **लज्जित करना**। (४) **घमंड चूर करना**। नीचा देखना—(१) **अपमानित होना**। (२) **लज्जित होना**। (३) **घमंड चूर होना**। नीची दृष्टि करना— (**लज्जा-संकोच से**) **सिर झुकाना**। नीची दृष्टि से देखना—**तुच्छ या छोटा समझना**।

नीचाशय—वि. [सं.] **ओछे या क्षुद्र विचार का**।

नीचि—क्रि. वि. [हिं. नीचा] **नीचे की ओर**। उ.—समुझि निज अपराध करनी नारि नावति नीचि-३४७५।

नीचू—क्रि. वि. [हिं. नीचा] **नीचे की ओर**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचैं—क्रि. वि. [हिं. नीचा] **नीचे की ओर।** उ.—(क) (कह्यौ) उहाँ अब गयौ न जाइ। बैठि गई सिर नीचैं नाइ—४-५। (ख) सुरपति-कर तब नीचैं आयौ—६-३। (ग) सुनि ऊधौ के बचन नीचे कै तारे—३४४३।

मुहा.—नीचे-ऊपर—(१) **एक पर एक, तले ऊपर।** (२) **उलट-पलट अस्त-व्यस्त।** नीचे गिरना—(१) **मान-मर्यादा खोना।** (२) **पतित होना।** (२) **कुश्ती में हारना।** नीचे डालना—(१) **फेंकना।** (२) **पराजित करना।** नीचे लाना—**कुश्ती में हराना।** ऊपर से नीचे तक—(१) **सब भागों में।** (२) **सिर से पैर तक।**

(२) **घटकर, कम।** (३) **अधीनता में, मातहत।**

नीच्यो—क्रि. वि. [हिं. नीचा] **नीचे की ओर।** उ.—सूर सीस नीच्यो क्यों नावत अब काहे नहिं बोलत—११२१।

नीजन—वि. [सं. निर्जन] **निर्जन, जनशून्य।**

संज्ञा पुं.—**वह स्थान जहाँ कोई न हो।**

नीझर—संज्ञा पुं. [सं. निर्झर] **झरना, सोता।**

नीठि—क्रि. वि. [हिं. नीठि] **ज्यों-त्यों करके।** उ.—तेई कमल सूर नित चितवत नीठ निरंतर संग—सा. ३-४४। (२) **बड़ी कठिनता से।**

नीठि—संज्ञा स्त्री. [सं. अनिष्टि, प्रा. अनिट्ठि] **अनिच्छा।**

क्रि. वि.—(१) **जैसे-तैसे।** (२) **कठिनता से।**

नीठो—वि. [हिं. नीठि] **न सुहाने या भानेवाला।** उ.—उक्त उक्त जहँ दुमिल समझ केका समुझावत नीठो। ... सूर न भावत घर की चोरी को गुड़ मीठो—सा० ६०।

नीड़—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बैठने या ठहरने का स्थान।** (२) **चिड़ियों के रहने का घोंसला।** उ.—नूपुर ... मनु हंसनि सुत रचे नीड़, दै बाहँ बसाए—१०-१०४।

नीड़ज—संज्ञा पुं. [सं.] **पक्षी, चिड़िया।**

नीत—वि. [सं.] (१) **लाया या पहुँचाया हुआ।** (२) **स्थापित।** (३) **प्राप्त।** (४) **ग्रहण किया हुआ।** उ.—किधौं मंद गरजनि जलधर की पग नूपुर रव नीत।

नीतन—संज्ञा पुं. [हिं. नीति=नीत = नय + न = नयन] **नेत्र, नयन।** उ.—लगे फरकन अंतरिछ अनूप नीतन रंग—सा. ७५।

नीति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **व्यवहार की सामाजिक रीति।** उ.—गुरु-रिपु-ग्रह बिनु बोलेहु जैए। है यह नीति नाहिं सकुचैए—४-५। (२) **ले जाने-चलने की क्रिया या भाव।** (३) **व्यवहार की रीति।** (४) **आचार-व्यवहार, सदाचार।** (५) **राज-रक्षा की विधि।** (६) **युक्ति उपाय।**

नीतिज्ञ—वि. [सं.] **नीति-कुशल, नीति-चतुर।**

नीत्यो—संज्ञा स्त्री. [सं. नीति] **नीति-व्यवहार-पद्धति।** उ.—ह्वै नृप लरत जाइ इन्द्रीगत कहा सूर को नीत्यो—२८६८।

नींदना—क्रि. स. [सं निंदन] **निंदा करना।**

नीधन, नीधना—वि. [सं. निर्धन] **दरिद्र, धनहीन।**

नीप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कदंब।** उ.—एक घरी धीरज धरौं, बैठौ सब तर नीप—५८६। (२) **अशोक।**

नीबर—वि. [सं. निर्बल] **दुर्बल, शक्तिहीन।**

नीबी—संज्ञा स्त्री. [सं. नीवि] **कटि-बंध, फुफुंदी, नारा।**

उ.—नीबी ललित गही जदुराइ—६८२।

नीबू—संज्ञा पुं. [सं. निंबुक] **एक खट्टा फल।**

नीम—संज्ञा पुं. [सं. निम्ब] **एक प्रसिद्ध पेड़।**

नीमन—वि. [सं. निर्मल] (१) **नीरोग, स्वस्थ, भला-चंगा।** उ.—जानि लेहु हारि इतने ही में कहा करै नीमन को बैद। (२) **अच्छा, सुंदर।**

नीमर—वि. [हिं. निर्बल] **दुर्बल, शक्तिहीन।**

नीमषार, नीमषारण्य, नीमषारन—संज्ञा पुं. [सं. नैमिषारण्य] **अवध के सीतापुर जिले में स्थित एक प्राचीन वन जो हिंदुओं का एक तीर्थस्थान माना जाता है।**

नीमा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **जामे के नीचे का एक पहनावा।**

नीमावत—संज्ञा पुं. [सं. निंब] **निबंकाचार्य का अनुयायी।**

नीयत—संज्ञा स्त्री. [अ.] **भाव, आशय, मंशा।**

मुहा.—नीयत डिगना—**मन में दोष या स्वार्थ आ जाना।** नीयत बद होना—**मन में बुराई आना।** नीयत बदल जाना—(१) **इच्छा या विचार कुछ का कुछ हो जाना।** (२) **भले से बुरा विचार हो जाना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीयत बाँधना—**इरादा करना**। नीयत बिगड़ना—(१) **इच्छा या विचार कुछ का कुछ हो जाना**। (२) **भले से बुरा विचार हो जाना**। नीयत भरना—**इच्छा पूरी होना, जी भरना**। नीयत में फर्क आना—**भला विचार बुरे में बदल जाना**। नीयत लगी रहना—**जी ललचाता रहना**।

नीर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पानी, जल**।

मुहा.—नीर ढलना—**मरते समय आँसू बहना**।

(२) **आत्माभिमान की भावना**। उ.—कहँ वह नीर, कहाँ वह सोभा कहँ रँग-रूप दिखैहै—१-८६।

मुहा.—किसी का नीर ढल जाना—**आत्माभिमान की भावना का न रह जाना, निर्लज्ज या बेहया हो जाना**।

(३)**द्रव पदार्थ या रस**। (४)**फोड़े-फफोले का चेप**।

नीरज—संज्ञा पुं. [सं. नीर+ज] (१) **जल में उत्पन्न वस्तु**। (२) **कमल**। (३) **मोती, मुक्ता**।

नीरद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जलदाता**। (२) **बादल**।

वि. [सं. निः+रद] **जिसके दाँत न हों**।

नीरधर—संज्ञा पुं. [सं.] **बादल, मेघ**।

नीरधि—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र**। उ.—पसुपति मंडल मध्य मनो मनि छीरधि नीरधि नीर के—२५६६।

नीरना—क्रि. स. [देश.] **बिखेरना, छिटकाना**।

नीरनिधि—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र**।

नीरपति—संज्ञा पुं. [सं.] **वरुण देवता**।

नीरव—वि. [सं.] (१) **जिसमें शब्द न हो, निःशब्द**। (२) **जो बोलता न हो, चुप**।

नीरस—वि. [सं.] (१) **रसहीन**। (२) **शुष्क**। (३) **आनंदरहित**। उ.—(क) पिउ पद-कमल कौ मकरंद। मलिन मति मन मधुप, परिहरि, बिषय नीरस मंद—६-१०। ख) जीवै तो राजसुख भोग पावै जगत मुए निर्बान नीरस तुम्हारो—१० उ०-५७। (४) **जल-रहित**। उ.—सूरदास क्यों नीर चुवत है नीरस बचन निचोयो—३४८२।

नीरांजन—संज्ञा पुं. [सं.] **आरती, दीपदान**।

नीरांजना—क्रि. अ. [सं. नीरांजन] **आरती करना**।

नीरांजनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आरती**।

नीरा—क्रि. वि. [हिं. नियर] **पास, समीप**।

संज्ञा स्त्री. [सं. नीर] **ताड़ के वृक्ष का बहुत स्वादिष्ट, गुणकारी और मस्त कर देनेवाला रस**।

नीराजन—संज्ञा पुं. [सं. नीरांजन] **देवता की आरती**।

नीराजना—क्रि. अ. [हिं नीराजना] **आरती करना**।

नीरे—क्रि. वि. [हिं. नियरे] **पास, समीप**। उ.—तुम इक कहत सकल घटै व्यापक अरु सबही ते नीरे—३१६८।

नीरोग—वि. [सं.] **जो रोगी न हो, स्वस्थ**।

नीलंगु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भौंरा**। (२) **फल**।

नील—वि. [सं.] **नीले या गहरे आसमानी रंग का**।

संज्ञा पुं.—(१) **नीला या गहरा आसमानी रंग**। (२) **एक पौधा जिससे यह रंग निकाला जाता है**।

मुहा.—नील का टीका लगना—**कलंक लगना**। नील का टीका लगाना—**कलंकी सिद्ध कर देना**। नील कौ खेत—**कलंक का स्थान**। उ.—सेवा नहिं भगवंत चरन की, भवन नील कौ खेत—२-१५। नील की सलाई फिरवाना—**आँखें फुड़वा देना**। नील घोटना—**किसी बात को लेकर बहुत देर तक उलझना**। नील जलाना—**पानी बरसाने के लिए नील जलाने का टोटका करना**। नील बिगड़ना—(१) **चरित्र बिगड़ना**। (२) **चेहरे की आकृति बिगड़ना**। (३) **कलंक की बात फैलना**। (४) **बुद्धि ठिकाने न रहना**। (५) **दुर्दशा होना**। (६)**दिवाला निकलना**।

(३) **शरीर पर पड़नेवाला चोट का नीला निशान**।

मुहा.—नील डालना—**इतना मारना कि शरीर पर मार के नीले-काले निशान बन जायँ**।

(४) **कलंक, लांछन**। (५) **राम की सेना का एक बंदर**। उ.—सीय-सुधि सुनत रघुबीर धाए। चले तब लखन, सुग्रीव, अंगद, हनू, जामवँत, नील, नल, सबै आए-९-१०६। (६)**नव निधियों में एक**। (७)**नीलम**। (८) **विष**। (९) **माहिष्मती का एक राजा**। (१०) **एक संख्या जो दस हजार अरब की होती है**। उ.—फिर पर धरि न चलैगौ कोऊ, जो जतननि करि माया जोरी। राजपाट सिंहासन बैठो, नील पदुम हूँ सौं कहै थोरी—१-३०३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नीलकंठ—वि. [सं.] **जिसका कंठ नीला हो।**

संज्ञा—पुं—(१) **मयूर, मोर।** (२) **एक पक्षी।** (३) **शिव जी।**

नीलकांत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विष्णु।** (२) **नीलम।**

नीलगाय—संज्ञा स्त्री. [हिं. नील+गाय] **एक बड़ा हिरन।**

नीलगिरि—संज्ञा पुं. [सं.] **दक्षिण का एक पर्वत।**

नीलग्रीव—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव जी, महादेव।**

नीलम—संज्ञा पुं. [फा., सं. नीलमणि] **नीले रंग का रत्न, नीलमणि, इंद्रनील नामक मणि।**

नीलमणि—संज्ञा पुं. [सं.] **नीलम, इंद्रनील।**

नीलवसन—संज्ञा पुं. [सं.] **नीला या काला वस्त्र।**

वि.—**नीला या काला वस्त्र धारण करनेवाला।**

संज्ञा पुं.—(१) **शनि देव।** (२) **बलराम।**

नीलांबर—संज्ञा पुं. [सं. नील+अंबर=वस्त्र] **नीले रंग का (प्रायः रेशमी) वस्त्र।** उ.—दाऊ जू, कहि स्याम पुकार्यौ। नीलांबर कर ऐंचि लियौ हरि, मनु बादर तैं चंद उजार्यौ—४०७।

वि.—**नीले या काले वस्त्र धारण करनेवाला।**

संज्ञा पुं.—(१) **बलराम।** (२) **शनि देव।**

नीलांबरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक रागिनी।**

नीलांबुज—संज्ञा पुं. [सं.] **नील कमल।**

नीला—वि. [सं. नील] **नील के रंग का।**

मुहा.—नीला करना—**इतना मारना कि शरीर पर नीले दाग पड़ जायँ।** नीला-पीला होना—**क्रोध दिखाना।** नीले हाथ-पाँव हों—**मर जाय।** चेहरा नीला पड़ जाना—(१) **लज्जा, संकोच या भय से चेहरे का रंग फीका पड़ना।** (२) **मृत्यु के पश्चात् आकृति बिगड़ जाना।**

संज्ञा स्त्री.—**राधा की एक सखी का नाम।** उ.—अमला अबला कंजा मुकुता हीरा नीला प्यारि–१५८०।

नीलाक्ष—वि. [सं.] **नीली आँखवाला।**

नीलाचल—संज्ञा पुं. [सं.] **नीलगिरि पर्वत।**

नीलाब्ज—संज्ञा पुं. [सं.] **नीला कमल।**

नीलाम—संज्ञा पुं. [पुर्त॰ लीलाम] **बोली बोलकर बेचना।**

नीलावती—संज्ञा स्त्री. [सं. नीलवती] **एक प्रकार का चावल।** उ.—नीलावती चावल दिव-दुर्लभ। भात परोस्यौ माता सुरलभ—३९६।

नीलिमा—संज्ञा स्त्री. [सं. नीलिमन्] (१) **नीलापन, श्यामता।** (२) **स्याही, मसि।**

नीली—वि. स्त्री. [हिं. नीला] **नीले-काले रंग की।**

नीलोत्पल—संज्ञा पुं. [सं.] **नील कमल।**

नीव—संज्ञा स्त्री. [सं. नेमि, प्रा. नेंइ] (१) **घर की दीवार उठाने के लिए गहरा किया हुआ स्थान।**

मुहा.—नीव देना—**घर उठाना प्रारंभ करना।**

(२) **दीवार की जड़ या आधार।**

मुहा.—नींव का पत्थर—**मकान बनाने के लिए रखा जानेवाला पहला पत्थर।** नीव जमाना (डालना, देना)—**दीवार की जड़ जमाना।** नीव पड़ना—**घर बनना आरंभ होना।**

(३) **जड़, मूल, आधार।**

मुहा.—नीव देना—**कार्यारंभ करना।** नीव का पत्थर—**कार्यारंभ का प्रथम चरण।** नीव जमाना—**जड़ या स्थिति मजबूत कर लेना।** नीव डालना—**कार्यारंभ करना।** नीव पड़ना—**कार्यारंभ होना।**

नीवि, नीवी—संज्ञा स्त्री. [सं. नीवि] **नारा, इजारबंद।**

नीसक—वि. [सं. निःशक्त] **निर्बल, कमजोर।**

नीसान—संज्ञा पुं. [फ़ा. निशान] **नगाड़ा, धौंसा।** उ.–(क) है हरि-भजन कौ परमान। नीच पावैं ऊँच पदवी, बाजते नीसान—१·२३५। (ख) देवलोक नीसान बजाये बरषत सुमन सुधारे—पृ० ३४४ (३१)।

नीहार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कुहरा।** (२) **पाला, तुषार।**

नीहारिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आकाश में कुहरे-सा फैला प्रकाश-पुंज जो रात में एक धुंधली सफेद धारी-सा दिखायी पड़ता है।**

नुक़्ता—संज्ञा पुं. [अ. नुक़्तः] (१) **बिंदी।** (२) **चुभती हुई उक्ति, फबती।** (३) **ऐब, दोष।**

नुक्ताचीनी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **दोष निकालना।**

नुकसान—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **कमी, घटी।** (२) **हानि, घाटा।** (३) **खराबी, दोष, अवगुण।**

नुकीला—वि. [हिं. नोक+ईला] **नोकदार।**

नुक्कड़—संज्ञा पुं. [हिं. नोक] (१) **नोक।** (२) **सिरा, छोर, अंत।** (३) **निकला हुआ कोना।**

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नुक्स—संज्ञा पुं. [अ.] (१) दोष। (२) त्रुटि, कसर।

नुचना—क्रि. अ. [सं. लुंचन] (१) झटके से या खिंचकर उखड़ना। (२) नाखून आदि से छिलना या खरुचना।

नुचवाना—क्रि. स. [हिं. नोचना] नोचने को प्रवृत्त करना।

नुनाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. लोनाई] सलोनापन, सुंदरता।

नुमाइंदा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] प्रतिनिधि।

नुमाइश—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) दिखावट। (२) तड़क-भड़क, सजधज। (३) अद्‌भुत वस्तुओं का संग्रह-स्थान या प्रदर्शनी।

नुमाइशी—वि. [हिं. नुमाइश] (१) दिखाऊ, दिखौआ। (२)ऊपरी तड़क-भड़कवाला, वास्तव में (निस्सार)।

नुसखा—संज्ञा पुं. [अ.] औषधि-पत्र।

नूत, नूतन—वि. [सं.] (१) नया, नवीन। उ.—(क) गौरि-कंत पूजत जहँ नूतन जल आनी—६-६६। (ख) अरुन नूत पल्लव धरे रँगभीजी ग्वालिनी। (२) अनूठा, अनोखा। उ.—किसलै कुसुम नव नूत दसहु दिसि मधुकर मदन दोहाई—२७८४। (३) ताजा।

नूतनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] नयापन, नवीनता।

नूतनत्व—संज्ञा पुं. [सं.] नयापन, नवीनता।

नून—संज्ञा पुं. [सं. लवण, हिं. लोन] नमक।
वि. [सं. न्यून] कम, न्यून।

नूनताई—संज्ञा स्त्री. [सं. न्यूनता] कमी, न्यूनता।

नूना—वि. [सं. न्यून] (१) कम। (२) घटकर।

नूपुर—संज्ञा पुं. [सं.] पैर में पहनने का बच्चों और स्त्रियों का एक गहना, घुंघरू, पैंजनी। उ.—रुनुक-झुनुक चलत पाइ नूपुर-धुनि बाजै—१०-१४६।

नूर—संज्ञा पुं. [अ.] (१)ज्योति, प्रकाश। (२) श्री, कांति, शोभा। (३, ईश्वर का एक नाम (सूफी)।

नूरा—वि. [हिं. नूर] नूरवाला, तेजस्वी।

नृ—संज्ञा पुं. [सं.] नर, मनुष्य।

नृ-केशरी—संज्ञा पुं. [सं. नृकेशरिन्] नृसिंहावतार।

नृग—संज्ञा पुं. [सं.] एक दानी राजा जिन्होंने अनजाने ही एक ब्राह्मण की गाय अपनी सहस्र गौओं के साथ दूसरे ब्राह्मण को दान में दे दी। गाय हरण के पाप का फल भोगने के लिए राजा नृग को सहस्र वर्ष के लिए गिरगिट होकर कुएँ में रहना पड़ा। इस योनि से श्रीकृष्ण ने उनका उद्धार किया।

नृघ्न—वि. [सं.] नरघातक।

नृतक—संज्ञा पुं. [सं. नर्तक] नाचनेवाला।

नृतकारी—संज्ञा स्त्री. [सं. नृत्य + हिं. कारी = कला] नृत्य-कला, नृत्यकौशल। उ.—इंद्रसभा थकित भई, लगी जब करारी। रंभा कौ मान मिट्यौ, भूली नृतकारी—६४६।

नृतत—क्रि. अ. [हिं. नृतना] नृत्य करता है। उ.—कटि पितंबर वेष नटवर नृतत फन प्रति डोल ५६३।

नृतना—क्रि. अ. [सं. नृत्य] नृत्य करना, नाचना।

नृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] नाच, नृत्य।

नृत्त—संज्ञा पुं. [सं.] सुसंस्कृत अभिनय।

नृत्तना—क्रि. अ. [स. नृत] नृत्य करना, नाचना।

नृत्य—संज्ञा पुं. [सं.] नाच, नर्त्तन। उ.—जब अप्सरा नृत्य करि रही।-तब राजा ब्रह्मा सौं कही—६-४।

नृत्यक—संज्ञा पुं. [सं. नर्तक] नाचनेवाला, नर्तक। उ.—मानहु नृत्यक भाव दिखावत गति लिय नायक मैन—२३२४।

नृत्यकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नर्तकी] नाचनेवाली, नर्तकी।

नृत्यत—क्रि. अ. [हिं. नृत्यना] नृत्य करता है, नाचता है। उ.—(क) नृत्यत मदन फूले, फूली रति अँग-अँग, मन के मनोज फूले हलधर वर के—१०-३४। (ख) कुंडल लोल तिलक मृगमद रचि गावत नृत्यत नटवर वेस—३२२५।

नृत्यना—क्रि. अ. [सं नृत्य] नाचना, नृत्य करना।

नृत्यशाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] नाचघर।

नृदेव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) राजा। (२) ब्राह्मण।

नृप—संज्ञा पुं. [सं.] राजा, नरपति।

नृप-कुल—संज्ञा पुं. [सं. नृप + कुल] राजाओं का समूह। उ.—जरासंध बंदी कटैं, नृप-कुल जस गावै—१-४।

नृपता—संज्ञा स्त्री. [सं.] राजापन।

नृपति—संज्ञा पुं. [सं.] राजा, नरपति।

नृप-रिषि—संज्ञा पुं. [सं. नृप + ऋषि] राजर्षि।

नृपराई, नृपराउ, नृपराय, नृपराव—संज्ञा पुं. [सं. नृपराज] सम्राट, राजाओं में श्रेष्ठ।

नृपाल—संज्ञा पुं. [सं.] राजा, नरपति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नृलोक—संज्ञा पुं. [सं.] **नरलोक, मर्त्यलोक ।**

नृशंस—वि. [सं.] (१) **निर्दय** (२) **अत्याचारी ।**

नृशंसता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **निर्दयता, क्रूरता ।**

नृसिंह—संज्ञा पुं. [सं.] **भगवान विष्णु का चौथा अवतार जिसका आधा शरीर मनुष्य का और आधा सिंह का था। हिरण्यकशिपु को मारने के लिए यह अवतार धारण किया गया था ।**

नृसिंह चतुर्दशी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वैशाख शुक्ल चतुर्दशी जब नृसिंहावतार हुआ था ।**

नृहरि—संज्ञा पुं. [सं.] **नृसिंह ।**

ने—प्रत्य. [सं .प्रत्य टा—.एण] **भूतकालिक सकर्मक क्रिया के कर्ता की विभक्ति ।**

न्योछाउरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. न्योछावर] **निछावर ।**

न्योतना—क्रि. स. [हिं. न्योतना] **न्योता देना ।**

न्योता—संज्ञा पुं. [हिं. न्योता] **न्योता, निमंत्रण ।**

नेक—वि. [फ़ा.] (१) **भला, अच्छा ।** (२) **सज्जन ।**

क्रि. वि. [हिं. न+एक] **थोड़ा, तनिक, कुछ, किंचित ।** उ.—(क) नरक कूपनि जाइ जमपुर पर्यौ बार अनेक । थके किंकर-जूथ जमके, टरत टारैं न नेक १-१०६ । (ख) ढाकति कहा प्रेमहित सुंदरि सारँग नेक उघारि—२२२० ।

वि.—**थोड़ा, तनिक, कुछ भी, किंचित ।** उ.—सात दिन भरि ब्रज पर गई नेक न झार—६७३ ।

नेकी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **भलाई ।** (२) **सज्जनता ।** (३) **उपकार ।**

मुहा.—नेकी और पूछ पूछ—**किसी का उपकार करने में पूछने की जरूरत क्या है ?**

नेको, नेकौ—वि. [हिं. नेक] **जरा भी ।** उ.—तुम बिनु नँदनंदन ब्रजभूषन होत न नेको चैन—सा. ८ ।

क्रि. वि.—**तनिक, कुछ, थोड़ा ।**

नेग—संज्ञा पुं. [सं. नैयमिक, हिं. नेवग] (१) **शुभ अथवा प्रसन्नता के अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों आदि को कुछ देने का नियम ।** (२) **वह धन, वस्तु आदि जो शुभ अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों आदि को दिया जाता है, बँधा हुआ पुरस्कार ।** उ.—लाख टका अरु झूमका (देहु) सारी दाइ कौं नेग—१०-४० ।

मुहा.—नेग लगना—(१) **पुरस्कार आदि देना आवश्यक होना ।** (२) **सार्थक या सफल होना ।**

नेगचार, नेगजोग—संज्ञा पुं. [हिं. नेग+आचार, जोग] (१) **शुभ अवसर पर संबंधियों, आश्रितों आदि को भेंट, उपहार आदि देने की रीति ।** (२) **वह वस्तु, उपहार या धन जो ऐसे अवसर पर दिया जाय ।**

नेगटी—संज्ञा पुं. [हिं. नेग+टा (प्रत्य.)] **नेग की रीति या दस्तूर का निर्वाह करनेवाला ।**

नेगी—संज्ञा पुं. [हिं. नेग] **नेग का अधिकारी ।**

नेगीजोगी—संज्ञा पुं. [हिं. नेगजोग] **नेग का हकदार ।**

नेछावर—संज्ञा स्त्री. [हिं. निछावर] **निछावर ।**

नेजा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **भाला, बरछा ।** उ.—हँसनि दुज चमक करिवर निलैहेन झलक नखन छत घात नेजा सँभारै—१७०० ।

नेजाबरदार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **भाला लेकर चलनेवाला ।**

नेजाल—संज्ञा पुं. [फ़ा. नेजा] **भाला, बरछा ।**

नेड़े—क्रि. वि. [सं. निकट, प्रा. निअड़] **पास, निकट ।**

नेत—संज्ञा पुं. [सं. नियति=ठहराव] (१) **किसी बात की स्थिरता या ठहराव ।** (२) **निश्चय, संकल्प ।** उ.—आजु न जान देहुँ री ग्वालिनि बहुत दिननि को नेत—१०३५ । (३) **प्रबंध, व्यवस्था ।**

संज्ञा पुं. [सं. नेत्र] **मथानी की रस्सी ।** उ.—को उठि प्रात होत लै माखन को कर नेत गहै—२७११ ।

संज्ञा पुं. [देश.] **एक गहना ।** उ.—कहुँ कंकन कहुँ गिरी मुद्रिका कहुँ ताटंक कहूँ नेत—३४५६ ।

नेतक—संज्ञा स्त्री. [देश.] **चूनर, चुँदरी ।**

नेता—संज्ञा पुं. [सं. नेतृ] (१) **अगुआ, नायक ।** (२) **प्रभु, स्वामी ।** (३) **प्रवर्तक, निर्वाहक, संचालक ।**

संज्ञा पुं. [सं. नेत्र] **मथानी की रस्सी ।**

नेति—वाक्य [सं. न इति] **'इति (अंत) नहीं है' । यह वाक्य ब्रह्म की अनंतता सूचित करने के लिए लिखा जाता है ।** उ.—सोई जस सनकादिक गावत नेति नेति कहि मानि—२-३७ ।

संज्ञा स्त्री—[सं. नेत्र] **वह रस्सी जिसे मथानी में लपेट कर दूध-दही मथा जाता है ।** उ.—कह्यौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान अब बासुकी ल्याइये, जाइ तिन बासुकी सौं सुनायौ। मानि भगवंत-आज्ञा सो आयौ तहाँ, नेति करि अचल कौं सिंधु नायौ—८-८।

नेती—संज्ञा स्त्री. [सं. नेत्र, हिं. नेता] **मथानी की रस्सी।**

नेती धोती—संज्ञा स्त्री. [हिं. नेती+धोती] **हठयोग की क्रिया जिसमें कपड़े की धज्जी पेट में पहुँचाकर आंते साफ करते हैं।**

नेतृत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **नेता होने का भाव, कार्य या पद, सरदारी, नेतागीरी।**

नेत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आंख**। (२) **मथानी की रस्सी**। (३) **दो की संख्या सूचक शब्द।**

नेत्रकनीनिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आंख का तारा।**

नेत्रज, नेत्रजल—संज्ञा पुं. [सं.] **आंसू।**

नेत्रपिंड—संज्ञा पुं. [सं.] **आंख का ढेला।**

नेत्रबंध—संज्ञा पुं. [सं.] **आंखमिचौनी का खेल।**

नेत्ररंजन—संज्ञा पुं. [सं.] **काजल, कज्जल।**

नेत्ररोम—संज्ञा पुं. [सं. नेत्ररोमन्] **आंख की बरौनी।**

नेत्रस्तंभ—संज्ञा पुं. [स.] **पलकों का स्थिर हो जाना।**

नेत्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **अनुगामिनी नारी**। (२) **मार्ग-प्रदर्शिका**। (३) **स्वामिनी**। (४) **लक्ष्मी।**

नेनुआ, नेनुवा—संज्ञा पुं. [सं.] **एक तरकारी।**

नेपथ्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **साज-सज्जा, सजावट**। (२) **नृत्य, अभिनय या नाटक में नर-नारी या अभिनेताओं के सजने का स्थान**। (३) **नाच-रंग का स्थान।**

नेब—संज्ञा पुं. [फ़ा. नायब] **मंत्री, दीवान, सहायक।** उ.—आए नँदनंदन के नेब। गोकुल माँझ जोग बिस्तारयौ भली तुम्हरी जेब।

नेम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समय**। (२) **खंड**। (३) **दीवार**। (४) **छल**। (५) **आधार** (६) **गड्ढा।**

संज्ञा पुं. [सं. नियम] (१) **नियम**। (२) **अटल या निश्चित बात**। (३) **रीति**। (४) **धर्म या पुण्य की दृष्टि से व्रत, उपवास आदि का पालन**। उ.—(क) नौमी-नेम भली बिधि करै-६-५। (ख) जा सुख कौ सिव-गौरि मनाई, तिय व्रत-नेम अनेक करी—१०-८०। (ग) नेम-धर्म-तप-साधन कीजै।······। बर्ष-दिवस कौ नेम लेइ सब—७९६।

यौ०—नेम-धरम—**पूजा-पाठ, व्रत-उपवास आदि।**

नेमि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **घेरा**। (२) **कुएँ की जगत।**

नेमी—वि. [हिं. नेम] (१) **नियमों का पालन करने वाला**। (२) **पूजा पाठ, व्रत-उपवास करनेवाला।**

यौ०—नेमी-धरमी—**पूजा-पाठ में लगा रहनेवाला।**

नेरा—क्रि. वि. [हिं. नियर] **कुछ भी, जरा भी।**

वि.—**जो निकट हो, समीप का।**

नेर, नेरे—क्रि. वि. [हिं. नियर] **निकट, पास, समीप।** उ.-(क) बिपति परी तब सब सँग छाँड़े, कोउ न आवै नेरे—१-७९। (ख) सूरस्याम बिन अंतकाल मैं कोउ न आवत नेरे—१-८५।

नेरैं—क्रि. वि. [हिं. नियर, नेरे] **निकट, पास।** उ.—तुम तौ दोष लगावन कौं सिर, बैठे देखत नेरैं—१-२०६।

नेवछावर, नेवछावरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. निछावर] **निछावर।** उ.—हरकर पाट बंध नेवछावरि करत रतन पट सारी—२६३०।

नेवज—संज्ञा पुं. [सं. नैवेद्य] **देवता को अर्पित करने की वस्तु, भोग।** उ.—(क) बरस दिवस को दिवस हमारो घर घर नेवज करौ चँढ़ाई—९१०। (ख) बहुत भाँति सब करे पकवान। नेवज करि धरि साँझ बिहाने—१००८।

नेवत—संज्ञा पुं. [हिं. न्योता] **न्योता, निमंत्रण।**

नेवतना—क्रि. स. [सं. निमंत्रण] **नेवता भेजना।**

नेवतहरी—संज्ञा पुं. [हिं. न्योतहरी] **निमंत्रित व्यक्ति।**

नेवता—संज्ञा पुं. [हिं. न्योता] **निमंत्रण।**

नेवति—क्रि. स. [हिं. नेवतना] **निमंत्रण देकर, नेवता भेजकर।** उ.—सुर-गंधर्व जे नेवति बुलाए। ते सब बधुनि सहित तहँ आए—४-५।

नेवना—क्रि. अ. [सं. नमन] **झुकना।**

नेवर—संज्ञा पुं. [सं. नूपुर] **पैर का एक गहना, नूपुर।**

वि. [सं. न+वर=अच्छा] **बुरा, खराब।**

नेवला—संज्ञा पुं. [सं. नकुल, प्रा. नाल] **नकुल नामक जंतु।**

नेवाज—वि. [हिं. निवाज] **कृपा करनेवाला।**

नेवाजना—क्रि. स. [हिं. निवाजना] **कृपा करना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…वाजी—क्रि. स. [हिं. निवाजना] **कृपा की।** उ.—कहियत कुब्रिजा कृष्न नेवाजी—३०६४।

…वाना—क्रि. स. [सं. नमन] **झुकाना।**

…वारी—संज्ञा स्त्री. [सं. नेपाली] **जूही या चमेली की जाति का, सफेद फूलवाला एक पौधा।**

…सुक—वि. [हिं. नेकु] **जरा सा, तनक, थोड़ा सा।**

क्रि. वि.—**थोड़ा, जरा, तनक, किंचित।**

…स्त—वि. [फ़ा.] (१) **जो न हो।** (२) **नष्ट।**

…स्ती—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **न होना।** २) **नाश।**

…ह, नेहरा—संज्ञा स्त्री. [सं. स्नेह] (१) **स्नेह।** (२) **तेल, घी।**

…ही—वि. [हिं. नेह] **स्नेह करनेवाला, प्रेमी।**

…कु—वि. [हिं. न + एक = नेक] **थोड़ा, तनिक, किंचित।**

क्रि. वि.—**थोड़ा, जरा, तनिक।** उ.—कोपि कौरव गहे केस जब सभा मैं, पांडु की बधू जस नैंकु गायौ। लाज के साज मैं हुती ज्यौं द्रौपदी, बढ़्यौ तन-चीर नहिं अंत पायौ—१-५।

…कहु—क्रि. वि. [हिं, न+एक+हु (प्रत्य.) **जरा भी, थोड़ा भी।** उ.—हरि, हौं महापतित, अभिमानी। परमारथ सौं बिरत, विषय-रत, भाव-भगति नहिं नैंकहु जानी—१-१४६।

…सुक—वि. [हिं. नेकु] (१) **छोटी, जरा सी।** उ.—स्याम, तुम्हरी मदन-मुरलिका नैंसुक-सी जग मोह्यौ—६५६। (२) **तनक, थोड़ा।**

क्रि. वि.—**थोड़ा, जरा, तनक।**

…—संज्ञा स्त्री. [सं. नय] **नीति।**

संज्ञा स्त्री. [सं. नदी प्रा. णई] **नदी, सरिता।**

प्रत्य. [हिं. ने] **भूतकालिक सकर्मक क्रिया के कर्ता की विभक्ति।** उ.—दियौ सिरपाव नृपराव नै महर कौं आपु पहिरावने सब दिखाए—५८७।

…, नैकु—वि. [हिं. न+एक] **थोड़ा, कुछ।**

…ट्य—संज्ञा पुं. [सं.] **निकट होने का भाव।**

…, नैकौ—वि. [हिं. नैक] **जरा भी, थोड़ा, कुछ।** उ.—कहा मल्ल चाणूर कुबलिया अब जिय त्रास नहीं तिन नैको—२५५८।

नैतिक—वि. [सं.] (१) **नीति-संबंधी, नीतियुक्त।** (२) **आचरण-संबंधी, चारित्रिक।**

नैत्यिक—वि. [सं.] **नित्य का।**

नैत्रिक—वि. [सं.] **नेत्रों का, नेत्र-संबंधी।**

नैन—संज्ञा पुं. [सं. नयन] **नेत्र।** उ.—सबनि मूँदे नैन, ताहि चितये सैंन, तृषा ज्यौं नीर दय अँचै लीन्हौ—५६७।

यौ.—मतवाले नैन—**मद भरे नैन।** रस भरे या रसीले नैन—**नैन जिनमें रसिकता का भाव हो।**

मुहा.—नैन उठाना-(१) **निगाह सामने करना।** (२) **बुरा व्यवहार करना।** नैन न उघारना—**लज्जा या संकोच से आंख न खोलना।** नैन न जात उघारे—**लज्जा या संकोच के कारण आंख खोलकर सामने न कर पाना।** उ.—दुरलभ भयौ दरस दसरथ कौ सो अपराध हमारे। सूरदास स्वामी करुनामय नैन न जात उघारे—६-५२। नैन चढ़ाना—**भुँझलाहट, अनख या क्रोध से देखना।** नैन चढ़ाए डोलत—**अनख या क्रोध से देखती घूमती है।** उ.—कापर नैन चढ़ाए डोलत ब्रज में तिनुका तोर—१०-३१०। नैन चलाना—(१) **आंख मटकाकर संकेत करना।** (२) **अनख या क्रोध से देखना।** नैन चलावै—**आंख चमकाकर या मटकाकर संकेत करती है।** उ.—सखियनि बीच भरयौ घट सिर पर तापर नैन चलावै—८७५। नैन चलावति—**अनख या क्रोध से देखती हुई।** उ.—का पर नैन चलावति आवति जाति न तिनका तोर—१०-३२०। नैन जुड़ाना—**आँखें शीतल होना, तृप्ति होना।** नैन जुड़ाने—**नेत्र शीतल हुए, तृप्ति हुई।** उ.—अँचवत तब नैन जुड़ाने—१०-१८३। नैन भर आना—**आंख में आंसू आना।** नैन भरि आए—**नेत्रों में आंसू आ गये।** उ.—देखत गमन नैन भरि आए गात गह्यौ ज्यौं केत—६-३६। नैन भरि जोवना—**खूब अच्छी तरह तृप्त होकर देखना।** नैन भरि जोवै—**खूब अच्छी तरह देख ले।** उ.—चाहति नैंकु नैन भरि जोवै—१०-३। नैन लगाना—**टकटकी बांधकर देखना।** नैन रहे लगाइ—**टकटकी बांधकर देखते रह गये।** उ.—मथति ग्वालि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरि देखी जाइ। गए हुते माखन की चोरी, देखत छवि रहे नैन लगाइ—१०-२६८। नैन सिराना—नेत्रों को परम तृप्ति मिलना। नैन सिराए—आँखें ठंढी हुईं, बहुत सुख मिला। उ.—सिया-राम-लछिमन मुख निरखत सूरदास के नैन सिराए—६-१६८।

संज्ञा पुं. [सं. नय+न] अनीति, अन्याय।

संज्ञा पुं. [सं. नवनीत] माखन।

नैन-अमीन—संज्ञा पुं. [सं. नयन+अ. अमीन] नेत्र रूपी अदालती या राजकीय कर्मचारी। उ.—नैन अमीन, अधर्मिनि कैं बस, जहँ कौं तहाँ छयौ—१-६४।

नैननि—संज्ञा पु. [सं. नयन + नि (प्रत्य.)] नेत्रों में, आँखों में। उ.—सुत कुबेर के मत्त-मगन भए बिषै-रस नैननि छाए (हो)—१-७।

नैन-पटी—संज्ञा स्त्री. [सं. नयन+हिं. पट्टी] आँख पर बाँधने की कपड़े की पट्टी। उ.—अपनी रुचि जित ही जित ऐंचति इन्द्रिय-कर्म-गटी। हौं तित हीं उठि चलत कपट लगि, बाँधे नैन-पटी —१-६८।

नैनसुख—संज्ञा पुं. [हिं. नैन+सुख] एक सूती कपड़ा।

नैना—संज्ञा पुं. [सं. नयन] नेत्र, आँखें। उ.—(क) सूरदास उमँगे दोउ नैना, सिंधु-प्रवाह बह्यौ—१-२४७। (ख) नैना तेरे जलज जीत हैं, खंजन तैं अति नाचैं—१०-७१८।

संज्ञा स्त्री.—राधा की एक सखी का नाम। उ.—दर्वा, रंभा, कृष्ना, ध्याना मैना नैना रूप—१५८०।

क्रि. अ. [हिं. नवना] झुकना।

क्रि. स. [हिं. नवाना] झुकाना।

नैनी—वि. [हिं. नैन] नयनवाली। उ.—जा जल-शुद्ध निरखि सन्मुख ह्वै, सुन्दर सरसिज नैनी—६-११।

नैनूँ, नैनू—संज्ञा पुं. [सं. नवनीत] मक्खन।

नैपुण्य—संज्ञा पुं. [सं.] दक्षता, निपुणता।

नैमित्तिक—वि. [सं.] जो निमित्तवश किया जाय।

नैमिष—संज्ञा पुं. [सं.] नैमिषारण्य तीर्थ।

नैमिषारण्य—संज्ञा पुं. [सं.] सीतापुर का एक तीर्थ।

नैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. नाव] नाव, नौका।

नैर—संज्ञा पुं. [सं. नगर] (१) नगर। (२) जनपद।

नैरी संज्ञा पुं. [सं. नगर, हिं. नैर] नगरी, देश, जनपद। उ.—जाके घर की हानि होति नित, सो नहिं आनि कहै री। जाति-पाँति के लोग न देखति, और बसैहै नैरी—१०-३२४।

नैराश्य—संज्ञा पुं. [सं.] निराशा का भाव।

नैर्ऋत—वि. [सं.] नैर्ऋति संबंधी।

संज्ञा पुं.—पश्चिम-दक्षिण-कोण का स्वामी।

नैर्ऋति—संज्ञा स्त्री. [सं.] पश्चिम और दक्षिण दिशाओं के बीच का कोण।

नैवेद्य—संज्ञा पुं. [सं.] देव-अर्पित भोग। उ.- धूप-दीप-नैवेद्य साजि कै मंगल करै बिचारी—२५८७।

नैष्ठिक—वि. [सं.] निष्ठावान।

नैसर्गिक—वि. [सं.] प्राकृतिक, स्वाभाविक।

नैसा—वि. [सं. अनिष्ट] बुरा, खराब।

नैसिक, नैसुक—वि. [हिं नेक] थोड़ा, जरा सा।

नैसे—वि. [सं. अनिष्ट] अनैसा, बुरा, खराब। उ.—(क) जो जिहिं भाव भजै, प्रभु तैसे। प्रेम बस्य दुष्टनि कौं नैसे—१०-३६१। (ख) कहु राधा हरि कैसे हैं? तेरे मन भाए की नाहीं, की सुंदर की नैसे हैं—१३०७।

नैहर—संज्ञा पुं. [सं. ज्ञाति, प्रा. णाति णाई=पिता+घर] माता-पिता का घर, मायका, पीहर।

नैहौं—क्रि. स. [हिं. नाना] (१) डालना, छोड़ना। (२) पहनाना। उ.—और हार चौकी हमेल अब तेरे कंठ न नैहौं—१५५०।

नोआ—संज्ञा पुं. [हिं. नोवना] दुहते समय गाय के पिछले पैर बाँधने की रस्सी, बंधी।

नोइनी, नोई—संज्ञा स्त्री. [हिं. नोवना] दुहते समय गाय के पैर में बाँधने की रस्सी, बंधी।

नोक—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] बहुत पतला छोर।

नोक-झोंक—संज्ञा स्त्री. [हिं. नोक+झोंक] (१) ठाट-बाट। (२) दर्प, आतंक। (३) व्यंग्य, ताना। (४) छेड़छाड़, झपट।

नोकत—क्रि. स. [हिं. नोकना] लुब्धते हैं। उ.—रीझि रहे उत हरि इत राधा अरस परस दोउ नोकत हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोकना—क्रि. स.– ललचना, गीधना, लुब्धना ।

नोखा—वि. [हिं. अनोखा] अनूठा, विचित्र ।

नोखी—वि. स्त्री. [हिं. नोखी] अनूठी, विचित्र । उ.—कौंधी बुद्धि रची है नोखी देखी सुनी न होइ— पृ० ३१३ (३०) ।

नोखे—वि. [हिं. अनोखा] अनोखे, अद्भुत, विचित्र । उ.–तब बृषभानु-सुता हँसि बोली, हम पै नाहिं कन्हाइ । काहे कौं भकझोरत नोखे, चलहु न देउँ बताइ—६८२ ।

नोच—संज्ञा स्त्री. [हिं. नोचना] लूट, खसोट ।

नोचना—क्रि. स. [सं. लुंचन] (१) उखाड़ना । (२) नाखून से खरोंचना । (३) तंग करके ले लेना ।

नोचै—क्रि. स. [हिं. नोचना] नोचता खरोंचता है । उ.—सत्य जानि जिय, चित चेत आनि, तू अब नख क्यौं तन नोचै—१०उ०-१०२ ।

नोचू—वि. [हिं. नोचना] (१) नोचने-खसोटनेवाला । (२) मांग मांग कर या लेकर तंग करनेवाला ।

नोदन—संज्ञा पुं [सं.] (१) प्रेरणा । (२) बैलों को हांकने की छड़ी, औगी । (३) खंडन ।

नोन—संज्ञा पुं. [सं. लवण, हिं. लोन] नमक ।

नोनचा—संज्ञा पुं. [हिं. नोन+छार] लोनी जमीन ।

नोनहरामी—संज्ञा स्त्री. [हिं. लोन=नोन (फा. नमक) +अ. हराम+ई (प्रत्य.)] नमक हरामपन, कृतघ्नता ।

वि.—नमकहराम कृतघ्न । उ.—जो तन दियौ ताहि बिसरायौ, ऐसौ नोनहरामी—१-१४८ ।

नोना, नोनो—संज्ञा पुं. [सं. लवण, हिं. नोन] लोना ।

वि.—(१) नमकीन, खारा । (२) सलोना, सुंदर ।

नोनिया- वि. [हिं. नोन] नमक बनानेवाला ।

नोनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नोना] लोनी मिट्टी ।

वि. स्त्री.— (१) नमकीन, खारी । (२) सलोनी ।

नौल, नोल—वि. [सं. नवल] नया, नवीन ।

नोवत—क्रि. स. [हिं. नोवना] दुहते समय रस्सी से गाय का पैर बांधते हैं । उ.—बछरा छोरि खरिक कौं दीन्हौं, आपु कान्ह तन-सुधि बिसराई । नोवत बृषभ निकसि गैयाँ गईं, हँसतसखाकहदुहत कन्हाई—७२० ।

नोवना—क्रि. स. [सं. नद्ध, हिं. नहना] दुहते समय रस्सी से गाय का पैर बाँधना ।

नोवैं—क्रि. स, [हिं. नोवना] दुहते समय रस्सी से गाय का पैर बांधता है, नोवता है । उ.—ग्वाल कहैं धनि जननि हमारी, सुकर सुरभि नित नोवैं—३४७ ।

नोहर, नोहरा—वि. [हिं. मनोहर] अनोखा, अद्भुत ।

नौंधरई, नौंधराई, नौंधरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नामधराई] बदनामी, निंदा, अपकीर्ति, बुराई ।

नौ—वि. [सं. नव] जो दस से एक कम हो ।

मुहा.—नौ दो ग्यारह होना—देखते-देखते भाग जाना । नौ तेरह बताना—टालटूल करना ।

वि.—नया, नवीन । उ.—जब लगि नहि बरषत ब्रज ऊपर नौ घन श्याम सरीर—२७७१ ।

नौआ—संज्ञा पुं. [हिं नाऊ] नाऊ, नाई, नापित । उ.—रोवत देखि जननि अकुलानी दियौ तुरत नौआ कौं घुरकी—१०-१८० ।

नौकर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) चाकर, दास, टहलुआ । (२) वैतनिक कर्मचारी ।

नौकरनी, नौकरानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नौकर] दासी ।

नौकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नौकर] चाकरी, सेवा ।

नौका—संज्ञा स्त्री. [सं.] नाव । उ. मेरी नौका जनि चढ़ौ त्रिभुवनपति राई—६-४२ ।

नौग्रही—संज्ञा स्त्री. [सं. नवग्रह] हाथ का एक गहना जिसमें नौ रत्न जड़े रहते हैं ।

नौज—अव्य. [सं. नवद्य, प्रा. नवज्ज] (१) ईश्वर न करे, ऐसा न हो । (२) न सही ।

नौजवान—वि. [फ़ा.] नवयुवक ।

नौजवानी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] युवावस्था ।

नौजा—संज्ञा पुं.[फा.लौज़](१) बादाम । (२) चिलगोजा ।

नौटंकी—संज्ञा स्त्री. [देश.] नगाड़े के साथ चौबोले गाकर होनेवाला अभिनय ।

नौतन—वि. [सं. नूतन] नया, नवीन । उ.—नए गोपाल नई कुबिजा बनी नौतन नेह ठयौ—३३४७ ।

नौतम—वि. [सं. नवतम] (१) बिलकुल नया । (२) ताजा ।

संज्ञा पं. [सं. नम्रता] विनय, नम्रता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौध—संज्ञा पुं. [सं. नव+हिं. पौधा] **नया पौधा** ।

नौधा—वि. [सं नवधा] **नौ प्रकार की** । उ.—नौधा भक्ति दास रति मानै—३४४२ ।

नौनगा—संज्ञा पुं. [हिं. नौ+नग] **बाहु का एक गहना जिसमें नौ तरह के नग जड़े होते हैं** ।

नौना—क्रि. अ. [हिं. नवना] **झुकना, नवना** ।

नौबढ़, नौचढ़िया, नौबढ़वा—वि. [सं. नव + हिं. बढ़ना] **जिसने हाल ही में उन्नति की हो** ।

नौबत—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **बारी, पारी** । (२) **गति, दशा** । (३) **संयोग** । (४) **वैभव, उत्सव या मंगल-सूचक वाद्य (शहनाई और नगाड़े) जो पहर-पहर भर बजते हैं, समय-समय पर बजनेवाले बाजे** ।

मुहा.—नौबत झड़ना (बजना)—(१) **आनंदोत्सव होना** । (२) **प्रताप की घोषणा होना** । नौबत बजावत—(१) **खुशी मनाता है** । उ.—निंदा जग उपहास करत, मग बंदीजन जस गावत । हठ, अन्याय अधर्म, सूर नित नौबत द्वार बजावत—१-१४१ । (२) **प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा करता है** । नौबत बजाकर (दी टकोर)—**डंके की चोट पर, खुल्लमखुल्ला** ।

नौबती—संज्ञा पुं. [हिं. नौबत] **नौबत बजानेवाला** ।

नौमासा—संज्ञा पुं. [सं. नवमास] **गर्भ का नवाँ महीना** ।

नौमि—पद [सं. नमामि] **मैं नमस्कार करता हूँ** ।

नौमी—संज्ञा स्त्री. [सं. नवमी] **दोनों पक्षों की नवीं तिथि** । उ.—(क) नौमी-नेम भली बिधि करैं—९-५ । (ख) नौमी नवसत साजिकै हरि होरी है—२४११ ।

नौरंग—संज्ञा पुं.—[हिं. औरंग](**औरंगजेब**) **का रूपांतर** ।

नौरतन—संज्ञा पुं. [सं. नवरत्न] **'नौनगा' नामक गहना** ।

संज्ञा स्त्री.—**नौ मसालों की चटनी** ।

नौरोज़—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **पारसियों के नव वर्ष का नया दिन** । (२) **त्योहार या उत्सव का दिन** ।

नौल—वि. [सं. नवल] **नया, नूतन** ।

नौलक्खा, नौलखा—वि. [हिं. नौ+लाख] **नौलाख का** ।

नौलासी—वि. [देश.] **कोमल, मुलायम** ।

नौशा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **दूल्हा, बर** ।

नौशी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **दुलहिन, नववधू** ।

नौसत—संज्ञा पुं. [हिं. नौ+सात] **सोलह शृंगार** । उ.—नौसत साजे चली गोपिका गिरिवर पूजन हेत ।

नौसर, नौसरा—संज्ञा पुं. [हिं. नौ+सर] **नौलड़ा हार** ।

नौसिख, नौसिखिया, नौसिखुवा—वि. [सं. नवशिक्षित] **जिसने नया-नया ही कोई काम सीखा हो** ।

नौहड़—संज्ञा पुं. [सं. नव + हिं. हाँड़ी] **नयी हाड़ी** ।

न्यवछावार, न्यवछावरि, न्यवछावरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. निछावर] (१) **निछावर, वारा फेरा** ।

मुहा.—न्यवछावर करति—**उत्सर्ग करती हैं, वारती हैं** । उ.—सूरदास प्रभु की छबि ब्रज ललना निरखि थकित तन-मन न्यवछावरि करति आनंद भरते—२३५३ । (२) **निछावर या वाराफेरा की वस्तु** । उ.—मुक्ति-भुक्ति न्यवछावरी पाई सूर सुजान—१० उ० ८ । (३) **इनाम, नेग** ।

न्यस्त—वि. [सं.] (१) **रखा हुआ** । (२) **छोड़ा-त्यागा हुआ** ।

संज्ञा पुं.—**धरोहर या अमानत रूप में रखा हुआ** ।

न्याइ, न्याउ—संज्ञा पु. [सं. न्याय] (१) **उचित या नियमानुकूल बात, नीति** । उ.—सूरदास वह न्याउ निबेरहु हम तुम दोऊ साहु—३३६८ । (२) **दो पक्षों के बीच निर्णय, निष्पक्ष निश्चय** । उ.—कौन करनी घाटि मोसौं, सो करौं फिरि काँधि । न्याय कै नहिं खुनुस कीजै, चूक पल्लै बाँधि—१-१९९ ।

न्याति—संज्ञा स्त्री. [सं. ज्ञाति, प्रा. णाति] (१) **रीति, प्रणाली, ढंग** । उ.—बैठे नंद करत हरि पूजा, बिधिवत् औ बहु भाँति । सूर स्याम खेलत तैं आए, देखत पूजा न्याति—१०-२६० । (२) **जाति** । उ०—मधुकर कहा कारे की न्याति । ज्यौं जलमीन कमल मधुपन कौ छिन नहिं प्रीति खटाति—३१६८ ।

न्यान, न्याना—वि. [सं. अज्ञान] **नासमझ** ।

न्याय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नीतियुक्त या उचित बात** । (२) **सत्-असत् का ज्ञान** । (३) **प्रमाण या तर्कयुक्त वाक्य** ।

वि.—**न्यायी, नीतियुक्त व्यवहार करनेवाला** । उ.—तुम न्याय कहावत कमलनैन—१६७७ ।

न्यायकर्त्ता—संज्ञा पुं. [सं.] **न्याय करनेवाला** ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायतः—क्रि. वि. [सं.] (१) **न्यायानुसार**। (२) **ठीक-ठीक**।

न्यायपरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **न्यायी होने का भाव**।

न्यायसंगत—वि. [सं.] **उचित, ठीक**।

न्यायाधीश—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रधान न्यायकर्त्ता**।

न्यायालय—संज्ञा पुं. [सं.] **अदालत, कचहरी**।

न्यायी—संज्ञा पुं. [सं. न्यायिन्] **न्याय शील**।

न्यायोचित—वि. [सं.] **उचित**] **ठीक**।

न्यार, न्यारा—वि. [सं. निर्निकट, प्रा. निन्निअड़, निन्नियर, पू. हिं. निन्यार, हिं. न्यारा] (१) **अलग, पृथक्, जो साथ न हो**। उ.—........नाम सर्मिष्ठा तासु कुमारी। तासु देवयानी सौं प्यार। रहै न तासौं पल भर न्यार—९-१७४। (२) **जो पास न हो**। (३) **भिन्न, अन्य**। (४) **निराला, अनोखा**।

न्यारी—वि. [हिं. न्यारा] (१) **निराली, विलक्षण, अनोखी**। उ.—परम रुचिर मनि-कंठ किरनि-गन, कुंडल-मुकुट प्रभा न्यारी—१-६६। (२) **और ही, भिन्न, अन्य**। उ.—दूध बरा उत्तम दधिबाटी, गाल-मसूरी की रुचि न्यारी—१०-२२७। (३) **अलग, पृथक**। उ.—एक ही संग हम तुम सदा रहति, आजु ही चटकि तू भई न्यारी—१२००।

न्यारे—क्रि. वि. [हिं. न्यारा] (१) **दूर, अलग**। उ.—क्यौं दासी सुत कैं पग धारे?.......। सुनियत हीन, दीन, वृषली-सुत, जाति-पाँति तैं न्यारे—१-२४२। (२) **और ही, अलग-अलग, भिन्न-भिन्न**। उ.—(क) बहुत भाँति मेवा सब मेरे षटरस व्यंजन न्यारे—४६४। (ख) मथुरा के द्रुम देखियत न्यारे—२७८१।

न्यारो, न्यारौ—क्रि. वि. [हिं. न्यारा] (१) **दूर, पास नहीं**। उ.—न्यारो करि गयंद तू अजहूँ—२५८६। (२) **अलग, पृथक्**। उ.—पतित - समूह सबै तुम तारे, हुतौ जु लोक भरचौ। हौं उनतैं न्यारौ करि डारचौ, इहिं दुख जात मरचौ—१-१५। (३) **साथ में नहीं**। उ.—जाति-पाँति कुलहू तैं न्यारौ, है दासी कौ जायौ—२१-२४४। (४) **निराला, अनोखा**। उ.—कमल नैन काँधे पर न्यारो पीत बसन फहरात—२५३६।

न्याव—संज्ञा पुं. [सं. न्याय] (१) **आचरण नीति**। उ.—ऊधो, ताको न्याव है जाहि न सूझै नैन। (२) **उचित बात**। (३) **सत्-असत् -बुद्धि**। (४) **विवाद का निर्णय**।

न्यास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रखना, स्थापना**। (२) **यथाक्रम लगाना, सजाना या प्रस्तुत करना**। (३) **धरोहर, थाती**। (४) **त्याग**। (५) **संन्यास**। (६) **देव-अंगों पर विशेष वर्णों का स्थापन**। उ.—मुद्रा न्यास अंग अँग भूषन पति-व्रत ते न टरों—३०२७। (७) **रोग-बाधा-शान्ति के लिए अंगों पर हाथ रख कर मंत्र पढ़ना**।

न्यून—वि. [सं.] (१) **कम**। (२) **घट कर**। (३) **नीच**।

न्यूनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कमी**। (२) **हीनता**।

न्योछावर—संज्ञा स्त्री. [हिं. निछावर] **निछावर**।

न्योतना—क्रि. स. [हिं. न्योता] **निमन्त्रित करना**।

न्योतनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. न्योतना] **खाना-पीना, दावत**।

न्योतहरी—संज्ञा पुं. [हिं. न्योता] **निमंत्रित व्यक्ति**।

न्योता—संज्ञा पुं. [सं. निमंत्रण] (१) **बुलावा**। (२) **भोजन का निमंत्रण**, (३) **दावत**। (४) **न्योते में दिया जाने वाला धन**।

न्योली—संज्ञा स्त्री. [सं. नली] **पेट के नलों को पानी से साफ करने की हठयोगियों की क्रिया**।

न्यौछावर—संज्ञा स्त्री. [हिं. निछावर] **निछावर, उत्सर्ग, वारा-फेरा, उतारा**। उ.—सूर कहा न्यौछावर करियै अपनैं लाल ललित लरखर पर—१०-६३।

न्यौति—क्रि. स. [हिं. न्योतना] **निमंत्रण देकर, बुलाकर**। उ.—जग्य-पुरुष गए बैकुंठ धामहिं जबै, न्यौति नृप प्रजा कौ तब हँकारयौ—४-११।

न्यौत्यौ—क्रि. स. [हिं. न्योतना] **न्योता दिया, निमंत्रित किया**। उ.—इच्छा करि मैं बाम्हन न्यौत्यौ, ताकौं स्याम खिझावै—१०-२४६।

न्हवाइ—क्रि. स. [हिं. नहलाना] **नहलाकर, स्नान करा कर**। उ.—जननी उबटि न्हवाइ (सिसु) क्रम सौं लीन्हें गोद—१०-४२।

न्हवायौ—क्रि. स. [हिं. नहलाना] **नहलाया, स्नान कराया**। उ.—जज्ञ कराइ प्रयाग न्हयायौ—६-८।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्हवावत—क्रि. वि. [हिं. नहाना] **नहाते समय।** उ.—मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी।...............। काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै नागिनि सी भुईं लोटी—१०-१७५।

न्हाइ—क्रि. अ. [हिं. नहाना] **नहा कर, स्नान करके।** उ.—रिषि कह्यौ, आवत हौं मैं न्हाइ—६-५।

न्हाउ—क्रि. अ. [हिं. नहाना] **नहाओ, स्नान करो।** उ.—ग्रीषम कमल-बदन कुम्हिलैहैं, तजि सर निकट दूरि कित न्हाउ—६-३४।

न्हाएँ—क्रि. अ. सवि. [हिं. नहाना] **नहाने से, स्नान करने से।** उ.—जो सुख होत गुपालहिं गाएँ। सो सुख होत न जप तप कीन्हैं, कोटिक तीरथ न्हाएँ—२-६।

न्हात—क्रि. अ. [हिं. नहाना] **स्नान करते-करते, नहाते नहाते।** उ.—दुरवासा दुरजोधन पठयौ पांडव-अहित बिचारी। साकपत्र लै सबै अघाए, न्हात भजे कुस डारी—१-१२२।

न्हान—संज्ञा पुं. [हिं. नहाना] **स्नान, नहान।** उ.—गौतम लख्यौ, प्रात है भयौ। न्हान काज सो सरिता गयौ—६-८।

न्हाना—क्रि. अ. [हिं. नहाना] **स्नान करना।**

न्हावन—संज्ञा पुं. [हिं. नहाना] **स्नान, नहाना।** उ.—एक बार ताके मन आई। न्हावन काज तड़ाग सिधाई—६-१७४।

न्हावै—क्रि. अ. [हिं. नहाना] **नहाता है।** उ.—मानसरोवर छाँड़ि हंस तट काग-सरोवर न्हावै—२-१३।

न्हाहिं—क्रि. अ. [हिं. न्हाना] **नहाते हैं।** उ.—हंस उज्जल पंख निर्मल अंग मलि-मलि न्हाहिं—१-३३८।

न्हैये—क्रि. अ. [हिं. नहाना] **नहाइए।** उ.—चलौ सबै कुरुच्छेत्र तहाँ मिलि न्हैये जाई—१० उ.—१०५।

प

प—**पवर्ग का पहला और हिंदी का इक्कीसवाँ व्यंजन; वह स्पर्श ओष्ठ्य वर्ण है।**

पंक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कीच, कीचड़।** उ.—कुंभकरन-तन पंक लगाई, लंक बिभीषन पाइ—६-८३। (२) **सुगंधित लेप।** उ.—स्याम अंग चंदन की आभा नागरि केसरि अंग। मलयज पंक कुमकुमा मिलि कै जल-जमुना इक रंग।

पंकज—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल।**

वि.—**कीचड़ से उत्पन्न होनेवाला।**

पंकजराग—संज्ञा पुं. [सं.] **पद्मराग मणि।**

पंकजासन—संज्ञा पुं. [सं.] **ब्रह्मा।**

पंकजिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कमलिनी।**

पंकरुह, पंकेरुह—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल।** उ.—मनो मुख मृदुल पानि पंकेरुह गुरुगति मनहुँ मराल बिहंगा—१६०५।

पंकिल—वि. [सं.] **जिसमें कीचड़ हो।**

पंक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पाँती, कतार।** (२) **भोज में साथ-साथ खानेवालों की पाँती।**

पंक्तिच्युत—वि. [सं.] **बिरादरी से निकाला हुआ।**

पंख—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष, प्रा. पक्ख] **पर, डैना, पक्ष।** उ.—हंस उज्जल पंख निर्मल अंग मलि मलि न्हाहिं—१-३३८।

मुहा.—पंख जमना—(१) **भाग जाने के लक्षण दीख पड़ना।** (२) **बुरे रास्ते पर जाने के रंग-ढंग दीख पड़ना।** (३) **अंत समय आया जान पड़ना।** पंख लगना—**बहुत वेगवान होना।**

पंखड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. पद्म] **फूल का दल।**

पंखा—संज्ञा पुं. [हिं. पंख] **बेना, बिजना।**

पँखिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. पंख] **फूल का दल, पंखुड़ी।**

पंखि, पंखी—संज्ञा पुं. [सं. पक्षी, पा. पक्खी, हिं. पंखी]

(१) **पक्षी, चिड़िया।** उ.—(क) हौं तौ मोहन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरह जरी रे तू कत जारत रे पापी, तू पंखि पपीहा पिउ पिउ पिउ अधराति पुकारत—२८४६ । (ख) पंखी पति सबही सकुचाने चातक अनँग भरयो–२८६५ । (२) पतिंगा । (३) पंखुड़ी

संज्ञा स्त्री. [हिं. पंखा] छोटा पंखा ।

खुड़ा—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष] कंधे और बाँह का जोड़ ।

खुड़ी, पंखुड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पंख] फूल का दल ।

ग—वि. [सं. पंगु] (१) लँगड़ा । उ.—(क) पंछी एक सुहृद जानत हौं, करयौ निसाचर भंग । तातैं बिरमि रहे रघुनंदन, करि मनसा-गति पंग—६-८३ । (ख) छोभित सिंधु, सेष सिर कंपित पवन भयौ गति पंग—६-१५८ । (ग) सूर हरि की निरखि सोभा भई मनसा पंग- ६२७ । (घ) भई गिरा-गति पंग—६४० । (२) स्तब्ध, बेकाम । उ०—नखसिख रूप देखि हरि जू के होत नयन-गति पंग—३०७६ ।

त, पंगति—संज्ञा स्त्री. [सं. पंक्ति] श्रेणी, पाँती, पंक्ति, कतार । उ.—(क) कनक मनि मेखला राजत, सुभग स्यामल अंग । मनौ हंस अकास-पंगति, नारि-बालक-संग—६३३ । (ख) कोउ कहति अलि-बाल-पंगति जुरी एक सँजोग—६३६ । (ग) मनौ इंद्रबधून पंगति सोभा लागति भारि—६२१ । (घ) चपला चमचमाति आयुध बग-पंगति ध्वजा अकार—२८२६ । (२) (२) साथ भोजन करनेवालों की पंक्ति । (३) भोज । (४) सभा, समाज ।

ला, पँगला—वि. [हिं. पंग] लूला-लँगड़ा ।

—वि. [हिं. पंग] (१) लंगड़ा । (२) बेकाम ।

, पंगुल— वि. [सं.] जो पैर से चल न सकता हो, लँगड़ा । उ.—जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै—१-१ ।

संज्ञा पुं. [सं.] शनिदेव ।

—वि. [सं.] पाँच, चार और एक ।

संज्ञा पुं—(१) पाँच या अधिक व्यक्तियों का समाज, जनता ।

मुहा.-पंच की भीख—सर्वसाधारण का आशीर्वाद, जनता की कृपा । उ.—(क) मैं-मेरी कबहूँ नहिं कीजै, कीजै पंच-सुहातौ—१-३०२ । (ख) राज करैं वे धेनु तुम्हारी, नंदहिं कहति सुनाई । पंच की भीख सूर बलि मोहन कहति जसोदा माई—४५५ । पंच की दुहाई—समाज से धर्म या न्याय करने की पुकार । पंच-परमेश्वर—समाज का मत ईश्वर का वाक्य है ।

(२) किसी बात का न्याय करने के लिए चुने गये पाँच या अधिक आदमी ।

पंचक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पाँच का समूह । (२) पाँच नक्षत्र जिनमें नये कार्य का करना मना है ।

पंचकन्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] पाँच नारियाँ जो विवाहादि होने पर भी कन्यावत् मान्य हैं—अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी ।

पंचकवल—संज्ञा पुं. [सं.] पाँच ग्रास जो भोजन के पूर्व निकाल दिये जाते हैं ।

पंचकाम—संज्ञा पुं. [सं.] कामदेव के पाँच रूप—काम, मन्मथ, कंदर्प, मकरध्वज और मीनकेतु ।

पंचकोण—वि. [सं.] जिसमें पाँच कोने हों, पँचकोना ।

पंचकोस, पंचकोश—संज्ञा पुं. [सं.] काशी जो पाँच कोस लंबी-चौड़ी भूमि में बसी है ।

पंचकोसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पंचकोस] काशी की परिक्रमा ।

पंचगव्य—संज्ञा पुं. [सं.] गाय से प्राप्त पाँच द्रव्य—दूध, दही, घी, गोबर, और गोमूत्र ।

पंचगीत—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध के पाँच प्रकरण – वेणुगीत, गोपीगीत, युगलगीत, भ्रमरगीत और महिषी गीत ।

पंचजन—संज्ञा पुं. [सं.] एक असुर जो श्रीकृष्ण के गुरु संदीपन का पुत्र चुरा ले गया था । श्रीकृष्ण ने इसे मारा था और इसी की हड्डियों से उनका 'पांचजन्य' शंख बना था ।

पंचतत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पाँच तत्व—पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश । (२) मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन (वाम मार्ग) ।

पंचतपा वि. [सं. पंचतपस्] पंचाग्नि तापनेवाला ।

पंचतरु—संज्ञा पुं. [सं.] मंदार, परिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन ।

पंचता—संज्ञा स्त्री. [सं.] मृत्यु ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पँचतोलिया—संज्ञा पुं. [हिं. पाँच+तोला] **एक तरह का बहुत महीन या झीना कपड़ा।**

पंचत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पांच का भाव।** (२) **मृत्यु।**
मुहा.—पंचत्व (को) प्राप्त होना—**मृत्यु होना।**

पंचदश—वि. [सं.] **दस और पंच, पंद्रह।**

पंचदेव—संज्ञा पुं. [सं.] **पांच प्रधान देवता—आदित्य, रुद्र, विष्णु गणेश और देवी।**

पंचन—संज्ञा पुं. बहु [सं. पंच+हिं. न, नि] **पंचों में।**
उ.—साँची की झूठी करि डारैं,पंचन मैं मर्यादा जाइ —१३१६।

पंचनद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पंजाब की पांच प्रधान नदियाँ—सतजल, व्यास, रावी, चनाब और झेलम।** (२) **उक्त नदियों का प्रदेश।** (३) **काशी का 'पंच गंगा' नामक तीर्थ।**

पंचनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] **बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ।**

पंचनामा—संज्ञा पुं. [हिं. पंच+नाम] **पंचों का निर्णय।**

पंचपात्र—संज्ञा पुं. [सं.] **पूजा का एक पात्र।**

पंचप्राण—संज्ञा पुं. [सं.] **पांच प्राण या वायु—प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान।**

पंचबटी—संज्ञा स्त्री. [सं. पंचवटी] **दंडकारण्य का वह स्थान जहाँ सीता-हरण हुआ था।**

पंचबाण, पंचबान—संज्ञा पुं. [सं. पंचबाण] **कामदेव के पांच बाण।**

पंचभूत—संज्ञा पुं. [सं.] **आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी—ये पांच प्रधान तत्व जिनसे सृष्टि की उत्पत्ति हुई है।**

पंचम—वि. [सं.] (१) **पाँचवाँ।** (२)**सुंदर।** (३,**निपुण।**
संज्ञा पुं. (१) **संगीत के सात स्वरों में पाँचवाँ।** (२) **एक राग।**

पंच मकार—संज्ञा पुं. [सं.] **मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन (वाम-मार्ग)।**

पंचमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **किसी पक्ष की पाँचवीं तिथि।** (२) **एक रागिनी।** (३) **अपादान कारक।**

पंचमुख—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शिव।** (२) **सिंह।**

पंचमुखी—वि. [सं. पंचमुखिन्] **पांच मुखवाला।**

पँचमेल—वि. [हिं. पाँच+मेल] (१) **पांच या अधिक तरह की।** (२) **मिली-जुली।** (३) **साधारण।**

पँचरंग, पंचरंगा-वि.[हिं. पाँच+रंग] (१) **पांच रंग का।**
उ.-(क) पँचरंग सारी मँगाइ, बधू जननि पैहराइ—१०-६५। (ख) पगनि जेहरि लाल लहँगा अंग पँचरंग सारि—पृ. ३४४ (२६)। (२) **रंग-बिरंगा।**

पंच रत्न—संज्ञा पुं [सं.] **पांच रत्न—सोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती।**

पंचलड़ा—वि. [हिं. पाँच+लड़] **पांच लड़ों का।**

पँचलड़ी, पंचलरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँच+लड़ी] **पांच लड़ों की माला।**

पंचवटी—संज्ञा पुं. [सं.] **दंडकारण्य का वह स्थान जहाँ श्रीराम वनवास-काल में रहे थे और जहाँ से सीता-हरण हुआ था।**

पंचबाण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **काम के पांच बाण—द्रवण, शोषण, तापन, मोहन और उन्माद।** (२) **काम के पाँच पुष्पबाण—कमल, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल।** (३) **कामदेव।**

पंचशब्द—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मंगलोत्सव में बजनेवाले पांच बाजे—तंत्री, ताल, झाँझ, नगारा और तुरही।** (२) **पांच प्रकार की ध्वनि—वेदध्वनि, बंदीध्वनि, जयध्वनि, शंखध्वनि और निशानध्वनि।**

पंचशर—संज्ञा पुं. [सं.] **कामदेव।**

पंचांग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पांच अंग।** (२) **तिथिपत्र।**

पंचाक्षर—वि. [सं.] **जिसमें पांच अक्षर हों।**
संज्ञा पुं.— **एक शिव-मंत्र—ॐ नमः शिवाय।**

पंचाग्नि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक तप जिसमें चारों ओर आग जलाकर धूप में बैठा जाता है।**

पंचानन—वि. [सं.] **जिसके पांच मुख हों।**
संज्ञा पुं.—(१) **शिव जी।** (२) **सिंह।**

पंचामृत—संज्ञा पुं. [सं.] **दूध, दही, घी, चीनी और मधु मिलाकर बनाया गया पेय जिससे देवता को स्नान कराया जाता है।**

पंचायत—संज्ञा स्त्री. [सं. पंचायतन](१) **पंचों की सभा।** (२) **पंचों का वाद-विवाद।** (३) **लोगों की बकवाद।**

पंचायतन—संज्ञा पुं. [सं.] **पाँच देव-मूर्तियों का समूह।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ंचायती—वि. [हिं. पंचायत] (१) **पंचायत का, पंचायत संबंधी** (२) **साझे का** । (३) **सब लोगों का** ।

ंचाल—संज्ञा पुं. [सं.] **एक प्राचीन देश, द्रौपदी यहीं के राजा की पुत्री थी** ।

ंचाली—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पांचाली, द्रौपदी** ।

ंचाशिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पचास छंदवाला ग्रंथ** ।

ंचौवर—वि. [हिं. पाँच + सं. आर्वत] **पांच तहवाला** ।

ंछाला—संज्ञा पुं. [हि. पानी + छाला] (१) **छाला, फफोला** । (२) **छाले या फफोले का पानी** ।

ंछी—संज्ञा पुं.[सं. पक्षी] **पक्षी, चिड़िया, खग** । उ.—जा दिन मन-पंछी उड़ि जैहै । ता दिन तेरे तन-तरुवर के सबै पात झरि जैहैं—१-८६ ।

ंच—वि. [हिं. पाँच] **पांच** ।

ंछिनिपति—संज्ञा पुं. [सं. पक्षीपति] **पक्षियों का राजा, गरुड़** । उ.—सोई हरि काँधे कामरि, काछ किए नाँगे पाइनि गाइनि टहल करैं । त्रिभुवनपति दिसिपति नर-नारी-पति पंछिनिपति, रबि ससि जाहि डरैं—४५३ ।

ंजर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शरीर की हड्डियों का ढाँचा, ठठरी, कंकाल** । (२) **शरीर** । (३) **पिंजड़ा** । (४) **घेरा** । उ.—जब सुत भयो कहेउ ब्राह्मन ते अर्जुन गये ग्रह ताइ । सर-रोप्यो चहुँ दिसि ते जहाँ पवन नहिं जाइ—सारा. ८५१ ।

ंजरना—क्रि. अ. [हिं. पजरना] **जलना-बलना** ।

ंजरी—संज्ञा स्त्री. [सं. पंजर] **अर्थी, टिकठी** ।

ंजा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **पांच का समूह** । (२) **हाथ की पांचों उंगलियों का समूह** ।

मुहा—पंजा फैलाना (बढ़ाना)—**लेने का डौल लगाना** । पंजा मारना—**झपट्टा मारना** । पंजे झाड़कर चिपटना या पीछे पड़ना—**जी-जान से जुट जाना** ।

(३) **हथेली का संपुट, चंगुल** । (४) **जूते का अगला भाग** । (५) **जुए का एक दांव** ।

मुहा.—छक्का-पंजा—**दांव-पेच, चालाकी** ।

ंजीरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँच+जीरा] **भुने आंटे की मिठाई जो प्रसाद-रूप में बांटी जाती है** ।

ंडल—वि. [सं. पांडुर] **पीला, पांडु वर्ण का** ।

ंड—संज्ञा पं. [सं. पिंड] **पिंड, शरीर** ।

पंडा—संज्ञा पुं. [सं. पंडित] (१) **तीर्थ या मंदिर का पुजारी** । (२) **घाटिया** । (३) **रोटी बनानेवाला** ।

पंडाल—संज्ञा पुं. [?] **सभा-मंडप** ।

पंडित—वि. [सं.] (१) **विद्वान** । (२) **कुशल, चतुर** ।

पंडिता—वि. स्त्री. [सं.] **विदुषी** ।

पंडिताइन—संज्ञा स्त्री. [सं. पंडित] **पंडितानी** ।

पंडिताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पंडित + आई] (१) **विद्वता, पांडित्य** । (२) **चालाकी, कुशलता (व्यंग्य)** ।

पंडिताऊ वि. [हिं. पंडित] **पंडितों के ढंग का** ।

पंडितानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पंडित] **पंडित की स्त्री** ।

पंडु—वि. [सं.] (१) **पीला** । (२) **सफेद** ।

पंडुक—संज्ञा. स्त्री. [सं. पांडु] **पिड़की, फाख्ता** ।

पंडौ—संज्ञा पुं. [सं. पांडव] **पाँचों पांडव** ।

पंथ—संज्ञा पुं. [सं. पथ] (१) **मार्ग, रास्ता, राह** । उ-(क) मोंकौं पंथ बतायौ सोई नरक कि सरग लहौं—१-१५१ । (ख) चलत पंथ कोउ था क्यो होई —३-१३ । (२) **आचार-व्यवहार की रीति** । उ.—नहिं रुचि पंथ पयादि डरनि छकि पंच एकादस ठानै—१-६० ।

मुहा—.पंथ गहना—(१) **चलने के लिए राह पर होना** । (२) **विशेष प्रकार का आचरण करना** । पंथ गहौ—**चलो, जाओ** । उ.—बिछुरत प्रान पयान करेंगे, रहौ आजु पुनि पंथ गहौ—६-३३ । पंथ दिखाना—(१) **मार्ग बताना** । (२) **धर्माचरण की रीति बताना या तत्संबंधी उपदेश देना** । पंथ देखना (निहारना)—**बांट जोहना, प्रतीक्षा करना** । पंथ निहारौं—**प्रतीक्षा करता हूँ, बाट जोहती हूँ** । उ.-(क) तुमरो पंथ निहारौं स्वामी । कबहिं मिलौगे अंतर्यामी । (ख) मैं बैठी तुम पंथ निहारौं । आवौ तुम पै तन मन वारौं । पंथ में (पर) पाँव देना—(१) **चलना** । (२) **विशेष आचरण करना** । पंथ पर लगना—**रास्ते पर होना, चाल चलना** । किसी के पंथ लगना—(१) **किसी का अनुयायी होना** । (२) **किसी को तंग करना** । पंथ पर लाना (लगाना)—(१) **ठीक मार्ग पर लाना** । (२) **अच्छी चाल सिखाना** । (३) **अनुयायी बनाना** । पंथ सेना—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाट जोहना, आसरा देखना। एक पंथ द्वै काज—**एक कार्य करके अथवा एक रीति-नीति का निर्वाह करने से दोहरा लाभ होना।** उ.—ज्ञान बुझाइ खबरि दै आवहु एक पंथ द्वै काज—२९२५।

(३) **धर्म-मार्ग, संप्रदाय।**

मुहा.—पंथ लेना—**अनुयायी बनना।** पंथ पर लाना (लगाना)—**अनुयायी बनाना।**

संज्ञा पुं. [सं. पथ्य] **रोगी का हलका भोजन।**

पंथकि, पंथकी, पंथि, पंथिक, पंथी—संज्ञा पुं. [सं. पथिक] **राही, पथिक।** उ.—वीर बटाऊ पंथी हो तुम कौन देश तें आए—२९८३।

पंथान, पंथाना—संज्ञा पुं. [सं. पंथ] **मार्ग।**

पंथी—संज्ञा पुं. [सं. पंथिन्] **किसी मत का अनुयायी।**

पंद—संज्ञा स्त्री. [फा.] **सीख, उपदेश**

पँधलाना—क्रि. स. [देश.] **बहलाना, फुसलाना।**

पंपा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दक्षिण की एक नदी और उसका निकटवर्ती ताल।**

पंपासर—संज्ञा पुं. [सं.] **दक्षिण की पंपानदी का निकटवर्ती ताल।**

पँवर—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँव] **खड़ाऊँ, पाँवरी।**

पँवरना—क्रि. अ. [सं. प्लव] (१) **तैरना, पैरना** (२) **थाह लेना।**

पँवरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पौरी] **प्रवेशद्वार, ड्योढ़ी।** उ.—आतुर जाइ पँवरि भयो ठाढ़ो—२४६५।

पँवरिआ, पँवरिया—संज्ञा पुं. [हिं. पौरी] **द्वारपाल, दरबान।** उ.—(क) आतुर जाइ पँवरि भयौ ठाढ़ो कहो पँवरिआ जाइ—२४६५। (ख) सकल खग गन पैक पायक पँवरिया प्रतिहार—२७५५।(२) **याचक।**

पँवरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पौरी] **द्वार, ड्योढ़ी।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँव] **खड़ाऊँ, पाँवरी।**

पँवाड़ा—संज्ञा पुं. [सं. प्रवर] **खूब बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई कहानी। या बात।**

पँवारना—क्रि. स. [सं. पवारण] **हटाना, फेंकना।**

पँवारे—क्रि. स. [हिं. पँवारना] **हटाये, दूर किये।** उ.—(क) बिंब पँवारे लाजही दामिनि द्युति थोरी—१८२१। (ख) बिंब पँवारे लाजहीं हरषत बरसत फूल—२०६५।

पंसारी—संज्ञा पुं. [सं. पण्यशाली] **मसाला बेचनेवाला।**

पंसासार—संज्ञा पुं. [सं. पाशक+सारि] **पासे का खेल।**

पइअत—क्रि. स. [हिं. पाना] **पाता हैं।** उ.—जाको कहूँ थाह नहिं पइअत अगम अपार अगाधै—३२८४।

पइग—संज्ञा पुं. [हिं. पग] **डग, कदम।**

पइज—संज्ञा स्त्री. [हिं. पैज] (१) **प्रतिज्ञा** (२) **हठ।**

पइठ—संज्ञा स्त्री. [हिं. पैठ] (१) **प्रवेश।** (२) **गति, पहुँच।**

पइठना—क्रि. अ. [हिं. पैठना] **प्रवेश करना, घुसना।**

पइयै—क्रि. स. [हिं. पाना] **पाइए, प्राप्त कीजिए।** उ.—ऊधौ, चलौ बिदुर कैं जइयै। दुरजोधन कैं कौन काज जहँ आदर-भाव न पइयैं—१-२३९।

पइसना—क्रि. अ. [हिं. पैठना] **प्रवेश करना, घुसना।**

पइसार—संज्ञा पुं. [हिं. पइसना] **प्रवेश, पैठ।**

पईठि—क्रि. अ. [हिं. पैठना] **पैठकर।** उ.—हारेहू नहिं हरत अमित बल बदन पयोठि पईठि—पृ. ३३४ (३६)।

पउँरि, पउँरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पौरी] **ड्योढ़ी, द्वार।**

पकड़—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रकृष्ट, प्रा. पक्कड़] (१) **धरने, पकड़ने या ग्रहण करने का काम।** (२) **पकड़ने का ढंग।** (३) **हाथापाई।** (४) **दोष, भूल आदि निकालने की क्रिया।**

पकड़ना—क्रि. स. [हिं पकड़] (१) **किसी चीज को धरना, थामना या ग्रहण करना।** (२) **बंदी बनाना।** (३) **कुछ करने न देना।** (४) **पता लगाना।** (५) **टोकना, रोकना।** (६) **आगे बढ़े हुए के बराबर हो जाना।** (७) **लगकर फैलना।** (८) **धारण करना।** (९) **घेरना, छोपना, ग्रसना।**

पकड़वाना—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **ग्रहण कराना।**

पकड़ाना—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **थमाना, ग्रहण कराना।**

पकना—क्रि. अ. [सं. पक्व, हिं. पक्का+ना] (१) **कच्चा न रह जाना।** (२) **आँच से सीझना या गलना।** (३) **फोड़े-फुंसी का मवाद से भरना।** (४)**चौसर की गोटी का सब घर पार कर लेना।** (५) **सौदा पटना।**

पकरन—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **पकड़ना, थामना, रोकना, छूना।** उ.—कबहूँ निरखि हरि आपु छाहँ कौं, कर सौं पकरन चाहत—१०-११०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रता—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **पकड़ना।**

...राए—क्रि. स. [हिं. पकड़ाना] **पकड़ने को प्रेरित किया, पकड़ाया।** उ.—मोहन प्यारी सैन दे हलधर पकराए—२४४६।

...रावै—क्रि. स. [हिं. पकड़वाना (प्रे.)] **पकड़वाता है, (दूसरे से) बंदी बनवाता है।** उ.— द्रुपद-सुताहिं दुष्ट दुरजोधन सभा माहिं पकरावै—१-१२२।

...रि—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **पकड़कर, थामकर, हाथ में लेकर।** उ.—मिथ्याबाद आप-जस सुनि-सुनि, मूछहिं पकरि अकरतौ—१-८०३।

...रिबे—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **पकड़ने (के लिए) गहने या ग्रहण करने (के उद्देश्य से)।** उ.—मुख प्रतिबिंब पकरिबे कारन हुलसि घुटुरुवनि धावत—१०-१०२।

...रिबैं—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **पकड़ने को।** उ.—मनिमय कनक नंद कैं आँगन बिंब पकरिबैं धावत—१०-११०।

...रिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाकर] **'पाकर' नामक वृक्ष।**

...री—क्रि. स. स्त्री. [हिं. पकड़ना] (१) **धारण की, अपनायी, पकड़ी।** उ.—अधम समूह-उधारन-कारन तुम जिय जक पकरी—१-१३०। (२) **इस तरह पकड़ी कि छूट न सके।** उ.—(क) दुस्सासन अति दारुन रिस करि, केसनि करि पकरी—१-२५४। (ख) मन-क्रम बचन नंदनंदन उर यह दृढ़ करि पकरी—३३६०।

...रै—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **पकड़ता है, (हाथ में) लेता है, ग्रहण करता है।** उ.—जद्यपि मलय-बृच्छ जड़ काटैं, कर कुठार पकरै। तऊ सुभाव न सीतल छाँड़ैं, रिपु-तन-ताप हरै—१-११७।

...रैगौ—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **पकड़ेगा, थामेगा, गहेगा।** उ.—जो हरि-ब्रत निज उर न धरैगौ। तो को अस माता जु अपुन करि करे कुठाँव पकरैगौ—१-७५।

...रयौ—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **पकड़ लिया, अधिकार में किया, बंदी बनाया।** उ.—रिस भरि गए परम किंकर तब, पकरयौ छूटि न सकौ—१-१५१।

...वान—संज्ञा पुं. [सं. पक्कान्न] **घी में तलकर बनाये गये खाद्य पदार्थ जो कई दिन तक खाये जा सकते हैं।**

पकवाना—क्रि. स. [हिं. पकाना] **पकानें का काम कराना, पकाने को प्रवृत्त करना।**

पकवान्ह—संज्ञा पुं. [हिं. पकवान] **पकवान।** उ.— अन्न-कूट बिधि करत लोग सब नेम सहित करि पकवान्ह—६१०।

पकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पकाना] **पकाने की क्रिया, भाव या वेतन।**

पकाए—क्रि. स. [हिं. पकाना] **आँच से तपा कर पका दिये।** उ.—बिधि-कुलाल कीने काचे घट ते तुम आनि पकाए—३१६१

पकाना—क्रि. स. [हिं. पकाना] (१) **कच्चे फल आदि को पुष्ट या तैयार करना।** (२) **आँच या गरमी से सिझाना या पक्का करना।**

मुहा.—कलेजा पकाना—**जी जलाना।**

(३) **फोड़े-फुंसी आदि को तैयार करना।** (४) **सौदा कराना।**

पकाव—संज्ञा पुं. [हिं. पकना] **पकने का भाव।**

पकौड़ा, पकौरा, पकौड़ा,—संज्ञा पुं [हिं. पकौड़ा=पका +बरी, बड़ी] **घी या तेल में तली बेसन या पीठी की बड़ी।** उ.—मूँग पकौरा पनौ पतबरा। इक कोरे इक भिजे गुरबरा—३९६।

पकौड़ी, पकौरी, पक्कौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. पकौड़ा] **छोटा पकौड़ा।** उ.—दधि, दूध, बरा, दहिरौरी। सो खात अमृत पक्कौरी—१०-१८३।

पक्का—वि. [सं. पक्क] (१) **पका हुआ।** (२) **पूरा, पूर्णता को प्राप्त।** (३) **पुष्ट, प्रौढ़।** (४) **साफ और ठीक।** (५) **कड़ा और मजबूत।** (६) **मँजा हुआ, अभ्यस्त।** (७) **अनुभव प्राप्त, दक्ष।** (८) **आँच पर पका हुआ।** (९) **टिकाऊ, दृढ़।** (१०) **निश्चित, अटल।** (११) **प्रमाणों से पुष्ट।** (१२) **टकसाली, प्रामाणिक मानवाला।**

पक्खर—वि. [सं. पक्क] **पक्का, पुख्ता।**

पक्व—वि. [सं.] **पका हुआ, पक्का।**

पक्वान्न—संज्ञा पुं. [सं.] **पकवान।**

पक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ओर, तरफ।** (२) **भिन्न अंग, पहलू।** (३) **भिन्न मत या विचार।** (४) **अनुकूल**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवृत्ति या स्थिति। (५) **लगाव, संबंध।** (६) **सेना, फौज।** (७) **साथ का समूह।** (८) **सहायक, साथी** (६) **विवादियों का समूह।** (१०) **पक्षी का पंख।** (११) **तीर में लगा पंख।** (१२) **चांद मास के दो अर्द्ध विभाग।** (१३) **घर, गृह।**

पक्षपात—संज्ञा पुं. [सं.] **तरफदारी।**

पक्षपाती—संज्ञा पुं. [सं.] **तरफदार।**

पक्षिराज—संज्ञा पुं. [सं.] **गरुड़।**

पक्षी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चिड़िया।** (२) **तरफदार।**

पक्ष्म—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष्मन्] **बरौनी।**

पखंड—संज्ञा पुं. [सं. पाखंड] **आडंबर, ढकोसला।**

पखंडी—वि. [हिं. पखंड] **आडंबर रचनेवाला।**

पख—संज्ञा स्त्री. [सं. पक्ष, प्रा. पक्खु] (१) **व्यर्थ की बढ़ाई हुई बात।** (२) **बाधक शर्त या नियम।** (३) **झगड़ा-बखेड़ा।** (४) **दोष, त्रुटि।**

पखड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. पक्ष्म] **फूलों की पंखुड़ी।**

पखराइ—क्रि. स. [हिं पखराना] **धुलवाकर।** उ.—चरन पखराइ कै सुभग आसन दियौ—२४६३।

पखराना—क्रि. स. [हिं. पखारना] **धुलवाना।**

पखरायौ—क्रि. स. [हिं. पखराना] **धुलवाया।** उ०—उत्तम बिधि सौं मुख पखरायौ—६०६।

पखरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पंखुड़ी] **फूलों की पंखुड़ी।**

पखवाड़ा, पखवारा—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष+वार, हिं. पखवारा] (१) **चाँद-मास के दो विभागों में एक।** (२) **पंद्रह दिन का समय।**

पखा—संज्ञा पुं. [हिं. पंखा] **पक्ष, पंख पर।**

पखाउज—संज्ञा पुं. हिं. पखावज] **पखावज नामक बाजा।** उ.—बीना झाँझ-पखाउज-आउज और राजसी भोग—६-७५।

पखान—संज्ञा पुं. [सं. पाषाण] **पत्थर।**

पखना, पखानो—संज्ञा पुं. [सं. उपाख्यान] **कहावत, कहनावत।** उ.—बालापन तें निकट रहत ही सुन्यौ न एक पखानो—३३६३।

पखारत—क्रि. स. [हिं. पखारना] **धोते हैं, (जल से) स्वच्छ करते हैं।** उ.—अपनौ मुख मसि-मलिन मंद मति, देखत दर्पन माहीं। ता कालिमा मेटिबे कारन, पचत पखारत छाहीं—२-२५।

पखारना—क्रि. स. [सं. प्रक्षालन, प्रा. पक्खाड़न] **धोना।**

पखारि—क्रि. स. [हिं. पखारना] **जल से धोकर।** उ.—चरन पखारि लियो चरनोदक धनि-धान कहि दैत्यारी—२५८७।

पखारी—क्रि. स. [हिं. पखारना] **जल से धोयी।** उ.—(क) अरु अँचयो जल बदन पखारी—१०-२४१। (ख) नई दोहनी पोंछि-पखारी—११७६।

पखारे—क्रि. स. [हिं. पखारना] **जल से धोये।** उ.—स्यामहिं ल्याई महरि जसोदा तुरतहिं पाइँ पखारे—१०-२३७।

पखावज—संज्ञा स्त्री. [सं. पक्ष+वाद्य] **एक बाजा।**

पखावजी—संज्ञा पुं. [हिं. पखावज] **पखावज बजानेवाला।**

पखिया—वि. [हिं. पख] **झगड़ालू, बखेड़िया।**

पखी, पखीरी—संज्ञा पुं. [सं. पक्षी] **पक्षी।** उ.—की सुक सीपज की बग पंगति की मयूर की पीड पखीरी—१६२७।

पखुड़ी, पखुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पखड़ी] **फूल की पंखुड़ी।**

पखेरुआ, पकेरुवा, पखेरू—संज्ञा पुं. [सं. पक्षालु, प्रा० पक्खाडु, हिं. पखेरू] **पक्षी, चिड़िया।** उ.—ससा सियार अरु बन के पखेरू धृग धृग स्रवन करी—२७४१।

पखौआ, पखौवा, पखौटा—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष] **पंख।** उ.—(क) मुख मुरली सिर मोर पखौआ बन-बन धेनु चराई—२६८४। (ख) मुख मुरली सिर मोर पखौआ गर घुँघुचीन को हार—१० उ०-११६।

पखौड़ा, पखौरा—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष] **कंधे की हड्डी।**

पग—संज्ञा पुं. [सं. पदक, प्रा. पअक, पक] **पैर, पाँव, डग।**

मुहा—पग धारे—**आये।** उ. (क) गरुड़ छाँड़ि प्रभु पाँय पियादे गज-कारन पग धारे—१-२५। (ख) ध्रुव निज पुर को पुनि पग धारे—४-६। (ग) सूर तुरत मधुवन पग धारे धरनी के हितकारी—२५३३। पग पग पर—**जरा-जरा सी दूर पर, हर स्थान पर, जहाँ जाय वहीं।** उ.—दीन जन क्यौं करि आवै सरनु ?……। पग पग परत कर्म-तम-कूपहिं, को करि कृपा बचावै—१-४८। फूँकि पग धारौ—**बहुत समझ**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झकर और सतर्कता से आओ । उ.—फूँकि फूँकि
रती पग धारौ अब लागीं तुम करन अयोग—१४६७ ।

डी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पग + डंडी] **मैदान में लोगों के चलने से बन जानेवाला पतला मार्ग** ।

डोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पग+डोरी] **पैर का बंधन** । उ.—जनु उड़ि चले बिहंगम को गन कटी कठिन पग डोरी—१० उ०-५२ ।

ड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. पटक, हिं. पाग + ड़ी] **सिर में बाँधने की पाग, साफा** ।

मुहा.—पगड़ी अटकना—**मुकाबला होना** । पगड़ी उछलना—**दुर्गति होना** । पगड़ी उछालना— (१) **दुर्गति बनाना** । (२) **हँसी उड़ाना** । पगड़ी उतरना—**अपमान होना** । पगड़ी उतारना—**अपमान करना** । पगड़ी बँधना—(१) **उत्तराधिकार मिलना** । (२) **अधिकार मिलना** । (३) **आदर मिलना** । पगड़ी बदलना—**मित्रता या नाता करना** । (किसी की) पगड़ी रखना—**इज्जत बचाना** । (किसी के आगे या सामने) पगड़ी रखना—**बहुत गिड़गिड़ाना** ।

ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पग + तल] **जूता** ।

सी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पग+दासी] **जूता, खड़ाऊँ** ।

—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. पग] **पैर** । उ.—नगन पगन पाछै गयौ—६-२ ।

—क्रि. अ. [सं. पाक] (१) **रस या चासनी लिपटना या सनना** । (२) **किसी के प्रेम में डूबना** ।

याँ—संज्ञा स्त्री. [हिं.पग] **जूती** ।

—संज्ञा पुं. [हिं. पग+रा] **डग, कदम** ।

संज्ञा पुं. [फ़ा. पगाह = सवेरा] **प्रभात, सबेरा** ।

—संज्ञा स्त्री. [हिं. पगड़ी] **पाग, पगड़ी** ।

—संज्ञा पुं. [हिं. पगरा], **पग, डग, कदम** । उ.—सूर नेह ग्वारि मन अटक्यो छाँड़हु दिए परत नहिं पगरो —१०३१ ।

—वि. पुं. [हिं. पागल] **पागल** ।

—संज्ञा पुं. [सं. प्रग्रह, पा. पग्गाह] **पघा, गिराँव** ।

—संज्ञा पुं. [हिं. पाग] **पटका, दुपट्टा** । उ.—झँगा, अरु पाग पिछौरी दाढ़िन को पहिराए ।

संज्ञा पुं. [सं. प्रग्रह, हिं. पघा] (१) **चौपायों के बाँधने का रस्सा, मोटी रस्सी** (२) । **अधीनता-सूचक बंधन** । उ.—तृन दसननि लै मिलु दसकंधर कंठ हि मेलि पगा—६-११४ ।

संज्ञा पुं. [हिं. पगरा] **डग, कदम** ।

पगाना—क्रि. स. [सं. पक्व या हिं. पाक] (१) **पागने का काम कराना** । (२) **प्रेम म मग्न कराना** ।

पगार, पगारु—संज्ञा पुं. [सं. प्रकार] **गढ़, प्रासाद आदि के रक्षार्थ बनी चहारदीवारी** ।

संज्ञा पुं. [हिं. पग + गारना] (१) **वस्तु जो पैरों से कुचली जाय** । (२) **पैरों से कुचली मिट्टी या गारा** (३) **वह पानी या छिछली नदी जिसे पैदल ही चलकर पार किया जा सके** ।

पगाह—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **प्रभात, तड़का** ।

पगि—क्रि. अ. [हिं. पगना] (१) **अनुरक्त हुआ, प्रेम में डूबा, मग्न हुआ** । उ.—बिषय-भोग ही मैं पगि रह्यौ । जान्यौ मोहिं और कहुँ गयौ—४-१२ । (२) **लीन हुए** । उ.—इहीं सोच सब पगि रहे, कहूँ नहीं निरबार—५८६ ।

पगिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. पगड़ी] **पगड़ी** । उ.—(क) एते पर अँखियाँ रससानी अरु पगिया लपटानी—१६६७ । (ख) सिर पगिया बीरा मुख सोहै सरस रसीले बोल —२४१४ ।

पगु—संज्ञा पुं. [हिं. पग] **डग, कदम** ।

पगुराना—क्रि. अ. [हिं. पागुर] **पागुर करना** ।

पगे—क्रि. अ. [हिं. पगना] **अनुरक्त हुए** । उ.—अंग अंग अवलोकन कीन्हों कौन अंग पर रहे पगे—१३१८ ।

पघा—संज्ञा पुं. [सं. प्रग्रह] **पशु बाँधने की रस्सी** ।

पघिलना—क्रि. अ. [हिं. पिघलना] **पिघलना** ।

पघिलाना—क्रि. स. [हिं. पिघलना] **पिघलाना** ।

पघिलि—क्रि. अ. [हिं. पिघलना] **पिघलकर** । उ.—धोए छूटत नहीं यह कैसेहु मिलैं पघिलि ह्वै मैन—पृ. ३२३ (११) ।

पचएँ—वि. [हिं. पाँचवाँ] **पाँचवें, पाँचवें स्थान पर** । उ.—पचएँ बुध कन्या कौ जौ है, पुत्रनि बहुत बढ़ै हैं —१०-८६ ।

पचगुना—वि. [सं. पंचगुण] **पाँच बार अधिक** ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पचड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. प्रपंच+ड़ा] (१) **झंझट, बखेड़ा, प्रपंच।** (२) **एक तरह का गीत।**

पचत—क्रि. अ. [हिं. पचना] **दुखी होता हैं, हैरान होता है।** उ.—अपनौ मुख मसि-मलिन मंदमति, देखत दर्पन माहीं। ता कालिमा मेटिबे कारन, पचत पखारत छाहीं—२-२५।

पचतूरा—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह का बाजा।**

पचतोलिया—वि. [हिं. पाँच+तोला] **पाँच तोले का।**

पचन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पकने या पकाने की क्रिया या भाव।** (२) **अग्नि।**

पचना—क्रि. अ. [सं. पचन] (१) **हजम होना।** (२) **नष्ट होना।** (३) **हैरान होना।** (४) **लीन होना।**

पचपचाना—क्रि. अ. [अनु. पच] **पचपच करना।**

पचमेल—वि. [हिं. पाँच+मेल] **कई तरह के मेल का।**

पचरंग—संज्ञा पुं. [हिं. पाँच+रंग] **चौक पूरने की सामग्री—अबीर, हल्दी, बुक्का आदि।**

पचरंग, पचरंगा—वि. [हिं. पाँच+रंग] (१) **कई रंगों का।** (२) **कई रंग के सूतों का।** (३) **कई रंगों से रँगा हुआ।**

पचलड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँच+लड़ी] **पाँच लड़ियों की माला।**

पचहरा—वि. [हिं. पाँच+हरा] (१) **पंचगुना।** (२) **पाँच तह का।**

पचाना—क्रि. स. [हिं. पचना] (१) **आँच पर गलाना।** (२) **हजम करना।** (३) **नष्ट करना।** (४) **अवैध उपाय से ली वस्तु काम में लाना।** (५) **एक चीज को दूसरी में खपाना।**

पचारना—क्रि. स. [सं. प्रचारण] **ललकारना।**

पचास—वि. [सं. पंचाशत, प्रा. पंचासा] **चालीस और दस।** उ.—सहज पचास पुत्र उपजाएँ—६-८।

पचासक—वि. [हिं. पचास+एक] **लगभग पचास, पचासों।** उ.—कोई कहे बात बनाई पचासक, उनकी बात जु एक—३४६४।

पचासा—संज्ञा पुं. [हिं. पचास] **पचास का समूह।**

पचासों—वि. [हिं. पचास] (१) **कई पचास।** (२) **पचास से ज्यादा।**

पचि—क्रि. अ. [हिं. पचना] **हैरान होकर, दुख सहकर।**

मुहा.—रचि-पचि—**बड़ी कठिनाई से, हैरान होकर।** उ.—एक अधार साधु-संगति कौ, रचि पचि गति सचरी। याहू सौंज संचि नहिं राखी, अपनी धरनि धरी—१-१३०।

संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पाचन।** (२) **अग्नि।**

पचित—वि. [सं.] **जड़ा हुआ, पच्ची किया हुआ।** उ.—हीरा लाल प्रबाल पिरोजा पंगति बहु मणि पचित पचा-वनो—२२८०।

पचिबौ—संज्ञा स्त्री. [हिं. पचना] **सूखना या क्षीण होना, दुखी होना, हैरान होना।** उ.—रे मन छाँड़ि विषय कौ रँचिबो। कत तू सुवा होत सेमर कौ, अंतहिं कपट न बचिबौ। अंतर गहत कनक-कामिनि कौं, हाथ रहैगौ पचिबौ—१-५६।

पचिहौ—क्रि. अ. [हिं. पचना] **हैरान होगे, कष्ट सहोगे, परेशानी होगी।** उ.—मोकौं मुक्ति विचारत हौ प्रभु पचिहौ पहर-घरी। स्त्रम तैं तुम्हैं पसीना ऐहै, कत यह टेक करी!—१-१३०।

पची—क्रि. अ. [हिं. पचना] **हैरान हो गयी, दुखी हुई।** उ.—बाँधि पची डोरी नहिं पूरै। बारि-बार खीझि रिस झूरै—३९१।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पच्ची] **जड़ाव, जमावट, पच्ची।** उ.—(क) बिद्रुम फटिक पची परदा छबि लाल रंग की रेख—२५६१। (ख) बिद्रुम स्फटिक पची कंचन खचि मनिमय मंदिर बने बनावत—१० उ.-५।

पचीसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पचीस] (१) **पचीस का समूह।** (२) **चौसर का एक खेल।** (३) **चौसर की बिसात।**

पचौनी—संज्ञा स्त्री. [सं. पाचन] **पाचक, पाचन।**

पचौर, पचौली—संज्ञा पुं. [हिं. पंच] **मुखिया, सरदार।**

पच्चड़, पच्चर—संज्ञा पुं. [हिं. पच्ची] **काठ का पैबंद।**

मुहा—पच्चर अड़ाना—**बाधा डालना।** पच्चर ठोंकना—**खूब तंग करना।** पच्चर मारना—**बनती बात पर भाँजी मारना।**

पच्ची—संज्ञा स्त्री. [सं. पचित] (१) **ऐसी जड़ावट कि जड़ी गयी चीज तल से बिलकुल मिल जाय।** (२) **धातु के पदार्थ पर अन्य धातु के पत्तर की जड़ावट।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा.—पच्ची हो जाना—**लीन हो जाना।**

...कारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पच्ची+फ़ा. कारी] **जड़ने या जमावट करने की क्रिया या भाव।**

...—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष] (१) **चिड़ियों या पक्षियों का डैना, पंख या पर।** उ.—(क) अद्भुत राम-नाम के अंक।.....। मुनि-मन-हंस-पच्छ-जुग, जाकैं बल उड़ि ऊरध जात—१-९०। (ख) मानौ पच्छ सुमेरहिं लागे उड़यौ अकासहिं जात—९-७४। (२) **पक्ष, पखवारा।** उ.—(क) आठैं कृष्न पच्छ भादौं, महर के दधिकाँदौ—१०-३१। (ख) कृष्न पच्छ रोहिनी अर्द्ध निसि हर्षन जोग उदार—१०-८६।

...ता, पच्छताई—संज्ञा स्त्री. [सं. पक्षपात] **तरफदारी।**

..., पच्छी—संज्ञा पुं. [सं. पक्षी] **चिड़िया, पक्षी।** उ.—मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै। जैसैं उड़ि जहाज कौ पच्छी फिरि जहाज पर आवै—१-१६८।

...राज—संज्ञा पुं. [सं. पक्षी+राजा] **गरुड़।**

...—क्रि. अ. [हिं. पचना] **कष्ट सहा, हैरान हुआ।** उ.—मोसौं पतित न और गुसाईं। अवगुन मोपैं अजहुँ न छूटत, बहुत पच्यौ अब ताईं—१-१४७।

मुहा.—मरत पच्यौ—**हैरान होता है, जी तोड़ मेहनत करता है।** उ.—जौ रीझत नहिं नाथ गुसाईं ...कत जात जँच्यौ। इतनी कहौ, सूर पूरौ दै, काहैं ...त पच्यौ—१-१७४।

...—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष] **पंख।** उ.—सिखी वह नहिं, ...र मुकुट श्रीखंड पछ तड़ित नहिं पीत पट छबि रसाला—१६३१।

...—संज्ञा स्त्री. [देश.] **तलवार।**

...—क्रि. अ. [हिं. पाछा] (१) **पछाड़ा जाना, हार ...ना।** (२) **पिछड़ जाना, पीछे रह जाना।**

...—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछतावा करती।** ...—जो तब साधि दीजतो कोऊ तो अब कत पछ...ती—३४१८।

...—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछतावा करना।**

...—संज्ञा स्त्री. [हिं. पछताना] **पछतावा।**

...—संज्ञा पुं. [हिं. पछतावा] **पछतावा।**

...—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछतावा करना।**

पछतावा—संज्ञा पुं. [सं. पश्चाताप, पा. पच्छाताव] **कोई बुरा या अनुचित काम करने के बाद होनेवाला दुख, अनुताप।**

पछमन, पछमनौ—क्रि. वि. [हिं. पीछे] **पीछे की ओर।** उ.—धरि न सकत पग पछमनौ, सर सनमुख उर लाग—१-३२५।

पछरिहौं—क्रि. स. [हिं. पछाड़ना] **पछाड़ दूँगा, हराऊँगा।** उ.—केस गहे अरि कंस पछरिहौं—१०६१।

पछवाँ—वि. [सं. पश्चिम] **पश्चिम का।**

पछाँह—संज्ञा पुं. [सं. पश्चिम] **पश्चिम का देश।**

पछाड़, पछार—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाछा, पछाड़] **मूर्छित होकर गिरना।**

मुहा.—परयौ खाइ पछार—**अचानक गिर पड़ना, बेसुध होकर खड़े से गिरना।** उ.—(क) अर्जुन स्रवत नैंन जल धार। परयो धरनि पर खाइ पछार—१-२८६। (ख) परति पछार खाइ छिन ही छिन अति आतुर ह्वै दीन—३४२१।

पछाड़ना, पछारना—क्रि. स. [सं. प्रक्षालन, प्रा. पच्छाड़न] **साफ करने के लिए कपड़े को पटकना।**

क्रि. स. [हिं. पाछा] **कुश्ती में पछाड़ना।**

पछारि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पछाड़] **मूर्छित होकर गिरना।**

मुहा.—परी खाइ पछारि—**बेसुध होकर गिर पड़ना।** उ.—दासी बालक मृतक निहारि। परी धरनि पर खाइ पछारि—९-५।

पछारी—क्रि. स. [हिं. पछाड़ना] (१) **पटक-पटक कर।** उ.—सूरदास प्रभु सूर सुखदायक मारयौ नाग पछारी—२५९४। (२) **मार दिया, वध किया।** उ.—सूरस्याम पूतना पछारी, यह सुनि जिय डरप्यौ नृपराई—१०-५१।

वि. [सं. प्रक्षालन, प्रा. पच्छाड़ना, हिं. पछोरना, पछोड़ना] **सूप आदि में रखकर और फटककर साफ की हुई, फटकी हुई।** उ.—मूँग, मसूर, उरद, चनदारी। कनक-फटक धरि फटकि पछारी—३९६।

पछारै—क्रि. स. [हिं. पछाड़ना] **मार दे, वध करे।** उ.—खड़ग धरे आवै तुव देखत, अपनैं कर छिन माँह पछारै—१०-१०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पछारौं—क्रि. स. [हिं. पछाड़ना] **मार डालूँ**। उ.—(क) कहौ तौ सचिव-सबंधु सकल अरि एकहिं एक पछारौं—९-१०८। (ख) रंगभूमि मैं कंस पछारौं, घीसि बहाऊँ बैरी—१०-१७६।

पछार्यौ—क्रि. स. [हिं. पछाड़ना] (१) **पटक दिया, गिराया**। उ.—हिरनाकुस प्रहलाद भक्त कौं बहुत सासना जार्यौ। रहि न सके, नरसिंह रूप धरि, गहि कर असुर पछार्यौ—१-१०६। (२) **मारा, वध किया**। उ.—(क) जोधा सुभट सँहारि मल्ल कुवलया पछार्यो—२६२५। (ख) भ्रम अरु केसी इहाँ पछार्यौ—३४०६।

पछावर, पछावरि—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) **एक तरह का पकवान**। (२) **छाछ का बना एक पेय**।

पछाहीं—वि. [हिं. पछाह] **पश्चिम देश का**।

पछिआना—क्रि. स. [हिं. पीछे+आना] **पीछा करना**।

पछिताइ—क्रि. अ. [हिं. पछतावा] **पश्चाताप करके, पछता कर**। उ.—सूरदास भगवंत-भजन बिनु, चल्यौ पछिताइ, नयन जल ढारौ—१-८०।

पछिताएँ—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछताने से, पश्चाताप करने से**। उ.—होत कहा अबके पछिताएँ, बहुत बेर बितई—१-२९९।

पछितात—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछताती है**। उ.—चलत न फेंट गही मोहन की अब ठाढी पछितात—२५४१।

पछितान—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछताना, पश्चाताप करना**।

प्र.—लाग्यौ पछितान—(क) **पछताने लगा, पश्चाताप करने लगा**। उ.—अब लाग्यौ पछितान पाइ दुख, दीन, दई को मार्यौ—१-१०१। (ख) सुरपति अब लाग्यौ पछितान—९-५। लागीं पछितान—**पछताने लगीं**। उ.—रिस ही मैं मोकौं गहि दीन्हौ, अब लागीं पछितान—३५५।

पछिताना—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछतावा करना**।

पछितानी—क्रि. अ. [हिं. पछिताना] **पछताने लगीं**। उ.—(क) रोहिनि चितै रही जसुमति तन, सिर धुनि धुनि पछितानी—३९५। (ख) मधुकर प्रीति किए पछतानी—३३५९।

पछितानैं—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछताने से, पश्चाताप करने से**। उ.—सृंगी यह कीन्हौ बिनु जानैं। होत कहा अब के पछितानैं—१-२९०।

पछितानौ, पछितान्यौ—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछताया, पश्चाताप किया**। उ.—(क) बिरध भएँ कफ कंठ बिरोध्यौ, सिर धुनि धुनि पछितान्यौ। १-३२६। (ख) मथुरापति जिय अतिहिं डरान्यौ। सभा माँझ असुरनि के आगैं, सिर धुनि धुनि पछितान्यौ—१०-६०।

पछितायौ—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछताया, पश्चाताप किया**। उ.—रसमय जानि सुवा सेमर कौं चोंच घालि पछितायौ—१-५८।

संज्ञा पुं.—**पश्चाताप, पछतावा**। उ.—रह्यौ मन सुमिरन कौ पछितायौ—१-६७।

पछिताव—संज्ञा पुं. [हिं. पछितावा] **पश्चाताप**।

पछितावहि—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछताती हैं**। उ.—पावति नहीं स्याम बलरामहिं, ब्याकुल है पछतावति—४५६।

पछितावन—संज्ञा पुं. [हिं. पछतावा] **पछतावा**।

प्र०—लागी पछितावन—**पछताने लगीं, पश्चाताप करने लगी**। उ.—पिछली चूक समुझि उर अंतर अब लागी पछितावन—३१०१।

पछितावा—संज्ञा पुं. [हिं. पछितावा] **पछतावा, पश्चाताप**। उ.—मोहिं भयौ माखन पछितावौ, रीती देखि कमोरी—१०-२८६।

पछितैए—क्रि अ. [हिं. पछिताना] **पश्चाताप कीजिए**। उ.—कीजै कहा कहत नहिं आवै सोचि हृदय पछितैए—३२९८।

पछितैया—क्रि. अ. [हिं. पछिताना] **पछताते हैं**। उ.—सूरदास प्रभु की यह लीला हम कत जिय पछितैया—४२८।

पछितैहौ—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछताओगे, पश्चाताप करोगे**। उ.—सूरदास अवसर के चूकैं, फिरि पछितैहौ देखि उघारी—१-२४८।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पछियाव—संज्ञा पुं. [सं. पश्चिम+हिं. आना] **पश्चिम से आनेवाली हवा, पछुआ हवा।**

पछिला—वि. [हिं. पिछला] **पीछे का, पिछला।**

पछिले—वि. [हिं. पिछला] **पिछले, पहले के, विगत, पूर्व के।** उ.—पछिले कर्म सम्हारत नाहीं, करत नहीं कछु आगे—१-६१।

पछेलना—क्रि. स. [हिं. पीछे] **पीछे छोड़ देना।**

पछेला - संज्ञा पुं. [हिं. पाछ+एला] **हाथ का एक गहना।**

पछेलियां, पछेली—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. पछेला] **हाथ का एक गहना।**

पछोड़ना, पछोरना क्रि. स. [सं. प्रक्षालन, प्रा. पच्छाड़न, हिं. पछोड़ना] **सूप आदि से फटककर अनाज इत्यादि साफ करना।**

मुहा.—फटकना-पछोड़ना—**अच्छी तरह परीक्षा करना।**

पछोड़ी, पछोरी—क्रि. स. [हिं. पछोड़ना] **सूप में रखकर और फटककर साफ की।**

मुहा.—फटकि पछोरी—**अच्छी तरह परीक्षा की।** उ.—सूर जहाँ लौं स्याम गात हैं, देखे फटकि पछोरी।

पछोड़े, पछोरे—क्रि. स. [हिं. पछोड़ना] **सूप में फटककर साफ किये।** उ.—कहौ कौन पै कढ़ै कनूका भुस की रास पछोरे।

मुहा.—फटकि पछोरे—**अच्छी तरह परीक्षा की।** उ.—तुम मधुकर निर्गुन निज नीके देखे फटकि पछोरे—३१००।

पछयावर - संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह की शिखरन।**

पजर—संज्ञा पुं. [सं. प्रक्षरण] **चूने-टपकने की क्रिया।**

पजरत—क्रि. अ. [हिं. पजरना] **जलता है, दहकता है, सुलगता है।** उ. - भयौ पलायमान दानवकुल, व्याकुल, सायक-त्रास। पजरत धुजा, पताक, छत्र, रथ, मनिमय कनक-अवास—९-८३।

पजरना—क्रि. स. [सं. प्रज्वलन] **दहकना, सुलगना।**

पजरि—क्रि. अ. [हिं. पजरना] **दहक या सुलग कर।** उ.—पजरि पजरि तनु अधिक दहत है सुनत तिहारे बैन।

पजरे—क्रि. अ. [हिं. पजरना] **जले, दहके, सुलगे।**

वि.—**जले हुए।** उ.—बचन दुसह लागत अति तेरे ज्यों पजरे पर लौन—३१२२।

पजारना—क्रि. स. [हिं. पजरना] **दहकाना, सुलगाना।**

पजारे—क्रि. स. [हिं. पजारना] **जलाया, फूँक दिया।** उ.—बिन आज्ञा मैं भवन पजारे, अपजस करिहैं लोइ—९-९९।

पटंबर—संज्ञा पुं. [सं. पाटंबर] **रेशमी वस्त्र।** उ.—किंकिन नूपुर पाट पटंबर, मनौ लिये फिरैं घर-बार—१-४१।

पट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वस्त्र, कपड़ा।** उ.—(क) हम तन हेरि चितै अपनौ पट देखि पसारहिं लात—३२८३। (ख) भरि भरि नैन ढारति है सजल करति अति कंचुकि के पट—३४६२। (२) **परदा।** (३) **कागज, लकड़ी या धातु का टुकड़ा।**

संज्ञा पुं. [सं. पट्ट] (१) **द्वार का किवाड़।** (२) **सिंहासन।**

संज्ञा पुं. [देश.] **टाँग।**

वि.—**चित का उलटा, औंधा।**

क्रि. वि.—**तुरंत, फौरन।**

[अनु.] **टप-टप की ध्वनि।**

पटक—संज्ञा स्त्री. [हिं. पटकना] (१) **पटकने की क्रिया या भाव।** (२) **डंडी, छड़ी।**

पटकत—क्रि. अ. [हिं. पटकना] **'पट' शब्द के साथ चटकता है।** उ.—(क) पटकत बाँस, काँस, कुस ताल—५९४। (ख) पटकत बाँस, काँस कुस चटकत—६१५।

क्रि. वि.—**पटकते ही**—पटकत सिला गई आकासहिं—१०-४।

पटकन—संज्ञा स्त्री. [हिं. पटकना] (१) **पटकने की क्रिया या भाव।** (२) **छड़ी।** (३) **चपत, तमाचा।**

पटकना—क्रि. स. [सं पतन+करण] (१) **जोर से गिराना।** (२) **दे मारना।**

क्रि. अ.—(१) **सूजन कम होना।** (२) **गेहूँ, चने आदि का भीगने के बाद सूखकर सिकुड़ना।** (३) **'पट' शब्द के साथ फटना या दरकना।**

पटकनिया, पटकनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पटकना] (१) **पट-**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कने या पटके जाने की क्रिया या भाव। (२) पछाड़।

पटका — संज्ञा पुं. [सं. पट्टक] **दुपट्टा, कमरबंद।**

पटकार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जुलाहा।** (२) **चित्रकार।**

पटकि—क्रि. स. [हिं. पटकना] (१) **पटककर, जोर से गिराकर।** उ.—भई पैज अब हीन हमारी, जिय मैं कहै बिचारि। पटकि पूँछ, माथौ धुनि लोटै, लखी न राघव-नारि—९-७५। (२) **झुकाकर।** उ.—ज्यों कुञ्जवारि रस बींधि हारि गथु सोचतु पटकि चिती—१० उ.—१०३।

पटके—क्रि. स. [हिं. पटकना] **झटका देकर गिराये, पटक-पटक कर मारे।** उ.—कंस सौंह दै पूछिये जिन पटके सात—११३७।

पटक्यो—क्रि. स. [हिं. पटकना] **दे मारा, जोर से गिराया।** उ.—पटक्यो भूमि फेरि नहिं मटक्यो लीन्हें दंत उपारी—२५६४।

पटच्चर—संज्ञा पुं. [सं.] **पुराना वस्त्र या कपड़ा।**

पटड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. पटरा] **पटरा।**

पटड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पटरा] **पटरी।**

पटतर—संज्ञा पुं. [सं. पट्ट = पटरी + तल = पटरी के समान चौरस = बराबर] (१) **समता, तुलना, बराबरी, समानता।** उ.—केसर-तिलक-रेख अति सोहै। ताकी पटतर कौं जग को है—३-१३। (२) **उपमा, सादृश्य।** उ.—ग्रीवकर परसि पग पीठि तापर दियो उर्बसी रूप पटतरहिं दीन्ही—२५८८।

वि.—(१) **तुल्य, सदृश, बराबर।** उ.—खंजन मीन मृगज चपलाई नहिं पटतर एक सैन—१३४६। (२) **चौरस, समतल।**

पटतरना—क्रि. अ. [हिं. पटतर] **उपमा देना।**

पटतारना—क्रि. स. [हिं. पटा + तारना] **वार करने के लिए भाले आदि को सँभालना।**

क्रि. स. [हिं. पटतर] **जमीन चौरस करना।**

पटतारा— क्रि. स. [हिं. पटतारना] **वार करने को हथियार सँभाला।** उ.—रथ तैं उतरि, केस गहि राजा, कियौ खड्ग पटतारा—१०-४।

पटताल—संज्ञा पुं. [सं. पट्ट + ताल] **मृदंग का एक ताल।**

पटधारी—वि. [सं.] **जो कपड़ा पहने हो।**

संज्ञा पुं— **तोशाखाने का अधिकारी।**

पटना — क्रि. अ. [हिं. पट] (१) **गड्ढे आदि का भरना।** (२) **खूब भर जाना।** (३) **खुली जगह पर छत बनना।** (४) **विचार या मन मिलना।** (५) **सौदा तय हो जाना।** (६) (ऋण) **चुकता होना।**

पटपट — संज्ञा स्त्री. [अनु. पट] **'पट' शब्द होना।**

क्रि. वि.— **'पट' ध्वनि करता हुआ।**

पटपटात—क्रि. अ. [हिं. पटपटाना (अनु.)] **पटपटाकर, 'पटपट' की ध्वनि करके।** उ.—जबहिं स्याम तन अति बिस्तार्‌यौ। पटपटात टूटत अँग जान्यौ, सरन-सरन सु पुकार्‌यौ—५५६।

पटपटाना—क्रि. अ. [हिं. पटकना] (१) **बुरा हाल होना।** (२) **'पटपट' ध्वनि होना।** (३) **शोक करना।**

क्रि. स.— **'पटपट' शब्द उत्पन्न करना।**

पटपर—वि. [हिं. पट + पर] **चौरस, समतल।**

पटबीजना—संज्ञा पुं. [हिं. पट + बिजु] **जुगनू, खद्योत।**

पटरा—संज्ञा पुं. [सं. पटल] **काठ का सलोतर तख्ता।**

मुहा.— पटरा कर देना—(१) **मार-काटकर बिछा देना।** (२) **चौपट या तबाह कर देना।** पटरा होना-**नष्ट हो जाना।**

पटरानि, पटरानी—संज्ञा स्त्री. [सं. पट्ट + रानी] **मुख्य रानी जो सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो।** उ.—जा रानी कौं तू यह देहै। ता रानी सेंती सुत ह्वै है। पटरानी कौं सो नृप दियौ—६-५।

पटरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पटरा] (१) **काठ का छोटा सलोतर टुकड़ा।**

मुहा.—पटरी बैठना—(१) **मन मिलना, मित्रता होना।**

(२) **लिखने की पाटी।** (३) **सुनहरे-रुपहले तारों का फीता।** (४) **चौड़ी चूड़ी।** (५) **चौकी, ताबीज।**

पटल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **छान, छप्पर।** (२) **पर्दा।** (३) **तह, परत।** (४) **लकड़ी का चौरस टुकड़ा।** (५) **टीका।** (६) **समूह, ढेर।**

पटली—संज्ञा स्त्री. [हिं. पटरी] **पटरी।** उ.—पटली बिन बिद्रुम लगे हीरा लाल खचावनो—२२८०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटका—संज्ञा पुं. [सं. पाट] **रेशम या सूत के फुँदने आदि गूँथने वाला, पटहार।**

पटवाद्य—संज्ञा पुं. [सं.] **एक तरह का बाजा।**

पटवाना—क्रि. स. [हिं. पटना] **(१) पाटने को प्रवृत्त करना। (२) सिंचवाना। (३) चुकता करा देना।**

क्रि. स.—**पीड़ा या कष्ट मिटाना।**

पटवारी—संज्ञा पुं. [सं. पट्ट+हिं. वार] **जमीन के लगान का हिसाब रखनेवाला कर्मचारी।**

संज्ञा स्त्री. [सं. पट+वारी] **कपड़े पहनानेवाली दासी।**

पटवास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **तंबू, खेमा।** (२) **वस्त्र को सुगंधित करनेवाली वस्तु।** (३) **लहँगा।**

पटह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नगाड़ा।** उ.—डिमडिमी पटह ढोल डफ बीना मृदंग उपंग चंग तार—२४४६। (२) **बड़ा ढोल।**

पटा—संज्ञा पुं. [सं. पट] **लोहे की लंबी पट्टी जिससे तलवार के वार की काट सीखी जाती है।**

संज्ञा पुं. [सं. पट्ट] (१) **पीढ़ा, पटरा।**

मुहा—पटाफेर—**विवाह की एक रीति जिसमें वर-वधू के आसन बदल दिये जाते हैं।** पटा बँधाना—**पटरानी बनाना।** उ.—चौदह सहस तिया मैं तोकौं पटा बँधाऊँ आजु—६-७६।

(२) **सनद, अधिकारपत्र, पट्टा।**

संज्ञा पुं. [हिं. पटना] **लेन-देन, सौदा।**

पटाक—[अनु.] **छोटी चीज के गिरने का शब्द।**

पटाका, पटाखा—संज्ञा पुं. [हिं. पट] (१) **पट या पटाक शब्द।** (२) **एक तरह की आतिशबाजी।**

पटाक्षेप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नाटक में दृश्य की समाप्ति पर गिरनेवाला परदा।** (२) **घटना की समाप्ति।**

पटाना—क्रि. स. [हिं. पट] (१) **पाटने का काम कराना।** (२) **छत आदि बनवाना।** (३) **ऋण अदा करना।** (४) **मूल्य तय करना।**

क्रि. अ.—**शांत होकर बैठ रहना।**

पटापट—क्रि. वि. [अनु.] **'पटपट' ध्वनि के साथ।**

पटापटी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **चित्र-विचित्र वस्तु।**

पटाव—संज्ञा पुं. [हिं. पाटना] (१) **पाटने की क्रिया या भाव।** (२) **पटा हुआ स्थान।**

पटिआ, पटिया—संज्ञा स्त्री. [सं. पट्टिका] (१) **चपटा और चौरस पत्थर।** (२) **खाट या पलँग की पाटी।** (३) **माँग-पट्टी।** उ.—(क)मुंडली पटिया पारि सँवारै कोढ़ी लावै केसरि—३०२६। (ख) वे मोरे सिर पटिया पारैं कंथा काहि उढ़ाऊँ—३४६६। (४) **लिखने की पट्टी, तख्ती।**

पटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पट्टी] (१) **पट्टी, कपड़े की धज्जी जो घाव या अन्य किसी स्थान पर बाँधी जाय।** उ.—अपनी रुचि जित ही जित ऐंचति इंद्रिय-कर्म-गटी। हौं तित ही उठि चलति कपटि लगि बाँधे नैन-पटी—१-६८। (२) **पटका, कमरबंद।** (३) **परदा।** (४) **नाटक का परदा।** (५) **लिखने की पट्टी, तख्ती।** उ.—यह चतुराई अधिकाई कहाँ पाई स्याम वाके प्रेम की गढ़ि पढ़े हौ पटी—२००८।

पटीर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चंदन।** (२) **वटवृक्ष।**

पटीलना—क्रि. अ. [हिं. पटाना] (१) **समझा-बुझाकर अपने ढंग पर लाना।** (२) **प्राप्त करना।** (३) **ठगना।** (४) **मारना-पीटना।** (५) **नीचा दिखाना।** (६) **पूर्ण या समाप्त करना।**

पटु—वि. [सं.] (१) **चतुर।** (२) **कुशल।** (३) **छली-फरेबी।** (४) **निष्ठुर।** (५) **सुंदर।**

पटुआ—संज्ञा पुं. [सं. पाट] (१) **पटसन।** (२) **पटुहार।**

पटुका—संज्ञा पुं. [सं. पटिका] (१)**कमरबंद।** (२)**चादर।**

पटुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दक्षता।** (२) **चालाकी।**

पटुली—संज्ञा स्त्री. [सं. पट्ट] (१) **झूला झूलने की पटरी।** उ.—पटुली लगे नग नाग बहुरंग बनी डांडी चारि—२२७८। (२) **चौकी।**

पटूका—संज्ञा पुं. [हिं. पटका] **दुपट्टा, कमरबंद।**

पटेबाज—संज्ञा पुं. [हिं. पटा+फ़ा. बाज] **पटा खेलनेवाला।**

पटेल—संज्ञा पुं. [हिं. पट्टा+वाला] **चौधरी, मुखिया।**

पटेलना—क्रि. स. [हिं. पटीलना] **पटीलना।**

पटोर—संज्ञा पुं. [सं. पटोल] **रेशमी वस्त्र।**

पटोरी—संज्ञा स्त्री. [सं. पाट+ओरी (प्रत्य.)] **रेशमी साड़ी।** उ.—(क) अंग मरगजी पटोरी राजति छबि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरखत रीझत ठाढ़े हरि—१२३२। (ख) जाइ श्रीदामा लै आवत तब दै मानिनि बहु भाँति पटोरी—२४४५।
पटोल—संज्ञा पुं. [सं.] **रेशमी कपड़ा।**
पटोलक—संज्ञा पुं. [सं.] **सीपी, सुक्ति।**
पटोलै—संज्ञा पुं. सवि. [सं. पटोल] **रेशमी वस्त्र से।** उ.—जाकैं मीत नंदनंदन से, ढकि लइ पीत पटोलै। सूरदास ताकौ डर काकौं, हरि गिरिधर के ओलै—१-२५६।
पटौनी—संज्ञा पुं. [देश.] **मल्लाह, माँझी।**
संज्ञा स्त्री. [हिं. पटना] **पटने का भाव या कार्य।**
पट्ट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पटरा, पाटा।** (२) **पट्टी, तख्ती।** (३) **किसी वस्तु या धातु की चिपटी पट्टी।** (४) **कपड़े की धज्जी।**
वि. [सं.] **मुख्य, प्रधान।**
पट्टदेवी—संज्ञा पुं. [सं.] **पटरानी।**
पट्टन—संज्ञा पुं. [सं.] **बड़ा नगर।**
पट्टमहिषी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पटरानी।**
पट्टराज्ञी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पटरानी।**
पट्टा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अधिकार पत्र।** (२) **चमड़े की धज्जी या पट्टी** (३) **हाथ का एक गहना।**
पट्टी—संज्ञा स्त्री. [सं. पट्टिका] (१) **तख्ती, पटिया।** (२) **उपदेश।** (३) **भुलावा,** (४) **धातु, कागज या कपड़े की धज्जी।** (५) **एक मिठाई।** (६) **पंक्ति, कतार।** (७) **माँग के दोनों ओर की पटियाँ।** (८) **भाग, हिस्सा।**
पट्टू—संज्ञा पुं. [हिं. पट्टी] **एक मोटा ऊनी कपड़ा।**
पट्ठमान—वि. [सं. पठ्यमान] **पढ़ने योग्य।**
पट्ठा—संज्ञा पुं. [सं. पुष्ट, प्रा. पुट्ठ] (१) **जवान, तरुण।** (२) **सिखाया हुआ नया कुश्तीबाज।** (३) **सुनहरा-रुपहला गोटा।**
पठई—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजी, पठाई।** उ.—(क) घर पठई प्यारी अंकम भरि—१२३२। (ख) अतिहिं निठुर पतियाँ नहिं पठई काहू हाथ सँदेस २७५३।
पठए—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजे।** उ.- मेरी देह छुटत जम पठए जितक दूत घर मौं—१-१५१।
पठक—संज्ञा पुं. [सं.] **पढ़नेवाला।**
पठन—संज्ञा पुं. [सं.] **पढ़ना, पढ़ने की क्रिया।**
पठनीय—वि. [सं.] **पढ़ने योग्य।**
पठनेटा—संज्ञा पुं. [हिं. पठान+एटा] **पठान का बेटा।**
पठयौ—क्रि. स. [हिं. पठाना] **पठाया, भेजा।** उ.—(क) परतिज्ञा राखी मन-मोहन, फिरि तापैं पठयौ—१-२८। (ख) दुरबासा दुरजोधन पठयौ पांडव-अहित बिचारी —१-१२२।
पठवत—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजते हैं।** उ.—काहे को लिखि पठवत कागर—२९८०।
पठवन—क्रि. स.[हिं. पठाना] **भेजना, पठावा।** उ.—कहत पठवन बदरिका मोहिं, गूढ़ ज्ञान सिखाइ—३-३.
पठवना—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजना, पठाना।**
पठवहु—क्रि. स. [हिं.पठाना] **भेजो, प्रस्थान कराओ, पठाओ।** उ.—मेरी बेर क्यों रहे सोचि? काटि कै अघ-फाँस पठवहु, ज्यौं दियौ गज मोचि—१-१९९।
पठवाना - क्रि. स. [हिं. पठाना] **भिजवाना।**
पठवै—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजेगा, पठावेगा।** उ.—कंसहिं कमल पठाइहै, काली पठवै दीप—५८९।
पठाइहै—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजेगा, पठावेगा।** उ.—कंसहिं कमल पठाइहै, काली पठवै दी—५८९।
पठाईं—क्रि. स. स्त्री. [हिं. पठाना] **भेजीं, भेज दीं।** उ॰—मनु रघुपति भयभीत सिंधु पत्नी प्यौसार पठाईं—९-१२४।
पठाई—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजी, पहुँचा दी।** उ.—बकी कपट करि मारन आई, सो हरि जू बैकुंठ पठाई —१-३।
पठाए—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजे।** उ.—सहस सकट भरि ब्याल पठाए—५८९।
पठान—संज्ञा पुं. [पश्तो पुख्ताना] **एक मुसलमान जाति।**
पठाना -क्रि. स. [सं. प्रस्थान, प्रा. पट्ठान] **भेजना।**
पठानिन, पठानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पठान] **पठान स्त्री।**
पठायौ—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजा, प्रस्थान कराया।** उ.—सो छलि बाँधि पताल पठायौ, कौन कृपानिधि धर्मा—१-१०४।
पठावत—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजते हो।** उ.—काके पति-सुत-मोह कौन को घर है, कहाँ पठावत—पृ.३४१ (७)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...वन, पठावनो—संज्ञा पुं [हिं. पठाना] **दूत, संदेश-वाहक।** उ.—मनौ सुरपुर तेहि सुरपति पठइ दियौ पठावनो—२२८० ।

...वनि, पठावनी—संज्ञा स्त्री. [हिं, पठान] (१) **कोई वस्तु या संदेश भेजने का भाव।** (२) **वह वस्तु जो भेजी जाय।**

...त—वि. [सं.] (१) **पढ़ा हुआ (ग्रंथ)** । (२)**शिक्षित।**

...—क्रि. स. [हिं पठाना] **भेजकर।** उ.—कान्हहिं पठै, महरि कौं कहति है पाइनि परि—७५२ ।

...नी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पठाना] (१) **कोई वस्तु या संदेश भेजना।** (२) **किसी के भेजने से जाना।**

...ता—संज्ञा पुं. [हिं. पड़ना] **लागत, कीमत।**

...ताल—संज्ञा स्त्री. [सं. परितोलन] **देख-भाल. जाँच।**

...तालना—क्रि. स [हिं. पड़ताल] **छानबील करना।**

...ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. पड़ना] **बिना जुती भूमि।**

...ना—क्रि. अ. [सं पतन, प्रा. पडन] (१) **गिरकर या उछलकर पहुँचना।** २) **(घटना) घटित होना** (३) **बिछाया या फैलाया जाना** (४) **छोड़ा या डाला जाना।** (५) **बीच में दखल देना!** (६) **ठहरना, टिकना।** (७) **आराम करना।** (८) **बीमार होना।** (९ **प्राप्त होना।** (१०) **आमदनी होना।** (११) **मार्ग म मिलना।** (१२) **पैदा होना।** (१३) **स्थित होना।** (१४) **प्रसंग में आना।** (१५) **जाँच में ठहरना** (१६) **बदल जाना।** (१७) **होना।**

...पड़—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **'पड़' का शब्द होना।**

...ड़ाना—क्रि. अ. [अनु]. **'पड़-पड़' होना।**

...आ- संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतिपदा, प्रा. पड़िवआ] **चाँद मास के प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि।**

...ना क्रि स. [हिं. पड़ना] **गिराना, झुकाना।**

...व—संज्ञा पुं. [हिं. पड़ना+आव] (१) **यात्री के ठहरने का भाव।** २) **वह स्थान जहाँ यात्री ठहरते हों, चट्टी टिकान।**

...स—संज्ञा पुं. [सं. प्रतिवेश या प्रतिवास, प्रा. पड़िवेस, पड़िवास] **आसपास का घर या स्थान।**

...सी—संज्ञा पुं. [हिं. पड़ोस] **जो पड़ोस में रहता हो।**

...—संज्ञा स्त्री. [हिं. पढ़ना] **पढ़ने का भाव।**

पढ़ना—क्रि. स. [सं. पठन] (१) **लिखा हुआ बाँचना।** (२) **उच्चारण करना।** (३) **रटना।** (४) **मंत्र फूँकना।** (५) **नया सबक लेना।**

पढ़वाना—क्रि. स. [हिं. पढ़ना] (१) **बँचवाना।** (२) **शिक्षा दिलाना।**

पढ़वैया—वि. [हिं. पढ़ना] **पढ़नेवाला, शिक्षार्थी।**

पढ़ाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पढ़ना+आई] (१) **पठन, अध्ययन।** (२) **पढ़ने का भाव।** (३) **धन जो पढ़ने के बदले में दिया जाय।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. पढ़ाना+आई] (१) **अध्यापन।** (२) **पढ़ने का भाव।** (३) **पढ़ान की रीति।** (४) **धन जो पढ़ाने के बदले में दिया जाय।**

पढ़ाऊँ—क्रि. स. [हिं. पढ़ाना] **सिखाता हूँ, शिक्षा देता हूँ।** उ.—सूर सकल घट दरसन वे, हौं बारहखरी पढ़ाऊँ—३४६६ ।

पढ़ाना—क्रि. स. [हिं. पढ़ना] (१) **शिक्षा देना, अध्यापन करना।** (२) **कोई कला या गुन सिखाना।** (३) **पक्षियों को मनुष्य की भाषा सिखाना।** ४) **समझाना।**

पढ़ायो, पढ़ायौ—क्रि. स. [हिं. पढ़ाना] **गुन सिखाया।** उ.—(क) नंद घरनि सुत भलौ पढ़ायौ—१०-३४०। (ख) भलौ काम हैं सुतहिं पढ़ायौ—३६१ (ग) बारे ते जेहि यहै पढ़ायो बुधि-बल-कल बिधि चोरी।

पढ़ावत—क्रि. स. [हिं. पढ़ाना] **पढ़ाती है पढ़ाती हुई।** उ. (क) कीर पढ़ावत गनिका तारी, व्याध परम पद पायौ—१-६७। (ख) सुवा पढ़ावत, जीभ लड़ावति, ताहि बिमान पठायौ—१-१८८। (ग) चातक मोर चकोर बदत पिक मनहुँ मदन चटसार पढ़ावत—१०-३०५।

पढ़ावै—क्रि. स. [हिं. पढ़ाना (प्रे.)] (१) **शिक्षा देती है, अध्यापन करती है।** (२) **पक्षियों को बोलना सिखाती है।** उ.—(क) गनिका किए कौन व्रत-संजम, सुक-हित नाम पढ़ावै—१-१२२। (ख) आपन ही रँग रगी साँवरी सुक ज्यौं बैठि पढ़ावै—३०८८।

पढ़ि—क्रि. स. [हिं. पढ़ना] (१) **सीख समझ कर।** उ.—मोहन-मुर्छन-बसीकरन पढ़ि अगमति देह बढ़ाऊँ—१०-४६। (२) **मंत्रादि उच्चारण करके या फूँककर।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—जसुमति मन-मन यहै बिचारति। झझकि उठयौ सोवत हरि अबहीं कछु पढ़ि-पढ़ि तन-दोष निवारति—१०-२००। (३) **पढ़कर, शिक्षा ग्रहण करके।** उ.—कुबिजा सौं पढ़ि तुमहिं पठाए नागर नवल हरी—३३७०।

पढ़िवे—संज्ञा पुं. [हिं. पढ़ना] (१) **पढ़ना** (२) **उच्चारण करने की क्रिया, कहना।** उ.—जब तैं रसना राम कह्यौ। मानौ धर्म साधि सब बैठ्यौ, पढ़िबे मैं धौं कहा रह्यौ—२-८।

पढ़ीं—क्रि. स. [हिं. पढ़ना] **उच्चारित कीं।** उ.—(द्विजनि अनेक) हरषि असीस पढ़ीं—१०-१४।

पढ़ी—क्रि. स. [हिं. पढ़ना] **सीखी, समझी।** उ.—(क) जेहि गोपाल मेरे बस होते सो विद्या न पढ़ी—२७६४। (ख) तैं अलि कहा पढ़ी यह नीति—३२७०।

पढ़ेलना—क्रि. स. [हिं. धकेलना] **धकेलता, ठुकराना।**

पढ़ैया—वि. [हिं. पढ़ना] **पढ़नेवाला पाठक।**

पढ़ैला, पढ़ैलौ—वि. [हिं. पढ़ेलना] **ठुकराया हुआ।** चुगुल, ज्वारि, निर्दय, अपराधी, झूठौ, खोटौ-खूटा। लोभी, लौंद, मुकरवा, झगरू, बड़ौ पढ़ैलौ, लूटा—१-१८५।

पढ़ौ—क्रि. स. [हिं. पढ़ना] **पढ़ो, रटो।** उ.—पढ़ौ भाई राम-मुकुंद-मुरारि—७-३।

पण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जूआ, द्यूत।** (२) **प्रतिज्ञा, शर्त।** (३) **मोल, कीमत।** (४) **शुल्क।** (५) **धन-संपत्ति।** (६) **व्यापार।** (७) **स्तुति, प्रशंसा।**

पणबंध—संज्ञा पुं. [सं.] **शर्त या बाजी लगाना।**

पणव—संज्ञा पुं. [सं.] **छोटा ढोल या नगाड़ा।** उ.—गर्जनि पणव निसान संख रव हय गय हींस चिकार—१० उ.—२।

पणी—संज्ञा पुं. [सं. पणिन्] **क्रय-विक्रय करनेवाला।**

पण्य—वि. [सं.] **खरीदने-बेचने योग्य।**

संज्ञा पुं.—(१) **सौदा।** (२) **व्यापार।** (३) **बाजार।** (४) **दूकान।**

पतंग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पक्षी।** (२) **शलभ।** उ.—दीपक पीर न जानई (रे) पावक परत पतंग—१-३२५। (३) **सूर्य।** (४) **चिनगारी।** (५) **चंग, गुड्डी।**

पतंगा—संज्ञा पुं [सं. पतंग] (१) **शलभ।** (२) **चिनगारी।**

पतंगेंद्र—संज्ञा पुं. [सं.] **पक्षिराज गरुड़।**

पतंजलि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **'योगशास्त्र' के रचयिता एक ऋषि।** (२) **'महाभाष्य' के रचयिता एक मुनि।**

पत—संज्ञा पुं [सं. पति] (१) **पति।** (२) **स्वामी।**

संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतिष्ठा] (१) **लज्जा।** (२) **प्रतिष्ठा।**

मुहा.—पत उतारना (लेना)—**बेइज्जती करना।** पत रखना—**इज्जत बचाना।**

पतखोवन—वि. [हिं. पत+खोना] **मान की रक्षा न कर सकनेवाला।**

पतझड़, पतझर, पतझल, पतझाड़, पतझार—संज्ञा पुं. [हिं. पत=पत्ता+झड़ना] (१) **वह ऋतु जिसमें वृक्षों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं।** (२) **अवनतिकाल।**

पतझड़ना, पतझरना—क्रि. अ. [हिं. पत्ता+झड़ना] **वृक्षों के पत्ते झड़ना।**

पतझरै—क्रि. अ. [हिं. पतझड़] **पत्ते गिरते हैं, पतझड़ होता है।** उ.—तरुवर फूलै, फरै, पतझरै, अपने कालहिं पाइ—१-२६५।

पतन—संज्ञा पुं [सं.] (१) **गिरने का भाव।** (२) **बैठना, डूबना।** (३) **अवनति।** (४) **नाश।** (५) **पाप।**

पतना—क्रि. अ. [सं. पतन] **गिरना।**

पतनोन्मुख—वि. [सं.] **जो पतन की ओर बढ़ रहा हो।**

पतबरा—संज्ञा पुं [हिं. पतला+बड़ा] **पतले-पतले 'बड़े' (एक व्यंजन या खाद्य)।** उ.—मूँग-पकौरा, पनौ पतबरा। इक कोरे, इक भिजे गुरबरा—१०-३६६।

पतर, पतरा—वि. [सं. पत्र] (१) **पत्ता।** (२) **पत्तल।**

पतर, पतरा, पतला—वि. [हिं. पतला] (१) **जो मोटा हो।** (२) **दुबला, पतला, कृश।** (३) **झीना।** (४) **जो गाढ़ा न हो।** (५) **निर्बल।**

पतवर—क्रि. वि. [हिं. पाँती+वार] **पंक्तिक्रम से।**

पतवार, पतवारी, पतवाल—संज्ञा स्त्री. [सं. पत्रवाल, पात्रपाल, प्रा. पात्रवाड़] **नाव का 'करण' जिससे उसे मोड़ते और घुमाते हैं।**

पता—संज्ञा पुं. [सं. प्रत्यय, प्रा. पत्ताय] (१) **स्थान-परिचय।** (२) **खोज, सुराग, टोह।** (३) **जानकारी, खबर।** (४) **रहस्य, भेद।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...क, पताका—संज्ञा स्त्री. [सं. पताका] (१) **झंडा**। उ.—(क) पजरत, धुजा, पताक, छत्र, रथ, मानिमय कनक-अवास—९-८३। (ख) स्वेत छत्र फहरात सीस पर ध्वज पताक बहुवान—२३७७। (ग) पवन न पताका अंबर भई न रथ के अंग—२५४०। (२) **डंडा जिसमें पताका पहनायी जाती है। (३) नाटक का वह स्थल जहाँ पात्र की चिंता आदि का समर्थन आगंतुक भाव से हो।**

...किनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सेना**।

...की—संज्ञा पुं. [सं. पताकिन्] **पताकाधारी**।

...र—संज्ञा पुं. [सं. पाताल] (१) **पाताल**। (२) **जंगल**।

...री—संज्ञा. पुं. [सं. पाताल] **पाताल लोक**। उ.—सूरदास बलि सरबस दीन्हौ, पायौ राज पतारी—८-१४

...रौ—संज्ञा पुं. [सं. पाताल] **पाताल लोक**। उ.—कहौ तौ सैना चारु रचौं कपि, धरनी-ब्योम पतारौ—९-१०८।

...ल—संज्ञा पुं. [सं. पाताल] **पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से अंतिम जहाँ बलि को विष्णु ने भेजा था**। उ.—सो छलि बाँधि पताल पठायौ, कौन कृपानिधि, धर्मा—१-१०४।

...रा—संज्ञा पुं. [हिं. पत्ता] **सूखे हुए पत्ते**।

...—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **किसी वस्तु का मालिक, स्वामी, अधिपति**। (२) **किसी स्त्री का विवाहित पुरुष, भर्ता, कांत**। उ.—देखहु हरि जैसे पति आगम सजति सिंगार धनी।—३४६१। (३) **मर्यादा, प्रतिष्ठा, लज्जा, साख**, उ.—(क) रिपु कच गहत द्रुपद-तनया जब सरन-सरन कहि भाषी। बढ़ै दुकूल-कोट अंबर लौं, सभा-माँझ पति राखी—१-२७। (ख) सभा-माँझ द्रौपदि पति राख, पति पानिप कुल ताकौ—१-११३। (ग) हमहिं खिझाइ आपु ...ति खोवत यामैं कहा तुम पावहु—३२६६। (घ) ...यौं क्योंहूँ पति जात बड़े की मुख न देखावत लाजन—३९९।

...—संज्ञा स्त्री. [सं. पत्र] **चिट्ठी, पत्र**। उ.—जो ...तिआँ हो तुम पठवत लिखि बीच समुझि सब पाउ—३४७२।

पतिआइ—क्रि. स. [हिं. पतियाना] **विश्वास करो, सत्य मानो**। उ.—सूरदास संपदा-आपदा जिनि कोऊ पतिआइ—१-२६५।

पतिआना—क्रि. स. [सं. प्रत्यय, प्रा. पत्तय+आना] **विश्वास करना**।

पतिआर, पतिआरो, पतिआरौ—संज्ञा पुं. [हिं. पतिआना] **विश्वास, साख**। उ.—कहा परदेसी को पतिआरो—२७३२।

पतिघातिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पति की हत्या करने वाली**। (२) **वैधव्य योगवाली स्त्री**।

पतित—वि. [सं.] (१) **समाज से बहिष्कृत, जातिच्युत**। उ.—जज्ञ-भाग नहिं लियौ हेत सौं रिषिप्रति पतित बिचारे—१-२५। (२) **महापापी अतिपातकी**। उ.—(क) नंद-बरुन-बंधन-भय-मोचन सूर पतित सरनाई—१-२७। (ख) सूर पतित तुम पतित-उधारन, गहौ बिरद की लाज—१-१०२। (३) **गिरा हुआ**। (४) **आचार या नीतिभ्रष्ट**। (५ **अधम, नीच**।

पतित-उधारन—वि. [सं. पतित+उधारना] **पतितों का उद्धार करनेवाला**।

संज्ञा पुं.—(१) **ईश्वर**। (२) **ब्रह्म का अवतार**।

पतितता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पतित होने का भाव**। (२) **नीचता, अधमता**। (३) **अपवित्रता**।

पतितपावन—वि. [सं.] **पतित को शुद्ध करनेवाला**।

संज्ञा पुं.—(१) **ईश्वर**। (२) **ब्रह्म का अवतार**।

पतितेस—वि. [सं. पतित+ईश] **बड़ा पतित, पतितों में सबसे बढ़कर**। उ.—हरिहौं सब पतितनि-पतितेस—१-१४०।

पतितै—वि. सवि. [सं. पतित] **पापी ही रहकर, पातकी ही रहकर**। उ.—हौं तौ पतित सात पीढ़िनि कौ, पतितै ह्वै निस्तरिहौं—१-१३४।

पतिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. पत्नी] **विवाहिता स्त्री, पत्नी**। उ.—(क) गौतम की पतिनी तुम तारो, देव, दवानल कौं अँचयौ—१-२६। (ख) चरन-कमल परसत रिषि पतिनी, तजि पषान, पद पायौ—१-१८८।

पतिबरत—संज्ञा पुं. [सं. पतिव्रत] **पति में स्त्री की पूर्ण**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रीति और भक्ति। उ.—सूर स्याम सों साँच पारिहौं यह पतिबरत सुनहु नँदनंदन—१२२०।

पतिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. पत्र] **चिट्ठी।** उ.—इतनी बिनती सुनहु हमारी बारक हूँ पतिया लिखि दीजै—२७२७।

पतियाई—क्रि. स. [हिं. पतियाना] **विश्वास किया।** उ.—यह बानी वृषभानु-घरनि कही तब जसुमति पतियाई—७५६।

पतियाति—क्रि. स. [हिं. पतियाना] **विश्वास करती है।** उ.—सूर मिली ढरि नंदनँदन को अनत नहीं पतियाति—पृ० ३३७ (६५)।

पतियाना—क्रि. स. [सं. प्रत्यय+हिं. आना] **विश्वास करना।**

पतियानी—क्रि. स. [हिं. पतियाना] **विश्वास किया।** उ.—कौन भाँति हरि को पतियानी—१० उ०-३७।

पतियार, पतियारा, पतियारो—संज्ञा पुं. [हिं. पतियाना] **विश्वास, यकीन।** उ.—(क) कहा परदेसी को पतियारो—२७३१। (ख) कुँवरि पतियारो तब कियो जब रथ देख्यो नैन—१० उ.-८।

पतिव्रत—संज्ञा पुं. [सं.] **पति में अनन्य प्रीति।**

पतिव्रता—वि. [सं.] **पति में अनन्य प्रीति रखनेवाली।**

पती—संज्ञा पुं. [सं. पति] (१) **पति।** (२) **स्वामी।**

पतीजत—क्रि. अ. [हिं. पतीजना] **विश्वास करता है।** उ.—ओढ़ियत है की डसिअत हैं कीधौं कहिअत कीधौं जु पतीजत—३३४१।

पतीजना—क्रि. अ. [हिं. प्रतीत+ना] **विश्वास करना, पतियाना।**

पतीजै—क्रि. अ. [हिं. पतीजना] **विश्वास करे, भरोसा करो।** उ.—(क) आवत देखि बान रघुपति के, तेरौ मन न पतीजै—९-१२६। (ख) तब देवकी दीन ह्वै भाष्यौ, नृप कौ नाहिं पतीजै। (ग) मनसा, बाचा, कहत कर्मना नृप कबहूँ न पतीजै—१०६। (घ) तिनहिं न पतीजै री जे कृतहिं न मानैं—२६८६।

पतीजौ—क्रि अ. [हिं. पतीजना] **विश्वास करो, पतियाओ।** उ.—जसुमति कह्यौ अकेली हौं मैं तुमहुँ संग मोहिं दीजौ। सूर हँसतिं ब्रजनारि महरि सौं, ऐहैं साँच पतीजौ—८१३।

पतीनना—क्रि. स. [हिं. प्रतीत+ना] **विश्वास करना।**

पतीनी—क्रि. स. [हिं. पतीनना] **विश्वास किया।** उ.—देवकी-गर्भ भई है कन्या, राइ न बात पतीनी—१०-४।

पतीर—संज्ञा स्त्री. [सं. पंक्ति] **कतार, पाँती।**

पतीली—संज्ञा स्त्री. [सं. पातिली] **देगची।**

पतुकी—संज्ञा स्त्री. [सं. पातिली] **हाँड़ी।**

पतुरिया—संज्ञा स्त्री. [सं. पातिली] **वेश्या।**

पतुली—संज्ञा स्त्री. [देश.] **कलाई का एक गहना।**

पतैहै—क्रि. स. [हिं. पतियाना] **विश्वास करेंगे।** उ.—दरसन ते धीरज जब रैहै तब हम तोहिं पतैहै—१२७७।

पतूख, पतूखी, पतोखी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पतोखा] **पत्ते का दोना।** उ.—(क) बारक वह मुख आनि देखावहु दुहि पै पिवत पतूखी—३०२६। (ख) एक बेर बहुरौ ब्रज आवहु दूध पतूखी खाहु—३४३७।

पतोखा—संज्ञा पुं. [हिं. पत्ता] **पत्ते का दोना।**

पतोह, पतोहू—संज्ञा स्त्री. [सं. पुत्रवधू, प्रा. पुत्रवहू] **बेटे की बहू, पुत्रवधू।**

पतौआ—संज्ञा पुं. [हिं. पत्ता] **पत्ता, पर्ण।**

पतौषी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. पतोखा] **पत्तों की दुनिया, छोटा दोना।** उ.—छीर समुद्र सयन संतत जिहिं, माँगत दूध पतौग्री दै भरि—३९२।

पत्त—संज्ञा पुं. [सं. पत्र] **पत्र, चिठ्ठी।** उ.—अब हम लिखि पठयो चाहति हैं, उहाँ पत्र नहिं पैहैं—३४६०।

पत्तन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नगर।** (२) **मृदंग।**

पत्तर—संज्ञा पुं. [सं. पत्र] **धातु का चौरस टुकड़ा।**

पत्तल—संज्ञा स्त्री. [हिं. पत्ता] (१) **पत्तों का बना पात्र जिसमें भोजन परसा जाता है।**

मुहा.—एक पत्तल के खानेवाले—(१) **संबंधी।** (२) **घनिष्ठ मित्र।** जिस पत्तल में खाना उसी में छेद करना—**जिससे लाभ उठाना या जिसका अन्न खाना उसी को हानि पहुँचाना।**

(२) **पत्तल में परसा हुआ भोजन।**

पत्ता—संज्ञा पुं. [सं. पत्र] (१, **पत्र, पत्रक, पर्ण।** उ.—भरनि पत्ता गिरि परे तें फिरि न लागै डार—१-८८।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा.— पत्ता खड़कना— (१) खटका या आहट होना। (२) आशंका होना। पत्ता तोड़कर भागना— तेजी से भागना। पत्ता न हिलना— जरा भी हवा न चलना। पत्ता हो जाना— तेजी से दौड़कर अदृश्य हो जाना।

(१) कान का एक गहना। (२) धातु का पत्तर।

पत्ति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पैदल सिपाही। (२) योद्धा।

पत्ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. पत्ता] (१) छोटा पत्ता। (२) साझे का भाग। (३) फूल की पंखुड़ी।

पत्थर—संज्ञा पुं. [सं. प्रस्तर, प्रा. पत्थर] (१) पाषाण।

मुहा.—पत्थर का कलेजा (दिल, हृदय)—जिसमें दया-ममता न हो। पत्थर की छाती— हिम्मती और मजबूत दिल वाला। पत्थर की लकीर—सदा बनी रहने वाली चीज। पत्थर को (में) जोंक लगना—असंभव बात होना। पत्थर चटाना— पत्थर पर रगड़ कर तेज करना। पत्थर निचोड़ना—कंजूस से दान ले लेना। पत्थर पर दूब जमना— असंभव और अनहोनी बात होना। पत्थर पसीजना (पिघलना)—कठोर दिल वाले में दया-ममता आना। पत्थर सा खींच (फेंक) मारना— बहुत कड़ी बात कहना। पत्थर से सिर फोड़ना (मारना) —असंभव बात की सफलता का प्रयत्न करना।

(२) ओला, इंद्रोपल।

पत्थर पड़ना— चौपट हो जाना। पत्थर पड़ जाय (पड़े)— चौपट हो जाय। पत्थर-पानी का समय— आँधी पानी का समय।

(३) (हीरा, जवाहर आदि) रत्न। (४) कुछ भी नहीं, व्यर्थ की चीज।

पत्नी—संज्ञा स्त्री. [सं.] विवाहिता स्त्री।

पत्नीव्रत—संज्ञा पुं. [सं.] पत्नी के प्रति पूर्ण प्रीति।

पत्य—संज्ञा पुं. [सं.] पति होने का भाव।

पत्याउ—क्रि. स. [हिं. पत्याना] विश्वास करो, प्रतीति हो। उ.—चारि भुज जिहिं चारि आयुध निरखि कै न पत्याउ—१०-५।

पत्याऊँ—क्रि. स. [हिं. पत्याना] विश्वास करूँ, सच मानूँ। उ.—मोहिं अपनैं बाबा की सौहैं, कान्हहिं, अब न पत्याऊँ—३४५।

पत्याति—क्रि. स. [हिं. पत्याना] विश्वास करती हूँ। उ.— (क) अब तुमको पिय मैं पत्याति हौं—१८७०। (ख) कहा कहत री मैं पत्याति नहिं—३००७।

पत्याना—क्रि. स. [हिं. पतियाना] विश्वास करना।

पत्यानी— क्रि. स. [हिं. पत्याना] विश्वास हुआ, प्रतीति की। उ.—सूरस्याम संगति की महिमा काहू को नैंकहु न पत्यानी – १२८४।

पत्याने, पत्यान्यो, पत्यान्यौ—क्रि. स. [हिं. पत्याना] विश्वास किया। उ.—(क) तुम देखत भोजन सब कीनो अब तुम मोहिं पत्याने – ६१६ (ख) सूरदास प्रभु इनहिं पत्याने आखिर बड़े निकामी री—पृ० ३२३ (१६)। (ग) सूरदास तहाँ नैन बसाए और न कहूँ पत्यान्यो — १८५७।

पत्याहि—क्रि. स. [हिं. पत्याना] विश्वास करो। उ.— जौन पत्याहि पूछि बलदाउहिं ५१०।

पत्याहु—क्रि. स. [हिं. पत्याना] विश्वास करो। उ.— जौ न पत्याहु चलौ सँग जसुमति, देखौ नैन निहारि— १०-२६२।

पत्यारी—संज्ञा पुं. [हिं. पतियारा] विश्वास, प्रतीति।

पत्यारी—संज्ञा स्त्री. [सं. पंक्ति] कतार, पाँती।

पत्यैए—क्रि. स. [हिं. पत्याना] विश्वास कीजिए। उ.— राँचेहु विरचे सुख नाहीं भूलि न कबहुँ पत्यैए— २२७५।

पत्यैहै—क्रि. स. [हिं. पत्याना] विश्वास करेगा। उ.— सूरस्याम को कौन पत्यैहै कुटिल गात तनु कारे— ३१६७।

पत्यैहौं—क्रि. स. [हिं. पत्याना] विश्वास करूँगी। उ.— सुनि राधा, अब तोहिं न पत्यैहौं—१५५०।

पत्र संज्ञा पुं. [सं.] (१) वृक्ष या बेल का पत्ता, पत्ती, दल, पर्ण। उ.—(क) लाखागृह पांडवनि उबारे, साकपत्र मुख नाए—१-३१। (ख) साकपत्र लै सबै अघाए न्हात भजे कुस डारी—१-१२२। (ग) हरि कह्यौ, साग पत्र मोहिं अति प्रिय, अम्रित ता सम नाहीं —१-२४१। (२) वह वस्तु जिस पर कुछ लिखा जाय। उ.—पुहुमि पत्र करि सिंधु मसानी गिरि मसि कौं लै डारैं—१-१८३। (३) वह कागज जिस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दान प्रतिज्ञा आदि की बात लिखी हो। (४) वह लेख जिस पर किसी व्यवहार, घटना आदि का प्रामाणिक विवरण दिया हो। (५) चिट्ठी, पत्र। (६) समाचारपत्र। (७) पृष्ठ सफा। (८) धातु का पत्तर। (९) तीर या पक्षी का पंख।

पत्र-पुष्प —संज्ञा पुं. [सं.] साधारण भेंट।

पत्र-वाहक—संज्ञा पुं. [सं.] पत्र ले जानेवाला।

पत्रा—संज्ञा पुं. [सं. पत्र] पंचांग, जंत्री, तिथिपत्र।

पत्रावलि, पत्र वली—संज्ञा स्त्री. [सं. पत्र+अवली] (१) पत्ते। (२) पत्तों की बनी पत्तल। उ.—मिलि बैठे सब जेंवन लागे, बहुत बने कहि पाक। अपनी पत्रावलि सब देखत, जहँ तहँ फेनि पिराक—४६४ (३) वे बेल-बूटें या रेखाएँ जो सजावट या शोभा-वृद्धि के लिए स्त्रियां माथे पर बना लेती हैं।

पत्रिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चिट्ठी, पत्र। (२) छोटा लेख। (३) सामयिक पत्र या पुस्तक।

पत्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चिट्ठी, पत्र। उ.—स्याम कर पत्री लिखी बनाइ—२९२६। (२) जन्मपत्री।

पथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मार्ग रास्ता। (२) रीति।

पथगामी—संज्ञा पुं. [सं. पथगामिन्] पथिक।

पथचारी - संज्ञा पुं. [सं. पथचारिन्] पथिक।

पथदर्शक, पदप्रदर्शक—संज्ञा पुं. [सं.] मार्ग बतानेवाला।

पथरना—क्रि. स. [हिं. पत्थर] पत्थर पर रगड़कर तेज या पैना करना।

पथराना—क्रि. अ. [हिं. पत्थर] (१) पत्थर की तरह नीरस और कठोर होना। (२) स्तब्ध या जड़ हो जाना।

पथरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पत्थर] पत्थर का छोटा पात्र।

पथरीला—वि. [हिं. पत्थर] जिसमें बहुत पत्थर हों

पथरौटा—संज्ञा स्त्री. [हिं. पत्थर] पत्थर का पात्र, कूँड़ी।

पथिक—संज्ञा पुं. [सं.] यात्री, राहगीर।

पथी—संज्ञा पुं. [सं. पथिन्] यात्री, पथिक।

पथु—संज्ञा पुं. [सं.] पथ, मार्ग।

पथ्य—संज्ञा पुं. [सं.] रोगी का हलका आहार।

पद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) काम। (२) स्थान, दर्जा। उ.—ध्रुवहिं अभै पद दियौ मुरारी—१-२८। (३) चिन्ह। (४) पैर। (५) शब्द। (६) छंद का चतुर्थांश। (७) उपाधि। (८) मोक्ष (९) गीत, भजन। उ.—सूरदास सोई कहै पद भाषा करि गाइ—१-२२५।

पदक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक गहना। (२) किसी धातु का गोल टुकड़ा जो विशेष कार्य करने पर पुरस्कार-स्वरूप दिया जाता है।

पदचर—संज्ञा पुं. [सं.] पैदल, प्यादा।

पदचारी—वि. [सं.] पैदल चलनेवाला।

पदचिन्ह—संज्ञा पुं. [सं.] चरणचिन्ह।

पदच्युत – वि. [सं.] पद से हटा या गिरा हुआ।

पदज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शूद्र। (२) पैर की उँगली।

वि० — जो पैर से उत्पन्न हो।

पदतल—संज्ञा पुं. [सं.] पैर का तलवा।

पदत्राण, पदत्रान—संज्ञा पुं. [सं. पदत्राण] पैरों की रक्षा करनेवाला, जूता। उ.—जहँ जहँ जात तहीं तहिं त्रासत, अस्म, लकुट, पदत्रान—१-१०३।

पददलित—वि. [सं.] (१) पैरों से कुचला हुआ। (२) बहुत दबाया या सताया हुआ।

पदन्यास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चलना, पैर रखना। उ.—मृदु पदन्यास मंद मलयानिल विगलंत सीस निचोल। (२) चलने की रीति। (३) चलन, रीति। (४) पद-रचना।

पदम—संज्ञा पुं. [सं. पद्म] कमल।

पदमनाभ – संज्ञा पुं. [सं. पद्मनाभ] विष्णु।

पदमाकर—संज्ञा पुं. [सं. पद्माकर] तालाब।

पदमासन—संज्ञा पुं. [सं. पद्मासन] ब्रह्मा। उ.—नाभि-सरोज पगट पदमासन उतरि नाल पछितावै—१०-६५।

पदमूल—संज्ञा पुं. [सं.] पैर का तलवा।

पदमैत्री – संज्ञा स्त्री. [सं.] अनुप्रास, वर्ण-मैत्री।

पदयोजना—संज्ञा स्त्री. [सं.] पद बनाने को शब्द जोड़ना।

पदरिपु—संज्ञा पुं. [सं. पद+रिपु] काँटा, कंटक। उ.—पद-रिपु पद अटक्यौ न सम्हारति, उलट न पलट खरी—६५६।

पदवी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) स्थान, पद, ओहदा, दर्जा। उ.—(क) अंबरीष, प्रहलाद, नृपति बलि, महा ऊँच पदवी तिन पाई—१-२४। (ख) कहा भयो जु भए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नँद-नंदन अब इह पदवी पाई—३२०८। (२) **पंथ।** (३) **परिपाटी। (४) उपाधि, खिताब।**

...ांक—संज्ञा पं. [सं] **चरण-चिह्न।**

...ात, पदाति, पदातिक—संज्ञा पं. [सं. पदाति, पदातिक] (१) **पैदल सिपाही। (२) प्यादा। (३) नौकर।**

...ादिका—संज्ञा पुं. [सं. पदातिक] **पैदल सेना।**

...ाधिकारी—संज्ञा पुं. [सं.] **ओहदेदार, अफसर।**

...ानुग—संज्ञा पुं. [सं.] **अनुयायी।**

...ार—संज्ञा पुं. [सं.] **पैरों की धूल, पद-रज।**

...ारथ—संज्ञा पुं. [सं. पदार्थ] (१) **धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।** उ.—अर्थ, धर्म अरु काम, मोच्छ फल, चारि पदारथ देत गनी—१-३९। (२) **मूल्यवान वस्तु।** उ.—जनम तौ ऐसेहिं बीति गयौ। जैसे रंक पदारथ पाए, लोभ बिसाहि लियौ—१-७८।

...ार्घ्य—संज्ञा पुं. [सं.] **जल जो पूज्य या अतिथि के चरण धोने को दिया जाय।**

...ार्थ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पद का अर्थ या विषय।** (२) **दर्शन का विषय-विशेष। (३) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। (४) चीज, वस्तु।**

...ार्थवाद—संज्ञा पुं. [सं.] **वह सिद्धांत जिसमें भौतिक पदार्थों का ही विशेष मान हो, आत्मा या ईश्वर का अस्तित्व तक न माना जाय।**

...ार्थवादी—वि. [सं.] **पदार्थवाद का समर्थक।**

...ार्पण—संज्ञा पुं. [सं.] **जाने की क्रिया या भाव।**

...ानवत—वि. [सं.] **नम्र, विनीत।**

...ावली—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पद-संग्रह।**

...क—संज्ञा पुं. [सं. पदक] (१) **गले में पहनने का एक गहना जिस पर प्रायः किसी देवता का चरण अंकित रहता है।** उ.—(क) पहुँची करनि, पदिक उर हरि-नख, कठुला कंठ मंजु गजमनियाँ—१०-१०६। (ख) उर पर पदिक कुसुम बनमाला, अंगद खरे बिराजैं—४५१। (२) **रत्न, (३) पदक।**

...संज्ञा पुं.—**पैदल सेना, पदाति।**

...—संज्ञा पुं. [सं. पद] **पैदल, प्यादा।**

...—संज्ञा पुं. [सं. पद] **चरण, पैर।**

...—संज्ञा पु. [सं. पद्म] (१) **कमल।** उ.—उरग-इन्द्र उनमान सुभग भुज, पानि पदुम आयुध राजैं—१-६९। (२) **सौ नील की संख्या जो १ के बाद पंद्रह शून्य देकर लिखी जाती है।** उ.—राजपाट सिंहासन बैठो, नील पदुम हूँ सौं कहै थोरी—१-३०३।

पदुमनी—संज्ञा स्त्री. [सं. पद्मिनी] **कमलिनी।**

पदोदक—संज्ञा पुं. [सं.] **चरणामृत।**

पद्धटिका—संज्ञा पुं. [सं.] **एक छंद।**

पद्धति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **रीति, परिपाटी, चाल।** उ.—सिव-पूजा जिहिं भाँति करी है, सोइ पद्धति परतच्छ दिखैहौं—९-१५७। (२) **कार्यप्रणाली, विधि-विधान।** उ.—यकटक रहैं पलक नाहिं लागैं पद्धति नई चलाऊँ—१४८५। (३) **पथ, मार्ग। (४) पंक्ति, कतार। (५) पुस्तक जिसमें कोई विधि लिखी हो।**

पद्धरि, पद्धरी—संज्ञा पुं. [सं. पद्धटिका] **एक छंद।**

पद्म—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कमल। (२) विष्णु का एक आयुध। (३) नौ निधियों में एक। (४) गले का एक गहना (५) सौ नील की संख्या जो १ के साथ १५ शून्य देकर लिखी जाती है।**

पद्मकोश—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल का छत्ता या संपुट।**

पद्मनाभ, पद्मनाभि—संज्ञा पुं. [सं.] **विष्णु।**

पद्मनाल—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कमल की कोमल नाल।** उ.—किहिं गयंद बाँध्यो, सुन मधुकर, पद्मनाल के काँचे सूते—३३९५।

पद्मनिधि—संज्ञा पुं. [सं.] **नौ निधियों में एक।**

पद्मराग—संज्ञा पुं. [सं.] **'माणिक' या 'लाल' रत्न।**

पद्मा—संज्ञा स्त्री. [सं] **लक्ष्मी।**

पद्माकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **तालाब जिसमें कमल हों।** (२) **हिन्दी के रीतिकालीन एक प्रसिद्ध कवि।**

पद्माक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कमलगट्टा। (२) विष्णु।**

पद्मालय—संज्ञा पुं. [सं.] **ब्रह्मा।**

पद्मासन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **योग का एक आसन।** (२) **ब्रह्मा।**

पद्मिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कमलिनी। (२) चित्तौर की एक रानी जो अपने जौहर के कारण अमर है।**

पद्य—संज्ञा पुं. [सं.] **छंदबद्ध कविता।**

पद्यात्मक—वि. [सं.] **जो छंदबद्ध हो।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पधरना—क्रि. अ. [हिं. पधारना] **मान्य व्यक्ति का आना।**

पधराना—क्रि. [सं. प्र+धारण] (१) **सम्मान से ले जाना या बैठाना।** (२) **प्रतिष्ठा या स्थापित करना।**

पधारना—क्रि अ. [हिं. पग+धारना] (१) **जाना, गमन करना।** (२) **आना या पहुँचना।** (३) **चलना।**

क्रि. स.—**सम्मान से बैठाना, प्रतिष्ठित करना।**

पधारे—क्रि. अ. [हिं. पधारना] **चले गये, गमन किया।** उ.—गो कह्यौ, हरि बैकुंठ सिधारे। सम-दम उनहीं संग पधारे—१-२६०।

पन—संज्ञा पुं. [सं. प्रण] **प्रतिज्ञा, संकल्प, निश्चय।** उ.—(क) धर्मपुत्र जब जज्ञ उपायौ द्विज मुख ह्वै पन लीन्हौं—२-२६। (ख) गाए सूर कौन नहिं उबर्यौ, हरि परिपालन पन रे—१-६६।

संज्ञा पुं. [सं. पर्वन्=विशेष अवस्था] **आयु के चार भागों (बाल्यावस्था, युवावस्था प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था) में से एक।** उ.—(क) तीनौ पन ऐसैं हीं खाए, समय गए पर जाग्यौ। (ख) तीन्यौ पन मैं और निबाहे इहै स्वाँग कौं काछे—१-१३६ (ग) तीनौं पन ऐसैं ही खोए, केस भए सिर सेत—१-२८६। (घ) तीनौंपन ऐसैं ही जाइ—७-२।

पनघट—संज्ञा पुं. [हिं. पानी+घाट] **वह घाट जहां पानी भरा जाता हो।**

पनच—संज्ञा स्त्री. [सं. पतंचिका] **धनुष को डोरी।** उ.—उतरी पनच अब काम के कमान की—पृ. ३०० (६)।

पनपना—क्रि. अ. [सं. पर्णय=हरा होना] (१) **पानी पाकर फिर हरा भरा हो जाना।** (२) **पुनः स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट होना।**

पनव—संज्ञा पुं. [सं. प्रणव] **ॐकार मंत्र।**

पनवाँ—संज्ञा पुं. [हिं. पा+वाँ] **हमेल आदि में लगी पान के आकार की चौकी, टिकड़ा।**

पनवाड़ी, अनवारी—संज्ञा स्त्री [हिं. पान+वाड़ी] **पान का खेत।**

संज्ञा पुं. [हिं. पान+वार] **पान बेचनेवाला, तम्बोली**

पनवारा—संज्ञा पुं. [हिं. पान+वार] (१) **पत्तल।** (२) **पत्तल भर भोजन।**

पनवारे—संज्ञा पुं. [हिं. पनवारा] (१) **पत्तों की बनी हुई पत्तल।** उ.—महर गोप सबही मिलि बैठे, पनवारे परसाए—१०-८६। (२) **परसी या भोजन से सजी पत्तल।** उ.—(क) ग्वारनि के पनवारे चुनिचुनि उदर भरीजै सीथिनि—४६०। (ख) कर कौ कौर डारि पनवारे नागर सूर आपु चले अति चाँड़े—१५५७।

पनवारौ—संज्ञा पुं. [हिं पनवारा] (१) **पत्तों की बनी पत्तल।** उ.—पहिले पनवारौ परसायौ—२३२१। (२) **पत्तल भर भोजन।** उ.—तब तमोल रचि तुमहिं खवावौं। सूरदास पनवारौ पावौं—१०-२११।

पनसूर—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह का बाजा।**

पनहा—संज्ञा पुं. [सं. परिणाह=चौड़ाई] (१) **दीवार आदि की चौड़ाई।** (२) **गूढ़ाशय, तात्पर्य।**

संज्ञा पुं.—(१) **चोरी का पता लगानेवाला।** (२) **ऐसे व्यक्ति को दिया जानेवाला पुरस्कार।**

पनहारा—संज्ञा पुं. [हिं. पानी+हारा] **पानी भरनेवाला।**

पनहियाँ, पनहिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. पनही] **छोटा जूता, जूती पनही।** उ.—खेलत फिरत कनकमय आँगन, पहिरे लाल पनहियाँ—६-१६।

पनही—संज्ञा स्त्री. [सं. उपानह] **जूता।**

पना—संज्ञा पुं. [सं. पानीय] **आम आदि का पन्ना।**

पनार, पनारा, पनाला—संज्ञा पुं. [हिं. परनाला] **गंदे जल का प्रवाह, परनाला।** उ.—(क) जैसे अंधौ अंध कूप मैं गनत न खाला-पनार। तैसेहिं सूर बहुत उपदेसैं सुनि-सुनि गे कै बार—१८४। (ख) तेरौ नीर सुची जो अब लौ, खार पनार कहावै—५६१।

पनारी, पनाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. परनाली] (१) **गंदे जल की धारा, परनाली।** (२) **धार, धारा।** उ.—(क) रुदन जल नदी सम बहि चल्यो उरज बीच मनोगिरी फोरि सरिता पनारी—पृ. ३४१ (५)। (ख) मानो दामिनि घरनि परी वी सुघर पनारो—१८२३। (ग) तट बारू उपचार चूर जल परी प्रस्वेद पनारी-२७२८

पनारे, पनाले—संज्ञा पुं. बहु [हिं. परनाले] **अनेक प्रवाह।** उ.—(क कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूँ उर बिच बहत पनारे—२७६३। (ख) चहुँ दिसि कान्ह कान्ह करि टेरत अँसुवनि बहत पनारे—३४४६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनासना—क्रि. स. [सं. प्राणाशन] पालना-पोसना।

पनाह—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) त्राण, बचाव।

मुहा.—पनाह माँगना—बचने की इच्छा करना। (२) रक्षा का स्थान, शरण, आड़।

पनिघट—संज्ञा पुं. [हिं. पनघट] घाट जहाँ पानी भरा जाता हो। उ.—जब तें पनिघट जाऊँ सखी री वा यमुना के तीर—२७६८।

पनियाँ, पनिया—वि. [हिं. पानी] पानी में रहनेवाला।

पनियाना—क्रि. अ. [हिं. पानी + आना] पानी बहना, पसीजना, प्रवाहित होना।

क्रि. स—(१) सींचना, तर करना। (२) तंग या परेशान करना।

पनिहा—वि. [हिं. पानी] पानी में रहनेवाला।

पनिहार, पनिहारा—संज्ञा पं [हिं. पनहरा] पानी भरने वाला।

पनिहारी—संज्ञा स्त्री. [. पुं. पनहार] पानी भरने वाली। उ.—हौं गोधन लै गयौ जमुन-तट, तहाँ हुती पनिहारी—६६३।

ली—वि. [सं. प्रण] प्रण करनेवाला।

नीर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] छेना।

नीला—वि. [हिं. पानी + इला] पानी मिला हुआ।

नेथी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पानी + पोथी] मोटी रोटी।

नौ—वि. [हिं. पन्ना] इमली आदि के पने में भीगे हुए। उ.—मूँग पकौरा पनौ पतवरा। इक कोरे इक भिजे गुरबरा—३६६।

नौआ—संज्ञा पुं. [हिं. पान + ओआ] एक पकवान।

नौटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पान + औटी] पान की डिबिया।

न—वि. [सं.] (१) गिरा-पड़ा। (२) नष्ट।

संज्ञा पुं.—रेंग या सरककर चलने की क्रिया।

नई—वि. [हिं. पन्ना] पन्ने की तरह हलके हरे रंग का।

नग—संज्ञा पुं. [सं.] साँप, सर्प। उ.—पन्नग-रूप गिले सिसु गो-सुत, इहिं सब साथ उबारयौ—४३३।

संज्ञा पुं. [हिं. पन्ना] पन्ना, मरकत।

नगारि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गरुड़। (२) मयूर।

नगिनि, पन्नगी—संज्ञा स्त्री. [सं. पन्नगी] नागिनि, सर्पिणी। उ.—(क) मनहुँ पन्नगिनि उतरि गगन ते दल पर फल परसावत—१३४५। (ख) मनो पन्नगी निकसि ता बिच रही हाटक गिरि लपटाई—पृ. ३१८ (७१)। (ग) खंजरीट मनो ग्रसित पन्नगी यह उपमा कछु आवै—२०६७।

पन्ना—संज्ञा पुं. [सं. पर्ण ?] मरकत रत्न। उ.—पन्ना पिरोजा लागे बिच-बिच १० उ०-२४।

संज्ञा पुं. [हिं. पात्र] पुस्तक का पृष्ठ।

संज्ञा पुं. [हिं. पना] आम, इमली आदि का पानी मिला पतला रस।

पन्नी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पन्ना = पृष्ठ] रुपहला, सुनहरा, रंगीन या चमकदार कागज।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पना] एक भोज्य पदार्थ।

संज्ञा स्त्री. [देश.] बारूद की एक तौल।

पन्हाना—क्रि. अ. [हिं. पहनाना] पहनाना।

पन्हैयाँ, पन्हैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. पनही] जूता।

पपड़ा, पपरा—संज्ञा पं. [सं. पर्पट] (१) लकड़ी, चूने आदि का पतला छिलका, चिप्पड़। (२) रोटी का बक्कल।

पपड़िआना, पपरिआना—क्रि. अ. [हिं. पपड़ी + आना] (१) सूखकर सिकुड़ना। (२) इतना सूखना कि पपड़ी पड़ जाय।

पपड़ी, पपरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पपड़ा] (१) सूखी और सिकुड़ी हुई छाल या परत। (२) घाव की खुरंड, छोटा पापड़। (३) सोहन पपड़ी नामक मिठाई। (४) छोटा पापड़।

पपिहा, पपीहरा, पपीहा—संज्ञा पुं. [देश. पपीहा] (१) चातक नामक पक्षी जो वसंत और वर्षा में बहुत सुरीली ध्वनि से बोलता है। (२) सितार के छः तारों में एक जो लोहे का होता है।

पपीता—संज्ञा पुं. [देश.] एक वृक्ष।

पपीलि—संज्ञा स्त्री. [सं. पिपीलिका] चींटी।

पपोटा—संज्ञा पुं. [सं. प्र + पट] पलक, दृगंचल।

पपोरना—क्रि. स. [देश.] (बल के गर्व से) बाहें ऐंठना।

पपोलना—क्रि. अ. [हिं. पोपला] पोपला मुँह चलाना।

पबारना—क्रि. स. [हिं. फेंकना] फेंकना।

पबि—संज्ञा पुं [सं. पवि] वज्र।

पब्बय—संज्ञा पु. [सं. पर्वत] पहाड़, पर्वत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पब्बि—संज्ञा पुं. [सं. पवि] **वज्र।**

पमाना—क्रि. अ. [?] **डींग हांकना।**

पय—संज्ञा पुं [सं. पयस्] (१) **दूध।** उ.—जिनि पहले पलना पौढ़े पय पीवत पूतना घाली—२५६७। (२) **जल, पानी।** (३) **अन्न।**

पयज—संज्ञा स्त्री. [सं. पैज] **प्रण, प्रतिज्ञा।**

पयद—संज्ञा पुं [सं. पयोद] **बादल, मेघ।**

पयधि—संज्ञा पुं. [सं. पयोधि] **सागर, समुद्र।**

पयनिधि—संज्ञा पुं. [सं. पयोनिधि] **सागर, समुद्र।** उ.—(क) मनु पयनिधि सुर मथत फेन फटि, दयौ दिखाई चंद—१०-२०३। (ख) मानहुँ पयनिधि मथत, फेन फटि चंद उजारयौ—४३१।

पयस्वती—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नदी, सरिता।**

पयस्विनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **गाय।** (२) **नदी।**

पयहारी—वि. [हिं. पय + आहारी] **सिर्फ दूध पीकर ही रहनेवाला।**

पयादि—संज्ञा पुं. [हिं. प्यादा] **पैदल, प्यादा।**

पयान, पयानो—संज्ञा पुं [सं. प्रयाण] **गमन, प्रस्थान, जाना, यात्रा।** उ.—(क) बिछुरत प्रान पयान करेंगे, रहौ आजु पुनि पंथ गहौ (हो)—६-३२। (ख) आजु रघुनाथ पयानो देत। बिह्वल भए स्रवन सुनि पुरजन, पुत्र-पिता कौ हेतु—६-३६।

पयार, पयाल—संज्ञा पुं. [सं. पलाल, हिं. पयाल] **धान, कोदों आदि के सूखे डंठल।** उ.—(क) धान को गाँव पयार ते जानौ ज्ञान बिषय रस भोरे। (ख) उनके गुन कैसे कहि आवै सूर पयारहिं भारत—पृ. ३२७ (६८)।

मुहा.—पयार गाहना—**व्यर्थ का श्रम करना।** उ.—(क) फिरि-फिरि कहा पयारहिं गाहे। (ख) भारि भूरि मन तो तू लै गयो, बहुरि पयारहिं गाहत—३०६५।

पयोघन—संज्ञा पुं. [सं.] **ओला।**

पयोद—संज्ञा पु. [सं.] **बादल, मेघ।**

पयोदन—संज्ञा पुं. [सं. पयस् + ओदन] **दूध-भात।**

पयोधर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **थन।** उ.—मनौ धेनु तृन छाँड़ि बच्छ हित, प्रेम-द्रवित चित स्रवत पयोधर—१०-१२४। (२) **स्त्री के स्तन।** उ.—पीन पयोधर सघन उन्नत अति तापर रोमावली लसी री—२३८४। (३) **बादल।** (४) **तालाब।**

पयोधि, पयोनिधि—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र।**

पयोमुख—वि. [सं.] **दुधमुहाँ या दूधपीता।**

पयोवाह—संज्ञा पुं. [सं.] **मेघ, बादल।**

पयोव्रत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक व्रत जिसमें केवल जल पीकर रहा जाता है।** (२) **श्रीकृष्ण का एक व्रत जिसमें बारह दिन तक केवल दूध पीकर उनका ध्यान किया जाता है।**

पयौ—संज्ञा पुं. [हिं. पय] **दूध।** उ.—पसु-पंछी तृन-कन त्यागयौ, अरु बालक पियौ न पयौ—६-४६।

पयौसार—संज्ञा पुं. [सं. पितृशाला] **स्त्री के पिता का घर, मायका, पीहर, नैहर।** उ.—भरत फिराइ पयोनिधि भीतर, सरिता उलटि बहाई। मनु रघुपति भयभीत सिंधु पत्नी प्यौसार पठाई—६-१२४।

परंच—अव्य. [सं.] (१) **और भी।** (२) **तो भी।**

परंजय—संज्ञा पुं. [सं.] **शत्रु को जीतनेवाला।**

परंतप—वि. [सं.] (१) **शत्रु को चैन न लेने देनेवाला।** (२) **जितेंद्रिय।**

परंतु—अव्य. [सं. परं + तु] **पर, तोभी, किन्तु।**

परंपरा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **क्रम, पूर्वापर क्रम।** उ.—यह तो परंपरा चलि आई सुख दुख लाभ अरु हानि—२६५८। (२) **वंश या संतति-क्रम।** (३) **रीति।**

परंपरागत—वि. [सं.] **परम्परा से होता आनेवाला।**

पर—वि. [सं.] (१) **दूसरा, अन्य।** (२) **पराया, दूसरे का।** (३) **भिन्न, पृथक्।** (४) **बाद का।** (५) **दूर, सीमा के बाहर।** (६) **सबसे ऊपर, श्रेष्ठ।** (७) **लीन।**

प्रत्य. [सं. उपरि] **अधिकरण की विभक्ति।** उ.—(क) कर-नख पर गोबर्धन धारी—१-२२। (ख) ऐकै चीर हुतौ मेरे पर—१-२४७।

संज्ञा पुं.—(१) **शत्रु।** (२) **शिव।** (३) **मोक्ष।**

अव्य. [सं. परम्] (१) **पीछे, पश्चात्।** (२) **किन्तु, परन्तु।**

संज्ञा पुं. [फ़ा.] **पक्षी के पंख, पक्ष।**

मुहा.—पर कट जाना—**बल या शक्ति का आधार न रह जाना।** पर काट देना—**बल या शक्ति का**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार नष्ट कर देना। पर जमाना—**सीधे-सादे व्यक्ति में भी चालाकी या धूर्तता आना।** पर न मारना (मार सकना)—**पास न फटक सकना।**

परई—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] (१) **पड़ता है, पतित होता है, गिरता है।** उ.—डोलै गगन सहित सुरपति अरु पुहुमि पलटि जग परई—६-७८। (२) (नींद) **पड़ती है।** उ.—बिधु बैरी सिर पर बसै निसि नींद न परई—२८६१।

संज्ञा स्त्री. [सं. पार] **मिट्टी का बड़ा कटोरा।**

परक—संज्ञा स्त्री. [हिं. परकना] **परकने की क्रिया।**

परकट—वि. [सं. प्रकट] **उत्पन्न।** उ.—मच्छ के उदर ते बाल परकट भयो—१० उ.-२५।

परकटा—[हिं. पर+कटना] **जिसके पंख कटे हों।**

परकना—क्रि. अ. [हिं. परचना] (१) **हिल-मिल जाना।** (२) **धड़क खुलना, चस्का पड़ना।**

परकसना—क्रि. अ. [हिं. परकासना] (१) **प्रकट या उत्पन्न होना।** (२) **प्रकाशित होना, जगमगाना।**

परकाजी—वि. [हिं. पर+काज] **परोपकारी।**

परकाना—क्रि. स. [हिं. परकना] (१) **हिलाना-मिलाना।** (२) **धड़क खोलना, चस्का डालना।**

परकार—संज्ञा पुं. [सं. प्रकार] (१) **भेद, किस्म।** (२) **रीति, ढंग, प्रकार।** उ.—(क) भयौ भागवत जा परकार। कहौं, सुनौ सो अब चित धार—१-२३०। (ख) चारिहूँ जुग करी कृपा परकार जेहि सूरहू पर करौ तेहि सुभाई—८-६।

परकारी—संज्ञा स्त्री [सं. प्रकार] **रीति, ढंग।** उ.—बूझत हैं पूजा परकारी—१०२१।

परकाला—संज्ञा पुं. [फ़ा. परगाल] (१) **सीढ़ी।** (२) **देहलीज़।** (३) **टुकड़ा।** (४) **चिनगारी।**

मुहा.—आफत का परकाला—**बहुत उपद्रवी।**

परकाश, परकास—संज्ञा पुं. [सं. प्रकाश] **प्रकाश।**

परकाशत, परकासत—क्रि. स. [हिं. प्रकाशना] **प्रकट करता है, उच्चरित करता है।** उ.—गदगद मुख बानी परकासत देह दसा बिसरी—१४७८।

परकाशना, परकासना—क्रि. स. [सं. प्रकाशन] (१) **प्रकाशित करना** (२) **प्रकट करना।**

परकाशित, परकासित—वि. [हिं. प्रकाशना] **चमकता हुआ, प्रकाशयुक्त, कांतियुक्त।** उ.—कोटि किरनि-मनि मुख प्रकासित, उड़पति कोटि लजावत—४७६।

परकाशी, परकासी—क्रि. स. [हिं. प्रकाशना] **प्रकट की, उच्चरित की।** उ.—सिंधु मध्य बाणी परकाशी—२४५९।

परकिति—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रकृति] **प्रकृति।**

परकीय—वि. [सं.] **पराया, दूसरे का।**

परकीया—संज्ञा स्त्री [सं.] **उपपति से प्रेम करनेवाली।**

परकीरति—संज्ञा स्त्री [सं. प्रकृति] **प्रकृति।**

परकृत—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रकृति] **स्वभाव, प्रकृति।** उ.—परकृत एक नाम हैं दोऊ किधौं पुरुष, किधौं नारि—२२२०।

परकृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दूसरे की कृति या रचना।**

परकोटा—संज्ञा पुं. [सं. परिकोट] (१) **चहारदीवारी।** (२) **पानी आदि को रोकने का धुस या बाँध।**

परख—संज्ञा स्त्री. [सं. परीक्षा, प्रा. परिक्ख] (१) **जांच, परीक्षा।** (२) **गुण-दोष-विवेचक वृत्ति।**

परखना—क्रि. स. [सं. परीक्षण, प्रा. परीक्खण] (१) **जांच या परीक्षा करना।** (२) **भला-बुरा जांचना।**

क्रि. स. [हिं. परेखना] **प्रतीक्षा या इन्तजार करना।**

परखाइ—क्रि. स. [हिं. परखना] **जाँचकर।** उ.—हम सौं लीजै दान के दाम सबै परखाइ—१०१७।

परखाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. परख] **परखने की क्रिया, भाव या मजदूरी।**

परखाना—क्रि. स. [हिं. परखना] (१) **जँचवाना।** (२) **सौंपाना।**

परखि—क्रि. स. [हिं. परखना] (१) **परखकर, जांच करके, गुण-दोष की परीक्षा करके।** उ.—ताहि कैं हाथ निरमोल नग दीजिए, जोइ नीकैं परखि ताहि जानै—१-२२३। (२) **देख लिया, निगाह डाल ली।** उ.—परखि लिए पाछेन को तेऊ सब आए—२५७५।

परखी—क्रि. स. [हिं. परखना] **जाँची, देखी-भाली।**

संज्ञा पुं. [हिं. पारखी] **परखनेवाला।**

परखैया—संज्ञा पुं. [सं.] **परखनेवाला।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परग—संज्ञा पुं. [सं. पदक] **डग, कदम ।** उ.—बामन रूप धरयौ बलि छलि कै, तीनि परग बसुधाऊ–१०-२२१ ।

परगट—वि. [सं. प्रकट] (१) **अंकित, चिन्हित** । उ.—अंकुस-कुलिस-बज्र ध्वज परगट तरुनी-मन भरमाए—६३१ । (२) **उत्पन्न ।**

प्रा०—कियौ परगट—**प्रकट किया, बताया ।** उ.—सुपनौ परगट कियौ कन्हाई—५४४ ।

परगटना—क्रि. अ. [हिं. प्रगट] **प्रगट होना, खुलना ।**

क्रि. स.—**प्रकट करना, खोलना ।**

परगन, परगना—संज्ञा पुं. [फ़ा. परगना] **भू-भाग जिसमें कई ग्राम हों** । उ.—ब्रज-परगन-सिकदार महर, तू ताकी करत नन्हाई—१०-३२९ ।

परगसना—क्रि. अ. [सं. प्रकाशन] **प्रकाशित होना ।**

परगाढ़—वि. [सं. प्रगाढ़] **बहुत गाढ़ा, गहरा ।**

परगास—संज्ञा पुं. [सं. प्रकाश] **प्रकाश** । उ.—अबिनाशी बिनसै नहीं सहज ज्योति परगास—३४४३ ।

वि०—**प्रकट ।** उ.—उदधि मथि नग प्रगट कीन्हो श्री सुधा परगास—१३५६ ।

परगासना—क्रि. अ. [सं. प्रकाशन] **प्रकाशित होना ।**

क्रि. स.—**प्रकाशित करना ।**

परगासा—वि. [सं. प्रकाश] **प्रकाशित** । उ.—बिनु पर-पानि करै परगासा—१०-३ ।

क्रि. स.—**प्रकट या उत्पन्न किया ।** उ.—सूरज चंद्र धरनि परगासा—२६४३ ।

परघट—वि. [सं. प्रकट] **उत्पन्न, प्रकट ।**

परचंड—वि. [सं. प्रचंड] **भयंकर, प्रचंड ।**

परचत—संज्ञा स्त्री. [सं. परिचित] **जान-पहचान, जानकारी ।** उ.—सुरति-सरित भ्रम भँवर तन मन परचत न लह्यौ ।

परचना—क्रि. अ. [सं. परिचयन] (१) **हिलना-मिलना ।** (२) **धड़क खुलना, चस्का लगना ।**

परचा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **कागज की चिट** । (२) **चिट्ठी ।**

संज्ञा पुं. [सं. परिचय] (१) **परख** । (२) **परिचय ।**

परचाना—क्रि. स. [हिं. परचना] (१) **हिलाना-मिलाना ।** (२) **धड़क खोलना, चस्का लगाना ।**

परचून—संज्ञा पुं. [सं. पर+चूर्ण] **दाल-चावल आदि ।**

परचै—संज्ञा पुं. [सं. परिचय] **जान-पहचान ।**

परचो, परचौ—संज्ञा पुं. [हिं. परचा] **परिचय, परख, परीक्षा ।** उ.—काहू लियो प्रेम परचो, वह चतुर नारि है सोई—२२७५ ।

परच्यौ—संज्ञा स्त्री. [हिं. परचो] **सीमा, अंत** । उ.—चंदन अंग सखनि कै चरच्यौ । जसुमति के सुख कौं नहिं परच्यौ—३९६ ।

परछत्ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. पर+छत] **हलका छाजन ।**

परछन—संज्ञा स्त्री. [सं. परि+अर्चन] **विवाह की एक रीति ।**

परछना—क्रि. स. [हिं. परछन] **विवाह में वर के आने पर आरती आदि करना ।**

परछा—संज्ञा पुं. [सं. परिच्छेद] (१) **भीड़ की कमी ।** (२) **समाप्ति ।**

परछाईं—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतिच्छाया] (१) **प्रतिबिंब ।** (२) **छायाकृति ।**

परछाया—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतिच्छाया] **परिछाईं, छाया ।** उ.—मंदिर की परछाया बैठ्यौ, कर मींजै पछिताइ—९-७५ ।

परछहिआँ, परछाँह—संज्ञा स्त्री. [हिं. परछाईं] **छाया, प्रतिबिम्ब** । उ.—(क) निरखि अपनो रूप आपुही बिबस भई सूर परछाँह को नैन जोरैं—पृ. ३१६ (५८) । (ख) मनो मोर नाचत सँग डोलत मुकुट की परिछहिआँ—३४५ ।

परजंत—अव्य. [सं. पर्यंत] **तक, लौं ।**

परजन—संज्ञा पुं. [सं. परिजन] **सेवक, अनुचर ।**

परजरना—क्रि. अ. [सं. प्रज्वलन] (१) **जलना, सुलगना ।** (२) **कुढ़ना, क्रुद्ध होना** । (३) **ईर्ष्या या डाह करना ।**

परजन्य—संज्ञा पुं. [सं. पर्जन्य] (१) **बादल** । (२) **इंद्र ।**

परजरना, परजलना—क्रि. अ. [सं. प्रज्वलन] **सुलगना ।**

परजर—वि. [सं. प्रज्वलित] **जलता हुआ ।**

परजरयौ—क्रि. अ. [हिं. परजरना] **क्रुद्ध हुआ, कुढ़ गया ।** उ.—सुनि अरे अंध दसकंध, लै सीय मिलि, सेतु करि बंध रघुबीर आयौ । यह सुनत परजरयौ, बचन नहिं मन धरयौ, कहाँ तैं राम सौं मोहिं डरायौ—९-१२८ ।

परजा—संज्ञा स्त्रीं. [सं॰ प्रजा] (१) **राज्य-निवासी, प्रजा ।** उ.—(क) परजा सकल धर्म-रत देखी—१-२९० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) रिषभराज परजा सुख पायौ—५-२ । (२) **आश्रितजन ।**

…जारना, परजालना—क्रि. स. [हिं. परजरना] **जलाना ।**

…रण—संज्ञा पुं. [सं. प्रण] **प्रण, प्रतिज्ञा ।** उ.—ताको पिता परण यह कीन्हो—१० उ.—२८ ।

…रणना—क्रि. स. [सं. परिणयन्] **विवाह करना ।**

…णाम—संज्ञा पुं. [सं. प्रणाम] **प्रणाम, नमस्कार ।** उ.—तब परिणाम कियौ अति रुचि सों अरु सबही कर जोरे—२६७१ ।

…तंचा—संज्ञा स्त्री. [हिं. प्रत्यंचा] **धनुष की डोरी ।**

…तंत्र—वि. [सं.] **परवश, पराधीन ।**

…तः—अव्य. [सं. परतस्] (१) **पीछे ।** (२) **आगे ।**

…त—क्रि. अ. [हि. पड़ना] (१) **पड़ता है, गिरता है, जाता है ।** उ.—पग-पग परत कर्म-तम-कूपहिं, को करि कृपा बचावै—१-४८ । (२) **स्थित है, उपस्थित होता है, स्थान पाता है ।** उ.—सूरदास कौं यहै बड़ौ दुख, परत सबनि के पाछे—१-१३६ । (३) **(युद्ध क्षेत्र) में मरकर गिरता है ।** उ.—इत भगदत्त, द्रोन, भूरिश्रव, तुम सेनापति धीर । जे जे जात, परत ते भूतल, ज्यौं ज्वाला-गत चीर—१-२६६ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पत्तर] (१) **तह, स्तर ।** (२) **तह, मोड़ ।**

…तक्ष, परतच्छ—वि. [सं. प्रत्यक्ष] **प्रकट, प्रत्यक्ष ।** उ.—(क) सिव-पूजा जिहिं भाँति करी है, सोइ पद्धति परतच्छ दिखैहौं—६-१५७ । (ख) कनक तुम परतच्छ देखहु सजे नवसत अंग—११३२ ।

…तर—वि. [सं.] **बाद या पीछे का ।**

…ताप—संज्ञा पुं. [सं. प्रताप] (१) **पौरुष, वीरता ।** उ.—यह अपनो परताप नंद जसुमतिहिं सुनैहौ—११४० । (२) **तेज ।** (३) **महिमा, महत्व, प्रताप ।** उ.—भजन कौ परताप ऐसौ जल तरै पाषान—१-२३५

…ताल—संज्ञा स्त्री. [हिं. पड़ताल] **जांच, खोज-खबर ।**

…तंचा—संज्ञा स्त्री. [हिं. प्रत्यंचा] **धनुष की डोरी ।**

…ति—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] (१) **पड़ता है, गिरता है ।** (२) **मिलता है, प्राप्त होता है ।** उ.—पलित केस, कफ कंठ बिरुंध्यौ, कल न परति दिन-राती—१-११८ ।

(३) **फाँसती है, बांधती है ।** उ.—मैं-मेरी करि जन्म गँवावत, जब लगि नाहिं परति जम डोरी—१-३०३ ।

परतिग्या, परतिज्ञा—संज्ञा स्त्री [सं. प्रतिज्ञा] **प्रतिज्ञा, व्रत, संकल्प ।** उ.—ऐसे जन परतिज्ञा राखत जुद्ध प्रगट करि जोरे—१-३१ ।

परती—क्रि॰ अ. [हिं. पड़ना] **गिरती ।** उ.—सुत सनेह समुझति सु सूर प्रभु फिरि फिरि जसुमति परती धरनी—३३३० ।

संज्ञा स्त्री—**जमीन जो जोती-बोई न जाय ।**

परतीत, परतीति—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतीति] **विश्वास ।** उ.—(क) कत अपनी परतीति नसावत, मैं पायौ हरि हीरा—१-१३४ । (ख) बिछुरे श्रीब्रजराज आजु तौ नैननि ते परतीति गई—२५३७ ।

परतेजना—क्रि. स. [सं. परित्यजन] **छोड़ना, त्यागना ।**

परतेजी—क्रि. स. [हिं. परतेजना] **छोड़ा, त्यागा ।** उ.—जैसे उन मोकों परतेजी कबहूँ फिरि न निहारत हैं ।

परतौ—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **प्रसिद्ध होता, ख्यात होता, (नाम) पड़ता या होता ।** उ.—जौ तू राम-नाम-धन धरतौ……… । जम कौ त्रास सबै मिटि जातौ, भक्त नाम तेरौ परतौ—१-२६७ ।

परत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **पहले या पूर्व होने का भाव ।**

परदच्छिणा, परदच्छिना—संज्ञा स्त्री. [सं प्रदच्छिणा] **परिक्रमा, प्रदक्षिणा ।** उ.—बहुरि बलभद्र परनाम करि रिषिन्हि को पृथ्वी परदच्छिणा को सिधाये—१० उ०-५८ ।

परदा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आड़ करने का कपड़ा ।**

मुहा.—परदा खोलना—**छिपी बात प्रकट करना ।** परदा डालना—**बात छिपाना ।** आँख पर परदा पड़ना—**दिखायी न देना ।** बुद्धि पर परदा पड़ना—**समझ में न आना ।** परदा रखना—**प्रतिष्ठा बनी रहने देना ।** राखत परदा तेरो—**तेरी प्रतिष्ठा बनाये रखना चाहती हैं ।** उ.—मधुकर, जाहि कहौ सुनि मेरौ । पीत बसन तन स्याम जानि कै राखत परदा तेरौ—३२७१ ।

(२) **आड़ करने की चीज ।** (३) **आड़, ओट, ओझल ।** (४) **ओट, छिपाव ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा.—परदा रखना—(१) **सामने न आना**। (२) **छिपाव रखना**। परदा होना—**दुराव-छिपाव होना**। उ.—सुनहु सूर हमसौं कहा परदा हम कर दीन्हीं साट सई—१२६७।

(५) **स्त्रियों को ओट में रखना**। (६) **तह, परत**। (७) **चमड़े की झिल्ली**।

परदेश, परदेस—वि. [सं. परदेश] **दूसरा देश, विदेश**। उ.—तिनको कठिन करेजो सखी री, जिनको पिय परदेश—२७५३।

परदेशिनि, परदेसिनि—वि. स्त्री. [सं. पुं. परदेशी] **विदेश की रहनेवाली, अन्य देशवासिनी**। उ.—मैं परदेसिनि नारि अकेली—६-६४।

परदेशी, परदेसी—वि. [सं. परदेशी] **विदेशी**।

संज्ञा पुं.—**विदेश में रहनेवाला व्यक्ति**। उ.—कहा परदेशी को पतियारो—२७३१।

परदोष—संज्ञा पुं. [सं. प्रदोष] (१) **संध्याकाल**। (२) **त्रयोदशी को शिवजी का व्रत**।

परधान—वि. [सं. प्रधान] **मुख्य, प्रधान**।

संज्ञा पुं. [सं. परिधान] **वस्त्र**। उ.—दान-मान-परधान पूरन काम किए।

परधान्यौ—क्रि. स. [सं. प्रधान] **प्रधान समझा, सबसे आवश्यक माना**। उ.—यहै मंत्र सबहीं परधान्यौ, सेतु बंध प्रभु कीजै। सब दल उतरि होई पारंगत, ज्यौं न कोउ इक छीजै—६-१२१।

परधाम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **परलोक**। (२) **ईश्वर**।

परन—संज्ञा पुं. [सं. प्रण] **टेक, प्रतिज्ञा**।

संज्ञा स्त्री [हिं. पड़ना] **बान, आदत**। उ.—राखौ हटकि उतै को धावै उनकी वैसिय परन परी री—१६६४।

क्रि. अ.—**पड़ना, पड़ जाना**।

प्र०—परन न दीनौ—**पड़ने नहीं दिया**। उ.—सभा माँझ द्रौपदि-पति राखी, पति पानिप कुल ताकौ। बसन ओट करि कोट बिसंभर, परन न दीन्हौ झाँकौ—१-११३।

परनकुटी—संज्ञा स्त्री [सं. पर्ण+कुटी] **पत्तों से बनी कुटी, पर्णकुटी, पर्णशाला**। उ.—तीनि पैंड़ बसुधा हौं चाहौं, परकुटी कौं छावन—८-१३।

परन-पुटी—संज्ञा स्त्री [सं. पर्ण+पुट] **पत्तों का दोना**।

परना—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **पड़ना**।

परनाम—संज्ञा पुं. [हिं. प्रणाम] **नमस्कार, प्रणाम**।

परनाला—संज्ञा पुं. [सं. प्रणाली] **पनाला, मोहरी**।

परनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पड़ना] **चढ़ाई, धावा**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पड़ना] (१) **बान, आदत, टेव, टेक, दृढ़ता**। उ.—(क) परनि परेवा प्रेम की, (रे) चित लै चढ़त अकास। तहँ चढ़ि तीय जो देखई, (रे) भू पर परत निसास—१-३२५। (ख) सूरदास तैसहि ये लोचन का धौं परनि परी। (ग) ऐसी परनि परी, री! जाको लाज कहा ह्वै है तिनको। (घ) राखौ हटकि उतै को धावै उनकी वैसिय परनि परी री—१६६४। (ङ) मनहुँ प्रेम की परनि परेवा याही से पढ़ि लीनी—२६०६। (२) **रट, रटना**।

परनौत—संज्ञा स्त्री. [हिं. पर+नवना] **प्रणाम, नमस्कार**। उ.—ताते तुमको करैं दँडौत। अरु सब नरहूँ को परनौत—५-४।

परपंच—संज्ञा पुं. [सं. प्रपंच] (१) **दुनिया का जंजाल**। (२) **झगड़ा-बखेड़ा**। (३) **ढोंग, आडंबर**। (४) **छल-कपट**। उ.—सोई परपंच करै सखि, अबला ज्यों बरई—२८६१।

परपंचक—वि. [सं. प्रपंचक] **बखेड़िया, झगड़ालू**।

परपंची—वि. [सं. प्रपंची] (१) **बखेड़िया, झगड़ालू**। (२) **धूर्त, कांइयां**। उ.—सब दल होहु हुस्यार चलहु अब घेरहिं जाई। परपंची है कान्ह कछू मति करै ढिढाई—१० उ.-८।

परपराना—क्रि. अ. [देश.] **मिर्च आदि का तीक्ष्ण लगना**।

परपार—संज्ञा पुं. [हिं. पर+पार] **दूसरी ओर का तट**।

परपीड़क, परपीरक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूसरे को कष्ट देनेवाला**। (२) **दूसरे के कष्ट को समझने और उससे मुक्त करानेवाला**। उ.—मागध हति राजा सब छोरे ऐसे प्रभु पर-पीरक।

परपूठा—वि. [सं. परिपुष्ट, प्रा. परिपुट्ठ] **पक्का**।

परफुल्ल, परफुल्लित—वि. [सं. प्रफुल्ल, हिं. प्रफुल्लित]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रफुल्लित, आनंदित । उ.—धन्य पिता जापर परफुल्लित राघव-भुजा अनूप । वा प्रतापि की मधुर बिलोकनि पर वारौं सब भूप—९-१३४ ।

[परबं]ध—संज्ञा पुं. [सं. प्रबंध] **व्यवस्था, प्रबंध** ।

[पर]ब—संज्ञा पुं. [सं. पर्व] **त्योहार, उत्सव** । उ.—आजु परब हँसि खेलो हो मिलि सँग नंदकुमार—२४०२ ।

[पर]बत—संज्ञा पुं. [सं. पर्वत] (१) **पहाड़, पर्वत** । (२) **बड़ा ढेर** । उ.—अति आनंद नंद रस भीने । परबत सात रतन के दीने—१०-३२ ।

[पर]बल—वि. [सं. प्रबल] **सशक्त, बली** ।

[पर]बस—वि. [सं. पर=दूसरा+वश] **जो स्वतंत्र न हो, पराधीन** । उ.—परबस भयौ प्रभू ज्यौं रजु-बस, भज्यौ न श्रीपति रानौ—१-४७ ।

[पर]बसता, परबसताई—संज्ञा स्त्री. [सं. परवश्यता] **पराधीनता, परतंत्रता** ।

[पर]बाल—संज्ञा पुं. [सं. प्रबाल] (१) **सूँगा** । (२) **कोंपल** ।

[पर]बाह—संज्ञा पुं. [सं. प्रवाह] **धारा, प्रवाह** । उ.—उर-कलिंद तैं धँसि जल-धारा उदर-धरनि परबाइ—६३७ ।

[पर]बी—संज्ञा स्त्री. [हिं. परब] **पर्व या उत्सव का दिन** ।

[पर]बीन, परबीने, परबीनो—वि.[सं. प्रवीण] **दक्ष, कुशल** । उ.—बिबिध बिलास-कला-रस की बिधि उभै अंग परबीनो—२२७५ ।

[पर]बेश, परवेश—संज्ञा पुं. [सं. प्रवेश] **पैठ, प्रवेश** । उ.—धरत नलिनी बूँद ज्यों जल बचन नहिं परवेश—३४७६ ।

[पर]बो—संज्ञा पुं. [हिं. पड़ना] **पड़ने की क्रिया या भाव** । उ.—जामें बीती सोई जानै कठिन सुप्रेम पाश को परबो—२८६० ।

[पर]बोध—संज्ञा पुं. [सं. प्रबोध] **बोध, ज्ञान** । उ.—होइ ज्यों परबोध उनको मेरी पति जिन जाइ—१६१४ ।

[पर]बोधत—क्रि. स. [हिं. परबोधना] **समझाता या दिलासा देता है** । उ.—पुनि यह कहा मोहिं परबोधत धरनि गिरी मुरझैया ।

[पर]बोधन—संज्ञा पुं. [हिं. परबोधना] **समझाने या दिलासा देने की क्रिया, भाव या उद्देश्य** । उ.—(क) गोपिनि को परबोधन कारन जैहै सुनत तुरंत—२६१३ । (ख) हमको परबोधन हरि तौ नहिं पठए—३२६७ ।

परबोधना—क्रि. स. [सं. प्रबोधना] (१) **जगाना** । (२) **ज्ञान का उपदेश करना** । (३) **सांत्वना देना, दिलासा देना** ।

परबोधि—क्रि. स. [हिं. परबोधना] **समझा-बुझाकर, दिलासा देकर** । उ.—(क) रानिनि परबोधि स्याम महल द्वारे आए—२६१६ । (ख) सूर नन्द परबोधि पठावत निठुर ठगोरी लाई—२६५४ ।

परबोधो,परबोधौ—क्रि. स. [हिं. परबोधना] **ज्ञान का उपदेश दो** । उ.—जो तुम कोटि भाँति परबोधौ जोग-ज्ञान की रीति—३२११ ।

परब्रह्म—संज्ञा पुं. [सं.] **ब्रह्म जो जगत से परे है** ।

परभव—संज्ञा पुं. [सं.] **दूसरा जन्म** ।

परभा—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रभा] **प्रकाश, आभा, कांति** ।

परभाई, परभाउ, परभाऊ—संज्ञा पुं. [सं. प्रभाव] **फल, परिणाम, असर** । उ.—यह सब कलयुग कौ परभाउ। जो नृप कैं मन भयउ कुभाउ—१-२६० ।

परभात—संज्ञा पुं. [सं. प्रभात] **प्रातःकाल, प्रभात, सबेरा** । उ.—(क) सुनि सीता, सपने की बात । रामचन्द्र लछिमन मैं देखे, ऐसी बिधि परभात—९-८२ । (ख) रथ आरूढ़ होत परभात—९-८२ । (ख) रथ-आरूढ़ होत बलि गई होइ आयो परभात—२५३१ ।

परभाती—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रभाती] **प्रातःकालीन गीत** ।

परम—वि. [सं.] (१) **सबसे बढ़ा-चढ़ा** । (२) **उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, महान्** । उ.—परम गंग कौं छाँड़ि महातम और देव कौं ध्यावैं—१-१५८ । (३) **प्रधान** ।

परमगति—संज्ञा स्त्री [सं.] **मोक्ष, मुक्ति** ।

परमतत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मूल तत्व या सत्ता जिससे सारी सृष्टि का बिकास माना जाता है** । (२) **ब्रह्म** ।

परमधाम—संज्ञा पुं. [सं.] **बैकुंठ** ।

परमपद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रेष्ठ पद** । (२) **मुक्ति** ।

परमपिता, परमपुरुष—संज्ञा पुं. [सं.] **परमेश्वर** ।

परमफल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रेष्ठ फल** । (२) **मुक्ति** ।

परम भट्टारक—संज्ञा पुं.[सं.] **एकछत्र राजा की उपाधि** ।

परमहंस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ज्ञान की चरमावस्था को**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचा हुआ संन्यासी। (२) **परमात्मा**। उ.—परमहंस तब बचन उचारे—१० उ.-१०६।

परमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **छवि, सुंदरता**।

परमाणु—संज्ञा पुं. [सं.] **अत्यंत सूक्ष्म अणु**।

परमाणुवाद—संज्ञा पुं. [सं.] **परमाणुओं से सृष्टि की उत्पत्ति का सिद्धांत**।

परमाणुवादी—वि. [सं.] **परमाणवाद का पोषक**।

परमातम—संज्ञा पं. [हिं. परमात्मा] **परब्रह्म, ईश्वर**। उ.—तन स्थूल अरु दूबर होइ। परमातम कौं ये नहि दोइ—५-४।

वि.—**अत्यंत घनिष्ठ**। उ.—ता नृप कौ परमातम मित्र। इक छिन रहत न सो अन्यत्र—४-१२।

परमातमा, परमात्मा—संज्ञा पुं. [सं. परमात्मन्, हिं. परमात्मा] **परब्रह्म, ईश्वर**।

परमानंद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अत्यंत सुख**। (२) **ब्रह्म के साक्षात् का सुख, ब्रह्मानंद**। (३) **आनंदस्वरूप ब्रह्म**।

वि.—[सं. परम+आनन्द] **जो आनंदस्वरूप हो**। उ.—तुम अनादि, अविगत, अनंतगुन पूरन परमानंद —१-१६३।

परमान—संज्ञा पुं. [सं. प्रमाण] (१) **प्रमाण, सबूत**। (२) **सत्य बात**। (३) **सीमा, फैलाव, हद**। उ.—द्वादश कोश रास परमान—१८१६।

वि.—(१) **सत्य, प्रमाणित**। उ.—ऊधौ, वेद बचन परमान—३३६६। (२) **पूर्ण**। उ.—(क) रिषि कह्यौ ताहि दान-रति देहि। मैं बर देहुँ तोहिं सो लेहि। सत्यवती सराप भय मान। रिषि कौ बचन कियौ परमान—१-२२६। (ख) सिव कौ बचन कियौ परमान—४-५। (३) **स्वीकार, मान्य**। उ.—कह्यौ, जो कहौ सो हमैं परमान है—८-८।

परमानना—क्रि. स. [सं. प्रमाण] (१) **सत्य या प्रमाण समझना** (२) **स्वीकारना, सकारना**।

परमाने—संज्ञा पुं. [सं. प्रमाण] **प्रमाण**। उ.—अब तुम प्रगट भए वसुदेव सुन गर्ग बचन परमाने—२६५०।

परमान्न—संज्ञा पुं. [सं.] **खीर, पायस**।

परमारथ—संज्ञा पुं. [सं. परमार्थ] **सारवस्तु, वास्तव सत्ता, यथार्थ तत्व**। उ.—हरि, हौं महापतित अभिमानी। परमारथ सौं बिरत, बिषय रत, भाव-भगति नहिं नैंकहुँ जानी—१-१४६।

परमार्थ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रेष्ठ वस्तु**। (२) **यथार्थ तत्व या सत्ता**। (३) **मोक्ष**। (४) **पूर्ण सुख**।

परमार्थवादी—वि. [सं. परमार्थवादिन्] **ज्ञानी**।

परमार्थी—वि. [सं. परमार्थिन्] (१) **यथार्थ तत्व का अन्वेषक या जिज्ञासु**। (२) **मुक्ति चाहनेवाला, मुमुक्ष**।

परमिति—संज्ञा स्त्री. [सं. परिमिति] (१) **नाप, तोल, सीमा**। उ.—सुनि परमिति पिय प्रेम की (रे) चातक चितवन पारि। घन-आसा सब दुख सहै, (पै) अनत न जाँचै बारि—१-३२५। (२) **मर्यादा**। उ.—(क) पाँचै परमिति परिहरै हरि होरी है—२४५५। (ख) जुरयौ सनेह नँदनंदन सों तजि परमिति कुलकानि—३२१४। (ग) परमिति गए लाज तुम्हीं को हंसिनि ब्याहि काग लै जाहि—१० उ.-१०। (३) **परिधि, घेरा, सीमा, विस्तार**। उ.—(क) कोश द्वादश राज परमिति रच्यो नंदकुमार—१८३७। (ख) उमँग्यौ प्रेम समुद्र दशहूँ दिशि परमिति कही न जाय—१० उ.-११२।

परमुख—वि. [सं. पराङ्मुख] **विमुख, विरु**।

परमेश, परमेश्वर, परमेसर, परमेसुर, परमेस्वर—संज्ञा पुं. [सं.] **सगुण ब्रह्म**।

परमेश्वरी, परमेसरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दुर्गा, देवी**।

परमोद—संज्ञा पुं. [सं. प्रमोद] **आनंद, प्रमोद**।

परमोदना—क्रि. स. [सं. प्रमोद] **बहलाना, फुसलाना**।

परमोधत—क्रि. स. [हिं. प्रबोधना] **धीरज देता है, प्रबोधता है, ढाढ़स बँधाता है**। उ.—धीरज धरहु, नैंकु तुम देखहु, यह सुनि लेति बलैया। पुनि यह कहति मोहिं परमोधति, धरनि गिरी मुरझैया—५६०।

परमोधना—क्रि. स. [हिं. प्रबोधना] **धीरज देना**।

परमोधि—क्रि. स. [हिं. प्रबोधना] **समझा-बुझाकर**। उ.—माता कौं परमोधि दुहुँनि धीरज धरवायौ—५८६।

परयंक—संज्ञा पुं. [सं. पर्यंक] **पलँग**।

परयौं—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **पड़ा हुआ हूँ, ठहरा हूँ, स्थित हूँ**। उ.—किए प्रन हौं परयौं द्वारैं, लाज प्रन की तोहिं—१-१०६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रयौ—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] (१) **पड़ा, गया, पहुँचा, डाला गया**। उ.—नरक कूपन जाइ जमपुर परयौ बार अनेक —१-१०६। (२) **इच्छा हुई, (हठ) ठाना, धुन लगी।** उ.—माधौ जू, मन हठ कठिन परयौ। जद्यपि बिद्य-मान सब निरखत, दुःख सरीर भरयौ—१-१००। (३) **मूर्छित होकर या मरकर गिरा, पतित हुआ।** उ.—भीषम सर-सज्या पर परयौ—१-२७६।

रलउ, परलय—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रलय] **सृष्टि का नाश।** उ.—(क) रात होइ तब परलय होइ।

रला—वि. [हिं. पर+ला] **दूसरी ओर का।**

ली—वि. स्त्री. [हिं. परला] **उस ओर की, दूसरी तरफ की।** उ.—ध्रुव प्रताप परली दिसि पहुँच्यौं, कौन बढ़ावै बात—६-१०४।

लै—संज्ञा पुं. [सं. प्रलय] **प्रलय, सृष्टि-नाश।** उ.—चतुरमुख कहयौ, सँख असुर स्त्रुति लै गयौ, सत्यव्रत कहयौ, परलै दिखायौ—८-१६।

लोक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूसरा लोक जैसे स्वर्ग, बैकुंठ।** उ.—राजा कौ परलोक सँवारौ, जुग-जुग यह चलि आयौ—६-५०। (२) **मृत आत्मा की अन्य स्थिति-प्राप्ति।**

र—संज्ञा पुं. [सं. पटोल] **परवल (तरकारी)।** उ.—पोई परवल फाँग फरी चुनि—२३२१।

वि.—**श्रेष्ठ, मुख्य, प्रधान।**

रदिगार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **पालक।** (२) **ईश्वर।**

रिशा—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **पालन-पोषण।**

र्त—संज्ञा पुं. [सं. प्रवर्त] **आरंभ, प्रचार।** उ.—विष्णु की भक्ति परवर्त जग मैं करी, प्रजा कौं सुख सकल भाँति दीन्हौ—४-११।

ल—संज्ञा पुं. [सं. पटोल] **एक साग या तरकारी।**

श, परवश्य—वि. [सं.] **पराधीन।**

, परवाई—संज्ञा पुं. [हिं. पुर, पुरवा] **मिट्टी का कटोरे की तरह का एक पात्र।**

संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतिपदा, प्रा. पडिवा] **प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि, पड़वा, पड़िवा।**

संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **चिंता, ख्याल।** (२) **भरोसा।**

न—संज्ञा पुं. [सं. प्रमाण] (१) **प्रमाण।** (२) **सत्य या यथार्थ बात।** उ.—ऐसे होहु जु रावरे हम जानति परवान—१०१६। (३) **सीमा, अवधि।**

मुहा.—परवान चढ़ना—**सब सुख भोगना।**

परवानगी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **आज्ञा, अनुमति।**

परवाना—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **आज्ञापत्र।** (२) **पतिंगा।**

परवाल—संज्ञा पुं. [सं. प्रवाल] (१) **मूँगा।** (२) **कोंपल।**

परवास—संज्ञा पुं. [सं. प्रवास] **प्रवास, यात्रा।**

परवाह—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. परवा] (१) **चिंता, आशंका।** (२) **ध्यान, ख्याल।** उ.—नहिं परवाह नंद के ढोटहिं पूरत बेनु धरे—६६८। (ख) प्रिया मन परवाह नाहीं कोटि आवै जाहिं—२०२१। (३) **आसरा, भरोसा।**

संज्ञा पुं. [सं. प्रवाह] **बहने का भाव।**

परवीन—वि. [सं. प्रवीण] **चतुर, कुशल।** उ.—(क) तुम परवीन सबै जानत हौ ताते इह कहि आई—३०१६। (ख) हम जानी जु बिचार पठाए सखा अंग परवीन—३२१७।

परवेख—संज्ञा पुं. [सं. परिवेष] **वर्षा में चंद्रमा के चारो ओर दिखायी पड़नेवाला घेरा, चंद्रमंडल।**

परशंसा—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रशंसा] **बड़ाई।** उ.—सूर करत परशंसा अपनी हारेउ जीति कहावत—३००८

परश—संज्ञा पुं. [सं. स्पर्श] **छूना, स्पर्श।**

परशु—संज्ञा पुं. [सं.] **अस्त्र जिसके सिरे पर लोहे का अर्द्धचंद्राकार मूल लगता है।**

परशुधर—संज्ञा पुं. [सं.] **परशुधारी, परशुराम।**

परशुराम—संज्ञा पुं [सं] **जमदग्नि के पुत्र जो ईश्वर के छठे अवतार माने जाते हैं। परशु इनका अस्त्र था।**

परसंग—संज्ञा पुं. [सं. प्रसंग] (१) **बात, वार्ता, विषय।** उ.—तहाँ हुतौ इक सुक कौ अंग। तिहिं यह सुन्यौ सकल परसंग—१-२२६।

परसंसा—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रशंसा] **बड़ाई।**

परस—संज्ञा पुं. [सं. स्पर्श] **छूना, छूने की क्रिया या भाव, स्पर्श।** उ.—(क) झूठौ सुख अपनौ करि जान्यौ परस प्रिया कै भीनौ—१-६५। (ख) जे पद-पदुम-परस-जल-पावन-सुरसरि-दरस कटत अघ भारे—१-६४।

संज्ञा पुं. [सं. परश] **पारस पत्थर।**

परसत—क्रि. स. [हिं. परसना] **स्पर्श करना, छूते ही,**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परसकर। उ.—परसत चोंच तूल उघरत मुख, परत दुःख कैं कूप—१-१०२।

परसति—क्रि. स. [हिं. परसना] **परोसती है।** उ.—जसुमति हरष भरी लै परसति। जेंवत हैं अपनी रुचि सौं अति—३९६।

परसन—संज्ञा पुं. [हिं. स्पर्श] **स्पर्श करने का भाव।**

मुहा.—मुँह परसन आना—**लल्लो-चप्पो की बातें करने आना।** उ.—(क) काहे को मुँह परसन आए जानति हौं चतुराई—१६५७। (ख) ह्याँ आए मुख परसन मेरो हृदय रहति नहि प्यारी—१६६८।

वि. [सं. प्रसन्न] **आनन्दित, खुश।** उ.—(क) गुरु प्रसन्न, हरि परसन होई—६-५। (ख) तबहिं अशीश दई परसन ह्वै सफल होउ तुम कामा—१० उ.-६६।

परसना—क्रि. स. [सं. स्पर्श] (१) **छूना।** (२) **छुआना।**

क्रि. स. [सं. परिवेषण] **(भोजन) परोसना।**

परसन्न—वि. [हिं. प्रसन्न] **हर्षित, आनन्दित।**

परसन्नता—संज्ञा स्त्री. [हिं. प्रसन्नता] **हर्ष, आनन्द।**

परसपर—क्रि. वि. [सं. परस्पर] **आपस में।** उ.—मार परसपर करत आपु मैं, अति आनन्द भए मन माहिं—५३३।

परसहु—क्रि. स. [हिं. परसना] **भोजन परोसो।** उ.—परसहु वेगि, वेर कत लावति, भूखे सारँगपानी—३९५।

परसा—संज्ञा पुं. [सं. परशु] **फरसा, परशु।**

परसाइ—क्रि. स. [हिं. परसना] **स्पर्श करके, स्पर्श करने से।** उ.—जो मम भक्त के मग मैं जाइ। होइ पवित्र ताहि परसाइ—७-२।

परसाऊँगो—क्रि. स. [हिं. परसाना] **स्पर्श कराऊँगा।** उ.—तुव मिलिवे की साध भुजा भरि उर सों कुच परसाऊँगो—१६४४।

परसाऊ—क्रि. स. [हिं. परसना] **स्पर्श कराया, छुआया।** उ.—बामन रूप धरयौ वलि छलि कै, तीनि परग वसुधाऊ। स्त्रमजल ब्रह्म-कमंडल राख्यौ दरसि चरन परसाऊ—१०-२२१।

परसाए—क्रि. स. [हिं. परसना] **(भोजन) परसवाया, (भोजन) सामने रखवाया।** उ.—(क) महर गोप सब ही मिलि बैठे, पनवारे परसाए—१०-८६। (ख) भाँति-भाँति ब्यंजन परसाए—६२४।

परसाद—संज्ञा पुं. [सं. प्रसाद] **देवता का भोग, प्रसाद।** उ.—दियो तब परसाद सबको भयो सबन हुलास—पृ० ३४८ (५७)।

परसादी—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रसाद] **देवता का भोग।**

परसाना—क्रि. स. [हिं. परसना] **स्पर्श कराना।**

क्रि. स. [हिं. परसना] **भोजन सामने रखवाना।**

परसायो—क्रि स. [हिं. परसाना] **(भोजन) सामने रखवाया।** उ.—पहिले पनवारौ परसायो—२३२१।

परसावत—क्रि. स. [हिं. परसाना] **छुआता है।** उ.—नासा सों नासा लै जोरत नैन नैन परसावत—१८६३।

परसावति—क्रि. स. [हिं. परसाना] **छुआती है।** उ.—(क) मनहु पन्नगिनि उतरि गगन ते दल पर फन परसावति—१३४५।

परसावै—क्रि. स. [हिं. परसाना] **स्पर्श करावे।** उ.—सुरसरि जब भुव ऊपर आवै। उनकौं अपनौं जल परसावै—६-६।

परसाल—अव्य. [सं. पर+फ़ा. साल] (१) **पिछले साल।** (२) **अगले साल।**

परसि—क्रि. स. [हिं. परसना] (१) **स्पर्श करके, छूकर।** उ.—जे पद-पदुम परसि ब्रजभामिनि सरबस दै, सुत-सदन बिसारे—१-६४। (२) **(शरीर में) मलकर या चुपड़कर।** उ.—धूरि झारि तातौ जल ल्याई, तेल परसि अन्हवाइ—१०-२२६।

क्रि. स.—**(भोजन) परोसकर या सामने रखकर।** उ.—अरु खुरमा सरस सँवारे। ते परसि धरे हैं न्यारे—१०-१८३।

परसिद्ध—वि. [सं. प्रसिद्ध] **विख्यात, प्रसिद्ध।**

परसु—संज्ञा पुं. [सं. परशु] **फरसा, परशु।**

परसुराम—संज्ञा पुं. [सं. परशुराम] **जमदग्नि ऋषि के पुत्र जो ईश्वर के छठे अवतार माने जाते हैं। 'परशु' इनका मुख्य शस्त्र था।**

परसैं—क्रि. स. [हिं. परसना] **छूते हैं, स्पर्श करते हैं।** उ.—कपट-हेत परसैं बकी जननी-गति पावै—१-४।

परसै—क्रि. स. [हिं. परसना] **स्पर्श करता है।** उ.—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...करत फन-घात बिष जात उतरात अति, नीर जरि जात, नहिं गात परसै—५५२ ।

...तौं—अव्य. [सं. परश्वः] (१) **बीते हुए 'कल' से एक दिन पहले** । (२) **आनेवाले 'कल' से एक दिन बाद** ।

...सोतम—संज्ञा पुं. [सं. पुरुषोत्तम] (१) **श्रेष्ठ या उत्तम व्यक्ति** । (२) **परमेश्वर** ।

...सौ—क्रि. स. [हिं. परसना] (१) **छुओ, स्पर्श करो** । (२) **निमग्न हो, स्नान करो** । उ.—सहस बार जौ बेनी परसौ, चंद्रायन कीजै सौ बार । सूरदास भगवंत-भजन बिनु, जम के दूत खरे हैं द्वार—२-३ ।

...सौहाँ—वि. [सं. स्पर्श] **छूनेवाला** ।

...पर—क्रि. वि. [सं.] **आपस में, एक दूसरे के साथ** । उ.—मोहिं देखि सब हँसत परस्पर, दै दै तारी तार—१-१७५

...यो, परस्यौ—क्रि. स. [हिं. परसना] **स्पर्श किया, छुआ** । उ.—दूरि देखि सुदामा आवत, धाइ परस्यौ चरन—१-२०२ ।

क्रि. स.—(**भोजन**) **सामने रखा** । उ.—नाना विधि जेंवन करि परस्यौ—पृ. ३३६ (८५) ।

...हस्त—संज्ञा पुं.—**एक राक्षस** । उ.—दुर्धर परहस्त-संग आइ सैन भारी । पवन-दूत दानव-दल ताड़े दिसिचारी —९-९६ ।

...हार—संज्ञा पुं. [सं. प्रहार] **आघात, वार, चोट, मार** । उ.—(क) हिरनकसिपु-परहार थक्यौ, प्रहलाद न नैंकु डरै—१-३७ । (ख) अस्त्र-सस्त्र-परहार न डरौं —७-२ ।

...हारि—क्रि. अ. [हिं. प्रहारना] (१) **मारो, आघात करो** । (२) **मारने के लिए चलाओ, फेंको** । उ.—...ह्यौ असुर, सुरपति संभारि। लै करि बज्र मोहिं प्रहारि—५-६ ।

...ज़—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **बचना, दूर रहना** ।

...लना—क्रि. स. [सं. प्रहेलना] **तिरस्कार करना** ।

...—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **चार प्रकार की वाणियों में पहली** । (२) **ब्रह्मविद्या** ।

...वि. स्त्री.—(१) **श्रेष्ठ** । (२) **जो सबसे परे हो** ।

...संज्ञा पुं. [?] **पंक्ति, कतार** ।

पराइ—क्रि. अ. [हिं. पराना] **भागना** । उ.—कोउ कहति, मोहिं देखि द्वारै, उतहिं गए पराइ—१०-२७३ ।

पराई—वि. स्त्री [हिं. पुं. पराया] **दूसरे की, अन्य व्यक्ति की** । उ.—(क) तुम बिनु और न कोउ कृपानिधि पावै पीर पराई—१-१६५ । (ख) सोवत मुदित भयौ सपने मैं, पाई निधि जो पराई—१-१४७ ।

क्रि. अ. [हिं. पराना] **भाग गये** । उ.—(क) सुरनि की जीत, असुर मारे बहुत, जहाँ तहँ गए सबही पराई—८-८ । (ख) सकुच न आवत घोष बसत की तजि ब्रज गए पराई—३२०८ ।

पराए—क्रि. अ. [हिं. पराना] **भागे** । उ.—अंबरीष-हित साप निवारे, ब्याकुल चले पराए—१-३१ ।

पराकाष्ठा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **चरम सीमा, हद** ।

पराकृत—वि. [सं. प्राकृत] **सहज सामान्य (रूप)** । उ.—सूरदास प्रभु होहु पराकृत अस कहि भुज के चिह्न दुरावति—१०-७ ।

पराक्रम—संज्ञा पुं. [सं.] **बल-पौरुष** ।

पराक्रमी—वि. [पराक्रमिन्] **बली, पुरुषार्थी** ।

पराग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **फूलों के बीच लंबे केसरों पर जमी रज जिसके फूलों के बीच के गर्भ-कोशों में पड़ने से गर्भाधान होता है; पुष्परज** । (२) **एक सुगंधित चूर्ण** । (३) **चंदन** ।

परागकेसर—संज्ञा पुं. [सं.] **फूलों के पतले सूत्र जिनकी नोक पर पराग लगा रहता है** ।

परागना—क्रि. अ. [सं. उपराग] **अनुरक्त होना** ।

परागी—क्रि. अ. [हिं. परागना] **अनुरक्त हुई** । उ.—प्रीति नदी महँ पाँव न बोरयौ दृष्टि न रूप परागी —३३२५ ।

पराङ्मुख—वि. [सं.] **विमुख, विरुद्ध** ।

पराजय—संज्ञा स्त्री. [सं.] **हार** ।

पराजित—वि. [सं.] **हारा हुआ, परास्त** ।

परात—संज्ञा स्त्री. [सं. पात्र] **ऊँचे किनारे या कंडल की काफी बड़ी थाली** ।

कि. अ. [हिं. पराना] **भागता है** । उ.—वेद-विरुद्ध होत कुंदनपुर हंस को अंश काग लै परात-१०-उ.-११ ।

पराधीन—वि. [सं. पर+आधीन] **परवश, दूसरे के**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधीन । उ.—पराधीन पर-बदन निहारत मानत मूढ़ बड़ाई—१-१६५ ।

परावीनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दूसरे की अधीनता** ।

परान—संज्ञा पुं. [सं. प्राण] **प्राण** । उ.—(क) भीषम धरि हरि कौ उर ध्यान । हरि के देखत तजे परान १-२८० । (ख) कै वह भाजि सिंधु मैं डूबी, कै उहिं तज्यौ परान—६-७५ ।

पराना—क्रि. अ. [सं. पलायन] **भागना** ।

परानी—क्रि. अ.स्त्री. [हिं. पराना] **भागी, गयी, लुप्त हुई** । उ.—चिरई चुह-चुहानी चंद की ज्योति परानी रजनी बिहानी प्राची पियरी प्रवान की—१६०६ ।

प्र.—जाति परानी—**भागी जाती हूँ** । उ.—करत कहा पिय अति उताइली मैं कहुँ जात परानी—१६०१ ।

पराने—क्रि. अ. [हिं. पराना] **भाग गये** । उ.—(क) हरि सब भाजन फोरि पराने—१०-३२८ । (ख) कोउ डर डर दिशि-बिदिसि पराने—१० उ.-३१ ।

परान्न—संज्ञा पुं. [सं.] **दूसरे का दिया भोजन** ।

परान्यौ—क्रि. अ. [हिं. पराना] **भागा, भाग गया** । उ.—कागासुर आवत नहिं जान्यौ । सुनि कहत ज्यौ लेइ परान्यौ—३६१ ।

पराभव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हार, पराजय** । (२) **तिरस्कार** । (३) **नाश, विनाश** ।

पराभूत—वि. [सं.] (१) **पराजित** । (२) **नष्ट** ।

परामर्श—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **खींचना** । (२) **विवेचन** । (३) **निर्णय** । (४) **स्मृति** । (५) **सलाह, मंत्रणा** ।

परायण, परायन—वि. [सं. परायण] (१) **निरत, प्रवृत्त, लीन, तत्पर** । उ.—बहुतक जन्म पुरीष-परायन, सूकर स्वान भयौ—१-७८ । (२) **गया हुआ** ।

संज्ञा पुं.—**शरण का स्थान, आश्रय** ।

परायत्त—वि. [सं.] **परवश , पराधीन** ।

पराया, परार, परारा—वि. [हिं. पर] **दूसरे का बिराना** ।

परारी—वि. स्त्री. [हिं. परार] **परायी, दूसरे की** । उ.—सूरदास धृग धृग तिनको है जिनके नहिं पीर परारी—पृ. ३३२ (१०) ।

परार्थ—वि. [सं.] **जो दूसरे के लिए हो** ।

संज्ञा पुं. —**दूसरे का काम या लाभ** ।

परालब्ध—संज्ञा पुं. [सं. प्रारब्ध] **प्रारब्ध, भाग्य** । उ.—अरु जो परालब्ध सौं आवै । ताही कौ सुख सौं बरतावै —३-१३ ।

पराव—संज्ञा पुं. [हिं. पराना] **भागने की क्रिया या भाव** ।

संज्ञा पुं. [हिं. पराया] **दुराव-छिपाव** ।

परावन—संज्ञा पुं. [हिं. पराना] **भगदड़, भागड़** । उ.—ग्वाल गए जे धेनु चरावन । तिन्हैं परयौ बन माँझ परावन—१०५० ।

परावर्तन—संज्ञा पुं. [सं.] **लौटना, पलटना** ।

परावा—वि. [हिं. पराया] **दूसरे का, पराया** ।

पराशर, परासर—संज्ञा पुं. [सं. पराशर] **मुनिवर वशिष्ठ और शक्ति के पुत्र । सत्यवती पर मुग्ध होकर इन्होंने उसका कुमारीत्व भंग किया जिससे व्यास कृष्ण द्वैपायन का जन्म हुआ** ।

पराश्रय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूसरे का सहारा, भरोसा या अवलंब** । (२) **परवशता** ।

पराश्रित—वि. [सं.] (१) **दूसरे के सहारे या भरोसे पर** । (२) **दूसरे के वश में या अधीन** ।

परास—संज्ञा पुं. [सं. पलाश] **ढाक, टेसू** ।

परासी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक रागिनी** ।

परास्त—वि. [सं.] (१) **पराजित** । (२) **दबा हुआ** ।

पराहिं—क्रि. अ. [हिं. पलाना] **भाग जाते हैं, भागते हैं** । उ.—नाम सुनत त्यौं पाप पराहिं । पापी हू बैकुंठ सिधाहिं—६-४ ।

पराह्न—वि. [सं.] **दोपहर के बाद का समय** ।

परि—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] (१) **छाकर, आच्छादित करके** । उ.—अति बिपरीत तृनावर्त आयौ । बात-चक्र मिस ब्रज ऊपर परि, नंद पौरि कै भीतर धायौ—१०-७७ । (२) **गिरकर, लेटकर** । उ. (क) मारग रोकि रह्यौ द्वारैं परि पतित-सिरोमनि सूर—४८७ । (३) **निश्चित होकर** । उ.—सूर अधम की कहौ कौन गति, उदर भरे, परि सोए—१-५२ ।

प्र.—परि आई—**पड़ गई है, आवत हो गई है** । उ.—ज्यौं दिनकरहिं उलूक न मानत, परि आई यह टेव—१-१०० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उप. [सं.] 'चारो-ओर', 'अतिशय', म', पूर्णता' आदि अर्थों की वृद्धि करनेवाला एक उपसर्ग।

कर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पलँग। (२) परिवार। (३) समूह। (४) कमरबंद। (५) एक अर्थालंकार।

क्रमा—संज्ञा स्त्री. [सं. परिक्रमा] प्रदक्षिणा।

कराकुर—संज्ञा पुं. [सं.] एक अर्थालंकार।

कीर्ण—वि. [सं.] (१) विस्तृत। (२) समर्पित।

क्रमा—संज्ञा स्त्री. [सं. परिक्रम] मंदिर की फेरी।

खना—क्रि. स. [हिं. परखना] जांचना-परखना।

क्रि. सं. [सं. प्रतीक्षा] बाट जोहना, राह देखना।

गणन—संज्ञा पुं. [सं.] भली भाँति गणना करना।

गणित—वि. [सं.] जो गिना जा चुका हो।

गह—संज्ञा पुं. [सं. परिग्रह] कुटुम्बी, बाल-बच्चे।

ग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ग्रहण। (२) संग्रह। (३) स्वीकार। (४) विवाह। (५) परिवार। (६) अनुग्रह।

चय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जानकारी, ज्ञान। (२) लक्षण। (३) व्यक्ति सम्बन्धी जानकारी। (४) जान-पहचान।

चर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सेवक। (२) सेनापति।

चरजा, परिचर्जा, परिचर्या—संज्ञा स्त्री. [सं. परिचर्या] (१) सेवा-शुश्रूषा। (२) रोगी की सेवा-टहल।

चायक—संज्ञा पुं. [सं.] परिचय देनेवाला।

चार—संज्ञा पुं. [सं.] सेवा-शुश्रूषा, टहल।

चारक—संज्ञा पुं. [सं.] सेवक, नौकर।

चारना—क्रि. स. [सं. परिचारण] सेवा करना।

चारक—संज्ञा पुं. [सं.] सेवक, टहलुआ।

चारिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] सेविका, टहलनी।

चारी—वि. [सं. परिचारिन्] सेवक, चाकर।

चालक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चलाने या गति देने वाला। (२) संचालक।

चालन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संचालन। (२) कार्य-निर्वाह।

चालित—वि. [सं.] संचालित।

चित—वि. [सं.] (१) ज्ञात, जाना-बूझा। (२) जिसको जानकारी हो, अभिज्ञ। (३) मुलाकाती।

चौ—संज्ञा स्त्री. [सं. परिचय] ज्ञान, परिचय।

परिच्छद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) खोल, गिलाफ आदि ढकनेवाली वस्तु। (२) वस्त्र, पोशाक। (३) राजचिन्ह।

परिच्छन्न—वि. [सं.] (१) ढका हुआ। (२) वस्त्र-सज्जित।

परिच्छा—संज्ञा स्त्री. [सं. परीक्षा] परीक्षा

परिच्छिन्न—वि. [सं.] (१) मर्यादित। (२) विभाजित।

परिच्छेद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ग्रंथ का एक स्वतंत्र भाग। (२) सीमा, हद। (३) विभाग। (४) निश्चय।

परिछन—संज्ञा पुं. [हिं. परछन] विवाह की एक रीति जिसमें वर के द्वार पर आते ही आरती करते हैं।

परिछाहीं—संज्ञा स्त्री. [हिं. परछाईं] छाया, परछाईं।

परिजंक—संज्ञा पुं. [सं. पर्यंक] पलँग।

परिजटन—संज्ञा पुं. [सं. पर्यटन] टहलना, घूमना।

परिजन—संज्ञा पुं. बहु. [सं.] (१) परिवार, भरण-पोषण के लिए आश्रित व्यक्ति। (२) सेवक, अनुचर।

परिजात—वि. [सं.] उत्पन्न, जन्मा हुआ।

परिज्ञा—संज्ञा स्त्री. [सं.] संशयरहित बुद्धि।

परिज्ञात—वि. [सं.] निश्चित रूप से ज्ञात।

परिज्ञान—संज्ञा पुं. [सं.] पूर्ण निश्चयात्मक ज्ञान।

परिणत—वि. [सं.] (१) नम्र, नत। (२) रूपांतरित, परिवर्तित। (३) पका हुआ (४) प्रौढ़, पुष्ट।

परिणति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) झुकाव। (२) रूपांतर होना। (३) परिपाक। (४) प्रौढ़ता। (५) अंत।

परिणय—संज्ञा पुं. [सं.] विवाह।

परिणाम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रूपांतर, विकृति। (२) विकास। (३) अवसान, अंत। (४) फल, नतीजा।

परिणामदर्शी—वि. [सं.] दूरदर्शी, सूक्ष्मदर्शी।

परिणीत—वि. [सं.] (१) विवाहित (२) समाप्त।

परिणेता—संज्ञा पुं. [सं. परिणेतृ] पति, स्वामी।

परितच्छ—वि. [सं. प्रत्यक्ष] जिसको स्पष्ट देखा जा सके।

परितप्त—वि. [सं.] (१) तपा हुआ। (२) दुखित।

परिताप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आंच, ताव। (२) दुख, क्लेश। (३) पछतावा। (४) भय। (५) कँपकपी।

परितापी—वि. [सं.] (१) दुखी। (२) सतानेवाला।

परितुष्ट—वि. [सं.] बहुत संतुष्ट और प्रसन्न।

परितुष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) संतोष। (२) प्रसन्नता।

परितोष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संतोष। उ.—सूरदास अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्यों बिसरत है, मधु-रिपु को परितोष—पृ० ३३२ (१८)। (२) **हर्ष**।

परितोषक—वि. [सं.] **परितोष देनेवाला**।

परितोषण, परितोषन—संज्ञा पुं. [सं. परितोषण] **संतोष**। उ.—मानापमान परम परितोषन सुस्थल थिति मन राख्यो—३०१४।

परितोषी—वि. [सं. परितोषिन्] **संतोषी**।

परितोस—संज्ञा पुं. [सं. परितोष] **संतोष**।

परित्यक्त—वि. [सं.] **त्यागा हुआ**।

परित्यक्ता—वि. [सं. परित्यक्त] **त्यागी हुई**।

परित्यजन—संज्ञा पुं. [सं.] **त्यागने की क्रिया**।

परित्याग—संज्ञा पुं. [सं.] **त्यागने का भाव**।

परित्राण—संज्ञा पुं. [सं.] **बचाव, रक्षा**।

परित्राता—संज्ञा पुं. [सं. परित्रातृ] **रक्षक**।

परिधन, परिधान—संज्ञा पुं. [सं. परिधान] (१) **धोती आदि नीचे पहनने का वस्त्र**। (२) **वस्त्र**। उ.—(क) खान पान परिधान राज सुख जो कोउ कोटि लड़ावै—२७१०। (ख) खान-पान-परिधान मैं (रे) जोबन गयौ सब बीति—१-३२५।

परिधि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **घेरा**। (२) **दायरे की रेखा**। (३) **मंडल, परिवेश**। (४) **कक्षा**। (५) **वस्त्र**।

परिनय—संज्ञा पुं. [सं. परिणय] **विवाह**।

परिनिर्वाण—संज्ञा पुं. [सं.] **पूर्ण मोक्ष**।

परिनौत—संज्ञा स्त्री. [हिं. परनवना] **प्रणति, प्रणाम, नमस्कार**। उ.—तातैं तुमकौं करत दँडौत। अरु सब नरहूँ कौ परिनौत—५-४।

परिपक्व—वि. [सं.] (१) **खूब पका हुआ**। (२) **अच्छी तरह पचा हुआ**। (३) **पूर्ण विकसित, प्रौढ़**। (४) **पूर्ण अनुभवी**। (५) **निपुण, प्रवीण**।

परिपाक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पकने का भाव**। (२) **पचने का भाव**। (३) **प्रौढ़ता, पूर्णता**। (४) **अनुभव**। (५) **निपुणता, प्रवीणता**। (६) **परिणाम, फल**।

परिपाटि, परिपाटी—संज्ञा स्त्री. [सं. परिपाटी] (१) **क्रम, सिलसिला**। (२) **प्रणाली, रीति, चाल, ढंग, नियम**। उ.—(क) बदन उघारि दिखायौ अपनौ नाटक की परिपाटी—१०-२५४। (ख) पहिली परिपाटी चलौं—१०१९। (ग) वै सुफलकसुत ए सखी ऊधौ मिली एक परिपाटी—३०५६।

परिपालन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रक्षा करना, बचाना**। उ.—गाए सूर कौन नहिं उबर्यौ, हरि परिपालन पन रे—१-६६। (२) **रक्षा, बचाव**।

परिपुष्ट—वि. [सं.] **बहुत हृष्ट पुष्ट**।

परिपूरक—वि. [सं.] (१) **लबालब भर देनेवाला**। (२) **धन-धान्य से पूर्ण करनेवाला**। (३) **संपूर्ण**।

परिपूरण, परिपूरन, परिपूर्ण—वि. [सं. परिपूर्ण] (१) **परिपूर्ण, खूब भरा हुआ, लबालब**। उ.—(क) ऐसे प्रभु अनाथ के स्वामी। दीन-दयाल, प्रेम-परिपूरन, सब घट अंतरजामी—१-१९०। (ख) अहि के गुन इनमें परिपूरण यामें कछू न पावत—३००९। (२) **पूर्ण तृप्त**। (३) **समाप्त या संपूर्ण किया हुआ**।

परिभव, परिभाव—संज्ञा पुं. [सं.] **अनादर, अपमान**।

परिभाषक—संज्ञा पुं. [सं.] **निंदा करनेवाला**।

परिभाषण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **निंदापूर्ण उपालंभ**। (२) **फटकार**। (३) **भाषण, बातचीत**। (४) **नियम**।

परिभाषा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **स्पष्ट कथन या भाषण**। (२) **वस्तु या पदार्थ की व्याख्या-विशेषता-युक्त कथन**। (३) **निर्दिष्ट अर्थ सूचक विशिष्ट शब्द**। (४) **कथन जो पारिभाषिक शब्दों में हो**। (५) **निंदा**।

परिभाषी—संज्ञा पुं. [सं. परिभाषिन्] **भाषणकर्ता**।

परिभुक्त—वि. [सं.] **जो काम में आ चुका हो**।

परिभ्रमण—संज्ञा पं. [सं.] (१) **घेरा**। (२) **घूमना-फिरना**।

परिमल—संज्ञा पुं. [सं.] **सुवास, सुगंध**। उ.—(क) बीना झाँझ पखाउज-आउज, और राजसी भोग। पुहुप-प्रजंक परी नवजोबनि, सुख-परिमल-संजोग—९-७५। (ख) चोवा चंदन अगर कुमकुमा परिमल अंग चढ़ायो—१० उ.-६५।

परिमाण, परिमान—संज्ञा पुं. [सं. परिमाण] (१) **मान, विस्तार**। (२) **घेरा**।

परिमार्जन—संज्ञा पुं. [सं.] **अच्छी तरह धोना, माँजना**।

परिमार्जित—वि. [सं.] (१) **माँजा हुआ**। (२) **परिष्कृत**।

परिमित—वि. [सं.] (१) **नपा तुला हुआ**। (२) **उचित मात्रा या परिमाण में**। (३) **कम, थोड़ा, सीमित**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिमिति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नाप, तोल, सीमा।** (२) **मान-मर्यादा, इज्जत।** उ.—परिमिति गए लाज तुम्ही को हँसिनि ब्याहि काग लै जाइ—१० उ.-६५।

परिमुक्त—वि. [सं.] **पूर्ण स्वाधीन।**

परियंक—संज्ञा पुं. [सं. पर्यंक] **पलँग।**

परियंत—अव्य. [सं. पर्यंत] **लौं, तक।**

परिरंभ, परिरंभण, परिरंभन—संज्ञा पुं. [सं. परिरंभण] **गले या छाती से लगाना, आलिंगन।** उ.—(क) फूले फिरत अजोध्यावासी, गनत न त्यागत चीर। परिरंभन हँसि देत परस्पर, आनन्द-नैननि नीर—९-१६। (ख) अनुनय करत बिबस बोलत हैं दै परिरंभण दान—२०३१।

परिरंभना—क्रि. स. [सं. परिरंभ+ना] **आलिंगन करना।**

परिलेखना—क्रि. स. [सं. परिलेख+ना] **समझना, मानना, ख्याल करना।**

परिवर्त-संज्ञा पुं. [सं.] (१) **घुमाव, फेरा।** (२) **विनिमय।**

परिवर्तक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **घूमने-फिरनेवाला।** (२) **घुमाने-फिरानेवाला।** (३) **विनिमय करनेवाला।**

परिवर्तन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **घुमाव, फेरा।** (२) **विनिमय।** (३) **बदलने की क्रिया या भाव।** (४) **काल या युग की समाप्ति।**

परिवर्तनीय—वि. [सं.] **जो परिवर्तन-योग्य हो।**

परिवर्तित—वि. [सं.] **बदला हुआ, रूपांतरित।**

परिवर्ती—वि. [सं. परिवर्तिनी] (१) **परिवर्तनशील।** (२) **विनिमय करनेवाला।** (३) **घूमने-फिरने के स्वभाव वाला।**

परिवर्द्धन—संज्ञा पुं. [सं.] **बहुत वृद्धि।**

परिवा—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतिपदा, प्रा. पड़िवआ] **पक्ष की पहली तिथि।** उ.—परिवा सिमिटि सकल ब्रजवासी चले जमुन जलन्हान—२४४५।

परिवार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आवरण।** (२) **तलवार की म्यान।** (३) **कुटुंब, परिवार।** (४) **समान वस्तुओं का समूह।**

परिवार, परिवारा—संज्ञा पुं. [सं. परिवार] **कुटुंब, परिवार।** उ.—और बहुत ताकौ परिवारा। हरि-हलधर मिलि सबकौं मारा—४६६।

परिवेश, परिवेष—संज्ञा पुं. सं.] (१) **घेरा, परिधि।** (२) **वर्षा में चंद्र या सूर्य के चारों ओर बननेवाला मंडल।** (३) **परकोटा।**

परिव्राज, परिव्राजक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सन्यासी।** (२) **सदा भ्रमण करनेवाला साधु।**

परिशिष्ट—वि. [सं.] **बचा या छूटा हुआ।**

संज्ञा पुं.—**पुस्तक का वह भाग जो विषय से संबद्ध होता हुआ भी, मुख्य भाग में न दिया जाकर, अंत में दिया जाय।**

परिशीलन—संज्ञा पुं. [सं.] **मननपूर्वक अध्ययन।**

परिश्रम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रम, उद्यम।** (२) **थकावट।**

परिश्रमी—वि. [हिं. परिश्रम] **जो बहुत श्रम करे।**

परिश्रांत—वि. [सं.] **श्रमित, थका हुआ।**

परिषत्, परिषद्—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सभा, समाज।**

परिषद—संज्ञा पुं. [सं.] **सदस्य, सभासद।**

परिषेचन—संज्ञा पुं. [सं.] **सींचना।**

परिष्कार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **संस्कार।** (२) **स्वच्छता।** (३) **आभूषण।** (४) **शोभा।** (५) **सजावट।**

परिष्कृत—वि. [सं.] (१) **संस्कृत।** (२) **सजाया हुआ।**

परिसंख्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक अर्थालंकार।**

परिस्तान—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (२) **परियों का लोक।** (२) **सुन्दर स्त्रियों का समाज या जमघटा।**

परिस्थिति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **स्थिति, अवस्था।**

परिहँस—संज्ञा पुं. [सं. परिहास] (१) **ईर्ष्या।** (२) **उपहास।**

परिहरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **छीनना।** (२) **त्याग।**

परिहरना—क्रि. स. [सं. परिहरण] **त्यागना, छोड़ना।**

परिहरि—क्रि. स. [हिं. परिहरना] **त्यागकर, छोड़कर, तजकर।** उ.—सूर पतित-पावन पद-अंबुज, सो क्यों परिहरि जाउँ—१-१२८।

परिहरै—क्रि. स. [हिं. परिहरना] **छोड़ता है, त्यागता है।** उ.—(क) भक्ति-पंथ कौं जो अनुसरै। सुत-कलत्र सौं हित परिहरै—२-२०। (ख) काम-क्रोध-लोभहिं परिहरै—३-१३।

परिहरौ—क्रि. स. [हिं. परिहरना] **त्याग दो, छोड़ो, तजो।** उ.—तब हरि कह्यौ, टेक परिहरौ……। अहंकार चित तैं परिहरौ—१-२६१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिहस—संज्ञा पुं. [सं. परिहास] **दुख, खेद**। उ.—(क) परिहस सूल प्रबल निसि-बासर, तातैं यह कहि आवत। सूरदास गोपाल सरनगत भएँ न को गति पावत—१-१८१। (ख) कंठ बचन न बोलि आवै, हृदय परिहस भीन—३४५१।

संज्ञा पुं. [सं. परिहास] (१) **हँसी, दिल्लगी**। (२) **खिलवाड़**। उ.—रावन से गहि कोटिक मारौं। जो तुम आज्ञा देहु कृपानिधि तौ यह परिहस सारौं—९-१०८।

परिहार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दोष, अनिष्ट आदि का निवारण**। (२) **उपचार**। (३) **त्याग**। (४) **अनुचित कर्म का प्रायश्चित (नाटक)**। (५) **तिरस्कार**।

संज्ञा पुं. [सं. प्रहार] **आघात, प्रहार**। उ.—चक्र परिहार हरि कियौ—१० उ.-३५।

परिहारक—वि. [सं.] **परिहार करनेवाला**।

परिहारा—संज्ञा पुं. [सं. प्रहार] **नाश, वध, आघात**। उ.—याकी कोख औतैरे जो सुत करै प्रान-परिहारा—१०-४।

परिहारी—वि. [सं.] **छीनने या त्यागनेवाला**।

परिहार्य—वि. [सं.] **जो परिहार-योग्य हो**।

परिहास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हँसी-दिल्लगी**। (२) **खेल**।

परिहै—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **पड़ेगा**।

मुहा.—फँग परिहै—**मेरे हाथ आयगा, मेरे चंगुल या फंदे में फँसेगा**। उ.—दूरि करौं लँगराई वाकी मेरे फँग जो परिहै—१२६४। शिर परिहै—**सिर पर पड़ेगी या बीतेगी**। उ.—सूर क्रोध भयो नृपति काके शिर परिहै—२४७४।

परी—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **गिरीं**। उ.—(क) रोवति धरनि परीं अकुलाइ—५४७। (ख) पाइ परीं जुवती सब—७६८।

प्र.—मोहि परीं—**मोहित हो गयीं**। उ.—संग की सखी स्याम सन्मुख भईं, मोहि परीं पसु-पाल सों—८०४।

परी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **कल्पित सुन्दर स्त्री जो पंखों के सहारे उड़ती मानी गयी है**। (२) **परम सुन्दरी**।

क्रि. अ. [हिं. पड़ना] (१) **उपस्थित हुई, (दुखद घटना या अवस्था) घटित हुई, पड़ी**। उ.—(क) जे जन सरन भजे बनवारी। ते ते राखि लिए जग-जीवन, जहँ जहँ बिपति परी तहँ टारी—१-२२। (ख) सूर परी जहँ बिपति दीन पर, तहाँ बिघन तुम टारे—१-२५।

प्र०.—समुझी न परी—**समझ में नहीं आई**। उ.—अपनैं जान मैं बहुत करी। कौन भाँति हरि-कृपा तुम्हारी, सो स्वामी, समुझी न परी—१-११५। गरे परी **अनचाही, अनिच्छित**। उ.—सूरदास गाहक नहिं कोऊ दिखियत गरे परी—३१०४।

परीक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] **परीक्षा करने या लेनेवाला**।

परीक्षण—संज्ञा पुं. [सं] **देख-भाल, जाँच-पड़ताल**।

परीक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **देखना-भालना, समीक्षा**। (२)**योग्यता आदि का इम्तहान**। (३) **अनुभव के लिए प्रयोग**। (४ **प्रमाण द्वारा निर्णय**।

परीक्षित—वि. [सं.] **जिसकी जाँच या परीक्षा हुई हो**।

संज्ञा पुं.-**अर्जुन का पौत्र और अभिमन्यु का पुत्र। इन्हीं के राज्य काल में द्वापर का अंत ेर कलियुग का आरंभ माना जाता है। तक्षक के डसने से परीक्षित की मृत्यु हुई थी। जनमेजय इसी का पुत्र था।**

परीख—संज्ञा स्त्री. [हिं. परख] **परख, जाँच**।

परीखना—क्रि. स. [सं. परीक्षण] **जाँचना-परखना**।

परीच्छित, परीछित—संज्ञा पुं. [सं. परीक्षित] **अभिमन्यु का पुत्र जिसकी रक्षा श्रीकृष्ण ने गर्भ में ही की थी**।

परीछम—संज्ञा पुं. [हिं. परी+छम] **पैर का एक गहना**।

परीछा—संज्ञा स्त्री. [सं. परीक्षा] **परीक्षा**।

परीजाद—वि. [फ़ा.] **बहुत सुन्दर**।

परीजो—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **पड़ना, गिरना**। उ.—सूरदास प्रभु हमरे कोते नँदनंदन के पाँइ परीजो—१० उ.-९५।

परुख, परुष—वि. [सं. परुष] (१) **कठोर, सख्त**। (२) **अप्रिय, कटु**। (३) **निष्ठुर, निर्दय**।

परुखाई, परुषाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. परुष] **कड़ापन**।

परुषता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कठोरता, कड़ापन**। (२) **अप्रियता, कर्कशता, कटुता**। (३) **निर्दयता**।

परुषत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कठोरपन**। (२) **निर्दयपन**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—क्रि. स. [सं. प्रखेट, प्रा. पहेट] **पीछा करना।**

—क्रि. स. [देश.] **धार को रगड़कर तेज करना।**

—संज्ञा पुं. [हिं. पाहन] **पत्थर, पाषाण।**

—क्रि. स. [सं. परिधान] **(वस्त्राभूषण) धारण करना।**

—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहनना] **पहनाने की क्रिया, ...या मजदूरी।**

—क्रि. स. [हिं. पहनना] **दूसरे को वस्त्राभूषण ...दि धारण कराना।**

—संज्ञा पुं. [हिं. पहनना] (१) **पहनने के वस्त्र, पोशाक।** (२) **सिर से पैर तक के कपड़े, सिरोपाव।** (३) **विशेष उत्सव के वस्त्र।** (४) **पहनने का ढंग।**

पहरावन, पहरावनि, पहरावनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहरना] **वे वस्त्र जो शुभ अवसर पर या प्रसन्न होकर छोटों को दिये जायँ।** उ.—नीलांबर पहरावन पाई सन्मुख क्यौं न चहौं—१६६६।

पहरावा—संज्ञा पुं. [हिं. पहनावा] (१) **पोशाक।** (२) **सिरोपाव।** (३) **विशेष उत्सव के वस्त्र।** (४) **वस्त्र पहनने का ढंग।**

पहरावैनी—वि. [हिं. पहरावनी] **पहनने या पहनानेवाली।** उ.—जय, जय, जय, जय माधववेनी।......। जा जल-सुद्ध निरखि सन्मुख ह्वै, सुंदरि सरसिज-नैनी। सूर परस्पर करत कुलाहल, गर-सृग-पहरावैनी—६-११।

पहरी—संज्ञा पुं. [सं. प्रहरी] **पहरेदार।**

पेज १०७४ के बाद १०७५ के बजाय भूल से १०७३ पृष्ठ संख्या पड़ गई है। इस प्रकार पेज १०९६ तक दो पृष्ठ बढ़ाकर पढ़ें। १०९६ के बाद से पृष्ठ संख्या ठीक है। शब्दों का क्रम सब पेजों में ठीक है।

—प्रकाशक

...ले पहर के—**१०-३४।**

—क्रि. स. [हिं. पहरना] **पहनकर।** उ.—नृपति के ...क सों भेंः मग में भई, कह्यौ, दै बसन हम पहर ...री—२५८४।

—संज्ञा पुं. [हिं. पहर+एक] **एक पहर।** उ.— ...मरि एक कहौं पहरक में वै छिन माँझ अनेक— ...६६।

—क्रि. स. [हिं. पहनना) **(वस्त्रादि) पहनना।**

—संज्ञा पुं. [हिं. पहर] (१) **चौकसी का प्रबन्ध, ...की।** (२) **रखवाली।** (३) **चौकीदार का कार्य-...।** (४) **चौकीदार की गश्त।** (५) **हिरासत, ...जात।** (६) **समय, जमाना।**

—संज्ञा पुं. [हिं. पाँव+र.=गौरा] **आगमन का शुभ-...शुभ फल या प्रभाव, पौर।**

—क्रि. स. [हिं. पहनाना] **पहनाना।**

पहलू—संज्ञा पुं. [...] ... **बाँया भाग।** (३) **करवट, दिशा।** (४) **आसपास, पड़ोस।** (५) **कटाव, पहल।** (६) **विषय या प्रसंग का कोई अंग।** (७) **संकेत, गूढ़ाशय, संकेतार्थ।**

पहले—अव्य. [हिं. पहला] (१) **प्रारंभ में।** (२) **स्थिति स्थान या कालक्रम में प्रथम।** (३) **पूर्व या बिगत काल में।**

पहलेपहल—अव्य. [हिं. पहला] **सबसे पहले।**

पहलौठा—वि. [हिं. पहला + औठा] **पहला लड़का।**

पहलौठी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहलौठा] **प्रथम प्रसव।**

पहाड़—संज्ञा पुं. [सं. पाषाण] (१) **पर्वत, गिरि।**

मुहा.—पहाड़ उठाना-(१) **भारी काम लेना।** (२) **भारी काम करना।** पहाड़ कटना—(१) **भारी काम हो जाना।** (२) **संकट कटना।** पहाड़ काटना-(१) **भारी काम कर लेना।** (२) **संकट से पीछा छुड़ाना।** पहाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिहस—संज्ञा पुं. [सं. परिहास] **दुख, खेद**। उ.—(क) परिहस सूल प्रबल निसि-बासर, तातैं यह कहि आवत। सूरदास गोपाल सरनगत भएँ न को गति पावत—१-१८१। (ख) कंठ बचन न बोलि आवै, हृदय परिहस भीन —३४५१।

संज्ञा पुं. [सं. परिहास] (१) **हँसी, दिल्लगी**। (२) **खिलवाड़**। उ.—रावन से गहि कोटिक मारौं। जो तुम आज्ञा देहु कृपानिधि तौ यह परिहस सारौं —९-१०८।

परिहार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दोष, अनिष्ट आदि का निवारण**। (२) **उपचार**। (३) **त्याग**। (४) **अनुचित कर्म का प्रायश्चित (नाटक)**। (५) **तिरस्कार**।

मुहा.—फँग परिहै—**मेरे हाथ आयगा, मेरे चंगुल या फंदे में फँसेगा**। उ.—दूरि करौं लँगराई वाकी मेरे फँग जो परिहै—१२६४। शिर परिहै—**सिर पर पड़ेगी या बीतेगी**। उ.—सूर क्रोध भयो नृपति काके शिर परिहै—२४७४।

परी—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **गिरीं**। उ.—(क) रोवति धरनि परीं अकुलाइ—५४७। (ख) पाइ परीं जुवती सब—७६८।

प्र.—मोहि परीं—**मोहित हो गयीं**। उ.—संग की सखी स्याम सन्मुख भईं, मोहि परीं पसु-पाल सों —८०४।

परी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **कल्पित सुन्दर स्त्री जो पंखों के सहारे उड़ती मानी गयी है**। (२) **परम सुन्दरी**।

क्रि. अ. [हिं. पड़ना] (१) **उपस्थित हुई, (दुखद घटना या अवस्था) घटित हुई, पड़ी**। उ.—(क) जे जन सरन भजे बनवारी। ते ते राखि लिए जग-जीवन, जहँ जहँ बिपति परी तहँ टारी—१-२२। (ख) सूर परी जहँ बिपति दीन पर, तहाँ बिघन तुम टारे —१-२५।

प्र०.—समुझी न परी—**समझ में नहीं आई**। उ.—अपनैं जान मैं बहुत करी। कौन भाँति हरि-कृपा तुम्हारी, सो स्वामी, समुझी न परी—१-११५। गरे परी **अनचाही, अनिच्छित**। उ.—सूरदास गाहक नहिं कोऊ दिखियत गरे परी—३१०४।

परीक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] **परीक्षा करने या लेनेवाला**।

परीक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] **देख-भाल, जांच-पड़ताल**।

परीच्छित, परीछित—संज्ञा पुं. [सं. परीक्षित] **अभिमन्यु का पुत्र जिसकी रक्षा श्रीकृष्ण ने गर्भ में ही की थी**।

परीछम—संज्ञा पुं. [हिं. परी + छम] **पैर का एक गहना**।

परीछा—संज्ञा स्त्री. [सं. परीक्षा] **परीक्षा**।

परीजाद—वि. [फ़ा.] **बहुत सुन्दर**।

परीजो—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **पड़ना, गिरना**। उ.—सूरदास प्रभु हमरे कोते नँदनंदन के पाँइ परीजो—१० उ.-९५।

परुख, परुष—वि. [सं. परुष] (१) **कठोर, सख्त**। (२) **अप्रिय, कटु**। (३) **निष्ठुर, निर्दय**।

परुखाई, परुषाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. परुष] **कड़ापन**।

परुषत—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कठोरता, कड़ापन**। (२) **अप्रियता, कर्कशता, कटुता**। (३) **निर्दयता**।

परुषत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कठोरपन**। (२) **निर्दयपन**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—क्रि. स. [सं. प्रखेट, प्रा. पहेट] **पीछा करना।**

क्रि. स. [देश.] **धार को रगड़कर तेज करना।**

—संज्ञा पुं. [हिं. पाहन] **पत्थर, पाषाण।**

—क्रि. स. [सं. परिधान] **(वस्त्राभूषण) धारण करना।**

—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहनना] **पहनाने की क्रिया, या मजदूरी।**

—क्रि. स. [हिं. पहनना] **दूसरे को वस्त्राभूषण आदि धारण कराना।**

—संज्ञा पुं. [हिं. पहनना] (१) **पहनने के वस्त्र, पोशाक।** (२) **सिर से पैर तक के कपड़े, सिरोपाव।** (३) **विशेष अवसर के वस्त्र** ; (४) **पहनने का ढंग।**

—संज्ञा पुं. [देश.] (१) **एक तरह का गीत।** (२) **कोलाहल, शोर।** (३) **बदनामी, निंदा।** (४) **छल-कपट।**

—संज्ञा पुं. [हिं. पहर] (१) **तीन घंटे का समय।**

यौ.–घरी-पहर—(१) **हर समय, सदा।** उ.—नंद-घरनि कुल-देव मनावति, तुम ही रच्छक घरी-पहर के—१०७। (२) **थोड़ी देर।** उ.—घरी-पहर सबको बिरमावत जेते आवत कारे।

(२) **जन्म, समय, युग।** उ.—अंकुरित पुन्य फूले पिछले पहर के—१०-३४।

क्रि. स. [हिं. पहरना] **पहनकर।** उ.—नृपति के सों भेंट मग में भई, कह्यौ, दै बसन हम पहर —२५८४।

—संज्ञा पुं. [हिं. पहर+एक] **एक पहर।** उ.—मरि एक कहौं पहरक में वै छिन माँझ अनेक—१९६६।

—क्रि. स. [हिं. पहनना) **(वस्त्रादि) पहनना।**

—संज्ञा पुं. [हिं. पहर] (१) **चौकसी का प्रबन्ध,** (२) **रखवाली।** (३) **चौकीदार का कार्य-**। (४) **चौकीदार की गश्त।** (५) **हिरासत,** (६) **समय, जमाना।**

संज्ञा पुं. [हिं. पाँव + र.=रौरा] **आगमन का शुभ-फल या प्रभाव, पौर।**

—क्रि. स. [हिं. पहनाना] **पहनाना।**

पहरावन, पहरावनि, पहरावनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहरना] **वे वस्त्र जो शुभ अवसर पर या प्रसन्न होकर छोटों को दिये जायँ।** उ.—नीलांबर पहरावन पाई सन्मुख क्यौं न चहौं—१९६६।

पहरावा—संज्ञा पुं. [हिं. पहनावा] (१) **पोशाक।** (२) **सिरोपाव।** (३) **विशेष उत्सव के वस्त्र।** (४) **वस्त्र पहनने का ढंग।**

पहरावैनी—वि. [हिं. पहरावनी] **पहनने या पहनानेवाली।** उ.—जय, जय, जय, जय माधववेनी।·····। जा जल-सुद्ध निरखि सन्मुख ह्वै, सुंदरि सरसिज-नैनी। सूर परस्पर करत कुलाहल, गर-स्रग-पहरावैनी—९-११।

पहरी—संज्ञा पुं. [सं. प्रहरी] **पहरेदार।**

पहरुआ, पहरुवा, पहरू—संज्ञा पुं. [हिं. पहरा] **पहरा देनेवाला।** उ.—(क) स्वान, सूते पहरूवा सब, नींद उपजी गेह—१०-५। (ख) छोरे निगड़, सोआए पहरू द्वारे को कपाट उघरयौ—१०-८।

पहल—संज्ञा पुं. [फ़ा. पहलू] (१) **बगल।** (२) **तह।**

पहलवान—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **कुश्ती लड़नेवाला, मल्ल।**

पहलवानी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **कुश्ती लड़ने या पहलवान होने का भाव या व्यवसाय।**

पहला—वि. [सं. प्रथम, प्रा. पहिलो] **प्रथम, अव्वल।**

पहलू—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **बगल, पार्श्व** (२)। **दाहिना या बाँया भाग।** (३) **करवट, दिशा।** (४) **आसपास, पड़ोस।** (५) **कटाव, पहल।** (६) **विषय या प्रसग का कोई अंग।** (७) **संकेत, गूढ़ाशय, संकेतार्थ।**

पहले—अव्य. [हिं. पहला] (१) **आरंभ में।** (२) **स्थिति स्थान या कालक्रम में प्रथम।** (३) **पूर्व या बिगत काल में।**

पहलेपहल—अव्य. [हिं. पहला] **सबसे पहले।**

पहलौठा—वि. [हिं. पहला + औठा] **पहला लड़का।**

पहलौठी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहलौठा] **प्रथम प्रसव।**

पहाड़—संज्ञा पुं. [सं. पाषाण] (१) **पर्वत, गिरि।**

मुहा.—पहाड़ उठाना–(१) **भारी काम लेना।** (२) **भारी काम करना।** पहाड़ कटना—(१) **भारी काम हो जाना।** (२) **संकट कटना।** पहाड़ काटना–(१) **भारी काम कर लेना।** (२) **संकट से पीछा छुड़ाना।** पहाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूटना (टूट पड़ना)—**अचानक महान संकट आ जाना**। पहाड़ से टक्कर लेना—**बहुत बड़े से बैर ठानना या मुकाबला करना**।

(२) **बड़ा ढेर या समूह**। (३) **बहुत भारी चीज**। (४) **वह जिसका काटना, बिताना या हल करना बहुत कठिन हो जाय**। (५) **बहुत कठिन काम**।

पहाड़ा—संज्ञा पुं. [सं. प्रस्तार] **गुणनसूची**।

पहाड़िया, पहाड़ी—वि. [हिं. पहाड़] (१) **पहाड़ पर रहने या होनेवाला**। (२) **पहाड़-संबंधी**।

संज्ञा स्त्री.—(१) **छोटा पहाड़**। (२) **गाने की एक धुन**।

पहार—संज्ञा पुं. [हिं. पहाड़] **पहाड़, पर्वत**। उ.—मैं जु रह्यौ राजीव-नैन दुरि, पाप-पहार-दरी—१-१३०।

पहिचान—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहचान] **परिचय, पहचान**।

पहिचानत—क्रि. स. [हिं. पहचानना] (१) **किसी वस्तु या व्यक्ति का गुण-दोष, योग्यता-विशेषता आदि की जानकारी रखता है**। उ.—सब सुखनिधि हरिनाम महामनि, सो पाएहु नाही पहिचानत। परम कुबुद्धि, तुच्छ रस-लोभी, कौड़ी लगि मग की रज छानत—१-११४। (२) **परिचय मानता है, जान-पहचान दिखाता है**। उ.—चाड़ सरै पहिचानत नाहिंन प्रीतम करत नए—२६६३।

पहिचानना—क्रि. स. [हिं. पहचानना] **जानना, समझना, पहचानना**।

पहिचानि—क्रि. स. [हिं. पहचानना] (१) (**किसी वस्तु या व्यक्ति के) गुण-दोष की परीक्षा करके**। उ.—एकनि कौं जिय-वलि दै पूजे, पूजत नैंकु न तूठे। तब पहिचानि सबनि कौं छाँड़े, नखसिख लौं सब झूठे—१-१७७।

(२) **व्यक्ति अथवा वस्तु-विशेष का गुण-दोष जानो-पहचानो**। उ.—रे मन आपु को पहिचानि। सब जनम तैं भ्रमत खोयौ, अजहुँ तौ कछु हानि—१-७०।

संज्ञा स्त्री. [सं. प्रत्यभिज्ञान या परिचयन, हिं. पहचान] (१) **पहचानने की क्रिया, वृत्ति या भाव**। (२) **जान पहचान, परिचय**। उ.—जौपै राखत हौ पहिचानि—२७१०।

पहिचानी—क्रि. स. [हिं. पहचानना] **पहचान लो, जान लिया, चीन्ह लिया**। उ.—बैन सुनत माता पहिचानी, चले घुटुरुवनि पाइ—१०-१११।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पहचान] **जान-पहचान, परिचय**। उ.—बिमुखनि सौं रति जोरत दिन-प्रति, साधुनि सौं न कबहूँ पहिचानी—१-१४६।

पहिचानै—क्रि. स. [हिं. पहचाना] **समझ-बूझ सकता है, जान सकता है**। उ.—सूरदास यह सकल समग्री प्रभु प्रताप पहिचानै—१-४०।

पहिचान्यौ—क्रि. स. [हिं. पहचानना] **जाना-बूझा, पहचाना**। उ.—कौन भाँति तुमको पहिचान्यौ—१० उ.—२७।

पहित, पहिति, पहिती—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रहित = सालन] **पकी या चुरी हुई दाल**।

पहिआँ, पहियाँ—अव्य. [हिं. पहँ] **समीप, पास, पहँ** उ.—परम चतुर चली हरि पहिआँ—२२४२। (२) **से, द्वारा**। उ.—यह सुख तीनि लोक मैं नाहीं, पाए प्रभु पहियाँ—६-१६।

पहिया—संज्ञा पुं. [सं. पथ्य, प्रा० पह्य, पहिय] (१) **चक्कर, चक्र, चाका**। (२) **चक्कर**।

पहिरना—क्रि. स. [हिं. पहनना] (**वस्त्रादि) पहनना**।

पहिराइ—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहरावनी] **प्रसन्न होकर छो... को दिये जानेवाले वस्त्रादि**। उ.—नंद कौं सिर... दीनौ गोप सब पहिराइ—५८६।

पहिराऊँ—क्रि. स. [हिं. पहराना] (**कपड़े अथवा ग... आदि) शरीर पर धारण करता हूँ, पहनता हूँ**। उ. पाटंबर-अंबर तजि, गूदरि पहिराऊँ—१-१६६।

पहिराना—क्रि. स. [हिं. पहनाना] **वस्त्रादि धारण करा...**

पहिरावत—क्रि. स. [हिं. पहिरावना] (१) **वस्त्रादि ... देते हैं**। उ.—(क) नंद उदार भए पहिरावत—... ३८—(२) **पहनाते हैं**। उ.—बनमाला पहिरा... स्यामहिं—४२६।

पहिरावन पहिरावनि, पहिरावनी, पहिरावने—संज्ञा पुं [हिं. पहनावा] **प्रसन्न होकर अथवा विशेष अवसर प... दिये गये पाँचों कपड़े**। उ.—(क) दियौ सिरपाव ... —५८७ ... राव नै महर कौ आप पहिरावने सब दिखाए—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) देन उरहनौ तुमकौं आई। नीकी पहिरावनि हम दई—७६६। (ग) रंग रंग पहिरावनि दई, अति ...ते कन्हाई—२४४१। (घ) पहिरावन जो पाइहैं सो तुमहूँ दैहैं—२५७५।

...रावौ—क्रि. स. [हिं. पहनाना] **पहनाओ, धारण कराओ**। उ.—मेरे कहैं बिप्रनि बुलाइ, एक सुभ घरी ...राइ, बागे चीरे बनाइ, भूषन पहिरावौ—६-६५।

...रि—क्रि. स. [हिं. पहनना] **पहनकर, (कपड़ा, गहना आदि) शरीर पर धारण करके**। उ.—अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल। काम-क्रोध कौ पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल—१-१५३।

...—क्रि. स. [हिं. पहनना] **पहने हैं, धारण किये हैं**। उ.—पहिरे राती चूनरी, सेत उपरना सोहै (हो)—१-४४।

...—क्रि. स. [हिं. पहनना] **पहने, धारण करे**। उ.—...च खुबि आँधरि काजर कानी नकटी पहिरै बेसरि—३०२६।

...ौ—क्रि. स. [हिं. पहनना] **पहनो, धारण करो**। उ.—मेरे कहैं, आइ पहिरौ पट—७८७।

संज्ञा पुं. [हिं. पहरा] **पहरा**।

...—वि. [हि. पहला] **प्रथम, पहला**।

क्रि. वि. [हिं. पहले] **आरंभ में, पहले**।

...ला—त्रि. [हिं. पहला] (१) **प्रथम**। (२) **पहली बार ब्याई हुई**।

...ले, पहिलैं—क्रि. वि. [हिं. पहला] **आरंभ में, सर्वप्रथम, शुरू में**। उ.—मन-ममता रुचि सौं रखवारी, पहिलैं लेहु निवेरि—१-५१।

...लौ—वि. [हिं. पहला] **प्रथम, पहला**।

...ति—संज्ञा स्त्री [हिं. पहिती] **पकी हुई दाल**।

...ली, पहीली—वि. [हिं. पहला] **पहली, प्रथम**।

...च—संज्ञा स्त्री. [हिं. प्रभूत, प्रा. पहूच] (१) **किसी स्थान तक जा पाने की शक्ति या क्रिया**। (२) **फैलाव, विस्तार**। (३) **पैठ, प्रवेश, रसाई**। (४) **प्राप्ति-सूचना**। (५) **समझने की शक्ति या योग्यता**। (६) **जानकारी या अभिज्ञता**।

पहुँचना—क्रि. अ. [हिं. पहुँच] (१) **किसी स्थान में जाना या जा पाना**।

मुहा.—पहुँचा हुआ—(१) **सिद्ध**। (२) **बड़ा जानकार**। (३) **बहुत चतुर और काँइयाँ**।

(२) **फैलना, विस्तृत होना**। (३) **परिवर्तित स्थिति या दशा को प्राप्त होना**। (४) **घुसना, पैठना, समाना**। (५) **जानना, समझना**। (६) **जानकारी रखना**। (७) **मिलना, प्राप्त होना**। **अनुभव में आना**। (८) **समकक्ष या तुल्य होना**।

पहुँचा—संज्ञा पुं. [हिं. पहुँचना अथवा सं. प्रकोष्ठ] **कुहनी से नीचे की बाहु, कलाई**। उ.—पहुँचा कर सों गहि रहे जिय संकट मेल्यो—२५७७।

पहुँचाइ—क्रि. स. [हिं. पहुँचाना] **पहुँचा कर**।

प्र०—गयौ पहुँचाइ—**पहुँचा गया है**। उ.—काली आपु गयौ पहुँचाइ—५८२।

पहुँचाना—क्रि. स. [हिं. पहुँचना] (१) **एक स्थान से दूसरे को ले जाना**। (२) **किसी के साथ जाना**। (३) **विशेष स्थिति या अवस्था तक ले जाना**। (४) **घुसाना, पैठाना**। (५) **प्राप्त कराना**। (६) **अनुभव कराना**। (७) **समान या समकक्ष कर देना**।

पहुँचायो—क्रि. स. [हिं. पहुँचाया] **पहुँचा दिया है**। उ.—कर गहि खड़ग कह्यौ देवकि सौं बालक कहँ पहुँचायौ—सारा. ३७६।

पहुँचावै—क्रि. स. [हिं. पहुँचाना] **दूसरे स्थान को ले जाय या पहुँचा दे**। उ.—(क) सूरदास की बीनती कोउ लै पहुँचावै—१-४। (ख) सूर आप गुजरान मुसाहिब, लै जवाब पहुँचावै—१-१४२।

पहुँचिया, पहुँची—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. पहुँचा, स्त्री. पहुँची] **कलाई में पहनने का एक गहना जिसमें दाने गुँथे रहते हैं**। उ.—(क) पंकज पानि पहुँचिया राजै—१०-११७। (ख) पहुँची करनि, पदिक उर हरि-नख, कठुला कंठ मंजु गजमनियाँ—१०-१०६।

पहुँचै—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. पहुँचा] **पहुँचे में**। उ.—चित्रित बाँह पहुँचिया पहुँचै, हाथ मुरलिया छाजै—४५१।

क्रि. अ. [हिं. पहुँचना] **आकर उपस्थित हो**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँच्यौ—क्रि. अ. [हिं. पहुँचना] **पहुँचा, उपस्थित हुआ, गया।** उ.—उड़त उड़त सुक पहुँच्यौ तहाँ। नारि ब्यास की बैठी जहाँ—१-२२६।

पहुनई—संज्ञा स्त्री. [हिं पहुनाई] **पाहुन होकर आने का भाव।** उ.—चारिहु दिवस आनि सुख दीजै सूर पहुनई सूतर—२७०८। (२) **अतिथि-सत्कार।**

पहुना—संज्ञा पुं. [हिं. पाहुन] **अतिथि, पाहुन।**

पहुनाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहुना + ई प्रत्य०] (१) **आगत व्यक्ति का भोजन-पान से सत्कार, अतिथि-सत्कार।** उ.—(क) हम करिहैं उनकी पहुनाई—१०४७। (ख) बहुतै आदर करति सबै मिलि पहुने की करिये पहुनाई—१२८६।

मुहा.—करौं पहुनाई—**खबर लूँगी, अच्छी तरह पीटूँगी।** उ.—साँटिनि मारि करौं पहुनाई, चितवत कान्ह डरायौ—१०-३३०। (२) **अतिथि के आने-जाने का भाव।**

पहुनाय—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहुनाई] **अतिथि-सत्कार।** उ.—करत सबै रुचि की पहुनाय—२४०६।

पहुनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहुनाई] **अतिथि-सत्कार।**

पहुने—संज्ञा पुं. [हिं. पाहुन] **अतिथि।** उ.—बहुतै आदर करत सबै मिलि पहुने की करिये पहुनाई—१२८५।

पहुप—संज्ञा पुं. [सं. पुष्प] **फूल।**

पहुम, पहुमि, पहुमी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुहुमी] **पृथ्वी।**

पहुला—संज्ञा पुं. [सं. प्रफुल्ल] **एक तरह का फूल।**

पहूँचै—क्रि. अ. [हिं. पहुँचना] (आ) **पहुँचे,** (आ) **जाय,** (आकर) **उपस्थित हो।** उ.—तौ लगि बेगि हरौ किन पीर? जौ लगि आन न आनि पहूँचे, फेरि परैगी भीर—१-१९१।

पहूँच्यो, पहूँच्यौ—क्रि.अ. [हिं. पहुँचना] **पहुँचा, आया।**

प्र.—आइ पहूँच्यौ—**आ पहुँचा।** उ.—दनुज एक तहँ आइ पहूँच्यौ-४१०।

पहेटना—क्रि. स. [अनु.] (१) **कठिन परिश्रम से काम पूरा करना।** (२) **खूब डटकर खाना।**

पहेरी, पहेली—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रहेलिकी, हिं. पहेली] (१) **बुझौवल, प्रहेलिका।** (२) **वह बात जिसका अर्थ न खुलता हो।**

पाँइ—संज्ञा पुं. [पाँव] **पैर, पाँव।** उ.—अपनी गरज को तुम एक पाँइ नाचे—१४०३।

पाँइता—संज्ञा पुं. [हिं. पाँयता] **पलँग का पैंताना।**

पाँइनि—संज्ञा पुं. बहु० [हिं. पाँव] **पैर, पाँव।**

मुहा.—पाइनि परि—**पैर पर गिरकर, बड़ी नम्रता और विनय से।** उ.—जेइ जेइ पथिक जात मधुबन तन तिनहूँ सों ब्यथा कहति पाँइनि परि—२८००।

पाँउ—संज्ञा पुं. [हिं. पाँव] **पैर, पाँव।**

मुहा.—पाँव पसार सोना—**बिलकुल निश्चिंत होकर सोना।**

पाँक, पाँका—संज्ञा पुं. [सं. पंक] **कीचड़।**

पाँख, पाँखड़ा—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष] **पंख, डैना।** उ.—कीड़ी तनु ज्यों पाँख उपाई—१०४१।

पाँखड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पंखुड़ी] **फूल की पंखुड़ी, पुष्पदल।**

पाँखनि—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. पंख] **अनेक पंख।** उ.—जिन पाँखनि कै मुकुट बनायौ, सिर धरि नंदकिसोर—४७७।

पाँखि, पाँखी—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष] **पंख, पर, डैना।** उ.—सूरदास सोने के पानी, मढ़ौं चौंच अरु पाँखि—९-१६४।

संज्ञा स्त्री. [सं. पक्षी] (१) **पंखदार पतिंगा।** (२) **पक्षी।**

पाँखुड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पंखुड़ी] **फूल की पंखुड़ी, पुष्पदल।**

पाँखें—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. पंख] **पंख, डैने।** उ.—मुरली अधर मोर के पाँखें जिन इह मूरति देखि—३२१७।

पाँगुर, पाँगुरी—वि. [हिं. पंगु] **लूली, पंगु।** उ.—सूर सो मनसा भई पाँगुरी निरखि डगमगे गोड़—१३५७।

पाँच—वि. [सं. पंच] **चार से एक अधिक।**

मुहा.—पाँच-सात न आना—**बहुत सीधे और सरल स्वभाव का होना।** उ.—चकृत भए नारि-नर ठाढ़े पाँच न आवै सात—२४६४। पाँच-सात भूलना—**चालाकी भूल जाना।** उ.—सूरदास प्रभु के वै बचन सुनहु मधुर मधुर अब मोहिं भूली पाँच और सात—पृ. ३१५ (४५)। पाँच की सात लगाना—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक बातें गढ़कर दोषी बताना। उ.—पाँच की तात लगायो झूँठी-झूँठी कै बनायौ साँची जो तनक होइ तौलौ सब सहिए—१२७२।

संज्ञा पुं—(१) पाँच की संख्या। (२) कई लोग। (३) मुखिया लोग, पंच।

...क—वि. पुं. [हिं. पाँच+एक] लगभग पाँच, पाँच-सात। उ.—दीपमालिका के दिन पाँचक गोपनि कहौ बुलाइ—८१२।

संज्ञा पुं. [सं. पंचक] (१) पाँच नक्षत्र जिनमें नया कार्य करना मना है। (२) पांच का समूह। (३) शकुन शास्त्र।

...जना—संज्ञा पुं. [सं.] (१) श्रीकृष्ण का शंख जो पंचजन नामक दैत्य से उन्हें मिला था। (२) विष्णु का शंख।

...वाँ—वि. [हिं. पाँच] पाँच के स्थानवाला।

...चाल—संज्ञा पुं. [सं.] 'पंचाल' नामक देश।

वि.—(१) पंचाल देशवाला। (२) पंचाल-संबंधी।

...चाली—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) वाक्य-रचना की वह रीति जिसमें बड़े बड़े समासों में कोमल कांत पदावली हो। (२) द्रोपदी जो पंचाल देश की राजकुमारी थी।

...चैं—संज्ञा स्त्री. [हिं. पंचमी] किसी पक्ष की पाँचवीं तिथि। उ.—पाँचै परिमिति परिहरै हरि होरी है—२४५५।

...चौ—संज्ञा पुं. [हिं. पाँच] कुल पाँच। उ.—करि हरि सौं स्नेह मन साँचौ। निपट कपट की छाँड़ि अटपटी, इन्द्रिय बस राखहि किन पाँचौ—१-८३।

...जना—क्रि. स. [सं. प्रणद्ध, प्रा. पणज्झ, पँज्झ] धातु के टुकड़ों या टूटे पात्रों में टाँका लगाना।

...जर—संज्ञा पुं. [सं. पंजर] (१) पसली। (२) पार्श्व, बगल।

...झी, पाँभ.—संज्ञा स्त्री. [देश.] नदी के पानी का इतना सूख जाना कि पैदल ही उसे पार किया जा सके।

...डव—संज्ञा पुं. [सं.] कुन्ती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पांडु के पाँच पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन नकुल, सहदेव।

पांडित्य—संज्ञा पुं. [सं.] विद्वत्ता, पंडिताई।

पांडु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पांडव वंश के आदि पुरुष। ये विचित्रवीर्य की विधवा स्त्री अंबालिका के, व्यासदेव से उत्पन्न पुत्र थे। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव इन्हीं के पुत्र थे। (२) एक रोग जिसमें शरीर पीला पड़ जाता है। (३) सफेद रंग।

पांडुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] पीलापन।

पांडु-बधू—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) पांडु की पतोहू। (२) द्रौपदी। उ.—कोपि कौरव गहे केस जब सभा मैं, पांडु की बधू जस नैंकु गायौ—१-५।

पांडुर—वि. [सं.] (१) पीला। (२) सफेद।

पांडुलिपि—संज्ञा स्त्री. [सं.] लेख की मूल प्रति।

पाँडे, पाँड़ेय—संज्ञा पुं. [सं. पंडित] (१) ब्राह्मणों की एक शाखा। (२) पंडित। (३) अध्यापक। उ.—जब पाँड़े इत-उत कहुँ गए। बालक सब इकठौरे भए ७-२। (४) रसोइया। (५) वह ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का जन्म सुनकर महराने में आया था। उ.—महराने तैं पाँड़े आयौ। ब्रज घर घर बूझत नँद-राउर पुत्र भयौ, सुनि कै उठि धायौ—१०-२४८।

पाँति—संज्ञा स्त्री. [सं. पंक्ति] (१) कतार, पंक्ति। उ.—अब वै लाज मरति मोहिं देखत बैठी मिलि हरि पाँति—पृ. ३३७ (६५)। (२) अवली, समूह। उ.—मानों निकसि बगपाँति दाँत उर अवधि सरोवर फोरे—२८१३ (३) बिरादरी, परिवार-समूह। उ.—जातिपाँति कोउ पूछत नाहीं, श्रीपति कैं दरबार—१-२३१।

पाँती—संज्ञा स्त्री [सं. पंक्ति] समूह, समाज। उ.—कुसुमित धर्म-कर्म कौ मारग जउ कोउ करत बनाई। तदपि बिमुख पाँती सो गनियत, भक्ति हृदय नहिं आई—१-९३।

पाँथ—संज्ञा पुं. [सं. पंथ] मार्ग।

वि. [सं.] (१) पथिक। (२) वियोगी।

पाँयँ, पाँय—संज्ञा पुं. [सं. पाद] पैर, चरण।

पाँयता—संज्ञा पुं. [हिं. पाँय + तल] पैताना।

पाँयन—संज्ञा पुं. [हिं. पाँव] पैरों में। उ.—सुनत सुवन घटियार घोर ध्वनि पाँयन नूपुर बाजत—२५६१।

पाँव—संज्ञा पुं. [सं. पद] पैर, पग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँवड़ा, पाँवड़े—संज्ञा पुं. [हिं. पाँव+ड़ा (प्रत्य.)] **वस्त्र जो मार्ग में आदर के लिए बिछाया जाता है, पायंदाज**। उ.—(क) बरन बरन पट परत पाँवड़े, बीथिनि सकल सुगन्ध सिंचाई—९-१६६। (ख) पाटंबर पाँवड़े डसाये—२६४३।

पाँवड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँव] (१) **खड़ाऊँ**। (२) **जूता**।

पाँवर—वि. [सं. पामर] (१) **पापी, नीच**। (२) **ओछा, क्षुद्र**। उ.—थोरी कृपा बहुत करि मानी पाँवर बुधि ब्रजबाल—१८३०।

पाँवरि, पाँवरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँवरी] (१) **जूता, पनही**। उ.—(क) सूर स्वामि की पाँवरि सिर धरि, भरत चले बिलखाई—९-५३। (ख) सूरदास प्रभु पाँवरि मम सिर इहिं बल भरत कहाऊँ—९-१५५। (२) **सीढ़ी**। (३) **पैर रखने का स्थान**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पौरि, पौरी] (१) **ड्योढ़ी**। (२) **दालान**।

पांशु—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **धूल, रज**। (२) **बालू**।

पाँस—स्त्री. [सं. पांशु] **खाद**।

पाँसना—क्रि. स. [हिं. पाँस] **खेत में खाद देना**।

पाँसा—संज्ञा पुं. [सं. पाशक] **चौसर खेलने की गोट**। उ.—कौरव पाँसा कपट बनाये।

मुहा.—पाँसा उलटना (पलटना)—**प्रयत्न या योजना का फल आशा के प्रतिकूल होना**।

पाँसुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पसली] **पसली**।

पाँसे—संज्ञा पुं. [हिं. पाँसा] **चौसर खेलने के छोटे टुकड़े जो संख्या में ३ होते हैं। ये प्रायः हाथी दाँत या किसी हड्डी के बनते हैं**। उ.—चौपरि जगत मड़े जुग बीते। गुन पाँसे, क्रम अंक, चारि गति सारि, न कबहूँ जीते—१-६०।

पाँही—क्रि. वि. [हिं. पँह] **पास, निकट, समीप**।

पा, पाइँ, पाइ—संज्ञा पुं. [सं. पाद] **पैर, चरण**। उ.—(क) हा हा हो पिय पा लागति हौं जाइ सुनौ बन बेनु रसालहिं—८६८।

पाइक—संज्ञा पुं. [सं. पायक] (१) **दूत**। (२) **सेवक**।

पाइतरी—संज्ञा स्त्री. [सं. पादस्थली] **पलँग का पैर की ओर का भाग, पैताना**। उ.—कमलनैन पौढ़े सुख-सज्या, बैठे पारथ पाइतरी—१-२६८।

पाइयत—क्रि. स. [हिं. पाना] **पाता है**। उ.—प्रानन के बदले न पाइयत सेंति बिकाय सुजस की ढेरी—२८५२।

पाइल—संज्ञा स्त्री. [हिं. पायल] **पैर का एक गहना**।

पाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँय] (१) **मंडल में नाचना**। (२) **एक सिक्का**। (३) **दीर्घता-सूचक मात्रा**। (४) **खड़ा विराम-चिह्न**।

क्रि. स. [हिं. पाना] **प्राप्त की, उपलब्ध की, लाभ करना**। उ.—(क) यह गति काहू देव न पाई—१-५। (ख) अंबरीष, प्रहलाद, नृपति बलि, महाँ ऊँच पदवी तिन पाई—१-२४। (२) **समझी, जानी-बूझी**। उ.—उनकी महिमा है नहिं पाई—४-५।

पाउक—संज्ञा पुं [सं. पावक] **आग, अग्नि**।

पाउँ—संज्ञा पुं [हिं. पाँव] **पैर**। उ.—भवन जाहु अपनैं अपनैं सब, लागति हौं मैं पाउँ—३४५।

पाऊँगो—क्रि. स. [हिं. पाना] **प्राप्त करूँगा**। उ.—मात-पिता जिय त्रास धरत हौं तऊ आइ सुख पाऊँगो—१६४४।

पाएँ—क्रि. स. सवि. [हिं. पाना] **पाने से, पाने पर भी, पाकर भी**। उ.—अति प्रचंड पौरुष बल पाएँ केहरि भूख मरै—१-२०५।

पाक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पकाने की क्रिया, रसोई बनाना**। उ.—पाक पावक करै, बारि सुरपति भरै, पौन पावन करै द्वार मेरे—९-१२६। (२) **रसोई, तैयार भोजन**। उ.—देखौ आइ जसोदा सुत-कृति। सिद्ध पाक इहिं आइ जुठायौ—१०-२४८। (३), **पकवान**। उ.—मिलि बैठे सब जेंवन लागे, बहुत बने कहि पाक—४६४। (४) **चाशनी में बनी औषध**।

वि. [फ़ा.] (१) **पवित्र**। (२) **निर्दोष**। (३) **समाप्त**।

पाकर—संज्ञा पुं. [सं. पर्कटी, प्रा. पक्कड़ी] **एक वृक्ष**। उ.—फूल करील कली पाकर नम—२३२१।

पाकशाला, पाकसाला—संज्ञा पुं. [सं. पाकशाला] **रसोई-घर**। उ.—तब उन कह्यौ पाकसाला में अबहीं यह पहुँचाओ—सारा० ६६४।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकशासन, पाकसासन—संज्ञा पुं. [सं. पाकशासन] **इंद्र।**

पाकस्थली—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पक्काशय।**

पाक्षिक—वि. [सं.] (१) **पक्ष या पखवाड़े का।** (२) **जो प्रतिपक्षी हो।** (३) **तरफदार।**

पाखंड—संज्ञा पुं. [सं. पाखंड] (१) **वेद-विरुद्ध आचरण।** (२) **आडंबर, ढोंग, ढकोसला।** उ.—दूरि कियौ पाखंड वाद, हरि भक्तिनि को अनुकूल—सारा० ३१६। (३) **छल-कपट।**

वि.—**पाखंड करनेवाला, ढोंगी, पाखंडी।**

पाखंडी—वि. [हिं. पाखंड] (१) **वैदिक आचार का खंडन या निंदा करनेवाला।** (२) **कपटाचारी, ढोंगी।** (३) **छली-कपटी।**

पाख, पाखा—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष] (१) **पक्ष, पखवाड़ा, पंद्रह दिन।** उ.—एक पाख त्रय मास कौ, मेरौ भयौ कन्हाई—१०-६८। (२) **कोना, छोर।**

पाखान—संज्ञा पुं. [सं. पाषाण] **पत्थर।**

पाखाननि—संज्ञा पुं. सवि. [सं. पाषाण] **पत्थरों से।** उ.—तब लौं तुरत एक तौ बाँधौ, द्रुम-पाखाननि छाई—६-११०।

पाखर—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रखर] **हाथी-घोड़े पर, युद्ध के अवसर पर, डाली जानेवाली लोहे की झूल।**

पाग—संज्ञा स्त्री. [हिं. पग=पैर] **पगड़ी।** उ.—(क) टेढ़ी चाल, पाग सिर टेढ़ी, टेढ़ैं-टेढ़ैं धायौ—१-३०१। (ख) रोकि रहत गहि गली साँकरी टेढ़ी बाँधत पाग—१०-३२८। (ग) दधि-ओदन दोना भरि दैहौं अरु अंचल की पाग—२६४८।

संज्ञा पुं. [सं. पाक] (१) **रसोई।** (२) **चाशनी में पगी मिठाई।**

पागना—क्रि. स. [सं. पाक] **चाशनी में पकाना।**

पागल—वि. [देश.] (१) **बावला, सनकी, विक्षिप्त।** (२) **क्रोध, शोक आदि के कारण आपे से बाहर।** (३) **नासमझ, मूर्ख।**

पागलपन—संज्ञा पुं. [हिं. पागल] (१) **सनक।** (२) **मूर्खता।** (३) **उन्मत्तता।**

पागी—वि. [हिं. पगना] **रस या चाशनी में पगी हुई।** उ.—(क) भव-चिंता हिरदै नहिं एकौ स्याम रंग-रस पागी—१४८६। (ख) सूरदास अबला हम भोरी गुर चैंटी ज्यौं पागी—३३३५।

पागे—क्रि. अ. [हिं. पगना] (१) **अनुरक्त हुए, मग्न हुए, प्रेम में डूब गये।** उ.—नवल गुपाल, नवेली राधा नये प्रेम-रस पागे—६८६। (२) **ओतप्रोत हुए, मग्न हुए, भरे गये।** उ.—(क) तब बसुदेव देवकी निरखत परम प्रेम रस पागे—१०-४। (ख) सोभित सिथिल बसन मन मोहन, सुखवत स्रम के पागे...। नहिं छूटति रति रुचिर भामिनी, वा रस मैं दोउ पागे—६८६।

पाग्यौ—क्रि. अ. भूत. [हिं. पगना] **बहुत अधिक लिप्त हुआ, ओतप्रोत हो गया।** उ.—जनम सिरानौई सौ लाग्यौ। रोम रोम, नख-सिख लौं मेरैं, महा अवनि बपु पाग्यौ—१-७३।

पाचक—वि. [सं.] **पचाने या पकानेवाला।**

पाचन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पचाने या पकाने की क्रिया।** (२) **अन्न-पचाने की क्रिया।** (३) **प्रायश्चित।**

पाचना—क्रि. स. [सं. पाचन] **अच्छी तरह पकाना।**

पाचै—क्रि. स. [हिं. पाचना] **परिपक्व करती है।** उ.—निसि दिन स्याम सुमिरि जस गावै कलपन मेटि प्रेम-रस पाचै।

पाछ—संज्ञा पुं. [सं. पश्चात, प्रा. पच्छा] **पिछला भाग।**

क्रि. वि. [हिं. पीछा] **पीछे।**

पाछना—क्रि. स. [हिं. पंछा] **चीर-फाड़ देना।**

पाछल, पाछलु—वि. [हिं. पिछला] **पीछे का, पिछला।**

पाछिल, पाछिलो—वि. [हिं. पिछला] (१) **पिछला, पीछे का।** (२) **पूर्व जन्म का।** उ.—धन्य सुकृत पाछिलो—११८१।

पाछिली—वि. स्त्री. [हिं. पिछला] **पीछे की, पूर्व की।**

पाछिले—वि. [हिं. पीछा, पिछला] **पूर्व या पहले की, पिछली।** उ.—उन तौ करी पाछिले की गति, गुन तोरयौ बिच धार—१-१७५।

पाछी—क्रि. वि. [हिं. पाछ] **पीछे, पीछे की ओर।**

पाछू, पाछे, पाछैं—क्रि. वि. [हिं. पीछा, पीछे] (१) **भूतकाल में, पूर्व समय में, पहले।** उ.—तीनौं पन भरि ओर निबाह्यौ, तऊ न आयौ बाज। पाछैं भयौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नें आगैं ह्वैहै, सब पतितनि सिरताज—१-६६। (२) **पीठ की ओर, पीछे की तरफ।** उ.—पुनि पाछैं अघ-सिंधु बढ़त है सूर खाल किन पाटत—१-१०७।

पाछेन—वि. [हिं. पीछा] **पीछे आनेवाले।** उ.—पदखि लिए पाछेन को तेऊ सब आए—२५७५।

पाज—संज्ञा पुं. [हिं. पाँजर] **पाँजर।** उ.—निरखि छबि फूलत हैं ब्रजराज। उत जसुदा इत आपु परस्पर आड़े रहे कर पाज।

पाजस्य—संज्ञा पुं. [सं.] **छाती और पेट की बगल का भाग, पार्श्व, पाँजर।**

पाजी—संज्ञा पुं. [सं. पदाति] **(१) पैदल सिपाही। (२) रक्षक।**

वि. [सं. पाठ्य] **दुष्ट, नीच, कमीना।**

पाजीपन—संज्ञा पुं. [हिं. पाजी + पन] **दुष्टता, नीचता।**

पाजेब—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **पैर का गहना, नूपुर, मंजीर।**

पाटंबर—संज्ञा पुं. [सं.] **रेशमी वस्त्र।** उ.—हय गय हेम धेनु पाटंबर दीन्हें दान उदार—सारा. ३०७।

पाट—संज्ञा पुं. [सं. पट्ट, पाट] **(१) रेशम।** उ.—किंकिनि नूपुर पाट पाटंबर, मानौं लिये फिरैं घरबार—१-४१। **(२) राजसिंहासन।** उ.—मोदी लोभ, खवास मोह के, द्वारपाल अहँकार। पाट बिरध ममता है मेरैं माया कौ अधिकार—१-१४१। **(३) फैलाव, चौड़ाई। (४) पीढ़ा, पटरा। (५) धोबी का पाटा। (६) चक्की का एक भाग। (७) द्वार, कपाट।**

पाटत—क्रि. स. [हिं. पाट, पाटना] **किसी गहरी जगह को भर देना, गढ़ा-जैसी जगह पाट देना।** उ.—पुनि पाछैं अघ-सिंधु बढ़त है, सूर खाल किन पाटत—१-१०७।

पाटन—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाटना] **(१) पटाव, छत। (२) साँप का विष उतारने का एक मंत्र।**

पाटना—क्रि. स. [हिं. पाट] **(१) निचले स्थान को भरकर समतल करना। (२) ढेर लगाना। (३) पटाव या छत बनाना। (४) तृप्त करना।**

पाटमहिषी—संज्ञा स्त्री. [सं. पट्ट+महिषी] **पटरानी।**

पाटरानी—संज्ञा स्त्री. [सं. पट्ट+रानी] **प्रधान रानी जो राजा के साथ सिंहासन पर बैठे।** उ.—अब कहावत पाटरानी बड़े राजा स्याम—२६८१।

पाटल—संज्ञा पुं. [सं.] **पाढर नामक पेड़।** उ.—मिलतं सम्मुख पाटल पटल भरत मान जुही—२३८१। **(१) गुलाब।**

वि.—**(१) गुलाब-संबंधी। (२) गुलाबी।**

पाटव—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) कौशल। (२) पक्कापन।**

पाटवी—वि. [हिं. पाट] **(१) पटरानी से उत्पन्न। (२) रेशमी।**

पाटा—संज्ञा पुं. [हिं. पाट] **पीढ़ा, पटरा, तख्ता।**

पाटी—संज्ञा स्त्री. [सं. पाट] **(१) पटिया, पट्टी, माँग के दोनों ओर के बैठे हुए बाल।** उ.—मुँड़ली पाटी पारन चाहै, नकटी पहिरे बेसरि (२) **पटरा, पीढ़ा। (३) सिंहासन।** उ.—नव ग्रह परे रहैं पाटी-तर, कूपहिं काल उसारौ—६-१५६। **(४) शिला, चट्टान। (५) पलँग की एक लकड़ी।** उ.—घुनो बाँस बुन्यौ खटोला काहू को पलँग कनक पाटी—१० उ.-७१।

संज्ञा स्त्री. [सं.] **(१) परिपाटी। (२) श्रेणी। (३) गणना-क्रम।**

पाटौं—क्रि. स. [हिं. पाटना] **(१) पाट दूँ, दबाकर गाड़ दूँ।** उ.—कहौ तौ मृत्युहिं मारि डारि कै, खोदि पता. लहिं पाटौं—६-१४८। **(२) लबालब भर दूँ, डुबा दूँ।** उ.—छिन में बरषि प्रलय जल पाटौं खोजु रहै नहिं चीनो—६४५।

पाटौ—संज्ञा पु. [सं. पट्टा] **पट्टा, अधिकार-पत्र, सनद।** उ.—जो प्रभु अजामील कौं दीन्हौ, सो पाटौ लिखि पाऊँ। तौ बिस्वास होइ मन मेरैं, औरौ पतित बुलाऊँ —१-१४६।

पाठ—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) पढ़ाई, अध्ययन।** उ.—संदीपन सुत तुम प्रभु दीने, विद्या-पाठ करयौ—१-१३३। **(२) नियम से पढ़ने की क्रिया या भाव (३) पढ़ने का विषय। (४) सबक। (५) पुस्तक का एक अंश। (६) वाक्य का शब्द-क्रम या शब्द-वर्तनी।**

पाठक—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) पढ़नेवाला। (२) पढ़ानेवाला।**

पाठन—संज्ञा पुं. [सं.] **पढ़ने की क्रिया या भाव।**

पाठ-भेद—संज्ञा पुं. [सं.] **पाठ का अंतर।**

पाठशाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] **विद्यालय, चटसाल।**

पाठांतर—संज्ञा पुं. [सं.] **पाठ में अंतर।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...–वि. [सं. पाठिन्] पढ़नेवाला, पढ़ैया ।
...–वि. [सं.] (१) पठनीय । (२) जो पढ़ाया जाय ।
..., पाढ़–संज्ञा पुं. [हिं. पाट] (१) धोती-साड़ी का किनारा । (२) बाँध, पुश्ता ।
..., पाढ़इ–संज्ञा स्त्री. [सं. पाटल] 'पाटल' वृक्ष । उ.–जहाँ निवारी सेवती मिलि झूमक हो । बहु पाड़इ बिपुल गँभीर मिलि झूमक हो–२४४५ ।
...–संज्ञा पुं. [सं. पट्टन] टोला, मुहल्ला, पुरवा ।
...–संज्ञा स्त्री. [हिं. पढ़ना] जादू-टोना, मंत्र ।
...–संज्ञा पुं.[सं.] (१) व्यापार । (२) हाथ, कर ।
...–संज्ञा पुं. [सं.] हाथ, कर ।
...क–संज्ञा पुं. [सं.] (१) सौदा । (२) हाथ ।
...गृहीता–वि. [सं.] विवाहिता (पत्नी) ।
...ग्रह, पाणिग्रहण–संज्ञा पुं. [सं.] विवाह ।
...नि–संज्ञा पुं. [सं.] संस्कृत भाषा के 'अष्टाध्यायी' नामक प्रसिद्ध व्याकरण के रचयिता ।
...पल्लव–संज्ञा पुं. [सं.] उँगलियाँ ।
...मूल–संज्ञा पुं. [सं.] कलाई ।
...जलि–संज्ञा पुं. [सं. पतंजलि] प्रसिद्ध प्राचीन विद्वान पतंजलि । उ.–पातंजलि-से मुनि पद सेवत करत सदा व्रज ध्यान–सारा. ६२ ।
...–संज्ञा पुं. [सं. पत्र] (१) पत्ता, पत्र । उ. जा दिन मन पंछी उड़ि जैहै । ता दिन तेरे तन-तरुवर के सबै पात झरि जैहैं–१-८६ । (२) कान का एक गहना, पत्ता ।
...संज्ञा पुं. [सं.] पतन । (२) गिरना । (३) टूट कर गिरना । (४) नाश । (५) पड़ना ।
...–संज्ञा पुं. [सं.] पाप, अघ, अधर्म ।
...–वि. [सं. पातक] पापी, अधर्मी ।
...–संज्ञा पुं. [सं.] गिराने की क्रिया ।
संज्ञा पुं. बहु. [हिं. पात=पत्ता] पत्तों के । उ.–...री के पातन के बदले को मुक्ताहल दैहै–३१०५ ।
..., पातरा–वि. [हिं. पतला] दुबला, पतला, क्षीण । उ.–मचला, अकलै-मूल, पातर खाउँ खाउँ करै भूखा –१-१८६ । (२) क्षीण, बारीक । (३) जो जरा भी गाढ़ा न हो ।

संज्ञा स्त्री. [सं. पत्र] पत्तल, पनवारा ।
संज्ञा स्त्री. सं. पातली] वेश्या ।
पातरि, पातरी वि.[हिं. पतला] दुबली-पतली ।
संज्ञा स्त्री. [सं. पातली] वेश्या ।
पातशाह–संज्ञा पुं. [हिं. पादशाह] बादशाह ।
पातशाही–संज्ञा स्त्री. [हिं. पातशाह] बादशाही ।
पाता–संज्ञा पुं.[सं. पत्र हिं., पत्ता] पत्ता, पत्र । उ.–सरबस प्रभु रीझि देत तुलसी कैं पाता–१-१२३ ।
वि. [सं. पातृ] (१) रक्षक । (२) पीनेवाला ।
पातार, पाताल–संज्ञा पुं. [सं.] (१) पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से सातवाँ । (२) पृथ्वी के नीचे का लोक । उ.–ग्रस्यौ गज ग्राह कौं लै चल्यौ पाताल कौं काल कैं त्रास मुख नाम आयौ–१-५ । (३) गुफा ।
पातालकेतु–संज्ञा पुं. [सं.] पातालवासी एक दैत्य ।
पाताखत–संज्ञा पुं. [हिं. पात+आखत] पत्र-अक्षत, पूजा या भेंट की सामान्य वस्तु ।
पाति–संज्ञा स्त्री. [सं. पत्र] (१) पत्ती । (२) चिट्ठी ।
पातिव्रता, पातिव्रत–संज्ञा पुं. [सं. पातिव्रत्य] पतिव्रता होना । उ.–पातिव्रतहिं धर्म जब जान्यौ बहुरौ रुद्र बिहाई–सारा-५० ।
पातिसाह–संज्ञा पुं. [हिं. पादशाह] बादशाह ।
पाती–संज्ञा स्त्री. [सं. पत्री, प्रा. पत्ती] (१) चिट्ठी, पत्र । उ.–(क) पाती बाँचत नंद डराने–५२६ । (ख) लोचन जल कागद मसि मिलि करि ह्वै गइ स्याम स्याम जू की पाती–२६७७ । (२) वृक्ष-लता की पत्ती ।
संज्ञा स्त्री. [हिं. पति] लज्जा, प्रतिष्ठा । उ.–सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु सब पाती उघरी–३३४६ ।
पातुर, पातुरी–संज्ञा स्त्री. [सं. पातली] वेश्या ।
पाते, पातै–संज्ञा पुं. [हिं. पत्ता.] वृक्ष का पत्ता । उ.–(क) मलिन बसन हरि हित अंतर्गति तनु पीरो जनु पाते–३४६१ । (ख) मारे कंस सुरन सुख दीनो असुर जरे पिर पाते–३३३८ ।
पात्त–संज्ञा पुं. [सं.] पापियों का उद्धारक ।
पात्र–संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह व्यक्ति जो किसी वस्तु अथवा विषय का अधिकारी हो । उ.–हरि जू हौं यातैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुख-पात्र—१-२१६। (२) **आधार, बरतन, भाजन।** उ.—(क) हृदय कुचील काम-भू-तृष्ना-जल कलिम है पात्र—१-२१६। (ख) पात्र-स्थान हाथ हरि दीन्हें—२-२०। (३) **नदी का पाट।** (४) **नाटक के नायक-नायिका आदि।** (५) **नाटक के अभिनेता।** (६) **पत्ता।**

पात्रता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **योग्यता, अधिकार।**

पात्री—संज्ञा स्त्री. [सं. पात्र] (१) **छोटा बरतन।** (२) **नाटक के स्त्री-पात्र** (३) **अभिनय करनेवाली स्त्री।**

पाथ—संज्ञा पुं. [सं. पाथस्] (१) **जल।** (२) **वायु।**

संज्ञा पुं. [सं. पथ] **पंथ, मार्ग, राह।** उ.—भ्रमित भयौ जैसैं मृग चितवत, देखि देखि भ्रम-पाथ—१-२०८।

पाथना—क्रि. स. [हिं. थापना का आद्यन्त विपर्यय] (१) **ठोंक-पीट कर गढ़ना-बनाना।** (२) **थोप-थाप करना।** (३) **मारना।**

पाथनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र।**

पाथनिधि—संज्ञा पुं. [सं. पाथोनिधि] **समुद्र।**

पाथर—संज्ञा पुं. [हिं. पत्थर] **पत्थर।** उ.—उकठे तरु भये पात, पाथर पर कमल जात, आरज पथ तज्यौ। नात, व्याकुल नर-नारी।

पाथा—संज्ञा पुं. [सं. पाथस्] (१) **जल।** (२) **आकाश।**

पाथेय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **यात्री के लिए मार्ग का भोजन।** (२) **पथिक का राह-खर्च, संबल।**

पाथोज—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल।**

पाथोर—संज्ञा पुं. [सं.] **मेघ, बादल।**

पथोधार—संज्ञा पुं. [सं.] **मेघ, बादल।**

पाथोधि—संज्ञा पुं. [सं.] **सागर, समुद्र।**

पाथोनिधि—संज्ञा पं. [सं.] **सागर, समुद्र।**

पाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पैर, चरण।** (२) **छंद का एक चरण।** (३) **चौथाई भाग।** (४) **पुस्तक का विशेष भाग।** (५) **निचला भाग, तल।**

पादत्र, पादत्राण, पादत्रान—वि. [सं.] **जो नर-नारी के पैर की रक्षा करे।**

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **खड़ाऊँ।** (२) **जूता, पनही।**

पादप—संज्ञा पुं. [सं.] **वृक्ष, पेड़।**

पादपा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **जूता।** (२) **खड़ाऊँ।**

पादपूरक—वि. [सं.] **कविता में पद की पूर्ति के लिए प्रयुक्त होनेवाला शब्द।**

पादपूरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कविता में अधूरे पद को पूरा करना।** (२) **पद-पूर्ति के लिए भरती के शब्द रखना।**

पादशाह—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **बादशाह।**

पादाकुल, पादाकुलक—संज्ञा पुं. [सं.] **चौपाई (छंद)।**

पादाक्रांत—वि. [सं.] **पैर से कुचला हुआ।**

पादारघ—संज्ञा पुं. [सं. पाद्यार्घ] (१) **हाथ-पैर धुलाने का जल।** (२) **पूजन-सामग्री।** (३) **भेंट, उपहार।**

पादुका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **खड़ाऊँ।** (२) **जूता।**

पादोदक—संज्ञा पुं. [सं. पाद+उदक=जल] (१) **वह जल जिसमें पैर धोया गया हो।** (२) **चरणामृत।** उ.—गंग तरंग बिलोकत नैन। अतिहि पुनीत बिष्नु-पादोदक, महिमा निगम पढ़त गुनि चैन—९-१२।

पाद्य—संज्ञा पुं. [सं.] **चरण धोने का जल।** उ.—चमु अंचल, कुच कलश मनो पाद्य पानि चढ़ाइ—३४८३।

पद्यार्घ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हाथ-पैर धोने का जल** (२) **पूजा या भेंट की सामग्री।**

पाधा, पाधे—संज्ञा पुं. [सं. उपाध्याय] (१) **आचार्य।** (२) **पंडित।** उ.—गिरिधरलाल छबीले को यह कह पठायौ पाधे—३२८४।

पान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **(किसी द्रव पदार्थ को) घूँटना, पीना।**

(२) **शराब पीना।**

प्र०—पान करि—**पीकर**—उ.—रुधिर पान करि आतमाल धरि, जयजय शब्द उचारी। करती पान—**पीती।** उ.—रास रसिक गुपाल मिलि मधु अधर करत पान—३०३२।

(३) **पेय पदार्थ, पेय द्रव।** उ.—चरनोदक को छाँड़ि सुधा-रस, सुरापान अँचयौ—१-६४। (४) **मद्य, शराब।** (५) **पानी।** (६) **आब, कांति।** (७) **पीने का पात्र।** (८) **प्याऊ।**

संज्ञा पुं. [सं. प्राण] **प्राण।** उ.—पान अपान व्यान उदान और कहियत प्राण समान।

संज्ञा पुं. [सं. पर्ण, प्रा. पण्ण] (१) **एक प्रसिद्ध लता**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसके पत्तों का बीड़ा बनाकर खाया जाता है, **ताम्बूली** उ.—दिन राती पोषत रह्यौ जैसे चोली पान—**१-३२५**। (२) **पान का बीड़ा**। उ.—(क) आदर सहित पान कर दीन्हौं—१०४७। (ख) पान लै चल्यौ नृप-आन दीन्हौ—१०-६२।

मुहा०—पान उठाना—किसी काम के करने का जिम्मा लेना। पान खिलाना—**सगाई-संबंध पक्का कराना**। पान चीरना—**व्यर्थ का काम करना**। पान देना—**कोई काम करने का जिम्मा देना**। दै पान—**काम करने का जिम्मा देकर**। उ.—असुर कंस दै पान पठाई—**१०-५०**। पान-पत्ता या पान-फूल—**साधारण या तुच्छ भेंट**। पान लेना—किसी काम को करने का जिम्मा लेना। लै पान—**काम करने का जिम्मा लेकर**। उ.—नृपति के लै पान मन कियौ अभिमान करत अनुमान चँद्र पास धाऊँ।

(३) **पान के आकार की ताबीज**।

संज्ञा पुं. [सं. पाणि] **हाथ**।

नक—संज्ञा पुं. [सं.] **पना, पन्ना**।

प—संज्ञा पुं. [सं.] **शराबी, मद्यप**।

रा—संज्ञा पुं. [हिं. पनारा] **परनाला**।

ही—संज्ञा स्त्री. [सं. उपानह, हिं. पनही] **जता**।

ना—क्रि. स. [सं. प्रायण, प्रा. पावण] (१) **प्राप्त करना**। (२) **फल या परिणाम भुगतना**। (३) **खोई हुई चीज फिर पाना**। (४) **पता, भेद या खोज पाना**। (५) **कुछ सुन या जान लेना**। (६) **देखना-जानना**। (७) **भोगना**। (८) **समर्थ हो सकना**। (९) **समीप जा सकना**। (१०) **समान या बराबर होना**। (११) **भोजन करना**। (१२) **समझ सकना**।

वि.—**जिसे पाने का हक हो**।

नि—संज्ञा पुं. [सं. पाणि] **हाथ**। उ.—(क) सक्र कौ दान-बलि-मान ग्वारनि लियौ, गह्यौ गिरि पानि, जस जगत छायौ—**१-५**। (ख)—उरग-इंद्र उनमान सुभग भुज, पानि पदुम आयुध राजैं—**१-६६**।

संज्ञा पुं. [हिं. पानी] **पानी, जल**। उ.—पवन पानि घनसारि सुमन दै दधिसुत किरनि भानु भै भुंजैं-२७२१।

ग्रहण, **पानिग्रहन**—संज्ञा पुं. [सं. पाणि+ग्रहण] विवाह।

पानिप—संज्ञा पुं. [हिं. पानी+प (प्रत्य०)] (१) **ओप, द्युति, कांत**। (२) **पानी**।

वि.—**मर्यादायुक्त, इज्जतदार, सम्मानित, प्रतिष्ठित**। उ.—सभा माँझ द्रौपति-पति राखी, पति पानिप कुल ताकौ। बसन-ओट करि कोट बिसंभर, परन न दीन्हो झाँकौ—**१-११३**।

पानी—संज्ञा पुं. [सं. पानीय] (१) **जल, अंबु, नीर**। उ.—जिनकैं क्रोध पुहुमि-नभ पलटै, सूखै सकल सिंधु कर पानो—९-११५।

मुहा०—पानी उतरना—**पानी घटना**। (काम) पानी करना—**सरल या सहज कर डालना**। पानी का बतासा (बुलबुला)—**क्षणभंगुर चीज**। पानी की तरह बहाना—**खूब लुटाना या अँधाधुंध खर्च करना**। पानी के मोल—**बहुत सस्ता**। पानी चढ़ना—(१) **पानी का ऊँचाई की ओर जाना**। (२) **पानी बढ़ना**। पानी चलाना—**नष्ट या चौपट करना**। पानी टूटना—**बहुत ही कम पानी रह जाना**। पानी दिखाना—**(पशु कों) पानी पिलाना**। पानी देना—(१) **सींचना, तर करना**। (२) **पितरों के नाम तर्पण करना**। पितर दै पानी—**पितरों के नाम तर्पण कर**। उ.—ढोटा एक भयौ कैसैहुँ करि कौन कौन करबर बिधि भानी। क्रम क्रम करि अब लौं उबर्‌यौ है, ताकौं मारि पितर दै पानी—**३६८**। पानी भी न माँगना—**चटपट दम निकल जाना**। पानी पर नींव डालना (देना)—**ऐसा काम करना जो टिकाऊ न हो**। पानी पढ़ना—**मंत्र पढ़कर पानी फूंकना**। पानी पानी करना—**बहुत लज्जित करना**। पानी पानी होना—**बहुत लज्जित होना**। पानी पी पीकर—**हर समय, लगातार**। पानी फिर जाना (फेरना)—**नष्ट हो जाना**। पानी फूँकना—**मंत्र पढ़कर पानी फूंकना**। (किसी के सामने) पानी भरना—**तुलना में अत्यंत तुच्छ होना**। पानी भरी खाल—**क्षणभंगुर शरीर**। पानी मरना—**किसी स्थान पर पानी जमा होकर सूखना**। (किसी के सिर) पानी मरना—**किसी का दोषी साबित होना**। पानी में आग लगाना—(१) **असंभव को संभव कर देना**। (२) **शांतिप्रिय लोगों में झगड़ा करा देना**। पानी में फेंकना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(बहाना)—**नष्ट करना**। पानी लगना—**वातावरण और संगति के प्रभाव से बुरी बातें सीख जाना**। भारी सूखे में पानी में डूबना—**धोखा खा जाना**। भारी पानी—**पानी जिसमें खनिज पदार्थ अधिक मिले हों**। हलका पानी—**पानी जिसमें खनिज पदार्थ कम हों**। (मुँह में) पानी भरना (भर जाना)—**सुन्दर या स्वादिष्ट वस्तु को देखकर उसे पाने या उसका स्वाद लेने का लोभ होना**। दूध का ध, पानी का पानी उघरना—**सच्चाई और वास्तविकता प्रकट हो जाना**। उ.—हम जातहिं वह उघरि परैगी दूध दूध पानी को पानी—१८६२।

(२) **शरीर के अंगों से निकलने वाला पसीना आदि (पानी-सा पदार्थ)**। (३) **वर्षा, मेंह**।

मुहा०—पानी आना—**वर्षा होना**। पानी उठना—**घटा घिरना**। पानी टूटना—**मेंह बंद होना**। पानी निकलना—**वर्षा बंद होना**। पानी पड़ना—**मेंह बरसना**।

(४) **पानी जैसा पतला द्रव पदार्थ जो चिकना न हो**। (५) **निचोड़ने से निकलनेवाला रस, अर्क आदि**। (६) **चमक, आब, कांति, छबि, सुन्दरता**। (७) **धारदार हथियारों की आब, जौहर**। (८) **मान**।

मुहा०—पानी उतारना—**अपमानित करना**। पानी जाना—**अपमान होना**। पानी बचाना (रखना)—**मान की रक्षा करना**। पानी (हर) लेना—**प्रतिष्ठा नष्ट करना**। उ.—सुंदर नैननि हरि लियो कमलनि कौ पानी—४७५। **बे पानी करना—प्रतिष्ठा नष्ट करना**।

(९) **वर्ष, साल**। (१०) **मुलम्मा**। (११) **जीवट, स्वाभिमान**। (१२) **पशु की वंशगत विशिष्टता**। (१३) **पानी-सी ठंढी चीज**।

मुहा०—पानी करना (कर देना)—**गुस्सा ठंढा कर देना**। (किसी का) पानी होना (हो जाना)—(१) **गुस्सा ठंढा हो जाना**। (२) **तेजी न रह जाना**।

(१४) **बहुत मुलायम चीज**। (१५) **फीकी चीज**। (१६) **कुश्ती, द्वंद्वयुद्ध**। (१७) **बार, दफा**। (१८) **शराब**। (१९) **अवसर, मौका**। (२०) **जलवायु**।

मुहा०—पानी लगना—**किसी स्थान की जलवायु स्वास्थ्य के अनुकूल न होने से रोगी हो जाना**।

(२१) **चाल-ढाल, रंग-ढंग, वातावरण**।

संज्ञा पुं.—[सं. पाणि] **हाथ**। उ.—सोइ दसरथ-कुलचंद अमित बल आए सारँग पानी—९-११५।

पानीदार—वि. [हिं. पानी+फ़ा. दार] (१) **चमक या आबदार**। (२) **प्रतिष्ठित, सम्मानित**। (३) **आत्माभिमानी**।

पानी देवा—वि. [हिं. पानी+देना] (१) **तर्पण या पिंडदान करनेवाला**। (२) **पुत्र**। (३) **अपने गोत्र या वंश का**।

पानीय—संज्ञा पुं. [सं.] **जल, पानी**।

वि.—(१) **पीने योग्य**। (२) **रक्षा करने योग्य**।

पानैं—संज्ञा पुं. [सं. पाणि] **पाणि, हाथ, कर**।

उ.—अजहूँ सिय सौंपि नतरु बीस भुजा भानै। रघुपति यह पैंज करी, भूतल धरि पानैं—९-९७।

संज्ञा पुं. [सं. पानीय] **पानी, जल**। उ.—चातक सदा स्वाति को सेवक दुखित होत बिन पानैं—३४०४।

पानो, पानौ—संज्ञा पुं. [हिं. पानी] **पीना**।

यौ०—भोजन-पानो—**खाना पीना**। उ.—सूर आसा पुजै या मन की तब भावै भोजन पानो—८६२।

पानौरा—संज्ञा पुं. [हिं. पान+बड़ा] **पान के पत्ते की पकौड़ी, पतौड़, पतौर**। उ.—पानौरा रायता पकौरी १—२३२१।

पान्यौ—संज्ञा पुं. [हिं. पानी] (१) **पानी**। उ.—(क) अब क्यों जाति निबेरि सखी री मिलो एक पय पान्यौ—१२०२। (ख) सूर सु ऊधो मिलत भए सुख ज्यों खग पायो पान्यो—२९७१। (२) **मेघ**। उ.—मानो दव द्रुम जरत अस भयो उनयो अंबर पान्यौ—२२७५।

पाप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अधर्म, बुरा काम, अघ**।

मुहा०—पाप उदय होना—**पिछले पापों का बुरा फल भुगतना**। पाप कटना—**पिछले पापों का बुरा फल-भोग चुकना और सुख की आशा होना**। पाप कमाना (बटोरना) **बराबर पाप करना**। पाप काटना—**पाप का कुफल भुगता देना**। पाप की गठरी (मोट)—**अनेक पापों का संग्रह**। पाप पड़ना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(लगना)—**दोष होना।**

(२) **अपराध, कसूर।**

मुहा०—पाप लगाना—**दोष लगाना, दोषी ठहराना।** लावत पाप—**दोष लगाता है।** उ.—हारि-जीति कछु नेंकु न समझत, लरिकनि लावत पाप—१०-२१४।

(३) **हत्या।** (४) **बुरी नीयत, बुराई।** उ.—मथुरापति कैं जिय कछु तुम पर उपज्यौ पाप—५८६। (५) **अशुभ ग्रह।** (६) **झंझट बखेड़ा।**

मुहा०—पाप कटना—**बाधा दूर होना।** पाप काटना—**बाधा दूर करना, झंझट मिटाना।** पाप मोल लेना—**जान-बूझकर झंझट में पड़ना।** पाप गले (पीछे) लगना—**झंझट में फँस जाना।**

(७) **कठिनाई, संकट मुसीबत।** उ.—छींक सुनत कुसगुन कह्यौ, कहा भयौ यह पाप—५८६।

मुहा०—पाप पड़ना—**कठिन या सामर्थ्य से बाहर होना।**

वि.—(१) **पापी।** (२) **नीच।** (३) **अशुभ।**

कर्मा—वि. [सं. पापकर्मन्] **पापी।**

क्षय—संज्ञा पुं. [सं.] **तीर्थ जहाँ पाप नष्ट हो जायँ।**

ग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] **अशुभ ग्रह।**

चारी—वि. [सं. पापचारिन्] **पापी।**

चेता—वि. [सं.] **जिसके चित्त में पाप रहता हो।**

ड़—संज्ञा पुं. [सं. पर्पट, प्रा पप्पड़] **उर्द, मूँग या आलू की बहुत पतली चपाती जो प्रायः सूखने पर तली जाती है।**

मुहा०—पापड़ बेलना—(१) **कठिन परिश्रम करना।** (२) **कठिनाई से दिन काटना।** (३) **बहुत भटकना।**

वि.—(१) **बहुत पतला।** (२) **सूखा, शुष्क।**

दर्शी—वि. [सं.] **बुरी नीयत से देखनेवाला।**

दृष्टि—वि. [सं.] (१) **बुरी नीयत से देखनेवाला।** (२) **अशुभ या अमंगलकारिणी दृष्टि।**

नामा—वि. [सं.] **बुरे नामवाला।**

नाशन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पाप का नाश करनेवाला।** (२) **प्रायश्चित।** (३) **विष्णु।** (४) **शिव।**

पापमति—वि. [सं.] **जिसकी मति सदा पाप में रहे।**

पापमय—वि. [सं.] **पाप युक्त, पाप से पूर्ण।**

पापयोनि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **निकृष्ट योनि।**

पापर—संज्ञा पुं. [हिं पापड़] **पापड़।** उ.—पापर बरी मिथैरि फुलौरी। कूर बरी काचरी पिठौरी—३९६।

पापलोक—संज्ञा पुं. [सं.] **नरक।**

पापहर—वि. [सं.] **पाप का नाश करनेवाला।**

पापाचार—संज्ञा पुं. [सं.] **दुराचार, पापकर्म।**

पापात्मा—वि. [सं. पापात्मन्] **पापी, दुष्टात्मा।**

पापाह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सूतककाल।** (२) **अशुभ काल।**

पापिनी—वि. स्त्री. [हिं. पुं. पापी] **पाप करनेवाली, जिस स्त्री ने पाप किया हो।** उ.—यह आसा पापिनी दहै—१-५३।

पापिष्ठ—वि. [सं. पापिन्] **बहुत बड़ा पापी।**

पापी—वि. [सं. पापिन्] (१) **पापयुक्त, अघी, पातकी।** (२) **अनरीति करनेवाला, जो अनुचित व्यवहार करे।** उ.—पिता-बचन खंडै सो पापी, सोई प्रहलादहिं कीन्हौ—१-१०४। (३) **कठोर, निर्दय।** उ.—जगत के प्रभु बिनु कल न परै छिनु ऐसे पापी पिय तोहिं पीर न पराई है—२८२७।

पाबंद—वि. [फ़ा.] (१) **बँधा हुआ।** (२) **नियमबद्ध।**

पाबंदी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **विवशता।** (२) **नियमबद्धता।**

पाम—संज्ञा स्त्री. [देश.] **लड़, रस्सी, डोरी।**

संज्ञा पुं. [सं. पामन] (१) **फुंसियाँ** (२) **खाज।**

वि.—**खाज आदि रोगों से युक्त।**

पामड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. पावँड़ा] **पायंदाज।**

पामर—वि. [सं.] (१) **दुष्ट, पापी।** (२) **नीच कुलवाला, नीच कुल में उत्पन्न।**

पामरी—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रावार] **दुपट्टा, उपरना।** उ.—

उ.—ओढ़े पीरी पामरी पहिरे लाल निचोल—१४६३।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पावँड़ी] (१) **खड़ाऊँ।** (२) **जूता।**

वि. [सं. पामर] **दुष्टा, पापिनी।**

पायँ—संज्ञा पुं. [हिं. पावँ] **पैर।**

पायँजेहरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पावँ+जेहरी] **पायजेब।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पायँत, पायँती—संज्ञा स्त्री. [हिं. पायँता] **पैताना ।**

पायँता—संज्ञा पुं. [हिं. पायँ + थान] **पैताना ।**

पायंदाज—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **पैर-पुछना ।**

पाय—संज्ञा पुं. [हिं. पावँ] **पावँ, पैर ।** उ.—होड़ाहोड़ी मनहिं भावते किए पाप भरि पेट । ते सब पतित पाय-तर डारौं, यहै हमारी भेंट—१-१४६ ।

पायक—संज्ञा पुं. [सं. पादातिक, पायिक] **(१) धावन, दूत, हरकारा ।** उ.—अंर्जनि-कुँवर राम कौ पायक, ताकैं बल गर्जत—६-८३ । (२) **दास, सेवक, अनुचर ।** उ.—उमड़त चले इंद्र के पायक सूर गगन रहे छाइ—६४५ । (३) **पैदल सिपाही ।** उ.—पायक मन, बानैत अधीरज, सदा दुष्ट मति दूत—१-१४१ ।

पायदार—वि. [फ़ा.] **दृढ़, टिकाऊ, मजबूत ।**

पायदारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **दृढ़ता, मजबूती ।**

पायमाल—वि. [फ़ा.] (१) **पददलित ।** (२) **नष्ट-ध्वस्त ।**

पायमाली—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **दुर्गति ।** (२) **नाश ।**

पायल—संज्ञा स्त्री. [हिं. पायँ+ल] **नूपुर, पाजेब ।**

पायस—संज्ञा स्त्री. [सं.] **खीर ।**

पायसा—संज्ञा पुं. [हिं. पास] **पास-पड़ोस ।**

पाया—संज्ञा पुं. [हिं. पायँ] (१) **पलँग, कुर्सी आदि का पावा ।** (२) **खंभा, स्तम्भ ।** (३) **पद, ओहदा ।** (४) **सीढ़ी, जीना ।**

पायिक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूत ।** (२) **पैदल सिपाही ।**

पायी—वि. [सं. पायिन्] **पीनेवाला ।**

पायौ—क्रि. स. [हिं. पाना] **पाया, प्राप्त किया ।**

पारंगत—वि. [सं.] (१) **नदी अथवा जलाशय के पार पहुँचा हुआ, जो पार जा चुका हो ।** उ.—यहै मंत्र सबहीं परधान्यौ सेतु बंध प्रभु कीजै । सब दल उतरि होइ पारंगत, ज्यौं न कोउ इक छीजै—६-१२१ । (२) **पार पहुँचा हुआ ।** (३) **पूरा जानकार, पूर्ण पंडित ।**

पार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नदी, झील आदि के दूसरी ओर का किनारा ।** उ.—भव-समुद्र हरि-पद नौका बिनु कोउ न उतारै पार—१-६८ ।

मुहा०—पार उतरना—(१) **पाट या फैलाव पार करके दूसरे किनारे पहुँचना ।** (२) **काम से छुट्टी पा जाना ।** (३) **सफलता प्राप्त करना ।** पार उतारना—(१) **दूसरे किनारे पर पहुँचाना ।** (२) **समाप्त कर देना ।** (३)**सफलता प्राप्त करना ।** (४) **उद्धार करना ।** पार तरना—(१) **नदी, समुद्र आदि पार करना ।** (२) **दुख, कष्ट आदि से छुटकारा पाना ।** पार तरै—**उद्धार हो जाता है, दुख-कष्ट से मुक्ति या छुटकारा मिल जाता है ।**उ—सूरजदास स्याम सेए तैं दुस्तर पार तरै—१-८२ । (किसी का) पार लगाना— **निर्वाह करना ।** लड़की पार होना—**कन्या का विवाह होना ।**

यौ०—आरपार—**इस किनारे से उस किनारे तक ।** वार पार—**यह और वह किनारा ।** उ.—सूर स्याम द्वै अँखियन देखति, जाको वार न पार—१३११ ।

(२) **दूसरी ओर या तरफ ।**

यौ०—आर पार—**एक ओर से होकर दूसरी ओर निकलना ।**

मुहा०—पार करना—(१) **एक ओर से करके दूसरी ओर पहुँचा देना ।** (२) **उद्धार करना ।** पार होना—**एक ओर से जाकर दूसरी ओर निकलना ।**

(३) **ओर, तरफ ।** (४) **छोर, अंत ।** उ.—प्रभु तव माया अगम अमोघ है लहि न सकत कोउ पार—३४६४ ।

मुहा०—पार पाना—(१) **अंत तक पहुँचना ।** (२) **सफलता पाना ।**

अव्य.—**परे, आगे, दूर ।**

पारख—संज्ञा स्त्री. [हिं. परख] **जाँच, परीक्षा ।**

संज्ञा पुं. [हिं. पारखी] **परख या जाँच करनेवाला ।**

पारखद—संज्ञा पुं. [सं. पार्षद] **सेवक, पार्षद ।**

पारखि, पारखी—संज्ञा पुं. [हिं.परख] **परखने-जाँचनेवाला ।** उ.—सूरदास गथ खोटो काहे पारखि दोष धरे—पृ० ३३१ (५) ।

पारगत—वि. [सं.] (१) **पार जानेवाला** (२) **जानकार ।**

पारचा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **टुकड़ा ।** (२)**पोशाक ।**

पारण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **व्रत के दूसरे दिन का प्रथम भोजन तथा तत्संबंधी कृत्य ।** (२) **तृप्त करने की क्रिया या भाव ।** (३) **मेघ, बादल ।**

पारत—क्रि. स. [हिं. पारना] **झपकाता, मिलाता या गिराता है ।** उ.—निदरे बिरह समूह स्याम अँग मेखि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पलक नहिं पारत—पृ० ३३५ (४७)।

पारथ—संज्ञा पुं० [सं. पार्थ] **अर्जुन**। उ.—प्रभु-पारथ द्वै नाहीं।

पार्थिव—वि. [सं. पार्थिव] **(१) पृथिवी-संबंधी। (२) पृथ्वी या मिट्टी से बना हुआ। (३) राजसी।**

पारद—संज्ञा पुं. [सं.] **पारा।**

पारदर्शक—वि. [सं.] **जिससे आरपार दिखायी दे।**

पारदर्शी—वि. [सं.] **(१) उस पार तक देखनेवाला। (२) दूर तक देखनेवाला, दूरदर्शी। (३) जिसने खूब देखा-सुना हो।**

पारधि, पारधी—संज्ञा पुं० [सं. परिधान = आच्छादन, हिं. पारधी] **(१) शिकारी।** उ.—हौं अनाथ बैठयौ द्रुम-डरिया, पारधि साधे बान।......। सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी, कर छूट्यौ संधान—१-९७। **(२) बहेलिया। (३) बधिक।**

संज्ञा स्त्री.—**ओट, आड़।**

पारन—संज्ञा पुं. [सं. पारण] **व्रत के दूसरे दिन का प्रथम भोजन तथा तत्संबंधी कृत्य।** उ.—पारन की विधि करौ सब,रै—१००१।

पारना—क्रि. स. [हिं. पारना] **(१) डालना, गिराना। (२) जमीन पर डालना। (३) लिटाना। (४) कुश्ती में गिराना। (५) एक वस्तु को दूसरी में डालना या रखना। (६) रखना। (७) शामिल करना। (८) पहनाना। (९) उत्पात मचाना। (१०) सांचे में डालकर तैयार करना।**

क्रि. अ. [हिं. पार] **समर्थ होना।**

क्रि. स. [हिं. पालना] **पालन-पोषण करना।**

पारवती—संज्ञा स्त्री. [सं. पार्वती] **हिमालय की कन्या, शिवजी की अर्द्धांगिनी।**

पारमार्थिक—वि. [सं.] **परमार्थ-संबंधी।**

पारलौकिक—वि. [सं.] **परलोक संबंधी।**

पारषद—संज्ञा पुं. [सं. पार्षद] **पार्षद, सेवक।** उ.—जय अरु बिजय पारषद दोई। बिप्र-सराप असुर भए सोई—६-१५।

पारस—संज्ञा पुं. [सं. स्पर्श, हिं. परस] **(१) एक पत्थर जिससे छूते ही लोहा सोना हो जाता है। (२) अत्यंत उपयोगी वस्तु।**

वि.—**(१) स्वच्छ, उत्तम। (२) स्वस्थ।**

संज्ञा पु. [हिं. परसना] **परसा भोजन।**

संज्ञा पुं. [सं. पार्श्व] **पास, निकट, समीप।** उ.—(क) भृकुटी कुटिल निकट नैंनन के चपल होत यहि भाँति। मनहुँ तामरस पारस खेलत बाल भृंग की पाँति—१३५७। (ख) उत स्यामा इत सखा मंडली, इत हरि उत ब्रज नारि। मनो तामरस पारस खेलत मिलि मधुकर गुंजारि।

संज्ञा पुं. [सं. पारस्य] **एक प्रसिद्ध देश।**

पारसी—वि. [फ़ा. पारस] **पारस देश का।**

संज्ञा पुं.—**पारस देश का निवासी।**

पारसीक—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) पारस देश। (२) पारस का वासी।**

पारस्परिक—वि. [सं.] **परस्पर होनेवाला, आपस का।**

पारा—संज्ञा पुं. [सं. पार] **(१) दूसरा तट, दूसरी ओर।** उ.—गयौ कूदि हनुमंत जब सिंधु पारा—९-७६। **(२) छोर, अंत।**

पावहिं नहिं पारा—**अंत या छोर नहीं पाते।** उ.—सुर-सारद से करत बिचारा। नारद-से नहिं पावहिं पारा—१०-३।

संज्ञा पुं. [सं. पारद] **एक चमकीली धातु, पारद।**

संज्ञा पुं. [सं. पारि] **मिट्टी का बड़ा प्याला।**

पारायण—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) पूरा करने का कार्य। (२) नियत समय तक ग्रंथ का आद्योपांत पाठ।**

पारावत—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) पंडुक। (२) कबूतर।** ब.—बन उपवन फल-फूल सुभग सर सुक सारिका हंस पारावत—१० उ.-५। **(३) बंदर। (४) पर्वत।**

पारावार—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) आरपार, तट। (२) सीमा, अंत।** उ.—तिन कीन्ह्यौ सब जग बिस्तार। जाकौ नाहीं पारावार—४-९। **(३) समुद्र, सागर।**

पारि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पार] **(१) हद, सीमा।** उ.—मानो बंदि इंदु मंडल में रूप सुधा की पारि—१६८४। **(२) ओर, दिशा। (३) जलाशय का तट।**

क्रि. स. [हिं. पारना] **(१) (उत्पात या शोर) करके।** उ.—सोर पारि हरि सुबलहिं धाए, गह्यौ श्रीदामा जाहि—१०-२४०। **(२) (मांग, चोटी)**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सँवारकर। उ.—(क) माँग पारि बेनी जु सँवारति गूँथी सुंदर भाँति—७०४। (ख) मुँडली पटिया पारि सँवारै कोढ़ी लावै केसरि—३०२६। (३) **बंधन में डालकर, बाँधकर।** उ.—तिनकी यह करि गए पलक में पारि बिरह दुख बेरी—२७१६।

पारिख—संज्ञा स्त्री. [हिं. परख] **जाँच, परीक्षा।**

पारिजात, पारिजातक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देव-वृक्ष जो समुद्र-मंथन से निकला था और अब नंदनकानन में है।** (२) **हरसिंगार।** (३) **कचनार, कोविदार।**

पारित—वि. [सं.] (१) **जिसका पारण हो चुका हो।** (२) **जो परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुका हो।**

पारितोषिक—वि. [सं.] **प्रीति या आनंदकर।**

संज्ञा पुं.—**पुरस्कार, इनाम।**

पारिभाषिक—वि. [सं.] **विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त।**

पारिश्रमिक—संज्ञा पुं. [सं.] **परिश्रम के बदले (लेखक या कार्यकर्ता को) दिया जानेवाला धन।**

पारिषद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सभासद।** (२) **गण।**

पारी—क्रि. स. [हिं. पालना] **पालन की, पूरी की, निभा दी।** उ.—जन प्रहलाद प्रतिज्ञा पारी। हिरनकसिपु की देह बिदारी—१-२८।

क्रि. स. [हिं. पारना] **(माँग) सँवारी या निकाली, (बाल काढ़कर माँग) बनाई।** उ.—बूझति जननि कहाँ हुती प्यारी। किन तेरे भाल तिलक रचि कीनौ, किहिं कच गूँदि माँग सिर पारी—७०८।

संज्ञा स्त्री. [हिं बारी] **बारी, ओसरी।**

पारे—वि. [हिं. पारना] (१) **सजाये या काढ़े हुए।** उ.—वे मोरें सिर पटिया पारैं कंथा काहि उढ़ाऊँ—३४६६।

क्रि. स.— **उठाये, मिलाये, गिराये।** उ.—मानहु रति रस भए रँगमगे करत केलि पिय पलक न पारे—३१३२।

पारेउ—क्रि. स. [हिं. पारना] **गिराया, खोया।** उ.—बिकल मान खोयौ कौरव पति, पारेउ सिर कौ ताज—१-२५५।

पारौं—क्रि. स. [हिं. पारना] **गिराऊँ, गिरने को प्रवृत करूँ, डालूँ।** उ.—कहौ तौ ताकौं तृन गहाइ कै, जीवित पाइनि पारौं—६-१०८।

क्रि. स. [हिं. पारना] **पूरी करूँ, पालन करूँ, निभाऊँ।** उ.—रघुपति, जौ न इंद्रजित मारौं। तौ न होउँ चरननि कौ चेरौ, जौ न प्रतिज्ञा पारौं—६-१३७।

पार्‌यौ—क्रि. स. [हिं पारना] (१) **गिराया, नष्ट किया।** उ.—द्रुपद-सुता की राखी लाज। कौरवपति कौ पार्‌यौ ताज—१-२४५। (२) **(शब्द) निकाला, (शोर) किया।** उ.—मरत असुर चिकार पार्‌यौ—४२७।

पार्थ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पृथ्वीपति।** (२) **अर्जुन।**

पार्थक्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पृथकता, भेद।** **वियोग।**

पार्थव—संज्ञा पुं. [सं.] **स्थूलता, भारीपन।**

पार्थिव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पृथ्वी-संबंधी।** (२) **पृथ्वी या मिट्टी से उत्पन्न।** (३) **राजसी।**

पार्वती—संज्ञा स्त्री. [सं.] **हिमालय-पुत्री जो शिव की अर्द्धांगिनी देवी है, गौरी, शिवा, भवानी।**

पार्श्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बगल।** (२) **पसली।** (३) **अगल-बगल की जगह।** (४) **कुटिल उपाय।**

पार्श्वनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] **जैनियों के तेइसवें तीर्थंकर।**

पार्षद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सेवक, अनुचर।** उ.—अजामिल द्विज सौं अपराधी, अंतकाल बिडरै। सुत-सुमिरत नारायन-बानी, पार्षद धाइ परैं—१-८२। (२) **मंत्री।**

पाल—संज्ञा पुं. [सं.] **पालनकर्ता, पालक।** उ.—मन बिहँसत गोपाल, भक्त-पाल, दुष्ट-साल, जानै को सूरदास चरित कान्ह केरौ—१०-२७६।

संज्ञा—पुं. [हिं. पालना] **फलों को पकाने के लिए भूसे-पत्ते आदि में रखना।**

संज्ञा पु.—[सं. पट या पाट] (१) **मस्तूल से लगा लंबा चौड़ा परदा जिसमें हवा भरने से नाव चलती है।** (२) **तंबू, चँदोवा।** (३) **गाड़ी, पालकी आदि का ओहार।**

संज्ञा स्त्री. [सं. पालि] (१) **बाँध, मेड़।** (२) **ऊंचा किनारा।**

पालउ—संज्ञा पुं. [सं. पल्लव] **पल्लव, कोंपल।**

पालक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पालनकर्त्ता।** (२) **निर्वाह करने वाला।** उ.—तुम हो बड़े रोग के पालक संग लिए कुबिजा सी—३१३३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा पु.—**एक तरह का साग**। उ.—सरसों मेथी सोवा पालक—३६६।

पालकी—संज्ञा स्त्री. [सं. पल्यंक] **बढ़िया 'डोली' की सवारी।**

पालत—क्रि. स. [हिं. पालना] **पालता है, पालन-पोषण करता है।** उ.—पालत, सृजत, सँहारत, सैंतत, अंड अनेक अवधि पल आधे—६-५८।

पालतू—वि. [हिं. पालना] **पाला-पोसा हुआ।**

पालथी—संज्ञा स्त्री. [सं. पर्य्यस्त] **बैठने की एक रीति।**

पालन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भरण-पोषण।** (२) **निर्वाह।**

पालनहारैं—वि. [सं. पालन+हारैं (प्रत्य.)] **पालनेवाले।** उ.—सूर स्याम के पालनहारैं, आवतिं हौं नित गारि—१-१५०।

पालना—क्रि. स. [सं. पालन] (१) **भरण-पोषण करना।** (२) **पशु पक्षी को खिलाना-पिलाना और हिलाना।** (३) **भंग न करना, न टालना।**

संज्ञा पुं. [सं. पल्यंक] **बच्चों का झूला, हिंडोला।**

पालनैं—संज्ञा पुं. सवि [हिं. पालना] **हिंडोले में।** उ.—जसोदा हरि पालनैं झुलावै—१०-४२।

पालीं—वि. पुं. [हिं. पालना] **जिन्हें पाला हो, पाली हुईं।** उ.—आई वेगि सूर के प्रभु पै, ते क्यौं भजैं जे पालीं—६१३।

पाली—क्रि. स. [हिं. पालना] **पालन की, निर्वाह की, निभायी।** उ.—जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पाली, कियौ बिभीषन राजा भारी—१-३४।

संज्ञा स्त्री. [सं. पालि] **बरतन का ढक्कन।**

संज्ञा स्त्री.—**एक प्रसिद्ध प्राचीन भाषा।**

पालू—वि. [हिं. पालना] **पाला हुआ, पालतू।**

पालै—क्रि. स. [हिं. पालना] **पालन करे।** उ.—दया धर्म पालै जो कोइ—पृ. ६०० (२)।

पाल्यौ, पाल्लौ—संज्ञा पुं. [सं. पल्लव] **पत्ता, कोंपल।**

पाँव—संज्ञा पुं. [सं. पाद, प्रा. पाय, पाव हिं. पाँव] **पैर, पग।**

मुहा०—पाँव अड़ाना—**व्यर्थ ही बीच में पड़ना या दखल देना।** पाँव उखड़ (उठ) जाना—**सामने रुकने, ठहरने या लड़ने का साहस न रहना।** पाँव काँपना—(१) **भय, निर्बलता आदि से पैर काँपना।** (२) **ठहरने या आगे बढ़ने का साहस न रहना।** पाँव की जूती—**अत्यंत तुच्छ।** पाँव की जूती सिर को लगाना—**छोटे आदमी को बहुत महत्व दे देना।** पाँव की वेड़ी—**झंझट, जंजाल।** पाँव की मेंहदी न घिसना (छूटना)—**कहीं जाने में ज्यादा कष्ट या परेशानी नहीं होगी।** पाँव खींचना—**घूमना-फिरना छोड़ देना।** पाँव गाड़ना—(१) **डटकर खड़े रहना या सामना करना।** (२) **दृढ़ रहना।** पाँव जमना (टकना)—**दृढ़ता से रहना।** पाँव जमाना—(१) **डटकर खड़े रहना या सामना करना।** (२) **दृढ़ रहना।** (३) **रहने-बसने का मजबूत प्रबंध कर लेना।** पाँव टिकाना—(१) **खड़ा होना।** (२) **विश्राम करना।** पाँव ठहरना—(१) **पैर जमना।** (२) **स्थिरता होना।** पाँव डगमगाना—(१) **पैर स्थिर न रहना।** (२) **विचलित हो जाना।** पाँव डालना—**काम करने को तैयार होना।** पाँव तले की चींटी—**अत्यंत दीन-हीन प्राणी।** पाँव तले की धरती सरकना—**ऐसा दुख होना कि पृथ्वी भी काँप जाय।** पाँव तले की मिट्टी निकल जाना—**ऐसी अनहोनी या भयंकर बात कि सुनकर सन्नाटे में आ जाना।** पाँव तोड़ना—**बहुत चलकर पैर थकाना।** पाँव तोड़कर बैठना—(१) **अचल या स्थिर होना।** (२) **थक-हारकर बैठ जाना।** पाँव थरथराना—(१) **भय, आशंका आदि से पैर काँपना।** (२) **आगे बढ़ने का साहस न होना।** पाँव दबाना (दाबना)—(१) **थकावट दूर करने को पैर दबाना।** (२) **सेवा करना।** पाँव धरना—**कहीं जाना।** काम में पाँव धरना—**काम में लगना।** (किसी का) पाँव धरना—(१) **पैर छूकर प्रणाम करना।** (२) **दीनता दिखाना।** (३) **तेजी दिखाना, तर्क से निरुत्तर करना।** पाँव धरना—**कहीं जाना।** बुरे पथ पर पाँव धरना—**बुरे कामों में रुचि लेना।** पाँव धोकर पीना—**बड़ा आदर-भाव दिखाना।** पाँव निकलना—(१) **आजादी से घूमना-फिरना।** (२) **दुराचार के कारण बदनामी होना।** पाँव निकालना—(१) **इतराकर चलना, हैसियत से बाहर काम करना।** (२) **स्वेच्छाचारी होना।** (३) **दुराचरण करना।** (४) **चालाकी दिखाना।** (काम से) पाँव निकालना—**काम के झगड़े**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अलग हो जाना। पावँ पकड़ना—(१) जाने से रुकने की प्रार्थना करना। (२) बड़ी दीनता दिखाना। (३) बड़े भक्ति-भाव से नमस्कार करना। पावँ पकरना—विनयपूर्वक यात्रा से रोकना। पावँ पकरि—बड़ी विनय या नम्रता दिखाकर। उ.—जानति जो न स्याम ऐहैं पुनि पावँ पकरि घर राखती। पावँ पकरति—बड़ी दीनता या विनयपूर्वक प्रार्थना करती हूँ। उ.—अब यह बात कहौ जनि ऊधो, पकरति पावँ तिहारे। पावँ पखारना—पैर धोना। पावँ पड़ना—(पैर पर गिरना) (१) भक्ति-भाव से प्रणाम करना। (२) दीनता दिखाना। (३) जाने से रुकने को नम्रतापूर्वक कहना। पाँव पर पावँ रखकर बैठना (सेना)—(१) काम-धंधा छोड़ बैठना। (२) बेफिक्र या गाफिल रहना। (किसी के) पावँ पर पावँ रखना—किसी का अनुकरण करना। (किसी के) पावँ पर सिर रखना—(१) भक्ति-भाव से प्रणाम करना। (२) दीनता दिखाना। (३) जाने से रुकने को नम्रतापूर्वक कहना। पावँ पलोटना—सेवा करना। पाँव पसारना—(१) आराम से सोना। (२) मरना। (३) ठाट-बाट करना। पावँ-पावँ (चलना)—पैदल चलना। पावँ पीटना—(१) तड़पना, छटपटाना। (२) रोग या मृत्यु का कष्ट भोगना। (३) परेशान या हैरान होना। पावँ पूजना—(१) बड़ा आदर-सत्कार करना। (२) कन्यादान में योग देना। (३) खुशामद से पनाह माँगना। पावँ फिसलना—कुसंगत में पड़ना। पावँ फूँक-फूँककर रखना—बहुत बचा-बचाकर या सावधानी से चलना। पावँ फूलना—(१) पैर आगे न उठना। (२) थकावट से पैर दुखना। पावँ फेरने जाना—(१) विवाह के पश्चात् वधू का पहले पहल ससुराल जाना। (२) बच्चा होने के पश्चात् वधू का अपने माता-पिता या बड़े संबंधियों के यहाँ जाना। पावँ फैलाना—(१) अधिक की प्राप्ति के लिए लोभ दिखाना। (२) बच्चों की तरह मचलना। पावँ बढ़ाना—(१) जल्दी जल्दी चलना। (२) अधिकार बढ़ाना। पावँ बाहर निकलना—बदनामी फैलना। पावँ बाहर निकालना—(१) इतराकर चलना। (२) स्वेच्छाचारी होना। पावँ बिचलना (१) पैर रपट जाना। (२) स्थिर या दृढ़ न रहना। (३) नीयत डोल जाना। (४) कुसंगति में पड़ जाना। पावँ भर जाना—चलने की बहुत थकावट होना। पावँ भारी होना—गर्भ रहना। (किसी से) पावँ भी न धुलवाना (दबवाना)—(किसी को) बहुत ही तुच्छ समझना। पावँ में क्या मेंहदी लगी है—कहीं आने-जाने का आलस्य दिखाना (व्यंग्य)। पावँ में बेड़ी पड़ना—(गृहस्थी के) बंधन या जंजाल में पड़ना। पावँ में सिर देना—(१) प्रणाम करना। (२) दीनता दिखाना। (३) पनाह माँगना। पावँ रगड़ना—(१) छटपटाना। (२) दौड़-धूप करना। पावँ रह जाना—(१) चलने या दौड़ने-धूपने से पैरों में बहुत ही थकावट होना। (२) पैर अशक्त हो जाना। पावँ रोपना—प्रतिज्ञा करना। पावँ लगना—(१) पैर छूकर प्रणाम करना। (२) आदर करना। (३) विनती करना। पावँ लगा होना—खूब घूमा-फिरा और परिचित (स्थान) होना। पावँ समेटना सिकोड़ना, सुकेड़ना—(१) पैर ज्यादा न फैलाना। (२) लगाव या संबंध न रखना। (३) इधर-उधर न घूमना। पावँ से पावँ बाँधकर रखना—(१) बराबर अपने पास रखना। (२) पूरी चौकसी या निगरानी रखना। पावँ न होना—दृढ़ता या साहस न होना। धरती पर पावँ न रखना (रहना)—(१) बहुत घमंड होना। (२) अत्यानंद से फूले अंग न समाना।

पावँड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. पावँ+डा.] पैरपुछना, पायंदाज।

पावँड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पावँ+ड़ी] (१) खड़ाऊँ। (२) जूता।

पावँर—वि. [सं. पामर] (१) दुष्ट, नीच। (२) मूर्ख। उ.—पाखंड धर्म करत हैं पावँर।

संज्ञा पुं. [हिं. पावँड़ा] पायंदाज।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पावँड़ी] (१) खड़ाऊँ। (२) जूता।

पावँरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पावँड़ी] (१) खड़ाऊँ। (२) जूता।

पावँ—संज्ञा पुं. [सं. पाद] (१) चौथाई भाग। (२) एक सेर का चौथाई भाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रि. स. [हिं. पाना] **पाते हैं** । उ.—जाकौ सिव-बिरंचि सनकादिक मुनिजन ध्यान न पाव—१०-७५।

पावक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अग्नि** । (२) **सदाचार** ।

वि.—**पवित्र करनेवाला** ।

पावत—क्रि. स. [हिं. पाना] **पाते हैं** । उ.—जन्मथान जिय जानि कै ताते सुख पावत—२५६०।

पावति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. पाना] **पाती है** । उ.—ढ़ूँढ़त फिरति ग्वारिनी हरि कौं, कितहूँ भेद न पावति४-५६।

पावती—क्रि. स. स्त्री. [हि. पाना] **पाती, पा सकती** ।

प्र.—छबि पावती—**शोभा देखती** । उ.—स्यामा छबीली भावती, गौर स्याम छबि पावती—२०६५। जान पावती—(१) **जा सकती** । उ.-जौ हौं कैसेहु जान पावती तौं कत आवत छोड़ी—२७०१। (२) **समझ पाती** ।

पावन—वि. [सं.] (१) **शुद्ध या पवित्र करनेवाला** । उ.—जौ तुम पतितनि के पावन हौ, हौं हूँ पतित न छोटौ—१-१७६। (२) **शुद्ध, पवित्र** ।

संज्ञा पुं.-(१) **अग्नि, आग** । (२) **शुद्धि, प्रायश्चित** । (३) **जल** । (४) **गोबर** । (५) **चंदन** । (६) **विष्णु** ।

पावनता, पावनताई—संज्ञा स्त्री. [सं. पावनता] **पवित्रता** ।

पावनध्वनि—संज्ञा पुं. [सं.] **शंख** ।

पावना—क्रि. स. [हिं. पाना] (१) **पाना, प्राप्त करना** । (२) **जानना-समझना, अनुभव करना** । (३) **भोजन करना** ।

पावनी—वि. स्त्री. [सं.] **पवित्र करनेवाली** ।

संज्ञा स्त्री.—(१) **तुलसी** । (२) **गाय** (३) **गंगा** ।

पावनी—वि. [हिं. पावना] **पानेवाला** ।

संज्ञा पुं.—**पाने की क्रिया या भाव** ।

पावस—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रावृष, प्रा. पाउस] **वर्षाकाल, बरसात, सावन-भादों के महीने** । उ.—चतुरानन बल कुंभार मेघनाद आयौ। मानौ घन पावस मैं नगपति है छायौ—९-९६।

पावहिंगे—क्रि. स. [हिं. पाना] **पायेंगे, प्राप्त करेंगे** । उ.—निरखि-निरखि वह मदन मनोहर नैन बहुत सुख पावहिंगे—२८८६।

पावा—संज्ञा पुं. [हिं. पायँ] **पलँग आदि का पाया** ।

पावै—क्रि. स. [हिं. पावना] (१) **प्राप्त करता है** । (२) **फल भोगता है** । (३) **अनुभव करता है** । उ.—मन बानी कौं अगम अगोचर सो जानै जो पावै—१-२। (४) **जान या समझ सकता है** । उ.—तुम बिनु और न कोउ कृपा निधि पावै पीर पराई—१-१६५।

(५) **जानना, समझना** ।

पाश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **फंदा, फाँस** । (२) **पशु-पक्षी को फँसाने का जाल** । (३) **बंधन** ।

पाशक—संज्ञा पुं. [सं.] **जुए का एक खेल** ।

पाशधर—संज्ञा पुं. [सं.] **वरुण जिनका अस्त्र पाश है** ।

पाशव, पाशविक—वि. [सं.] (१) **पशु-संबंधी** । (२) **पशु-जैसा** । (३) **अत्यंत निर्दय और कठोर** ।

पाशिक—वि. [सं.] **जाल में फँसानेवाला** ।

पाशित—वि. [सं.] **जाल में फँसा हुआ, पाशबद्ध** ।

पाशी—वि. [सं.] **पाश धारण करनेवाला** ।

पाशुपतास्त्र—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव का शूलास्त्र जिससे अर्जुन ने जयद्रथ को मारा था** ।

पाश्चात्य—वि. [सं.] (१) **पिछला** । (२) **पश्चिम का** ।

पाषंड—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वेद विरुद्ध आचरण करनेवाला** । (२) **आडंबर, ढोंग** । (३) **ढोंगी या कपटी मनुष्य** । (४) **संप्रदाय** ।

पाषंडी—वि. [सं. पाषण्डिन्] **ढोंगी, धूर्त, ठग, आडम्बरी** ।

पाषाण—संज्ञा पुं. [सं.] **पत्थर, प्रस्तर** ।

पाषाणी—वि. [सं.] **कठोर हृदयवाली** ।

पासंग—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **तराजू के पलड़े बराबर करने के लिए रखी जानेवाली वस्तु, पसंघा** ।

मुहा.—पासंग (बराबर) भी न होना—**तुलना या मुकाबले में जरा भी न ठहरना, बहुत ही कम होना** ।

(२) **तराजू की डंडी का किसी ओर झुकना** ।

पासंगहु—संज्ञा पुं. [फ़ा. पासंग+हिं. हु (प्रत्य.)] **पसंघा भी, पसंघे के बराबर भी** ।

मुहा.—पासंगहु नाहीं—**बहुत ही तुच्छ हैं, कुछ भी नहीं हैं, नगण्य हैं** । उ.—पतितनि मैं बिख्यात पतित हौं पावन नाम तुम्हारौ। बड़े पतित पासंगहु नाहीं, अजमिल कौन बिचारौ—१-१३१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास—संज्ञा पुं. [सं. पार्श्व] (१) **बगल; ओर, तरफ।** (२) **सामीप्य, निकटता।**

यौ०—पास-परोसनैं—**पास-पड़ोस में रहनेवाली स्त्रियाँ।** उ.—हरषीं पास-परोसिनैं (हो), हरष नगर के लोग—१०-४०।

(३) **अधिकार, रक्षा, पल्ला।**

अव्य०—(१) **बगल में, निकट, समीप।** उ.—हम अजान वत डरत हैं, कान्ह हमारैं पास—४३१। (२) **निकट जाकर, संबोधन करके, किसी के प्रति।** उ.—माँगत है प्रभु पास दास यह बार बार कर जोरी। (३) **अधिकार में, रक्षा में, पल्ले।** उ.—ज्यों मृगा कस्तूरि भूलै, सु तौ ताके पास—१-७०।

संज्ञा पुं.—[सं. पाश]—**पाश, फंदा।** उ.—बरुन-पास तैं ब्रजपतिहिं छन माहिं छुड़ावै—१-४।

पासना—क्रि. अ. [हिं. पय] **थन में दूध उतरना।**

पसनी—संज्ञा स्त्री. [सं. प्राशन] **अन्नप्राशन, बच्चे को पहले पहल अनाज चटाने की रीति।** उ.—कान्ह कुँवर की करहु पासनी कछु दिन घटि षट मास गए—१०-८८।

पासमान—संज्ञा पुं. [हिं पास+मान] (१) **पास ही में बना रहनेवाला, निकट रहनेवाला।** (२) **मंत्री।** (३) **सखा।**

पासा—संज्ञा पुं. [सं. पाशक, प्रा. पासा] (१) **चौसर खेलने के टुकड़े जिन्हें खिलाड़ी बारी-बारी फेंकते हैं।** उ.—छल कियौ पांडवनि कौरव कपट पासा ढरन—१-२०२।

मुहा०—पासा पड़ना—(१) **जीत का दाँव पड़ना।** (२) **भाग्य अनुकूल होना।** पासा पलटना—(१) **खेल में हारना।** (२) **भाग्य प्रतिकूल होना।** (३) **प्रयत्न करने पर भी उलटा फल होना।** पासा फेंकना—**भाग्य की परीक्षा करना।**

(२) **पासे का खेल, चौसर।** (३) **चौकोर टुकड़े।** उ.—महल-महल लागे मनि पासा—२६४३।

अव्य. [हिं. पास] (१) **निकट, समीप।** उ.—(क) अतिहिं ए बाल हैं, भोजन नवनीति के जानि तिन्हें लीन्हें जात दनुज पासा—२५५२। (ख) आतुर गयो कुवलिया पासा—२६४३। (२) **अधिकार या कब्जे में।** उ. कोटि दनुज मो सरि मो पासा—२४५६।

पासासार, पासासारि—संज्ञा पुं. [हिं. पासा+सारि=गोटी] (१) **पासे का खेल।** (२) **पासे की गोटी।**

पासिक—संज्ञा पुं. [सं. पाश] **फंदा, जाल, बंधन।**

पासि, पासिका—संज्ञा स्त्री. [सं. पाश] **फंदा, जाल, बंधन।** उ.—(क) मोहन के मन बाँधिवे को मनो पूरी पासि मनोज—२०६४।

पासी—संज्ञा स्त्री. [सं. पाशी] (१) **फंदा डालकर फँसाने वाला।** (२) **एक नीची जाति।**

संज्ञा स्त्री. [सं पाश] **फंदा, बंधन।** उ.—सूरदास प्रभु दृढ़ करि बाँधे प्रेम-पुंजिका पासी—३०८६।

पासुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पसली] **पसली।**

पाहँ—अव्य. [सं. पार्श्व, प्रा. पास, पाह] (१) **निकट, समीप, पास।** (२) **किसी के प्रति, किसी को संबोधन करके।**

पाहन—संज्ञा पुं. [सं. पाषाण, प्रा. पाहाण] **पत्थर, प्रस्तर।** उ.—पाहन बीच कमल बिकसावै, जल में अगिनि जरै—१-१०५।

पाहरू—संज्ञा पुं. [हिं. पहरा] **पहरा देनेवाला।**

पाहा—संज्ञा पुं. [सं. पथ] **खेत की मेड़।**

पाहाँ, पाहिं—अव्य. [सं. पार्श्व, प्रा. पास, पाह] (१) **निकट, समीप।** (२) **किसी के प्रति, किसी को संबोधन करके।** (३) **(किस) से।** उ.—हमहिं छाप देखावहु दान चहत केहि पाहिं—११०६।

पाहि—पद [सं.] **बचाओ, रक्षा करो।**

पाहीं—अव्य. [हिं. पाहिं] (१) **समीप।** (२) **किसी के प्रति।**

पाहुँच—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहुँच] **पैठ, प्रवेश, पहुँच।**

पाहुन, पाहुना—संज्ञा. पुं. [सं. प्राघूर्ण] **अतिथि।**

पाहुनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. पाहुना] **स्त्री अतिथि, अभ्यागत स्त्री।** उ.—पाहुनी, करि दै तनक मह्यौ। हौं लागी गृह-काज-रसोई, जसुमति बिनय कह्यौ—१०-१८२।

पाहुने—संज्ञा पुं. [हिं. पाहुना] **अतिथि, मेहमान, अभ्यागत।** उ.—(क) जा दिन संत पाहुने आवत—२-१७। (ख) सुंदर स्याम पाहुने के मिसि मिल न जाहु दिन चार—२७६६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाहुर—संज्ञा पुं. [सं. प्राभृत, प्रा. पाहुड़ = भेंट] **भेंट, सौगात।**

पाहैं— अव्य. [हिं पाहँ] (१) **पास, निकट।** (२) **किसके प्रति।** उ.—सूरदास प्रभु दूरि सिधारे दुख कहिए केहि पाहैं—२८०१।

पिंग, पिंगल—वि. [सं.] (१) **पीला।** (२) **भूरापन लिये लाल।** (३) **भूरापन लिये पीला।**

पिंगल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक प्राचीन आचार्य जिन्होंने छंद-शास्त्र रचा था।** (२) **उक्त आचार्य का बनाया छंदशास्त्र।** (३) **छंदशास्त्र।**

पिंगला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **हठयोग की तीन प्रधान नाड़ियों में एक।** उ.—इंगला, पिंगला, सुषमना नारी —३३०८। (२) **एक वेश्या जिसे वियोग में तड़पते तड़पते ज्ञान हुआ कि निकट के कांत को छोड़कर दूर के कांत के लिए भटकना अज्ञान है।** उ.—सूरदास बरु भली पिंगला आशा तजि परतीति—२७३०।

पिंजड़ा, पिंजर, पिंजरा—संज्ञा पुं. [सं. पंजर] **लोहे, बाँस आदि की तीलियों से बना झाबा जिसमें पक्षियों को रखा जाता है।** उ.—कंस के प्रान भयभीत पिंजरा जैसे नव बिहंगम तैसे मरत फरफराने—२५६६।

पिंजर—संज्ञा पुं. [सं. पंजर] (१) **पिंजड़ा।** (२) **शरीर की हड्डियों की ठठरी।**

पिंजरन—संज्ञा पं. बहु. [हिं. पिंजर] **पिंजड़ों में।** उ.— ज्यों उड़ि मैलि बधिक खग छिन में पलक पिंजरन तोरि —पृ. ३३३ (२०)।

पिंजरापोल—संज्ञा पुं. [हिं. पिंजरा+पोल] **गोशाला।**

पिंजरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिंजड़ा] **छोटा पिंजड़ा।** उ.— वज्र पिंजरी रूँधि मानों राखे निकसन को अकुलात —२७०३।

पिंजरैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. पिंजरा, पिंजड़ा] **पिंजड़े में।** उ.—कीर पिंजरैं गहत अँगुरी, ललन लेत भँजाइ— ४६८।

पिंड—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गोल-मटोल टुकड़ा, पिंडा, ढेर।** उ.—दुहूँ करनि असुर हयौ, भयो मांस पिंड-६-६६। (२) **लोंदा, लुगदा।** उ.—माखन पिंड बिभागि दुहूँकर, मेलत मुख मुसुकाइ—१०-१७६। (३) **खीर का लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है।** (४) **भोजन, आहार।** (५) **शरीर, देह।** उ.— अपनौ पिंड पोषिवे कारन, कोटि सहस जिय मारे— १-३३४।

मुहा.—पिंड छोड़ना—**तंग न करना।** पिंड पड़ना —**तंग करना।**

पिंडखजूर—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंडखर्जुर] **खजूर।**

पिंडज—संज्ञा पुं. [सं.] **वह जीव जो गर्भ से बने-बनाये शरीर के रूप में जन्मे।**

पिंडदान—संज्ञा पुं. [सं.] **पितरों को पिंड देना।**

पिंडली, पिंडरी—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंड, हिं. पिंडली] **घुटने के कुछ नीचे का पिछला मांसल भाग।**

पिंडवाही—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह का कपड़ा।**

पिंडा—संज्ञा पुं. [सं. पिंड] (१) **गोल-मटोल टुकड़ा, ढेर।** (२) **लोंदा, लुगदा।** (३) **खीर का लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है।** (४) **शरीर, देह।**

पिंडारू, पिंडालू—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिंड+हिं. आलू] **एक प्रकार का मीठा सकरकंद।** उ.—बनकौरा पिंडीक चिचिंडी। सीप पिंडारू कोमल भिंडी—३९६।

पिंडिया, पिंडी—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंड] **छोटा लंबा पिंड।**

पिंडीक—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंडिका] **इमली, श्वेतांलिका।**

पिंडीशूर—संज्ञा पुं.—[सं.] **डींग हाँकने वाला।**

पिंडुरी, पिंडुरिया पिंडुली—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिंडली] **पिंडली।** उ.—पीन पिंडुरिया साँवल सीरी चरणांबुज नख लाल री—पृ. ४२०।

पिअ—वि. [सं. प्रिय] **प्यारा, प्रिय।**

संज्ञा पुं.—(१) **प्रेमी।** (२) **प्रियतम, पति।**

पिअर, पिअरवा—वि. [हिं. पीला] **पीला।**

पिअरवा—वि. [हिं. प्रिय] **प्यारा, प्रिय।**

संज्ञा पुं.—(१) **प्यारा।** (२) **प्रियतम, पति।**

पिअराई—संज्ञा स्त्री. [सं. पीत] **पीलापन।**

पिअरिया, पिअरी—वि. [हिं. पीला] **पीली।**

संज्ञा स्त्री.—**हल्दी के रंग में रँगी पीली धोती।**

पिआना—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पान कराना।**

पिआर—संज्ञा पुं. [हिं. प्यार] (१) **प्रेम, प्रीति।** (२) **चुंबन।**

पिआरा—वि. [हिं. प्यारा] **प्रिय।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिश्रावत—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पान कराते हैं।** उ.—आपुन पीवत सुधा रस सजनी बिरहिनि बोलि पिश्रावत—२८४५।

पिश्रावै—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पान करावे।** उ.—जेहि मुख अमृत पिउ रसना भरि तेहि क्यों विषहिं पिश्रावै—३०६८।

पिश्रास—संज्ञा स्त्री. [हिं. प्यास] **पीने की इच्छा, प्यास।**

पिश्रासा—वि. [हिं. प्यासा] **जिसे पीने की इच्छा हो, प्यासा।**

पिउ—संज्ञा पुं. [सं. प्रिय] (१) **प्रेमी।** (२) **पति।**

पिएउ—क्रि. स. [हिं. पीना] **पी थी, पान किया था।** उ.—आई छाक अबार भई है, नैंसुक धैंश्रा पिएउ सबेरे—४६३।

पिक—संज्ञा पुं. [सं.] **कोयल।**

पिकानंद—संज्ञा पुं. [सं.] **वसंत ऋतु।**

पिकी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कोयल।**

पिघलना—क्रि. अ. [सं. प्र+गलन] (१) **घन पदार्थ का गर्मी से द्रवित होना।** (२) **दया उपजना।**

पिघलाना—क्रि. स. [हिं. पिघलना] (१) **घन पदार्थ को गर्मी से द्रवित करना।** (२) **दया उपजाना।**

पिचक—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिचकारी] **पिचकारी।**

पिचकना—क्रि. अ. [सं. पिच्च] **फूली-उभरी चीज का बबना।**

पिचकाना—क्रि. स. [हिं. पिचकना] **फूली-उभरी चीज को बबवाना।**

पिचकारी, पिचकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिचकना] **होली जैसे अवसरों पर पानी या रंग चलाने का यंत्र।** उ.—रत्ना सखि जवाए कुमकुमा छिरकत भरि केसरि पिचकारी—२३६१।

मुहा०—पिचकारी छूटना (निकलना)—**तरल पदार्थ का वेग से निकलना।** पिचकारी छोड़ना—**तरल पदार्थ को वेग से निकालना।**

पिछड़ना—क्रि. अ. [हिं. पिछाड़ी+ना] **पीछे रह जाना, साथ या बराबर न रह पाना।**

पिछताना—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पश्चाताप करना।**

पिछताने—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पश्चाताप करने (से)।** उ.—मंद हीन अति भयो नंद अति होत कहा पिछताने छिन छिन—२६७०।

पिछलगा, पिछलगू, पिछलग्गू—त्रि. [हिं. पीछे+लगना] (१) **जो सदा साथ लगा रहे।** (२) **जो स्वतंत्र विचार न रखता हो।** (३) **आश्रित।** (४) **शिष्य।** (५) **सेवक।**

पिछलना—क्रि. अ. [हिं पीछा] **पीछे हटना या मुड़ना।**

पिछला—वि. [हिं. पीछा] (१) **पीछे की ओर का।** (२) **बाद वाला, बाद का।** (३) **अंत की ओर का।** (४) **बीता हुआ, पुराना।** (५) **भूतकालीन।**

पिछवाड़ा, पिछवारा—संज्ञा पुं. [हिं पीछा + वाड़ा (प्रत्य.)] **पीछे की ओर का स्थान।**

पिछवार—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. पिछवाड़ा] **पीछे की ओर, मकान आदि के पीछे की दिशा में।** उ.—देखि फिरे हरि ग्वाल दुवारैं। तब इक बुद्धि रची अपनैं मन, गए नाँघि पिछवारैं—१०-२७७।

पिछाड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं पीछा] (१) **पिछला भाग।** (२) **पिछले पैर।**

पिछान—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहचान] **जान-पहचान।**

पिछानना—क्रि. स. [हिं. पहचानना] **पहचान करना।**

पिछानि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहचान, पहचानना] पहचान। लै पिछानि—**पहचान ले, जाँच ले, चीन्ह लें।** उ.—जसुमति धौं देखि आनि आगैं ह्वै लै पिछानि, बहियाँ गहि ल्याई, कुँवर और कौ कि तेरौ—१०-२७६।

पिछौरि, पिछौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिछौरा] **बच्चों की चादर।** उ.—मनमथ कोटि-कोटि गहि वारौं ओढ़े पीत पिछौरी—८८३।

पिछोर्‍यो—क्रि. स. [हिं. पछोड़ना] **फटक कर साफ की।** **मुहा०**—फटकि पछोर्‍यो—**फटक छानकर खो दी।** उ.—नाच कछ्यौ अब घूँघट छोर्‍यौ, लोक-लाज सब फटकि पछोर्‍यौ—१२०१।

पिछौंड़—वि. [हिं. पीछे] **जिसका मुँह पीछे हो।**

पिछौंड़ा, पिछौता—क्रि. वि. [हिं. पीछे] **पीछे की ओर।**

पिछौहैं—क्रि. वि. [हिं. पीछा] **पीछे की ओर से।**

पिछौरा—संज्ञा पुं. [सं. पक्षपट, प्रा. पच्छवड़, हिं. पछेवड़ा] **पुरुषों की चादर या दुपट्टा।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. पिछौरा] (१) **स्त्रियों के ओढ़ने की चादर, ओढ़नी।** (२) **बच्चों के ओढ़ने की छोटी चादर या छोटा दुपट्टा।** उ.—कटि-तट पीत पिछौरी बाँधे, काकपच्छ धरे सीस—६-२०।

टंत—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीटना + अंत] **पीटने की क्रिया।**

टक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पिटारा।** (२) **ग्रंथ का भाग।**

टना—क्रि. अ. [हिं. पीटना] (१) **मार खाना।** (२) **बजना।**

ट पिट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **'पिट' 'पिट' शब्द।**

टरिया, पिटरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिटारा] **छोटा पिटारा, झाँपी।** उ.—परतिय-रति अभिलाष निसादिन, मन पिटरी लै भरतौ—१-२०३।

टवाना—क्रि. स. [हिं. पीटना] (१) **मार खिलवाना।** (२)**बजवाना।** (३)**पीटने या बजवाने का काम कराना।**

टाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीटना] (१) **पीटने का काम, भाव या वेतन।** (२) **मार, चोट।**

टारा—संज्ञा पुं. [सं. पिटक] **बेंत आदि का झाबा।**

टारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिटारा] **छोटा पिटारा।**

टारे—संज्ञा पुं. [हिं. पिटारा] **पिटारे में।** उ.—भवन भुजंग पिटारे पाल्यौ ज्यों जननी जिय तात—३१७१।

ट्टस—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिटना] **छाती पीट कर रोना।**

मुहा.—पिट्टस पड़ना (मचना)—**छाती पीट कर रोना।**

ठी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीठी] **पिसी हुई भीगी दाल।**

ठू—संज्ञा पुं. [हिं. पठ्ठा] (१) **पीछे लगा रहने वाला।** (२) **हिमायती।**

ठौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिट्ठी+औरी (प्रत्य)] **पीठी की बनी हुई खाने की चीज, जैसे बरी, मुँगौरी।** उ.—पापर बरी मिथौरि फुलौरी। कूर बरी काचरी पिठौरी—३९६।

ंबर—संज्ञा पुं. [सं. पीतांबर] **पीताम्बर।** उ.—कटि पितंबर वेष नटवर, नृतत फन प्रति डोल—५६३।

ज्वर—संज्ञा पुं. [हिं. पित्त+ज्वर] **पित्त बिगड़ने से होनेवाला ज्वर।** उ.—सूर सो औषध हमहिं बतावत ज्यों पितज्वर पर गुर सी—३१९८।

पितर—संज्ञा पुं. [सं. पितृ] **पितृ, पुरखे, मृत पूर्व पुरुष।** उ.—तिहिं घर देव पितर काहे कौं जा घर कान्हर आयौ—१०-३४६।

पिता—संज्ञा पुं. [सं. पितृ] **बाप, जनक।**

पितामह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दादा, बाबा।** (२) **भीष्म।**

पितु—संज्ञा पुं. [हिं. पिता] **पिता, जनक।**

पितृ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पिता।** (२) **मृतक पिता, दादा आदि।**

पितृऋण—संज्ञा पुं. [सं.] **तीन ऋणों में एक मुक्ति, जो पुत्र उत्पन्न करने पर ही होती है।**

पितृकर्म—संज्ञा पुं. [सं.] **श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म।**

पितृकुल—संज्ञा पुं. [सं.] **पिता के वंश के लोग।**

पितृतिथि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अमावस्या।**

पितृत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **पिता होने का भाव।**

पितृदाय—संज्ञा पुं. [सं.] **पिता से प्राप्त धन-धाम।**

पितृपक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] **कुआर का कृष्णपक्ष।**

पितृ लोक—संज्ञा पुं [सं.] **चंद्रमा के ऊपर का एक लोक जहाँ पितरगण रहते हैं।**

पितृव्य—संज्ञा पुं [सं.] **पिता के भ्राता, चाचा।**

पित्त—संज्ञा पु. [सं.] **शरीर के भीतर यकृत में बननेवाला एक तरल पदार्थ।**

पित्ता—संज्ञा पुं. [सं. पित्त] (१) **पित्ताशय।**

मुहा०—पित्ता उबलना (खौलना)—**बहुत क्रोध आना।** पित्ता (पानी) मारना—**बहुत परिश्रम करना।** पित्ता मरना—**गुस्सा न रहना।** पित्ता मारना—(१) **बिना ऊबे कठिन काम करना।** (२) **क्रोध दबाना।** पित्तामार (पित्तेमारी का) काम—**अरुचिकर और कठिन काम।**

(२) **साहस, हिम्मत, हौसला।**

पित्ताशय—संज्ञा पुं. [सं.] **पित्त की थैली।**

पित्र्य—वि. [सं.] **जिसका श्राद्ध हो सके।**

पिधान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गिलाफ, आवरण।** (२) **ढकना।** (३) **तलवार की म्यान।** (४) **किवाड़।**

पिधानक—संज्ञा पुं. [सं.] **म्यान, कोष।**

पिनकना—क्रि. अ. [हिं. पीनक] **नशे में ऊँघना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिनाक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शिवजी का धनुष जिसे श्रीरामचन्द्र जी ने तोड़ा था।** (२) **कोई धनुष।**

मुहा०—पिनाक होना—**काम का बहुत कठिन होना।**

पिनाकी—संज्ञा पुं. [सं. पिनाकिन्] **शिव, महादेव।**

पिन्नी—संज्ञा स्त्री [देश.] **एक तरह की मिठाई।**

पिपासा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्यास।** (२) **लोभ।**

पिपासित—वि. [सं.] **प्यासा, तृषित।**

पिपासु—वि. [सं.] (१) **प्यासा।** (२) **लालची।**

पिपीलक—संज्ञा पुं. [सं.] **चींटा।**

पिपीलिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **चींटी।**

पिय—संज्ञा पुं.[सं. प्रिय] (१) **पति, स्वामी।** (२) **पपीहे का 'पिउ' शब्द।** उ.—सावन मास पपीहा बोलत पिय पिय करि जो पुकारै—२८१०।

पियतौ—क्रि. स. [हिं. पीना] **पीता, पान करता।** उ.—काहे कौं जसोदा मैया, त्रास्यौ तैं बारौ कन्हैया, मोहन हमारौ भैया केतो दधि पियतौ—२७३।

पियर—वि. [हिं. पीला] **पीला।**

पियरई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीला] **पीलापन।**

पियरवा—संज्ञा पुं. [हिं प्यारा] **प्रिय, पति।**

वि.—**प्रिय, प्यारा।**

वि.—[हिं. पीला] **जो पीला हो।**

पियराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पियर] **पीला।**

पियराना—क्रि. अ. [हिं. पियर+आना] **पीला पड़ना।**

पियरी—वि. स्त्री. [हिं. पियर] **पीली।** उ.—पियरी पिछौरी भीनी—१०-१५१।

संज्ञा स्त्री.—(१) **पीली रँगी धोती।** (२) **पीलापन।** (३) **पीले रंग की गाय।** उ.—पियरी, मौरी, गोरी, गैनी, खैरी, कजरी, जेती—४४५।

पियरो, पियरौ—वि. [हिं. पीला] **पीला, पीले रंग का।** उ.—सेत, हरौ, रातौ अरु पियरौ रंग लेत है धोई—१-६३।

पियल्ला—संज्ञा पुं. [हिं. पीना] **दूधपीता बच्चा।**

पिया—संज्ञा पुं. [सं. प्रिय] **प्रिय, प्रियतम।**

पियाई—क्रि. स. [हिं. पियाना, पिलाना] **पिलाया।**

प्र.—दीन्ह्यौ पियाई—**पिला दिया, पान करा दिया।** उ.—असुर-दिसि चितै, मुसुक्याइ मोहे सकल, सुरनि कौं अमृत दीन्ह्यौ पियाई—८-८।

पियादा—वि. [फा. प्यादा] (१) **जो पैदल चलता हो।** उ.—गरुड़ छाँड़ि प्रभु पायँ पियादे गज-कारन पग धारे—१-२५। (२) **जो नंगे पैर हो।**

पियादे—वि. [हिं. प्यादा] **बिना जूता पहने, नंगे पैर।** उ.—(क) गरुड़ छाँड़ि प्रभु पायँ पियादे गज-कारन पग धारे—१-२५। (ख) वह घर-द्वार छाँड़ि कै सुन्दरि, चली पियादे पाउँ—६-४४।

पियाना—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पान कराना।**

पियार—संज्ञा पुं. [हिं. प्यार] (१) **चुंबन।** (२) **प्रेम।**

वि.—**प्रिय, प्यारा।**

पियारा—वि. [हिं. प्यारा] **प्रिय प्यारा।**

पियारी—वि. [हिं. प्यारा] (१) **प्रिय, रुचिकर।** उ.—लुचुई, लपसी, सद्य जलेबी, सोइ जेंवहु जो लगै पियारी—१०-२२७, (२) **प्यारी लगनेवाली।**

संज्ञा स्त्री.—**प्रिय, प्रेयसी।**

पियारे—वि. [हिं. प्यारा] **प्रिय, प्यारा, प्रेमपात्र।** उ.—बंदौं चरन-सरोज तिहारे। सुंदर-स्याम कमल-दल लोचन, ललित त्रिभंगी प्रान पियारे—१-६४।

पियारो, पियायौ—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पिलाया, पान कराया।** उ.—नृपति-कुँवर कौं जहर पियायौ—६-५।

पियारौ—वि. [हिं. प्यारा] **प्रिय, प्रीतिपात्र, प्रेमपात्र।** उ.—(क) बिदुर हमारौ प्रान-पियारौ, तू बिषया अधिकारी—१-२४४। (ख) असुर होइ, भावै सुर होइ। जो हरि भजै पियारौ सोइ—७-२।

पियावत—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पान कराता है।** उ.—आपुन पियत पियावत दुहि दुहि इन धेनुन के छीर—२६८६।

पियावति—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पिलाती है, पान कराती है।** उ.—आँचरा तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु कौं दूध पियावति—१०-११०।

पियावै—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पिलावै, पीने को प्रेरित करे।** उ.—अति सुकुमार डोलत रस-भीनौ, सो रस जाहि पियावै (हो)—२-१०।

पियास—संज्ञा स्त्री. [हिं. प्यास] **तृष्णा, प्यास।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पियासा, पियासौ—वि. [हिं. प्यासा] **जिसे प्यास लगी हो, तृषित, पिपासा युक्त।** उ.—परम गंग कौं छाँड़ि पियासौ दुरमति कूप खनावै—१-१६८।

पियूख, पियूष—संज्ञा पुं. [सं. पियूष] **पीयूष।**

पियैए—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पिलाइए, पान कराइए।** उ.—सूरदास प्रभु तृषा बढ़ी अति दरसन सुधा पियैए—३२००।

पियौ—क्रि. स. [हिं. पीना] **पी लिया, पान किया।** उ.—मृतक भए सब सखा जिवाए, बिष-जल जाइ पियौ—१-३८।

पिरथी—संज्ञा स्त्री. [सं. पृथ्वी] **पृथ्वी।**

पिराइँ—क्रि. स. बहु. [हिं. पिराना] **दुखाते हैं।** उ.—सिगरे ग्वाल घिरावत मेसौं, मेरे पाइ पिराइँ—५१०।

पिराइ—क्रि. अ. [हिं. पिराना] **पीड़ित होती है, दुखती है।** उ.—धरयौ गिरिवर, दोहनी कर धरत बाहँ पिराइ—४६८।

पिराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पियराई] **पीलापन।**

पिराक—संज्ञा पुं. [सं. पिष्टक, प्रा. पिट्ठक, पिड़क] **एक पकवान, गोझा, गोझिया।** उ.—रचि पिराक लाड़ू दधि आनौं—१०-२११।

पिराति—क्रि. अ. [हिं. पिराना] **दुखती हैं, पीड़ित होती हैं।** उ.—अधिक पिराति सिराति न कबहूं अनेक जतन करि हारी—३०३६।

पिराना—क्रि. अ. [सं. पीडन] (१) **दुखना, दर्द करना।** (२) **(दूसरे का) दुख-दर्द समझना।**

पिरानी—क्रि. अ. [हिं. पिराना] **दुखीं, दर्द करने लगीं।** उ.—स्याम कह्यौ, नहि भुजा पिरानी ग्वालनि कियौ सहैया—१०७१।

पिराने—क्रि. अ. [हिं. पिराना] **दुखने लगे, दर्द करने लगे।** उ.—धरनी धरत बनै नाहीं पग अतिहिं पिराने—पृ. ३५३ (८६)।

पिरानो, पिरानौ—क्रि. अ. [हिं. पिराना] **दुखने लगे।** उ.—मारत मारत सात के दोऊ हाथ पिराने—पृ. ४६५।

पिरायौ—क्रि. अ. [हिं. पिराना] **दुख दिया, दर्द कर दिया।** उ.—तुमहीं मिलि रसबाद बढ़ायौ। उरहन दै दै मूँड़ पिरायौ—३६१।

पिरारा—संज्ञा पुं. [हिं. पिंडारा] **एक साग।**

पिरीतम—संज्ञा पुं. [सं. प्रियतम] **पति, प्रियतम।**

पिरीता, पिरीते—वि. [सं. प्रिय] **प्रिय, प्यारा।**

पिरीती—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रीति] **प्रेम, प्रीति।**

पिरोइ—क्रि. स. [हिं. पिरोना] **गूँथकर, पिरोकर, पोहकर।** उ.—नील पाट पिरोइ मनिगन फनिग धोखें जाइ—१०-१७०।

पिरोजन—संज्ञा पुं. [हिं. पिरोना] **कनछेदन।**

पिरोजा—संज्ञा पुं. [फा. फीरोजा] **हरापन लिए हुए एक नीला पत्थर।** उ.—रेसम बनाइ नव रतन पालनौ, लटकन बहुत पिरोजा-लाल—१०-८४।

पिरोना, पिरोहना—क्रि. स. [सं. प्रोत, प्रा. पोइअ, पोंअ +ना, हिं. पिरोना] (१) **गूँथना, पोहना।** (२) **सूत-आदि छेद के आर पार निकालना।**

पिरोयो—क्रि. स. [हिं. पिरोना] **गूँथा, पोहा, पिरो लिया।** उ.—सूरदास कंचन अरु काँचहि, एकहिं धगा पिरोयौ—१-४३।

पिलकना—क्रि. स. [सं. पिल] **गिराना, ढकेलना।**

पिलना—क्रि. अ. [सं. पिल] (१) **झुक या धँस पड़ना।** (२) **एक बारगी जुट जाना।** (३) **तेल निकालने के लिए पेरा जाना।**

पिलपिला—वि. [अनु.] **बहुत मुलायम या नरम।**

पिलपिलाना—क्रि. स. [हिं. पिलपिला] **बहुत मुलायम या नरम हो जाना।**

पिलाना—क्रि. स. [हिं. पीना] (१) **पान कराना** (२) **पीने को देना।** (३) **भीतर भरना या ढालना।**

पिल्ला—संज्ञा पुं. [देश.] **कुत्ते का बच्चा।**

पिव—संज्ञा पुं. [सं. प्रिय] **प्रियतम, पति।**

पिवन—संज्ञा पुं. [हिं. पीना] (१) **पीने की क्रिया या भाव।** (२) **पिलाने की क्रिया या भाव।** उ.—देवकि उर-अवतार लेन कहयौ, दूध पिवन तुम माँगि लियौ—१०-८५।

पिवाना—क्रि. अ. [हिं. पिलाना] **पान कराना।**

पिवायो, पिवायौ—क्रि. अ. [हिं. पिलाना] **पान कराया।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिवावन—संज्ञा पुं. [हिं. पिलाना] **पिलाने के लिए।** उ. बकी पिवावन इनहीं आई—२३६५।

पिशाच—संज्ञा पुं. [सं.] **एक हीन देवयोनि।**

पिशाचिनी, पिशाची—संज्ञा स्त्री. [सं. पिशाच] (१) **पिशाच स्त्री।** (२) **निर्दयी स्त्री।**

पिशुन, पिसुन—संज्ञा पुं. [सं. पिशुन] (१) **चुगलखोर, दुष्ट, दुर्जन।** उ.—सूरदास प्रभु वेगि मिलहु अब पिशुन करत सब हाँसी—३४८६। (२) **निंदक।** (३) **नारद।** (४) **कौआ।**

पिशुना, पिसुना—संज्ञा स्त्री. [सं. पिशुना] **चुगलखोरी।**

पिष्ट—वि. [सं.] **पिसा या चूर्ण किया हुआ।**

पिष्टपेषण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पिसे हुए को फिर पीसना।** (२) **कही बात को फिर कहना या लिखना।**

पिसना—क्रि. अ. [हिं. पीसना] (१) **बहुत महीन चूर्ण होना** (२) **दब या कुचल जाना।** (३) **घोर कष्ट या दुख उठाना।** (४) **थकावट से चूर हो जाना।**

पिसवाना—क्रि. स. [हिं. पीसना] **पीसने का काम कराना।**

पिसाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीसना] (१) **पीसने की क्रिया, भाव, धंधा या मजदूरी।** (२) **कड़ी मेहनत।**

पिसाच—संज्ञा पुं. [सं. पिशाच] (१) **एक हीन देवयोनि, भूत।** (२) **वह व्यक्ति जो क्रूर और नीच प्रकृति का हो।** उ.—दुष्ट सभा पिसाच दुरजोधन, चाहत नगन करी—१-२५४।

पिसाचिनी, पिसाची—संज्ञा स्त्री. [सं. पिशाच] (१) **पिशाच की स्त्री।** (२) **क्रूर प्रकृति की दुष्टा स्त्री।**

पिसान—संज्ञा पुं. [हिं. पिसा+अन्न] **आटा।**

पिसुन—संज्ञा पुं. [सं. पिशुन] **चुगलखोर।**

पिसुनता, पिसनाई—संज्ञा स्त्री. [सं. पिशुन] **चुगलखोरी।**

पिसौनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीसना] (१) **पीसने का काम या धंधा।** (२) **कठिन परिश्रम।**

पिस्ता—संज्ञा पुं. [फ़ा. पिस्तः] **एक छोटा फल जिसकी गिनती अच्छे मेवों में है।** उ.—पिस्ता दाख बदाम छुहारा खुरमा खाझा गूँझा मठरी—८१०।

पिहकना—क्रि. अ. [अनु.] **पक्षियों का कलरव करना।**

पिहान—संज्ञा पुं. [सं. पिधान] **ढाँकने की वस्तु।**

पिहित—वि. [सं.] **छिपा हुआ।**

संज्ञा पुं.—**एक अर्थालंकार।**

पींजना—क्रि. स. [सं. पिंजन] **धुनना, रुई धुनना।**

पींजर—संज्ञा पुं. [सं. पंजर] **ठठरी, कंकाल**

पींजर, पींजरा—संज्ञा पुं. [हिं. पिंजड़ा] **लोहे या बाँस की तीलियों का झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते हैं।** उ.—मन सुवा तन पींजरा, तिहिं माँहिं राखै चेत—१-३११।

पींड—संज्ञा पुं. [सं. पिंड] (१) **शरीर, देह।** (२) **वृक्ष का तना, पेड़ी।** (३) **गोला, पिंडी।** (४) **सिर या बालों का एक आभूषण।** उ.—(क) शिखा की भाँति सिर पींड डोलत सुभग, चाप ते अधिक नव माल सोभा। (ख) पींड श्रीखंड सिर भेष नटवर कसे अंग इक छटा मैं ही भुलाई। (५) **पिंड खजूर नामक फल।** उ.—पींड बदाम लेत बनवारी।

पी—क्रि. स. [हिं० पीना] **पीकर, पान किया।** उ.—मनौ कमल कौ पी पराग, अलि-सावक सोइ न जाग्यौ री—१०-१३६।

संज्ञा पुं. [सं. प्रिय] **प्रियतम, पति।** उ.—सूरदास ए जाइ लुभाने मृदु मुसकनि हरि पी की—पृ. ३३१ (६)

संज्ञा पुं. (अनु.) **पपीहे की बोली।**

पीक—संज्ञा स्त्री. [सं. पिच्च] **चबाये हुए पान के बीड़े का रस।** उ.—कबहुँक बैठि अंस भुज धरिकै, पीक कपोलनि पागे—६८६।

पीकना—क्रि. अ. [अनु. पी+करना] **पपीहे या कोयल का मधुर कंठ से बोलना, पिहिकना।**

पीका—संज्ञा पुं. [देश] **कोंपल, नया पत्ता।**

मुहा.—पीका फूटना— **कोंपल निकलना, पनपना।**

पीछा—संज्ञा पुं. [सं. पश्चात्, प्रा. पच्छा] (१) **किसी व्यक्ति या वस्तु का पिछला या पीठ की ओर का भाग।**

मुहा०—पीछा दिखाना—(१) **हारकर या डर कर भागना।** (२) **भरोसा देकर फिर हट जाना।**

(२) **बाद का समय।** (३) **पीछे चलने का भाव।**

मुहा०—पीछा करना—(१) **चुपचाप पीछे पीछे जाना।** (२) **तंग करना।** पीछा छुड़ाना—**तंग करने वाले व्यक्ति, वस्तु या कार्य से बचना।** पीछा छुटना—**अप्रिय व्यक्ति, वस्तु या कार्य से छुटकारा मिलना।** (२) **तंग** पीछा छोड़ना—(१) **सहारा छोड़ना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना बंद करना। पींछा पकड़ना—**सहारा या आश्रय बनाना।**

पीछू, पीछे—अव्य. [हिं. पीछा] (१) **पीठ की तरफ।**

मुहा०—पीछे चलना—**अनुकरण या नकल करना।** पीछे छूटना—**चुपचाप किसी के साथ लगाया जाना।** (धन आदि) पीछे डालना—**भविष्य के लिए धन संचय करना।** (काम के) पीछे पड़ना—**काम कर डालने को जुटना।** (व्यक्ति के पीछे पड़ना)—(१) **बार बार घेर कर तंग करना।** (२) **हानि पहुँचाने का अवसर ताकना।** (वस्तु के) पीछे पड़ना—(१) **हर समय उसी की प्राप्ति की चिंता में लगे रहना।** पीछे लगना—(१) **साथ साथ घूमना।** (२) **रोगादि का घेर लेना।** पीछे लगाना—(१) **आश्रय या आसरा देना।** (२) **अप्रिय वस्तु से सम्बन्ध कर लेना।**

(२) **पीठ की ओर की दिशा में कुछ दूर पर।** पीछे छूटना (पड़ना, होना)—**गुण, योग्यता आदि में कम हो जाना, पिछड़ जाना।** (किसी को) पीछे छोड़ना—**किसी से गुण, योग्यता आदि में बढ़ जाना।**

(३) **पश्चात्, उपरांत।** (४) **अंत में।** (५) **अनुपस्थिति में।** (६) **मर जाने पर।** (७) **वास्ते, लिए, कारण।** (८) **बदौलत।**

पीछौ—संज्ञा पुं. [हिं. पीछा] **किसी प्राणी के पीछे चलने का भाव।**

मुहा०—पीछौ लियौ—**कोई काम निकलने की आशा से हर समय साथ लगे रहना।** उ.—प्रभु, मैं पीछौ लियौ तुम्हारौ। तुम तौ दीनदयाल कहावत, सकल आपदा टारौ—१-२१८।

पीजै—क्रि. स. [हिं. पीना] **पीजिए, पान कीजिए।** उ.—लीला-गुन अमृत-रस स्रवननि पुट पीजै—१-७२।

पीटना—क्रि. स. [सं. पीडन] (१) **चोट मारना।** (२) **चोट मारकर चौड़ा-चिपटा करना।** (३) **प्रहार या आघात करना।** (४) **किसी न किसी तरह समाप्त कर देना।** (५) **किसी न किसी तरह प्राप्त कर लेना।**

संज्ञा पुं.—(१) **मातम, मृत्यु-शोक।** (२) **मुसीबत।**

पीठ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आसन, चौकी, पीढ़ा।** (२) **मूर्ति का आधार।** (३) **किसी वस्तु आदि के होने-बसने का स्थान।** (४) **सिंहासन।** उ.—महल करती महल महलनि, अब संग बैठी पीठ—२६८०। (५) **वेदी।** (६) **वह पवित्र स्थान जहाँ शिव-पत्नी सती का कोई गिरा अंग अथवा आभूषण विष्णु के चक्र से कटकर था।** (७) **प्रदेश, प्रांत।**

संज्ञा स्त्री. [सं. पृष्ठ] **पेट के दूसरी ओर का भाग।**

मुहा०—पीठ का—**सहोदर के जन्म के बाद का।** पीठ का कच्चा (घोड़ा)—**अच्छी चाल न चल सकनेवाला।** पीठ का सच्चा (घोड़ा)—**बढ़िया चाल वाला।** पीठ की—**सहोदरा के जन्म के बाद की।** पीठ चारपाई से लग जाना—**बीमारी में बहुत दुबला हो जाना।** पीठ खाली होना—**कोई सहायक न होना।** पीठ ठोंकना—(१) **शाबाशी देना।** (२) **उत्साहित करना।** पीठ तोड़ना—(१) **मारना-पीटना।** (२) **हताश करना।** पीठ दिखाना—**लड़ाई से डरकर या हारकर भागना।** पीठ दिखाकर जाना—**स्नेह या ममता तोड़ना।** देति न पीठ—**सामने ही डटी रहती हैं।** उ.—तदपि निदरि पट जात पलक छिदि जूझत देति पीठ—पृ. ३३४। पीठ देना—(१) **विदा होना** (२) **विमुख होना।** (३) **भाग जाना।** (४) **साथ न देना** (५) **लेटकर आराम करना।** (किसी की ओर) पीठ देना—(१) **मुँह फेर लेना।** (२) **उपेक्षा दिखाना।** पीठ पर—**जन्म के अनंतर।** पीठ पर का—**सहोदरा या सहोदर के बाद जन्मा पुत्र।** पीठ पर की—**सहोदर या सहोदरा के बाद जन्मी पुत्री।** पीठ पर हाथ फेरना—(१) **शाबाशी देना।** (२) **उत्साह बढ़ाना।** पीठ पर होना—(१) **सहायक होना।** (२) **जन्म ग्रहण करना।** पीठ पीछे—**अनुपस्थिति में।** पीठ फेरना—(१) **विदा होना।** (२) **भाग जाना।** (३) **मुँह फेर लेना।** (४) **उपेक्षा दिखाना।**

पीठमर्द—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नायक के चार सखाओं में एक जो नायिका के मान-मोचन में समर्थ हो।** (२) **मानमोचन में समर्थ नायक।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीठा—संज्ञा पुं. [हिं. पीढ़ा] **आसन, चौकी, पीढ़ा**। उ.—आवत पीठा बैठन दीन्हौ कुशल बूझि अति निकट बुलाई।

पीठि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीठ] **पेट के पीछे का भाग, पीठ**।

मुहा.—पीठि-ओढ़िए—**पीठ कीजिए या दीजिए, (स्थिति के अनुकूल) व्यवहार कीजिए**। उ.—सूरदास के पिय प्यारी आपुहीं जाइ मनाय लीजै। जैसी बयारि बहै तैसी ओढ़िए जू पीठि—२०५। पीठि दई—**भाग गया, पीठ दिखा दी**। उ.—पाछैं भयौ न आगैं ह्वैहै, सब पतितनि सिरताज। नरकौ भज्यौ नाम सुनि मेरौ, पीठि दई जमराज—१-९६। पीठि दिखाऊं—(१) **पीठ फेरूं, रण से हार कर या डरकर विमुख हो जाऊँ**। (२) **मुँह मोड़ूं, विरत होऊँ**। उ.—सूरदास रनभूमि बिजय बिनु, जियत न पीठि दिखाऊं—१-२७०। पीठि दीजै—**मुँह सामने न कीजिए, मुँह मोड़ लीजिए, सामने तक न देखिए**। उ.—राखहु बैर हिए गहि मोसौं बैरिहिं पीठि न दीजै—२२७५। पीठि दीन्ही—(१) **मुँह मोड़ लिया, विमुख हो गये**। उ.—सीतल भई चक्र की ज्वाला, हरि हँसि दीन्ही पीठि—१-२७४। (२) **विरत हो बैठे, त्याग दिया**। उ.—जे तप-व्रत किए तरनि-सुता-तट, पन गहि पीठि न दीन्हीं—९५६। पीठि दै—(१) **सहारा या टिकासरा देकर**। उ.—ऊखल ऊपर-आनि, पीठि दै, तापर सखा चढ़ायौ—१०-२९२। (२) **मुँह मोड़ कर**। उ.—(क) चली पीठि दै दृष्टि फिरावति, अंग-अंग-आनंद रली—७३९। (ख) काँपति रिसनि, पीठि दैं बैठी, मनि-माला तन हेरयो—२२७५।

पीड़—संज्ञा स्त्री. [सं. आपीड़] **सिर या बालों का एक आभूषण**। उ.—कर धर कै धरमैर सखी री। कै स्रक सीपज की बगपंगति, कै मयूर की पीड़ पखी री—१६२७।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पीड़ा] **दुख-दर्द**।

पीड़क—वि. [सं.] (१) **दुखदायी**। (२) **अत्याचारी**।

पीड़न—संज्ञा पं. [सं.] (१) **दबाना**। (२) **पेलना, पेरना**। (३) **दुख देना**। (४) **अत्याचार करना**। (५) **दबोचना**।

पीड़ा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **व्यथा, वेदना**। (२) **रोग**।

पीड़ित—वि. [स.] (१) **दुखी**। (२) **रोगी**।

पीढ़ा—संज्ञा पुं. [सं. पीठ अथवा पीठक] **पाटा, पीठ, पटरा**। उ.—प्रगट भई तहँ आइ पूतना, प्रेरित काल-अवधि नियराई। आवत पीढ़ा बैठन दीनौ, कुसल बूझि अति निकट बुलाई—१०-५०।

पीढ़िनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीढ़ी] **पीढ़ियाँ, पुश्तें**। उ.—हौं तौ पतित सात पीढ़िनि कौ, पतितै ह्वै निस्तरिहौं—१-१३४।

पीढ़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. पीठिका] (१) **कुल-परंपरा, पुश्त**। (२) **कुल के सभी प्राणी**। (३) **काल-विशेष का समाज**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पीढ़ा] **छोटा पीढ़ा**।

पीत—वि. [सं.] **पीला, पीत वर्ण का**।

पीतता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पीलापन**।

पीतधातु—संज्ञा पुं. [सं. पीत+धातु] **रामरज, गोपीचंदन**। उ.—पीतै पीत बसन भूषन सजि पीतधातु अँग लावै—२०३२।

पीतनि—क्रि. स. [हिं. पीना] **पीता, पान करता**। उ.—निसि दिन निरखि जसोदा-नंदन अरु जमुनाजल पीतनि—४६०।

पीतपराग—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल का केसर**।

पीतम—वि. [सं. प्रियतम] **जो सबसे प्रिय हो**।

संज्ञा पुं.—**प्राणप्यारा पति**।

पीतमणि, पीतरत्न—संज्ञा पुं. [सं.] **पुखराज**।

पीतर, पीतरि, पीतल—संज्ञा पुं. [सं. पित्तल, हिं. पीतल] **'पीतल' नामक धातु**। उ.—कोटि बार पीतरि ज्यौं डाहौ कोटि बार जो कहा कसै—२६७८।

पीतवर्ण—वि. [सं.] **पीला, पीले रंग का**।

पीतांबर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पीला वस्त्र**। (२) **पुरुषों की रेशमी धोती**। (३) **श्रीकृष्ण**।

पीताम्बरधर—संज्ञा पुं. [सं.] **पीतांबर धारण करने वाले या पीतांबर प्रिय है जिनको वे श्रीकृष्ण**।

पीताब्धि—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र पीनेवाला, अगस्त्य**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—वि. [सं.] **जिसमें पीली आभा हो।**

—वि. सवि. [सं. पीत + ही] **पीला हो।** उ.—पीतै तै बसन भूषन सजि पीतधातु अँग लावै—२०३२।

—वि. [सं.] (१) **स्थूल, मोटा।** (२) **पुष्ट, परिवर्धित।** उ.—पीन उरोज मुख नैन चखावति इह बिष मोदक ता तन झारि—११६४। (३) **भरा-पुरा, संपन्न।**

—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिन ना] **नशे में ऊँघना।**

—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मोटाई, स्थूलता।**

—संज्ञा पुं. [सं.] **नाक का एक रोग।**

संज्ञा स्त्री. [फ़ा. फ़ीनस] **पालकी।**

—क्रि. स. [सं. पान] (१) **पान करना, घूँटना।** (२) **(किसी बात या रहस्य को) दबा देना।** (३) **(गाली, अपमान आदि) सह जाना।** (४) **मनोभाव को दबा जाना।** (५) **मनोविकार का अनुभव ही न करना।** (६) **धूम्रपान करना।** (७) **सोख लेना।**

, पीपरि, पीपल—संज्ञा पुं. [सं. पिप्पल] **एक प्रसिद्ध वृक्ष।**

संज्ञा स्त्री. [सं. पिप्पली] **एक लता जिसकी कलियाँ प्रसिद्ध औषधि हैं।** उ.—हींग, मिरच पीपरि अजवाइनि ये सब बनिज कहावै—११०८।

—संज्ञा पुं. [सं. पूय] **मवाद।**

—संज्ञा पुं. [हिं. पीना] **पीने की क्रिया।**

यौ०—खवे-पीवे को—**खाने-पीने को।** उ.—वृद्ध वयस, पूरे पुन्यनि तैं, तैं बहुतैं निधि पाई। ताहू के खैवे-पीवे कौं, कहा करति चतुराई—१०-३२५।

, पीया—संज्ञा पुं. [सं. प्रिय] **पति, प्रियतम।** उ.—ऐसे पापी पीय तोहिं पीर न पराई है—२८२७।

—वि. [हिं. पीला] **पीत वर्ण का, पीला।**

, पीयूष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अमृत।** (२) **दूध।**

—क्रि. स. [हिं. पीना] **पान किया, पिया।** उ.—भोजन बीच नीर लै पीयौ—३६६।

—संज्ञा स्त्री. [सं. पीड़ा] (१) **पीड़ा, दुख, कष्ट।** उ.—(क) मेटी पीर परम पुरुषोत्तम, दुख मेट्यौ दुहु-घाँ कौ—१-११३। (ख) काज सरे दुख कहा कहौ धौं, का बायस की पीर—३१००। (२) **दया, सहानुभूति।** (३) **प्रसव-पीड़ा।**

वि. [फ़ा.] (१) **बुज़ुर्ग।** (२) **महात्मा, सिद्ध।**

संज्ञा पु.—(१) **धर्मगुरु।** (२) **मुसलमानों के धर्म गुरु।**

संज्ञा पुं. [फ़ा. पीर] **सोमवार का दिन।**

पीरक—वि. [सं. पीड़ा, हिं. पीर + क (प्रत्य.)] **दुख दूर करनेवाले, दुख मिटानेवाले, दुखी के प्रति सहानुभूति रखनेवाले।** उ.—राजरवनि गाईं व्याकुल ह्वै, दै दै तिनकौ धीरक। मागध हति राजा सब छोरे, ऐसे प्रभु पर-पीरक—१-११२।

पीरा—वि. [हिं. पीला] **पीले रंग का।**

पीरी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **बुढ़ापा।** (२) **चालाकी, धूर्तता।** (३) **ठेका, हुकूमत।** (४) **चमत्कार।**

वि. [हिं. पीला] **पीले रंग की।** उ.—ओढ़े पीरी पामरी पहिरे लाल निचोल—१४३६।

मुहा०—पीरी-कारी होना—**तेज होना, नाराज होना।** उ.—बहियाँ गहत सतराति कौन पर मग धरी उँगरी कौन पै होत पीरी-कारी—२०४७।

पीरे—वि. [हिं. पीला] **पीले रंग के।** उ.—(क) पीरे पान-बिरी मुख नावति—५१४। (ख) लै गागरि सिर मारग डगरी इन पहिरे पीरे पट—८६०।

पीरो—वि. [हिं. पीला] **पीले रंग का।** उ.—मलिन बसन हरि हित अंतर्गति तनु पीरो जनु पाते—३४६१।

पील—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **हाथी।** (२) **शतरंज का एक मोहरा।**

पीलपाल—संज्ञा पुं. [हिं. पील + पालक] **महावत।**

पीलपाँव—संज्ञा पुं. [फ़ा. पीलपा] **एक प्रसिद्ध रोग।**

पीलवान—संज्ञा पुं. [फ़ा. पीलवान] **महावत।**

पीला—वि. [सं. पीत] (१) **जिसका रंग पीला हो।** (२) **कांतिहीन, धुंधला सफेद।**

मुहा०—पीला पड़ना होना)—(१) **रक्त के अभाव से तेज न रह जाना।** (२) **भय से चेहरा फीका पड़ जाना।**

संज्ञा पुं.—**हल्दी या सोने का सा रंग।**

मुहा०—पीली फटना—**तड़का होना।**

पीलापन—संज्ञा पुं. [हिं. पीला + पन] **पीतता।**

पीले—वि. [हिं. पीला] **पीत वर्ण के।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा०—पीले मुख—**निस्तेज, कांतिहीन**। उ.—लाली लै लालन गए आए मुख पीले—१६६४।

पीव—संज्ञा पुं. [अनु.] **पपीहे का 'पी' शब्द**। उ.—रसना तारू सों नहिं लावत, पीवै पीव पुकारत—पृ. ३३० (६८)।

पीवन—संज्ञा पुं. [हिं. पीना] **पीना, पीने की क्रिया**। उ.—गर्भवती हिरनी तहँ आई। पानी सो पीवन नहिं पाई—५-३।

पीवर—वि. [सं.] (१) **मोटा**। (२) **भारी, गुरु**।

पीवा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जल, पानी**।

वि. [सं. पीवर] **स्थूल, पुष्ट**।

पीवै—क्रि. स. [हिं. पीना] **पीता है, पान करता है**।

संज्ञा पुं. सवि. [अनु. पीव+ही] **'चातक की 'पी' ध्वनि ही**। उ.—रसना तारू सों नहिं लावत पीवै पीव पुकारत—पृ. ३३० (६८)।

पीवौ—क्रि. स. [हिं. पीना] **पियो, पान करो**। उ.—पीवौ छाँछ अघाइ कैं, कब के रयवारे—१-२३८।

पीसना—क्रि. स. [सं. पेषण] (१) **बहुत महीन चूरा करना**। (२) **कुचलना, दबाना**।

मुहा०—किसी को पीसना—**बहुत हानि पहुँचाना**।

(४) **कड़ी मेहनत करना, खूब जान लड़ाना**।

संज्ञा पुं.—**पीसी जानेवाली वस्तु**।

पीसि—क्रि. स. [हिं. पीसना] **पीसकर**।

मुहा.—दाँत-पीसि-**दाँत किटकिटाकर, बहुत क्रोध करके**। उ.—सूर केस नहिं टारि सकै कोउ, दाँत पीसि जौ जग मरै—१-२३४।

पीहर—संज्ञा पुं. [सं. पितृ+गृह] **(स्त्री के) माता-पिता का घर, मायका, नैहर**।

पुंगफल—संज्ञा पुं. [सं. पूगफल] **सुपारी**।

पुंगव—संज्ञा पुं. [सं.] **बैल, वृष**।

वि.—**श्रेष्ठ, उत्तम**।

पुंगवकेतु—संज्ञा पुं. [सं.] **वृषभध्वज, शिवजी**।

पुंगीफल—संज्ञा पुं. [सं. पूगफल] **सुपारी**।

पुंछार—संज्ञा पुं. [हिं. पूँछ+आर] **मोर, मयूर**।

पुंज—संज्ञा पुं. [सं.] **समूह, ढेर**। उ.—(क) तड़ित-बसन घन-स्याम सदस तन, तेज-पुंज तम कौ त्रासै—१-६९। (ख) अजिर पद-प्रतिबिंब राजत, चलत उपमा-पुंज—१०-२१८। (ग) सूर-स्याम मुख देखि अलप हँसि आनँद-पुंज बढ़ावो—१२२६।

पुंजा—संज्ञा पुं. [सं. पुंज] **गुच्छा, समूह, गट्ठा**।

पुंजि—संज्ञा स्त्री. [सं. पुंज] **समूह, राशि**। उ.—जे वै लता लगत तनु सीतल अब भईं विषम अनल की पुंजैं—२७२१।

पुंड्र—संज्ञा पुं. [सं.] **तिलक, टीका**।

पुंडरीक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्वेत कमल**। (२) **रेशम का कीड़ा**। (३) **कमंडल**। (४) **तिलक**। (५) **काशी का एक राजा**। उ.—पुंडरीक काशी को राइ—१० उ.-४४।

पुंडरीकाक्ष—वि. [सं.] **कमल के समान नेत्रवाला**।

संज्ञा पुं.—**विष्णु, नारायण**।

पुंड्र—संज्ञा पुं. [सं.] **तिलक, टीका**।

पुंलिंग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पुरुष का चिन्ह**। (२) **(व्याकरण में) पुरुषवाचक शब्द**।

पुंश्चली—वि. स्त्री. [सं.] **व्यभिचारिणी**।

पुंस—संज्ञा पुं. [सं.] **पुरुष**।

पुंसवन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूध**। (२) **एक संस्कार जो गर्भाधान से तीसरे महीने पुत्र-जन्म की कामना से किया जाता है**। (३) **वैष्णवों का एक व्रत**।

वि.—**पुत्र को उत्पन्न करनेवाला**।

पुंसवान—वि. [सं. पुंसवत्] **जो पुत्रवाला हो**।

पुंस्चली—वि. स्त्री. [सं. पुंश्चली] **व्यभिचारिणी, कुलटा**। उ.—पतिब्रता जालंधर-जुवती, सो पति-व्रत तैं टारी। दुष्ट पुंस्चली अधम सो गनिका सुवा पढ़ावत तारी—१-१०४।

पुंस्त्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पुरुषत्व**। (२) **वीर्य, शुक्र**।

पुआ—संज्ञा पुं. [सं. पूप] **मीठी रोटी या पूरी**।

पुआल—संज्ञा पुं. [हिं. पयाल] **सूखे डंठल, पयाल**।

पुकार—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुकारना] **रक्षा या सहायता के लिए की गयी चिल्लाहट, दुहाई**। उ.—(क) तुम हरि साँकरे के साथी। सुनत पुकार, परम आतुर ह्वै, दौरि छुड़ायौ हाथी—१-११२। (ख) असुर महा उत्पात कियौ तब देवन करी पुकार। (२) **किसी को पुकारने**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की क्रिया या भाव, हाँक, टेर।(३) नालिश, फरियाद। (४) माँग की चिल्लाहट।

क्रि. स.—(१) पुकारकर। (२) जोर देकर। उ.—तुम्हरौ नहीं तहाँ अधिकार। मैं तुमसौं यह कहौं पुकार–६-४।

ता—क्रि. स. [हिं. पुकारना] (१) हाँक देता हूँ, टेरता हूँ, आवाज लगाता हूँ। (२)रक्षा के लिए चिल्लाता हूँ, गोहार लगाता हुँ, छूटकारे के लिए चिल्लाता हूँ। उ.—बालापन खेलत ही खोयौ, जुवा विषय-रस मात। वृद्ध भए सुधि प्रगटी मोकौं, दुखित पुकारत तातैं—१-११८। (३) घोषणा करते हैं, बताते हैं। उ.—दीनदयालु देवकी नंदन वेद पुकारत चारो—१०उ.—७७।

ना—क्रि. स. [सं. प्रकुश = पुकारना]—(१) टेरना, आवाज देना। (२) रटना, धुन लगाना। (३) चिल्लाकर कहना। (४) माँगना। (५) रक्षा के लिए चिल्लाना। (६) फरियाद करना। (७) नामकरण करना।

रि—क्रि. स. [हिं. पुकारना] जोर देकर, घोषित करके, चिल्लाकर। उ.—सुनि मन, कहौं पुकारि तोसौं हौं, भजि गोपालहिं मेरैं—१-८५।

री—क्रि. स. [हिं. पुकारना] पुकारा, हांक दी, टेरा, संबोधित किया। उ.—(क) द्रुपद-सुता जब प्रगट पुकारी। गहत चीर हरि-नाम उबारी—१-२८। (ख) राखी लाज समाज माहिं जब, नाथ नाथ द्रौपदी पुकारी—१-३०।

रौं—क्रि. सं. [हिं. पुकारना] रक्षा के लिए चिल्लाया, किया, गोहार लगाता रहा, छुटकारे के लिए आवाज देता रहा। उ.—हाय-हाय मैं परयौ पुकारौं, राम-नाम न कहौं—१-१५१।

रयौ—क्रि. स. [हिं. पुकारना] (१) हाँक लगाई, टेरा पुकारा, आवाज दी। उ.—जब गज-चरन ग्राह गहि राख्यौ, तबहीं नाथ पुकारयौ—१-१०६। (२) रक्षा के लिए चिल्लाया या गोहार मचायी। उ.—पाँव प्यादे धाय गए गज जबै पुकारयौ।

राज—संज्ञा पुं. [सं. पुष्पराग] एक रत्न।

पुगाना—क्रि. अ. [हिं. पुजाना] पूरा करना, पुजाना।

पुचकार—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुचकारना] चूमने की सी ध्वनि।

पुचकारना—क्रि. स. [अनु० पुच+करना] चुमकारना।

पुचकारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुचकारना] चूमने की सी ध्वनि।

पुचारना—क्रि. स. [हिं. पुचारा] (१) चापलूसी करना। (२) झूठी प्रशंसा करके चंग पर चढ़ाना।

पुचारा—संज्ञा पुं. [अनु. पुचपुच या पुतारा] (१) भीगे कपड़े से पोंछना। (२) पतली पुताई करना। (३) हलका लेप। (४) पोतने का कपड़ा। (५) मीठे और सुहाते वचन। (६) चापलूसी। (७) बढ़ावा।

पुच्छ—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) दुम, पूँछ। उ.—स्वान, कुब्ज, कुपंगु, कानौ, स्रवन-पुच्छ-विहीन—१-२२१। (२) पिछला भाग।

पुच्छल—वि. [हिं. पुच्छ] दुमदार।

पुछल्ला—संज्ञा पुं. [हिं. पूँछ+ला] (१) लंबी पूँछ या दुम। (२) पूँछ की तरह जुड़ी लंबी चीज। (३) साथ लगा रहनेवाला। (४) चापलूस।

पुछातौ—क्रि. स. [हिं. पूछना] पूछता है, जिज्ञासा करता है।

मुहा०—न बात पुछातौ—बात तक नहीं पूछता है, जरा भी ध्यान नहीं देता है। उ.—जग मैं जीवत ही कौ नातौ। मन बिछुरैं तन छार होइगौ, कोउ न बात पुछातौ—१-३०२।

पुछार, पुछैया—वि. [हिं. पूछना] खोज-खबर लेनेवाला।

पुजना—क्रि. अ. [हिं. पूजना] (१) पूजा जाना, पूजा होना। (२) आदर या सम्मान होना।

पुजवना—क्रि. स. [हिं. पूजना] (१) पुजाना। (२) सफल करना।

पुजवाना—क्रि. स. [हिं. पूजना] (१) पूजा में लगाना। (२) अपनी पूजा करना। (३) आदर-सम्मान कराना।

पुजाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पूजना] (१) पूजने का भाव, क्रिया या वेतन। (२) पूजा। उ.—गोबर्धन की करी पुजाई मोहिं डारयौ बिसराई—९७५। (३) पूरा या सफल करने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पुजाए—क्रि. स. [हिं. पूजना] पूरा किया, पूर्ति की, कमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर करो । उ.—पांडु-बधू पटहीन सभा मैं, कोटिन बसन पुजाए—१-१५८ ।

पुजाना—क्रि. स. [हिं. पूजना] (१) **दूसरे से पूजा कराना।** (२) **अपनी पूजा-सेवा या आदर-सत्कार कराना।** (३) **धन वसूलना।** (४) (**खाली जगह) भरना।** (५) **कमी दूर करना।** (६) **सफल करना।**

पुजापा—संज्ञा पुं. [सं. पूजा+पात्र] (१) **पूजा की सामग्री, चढ़ावा।** (२) **चढ़ावा या पूजन-सामग्री रखने का पात्र।**

पुजायो, पुजायौ—क्रि. स. [हिं. पूजना] **पूरा किया, पूर्ण किया।** उ.—(क) दीन्हौ दान बहुत नाना विधि, इहि विधि कर्म पुजायौ—६०-५० । (ख) तासु मनोरथ सफल पुजायौ—१० उ०–२८ ।

पुजारी—संज्ञा पुं. [सं. पूजा+कारी] **पूजा करनेवाला।**

पुजावहु—क्रि. स. [हिं. पूजना] **परिपूर्ण करो, सफल करो, पूरा करो।** उ.—तुम काहूँ धन दै लै आवहु, मेरे मन की आस पुजावहु—५-३ ।

पुजाही—संज्ञा स्त्री. [हिं. पूजा+आही] **पुजापा रखने की थैली या पात्र।**

पुजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पूँजी] **पूंजी।** उ.—समुझि सगुन लै चले न ऊधो यह तुमपै सब पुजी अकेली—३१४४ ।

पुजेरी—संज्ञा पुं. [हिं. पुजारी] **पूजा करनेवाला।** उ.—आपुहिं देव आपुहीं पुजेरी—१०२६ ।

पुजैया—संज्ञा पुं. [हिं. पूजना] (१) **पूजा करनेवाला।** (२) **पूरा करने या भरनेवाला।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. पुजाई] **पुजाई।**

पुजौरा—संज्ञा पुं. [हिं. पूजा] (१) **पूजा।** (२) **पुजापा।**

पुट—संज्ञा पुं. (अनु. पुट-पुट छींटा गिरने का शब्द) (१) **हलका छिड़काव।** (२) **रंग या हलका मेल देने के लिए किसी पतली चीज का रंग में डुबोना।** उ.—ज्यौं बिन पुट पट गहत न रँग कौ, रंग न रसै परै—३३५८ । (३) **हलका मेल।**

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दोना, कटोरा, गोल गहरा पात्र।** उ.—जलपुट आनि धरी आँगन में मोहन नेक तौ लीजै। (२) **दोने या कटोरे के आकार की कोई वस्तु या पात्र।** उ.—(क) लीला-गुन अमृत-रस स्रवननि-पुट पीजै—१-७२ । (ख) नाहिंन इतनौ भाग जो यह रस नित लोचन-पुट पीजै—१०-६ । (३) **मुँह बँद बरतन।** (४) **डिबिया, संपुट।** उ.—नील पुट बिच मनौ मोती धरे बंदन बोरि—१०-२२५ । (५) **अँतरौटा, अंतःपट।**

पुटकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुट] **पोटली, छोटी गठरी।**

पुटपाक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मुँहबंद बरतन में रख कर औषध पकाने का विधान।** (२) **इस प्रकार पकायी गयी औषध का सिद्ध रस।**

पुटी—संज्ञा स्त्री. [सं. पुट] (१) **खाली स्थान जिसमें कोई चीज रक्खी जा सके।** उ.—मुक्ता मनौ चुगत खग खंजन, चोंच पुटी न समात—३६६ । २) **छोटा दोना या कटोरा।** (३) **पुड़िया।** (४) **लँगोटी, कौपीन।**

पुड़िया—संज्ञा स्त्री. [सं. पुटिका, प्रा. पुड़िया] (१) **कागज में लिपटी वस्तु।** (२) **खान भंडार।**

पुण्य—वि. [सं.] **पवित्र, भला।**

संज्ञा पुं.—(१) **पवित्र या धर्म कार्य।** (२) **धर्म कार्य का संचय।**

पुण्यक—संज्ञा पुं. [सं.] **व्रत, अनुष्ठान, धर्म-कार्य।**

पुण्यक्षेत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **तीर्थ स्थान।**

पुण्यदर्शन—वि. [सं.] **जिसका दर्शन शुभ हो।**

पुण्यवान्—वि. [सं. पुण्यवत] **पुण्य करनेवाला।**

पुण्यश्लोक—वि. [सं.] **जिसका चरित्र पवित्र हो।**

पुण्यस्थान—संज्ञा पुं. [सं.] **पवित्र या तीर्थ स्थान।**

पुण्याई—संज्ञा स्त्री [सं. पुण्य] **पुण्य का प्रभाव।**

पुण्यात्मा—वि. [सं. पुण्यात्मन्] **पुण्य करनेवाला।**

पुण्याह—संज्ञा पुं. [सं.] **शुभ या मंगल दिवस।**

पुण्याहवाचन—संज्ञा पुं. [सं.] **अनुष्ठान के पूर्व कल्याण के लिए 'पुण्याह' शब्द की तीन बार आवृत्ति।**

पुतरा, पुतला—संज्ञा पुं. [सं. पुत्रक, प्रा. पुत्तल, हिं. पुतला] **लकड़ी, मिट्टी, कपड़े की पुरुष-मूर्ति, बड़ा गुड्डा।**

मुहा.—(किसी का) पुतला बाँधना—**निंदा करना।**

पुतरिका, पुतरिया, पुतरी, पुतली—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुतला, पुतली] (१) **लकड़ी, मिट्टी, कपड़े की स्त्री-मूर्ति**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी गुड़िया। उ.—हमैं तुम्हैं पुतरी कैं भाइ। देखत कौतुक बिबिध नचाइ—६-५। (२) **सुन्दर स्त्री**। (३) **आँख का काला भाग**।

मुहा०—पुतली फिरना—(१) **आँखें पथराना, मृत्यु होना**। (२) **घमंड होना**।

...ई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पोतना] **पोतने की क्रिया या मजदूरी**।

...—संज्ञा पुं. [सं. पुत्र] **बेटा**।

...ल, पुत्तलक—संज्ञा पु. [हिं. पुतला] **पुतला**।

...लिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बड़ी गुड़िया, पुतली**। (२) **आँख की पुतली**। (३) **सुंदरी स्त्री**।

...—संज्ञा पुं. [सं.] **बेटा, लड़का**।

...वती—वि. [सं.] **जिसके पुत्र हो**।

...वधू—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पुत्र की स्त्री, पतोहू**।

...का—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पुत्री, बेटी**। (२) **पुत्र के स्थान पर मानी गयी कन्या**। (३) **पुतली, गुड़िया**। (४) **आँख की पुतली**। (५) **नारी का चित्र**।

...ी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बेटी, लड़की**।

...ष्टि—संज्ञा पुं. [सं.] **एक यज्ञ जो पुत्रेच्छा से होता है**।

...ना—संज्ञा पुं. [फा. पोदीनः] **एक छोटा पौधा**।

...—अव्य. [सं. पुनर] (१) **फिर**। (२) **उपरांत**।

...: पुन:—क्रि. वि. [सं.] **बार बार**।

...रपि—क्रि. वि. [सं.] **फिर भी**।

...रवस, पुनरबसु—संज्ञा पुं. [सं. पुनर्वसु] **एक नक्षत्र**।

...रुक्त—वि. [सं.] **फिर से कहा हुआ**।

...रुक्तवदाभास—संज्ञा पुं. [सं.] **एक शब्दालंकार**।

...रुक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कही बात को फिर कहना**।

...र्जन्म—संज्ञा पुं. [स.] **मृत्यु के बाद फिर जन्मना**।

...र्भव—संज्ञा पुं. [सं.] **फिर जन्मना, पुनर्जन्म**।

...र्भू—संज्ञा स्त्री. [सं.] **विधवा जिसका पुन: विवाह हो**।

...र्वसु—संज्ञा पुं. [सं.] **सत्ताइस नक्षत्रों में सातवाँ**।

...नि—क्रि. वि. [सं. पुन:] **फिर, पुन:, पश्चात, बार-बार, दोबारा, अनंतर**। उ.—(क) पांडव कौ दूतत्व कियौ पुनि, उग्रसेन कौं राज दियौ—१-२६। (ख) गुरु-बांधव-हित मिले सुदामहिं, तंदुल पुनि-पुनि जाँचत—१-३१।

मुहा०—पुनि-पुनि—बार-बार। उ.—सूरदास प्रभु कहत हैं पुनि-पुनि तब अति ही सुख पैहैं—२५५३।

पुनी—संज्ञा पुं. [सं. पुण्य] **पुण्य करनेवाला**।

संज्ञा स्त्री. [सं. पूर्ण] **पूर्णिमा, पूनो**।

पुनीत—वि. [सं.] (१) **पवित्र, शुद्ध**। (२) **निष्कलंक**। (३) **सती (नारी)**। उ.—परम पुनीत जानकी सँग लै, कुल-कलंक किन टारौ—६-११५।

पुन्न—संज्ञा पुं. [सं. पुण्य] **धर्मकार्य, पुण्य**,

पुन्नाग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक वृक्ष**। (२) **श्वेत कमल**। (३) **श्रेष्ठ मनुष्य**।

पुन्य—संज्ञा पुं. [सं. पुण्य] **धर्मकार्य, पुण्य**।

पुन्यो—वि. [हिं. पूनो] **पूर्णिमा का**। उ.—सेज सँवारि पंथ निसि जोवत अस्त आनि भयो चंद पुन्यो—१९३१।

पुरंजन—संज्ञा पुं. [सं.] **जीवात्मा। (भागवत के आधार पर शरीर रूपी पुर, उसके नवद्वार और पुरंजन नाम से जीवात्मा के निवास का सूरदास ने वर्णन किया है)**। उ.—तन पुर जीव पुरंजन राव, कुमति तासु रानी कौ नाँव—४-१२।

पुरंदर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पुर, घर आदि को तोड़नेवाला**। (२) **इंद्र**। (३) **चोर**। (४) **विष्णु**।

पुर: अव्य. [सं. पुरस्] (१) **आगे**। (२) **पहले**।

पुर:सर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अग्रगमन**। (२) **साथी**।

पुर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नगर, नगरी**। उ.—उपवन बन्यो चहूंघा पुर के अति ही मोकों भावत—२५५६। (२) **घर**। उ.—मन मैं यह बिचार करि सुंदरि, चली आपने पुर को—७३८। (३) **कोठा, अटारी**। (४) **लोक-भुवन**। (५) **देह, शरीर**। (६) **गढ़, किला**।

पुरइन, पुरइनि—संज्ञा स्त्री. [सं. पुटकिनी, प्रा. पुडइनी, हिं. पुरइनि] (१) **कमल का पत्ता**। उ.—पुरइन कपिश निचोल बिबिध रँग बिहँसत सचु उपजावै। (२) **कमल**। उ.—(क) नँदनंदन तो ऐसे लागे ज्यों जल पुरइन पात—२५१९। (ख) पुरइनपात रहत जल भीतर ता रस देह न दागी—३३३५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरई—क्रि. स. [हिं. पूरना] (**मनोरथ, प्रतिज्ञा आदि) पूर्ण या सिद्ध की।** उ.—जन प्रहलाद-प्रतिज्ञा पुरई, सखा बिप्र-दारिद्र हयौ—१-२६।

पुरखा—संज्ञा पुं. [सं. पुरुष] (१) **पूर्व पुरुष, पूर्वज।** (२) **घर या परिवार का बड़ा-बूढ़ा।**

पुरजा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **टुकड़ा, खंड।** (२) **कतरन, धज्जी।** (३) **अंग, भाग, अवयव।**

मुहा.—चलता-पुरजा—**तेज या चालाक आदमी।**

पुरट—संज्ञा पुं. [सं.] **सोना, सुवर्ण।**

पुरतः—अव्य. [सं.] **आगे।**

पुरत्राण—संज्ञा पुं. [सं.] **शहरपनाह, परकोटा।**

पुरनियाँ—वि. [हिं. पुराना] **बड़ा, बूढ़ा, वृद्ध।**

पुरबधू—संज्ञा स्त्री. [हिं.] **ग्रामवधू, ग्राम की स्त्रियाँ।** उ.—लज्जित होहिं पुरबधू पूछैं, अंग-अंग मुसकात—६-४३।

पुरबला, पुरबलौ—वि. [सं. पूर्व+ला] (१) **पूर्व जन्म का, पूर्वजन्म-संबंधी।** उ.—नहिं अस जनम बारंबार। पुरबलौ धौं पुन्य-प्रगट्यौ लहयौ नर-अवतार—१-८८। (१) **पूर्व या पहले का।**

पुरबा—संज्ञा पुं. [सं. पुर] **छोटा गाँव, खेड़ा।**

पुरबिया, पुरबिहा—वि. [हिं. पूरब] **पूरब का रहनेवाला।**

पुरबुला—वि. [सं. पूर्व] (१) **पूर्व का।** (२) **पूर्व जन्म का।**

पुरवइया—संज्ञा स्त्री. [सं. पूर्व] **पूर्व से आनेवाली हवा।**

पुरवट—संज्ञा पुं. [सं. पूर] **चमड़े का मोट।**

पुरवत—क्रि. स. [हिं. पूरना] **पूरा या पूर्ण करते हैं।** उ.—पर उपकाज हेतु तनु धारयौ पुरवत सत्र मन साध—१६६०।

पुरवना—क्रि. स. [हिं. पूरना] (१) **भरना, पुरना।** (२) (**मनोरथ आदि) पूरा या पूर्ण करना।**

मुहा०—साथ पुरवना—**साथ देना।**

क्रि. अ. (१) **पूरा होना।** (२) **उपयोग के योग्य होना।**

पुरवा—संज्ञा पुं. [सं. पुर] **छोटा गाँव, खेड़ा।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. पूरब] **पूरब से आनेवाली हवा।**

संज्ञा पुं. [सं. पुटक] **मिट्टी की कुल्हिया।**

पुरवाई—वि. [हिं. पूरब] **पूरब से आनेवाली।** उ.—उलहरि आयो सीतल बूँद पवन पुरवाई—१५६५।

संज्ञा स्त्री.—**पूरब से आनेवाली हवा।**

पुरवाना—क्रि. स. [हिं. पुरवना] **पूरा कराना।**

पुरवै—क्रि. अ. [हिं. पूरना] (१) **भर दे, व्याप्त कर दे।** उ.—या रथ बैठि बंधु की गर्जहिं पुरवै को कुरुखेत—१-२६। (**मनोरथ आदि) पूरा करो।** उ.—हरि बिनु को पुरवै मो स्वारथ—१-२८७।

पुरस्कार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आदर-पूजा।** (२) **प्रधानता।** (३) **पारितोषिक, उपहार, इनाम।** (४) **स्वीकार।**

पुरस्कृत—वि. [सं.] (१) **आदृत।** (२) **स्वीकृत।** (३) **जिसे पारितोषिक या उपहार मिला हो।**

पुरहूत—संज्ञा पुं. [सं. पुरुहूत] **इंद्र।**

पुरा—अव्य. [सं.] (१) **प्राचीन काल में।** (२) **प्राचीन।**

संज्ञा स्त्री.—(१) **पूर्व दिशा।** (२) **एक सुगंध द्रव्य।**

संज्ञा पुं.—[सं. पुर] **गाँव खेड़ा।** उ.—(क) यह बृषभानु-पुरा, ये ब्रज मैं, कहाँ दुहावन आई—७२६। (ख) ब्रज बृषभानु-पुरा जुवतिन को इक इक करि मैं जानौं पृ. ३१३ (२७)।

पुराइ—क्रि. स. [हिं. पुरना] (१) **भरवाकर।** उ.—चंदन आँगन लिपाइ, मुतियनि चौकैं पुराइ—१०-६५। (२) **पूरी करके।** उ.—अखिल भुवन जन कामना पुराइ कै—२६२८।

पुराई—क्रि. स. [हिं. पूरना] **पूरी की।** उ.—ताके मन की आस पुराई—१० उ.-२८।

पुराऊँ—क्रि. स. [हिं. पूरना] (१) **खाली स्थान भर दूँ, पूर्ति करूँ।** (२) (**पेट) भरूँ, भूख मिटाऊँ।** उ.—माँगत बारंबार सेष ग्वालनि कौ पाऊँ। आपु लियौ कछु जानि, भच्छ करि उदर पुराऊँ—४६२।

(२) **पूरी करूँ या करूँगा।** उ.—(क) सरद-रास तुम आस पुराऊँ। अंकम भरि सबकौं उर लाऊँ—७६७। (ख) अपनी साध पुराऊँ—१४२५।

पुराए—क्रि. स. [हिं. पूरना] **पूरे किये।** उ.—अति अल-सात जम्हात पियारी स्याम के काम पुराए—२११०।

पुराण—वि. [सं.] **प्राचीन, पुराना।**

संज्ञा पुं.—(१) **पुरानी कथा।** (२) **हिंदुओं के**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन धर्माख्यान ग्रंथ जिनकी संख्या १८ है— **विष्णु, पद्म, ब्रह्म, शिव, भागवत, नारद, मार्कंडेय, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त्त, लिंग, वाराह, स्कंद, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, ब्रह्मांड, और भविष्य ।**

पुरुष—संज्ञा पुं. [सं.] **विष्णु ।**

त्व—संज्ञा पुं. [सं.] **प्राचीन काल संबंधी विद्या ।**

तन—वि. [सं.] (१) **पुराना, प्राचीन ।** उ.—बिप्र सुदामा कियौ अजाँची, प्रीति पुरातन जानि—१-१३५ । (२) **पूर्व जन्म का, विगत जन्म का ।** उ.—अजामील तौ बिप्र तिहारौ हुतौ पुरातन दास । नैंकु चूक तैं यह गति कीनी, पुनि बैकुंठ निवास—१-१३२ ।

न—वि. [हिं. पुराना] **पुराना, प्राचीन ।**

संज्ञा पुं. [सं. पुराण] **पुराण ।**

न पुरुष—संज्ञा पुं. [सं. पुराण पुरुष] **विष्णु ।** उ.—पुरुष पुरान आनि कियो चतुरानन—४८४ ।

ना—वि. [सं. पुराण] (१) **प्राचीन, पुरातन ।** (२) **फटा, जीर्ण ।** (३) **जिसका अनुभव बहुत दिनों का हो ।**

मुहा०—पुराना खुर्राट या घाघ—**बहुत काइयाँ ।**

(४) **बहुत पहले का, पर अब न हो ।** (५) **बहुत समय का ।**

क्रि. स. [हिं. पूरना] (१) **भराना ।** (२) **पालन कराना ।** (३) **पूरा कराना ।** (४) **पालन कराना ।** (५) **पूरा डालना ।**

नी—वि. [हिं. पुरानी] **बहुत वर्षों की, बड़ी आयु-वाली ।** उ.—डसि मानौं नागिनी पुरानी—२६४६ ।

नो, पुरानौ—वि. [हिं. पुराना] **बहुत दिनों का ।**

य—क्रि. सं. [हिं. पूरना] **मंगल अवसरों पर देव-पूजन के लिए आटे, अबीर आदि से चौखूँटे बनाकर ।** उ.—गजमोतिनि के चौक पुराय बिच बिच लाल प्रबालिका —१०-८०८ ।

यो, पुरायौ—क्रि. स. [हिं. पूरना] **मंगल-चौक भरे ।** उ.—चौक मुक्ता हल पुरायो आइ हरि बैठे तहाँ——१० उ०-२४ ।

री—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव ।**

वृत्त—संज्ञा पुं. [सं.] **पुराना इतिहास या वृत्तांत ।**

वो—क्रि. स. [हिं. पुराना] **मंगल चौक आदि भरो ।** उ.—ललिता बिसाखा अँगना लिपावो, चौक पुरावो तुम रोरी—२३६५ ।

पुरि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **शरीर ।** (२) **पुरी ।**

पुरिहै—क्रि. अ. [हिं. पुरना] **पूरा होगा ।** उ.—सकल मनोरथ तेरौ पुरिहै—४-६ ।

पुरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नगरी ।** (२) **जगन्नाथपुरी ।**

पुरीष—संज्ञा पुं. [सं.] **विष्टा, मल ।** उ.—बहुतक जन्म पुरीष-परायन, सूकर-स्वान भयौ—१-७८ ।

पुरु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवलोक ।** (२) **पराग ।** (३) **शरीर ।** (४) **ययाति का पुत्र जिसने पिता को यौवन दिया था ।**

पुरुष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मनुष्य, नर ।** उ.—ज्यों दूती पर-बधू भोरि कै लै पर-पुरुष दिखावै—१-४२ । (२) **आत्मा ।** (३) **विष्णु ।** (४) **सूर्य ।** (५) **जीव ।** (६) **शिव ।** (७) **सर्वनाम और क्रिया-रूप जिससे सूचित हो कि वह कहने, सुनने अथवा अन्य व्यक्ति में से किसके लिए प्रयुक्त हुआ है (व्याकरण) ।** (८) **आत्मा ।** (९) **पूर्वज ।** उ.—जा कुल माहिं भक्त मम होई । सप्त पुरुष लैं उधरै सोई । (१०) **यज्ञपुरुष ।** (११) **पति, स्वामी ।**

पुरुषत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **पुरुष होने का भाव ।**

पुरुषारथ, पुरुषार्थ—संज्ञा पुं. [सं. पुरुषार्थ] (१) **पुरुष के उद्योग का लक्ष्य या विषय ।** (२) **उद्यम, पराक्रम, शक्ति ।** उ.—(क) करी गोपाल की सब होइ । जो अपनो पुरुषारथ मानत, अति झूठौ है सोई—१-२६२ । (ख) अतिहि पुरुषारथ कियौ उन, कमल दह के ल्याइ—५८६ ।

पुरुषार्थी—वि. [सं. पुरुषार्थिन्] (१) **उद्योगी, परिश्रमी ।** (२) **बली, शक्तिवान ।**

पुरुषोत्तम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रेष्ठ पुरुष ।** (२) **विष्णु ।** (३) **जगन्नाथ ।** (४) **ईश्वर ।** (५) **मलमास ।**

पुरुहूत—संज्ञा पुं. [सं.] **इंद्र ।**

पुरुरवा—संज्ञा पुं. [सं. पुरूरवा] **एक प्राचीन राजा जिसकी प्रतिष्ठानपुर नामक राजधानी प्रयाग में गंगा के किनारे थी । पुरुरवा इला के गर्भ से उत्पन्न बुध का पुत्र था । उर्वशी एक बार शापवश भूलोक में आ**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ी थी। तब पुरुरवा ने उससे विवाह किया था। शाप से मुक्त होकर जब वह स्वर्ग चली गयी तब राजा ने बहुत विलाप किया। पश्चात्, एकबार पुनः उर्वशी से उनकी भेंट हुई। उर्वशी से उत्पन्न उनके सात पुत्र थे—आयु, अमावसु, विश्वायु, श्रुतायु, दृढ़ायु, वनायु, और शतायु।

पुरेन, पुरेनि, पुरैन, पुरैनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुरइनि] (१) कमल। (२) कमल का पत्ता।

पुरोध, पुरोधा—संज्ञा पुं. [सं. पुरोधस] पुरोहित।

पुरोहित—संज्ञा पुं. [सं.] कर्मकांड करानेवाला। उ.—कह्यौ पुरोहित होत न भलौ। बिनसि जात तेज-तप सकलौ ६-५।

पुरोहिताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुरोहित] पुरोहित का काम।

पुल—संज्ञा पुं. [फ़ा.] सेतु।

मुहा.—(किसी बात का) पुल बँधना—ढेर लगना। (किसी बात का) पुल बाँधना—ढेर लगाना।

पुलक—संज्ञा पुं. [सं.] रोमांच, प्रेम, हर्ष आदि के उद्वेग से पुलकित होना। उ.—गद्गद् सुर, पुलक रोम, अंग प्रेम भीजै—१-७२।

पुलकना—क्रि. अ. [सं. पुलक] गद्गद् होना।

पुलकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं पुलकना] गद्गद् होने का भाव।

पुलकालि, पुलकावलि, पुलकावली—संज्ञा स्त्री. [सं. पुलकावलि] हर्ष से रोमों का खड़ा होना।

पुलकि—क्रि. अ. [हिं. पुलकना] गद्गद् या पुलकित होकर। उ.—सूरदास प्रभु बोल न आयो प्रेम पुलकि सब गात—२५३१।

पुलकित—वि. [हिं. पुलकना] रोमांचयुक्त, गद्गद्, प्रेम या हर्ष से जिसके रोएँ उभर आये हों। उ.—लोचन सजल, प्रेम-पुलकित तन, डगर अंचल, कर-माल—१-१८६।

पुलकी—वि. [सं. पुलकिन] गद्गद् होनेवाला।

पुलस्त, पुलस्त्य—संज्ञा पुं. [सं.] एक ऋषि जिनकी गणना ब्रह्मा के मानस पुत्रों, प्रजापतियों और सप्तर्षियों में है। ये कुबेर और रावण के पितामह थे।

पुलह—संज्ञा पुं. [सं.] एक ऋषि जिनकी गणना ब्रह्मा के मानस पुत्रों, प्रजापतियों और सप्तर्षियों में है।

पुलिंदा—संज्ञा पुं. [सं. पुल = ढेर] पूला, गड्ढा।

पुलिन—संज्ञा पुं. [सं.] नदी का तट। उ.—जैसोइ पुलिन पवित्र जमुन को तैसोइ मंद सुगंध—पृ. ३१५ (४५)।

पुलिहोरा—संज्ञा पुं. [देश.] एक पकवान।

पुश्त—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) पीठ। (२) पीढ़ी।

पुश्ता—संज्ञा पुं. [फ़ा. पुश्तः] ऊँची मेड़, बाँध।

पुश्ती—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) सहारा। (२) सहायता।

पुश्तैनी—वि. [हिं. पुश्त] (१) जो कई पुश्तों से चला आता हो। (२) जो कई पुश्तों तक चले।

पुष्कर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जल। (२) जलाशय। (३) कमल। उ.—पुष्कर माल उतार हृदय ते दीनी स्याम—सारा. ५५४। (४) सात द्वीपों में से एक। उ.—जंबु, प्लच्छ, क्रौंच, साक, साल्मलि, कुस, पुष्कर भरपूर—सारा. ३४। (५) एक तीर्थ। (६) विष्णु का एक रूप।

पुष्कल—वि. [सं.] (१) बहुत अधिक। (२) भरा-पुरा, परिपूर्ण। (३) श्रेष्ठ। (४) पवित्र।

पुष्ट—वि. [सं.] (१) पाला पोषा हुआ। (२) मोटा-ताजा। (३) बलवर्द्धक। (४) दृढ़, मजबूत।

पुष्टई—संज्ञा स्त्री. [सं. पुष्ट] बलवर्धक वस्तु।

पुष्टता—संज्ञा स्त्री. [सं.] दृढ़ता, मजबूती।

पुष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) पोषण। (२) मोटाताजापन। (३) दृढ़ता। (४) बात का समर्थन। (५) वृद्धि।

पुष्टिकर—वि. [सं.] बल-वीर्य-वर्द्धक।

पुष्टिकारक—वि. [सं.] बल-वीर्य-वर्द्धक।

पुष्टिमार्ग—संज्ञा पुं. [सं.] वल्लभाचार्य का वैष्णव भक्तिमार्ग।

पुष्प—संज्ञा पुं. [सं.] (१) फूल। (२) ऋतुमती स्त्री का रज। (३) कुबेर का 'पुष्पक' विमान।

पुष्पक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) फूल। (२) कुबेर का विमान।

पुष्पचाप—संज्ञा पुं. [सं.] कामदेव।

पुष्पधन्वा—संज्ञा पुं. [सं. पुष्पधन्वन्] कामदेव।

पुष्पध्वज—संज्ञा पुं. [सं.] कामदेव।

पुष्पवती—संज्ञा स्त्री. [सं.] रजस्वला स्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…वाटिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **फुलवारी।**

…बाण—संज्ञा पुं.[सं.] (१) **फूलों का बाण।** (२) **कामदेव जिसके बाण फूलों के हैं।**

…वृष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **फूलों की वर्षा।**

…शर, पुष्पशरासन—संज्ञा पुं. [सं.] **कामदेव।**

…युध—संज्ञा पुं. [सं.] **कामदेव।**

…त—वि. [सं.] **फूलों से युक्त।**

…द्यान—संज्ञा पुं. [सं.] **फुलवारी।**

…—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पोषण।** (२) **सारवस्तु।** (३) **२७ नक्षत्रों में आठवाँ।** (४) **पूसमास।**

…ना—क्रि. अ. [हिं. पोसना] (१) **पूरा पड़ना।** (२) **उचित लगना।**

…क—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पोथी, किताब, ग्रंथ।**

…कालय—संज्ञा पुं. [सं.] **पुस्तक-संग्रहालय।**

…कर, पुहुकर—संज्ञा पुं. [सं. पुष्कर] **कमल।** उ०—पुहुकर पुंडरीक पूरन मानो खंजन केलि खगे—पृ० ३५० (६४)।

…ना—क्रि. स. [हिं. पोहना] **गुथवाना, ग्रथित कराना।**

…प—संज्ञा पुं. [सं. पुष्प] **फूल।** उ.—देखि यह सुरनि वर्षा करी पुहुप की—७-६।

…माल पहुपमाला—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुहुप+माला] **फूलों की माला।** उ.—बीच माली मिल्यौ, दौरि चरननि पर्‌यौ, पुहुपमाला स्याम-कंठ धार्‌यौ-२५८८।

…पावलि—संज्ञा स्त्री. [सं. पुष्पावली] **पुष्पों की राशि।** उ.—छाल सुगंध सेज पुहुपावलि हारु छुए ते हिय हारु जरैगौ—२८७०।

…मि, पुहुमी—संज्ञा स्त्री. [सं. भूमि] **पृथ्वी।** उ.—(क) तब न कंस निग्रह्यौ पुहुमि को भार उतार्‌यौ—११३६। (ख) चोंच एक पुहुमी लगाई, इक अकास समाई—४२७।

…रेनु—संज्ञा पुं. [सं. पुष्परेणु] **फूल का पराग।**

…—संज्ञा स्त्री [सं. पुच्छ] (१) **दुम, पुच्छ, लांगूल।** (२) **पिछला भाग।** (३) **पीछे लगा रहनेवाला, पिछलग्गा।**

…जी—संज्ञा स्त्री. [सं. पुंज] (१) **संचित धन संपत्ति।** (२) **मूलधन।** (३) **रुपया-पैसा।** (४) **विषय की जानकारी।** (५) **पुंज, समूह।**

पूँठ—संज्ञा स्त्री. [सं. पृष्ठ] **पीठ।**

पूआ—संज्ञा पुं. [सं. पूव] **मीठी पूरी, मालपुआ।** उ.—दोना मेलि धरे हैं खूआ। हौंस होइ तौ ल्याऊँ पूआ—३६६।

पूगफल, पूगीफल—संज्ञा पुं. [सं. पूगफल] **सुपारी।**

पूछ—संज्ञा स्त्री. [हिं. पूछना] (१) **पूछने का भाव।** (२) **चाह, जरूरत।** (३) **आदर, आवभगत।**

पूछगाछ, पूछताछ—संज्ञा स्त्री. [हिं. पूछना] **जाँच-पड़ताल।**

पूछत—क्रि. स. [हिं. पूछना] **पूछता है, जाँच-पड़ताल करता हूँ।** उ.—जाति-पाँति कोइ पूछत नाहीं श्रीपति कैं दरबार—१-२३१।

पूछन—क्रि. स. [हिं. पूछना] **पूछना, जिज्ञासा करना।**

प्र.—पूछन लागे—**पूछने लगे।** उ.—बानी सुनि बलि पूछन लागे, इहाँ बिप्र कत आवन—८-१३।

पूछना—क्रि. स. [सं. पृच्छण] (१) **जिज्ञासा करना।** (२) **खोज-खबर लेना।** (३) **आदर-सत्कार करना।** (४) **आश्रय देना।** (५) **ध्यान देना।**

पूज—वि. [सं. पूज्य] **पूजने योग्य, पूजनीय।**

संज्ञा पुं.—**देवता।**

संज्ञा स्त्री. [सं. पूजन] **शुभ कर्म के पूर्व गणेश का पूजन।**

पूजक—वि. [सं.] **पूजा करनेवाला।**

पूजत—क्रि. स. [हिं. पूजना] **पूजा करता है, देवी देवता के प्रति श्रद्धा प्रकट करता है।** उ.—फल माँगत फिरि जात मुकर ह्वै, यह देवन की रीति। एकनि कौं जिय-बलि दै पूजे, पूजत नैंकु न तूटे—१-१७७।

क्रि. अ.—**बराबर होते हैं, समान है।** उ.—ये सब पतित न पूजत मों सम, जिते पतित तुम हारे—१-१७६।

पूजतिं—क्रि. स. [हिं. पूजना] **पूजा करती हैं।** उ.—गौरी-पति पूजतिं ब्रजनारी—७६६।

पूजन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवी-देवता की सेवा, वंदना या अर्चना।** (२) **आदर, सम्मान।**

पूजना—क्रि. स. [सं. पूजन] (१) **देवी-देवता की सेवा, वंदना या अर्चना करना।** (२) **आदर-सत्कार करना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रि. अ. [सं. पूर्यंते, प्रा. पूज्जति] (१) **भरना, बराबर हो जाना । (२) गहरे स्थान का भरकर समतल हो जाना । (३) चुकता हो जाना । (४) बीतना, समाप्त होना ।**

पूजनीय— वि. [सं.] (१) **पूजने-योग्य । (२) आदरणीय ।**

पूजहु—क्रि. स. [हिं. पूजना] **पूजा करो ।** उ.—अब तुम भवन जाहु पति पूजहु परमेश्वर की नाईं—पृ. ३४१ (७०) ।

पूजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **देवी-देवता की-वंदना अर्चना ।** उ.—जोग न जुक्ति, ध्यान नहिं पूजा बिरध भएँ पछितात—२-२२ । (२) **देवी-देवता पर जल, फल-फूल आदि चढ़ाना । (३) आदर-सत्कार, आवभगत । (४) प्रसन्न करने का प्रयत्न करना । (५) ताड़ना, दंड ।** उ.—(क) करन देहु इनकी मोहिं पूजा, चोरी प्रगटत नाम—३७६ । (ख) सूर सबै जुबतिन के देखत पूजा करौं बनाइ—११२५ ।

पूजि—क्रि. स. [हिं. पूजना] **पूरा करके, बहुत अधिक भरकर, बराबर करके ।** उ.—करत बिबस्त्र द्रुपद-तनया कौं सरन सब्द कहि आयौ । पूजि अनंत कोटि बसननि हरि, अरि कौ गर्ब गँवायौ—१-१६० ।

पूजित—वि. [सं.] **जिसकी पूजा की गयी हो ।**

पूजे—क्रि. स. [हिं. पूजना] **किसी देवी-देवता की वंदना के लिए कोई कार्य किया, अर्चना की ।** उ.—एकनि कौं जिय-बलि दै पूजे, पूजत नैंकु न तूठे—१-१७७ ।

पूजै—क्रि. स. [हिं. पूजना] **पूजा करे ।** उ.—(क) जो ऊजर खेरे के देवन को पूजै को मानै—३४०६ । (ख) नँदनंदन ब्रत छाँड़ि कै को लखि पूजै भीति—३४४३ ।

क्रि. अ.—**बराबरी, समता या तुलना कर सके, बराबर, समान या तुल्य हो सके ।** उ.—(क) राम-नाम-सरि तऊ न पूजै जौ तनु गारौ जाइ हिवार—२-३ । (ख) नान्हीं एड़ियनि अरुनता, फल-बिंब न पूजै—१०-१३४ ।

पूजौ—क्रि. अ. [हिं. पूजना] **समान, तुल्य या बराबर हो सका ।** उ.—हिरन्याच्छ इक भयौ, हिरनकस्यप भयौ दूजौ । तिन के बल कौं इंद्र, बरुन, कोऊ नाहिं पूजौ—३-११ ।

पूज्य—वि. [सं.] **पूजनीय, माननीय ।**

पूज्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पूज्य या मान्य होने का भाव ।**

पूज्यपाद—वि. [सं.] **बहुत पूज्य या मान्य ।**

पूज्यमान—वि. [सं.] **जो पूजा जा रहा हो ।**

पूज्यो, पूज्यौ—क्रि. स. [हिं. पूजना] **पूजा की ।** उ.—कालिहिं पूज्यौ फल्यौ बिहाने—१०५१ ।

पूठि—संज्ञा स्त्री. [सं. पृष्ठ] **पीठ ।**

पूत—वि. [सं.] **शुद्ध, पवित्र ।**

संज्ञा पुं. [सं. पुत्र, प्रा. पुत्त] **बेटा, पुत्र ।**

पूतना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक दानवी जो कंस की आज्ञा से, स्तनों पर विष मलकर, बालकृष्ण को मारने आयी थी । श्रीकृष्ण ने इसका रक्त चूसकर इसी को मार डाला था ।**

पूतमति—वि. [सं.] **पवित्र या शुद्ध चित्तवाला ।**

पूतरा—संज्ञा—पुं. [हिं. पुतला] **पुतला ।**

संज्ञा पुं. [सं. पुत्र] **पुत्र, बाल, बच्चा ।**

पूतरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुतली] **पुतली, गुड़िया ।** उ.—(क) ऐपन की सी पूतरी (सब) सखियनि कियौ सिंगार—१०-४० । (ख) इक टक भईं चित्र पूतरि ज्यों जीवनि की नहिं आश—२०५२ । (ग) एं सब भईं चित्र की पुतरी सून सरीरहिं डाहत—३०६५ ।

पूतात्मा—संज्ञा पुं. [सं. पूतात्मन्] **जिसका अंतःकरण शुद्ध हो ।**

पूतैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. पूत] **पुत्र को, बेटे को ।** उ.—मै हूँ अपनैं औरस पूतैं बहुत दिननि मैं पायौ—१०-३३६ ।

पून—संज्ञा पुं. [सं. पुण्य] **धर्म-कार्य, पुण्य ।**

संज्ञा पुं. [सं. पूर्ण] **पूर्ण ।**

पूनव, पूनिउँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. पूनो] **पूर्णिमा ।**

पूनी—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंजिका] **धुनकी हुई रुई की मोटी बत्ती ।**

पूनो, पून्यो, पून्यौ—संज्ञा स्त्री. [सं. पूर्णिमा] **पूर्णिमा ।** उ.—(क) चैत्र मास पूनो को सुभ दिन सुभ नच्छत्र सुभ बार—सारा. ६४१ । (ख) पून्यौ प्रगटी प्रानपति हरि होरी है—२४२२ ।

पूप—संज्ञा पुं. [सं.] **पूआ, मालपूआ ।**

पूपला, पपली—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक मीठा पकवान ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...—संज्ञा स्त्री. [देश.] **पोली नली ।**

...—संज्ञा पुं. [सं.] **पीप, मवाद ।** उ.—बिषयी भजे, बिरक्त न सेए, मन धन-धाम धरे । ज्यों माखी, मृग मद-मंडित तन परिहरि पूय परै—१-१६८ ।

...—संज्ञा पुं. [सं.] **घाव भरना ।**

वि. [सं. पूर्ण] **पूर्ण, भरापूरा ।**

...—वि. [सं.] **पूर्ति करनेवाला ।**

...संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्राणायाम विधि के तीन भागों में पहला ।** उ.—सब आसन रेचक अरु पूरक कुंभक सीखे पाइ—३१३४ । (२) **मृतक के दसवें को दिये जानेवाले दस पिंड ।**

...—संज्ञा पुं. [सं. पूर्ण] (१) **भरने या पूर्ण करने की क्रिया ।** (२) **समाप्त करने की क्रिया ।** (३) **सेतु ।**

बि.—**पूरा करनेवाला, पूरक ।**

वि. [सं. पूर्ण] **पूर्ण ।** उ.—सूर पूरण ब्रह्म निगम नाहीं गम्य तिनहिं अक्रूर मन यह बिचारै—२५५१ ।

...काम—वि. [सं. पूर्णकाम] (१) **जिसकी सब इच्छाएँ पूरी हो गयी हों ।** (२) **कामनारहित, निष्काम ।**

...ता—संज्ञा स्त्री. [सं. पूर्णता] **पूर्ण होने का भाव ।** उ.—पूरणता तो तबहीं बूड़ी संग गए लै चित को—३३३६ ।

...—क्रि. स. [हिं. पूरना] **बजाते हैं ।** उ.—सूर स्याम बंशी ध्वनि पूरत श्रीराधा राधा लै नाम—१३२७ ।

...—वि. [सं. पूरण] (१) **(इच्छा, मनोरथ, आदि) पूर्ण करनेवाले, पूरा करनेवाले ।** उ.—कहा कमी जाके राम धनी । मनसा नाथ, मनोरथ-पूरन, सुखनिधान जाकी मौज घनी—१-३६ । (२) **युक्त, सहित ।** उ.—गायौ स्वपच परम अघ पूरन, सुत पायौ बाम्हन रे—१-६६ । (३) **पूर्ण, जिसमें कोई कमी न हो ।** उ.—तुम सर्वज्ञ सबै बिधि पूरन अखिल भुवन निज नाथ—१-१०३ ।

संज्ञा पुं.—**एक प्रकार का मीठा या नमकीन चूर्ण जो गुझिया, समोसे आदि में भरा जाता है ।** उ.—...बहु पूरन पूरे—१०-१८३ ।

...काम—वि. [सं. पूर्णकाम] **निष्काम ।**

...ता—संज्ञा स्त्री. [सं. पूर्णता] **पूर्ण होने का भाव ।**

पूरनपरब—संज्ञा पुं. [सं. पूर्ण+पर्व] **पूर्णिमा ।**

पूरना—क्रि. स. [सं. पूरण] (१) **खाली जगह भरना ।** (२) **ढाँकना ।** (३) **मनोरथ सफल या पूर्ण करना ।** (४) **मंगल अवसर पर देव-पूजन के लिए चौक आदि बनाना ।** (५) **बटकर तैयार करना ।** (६) **बजाना, फूँकना ।**

क्रि. अ.—**भर जाना, पूर्ण हो जाना ।**

पूरनाहुती—संज्ञा स्त्री [सं. पूर्ण+आहुति] **यज्ञ की अंतिम आहुति, जिसे देकर होम समाप्त करते हैं ।** उ.—नृप कह्यौ, इन्द्रपुर की न इच्छा हमें, रिषिनि तब पूरनाहुती दीयौ ४-११ ।

पूरब—संज्ञा पुं. [सं. पूर्व] **पूर्व या प्राची दिशा ।**

वि.—**पहले का ।** उ.—जज्ञ करइ प्रयाग न्हवायौ तौहूँ पूरब तन नहिं पायौ—६-८ ।

क्रि. वि.—**पहले, पहले ही ।**

पूरबल—संज्ञा पुं. [हिं. पूरबला] (१) **पूर्वकाल ।** (२) **पूर्वजन्म ।**

पूरबला—वि. [सं. पूर्व+हिं. ला] (१) **पुराना ।** (२) **पूर्वजन्म का ।**

पूरबली—वि. [हिं. पूरबला] **पूर्वजन्म की ।** उ.—लंका दई बिभीषन जन कौं पूरबली पहिचानि—१-१३५ ।

पूरबिया, पूरबी—संज्ञा पुं. [हिं. पूरब] **एक प्रकार का दादरा ।**

संज्ञा स्त्री.—**'पूर्वी' नामक रागिनी ।** उ.—सारंग नट पूरबी मिलै कै राग अनूपम गाऊँ—पृ०३११(११) ।

वि.—**पूरब का, पूरब संबंधी ।**

पूरा—वि. [सं. पूर्ण] (१) **भरा हुआ ।** (२) **समूचा, सारा ।** (३) **जिसमें कोई कमी या कसर न हो ।** ४) **काफी ।**

मुहा०—पूरा पड़ना—(१) **काम पूरा हो जाना ।** (२) **सामग्री आदि न घटना, अँट जाना ।** (३) **जीवन निर्वाह होना ।**

(५) **संपादित, कृत, संपन्न ।** (६) **तुष्ट ।**

पूरिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कचौड़ी ।**

पूरित—वि. [सं.] (१) **भरा हुआ ।** (२) **तृप्त ।**

पूरी—वि. स्त्री. [हिं. पूरा] **भरी-पुरी, पूर्ण ।**

संज्ञा स्त्री—[सं. पूलिका] (१) **तली या घी में**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतारी हुई रोटी। उ.—सद परसि धरी घृत-पूरी। (३) **ढोल आदि पर मढ़ा हुआ चमड़ा।**

पूरे—क्रि. स. [हिं. पूरना] **पूरा किया, भर दिया, बहुत अधिक एकत्र किया।** उ.—(क) दुखित द्रौपदी जानि जगतपति, आए खगपति त्याज। पूरे चीर भीरु तन कृष्ना, ताके भरे जहाज—१-२५५। (ख) पूरे चीर, अंत नहिं पायौ, दुरमति हारि लही—१-२५८।

वि.—**भरे हुए।** उ.—गूफा बहु पूरन पूरे—१०-१८३।

पूरै—क्रि. स. [हिं. पूरना] **बजाते हैं।** उ.—कोउ मुरली कोउ बेनु सब्द सृंगी कोउ पूरैं—४३१।

पूरै—क्रि. अ. [हिं. पूरना] **नाप में पूरी हुई।** उ.—बाँधि पची डोरी नहिं पूरै—३९१।

पूरौ—वि. [हिं. पूरा] (१) **पूरा, संपूर्ण, जिसमें कमी या कसर न हो।** उ.—जौ रीझत नहिं नाथ गुसाईं, तौ कत जात जँच्यौ। इतनी कहौ, सूर पूरौ दै, काहैं मरत पच्यौ—१-१७४। (२) **संपन्न, संपादित, कृत।**

मुहा०—पूरौ पायौ—**पूरी सफलता मिली, अच्छी तरह काम हुआ।** उ.—सूर अनेक देह धरि भूतल, नाना भाव दिखायौ। नाच्यौ नाच लच्छ चौरासी, कबहूँ न पूरौ पायौ—१-२०५।

पूर्ण—वि. [सं.] (१) **भरा हुआ, पूरित।** (२) **जिसकी कोई इच्छा या कमी न हो।** (३) **भरपूर।** (४) **समूचा, सारा।** (५) **सब का सब।** (६) **सिद्ध, सफल।** (७) **समाप्त।**

पूर्णकाम—वि. [सं.] **जिसकी कोई कामना न हो।**

पूर्णतया—क्रि. वि. [सं.] **पूरी तरह से।**

पूर्णतः—क्रि. वि. [सं.] **पूरी तौर से।**

पूर्णता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पूर्ण होने का भाव।**

पूर्णमासी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पूर्णिमा।**

पूर्णावतार—संज्ञा पुं. [सं.] **सोलह कलाओं के अवतार।**

पूर्णाहुति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **यज्ञ की अंतिम आहुति।** (२) **किसी कार्य की समाप्ति।**

पूर्णिमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **शुक्ल पक्ष का अंतिम दिन जब पूर्ण चंद्रोदय होता है।**

पूर्णेन्दु—संज्ञा पुं. [सं.] **पूर्णिमा का पूर्ण चंद्र।**

पूर्णोपमा—संज्ञा पुं. [सं.] **वह उपमा जिसमें उसके चारो अंग—उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म—हों।**

पूर्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कार्य की समाप्ति।** (२) **पूर्णता।** (३) **कमी या अभाव को पूरा करने की क्रिया।** (४) **भरने का भाव।**

पूर्नता—संज्ञा स्त्री. [सं. पूर्णता] **पूर्ण होना, पूर्णता।** उ.—सेसनाग के ऊपर पौढ़त तेतिक नाहिं बड़ाई। जातुधानि-कुच-गर मर्षत तब, तहाँ पूर्नता पाई—१-२१५।

पूर्व—संज्ञा पुं. [सं.] **पश्चिम के सामने की दिशा।**

वि.—(१) **पहले का।** (२) **पुराना।** (३) **पिछला।**

क्रि. वि.—**पहले।**

पूर्वक—क्रि. वि. [सं.] **साथ, सहित।**

पूर्वकालिक—वि. [सं.] **पूर्वकाल का, पूर्वकाल-संबंधी।**

पूर्वकालिक क्रिया—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल, दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले पड़ता हो।**

पूर्वज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अग्रज।** (२) **पुरखा।**

वि.—**पूर्वकाल में जन्मा हुआ।**

पूर्वराग—संज्ञा पुं. [सं.] **नायक-नायिका में संयोग के पूर्व ही प्रेम होने की स्थिति।**

पूर्ववत्—क्रि. वि. [सं.] **पहले की तरह।**

पूर्ववर्ती—वि. [सं. पूर्ववर्तिन्] **जो पहले रहा हो।**

पूर्वा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पूर्व दिशा।** (२) **२७ नक्षत्रों में से ग्यारहवाँ।**

पूर्वानुराग—संज्ञा पुं. [सं.] **नायक-नायिका के मिलने के पूर्व प्रेम होना।**

पूर्वापर—क्रि. वि. [सं.] **आगे पीछे।**

वि—**आगे और पीछे का।**

पूर्वाफाल्गुनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **ग्यारहवाँ नक्षत्र।**

पूर्वाभाद्रपद—संज्ञा पु. [सं.] **पचीसवाँ नक्षत्र।**

पूर्वार्द्ध—संज्ञा पुं. [सं.] **आरंभ का आधा भाग।**

पूर्वाषाढ़—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बीसवाँ नक्षत्र।**

पूर्वाह्न—संज्ञा पुं. [सं.] **सबेरे से दोपहर तक का काल।**

पूर्वी—वि. [सं. पूर्वीय] **पूर्व दिशा-संबंधी।**

पूर्वोक्त—वि. [सं.] **पहले कहा हुआ।**

पूला—संज्ञा पुं. [सं. पूलक] **पूला, गट्ठा।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूषण—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य ।
पूस—संज्ञा पुं. [सं. पौष, पूष] अगहन के बाद का मास ।
पृथक्—वि. [सं.] भिन्न, अलग ।
पृथा—संज्ञा स्त्री. [सं.] 'कुन्ती' का दूसरा नाम ।
पृथिवी—संज्ञा स्त्री. [सं. पृथ्वी] भू, भूमि ।
पृथिवीपति, पृथिवीपाल—संज्ञा पुं. [सं.] राजा ।
पृथु—संज्ञा पुं. [सं.] वेणु के पुत्र जिनकी उत्पत्ति पिता के मृत शरीर को हिलाने से हुई थी ।
 वि.—(१) मोटा, चौड़ा, मांसल । उ.—पृथु नितंब कर भीर कमलपद नखमनि चंद्र अनूप—पृ० ३५० (६४) । (२) महान् । (३) असंख्य । (४) चतुर ।
पृथी—संज्ञा स्त्री. [सं. पृथ्वी] पृथ्वी, धरणी, धरती । उ.—हिरन्याच्छ तब पृथी कौं लें राख्यौ पाताल ।.......। तब हरि धरि बाराह बपु, ल्याए पृथी उठाइ—३-११ ।
पृथ्वी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) भूमि, धरती । (२) पंच भूतों या तत्वों में एक जिसका प्रधान गुण गन्ध है । (३) मिट्टी ।
पृथ्वीतल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) धरातल । (२) संसार ।
पृथ्वीधर्—संज्ञा पुं. [सं.] पर्वत, पहाड़ ।
पृथ्वीपति, पृथ्वीपाल—संज्ञा पुं. [सं.] राजा । उ.—उतानपाद पृथ्वीपति भयौ—४-६ ।
पृश्नि—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक राजा की रानी का नाम जिसके गर्भ से श्रीकृष्ण जन्मे थे । उ.—पृस्नी गर्भ देव-ब्राह्मन जो कृष्ण रूप रंग भीन्हों—सारा० ३६७ ।
पृश्निगर्भ—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण ।
पृष्ट—वि. [सं.] जो पूछा गया हो ।
पृष्ठ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पीठ । (२) पीछे का भाग । (३) पुस्तक का पन्ना ।
पृष्ठपोषक—संज्ञा पुं. [सं.] सहायक, समर्थक ।
पृष्ठभाग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पीठ, पुश्त । (२) कंधा । उ.—पृष्ठभाग चढ़ि जनक-नंदिनी, पौरुष देखि हमार—६-८६ ।
पेंग—संज्ञा स्त्री. [हिं० पटेंग] (१) झूले को बढ़ाने के लिए दिया गया तेज झोंका । (२) झूले का एक ओर से दूसरी ओर को तेजी से जाना ।
पेंच—संज्ञा पं. [हिं. पेच] पगड़ी का फेरा । उ.—लटपट पेंच सँवारति प्यारी अलक सँवारत नंदकुमार—१६०६ ।
पेंदा—संज्ञा पुं. [सं. पिंड] निचला भाग या तला ।
पेखक—वि. [सं. प्रेक्षक, प्रा. प्रेक्खक] देखनेवाला ।
पेखत—क्रि. स. [हिं. पेखना] देखता है । उ.—मनौकमल-दल सावक पेखत, उड़त मधुप छवि न्यारी—१०-६१ ।
पेखन—संज्ञा स्त्री. [हिं. पेखना] देखने की क्रिया । उ.—मल्लजुद्ध नाना विधि क्रीड़ा, राजद्वार को पेखन—सारा. ५०८ ।
पेखना—क्रि. स. [सं. प्रेक्षण, प्रा. पेक्खण] देखना ।
पेखा—क्रि. स. [हिं. पेखना] देखा । उ.—बैठी सकुचि, निकट पति बोल्यौ, दुहुँनि पुत्र-मुख पेखा—१०-४ ।
पेखि—क्रि. स. [हिं. पेखना] देखकर । उ.—प्राची दिखा पेखि पूरण ससि ह्वै आयौ तातौं—१० उ०-१०० ।
पेखी—क्रि. स. [हिं. पेखना] देखी । उ.—दधि बेचन जब जात मधुपुरी मैं नीके करि पेखी—२८७८ ।
पेखे—क्रि. स. [हिं. पेखना] देखा । उ.—बलमोहन को तहाँ न पेखे—२६६० ।
पेखै—क्रि. स. [हिं. पेखना] देखता है । उ.—कहुँ कछु लीला करत कहूँ कछु लीला पेखै—१० उ० ४७ ।
पेखो—क्रि. स. [हिं. पेखना] देखो । उ.—कहति रही तब राधिका जब हरि संग पेखो—१५२८ ।
पेखौं—क्रि. स. [हिं. पेखना] देखती हूँ । उ.—ज्ञानियनि मैं न आचार पेखौं—८-८ ।
पेख्यो, पेख्यौ—क्रि. स. [हिं. पेखना] देखी । उ.—जैसोई स्याम बलराम श्री स्यंदन चढ़े वहै छवि कुँवर सर माँझ पेख्यौ—२५५४ ।
पेच—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) लपेट । (२) झंझट । (३) चालाकी । (४) पगड़ी की लपेट । उ.—छूटे बंदन अरु पाग की बाँधनि छुटी लटपटे पेच अटपटे दिए—२००६ । (५) कुश्ती में पछाड़ने की युक्ति । (६) युक्ति । (७) एक आभूषण जो पगड़ी में खोंसा जाता है, सिरपेच । (८) कान का एक आभूषण ।
पेचीला—वि. [हिं. पेच + ईला] (१) बहुत घुमाव-फिराव या पेच वाला । (२) बड़ी उलझन वाला ।
पेट—संज्ञा पुं. [सं. पेटथैला] (१) उदर ।
 पेट का कुत्ता—भोजन के लिए सब कुछ करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला। पेट काटना—**बचत के लिए कम खाना या खिलाना।** पेट का पानी न पचना—**रह न पाना, कल न पड़ना।** पेट का पानी न हिलना—**जरा भी मेहनत न पड़ना।** पेट का हलका—**जिसमें गंभीरता न हो।** पेट की आग—**भूख।** पेट की आग बुझाना—**भूख दूर करना।** पेट की बात—**गुप्त भेद।** पेट की मार देना (मारना)—(१) **भोजन न देना।** (२) **जीविका ले लेना।** पेट के लिए दौड़ना—**जीविका के लिये ही परिश्रम करना।** पेट को धोखा देना—**बचत के लिए कम खाना या खिलाना।** पेट दिखलाना—(१) **दीनता दिखाना।** (२) **भूखे होने का संकेत करना।** पेट को लगना—**भूख लगना।** पेट जलना—(१) **बहुत भूख लगना।** (२) **बहुत-असंतुष्ट होना।** पेट दिखाना—**भूखे होने का संकेत करना।** पेट देना—**मन की बात बताना।** पेट दियो—**मन का भेद बता दिया।** उ.—अपनो पेट दियौ तैं उनको नाक बुद्धि तिय सबै कहैं री—१६६०। पेट पाटना—**अच्छा-बुरा खाकर पेट भर लेना।** पेट पालना—**जीवन निर्वाह करना।** पेट पीठ एक हो (से लगना) जाना—(१) **बहुत दुबला होना।** (२) **बहुत भूखा होना।** पेट फूलना—**भेद बताने के लिए बहुत व्याकुल होना।** पेट मारना—**बचत के लिए कम खाना।** पेट मारकर मरना—**आत्मघात करना।** पेट में आँत न मुँह में दाँत—**बहुत बूढ़ा।** पेट में खलबली पड़ना—**बहुत चिंता या घबराहट होना।** पेट में चूहे कूदना (दौड़ना) या (चूहों का कलाबाजी खाना)—**बहुत भूख लगना।** पेट में दाढ़ी होना—**बचपन में ही बहुत चालाक होना।** पेट में डालना—**खा लेना।** पेट में दाँत या पाँव होना—**बहुत चालबाज होना।** पेट में होना—**गुप्त रूप से होना।** पेट मोटा हो जाना—**बहुत रिश्वत लेना।** पेट लगना (लग जाना)—**बहुत भूखा होना।** पेट से पाँव निकालना—(१) **कुमार्ग में लगना।** (२) **बहुत इतराना।** एक ही पेट के होना—**समान प्रकृति या स्वभाव के होना।** उ.—ए सब दुष्ट हने हरि जेते भए एक ही पेट—२७०३। भरि पेट—**जी भर कर।** उ.—होड़ा-होड़ी मनहिं भावते किए पाप भरि पेट—१-१४६।

(२) **गर्भ।**

मुहा०—पेट की आग—**संतान की ममता।** पेट ठंढा होना—**संतान का जीवित और सुखी रहना।**

(३) **मन, अंतःकरण।**

मुहा०—पेट में घुसना—**भेद लेने के लिए मेल-जोल बढ़ाना।** पेट में डालना—**बात मन में रखना।** पेट में पैठना (बैठना)—**भेद लेने को मेल-जोल बढ़ाना।** पेट में होना—**मन में होना।**

(४) **वस्तु का भीतरी भाग।** (५) **गुंजाइश, समाई।** (६) **रोजी, जीविका।**

पेटागि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पेट+आग] **भूख।**

पेटार, पेटारा—संज्ञा पुं. [सं. पेटक] **पिटारा।**

पेटारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिटारा] **छोटी पिटारी।**

पेटिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पिटारी।** (२) **संदूक।**

पेटी—संज्ञा स्त्री. [सं. पेटिका] (१) **छोटा संदूक।** (२) **पेट का वह स्थान जहाँ त्रिबली होती है।** (३) **कमरबंद।**

पेटू—वि. [हिं. पेट] **बहुत खानेवाला।**

पेठा—संज्ञा पुं. [देश.] **सफेद रंग का कुम्हड़ा जिसका प्रायः मुरब्बा बनता है।**

पेठापाक—संज्ञा पुं. [देश. पेठा+सं. पाक] **पेठे का मुरब्बा।** उ.—पेठापाक, जलेबी, कौरी, । गोंदपाक, तिनगरी, गिंदौरी—१०-३९६।

पेड़—संज्ञा पुं. [सं.] **वृक्ष, दरख्त।**

पेड़ा—संज्ञा पुं. [सं. पिंड] **खोए की एक मिठाई।**

पेड़ि—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंड, हिं. पेड़ी] (१) **वृक्ष की पींड़, पेड़ का तना।** (२) **जड़।** उ.—कहौ तौ सैल उपारि पेड़ि तैं, दै सुमेरु सौं मारौं—९-१०७।

पेड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंड] (१) **वृक्ष का तना।** (२) **मनुष्य का धड़।** (३) **छोटा पेड़ा।**

पेड़ू—संज्ञा पुं. [सं. पेंट] (१) **नाभि के कुछ नीचे का स्थान।** (२) **गर्भाशय।**

पेन्हाना—क्रि. स. [हिं. पहनाना] **वस्त्राभूषण पहनाना।**

क्रि. अ.—[सं. पयःस्रवन, प्रा. पहण्णवन] **पशु के थन में दूध उतरना।**

पेम—संज्ञा पुं. [सं. प्रेम] **प्रीति, प्रेम।**

पेय—वि. [सं.] **पीने योग्य, जो पिया जा सके।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा पुं.—(१) **पीने की वस्तु**। (२) **जल**। (३) **दूध**।

...यूष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गाय के ब्याने के सात दिन बाद तक का दूध**। (२) **अमृत**। (३ **ताजा घी**।

...लना—क्रि. स. [सं. पीड़न] (१) **दबाकर रस निकालना**। (२) **कष्ट देना, सताना**। (३) **काम में बहुत देर लगाना**।

क्रि. स. [सं. प्रेरण] (१) **प्रेरणा करना**। (२) **भेजना**।

...वा, पेरवाइ—संज्ञा पुं. [हिं. पेरना] **पेरनेवाला**।

...री—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीली] **पीली रँगी धोती**।

...ल—संज्ञा पुं. [हिं. पेला] **बखेड़ा, झगड़ा, तकरार**। उ.—सखा जीतत स्याम जाने तक करी कछु पेल—१०-२४४।

...लना—क्रि. स. [सं. पीड़न] (१) **दबाकर धँसाना या ठेलना**। (२) **धक्का देना**। (३) **टाल देना**। (४) **फेंकना, त्यागना**। (५) **बल का प्रयोग करना**। (६) **प्रविष्ट करना, घुसेड़ना**।

क्रि. स.—[सं. प्रेरण] **आक्रमण के लिए बढ़ाना**।

...ला—संज्ञा पुं. [हिं. पेलना] (१) **झगड़ा, तकरार**। उ.—पेलो करति देते नहिं नीके तुम हो बड़ी बँजारिनि। (२) **अपराध, कसूर**। (३) **धावा, आक्रमण**। (४) **पेलने की क्रिया या भाव**।

...लि—क्रि. स. [हिं. पेलना] (१) **आक्रमण के लिए बढ़ा दिया**। उ.—घात मन करन लै डारिहौं दुहुँनि पर दियो गज पेलि आपुन हँकारयौं—२५६२। (२) **जबरदस्ती**। उ.—एक दिवस हरि खेलत मो सँग झगरौ कीन्हौं पेलि—२६२७। (३) **अवज्ञा करके**। उ.—इंद्रहि पेलि करी गिरि पूजा सलिल बरषि ब्रज नाऊँ मिटावहिं—६४७।

...ली—संज्ञा पुं. [हिं. पेलना, पेला] **अवज्ञा करके लाँघी**। उ.—रावन भेष धर्यौ तपसी कौ, कत मैं भिच्छा मेली। अति अज्ञान मूढ़-मति मेरी, राम-रेख पग पेली—९-६४।

...लौ—क्रि० स. [हिं. पेलना] **टालो, अवज्ञा करो, अस्वीकार करो**। उ.—बोलि लेहु सब सखा संग के मेरौ कह्यौ कबहुँ जिनि पेलौ—३६६।

पेश—क्रि. वि. [फ़ा.] **सामने, आगे**।

पेशकश—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **भेंट, सौगात, उपहार**।

पेशगी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **अग्रिम दिया गया धन**।

पेशल—वि. [सं.] (१) **सुन्दर, कोमल**। (२) **चालाक**।

पेशवा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **नेता, सरदार**।

पेशवाई—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **स्वागत, अगवानी**।

पेशवाज—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. पेशवाज़] **नर्तकी का घाँघरा**।

पेशा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **उद्यम, व्यवसाय**।

पेशानी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **भाल, ललाट**। (२) **भाग्य**। (३) **किसी वस्तु का ऊपरी और आगे का भाग**।

पेशी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **मुकदमे की सुनवाई**।

पेशीनगोई—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **भविष्यवाणी**।

पेश्तर—क्रि. वि. [फ़ा.] **पहले, पूर्व**।

पेषना—क्रि. स. [हिं. पेखना] **देखना**।

पेस—क्रि. वि. [फ़ा. पेश] **सामने, आगे**।

पैं—प्रत्य. [हिं. ऊपर] **करणसूचक विभक्ति, से, द्वारा**। उ.—जाँचक पैं जाँचक कह जाँचै ? जो जाँचै तौ रसना हारी—१-३४।

पैंकड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. पैर+कड़ा] (१) **पैर का कड़ा**। (२) **बेड़ी, बंधन**।

पैंचा—संज्ञा पुं. [देश.] **हेर-फेर, पलटा**।

पैंजना—संज्ञा पुं. [हिं. पैर+बजना] **पैर का एक गहना**।

पैंजनि, पैंजनियाँ, पैंजनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पैंजना] **पैर में पहनने का झांझ की तरह का एक गहना जो झुनझुन बोलता है**। उ.—कटि किंकिनि, पग पैंजनि बाजै—१०-११७।

पैंठ—संज्ञा स्त्री. [सं. पण्यस्थान, प्रा. पण्णट्ठा, अप पइँट्ठा] (१) **हाट, बाजार** (२) **राजपथ, मार्ग**। उ.—होतौ नफा साधु की संगति, मूल गाँठि नहिं टरतौ। सूरदास बैकुंठ-पैंठ मैं, कोउ न फैंट पकरतौ—१-२६७। (३) **हट्टी, दूकान**। उ.—ऊधौ तुम ब्रज मैं पैंठ करी। लै आए हो नफा जानिकै सबै बस्तु अकरी—३१०४। (४) **हाट का दिन**।

पैंठौर—संज्ञा पुं. [हिं. पैंठ+ठौर] **दूकान**।

पैंड़—संज्ञा पुं. [हिं. पायँ+ड़ (प्रत्य.) अथवा सं. पाददंड, प्रा. पायडंड] (१) **डग, पग, कदम**। उ.—(क)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीनि पैंड़ बसुधा हौं चाहौं, परनकुटी कौं छावन—८-१३। (ख) जै-जैकार भयौ भुव मापत, तीनि पैंड़ भई सारी। आध पैंड़ बसुधा दै राजा, ना तरु चलि सत हारी—८-१४। (२) **पथ, मार्ग।**

पैंड़ा, पड़े—संज्ञा पुं. [हिं. पैंड़] (१) **पथ, मार्ग।** उ.—पैंड़े चलत न पावैं कोऊ रोकि रहत लरकन लै डगरी—८५४।

मुहा०—पैंड़े पड़ना (परना)-**बार बार तंग करना।** पैंड़े परे—**पीछे पड़े हैं, तंग करते हैं।** उ.—मानत नाहिं हटकि हारीं हम पैंड़े परे कन्हाई।

(२) **प्रणाली, रीति।** (३) **घुड़साल।**

पैंड़ौ—संज्ञा पुं. [हिं. पैंड़, पैंड़ा] **रास्ता पथ, मार्ग।**

मुहा०—दियौ उन पैंड़ौ—**उन्होंने जाने दिया, आगे बढ़ने का मार्ग दिया।** उ.—तब मैं डरपि कियौ छोटौ तनु पैठ्यौ उदर-मँझारि। खरभर परी, दियौ उन पैंड़ौ, जीती पहिली रारि—६-१०४।

पैंत—संज्ञा स्त्री. [सं. पणकृत, प्रा. पणइत] **बाजी।**

पैंती—संज्ञा स्त्री. [सं. पवित्र, प्रा० पवित्त, पइत्त] (१) **कुश का छल्ला, पवित्री।** (२) **ताँबे आदि की अँगूठी।**

पैंया—संज्ञा स्त्री. [हिं. पायँ] **पैर, पावँ।**

पै—अव्य. [सं. परं] (१) **पर, परंतु, लेकिन।** उ.—बरजत बार-बार हैं तुमकौ पै तुम नेक न मानौ। (२) **पीछे, बाद, अनंतर।** उ.—ऊधौ, स्याम कहा पावैंगे प्रान गए पै आए। (३) **अवश्य, जरूर।** उ.—निस्चय करि सो तरै पै तरै—६-४।

यौ०—जो पै—**यदि, अगर।** तो पै—**तो फिर, उस दशा में।**

अव्य [सं. प्रति, प्रा. पडि, पइ; हिं. पास, पहँ] (१) **पास, समीप, निकट।** उ.—(क) परतिज्ञा राखी मनमोहन फिर तापै पठयौ। (ख) वा पै कही बहुत बिधि-सौं हम नेकु न दीनों कान। (२) **प्रति, ओर।**

प्रत्य. [सं. उपरि, हिं. ऊपर] (१) **पर, ऊपर, अधिकरण-सूचक विभक्ति।** उ.—(क) प्रोइस-अंगनि मिलि प्रजंक पै छ-दस अंक फिरि डारै—१-६०। (ख) निहचै एक असल पै राखै, टरै न कबहूँ टारै—१-१४२। (२) **करण-सूचक विभक्ति, से, द्वारा।** उ.—दीन दयालु कृपालु कृपानिधि कापै कह्यौ परै।

संज्ञा पुं. [सं. पय] (१) **जल।** (२) **दूध।**

पैकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पायँ+कड़ा] **पैर का गहना।**

पैगम्बर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **धर्मप्रवर्तक।**

पैग—संज्ञा पुं. [सं. पदक, प्रा. पअक] **डग, कदम, पग।** उ.—(क) तीन पैग बसुधा दै मोकौं। तहाँ रचौं ध्रमसारी। (ख) कबहुँक तीनि पैग भुव मापत, कबहुँक देहरि उलँघि न जानी—१०-१४४।

पैगाम—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **संदेश, सँदेसा।**

पैज—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतिज्ञा, प्रा. प्रतिज्जा, अप. पइज्जाँ] (१) **प्रतिज्ञा, प्रण, टेक, हठ।** उ.—(क) राखी पैज भक्त भीषम की, पारथ कौ सारथी भयौ—१-२६। (ख) पैज करो हनुमान निसाचर मारि सीय सुधि ल्याऊँ। (ग) पैज करि कही हरि तोहि उबारौं। (२) **प्रतिद्वंद्विता, होड़, लागडाट।** उ.—सहस बरस गज जुद्ध करत भए, छिन इक ध्यान धरै। चक्र धरे बैकुंठ तैं धाए, वाकी पैज सरै—१-८२।

पैजनि, पैजनियाँ, पैजनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पैंजनी] **पैंजनी।** उ.—अरुन चरन नख-जोति, जगमगति, रुन-झुन करति पाइँ पैजनियाँ—१०-१०६।

पैठ—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रविष्ठ, प्रा. पइट्ठ] (१) **प्रवेश।** (२) **पहुँच, आना-जाना।**

पैठना—क्रि. अ. [हिं. पैठ] **प्रवेश करना।**

पैठाना—क्रि. स. [हिं. पैठना] **प्रवेश कराना।**

पैठार—संज्ञा पुं. [हिं. पैठ+आर] (१) **पैठ, प्रवेश।** (२) **प्रवेशद्वार, फाटक।** उ.—सूर प्रभु सहर पैठार पहुँचे आइ धनुष के पास जोधा रखाए—२५६३।

पैठारी—संज्ञा स्त्री [हिं. पैठार] **प्रवेश, गति।**

पैठि—क्रि. अ. [हिं. पैठना] **घुसकर, प्रविष्ट होकर, प्रवेश करके।** उ.—(क) सकल सभा मैं पैठि दुसासन अंबर आनि गह्यौ—१-२४७। (ख) अपने मरबे ते न डरत है पावक पैठि जरै—२८००।

पैठे—क्रि. अ. [हिं. पैठना] **घुसे, प्रविष्ट हुए, प्रवेश किया।** उ.—सुन्दर गऊ रूप हरि कीन्हौ। बछरा करि ब्रह्मा सँग लीन्हौ। अमृत-कुंड मैं पैठे जाइ। कह्यौ असुरनि, मारौ इहिं गाइ—७-७।

पैठ्यो—क्रि. अ. [हिं. पैठना] **घुसा, प्रविष्ट हुआ, प्रवेश**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिया। उ.—(क) धर-अंबर लौं रूप निसाचरि, गरजी बदन पसारि। तब मैं डरपि कियौ छोटौ तनु, पैठयो उदर-मँझारि—९-१०४ । (ख) अंचल गाँठि दई, दुख भाज्यौ, सुख जु आनि उर पैठयो—९-१६४।

—संज्ञा स्त्री. [हिं. पैर] **सीढ़ी, जीना।**

—संज्ञा पुं. [हिं. पैड़, पैंड़ा] **रास्ता, पथ, मार्ग।** उ.—सूर स्याम पाए पैड़े में, ज्यौं पावै निधि रंक परी—१०-८०।

मुहा०—पैड़े परे—**पीछे पड़े हैं, बहुत तंग करते हैं।** उ.—मानत नाहिं हटकि हारी हम पैंड़े परे कन्हाई।

—संज्ञा पुं. [सं. पदांतर, प्रा. पयांतर] (१) **वार करने या बचाने की मुद्रा।** (२) **पद-चिह्न।**

—वि. [हिं. पायँ+थल] **उथला, छिछला।**

—संज्ञा पुं. [देश.] **कृष्ण का सखा एक गोप।** उ.—रैता, पैता, मना, मनसुखा, हलधर संगहिं रैहौं—४१२।

—संज्ञा पुं. [हिं. पायताना] **पायताना।**

—वि. [सं.] **पितृ-संबंधी, पुरखों की।**

—वि. [हिं. पायँ+थल] **उथला, छिछला।**

—वि. [सं. पादतल, प्रा. पायतल] **बिना सवारी के, पैर-पैर ही चलनेवाला।**

क्रि. वि.—**पैर-पैर ही।**

संज्ञा पुं.—(१) **पैदल सिपाही।** (२) **शतरंज की एक गोटी।**

—वि. [फ़ा.] (१) **जन्मा हुआ, उत्पन्न।** (२) **घटित, उपस्थित।** (३) **प्राप्त, अर्जित।**

संज्ञा स्त्री.—**आमदनी, आय।**

—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **जन्म, उत्पत्ति।**

—वि. [फ़ा.] (१) **जन्म का।** (२) **स्वाभाविक।**

—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **उपज, फसल।**

—वि. [सं. पैण] **तेज, धारदार, तीक्ष्ण।**

—वि. [हिं. पैना] **तेज, तीक्ष्ण।** उ.—सोभित अंग तरंग त्रिसंगम, धरी धार अति पैनी—९-११।

—संज्ञा पुं. [हिं. पाना] (१) **(कर) पाना, (कर) सकना, संपादित करना।** उ.—चोली चीर हार लै भाजत, सों कैसें करि पैबौ—७७९। (२) **प्राप्त करना, पा सकना।** उ.—गोवर्धन कहुँ गोप बृंद सचु कहा गोरस सचु पैबौ—३३७२।

पैमाइश—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **माप, नाप।**

पैमाना—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **मापने की वस्तु।**

पैमाल—वि. [हिं. पामाल] **पददलित, नष्ट-भ्रष्ट।**

पैयत—क्रि. स. [हिं. पाना] **पाता है, प्राप्त करता है, लाभ करता है।** उ.—अब कैसैं पैयत सुख माँगे—१-६१।

पैयाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. पायँ] **पावँ, पैर।**

पैया—संज्ञा पुं. [हिं. पहिया] **पहिया, चक्का, चक्र।** उ.—मन-मंत्री सो रथ हँकवैया। रथ तन, पुन्य-पाप दोउ पैया—४-५२।

संज्ञा पुं. [सं. पाथ्य] **खोखला, खुक्ख।**

संज्ञा. पुं. [हिं. पैर] **पैर, डग।** उ.—अरबराइ कर पानि गहावत डगमगाइ धरनी धरै पैया—१०-११५।

क्रि. स. [हिं. पाना] **पाया।** उ.—सूर स्याम अतिहीं बिरुझाने, सुर-मुनि अंत न पैया री—१०-१८६।

पैर—संज्ञा पुं. [सं. पद+दंड, प्रा. पयदंड, अप. पयँड़] (१) **पावँ, चरण।** (२) **चरण चिन्ह।**

पैरत—क्रि. अ. [हिं. पैरना] **तैरता है।** उ.—कहा जानै दादुर जल पैरत सागर औ' सम कूप—३३७९।

पैरना—क्रि. अ. [सं. प्लवन, प्रा. पवण] **तैरना।**

पैरवी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **पक्ष के समर्थन की दौड़-धूप।**

पैरा—संज्ञा पुं. [हिं. पैर] (१) **पड़े हुए चरण, पौरा।** (२) **पैर का कड़ा।** (३) **बल्लियों का सीढ़ीदार जीना।**

पैराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पैरना] **तैरने का भाव।**

पैराना—क्रि. स. [हिं. पैरना] **तैराना।**

पैरि—क्रि. अ. [हिं. पैरना] **तैरकर, पानी में हाथ-पैर चलाकर।** उ.—भवसागर मैं पैरि न लीन्हौ—१-१७५।

पैरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पैर] (१) **पैर का एक चौड़ा गहना।** (२) **अनाज झाड़ने की क्रिया।** (३) **सीढ़ी।**

पैर्‌यौ—क्रि. अ. [हिं. पैरना] **तैरता रहा, पानी में हाथ-पैर लगाकर चलता रहा।** उ.—जल औंड़े मैं चहुँ दिसि पैर्‌यौ, पाँउ कुल्हारौ मारौ—१-१५२।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैलगी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पायँ + लगना] **प्रणाम ।**

पैला—संज्ञा पुं. [हिं. पैली] **नाँद की बनावट का बड़ा ढक्कन ।**— उ. स्याम सब भाजन फोरि पराने । हाँकि देत पैठत है पैला नेकु न मनहिं डराने ।

पैली—संज्ञा स्त्री. [सं. पातिली, प्रा. पाइली] **मिट्टी का नाँद की तरह का बड़ा पात्र जो ढकने के काम आता है ।**

पैवंद—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **चकती, थिगली, जोड़ ।**

मुहा०—पैवंद लगाना—**अधूरी या अपूर्ण वस्तु या बात को वैसा ही मेल मिलाकर पूरा करना ।**

पैशाच—वि. [सं.] **पिशाच का, पिशाच संबंधी ।**

पैशाच विवाह—संज्ञा पुं. [सं.] **आठ प्रकार के विवाहों में एक जो सोती कन्या का हरण करके या छल से किया जाय ।**

पैशाचिक—वि. [सं.] **घोर और बीभत्स, राक्षसी ।**

पैशाची—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक प्राकृत भाषा ।**

पैसना—क्रि. अ. [सं. प्रविश, प्रा. पइस + ना] **घुसना ।**

पैसरा—संज्ञा पुं. [सं. परिश्रम] **जंजाल, झंझट ।**

पैसा—संज्ञा पुं. [सं. पाद या पणांश] **ताँबे का सिक्का जो पहले रुपए का चौसठवाँ भाग था और अब सौवाँ है । (२) धन-दौलत ।**

मुहा०—पैसा उठना—**धन खर्च होना ।** पैसा उठाना—**फिजूल खर्ची करना ।** पैसा कमाना—**रुपया पैदा करना ।** पैसा डूबना—**घाटा होना ।** पैसा ढो ले जाना—**दूसरे देश का धन अपने देश ले जाना ।** पैसा धोकर रखना—**मनौती मानकर पैसा रख देना ।**

पैसार—संज्ञा पुं. [हिं. पैसना] **प्रवेश, पैठ ।**

पैसी—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. पैसना] **घुसी, पैठी ।** उ.—करि बरिआइ तहाँऊँ पैसी—२४३८ ।

पैसेवाला—वि. [हिं. पैसा + वाला] **धनी, मालदार ।**

पैहराइ—क्रि. स. [हिं. पहनाना] **पहनाकर, धारण कराके ।** उ.—पँचरँग सारी मँगाइ, बधू जननि पैहराइ, नाचैं सब उमँगि अंग, आनँद बढ़ावौ—१०-६५ ।

पैहारी—वि. [हिं. पय + आहारी] **दूध पर ही रहनेवाला ।**

पैहैं—क्रि. स. [हिं. पाना] (१) **पायँगे, प्राप्त करेंगे ।** (२) **भोगेंगे, सहेंगे ।** उ.—सुख सौं बसत राज उनकैं सब । दुख पैहैं सो सकल प्रजा अब—१-२६० ।

पैहै—क्रि. स. [हिं. पाना] **पायगा, लाभ करेगा, प्राप्त करेगा ।** उ.—अजहूँ मूढ़ करौ सतसंगति, संतनि मैं कछु पैहै—१-८६ ।

पैहौं—क्रि. स. [हिं. पाना] **पाऊँगा ।** उ.—बंसी बट तट ग्वालनि कैं सँग खेलत अति सुख पैहौं—४१२ ।

प्र०—आवन पैहौं—**आने पाऊँगा ।** उ.—कैसेहुँ आज जसोदा छाँड़्यो, काल्हि न आवन पैहौं—४१५ ।

पैहौ—क्रि. स. [हिं. पाना] **पाओगे, प्राप्त करोगे ।** उ.—(क) हरि-संतनि कौ कह्यौ न मानत, क्यौ आपुनौ पैहौ—१-३३५ । (ख) मुख माँगो पैहौ सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावहु—३३४० ।

पोंकना—क्रि. अ. [अनु.] **बहुत डर जाना ।**

पोंगा—संज्ञा पुं. [सं. पुटक] **खोखली नली । चोंगा ।**

वि.—(१) **पोला, खोखला ।** (२) **मूर्ख, बुद्धिहीन ।**

पोंछति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. पोंछना] **काछती है, (गीला बदन) पोंछती है ।** उ.—तनक बदन, दोउ तनक तनक कर, तनक चरन, पोंछति पट झोल—१०-६४ ।

पोंछन—संज्ञा पुं. [हिं. पोंछना] **पोछने से छटनेवाला अंश ।**

पोंछना—क्रि. स. [सं. प्रोञ्छन, प्रा. पोंछन] (१) **लगी या सनी चीज को हाथ, कपड़े आदि से हटाना ।** (२) **गर्द आदि को हाथ, कपड़े आदि से रगड़कर साफ करना । गीली चीज को सूखी से रगड़कर सुखाना ।**

संज्ञा पुं.—**पोंछने का कपड़ा, साफी ।**

पोंछि—क्रि. स. [हिं. पोंछना] **पोंछकर ।** उ.—आँसू पोंछि निकट बैठारी—१० उ.-३२ ।

पोंछियै—क्रि. स. [हिं. पोंछना] **गीली चीज को सूखी से रगड़कर सुखाना ।** उ.—बदन पोंछियौ जल-जमुन सौं धाइकै—४४० ।

पोंछै—क्रि. स. [हिं. पोंछना] (१) **गीली वस्तु को पोंछती है ।** (२) **पड़ी हुई गर्द आदि को झाड़ती है, या दूर करती है ।** उ.—लै उठाइ अंचल गहि पोंछै, धूरि भरो सब देह—१०-१११ ।

पोइ—क्रि. स. [हिं. पोना] (१) **पिरोकर, गूँथकर ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—ईषद हास, दंत-दुति बिकसित, मानिक मोती धरे जनु पोइ—१०-२१० ।

प्र०—रह्यौ पोइ—**पिरोया हुआ है।** उ.—कंचन को कठुला मनि-मोतिनि, बिच बघनहँ रह्यौ पोइ—१०-१४८ ।

(२) **रत करके, एक ही ओर लगाकर।** उ.—सूरदास स्वामी करुनामय, स्याम-चरन, मन पोइ—१-२६२ ।

पोइसि—क्रि०वि० [हिं. पोइया] **दौड़कर, सरपट।** उ.—काल जमनि सौं आनि बनी है, देखि देखि मुख रोइसि। सूर स्याम बिनु कौन छुड़ावै, चले जाव भाई पोइसि—१-३३३ ।

—संज्ञा स्त्री. [सं. पोदकी] **एक साग।** उ.—(क) पोई परवर फाँग फरी चुनि—२३२१ । (ख) चौराई लाल्हा अरु पोई—३९६ ।

संज्ञा स्त्री. [सं. पोत] (१) **अंकुर, पौधा।** (२) **ईख का कल्ला।**

क्रि. स. [हिं. पोना] (१) **आटे की रोटी बनायी।** (२) **रोटी पकायी।** उ.—सरस कनिक बेसन मिलै रचि रोटी पोई—१५५५ ।

क्रि. स. [हिं. पोय+ना] **पिरोयी।** उ.—कंचन को कँठुला मन मोहत तिन बघनहा बिच्च पोई ।

—संज्ञा पुं. [सं. पोष] **पालन-पोषण।**

—क्रि. स. [सं. पोषण] **पालना-पोसना।**

, पोखरा—संज्ञा पुं. [सं. पुष्कर, प्रा. पुक्खर.] **तालाब।**

—संज्ञा स्त्री. [हिं. पोखर] **छोटा तालाब, तलैया।**

—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पाँच से दस वर्ष की अवस्था का बालक।** (२) **छोटा, बड़ा या अधिक अंगवाला व्यक्ति।**

—वि. [फ़ा. पूच] (१) **तुच्छ, बुरा, क्षुद्र, निकृष्ट।** उ.—(क) माधौ जू, मन सबही बिधि पोच। अति उन्मत्त, निरंकुस, मैगल, चिंता-रहित, असोच—१-१०२। (ख) कौन निडर कर आपको को उत्तम को पोच। (ग) जाहि बिन तन प्रान छाँड़े कौन बुधि यह पोच—८८६। (२) **शक्तिहीन, क्षीण।**

पोची—संज्ञा स्त्री. [हिं. पोच] **बुराई, नीचता।**

पोट—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **गठरी, पोटली।** (२) **ढेर।**

पोटना—क्रि. स. [हिं. पुट] (१) **बटोरना।** (२) **फुसलाना।**

पोटरी, पोटली—संज्ञा स्त्री. [सं. पोटलिका] **छोटी गठरी।**

पोटा—संज्ञा. पुं. [सं. पुट = थैली] (१) **पेट की थैली।**

मुहा०—पोटा तर होना—**धन से बेफिक्र होना।**

(२) **साहस, सामर्थ्य।** (३) **समाई, बिसात, हैसियत।** (४) **आँख की पलक।** (५) **उँगली का छोर।**

संज्ञा पुं. [सं. पोत] **चिड़िया का पंखहीन बच्चा।**

पोढ़, पोढ़ा—वि. [सं. प्रौढ़, प्रा. पोढ़] (१) **पुष्ट।** (२) **कड़ा।**

मुहा०—जी पोढ़ा करना—**दुख आदि से विचलित न होना।**

पोढ़ाना—क्रि. अ. [हिं. पोढ़] **दृढ़ या पक्का होना।**

क्रि. स.—**दृढ़ या पक्का करना।**

पोत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चिड़िया या छोटा बच्चा।** (२) **पौधा।** (३) **कपड़ा।** (४) **नौका जहाज।**

संज्ञा पुं. [सं. प्रवृत्ति, प्रा. पउत्ति] (१) **ढंग।** (२) **बारी।**

संज्ञा स्त्री. [सं. प्रोता, प्रा. पोता] (१) **माला का दाना।** (२) **काँच की गुरिया का दाना जो कई रंगों का होता है।** उ.—(क) झीनी कामरि काज कान्ह ऐसी नहिं कीजै। काँच पोत गिर जाइ नंद घर गथौ न पूजै—१११७। (ख) यह मत जाइ तिन्हें तुम सिखवौ जिनहीं यह मत सोहत। सूर आज लौं सुनी न देखी पोत सूतरी पोहत—३१२२।

संज्ञा पुं.[फ़ा. फ़ोता] **जमीन का लगान, भू-कर।**

पोतना—क्रि. स. [सं. प्लुत, प्रा. पुत+ना] (१) **गीली तह चढ़ाना, चुपड़ना, मिट्टी, गोबर आदि का घोल चढ़ाना।**

संज्ञा पुं.—**पोतने का कपड़ा, पोता।**

पोता—संज्ञा पुं. [सं. पौत्र, प्रा. पोत्त] **पुत्र का पुत्र।**

संज्ञा पुं. [सं. पोतृ] (१) **वायु।** (२) **विष्णु।**

संज्ञा पुं. [हिं. पोटा] **पेट की थैली, उदराशय।**

संज्ञा पुं. [हिं. पोतना] **पोतने का कपड़ा।**

संज्ञा पुं. [फ़ा. फ़ोता] **पोत, लगान, भूमिकर।**

उ.—मन महतो करि कैद अपने मैं, ज्ञान-जहतिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लावै। माँड़ि माँड़ि खरिहान क्रोध कौ, पोता भजन भरावै—१—१४२।

पोति, पोती—संज्ञा स्त्री. [हिं. पोत] **काँच की गुरिया का दाना।** उ.—कंचन काँच कपूर कपर खरी, हीरा सम कैसे पोति बिकात री—२५०९।

पोती—संज्ञा स्त्री. [हिं. पोतना] **मिट्टी का लेप।** क्रि. स. **दीवार आदि पर घोल चढ़ाया।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. पोता] **पुत्र की पुत्री।**

पोते—क्रि. स. [हिं. पोतना] **(शरीर पर) मले हुए, लगाए हुए, लेसकर।** उ.—तब तू गयौ सून भवन, भस्म अंग पोते। करते बिन प्रान तोहिं, लछिमन जौ होते—६-६७।

पोथा—संज्ञा पुं. [हिं. पोथी] **बड़ी पुस्तक (व्यंग्य)।**

पोथी—संज्ञा स्त्री. [. पुस्तिका, प्रा. पोत्थिआ] **पुस्तक।**

पोदना—संज्ञा पुं. [अनु. फुदकना] **एक छोटी चिड़िया।**

पोना—क्रि. स. [सं. पूप, हिं. पूवा+ना] (१) **गीले आटे से रोटी बनाना।** (२) **(रोटी, चपाती) पकाना।**

क्रि. स. [सं. प्रोत, प्रा. पोइअ, पोय+ना] **पिरोना।**

पोपला—वि. [अनु० पुल] **जिसके दाँत न हों।**

पोपलाना—क्रि. अ. [हिं. पोपला] **पोपला होना।**

पोप—क्रि. स. [हिं. पोना] **(रोटी) पकाकर।** उ.—सूर आँखि मजीठ कीनी निपट काँचो पोय।

संज्ञा स्त्री [हिं. पोई] **एक साग।**

पोर—संज्ञा स्त्री. [सं. पर्व] (१) **उँगली की गाँठ या जोड़।** (२) **उँगली की गाँठों के बीच की जगह।** (३) **ईख आदि की गाँठों के बीच का भाग।** (४) **रीढ़, पीठ।** उ.—निकसे सबै कुँअर असवारी उच्चैःस्रवा के पोर—१० उ०-६।

पोरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पौरी] **ड्योढ़ी, दहलीज, द्वार।** उ.—बोलि लिए सब सखा संग के, खेलत कान्ह नंद की पोरि—६६६।

पोरिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. पोरि] **उँगली का एक गहना।**

पोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पोल] **एक तरह की रोटी।** उ.—रोटी, बाटी, पोरी, झोरी। इक कोरी, इक घीव चभोरी—३९६।

पोल—संज्ञा पुं. [हिं. पोला] (१) **खाली जगह।** (२) **खोखलापन, सारहीनता।**

मुहा.—पोल खुलना—**दोष या बुराई प्रकट होना। दोष या बुराई प्रकट करना।**

संज्ञा पुं. [सं.] **एक तरह की रोटी।**

संज्ञा पुं. [सं. प्रतोली, प्रा. पओली] (१) **प्रवेश-द्वार।** (२) **आँगन, सहन।**

पोला—वि. [हिं. पोल] (१) **खोखला, खुक्ख।** (२) **सारहीन।** (३) **जो भीतर से पुलपुला हो।**

पोलिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. पोला] **पैर का एक गहना।**

पोली—वि. स्त्री. [हिं. पोला] **खोखली, खुक्ख।**

पोशाक—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. पोश] **वस्त्र, पहनावा।**

पोशीदा—वि. [फ़ा.] **गुप्त, छिपा हुआ**

पोष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पोषण।** (२) **उन्नति।** (३) **अधिकता, बढ़ती।** (४) **धन।** (५) **संतोष।**

पोषक—वि. [सं.] (१) **पालक।** (२) **सहायक, समर्थक**

पोषण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पालन।** (२) **बढ़ती।** (३) **पुष्टि, समर्थन।** (४) **सहायता।**

पोषन—संज्ञा पुं. [सं. पोषण] **पोषण, पालन।** उ.—प्रभु तेरौ बचन भरोसौ साँचौ। पोषन भरन बिसंभर साहब, जो कलपै सो काँचौ—१-३२।

पोषना—क्रि. स. [सं. पोषण] **पालन करना।**

पोषि—क्रि. स. [हिं. पोषना] **पालन करके।** उ.—ऐसे मिल्यो जाइ मोको तजि मानहुँ इनहीं पोषि जयौ री—१४६६।

पोषित—वि. [सं.] **पाला-पोसा हुआ।**

पोषिबैं—क्रि. स. [हिं. पोषना] **पालने (के लिए) पालन पोषण (के हेतु)।** उ.—अपनौ पिंड पोषिबैं कारन, कोटि सहस जिय मारे—१-३३४।

पोषु—क्रि. स. [हिं. पोषना] **पालन करके।** उ.—राजकाज तुमते न सरैगौ काया अपनी पोषु—३०२६।

पोषे—क्रि. स. [हिं. पोषना] **पाले।** उ.—पोषे नाहिं तुव दास प्रेम सौं, पोष्यौ अपनौ गात्र—१-२१६।

वि.—**पाला-पोषा हुआ।** उ.—अधर सुधा मुरली की पोषे योग-जहर कत प्यावे रे—३०७०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षैं—क्रि. स. [हिं. पोषना] **पालन करते हैं**। उ.—पोषैं ताहि पुत्र की नाईं—५-३।

षै—क्रि. स. [हिं. पोषना] **पालन करती है, पालती-पोषती है**। उ.—जैसैं जननि जठर अंतरगत सुत अपराध करै। तौऊ जतन करै अरु पोषै, निकसैं अंक भरै—१-११७।

ष्य—वि. [सं.] **पालन के योग्य, पाला हुआ**।

ष्यपुत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पाला हुआ पुत्र**। (२) **दत्तक पुत्र**।

ष्यौ—क्रि. स. [हिं. पोषना] **पालन किया, पाला, पाला-पोषा**। उ.—वैसी आपदा तैं राख्यौ, तोष्यौ, पोष्यौ, जिय दयौ, मुख-नासिका-नयन-सौन-पद पानि—१-७७।

स—संज्ञा पुं. [सं. पोष] **पालक के प्रति प्रेम**।

सन—संज्ञा पुं. [सं. पोषण] **पालन, रक्षा**। उ.—यह अचरज है अति मेरे जिय, यह छाँड़न वह पोसन।

सना—क्रि. स. [सं. पोषण] (१) **रक्षा करना, पालना**। (२) **(पशु को) दाना-पानी देकर रखना**।

स्त—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **छिलका**। (२) **चमड़ा**। (३) **अफीम के पौधे का डोंडा**। (४) **अफीम का पौधा**।

स्ता—संज्ञा पुं. [फ़ा. पोस्त] **अफ़ीम का पौधा**।

स्ती—वि. [हिं. पोस्ता] (१) **अफीमची**। (२) **आलसी**।

हत—क्रि. स. [हिं. पोहना] **पिरोता या गूँथता है**। उ.—सूर आजु लौं सुनी न देखी पोत सूतरी पोहत—३१२२।

हना—क्रि. स. [सं. प्रोत, प्रा. पोइअ, पोय+ना] (१) **पिरोना, गूँथना**। (२) **छेड़ना**। (३) **घुसाना, धँसाना**। (४) **जड़ना, जमाना**। (५) **पीसना, घिसना**। (६) **रोटी बनाना या पकाना**।

वि.—**घुसनेवाला, भेदनेवाला**।

हि—क्रि. स. [हिं. पोहना] (१) **पिरोकर, गूँथकर**। उ.—(क) सूर प्रभु उर लाइ लीन्हों प्रेम-गुन करि पोहि—पृ. ३५२ (८०)। (ख) अपने हाथ पोहि पहिरावत कान्ह कनक के मनियाँ—२८७६। (२) **मलकर, लगाकर, पोतकर**। उ.—पहिले पूतना कपट करि आई स्तननि बिष पोहि—२५१५। (३) **घुसाकर धँसाकर**। उ.—सूरस्याम यह प्रान पियारी उर मैं राखी पोहि।

पोहे—क्रि. स. [हिं. पोहना] **पिरोये हैं, गूँथे हैं**। उ.—लटकन लटकि रहे भ्रू-ऊपर, रँग-रँग मनि-गन पोहे री। मानहुँ गुरु-सनि-सुक्र एक है, लाल भाल पर सोहै री—१०-१३६।

पौंडा—संज्ञा पुं. [सं. पौंड्रक] **मोटा गन्ना**।

पौंड्र—संज्ञा पुं. [सं.] **भीम के शंख का नाम**।

पौंढ़ना—क्रि. स. [हिं. पौढ़ना] **लेटना**।

पौंड्रक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पुंड्र देश का राजा जो जरासंध का संबंधी था**। (२) **भीम के शंख का नाम**। उ.—तक्षक धनंजय देवदत्त अरु पौंड्रक शंख द्युमान—सारा. ६।

पौंढ़ि—क्रि. अ. [हिं. पौढ़ना] **लेटकर**। उ.—मुरली तऊ गुपालहिं भावति।......। आपुन पौढ़ि अधर सज्या पर, कर-पल्लव पलुटावति—६५५।

पौंरना—क्रि. अ. [सं. प्लवन] **तैरना**।

पौंरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पौरी] **द्वार, ड्योढ़ी**।

पौंरिया—संज्ञा पुं. [हिं. पौरिया] **द्वारपाल**। उ.—निदरि पंरियां जाय नृप पैं पुकारे—२६११।

पौ—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रपा, प्रा. पवा] **प्याऊ, पौसाला**।

संज्ञा स्त्री. [सं. प्रभा, प्रा० पव, पउ] **किरण, ज्योति**।

मुहा०—पौ फटना—**सबेरा या तड़का होना**।

संज्ञा स्त्री. [सं. पद, प्रा. पव=कदम, डग] **पाँसे की एक चाल या दाँव। पाँसा फेकने पर जब ताक या दस, पचीस, तीस आते हैं तब पौ होती है**। उ.—बाल, किसोर, तरुन, जर, जुग सो सुपक सारि ढिग ढारी। सूर एक पौ नाम बिना नर फिरि फिरि बाजी हारी—१-६०।

मुहा.—पौ बारह पड़ना—**जीत का दाँव आना**। पौ बारह होना—**जीत का दाँव पड़ना, जीत होना**।

संज्ञा पुं. [सं. पाद, प्रा. पाय, पाव] **पैर**।

पौगंड—संज्ञा पुं. [सं.] **५ से १० वर्ष की आयु**।

पौढ़त—क्रि. अ. [हिं. पौढ़ना] **लेटते हैं, सोते हैं**। उ.—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेसनाग के ऊपर पौढ़त, तेतिक नाहिं बड़ाई—१०-२१५।

पौढ़ना—क्रि. अ. [सं. प्लवन, प्रा. पव्वलन] **झूलना।**

क्रि. अ. [सं. प्रलोठन] **लेटना, सोना।**

पौढ़ाई—क्रि. स. [हिं. पौढ़ाना] **लिटाकर।** उ.—सूर स्याम कछु करौ बियारी, पुनि राखौं पौढ़ाइ—१०-२२६।

पौढ़ाऊँ—क्रि. स. [हिं. पौढ़ाना] **लिटाकर सुलाऊँ।** उ.—उठहु लाल कहि मुख पखरायौ, तुमकौं लै पौढ़ाऊँ—१०-२३०।

पौढ़ाए—क्रि. स, [हिं. पौढ़ाना] **लिटाये, लिटा दिये।** उ.—पौढ़ाए हरि सुभग पालनैं—१०-५०।

पौढ़ाना—क्रि. स. [हिं. पौढ़ना] **लिटाना, सुलाना।**

पौढ़ायौ—क्रि. स. [हिं. पौढ़ाना] **लेटाया।** उ.—चंदन अगर सुगंध और घृत, बिधि करि चिता बनायौ। चले बिमान संग गुरु-पुरजन, तापर नृप पौढ़ायौ—६-५०।

पौढ़ी—क्रि. अ. [हिं. पौढ़ना] **लेटी।** उ.—मैं घर पौढ़ी आइ—१०-३२२।

पौढ़े—क्रि. अ. [हिं. पौढ़ना] (१) **लेटे, सोए।** उ.—(क) तुरत जाइ पौढ़े दोउ भैया—१०-२३०। (ख) पौढ़े हुते प्रयंक परम रुचि रुक्मिणि चमर डुलावति तीर—(२) **मूर्छित हुए, मरकर गिर पड़े।** उ.—पौढ़े कहा समर सेज्या सुत, उठि किन उत्तर देत—१-२६।

पौत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **लड़के का लड़का।**

पौद, पौधि—संज्ञा स्त्री. [सं. पोत] (१) **छोटा पौधा।** (२) **संतान।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. पावँ+पट] **पाँवड़ा, पायंदाज।**

पौदा, पौधा—संज्ञा पुं. [सं. पोत) **नया पौधा।**

पौन, पौना—संज्ञा पुं. स्त्री. [सं. पवन] (१) **पवन, वायु।** उ.—(क) द्वार सिला पर पटकि तृना कौं है आयौ जो पैना—६०१। (ख) रुकत न पौन महावत हू पै मुरत न अंकुस मोरे—२८१८। (२) **प्राण, जीवात्मा।** उ.—सोइ कीजो जैसे ब्रजबाला साधन सीखें पौन—२६२५। (३) **भूत-प्रेत।**

वि. [सं. पाद+ऊन, प्रा. पाओन] **तीन चौथाई।**

पौनार, पौनारि—संज्ञा स्त्री. [सं. पद्मनाल] **कमल-नाल।**

पौनि, पौनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पावना] (१) **गाँव के जिन्हें फसल पर अनाज मिलता है।** (२) **नाई, बारी, धोबी आदि जो उत्सवों या शुभ कार्यों में नेग पाते हैं।** उ.—काढौ कोरे कापर हो अरु काढ़ौ घी के मौन। जाति पाँति पहिराइ कै सब समदि छतीसौ पौनि।

पौने—वि. [हिं. पौन] **तीन चौथाई।**

मुहा०—पौने सोलह आना—**अधिकांश में।**

पौमान—संज्ञा पु. [सं. पवमान](१) **वायु।** (२) **जलाशय।**

पौर—वि. [सं.] **पुर या नगर-संबंधी।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. पौरी] **द्वार, ड्योढ़ी।** उ.—कनक कलस प्रति पौर बिराजत मंगलचार बधा ई—सारा. ३९५।

पौरा—संज्ञा पुं. [हिं. पैर] **पड़े हुए चरण, आगमन।**

पौराणिक—वि. [सं] (१) **पुराण का पाठक या पंडित।** (२) **पुराण-संबंधी।** (३) **पूर्वकाल का।**

पौरि—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतोली, प्रा. पओली, हिं. पौरी] **ड्योढ़ी, द्वार।** उ.—(क) राजा, इक पंडित पौरि तुम्हारी- ८-१३। (ख) पैठत पौरि छींक भइ बाएँ—५४१। (ग)।

पौरिआ, पौरिया—संज्ञा पुं. [हिं. पौरि] **द्वारपाल, ड्योढ़ीदार, दरबान।** उ.—अर्थ-काम दोउ रहैं दुवारैं, धर्म मोच्छ सिर नावैं। बुद्धि विवेक, विचित्र पौरिया, समय न कबहूँ पावैं—१-४०।

पौरी—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतोली, प्रा. पओली] **ड्योढ़ी।**

पौरुष संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पुरुष का भाव, पुरुषत्व।** (२) **पुरुष का कर्म, पुरुषार्थ।** (३) **बलवीर्य, पराक्रम, साहस।** उ.—अति प्रचंड पौरुष बल पाएँ, केहरि भूख मरै—१-१०५। (४) **उद्यम, साहस।**

पौलस्त्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पुलस्त्य का वंशज।** (२) **कुबेर।** (३) **रावण, कुंभकर्ण, विभीषण।** (४) **चंद्र।**

पौला—संज्ञा पु. [हिं. पाँव+ला] **खड़ाऊँ जिसमें खूंटी के स्थान पर अंगूठा फंदे में फँसाया जाता है।**

पौलि, पौली—संज्ञा पुं. [.] **रोटी, फुलका।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँव+ली] (१) **पैर का उतना भाग जिसमें जूता या खड़ाऊँ पहनते हैं।** (२) **चरण-चिन्ह।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. पौरी] **ड्योढ़ी, द्वार।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—संज्ञा पुं. [सं. पाद, हिं. पाव] **चौथाई भाग।**

—संज्ञा पुं. [सं.] **पूस का महीना।**

टक—वि. [सं.] **बल-वीर्य-वर्द्धक, पुष्टिकारक।**

रा—संज्ञा पुं. [हिं. पाव + सेर] **पाव सेर की तौल।**

हारी—संज्ञा पुं. [हिं. पय + आहारी] **दूध पीकर रहने-वाला।**

—क्रि. स. [हिं. प्याना] **पिलाकर।**

—क्रि. स. [हिं. प्याना] **पिलायौ, पान करायौ।**

ऊँ—क्रि. स. [हिं. प्याना] **पान कराऊँ।** उ.—असुर कौं सुरा, तुम्हैं अमृत प्याऊँ—८-८।

ऊ—संज्ञा पुं. [हिं. प्याना] **पौसरा, पौसाला।**

—क्रि. स. [हिं. प्याना] **पिलाने से, पिला देने के कारण।** उ.—ऐरावत अमृत कैं प्याए, भयौ सचेत, इन्द्र तब धाए—६-५।

ज—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **एक प्रसिद्ध कंद।**

जी—वि. [फ़ा.] **प्याज के हलके गुलाबी रंग का।**

दा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **पैदल, पैदल सिपाही** (२) **दूत, हरकारा।** (३) **शतरंज की एक गोट।**

ना—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पान कराना।**

र—संज्ञा पुं. [सं. प्रीति] (१) **प्रेम, प्रीति।** उ.—नृप ऐसौ है पर-तिय प्यार। मूरख करै सो बिना बिचार—६-७। (२) **चुंबन।**

रा—वि. [सं. प्रिय] (१) **प्रेम या प्रीति पात्र।** (२) **जो अच्छा लगे।** (३) **जो छोड़ा या त्यागा न जाय।**

री, प्यारी—वि. [हिं. पुं. प्यारा] (१) **प्यारी पुत्री या सखी।** उ.—मैं बरजी कहँ जाति री प्यारी, तब खीझी रिस-झरतैं—७४४। (२) **प्रेयसी।** (३) **जो भली लगे, जो अच्छी जान पड़े।** उ.—बिधु-मुख मृदु मुसक्यानि अमृत-सम, सकल लोक लोचन प्यारी—१-६६।

रे—वि. बहु. [हिं. प्यारा] **भले, अच्छे, रुचिकर।** उ.—फेनी सेव अँदरसे प्यारे—३९६।

रौ—वि. [हिं. प्यारा] (१) **प्रिय, प्रेमपात्र।** उ.—ब्राह्मन हरि हरि-भक्तनि प्यारौ—६-५। (२) **जिसे छोड़ा न जा सके, अत्यन्त प्रिय।** उ.—ठाढ़े बदत बात सब हलधर, माखन प्यारौ तोहि—१०-३७५।

प्याला—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **छोटा कटोरा।** (२) **भिक्षा-पात्र।**

प्यावत—क्रि. स. [हिं. प्यावना] **पान कराता है।** उ.—मधुपनि प्यावत परम चैन—१६७७।

प्यावन—संज्ञा पुं. [हिं. प्यावना] **पिलाना, पिलाने को।** उ.—(क) चारु चखौड़ा पर कुंचित कच, छबि मुक्ता ताहू मैं। मनु मकरंद-बिंदु लै मधुकर, सुत-प्यावन-हित झूमैं—१०-१७४। (ख) बकी कपट करि प्यावन आई—५३८।

प्यावना—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पान कराना।**

प्यास—संज्ञा स्त्री. [सं. पिपासा] (१) **जल पीने की इच्छा, तृष्णा, पिपासा।** (२) **प्रबल कामना।** उ.—कहै सूर-दास, देखि नैनन की मिटी प्यास—८-५।

प्यासा—वि. [सं. पिपासित] (१) **जिसे प्यास लगी हो, तृषित।** (२) **तीव्र इच्छा रखनेवाला।**

प्यो—संज्ञा पुं. [हिं. पिय] (१) **पति।** (२) **प्रेमी।**

प्योसर, प्यौसर—संज्ञा पुं. [सं. पीयूष] **हाल की ब्याही गाय का दूध।** उ.—अति प्यौसर सरस बनाई। तिहिं सोंठ मिरिच रुचि नाई—१०-१८३।

प्योसार, प्योसारो, प्यौसार, प्यौसारौ—संज्ञा पुं. [सं. पितृशाला, हिं. प्योसार] **पिता-गृह, मायका, पीहर, नैहर।** उ. (क) परत फिराय पयोनिधि भीतर सरिता उलटि बहाई। मनु रघुपति भयभीत सिंधु पत्नी प्यौसार पठाई—९-१२४। (ख) तजी लाज कुल-कानि लोक की, पति गुरुजन प्यौसारौ री। जिनकी सकुच देहरी दुर्लभ, तिनमैं मूड़ उघारौ री—१०-१३५।

प्रकंप, प्रकंपन—संज्ञा पुं. [सं.] **थरथराहट, कंपन।**

प्रकट—वि. [सं.] (१) **जो सामने आया या प्रत्यक्ष हुआ हो।** (२) **उत्पन्न।** (३) **स्पष्ट, व्यक्त।**

प्रकटित—वि. [सं.] **प्रकट किया हुआ।**

प्रकरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **उत्पन्न करना** (२) **वाद-विवाद।** (३) **विषय, प्रसंग।** (४) **ग्रंथ का छोटा भाग।** (५) **रूपक के दस भेदों में एक।**

प्रकरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **एक तरह का गान** (२) **कार्य-सिद्धि के पाँच साधनों में एक (नाटक)।**

प्रकर्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **उत्तमता।** (२) **अधिकता।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकांड—वि. [सं.] (१) बहुत बड़ा (२) बहुत विस्तृत ।

प्रकार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) भेद, किस्म । उ.—विस्वामित्र सिखाई बहु बिधि विद्या धनुष प्रकार—सारा. २०३ । (२) तरह, भाँति । (३) समानता, बराबरी ।

संज्ञा स्त्री. [सं. प्राकार] घेरा, परकोटा । उ.—जान्यौ नहीं निसाचर कौ छल, नाघ्यौ धनुष-प्रकार—९-८३ ।

प्रकारन—क्रि. वि. [हिं. प्रकार] अनेक प्रकार से । उ.—पेठा बहुत प्रकारन कीने—२३२१ ।

प्रकारौ—संज्ञा पुं. सवि. [सं. प्रकार](१) भेद से । (२) रीति से, भाँति से, तरह से । उ.—यह भव-जल कलिमलहिं गहे है, बोरत सहस प्रकारौ—१-२०९ ।

प्रकाश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आलोक, ज्योति । (२) बिकास, विस्तार । (३) प्रकट होना, दिखाई देना । (४) प्रसिद्धि । (५) स्पष्ट होना, समझ में आना । (६) हँसी-ठट्ठा । (७) ग्रंथ का छोटा भाग । (८) धप, घाम ।

वि.—(१) जगमगाता हुआ । (२) विकसित । (३) प्रकट । (४) प्रसिद्ध । (५) स्पष्ट ।

प्रकाशक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रकाश करनेवाला । (२) प्रसिद्ध या प्रकट करनेवाला ।

प्रकाशन—संज्ञा पुं. [सं.] प्रकाशित करने का काम ।

प्रकाशित—वि. [सं.] (१) चमकता हुआ । (२) जो प्रकाश में आ चुका हो । (३) प्रकट, स्पष्ट ।

प्रकाश्य—क्रि. वि. [सं.] प्रकट रूप से, जो 'स्वगत' न हो ।

प्रकास—संज्ञा पुं. [सं. प्रकाश] (१) प्रकाश । (२) विस्तार, विकास । उ.—अबहीं हैं यह हाल करत है, दिन-दिन होत प्रकास—१०-६० ।

प्रकासत—क्रि. स. [सं. प्रकाश] (१) जलाता है । उ.—तेल-तूल-पावक-पुट भरि धरि, बनै न बिना प्रकासत । कहत बनाइ दीप की बतियाँ, कैसें धौं तम नासत—२-२५ । (२) प्रकाश करता है, चमकता है । उ.—घन भीतर दामिनी प्रकासत, दामिनि घन चहुँ पास—१६३७ ।

प्रकासित—वि. [सं. प्रकाशित] (१) प्रकाशपूर्ण, चमकता हुआ । उ.—अंधकार अज्ञान हरन कौं, रबि-ससि जुगल-प्रकास । बासर-निसि दोउ करैं प्रकासित महा कुमग अनायास—१-६० । (२) जिसमें से प्रकाश निकल रहा हो । (३) जिस पर प्रकाश पड़ रहा हो ।

प्रकासी—क्रि. स. [हिं. प्रकासना] प्रकट की, प्रकाशित की । उ.—हृदय कमल में ज्योति प्रकासी—३४०८ ।

प्रकास्यौ—क्रि. स. [हिं. प्रकासना] प्रकट किया । उ.—जब हरि मुरली नाद प्रकास्यौ—पृ. ३४७ (५२) ।

प्रकीर्ण—वि. [सं.] (१) विस्तृत । (२) बिखरा हुआ । (३) मिश्रित, मिला हुआ । (४) अनेक प्रकार का ।

प्रकीर्णक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चँवर (२) अध्याय । (३) विस्तार । (४) स्फुट संग्रह ।

प्रकृत—वि. [सं.] (१) विशेष रूप से किया हुआ । (२) यथार्थ, सच्चा । (३) अविकृत । (४) स्वभाववाला ।

प्रकृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) गुण, स्वभाव । (२) प्राणी का स्वभाव । उ.—कोटि करौ तनु प्रकृति न जाइ—२६७९ । (३) आदत, बान । उ.—कहा गति प्रकृति परी हो कान्ह तुम्हारी धरत कहा कत राखत घेरे—१०३६ ।(४) जगत का उपादान कारण, कुदरत ।

प्रकृतिस्थ—वि. [सं.] जो स्वाभाविक स्थिति में हो ।

प्रकोट—संज्ञा पुं. [सं.] परकोटा, चहारदीवारी ।

प्रकोप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बहुत क्रोध । (२) चंचलता ।

प्रकोपन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) उत्तेजित करना । (२) क्षोभ ।

प्रकोष्ठ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कोहनी के नीचे का भाग । (२) कोठा, कमरा । (३) बड़ा आँगन ।

प्रक्रिया—संज्ञा स्त्री. [सं.] क्रिया, युक्ति ।

प्रक्षालन—संज्ञा पुं. [सं.] धोना ।

प्रक्षालित—वि. [सं.] धोया हुआ ।

प्रक्षिप्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) फेंका हुआ । (२) पीछे या ऊपर से बढ़ाया या जोड़ा गया ।

प्रक्षेप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) फेंकना । (२) मिलाना, बढ़ाना ।

प्रखर—वि. [सं.] (१) प्रचंड । (२) पैना, धारदार ।

प्रखरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) प्रचंडता । (२) पैनापन ।

प्रख्यात—वि. [सं.] प्रसिद्धि, विख्याति ।

प्रख्याति—संज्ञा स्त्री. [सं.] प्रसिद्धि, विख्याति ।

प्रगट—वि. [सं. प्रकट] (१) जो सामने आया हो, जो प्रत्यक्ष हुआ हो । (२) उत्पन्न, आविर्भूत । उ.—भीर के परे तैं धीर सबहिनि तजी, खंभ तैं प्रगट ह्वै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन छुड़ायौ—१-५। (३) **स्पष्ट या प्रत्यक्ष रूप से।** उ.- (क) हा जगदीस, राखि इहिं अवसर, प्रगट पुकारि कह्यौ—१-२४७। (ख) मोसौं कहि तू प्रगट बखान—१-२८६।

प्रगटन—संज्ञा पुं. [सं. प्रकटन] **प्रकट होने की क्रिया।**

प्रगटना—क्रि. अ. [सं. प्रकटन] **प्रकट होना।**

प्रगटाना—क्रि. स. [सं. प्रकटन] **प्रकट करना।**

प्रगटाने—क्रि. अ. [हिं. प्रगटना] **प्रकट या स्पष्ट हो गये।** उ.—सुनहु सूर लोचन बटमारी गुन जोइ सोइ प्रगटाने —पृ. ३२६ (५६)।

प्रगटान्यौ—क्रि. अ. [हिं. प्रगटना] **सामने आयी, व्यक्त हुई।** उ.—प्रथम सनेह दुहुँनि मन जान्यौ। नैन-नैन कीन्हीं सब बातैं, गुप्त प्रीति प्रगटान्यौ।

प्रगटायो—क्रि. स. [हिं. प्रगटना] **प्रकट किया।** उ.—प्रेम प्रवाह गट प्रगटायो होरी खेलन लागे—सारा. ३०६।

प्रगटावत—क्रि. स. [हिं. प्रगटाना] **प्रकट करते हैं।** उ.—बदन कमल उपमा यह साँची ता गुन को प्रगटावत—१६७६।

प्रगटि—क्रि. अ. [हिं. प्रगटना] **प्रत्यक्ष होकर।** उ.—माया प्रगटि सकल जग मोहै—१०-३।

प्रगटी—क्रि. अ. [हिं. प्रगटना] (१) **प्रसिद्ध हो गयी।** उ.—ब्रज घर घर प्रगटी यह बात—१०-२७२। (२) **उपजी, उत्पन्न हुई।** उ.—सूरदास कुंजनि तैं प्रगटी, चेरि सौत भई आइ—६५६।

प्रगटे—क्रि. अ. [हिं. प्रकटना] **प्रकट हुए, अवतरे।** उ.—संकट हरन-चरन हरि प्रगटे, बेद बिदित जस गावै—१-३१।

प्रगटैहै—क्रि. स. [हिं. प्रगटना] **प्रकट या जाहिर करेगी।** उ.—बिनु देखें तू कहा करैगी, सो कैसैं प्रगटैहै री —७११।

प्रगट्यौ—क्रि. अ. [हिं. प्रकटना] (१) **प्रकट हुआ, सामने आया, प्रत्यक्ष हुआ।** उ.—नहिं अस जनम बारंबार। पुरबलौ धौं पुन्य प्रगट्यौ, लह्यौ नर अवतार —१-८८। (२) **प्रसिद्ध हुआ, फैल गया।** उ.—सूरदास प्रभु की जस प्रगट्यौ, देवनि बंदि छुड़ाई —६-१४०।

प्रगल्भ—वि. [सं.] (१) **चतुर।** (२) **प्रतिभासंपन्न।** (३ **उत्साही।** (४) **निर्भय।** (५) **बकवादी, बातूनी।** (६) **धृष्ट, उद्धत।** (७) **अभिमानी।**

प्रगल्भता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **चतुरता।** (२)**प्रतिभा।** (३) **उत्साह।** (४) **निर्भयता।** (५) **बकवाद।** (६) **धृष्टता, उद्धतता।** (७) **अभिमान।**

प्रगसना—क्रि. अ. [सं. प्रकाश] **प्रकट होना।**

प्रगाढ़—वि. [सं.] (१) **बहुत अधिक।** (२) **बहुत गाढ़ा।**

प्रघटना—क्रि. अ. [हिं. प्रकटना] **प्रकट होना।**

प्रघट्टक—वि. [सं. प्रकट] **प्रकट या प्रकाशित करनेवाला।**

प्रचंड—वि. [सं.] (१, **बहुत तेज या तीखा।** (२) **बहुत वेगवान।** (३) **भयंकर।** (४) **कठोर** (५) **बलवान।**

प्रचंडता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **तेजी, तीखापन।** (२) **वेग।** (३) **भयंकरता** (४) **कठोरता।**

प्रचरना—क्रि. अ. [सं. प्रचार] **प्रचारित होना।**

प्रचलन—संज्ञा पुं. [सं.] **चलन, प्रचार।**

प्रचलित—वि. [सं.] **जिसका चलन हो।**

प्रचार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चलन, रिवाज।** (२) **प्रसिद्ध।**

प्रचारक—वि. [सं.] **प्रचार करनेवाला।**

प्रचारना—क्रि. स. [सं. प्रचारण] (१) **प्रचार करना, फैलाना।** (२) **ललकारना, चुनौती देना।**

प्रचारि—क्रि. स. [हिं. प्रचारना] **ललकार कर, सामने बुला कर, चुनौती देकर।** उ.—(क) मारयौ ताहि प्रचारि हरि, सुर मन भयौ हुलास—१-११। (ख) एक समय सुर असुर प्रचारि। लरे, भई असुरनि की हारि—७-७।

प्रचारित—वि. [सं.] **जिसका प्रचार हुआ हो।**

प्रचारी—क्रि. अ. [हिं. प्रचारना] **ललकार कर।** उ.—उ.—प्रद्युम्न सकल विद्या समुझि नारि सों, असुर सों जुद्ध माँग्यौ प्रचारी—१० उ.—२५।

क्रि. स.—**प्रारम्भ किया।** उ.—बृच्छ पाषाण को जब वहाँ नाश भयो, मुष्टिका-युद्ध दोऊ प्रचारी—१० उ०-४५।

प्रचार्‌यौ—क्रि. स. [हिं. प्रचारना] **ललकारा, सामना करने के लिए बुलाया।** उ.—इंद्र आइ तब असुर प्रचारयौ। कियौ जुद्ध पै असुर न हार्‌यौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचालित—वि. [सं.] **जिसका प्रचलन हुआ हो ।**

प्रचुर—वि. [सं.] **बहुत, अधिक ।**

प्रचुरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अधिकता, विपुलता ।**

प्रचेता—वि. [सं.] **चतुर, बुद्धिमान ।**

प्रच्छक—वि. [सं.] **प्रश्न पूछनेवाला ।**

प्रच्छना—क्रि. स. [सं.] **प्रश्न पूछना ।**

प्रच्छन्न—वि. [सं.] **छिपा या ढका हुआ ।**

प्रच्छादन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ढकने या छिपाने का भाव ।** (२) **आँख का पलँक ।** (३) **ओढ़ने का वस्त्र ।**

प्रछालि—क्रि. वि. [सं. प्रत्तालन] **प्रक्षालित करके, अच्छी तरह स्वच्छ करके ।** उ.—त्रियाचरित मतिमंत न समुझत, उठि प्रछालि मुख धोवत—६-३१ ।

प्रजंक—संज्ञा पुं. [सं. प्रयंक] **पलँग ।** उ.—षोड़स जुक्ति, जुवति चित षोड़स, षोड़स बरस निहारै। षोड़स अंगनि मिलि प्रजंक पै छ-दस अंक फिरि डारै—१-६० ।

प्रजंत—अव्य. [सं. पर्यंत] **तक, लौं ।** उ.—(क) प्राचीन-बर्हि भूप इक भए। आयु प्रजंत जज्ञ तिन ठए—४-१२ । (ख) नाभि प्रजंत नीर मैं ठाढ़ी, थर-थर अँग काँपति सुकुमारि—७८५ ।

प्रजनन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **संतान उत्पन्न करना ।** (२) **जन्म ।** (३) **जन्म देनेवाला, जनक ।**

प्रजरना—क्रि. अ. [सं. प्र+हिं. जरना] **जलता, दहकना ।**

प्रजरि—क्रि. अ. [हिं. प्रजरना] **जलकर ।** उ.—बूड़ि न मुई नीर नैनन के, प्रेम न प्रजरि पची री—१० उ०—८६ ।

प्रजल्प—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गप ।** (२) **संलाप ।**

प्रजल्पन—संज्ञा पुं. [सं.] **बातचीत ।**

प्रजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **संतान ।** (२) **रियाया, रैयत ।** उ.—असन ए नृपति के जासु के प्रजा तुम—२५८४ । (३) **छोटी जातियों के लोग जो वेतन न लेकर शुभ कार्यों में उपहार पाकर सेवा करते हैं ।**

प्रजापति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सृष्टि का उत्पादक, सृष्टिकर्त्ता । पुराणों में इनकी संख्या कहीं दस और कहीं इक्कीस लिखी हुई है ।** (२) **ब्रह्मा ।**

प्रजारन—संज्ञा पुं. [हिं. प्रजारना] **अच्छी तरह जलाना, सुलगाना ।**

प्र०—प्रजारन लागे—**जलाने लगे ।** उ.—सोभित सिथिल बसन मनमोहन, सुखवत स्रम के पागे। मानहुँ बुझी मदन की ज्वाला, बहुरि प्रजारन लागे—६८६ ।

प्रजारना—क्रि. स. [सं. प्र+जारना] **जलाना, सुलगाना ।**

प्रजुलित—वि. [सं. प्रज्वलित] **जलता-दहकता हुआ ।**

प्रज्ञ—संज्ञा पुं. [सं.] **ज्ञाता, विद्वान ।**

प्रज्ञता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **विद्वता, पांडित्य ।**

प्रज्ञा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बुद्धि ।** (२) **सरस्वती ।**

प्रज्ञाचक्षु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ज्ञानी ।** (२) **अंधा (व्यंग्य) ।**

प्रज्वलन—संज्ञा पुं. [सं.] **जलना, सुलगना ।**

प्रज्वलित—वि. [सं.] (१) **जलता हुआ ।** (२) **स्पष्ट ।**

प्रण—संज्ञा पुं. [सं. पण] **अटलनिश्चय, प्रतिज्ञा ।**

प्रणत—वि. [सं.] (१) **बहुत झुका हुआ, नमित ।** (२) **प्रणाम करता हुआ ।** (३) **विनम्र, दीन ।**

संज्ञा पुं.—(१) **सेवक ।** (२) **भक्त, उपासक ।**

प्रणतपाल, प्रणतपालक—संज्ञा पुं. [सं.] **दीनरक्षक ।** उ.—प्रणतपाल केशव करुणापति—६८२ ।

प्रणति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नम्रता ।** (२) **विनती ।** (३) **प्रणाम ।**

प्रणम्य—वि. [सं.] **प्रणाम करने योग्य ।**

प्रणय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रेम ।** (२) **विश्वास ।**

प्रणयन—संज्ञा पुं. [सं.] **रचना, बनाना**

प्रणयिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पत्नी ।** (२) **प्रेमिका ।**

प्रणयी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रेमी ।** (२) **पति ।**

प्रणव—संज्ञा पुं. [सं. प्रणय] (१) **ओंकार मंत्र ।** (२) **त्रिदेव ।**

प्रणवना—क्रि. स. [सं. प्रणमन] **प्रणाम करना ।**

प्रणाली—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **रीति, ढंग ।** (२) **परंपरा ।**

प्रणिधान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समाधि ।** (२) **ध्यान ।**

प्रणिधि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गुप्तचर ।** (२) **निवेदन ।**

प्रणीत—वि. [सं.] (१) **रचित ।** (२) **संस्कृत ।**

प्रणेता—संज्ञा पुं. [सं. प्रणेतृ] **रचयिता, कर्त्ता ।**

प्रतंचा—संज्ञा स्त्री. [हिं. प्रत्यंचा] **धनुष की डोरी ।**

प्रतच्छ—वि. [सं. प्रत्यक्ष] **प्रत्यक्ष या स्पष्ट ।** उ.—कौसिल्या सुनि परम दीन ह्वै, नैन-नीर ढरकाए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिह्वल तन-मन, चकृत भई सो, यह प्रतच्छ सुपनाए—६-३१ ।

प्रताप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बल, साहस, पराक्रम, तेज ।** उ.—जाकौं हरि अंगीकार कियौ । ताके कोटि बिघन हरि हरि कै, अभै प्रताप दियौ—१-३८ । (२) **महत्व, महिमा, महत्ता ।** उ.—(क) सूरदास यह सकल समग्री प्रभु प्रताप पहिचानै—१-४० । (ख) सब हित-कारन देव, अभय-पद नाम प्रताप बढ़ायौ—१-१८८ । (ग) छिनक भजन, संगति-प्रताप तैं, गज अरु ग्राह छुड़ायौ—१-१९० । (३) **पौरुष, वीरता ।** उ.—तुम प्रताप-बल बदत न काहूँ, निडर भएघर-चेरे—१-१७० । (४) **ताप, तेज ।** उ.—दिनकर महाप्रताप पुंज बर सबको तेज हरै—३३११ ।

प्रतापि, प्रतापी—वि. [हिं. प्रतापी] (१) **प्रतापवान, तेजस्वी ।** उ.—धन्य पिता जापर परफुल्लित राघव भुजा अनूप । वा प्रतापि की मधुर बिलोकनि पर वारौं सब भूप—६-१३४ । (२) **दुखदायी, सतानेवाला ।**

प्रतारणा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **ठगी, वंचकता ।**

प्रतारित—वि. [सं.] **जो ठगा गया हो ।**

प्रतिंचा—संज्ञा स्त्री. [सं. पतंचिका] **धनुष की डोरी ।**

प्रति—अव्य. [सं.] (१) **हर एक, एक-एक, प्रत्येक ।** उ.—अंग-अंग-प्रति छबि-तरंग-गति सूरदास क्यौं कहि आवै—१-६९ । (२) **विरुद्ध, विपरीत ।** (३) **सामने ।** (४) **बदले में ।** (५) **समान ।** (६) **जोड़ी का ।**

अव्य.—(१) **सामने ।** (२) **ओर, तरफ ।**

संज्ञा स्त्री.—(१) **नकल ।** (२) **एक ही वस्तु का एक अदद ।** (३) **प्रतिबिंब ।** उ.—जैसे केहरि उझकि कूप-जल, देखत अपनी प्रति १-३०० ।

प्रतिकार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बदला ।** (२) **चिकित्सा ।**

प्रतिकूल—वि. [सं.] **विरुद्ध, विपरीत ।**

प्रतिकूलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **विरोध, विपरीतता ।**

प्रतिक्रिया—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बदला ।** (२) **एक क्रिया के परिणाम या प्रत्युत्तर में होनेवाली क्रिया ।**

प्रतिग्या—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतिज्ञा] **प्रण, प्रतिज्ञा ।**

प्रतिग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **स्वीकार, ग्रहण ।** (२) **वह दान लेना जो विधिपूर्वक दिया जाय ।** उ.—बहुत प्रतिग्रह लेत बिप्र जो जाय परत भव कूप—सारा. ३३८ । (३) **अधिकार में लाना ।** (४) **पाणि-ग्रहण ।** (५) **ग्रहण ।** (६) **स्वागत ।** (७) **विरोध ।**

प्रतिग्रही, प्रतिग्राही—वि. [सं. प्रतिग्रह] **दान लेनेवाला ।**

प्रतिघात—संज्ञा स्त्री.[सं.] (१) **आघात के बदले या उत्तर में किया गया आघात ।** (२) **टक्कर ।**

प्रतिघाती—वि. [सं. प्रतिघात] **प्रतिद्वंद्वी, शत्रु ।**

प्रतिच्छा—संज्ञा [सं. प्रतीच्छा] **प्रतीक्षा ।**

प्रतिच्छाया, प्रतिछाँई,प्रतिछाँह, प्रतिछाया, प्रतिछाँही—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतिच्छाया] (१) **चित्र ।** (२) **प्रतिबिंब ।**

प्रतिज्ञा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्रण ।** उ.—जिन हरि शकट प्रलंब तृणावृत इन्द्र प्रतिज्ञा टाली—२५६७ । (२) **शपथ ।** (३) **अभियोग ।** (४) **उस बात का कथन जिसे सिद्ध करना हो ।**

प्रतिदान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लौटाना ।** (२) **बदला ।**

प्रतिदासी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मूर्ति ।** उ.—मानहु पाहन की प्रतिदासी नेक न इत उत डोलै—२२७५ ।

प्रतिद्वंद्व—संज्ञा पुं. [सं.] **बराबर वालों का झगड़ा ।**

प्रतिद्वंद्वी—संज्ञा पुं. [सं. प्रतिद्वंद्व] **शत्रु, विरोधी ।**

प्रतिद्वंद्विता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बराबर वालों की लड़ाई ।**

प्रतिध्वनि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **शब्द की गूँज ।** (२) **दूसरों के भावों या विचारों की आवृत्ति ।**

प्रतिनायक—संज्ञा. पुं. [सं.] **नायक का प्रतिद्वंद्वी पात्र ।**

प्रतिनिधि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रतिमा ।** (२) **निर्वाचित व्यक्ति ।**

प्रतिनिधित्व—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रतिनिधि होने का काम ।**

प्रतिपच्छ, प्रतिपच्छ—संज्ञा पुं. [सं.] **शत्रु या विरोधी पक्ष ।**

प्रतिपच्छी, प्रतिपच्छी—संज्ञा पुं. [सं. प्रतिपच्छ] **शत्रु, विरोधी ।**

प्रतिपदा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पक्ष की पहली तिथि, परिवा ।**

प्रतिपन्न—वि. [सं.] (१) **जाना हुआ ।** (२) **स्वीकृत ।** (३) **प्रमाणित, स्थापित ।** (४) **सम्मानित ।**

प्रतिपलिहौं—क्रि. स. [हिं. प्रतिपालना] **पालन करूँगा,**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालूँगा। उ.—तुम्हरैं चरन-कमल सुख-सागर, यह व्रत हौं प्रतिपलिहौं—६-३५।

प्रतिपादक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कहने, समझाने या प्रतिपादन करनेवाला**। (२) **निर्वाह करनेवाला**। (३) **उत्पादक**।

प्रतिपादन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भलीभाँति समझाना**। (२) **प्रमाणपूर्वक कथन**। (३) **प्रमाण**। (४) **उत्पत्ति**।

प्रतिपादित—वि. [सं.] (१) **जिसे कहा-समझाया या प्रतिपादन किया गया हो**। (२) **प्रमाणित**। (३) **निरूपित**। (४) **प्रदत्त**।

प्रतिपाद्य—वि. [सं.] (१) **कहने, समझाने, या प्रतिपादन करने योग्य**। (२) **निरूपण के योग्य**। (३) **देने योग्य**।

प्रतिपार—संज्ञा पुं. [सं. प्रतिपाल] **पालनकर्त्ता, रक्षक, पोषक**। उ.—यहै विचार करत निसि-बासर, येई हैं जन के प्रतिपार—४६७।

प्रतिपारी—क्रि. स. स्त्री. [हिं. प्रतिपालना] **पालन की, पूर्ण की, (ठानी हुई बात या इच्छा) निभायी**। उ.—सदा सहाइ करी दासनि की, जो उर धरी सोइ प्रतिपारी—१-१६०।

प्रतिपारे—क्रि. स. [हिं. प्रतिपालना] (१) **पालन करके**। (२) **रक्षा करके, सुरक्षित रखकर**। उ.—बंधू करियौ राज सँभारे। राजनीति अरु गुरु की सेवा, गाइ-बिप्र प्रतिपारे—६-५४।

प्रतिपार्‍यौ—क्रि. स. [हिं. प्रतिपालना] **रक्षा की, बचाया**। उ.—नृप-कन्या कौ व्रत प्रतिपार्‍यौ, कपट बेष इक धार्‍यौ—१-३१।

प्रतिपाल—संज्ञा पुं. [सं.] **रक्षक, पालक, पोषक**।

प्रतिपालक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पालन करनेवाले, पोषक**। (२) **रक्षक, संरक्षक**। उ.—गुरु बसिष्ठ अरु मिलि सुमंत्र सौं, अतिहीं प्रेम बढ़ायौ। बालक प्रतिपालक तुम दोऊ, दसरथ लाड़ लड़ायौ—६-५५। (३) **राजा**।

प्रतिपालन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पालने की क्रिया या भाव, पालन-पोषण**। (२) **रक्षण**। (३) **निर्वाह**।

प्रतिपालना—क्रि. स. [सं. प्रतिपालना] **पालन-पोषण करना**। (२) **रक्षा करना**। (३) **निर्वाह करना**।

प्रतिपालित—वि. [सं.] (१) **पाला हुआ**। (२) **रक्षित**।

प्रतिपाली—क्रि. स. [हिं. प्रतिपालन] (१) **पालन-पोषण किया, रक्षा की**। उ.—तब ए बेली सींचि स्यामघन, अपनी करि प्रतिपाली—३२२८। (२) **निर्वाह किया**। उ.—धन्य सु गोकुल नारि सूर प्रभु प्रगट प्रीति प्रतिपाली—३५६७।

प्रतिपालैं—क्रि. स. [हिं. प्रतिपालना] **पालन करें, पालन-पोषण करें**। उ.—ताकी सक्ति पाइ हम करैं। प्रतिपालैं बहुरौ संहरैं—४-३।

प्रतिपाल्यौ—क्रि. स. [हिं. प्रतिपालना] **पालन किया, पाला-पोसा**। उ.–जिन पुत्रनिहिं बहुत प्रतिपाल्यौ, देवी-देव मनै हैं। तेई लै खोपरी बाँस दै, सीस फोरि बिखरैं हैं—१-८६।

प्रतिफल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **परिणाम, नतीजा**। (२) **बदला, स्वार्थ**। उ.—औरौ सकल सुकृत श्रीपति-हित, प्रतिफल-रहित सुप्रीति—२-२-१२। (३) **प्रतिबिंब**।

प्रतिबंध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रुकावट**। (२) **बाधा**।

प्रतिबंधक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रुकावट डालनेवाला, बाधक**।

प्रतिबाद—संज्ञा पुं. [सं. प्रतिवाद] (१) **विरोध, खंडन**। (२) **विवाद, विरोध, संघर्ष**। उ.—तुम्हैं हमैं प्रतिबाद भए तैं गौरव काकौ गरतौ—१-२०३।

प्रतिबिंब—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **छाया, परछाईं**। उ.—किधौं यह प्रतिबिंब जल में देखत निज रूप दोउ हैं सुहाए—२५७०। (२) **प्रतिमा**। (३) **चित्र**। (४) **दर्पण**। (५) **झलक**।

प्रतिबिंबक—संज्ञा पुं. [सं.] **छायावत् पीछे चलनेवाला**।

प्रतिबिंबित—वि. [सं.] (१) **जिसकी छाया पड़ती हो**। (२) **जो छाया पड़ने से दिखायी देता हो**। (३) **जिसका आभास हो**।

प्रतिभट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समान योद्धा**। (२) **शत्रु**।

प्रतिभा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बुद्धि**। (२) **असाधारण बुद्धि-बल या योग्यता**। (३) **दीप्ति, चमक**।

प्रतिभावान्—वि. [सं.] (१) **प्रतिभाशाली**। (२) **चमकदार**।

प्रतिभासंपन्न—वि. [सं.] **प्रतिभा-शाली**।

प्रतिभास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आकृति**। (२) **भ्रम**।

प्रतिभू—संज्ञा पुं. [सं.] **जमानत में पड़नेवाला**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिभौ—संज्ञा स्त्री. सवि. [सं. प्रतिभा] **कांति, दीप्ति, चमक या आभा भी।** उ.—सबनि सनेहौ छाँड़ि दयौ। हा जदुनाथ ! जरा तन ग्रास्यौ, प्रतिभौ उतरि गयौ—१-२९८।

तिम—अव्य. [सं.] **समान, सदृश।**

तिमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **मूर्ति, चित्र, अनुकृति।** (२) **मिट्टी, धातु आदि की देवमूर्ति।** (३) **छाया।** (४) **चिन्ह, छाप।** उ.—यह सुनि धावत धरनि, चरन की प्रतिमा पथ मैं पाई। नैन-नीर रघुनाथ सानि सों, सिव ज्यौं गात चढ़ाई—९-६४।

तिमान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रतिबिम्ब।** (२) **प्रतिनिधि।**

तिमूर्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रतिमा, मूर्ति, अनुकृति।**

तियोगिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्रतिद्वंद्विता।** (२) **विरोध।**

तियोगी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रतिद्वंद्वी।** (२) **शत्रु।**

तिरूप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चित्र।** (२) **प्रतिनिधि।**

तिरोध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बाधा।** (२) **तिरस्कार।**

तिलिपि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नकल, लेख की नकल।**

तिलोम—वि. [सं.] (१) **प्रतिकूल।** (२) **उलटा।**

तिलोम विवाह—संज्ञा पुं. [सं.] **विवाह जिसमें पुरुष नीच और स्त्री उच्च वर्ण की हो।**

तिवस्तूपमा—संज्ञा पुं. [सं.] **एक काव्यालंकार।**

तिवाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विरोध।** (२) **विवाद।**

तिवादी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विरोध या खंडन करनेवाला।** (२) **तर्क या विवाद करनेवाला।** (३) **प्रतिपक्षी।**

तिवेशी—संज्ञा पुं. [सं. प्रतिवेशिन्] **पड़ोसी।**

तिशोध—संज्ञा पुं. [सं. प्रति + शोध] **बदला।**

तिश्रुत—वि. [सं.] **स्वीकार किया हुआ।**

तिश्रुति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्रतिज्ञा।** (२) **स्वीकृति।**

तिषेध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मनाही।** (२) **खंडन।**

तिष्ठ—वि. [सं.] (१) **प्रसिद्ध।** (२) **सम्मानित।**

तिष्ठा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **स्थिति।** (२) **स्थापना, या प्रतिमा स्थापना।** (३) **मान-मर्यादा, गौरव।** (४) **प्रसिद्धि।** (५) **यश।** (६) **आदर-सत्कार।**

तिष्ठान—संज्ञा. पुं. [सं.] (१) **स्थापित करने की क्रिया।** (२) **देवमूर्ति-स्थापना।** (३) **स्थान।** (४) **पदवी।** (५) **व्रत आदि की समाप्ति पर किया गया कृत्य।**

प्रतिष्ठित—वि. [सं.] (१) **आदर-सम्मान-प्राप्त।** (२) **जिसकी प्रतिष्ठा या स्थापना की गयी हो।**

प्रतिस्पर्द्धा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **होड़, लागडांट, चढ़ा-ऊपरी।** (२) **झगड़ा।**

प्रतिस्पर्द्धी—वि. [सं. प्रतिस्पर्द्धा] (१) **होड़, लाग-डॉट रखनेवाला।** (२) **झगड़ालू, विद्रोही।**

प्रतिहंता—वि. [सं. प्रतिहंतृ] (१) **बाधक।** (२) **मारनेवाला।**

प्रतिहत—वि. [सं.] (१) **रुका हुआ, अवरुद्ध।** (२) **हटाया हुआ।** (३) **फेंका या गिराया हुआ।** (४) **निराश।**

प्रतिहार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।** उ.—(क) परम चतुर सुंदर सुजान सखि या तनु को प्रतिहार—२८८८। (ख) जुग जुग बिरद इहै चलि आयो भए बलि के द्वारे प्रतिहार—२६२०। (२) **द्वार, ड्योढ़ी।** (३) **एक राज कर्मचारी जो हर समय राजाओं के साथ रहकर उन्हें विभिन्न समाचार सुनाता था।** (४) **ऐंद्रजालिक, जादूगर।**

प्रतिहारी—संज्ञा पुं. [सं. प्रतिहारिन्] **द्वारपाल।**

प्रतिहिंसा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **हिंसा के बदले की हिंसा।** (२) **बैर या बदला चुकाना।**

प्रतीक—वि. [सं.] (१) **विरुद्ध।** (२) **नीचे से ऊपर जानेवाला।**

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चिन्ह।** (२) **अंग।** (३) **मुख।** (४) **आकृति, रूप।** (५) **वस्तु जिसमें दूसरी वस्तु का आरोप किया जाय।** (६) **प्रतिमा, मूर्ति।**

प्रतीकार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बदला।** (२) **चिकित्सा।**

प्रतीकोपासना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **विशेष पदार्थ, जेसे सूर्य, देवमूर्ति आदि में ब्रह्म का आरोप करके उसकी उपासना करना।**

प्रतीक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रतीक्षा करनेवाला।**

प्रतीक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आसरा, इंतजार।**

प्रतीचि, प्रतीची—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतीची] **पश्चिम दिशा।** उ.—प्राची और प्रतीचि उदीची और अवाची मान—सारा. ७७५।

प्रतीच्य—वि. [सं.] **पश्चिमी, पश्चिम-संबंधी।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीत—वि. [सं.] (१) ज्ञात, विदित। (२) प्रसिद्ध।

प्रतीति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) ज्ञान, जानकारी। (२) दृढ़ निश्चय, विश्वास। उ.—नाम प्रतीति भई जा जन कौं, लै आनँद, दुख दूरि दह्यौ—२-८। (३) प्रसिद्धि, ख्याति।

प्रतीप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आशा के विरुद्ध फल या घटना। (२) एक अर्थालंकार।

वि.—विरुद्ध, विपरीत, उलटा।

प्रत्यंच, प्रत्यंचा—संज्ञा स्त्री. [सं. पतंचिका] धनुष की डोरी।

प्रत्यक्ष—वि. [सं.] (१) जो देखा जा सके। (२) जिसका ज्ञान इंद्रियों से हो सके। (३) प्रकट, स्पष्ट।

प्रत्यक्षता—संज्ञा स्त्री. [सं.] प्रत्यक्ष होने का भाव।

प्रत्यक्षदर्शी—संज्ञा पुं. [सं. प्रत्यक्षदर्शिन्] साक्षी।

प्रत्यय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) विश्वास। (२) प्रमाण। (३) विचार। (४) ज्ञान। (५) व्याख्या। (६) कारण। (७) लक्षण। (८) निर्णय। (९) सम्मति।

प्रत्याख्यान—संज्ञा पं. [सं.] खंडन, निराकरण।

प्रत्यागत—संज्ञा पुं. [सं.] पैतरा, पेंच, दाँव।

वि.—जो लौट आया हो, वापस आया हुआ।

प्रत्यागमन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वापसी। (२) पुनरागमन।

प्रत्याघात—संज्ञा पुं. [सं.] बदले का आघात या टक्कर।

प्रत्यावर्त्तन—संज्ञा पुं. [सं.] लौटना, वापस आना।

प्रत्याशा—संज्ञा स्त्री. [सं.] आशा, भरोसा।

प्रत्याहार—संज्ञा पुं. [सं.] योग के आठ अंगों में से एक जिसमें इंद्रियों को अन्य विषयों से हटाकर चित्त का अनुसरण किया जाता है। उ.—जम और नियम प्रान प्रत्याहार धारन ध्यान समाधि—सारा. ६०।

प्रत्युत—अव्य. [सं.] वरन्, इसके विरुद्ध, बल्कि।

प्रत्युत्तर—संज्ञा पुं. [सं.] उत्तर का उत्तर।

प्रत्युत्पन्न—वि. [सं.] जो फिर से उत्पन्न हुआ हो।

प्रत्युत्पन्नमति—वि. [सं.] जो तुरंत उपयुक्त बात या काम करे।

संज्ञा स्त्री.—तुरंत उपयुक्त कार्य करने की बुद्धि।

प्रत्युपकार—संज्ञा पुं. [सं.] उपकार के बदले में उपकार।

प्रत्युप—संज्ञा पुं. [सं.] प्रभात, प्रातःकाल।

प्रत्यूह—संज्ञा पुं. [सं.] विघ्न-बाधा।

प्रत्येक—वि. [सं.] हर एक।

प्रथम—वि. [सं.] (१) पहला, जिसका स्थान पहले हो। उ.—जन के उपजत दुख किन काटत ? जैसे प्रथम अषाढ़-आँजु-तृन, खेतिहर निरखि उपाटत—१-१०७। (२) सर्वश्रेष्ठ, सबसे उत्तम। उ.—मनसा करि सुमिरयौ गज बपुरैं, ग्राह प्रथम गति पावै—१-१२२।

क्रि. वि. [सं.] सबसे पहले, आगे, आदि में। उ.-जिहिं सुत कैं हित बिमुख गोविंद तैं, प्रथम तिहीं मुख जारयौ—१-३३६।

प्रथमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मदिरा। (२) कर्त्ताकारक।

प्रथमी—संज्ञा स्त्री. [सं. पृथ्वी] भू, भूमि।

प्रथमैं—क्रि. वि. [सं. प्रथम] सबसे पहले, सर्वप्रथम। उ.—प्रथमैं-चरन-कमल कौं ध्याव। तासु महातम मन मैं ल्यावै—१०-१८।

प्रथा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) रीति-रिवाज। (२) प्रसिद्धि।

प्रथित—वि. [सं.] विख्यात, प्रसिद्धि।

प्रथिति—संज्ञा स्त्री. [सं.] प्रसिद्धि, ख्याति।

प्रथी—संज्ञा स्त्री. [सं. पृथ्वी] भू, भूमि।

प्रद—वि. [सं.] देनेवाला, दाता। उ.—कनक-वलय मुद्रिका मोदप्रद, सदा सुभग संतनि काजैं—१-६६।

प्रदच्छिण, प्रदच्छिन—संज्ञा पुं. [सं. प्रदच्छिणा] देवमूर्ति को दाहिनी ओर करके उसके चारों ओर घूमना, परिक्रमा, प्रदक्षिणा। उ.—हरि कह्यौ, राजहेत तप कियौ। ध्रुव, प्रसन्न ह्वै मैं तोहिं दियौ। अरु तेरे हित कियौ अस्थान। देहिं प्रदच्छिन जहाँ ससि-भान—४-६।

प्रदच्छिणा, प्रदच्छिना—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रदच्छिणा] परिक्रमा।

प्रदच्छिनकारी—वि. [सं. प्रदच्छिण+हिं. कारी=करने वाला] प्रदक्षिणा करनेवाले, परिक्रमा करनेवाले। उ.—जिहिं गोविंद अचल ध्रुव राख्यौ, रवि-ससि किए प्रदच्छिनकारी—१-३४।

प्रदत्त—वि. [सं.] दिया हुआ, दिया गया।

प्रदर्शक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दिखलानेवाला। (२) देखने या दर्शन करने वाला, दर्शक। (२) गुरु।

प्रदर्शन—संज्ञा पुं. [सं.] दिखलाने का काम।

प्रदर्शनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] नुमाइश।

प्रदर्शित—वि. [सं.] जो दिखलाया गया हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्शी—संज्ञा पुं. [सं. प्रदर्शिन्] **देखनेवाला, दर्शक।**

ाता—वि. [सं. प्रदातृ] **देनेवाला, दाता।**

ान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दान।** (२) **देने की क्रिया।**

ायक—वि. [सं.] **देनेवाला, दाता।**

ायी—वि. [सं. प्रदायिन] **देनेवाला, दाता।**

ीप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दीपक।** (२) **एक राग।**

ीपक—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रकाश में लानेवाला।**

ीपति—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रदीप्ति] (१) **प्रकाश।** (२) **चमक।**

ीपन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रकाश करना।** (१) **चमकाना।**

ीप्त—वि. [सं.] (१) **प्रकाशित।** (२) **चमकीला।**

ीप्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्रकाश।** (२) **चमक।**

ेश, प्रदेस—संज्ञा पुं. [सं. प्रदेश] (१) **शरीर का अंग, अवयव।** उ.—जानु सुजघन करभ-कर आकृति, कटि प्रदेस किंकिनि राजै—१-६९। (२) **प्रांत, सूबा।** (३) **स्थान।**

ेशी, प्रदेशीय—वि. [सं. प्रदेशी] **प्रदेश-संबंधी।**

ोष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **संध्याकाल।** (२) **त्रयोदशी का व्रत जिसमें दिनभर व्रत करके शाम को शिव-पूजन के पश्चात् भोजन किया जाता है।** (३) **बड़ा दोष।**

ुम्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कामदेव।** (२) **श्रीकृष्ण का बड़ा पुत्र।**

ोत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **किरण।** (२) **चमक।**

ान—वि. [सं.] (१) **मुख्य।** उ.—तहाँ अवज्ञा नारि प्रधान—४-१२। (२) **श्रेष्ठ।**

संज्ञा पुं.—(१) **नेता, मुखिया।** (२) **मंत्री।**

ानता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रधान होने का भाव।**

ानी—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रधान] **प्रधान का काम या पद।**

—संज्ञा पुं. [सं. प्रण] **दृढ़ निश्चय, प्रतिज्ञा।**

त—वि. [सं. प्रणत] (१) **नम्र, दीन।** (२) **झुका हुआ।**

संज्ञा प्र.—(१) **भक्त।** (२) **दास, सेवक।**

ति—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रणति] (१) **नम्रता।** (२) **विनती।**

मन—संज्ञा पुं. [सं. प्रणमन] **झुकना, नमना।**

प्रनमना—क्रि. स. [हिं. प्रणवना] **प्रणाम करना।**

प्रनय—संज्ञा पुं. [सं. प्रणय] **प्रेम, प्रीति।**

प्रनव—संज्ञा पुं. [सं. प्रणव] **ओंकार मंत्र।**

प्रनवना—क्रि. स. [हिं. प्रणवना] **प्रमाण करना।**

प्रनाम—संज्ञा पुं. [सं. प्रणाम] **नमस्कार।** उ.—सिव प्रनाम करि ढिग बैठाए—४-५।

प्रनामी—संज्ञा पुं. [सं. प्रणाम] **प्रमाण करने वाला।**

संज्ञा स्त्री.—**गुरुदक्षिणा।**

प्रनाली—संज्ञा स्त्री. [सं प्रणाली] **रीति, प्रथा।**

प्रनिपात—संज्ञा पुं. [सं. प्रणिपात] **प्रणाम।**

प्रपंच—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पाँच तत्वों का विस्तार, भवजाल।** (२) **विस्तार, फैलाव।** (३) **दुनिया का जंजाल** (४) **बखेड़ा, झंझट, झगड़ा।** उ.—अति प्रपंच की मोट बाँधिकै अपनैं सीस धरी—१-१८४। (५) **आडंबर, ढोंग, छल, धोखा।** उ.—बहुत प्रपंच किये माया के, तऊ न अधम अघानौ—१-३२६।

प्रपंचन—संज्ञा पुं. [सं.] **विस्तार करना।**

प्रपंची—वि. [सं. प्रपंचिन्] **छली, कपटी, ढोंगी।**

प्रपत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अनन्य भक्ति।**

प्रपन्न—वि. [सं.] **शरणागत, आश्रित।**

प्रपात—संज्ञा पुं. [सं.] **झरना, निर्झर।**

प्रपितामह—संज्ञा पुं. [सं.] **परदादा।**

प्रपुंज—संज्ञा पुं. [सं.] **बड़ा समूह, भारी झुंड।** उ.—बिकसत कमलावली, चले प्रपुंज-चंचरीक, गुंजत कल कोमल धुनि त्यागि कंज प्यारे—१०-२०५।

प्रपौत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **पुत्र का पौत्र।**

प्रफुलना—क्रि. अ. [सं. प्रफुल्ल] **फूलना।**

प्रफुला—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रफुल्ल] (१) **कुमुदिनी।** (२) **कमलिनी।**

प्रफुलित—वि. [सं. प्रफुल्ल] (१) **खिला हुआ, कुसुमित।** उ.—तुम्हारी भक्तिहमार प्रान······। जैसें कमल होत अति प्रफुलित, देखत दरसन भान—१-१६६। (२) **प्रसन्न, प्रमुदित।** उ.—गदगद बचन कहत मन प्रफुलित बार-बार समुझैहौं—२६२३। (३) **जो मुँदा न हो।** (४) **प्रसन्न, आनंदित।**

प्रबंध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बाँधने की डोरी।** (२) **बाँधने**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का **क्रम या योजना**। (३) **निबंध**। (४) **व्यवस्था**।

प्रबल—वि. [सं. (१) **बलवान, प्रचंड** । उ.—(क) कह करौं तेरी प्रबल माया देति मन भरमाइ—१-४५। (ख) जीवन-आस प्रबल श्रुति देखी—१-२८४। (२) **तेज, उग्र**। उ.—परिहस सूल प्रबल निसि-बासर, तातैं यह कहि आवत। सूरदास गोपाल सरनगत भएँ न को गति पावत—१-१८१। (३) **घोर, महान्**।

प्रबाल—संज्ञा पुं. [सं. प्रवाल] (१) **मूँगा**। (२) **कोंपल**।

प्रबालिका—संज्ञा पुं. [सं. प्रवाल] **मूँगा, विद्रुम, प्रवाल**। उ.—गजमोतिन के चौक पुराए बिच-बिच लाल प्रबालिका—८०६।

प्रबास—संज्ञा पुं. [सं. प्रवास] **परदेस में रहना**।

प्रबाह—संज्ञा पुं. [सं. प्रवाह] **क्रम, तार, सिलसिला**। उ.—राखी लाज द्रुपद-तनया की, कुरुपति चीर हरै। दुरजोधन कौ मान भंग करि बसन-प्रबाह भरै—१-३७।

प्रबिसना—क्रि. अ. [सं. प्रवेश] **प्रवेश करना, पैठना**।

प्रबीन—वि. [सं. प्रवीण] **चतुर**। उ.—चित दै सुनौ स्याम प्रबीन—३४५१।

प्रबीर—वि. [सं. प्रबीर] **भारी योद्धा**।

प्रबुद्ध—वि. [सं.] (१) **जागा हुआ**। (२) **सचेत**। (३) **सजग**। (४) **ज्ञानी**। (५) **विकसित**।

प्रबोध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जागना**। (२) **पूर्ण ज्ञान**। (३) **आश्वासन, ढाढ़स**। (४) **चेतावनी**। (५) **विकास**।

प्रबोधक—वि. [सं.] (१) **जगानेवाला**। (२) **चितावनी देनेवाला**। (३) **समझानेवाला**। (४) **सांत्वना देने वाला**।

प्रबोधत—क्रि. स. [हिं. प्रबोधना] (१) **समझाते-बुझाते हैं**। (२) **ढाढ़स बँधाते हैं, धीरज देते हैं**। उ.—जननी व्याकुल देखि प्रबोधत, धीरज करि नीकैं जदुराई। सूर स्याम कौं नैंकु नहीं डर, जनि तू रोवै जसुमति माई—५४८।

प्रबोधन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जागरण**। (२) **बोध, चेत**। (३) **ज्ञान या बोध कराना**। (४) **विकास**। (५) **सांत्वना**।

प्रबोधना—क्रि. स. [सं. प्रबोधन] (१) **जगाना**। (२) **सजग या सचेत करना**। (३) **समझाना-बुझाना**। (४) **सिखाना-पढ़ाना**। (५) **धीरज देना**।

प्रबोधि—क्रि. स. [हिं. प्रबोधना] **समझा-बुझाकर**। उ.—ठानी कथा प्रबोधि तबहिं फिरि गोप समोधे—३४४३।

प्रबोधित—वि. [सं.] **जो प्रबोधा गया हो**।

प्रबोधे—क्रि. स. [हिं. प्रबोधे] **समझाया-बुझाया**। उ.—कै वह स्याम सिखाय प्रबोधे, कै वह बीच मरे—२६८२।

प्रभंजन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आँधी**। (२) **हवा**।

प्रभव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जन्म**। (२) **सृष्टि**।

प्रभविष्णु—वि. [सं.] **प्रभावशील**।

प्रभा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दीप्ति, आभा**। (२) **सूर्यबिंब**।

प्रभाउ—संज्ञा पुं. [सं. प्रभाव] (१) **सामर्थ्य, शक्ति**। उ.—जुद्ध न करौं, शस्त्र नहिं पकरौं, एक ओर सेना सिगरी। हरि-प्रभाउ राजा नहिं जान्यौ, कह्यौ सैन मोहिं देहु हरी—१-२६८। (२) **महत्व, माहात्म्य**।

प्रभाकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सूर्य** (२) **चन्द्र**।

प्रभाकीट—संज्ञा पुं. [सं.] **जुगनूँ, खद्योत**।

प्रभात—संज्ञा पुं. [सं.] **सबेरा, प्रातःकाल**।

प्रभाती—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रातःकालीन एक गीत**।

प्रभाव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सामर्थ्य, शक्ति**। उ.—भक्ति-प्रभाव सूर लखि पायौ, भजन-छाप नहिं पाई—१-६३। (२) **उद्भव, प्रादुर्भाव**। (३) **महिमा, माहात्म्य**। (४) **फल, परिणाम, असर**। (५) **साख, दबाव**। (६) **मन को किसी ओर प्रेरित कर देने का गुण**।

प्रभास—वि. [सं.] **प्रभापूर्ण**। उ.—अंग-अंग भूषन बिराजत कनक मुकुट प्रभास—१३५६।

संज्ञा पुं.—(१) **ज्योति**। (२) **गुजरात का एक तीर्थ**।

प्रभासन—संज्ञा पुं. [सं.] **ज्योति, आभा**।

प्रभासना—क्रि. अ. [सं. प्रभासिन] **दिखायी पड़ना**।

प्रभासु—संज्ञा पुं. [सं. प्रभास] **गुजरात का एक तीर्थ**। उ.—आय प्रभासु बिचु बहु जन को बहुतहिं दान देवाये—सारा. ८३६।

प्रभु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अधिपति**। (२) **स्वामी**। (३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ईश्वर, भगवान। उ.—बिनु दीन्हैं ही देत सूर-प्रभु ऐसे हैं जदुनाथ गुसाईं—१-३। (४) 'महात्मा' के लिए संबोधन।

ुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) महत्व, बड़ाई, महत्ता। उ.—दूरि गयौ दरसन के ताईं, व्यापक प्रभुता सब बिसरी—१-११५। (२) साहिबी, मालिकपन, प्रभुत्व। उ.—प्रभु की प्रभुता यहै जु दीन सरन पावै—१-१२४। (३) शासनाधिकार। (४) वैभव।

ुताई—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रभुता] (१) बड़ाई, महत्व। उ.—तौ क्यों तजै नाथ अपनौ प्रन ? है प्रभु की प्रभुताई—१-२०७। (२) वैभव। उ.—सोवत मुदित भयौ सपने मैं, पाई निधि जो पराई। जागि परैं कछु हाथ न आयौ, यौं जग की प्रभुताई—१-१४७।

ुत्व—संज्ञा पुं. [सं.] अधिकार, वैभव, पद-मान। उ.—जग-प्रभुत्व प्रभु ! देख्यौ जोइ। सपन-तुल्य छन-भंगुर सोइ—७-२।

ुभक्त—वि. [सं.] स्वामी का सच्चा सेवक।

ू—संज्ञा पुं. [सं. प्रभु] (१) स्वामी (२) ईश्वर।

ूत—वि. [सं.] (१) उत्पन्न। (२) बहुत अधिक।

ूति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) उत्पत्ति। (२) अधिकता।

ृति—अव्य. [सं.] आदि, इत्यादि।

ेद—संज्ञा पुं. [सं.] भेद, उपभेद।

मत, प्रमत्त—वि. [सं. प्रमत्त] उन्मत्त, प्रमत्त, मतवाला, मस्त। उ.—तू कहाँ ढीठ, जोबन-प्रमत्त सुंदरी, फिरति इठलाति गोपाल आगैं—१०-३०७।

मत्तता—संज्ञा स्त्री. [सं.]। (१) मस्ती। (२) पागलपन।

मदा—संज्ञा स्त्री. [सं.] सुंदरी, युवती।

माण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सबूत। (२) एक अर्थालंकार। (३) सत्यता। (४) दृढ़ धारणा, निश्चय। (५) मान-आदर। (६) प्रामाणिक बात या वस्तु। (७) हद, सीमा, इयत्ता। (८) आदेशपत्र।

वि.—(१) सत्य, प्रमाणित। (२) स्वीकार योग्य, मान्य। (३) परिमाण आदि में समान या बराबर।

अव्य.—तक, पर्यन्त।

माणित—वि. [सं.] प्रमाण से सिद्ध।

प्रमाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) भूल-चूक, भ्रम। (२) आलस्य। (३) अंतःकरण की दुर्बलता।

प्रमादी—वि. [सं. प्रमादिन्] भूल-चूक करनेवाला।

प्रमान—संज्ञा पुं. [सं. प्रमाण] (१) इयत्ता, हद, मान, सीमा। उ.—हरि जू, मोसौ पतित न आन। मन-क्रम-वचन पाप जे कीन्हे, तिनकौ नाहिं प्रमान—१-१६७। (२) हद, मान, इयत्ता। उ.—अतल, वितल अरु सुतल तलातल और महातल जान। पाताल और रसातल मिलि कै सातौ भुवन प्रमान—सारा. ३१।

वि.—मानने योग्य, मान्य, स्वीकृत। उ.—युग प्रमान कीन्हौं व्यवहार—१० उ.—१२६।

प्रमानना—क्रि. स. [सं. प्रमाण] (१) सत्य या ठीक मानना। (२) सिद्ध या प्रमाणित करना। (३) निश्चित या स्थिर करना।

प्रमानी—वि. [सं. प्रामाणिक] मान्य, मानने योग्य।

प्रमानो—क्रि. स. [हिं. प्रमानना] सत्य मानो, ठीक समझो। उ.—करो उपाय, बचो जो चाहो, मेरो बचन प्रमानो—सारा. ४८७।

प्रमान्यो, प्रमान्यौ—क्रि. स. [हिं. प्रमानना] स्थिर या निश्चित किया, ठहराया। उ.—जोगेस्वर बपु धारि हरि प्रगटे जोग समाधि प्रमान्यो—सारा. ३५१।

प्रमुख—क्रि. वि. [सं.] (१) सामने, आगे। (२) तत्काल।

वि.—(१) प्रथम। (२) मुख्य। (३) प्रतिष्ठित।

अव्य.—और-और, इनके अतिरिक्त और, इत्यादि। उ.—बंधुक सुमन अरुन पद पंकज, अंकुस प्रमुख चिन्ह बनि आए—१०-१०४।

संज्ञा पुं.—(१) आरंभ, आदि। (२) समूह।

प्रमुद—वि. [सं. प्रमुद्] प्रसन्न, आनंदित।

प्रमुदा—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रमदा] राधा की एक सखी का नाम। उ.—(क) स्यामा कामा चतुरा नवला प्रमुदा सुमना नारि—१५८०। (ख) सूर प्रभु स्याम सकुचि गए प्रमुदा धाम—२१५३।

प्रमुदित—वि. [सं.] प्रसन्न, आनंदित।

प्रमोद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हर्ष। (२) सुख।

प्रयंक—संज्ञा पुं. [सं. पर्यंक] पलँग।

प्रयंत—अव्य.—[सं. पर्यंत] तक, लौं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयत्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रयास, चेष्टा। (२) वर्णोच्चारण में होने वाली क्रिया।

प्रयत्नवान—वि. [सं. प्रयत्नवान्] प्रयत्न में लगा हुआ।

प्रयाग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अनेक यज्ञों का स्थान। (२) एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा-यमुना के संगम पर है।

प्रयाण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रस्थान। (२) चढ़ाई।

प्रयाणकाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) यात्राकाल। (२) मृत्यु-काल।

प्रयान—संज्ञा पुं. [सं. प्रयाण] गमन, प्रस्थान, जाना।

प्रयास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रयत्न, उद्योग। (२) श्रम, मेहनत। उ.—बिना प्रयास मारिहौं तोकौं आजु रैनिकै प्रात—६-७६। (३) इच्छा।

प्रयुक्त—वि. [सं.] (१) सम्मिलित। (२) जिसका खूब प्रयोग किया गया हो। (३) जो काम में लगाया गया हो।

प्रयोक्ता—संज्ञा पुं. [सं. प्रयोक्तृ] (१) प्रयोग या व्यवहार करनेवाला। (२) लगानेवाला। (३) सूत्रधार।

प्रयोग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) किसी काम में लगना। (२) व्यवहार। (३) तांत्रिक साधन। (४) क्रिया का विधान। (५) अभिनय। (६) अनुष्ठान विधि।

प्रयोगी—संज्ञा पुं. [सं. प्रयोगिन्] प्रयोग करनेवाला।

प्रयोजन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कार्य। (२) उद्देश्य, अभिप्राय। (३) उपयोग, व्यवहार।

प्ररोजना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) रुचि बढ़ाना। (२) बढ़ावा।

प्रलंब—संज्ञा पुं. [सं.] प्रलंबासुर जो बलराम के हाथ से मारा गया था। गोपवेश में यह उनके साथ खेलने आया था। हारने पर बलराम को कंधे पर चढ़ा कर यह भागा। तभी उन्होंने इसे मार डाला। उ.—धेनुक और प्रलंब सँहारे संख-चूड बध कीन्हों—सारा. ४७६।

वि.—(१) लटकता हुआ। (२) लंबा। (३) टँगा हुआ। (४) किसी ओर निकला हुआ। (५) शिथिल।

प्रलयंकर—वि. [सं.] प्रलयकारी।

प्रलय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) लय को प्राप्त होना, विलीन होना। उ.—सूरजदास अकाल प्रलय प्रभु मेटौ दास दिखाइ—६—११०। (२) संसार का तिरोभाव या नाश। (३) मूर्च्छा।

प्रलाप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बकना। (२) बकवाद। (३) बातचीत, वार्तालाप। उ.—बिह्वल बिकल दीन दारिदबस करि प्रलाप रुक्मिनि समुझाये—१०-उ०—६२।

प्रलापी—वि. [सं. प्रलापिन्] व्यर्थ बकनेवाला।

प्रलोभन—संज्ञा पुं. [सं.] लोभ, लालच।

प्रलोभी—वि. [सं. प्रलोभिन्] लोभ में फँसनेवाला।

प्रवंचक—वि. [सं.] ठग, धूर्त, धोखेबाज।

प्रवंचना—संज्ञा स्त्री. [सं.] ठगी, धूर्तता।

प्रवक्ता—संज्ञा पुं. [सं. प्रवक्तृ] अच्छा वक्ता।

प्रवचन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) व्याख्या। (२) उपदेश।

प्रवर—वि. [सं.] श्रेष्ठ, प्रधान।

प्रवर्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कार्यारंभ। (२) एक तरह के मेघ। उ.—अनिल वर्त, बज्रवर्त, प्रवर्त—१०-४४। (३) एक गोलाकार आभूषण।

प्रवर्तक—संज्ञा पुं. [सं. प्रवर्त्तक] (१) आरंभ करनेवाला (२) चलाने वाला, संचालक। (३) प्रेरित करनेवाला। (४) उसकानेवाला।

प्रवर्तन—संज्ञा पुं. [सं. प्रवर्त्तन] (१) कार्यारंभ। (२) संचालन। (३) उत्तेजना, प्रेरणा। (४) प्रवृत्ति।

प्रवर्तित—वि. [सं. प्रवर्तित] (१) आरंभ किया हुआ। (२) चलाया हुआ। (३) निकाला हुआ। (४) उत्पन्न। (५) प्रेरित, उत्तेजित।

प्रवर्षण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वर्षा। (२) एक पर्वत।

प्रवाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बातचीत, वार्तालाप। (२) जनश्रुति, जनरव। (३) झूठी बदनामी, अपवाद।

प्रवान—संज्ञा पुं. [सं. प्रमाण] प्रमाण।

प्रवाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मूँगा। (२) कोंपल, किशलय। उ.—सिखि-सिखंड, बन-धातु बिराजत, सुमन सुगंध प्रवाल—४७८।

प्रवास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) विदेश। (२) विदेश-वास।

प्रवासन—संज्ञा पुं. [सं.] देश-निकाला।

प्रवासित—वि. [सं.] देश से निकाला हुआ।

प्रवासी—वि. [सं.] विदेश में रहनेवाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ाह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जल की गति, बहाव** । (२) **धारा** । (३) **कार्य का चलते रहना** । (४) **झुकाव, प्रवृत्ति** । (५) **क्रम, तार, सिलसिला** । उ.—(क) सुमिरत ही ततकाल कृपानिधि बसन-प्रवाह बढ़ायौ—१-१०६ । (ख) ऐसौ ग्रौर कौन करुनामय बसन-प्रवाह बढ़ावै—१-१२२ ।

ाहित—वि. [सं.] (१) **बहाया हुआ** । (२) **ढोया हुआ** ।

ाही—वि. [सं. प्रवाहिन्] **बहने या बहानेवाला** ।

विष्ट—वि. [सं.] **घुसा या पैठा हुआ** ।

विसना—क्रि. अ. [सं. प्रवेश] **घुसना, पैठना** ।

ीए, प्रवीन, प्रवीने—वि. [सं.] **निपुण, कुशल, दक्ष** । उ.—ग्रति है चतुर चातुरी जानत सकल कला जु प्रवीने —पृ० ३३५ (४२) ।

ीणता, प्रवीनता—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रवीणता] **चतुराई** ।

ीर—वि. [सं.] **भारी योद्धा, सुभट** ।

वृत्त—वि. [सं.] (१) **रत, तत्पर** । (२) **तैयार** ।

वृत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बहाव, प्रवाह** । (२) **मन का झुकाव, रुचि, लगन** । (३) **वृत्तांत** । (४) **सांसारिक कार्यों या विषयों में लीनता** ।

वेश, प्रवेशनि—संज्ञा पुं. [सं. प्रवेश] (१) **घुसना, पैठना** । उ.—सैसवता में ह्वे सखी जोबन कियो प्रवेश —२०६५ । (२) **गति, पहुँच** । उ.—किधौं उहि देशन गवन मग छाँड़े, धरनि न बूँद प्रवेशनि—२८२४ ।

वेशना, प्रवेसना—क्रि. अ. [सं. प्रवेश] **प्रवेश करना** ।

वेसि—क्रि. अ. [सं. प्रवेश] **प्रविष्ट होकर** । उ.—वृंदाबन प्रवेसि ग्रघ मारयौ, बालक जसुमति, तेरैं—४३२ ।

वेशिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वह पत्र, धन आदि जिसे दिखाकर या देकर प्रवेश किया जा सके** ।

व्रज्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] **संन्यास** ।

व्राज—संज्ञा—पुं. [सं] **संन्यास** ।

शंस—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रशंसा] **बड़ाई, प्रशंसा** ।

वि. [सं. प्रशंस्य] **प्रशंसा के योग्य** । उ.—एक मराल पीठि आरोहण बिधि भयो प्रबल प्रशंस—२३४० ।

प्रशंसक—वि. [सं.] (१) **प्रशंसा करनेवाला** । (२) **खुशामदी** ।

प्रशंसन—संज्ञा पुं. [सं.] **गुणकथन, बड़ाई, सराहना** । (२) **साधुवाद** ।

प्रशंसना—क्रि. स. [सं. प्रशंसन] **तारीफ करना, सराहना** ।

प्रशंसा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **स्तुति, बड़ाई, श्लाघा** । उ.—उपजत छबि कर ग्रधर शंख मिलि सुनियत शब्द प्रशंसा—२५६६ ।

प्रशंसित—वि. [सं.] **सराहा हुआ** । उ.—चहुँ दिसि चाँदनी चमू चली मनहु प्रशंसित पिक बर बानी—२३८३ ।

प्रशंसी—क्रि. स. [हिं. प्रशंसना] **प्रशंसा की** । उ.—(क) सूरदास प्रभु सब सुखदाता लै भुज बीच प्रशंसी—१६८५ ।

प्रशस्त—वि. [सं.] (१) **प्रशंसनीय** । (२) **चौड़ा** ।

प्रशस्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्रशंसा, स्तुति** । (२) **पत्र का सरनामा** । (३) **ताम्रपत्रादि जिन पर राजाओं की कीर्ति लिखी हो** । (४) **प्राचीन ग्रंथ के अंत का परिचायक विवरण** ।

प्रशांत—वि. [सं.] (१) **स्थिर** । (२) **शांत** ।

प्रशाखा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **शाखा की शाखा** ।

प्रशासन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कर्तव्य-शिक्षा** । (२) **शासन** ।

प्रश्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पूछताछ, सवाल** । (२) **पूछने की बात** । (३) **विचारणीय विषय** ।

प्रश्नोत्तर—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रश्न और उत्तर, संवाद** ।

प्रश्रय—संज्ञा पुं.—[सं.] (१) **आश्रय स्थान** । (२) **सहारा, आधार** । (३) **विनय** । (४) **विशेष ध्यान** ।

प्रश्वास—संज्ञा पुं. [सं.] **नथने से बाहर आनेवाली साँस** ।

प्रसंग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **संबंध, लगाव** । (२) **बात या विषय का संबंध** । (३) **स्त्री-पुरुष-संयोग** । (४) **अनुरक्ति** । (५) **बात, विषय** । (६) **उपयुक्त अवसर** । उ.—तब तैं मैं सुधि कछू न पाई । बिनु प्रसंग तहँ गयौ न जाई—६-३१ । (७) **बात, वार्ता, विषय** ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—जौ अपनौ मन हरि सौं राँचै । आन उपाय-प्रसंग छाँड़ि कै, मन-बच-क्रम अनुसाँचै—१-८१ । (८) **हेतु, कारण** । (९) **विस्तार, फैलाव** ।

प्रसंसत—क्रि. स. [सं. प्रशंसना] **प्रशंसा करते हैं** । उ.—आपहुँ खात प्रसंसत आपुहिं, माखन रोटी बहुत पयौ—१०-१६८ ।

प्रसंसना—क्रि. स. [सं. प्रशंसन] **प्रशंसा करना** ।

प्रसन्न—वि. [सं.] (१) **संतुष्ट** । (२) **हर्षित, आनंदित** । (३) **अनुकूल** (४) **निर्मल, स्वच्छ** ।
वि. [फ़ा. पसंद] **पसंद, मनोनीत** ।

प्रसन्नता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **संतोष** । (२) **हर्ष, आनंद** । (३) **कृपा, अनुग्रह** । (४) **निर्मलता, स्वच्छता** ।

प्रसन्नमुख—वि. [सं.] **जो सदा हँसता रहे** ।

प्रसन्नात्मा—वि. [सं. प्रसन्नात्मन्] **आनंदी, मनमौजी** ।

प्रसन्नित—वि. [सं. प्रसन्न] **हर्षित, आनंदित** ।

प्रसरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बढ़ना, फैलना** । (२) **फैलाव, विस्तार** । (३) **काम में प्रवृत्त होना** ।

प्रसरित—वि. [सं.] (१) **फैला हुआ** । (२) **विस्तृत** ।

प्रसव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बच्चा जनना** । (२) **जन्म, उत्पत्ति** । (३) **संतान** । (४) **वृद्धि** । (५) **विकास** ।

प्रसविता—वि. [सं. प्रसवितृ] **जन्म देनेवाला** ।

प्रसविनी—वि. [सं.] **जन्म देनेवाली, जननेवाली** ।

प्रसाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रसन्नता** । (२) **कृपा, अनुग्रह** । उ.—(क) मुक्ति मनोरथ मन मैं ल्यावै । मम प्रसाद तैं सो वह पावैं—३-१३ । (ख) करहु मोहिं ब्रज रेनु देहु बृंदाबन बासा । माँगौं यहै प्रसाद और मेरैं नहिं आसा—४९२ । (३) **निर्मलता** । (४) **वह वस्तु जो देवता पर चढ़ाई जाय** । (५) **वह पदार्थ जो आचार्य या गुरुजन, पूजन, यज्ञ आदि करके या प्रसन्न होकर भक्तों या सेवकों को दें** । उ.—रिषि ता नृप सों जज्ञ करायो । दै प्रसाद यह बचन सुनायौ—९-५ । (६) **देवता की जूठन जो भक्तों या सेवकों में बाँटी जाय** । उ.—जूठन माँगि सूर जन लीन्हौ । बाँटि प्रसाद सबनि कौं दीन्हौ—३९६ । (७) **भोजन (साधु)** । (८) **काव्य का एक गुण जिसमें भाषा प्रचलित, सरल और स्वच्छ रहती है** । (९) **कोमलावृत्ति** । (१०) **प्रासाद, महल** ।

प्रसादना—क्रि. स. [सं. प्रसाद] **प्रसन्न करना** ।

प्रसादनीय—वि. [सं.] **प्रसन्न करने योग्य** ।

प्रसादी—वि. [सं. प्रसादिन्] (१) **प्रसन्न करनेवाला** । (२) **प्रीति करनेवाला** । (३) **कृपालु** । (४) **शांत** ।
संज्ञा स्त्री. [हिं. प्रसाद] (१) **देवी-देवता पर चढ़ाया गया पदार्थ** । (२) **नैवेद्य** । (३) **वह पदार्थ जो बड़े लोग छोटों को दें** । (४) **देवी-देवता की जूठन** ।

प्रसाधक—वि. [सं.] **वस्त्राभूषण पहनानेवाला** ।

प्रसाधन—संज्ञा पुं. [सं.] **शृंगार, सजावट** ।

प्रसाधित—वि. [सं.] **सजाया-सँवारा हुआ** ।

प्रसार—संज्ञा पुं. [सं.] **विस्तार, फैलाव, पसार** ।

प्रसारित—वि. [सं.] **पसारा या फैलाया हुआ** ।

प्रसिद्ध—वि. [सं.] **विख्यात, नामी** ।

प्रसिद्धि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **ख्याति, सुनाम** ।

प्रसुप्त—वि. [सं.] (१) **खूब सोया हुआ** । (२) **असावधान** ।

प्रसू—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जननेवाली, जननी** ।

प्रसूत—वि. [सं.] (१) **उत्पन्न** । (२) **उत्पादक** ।

प्रसूता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जननेवाली, जच्चा, जननी** ।

प्रसूति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्रसव** (२) **उत्पत्ति** । (३) **कारण** । (४) **संतति** । (५) **जच्चा** । (६) **उत्पत्ति स्थान** ।

प्रसून—संज्ञा पुं. [सं.] **फूल** । उ.—सुनि सठनीति प्रसून-रस लंपट अबलनि को घाँचहि—३१४५ ।

प्रसृत—वि. [सं.] (१) **फैला हुआ** । (२) **विकसित** । (३) **प्रेरित** । (४) **तत्पर** । (५) **प्रचलित** ।

प्रसेद—संज्ञा पुं. [सं. प्रस्वेद] **पसीना** । उ.—तट बारू उपचार चूर जल पूर प्रसेद पनारी—२७२८ ।

प्रसेन, प्रसेनजित—संज्ञा पुं. [सं.] **सत्राजित् का भाई जिसकी मणि के कारण श्रीकृष्ण को झूठा कलंक लगा था** ।

प्रस्तर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पत्थर** । (२) **बिछावन** ।

प्रस्ताव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रसंग, विषय, चर्चा** । (२) **सभा में स्वीकृत मंतव्य** । (३) **भूमिका, पूर्व वक्तव्य** ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तावना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) आरंभ। (२) पूर्व वक्तव्य, भूमिका। (३) नाटक के विषय आदि का परिचायक प्रसंग।

प्रस्तावित—वि. [सं.] जिसके लिए प्रस्ताव हुआ हो।

प्रस्तुत—वि. [सं.] (१) जिसकी चर्चा की गयी हो। (२) उपस्थित, जो सामने हो। (३) उद्यत, तैयार।

प्रस्थ—संज्ञा पुं. [सं.] चौरस पहाड़ी भूमि।

प्रस्थान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) यात्रा, गमन, कूच। (२) ठीक मुहूर्त पर यात्रा न कर सकने पर वस्त्रादि यात्रा की दिशा में रखवा देने की क्रिया। (३) मार्ग।

प्रस्थानी—वि. [हिं. प्रस्थान] जानेवाला।

प्रस्न—संज्ञा पुं. [सं. प्रश्न] प्रश्न, सवाल।

प्रस्फुट—वि. [सं.] (१) खिला हुआ। (२) प्रकट।

प्रस्फुरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) निकलना। (२) प्रकट या प्रकाशित होना।

प्रस्राव—संज्ञा पुं. [सं.] झरना, बहना, क्षरण।

प्रस्वेद—संज्ञा पुं. [सं.] पसीना। उ.—नख छत सोनित प्रस्वेद गात तें चंदन गयो कछु छूटि—१६१२।

प्रहर—संज्ञा पुं. [सं.] पहर।

प्रहरखना—क्रि. अ. [सं. प्रहर्षण] आनंदित होना।

प्रहरी—संज्ञा पुं. [सं. प्रहरिन] (१) पहर-पहर पर घंटा बजानेवाला। (२) पहरा देनेवाला, पहरुआ।

प्रहलाद—संज्ञा पुं. [सं. प्रह्लाद] हिरण्यकशिपु का पुत्र।

प्रहर्षण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आनन्द। (२) एक अलंकार।

प्रहसन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हास-परिहास। (२) हास्य-रस-प्रधान नाटक।

प्रहार—संज्ञा पुं. [सं.] वार, आघात, चोट।

प्रहारक—वि. [सं.] प्रहार करनेवाला।

प्रहारन—वि. [हिं. प्रहार] (१) प्रहार करनेवाला। (२) तोड़नेवाला। उ.—जानि लई मेरे जिय की उन गर्व-प्रहारन उनको नाऊँ—१६५४।

प्रहारना—क्रि. अ. [सं. प्रहार] (१) मारना, आघात करना। (२) मारने को अस्त्रादि चलाना।

प्रहारित—वि. [सं. प्रहार] जिस पर प्रहार हो।

प्रहारि—क्रि. अ. [हिं. प्रहारना] मारकर। उ.—दैत्य प्रहारि पाप-फल प्रेरित, सिर-माला सिव-सीस चढ़ैहौं—६-१५७।

प्रहारी—वि. [सं. प्रहारिन्] (१) नष्ट करनेवाला, दूर करनेवाला, भंजन करनेवाला। उ.—(क) जाकौ बिरद है गर्व प्रहारी, सो कैसैं बिसरै—१-३७। (ख) सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे, मथुरा-गर्व-प्रहारी—१०-४। (२) मारनेवाला। (३) अस्त्र चलानेवाला।

प्रहारो—क्रि. अ. [हिं. प्रहारना] प्रहार करो। उ.—डारि-अगिन में शस्त्रनि मारो नाना भाँति प्रहारो—सारा, १२०।

प्रहारौं—क्रि. अ. [हिं. प्रहारना] मारूँ।

प्र०—प्रान प्रहारौं—प्राण दे दूँ। उ.—तब देवकी भई अति व्याकुल कैसैं प्रान प्रहारौं—१०-४।

प्रहारौ—संज्ञा पुं. [सं. प्रहार] आघात, चोट। उ.—गोपाल सबनि प्यारौ, ताकौं तैं कीन्हौ प्रहारौ—३७३।

प्रहार्‍यौ—क्रि. अ. [हिं. प्रहारना] (१) नष्ट किया, (गर्व, मान आदि) तोड़ दिया। उ.—नृप-कन्या को ब्रत प्रतिपार्‍यौ, कपट बेष इक धार्‍यौ। तामैं प्रगट भए श्रीपति जू, अरिगन-गर्ब प्रहार्‍यौ—१-३१। (२) मारा, आघात किया। उ.—डारि अगिनि मैं सस्त्रनि मार्‍यौ, नाना भाँति प्रहार्‍यौ। (३) मारने के लिए चलाया, फेंका। उ.—ऐरावत अमृत कैं प्याए। भयो सचेत इंद्र तब धाए। बृत्रासुर कौं बज्र प्रहार्‍यौ। तिन त्रिसूल सुरपति कौं मार्‍यौ—६-५।

प्रहास—संज्ञा पुं. [सं.] अट्टहास, ठहाका।

प्रहासी—वि. [सं. प्रहासिन्] खूब हँसने-हँसानेवाला।

प्रहेलिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] पहेली, बुझौवल।

प्रह्लाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आनंद। (२) हिरण्यकशिपु दैत्य का पुत्र जो विष्णु का भक्त था। पिता की विष्णु से शत्रुता थी; इसलिए पुत्र को उसने बहुत ताड़ना दी और उसके प्राण हरने के अनेक उपाय किये अंत में विष्णु ने नृसिंह अवतार लेकर हिरण्यकशिपु को मार डाला और अपने भक्त की रक्षा की।

प्रांगण, प्रांगन—संज्ञा पुं. [सं. प्रांगण] आँगन, सहन।

प्रांजल—वि. [सं.] (१) सरल, सीधा। (२) सच्चा। (३) जो ऊँचा-नीचा न हो, समतल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अंत, सीमा। (२) किनारा, छोर। (३) ओर, तरफ। (४) प्रदेश, भू-भाग।

प्रांतिक, प्रांतीय—वि. [सं.] प्रांत का, प्रांत-संबंधी।

प्राकाम्य—संज्ञा स्त्री. [सं.] आठ सिद्धियों में एक।

प्राकार—संज्ञा पुं. [सं.] परकोटा, चहारदीवारी।

प्राकृत—वि. [सं.] (१) प्रकृति-संबंधी। (२) स्वाभाविक, नैसर्गिक, सहज। उ.—प्राकृत रूप धरयौ हरि छिन में सिसु ह्वै रोवन लागे—सारा. ३७०। (३) साधारण। (४) लौकिक, भौतिक।

संज्ञा स्त्री.—(१) बोलचाल की भाषा। (२) एक प्राचीन भाषा।

प्राकृतिक—वि. [सं.] (१) प्रकृत से उत्पन्न। (२) प्रकृति-संबंधी। (३) सहज, स्वाभाविक, नैसर्गिक। (४) साधारण। (५) मौतिक, लौकिक।

प्राग—संज्ञा पुं. [सं. प्रयाग] प्रयाग तीर्थ। उ.—सुभ कुरुछेत्र, अजोध्या मिथिला प्राग त्रिवेनी न्हाये—सारा. ८२८।

प्राची—संज्ञा स्त्री. [सं.] पूर्व दिशा। उ.—प्राची दिसा पेखि पूरन ससि ह्वै आयौ तन तातो—१०उ०-१००।

प्राचीन—वि. [सं.] (१) पूर्व देश का। (२) पुराना, पुरातन। (३) पहले का, पिछला। उ.—ढूँढत फिरै न पूँछन पावै आपुन ग्रह प्राचीन—१० उ०-६६। (४) बूढ़ा।

प्राचीनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] पुरानापन।

प्राचीनबर्हि—संज्ञा पुं. [सं. प्राचीनबर्हिस] एक प्राचीन राजा जो अग्निगोत्रीय थे और प्रजापति कहलाते थे।

प्राचीर—संज्ञा पुं. [सं.] परकोटा, चहारदीवारी।

प्राचुर्य—संज्ञा पुं. [सं. प्राचुर्य्य] अधिकता।

प्राच्य—वि. [सं.] (१) पूर्व का, पूर्व-संबंधी, पूर्वीय। (२) पुराना, प्राचीन, पूर्वकालीन।

प्राज्ञ—वि. [सं.] (१) बुद्धिमान। (२) पंडित, विज्ञ।

प्राण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वायु। (२) वायु जिससे मनुष्य जीवित रहता है। (३) साँस। (४) बल, शक्ति। (५) जीवन, जान। उ.—प्रीति पतंग करी दीपक सों आपै प्राण दह्यौ—२८०६।

मुहा०—प्राण उड़ जाना—(१) होश-हवास न रहना। (२) डर जाना। प्राण आना या प्राणों में प्राण आना—चित्त कुछ ठिकाने होना, धीरज आना। प्राण (प्राणों) का अधर या गले तक आना—मरने पर होना। उ.—प्रीतम प्यारे प्राण हमारे रहे अधर पर आइ—३०५६। प्राण (प्राणों का) मुँह को आना—(१) बहुत दुख होना। (२) मरने पर होना। प्राण खाना—बहुत तंग करना। प्राण जाना (छूटना, निकलना)—मरना। प्राण डालना—जीवन का संचार करना। प्राण छोड़ना—(तजना, त्यागना, देना)—मरना। किसी के ऊपर प्राण देना—(१) किसी के काम या व्यवहार से बहुत दुखी होकर मरना। (२) प्राणों से भी अधिक चाहना। प्राण निकलना—(१) मरना। (२) घबरा जाना। प्राण पयान होना—मरना। प्राण पर आ पड़ना—जीवन का संकट में पड़ जाना। प्राण पर खेलना—ऐसा काम करना जिसमें जान जाने का डर हो, पर इसकी परवाह न करना। उ.—हमसों मिले बरस द्वादस दिन चारिक तुम सो तूठे। सूर आपने प्राणन खेलैं ऊधौ खेलैं रूठे। प्राण पर बीतना—(१) जीवन संकट में पड़ना। (२) मर जाना। प्राण बचाना—(१) जान बचाना। (२) पीछा छुड़ाना। प्राण मुट्ठी में (हथेली पर) लिये फिरना (रहना)—जान की जरा भी परवाह न करना। प्राण रखना—(१) जिला देना। (२) जान बचाना। प्राण हरना—(१) मार डालना। (२) बहुत दुख देना। प्राण हारना—(१) मर जाना। (२) साहस न रहना। प्राण हारति—मर जाती है। उ.—समुझत मीन नीर की बातैं, तर्ज प्राण हठि हारति।

(६) परम प्रिय व्यक्ति।

प्राणअधार, प्राणअधारा—संज्ञा पुं. [सं. प्राण+आधार] (१) परम प्रिय व्यक्ति। उ.—(क) अब ही और की और होति कछु······ताते मैं पाती लिखी तुम प्राण अधारा। (ख) अपने ही गेह मधुपुरी आवन देवकी प्राण-अधारा हो। (२) पति, स्वामी।

वि.—प्रिय, प्यारा।

प्राणघात—संज्ञा पुं. [सं.] हत्या, वध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

णजीवन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **परम प्रिय व्यक्ति। (२) वह जो प्राण का आधार हो।**

णत्याग—संज्ञा पुं. [सं.] **मर जाना।**

णदंड—संज्ञा पुं. [सं.] **मृत्यु का दंड।**

णदाता—संज्ञा पुं. [सं. प्राणदातृ] **प्राण देनेवाला।**

णदान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मरने या मारे जाने से बचाना। (२) प्राण देना।**

णधन, प्राणधनियाँ—संज्ञा पुं. [सं.] **बहुत प्रिय व्यक्ति।** उ.—नेक रहौ माखन देउँ मेरे प्राणधनियाँ।

णधारी—वि. [सं. प्राणधारिन्] (१) **जीवित। (२) जो साँस लेता हो, चेतन।**

णनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रिय व्यक्ति, प्रियतम। (२) पति, स्वामी।**

णनाशक—वि. [सं.] **प्राण लेनेवाला।**

णपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आत्मा। (२) हृदय। (३) पति, स्वामी। (४) प्रियतम।** उ.—प्राणपति की निरखि सोभा पलक परन न देहिं।

णप्यारा—संज्ञा पुं. [हिं. प्राण+प्यारा] (१) **बहुत प्रिय व्यक्ति, प्रियतम। (२) पति, स्वामी।**

ण-प्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्राण धारण कराना। (२) मंदिर में मंत्रोच्चार के साथ नयी मूर्ति की प्रतिष्ठा।**

णप्रद—वि. [सं.] (१) **प्राणदायक। (२) स्वास्थ्यवर्द्धक।**

णप्रिय—वि. [सं.] **परम प्रिय, प्रियतम।**

संज्ञा पुं.—(१) **बहुत प्यारा व्यक्ति। (२) पति।**

णवल्लभ—संज्ञा पुं. [सं. प्राणवल्लभ] **प्रियतम, पति।**

णमय—वि. [सं.] **जिसमें प्राण हों।**

णवल्लभ—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रियतम, पति।**

णवायु—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्राण।** उ.—प्राणवायु पुनि आइ समावै। ताकौ इत उत पवन चलावै। (२) **जीव।**

णहंता—वि. [सं. प्राणहंतृ] **प्राणघातक।**

णहारी—वि. [सं. प्राणहारिन्] **प्राण हरनेवाला।**

णांत—संज्ञा पुं. [सं.] **मरण, मृत्यु।**

णांतक—वि. [सं.] **प्राण लेनेवाला।**

णात्मा—संज्ञा पुं. [सं. प्राणात्मन्] **जीवात्मा, जीव।**

प्राणाधार—वि. [सं.] **अत्यंत प्रिय।**

संज्ञा पुं.—(१) **प्रियतम, प्रेमपात्र। (२) पति, स्वामी।**

प्राणाधिक—वि. [सं.] **प्राण से अधिक प्यारा।**

संज्ञा पुं.—**पति।**

प्राणायाम—संज्ञा पुं. [सं.] **योग के आठ अंगों में चौथा। इसमें श्वास-प्रश्वास की गतियों को धीरे-धीरे कम किया जाता है।**

प्राणी—वि. [सं. प्राणिन्] **जिसमें प्राण हों।**

संज्ञा पुं.—(१) **जीव। (२) मनुष्य। (३) व्यक्ति।**

प्राणेश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पति। (२) प्रिय।**

प्राणेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पति। (२) प्रिय व्यक्ति।**

प्रात—अव्य. [सं. प्रातः] **सबेरे, तड़के।** उ.—प्रात जो न्हात, अत्र जात ताके सकल; ताहि जमदूत रहत हाथ जोरे—१-२२२।

प्रात, प्रातः—संज्ञा पुं. [सं. प्रातर्] **प्रभात, तड़का।**

प्रातःकालीन—वि. [सं.] **प्रातःकाल-संबंधी।**

प्रातःस्मरण, प्रातःस्मरणीय—वि. [सं.] **प्रातःकाल स्मरण करने योग्य, पूज्य।**

प्रातनाथ—संज्ञा पुं. [सं. प्रातः+नाथ] **सूर्य।**

प्राता—संज्ञा पुं. [सं. प्रातः] **सबेरा, प्रभात।** उ.—कहत आधे बचन भयौ प्राता—४४०।

प्राथमिक—वि. [सं.] (१) **पहले का। (२) प्रारंभिक।**

प्रादुर्भाव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रकट होना, अस्तित्व में आना। (२) उत्पत्ति। (३) विकास।**

प्रादुर्भूत—वि. [सं.] (१) **जो प्रकट हुआ हो, प्रकटित। (२) विकसित। (३) उत्पन्न।**

प्रादेशिक—वि. [सं.] **प्रदेश-संबंधी।**

प्राधान्य—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रधानता, मुख्यता।**

प्रान—संज्ञा पुं. [सं. प्राण] (१) **प्राण।** उ.—इनहीं मैं मेरे प्रान बसत हैं, तेरैं भाएँ नैंकु न माइ—७१०।

मुहा०—त्यागति प्रान—**प्राण देने को तैयार है।** उ.—त्यागति प्रान निरखि सायक धनु—१-२६।

(२) **जीवन का आधार, जीने का सहारा।** उ.—तुम्हारी भक्ति हमारे प्रान—१-१६६।

प्रानजिवन—संज्ञा पुं. [सं. प्राणजीवन] (१) **प्राणाधार।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) परम प्रिय व्यक्ति। उ.—(क) कहु री! सुमति कहा तोहिं पलटी, प्रानजिवन कैसैं बन जात—९-३८। (ख) आतुर ह्वै अब छाँड़ि कौसलपुर प्रान जीवन कित चलन चहत हैं।

प्रानपति—संज्ञा पुं. [सं. प्राणपति] (१) पति, स्वामी। (२) प्रिय व्यक्ति, प्यारा, प्राणप्रिय। उ.—(क) मम कुटुँब की कहा गति होइ। पुनि पुनि मूरख सोचै सोइ। काल तहीं तिहिं पकरि निकारयौ। सखा प्रानपति तउ न सँभारयौ—४-१२। (ख) सूर श्रीगोपाल की छबि दृष्टि भरि भरि लेहिं। प्रानपति की निरखि सोभा पलक परन न देहिं।

प्रानी—संज्ञा पुं. [हिं. प्राणी] (१) जीव, जंतु। (२) मनुष्य। उ.—सूरदास धनि धनि वह प्रानी, जो हरि कौ व्रत लै निबह्यौ—२-८।

प्रापति—संज्ञा स्त्री. [सं. प्राप्ति] (१) उपलब्धि, प्राप्ति, मिलना। उ.—(क) ताकौं हरि-पद-प्रापति होइ—१-२३०। (ख) त्रिविधि भक्ति कहौं सुनि अब सोइ। जातैं हरि-पद प्रापति होइ—३-१३। (२) पहुँच।

प्रापना—क्रि. स. [सं. प्रापण] मिलना, प्राप्त होना।

प्राप्त—वि. [सं.] (१) लब्ध। (२) उत्पन्न। (३) जो मिला हो। (४) समुपस्थित।

प्राप्तयौवन—वि. [सं.] युवक, जवान।

प्राप्तव्य—वि. [सं.] मिलनेवाला, प्राप्य।

प्राप्ति, प्राप्ती—संज्ञा स्त्री. [सं. प्राप्ति] (१) उपलब्धि। (२) पहुँच (३) उदय। (४) भाग्य। (५) प्रवेश, प्रवृत्ति। (६) कंस की पत्नी का नाम जो जरासंध की पुत्री थी। उ.—अस्ती अरु प्राप्ती दोउ पत्नी कंसराय की कहियत। जरासंध पै जाय पुकारी महाक्रोध मन दहियत—सारा. ५६६।

प्राप्य—वि. [सं.] (१) पाने योग्य। (२) जो मिल सके। (३) जिस तक पहुँच हो सके।

प्राबल्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रबलता। (२) प्रधानता।

प्रामाणिक—वि. [सं.] (१) जो प्रमाण से सिद्ध हो। (२) माननीय। (३) सत्य। (४) शास्त्रसिद्ध।

प्राय—वि. [सं.] (१) समान। (२) लगभग।

प्रायः—वि. [सं.] (१) बहुधा। (२) लगभग।

प्रायद्वीप—संज्ञा पुं. [सं. प्रायोद्वीप] स्थल का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो।

प्रायश्चित्त—संज्ञा पुं. [सं.] वह कृत्य जिसके करने से पाप या दोष से मुक्ति मिल जाती है।

प्रारंभ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आरंभ। (२) आदि।

प्रारंभिक—वि. [सं.] (१) आरंभ का। (२) आदिम।

प्रारब्ध—वि. [सं.] आरंभ किया हुआ।

संज्ञा पुं.—भाग्य, किस्मत।

प्रारब्धी—वि. [सं. प्रारब्धिन्] भाग्यवान्।

प्रार्थना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) याचना। (२) बिनती।

क्रि. स.—विनय या विनती करना।

प्रार्थनीय—वि. [सं.] प्रार्थना करने योग्य।

प्रार्थी—वि. [सं. प्रार्थिन्] (१) याचक। निवेदक।

प्रालब्ध—संज्ञा पुं. [सं. प्रारब्ध] भाग्य, किस्मत।

प्रासंगिक—वि. [सं.] प्रसंग का, प्रसंगागत।

प्रासाद—संज्ञा पुं. [सं.] बहुत बड़ा मकान, महल।

प्रियंवद—वि. [सं.] प्रिय बचन बोलनेवाला।

प्रिय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रेमी। (२) पति, स्वामी।

वि.—(१) प्यारा। (२) जो अच्छा लगे, मनोहर।

प्रियतम—वि. [सं.] प्राण से भी प्रिय, सबसे प्यारा।

संज्ञा पुं.—(१) प्रेमी। (२) पति, स्वामी।

प्रियता—संज्ञा स्त्री. [सं.] प्रिय होने का भाव।

प्रियदर्शन—वि. [सं.] देखने में सुन्दर, शुभदर्शन।

प्रियदर्शी—वि. [सं.] सबको प्रिय देखने-समझने वाला।

प्रियपात्र—वि. [सं.] जिससे प्रेम किया जाय।

प्रियभाषी—वि. [सं. प्रियभाषिन्] मीठी बात कहनेवाला।

प्रियवक्ता—वि. [सं. प्रियवक्तृ] मधुरभाषी।

प्रियवर—वि. [सं.] अति प्रिय।

प्रियवादी—वि. [सं. प्रियवादिन्] प्रिय बोलनेवाला।

प्रियव्रत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) स्वायंभुव मनु का एक पुत्र। उ.—प्रियव्रत बंस धरेउ हरि निज बपु, ऋषभदेव यह नाम—सारा. ८५। (२) वह जिसे व्रत प्रिय हो।

प्रिया—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) प्रेमिका। (२) पत्नी।

प्रियौ—वि. [हिं. प्रिय] प्रिय, प्यारी, रुचिकर। उ.—आपुहिं खात प्रशंसत आपुहिं, माखन-रोटी बहुत प्रियौ—१०-१६८।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रीत—वि. [सं.] **प्रीतियुक्त, प्रेमपूर्ण ।**

संज्ञा स्त्री. [सं. प्रीति] **प्रेम, स्नेह ।**

प्रीतम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रेमी ।** (२) **पति ।**

प्रीति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **तृप्ति ।** (२) **आनंद ।** (३) **प्रेम, स्नेह ।** उ.—तुम्हारी प्रीति हमारी सेवा गनियत नाहिंन कातें—२५२८ । (४) **कामदेव की एक पत्नी ।**

प्रीतिभोज—संज्ञा पुं. [सं.] **वह भोज जिसमें इष्टमित्र सप्रेम आमंत्रित हों ।**

प्रीतिरीति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रेमपूर्ण व्यवहार ।**

प्रीती—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रीति] **प्रेम, प्रीति ।** उ.—सूरदास स्वामी सों छल सों, कहीं सकल ब्रजप्रीती—**२६४२ ।**

प्रीते—वि. [सं. प्रीति] **प्यारे, प्रिय ।** उ.—सुफलकसुत लै गए दगा दै प्रानन ही के प्रीते—२४६३ ।

प्रीत्यो—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रीति] **प्रीति, प्रेम ।** उ.—बहुरि न जीवन-मरन सो साझो करी मधुप की प्रीत्यो—३८८४ ।

प्रेक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] **देखनेवाला, दर्शक ।**

प्रेक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] **देखने की क्रिया ।**

प्रेक्षणीय—वि. [सं.] **देखने के योग्य ।**

प्रेक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **देखना ।** (२) **विचार करना ।** (३) **नाच-तमाशा देखना ।** (४) **दृष्टि ।** (५) **बुद्धि ।**

प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह—संज्ञा पुं. [सं.] **मंत्रणागृह ।**

प्रेत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मृतक प्राणी ।** (२) **एक कल्पित देवयोनि जिसका रंग काला और आकृति विकराल मानी जाती है ।** (३) **वह कल्पित शरीर जो मनुष्य को मरने के बाद मिलता है ।** उ.—घर की नारि बहुत हित जासौं रहति सदा सँग लागी । जा छन हंस तजी यह काया, प्रत प्रेत कहि भागी—१-७६ । (४) **नरक में रहनेवाला प्राणी ।** (५) **बहुत चालाक और कंजूस आदमी ।**

प्रेतगृह, प्रेतगेह—संज्ञा पुं. [सं. प्रेतगृह] **श्मशान ।**

प्रेतनी—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रेत] **भूतनी, चुड़ैल ।**

प्रेतपावक—संज्ञा पुं. [सं.] **वह प्रकाश जो जंगलों-वनों में सहसा दिखायी देता और प्रेत-लीला समझा जाता है ।**

प्रेतिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रेत] **प्रेत की स्त्री ।**

प्रेती—संज्ञा पुं. [सं. प्रेत] **प्रेत-उपासक ।**

प्रेम—वि. [सं.] **प्रिय ।** उ.—मेरे लाल के प्रेम खिलौना ऐसौ को ले जैहै री—७११ ।

संज्ञा पुं.—(१) **प्रीति, अनुराग ।** उ.—सूरदास प्रभु बोलि न आयो प्रेम पुलकि सब गात—२५३१ । (२) **ममता ।** (३) **लोभ, माया ।**

प्रेमपात्र—संज्ञा पुं. [सं.] **वह जिससे प्रेम किया जाय ।**

प्रेमपुलक—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रेम-जनित रोमांच ।**

प्रेमा—संज्ञा पुं. [सं. प्रेमन्] (१) **स्नेह ।** (२) **स्नेही ।**

संज्ञा स्त्री.—**राधा की एक सखी का नाम ।** उ.—प्रेमा, दामा रूपा हंसा रंगा हरषा जाउ—१५८० ।

प्रेमातुर—वि. [प्रेम+आतुर] **प्रेम के कारण व्याकुल, प्रेम-पीड़ित ।** उ.—गोपीजन प्रेमातुर तिनकौं सुख दीन्हौं—८-३६४ ।

प्रेमालाप—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रेमपूर्ण संलाप ।**

प्रेमाश्रु—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रेम के आँसू ।**

प्रेमी—संज्ञा पुं. [सं. प्रेमिन्] (१) **अनुरागी** (२) **आसक्त।**

प्रेय—वि. [सं.] **प्रिय, प्यारा ।**

प्रेयस्—संज्ञा पुं. [सं.] **प्यारा व्यक्ति, प्रियतम ।**

प्रेयसी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रेमिका ।**

प्रेरक—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रेरणा देनेवाला ।**

प्रेरणा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रवृत्त या नियुक्त करने की क्रिया ।**

प्रेरना—क्रि. स. [सं. प्रेरणा] **प्रेरित करना ।**

प्रेरित—वि. [सं.] (१) **जो कोई कार्य करने को उत्साहित या प्रवृत्त किया गया हो ।** (२) **धकेला हुआ ।**

प्रेरै—क्रि. स. [सं. प्रेरणा] **प्रेरित करता है, प्रवृत्त करता है, कार्य-विशेष में लगाता है, उत्तेजना या उत्साह प्रदान करता है ।** उ.—मन बस होत नाहिंनै मेरैं । जिन बातनि तैं बह्यौ फिरत हौं, सोई लै लै प्रेरै—१-२०६ ।

प्रेर्यौ—क्रि. स. [सं. प्रेरणा] **प्रवृत्त किया, लगाया, बढ़ाया ।** उ.—भीषम ताहि देखि मुख फेर्यौ । पारथ जुद्ध-हेत रथ प्रेर्यौ—१-२७६ ।

प्रेषक—संज्ञा पुं. [सं.] **भेजनेवाला ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेषण—संज्ञा पुं. [सं.] भेजना, रवाना करना।
प्रेषित—वि. [सं.] भेजा या रवाना किया हुआ।
प्रोक्त—वि. [सं.] कहा हुआ, दोहराया हुआ।
प्रोत—वि. [सं.] अच्छी तरह मिला या छिपा हुआ।
प्रोत्साह—संज्ञा पुं. [सं.] अधिक उत्साह या उमंग।
प्रोत्साहक—संज्ञा पुं. [सं.] उत्साह या उमंग बढ़ानेवाला।
प्रोत्साहन—संज्ञा पुं. [सं.] उत्साह या उमंग बढ़ाना।
प्रोत्साहित—वि. [सं.] जो उत्साह या उमंग से पूर्ण हो।
प्रोषित—वि. [सं.] विदेश गया हुआ, प्रवासी।
प्रोषितपतिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] वह नायिका जो पति के विदेश जाने से उसके विरह में दुखी हो।
प्रोषितभार्थ—संज्ञा पुं. [सं.] वह नायक जो नायिका के विदेश जाने से उसके विरह में दुखी हो।
प्रौढ़—वि. [सं.] (१) खूब बढ़ा हुआ। (२) जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। (३) पुष्ट, दृढ़। (४) गंभीर, गूढ़। (५) पुराना। (६) चतुर, निपुण।
प्रौढ़ता—संज्ञा स्त्री. [सं.] प्रौढ़ होने का भाव।
प्रौढ़त्व—संज्ञा पुं. [सं.] प्रौढ़ होने का भाव।
प्रौढ़ा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) स्त्री जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। (२) काम-कला-निपुण नायिका।
प्रौढ़ोक्ति—संज्ञा पुं. [सं.] एक काव्यालंकार।
प्लक्ष, प्लच्छ—संज्ञा पुं. [सं. प्लक्ष] सात कल्पित द्वीपों में एक। उ.—जम्बू, प्लच्छ, क्रौंच, सराक सालमलि, कुस, पुष्कर भरपूर—सारा. ३४।
प्लावन—संज्ञा पुं. [सं.] जल की बाढ़ या बहिया।
प्लीहा—संज्ञा स्त्री. [सं. प्लीहन्] पेट की तिल्ली।
प्लुत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) टेढ़ी चाल। (२) तीन मात्राओं का।

—फ—

फ—देवनागरी वर्णमाला का बाईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का दूसरा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
फंका—संज्ञा पुं. [हिं. फाँकना] (१) कोई सूखा महीन चूर्ण लेकर फाँकने की क्रिया। (२) चूर्ण की एक बार में फाँकी जानेवाली मात्रा। (३) टुकड़ा, कतरा।
फंकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फंका] (१) फाँकने की क्रिया। (२) चूर्ण की मात्रा जो एक बार में फाँकी जाय।
फंग, फँग—संज्ञा पुं. [सं. बंध] (१) फंदा, बंधन। उ.—(क) सदा जाहु चोरटी भई, आजु परी फंग मोर—१०२३। (ख) दूरि करौं लँगराई वाकी, मेरे फंग जो परिहै—१२६४। (ग) अब तो स्याम परे फँग मेरे सूधे काहे न बोलत—१५१०। (घ) चतुर काम फँग परे कन्हाई अबधौं इनहिं बुझावै को री—१५६३। (ङ) मति कोई प्रीति के फंग परै—२८०८। (२) प्रीति या अनुराग का बंधन। उ.—(क) रैनि कहूँ फँग परे कन्हाई कहति सबै कारि दौर—२०६०। (ख) कीधौं कतहूँ रमि रहे, फँग परे पराए—२१५६।
फंद—संज्ञा पुं. [सं. बंध, हिं. फंदा] (१) बंध, बंधन। उ.—(क) हमैं नन्दनन्दन मोल लिये। जम के फंद काटि मुकराये, अभय अजाद किये।—१-१७१। (ख) काटौ न फंद मों अन्ध के अब विलंब कारन कवन—१-१५०। (ग) त्यागे भ्रम-फंद द्वंद निरखि के मुखारबिंद सूरदास अति अनंद मेटे दुख भारे। (२) रस्सी या बाल का फंदा, जाल, फाँस। उ.—(क) माधौ जी, मन सबही बिधि पोच।''''''लुबध्यौ स्वाद मीन-आमिष ज्यौं, अवलोक्यौ नहिं फंद—१-१०२। (ख) हरि-पद-कमल को मकरन्द। मलिन मति मन मधुप परिहरि बिषय नीर-रस फंद। (ग) मनहुँ काम रचि फंद बनाए कारन नन्दकुमार—१०७६। (३) छल, धोखा। (४) भेद, रहस्य। (५) दुख, कष्ट। (६) नथ, बाली आदि की गूंज जिसमें काँटी फँसायी जाती है।
फंदत—क्रि. अ. [हिं. फंदना] फंदे में पड़ता है। उ.—चारौ कपट पांछ ज्यों फंदत—१०४२।
फंदन—संज्ञा पुं. बहु. सवि. [सं. बंध, हिं. फंदा] बंध, बंधन या फंदे में। उ.—(क) आरतिवंत सुनत गज-क्रंदन, फंदन काटि छुड़ायौ—१-१८८। (ख) कमल मध्य मनु द्वै खग खंजन बँधे आइ उड़ि फंदन—४७६।
फंदना—क्रि. अ. [हिं. फंदा] फंदे में पड़ना, फँसना। क्रि. स. [हिं. फाँदना] लाँघना, उल्लंघन करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दा—संज्ञा पुं. [हिं. फंदा] **फंदा।**

दवार—वि. [हिं. फंदा] **फंदा लगानेवाला।**

दा—संज्ञा पुं. [सं. पाश या बंध] (१) **रस्सी, डोरी आदि का घेरा जो किसी को फँसाने के लिए बनाया गया हो, फनी, फाँद।** (२) **फाँस, जाल।** उ.—फंदा फाँसि कमान बान सों काहू देख्यो डारत मारी।

मुहा०—फंदा लगना—**धोखे में फँस जाना।** फंदा लगाना— (१) **फँसाने के लिए जाल फैलाना।** (२) **अपनी चाल में फँसाने का प्रयत्न करना।** फंदे में पड़ना। (१) **जाल में फँसना।** (२) **किसी के वश में होना।**

दाई—संज्ञा पुं. [हिं. फंदा] **पास, फाँस, जाल।** उ.—मोह्यौ जाइ कनक-कामिनि-रस, ममता, मोह बढ़ाई। जिह्वा-स्वाद मीन ज्यों उरझ्यौ सूझी नहीं फँदाई—१-१४७।

दाना—क्रि. स. [हिं. फंदना] **जाल में फँसाना।**

क्रि. स. [हिं. फंदन] **कुदाना, उछालना।**

काना—क्रि. अ. [अनु.] **हकलाना।**

सना—क्रि. स. [हिं. फाँस] (१) **बंधन या फंदे में पड़ना।** (२) **उलझना, अटकना।**

मुहा०—किसी से फँसना—**किसी से वासनायुक्त प्रेम होना।** बुरा फँसना।—**विपत्ति या झंझट में पड़ना।**

सरी—संज्ञा स्त्री. [सं. पाश, हिं. फँसना या फंदा] **फँदा, पाश, बंधन।** उ.—सूरदास तैं कछू सरी नहिं, परी काल-फँसरी—१-७१।

साना—क्रि. स. [हिं. फँसाना] (१) **बंधन या फंदे में अटका लेना।** (२) **उलझाना, अटकाना।** (३) **अपने वश में करना।**

सिहारा—वि. [हिं. फाँस] **फँसा लेनेवाला।**

सिहारिनि—वि. स्त्री. [हिं. फँसिहारा] **फँसानेवाली।** उ.—फँसिहारिनि बटपारिनि हम भईं आपुन भये सुधर्मा भारी—११६०।

—वि. [सं. स्फटिक] (१) **सफेद।** (२) **बदरंग।**

मुहा०—चेहरा या रंग फक हो (पड़) जाना—**घबरा जाना।**

फकड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फक] **दुर्दशा, दुर्गति।**

फकत—वि. [अ. फ़क़त] (१) **बस।** (२) **केवल।**

फकीर—संज्ञा [अ. फ़क़ीर] (१) **भिखमंगा, साधु।** (२) **साधु, संन्यासी।** (३) **ऐसा निर्धन जिसके पास कुछ न हो।**

फकीरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फकीर] (१) **भिखमंगापन।** (२) **संन्यास, साधुता।** (३) **निर्धनता, गरीबी।**

फखर—संज्ञा पुं. [फ़ा. फ़ख़] **गर्व, अभिमान।**

फग—संज्ञा पुं. [हिं. फंग] (१) **बंधन।** (२) **अनुराग।**

फगुआ—संज्ञा पुं. [हिं. फागुन] (१) **होली।** (२) **फागुन का आमोद-प्रमोद, रंग छिड़कना, गाली गाना आदि।** (३) **फागुन के अश्लील गीत।** (४) **फगुआ खेलने के उपलक्ष में दिया जानेवाला उपहार।** उ.—(क) अब काहे दुरि रहे साँवरे ढोटा फगुआ देहु हमार—२४०४। (ख) सूरदास प्रभु फगुआ दीजै चिरजीवौ राधा बर-जोरी—२८९४।

फगुआना—क्रि. अ. [हिं. फगुआ] **फागुन में रंग छिड़कना और अश्लील गीत गाकर आनंद मनाना।**

फगुनहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. फागुन] **फागुन की वर्षा।**

फगुहरा, फगुहारा—संज्ञा पुं. [हिं. फागुन+हारा] **फागुन का उत्सव मनाने, रंग खेलने और गीत गानेवाला।**

फजर—संज्ञा स्त्री. [अ.] **सबेरा, प्रातःकाल।**

फजल—संज्ञा स्त्री. [अ.] **कृपा, अनुग्रह।**

फजीहत—संज्ञा स्त्री. [अ.] **दुर्दशा, दुर्गति।**

फजूल—वि. [अ. फ़ुजूल] **व्यर्थ, बेकार।**

फट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **फैली और पतली चीज के हिलने, झटकने या गिरने का शब्द।**

मुहा०—फट से—**झट, तुरंत।**

फटक—संज्ञा पुं. [हिं. फटकना] **सूप जिसमें रखकर अनाज साफ किया जाय।** उ.—मूँग-मसूर उरद चनदारी। कनक-फटक धरि फटकि पछारी—३९६।

संज्ञा पुं. [सं. स्फटिक, पा० फटकि] **स्फटिक।**

क्रि. वि.—**झट, तुरंत, तत्क्षण।**

फटकत—क्रि. स. [हिं. फटकना] (१) **फटफटाता है, 'फट-फट' शब्द करता है।** उ.—फटकत स्रवन स्वान द्वारे पर, गररी करत लराई। माथे पर ह्वै काग उड़ान्यौ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुसगुन बहुतक पाई—५४१। (२) सूप से फटक कर अनाज साफ करता है। उ.—झूठी बात तुसी सी बिन कन फटकत हाथ न आवै—३२८७।

फटकन—संज्ञा स्त्री. [हिं. फटकना] महीन या मिला हुआ अनाज और कूड़ा जो फटकने से बच जाय।

क्रि. स.—फेंकना, चलाना, मारना।

प्र०—फटकन लग्यो—मारने लगा। उ.—बहुरि तरु लेहि पाषान फटकन लग्यौ हल मुसल करन परहार बाँके—१० उ०-४५।

फटकना—क्रि. स. [अनु. फट] (१) फटफटाना, फटफट करना। (२) झटकना, पटकना, फेंकना। (३) फेंककर मारना। (४) सूप से फटककर साफ करना।

मुहा०—फटकना-पछोरना—(१) सूप से फटककर साफ करना। (२) जाँचना-परखना।

(५) रुई आदि को फटके से धुनना।

क्रि. अ. [अनु.] (१) जाना, पहुचाना। (२) दूर होना। (३) तड़फड़ाना। (४) हाथ-पैर मारना।

फटका—संज्ञा पुं. [अनु.] रुई धुनने की धुनकी।

फटकाई—क्रि. स. [हिं. फटकाना] फेंकी, दूर की। उ.—मोकों जुरि मारन जब धाई तबहिं दीन्हीं गेंडुरि फटकाई।

फटकाना—क्रि. स. [हिं. फटकना] (१) फटकने का काम कराना। (२) फेंक देना।

फटकार—संज्ञा स्त्री. [हिं. फटकारना] झिड़की, दुतकार।

फटकारना—क्रि. स. [अनु.] (१) फेंक कर मारना। (२) झटका देकर हिलाना। (३) लेना, प्राप्त करना। (४) पटक-पटक कर धोना। (५) दूर फेंकना। (६) हटाना, अलग करना। (७) कड़ी और खरी बातें करना।

फटकारी—क्रि. स. [हिं. फटकारना] फेंक दी। उ.—(क) खींच मरोरि दियौ कागासुर मेरैं ढिग फटकारी—१०-६०। (ख) जमुना दह गेंडुरि फटकारी फोरी सिर की गगरी।

फटकि—क्रि. स. [हिं. फटकना] (१) सूप पर फटक कर साफ करके, कूड़ा-कर्कट निकालकर।

मुहा०—फटकि पछोरी—सूप पर फटक कर साफ की है। उ.—मूँग, मसूर, उरद, चनदारी। कनक-फटक धरि फटकि पछोरी—३९६। फटकि पछोरे—जाँच या परख कर। उ.—तुम मधुकर निर्गुन निज नीके देखे फटकि पछोरे—३१७६। फटकि पिछोर्यौ—छान-छूनकर या खोज-खाजकर गवाँ दी। उ.—नाच कछ्यौ, अब घूँघट छोर्यौ, लोक-लाज सब फटकि पिछोर्यौ—१२०१।

(२) फटफटाकर। उ.—बिषधर झटकी पूँछ, फटकि सहसौ फन काढ़ौ—५६।

(३) फेंककर, चलाकर। उ.—असुर गजरूढ़ है गदा मारे फटकि स्याम अंग लागि सो गिरे ऐसे—१० उ०-३१।

फटके—क्रि. अ. [हिं. फटकना] (१) आये, लौटे। उ.—मिले जाइ हरदी चूना त्यों फिरि न सूर फटके—पृ० ३३६ (५२)। (२) दूर हुए, अलग हो गये। उ.—ललित त्रिभंगी छबि पर अटके फटके मोसों तोरि—पृ० ३२२ (१४)।

फटकै—क्रि. स. [हिं. फटकना] फटकता है।

प्र०—भुस फटकै—निरर्थक या मूर्खता का प्रयास करता है। उ.—सूर स्याम तजि को भुस फटकै मधुप तुम्हारैं हेति—३२५६।

फटक्यौ—क्रि. स. [हिं. फटकना] फटका, झटका, फेंका। उ.—(क) कंठ चाँपि बहु बार फिरायौ, गहि फटक्यौ, नृप पास पर्यौ—१०-५६। (ख) नेक फटक्यौ लात, सब्द भयौ आघात, गिर्यौ भहरात, सकटा सँहार्यौ।

फटत—क्रि. अ. [हिं. फटना] फटता है, चिरता है, टूटता है। उ.—चटचटात अँग फटत हैं, राखु राखु प्रभु मोहिं—५८६।

फटना—क्रि. अ. [हिं. फाड़ना] (१) चिरना, खंडित होना, टूटना।

मुहा०—छाती फटना—बहुत दुख होना। चित्त या मन फटना—संबंध रखने को जी न चाहना।

(२) झटका लगने से अलग होना। (३) छिन्न-भिन्न हो जाना। (४)। अलग या पृथक् होना, (५) पानी और सार भाग अलग होना। (६) बहुत अधिक प्राप्त हो जाना।

मुहा०—फट पड़ना—अचानक आ जाना।

(८) बहुत अधिक पीड़ा होना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फटफट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) फटफट होना। (२) बकवाद।

फटफटाना—क्रि. स. [अनु.] (१) बकवाद करना। (२) फड़फड़ाना। (३) इधर-उधर घूमना। (४) हाथ-पैर मारना।

क्रि. अ.—फटफट शब्द होना।

फटन—संज्ञा पुं. [हिं. फटना] छेद, छिद्र।

फटि—क्रि. अ. [हिं. फटना] (१) फाड़कर, छिन्न-भिन्न, करके। उ.—मनहुँ मथत सुर सिंधु, फेन फटि, दयौ दिखाई पूरन चंद—१०-२०४। (२) चिरकर, फटकर। उ.—फटि तब खंभ भयौ द्वै फारि—७-२१।

फटिक—संज्ञा पुं. [सं. स्फटिक, पा. फटिक] एक प्रकार का पारदर्शक सफेद पत्थर, बिल्लौर। उ.—(क) ज्यौं गज फटिक सिला मैं देखत, दसननि डारत हति—१-३००। (ख) ऐसे कहत गए अ ने पुर सबहिं बिलचण देख्यौ। मणिमय महल फटिक गोपुर लखिों कनक भूमि अव रेख्यौ—(२) संगमरमर।

फटिकाई—क्रि. स. [हिं. फटकाना] फेंककर। उ.—मोक मुरि मारन जब आई तब दीनी गेंडुरि फटिकाई—८५६।

फट्यौ—क्रि. अ. [हिं. फटना] टूक-टूक हुआ। उ.—यह सब दोष हमहिं लागत है बिछुरत फट्यौ न हियो—२६६२।

फड़—संज्ञा स्त्री. [सं. पण] (१) जुए का दाँव। (२) जुए का अड्डा। (३) माल खरीदने-बेचने का स्थान। (४) पक्ष, दल। (५) विवाह में वह अवसर जब लेन-देन चुकता हो।

फड़क—संज्ञा स्त्री. [अनु.] फड़कने की क्रिया या भाव।

मुहा०—फड़क उठना—उमंग में आना। फड़क उठना (जाना)—मुग्ध हो जाना।

फड़कन—संज्ञा स्त्री. [हिं. फड़कना] (१) फड़फड़ाहट। (२) धड़कन। (३) लालसा, उत्सुकता।

वि.—(१) तेज, चंचल। (२) भड़कनेवाला।

फड़कना—क्रि. अ. [अनु.] (१) फड़फड़ाना। (२) अंग या शरीर में गति या स्फुरण होना (३) हिलना-डोलना।

मुहा०—बोटी बोटी फड़कना—(१) बहुत चंचलता होना। (२) बड़ी उमंग होना।

(४) घबराना, व्याकुल होना। (५) पंख हिलना।

फड़काना—क्रि. स. [हिं. फड़कना] (१) हिलाना। (२) उमंग दिलाना।

फड़फड़ाना—क्रि. स. [अनु.] फड़फड़ करना।

क्रि. अ.—(१) फड़फड़ होना। (२) घबराना, तड़पना। (३ उमंग में होना, उत्सुक होना।

फड़ुआ, फड़ुहा—संज्ञा पुं. [हिं. फावड़ा] फावड़ा।

फड़ोलना—क्रि. स. [सं. स्फुरण] उलटना-पलटना।

फण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) साँप का फन। (२) फंदा।

फणाकर, फणधर—संज्ञा पुं. [सं.] साँप।

फणिक—संज्ञा पुं. [सं. फणी] साँप, नाग।

फणींद्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शेषनाग। (२) वासुकि।

फणी—संज्ञा पुं. [सं. फणिन्] साँप।

फणीश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शेषनाग। (२) वासुकि।

फतवा—संज्ञा पुं. [अ. फ़तवा] आचार्य की धर्म-व्यवस्था।

फतह—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) विजय। (२) सफलता।

फतूह—संज्ञा स्त्री. [हिं. फतह का बहु.] (१) विजय। (२) लूट का माल।

फतूही—संज्ञा स्त्री. [अ.] एक तरह की सदरी।

फते, फतेह—संज्ञा स्त्री. [हिं. फतह] विजय, जीत।

फदकना—क्रि. अ. [अनु.] 'फदफद' करना।

फन—संज्ञा पुं. [सं. फण] साँप का फण। उ.—भूमि अति डगमगी, जोगिनी सुनि जगी, सहस फन सेस को सीस काँप्यौ—९-१०६।

मुहा०—फन पीटना—बहुत हाथ-पैर मारना।

संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) गुण। (२) विद्या। (३) कला, दस्तकारी। (४) छलने का ढंग।

फनकना—क्रि. अ. [अनु.] 'फनफन' करना, फनफनाना।

फनकार—संज्ञा स्त्री. [अनु.] 'फनफन' होने की ध्वनि।

फनगना—क्रि. अ. [हिं. फुनगी] अंकुर निकलना, कल्ला फूटना।

फनना—क्रि. अ. [हिं. फानना] कार्यारंभ होना।

फनफनाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) 'फनफन' करना। (२) चंचलता से इधर-उधर हिलना-डोलना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फनपति—संज्ञा पुं. [सं. फणि + पति = स्वामी] (१) **शेषनाग**। (२) **वासुकि**।

फनस—संज्ञा पुं. [सं. पनस, प्रा. फनस] **कटहल**।

फनिंग—संज्ञा पुं. [हिं. फणि + इंग] **साँप**।

फनिंगन—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. फनिंग] **साँप**। उ.—कोकिल कीर कपोल किसलता हाटक हंस फनिंगन की।

फनि—संज्ञा पुं. [सं. फणि] (१) **नाग**। (२) **कालियनाग**। उ.—सहसौ फन फनि फुंकरै, नैंकु न तिन्हैं बिकार—५८९।

फनिक, फनिग—संज्ञा पुं. [सं. फणिक] **साँप, सर्प**। उ.—नील पाट पिरोइ मनि-गन, फनिग धोखैं जाइ—१०-१७०।

फनिधर—संज्ञा पुं. [सं. फणिधर] **साँप**।

फनिपति—संज्ञा पुं. [सं. फणिपति] (१) **शेष**। (२) **वासुकि**।

फनियाला—संज्ञा पुं. [हिं. फणि + हिं. इयाला] **साँप**।

फनिराज—संज्ञा पुं. [सं. फणिराज] (१) **शेषनाग**। (२) **वासुकिनाग**।

फनींद्र—संज्ञा पुं. [सं. फणीन्द्र] (१) **शेषनाग**। उ.—जे नख-चन्द्र फनींद्र हृदय ते एकौ निमिष न टारत—१३४२। (२) **वासुकिनाग**।

फनी—संज्ञा पुं. [हिं. फणा] **शेषनाग**। उ.—कच्छप अध आसन अनूप अति, डाँड़ी सहसफनी—२-२८।

फफदना—क्रि. अ. [अनु.] **बढ़ना, फैलना**।

फफसा—वि. [सं. फुप्फुस] (१) **पोला**। (२) **स्वादहीन**।

फफूँदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फुबती] **साड़ी-बंधन, नीबी**।

संज्ञा स्त्री. [देश० भुकड़ी] **एक तरह की सफेद काई**।

फफोला—संज्ञा पुं. [सं. प्रस्फोट] **छाला, झलका**।

मुहा०—दिल का फफोला [के फफोले] फूटना—**जलन या क्रोध प्रकट होना**। दिल का फफोला [के फफोले] फोड़ना—**जलन या क्रोध प्रकट करना**।

फबकना—क्रि. अ. [अनु.] **फैलना, बढ़ना**।

फबति—क्रि. अ. [हिं. फबना] **भली लगती है**। उ.—फागुन में तो लखत न कोऊ फबति अचगरी भारी—२४२०।

फबती—संज्ञा स्त्री. [हिं. फबना] (१) **सारपूर्ण और समयानुकूल कथन**। (२) **व्यंग्य, चुटकी**।

मुहा०—फबती उड़ाना—**हँसी उड़ाना**। फबती कसना (कहना)—**हँसी उड़ाते हुए चुटकी लेना या व्यंग्य करना**।

क्रि. अ. [हिं. फबना] **शोभा देती है**। उ.—सदा चतुरई फबती नाहीं अति ही निफरि रही हौ—१५२७।

फबन—संज्ञा स्त्री. [हिं. फबना] **शोभा, छवि, सुंदरता**।

फबना—क्रि. अ. [सं. प्रभवन, प्रा. पभवन] **सुंदर या भला जान पड़ना, शोभा देना, सोहना**।

फबाना—क्रि. स. [हिं. फबना] **ऐसी जगह स्थापित करना या रखना कि सुंदर या भला जान पड़े**।

फबावत—क्रि. स. [हिं. फबाना] **भला जान पड़ता है**। उ.—कहाँ साँच मैं खोवत करते झूठे कहाँ फबावत।

फबि—संज्ञा स्त्री. [हिं. फबना] **छबि, शोभा, सुंदरता**।

क्रि. अ. [हिं. फबना] **शोभित है**। उ.—फबि रही मोर चन्द्रिका माथे छवि की उठत तरंग—१३५७।

फबी—क्रि. अ. [हिं. फबना] **भली लगी**। उ.—तब उलटी-पलटी फबी जब सिसु रहे कन्हाई—६१०।

फबीला—वि. [हिं. फबि + ईला] **सुंदर, शोभा देनेवाला**।

फर—संज्ञा पुं. [हिं. फल] (१) **वृक्ष का फल**। उ.—उचटत अति अंगार, फुटत फर, झपटत लपट कराल—६१५। (२) **डोंड़ी**। उ.—उड़ियै उड़ी फिरति नैननि सँग, फर फूटे ज्यों आक रुई—१४३३। (३) **मुकाबला, सामना**। (४) **बिछौना**।

फरक—संज्ञा स्त्री. [हिं. फड़क] (१) **फड़कने का भाव या क्रिया**। (२) **चपलता, चंचलता**।

क्रि. अ. [हिं. फड़कना] **फड़कती (है)**। उ.—बातन न धरति कान, तानति हैं भौंह-बान, तऊ न चलति बाम, अँखियाँ फरकि रही—२२३६।

संज्ञा पुं. [अ. फ़रक़] (१) **पृथकता**। (२) **दूरी**।

मुहा०—फरक फरक होना—**'हटो-बचो' होना**।

(३) **भेद, अंतर**। (४) **परायापन**। (५) **कमी**।

फरकत—क्रि. अ. [हिं. फड़कना] **फड़कता है**। उ.—कुच भुज अधर नयन फरकत हैं, बिनहिं बात अंचल ध्वज डोली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन—संज्ञा पुं. [हिं. फड़कना] (१) फड़कने की क्रिया या भाव, फड़क। (२) चपलता, चंचलता।

कना—क्रि. अ. [सं. स्फुरण] (१) अंग या शरीर फड़कना। (२) उमड़ना, स्फुरित होना। (३) उड़ना।

क्रि. अ. [हिं. फरक] अलग या पृथक् होना।

का—संज्ञा पुं. [सं. फलक] (१) छप्पर जो अलग छाकर बंडेर पर चढ़ाया जाय। (२) टट्टर जो द्वार पर लगाया जाता है।

काइ—क्रि. स. [हिं. फड़काना] अंग या शरीर फड़काकर। उ.—अंग फरकाइ अलप मुसुकाने—१०-४६।

काना—क्रि. स. [हिं. फड़काना] (१) अंग या शरीर हिलाना-डुलाना या संचालित करना। (२) बार-बार हिलाना, फड़फड़ाना।

क्रि. स. [हिं. फरक] अलग करना।

कावैं—क्रि. स. [हिं. फड़काना] फड़काते हैं, हिलाते हैं, संचालित करते हैं। उ.—कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावैं—१०-४३।

की—संज्ञा स्त्री. [हिं. फरक] बाँस की तीली जिसमें लासा लगा कर पक्षी फँसाया जाता है।

के—क्रि. अ. [हिं. फड़कना] (शरीर के अवयव का सहसा) फड़कने लगे, उड़ने या फड़फड़ाने लगे। उ.—इतनौ कहत नैन उर फरके, सगुन जनायौ अंग—६-८३।

संज्ञा पुं. [हिं. फरका] द्वार का टट्टर। उ.—घर घर केरी फरके खोलैं—२४३८।

कौ—संज्ञा पुं. [हिं. फरका] द्वार का टट्टर। उ.—नव लख धेनु दुहत हैं नित प्रति, बड़ो नाम है नन्द महर कौ। ताके पूत कहावत हौ तुम, चोरी करत उघारत फरकौ—१०-३३३।

चा—वि. [सं. स्पृश्य, प्रा. फरस्स] (१) जो जूठा न हो, शुद्ध। (२) साफ-सुथरा, स्वच्छ।

चाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. फरचा] (१) शुद्धता (२) स्वच्छता।

चाना—क्रि. स. [हिं. फरचा] शुद्ध या साफ करना।

जंद, फरजिंद—संज्ञा पुं. [फ़ा.] पुत्र, बेटा।

जी—संज्ञा पुं. [फ़ा.] शतरंज का एक मोहरा।

वि.—नकली, बनावटी, जो असली न हो।

फरद—संज्ञा स्त्री. [अ. फ़र्द] (१) सूची, तालिका। उ.—माँड़ि माँड़ि खरिहान क्रोध कौ, पोता-भजन भरावै। बट्टा काटि कसूर भरम कौ, फरद तले लै डारै—१-१४२। (२) कपड़े का पल्ला। (३) रजाई आदि का पल्ला।

वि.—बेजोड़, अनुपम।

फरना—क्रि. अ. [सं. फल] फलना।

फरनि—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. फल] फलों से युक्त। उ.—जिनि जायौ ऐसौ पूत, सब सुख-फरनि फरी—१०-२४।

फरफंद—संज्ञा पुं. [अनु. फर + हिं. फंदा] (१) छल-कपट, दाँव-पेच। (२) नखरा, चोंचला।

फरफर—संज्ञा पुं. [अनु.] उड़ने-फड़कने का शब्द।

फरफाना—क्रि. अ. [अनु. फरफर] फड़फड़ाना।

क्रि. स.—(१) फड़फड़ करना। (२ फड़फड़ाना।

फरफराने—क्रि. अ. [हिं. फड़फड़ाना] तड़फड़ाये। उ.—कंस के प्रान भयभीत पिंजरा जैसे नव विहंगम तैसे मरत फरफराने—२५६६।

फरफुन्दा—संज्ञा पुं. [अनु. फरफर] फतिंगा, कीड़ा।

फरमाँबरदार—वि. [फ़ा.] आज्ञाकारी।

फरमाइश—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] आज्ञा, इच्छा।

फरमाइशी—वि. [फ़ा.] आज्ञा से तैयार।

फरमान—संज्ञा पुं. [फ़ा.] राजकीय आज्ञापत्र।

फरमाना—क्रि. स. [फ़ा.] कहना, आज्ञा देना।

फरश—संज्ञा पुं. [अ.] (१) बिछाने का वस्त्र, बिछावन। (२) समतल भूमि। (३) गच।

फरशबंद—वि. [फ़ा.] जहाँ फरश बना हो।

फरशी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] गुड़गुड़ी।

फरसा—संज्ञा पुं. [सं. परशु] एक तरह की कुल्हाड़ी।

फरहर—वि. [सं. स्फार, प्रा. फार] (१) अलग-अलग। (२) साफ, स्पष्ट। (३) निर्मल। (४) प्रसन्न।

फरहरना—क्रि. अ. [अनु. फरहर] (१) फरकना, फरफराना। (२) उड़ना, फहराना।

फरहरा—संज्ञा पुं. [हिं. फहराना] झंडा, पताका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि. [हिं. फरहर] (१) स्पष्ट। (२) शुद्ध। (३) प्रसन्न।

फरहरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फल+हरा] फल।

फरा—संज्ञा पुं. [देश.] एक प्रकार का व्यंजन।

फराए—क्रि. स. [हिं. फलना] फलाये, फल उत्पन्न किये, फल लगाये। उ.—सूर. स्याम जुवतिनि-व्रत पूरन, कौ फल डारनि कदम फराए—७८४।

फराक—संज्ञा पुं. [फ़ा. फराख] मैदान।

वि.—लंबा चौड़ा, विस्तृत।

फराकत—वि. [फ़ा. फ़राख़] लंबा चौड़ा, विस्तृत।

संज्ञा स्त्री. [अ. फ़रागत] (१) छुट्टी। (२) निश्चितता।

फरामोश—वि. [फ़ा.] भूला हुआ, विस्मृत।

फरार—वि. [अ.] जो भाग गया हो।

फरिका—संज्ञा पुं. [हिं. फरका] (१) अलग छाया गया छप्पर। (२) द्वार का टट्टर।

फरिकै—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. फरका] द्वार के टट्टर को। उ.—लरत निकसी सबै तोरि फरिकै—पृ. ३३६ (६०)।

फरिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. फरना] एक प्रकार का लहँगा-नुमा कपड़ा जो सामने सिला नहीं रहता और जिसे स्त्रियाँ और लड़कियाँ कमर में बाँधती हैं। उ.—(क) सारी चीरि नई फरिया लै, अपने हाथ बनाइ। अंचल सौं मुख पोंछि अंग सब, आपुहि लै पहिराइ—७०४। (ख) नील बसन फरिया कटि पहिरे, बेनी पीठ रुचिर झकझोरी।

फरियाद—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) शिकायत। (२) प्रार्थना।

फरियादी—वि. [फ़ा.] फरियाद करनेवाला।

फरियाना—क्रि. स. [सं. फलीकरण] (१) भूसी आदि साफ करना। (२) साफ करना। (३) निपटाना।

क्रि. अ.—(१) छँटकर अलग होना। (२) साफ होना (३) तय होना। (४) दिखायी पड़ना।

फरिश्ता—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) देवदूत। (२) देवता।

फरी—क्रि. अ. [हिं. फलना] फल से युक्त हुई, फली। उ.—जिनि जायौ ऐसौ पूत, सब सुख-फरनि फरी—१०-२४।

संज्ञा स्त्री. [हिं. फली] फली। उ.—पोई परवर फाँग फरी चुनि—२३२१।

फरीक—संज्ञा पुं. [अ.] (१) विपक्षी। (२) तरफदार।

फरुई, फरुही—संज्ञा स्त्री. [हिं. फावड़ा] छोटा फावड़ा।

फरुहरि, फरुहरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फुरहरी] कँपकँपी, फुरेरी।

फरेंद, फरेंदा—संज्ञा पुं. [सं. फलेंद] बड़ी जामुन।

फरे—क्रि. अ. [हिं. फलना] फले, फलयुक्त हुए। उ.—फूले फरे तरुवर आनँद लहर के—१०-३४।

फरेब—संज्ञा पुं. [फ़ा.] छल-कपट।

फरेरा—संज्ञा पुं. [हिं. फरहरा] पताका, झंडा।

फरेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फल] जंगली फल।

फरै—क्रि. अ. [हिं. फलना] फलता है, फल लगते हैं। उ.—(क) तरुवर फूलै, फरै, पतझरै, अपने कालहिं पाइ—१-२६५। (ख) जंबू बृच्छ कहो क्यों लंपट फल बर अंबु फरै—३३११।

फरोख्त—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] बिक्री, विक्रय।

फर्यौ—क्रि. स. [हिं. फलना] फला (है)। उ.—नैन भर व्रत फलहिं देखौ, फर्यौ है द्रुम डार—७८६।

फर्ज—संज्ञा पुं. [अ. फ़र्ज़] (१) धर्म-कर्म। (२) कर्तव्य। (३) उत्तरदायित्व। (४) मान लेना, कल्पना।

फ़र्जी—वि. [हिं. फर्ज] (१) माना हुआ। (२) नाम मात्र का।

फर्द—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. फ़र्द] (१) सूची। (२) रजाई का पल्ला।

फर्राटा—संज्ञा पुं. [अनु.] वेग, तेजी।

मुहा०—फर्राटा भरना (मारना)—तेजी से दौड़ना।

फर्राश—संज्ञा पुं. [अ.] नौकर, सेवक।

फर्राशी—वि. [फ़ा.] फर्राश से संबंधित।

यौ०—फर्राशी पंखा—हाथ का बहुत बड़ा पंखा।

फर्श—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) बिछावन। (२) गच।

फलंक—संज्ञा पुं. [फ़ा. फ़लक] आकाश, अंतरिक्ष।

फल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) लताओं और पेड़-पौधों में लगने वाला वह पोषक द्रव्य जिसमें गूदा, रस और बीज आदि रहते हैं और जो फूलों के बाद उत्पन्न होता है। उ.—भिल्लिनि के फल खाए भाव सौं खाटे-मीठे-खारे—१-२५। (२) लाभ। (३) प्रयत्न या क्रिया का परिणाम, नतीजा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा०—फल चखाना—मजा चखाना, दंड देना। फल चखैहौं—दंड दूँगा, मजा चखाऊँगा। उ.—यह हित मनै कहत सूरज-प्रभु इहिं कृतिकौ फल तुरत चखैहौं—७-५। फल देना—मजा चखाना, दंड देना। फल देहिंगी—मजा चखाएँगी, दंड देंगी। उ.—लालन हमहिं करे जो हाल उहै फल देहिंगी हो—२४१६। फल पाना—दंड पाना, मजा चखना। फल पैहैं—दंड पायेंगे। उ.—कितक ब्रज के लोग, रिस करत निहिं जोग, गिरि लियो भोग, फल तुरत पैहैं—६४४।

(४) शुभ अशुभ कर्मों के सुखद-दुखद परिणाम। उ.—(क) बालक ध्रुव वन करत गहन तप ताहि तुरत फल दैहौं। (ख) जा दिन संत पाहुने आवत। तीरथ कोटि सनान करैं फल जैसौ दरसन पावत—२-१७। (ग) सिव-संकर हमकौं फल दीन्हौं—७६८। (घ) मुँह माँगे फल जो तुम पावहु तौ तुम मानहु मोहिं—६१५। (५) गुण, प्रभाव। (६) शुभ कर्मों के चार परिणाम—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। उ.—होइ अटल जगदीस भजन में सेवा तासु चारि फल पावै। (७) बदला, प्रतिफल। (८) बाण, छुरी आदि का अगला भाग। (९) हल का फाल। (१०) फलक। (११) उद्देश्य-सिद्धि। (१२) गणित की क्रिया का परिणाम।

फलक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पटल। (२) चादर।
संज्ञा पुं. [अ.] (१) आकाश। (२) स्वर्ग।

फलकना—क्रि. अ. [अनु.] छलकना, उमँगना।

फलका—संज्ञा पुं. [हिं. फोला] छाला, फफोला।

फलतः—अव्य. [सं.] फल या परिणामस्वरूप।

फलद—वि. [सं.] फल देनेवाला।

फलदान—संज्ञा पुं. [हिं. फल+दान] विवाह की रीति जिसमें धन, मिठाई आदि भेजकर वर को कन्या के लिए निश्चित किया जाता है।

फलना—क्रि. अ. [हिं. फल] (१) फल से युक्त होना। (२) लाभ-दायक होना।

मुहा०—फलना-फूलना—(१) मनोरथ पूर्ण होना। (२) सुखी होना। (३) धन-संतान से पूर्ण होना।

फलयोग—संज्ञा पुं. [सं.] नाटक में नायक के उद्देश्य की सिद्धि या फल की प्राप्ति का स्थल।

फलहार—संज्ञा पुं. [सं. फलाहार] फलों का आहार।

फलहरी, फलहारी—वि. [सं. फलाहार] जिसमें अनाज न हो।

फलाँ—वि. [फ़ा. फ़लाँ] अमुक।

फलाँग—संज्ञा स्त्री. [सं. प्लवन या प्रलंघन] (१) कूद, कुदान, चौकड़ी। उ.—गर्भवती हिरनी तहँ आई। पानी सो पीवन नहिं पाई। सुनि कै सिंह भयान अवाज। मारि फलाँग चली सो भाग—५-३। (२) वह दूरी जो फलाँग से तै की जाय।

फलाँगना—क्रि. अ. [हिं. फलाँग] कूदना-फाँदना।

फलादेश—संज्ञा पुं. [सं.] (ग्रह आदि का) फल बताना।

फलाना—क्रि. स. [हिं. फलना] फलने को प्रवृत करना।
संज्ञा पुं. [हिं. फलाँ] अमुक।

फलार—संज्ञा पुं. [सं. फलाहार] फल का आहार।

फलार्थी—वि. [सं. फलर्थिन्] फल चाहनेवाला।

फलाहार—संज्ञा पुं. [सं.] फलों का ही आहार।

फलाहारी—वि. [सं. फलाहार] (१) फल ही खानेवाला। (२) जो (भोजन) फलों का हो, अनाज का न हो।

फलित—वि. [सं.] (१) फला हुआ। उ.—फल फलित होत फल-रूप जानैं—१-१०४२। (२) संपन्न, पूर्ण।

फलिहै—क्रि. स. [हिं. फलाना] फल देगा। उ.—विष के बृच्छ बिषहिं बिष फलिहै—१०४२।

फली—संज्ञा स्त्री. [हिं. फल] पौधों के वे लंबे चिपटे फल जिनमें गूदा-रस न होकर बीज होते हैं। उ.—फली अगस्त्य करी अमृत सम—२३२१।

क्रि. स. [हिं. फलना] फल निकले। उ.—वह रितु अमृत लता सुनि सूरज अब विष फलनि फली—२७३४।

फलीता—संज्ञा पुं. [अ. फतीला] पलीता, बत्ती।

फलीभूत—वि. [सं.] फल या लाभदायक।

फलेंदा, फलेंद्र—संज्ञा पुं. [सं. फलेंद्र] बड़ा जामुन।

फले—क्रि. अ. [हिं. फलना] फलीभूत हुए। उ.—यहै कहत सब जात परस्पर, सुकृत हमारे प्रगट फले—६८३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फल्यो, फल्यौ—क्रि. अ. [हिं. फलना] फला, फलीभूत हुआ।

प्र०—फल्यो बिहाने [प्रात काल]—कल ही पूजा की थी, प्रातः होते ही उसका फल मिल गया (व्यंग्य)। उ.—कालिहि पूज्यो फल्यो बिहाने—१०५१।

फसकड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. फँसना+कड़ी] पालथी।

फसकना—क्रि. अ. [अनु.] कुछ कुछ फटना, मसकना।

वि.—जो जल्दी फट या मसक जाय।

फसल—संज्ञा स्त्री. [अ. फ़स्ल] (१) मौसम, ऋतु। (२) समय। (३) खेत की उपज। (४) अन्न की उपज।

फसली—वि. [हिं. फसल] ऋतु-संबंधी।

फसाद—संज्ञा पुं. [अ.] (१) बलवा, विद्रोह। (२) उधम, उपद्रव। (३) झगड़ा, लड़ाई। (४) विवाद।

फसादी—वि. [फ़ा.] (१) उपद्रवी। (२) झगड़ालू।

फस्द—संज्ञा स्त्री. [अ. फ़स्द] नस काट कर, दूषित रक्त निकालने की क्रिया।

फहम—संज्ञा स्त्री. [अ.] समझ, विवेक।

फहरना—क्रि. अ. [सं. प्रसरण] उड़ना, फड़फड़ाना।

फहरनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. फहरना] फहरने की क्रिया या भाव। उ.—न्यौछावर अंचल की फहरनि अर्ध नैन जलधार घनी—१४५६।

फहरात—क्रि. अ. [हिं. फहराना] फहराता है, उड़ता या हिलता है। उ.—(क) स्वेत छत्र फहरात सीस पर, मनौ लच्छि कौ बंध—६-७५। (ख) कमलनैन काँधे पर न्यारो पीत बसन फहरात—२५३६।

फहरान—संज्ञा स्त्री. [हिं. फहराना] फहरने की क्रिया।

फहराना—क्रि. स. [सं. प्रसारण] उड़ान, हवा में हिलाना।

क्रि. अ.—फहरना, हवा में हिलना।

फहरानि—संज्ञा स्त्री. [हिं. फहरान] फहराने की क्रिया या भाव। उ.—(क) वा पट पीत की फहरानि। कर धरि चक्र चरन की धावनि, नहिं बिसरत वह बानि—१-२७९। (ख) पीत पट फहरानि मानो लहरि उठत अपार—१३५६।

फहरावत—क्रि. स. [हिं. फहराना] वायु में फड़फड़ाता या उड़ता है। उ.—आजु हरि धेनु चराए आवत। मोर मुकुट बनमाल बिराजत, पीतांबर फहरावत—४६३।

फहरावै—क्रि. अ. [हिं. फहरना] उड़ता या फड़फड़ाता है। उ.—मोर मुकुट कुंडल बनमाला पीतांबर फहरावै—८४०।

फहरैहैं—क्रि. स. [हिं. फहराना] उड़ायेंगे। उ.—सूरदास प्रभु नवल कान्ह वर पीतांबर फहरैहैं—१२७७।

फहरैहै—क्रि. अ. [हि. फहरना] फहरेगी, हवा में उड़े या हिलेगी। उ.—जा दिन कंचनपुर प्रभु ऐहैं, बिमल ध्वजा रथ पर फहरैहै—९-८१।

फाँक—संज्ञा स्त्री. [सं. फलक] (१) कटा हुआ टुकड़ा, खंड। (२) टुकड़े में बांटनेवाली लकीर।

फाँकड़ा—वि. [देश.] (१) बाँका-तिरछा। (२) मजबूत।

फाँकना—क्रि. स. [हिं. फाँका] फंकी मार कर खाना।

मुहा०—धूल फाँकना—मारे-मारे घूमना।

फाँका—संज्ञा पुं. [हिं. फेंकना] (१) फंका। (२) एक फंके में आनेवाली वस्तु।

फाँकि—संज्ञा स्त्री. [हिं. फाँक] फाँक।

फाँकौ—संज्ञा स्त्री. [हिं. फाँक] फाँक, टुकड़ा। उ.—जरासिंधु कौ जोर उघारयौ फारि कियौ द्वै फाँकौ—१-१३३।

फाँगी—संज्ञा स्त्री. [देश०] एक प्रकार का साग। उ.—(क) रुचिर लजालु लोनिका थाँगी। कढ़ी कृपालु दूसरैं माँगी—३९६। (ख) पोई परवर फाँग फरी चुनि—२३२१।

फाँद—संज्ञा स्त्री. [हिं. फाँदना] उछाल, कुदान।

संज्ञा स्त्री., पुं. [हिं. फंदा] फंदा, जाल।

फाँदना—क्रि. अ. [सं. फणन] कूदना, उछलना।

क्रि. स.—लाँघना, डाँकना, नाँघना।

क्रि. स. [हिं. फंदा] फंदे में फँसाना।

क्रि. स. [हिं. फनना] रुई धुनना।

फाँदा—संज्ञा पुं. [हिं. फंदा] जाल, फंदा।

फाँदि—क्रि. स. [हिं. फंदा] फंदे में फँसाकर। उ.—मनो मन्मथ फाँदि फंदनि मीन बिवि तट ल्याइ—१४०५।

फाँदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फंदा] गट्ठा बाँधने की रस्सी।

फाँफी—संज्ञा स्त्री. [सं. पर्परी] बहुत महीन झिल्ली।

फाँस—संज्ञा स्त्री. [सं. पाश, प्रा. फाँस] (१) पाश, बंधन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फंदा, बंध। उ.—(क) मेरी बेर क्यौं रहे सोचि ! काटिकै अत्र-फाँस पठवहु, ज्यौं दियौ गज मोचि—१-१९९। (ख) सूरदास भगवंत-भजन बिनु, करम-फाँस न कटै—१-२६३। (ग) ए सब त्रय गुन फाँस समान। (२) **किसी को बाँधने या फँसाने का फंदा या जाल।** उ.—(क) ब्रह्म-फाँस उन लई हाथ करि—९-१०४। (ख) हँसि-हंसि नाग-फाँस सर साँधत, बंधन बंधु-समेत बँधायौ—९-१४१। (ग) बरुन फाँस ब्रज-पतिहिं छिन माँहि छुड़ावै।

संज्ञा स्त्री. [सं. पनस] (१) **बाँस या काठ का कड़ा महीन रेशा जो काँटे की तरह चुभ जाता है।**

मुहा०—फाँस चुभना—**चित को खटकने या चुभनेवाली बात होना।** फाँस निकलना—**कष्ट देने वाली चीज का न रह जाना।** फाँस निकालना—**कष्ट देनेवाली चीज को दूर करना।**

(२) **बाँस आदि की पतली तीली या कमानी।**

फाँसना—क्रि. स. [हिं. फाँस] (१) **बंधन में डालना, जाल में फँसाना।** (२) **धोखे में डालना** (३) **वश में करना।**

फाँसि—संज्ञा स्त्री. [सं. पाश] **पाश, बंधन, फंदा।** उ.—(क) भुजन-प्रताप नाहिं मैं जान्यौ, पर्‌यौ मोह की फाँसि—१-१११। (ख) माया मोह लोभ अरु मान। ए सब त्रयगुण फाँसि समान। (२) **रस्सी जिससे शिकारी फंदा डालते हैं।**

क्रि. स.—[हिं. फाँसना] **फाँस कर, बंधन में डालकर।**

फाँसी—संज्ञा स्त्री. [सं. पाशी] (१) **फाँसने का फंदा, पाश।** उ.—(क) चंचल, चपल, चबाइ, चौपटा लिए मोह की फाँसी—१-१८६। (ख) ताकौं देह-मोह बड़ फाँसी—४-५। (ग) आए ऊधौ फिरि गए आँगन डारि गए गर फाँसी—३०३०। (घ) कीनी प्रीति हमारे ब्रज सों दई प्रेम की फाँसी—३१३३। (२) **फंदा जो दम घोटकर मारने के लिए डाला जाता है।** (३) **प्राणदण्ड देने के लिए डाला जानेवाला फंदा।** (४) **प्राणदण्ड।**

फाका—संज्ञा पुं. [अ. फ़ाक़ः] **उपवास।**

फाख़ता—संज्ञा स्त्री. [अ. फ़ाख़्ता] **पंडुक पक्षी।**

फाग, फागु—संज्ञा पुं. [हिं. फागुन] **फागुन मास में मनाया जानेवाला उत्सव जिसमें लोग एक-दूसरे पर रंग छिड़कते हैं।** उ.—(१) सकुच न करत, फाग सी खेलत, तारी देत, हँसत मुख मोरि—१०-३२७। (२) कुबिजा कमल नैन मिलि खेलत बारहमासी फाग—३०६५।

फागुन—संज्ञा पुं. [सं.] **फाल्गुन, माघ के बाद का महीना जिसकी पूर्णिमा को होली जलती है।**

फागुनी—वि. [हिं. फागुन] **फागुन-संबंधी।**

फाजिल—वि. [अ. फ़ाज़िल] (१) **बहुत अधिक।** (२) **विद्वान, पंडित।**

फाटक—संज्ञा पुं. [सं. कपाट] **बड़ा द्वार या दरवाजा।**

संज्ञा पुं. [हिं. फटकना] **भूसी या किनकी जो अनाज फटकने से बच जाय, फटकन, पछोड़न।** उ.—फाटक दै कै हाटक माँगत मोरो निपट सुधारो—३३४०।

फाटत—क्रि. अ. [हिं. फटना] **फटता, टूटता या विदीर्ण होता है, भग्न होता है।** उ.—(क) टूटत फन, फाटत तन दुहुँ दिसि, स्याम निहोरो कीजै—५७६। (ख) निकसि न जात प्रान ए पापी फाटत नहीं बज्र की छाती—२८८२।

फाटना—क्रि. अ. [हिं. फटना] **भग्न या विदीर्ण होना।**

फाटि—क्रि. अ. [हिं. फटना] **फटकर।** उ.—दूध फाटि जैसे भयो काँजी कौन स्वाद करि खाइ—३३३४।

फाटी—क्रि. अ. [हिं. फटना] **फट गयी, विदीर्ण हुई।** उ.—(क) बड़ी बार भई, लोचन उघरे, भरम-जवनिका फाटी—१०-२५४। (ख) सरिता संयम स्वच्छ सलिल जनु फाटी काम कई—२८५३।

फाटे—वि. [हिं. फटना] **फटा हुआ, भग्न, विदीर्ण।** उ.—फूटी चुरी गोद भरि ल्यावैं, फाटे चीर दिखावैं गात—१०-३३२।

फाट्यो, फाटयौ—क्रि. अ. [हिं. फटना] **फटा, छिन्न-भिन्न हुआ, एकत्र न रहा।** उ.—(क) ज्यौं रवि-तेज पाइ दसहूँ दिसि, दोष-कुहर कौ फाटयौ—९-८७। (ख) हरि बिछुरत फाटयो न हियो—२५४५।

फाड़खाऊ—वि. [हिं. फाड़ + खाना] (१) **फाड़कर खा जाने वाला।** (२) **क्रोधी, चिड़चिड़ा।** (३) **भयानक।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फाड़न—संज्ञा स्त्री. [हिं. फाड़ना] फाड़ा हुआ टुकड़ा।

फाड़ना—क्रि. स. [सं. स्फाटन] (१) चीरना, विदीर्ण करना। (२) धज्जियाँ उड़ाना। (३) संधि या जोड़ खोलना। (४) द्रव का पानी और सार अलग करना।

फातिहा—संज्ञा पुं. [अ.] (१) प्रार्थना। (२) मृतक के लिए चढ़ावा।

फानना—क्रि. स. [हिं. फारना] रुई धुनना।

क्रि. स. [सं. उपायन] काम आरम्भ करना।

फानूस—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) बड़ा कंदील। (२) शीशे का कमल या गिलास जिसमें बत्ती जले।

फाब—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रभा, प्रा. पभा] शोभा।

फाबना—क्रि. अ. [हिं. फ़बना] शोभा देना।

फायदा—संज्ञा पुं. [अ. फ़ायदा] (१) लाभ। (२) भला परिणाम (३) प्रयोजन सिद्ध होना।

फार—संज्ञा पुं. [हिं. फारना] खंड, फाल।

फारना—क्रि. स. [हिं. फाड़ना] चीरना-फाड़ना।

फारसी—संज्ञा स्त्री. [फा.] फारस देश की भाषा।

फारा—संज्ञा पुं. [सं. फाल] फाँक, फाल टुकड़ा।

फारि—क्रि. स. [फाड़ना] (१) फाड़कर, चीरकर, विदीर्ण करके। उ.—(क) खंभ फारि नरसिंह प्रगट है, असुर के प्रान हरे—१-८२। (ख) चीरि फारि करिहौं भगौहैं सिखनि सिखि लवलेस—३४१३।

(२) खंड खंड करके, धज्जियाँ उड़ाकर। उ.—फोरि-फारि, तोरि-तारि, गगन होत गाजैं—६-१३६।

संज्ञा पुं. [हिं. फाल] खंड, टुकड़ा। उ.—फटि तब खंभ भयौ है फारि—७-२।

फारी—क्रि. स. [हिं. फाड़ना] (१) चीरी, फाड़ी। उ.—(क) संकट तैं प्रहलाद उधारयौ, हिरनाकसिपु-उदर नख फारी—१-२२। (ख) कबहिं गुपाल कंचुकी फारी—७७४। (२) चीरकर। उ.—कहत प्रहलाद के धारि नरसिंह बपु निकसि आए तुरत खंभ फारी—७-६।

फारे—क्रि. स. [हिं. फाड़ना] फाड़े, चीरे। उ.—हिरन-कसिपु उर फारे हो—१०-१२८।

फारै—क्रि. स. [हिं. फाड़ना] फाड़ता-चीरता है। उ.—हार तोरै चीर फारै, नैन चलै चुराइ—७८०।

फारयौ—क्रि. स. [हिं. फाड़ना] फाड़ दिया, चीरा, विदीर्ण किया। उ.—जिहिं बल हिरनकसिप उर फारयौ, भए भगत कौं कृपानिधान—१८-१२७।

फाल—संज्ञा स्त्री. [सं. फलक] कटा हुआ, छोटा टुकड़ा।

संज्ञा पुं. [सं. प्लव] (१) डग, फलाँग।

मुहा०—फाल भरना—डग भरना। फाल बाँधना – फलाँग या छलाँग मारना।

(२) डग भर का फासला, पैंड। उ.—तीन फाल बसुधा सब कोनी सोइ बामन भगवान।

संज्ञा स्त्री. [सं.] जमीन खोदने की छड़, कुसी।

फालतू—वि. [हिं. फाल+तू] (१) आवश्यकता या जरूरत से ज्यादा। (२) बेकार, निकम्मा।

फालसई—वि. [हिं. फालसा] फालसे के रंग का, ललाई लिये हल्के ऊदे रंग का।

फालसा—संज्ञा पुं. [फ़ा. फ़ालसा] एक छोटा पेड़ जिसमें मोती के दाने जैसे फल लगते हैं।

फालिज—संज्ञा पुं. [अ. फ़ालिज] पक्षाघात रोग।

फाल्गुन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) माघ के बाद का महीना जिसकी पूर्णिमा को होली जलायी जाती है। (२) अर्जुन का एक नाम।

फालगुनि—संज्ञा पुं. [सं.] अर्जुन।

फावड़ा—संज्ञा. पुं. [सं. फाल, प्रा. फाड़] मिट्टी खोदने का एक औजार जो फरसे की तरह का होता है।

फाश—वि. [फ़ा. पाश] खुला, प्रकट।

फासला—संज्ञा पुं. [अ.] दूरी, अंतर।

फाहिशा—वि. [अ. फ़ाहिशा] व्यभिचारिणी।

फिकर, फिकिर, फिक्र—संज्ञा स्त्री. [अ. फ़िक्र] (१) चिंता। (२) ध्यान, विचार। (३) यत्न, उपाय।

फिचकुर—संज्ञा पुं. [सं. पिच्छ] मूर्च्छा या बेहोशी में मुँह से निकलनेवाला फेन।

फिट—अव्य. [अनु.] धिक्, छी।

फिटकार—संज्ञा पुं. [हिं. फिट+करना] (१) धिक्कार।

मुहा०—मुंह पर फिटकार बरसना – चेहरा बहुत फीका या उदास होना।

(२) कोसना, बद्दुआ। (३) हलकी मिलावट।

फिट्टा—वि. [हिं. फिट] फटकार खाया हुआ, मलिन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ितना—संज्ञा पुं. [अ.] (१) उपद्रव। (२) उपद्रवी।

फ़ितरती—वि. [अ. फ़ितरत] काँइयाँ, धूर्त।

फ़ितूर—संज्ञा पुं. [अ. फ़ूतूर] (१) खराबी। (२) झगड़ा।

फ़िनिया—संज्ञा स्त्री. [देश.] कान का एक गहना।

फ़िर—क्रि. वि. [हिं. फ़िरना] (१) दुबारा, पुनः।

यौ०—फिर-फिर—बार बार, पुनः पुनः।

(२) किसी और समय। (३) बाद में। (४) तब।

मुहा०—फिर क्या है—तब क्या पूछना है?

(५) आगे बढ़कर, दूरी पर। (६) इसके अतिरिक्त।

फिरकना—क्रि. अ. [हिं. फिरना] नाचना, चक्कर खाना।

फिरका—संज्ञा पुं. [अ. फ़िरका] (१) जाति। (२) पंथ।

फिरकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फिरकना] (१) वह गोल चीज जो कीली पर घूमती हो। (२) लड़कों की फिरहरी नामक खिलौना जो नचाया जाता है। (३) चकई नामक खिलौना।

फिरत—क्रि. अ. [हिं. फिरना] (१) डोलता या घूमता है। उ.—काल फिरत बिलार तनु धरि, अब घरी तिहिं लेत—१-३११। (२) प्रचारित या घोषित होता है। उ.—बोलत बग निवेत गरजै अति मानो फिरत दोहाई—२८३६।

प्र०—करत फिरत—करता-फिरता है। उ.—कहा कृपिन की माया गनियै, करत फिरत अपनी-अपनी—१-३९।

फिरता—संज्ञा पुं. [हिं. फिरना] (१) वापसी। (२) अस्वीकार।

वि.—(१) लौटाया हुआ। लौटनेवाला।

फिरति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. फिरना] फिरती है, घूमती है। उ.—माधौ जू, यह मेरी इक गाइ।······ फिरति वेद-बन-ऊख उखारति, सब दिन अरु सब राति—१-५१।

फिरते—क्रि अ. [हिं. फिरना] इधर-उधर घूमते, चलते। उ.—अपने दीन दास कैं हित लगि, फिरते सँग-सँगही—१-२८३।

फिरतौ—क्रि. अ. [हिं. फिरना] घूमता, डोलता।

प्र०—दिखावत फिरतौ—दिखाता फिरता। उ.—धर्म-धुजा अन्तर कछु नाहीं, लोक दिखावत फिरतौ—१-२०३।

फिरना—क्रि. अ. [हिं. फेरना का अक०] (१) चलना, भ्रमण करना। (२) टहलना, सैर करना। (३) बार-बार चक्कर खाना। (४) ऐंठा मरोड़ा जाना। (५) वापस होना, लौटना। (६) बिकी चीज का वापस होना। (७) मुख या सामना दूसरी ओर घूम जाना, मुड़ना, रुख बदलना।

मुहा.—किसी ओर फिरना—झुकना, प्रवृत्त होना। जी फिरना—जी हट जाना, उदास या विरक्त होना।

(८) विरुद्ध या विपक्ष में हो जाना। (९) बदल जाना, परिवर्तित हो जाना। (१०) बात या वचन पर दृढ़ न रहना। (११) झुकना, टेढ़ा हो जाना। (१२) चारो ओर प्रचारित या घोषित होना। (१३) लीपा पोता जाना। (१४) स्पर्श किया जाना।

फिरवाना—क्रि. स. [हिं. फेरना] फेरने का काम कराना। क्रि. स. [हिं. फिराना] फिराने का काम कराना।

फिराइ—क्रि. स. [हिं. फिराना] (१) फिराकर, लौटाकर, अपने वचन को वापस लेकर। उ.—भक्तबछल श्री जादवराइ। भीषम की परतिज्ञा राखी, अपनो बचन फिराइ—१-२६७। (२) ऐंठ या मरोड़कर। उ.—वृषभ-गंजन मथन-केसी हने पूँछ फिराइ—४९८।

फिराई—क्रि. स. [हिं. फिराना] (१) घुमाकर, फेरकर। उ.—(क) भृकुटी कुटिल, अरुन अति लोचन, अगिनि-सिखा-मुख कह्यौ फिराई—९-५६। (ख) नगन त्रिय देखिबे जगत नाहिन कह्यो, जानि इह हरि रहे मुख फिराई—१०-उ०-३५। (२) दूसरी दिशा में चलने की प्रेरणा दी। उ.—उतही जातहि सखी सहेली मैं ही सबको इतहि फिराई—१०४९।

फिराक़—संज्ञा पुं. [अ. फ़िराक़] (१) चिंता। (२) टोह।

मुहा.—फिराक में रहना—खोज में रहना।

फिराना—क्रि. स. [हिं. फिरना] (१) इधर से उधर ले जाना। (२) टहलाना, सैर कराना। (३) चक्कर या फेरा खिलाना। (४) ऐंठना, घुमाना, मरोड़ना। (५) लौटाना, पलटाना। (६) मुख या सामना दूसरी ओर करना। (७) एक ओर जाते हुए को दूसरी ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलाना। (८) **बदल देना।** (९) **बात या वचन पर दृढ़ न रहने देना।**

फिरानो—क्रि. स. [हिं. फिरना] **घूमा, फिरा।** उ.—बहुत जतन करि हौं पचि हारी इतको नहीं फिरानो—पृ. ३२० (९०)।

फिराय—क्रि. स. [हिं. फिराना] **ऐंठ या मरोड़कर।** उ.—उन नहिं मार्यौ सम्मुख आयो पकर्यो पूँछ फिराय।

फिरायो, फिरायौ—क्रि. स. [हिं. फिराना] **घुमाया, चक्कर खिलाया।** उ.—(क) कंठ चाँपि बहु बार फिरायो, गहि पटक्यौ, नृप पास पर्यौ—१०-५९। (ख) यह ऐसो तुम अतिहि तनक से कैसे भुजन फिरायो—२३६६।

फिरावत—क्रि. स. [हिं. फिराना] (१) **लौटाता है, वापस करता है, विमुख करता है।** उ.—तुम नारायन भक्त कहावत। काहे को तुम मोहिं फिरावत।

फिरावति—क्रि. स. [हिं. फिराना] (१) **फिराती है।** (२) **घुमाती या नचाती हुई।** उ.—चली पीठि दै दृष्टि फिरावति, अंग-अंग आनन्द रली—७३६।

फिरावन—संज्ञा पुं. [हिं. फिराना] **फिराने या लौटाने की क्रिया।** उ.—मंत्री गयौ फिरावन रथ लै, रघुबर फेरि दियौ—९-४६।

फिरि—क्रि. वि. [हिं. फिर, फिरना] (१) **पुनः, फिर, दोबारा।** उ.—(क) दुरबासा अँबरीष सतायौ, सो हरि-सरन गयौ। परतिज्ञा राखी मन-मोहन, फिरि तापैं पठयौ—१-३८। (ख) यह औसर कब ह्वैहै फिरिकै पायौ देव मनाई—१०-१८।

यौ०—फिरि फिरि—**पुनः पुनः, बार-बार।** उ.—(क) सूरदास भगवंत-भजन बिनु फिरि फिरि जठर जरै—१-३५। (ख) फिरि फिरि ऐसोई है करत। जैसें प्रेम पतंग दीप सौं पावक हू न डरत—१-५५। (ग) दीन-दयाल सूर हरि भजि लै, यह औसर फिरि नाहीं—१-३१९।

(२) **इसके अंनतर, बाद में, पश्चात, उपरांत।** उ.—सूर पाइ यह समै लाहु लहि, दुर्लभ फिरि संसार—१-६८। (३) **तब, इस पर।** उ.—फल माँगत फिरि जात मुकर ह्वै यह देवन की रीति—१-१७७। (४) **घूमकर, मुँह फेरकर, पलटकर।** उ.—फिरि देखैं तो कुँवर कन्हाई मीजत रुचि सौं पीठि—७२८।

क्रि. अ. [हिं. फिरना] (१) **घूमकर, भ्रमण करके।** उ.—(क) कौन कौन तीरथ फिरि आए—१-१८४। (ख) नृप चौरासी लछ फिरि आनौ—४-१२। (२) **लौटकर।** उ.—इहिं अंतर अर्जुन फिरि आयौ—१-२८६। (३) **प्रचारित या घोषित होकर।** उ.—लंका फिरि गई राम दुहाई—९-१४०। (४) **पलटकर, मुँह फेरकर।** उ.—खेलन जाहु बाल सब टेरत। यह सुनि कान्ह भए अति आतुर, द्वारैं तन फिरि हेरत—१०-२४३।

फिरिबौ—संज्ञा पुं. [हिं. फिरना] (१) **फिरना, घूमना।** (२) **आवागमन, बार-बार जन्म लेना और मरना।** उ.—जिय करि कर्म, जन्म बहु पावै। फिरत-फिरत बहुतै स्रम आवै। अरु अजहूँ न कर्म परिहरै। जातैं याकौ फिरिबौ टरै—५-४।

फ़िरियाद—संज्ञा स्त्री. [अ. फरियाद] **दुहाई, पुकार।**

फिरियादी—वि. [हिं. फिरियाद] **फरियाद करनेवाला।**

फिरिये—क्रि. अ. [हिं. फिरना] **लौटिए, वापस आइए।** उ.—बेगि ब्रज को फिरिए नँदराइ—३६५१।

फिरिहरा—संज्ञा स्त्री. [हिं. फिरना+हारा] **नचाने का एक खिलौना।**

फिरिहौं—क्रि. अ. [हिं. फिरना] **फिरता रहूँगा, घूमता रहूँगा।** उ.—कब लग फिरिहौं दीन बह्यौ—१-१६२।

फिरी—क्रि. अ. [हिं. फिरना] (१) **चारों ओर प्रचारित हुई, घोषित हुई।** उ.—गहि सारँग, रन रावन जीत्यौ, लंक बिभीषन फिरी दुहाई—१-२४। (२) **घूमी, ढूंढ़ती रही।** उ.—बहुत फिरी तुम काज कन्हाई—४६२।

फिरे—क्रि. अ. [हिं. फिरना] (१) **लौटे, पलटे, वापस आये।** उ.—(क) देखि फिरे हरि ग्वाल दुवारैं—१०-२७७। (ख) अपने धाम फिरे तब दोऊ जानि भई कछु साँझ। (ग) नैन निरखि अजहूँ न फिरे री—पृ० ३२७। (९०)।

फिरैं—क्रि. अ. बहु. [हिं. फिरना] **फिरते हैं, घूमते हैं।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.—किंकिन नूपुर पाट-पटंबर, मानौं लिये फिरैं घर-बार—१-४१।

फिरै—क्रि. अ. [हिं. फिरना] (१) **घूमता है, भ्रमण करता है**। उ.—कौन बिरक्त अधिक नारद तैं, निसि दिन भ्रमत फिरै—१-३५। (२) **सैर करती है, विचरती है, टहलती है**। उ.—अकथ कथा याकी कछू, कहत नहीं कहि आई (हो)। छैलनि के सँग यौं फिरै, जैसैं तनु सँग छाईं (हो)—१-४४।

फिरैगौ—क्रि. अ. [हिं. फिरना] **फिरेगा, इधर-उधर डोलेगा, घूमेगा**। उ.—चौरासी लख जोनि जन्मि जग, जल-थल भ्रमत फिरैगौ—१-७५।

फिर्‌यो—क्रि. अ. [हिं. फिरना] **फिरा, घूमा, भ्रमण किया**। उ.—बहुतक दिवस भए या जग मैं, भ्रमत फिर्‌यौ मतिहीन—१-४६।

फिसड्डी—वि. [अनु. फिस] **जो काम में पीछे रहे**।

फिसफिसाना—क्रि. अ. [अनु. फिस] **शिथिल होना**।

फिसलन—संज्ञा स्त्री. [हिं. फिसलना] **रपटन**।

फिसलना—क्रि. अ. [सं. प्र.+सरण] (१) **चिकनाई से पैर आदि रपटना**। (२) **झुकना, प्रवृत्त होना**।

मुहा.—जी फिसलना—(१) **मन ललचाना**। (२) **मोहित होना**।

फिसलाना—क्रि. स. [हिं. फिसलना] **रपटाना, खिसलाना**।

फींचना—क्रि. स. [अनु. फिच् फिच्] **पटककर धोना**।

फी—अव्य. [अ. फ़ी] **प्रति एक, हर एक**।

फीका—वि.—[सं. अपक्क, प्रा. अपिक्क] (१) **नीरस, स्वादहीन**। (२) **जो चटक रंग का न हो**। (३) **कांति या तेजहीन**। (४) **निष्फल, प्रभावहीन**।

फीकी—वि. स्त्री. [हिं. फीका] **व्यर्थ, निष्फल, सारहीन, प्रभावरहित**। उ.—जन यह कैसे कहै गुसाईं। तुम बिनु दीनबंधु, जादवपति, सब फीकी ठकुराई—१-१६५।

फीके—वि. बहु. [हिं. फीका] **नीरस, अरुचिकर, सारहीन**। उ.—बिनु रघुनाथ माहिं सब फीके, आज्ञा मेटि न जाइ—६-१६१।

फीको, फीकौ—वि. [हिं. फीका] (१) **अरसिक, जो मिलनसार न हो**। उ.—महा कठोर, सुन्न हिरदै कौ, दोष देन कौ नीकौ—बड़ौ कृतघ्नी और निकम्मा, बेधन, राँकौ-फीकौ—१-१८६। (२) **स्वादहीन, नीरस, अरुचिकर, जो चखने में अच्छा न लगे**। उ.—(क) देह गेह सनेह अर्पन कमल लोचन ध्यान। सूर उनको भजन देखत फीकौ लागत ज्ञान। (ख) जो रस खाइ स्वाद करि छाँड़े सो रस लागत फीको—२६३८।

फीता—संज्ञा पुं. [पुर्त.] **पतली धज्जी या किनारा**।

फीरोजा—संज्ञा पुं. [फा. फ़ीरोज़ा] **एक नग**।

फीरोजी—वि. [हिं. फीरोजा] **हरापन लिये नीला**।

फील—संज्ञा पुं. [फा. फ़ील] **हाथी**।

फीलवान—संज्ञा पुं. [फा. फ़ील+वान] **महावत**।

फीली—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंड] **पिंडली**।

फुँकना—क्रि. अ. [हिं. फूँकना] (१) **जलना**। (२) **नष्ट होना**। (३) **ईर्ष्या करना**।

संज्ञा पुं.—**हवा फूंकने की नली**।

फुँकनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूँकना] (१) **हवा फूंकने की पतली नली**। (२) **भाथी**।

फुंकरना—क्रि. अ. [हिं. फुंकार] **फुंकार छोड़ना**।

फुकरै—क्रि. अ. [हिं. फुँकरना] **फुंकार मारता है**।

उ.—सहसौ फन फनि फुंकरैं, नैंकु न तिन्हैं बिकार—५८६।

फुँकर्‌यौ—क्रि. अ. [हिं. फुंकारना] **फुंकार मारी, फूत्कार छोड़ी, फूँ फूँ शब्द किया**। उ.—पूंछ लीन्हीं झटकि धरनि सौं गहि पटकि फुंकर्‌यौ लटकि करि क्रोध पूले—५५२।

फुँकवाना, फुँकाना—क्रि. स. [हिं. फूँकना] (१) **फूंकने को प्रवृत्त करना**। (२) **मुख से हवा निकलवाना**। (३) **जलवाना**।

फुँकार—संज्ञा पुं. [अनु.] **मुख से हवा का झोंका निकलने का शब्द, फूत्कार**। उ.—(क) कंस कोट जरि जाहिंगे, बिष की एक फुंकार—५८६। (ख) सहस फन फुंकार छाँड़े जाइ काली नाथियाँ।

फुँदना—संज्ञा पुं. [हिं. फूल+फंदा] **फुलरा, झब्बा**।

फुँदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फंदा] **गाँठ, फंदा**।

फुंसी—संज्ञा स्त्री. [सं. पनसिका, फा. फनस] **छोटी फुड़िया**।

फुट—वि. [सं. स्फुट] (१) **अकेला**। (२) **अलग**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुटकर—वि. [सं. स्फुट+कर] (१) जिसका जोड़ा न हो। (२) कई प्रकार का। (३) अलग। (४) थोड़ा-थोड़ा।

फुटका—संज्ञा पुं. [सं. स्फोटक] छाला, फफोला।

फुटकी—संज्ञा स्त्री. [सं. फुटक] छोटे कण या लच्छे।

फुटत—क्रि. अ. [हिं. फूटना] फूटता है। उ.—उचटत अति अंगार, फुटत फर, झटपट लपट कराल—६१५।

फुटट—वि. [हिं. फुट] (१) अकेला। (२) अलग।

फुटटैल—वि. [हिं. फुट+ऐल] (१) जिसका जोड़ा न हो। (२) अलग रहनेवाला।

वि. [हिं. फूटना] जिसका भाग्य फूटा हो।

फुदकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) उछलना-कूदना। (२) हर्ष या उमंग से फूल जाना।

फुनंग, फुनँगी—संज्ञा स्त्री. [सं. फुलक] वृक्ष का छोर।

फुप्फुस—संज्ञा पुं. [सं.] फेफड़ा।

फुफँदी, फुफंदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूल+फंद] नीबी, इजारबंद।

फुफकाना—क्रि. अ. [अनु.] फुफकारना।

फुफुकार—संज्ञा स्त्री. [अनु.] साँप की फुंकार, फूत्कार। उ.—सहस फन फुफुकार छाँड़े, जाइ काली नाथियाँ—५७७।

फुफकारना—क्रि. अ. [हिं. फुफकार] साँप का फूत्कार करना।

फुफेरा—वि. [हिं. फूफा] फुफा से उत्पन्न।

फुर—वि. [हिं. फुरना] सत्य, सच्चा।

संज्ञा स्त्री. [अनु.] पंख फड़फड़ाने की ध्वनि।

फुरई—क्रि. अ. [हिं. फुरना] प्रभाव करता है, असर डालता है, लगता है। उ.—पौढ़े कहा समर-सेज्या सुत, उठि किन उत्तर देत। थकित भए कछु मंत्र न फुरई, कीने मोह अचेत—१-२६।

फुरत—क्रि. अ. [हिं. फुरना] (१) असर या प्रभाव करती है। उ.—जंत्र न फुरत मंत्र नहिं लागत प्रीति सिरानी जाति। (२) स्फुटित हुआ, उच्चरित हुआ, मुँह से निकला। उ.—(क) कोउ निरखति अधरन की सोभा, फुरति नहीं मुख बानी—६४४। (ख) फुरत न बचन कछू कहिबे को रहे बैन सो हारी—३३१३।

फुरति, फुरती—संज्ञा स्त्री. [सं. स्फूर्ति] शीघ्रता, तेजी। उ.—द्विविद लै साल को वृक्ष सम्मुख भयौ फरति करि राम तनु फेंकि मार्यो—१० उ०-४५।

क्रि. अ. [हिं. फुरना] उच्चरित होता है। उ.—सिथिल गात मुख बचन फुरति नहिं ह्वै जो गई मति भोरी।

फुरतीला—वि. [हिं. फुरती+ईला] जो फुरती करे, तेज।

फुरना—क्रि. अ. [सं. स्फुरण, प्रा. फुरण] (१) प्रकट या उदय होना। (२) चमक उठना। (३) फड़कना, फड़फड़ाना। (४) उच्चरित होना। (५) सत्य या ठीक उतरना। (६) असर या प्रभाव करना। (७) सफल होना।

फुरफुर—संज्ञा स्त्री. [अनु.] पंख की फरफराहट।

फुरफुराना—क्रि. अ. [अनु.] (१) 'फुरफुर' करना। (२) हलकी वस्तु का लहराना।

क्रि. स.—किसी वस्तु को हिलाना-डुलाना।

फुरफुरी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] पंख फड़फड़ाने का भाव।

फुरसत—संज्ञा स्त्री. [अ. फुरसत] अवकाश, छुट्टी।

फुरहरना—क्रि. अ. [सं. स्फुरण] निकलना, उत्पन्न होना।

फुरहरी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) पंख-फड़फड़ाने की क्रिया। (२) पंख, कपड़े आदि की फड़फड़ाहट। (३) कंप और रोमांच, कँपकँपी।

फुराना—क्रि. स. [हिं. फुर.] (१) सच्चा या ठीक उतारना। (२) प्रमाणित करना। (३) उच्चारित करना।

फुरी—क्रि. अ. [हिं. फुरना] सत्य या ठीक हुई, पूरी उतरी। उ.—फुरी तुम्हारी बात कही जो मोसों रही कन्हाई।

फुरे—क्रि. अ. बहु. [हिं. फुरना] (१) उच्चरित हुए। उ.—उठि के मिले तंदुल हरि लीन्हें मोहन बचन फुरे। (२) प्रभाव किया। उ.—फुरे न जंत्र मंत्र नहिं लागे, चले गुनी गुन हारे—७४७।

फुरेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फुरफुराना] (१) सींक जिसके सिरे पर दवा, इत्र आदि लगाने को रुई लिपटी हो। (२) कँपकपी।

मुहा०—फुरेरी आना—कँपकँपी होना। फुरेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेना—(१) काँपना । (२) फड़कना, फड़फड़ाना । (३) सजग या होशियार होना ।

फुरै—क्रि. अ. [हिं. फुरना] (१) उच्चरित होता है । उ.—फुरै न बचन बरजिबै कारन, रहीं बिचारि बिचारि—१०-२८३ । (२) प्रभाव या असर करता है । उ.—फुरै न मंत्र, जंत्र नहिं लागे, चले गुनी गुन हारे—७४७ ।

फुलका—संज्ञा पुं. [हिं. फूलना] हलकी-पतली रोटी ।

फुलझड़ी, फुलझरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूल + झड़ना] (१) ऐसी आतिशबाजी जिसमें फूल-सी चिनगारियाँ निकलें । (२) ऐसी बात जिससे परस्पर झगड़ा या विवाद हो जाय ।

फुलरा—संज्ञा पुं. [हिं. फूल] फुँदना ।

फुलवाई, फुलवाड़ी, फुलवारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूल + वारी, फुलवाड़ी] फुलवाटिका । उ.—(क) इक दिन सुक्रसुता मन आई । देखौ जाइ फूल फुलवाई—६-१७४ । (ख) रितु बसंत फूली फुलवाइ—११७-५

फुलहारा—संज्ञा पुं. [हिं. फूल+हारा] माली ।

फुलही—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक तरह की गाय । उ.—पियरी, भौरी, गोरी, गैनी, खेरी, कजरी, जेती । दुलही, फुलही, भौंरो, भूरी, हाँकि ठिकाई तेती—१०-४४५ ।

फुलाना—क्रि. स. [हिं. फूलना] (१) वस्तु के विस्तार या फैलाव के बाहर की ओर बढ़ाना ।

मुहा०—गाल (मुँह) फुलाना—रूठना, रिसाना ।

(२) पुलकित या आनंदित करना । (३) गर्व या घमंड बढ़ाना । (४) फूलों से युक्त करना ।

फुलाव—संज्ञा पुं. [हिं. फूलना] फूलने की स्थिति ।

फुलावट—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूलना] फूलने का भाव ।

फुलावा—संज्ञा पुं. [हिं. फूल] बाल गूँथने की डोरी या चोटी जिसमें फूल या फुँदना लगा हो ।

फुलिंग—संज्ञा स्त्री. [सं. स्फुलिंग, प्रा. फुलिंग] चिनगारी ।

फुलिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूल] (१) कील, काँटे आदि का चिपटा सिरा । (२) कान या नाक की 'लौंग' नामक गहना ।

फुलेरा—संज्ञा पुं. [हिं. फूल] फूल की छतरी ।

फुलेल, फुलेलन—संज्ञा पुं. [हिं. फूल + तेल] सुगंधित तेल । उ.—उर धारी लटैं छूटी आनन पै, भीजी फुलेलन सों आली हरि संग केलि—१५८२ ।

फुलेहरा—संज्ञा पुं. [हिं. फूल + हार] सूत, रेशम आदि के फूलों से बना बंदनवार ।

फुलौड़ा, फुलौरा—संज्ञा पुं. [हिं. फूल] बड़ा पकौड़ा ।

फुलौड़ी, फुलौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूल+बरी] बरी, पकौड़ी । उ.—पापर, बरी, मिथौरि फुलौरी । कूर बरी काचरी पिठौरी—३९६ ।

फुल्ल—वि. [सं.] फूला हुआ, विकसित ।

फुल्ली—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूल] फूल की तरह का कोई आभूषण या उसका भाग ।

फुस—संज्ञा स्त्री. [अनु.] बहुत धीमी आवाज ।

फुसकारना—क्रि. अ. [अनु.] फूत्कार छोड़ना ।

फुसफुसा—वि. [हिं. फूस] (१) ढीला । (२) कमजोर ।

फुसफुसाना—क्रि. स. [अनु.] बहुत धीरे बोलना ।

फुसलाना—क्रि. स. [हिं. फिसलाना] (१) बहलाना, ध्यान बटाना । (२) चकमा देना, बहकाना । (३) मीठी बातों से अपने अनुकूल करना । (४) राजी करना ।

फुहार—संज्ञा स्त्री. [सं. फूत्कार] बहुत महीन बूँदों की वर्षा जो उड़ती जान पड़े ।

फुहारा—संज्ञा पुं. [हिं. फुहार] एक जलयंत्र ।

फुही—संज्ञा स्त्री. [हिं. फुहार] (१) महीन-महीन बूँदों की झड़ी, फुहार । उ.—खिर बरसत सुमन सुदेस, मानौ मेघ फुही—१०-२४ । (२) महीन बूँद ।

फूँक—संज्ञा स्त्री. [हिं. फू फू (अनु.)] (१) ओठों से छोड़ी हुई सवेग वायु । (२) विषैली फूत्कार । उ.—(क) कहा कंस दिखरावत इनकौं, एक फूँक ही मैं जरि जाई—५५० । (ख) एक फूँक कौ नाहिं तू बिष-ज्वाला अति तात—५८९ । (३) साँस ।

मुहा०—फूँक निकल जाना (निकलना)—मरना ।

(४) मंत्र पढ़ कर मुँह से छोड़ी गयी वायु ।

यौ०—झाड़-फूँक—तंत्र-मंत्र का उपचार ।

फूँकति—क्रि. स. [हिं. फूँकना] फूँक मारती है, फूँकती है । उ.—बरा कौर मेलत मुख भीतर, मिरिच दसन टकटौरै । तीछन लगी नैन भरि आए, रोवत बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौरे । फूँकति बदन रोहिनी ठाढ़ी, लिए लगाइ अँकोरे—१०-२२४।

फूँकना—क्रि. स. [हिं. फूँक] (१) **जोर से फूँक छोड़ना।**

मुहा०—फूँक फूँक कर चलना (पैर रखना)—**बहुत सावधानी से काम करना।**

(२) **मंत्र आदि पढ़कर फूँक मारना।** (३) **शंख आदि को फूँक मारकर बजाना।** (४) **जला देना, भस्म करना।** (५) **जलाकर भस्म बनाना।** (६) **नष्ट करना।** (७) **दुख देना।** (८) **फूँककर सुलगाना।**

फूँकि—क्रि. स. [हिं. फूँकना] (१) **जोर से फूँक मारकर।** उ.—फूँकि फूँकि जननी पय प्यावति, सुख पावति जो उर न समैया—१०-२२६।

मुहा०—फूँकि फूँकि पग धारौ-**बहुत बचाकर चलो, होशियारी से काम करो।** उ.—फूँकि फूँकि धरनी पग धारौ, अब लागीं तुम करन अयोग—१४६७।

(२) **फूँक से सुलगाकर।** उ.—(क) फूँकि फूँकि हियरौ सुलगावत उठि किन इहाँ ते जान—३०२३। (ख) सुलगि सुलगि हम जरत हो तुम आनि फूँकि दई। ३१३१।

फूँद, फूँदा—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूल+फंद] **फुँदना, झब्बा।** उ.—रत्न जटित गजरा बाजूबँद सोभा भुजन अपार। फूँदा सुभग फूल फूले मनो मदन विटप की डार—२०६२।

फुई—संज्ञा स्त्री. [हिं. फुहो] (१) **महीन बूँद।** (२) **फफूंदी।**

फूट—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूटना] (१) **फूटने का भाव।** (२) **वैर, विरोध।**

मुहा०—फूट डालना—**वैर या झगड़ा कराना।**

(३) **एक तरह की बड़ी ककड़ी, एक फल।**

मुहा०—फूट-सा खिलना—**पककर दरक जाना।**

फूटन—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूटना] **अंगों की पीड़ा।**

फूटना—क्रि. अ. [सं. स्फुटन, प्रा. फुटन] (१) **भग्न होना, दरकना।** (२) **फटना।** (३) **नष्ट होना, बिगड़ना।**

मुहा०—फूटी आँख का तारा—**कई बेटों के मरने पर बच जानेवाला बेटा।** फूटी आँखों न भाना—**बहुत ही बुरा लगना।** फूटी आँखों न देख सकना—**बहुत जलना, कुढ़ना।** फूटे मुँह से भी न बोलना—(१) **मुँह से एक शब्द भी न निकालना।** (२) **उपेक्षा करना।**

(४) **झोंक के साथ बाहर आना।** (५) **फोड़े फुंसी की तरह निकलना।** (६) **कली का खिलना।** (७) **अंकुर-शाखा आदि निकलना, अंकुरित होना।** (८) **मार्ग आदि का अलग होकर जाना।** (९) **बिखरना, फैलना।** (१०) **संग या साथ छोड़ना।** (११) **दूसरे पक्ष में हो जाना।** (१२) **मिलाप न बना रहना।** (१३) **शब्द का मुँह से निकलना, बोलना।**

मुहा०—फूट फूट कर रोना—**बहुत विलाप करना।**

(१४) **प्रकट या प्रकाशित होना।** (१५) **गुप्त बात का प्रकट होना।** (१६) **रोक, परदा, बाँध आदि का टूटना।** (१७) **द्रव का किसी चीज पर फैल जाना।** (१८) **शरीर के जोड़ों में दर्द होना।**

फूटा—वि. [हिं. फूटना] **भग्न, टूटा हुआ।**

फूटि—क्रि. अ. [हिं. फूटना] (१) **फूट गयी, भग्न हुई।** (२) **नष्ट हुई, विनष्ट हुई** उ.—निसि दिन विषय-बिलासनि बिलसत, फूटि गईं तव चारयौ—१-१०१।

फूटी—वि. स्त्री. [हिं. फूटना] (१) **भग्न, टूटी हुई, फटी हुई।** उ.—(क) टूटे कंध अरु फूटी नाकनि, कौलौं धौं भुस खेहो—१-३३१। (ख) फूटी चूरी गोद भरि ल्यावै—१०-३३२। (२) (**आँख**) **जिससे दिखायी न दे।** उ.—एक अँधेरौ, हिए की फूटी, दौरत पहिरि खराऊँ—३४६६।

फूटै—क्रि. अ. [हिं. फूटना] **भेदकर निकले, झोंके से बाहर आए, छटे, उदित हो।** उ.—सूरदास तबहीं तम नासै, ज्ञान-अगिनि-झर फूटै—२-१६।

फूत्कार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **फूँका।** (२) **सर्प की फुफकार।**

फूफा—संज्ञा पुं. [हिं. फूफी] **बाप का बहनोई।**

फूफी, फूफू—संज्ञा स्त्री. [अनु०] **बाप की बहन, बुआ।**

फूल—संज्ञा पुं. [सं. फुल्ल] (१) **पुष्प, सुमन, कुसुम।** उ.—ज्यों सुक सेमर-फूल बिलोकत, जात नहीं बिनु खाए—१-१००।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा०—फूल आना—**फूल लगना**। फूल उतारना (चुनना)—**फूल तोड़ना**। फूल झड़ना—**प्रिय और मधुर शब्द कहना**। फूल-सा **बहुत कोमल, हलका या सुन्दर**। फूल सूँघकर रहना—**बहुत कम खाना (व्यंग्य)**। पान-फूल-सा—**बहुत कोमल और सुकुमार**।

(२) **फूल की तरह के बेल-बूटे**। (३) **फूल की बनावट का गहना**। (४) **दीपक की बत्ती का गुल या उससे निकलने वाली चिनगारी**। उ.—हरि जू की आरती बनी।...... उड़त फूल उड़गन नभ अंतर, अंजन घटा घनी—२-८८। (५) **आग की चिनगारी**। (६) **सार, सत्त**। (७) **देशी शराब**। (८) **शव के जलने से बची हड्डियाँ**। (९) **एक मिश्र धातु**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. फूलना] (१) **उमंग**। (२) **आनंद**।

फूलडोल—संज्ञा पुं.—[हिं. फूल + डोल] (१) **चैत्र शुक्ल एकादशी को मनाया जानेवाला उत्सव जिसमें श्रीकृष्ण का झूला फूलों से सजाया जाता है**। (२) **फूलों का झूला**। उ.—माई फूले फूले ही फूलत श्री राधेकृष्ण झूलत सरस रस ही फूलडोल—२४०१।

फूलत—क्रि. अ. [हिं. फूलना] **खिलता है**। उ.—ज्यों जल-रुह ससि-रसिम पाइ कै फूलत नाहिंन सर तैं—३५४।

फूलति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. फूलना] **खिलती है**। उ.—हरि-बिधु मुख नहिं नाहिंनै फूलति मनसा कुमुद कली—२७३४।

फूलदान—संज्ञा पुं. [हिं. फूल + दान] **फूल सजाने का पात्र**।

फूलदार—वि. [हिं. फूल + दार] **जिसमें फूल बने हों**।

फूलना—क्रि. अ. [हिं. फूल] (१) **फूलों से युक्त होना**।

मुहा०—फूलना-फलना—(१) **धन-संतान से सुखी रहना**। (२) **सभी तरह से प्रसन्न और सुखी रहना**।

(२ **खिलना, विकसित होना**। (३) **हवा आदि से किसी चीज की गोलाई, या मोटाई बढ़ना**। (४) **सतह का उठना या उभरना**। (५) **सूज जाना**। (६) **मोटा या स्थूल होना**। (७) **गर्व-घमंड करना**। (८) **आनंदित या प्रसन्न होना**। (९) **रूठना, मान करना**।

फूलमती—संज्ञा स्त्री. [हि. फूल + मत] **एक देवी**।

फूला—संज्ञा पुं. [हिं. फूलना] **खील, लावा**।

(१) **मोटा, स्थूल**। (२) **गर्वीला**।

फूलि—क्रि. अ. [हिं. फूलना] **गर्व में भरकर, घमंड में होकर, इतराकर**। उ.—कबहुँक फूलि सभा मैं बैठ्यौ, मूँछनि ताव दिवायौ—१-३०१।

फूलीं—क्रि. अ. [हिं. फूलना] **विकसित हुईं, खिल गईं**। उ.—(क) मनु भोर भएँ रवि देखि, फूलीं कमल-कली—१०-२४। (ख) पूरन मुख-चंद देखि नैन-कोइ फूलीं—६४२।

फूली—क्रि. अ. [हिं. फूलना] (१) **पुष्पित हुई, फूल लगे**। उ.—रितु बसंत फूली फुलवाई—१० उ.—२०५। (२) **प्रसन्न या आनंदित हुई**। उ.—फूली फिरै धेनु धाम, फूली गोपी अँग अँग—१०-३४।

मुहा०—फूले अंग न समाई—**बहुत आनंदित हुई**। उ.—भले ही मेरे लालन आये री आजु मैं फूली अंग न समाई—पृ. ३१९ (८१)।

फूले—क्रि. अ. [हिं. फूलना] **बहुत प्रसन्न या आनंदित होकर**। उ. (क) आजु दसरथ कैं आँगन भीर।...... फूले फिरत अजोध्यावासी, गनत न त्यागत चीर—९-१६। (ख) फूले फिरैं गोपी-ग्वाल टहर-टहर वे—१०-३४। (ग) गावत गुन गोपाल फिरत कुंजन में फूले—३४४३।

मुहा०—फूले अंग न मात (समात)—**बहुत अधिक प्रसन्न हुए**। उ.—जानि चीन्हि पहिचानि कुँवर मन फूले अंग न मात—१० उ.-८।

(२) **पुष्पित हुए, खिले**। उ.—(क) मन के मनोज फूले हलधर बर के—१०-३४। (ख) व जो देखत राते राते फूलन फूले डार—२७९८।

मुहा०—फूले-फरे—**फल और पुष्प से युक्त हो गये**। उ.—फूले-फरे तरुवर आनंद लहर के—१०-३४।

(३) **बहुत क्रुद्ध हुए**। उ.—पूँछ लीन्ही झटकि, धरनि सौं गहि पटकि, फुंकरयौ लटकि करि क्रोध फूले—५५२।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूल—क्रि. अ. [हिं. फूलना] फूल लगते हैं, पुष्पित होता है। उ.—तरुवर फूलै, फरै, पतझरै, अपने कालहिं पाइ—१-२६५।

फूल्यौ—क्रि. अ. [हिं. फूलना] प्रफुल्ल या आनंदित हुआ। मुहा०—फूल्यौ न समाई—फूला न समाया, अत्यंत आनंदित हुआ। उ.—हनुमत बल प्रगट भयौ, आज्ञा जब पाई। जनक-सुता-चरन बंदि, फूल्यौ न समाई —६-६६।

फूस—संज्ञा पुं. [सं. तुष] सूखी घास और तिनके।

फूहड़, फूहर—वि. [अनु.] भद्दी चाल-ढाल वाला।

फूहा—संज्ञा पुं. [हिं. फुही] रुई का गाला।

फूही—संज्ञा स्त्री. [अनु.] बहुत हलकी वर्षा।

फेंक—संज्ञा स्त्री. [हिं. फेंकना] फेंकने की क्रिया या भाव।

फेंकना—क्रि. स. [सं. प्रेषण, प्रा. पेखण] (१) ऐसा झोंका देना कि दूर जाकर गिरे। (२) कुश्ती में गिराना। (३) एक स्थान से हटाकर दूसरे में डालना। (४) लापरवाही से रख छोड़ना। (५) अपना पीछा छुड़ाकर दूसरे पर बोझ डालना। (६) कौड़ी, पासा आदि डालना। (७) खोना, गँवाना। (८) अपमान से त्यागना। (९) बेकार खर्च करना। (१०) उछालना, झटकना-पटकना। (११) (पटा) घुमाना।

फेंकरना—क्रि. अ. [अनु.] (१) गीदड़ का रोना या बोलना। (२) चिल्ला-चिल्लाकर रोना।

फेंट—संज्ञा स्त्री. [हिं. पेट या पेटी] (१) कमर का घेरा, कटि-मंडल। उ.—फेंट पीतपट, साँवरे कर पलास के पात। परस्पर ग्वाल सब बिमल-बिमल दधि खात। (२) कमर में बँधा कपड़ा, कमरबंद, पटुका। उ.—(क) खायवे को कछु भाभी दीनी श्रीपति मुख तैं बोले। फेंट उपरि तैं अंजुलि तंदुल बल करि हरि जू खोले। (ख) स्याम सखा कौं गेंद चलाई। श्रीदामा हरि अंग बचायौ, गेंद परयौ कालीदह जाई। धाय गह्यौ तब फेंट स्याम की, देहु न मेरी गेंद मँगाई।

मुहा०—फेंट कसना (बाँधना)—कमर कसकर हर बात के लिए तैयार होना। कसि फेंट—कटिबद्ध होकर, सन्नद्ध होकर, कमर कसकर सब कठिनाइयों को झेलने के लिए तैयार होकर। उ.—अब लोग प्रभु तुम बिरद बुलाए, भई न मोसों भेंट। तजौ बिरद कै मोहिं उधारौ, सूर कहै कसि फेंट—१-१४५। फेंट गहता, धरता (पकड़ता)—रोक लेता, जाने न देता। फेंट पकरतौ—रोकता, थामता, जाने न देता। उ.—सूरदास बैकुंठ पैठ मैं कोउ न फेंट पकरतौ— फेंट गही—जाने से रोका। उ.—हम अबला कछु मर्म न जान्यौ चलत न फेंट गही—२७६७।

(३) फेरा, लपेट, घुमाव।

संज्ञा स्त्री. [हिं. फेंटना] फेंटने की क्रिया या भाव।

फेंटना—क्रि. स. [सं. पृष्ठ, प्रा. पिट्ठ+ना] (१) गाढ़े लेप को खूब हिलाना या मथना। (२) उँगली से खूब मिलाना।

फेंटा—संज्ञा पुं. [हिं. फेंट] (१) कटि-मंडल। (२) कपड़ा जो कर में लपेटा हो, कमरबंद, पटुका। उ.—माया को कटि फेंटा बाँध्यौ, लोभ तिलक दियौ भाल—१-१५३। (३) धोती का घेरा जो कमर पर लिपटा हो।

फेकरना—क्रि. अ. [हिं. फेंकना] (सिर) नंगा होना।

फेण, फेन—संज्ञा पुं. [सं. फेन] झाग, फेना। उ.—मनहुँ मथत सुर सिंधु, फेन फटि, दयौ दिखाई पूरनचंद— १०-२०४।

फेनक—संज्ञा पुं. [सं-] (१) फेन, झाग। (२) एक मिठाई।

फेनना—क्रि. स. [हिं. फेन] किसी द्रव को इतना मथना कि झाग उठने लगे।

फेनिल—वि. [सं.] जिसमें फेन हो।

फेनि, फेनी—संज्ञा स्त्री. [सं फेनिका] मैदा के महीन लच्छे की एक मिठाई जो चाशनी में पागकर या दूध में भिगोकर खाई जाती है। उ.—(क) घेवर-फेनी और सुहारी। खोवा-सहित खाहु बलिहारी—१०-११४। (ख) अपनी पत्रावलि सब देखत, जहँ तहँ फेनि पिराक—४६४।

फेनु—संज्ञा पुं. [सं. फेन] झाग, फेन। उ.—आनंद मगन धेनु स्रवैं थन पय फेनु, उमँग्यौ, जमुन-जल उछलि लहर के—१०-३०।

फेफड़ा—संज्ञा पुं. [सं. फुप्फुस] साँस की थैली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेफड़ी, फेफरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पपड़ी] **पपड़ी।** उ.—पीरो भयो फेफरी अधरन हिरदय अतिहिं डर्यौ—२५६४।

फेर—संज्ञा पुं. [हिं. फेरना] (१) **चक्कर, घुमाव।**

मुहा०—फेर की बात—**घुमाववाली बात।**

(२) **मोड़, झुकाव।** (३) **उलट-पलट, परिवर्तन।**

मुहा०—दिनों का फेर—**दुर्दशा का समय।**

(४) **अंतर, फर्क।** (५) **उलझन, दुबधा।**

मुहा०—फेर में पड़ना—**उलझन में पड़ना।** फेर डालना—**अनिश्चय की स्थिति में डालना।**

(६) **भ्रम, धोखा।** (७) **चाल-बाजी, धोखा।**

मुहा०—फेर में आना (पड़ना)—**धोखा खाना।** फेर की बात—**छल-कपट या चालबाजी की बात।**

(८) **बखेड़ा, झंझट, जंजाल।**

मुहा०—निन्नानवे का फेर—**रुपया जमा करने का चक्कर।**

(९) **युक्ति, उपाय।** (१०) **अदला-बदली।**

मुहा०—हेर-फेर—**लेन-देन, अदला-बदली।**

(११) **हानि।** (१२) **भूत-प्रेत का प्रभाव।** (१३) **ओर, दिशा।**

अव्य.—**पुनः, फिर।**

फेरत—संज्ञा पुं. [हिं. फेरना] (१) **स्पर्श करते हैं, छुआते या रखते हैं।**

मुहा०—कर फेरत—**स्पर्श करते हैं, छूते हैं।** उ.—कृपाकटाच्छ कमल-कर-फेरत, सूर जननि सुख देत—१०-१५४। (२) **उलटता-पुलटता है।** उ.—फेरत पलटत भोर भए कछु लई न छाँड़ि दई—१३२०। (३) **भूली या दबी बात पुनः उठाते हैं या उसका बदला लेते हैं।** उ.—सूनो जानि नंदनंदन बिनु बैर आपनो फेरत—३१६५।

फेरन—संज्ञा स्त्री. [हिं. फेरना] **फेरने या फहराने की क्रिया या भाव।** उ.—बरनि न जाइ सुभग उर सोभा पीतांबर की फेरन—३२७७।

क्रि. स.—**लौटाना, वापस करना।** उ.—जे जे आए हुते जज्ञ में परिहै तिनकौ फेरन।

फेरना—क्रि. स. [सं. प्रेषण, प्रा. पेरन] (१) **घुमा देना, मोड़ना।** (२) **आते हुए को लौटाना या वापस करना।** (३) **ली हुई वस्तु लौटाना या वापस करना।** (४) **दी हुई वस्तु वापस कर लेना।** (५) **चक्कर खिलाना, घुमाव देना।**

मुहा०—माला फेरना—(१) **माला जपना।** (२) **नाम लेना।**

(६) **ऐंठना, मरोड़ना।** (७) **स्पर्श करना।**

मुहा०—हाथ फेरना—(१) **प्यार से सहलाना।** (२) **ले लेना।**

(८) **पोतना, लेप करना।**

मुहा०—पानी फेरना—**धो देना, नष्ट कर देना।**

(९) **रुख या मुख दूसरी ओर करना।** (१०) **उलट-पलट करना।** (११) **विरुद्ध या विपरीत करना।** (१२) **बार-बार दोहराना।** (१३) **बारी बारी से सबके सामने उपस्थित करना।** (१४) **प्रचारित या घोषित करना।** (१५) **(घोड़े को) चाल चलाना।**

फेरनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. फेरना] **फेरने की क्रिया या भाव।** उ.—भौंह मोरनि नैन फेरनि तहाँ ते नहिं टरे—पृ० ३५१ (७७)।

फेरनो, फेरनौ—संज्ञा पुं. [हिं. फेरना] **फेरने की क्रिया या भाव।** उ.—तब मधुमंगल कहि ग्वाल सों गैया हो भैया फेरनो—२२८०।

फेर-पल्टा—संज्ञा पुं. [हिं. फेर+पलटा] **गौना।**

फेरफार—संज्ञा पुं. [हिं. फेर] (१) **उलट-फेर।** (२) **अंतर, बीच।** (३) **टालटूल, बहाना।** (४) **घुमाव-फिराव।**

फेरा—संज्ञा पुं. [हिं. फेरना] (१) **चक्कर, घूमना।** (२) **लपेट, घुमाव।** (३) **इधर से उधर घूमना।** (४) **घूमते-फिरते आना।** (५) **लौट-फिर कर वापस आना।** (६) **घेरा, मंडल।**

फेरि—क्रि. वि. [हिं. फिर] (१) **फिर, पुनः, दोबारा।** उ.—(क) जैसो कियौ सो तैसौ पायौ। अब उहिं चहियै फेरि जिवायौ—४-५ (ख) हय गय खोलि भंडार दिए सब फेरि भरे ता भाँति—१०-३६।

मुहा०—फेरि फेरि—**बार-बार, पुनः पुनः।**

(२) **इसके बाद, तत्पश्चात्।** उ.—तौ लगि बेगि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरौ किन पीर। जौ लगि आन न आनि पहूँचै, फेरि परैगी भीर—१-१६१।

क्रि. स. [हिं. फेरना] (१) **लौटाकर।**

प्र०—फेरि दयौ—**लौटा दिया, वापस कर दिया।** उ.—मंत्री गयौ फिरावन रथ लै, रघुबर फेरि दयौ—६-४६।

फेरी—अव्य. [हिं. फिर] **पुनः, दोबारा।** उ.—जिहिं भुज परसुराम बल करष्यौ, ते भुज क्यों न सँभारत फेरी—६-६३।

मुहा०—फिरि फेरी—**बार बार, पुनः पुनः।** उ.—मैं जिनको सपनेहु न देखे, तिनकी बात कहत फिरि फेरी—१२७०।

फेरी—क्रि. स. [हिं. फेरना] **मेट दी, हटा दी, मिटायी, दूर की।** उ.—हा जदुनाथ, द्वारकावासी, जुग-जुग भक्त-आपदा फेरी—१-२५१। (२) **पलट दी, बदल दी, विपरीत की।** उ.—बसन प्रवाह बढ़्यौ जब जान्यौ, साधु-साधु सबहिनि मति फेरी—१-२५२।

संज्ञा स्त्री.—(१) **फेरा, जाकर लौटना।** उ.—जहाँ बसत जदुनाथ जगतमनि बारक तहाँ आउ दै फेरी—२८५१। (२) **घूमना, भ्रमण करना।** उ.—बाट-घाट बीथी ब्रज घर बन संग लगाए फेरी—२७१६। (३) **परिक्रमा, प्रदक्षिणा, भाँवर।**

फेरी पड़ना—**भाँवर होना, विवाह होना।**

(४) **योगी का भिक्षा माँगने का चक्कर।** (५) **वस्तु को बेचने के लिए इधर-उधर घूमना।**

फेरे—संज्ञा पुं. [हिं. फेर] (१) **ओर, दिशा।** उ.—सूरदास प्रभु बैठि सिला पर भोजन करैं ग्वाल चहुँ फेर—४६३। (२) (बहु०) **चक्कर, घुमाव।** उ.—तेरी सो वृषभानु नंदिनी एक गाँठि सौ फेरे—२२२०।

क्रि. स. [हिं. फेरना] **रुख बदल दिया।** उ.—कहा करौं सखि दोष न काहू हरि हित लोचन फेरे—२७२०।

फेरैं—क्रि. स. [हिं. फेरना] **प्रचारित या घोषित करें।** उ.—सूरदास प्रभु लंका तोरैं फेरैं राम दोहाई—६-११७।

फेरैं—क्रि. स. [हिं. फेरना] **स्पर्श करता है।** उ.—सूरदास प्रभु सकल लोकपति पीतांबर कर फेरैं हो—४५२।

फेरो—संज्ञा पुं. [हिं. फेरी] **आगमन, जाकर आना।** उ.—(क) गयौ जु संग नंदनंदन के बहुरि न कीन्हौ फेरौ—३१४३। (ख) आपु नहीं या ब्रज के कारन करिहौ फिरि फिरि फेरो—१० उ.-१२४।

क्रि. स. [हिं. फेरना]। (१) **घुमा लिया, हार मान ली।** (२) उ.—सात दिवस जल बर्षि सिराने हारि मानि मुख फेरो—६५६। (२) **मुख घुमाते हो, सामना नहीं करते।** उ.—मेरी सौं हाहा करि पुनि-पुनि उत काहे मुख फेरो जू—१६३४।

फेरौं—क्रि. स. [हिं. फेरना] (१) **चक्कर दूँ, घुमाऊँ, चारों ओर चलाऊँ।** उ.—कहौ तौ लंक लकुट ज्यौं फेरौं, फेरि कहूँ लै डारौं—६-१०७। (२) **लौटाऊँ, विमुख करूँ, पराजित करूँ।** उ.—अब हौं कौन कौ मुख हेरौं। रिपु-सैना-समूह-जल उमड़्यौ, काहि संग लै फेरौं—६-१४६।

फेरौ—क्रि. स. [हिं. फेरना] **बदलो, पलटो, मिटाओ।** उ.—सूर हँसति ग्वालिनि दै तारी, चोर नाम कैसेहुँ सुत फेरौ—३६६।

फेर्यौ—क्रि. स. [हिं. फेरना] (१) **फेरा, मोड़ लिया, दूसरी ओर किया।** उ.—पारथ भीषम सौं मति पाइ। कियौ सारथी सिखंडी आइ। भीषम ताहि देखि मुख फेर्यौ—१-२७६। (२) **साथ छोड़ा।** उ.—सब दिन सुख-साथिनि आजु कैसे मुख फेर्यौ—१०-८।

फैंट—संज्ञा स्त्री. [हिं. पेट, फेंट] **कमरबंद, पटुका।**

मुहा०—फैंट पकरतौ—**रोकता, जाने न देता, थाम लेता, धर रखता।** उ.—होतौ नफा साधु की संगति, मूल गाँठि नहिं टरतौ। सूरदास बैकुंठ-पैंठ मैं, कोउ न फैंट पकरतौ—१-२६७। कसि फेंट—**ललकार कर, चुनौती देकर।** उ.—तजौ बिरद कै मोहिं उधारौ, सूर कहैं कसि फैंट—१-१४५।

फैनु—संज्ञा पुं. [सं. फेन] (१) **फेन, झाग, फेना।** (२) **सर्प के मुख का झाग, विष।** उ.—तुम हमकौं कहँ-कहँ न उबार्यौ, पियौ काली मुँह फैनु—५०२।

फैल—संज्ञा पुं. [अ. फ़ेल] (१) **काम।** (२) **खेल।** (३) **नखरा।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञा स्त्री. [सं. प्रसृत] विस्तृत, फ़ैला हुआ।

फैलना—क्रि. अ. [सं. प्रसरण] (१) विस्तार या फैलाव से स्थान घेरना। (२) इधर उधर बढ़ जाना। (३) मोटा या स्थूल होना। (४) भर जाना, व्यापना। (५) बढ़ती या वृद्धि होना। (६) बिखरना, छितराना। (७) ज्यादा खुलना। (८) तनाव के साथ बढ़ना। (९) प्रचार पाना या होना। (१०) दूर-दूर तक पहुँचना। (११) प्रसिद्ध होना। (१२) हठ या आग्रह करना।

फ़ैलसूफी—संज्ञा स्त्री. [यू फिलसफ] फिजूल-खर्ची।

फैलाना—क्रि. स. [हिं. फैलना] (१) विस्तार या फैलाव से स्थान घिरवाना। (२) इधर-उधर बढ़ाना। (३) लपेटा या तहाया हुआ न रखना। (४) छा देना, भर देना। (५) बिखेरना, छितराना। (६) बढ़ती या वृद्धि करना। (७) तान कर बढ़ाना। (८) प्रचार करना। (९) दूर-दूर तक पहुँचाना। (१०) प्रसिद्ध करना। (११) आयोजन करना। (१२) लेखा-जोखा करना।

फैलाव—संज्ञा स्त्री. [हिं. फैलना] (१) प्रसार। (२) प्रचार।

फ़ैसला—संज्ञा पुं. [अ. फ़ैसला] (१) निबटेरा। (२) न्याय।

फोंक—संज्ञा पुं. [सं. पुंख] तीर की पिछली नोक जिसके पास पर होते हैं और जिस पर डोरी बैठने की खड्डी बनी होती है। उ.—परिमल लुब्ध मधुप जहँ बैठत उड़ि न सकत तेहि ठाँते। मनहुँ मदन के है सर पाए फोंक बाहरी घाते—३१३४।

फोंदा—संज्ञा पुं. [हिं. फुँदना] फुलरा, झब्बा। उ.—पचरँग° बरन-बरन पाटहि पवित्रा बिच बिच फोंदा गोहनो—२२८०।

फोक—संज्ञा पुं. [हिं. बोकला] (१) सारहीन वस्तु, सीठी। (२) भूसी। (३) स्वादहीन या नीरस वस्तु।

फोकट—वि. [हिं. फोक] निःसार, व्यर्थ, सारहीन, नीरस, मूल्यहीन। उ.—अलि चलि औरै ठौर देखावहु अपनो फोकट ज्ञान—३१२५।

फोकला—संज्ञा पुं. [हिं. बोकला] भूसी, छिलका।

फोड़ना—क्रि. स. [सं. स्फोटन, प्रा. फोडन] (१) खंड-खंड करना, दरकाना। (२) ऐसी चीज तोड़ना जो भीतर से पोली, मुलायम या रसभरी हो। (३) दबाव से, भेदकर निकल जाना। (४) शरीर में दोष हो जाना जिससे घाव या फोड़े हो जायँ। (५) अंकुर आदि निकलना। (६) शाखा के समान अलग होकर जाना। (७) विपक्ष में कर देना। (८) साथ न रहने देना। (९) फूट डाल देना। (१०) भेद प्रकट करना।

फोड़ा—संज्ञा पुं. [सं. स्फोटक] शरीर पर उभार आनेवाला बड़ा दाना, बड़ी फुंसी।

फोता—संज्ञा पुं. [फ़ा. फ़ोता] (१) पटुका, कमरबंद। (२) पगड़ी (३) भूमि-कर, पोत। उ.—माँड़ि माँड़ि खलिहान क्रोध को फोता भजन भरावै। (४) थैली।

फोरत—क्रि. स. [हिं. फोड़ना] तोड़ना, चूर-चूर करना। उ.—काहू की छीनत हौ गेंडुरि काहू की फोरत हौ गगरी—८५३।

फोरतिं—क्रि. स. [हिं. फोड़ना] फोड़ती है।

मुहा० – सिर फोरतिं—सिर पटक-पटक कर विलाप करती हैं। उ.—सिर फोरति, गिरि जाति, अभूषन तोरतिं अँग को—५८९।

फोरतौ—क्रि. स. [हिं. फोड़ना] फोड़ डालता, चूर-चूर कर देता, खंड-खंड कर डालता। उ.—हौ तो न भयौ री घर, देखत्यौ तेरी यौ अर, फोरतौ बासन सब, जानति बलैया—३७२।

फोरना—क्रि. स. [हिं. फोड़ना] तोड़ना, फोड़ना।

फोरि—क्रि. स. [हिं. फोड़ना] (१) खंड-खंड करके, भग्न करके। (२) ऐसी वस्तुओं को तोड़कर जिनके भीतर मुलायम या पतली चीज भरी हो। उ.—जिन पुत्र-निहिं बहुत प्रतिपाल्यौ, देवी-देव मनै हैं। तेई लै खोपरी बाँस दै, सीस फोरि बिखरै हैं—१-८६।

यौ०—फोरि-फारि—तोड़-फोड़कर, तोड़-ताड़कर। खंड-खंड करके, नष्ट करके। उ.—फोरि फारि, तोरि तारि,गगन होत गाजैं—९-१३९।

फोरी—क्रि. स. [हिं. फोड़ना] (१) खंड-खंड करके, भग्न करके। उ.—गुदी चाँपि लै जीभ मरोरी। दधि ढरकायौ भाजन फोरी—१०-५७। (२) तोड़-फोड़ डाली। उ.—कब दधि मटुकी फोरी—१०-२९३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) **उल्लंघन की, भंग की।** उ.—पय पीवत जिन हती पूतना, छ ति मर्यादा फोरी—२८६३।

फोरै—क्रि. स. [हिं. फोड़ना] **फोड़ता है, खंड खंड करता है, भग्न करता है।** उ.—अँग-आभूषन सब तोरै। लवनी-दधि-भाजन फोरै—१०-१८३।

फोर्‌यौ—क्रि. स. [हिं. फोड़ना] **ऐसी चीज भग्न की जो भीतर से पोली, कोमल या रसभरी हो।**

मुहा०—फोरयौ नयन—**आँख फोड़ दी, अंधा कर दिया।** उ.—फोर्‌यौ नयन, काग नहिं छाँड़्यौ, सुरपति के बिद्‌मान—६-८३।

फौकना—क्रि. अ. [अनु.] **डींग हाँकना।**

फौज—संज्ञा स्त्री. [अ. फ़ौज] (१) **सेना, सैन्य।** उ.—(क) गज-अहँकार चढ़्यौ दिगविजयी, लोभ-छत्र करि सीस। फौज असत-संगति की मेरैं, ऐसौ हौं मैं ईस—१-१४४। (ख) मागध मगध देस तैं आयौ साजे फौज अपार। (ग) हो जानति हौं फौज मदन की लूटि लई सारी—२१०६। (२) **झुंड, जत्था।**

फौजदार—संज्ञा पुं. [हिं. फौज+दार] **सेनापति।**

फौजदारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फौजदार] **मार-पीट।**

फौजपति—संज्ञा पुं. [हिं. फौज+सं. पति] **सेनापति।** उ.—निधरक भयो चल्यो ब्रज आवत आउ फौजपति मैन—२८१६।

फौजी—वि. [हिं. फौज] **सेना-संबंधी।**

फौरन—क्रि. वि. [अ. फ़ौरन] **तुरंत, तत्काल।**

फौलाद—संज्ञा पुं. [फ़ा पोलाद] **बहुत कड़ा लोहा।**

ब

ब—**हिन्दी का तेईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का तीसरा वर्ण। यह अल्पप्राण ओष्ठ्य वर्ण है।**

बंक—वि. [सं. वक्र, वंक] (१) **टेढ़ा, तिरछा।** उ.—(क) कुंतल कुटिल, मकर कुंडल, भ्रुव नैन-बिलोकनि बंक—१०-१५४। (ख) लोचन बंक बिसाल चितै कै रहत तत्र हो सबके मन—२५७३। (ग) बंक बिलोकनि लगी लोभ सम. सकति न पंख पसारि—२७१७। (२) **विक्रमी।** (३) **दुर्गम।**

बंकट—वि. [हिं. बंक] (१) **टेढ़ा, तिरछा।** उ.—(क) ठठकति चलै मटकि मुँह मोरै बंकट भौंह मरोरै। (ख) भृकुटि बंकट चारु लोचन रही जुवती देखि। (ग) गज उरोज बर बाजि बिलोचन बंकट बिसद बिसाल मनोहर—१६०६। (२) **दुर्गम।** उ.—मनो कियो फिरि मान मवासों मन्मथ बंकट कोट—२२१८।

बंकति—वि. [हिं. बंक+अति] **बहुत टेढ़ी।** उ.—बंकति भौंह चपल अति लोचन बेसरि रस मुकताहल छायो—२०६३।

बंका—वि. [हिं. बंक] (१) **टेढ़ा, तिरछा।** (२) **बाँका।** (३) **बली, पराक्रमी।** (४) **दुर्गम।**

बंकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बंक] **टेढ़ा-तिरछापन।**

बंकुर—वि. [हिं. बंक] (१) **टेढ़ा।** (२) **दुर्गम।**

बंकुरता—संज्ञा स्त्री. [हिं. बंकुर] **टेढ़ा-तिरछापन।**

बंग—संज्ञा पुं. [सं. बंग] **बंगाल देश।**

बँगला—संज्ञा स्त्री. [हिं. बंगाल] **बंगाल की भाषा।**

वि.—**बंगाल देश-संबंधी।**

बँगली—संज्ञा स्त्री. [हिं. बगल] **कलाई का एक भूषण।**

बंगा—वि. [हिं. बंक] (१) **टेढ़ा।** (२) **मूर्ख, उजड्ड।**

बंगाल—संज्ञा पुं. [सं. वंग] (१) **बंग देश।** (२) **एक राग।**

बंगाली—संज्ञा पुं. [हिं. बंगाल] (१) **बंगाल देश-वासी।** (२) **एक राग।** उ.—मुरली माहिं बजावत गावत बंगाली अधर चुवत अमृत बनवारी—२३६७।

संज्ञा स्त्री.—**बंगाल देश की भाषा।**

बंचक—संज्ञा पुं. [सं. वंचक] **धूर्त, ठग, पाखंडी।**

बंचकता, बंचकताई—संज्ञा स्त्री. [सं. वंचकता] **छल, ठगी।**

बंचन—संज्ञा पुं. [सं. वंचन] **छल-कपट।**

बंचनता, बंचनताई—संज्ञा स्त्री. [सं. वंचनता] **ठगी।**

बंचना—संज्ञा स्त्री. [सं. वंचना] **ठगी।**

क्रि. स. [सं. वंचन] **ठगना, छलना।**

बँचवाना—क्रि. स. [हिं. बाँचना] **पढ़वाना।**

बंचित—वि. [सं. वंचित] (१) **जो ठगा गया हो।** (२) **अलग किया हुआ।** (२) **जिसे कोई वस्तु न मिले।** (४) **हीन, रहित।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता—क्रि. स. [सं. वांछा] **इच्छा करना।**

नीय—वि. [सं. वांछनीय] (१) **चाहने योग्य।** (२) **जिसे प्राप्त करने की इच्छा हो। जो प्रिय हो।**

छित—वि. [सं. वांछित] **चाहा हुआ।**

ज—संज्ञा पुं. [हिं. बनिज] (१) **व्यापार,** (२) **सौदा।**

र—संज्ञा पुं. [सं. बन+ऊजड़] **ऐसी भूमि जहाँ कुछ उत्पन्न न हो, ऊसर।**

ारनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनजारिन] **टाँड़ लादकर बेचने वाली।** उ.—पेला करति देति नहिं नीकै तुम हो बड़ी बंजारिनि—१०४०।

ारा—संज्ञा पुं. [हिं. बनजारा] **बैल पर अनाज लादकर बेचने वाला, बनजारा।**

ा—वि. [सं. वंध्या] **जिसके संतान न हो, बाँझ।** उ.—ब्यावर बिथा न बंझा जानै—३४४१।

संज्ञा स्त्री.—**बाँझ स्त्री।**

टना - क्रि. अ. [हिं. बटन] (१) **भाग या हिस्सा होना** (२) **कई प्राणियों में बाँटा जाना।**

संज्ञा पुं. [हिं. बटना] **उबटन।**

टवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाँटना] **बाँटने की मजदूरी।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. बाँटना] **पिसाने की मजदूरी।**

टवाना—क्रि. स. [सं. वितरण] **दूसरे से वितरण कराना।**

क्रि. स. [सं. वर्तन] **दूसरे से पिसवाना।**

टा—संज्ञा पुं. [हिं. बटा] **गोल या चौकोर डिब्बा।**

वि.—**छोटे कद या आकारवाला।**

टाइ—क्रि. स. [हिं. बाँटना] **बाँटकर, वर्ग करके।**

प्र०—बँटाइ लीने—**दलों में विभाजित कर लिये।** उ.—कान्ह, हलधर बीर दोऊ, भुजा बल अति जोर। सुबल, श्रीदामा, सुदामा वै भए इक ओर। और सखा बँटाइ लीन्हें, गोपबालक-बृन्द—१०-१४४।

टाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाँटना] **बाँटने का काम, भाव या मजदूरी।**

टाना—क्रि. स. [हिं. बाँटना] (१) **भाग या हिस्सा कराना।** (२) **बाँटने को साझीदार बनना।**

मुहा०—हाथ बटाना—**सहायता करना।**

टावन—वि. [हिं. बटाना] **बँटानेवाला, भाग लेनेवाला।** उ.—बारह बरष नींद है साधी, तातैं बिकल सरीर। बोलत नहीं मौन कहा साध्यौ, बिपति-बँटावन-बीर—६-१४५।

बंटी—संज्ञा स्त्री. [हिं.] **पशु फँसाने का जाल।**

संज्ञा स्त्री. [हि. बंटा] **छोटी डिबिया।**

बँटैया—संज्ञा पुं. [हिं. बाँटना+ऐया (प्रत्य)] (१) **बाँटने वाला।** (२) **बँटा लेनेवाला।**

बंडा—संज्ञा पुं. [हिं. बंटा] **बड़ी अरुई या घुइयाँ।**

बंडी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाँड़ा] **बिना बाँह की फतुही।**

बँडेरा—संज्ञा पुं. [हिं. बरेड़ा] **खपरैल की लंबी लकड़ी।**

बँडेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बँडेरा] **खपरैल की लम्बी लकड़ी।**

बंद—संज्ञा पं. [फा.] (१) **बाँधने की वस्तु।** (२) **पानी रोकने का पुश्ता, मेड़।** (३) **अंगों का जोड़।** (४) **अँगरखे, चोली आदि की तनी।** उ.—(क) सूर सुतहिं बरजौ नँदरानी, अब तोरत चोली-बँद डोर। (ख) चीर फटे कंचुकि-बंद छूटे—७६६। (ग) गए कंचुकि बँद टूटि—१०-उ०-८। (५) **उर्दू काव्य का एक पद।** (६) **बंधन, कैद।**

वि. [फा.] (१) **जो किसी तरफ से खुला न हो।** (२) **जो सब तरफ से घिरा हो।** (३) **जिसका मुँह या मार्ग न खुला हो।** (४) **जो ढकना, दरवाजा आदि खुला न हो।** (४) **जिसका कार्य रुका या स्थगित हो।** (६) **जो चलता न हो।** (७) **जिसका प्रचार-प्रकाशन आदि न हो।** (८) **जो कैद में हो।**

वि. [सं. वंद्य] **बंदनीय।** उ.—जदुकुल-नभ तिथि द्वितीय देवकी प्रगटे त्रिभुवन बंद—१३३१।

बंदगी—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) **आराधना।** (२) **प्रणाम।**

बंदत—क्रि. स. [हिं. बंदना] **प्रणाम करते हैं, नमस्कार करते हैं।** उ.—दसरथ चले अवध आनन्दत। जनक-राइ बहु दाइज दै करि, बार-बार पद बंदत—६-२७।

बंदन—संज्ञा पुं. [सं. वंदन] (१) **स्तुति।** (२) **प्रणाम।** उ.—सकुचासन कुल सील करषि करि जगत बंद्य कर बंदन—३०१४।

संज्ञा पुं. [सं. वंदनी=गोरोचन] (१) **रोली, रोचन।** (२) **सिंदूर, सेंदुर, ईंगुर।** उ.—(क) नील पुट बिच मनो मोती धरे बंदन बोरि—१०-२२५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) मुक्ता मनौ नील-मनि-मय-पुट, धरे भुरकि बर बंदन—४७६।

वंदनता—संज्ञा स्त्री. [सं. वंदनता] **स्तुति, आदर या वंदना की जाने की योग्यता।**

बंदनमाला—संज्ञा पुं. [सं.] **फूल-पत्तों की झालर जो मंगल कार्यों के शुभावसर पर खंभों-दीवारों पर बाँधी जाती है, तोरण।** उ.—लछिमी सी जहँ मालिनि बोलै। बंदनमाला बाँधत डोलै—१०-३२।

बंदनवार—संज्ञा पुं. [सं. वंदनमाला] **फूल-पत्तों की बनी हुई माला या झालर जो मंगल कार्यों के अवसर पर खंभों-दीवारों पर बाँधी जाती है।** उ.—अच्छत दूब लिये रिषि ठाढ़े, बारिनि बंदनवार बँधाई—१०-१६।

वंदना—संज्ञा स्त्री. [सं. वंदना] **स्तुति, प्रार्थना।**

क्रि. स. [सं. वंदन] **प्रणाम या नमस्कार करने।** उ.—सुर-नर-देव बंदना आए, सोवत तैं उठि जागी—१०-४।

वंदनी—संज्ञा स्त्री. [सं. वंदनी] **एक भूषण जो माथे से ऊपर सिर पर रहता है, बंदी, सिरबंदी।**

वि. [सं. वंदनीय] **स्तुति या वंदना योग्य।**

वंदनीमाल—संज्ञा स्त्री. [सं. वंदनमाल] **गले से पैर तक की माला।**

बंदर, बँदरा—संज्ञा पुं. [सं. वानर] **बानर, मर्कट।**

मुहा०—बंदर घुड़की या भबकी—**डराने, धमकाने या धौंस जमाने के लिए की जानेवाली डाँट, फटकार या धमकी।**

बँदवारे—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. बंदन+वाला] **स्तुति, प्रार्थना या बंदना करनेवाले याचक आदि।** उ.—फूले बंदीजन द्वारे, फूले-फूले बँदवारे, फूले जहाँ जोइ सोइ गोकुल सहर के—१०-३४।

बंदहिं—वि. [फा. बंद+हिं, हिं (प्रत्य)] **बंद (रहकर) बंदी (होकर)।** उ.—गूँगी बातनि यौं अनुरागति, भँवर गुंजरत कमल मों बंदहिं—१०-१०७।

बंदा—संज्ञा पुं. [फा.] (१) **सेवक, दास।** (२)**'वक्ता' का अपने लिए शिष्टता या नम्रतासूचक प्रयोग।**

वंदारु—वि. [सं. वंदारु] **पूजनीय, वंदनीय।**

वंदि—संज्ञा स्त्री. [सं. बंदिन्] **कारावास, कैद।** उ.—राज रवनि सुमिरे पति-कारन असुर-बंदि तैं दिए छुड़ाई—१-२४।

क्रि. स. [हिं. बंदना] **बंदना करके।** उ.—यह कह्यौ नंद, नृप बंदि, अहिं इन्द्र पै गयौ मेरौ नंद, तुव नाम लीन्हौ—५८४।

बंदिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. बंदनी] **'बंदी' नामक आभूषण।**

बंदिश—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) **बाँधने की क्रिया या भाव।** (२) **प्रबंध, योजना।** (३) **कुचक, षड्यंत्र।**

बंदियै—क्रि. स. [हिं. बंदना] **प्रशंसा कीजिए।** उ.—जाको निदि बंदियै, सो पुनि वह ताकौ निदरै—११५५।

बंदी—संज्ञा पुं. [सं.] **भाट, चारण।** उ.—मोह-मया बंदी गुन गावत, मागध दोष-अपार—१-१४४।

संज्ञा स्त्री. [हिं. बंदनी] **सिर का एक भूषण।**

संज्ञा पुं. [फा०] **कैदी।** उ.—जरासंध बन्दी कटै नृप-कुल जस गावै—१-४।

संज्ञा स्त्री. [हिं. बंदा] (१) **दासी, सेविका।** (२) **वक्ता नारी का अपने लिए शिष्टता अथवा नम्रता सूचक प्रयोग।**

बंदीखाना—संज्ञा पुं. [हिं. बंदी+फा. खाना] **कैदखाना।**

बंदीघर—संज्ञा पुं. [सं. बंदीगृह] **कैदखाना।**

बंदीछोर—संज्ञा पुं. [फा. बंदी+हिं. छोर] (१) **बंधन से छुड़ानेवाला।** (२) **बंदीगृह से छुड़ानेवाला।**

बंदीजन—संज्ञा पुं. [सं. वन्दीजन] **राजा की गुणावली गाने वाले लोग, एक प्राचीन जाति के लोग, जो राजा-महा राजाओं का यश वर्णन करते थे।** उ.—(क) निंदा जग उपहास करत, मग बंदीजन जस गावत—१-१४१। (ख) बिप्र-सुजन-चारन-बंदीजन सकल नन्द-गृह आए—१०-८७।

बंदीवान—संज्ञा पुं. [सं. बंदिन्] **कैदी।**

बंदेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बंदा+एरी] **दासी, चेरी।**

बंदोबस्त—संज्ञा पुं. [फा.] **प्रबंध।**

वंद्य—वि. [सं. वंद्य] **बंदना या स्तुति के योग्य।** उ.—सकुचासन कुल सील करुषि करि जगत वंद्य करि बंदन—३०१४।

बंध—संज्ञा पुं. [सं. बंधन] (१) **बंधन।** (२) **कैद।** उ.—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटि छ्यानवै नृप सेना सब जरासंध बँध छोरे—१-३१। (३) **पानी रोकने का धुस्स, बाँध।** उ.—जाकै संग सेत-बंध कीन्हौं, अरु जीत्यौ महभारथ। गोपी हरी सूर के प्रभु बिनु, रहत प्रान किंहिं स्वारथ—१-२८७। (४) **रति के सोलह आसनों में से एक।** उ.—परिरंभन सुख रास हास मृदु सुरति केलि सुख साजे। नाना बंध बिबिध रस क्रीड़ा खेलत स्याम अपार—(५) **गाँठ, गिरह।** (६ **योग की कोई मुद्रा।** (७) **निबंध-रचना।** (८) **चित्र काव्य-रचना।** (९) **डोरी।** (१०) **लगाव-फँसाव।** (११) **शरीर।**

क—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **रेहन-रूप में रखी वस्तु।** (२) **बदला करनेवाला।** (३) **बाँधनेवाला।**

न—संज्ञा पुं. [सं. वंधन] (१) **बाँधने की क्रिया।** (२) **बाँधने की वस्तु।** (३) **प्रतिबंध, फँसाने की चीज।** (४) **वध, हिंसा।** (५) **बंदीगृह।** (६) **फंदा, गाँठ।** उ.—हा करुनामय कुञ्जर टेर्यौ, रह्यौ नहीं बल थाकौ। लागि पुकार तुरत छुटकायौ, काट्यौ बंधन ताकौ—१-११३।

ना—क्रि. अ. [सं. बंधन] (१) **बंधन में आना या पड़ना।** (२) **रस्सी आदि से फँसाया जाना।** (३) **बंदी होना।** (४) **स्वतंत्र न रहना, अटकना।** (५) **ठीक या संगठित होना।** (६) **क्रम स्थिर होना।** (७) **वचन-बद्ध होना।** (८) **प्रेम में फँसना।**

संज्ञा पुं.—(१) **बाँधने का साधन।** (२) **थैली।**

नि—संज्ञा स्त्री.]हिं. बँधना] **बाँधने का साधन।**

न—संज्ञा पुं. [हिं. बाँधव] (१) **भाई।** (२) **संबंधी।**

वाना—क्रि. स. [हिं. बाँधना] (१) **बाँधने का काम कराना।** (२) **नियत कराना।** (३) **बंदी कराना।** (४) **तैयार कराना।**

ाई—क्रि. स. [हिं. बँधाना] **बँधवायी या बंधन में करायी।** उ.—इनहीं के हित भुजा बँधाई, अब बिलंब नहिं लाऊँ—१०-३८२।

प्र०—लेहि बँधाइ—**बंदी करा लेगा।** उ.—मो समेत दोउ बंधु तुम, काल्हिहिं लेहि बँधाइ—५८६।

ाऊँ—क्रि. स. [हिं. बँधाना] **बाँधने के लिए प्रेरित करूँ, बँधवाऊँ।** उ.—कंचन-मनि खोलि डारि, काँच गर बंधाऊँ—१-१६६ -

बँधाएँ—क्रि. स. [हिं. बँधाना] **बंदी कराया।** उ.—बाँधन गए बंधाएँ आपुन, कौन सयानप कीन्यौ—८-१५।

बंधान—संज्ञा पुं. [हिं. बंधना] (१) **निश्चित क्रम, नियत परिपाटी।** (२) **धन जो निश्चित क्रम के अनुसार दिया जाय।** (३) **पानी रोकने का बाँध।** (४) **ताल का सम (संगीत)।** उ.—(क) सुर स्रुति तान बंधान अमित अति, सप्त अतीत अनागत आवत—६४८। (ख) औघर तान बँधान सरस सुर अरु रस उमंगि भरी—२३३८।

बँधाना—क्रि. स. [हिं. बंधन] (१) **बाँधने का काम कराना।** (२) **धारण कराना।** (३) **बंदी बनवाया।**

बँधाने—क्रि. स. [हिं. बँधाना] **बँध रहा है, बाँधा गया है।** उ.—कदली कंटक, साधु असाधुहिं, केहरि के संग धेनु बँधाने—१-२१७।

बँधायो, बँधायौ—क्रि. स. [हिं. बँधाना] (१) **गुँथवाया।** उ.—मोतिनि बँधायौ बार महल में जाइकै—१०-३१। (२) **बंधन में डलवाया।** उ.—सूरदास ग्वालिनि अति झूठी बरबस कान्ह बँधायौ—१०-३३०।

बँधावत—क्रि. स. [सं. बंधन, हिं. बँधाना] (१) (**तालाब, कुआँ, पुल आदि**) **बनवाते या तैयार कराते हैं।** उ.—दस अरु आठ पदुम बनचर लै, लीला सिंधु बँधावत—९-१३३। (२) **बाँधने को प्रेरित करते हैं, बंधन में डलवाते हैं।** उ.—इहाँ हरि प्रगट प्रेम जसुमति के ऊखल आप बँधावत—३१३५।

बँधावै—क्रि. स. [हिं. बँधाना (प्रे०)] (१) **अपने को बाँधने के लिए दूसरे को प्रेरित करे।** उ.—दुखित जानि कै सुत कुबेर के तिन्ह लगि आपु बँधावै—१-१२२। (२) **अपने को बंदी कराता है।** उ.—भौंरा भोगी बन भ्रमै (रे) मोद न मानै ताप। सब कुसुमनि मिलि रस करै (पै) कमल बँधावै आप—१०-३२४।

बँधि—क्रि. अ. [हिं. बंधना] (१) **पुल आदि बाँधकर।** उ.—सिला तरी, जल माँहिं सेत बँधि—१-३४। (२) **वचनबद्ध होकर।** उ.—पति अति रोष मारि मन ही मन, भीषम दई बचन बँधि बेरी - १-२५२।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंधित—वि. [सं. बंध्या] **बाँझ (स्त्री)।**

बंधी—वि. [सं. बंधिन्] **जो बाँधा गया।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. बँधना] **बँधा हुआ क्रम।**

बंधु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भाई, भ्राता।** (२) **सहायक।** (३) **मित्र।** (४) **एक वर्णवृत्त।** (५) **बंधूक पुष्प।**

बँधुआ—संज्ञा पुं. [हिं. बंधना+उआ] **बंदी, कैदी।**

बंधुक—संज्ञा पुं. [सं.] **दुपहरिया का लाल फूल।** उ.—अधर दसन-छत बंदन राजत बंधुक पर अलि मानो—१६६१।

बंधुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **भाईचारा**, (२) **मित्रता।**

बंधुत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भाईचारा।** (२) **मित्रता।**

बंधुर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मुकुट।** (२) **दुपहरिया फूल।**

बंधुर, बंधुल—वि. [सं.] (१) **सुन्दर।** (२) **नम्र।**

बँधुवा—संज्ञा पुं. [हिं. बंधना+उआ] **कैदी।**

बंधूक—संज्ञा पुं. [सं. वंधुक] **दुपहरिया का फूल।**

बंधेज—संज्ञा पुं. [हिं. बंधना+एज] **रुकावट, प्रतिबंध।**

बंध्या—वि. स्त्री. [सं.] **बाँझ स्त्री।**

बंध्यापन—संज्ञा पुं. [हिं. बंध्या+पन] **बाँझपन।**

बँध्यौ—क्रि. अ. [हिं. बँधना] **बँधा, बँधन में पड़ा।** उ.—(क) ऊखल बँध्यो जु हेतु भगत के—३६१। (ख) सूरदास प्रभु को मन सजनी बँध्यौ राग की डोर—६५७।

बंब—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **बं बं शब्द जो शैवगण करते हैं।** (२) **रण का कोलाहल।** (३) **नगाड़ा, डंका।**

बँबाना—क्रि. अ. [अनु.] **पशु का रँभाना।**

बँभनाई—संज्ञा स्त्री. [सं. ब्राह्मण] (१) **ब्राह्मणपन।** (२) **हठ, दुराग्रह।**

बंस—संज्ञा पुं. [सं. वंश] **वंश, परिवार।** उ.—ये तुम्हरे कुल-बंस हैं—१-२३८।

बंसकार—संज्ञा पुं. [सं. वंश] **बाँसुरी।**

बंसरी—संज्ञा स्त्री.—[हिं. बंशी] **बाँसुरी।**

बंसा—संज्ञा पुं. [सं. वंश] **वंश, कुल।** उ.—ग्वाल परम सुख पाइ, कोटि मुख करत प्रसंसा। कहा बहुत जो भए, सपूतौ एकै बंसा—४३१।

बंसी—संज्ञा स्त्री. [सं. वंशी] **बाँसुरी, मुरली।**

बंसीधर—संज्ञा पुं. [सं. वंशीधर] **श्रीकृष्ण।**

बंसीबट—संज्ञा पुं. [सं. वंशीवट] **वृंदावन में एक बरगद का पेड़ जिसके नीचे श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाते थे।**

बँहगी—संज्ञा स्त्री. [सं. वह] **भार ढोने का एक साधन।**

बई—क्रि. स. [हिं. बपना] **बोयी, बीज जमाया।** उ.—(क) इंद्रिय मूल किसान, महातृन-अग्रज-बीज बई—१-१८५। (ख) मनहुँ पीक दल सींचि स्वेद जल आल बाल रति-बेलि बई री—२११५। (ग) मेरे नयना बिरह की बेलि बई—२७७३।

क्रि. स. [हिं. बलना] **बली, जली, सुलगी, छितरी, बिखरी।** उ.—जोग की गति सुनत मेरे अंग-आगि बई—३१३१।

बउर—संज्ञा पुं. [हिं. बौर] **बौर।**

बउरा—वि. [हिं. बावला] **पागल, बावला।**

बउराना—क्रि. अ. [हिं. बौराना] **पागल होना।**

बए—क्रि. स. बहु. [हिं. बपना] **बोया, बीज जमाया या लगाया।** उ.—(क) गोकुलनाथ बए जसुमति के आँगन भीतर, भवन मँझार। साखा-पत्र भए जल मेलत, फूलत-फरत न लागी बार—१०-१७३। (ख) सूरदास प्रभु दूत धर्म ढिग दुख के बीज बए—२६६३। (ग) जनु तनुजा में सद्य अरुन दल काम के बीज बए—२०८४।

बक—संज्ञा पुं. [सं. वक] (१) **बगला।** (२) **बकासुर।** उ.—अघ बक बच्छ अरिष्ट केसी मथि जल तें काढ्यो काली २५६७। (३) **एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था।**

वि.—**बगले सा सफेद।**

संज्ञा स्त्री.—[हिं. बकना] **बकवाद, प्रलाप।**

यौ०—बकझक या बकबक—**व्यर्थ की बकवाद।**

बकठाना—क्रि. स. [सं. विकुंठन] **बकठा हो जाना।**

बकत—क्रि. अ. [सं. वचन, हिं. बकना] (१) **बकती-झकती हूँ, बकते-बकते।** उ.—कहाँ लगि सहौं रिस, बकत भई हौं कुस, इहिं मिस सूर स्याम-बदन चहूँ—१०-२६५। (२) **डाँटते-डपटते।** उ.—बकत-बकत तोसौं पचिहारी, नैंकहुँ लाज न आई—१०-३२६।

बकतर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **एक तरह का कवच।**

बकता—वि. [सं. वक्ता] **व्याख्यान देनेवाला।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बकति, बकती—क्रि. स. स्त्री. [सं. वचन, हिं. बकना] **प्रलापती है, बड़बड़ाती है, बुरा-भला कहती है।** उ.—करति कछू न कानि, बकति हैं कटु बानि, निपट निलज बैन बिलखि सहूँ—१०-२९५।

बकध्यान—संज्ञा पुं. [सं. वक+ध्यान] **बनावटी भलमनसाहत, भले बनने का आडंबर।**

बकध्यानी—वि. [सं. वकध्यानिन्] **जो दिखावटी भला हो, पर हृदय से कपटी और कुटिल हो।**

बकना—क्रि. स. [सं. वचन] (१) **व्यर्थ ही बहुत बोलना।** (२) **बड़बड़ाना, प्रलाप करना।**

मुहा०—बकना-झकना—**बड़बड़ाना।**

बकमौन—वि. [सं. वक+मौन] **चुपचाप मतलब साधनेवाला।**

बकरति—क्रि. स. [हिं. बकरना] **बकती है, बड़बड़ाती है।** उ.—जसोदा ऊखल बाँधे स्याम। ··· दह्यौ मथति, मुख तैं कछु बकरति गारी दै लै नाम। घर-घर डोलत माखन चोरत, षटरस मेरैं धाम—३७९।

बकरना—क्रि. स. [हिं. बकना] (१) **बड़बड़ाना।** (२) **अपना दोष स्वीकार करना या स्वगत-रूप से कहना।**

बकरा—संज्ञा पुं. [सं. वर्कर] **एक प्रसिद्ध पशु।**

बकराना—क्रि. स. [हिं. बकरना] **दोष कबूल कराना।**

बकला—संज्ञा पुं. [सं. वल्कल] (१) **छाल।** (२) **छिलका।**

बकवाद—संज्ञा स्त्री. [हिं. बक+वाद] **व्यर्थ की बात, बकवाद।** उ.—कहि कहि कपट सँदेसन मधुकर कृत बकवाद बढ़ावत। (ख) सूर वृथा बकवाद करत हो, इहिं ब्रज नंदकुमार—३२५३।

बकवादी—वि. [हिं. बकवाद] **बकवाद करनेवाला।**

बकवाना—क्रि. स. [हिं. बकना] **बकवाद कराना।**

बकवास—संज्ञा स्त्री. [हिं. बकना+वास] (१) **बकबक।** (२) **बकवाद करने की तलब या इच्छा।**

बकवृत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं. वकवृत्ति] **कपटाचरण।**

बकव्रती—वि. [सं. वकव्रतिन्] **कपटी, आडंबरी।**

बकसना—क्रि. स. [फ़ा. बख्श+हिं. ना] (१) **कृपापूर्वक प्रदान करना।** (२) **क्षमा करना।**

बकसाऊँ—क्रि. स. [हिं. बकसाना] **क्षमा कराऊँ।** उ.—चूक परी मोतैं मैं जानी, मिलैं स्याम बकसाऊँ री—१६७३।

बकसाना—क्रि. स. [हिं. बकसना] **क्षमा करना।**

बकसियो—क्रि. स. [हिं. बकसना] **क्षमा करना।** उ.—पालागौं यह दोष बकसियो सन्मुख करत ढिठाई—३३४३।

बकसीस—संज्ञा स्त्री. [फ़ा बख़्शिश] (१) **इनाम, पारितोषिक।** उ.—(क) नाचैं फूल्यौ अँगनाइ, सूर बकसीस पाइ, माथे कै चढ़ाइ लीनौ लाल कौ बगा—१०-३६। (ख) कमल जब ते उरग पीठि ल्याए सुने वैहैं बकसीस अब उनहिं दैहैं—२४६७। (२) **दान।**

बकसो, बकसौ—क्रि. स. [हिं. बकसना] **क्षमा करो।** उ.—(क) ढीठो बहुत कियो हम तुमसों बकसो हरि चूक हमारी—११९१। (ख) यह अपराध मोहिं बकसौ री इहै कहति हौ मेरी माई—८६३।

बकस्यौ—क्रि. स. [हिं. बकसना] **क्षमा किया, कुछ न कहा।** उ.—पूत सपूत भयौ कुल मेरैं, अब मैं जानी बात। सूर स्याम अब लौं तुहिं बकस्यौ, तेरी जानी घात—१०-३२९।

बकाना—क्रि. स. [हिं. बकना] (१) **बकबक कराना।** (२) **रटाना।** (३) **बकने-झकने को विवश करना।**

बकाया—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **बाकी, शेष।** (२) **बचत।**

बकारि—संज्ञा पुं. [सं. वक+अरि] **श्रीकृष्ण।**

बकावत—क्रि. स. [हिं. बकाना] **रटाता है।** उ.—बार बार बकि स्याम सों कछु बोल बकावत।

बकासुर—संज्ञा पुं. [सं. वकासुर] **वक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।**

बकिहै—क्रि. स. [हिं. बकना] **बक-झककर मना करेगा, डाँट-फटकार करेगा।** उ.—सूर आइ तू करति अचगरी, को बकिहै निसि जामहिं—७२२।

बकी—संज्ञा स्त्री. [सं. वकी] **बकासुर की बहिन पूतना जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।**

बकुचा—संज्ञा पुं. [हिं. बकुचना] **गठरी, पोटली।**

बकुचाना—क्रि. स. [हिं. बकुचा] **पोटली में बाँधकर कंधे या पीठ पर लटकाना।**

बकुची—संज्ञा स्त्री. [हिं. बकुचा] **छोटी गठरी।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बकुचौहाँ—वि. [हिं. बकुचा+औहाँ] **बकुचा-जैसा।**

बकुरना—क्रि. स. [हिं. बकुरना] **स्वीकार करना।**

बकुराना—क्रि. स. [हिं. बकुरना] **स्वीकार कराना।**

बकुल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मौलसिरी।** उ.—नूतन कदम तमाल बकुल बट परसत जनम गए। (२) **शिव।**

बकै—क्रि. अ. [हिं. बकना] **बकता है।** उ.—कायर बकै, लोभ तैं भागें लरै सो सूर बखानैं—३३३७।

बकोट—संज्ञा स्त्री. [हिं. काटना] (१) **पंजे की स्थिति जो नोचते समय होती है।** (२) **नोचने की क्रिया या भाव।** (३) **चुटकी भर वस्तु।**

बकोटना—क्रि. स. [हिं. बकोट] **नोचना, पंजा मारना।**

बकोटनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. बकोट] **बकोटने या नोचने की क्रिया।** उ.—चंचल अधर, चरन-कर चंचल, मंचल अंचल गहत बकोटनि—१०-१८७।

बक्कल—संज्ञा पुं. [सं. वल्कल, पा० बक्कल] (१) **फल का छिलका।** (२) **पेड़ की छाल।**

बक्काल—संज्ञा पुं. [अ.] **बनिया, वणिक।**

बक्की—वि. [हिं. बकना] **बहुत बोलनेवाला।**

बखतर—संज्ञा पुं. [हिं. बकतर] **एक तरह का कवच।**

बखरा—संज्ञा पुं. [फा. बख़रः] **भाग, हिस्सा।**

बखरैत—वि. [हिं. बखरा+ऐत] **साझीदार।**

बखसीस—संज्ञा स्त्री. [फा. बखशीश] **इनाम, पुरस्कार।** **नेग।** उ.—नाचै फूल्यौ अँगनाई सूर बखसीस (बकसीस) पाई माथे कै चढ़ाइ लीनो लाल को बगा—१०-३९।

बखसीसना—क्रि. स. [हिं. बखशीश] **इनाम देना।**

बखान—क्रि. स. [सं. व्याख्यान पा० बक्खान] **वर्णन करके, व्याख्या करके।** उ.—ये ब्रह्मा सौं कहे भगवान। ब्रह्मा मोसौं कहे बखान—१-२३०।

संज्ञा पुं. (१) **वर्णन, कथन।** उ.—गुन-रूप कछु अनुहार नाहीं, कर बखान बखानिए—१० उ-२४। (२) **प्रशंसा, बड़ाई।**

बखानत—क्रि. स. [हिं. बखानना] **वर्णन करता है, कहता है।** उ.—(क) सिव कौ धन, संतनि को सरबस, महिमा वेद-पुरान बखानत—१-११४। (ख) सुर-नर-मुनि सब सुजस बखानत—६-१३६। (ग) तुम्हैं वेद ब्रह्मण्य बखानत। ताते तुम्हरी अस्तुति ठानत—१० उ.-११५।

बखानना—क्रि. स. [हिं. बखान] (१) **कहना, वर्णन करना।** (२) **प्रशंसा या बड़ाई करना।** (३) **बुरा-भला कहना।**

बखानिए—क्रि. स. [हिं. बखानना] **वर्णन कीजिए।** उ.—गुन-रूप कछु अनुहारि नाहीं, का बखान बखानिए—१०उ.-११५।

बखानी—क्रि. स. [हिं. बखानना] **वर्णन किया, कहा, चर्चा की।** उ.—(क) तिहिं बिनु रहत नहीं निसि-बासर, जिहिं सब दिन रस-बिषय बखानी—१-१४६। (ख) उमा कही, मैं तौ नहिं जानी। अरु सिवहूँ मोसौं न बखानी—१-१२६।

बखानैं—क्रि. स. बहु. [हिं. बखानना] **वर्णन करते हैं, कहते हैं।** उ.—पूरन ब्रह्म पुरान बखानैं—१०-३।

बखानै—क्रि. स. [हिं. बखानना] **वर्णन करे।** उ.—सूर सुजस कहि कहा बखानै—१०-३।

बखानौं—क्रि. स. [हिं. बखानना] **वर्णन करता हूँ।** उ.—सो अब तुमसौं सकल बखानौं—१०-२।

बखार—संज्ञा पुं. [सं. प्राकार] **अनाज रखने का घेरा।**

बखारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बखार] **छोटा बखार।**

बखूबी—क्रि. वि. [फा. ब+खूबी] **भली-भाँति, पूर्णतया।**

बखेड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. बखेरना] (१) **झंझट।** (२) **विवाद, झगड़ा।** (३) **कठिनता।** (४) **व्यर्थ आडंबर।**

बखेड़िया—वि. [हिं. बखेड़ा] **झगड़ालू, झंझटी।**

बखेरना—क्रि. स. [सं. विकिरण] **फैलाना, छितराना।**

बख्त—संज्ञा पुं. [फा. बख्त] **भाग्य, तकदीर।**

बख्तर—संज्ञा पुं. [फा. बक्तर] **लोहे का कवच।**

बख्शना—क्रि. स. [फा. बख्श] (१) **देना।** (२) **क्षमा करना।**

बग—संज्ञा पुं. [सं. वक] **बगुला।**

बगछुट, बगटुट—क्रि. वि. [हिं. बाग+छूटना, टूटना] **बड़ी तेजी से, बेतहाशा।**

बगदई—वि. [हिं. बगदहा] **बिगड़ने या चौंकनेवाला।** उ.—(गैया) घेरे फिरत न तुम बिनु माधौ जू मिलत नहीं बगदई।

बगदना—क्रि. अ. [सं. विकृत, हिं. बिगड़ना] (१) **खराब**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होना। (२) भूलना, बहकना। (३) ठीक रास्ते से हट जाना।

बगदर—संज्ञा पुं. [देश.] **मच्छड़।**

बगदवाना—क्रि. स. [हिं. बगदना] (१) **खराब कराना।** (२) **भुलवाना।** (३) **गिरा देना।** (४) **वचन से हटाना।**

बगदहा—वि. [हिं. बगदना+हा] **चौंकनेवाला।**

बगदाना—क्रि. स. [हिं. बगदना] (१) **खराब करना।** (२) **ठीक मार्ग से हटाना।** (३) **भुलाना, भटकाना।**

बगना—क्रि. अ. [सं. वक्र (गति)] **घूमना-फिरना।**

बगनी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह की घास।**

बगमेल—संज्ञा पुं. [हिं. बाग+मेल] (१) **दूसरे के घोड़े के साथ या पाँति बाँधकर चलना।** (२) **समानता।**

क्रि. वि.—**पंक्तिबद्ध, साथ-साथ।**

बगर—संज्ञा पुं. [सं. प्रघण, पा. पघण] (१) **महल, प्रासाद।** (२) **बड़ा मकान, घर।** (३) **घर, कोठरी।** (४) **आँगन।** (५) **गाय बँधने का स्थान।**

बगरना—क्रि. अ. [सं. विकिरण] **बिखरना, छितरना।**

बगराइ—क्रि. अ. [हिं. बगरना] **बिखरी है, बिखराकर।** उ.—गोरे बरन चूनरी सारी अलकैं मुख बगराइ—८८४।

बगराई—क्रि. अ. [हिं. बगरना] **फैलकर, बिखरकर, छितराकर।** उ.—अति सुदेस मृदु हरत चिकुर मन मोहन-मुख बगराई—१०-१०८।

बगराए—क्रि. स. [हिं. बगराना] **फैलाये हुये, छिटकाए हुए, छितराये।** उ.—ते दिन बिसरि गए इहाँ आए। अति उन्मत्त, मोह-मद छाक्यौ, फिरत केस बगराए—१-३२०।

बगराना—क्रि. स. [हिं. बगरना] **छितराना, छिटकाना।**

क्रि. अ.—**फैलना, बिखरना, छितरना।**

बगरानी—क्रि. अ. [हिं. बगराना] **बिखर गयीं।** उ.—वेनी छूटि, लटैं बगरानी, मुकुट लटकि लटकानो—पृ. ३४६ (४७)।

बगरि—क्रि. अ. [हिं. बगरना] (१) **फैल गयी, बिखर गयी।** (२) **इधर-उधर चली गयीं।** उ.—बगरि गईं गैयाँ बन-बीथिन, देखीं अति अकुलाइ—५००।

बगरीं—क्रि. अ. [हिं. बगरना] **बिखरीं, छिटकीं।** उ.—तैसीयै लट बगरीं ऊपर स्रवत नीर अनूप—१८४६।

बगरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बगर] **बखरी, घर, मकान।** उ.—(क) बड़े बाप के पूत कहावत, हम वै बास बसत इक बगरी। नंदहु तैं ये बड़े कहैहैं, फेरि बसैहैं यह ब्रज नगरी—१०-३१६। (ख) घाट-बाट सब देखत आवत, युवती डरनि मरत हैं सिगरी। सूर स्याम तेहि गारी दीनो जो कोई आवै तुमरी बगरी—८५३।

बगरो—संज्ञा पुं. [हिं. बगर] (१) **गैयाँ बँधने का स्थान।** उ.—ग्वाल बाल सँग लिये सब घेरि रहे बगरो। (२) **ठौर, स्थान, गाँव।** उ.—और कहूँ जाइ रहे, छाँड़ि ब्रज बगरो—१०५६।

बगल—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **बाहुमूल के नीचे का गड्ढा, काँख।** (२) **छाती के दोनों किनारे के भाग, पार्श्व।**

मुहा०—बगल में दबाना (धरना) **छल से अधिकार में करना।** बगल बजाना—**खूब खुशी मनाना।**

(३) **किनारे या पार्श्व का भाग।** (४) **समीप का स्थान।**

बगलन—संज्ञा स्त्री. बहु. [हिं. बगल] **छाती के दोनों किनारों के भाग।** उ.—बगलन दावे पिचकारी—२४४४।

बगला—संज्ञा पुं. [सं. वक+ला] **एक प्रसिद्ध पक्षी।**

मुहा०—बगला भगत—**छली, कपटी, ढोंगी।**

बगलामुखी—संज्ञा पुं. [देश.] **एक देवी।**

बगलियाना—क्रि. अ. [हिं. बगल+इयाना] **राह काटकर या अलग हटकर जाना।**

क्रि. स.—(१) **अलग करना।** (२) **बगल में लाना।**

बगली—वि. [हिं. बगल] **बगल का।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. बगला] **बगुले की मादा।**

बगलौहाँ—वि. [हिं. बगल+औहाँ] **तिरछा, झुका हुआ।**

बगसना—क्रि. स. [हिं. बख्शना] (१) **देना।** (२) **क्षमा करना।**

बगा—संज्ञा पुं. [हिं. बागा] **जामा, बागा।** उ.—नाचै फूल्यौ अँगनाइ, सूर बकसीस पाइ, माथै कै चढ़ाइ लीनौ लाल कौ बगा—१०-३६।

संज्ञा पुं. [सं. वक] **बगला।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बगाना—क्रि. स. [हिं. बगना] **घुमाना-फिराना।**

क्रि. अ.—**जल्दी जाना, भागना।**

बगार—संज्ञा पुं. [देश.] **गाय बाँधने का स्थान।**

बगारना—क्रि. स. [हिं. बगरना] **छिटकाना, बिखेरना।**

बगावत—संज्ञा स्त्री. [अ. बग़ावत] **विद्रोह, राजद्रोह।**

बगिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाग] **छोटा बाग।**

बगीचा—संज्ञा पुं. [फ़ा. बागचा] **छोटा बाग।**

बगुला—संज्ञा पुं. [हिं. बगला] **वक, बगला।**

बगुली—संज्ञा स्त्री. [बगला] **बगला की मादा, स्त्री-वक।** उ.—बग-बगुली अरु गीध-गीधनी, आइ जनम लियौ तैसौ—२-१४।

बगूला—संज्ञा पुं. [हिं. वायु+गोला] **वायु का भँवर, बवंडर।**

बगेड़ी, बगेरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक छोटी चिड़िया।**

बगैर—अव्य. [अ. बग़ैर] **बिना।**

बघंबर—संज्ञा पुं. [सं. व्याघ्रांबर] (१) **बाघ का चर्म जो आसन का काम देता है।** (२) **बाघ की खाल-सा कंबल।**

बघनहाँ, बघनहियाँ, बघना—संज्ञा पुं. [हिं. बाघ+नहँ=नाख़ून] (१) **एक आभूषण जिसमें सोने-चाँदी से मढ़े बाघ के नाख़ून रहते हैं।** उ.-(क) कठुला कंठ बघनहाँ नीके। नैन-सरोज मैन सरसी के—१०-११७। (ख) सूरदास प्रभु ब्रज-बधु निरखति, रुचिर हार हिय सोहत बघना—१०-११३। (ग) सीप जयमाल स्याम उर सोहै बिच बघना छबि पावै री। (२) **एक तरह का हथियार।**

बघनियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाघ+नहँ=नाख़ून; पुं. बघनहाँ] **एक आभूषण जिसमें बाघ के नाख़ून चाँदी या सोने से मढ़े रहते हैं। यह गले में तागे में गूँथ कर पहना जाता है।** उ.—घर-घर हाथ दिवावति डोलति, बाँधति गरैं बघनियाँ—१०-८३।

बघरूरा—संज्ञा पुं. [हिं. वायु+गँडूरा] **बवंडर।**

बघार—संज्ञा पुं. [हिं. बघारना] **तड़का, छौंक।**

बघारना—क्रि. स. [सं. अवधारण] (१) **छौंकना, तड़का देना।** (२) **मौके-बेमौके योग्यता दिखाना।**

मुहा०—शेखी बघारना—**बढ़-बढ़कर बात करना।**

बच—संज्ञा पुं. [हिं. वचन] **वचन, वाक्य, बात।** उ.—अपनौ मन हरि सौं राँचै। आन उपाय प्रसंग छाँड़ि कै, मन-बच-क्रम अनुसाँचै—१-८१।

बचकाना—वि. [हिं. कच्चा+काना] **बच्चों का, बच्चों-सा।**

बचत—संज्ञा स्त्री. [हिं. बचना] (१) **रक्षा, बचाव।** (२) **व्यय होने से बचा भाग या अंश।** (३) **लाभ।**

क्रि. स. [सं. वचन] **कहता या बोलता है।** उ.—अबल प्रहलाद बल देत मुख ही बचत दास ध्रुव चरन चित सीस नायो।

बचन—संज्ञा पुं. [सं. वचन] (१) **वाणी, वाक्।** (२) **शब्द, बचन, बात।** उ.—भृगु को चरन राखि उर ऊपर बोले बचन सदा सुखदाई—१-३।

मुहा०—बचन खंडना—**बात न मानना, आज्ञा का पालन न करना।** बचन खंडै—**बात न मानें, आज्ञा का पालन न करे।** उ.—पिता-बचन खंडै सो पापी—१-१०४। बचन डालना—**याचना करना।** बचन छोड़ना (तोड़ना)—**कहकर हट जाना, बात का निर्वाह न करना।** बचन देना—**प्रतिज्ञा करना।** बचन निभाना (पालना)—**जो कहना, सो करना; कही हुई बात का निर्वाह करना।** बचन बाँधना—**प्रतिज्ञाबद्ध करना।** बचन बँधायो—**प्रतिज्ञा या बचनबद्ध किया।** उ.—नंद जसोदा बचन बँधायो। ता कारन देही धरि आयो—११६१। बचन बनाना—**बात बनाना, कुछ का कुछ समझाना।** बचन बनावत—**कुछ का कुछ. अर्थ या उद्देश्य समझाते हैं।** उ.—सूरदास प्रभु बचन बनावत अब चोरत मन मोर—१९६५। बचन लेना—**प्रतिज्ञा कराना।** बचन हारना—**प्रतिज्ञा या बचनबद्ध होना।**

बचना—क्रि. अ. [सं. वचन=न पाना] (१) **कष्ट आदि से सुरक्षित रहना।** (२) **बुरी बात या आदत से दूर रहना।** (३) **छूट या रह जाना।** (४) **खरचने या काम में न आ पाना, बाकी रहना।** (५) **दूर या अलग रहना।** (६) **सामने से हटना।**

क्रि. स. [सं. वचन] **कहना, बोलना।**

संज्ञा स्त्री.—**बात, कथन, बचन।**

बचपन, बचपना—संज्ञा पुं. [हिं. बच्चा+पन] (१)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल्यावस्था। (२) बालक होने का भाव, अबोधता और सरलता।

बचवैया—संज्ञा पुं. [हिं. बचाना + वैया] **बचानेवाला।**

बचा—संज्ञा पुं. [हिं. बच्चा] (१) **बालक। (२) पुत्र।**

बचाउ—संज्ञा पुं. [हिं. बचाना] **बचने का भाव, रक्षा, त्राण।** उ.—महरि सबै व्रजनारि सौं, पूछति कौन उपाउ। जनमहिं त करवर टरी, अबकैं नाहिं बचाउ—५८६।

बचाऊ—क्रि. स. [हिं. बचाना] **रक्षा की, कष्ट या विपत्ति में न पड़ने दिया।** उ.—विकट रूप अवतार धरयौ जब, सो प्रहलाद बचाऊ—२२१।

बचाए—क्रि. स. [हिं. बचाना] **रक्षा की।** उ.—जे पद-कमल-भजन महिमा तैं, जन प्रहलाद बचाए—५३८।

बचाना—क्रि. स. [हिं. बचना] (१) **रक्षा करना। (२) अलग या अप्रभावित रखना। (३) खर्चने के बाद भी रख छोड़ना। (४) छिपाना, चुराना। (५) दूर रखना। (६) रोग आदि से अलग या मुक्त रखना। (७) सामने से हटाना।**

बचाव—संज्ञा पुं. [हिं. बचाना] **रक्षा, त्राण।** उ.—ऐसो कैसे होय सखी री घर पुनि मेरो है बचाव री—१२३७।

बचावत—क्रि. स. [हिं. बचाना] **रक्षा करता है, आपत्ति या कष्ट से बचाता है।** उ.—तोकौं कौन बचावत आइ—७-१।

बचावैं—क्रि. स. [हिं. बचाना] **रक्षा करें।** उ.—आउ हम नृपति, तुमकौं बचावैं—८-१६।

बचावै—क्रि. स. [हिं. बचाना] **बचावे, रक्षा करे, कष्ट में न पड़ने दे।** उ.—पग पग परत कर्म-तम-कूपहिं, को करि कृपा बचावै—१-४८।

बचि—क्रि. अ. [हिं. बचना] **कष्ट-विपत्ति में न पड़े, रक्षित रहे।** उ.—मन सबकैं आनन्द, कान्ह जल तैं बचि आए—५८६।

बचिहौ—क्रि. अ. [हिं. बचना] **बचेगा, रक्षा होगी।** उ. रे मन, छाँड़ि विषय कौ रचिबौ। कत तू सुवा होत सेमर कौ, अंतहिं कपट न बचिबौ—१-५६।

बचुआ—संज्ञा पुं. [हिं. बचा] **'पुत्र' के लिए स्नेहपूर्ण या दुलार-भरा संबोधन।**

बचे—क्रि. अ. [हिं. बचना] **रक्षा हुई।** उ.—दुहूँ वृच्छ-बिच बचे कन्हाई—३६१।

बचैं—क्रि. अ. [हिं. बचना] **कष्ट या विपत्ति में न पड़ें, रक्षित रहें।** उ.—(क) बरु हमकौं लै जाइ, स्याम-बलराम बचैं घर—५८६। (ख) सूर कर जोरि अंचल छोरि बिनवैं, बचैं ए आजु बिधि इहै माँगैं—२६०३।

बचै—क्रि. अ. [हिं. बचना] **रक्षित रहे।** उ.—अब बालक क्यों बचै कन्हाई—१०-५१।

बचौगे—क्रि. अ. [हिं. बचना] **बच सकोगे, पकड़ में न आओगे।** उ.—भागैं कहाँ बचौगे मोहन, पाछैं आइ गईं तुव गोहन—७६६।

बच्चा—संज्ञा पुं. [सं. वत्स] (**१) नवजात प्राणी। (२) लड़का, बालक। (३) बेटा, पुत्र।**

वि.—**अनजान, अबोध।**

बच्ची—संज्ञा स्त्री. [हिं. बच्चा] (१) **बेटी। (२) लड़की।**

बच्छ—संज्ञा पुं. [सं. वत्स, प्रा. वच्छ] (१) **बच्चा, बेटा। (२) गाय का बछड़ा।** उ.—(क) जैसैं गैया बच्छ कैं सुमिरत उठि धावै। (ख) बच्छ पुच्छ लै दियो हाथ पर मंगल गीत गवायो। जसुमति रानी कोख सिरानो मोहन गोद खेलायो। (३) **वत्सासुर।** उ.—अब बक बच्छ अरिष्ट केसी मथि जल तें काढ़यो काली—२५६७।

बच्यो, बच्यौ—क्रि. अ. [हिं. बचना] (१) **बचा, शेष रहा, बाकी रहा, बच सका।** उ.—(क) पाप मारग जिते, सबै कीन्हें तिते, बच्यौ नहिं कोउ जहँ सुरति मेरी—१-११०। (ख) कीन्हें स्वाँग जिते जाने मैं, एकौ तौ न बच्यौ—१-१७४। (२) **कष्ट या विपत्ति से बचा, रक्षित रहा।** उ.—कैसैं बच्यौ, जाउँ बलि तेरी, तृनावर्त कैं घात—१०-८१।

बच्छल—वि.—[सं. वत्सल, प्रा. वच्छल] **माता पिता के समान स्नेह या प्यार करनेवाला।** उ.—भक्तबच्छल कृपाकरन, असरनसरन, पतित-उद्धरन कहैं वेद गाई—८-६।

बच्छस—संज्ञा पुं. [सं. वक्षस्] **छाती, वक्षस्थल।**

बच्छा—संज्ञा पुं. [सं. वत्स, प्रा. बच्छ] **बच्चा, बछड़ा।**

बछ—संज्ञा पुं. [सं. वत्स, प्रा. बच्छ] **बछड़ा, गाय का**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चा । उ.—(क) आगैं बछ, पाछैं व्रज-बालक, करत चले मधुरैं सुर गान—४३८ । (ख) बाल-बिलख मुख गौ न चरति तृन बछ पय पियन न धावैं—(ग) ब्रह्मलोक ब्रह्मा गए लै बालक बछ संग—४९२ ।

बछड़ा, बछरा, बछरु बछरुवा, बछरू—संज्ञा पुं. [हिं. बछड़ा, बछवा] **बछड़ा, गाय का बछेड़ा** । उ.—(क) ब्रह्मा बाल बछरुवा हरि गयौ, सो ततछन सारिखे सँवारी—१-३० । (ख) ब्यानी गाय बछरुवा चाटति, हौं पय पियत पतूखिनि लैया—१०-३१५ । (ग)—भोजन करत सखा इक बोल्यौ, बछरू कतहूँ दूरि गए—४३८ । (घ) राँभति गो खरिकनि मैं, बछरा हित धाई—१०-२०२ । (ङ) कोउ गए ग्वाल गाइ बन घेरन, कोउ गए बछरु लिवाइ—५०० ।

बछल—वि. [सं. वत्सल] **छोटों से स्नेह करनेवाला** ।

बछलता—संज्ञा स्त्री. [सं. वत्सलता] **छोटों के प्रति स्नेह का भाव** । उ.—भक्तबछलता प्रगट करी—१-२६८ ।

बछवा, बछा—संज्ञा पुं. [हिं. बच्छ] **गाय का बछड़ा** । उ.—धेनु बिकल सो चरत नहीं तृन बछा न पीवन धावैं—३४२३ ।

बछिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. बछवा] **बिन ब्याई गाय** ।

मुहा०—बछिया का ताऊ (बाबा)—**मूर्ख** ।

बछुरुवनि—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. बछवा] **गाय के बछड़े** । उ.—ता पर सूर बछुरुवनि ढीलत, बन-बन फिरतिं बही—१०-२६१ ।

बछेड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. बछड़ा] **घोड़े का बच्चा** ।

बछेरू—संज्ञा पुं. [हिं. बछड़ा] **गाय का बछड़ा** ।

बजंत्री—संज्ञा पुं. [हिं. बछड़ा] **बाजा बजानेवाला** ।

बजना—क्रि. अ. [हिं. बाजा] (१) **बाजे में शब्द उत्पन्न होना** । (२) **आघात या प्रहार होना** । (३) **शस्त्रों का चलना** । (४) **हठ करना** । (५) **प्रसिद्ध या विख्यात होना** ।

संज्ञा पुं.—**बजनेवाला बाजा** ।

वि.—**जो बजता हो, जिसमें से ध्वनि निकले** ।

बजनियाँ, बजनिहाँ—संज्ञा पुं. [हिं. बजना+इयाँ, इहाँ] **बाजा बजानेवाला** ।

बजनी, बजनू—वि. [हिं. बजना] **जो बजता हो** ।

बजमारा—वि. [हिं. बज्र+मारा] **बज्र का मारा हुआ, खोटे भाग्यवाला, जिससे दैव रूठा हो** ।

बजमारी—वि. स्त्री. [हिं. बजमारा] **जिससे दैव रूठा हो** । उ.—जो कह्यौ करै दी हठ याही मारग आवै बजमारी ।

बजरंग—वि. [सं. वज्र+अंग] **बज्र के समान दृढ़ शरीर वाला** ।

संज्ञा पुं.—**हनुमान** ।

बजर—संज्ञा पुं. [सं. वज्र] **वज्र** ।

बजरा—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह की नाव** ।

बजरी—संज्ञा स्त्री. [सं. वज्र] (१) **कंकड़ी** । (२) **ओला** । (३) **किले के ऊपरी भाग के कंगूरे जिनकी बगल में गोलियाँ चलाने के लिए कुछ अवकाश रहता है** ।

बजवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बजवाना] **बाजा बजाने की मजदूरी** ।

बजवाना—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बजाने में प्रवृत्त करना** ।

बजवैया—वि. [हिं. बजाना+वैया] **बजानेवाला** ।

बजा—वि. [फा.] **उचित ठीक** ।

क्रि. स. [हिं. बजाना] **बजाना** ।

मुहा०—बजा लाना—**पालन करना** ।

बजाइ—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बजाकर, घोषित करके, डंके की चोट पर** । उ.—नैना भए बजाइ गुलाम—पृ० ३२१ (६) ।

मुहा०—लीजै ठौंकि बजाइ—**अच्छी तरह देखभालकर, खूब समझ-बूझकर** । उ.—नन्द व्रज लीजै ठोंकि बजाइ—२७०० ।

बजाई—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बाजे से ध्वनि निकाली, बजायी** । उ.—सुरनि मिलि देव-दुंदुभि बजाई—८-८ ।

मुहा०—कीनै बजाई—**खुल्लमखुल्ला या डंके की चोट पर किया** । उ.—सूरदास प्रभु हम पर ताको कीने सवति बजाई—२३२६ ।

बजाऊँ—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बाजे से ध्वनि निकालूँ** । उ.—गाऊँ बजाऊँ रस प्रेम भरि नाचौं—पृ० ३१६ (८१) ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजागि—संज्ञा स्त्री. [सं. वज्र+आगि] **बिजली।**

बजाज—संज्ञा पुं. [अ. बज्जाज] **कपड़ा बेंचनेवाला।**

बजाजा—संज्ञा पुं. [हिं. बजाज] **कपड़े का व्यापार।**

बजाजिनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. बजाज] **कपड़ा बेचने वाली।** उ.—बजाजिनि है जाउँ निरखि नैनन सुख देऊँ—पृ० ३४६ (६१)।

बजाजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बजाज) **बजाज का काम।**

बजाना—क्रि. अ. [हिं. बाजा] (१) **बाजे आदि से शब्द उत्पन्न करना।** (२) **आघात से शब्द उत्पन्न करना।**

मुहा०—ठोकना-बजाना—**देखना-भालना, जाँच-कर परखना।**

(३) **शस्त्र से मारना।**

क्रि. स.—**पूरा या पालन करना।**

बजाय—अव्य. [फा.] **स्थान पर, बदले में।**

बजायो—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बाजे से शब्द निकाला, बजाया।** उ.—(क) ताल, मृदंग, झाँझ, इन्द्रिन मिलि, बीना, बेनु बजायौ—१-२०५। (ख) जागी महरि पुत्र मुख देख्यौ, आनन्द-तूर बजायौ—१०-४।

बजार—संज्ञा पुं. [फा. बाजार] **हाट, पठ, बाजार।**

बजारी—वि. [हिं. बाजारी] (१) **बजारू।** (२) **साधारण।**

बजारू—वि. [हिं. बाजारू] (१) **बाजार का।** (२) **मामूली।**

बजावत—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बजाता है, बाजे से स्वर निकालता है।** उ.—हठ, अन्याय, अधर्म सूर नित नौबत द्वार बजावत—१-१४१।

बजावते—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बजाते हैं।** उ.—दूरहिं ते वह बैन अधर धरि बारंबार बजावते—२०३५।

बजावहिंगे—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बजायेंगे।** उ.—तैसीए दमकति दामिनि अरु मुरली मलार बजावहिंगे—२८८६।

बजावहीं—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बजाते हैं।** उ.—दिवि दुंदुभी बजावहीं, फन-प्रति निरतत स्याम—५८६।

बजावै—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बजाता है।** उ.—मदन मोहन बेनु मृदु मृदुल बजावै री—६२६।

बजी—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. बजना] **बजने लगी, (बाँसुरी आदि) से शब्द निकाला गया।** उ.—(क) राजा के घर बजी बधाइ—५-२। (ख) तैसे सूर सुने जदुनंदन बजी एक रस ताँति—३११८।

बजुल्ला—संज्ञा पु. [हिं. बाजू] **बाँह का एक भूषण।**

बजैहै—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बजायगी।**

मुहा०—गाल बजैहै—**बढ़-बढ़कर बात करेगी, डींग हाँकेगी।** उ.—देखहु जाइ चरित तुम वाके जैसे गाल बजैहै—१२६३।

बज्जना—क्रि. अ. [हिं. बजना] **बजना।**

बज्जर—संज्ञा पुं. [सं. वज्र] (१) **वज्र।** (२) **बिजली।**

बज्जात—वि. [फा. बदजात] **दुष्ट, पाजी।**

बज्र—संज्ञा पुं. [सं. वज्र] **इंद्र का शस्त्र, कुलिश।**

मुहा०—बज्र परै **नाश हो जाय।** उ.—परै बज्र या नृपति-सभा पै, कहति प्रजा अकुलानी—१-२५०।

वि.—**दृढ़, बहुत मजबूत।** उ.—बंदि बेरी सबै छुटी, खुले बज्र कपाट—१०-५।

बज्री—संज्ञा पुं. [सं. वज्रिन्] **इंद्र।**

बज्रनाभ—संज्ञा पुं. [सं. वज्रनाभ] **अनिरुद्ध का पुत्र जिसे युधिष्ठिर ने मथुरापति बनाया था।** उ.—राज परीच्छित कौं नृप दीन्हौ। बज्रनाभ मथुरापति कीन्हौ—१-२८८।

बज्रवर्त—संज्ञा पुं. [सं. वज्रवर्त्त] **मेघों का एक भेद।** उ.—जलवर्त, वारिवर्त, पवनवर्त्त, बज्रवर्त, अग्निवर्तक—६४४।

बझना—क्रि. अ. [सं. वद्ध, प्रा. बज्झ+ना] (१) **बधन में पड़ना, बँध जाना।** (२) **उलझना, अटकना।** (३) **हठ करना।**

बझवट—वि. [हिं. बाँझ+वट] **बाँझ (स्त्री या पशु)।**

बझाना—क्रि. स. [हिं. बझना] (१) **बंधन में डालना।** (२) **उलझाना, अटकाना, फँसाना।**

बझाव—संज्ञा पुं. [हिं. बझना] (१) **फँसाव।** (२) **उलझाव।**

बझावट—संज्ञा स्त्री. [हिं. बझना+आवट] (१) **फँसने का भाव।** (२) **उलझाव, अटकाव।**

बझावना—क्रि. स. [हिं. बझाना] (१) **बँधाना।** (२) **फँसाना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बझे—क्रि. अ. [हिं. बझना] **बँधन में पड़े, बँध गये।** उ.—(क) स्याम हृदय अति बिसाल, माखन दधि बिंदु-जाल, मोह्यौ मन नंदलाल, बाल हीं बझे री—१०-२७५। (ख) चली प्रात ही गोपिका मटुकिन लै गोरस।....।जीव परयौ या ख्याल में अरु गए दसादस। बझे जाय खगवृंद ज्यौं प्रिय छबि लटकनि बस—१३७७।

बट—संज्ञा पुं. [सं. वट] (१) **बरगद का वृक्ष।** (२) **बड़ा (एक खाद्य)।** (३) **गोल वस्तु।** (४) **ऐंठन, बटाई।** (५) **पुराणानुसार वह वट-वृक्ष जो प्रलयकाल में सुरक्षित रहा था और जिस पर भगवान ने बाल-रूप में शयन किया था।** उ.—कर पग गहि, अँगुठा मुख मेलत।...। बट बाढ्यौ सागर-जल झेलत—१०-६३।

संज्ञा पुं. [हिं. बाट] **मार्ग, रास्ता।**

बटई—संज्ञा स्त्री. [सं. वर्त्तक] **बटेर (पक्षी)।**

बटखर, बटखरा—संज्ञा पुं. [सं. वटक] **तौलने का बाट।**

बटन—संज्ञा स्त्री. [हिं. बटना] **बटने का भाव, ऐंठन।**

बटना—क्रि. स. [सं. वट=बटना] **ऐंठन देकर मिलाना।**

क्रि. अ. [हिं. बट्टा] **सिल पर पीसा जाना।**

संज्ञा पुं. [सं. उद्वर्त्तन, प्रा. उब्बट्टन] **उबटन।**

बटपरा, बटपार—संज्ञा पुं. [हिं. बाट+पड़ना, बटपार] **ठग, डाकू, लुटेरा।** उ.—चोर ढुंठ बटपार अन्याई अपमारगी कहावैं—पृ. ३२६ (५२)।

बटपारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बटपार] **डकैती, ठगी, लूट।**

संज्ञा पुं.—**डाकू, लुटेरा।** उ. (क) बटपारी, ठग, चोर, उचक्का, गाँठिकटा, लठबासी—१-१८६। (ख) सुनहु सूर प्रभु नीके जान्यौ ब्रज जुवती तुम सन बटपारी—११६०।

बटपारे, बटपारो—संज्ञा पुं. [हिं. बटपार] **ठग, लुटेरा।** उ.—राधे तेरे नैन किधौं बटपारे—२१६२।

बटमार—संज्ञा पुं. [हिं. बाट+मारना] **ठग, लुटेरा।**

बटला—संज्ञा पुं. [सं. वर्तुल, प्रा. वट्टुल] **बड़ी बटलोई।**

बटली, बटलोई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बटला] **पतीली।**

बटवार—संज्ञा पुं. [हिं. बाट+वाला] (१) **राह-बाट का पहरेदार।** (२) **राह का कर वसूलनेवाला।**

बटा—संज्ञा पुं. [सं. वटक] (१) **गोल वस्तु।** (२) **गद।** उ.—(क) लै चौगान-बटा अपनैं कर, प्रभु आए घर बाहर—१०-२४३। (ख) बटा धरती डारि,दीनौ,लै चले ढरकाइ—१०-२४४। (ग) देखत ही उड़ि गए हाथ ते भए बटा नट के—पृ.—२३६ (५२)। (३) **रोड़ा, ढेला।** (४) **पथिक, राही।**

बटाइ—क्रि. स. [हिं. बाँटना] **बाँट कर, हिस्से करके।**

प्र०—देहु बटाइ—**बाट दो, विभाग कर दो।** उ.—बिदुर कह्यौ मति करौ अन्याइ। देहु पांडवनि राज बटाइ—१-२८४।

बटाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बटना] **बटने का काम या भाव।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. बँटाई] **बाँटने का काम या भाव।**

क्रि. स. [हिं. बटाना] **विभाजित की।**

बटाऊ—संज्ञा पुं. [हिं. बाट=रास्ता+आऊ (प्रत्य.)] **बटोही, पथिक, राही।** उ.—किहिं घाँ के तुम बीर बटाऊ, कौन तुम्हारौ गाउँ—६-४४। (ख) कहि धौं सखी बटाऊ को हैं—६-४५। (ग) बीर बटाऊ पंथी हो तुम कौन देस तें आए—२८८३।

मुहा०—बटाऊ होना—**चल देना।**

बटाक—वि. [हिं. बड़ा] **ऊँचा, बड़ा।**

बटाना—क्रि. अ. [हि. बटाना] (मेह) **बंद हो जाना।**

बटान्यो—क्रि. अ. [हिं. बटाना] (मेह) **बंद हो गया।** उ.—सात दिवस जल बरषि बटान्यो आवत चल्यो ब्रजहि अत्रावत।

बटिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. बटा] (१) **छोटा गोला।** (२) **लोढ़िया।**

बटी—संज्ञा स्त्री. [सं. वटी] (१) **गोली** (२) **बड़ी** (खाद्य)।

संज्ञा स्त्री. [सं. वाटी] **वाटिका, उपवन।**

बटु—संज्ञा पुं. [सं. बटु] **ब्रह्मचारी।** उ.—धरि बटु रूप चले बामन जू अंबुज नयन बिसाला—सारा. ३३३।

बटुआ—संज्ञा पुं. [हिं. बटुवा] (१) **एक तरह की छोटी थैली।** उ.—बटुआ झोरी दंड अधारा इतनेन को आराधै—३२८४। (२) **बड़ी बटलोई।**

बटेर—संज्ञा स्त्री. [सं. वर्त्तक, प्रा. बट्टा] **एक छोटी चिड़िया।**

बटोई—संज्ञा पुं. [हिं. बटोही] **यात्री, पथिक।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बटोर—संज्ञा पुं. [हिं. बटोरना] (१) **जमाव।** (२) **ढेर।**

बटोरत—क्रि. स. [हिं. बटोरना] **समेटता है, बटोरकर उठाता है।** उ.—कबहूँ मग-मग धूरि बटोरत, भोजन कौं बिलखात—२-२२।

बटोरन—संज्ञा स्त्री. [हिं. बटोरना] (१) **बिखरी वस्तुओं को समेट कर लगाया गया ढेर।** (२) **खेतों में बिखरा हुआ दाना जो बटोरा जाय।** (२) **कूड़-करकट का ढेर।**

बटोरना—क्रि. स. [हिं. बटुरना] (१) **बिखरी चीज को एक स्थान पर एकत्र करना।** (२) **फैली चीज को समेटना।** (३) **इधर-उधर पड़ी चीजों को चुनना।** (४) **इकट्ठा या एकत्र करना।**

बटोहिया, बटोही—संज्ञा पुं. [हिं. बाट+वाह (प्रत्य.), बटोही] **यात्री, पथिक, राही।**

बट्ट—संज्ञा पुं. [हिं. बटा] (१) **गोला।** (२) **गेंद।** (३) **ऐंठन, मरोड़** (४) **तौल का बाट।**

बट्टा—संज्ञा पुं. [सं. वार्त्त, प्रा. वाट्ट=बनियाई] **दलाली, दस्तूरी।** उ.—बट्टा काटि कसूर भरम कौ, पोता-भजन भरावै—१-१४२।

मुहा०—बट्टा करना—**दस्तूरी ले लेना।**

(२) **सिक्के आभूषण आदि के बदलने, बेचने या तुड़ाने से कटने वाली कमी।** (३) **खोटे सिक्के के बदलने में बेचने से होनेवाली कमी।**

मुहा०—बट्टा लगना—**दाग या कलंक लगना।** बट्टा लगाना—**दाग या कलंक लगाना।**

(४) **घाटा, हानि, टोटा।**

संज्ञा पुं. [हिं. बटा=गोला] (१) **सिल पीसने का लोढ़ा।** (२) **ईंट, पत्थर का गोल टुकड़ा।**

बट्टाखाता—संज्ञा पुं. [हिं. बट्टा+खाता] **वह बही या खाता जिसमें डूबी हुई रकम लिखी जाय।**

बट्टी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बट्टा] (१) **छोटा बट्टा, लोढ़िया।** (२) **बड़ी टिकिया या टिक्की।**

बठपारिनि—संज्ञा स्त्री. बहु. [हिं. बटपारी] **ठग, लुटेरी।** उ.—फंसिहारिनि बठपारिनि हम भईं, आपुन भए सुधर्मा—११६०।

बड़—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **बकवाद, लाप।**

संज्ञा पुं. [सं. वट] **बरगद का पेड़।**

वि. स्त्री., पुं. [हिं. बड़ा] (१) **बड़ा, बड़ी।** उ.—(क) हौं बड़ हौं बड़ बहुत कहावत, सूधैं करत न बात—२-२२। (ख) दानव-सुर बड़ सूर—६-२६। (ग) जाति-पाँति हमहैं बड़ नाही—१०-२४५। (घ) खेलत मैं कह छोट-बड़—५८६। (२) **पद, शक्ति, अधिकार, मान-मर्यादा में अधिक, श्रेष्ठ।** उ.—हरि के जन सब तैं अधिकारी। ब्रह्मा महादेव तैं को बड़, तिनकी सेवा कछु न सुधारी—१-३४।

बड़का—वि. [हिं. बड़ा] **बड़ा, बड़ावाला।**

बड़प्पन—संज्ञा पुं. [हिं. बड़ा+पन] **बड़ाई, श्रेष्ठता, महत्व, गौरव।** उ.—ताके झुगिया में तुम बैठे कौन बड़प्पन पायौ—१-२४४।

बड़बड़—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **बकवाद, प्रलाप।**

बड़बड़ाना—क्रि. अ. [अनु. बड़बड़] (१) **बकवाद करना।** (२) **झुंझलाहट की स्थिति में धीरे-धीरे बकना।**

बड़बड़िया—वि. [अनु. बड़बड़] **बकवादी।**

बड़बोल—वि. [हिं. बड़ा+बोल] (१) **बहुत बोलनेवाला, बकवादी।** (२) **बढ़-बढ़ कर बोलनेवाला, शेखीखोर।**

बड़बोला—वि. [हिं. बड़ा+बोल] **डींग हाँकनेवाला।**

बड़भाग, बड़भागि, बड़भागी—वि. [हिं. बड़ा+भागी] **भाग्यवान।** उ.—(क) भुजा छौरि उठाइ लीन्हें, महर हैं बड़भागि—३८७। (ख) बड़भागी के सब ब्रजबासी। जिनकैं संग खेलैं अबिनासी—१०-३। (ग) ऊधो, हम आजु भईं बड़भागी—३०१५।

बड़रा—वि. [हिं. बड़ा] **आकार में बड़ा।**

बड़राना—क्रि. अ. [हिं. बर्राना] **नींद में बकना।**

बड़री—वि. स्त्री. [हिं. बड़री] **आकार में बड़ी।**

बड़वा, बड़वागि, बड़वाग्नि—संज्ञा पुं. [सं. बड़वाग्नि] **समुद्र के भीतर की आग।**

बड़वानल—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र की आग।**

बड़वार—वि. [हिं. बड़ा] **बड़ा, श्रेष्ठ।**

बड़वारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बड़वार] **बड़ाई, महत्व।**

बड़हर, बड़हल—संज्ञा पुं. [हिं. बड़ा+फल] **एक वृक्ष।**

बढ़हार—संज्ञा पुं. [हिं. वर+आहार] **विवाह के पश्चात् वर और बरातियों का भोज।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा—वि. [सं. वर्द्धन] (१) **दीर्घ, विशाल।**

मुहा०—बड़ा घर—**बंदीगृह, कारागार।**

(२) **अवस्था में अधिक। (३) अवस्था, परिमाण या विस्तार का। (४) पद, मान आदि में अधिक।**

मुहा०—बड़ा घर—**धनी और प्रतिष्ठित घराना।**

(५) **गुण, प्रभाव आदि में अधिक।**

मुहा०—बड़ा आदमी—(१) **धनी।** (२) **ऊँचे पदवाला।**

(६) **किसी बात में बढ़कर।**

संज्ञा पुं. [हिं. बटा] **एक खाद्य पकवान।**

बड़ाइ, बड़ाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बड़ा+ई] (१) **परिमाण या विस्तार में अधिक।** (२) **पद, मान, गौरव में अधिक, बड़प्पन।** उ.—(क) बासुदेव की बड़ी बड़ाई। जगतपति, जगदीस, जगतगुरु, निज भक्तन की सहत ढिठाई—१-३। (ख) राजा छोरि बंदि तैं ल्याए, तिहूँ लोक मैं बिदित बड़ाइ—४६७। (३) **प्रशंसा।**

(३) **महिमा, प्रशंसा, तारीफ।** उ.—(क) जहँ-तहँ सुनियत यहै बड़ाई मो समान नहिं आन - १-१४५। (ख) दिन दिन इनकी करौं बड़ाई अहिर गए इतराइ—२५७८।

मुहा०—बड़ाई देना—**आदर करना।** बड़ाई मारना—**शेखी हांकना, डींग मारना।**

(४) **परिमाण, विस्तार या फैलाव।**

बड़ाबोल—संज्ञा पुं. [हिं. बड़ा+बोलना] **घमंड की बात।**

बड़िए—वि. [हिं. बड़ी] **बड़ी ही।** उ.—बड़ो दूत तू बड़ी उमर को बड़िए बुद्धि बड़ोई—३०२२।

बड़ियाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बड़ाई] **बड़ाई, प्रशंसा।** उ.—प्रभु आज्ञा तैं घर कौं आई। पुरुष करत तिनकी बड़ियाई—८००।

बड़ी—वि. स्त्री. [हिं. बड़ा] (१) **बड़े आकार या विस्तार की।** (२) **पद, मान आदि में अधिक।**

मुहा०—बड़ी बात—**बहुत संतोषजनक बात, गनीमत।** उ.—बड़ी बात भई कमल पठाए, मानहुँ आपुन जल तैं ल्याए—५८८।

बड़े—वि. [हिं. बड़ा] (१) **आदर, पद आदि में अधिक।** उ.—(क) बड़े बाप के पूत कहावत····· नंदहु तैं ये बड़े कहैहैं—१०-३१६। (ख) वहाँ जादव पति प्रभु कहियत हमैं न लगत बड़े—३१५१।

मुहा०—बड़े घर की—**प्रतिष्ठित और धनी घराने की।** उ.—बड़े घर की बहू-बेटी करति बृथा झवारि—११३५।

बड़ेरर—संज्ञा पुं. [देश.] **बवंडर, चक्रवात।**

बड़ेरा—वि. [हिं. बड़ा] (१) **बड़ा।** (२) **प्रधान।**

संज्ञा पुं.—**छाजन के बीच की लकड़ी जो लंबाई के बल होती है।**

बड़ेरे—वि. बहु. [हिं. बड़ेरा] **बड़े।** उ.—जे द्रुम सींचि सींचि अपने कर कियो बढ़ाय बड़ेरे—२७२०।

बड़ेरो—वि. [हिं. बड़ेरा] (१) **बड़ा।** उ.—बनि बनि आवत हैं लाल भाग बड़ेरो मेरे—पृ. ३१६ (८६)। (२) **आयु या पद में बड़ा।** उ.—मेरो सुत सरदार सबनि कौ बहुतै कान्ह बड़ेरौ—१०-२१५।

बड़ैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. बड़ाई] **कीर्ति, मान।** उ.—इतने बड़े और नहिं कोऊ इहिं सब देत बड़ैया—२३७४।

बड़ोइ—वि. [हिं. बड़ा] (१) **खूब लंबा-चौड़ा, अधिक विस्तार का।** (२) **अधिक अवस्था का।** उ.—सुनि देवता बड़े, जग-पावन, तू पति यों कुल कोइ। ·पूजिहौं, बेगि यह बालक करि दै मोहिं बड़ोइ—१०-५६।

बड़ौ—वि. [हिं. बड़ा] (१) **बढ़कर, श्रेष्ठ, अधिक, बढ़ा-चढ़ा।** उ.—ब्याध, गीध अरु पतित पूतना, तिनतैं बड़ौ जु और—१-१४५। (२) **बड़े डील-डौल का, मोटा-ताजा।** उ.—मैया मोहिं बड़ौ करि लै री—१०-१७६।

बड़ौना—संज्ञा पुं. [हिं. बड़ापन] **बड़ाई, महिमा।**

बढ़—वि. [हिं. बढ़ना] **अधिक, बड़ा हुआ।**

संज्ञा—**बढ़ती, अधिकता।**

बढ़इयै—क्रि. स. [हिं. बढ़ाना] **बढ़ाइए, वर्द्धित कीजिए।** उ.—सूरदास-प्रभु भक्तनि कैं बस, भक्तनि प्रेम बढ़इयै—१-२३६।

बढ़ई—संज्ञा पुं. [सं. वर्द्धकि, प्रा. बड्ढइ] **लकड़ी को छील और गढ़कर अनेक सामान बनानेवाला।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़त—क्रि. अ. [हिं. बढ़ना] **बढ़ता है।** उ.—पुनि पाछैं-अघ-सिंधु बढ़त है, सूर खाल किन पाटत—१-१०७।

बढ़ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. बढ़ना+ती] **वृद्धि, उन्नति।**

बढ़न—संज्ञा स्त्री. [हिं. बढ़ना] **वृद्धि, बढ़ती।**

बढ़ना—क्रि. अ. [सं. वर्द्धन, प्रा. बड्ढन] (१) **डील-डौल या लंबाई-चौड़ाई में वृद्धि को प्राप्त होना।**

मुहा०—बात बढ़ना—**विवाद या झगड़ा होना।**

(२) **गिनती या नाप-तौल में ज्यादा होना।** (३) **बल, प्रभाव या गुण में अधिक होना।** (४) **पद, मर्यादा, अधिकार आदि में अधिक होना।** (५) **स्थान-विशेष से आगे जाना।** (६) **चलने-दौड़ने में आगे हो जाना।** (७) **किसी बात में आगे हो जाना।** (८) **भाव आदि का अधिक हो जाना।** (९) **लाभ होना।** (१०) **दूकान आदि बंद होना।** (११) **दीपक का बुझना।**

बढ़नी—संज्ञा स्त्री. [सं. वर्द्धनी, प्रा. बड्ढनी] **झाड़ू।**

बढ़यौ—क्रि. अ. [हिं. बढ़ना] **बढ़ा, विस्तार में अधिक हुआ।** उ.—द्रौपदी कौ चीर बढ़यौ, दुस्सासन गारी—१-१७६।

बढ़वारि—संज्ञा स्त्री. [हिं. बढ़ना] **वृद्धि, बढ़ती।**

बढ़ाइ, बढ़ाई—क्रि. स. [हिं. बढ़ाना] (१) **बढ़ाकर, अधिक करके।** उ.—मोह्यौ जाइ कनक कामिनि-रस, ममता-मोह बढ़ाई—१-१४७। (२) **विस्तृत की (भूत०)।**

बढ़ाऊँ—क्रि. स. [हिं. बढ़ाना] **विस्तृत करूँ, आकार में बढ़ाऊँ।** उ.—मोहन-मुर्छन-बसीकरन पढ़ि, अगमिति देह बढ़ाऊँ—१०-४६।

बढ़ाए—क्रि. स. बहु. [हिं. बढ़ाना] **बढ़ाया, वृद्धि की।** उ.—हरष नँदराइ कैं मन बढ़ाए—५८७।

बढ़ायौ—क्रि. स. [हिं. बढ़ाना] **वृद्धि की।** उ.—गुरु बसिष्ठ अरु मिलि सुमंत सौं अति हीं प्रेम बढ़ायौ—९-५५।

बढ़ाना—क्रि. स. [हिं. बढ़ना] (१) **लम्बाई-चौड़ाई या डील-डौल में अधिक करना।**

मुहा०—बात बढ़ाना—(१) **अत्युक्तिपूर्वक कुछ कहना।** (२) **झगड़ा या विवाद करना।**

(२) **गिनती या नाप-तौल में अधिक करना।** (३) **बल, प्रभाव या गुण में अधिक करना।** (४) **पद, मर्यादा, अधिकार आदि में अधिक करना।** (५) **स्थान-विशेष से आगे कर देना।** (६) **चलने, दौड़ने में आगे कर देना।** (७) **किसी बात में आगे कर देना।** (८) **भाव आदि को बढ़ा देना।** (९) **फैलाना, विस्तार करना।** (१०) **दूकान आदि बंद करना।** (११) **फैलाना, लंबा करना।** (१२) **दीपक बुझाना।**

क्रि. अ.—**चुकना, समाप्त होना।**

बढ़ाने—क्रि. अ. [हिं. बढ़ाना] **समाप्त हो गये, चुक गये।** उ.—मेघ सबै जल बरषि बढ़ाने, बिबि गुन गए सिराई—९६७।

बढ़ाली—संज्ञा स्त्री. [देश.] **कटार, कटारी।**

बढ़ाव—क्रि. स. [हिं. बढ़ाना] **बढ़ाती है।** उ.—जाकौ सिव-बिरंचि सनकादिक मुनिजन ध्यान न पाव। सूरदास जसुमति ता सुत हित, मन अभिलाष बढ़ाव—१०-७५।

संज्ञा पुं. [हिं. बढ़ना+आव] (१) **बढ़ने की क्रिया या भाव।** (२) **विस्तार, फैलाव।** (३) **अधिकता।** (४) **उन्नति।**

बढ़ावत—क्रि. स. [हिं. बढ़ावना] **बढ़ाते हैं।** उ.—छज्जे महलन देखि कै मन हरष बढ़ावत—२५६०।

बढ़ावति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. बढ़ावना] **बढ़ाती है।**

मुहा०—बढ़ावति रारि—**झगड़ा बढ़ाती है, विवाद करती है।** उ.—बादति है बिन काज हीं, बृथा बढ़ावति रारि—५८९।

बढ़ावना—क्रि. स. [हिं. बढ़ाना] **वृद्धि करना, बढ़ाना।**

बढ़ावा—संज्ञा पुं. [हिं. बढ़ाव] **प्रोत्साहन।**

बढ़ावै—क्रि. स. [हिं. बढ़ाना] **परिमाण या मात्रा में अधिक किया।** उ.—ऐसौ और कौन करुनामय, बसन-प्रवाह बढ़ावै—१-१२२।

बढ़ि—क्रि. अ. [हिं. बढ़ना] **वृद्धि पाकर।**

प्र०—बढ़ि गयौ—**डील-डौल में अधिक हो गया।** उ.—पुनि कमंडल धरयौ, तहाँ सो बढ़ि गयौ—८-१६।

मुहा०—कहन लगीं बढ़ि बढ़ि बात—**घमण्डभरी या इतरानेवाली बात कहने लगीं, छोटे मुँह बड़ी बात कहने लगीं।** उ.—कहन लगीं अब बढ़ि बढ़ि बात। ढोटा मेरौ तुमहिं बँधायौ, तनकहिं माखन खात—३५५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़िया—वि. [हिं. बढ़ना] **अच्छा, उत्तम।**

बढ़ी—क्रि. स. [हिं. बढ़ना] **परिमाण, विस्तार या फैलाव में अधिक हो गयी।** उ.—बीच बढ़ी जमुना जलकारी—१०-११।

बढ़ै—क्रि. अ. [हिं. बढ़ना] **बढ़ जाय, वृद्धि को प्राप्त हो।** उ.—(क) अज्ञानी-सँग बढ़ै अज्ञान—५-२। (ख) कजरी कौ पय पियहु लाल, जासौं तेरी बेनि बढ़ै—१०-१७४।

बढ़ैया—संज्ञा पुं. [हिं. बढ़ई] **लकड़ी का काम करनेवाला, बढ़ई।** उ.—पालनौ अति सुंदर गढ़ि ल्याउ रे बढ़ैया—१०-४१।

वि. [हिं. बढ़ना, बनाना] (१) **बढ़नेवाला।** (२) **बढ़ानेवाला।**

बढ़ैहैं—क्रि. स. [हिं. बढ़ाना] **बढ़ायेंगे।** उ.—पचएँ बुध कन्या कौ जौ है, पुत्रनि बहुत बढ़ैहैं—१०-८६।

बढ़ैहै—क्रि. स. [हिं. बढ़ना] **बढ़ायगी।** उ.—गुप्त प्रीति काहे न करी हरि सों प्रगट किंए कछु नफा बढ़ैहै—११९२।

बढ़ोतरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाढ़+उतर] **वृद्धि, उन्नति।**

बढ़्यौ—क्रि. अ. [हिं. बढ़ना] **अधिक प्रबल हो गया, बल और प्रभाव में अधिक हो गया।** उ.—हिरनकस्यप बढ़्यौ उदय अरु अस्त लौं—१-५।

बणिक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **व्यापार करनेवाला, बनिया।** (२) **बेचनेवाला, विक्रेता।**

बत—संज्ञा स्त्री. [हिं. बात] **बात (यौगिक शब्द प्रयोग)।**

बतकहाव—संज्ञा पुं. [हिं. बात+कहाव] (१) **बातचीत।** (२) **कहा-सुनी, तर्क-कुतर्क, विवाद।**

बतकही—संज्ञा स्त्री. [हिं. बात+कहना] **बातचीत।**

बतख—संज्ञा स्त्री. [अ. बत] **एक बड़ी चिड़िया।**

बतचल—वि. [हिं. बात+चलना] **बकवादी, बकनेवाला, वक्की।** उ.—जानी जात सूर हम इनकी, बतचल चंचल लोल—३२६५।

बतबढ़ाव—संज्ञा पुं. [हिं. बात+बढ़ाव] **कहासुनी, विवाद।**

बतरस—संज्ञा पुं. [हिं. बात+रस] **बात करने का आनन्द।**

बतराति—क्रि. प्र. [हिं. बतराना] **बात करती है।** उ.—हम जानी अब बात तुम्हारी सूधे नहिं बतराति—१८८७।

बतरान—संज्ञा स्त्री. [हिं. बतराना] **बातचीत।**

बतराना—क्रि. प्र. [हिं. बात+आना] **बात करना।**

बतरौहाँ—वि. [हिं. बात] (१) **बात करने की चाह रखने वाला।** (२) **बात करता हुआ।**

बतलाना—क्रि. स. [हिं. बताना] **कहना, बताना।**

क्रि. अ. **बातचीत करना।**

बताइ—क्रि. स. [हिं. बताना] **कहना, सूचित करना।**

प्र०—देहु बताई—**बता दो, सूचित करो।** उ.—तुम बिनु साँकरैं को काकौ। तुम हीं देहु बताइ देव-मनि, नाम लेउँ धौं ताकौ—१-११३।

बताई—क्रि. स. [हिं. बताना] **सूचित किया, जताया, निर्देश दिया।** उ.—मन-बच-क्रम हरि-नाम हृदय धरि, ज्यौं गुरु वेद बताई—१-३१८।

बताउ—क्रि. स. [हिं. बताना] **बताओ, सूचित करो, जनाओ।** उ.—को करि सकै बराबरि मेरी, सो धौं मोहिं बताउ—१-१४५।

बताऊँ—क्रि. स. [हिं. बताना] **कहूँ, जानकारी कराऊँ, सूचित करूँ।** उ.—अंबर जहाँ बताऊँ तुमकौं, तौ तुम कहा देहुगी हमकौं—७९६।

बतात—क्रि. अ. [हिं. बताना] **बताते हो या बात करते हो।** उ.—टेढ़ै कहा बतात, कंसकौं देहु कमल अब। कालिहिं पठए माँगि पुहुप अब ल्याइ देहु जब—३८९।

बताना—क्रि. स. [हिं. बात+ना] (१) **कहना, कहकर सूचित करना।** (२) **समझाना-बुझाना।** (३) **दिखाना, निर्देश करना।** (४) **काम के लिए कहना।** (५) **नाचने-गाने में भाव प्रकट करना।** (६) **दण्ड देकर ठीक रास्ते पर लाना।**

क्रि. अ.—**बोलना।**

बतानी—क्रि. अ. [हिं. बताना] **बोली, आवाज दी।** उ.—नंद महर घर के पिछवारे राधा आइ बतानी हो—१५५६।

बतायौ—क्रि. स. [हिं. बताना] **दिखाया, प्रदर्शित या निर्देशित किया।** उ.—नंद घरनि तब मथि दह्यौ, इहि भाँति बतायौ—७१६।

बतावत—क्रि. स. [हिं. बताना] **संकेत करता है, संकेत से**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात करता है। उ.—चितै रहे तब आपुन ससि-तन, अपने कर लै लै जु बतावत—१०-१८८।

बतावति—क्रि. स. [हिं. बताना] (१) **सूचित करती है, निर्देश देती है, जताती है, दिखाती है**। उ.—प्रात समय रवि-किरनि-कोंवरी, सो कहि, सुतहिं बतावति है—१०-७३। (२) **कहती या बताती है**। उ.—कबहुँ कहति बन गए, कबहुँ कहि घरहिं बतावति—५८६।

बतावै—क्रि. स. [हिं. बताना] (१) **बताता है, सूचित करता है, जताता है**। उ.—अहंकार पटवारी कपटी, झूठी लिखत बही। लागै धरम, बतावै अधरम, बाकी सबै रही—१-१८५। (२) **संगीत या नृत्य के भाव बताता है**। उ.—कबहुँक आगे कबहुँक पाछे नाना भाव बतावै—८७७।

बतावौ—क्रि. स. [हिं. बताना] **बताओ, कहो, सूचित करो**। उ.—कत व्रीड़त कोउ और बतावौ, ताही के ह्वै रहिये—१-१३६।

बतास—संज्ञा स्त्री. [सं. वातासह] (१) **वायु, हवा**। उ.—जबतैं जनम भयौ है तेरौ, तबहिं तैं यह भाँति लला रे। कोउ आवति जुवती मिस करिकै, कोउ लै जात बतास-कला रे—६०८। (२) **बात-रोग, गठिया**।

बतासा—संज्ञा पुं. [हिं. बतास=हवा] (१) **एक तरह की मिठाई**। (२) **बुलबुला, बुद्बुद**।

मुहा०—बतासा सा घुलना—(१) **शीघ्र नष्ट होना (कोसना, गाली)**। (२) **क्षीण होते जाना**।

बतासे—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. बतासा] **बहुत से बतासे**। उ.—तिल चाँवरी बतासे, मेवा दियौ कुँवरि की गोद—७०४।

बतिअन, बतिअनि—संज्ञा स्त्री. सवि. [हिं. बात] **केवल बातों से, कोरा उपदेश देकर**। उ०—बतिअन सब कोऊ समुझावै—३३८१।

बतियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. बात] **बात, बचन**। उ.—वै बतियाँ छुतियाँ लिखि राखीं जे नँदलाल कहीं—२८६६।

मुहा०—कहत बनाइ बतियाँ—**सिर्फ बात करने से, कोरी चर्चा से**। उ.—कहत बनाइ दीप की बतियाँ, कैसैं धौं तम नासत—२-२५। झूँठी बतियाँ जोरि—**मनमानी बातें गढ़कर**। उ.—उरहन लै जुवती सब आवति झूँठी बतियाँ जोरि—८६८।

बतिया—संज्ञा पुं. [सं. वर्त्तिका, प्रा. वत्तिआ] **छोटा कच्चा फल**।

बतियाना—क्रि. अ. [हिं. बात] **बातचीत करना**।

बतियार—संज्ञा स्त्री. [हिं. बात] **बातचीत**।

बतू—संज्ञा पुं. [हिं. कलाबतू] **रेशम पर बटा हुआ सोने-चाँदीका तार**।

बतीस—वि. [हिं. बत्तीस] **बत्तीस**। उ.—द्वै पिक बिंब बतीस बज्रकन एक जलज पर थात—१६८२।

बतैए—क्रि. स. [हिं. बताना] **बताइए, समझाइए**। उ.—जेहि उपदेश मिलैं हरि हमको सो व्रत-नेम बतैए—३१२४।

बतैहैं—क्रि. स. [हिं. बताना] **बतायेंगे**।

मुहा०—कहा बतैहैं—**क्या उत्तर देंगे, कैसे अस्वीकार करेंगे**। उ.—खायो खेले संग हमारे याको कहा बतैहैं—३४३६।

बतौर—क्रि. वि. [अ.] (१) **रीति से**। (२) **समान**।

बत्ती—संज्ञा स्त्री. [सं. वर्त्ति, प्रा. बत्ति] (१) **सूत, रुई, कपड़े आदि का बटा हुआ टुकड़ा जो दीपक में जलाया जाता है**। (२) **दीपक**। (३) **पलीता**। (४) **फूस का पूला**।

बत्तीसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बत्तीस]। (१) **बत्तीस का समूह**। (२) **मनुष्य के दाँत जो बत्तीस होते हैं**।

मुहा०—बत्तीसी झड़ जाना [पड़ना]—**सब दांत गिर जाना**। बत्तीसी दिखाना—**हँसना**। बत्तीसी बजना—**दाँत किटकिटाना**।

बत्यावई—क्रि. अ. [हिं. बात, बतियाना] **बातचीत करती है, बतियाती है**। उ.—जसुमति भाग-सुहागिनी, हरि कौं सुत जानै। मुख-मुख जोरि बत्यावई, सिसुताई ठानै—१०-७२।

बत्स—संज्ञा पुं. [सं. वत्स] (१) **बछड़ा**। (२) **बालक**।

बत्सल—वि. [सं. वत्सल] **अत्यन्त स्नेहवान् या कृपालु**। उ.—भक्त-बत्सल कृपानाथ, असरन-सरन, भार-भूतल हरन जस सुहायौ—१-११६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बत्सलता—संज्ञा पुं. [सं. वत्सल + हिं. ता] (१) **प्रेम, स्नेह**। (२) **दया, कृपा**। उ.—सूर भक्त-बत्सलता बरनौं, सर्व कथा कौ सार—१-२६७।

बत्सासुर—संज्ञा पुं. [सं. वत्सासुर] **कंस का अनुचर एक राक्षस जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था।**

बथान—संज्ञा पुं. [सं. वत्स+स्थान] **गो-गृह**।

बथुआ—संज्ञा पुं. [सं वास्तुक, पा० बात्थुअ] **एक साग**। उ.—बथुआ भली भाँति रचि राँध्यौ—२३२१।

बद—वि. [फ़ा.] (१) **बुरा**। (२) **दुष्ट, नीच**।

संज्ञा स्त्री. [सं. वर्त] **बदला, एवज**।

मुहा०—बद में—**बदले में, स्थान पर**। उ.—गुरुग्रह जब हम बन को जात। तुरत हमारे बद में लकरी लावत सहि दुख गात।

क्रि. स. [हिं. बदना] **ठहराकर, स्थिर करके**।

मुहा०—बद कर (काम करना) (१) **दृढ़ता या हठ के साथ**। (२) **ललकारकर, चुनौती देकर**। बदकर कहना—**पूरी दृढ़ता से कहना**।

बदत—क्रि. स. [हिं. बदना] **गिनती में लाता है, समझता है, मानता है, बड़ा या महत्व का ख्याल करता है**। उ.—(क) सब तजि तुम सरनागत आयौ, दृढ़ करि चरन गहे रे। तुम प्रताप बल बदत न काहूँ, निडर भए घर-चेरे—१-१७०। (ख) सब आनंद-मगन गुवाल, काहूँ बदत नहीं—१०-२४। (ग) बदत काहू नहीं निधरक निदरि मोहिं न गनत। (२) **कहते हैं, वर्णन करते हैं, गाते हैं**। उ.—मनौ बेद-बंदीजन सूत-बृंद मागध-गन, बिरद बदत जै जै जै जैति कैटभारे—१०-२०५।

बदति—क्रि. स. [हिं. बदना] **समझती या मानती है**। उ.—जोबनदान लेउँ गो तुमसों। जाके बल तुम बदति न काहुहि कहा दुरावति मोसों।

बदन—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **शरीर, देह**।

संज्ञा पुं. [सं. वदन] **मुख**। उ.—गोपिनि के सों बदन निहारै—१०-३।

बदना—क्रि. स. [सं. वद=कहना] (१) **कहना, वर्णन करना**। (२) **स्वीकार करना**। (३) **स्थिर करना**।

मुहा०—भाग्य में बदना—**भाग्य में लिखा होना**। काम करने को बदना—**दृढ़ता के साथ काम करने को कहना**।

(४) **बाजी या शर्त लगाना**। (५) **कुछ समझना, महत्व का मानना**।

बदनाम—वि. [फ़ा.] **कलंकित, निंदित**।

बदनामी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **कलंक, निंदा**।

बदनियाँ—संज्ञा पुं. अल्प. [सं. वदन] **छोटा मुख**। उ. निरखति ब्रज-जुवती सब ठाढ़ीं, नंद-सुवन-छबि चंद-बदनियाँ—१०-१०६।

बदबू—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **दुर्गन्ध**।

बदमाश—वि. [फ़ा. बद + अ. मआश] **दुष्ट**।

बदमाशी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बदमाश] **दुष्टता, नीचता**।

बदरंग—वि. [फ़ा.] (१) **बुरे या भद्दे रंग का**। (२) **जिसका रंग बिगड़ गया हो**।

बदर—संज्ञा पुं. [सं.] **बेर का पेड़ या फल**।

बदरन, बदरनि—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. बादल] **मेघ, बादल**। उ.—देखौ माई, बदरनि की बरियाई—९८५।

बदरा—संज्ञा पुं. [हिं.] **बादल, मेघ**।

बदराह—वि. [फ़ा.] **दुष्ट, कुमार्गी**।

बदरि—संज्ञा पुं. [सं.] **बेर का पेड़ या फल**।

बदरिकाश्रम, बदरिकासरम—संज्ञा पुं. [सं. बदरिकाश्रम] **हिमालय पर स्थित वैष्णवों का एक श्रेष्ठ तीर्थ। यहाँ नर-नारायण और व्यास का आश्रम है। एक श्रृंग पर बदरी (बेर) वृक्ष होने के कारण इसका यह नाम पड़ा कहा जाता है**।

बदरिआ, बदरिया, बदरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बदली] **छाये हुए बादल, बादल**। उ.—(क) बदरिआ बधन बिरहिनी आई—२८२१। (ख) जोबन-धन है दिवस चारि को ज्यों बदरी की छाहीं—२१६४।

बदरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बेर का पेड़ या फल**।

बदरीनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] **बदरिकाश्रम तीर्थ**।

बदरीनारायण—संज्ञा पुं. [सं.] **नारायण जिनकी मूर्ति बदरिकाश्रम में है**।

बदरौह—वि. [फ़ा. बन + रौ] **बदचलन, कुमार्गी**।

संज्ञा पुं. [हिं. बादर+औंह] **बदली का आभास**।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदरौला—संज्ञा स्त्री. [देश.] **वृषभानु की एक दासी।** उ.—नारि बदरौला रही वृषभानु घर रखवारि—६७६।

बदल—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **हेर-फेर।** (२) **पलटा, एवज।**

बदलना—क्रि. अ. [अ. बदल+ना] (१) **हेर-फेर होना।** (२) **एक के स्थान पर दूसरा होना।** (३) **एक के स्थान पर दूसरा नियुक्त होना।**

क्रि. स.—(१) **हेर-फेर करना।** (२) **एक के स्थान पर दूसरा करना, कहना या रखना।** (३) **विनिमय करना।**

बदलवाना—क्रि. स. [हिं. बदलना] **बदलने का काम कराना।**

बदला—संज्ञा पुं. [हिं. बदलना] (१) **परस्पर लेना-देना, विनिमय।** (२) **हानि की पूर्ति-रूप में उपस्थित की गयी वस्तु।** (३) **पलटा, एवज।** (४) **प्रतीकार।** (५) **प्रतिफल, नतीजा।**

बदलाना—क्रि. स. [हिं. बदलना] **बदलने का काम कराना।**

बदलि—क्रि. अ. [हिं. बदलना] **एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेकर, विनिमय करके, परिवर्तन करके।** उ.—इते मान यह सूर महा सठ, हरि-नग बदलि, बिषय बिष आनत—१-११४।

बदली—क्रि. अ. [हिं. बदलना] **बदल गयी, भिन्न हो गयी परिवर्तित हो गयी।** उ.—मदनगोपाल बिना या तन की सबै बात बदली—२७३४।

संज्ञा स्त्री. [हिं. बादल] **छाये हुए बादल।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. बदलना] **तबदीली, तबादला।**

बदले—संज्ञा पुं. [हिं. बदला] **एक के स्थान पर दूसरे को रखना।** उ.—चढ़ि सुख-आसन नृपति सिधायौ। तहाँ कहार एक दुख पायौ। भरत पंथ पर देख्यौ खरौ। वाकें बदले ताकौं धरौ—५-४। (२) **विनिमय।** उ.—मूरा के पातन के बदले को मुक्ताहल दैहै—३१०५।

बदलैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. बदला] **बदले में, स्थान पर, स्थान की पूर्ति में।** उ.—(क) दच्छ-सीस जो कुंड मैं जरयौ। ताके बदलैं अज-सिर धरयौ—४-५। (ख) मम कृत इनके बदलैं लेहु। इनके कर्म सकल मोहिं देहु—७-२।

बदलो, बदलौ—संज्ञा पुं. [हिं. बदलना] **पलटा, एवज।** उ.—(क) ताहि सूल पर सूली दयौ। ताकौ बदलौ तुमसौ लयौ—३-५। (ख) जेते मान सेवा तुम कीन्ही, बदलो दयो न जात—२६५७। (ग) हमसों बदलो लेन उठि धाए मनो धारि कर सूप—३१८२।

क्रि. स. [हिं. बदलना] **परिवर्तन करो।** उ.—ते अब कहन जटा माथे पर बदलो नाम कन्हाई—३१०६।

बदलौवल—संज्ञा स्त्री. [हिं. बदलना] **हेर-फेर।**

बदसूरत—वि. [फ़ा. बद+सूरत] **कुरूप।**

बदावदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बदना] **लागडांट, होड़।**

बदाम—संज्ञा पुं. [फ़ा. बादाम] **एक मेवा, बादाम।** उ.—खारिक, दाख, चिरौंजी, किसमिस, उज्वल गरी बदाम—८१०।

बदामी—वि. [हिं. बदाम] **बादाम के रंग का।**

बदि—संज्ञा स्त्री. [सं. वर्त] **बदला, एवज, पलटा।**

अव्य.—(१) **बदले या पलटे में।** (२) **लिए।**

बदिहै—क्रि. स. [हिं. बदना] **मानेगी, स्वीकार करेगी।** उ.—मेरो प्रगट कह्यो बदिहै ब्रज ही देउँ पठाइ—२६१३।

बदिहौं—क्रि. स. [हिं. बदना] **मानूंगा, स्वीकार करूंगा, सकारूंगा।** उ.—जानिहौं अब बाने की बात। मोसौं पतित उधारौ प्रभु जौ, तौ बदिहौं निज तात—१-१७६।

बदी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **कृष्ण पक्ष, अन्धेरा पाख।**

संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **बुराई, अपकार।**

क्रि. स. [हिं. बनना] **निश्चित की, ठहराई, स्थिर करके।** उ.—(क) स्याम गए बदि अवधि सखी री। (ख) नैननि होड़ बदी बरसा सों—३४५७।

बदौलत—क्रि. वि. [फ़ा.] (१) **कृपा से।** (२) **कारण से।**

बद्दर, बद्दल—संज्ञा पुं. [हिं. बादल] **बादल।**

बद्ध—वि. [सं.] (१) **बंधा हुआ।** (२) **अज्ञान में फँसा हुआ।** (३) **जिस पर रोक या प्रतिबंध हो।** (४) **व्यवस्थित, परिमित।** (५) **निर्धारित।** (६) **बैठा या जमा हुआ।** (७) **सटा या जुड़ा हुआ।**

बद्धपरिकर—वि. [सं.] **कमर कसे, तैयार।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वद्धमूल—वि. [सं.] **जमी जड़ का, दृढ़ ।**

बद्धी—संज्ञा स्त्री. [सं. बद्ध] **रस्सी, तसमा ।**

वध—संज्ञा पुं. [सं.] **हनन, हत्या ।**

वधक—वि. [सं.] **बध करनेवाला ।**

वधत—क्रि. स. [हिं. बधना] **मार डालता है, बधता है, हत्या करता है ।** उ.—जैसैं मगन नाद-रस सारँग, बधत बधिक बिन बान—१-१६६ ।

बधन—संज्ञा पुं. [सं. बध] **बध, हनन, हत्या ।** उ.—बालक करि इनकौं जनि जान्यौ, कंस बधन येई करिहैं —१०-८५ ।

वधना—क्रि. स. [सं. बध + ना] **हत्या करना ।**

संज्ञा पुं. [सं. वर्द्धन] **टोंटीदार लोटा ।**

बधाइ, बधाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बढ़ना, बढ़ाई] (१) **वृद्धि, बढ़ती ।** (२) **जन्म या मंगल अवसर का आनन्द या गाना बजाना ।** उ.—(क) रिषभदेव तब जनमें आइ । राजा कैं गृह बजी बधाइ—५-२ । (ख) महरि जसोदा ढोटा जायौ, घर घर होति बधाई—१०-२१ । (ग) आजु गृह नंद महर कैं बधाइ—१०-३३ । (३) **खुशी, चहल-पहल ।** (४) **पुत्र-जन्म पर माता-पिता को आनन्द-सूचक संदेश, मुबारकबाद ।** उ.—सुत के भएँ बधाई पाई—१०-३२३ । (५) **शुभ अवसर पर इष्ट-मित्र को दिया जानेवाला संदेश ।** उ.—एक परस्पर देत बधाई, एक उठत हँसि गाइ—१०-२० । (६) **शुभ या मंगल अवसर पर दिया जानेवाला उपहार ।**

बधाए—संज्ञा पुं. [हिं. बधाई] **मंगलाचार ।** उ.—घर घर होत अनंद बधाए, जहँ तहँ मगध-सूत—१०-३६ ।

बधाना—क्रि. स. [हिं. बध] **बध कराना ।**

बधाया, बधायो—संज्ञा पुं. [हिं. बधाई] **बधाई ।**

क्रि. स. [हिं. बधाना] **बध कराया ।** उ.—ए दोउ नीर खीर निरवारत इनहिं बधायो कंस—३०४६ ।

बधावन, बधावना, बधावा—संज्ञा पुं. [हिं. बधाई] (१) **आनन्द-मंगल, मंगलाचार ।** उ.—(क) बनि ब्रजसुंदरि चलीं, सु गाईं बधावन रे—१०-२८ । (ख) हरषि बधावा मन भयौ (हो) रानी जायौ पूत—१०-४० । (२) **मंगलोत्सव आदि का उपहार ।**

बधिक—संज्ञा पुं. [सं. वध] (१) **वध करनेवाला ।** (२) **प्राण लेनेवाला, जल्लाद ।** (३) **व्याध, बहेलिया ।**

बधिर—संज्ञा पुं. [सं.] **बहरा ।**

बधिरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बहरापन ।**

बधी—क्रि. स. [हिं. बधना] **हत्या की ।**

बधू—संज्ञा स्त्री. [सं. वधू] (१) **नव विवाहिता स्त्री, दुलहन ।** (२) **पत्नी, भार्या ।** उ.—जितनी लाज गुपालहिं मेरी । तितनी नाहिं बधू हौं जिनकी, अंबर हरत सबनि तन हेरी—१-२५२ । (३) **स्त्री, नारी ।** उ.—(क) ज्यौं दूती पर-बधू भोरि कै, लै पर-पुरुष दिखावै—१-४२ । (ख) भोर होत उरहन लै आवतिं, ब्रज की बधूकने—३७७ । (४) **अवस्था और पद में छोटे पुरुष की पत्नी ।**

बधूटी—संज्ञा स्त्री. [सं. वधूटी] (१) **नव बधू ।** (२) **पुत्र की स्त्री, पतोहू ।** (३) **सौभाग्यवती स्त्री ।**

बधूरा—संज्ञा पुं. [हिं. बहुधूर] **अंधड़, बवंडर ।**

बधैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. बधाई] (१) **पुत्र-जन्म के शुभ अवसर पर हर्ष-सूचक वचन या संदेश ।** उ.—सूरदास प्रभु की माइ जसुमति, पितु नँदराइ, जोइ जोइ माँगत सोइ देत हैं बधैया—१०-४१ । (२) **मंगलाचार ।** उ.—गोपी-ग्वाल करत कौतूहल, घर-घर बजति बधैया—१०-१५५ ।

बध्य—वि. [सं.] **मारने के योग्य ।**

बन—संज्ञा पुं. [सं. वन] (१) **कानन, जंगल ।**

मुहा०—होत जो बन को रोयो—**ऐसी बात या प्रकार जिस पर कोई ध्यान न दे ।** उ.—कत श्रम करत सुनत को इहाँ है, होत जो बन को रोयो—३०२१ । (२) **समूह ।** (३) **जल, पानी ।** (४) **बाग, बगीचा ।** (५) **कपास का पेड़ ।**

बनए—क्रि. स. [हिं. बनाना] **बनाये ।** उ.—मनौ । बिबि मरकत बीच महानग चतुर नारि बनए—६८४ ।

बनक—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनना] (१) **बनावट, सजधज ।** (२) **बाना, भेस, वेश ।**

संज्ञा स्त्री. [सं. वन + क] **बन की उपज ।**

बनकोरा, बनकौरा—संज्ञा पुं. [देश.] **लोनिया का साग ।** उ.—बनकौरा पिंडीक चिचिंडी—३९६ ।

बनखंडी—पुं. [हिं. बन + खंड] **बनवासी ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चर—संज्ञा पुं. [सं. वनचर] (१) **जंगली पशु।** (२) **जंगली मनुष्य।** (३) **जल के जीव।**

चारी—संज्ञा पुं. [सं. वनचारिन्] (१) **बनवासी।** उ.—तात बचन लगि राज तज्यौ तिन अनुज घरनि सँग भए बनचारी—१०-१६८। (२) **बन के जीव।** (३) **जल के जीव।**

चौंर, बनचौंरी—संज्ञा स्त्री. [सं. वन+चमर, चमरी] **सुरागाय जिसकी पूँछ का चँवर बनता है।**

ज—संज्ञा पुं. [सं. वाणिज्य] **व्यापार, व्यवसाय।**

संज्ञा पुं. [सं. वनज] (१) **कमल।** (२) **जल-जीव।** (३) **जल में उत्पन्न होनेवाले पदार्थ।**

नजात—संज्ञा पुं. [सं. वन+जात] **कमल।**

नजारनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनजारा] **बनजारा वर्ग की नारी।** उ.—लीन्हें फिरति रूप त्रिभुवन को ऐ नोखी बनजारनि—१०४१।

नजारा—संज्ञा पुं. [हिं. बनिज+हारा] (१) **बैलों पर अनाज लादकर बेचनेवाला, टाँड़ा लादनेवाला।** (२) **व्यापारी।**

नजी—संज्ञा पुं. [सं. वाणिज्य] (१) **व्यापार।** (२) **व्यापारी।**

नत—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनना] (१) **बनावट।** (२) **अनुकूलता।**

नताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बन+ताई (प्रत्य.)] **बन की सघनता या भयंकरता।**

नद—संज्ञा पुं. [सं. वन+द] **बादल, जलद।**

नदाम—संज्ञा स्त्री. [सं. वन+दाम] **वनमाला।**

नदेवी—संज्ञा स्त्री. [सं. वनदेवी] **वन की अधिष्ठात्री देवी।**

नधातु—संज्ञा स्त्री. [सं. वनधातु] **गेरू या वैसी ही रंगीन मिट्टी।** उ.—सखा संग आनंद करत सब अंग अंग बनधातु चित्र करि।

नना—क्रि. अ. [सं. वर्णन] (१) **तैयार होना।** (२) **काम में आने योग्य होना।** (३) **ठीक रूप या स्थिति में आना।** (४) **एक पदार्थ से दूसरा तैयार होना।** (५) **संबंध हो जाना।** (६) **पद, अधिकार आदि प्राप्त करना।** (७) **उन्नत दशा में पहुँचना।** (८) **प्राप्त होना, मिलना।** (९) **पूरा या समाप्त होना।** (१०) **मरम्मत होना।** (११) **संभव होना।**

मुहा०—जान (प्राण) पर आ बनना—**प्राण संकट में पड़ जाना।**

(१२) **आविष्कार होना।** (१३) **आपस में निभना या पटना।** (१४) **सुन्दर लगना, स्वादिष्ट होना।** (१५) **सुयोग या सुअवसर मिलना।** (१६) **स्वरूप धारना, स्वाँग बनाना।** (१७) **मूर्ख सिद्ध होना।** (१८) **उच्च या बड़ा सिद्ध करने का प्रयत्न करना।** (१९) **खूब सजना, शृंगार करना।**

बननि—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनना] (१) **बनाव-सिंगार, सजावट।** (२) **रचना, बनावट।**

बननिधि—संज्ञा पुं. [सं. वननिधि] **सागर, समुद्र।**

बनपट—संज्ञा पुं. [सं. वनपट] **छाल से बना कपड़ा।**

बनपथ—संज्ञा पुं. [सं. वनपथ] **जलमार्ग, सागर।**

बनपत्र—संज्ञा पु. [सं. वनपत्र] **एक बाजा।** उ.—किनहु सृंग कोउ बेनु किनहु बनपत्र बजाये—११०७।

बनपाती—संज्ञा स्त्री. [हिं. बन+पत्ती] **वनस्पति।**

बनबाहन—संज्ञा पुं. [सं. वन+वाहन] **जलयान, नौका।**

बनमाल, बनमाला—संज्ञा स्त्री. [सं. वनमाला] **तुलसी, कुंद, मंदार, परजाता और कमल—इन पाँच पौधों की पत्तियों और फूलों की बनी हुई ऐसी माला जो प्रायः गले से पैर तक लम्बी होती थी।** उ.—मुकुट सिर धरैं, बनमाल कौस्तुभ गरैं—४-१०।

बनमालाधर—संज्ञा पुं. [सं. वनमाला+हिं. धरना] **विष्णु और उनके राम-कृष्ण अवतार।** उ.—कंबु कंठधर, कौतुभ-मनिधर, बनमालाधर, मुक्त मालधर—५७२।

बनमाली—संज्ञा पुं. [सं. वनमाली] (१) **बनमाला धारण करनेवाला।** (२) **श्रीकृष्ण।** उ.—अब ए बेली सूखत हरि बिनु छाँड़ि गए बनमाली—३२२८। (३) **विष्णु।** (४) **मेघ, बादल।** (५) **घने वनवाला प्रदेश।**

बनरखा—संज्ञा पुं. [हिं. बन+रखना] **वनरक्षक।**

बनरा—संज्ञा पुं. [हिं. बंदर] **बानर, बंदर।**

संज्ञा पुं. [हिं. बनना] (१) **वर, दूलह।** (२) **विवाह का मंगलगीत।**

बनराई—संज्ञा पुं. [सं. वनराज] (१) **वन का राजा,**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह। (२) **तोता**। उ.—सजल लोचन चारु नासा, परम रुचिर बनाइ। जुगल खंजन करत अबिनति, बीच कियौ बनराइ—१०-२२५।

बनराज, बनराजा, बनराय, बनराया—संज्ञा पुं. [सं. बनराज] (१) **सिंह**। (२) **तोता**।

बनरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनरा] **नवबधू, दूलहिन**।

बनरुह—संज्ञा पुं. [सं. वनरुह] (१) **अपने आप उगनेवाले जंगली पेड़**। (२) **कमल**।

बनवना—क्रि. स. [हिं. बनाना] **रचना, बनाना**।

बनवसन—संज्ञा पुं. [सं. वनवसन] **छाल का कपड़ा**।

बनवाना—क्रि. स. [हिं. बनाना] **दूसरे को बनाने के काम में प्रवृत्त करना**।

बनवारी—संज्ञा पुं. [सं. वनमाली] **श्रीकृष्ण**।

बनवासी—संज्ञा पुं. [सं. वनवासी] **वन का निवासी**।

बनवैया—संज्ञा पुं. [हिं. बनाना+वैया] **बनानेवाला**।

बना—संज्ञा पुं. [हिं. बनना] **वर, दूलह**।

क्रि. स.—**रचा गया, तैयार हुआ**।

मुहा०—बना रहना—(१) **जीवित रहना**। (२) **उपस्थित रहना**।

बनाइ—क्रि. स. [हिं. बनाना] (१) **रचकर, तैयार करके**। उ.—ब्यास कहे सुकदेव सौं द्वादस स्कंध बनाइ—१-२२५। (२) **तैयार करके, व्यवहार-योग्य रूप देकर**। उ.—षटरस सौंज बनाइ जसोदा, रचि-कै कंचन-थार—३९७। (३) **साजकर**। उ.—तिलक बनाइ चले स्वामी ह्वै—१-५२। (४) **गढ़ गढ़कर**। उ.—कहत बनाइ दीप की बतियाँ, कैसैं धौं तम नासत—२-२५।

क्रि. वि.—(१) **निपट, नितांत**। उ.—यह बालक धौं कौन कौ, कीन्हौ जुद्ध बनाइ—५८९। (२) **भली-भाँति, अच्छी तरह**। उ.—आपु अपनौ घात निरखत खेल जम्यौ बनाइ—१०-२४४।

बनाइए—क्रि. स. [हिं. बनाना] **शृंगार कीजिए, सजाइए**। उ.—छूटे चिहुर बदन कुँभिलानौ सुहथ सँवारि बनाइए—१६८८।

बनाई—क्रि. स. [हिं बनाना] (१) **रची, निर्मित की**। उ.—नाना भाँति पाँति सुंदर मनौ कंचन की है लता बनाई—९-५६। (२) **व्यवहार-योग्य रूप दिया**। उ.—अति प्यौसर सरस बनाई—१०-१८२। (३) **सजाया, शृंगार किया**। उ.—लोचन ललित, ललाट भृकुटि बिच तकि मृगमद की रेख बनाई—६१६। (४) **रचकर, गढ़कर, गढ़ी, कल्पित की**। उ.—(क) हम जानी यह बात बनाई—७६६। (ख) देखे तब बोल्यौ कान्ह, उतर यौं बनाई—१०-२८४।

क्रि. वि.—(१) **बिलकुल, अत्यन्त**। उ.—हरि तासौं कियौ जुद्ध बनाई—७-२। (२) **भलीभाँति अच्छी तरह**।

बनाउ—क्रि. स. [हिं. बनाना] (१) **किसी पदार्थ को काट-छाँटकर और गढ़कर, सँवारकर, सुंदर रूप देकर**। उ.—सीतल चंदन कटाउ, धरि खराद रंग लाउ, बिबिध चौकरी बनाउ, धाउ रे बनैया—१०-४१। (२) **बनाओ, निर्मित करो**। उ.—रिषि दधीचि हाड़ लै दान। ताकौ तू निज बज्र बनाउ—६-५।

संज्ञा पुं. (१) **बनावट**। (२) **सजावट**। (३) **युक्ति**।

बनाऊँ—क्रि. स. [हिं. बनाना] **सजाऊँ**। उ.—तुमरे भूषन मोकों दीजै अपने तुमहिं बनाऊँ—पृ. ३११ (११)।

बनाए—क्रि. स. [हिं. बनाना] **रचे**। उ.—बालक बच्छ हरे चतुरानन, ब्रह्म-लोक पहुँचाए। सूरदास-प्रभु गर्व बिनासन, नव कृत फेरि बनाए—४३६।

बनागि, बनाग्नि—संज्ञा स्त्री. [सं. वनाग्नि] **दावानल**।

बनाना—क्रि. स. [हिं. बनना] (१) **रचना, तैयार करना**। (२) **गढ़कर, सँवारकर या पकाकर तैयार करना**। (३) **ठीक या उचित रूप देना**। (४) **एक पदार्थ से दूसरा तैयार करना**। (५) **नया भाव या संबंध प्रदान करना**। (६) **पद, मान, अधिकार-विशेष प्रदान करना**। (७) **उन्नत दशा में पहुँचाना**। (८) **प्राप्त करना**। (९) **समाप्त करना**। (१०) **आविष्कार करना**। (११) **मरम्मत करना**। (१२) **हँसी उड़ाना**।

बनाबंत, बनावनत—संज्ञा पुं. [हिं. बनना+अबनना]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह के लिए लड़के-लड़की की जन्मपत्री का मिलान।

बनाम—अव्य. [फ़ा.] **नाम पर, किसी के प्रति।**

बनाय—क्रि. वि. [हिं. बनाकर] (१) **नितांत।** (२) **भली-भाँति, अच्छी तरह।**

क्रि. स. [हिं. बनाना] **पकाकर, तैयार करके।** उ.—मधु-मेवा पकवान मिठाई व्यंजन बहुत बनाय—६१८।

बनायौ—क्रि. स. [हिं. बनाना] (१) **धारण किया, रखा।** उ.—नर-तन, सिंह-बदन बपु कीन्हौ, जन-लगि भेष बनायौ—१-१९०। (२) **रचा, निर्मित की।** उ.—चंदन अगर सुगंध और घृत, बिधि करि चिता बनायौ—९-५०।

बनारसी—वि. [हिं. बनारस] **काशी का, काशी-वासी।**

बनाव—संज्ञा पुं. [हिं. बनना+आव] (१) **रचना, बनावट।** (२) **सजावट, शृंगार।** (३) **युक्ति, उपाय।**

बनावट—संज्ञा स्त्री. [हिं बनाना+वट] (१) **रचना, गढ़ंत।** (२) **आडंबर, ऊपरी दिखावा।**

बनावत—क्रि. स. [हिं. बनाना] (१) **(किसी पदार्थ का रूप परिवर्तित करके) नई वस्तु तैयार करता है, रूप परिवर्तित करता है।** उ.—मातु उदर में रस पहुँचावत। बहुरि रुधिर तैं छीर बनावत—२-२०। (२) **मनगढ़ंत करता है, उपहास करता है।** उ.—सूर सीस तृन दै बूझति हौ, साँच कहत की बनावत री—१५८५। (३) **(रूप) धरते हैं, (स्वाँग) बनाते हैं।** उ.—मनहीं मन बलबीर कहत हैं, ऐसे रंग बनावत। सूरदास-प्रभु-अगनित महिमा, भगतनि कैं मन भावत—१०-१२५।

बनावति—क्रि. स. [हिं. बनाना] **बनाती है।**

मुहा०—बुद्धि बनावति—**उपाय सोचती है, युक्ति निकालती है।** उ.—यह सुनिकै मन हर्ष बढ़ायौ, तब इक बुद्धि बनावति—११७४।

बनावन—संज्ञा पुं. [हिं. बनाना] **बनाने का भाव, रचना।**

मुहा०—बात बनावन—**बात गढ़ने में।** उ.—बात बनावन कौं है नीकौ, बचन-रचन समुझावै—१-१८६।

बनावनहारा—संज्ञा पुं. [हिं. बनाना+हारा] (१) **बनानेवाला, रचयिता।** (२) **सुधारनेवाला, सुधारक।**

बनावनो—संज्ञा पुं. [हिं. बनावना] **बनावट, रचना।** उ.—पँचरँग पाट कनक मिलि डोरी अतिही सुघर बनावनो—२२८०।

बनावै—क्रि. स. [हिं. बनाना] (१) **बनाता है, रचता है, तैयार करता है।** (२) **रूप धारण करता है, रूप धरता है।** उ.—दर-दर लोभ लागि लिये डोलति, नाना स्वाँग बनावै—१-४२। (३) **सुधारता है, पूर्णतः संपादन करता है, पूरा करता है।** उ.—मूकू निंद, निगोड़ा, भोंड़ा, कायर, काम बनावै—१-१८६।

बनासपति, बनासपती—संज्ञा स्त्री. [सं. वनस्पति] (१) **जड़ी, बूटी आदि।** (२) **साग-पात, फलफूल आदि।**

बनि—वि. [हिं. बनना] **पूर्ण, सब, समस्त।**

क्रि. अ.—(१) **बनकर, रचकर।**

प्र०—बनि जाइ—**काम बन जाय, इच्छा पूरी हो, दशा सुधर जाय।** उ.—उचित अपनी कृपा करिहौ, तवै तो बनि जाइ १-१२६। बनि आइहै—**करते-धरते बन पड़ेगा, कर सकोगे, सम्हाल सकोगे।** उ.—तब न कछू बनि आइहै, जब विरुझैं सब नारि—११२५।

(२) **बन-ठनकर, सज-धजकर।** उ,—(क) बनि ब्रज सुंदरि चलीं—१०-२८। (ख) बन तैं बनि ब्रज आवत—४७६। (ग) जुवति बनि भई ठाढ़ी और पहिरे चीर—१८५२।

बनिक—संज्ञा पुं. [सं. वणिक] (१) **व्यापारी।** (२) **बनिया।**

बनिज—संज्ञा पुं. [सं. वाणिज्य] (१) **व्यापार, वस्तुओं का क्रय-विक्रय।** उ.—(क) प्रेम-बनिज कीन्हों हुतो नेह नफा जिय जानि—३१४६। (ख) सूरदास तेहि बनिज कवन गुन भूलहु माँझ गवाँए—३२०१। (ग) और बनिज मैं नाहीं लाहा, होते मूल मैं हानि—१-३१०। (२) **व्यापार की वस्तु, सौदा।** (३) **धनी, मालदार।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनिजना—क्रि. स. [हिं. बनिज] (१) **व्यापार करना।** (२) **मोल लेना।**

बनिजति—क्रि. स. [हिं. बनिजना] **लेन-देन करती है।** उ.—यह बनिजति बृषभानु सुता तुम हम सों बैर बढ़ावति।

बनिजाहा—संज्ञा पुं. [हिं. बनजारा] **टाँड़ा लादनेवाला।**

बनिजारिन, बनिजारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनजारी] **बनजारा जाति की स्त्री।** उ.—लीन्हें फिरति रूप त्रिभुवन को ए नोखी बनिजारिनि।

बनित—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनना] **वेश, साजबाज।** उ.—चढ़ि जदुनन्दन बनित बनाय कै। साजि बरात चले जादव जाय कै।

बनिता—संज्ञा स्त्री. [सं. वनिता] (१) **स्त्री, नारी।** उ.—सूर स्याम बनिता ज्यों चंचल पग-नूपुर झनकार (२) **पत्नी।**

बनियाँ—क्रि. स. [हिं. बनना] **बन पड़ता है।**

प्र०—गावत नहिं बनियाँ—**गाते नहीं बन पड़ता है, गा नहीं पाता है।** उ.—सेस सहस आनन गुन गावत नहिं बनियाँ—१०-१४४। कहति न बनियाँ—**कही नहीं जाती, वर्णन नहीं की जा सकती।** उ.—आपुन खात, नंद-मुख नावत, सो छबि कहत न बनियाँ—१०-२३८।

बनिया—संज्ञा पुं. [सं. वणिक] (१) **व्यापारी।** (२) **वैश्य।**

बनिस्बत—अव्य. [फा.] **अपेक्षा, तुलना में।**

बनिहै—क्रि. अ. [हिं. बनना] **बनेगा, अच्छा रहेगा।** उ.—गेंद खेलत बहुत बनिहै, आनौ कोऊ जाइ—५३२।

बनी—संज्ञा स्त्री [हिं. वन] **बाग, वाटिका, वनस्थली।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. बना] (१) **दुलहिन।** (२) **नायिका।**

संज्ञा पुं. [सं. वणिक] **बनिया।**

क्रि. अ. [हिं. बनना] (१) **खूब पटती है, अच्छी तरह निभती है।** उ.—सूर कहत जे भजत राम कौं, तिनसौं हरि सौं सदा बनी—१-३६। (२) **शोभित है।** उ.—कंठ मुक्तामाल, मलयज, उर बनी बनमाल—१-३०७। (३) **योग्य या उचित थी, फबी, भली लगी।** उ.—ते दीनी बधुनि बुलाइ, जैसी जाहि बनी—१०-२४। (४) **फबती है, भली लगती है।** उ.—मुकुट कुण्डल जड़ित हीरा लाल सोभा अति बनी—१० उ०-२४। (५) **उपयुक्त है, योग्य है।** उ.—नन्द सुत बृषभानु-तनया रास में जोरी बनी—पृ० ३४५ (३)। (६) **प्रस्तुत हुई, तैयार हुई, निर्मित हुई।** उ.—हरि जू की आरती बनी—२-२८।

मुहा०—जिय आनि बनी—**जी में दृढ़ विश्वास हो गया है, धारणा बन गयी है।** उ.—मेरैं जिय ऐसी आन बनी—८६४। कठिन बनी है—**बड़ी विपत्ति आ पड़ी है।** उ.—निबाहौ बाँह गहे की लाज। द्रुपद-सुता भाषति नँदनंदन, कठिन बनी है आज—१-२५५।

बनीनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनी+ईनी] **वैश्य की स्त्री।**

बनीर—संज्ञा पुं. [सं. वानीर] **बेंत।**

बने—क्रि. अ. बहु. [हिं. बनना] **तैयार हुए, बनाये गये।**

मुहा०—बहुत बने हैं—**बहुत स्वादिष्ट हैं।** उ.—मिलि बैठे सब जेंवन लागे। बहुत बने कहि पाक—४६४।

बनै—क्रि. अ. [हिं. बनना] (१) **बनता है, काम देता है।** उ.—तेल-तूल-पावक-पुट भरि धरि, बनै न बिना प्रकासत—२-२५। (२) **बच सकोगे, रक्षा होगी।** उ.—(क) पहुप देहु तौ बनै तुम्हारी, ना तरु गये बिलाइ—५२६। (ख) गेंद दियैं ही पै बनै, छाँड़ि देहु मति-धूत—५८६।

मुहा०—खेलत बनै—**खेलते बनता है, ठीक तरह से खेला जाता है।** उ.—खेलत बनै घोष निकास—१०-२४४।

संज्ञा पुं. सवि. [हिं. बन+ऐ.] **बन में ही, बन ही को।** उ.—व्यंजन सहस प्रकार जसोदा बनै पठाए—४३७।

बनैया—संज्ञा पुं. [सं. बनाना+ऐया (प्रत्य.)] **बनानेवाला, गढ़नेवाला, निर्माण करनेवाला।** उ.—सीतल चंदन कटाउ, धरि खराद रंग लाउ, बिबिध चौकरी बनाउ, धाउ रे बनैया—१०-४१।

बनैला—वि. [हिं. बन+ऐला] **जंगली, वन्य।**

बनोवास—संज्ञा पुं. [सं. वनवास] **बन में रहना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनौटी—वि. [हिं. बन+औटी] **कपास के फूल जैसा, कपास का, कपासी।**

बनौरी—संज्ञा स्त्री. [सं वन+ओला] **वर्षा का ओला।**

बनौआ, बनौवा वि. [हिं. बनना+औवा] **बनावटी।**

बन्यौ—क्रि. अ. [हिं. बनाना] (१) **शोभित हुआ, धारण किया।** उ.—कटि लहँगा नीलौ बन्यौ, को जो देखि न मोहै (हो) ?—१-४५। (२) **बनता है, होता है, (काम) चला करता है।** उ.—या विधि कौ ब्योपार बन्यौ जग, तासौं नेह लगायौ—१-७६।

मुहा०— भलौ बन्यौ है संग—**अच्छा साथ हुआ है, खूब साथ बना है।** उ.—प्रथम आजु मैं चोरी आयौ, भलौ बन्यौ है संग। आपु खात, प्रतिबिंब खवावत, गिरत कहत, का रंग—१०-२६५।

वन्हि—संज्ञा स्त्री. [सं. वह्नि] **आग, अग्नि।**

बपंस—संज्ञा पुं. [हिं. बाप+अंश] **बपौती, दाय।**

बप—संज्ञा पुं. [हिं. बाप] **पिता।**

बपन—संज्ञा पुं. [सं. वपन] (१) **केशमुंडन।** (२) **बीज बोना।**

बपना—क्रि. स. [सं. वपन] **बीज बोना।**

बपु—संज्ञा पुं. [सं. वपु] (१) **शरीर।** उ.—तात-मरन, सिय-हरन, राम बन-बपु धरि बिपति भरै—१-२६४। (२) **अवतार।** (३) **रूप।**

बपुरा—वि. पुं. [हिं. बापुरा] **बेचारा, अनाथ, निरीह।** उ.—बपुरा मोकौं कहति, तोहिं बपुरी करि डारौं—५८६।

बपुरी—वि. स्त्री. [हिं. बपुरा] **बेचारी, अनाथ, निरीह।** उ.—हमतैं भली जलचरी बपुरी अपनौ नेम निबाह्यौ—३१४६।

बपुरे—वि. [हिं. बापुरो] (१) **तुच्छ, नगण्य, जिसकी कोई गिनती न हो।** उ.—इंद्र समान हैं जाके सेवक, नर बपुरे की कहा गनी—१-३६। (२) **अनाथ, निरीह।**

बपुरैं—वि. सवि [हिं. बपुरा] **बेचारे ने, गरीब ने, अनाथ ने।** उ.—मनसाकरि सुमिरयौ गज बपुरैं, ग्राह प्रथम गति पावै—१-१२२।

बपुरो, बपुरौ—वि. [हिं. बपुरा] (१) **बेचारा, अनाथ, अशक्त।** उ.—(क) केतिक जीव कृपिन मम बपुरौ, तजै कालहू प्रान। सूर एकहीं बान बिदारैं, श्री गोपाल की आन—१-२७५। (२) **तुच्छ, क्षुद्र।** उ.—कहा बपुरो कंस मिट्यौ तब मन संस करत है जी को—२५५६।

बपौती—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाप+औती] **पिता से प्राप्त धन-संपति और जायदाद।**

बप्पा—संज्ञा पुं. [हिं. बाप] **पिता, जनक।**

बफारा—संज्ञा पुं [हिं भाप] **भाप से सेंकना।**

बबकना—क्रि. अ. [अनु.] **चिल्लाना, बमकना।**

बबा—संज्ञा पुं. [तु. बाबा] (१) **पिता।** उ.—मन मैं माष करत, कछु बोलत, नंद बाबा पै आयौ—१०-१५६। (ख) सिर कुलही, पग पहिरि पैंजनी, तहाँ जाहु जहँ नंद बबा रे—१०-१६०। (२) **बाबा, दादा।**

बबुआ—संज्ञा पुं. [हिं. बाबू] **बेटा (प्यार का संबोधन)।**

बबुई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाबू] (१) **बेटी।** (२) **छोटी ननद।**

बबुर, बबूल—संज्ञा पुं. [सं. कीकर, हिं. बबूल] **एक कांटेदार पेड़, बबूल।** उ.—बोवत बबुर दाख फल चाहत, जोवत है फल लागे—१-६१।

बबूला—संज्ञा पुं. [हिं. बगूला] **बवंडर, अंधड़।**

संज्ञा पुं. [हिं. बुलबुला] **बुलबुला।**

बमत—क्रि. स. [सं. वमन] **उगलता है, कै करता है।** उ.—निरतत पद पटकत फन-फन प्रति, बमत रुधिर नहिं जात सम्हारयौ—५७४।

बमनहिं—संज्ञा पुं. सवि. [सं. वमन+हिं. हिं] **वमन किये हुए पदार्थ को।** उ.—बमनहिं खाइ, खाइ सो डारै, भाषा कहि कहि टेरा—१-१८६।

बमनना—क्रि. स. [सं. वमन] **उगलना, कै करना।**

बय—संज्ञा स्त्री. [सं. वय] **अवस्था, उम्र।**

बयन—संज्ञा पुं. [सं. वचन] **वाणी, वचन।** उ.—बरु ए प्रान जाहिं ऐसे ही बयन होय क्यों हीनौं—३०३४।

बयना—क्रि. स. [सं. वयन, प्रा. बयन] **बीज बोना।**

क्रि. स. [सं. वचन] **कहना, वर्णन करना।**

संज्ञा पुं. [हिं. बैना] **उत्सव पर दी गयी मिठाई।**

बयनी—वि. [हिं. बपन] **बोलनेवाली।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बय-प्रापत—वि. [सं. वय+प्राप्त] **युवावस्था को प्राप्त, युवक या युवती।** उ. (क) पारबती बय-प्रापत भई—४-७। (ख) मम पुत्री बय-प्रापत आहि—४-६।

बयर—संज्ञा पुं. [हिं. बैर] **झगड़ा, शत्रुता।**

बयस—संज्ञा स्त्री. [सं. वयस] **अवस्था, आयु, वय।** उ.—मैं तौ वृद्ध भयौ, वह तरुनी, सदा बयस इकसारी—१-१७३।

बयसवाला—वि. [सं वयस+हिं. वाला] **युवक।**

बयस-सिरोमनि—संज्ञा पुं. [वयस्+शिरोमणि] **अवस्थाओं में श्रेष्ठ, युवावस्था।**

बया—संज्ञा पुं. [सं. वयन=बुनना] **एक पक्षी।**

संज्ञा पुं. [अ. बाय:] **अनाज तौलनेवाला।**

बयाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बया+आई] **तौलने की मजदूरी।**

बयान—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **वर्णन।** (२) **विवरण।**

बयाना—संज्ञा पुं, [अ. बै+फ़ा. आना] **पेशगी, अगाऊ।**

बयार, बयारि—संज्ञा स्त्री. [सं. वायु] **हवा, पवन।** उ.—(क) बिषय-बिकार-दवानल उपजी, मोह-बयारि लई—१-२६६। (ख) बेगिहिं नारि छोरि बालक कौं, जाति बयारि भराई—१०-३६। (ग) (तरु) गिरे कैसैं, बड़ौ अचरज, नैंकु नहीं बयार—३८७।

मुहा०—बयार करना—**पंखा हाँकना।** बयारि न लागी ताती—**गरम हवा नहीं लगी, जरा भी कष्ट नहीं हुआ।** उ.—गोकुल बसत नंदनंदन के कबहुँ बयारि न लागी ताती—२६७७। जैसी बयारि बहै तैसी ओढ़िए जू पीठि—**जैसी हवा चले वैसी ही पीठि दीजिए, जैसी स्थिति हो, वैसा ही काम कीजिए।** उ.—सूरदास के पिय, प्यारी आपुही जाइ मनाय लीजै, जैसी बयारि बहै तैसी ओढ़िए जू पीठि—२०२५।

बयारा—संज्ञा पुं. [हिं. बयार] **झोंका, अन्धड़, तूफान।**

बयारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बयार] (१) **हवा, हवा का झोंका।** उ.—असुर के तनहि को लग्यो कलपन तुरंग गज उड़ि चले लागी बयारी—१० उ.—३१। (२) **वायु नामक तत्व।** उ.-सप्त पताल अध ऊर्ध्व पृथ्वी तल जल नभ बरुन बयारी—३२६१।

संज्ञा स्त्री. [हिं. बियारी] **रात का भोजन।**

बयाला—संज्ञा पुं. [सं. वाह्य+आला] (१) **दीवार का गोखा।** (२) **ताख, आला।** (३) **दीवाल से तोप का गोला निकालने का छेद।**

बयो, बयौ—क्रि. स. [हिं. बयना] **बीज बोया।** उ.—(क) अब मेरी-मेरी करि बौरे, बहुरौ बीज बयौ—१-७८। (ख) सूर सुरपति सुन्यौ, बयौ जैसो लुन्यौ प्रभु कह गुन्यौ गिरि सहित वैहै—६४४।

बरंग—संज्ञा पुं. [देश.] **कवच, बख्तर।**

बरंगा—संज्ञा पुं. [देश.] **छत पाटने की लकड़ी, झाँप।**

बर—संज्ञा पुं. [सं. वट] **बरगद का वृक्ष।**

संज्ञा पुं. [सं. वर] (१) **आशीर्वादात्मक वचन, बरदान, वर।** उ.—(क) ब्यास पुत्र-हित बहु तप कियौ तब नारायन यह बर दियौ—१-२२५। (ख) हम तीनौं हैं जग करतार। माँगि लेहु हमसौं बर सार—४-३। (२) **दूल्हा।** उ.—बर अरु बधू आवत जब जाने रुक्मिनि करत बधाई।

वि.—(१) **अच्छा, उत्तम।** (२) **पूरा, पूर्ण।**

मुहा०—बर परना—**बढ़कर होना।**

संज्ञा पुं. [सं. बल] (१) **शक्ति।** (२) **इच्छाशक्ति, मन।** उ.—अतिहिं हठीलो, कह्यौ न मानति, करति आपने बर तैं—७४४।

अव्य० [फ़ा.] **ऊपर।**

बरकत—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **बढ़ती, अधिकता।** (२) **लाभ।** (३) **समाप्ति।** (४) **धन-दौलत।** (५) **कृपा।**

बरकना—क्रि. अ. [हिं. बरकाना] (१) **बुरी बात न हो पाना।** (२) **दूर या अलग हटना।**

बरकाज—संज्ञा पुं. [स. वर+कार्य] **विवाह।**

करकाना—क्रि. अ. [सं. वारण, वारक] (१) **बुरी बात न होने देना।** (२) **बहलाना, फुसलाना।**

बरख—संज्ञा पुं. [सं. वर्ष] **बरस, साल।**

बरखना—क्रि. अ. [सं. वर्षण] **पानी बरसना।**

बरखा—संज्ञा स्त्री. [सं. वर्षा] (१) **बर्षा।** (२) **बर्षा होना।**

बरखाना—क्रि. स. [सं. वर्षा] (१) **पानी बरसना।** (२) **छितराकर गिराना।** (३) **अधिकता से देना।**

बरखास, बरखास्त—वि. [फा. बरख़ास्त] (१) **सभा आदि**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो समाप्त हो गयी हो। (२) जो नौकरी से हटा दिया गया हो।

बरगद—संज्ञा पुं. [सं. वट, हिं. बड़] **बड़ का पेड़।**

बरछा—संज्ञा पुं. [सं. व्रश्चन] **भाला नामक हथियार।**

बरछैत—वि. [हिं. बरछा+ऐत] **बरछा मारनेवाला।**

बरजत—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना करता है, रोकता है।** उ.—लोक-वेद बरजत सबै (रे) देखत नैननि त्रास। चोर न चित चोरी तजै, (रे) सरबस सहै बिनास—१-३२५।

बरजना—क्रि. स. [सं. वर्जन] **मना करना।**

बरजनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. बरजना] **रोक, मनाही।**

बरजि—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना करके, रोककर, निवारण करके।** उ.—इहिं लाजनि मरिऐ सदा, सब कोउ कहत तुम्हरो (हो)। सूर स्याम इहिं बरजि कै, मेटौ अब कुल-गारी (हो)—१-४४।

बरजिबैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. बरजना] **रोकने या मना करने के लिए।** उ.—फुरैं न बचन बरजिबैं कारन, रहीं बिचारि-बिचारि—१०-२८३।

बरजी—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना किया, रोका।** उ.—हम बरजी, बरज्यौ नहिं मानत—३६६।

बरजे—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना किया, रोका।** उ.—मैं बरजे तुम करत अचगरी। उरहन कैं ठाढ़ी रहैं सिगरी—३६१।

बरजे—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना करते हैं, रोकते हैं।** उ.—हाथ तारी देत भाजत, सबै करि करि होड़। बरजै हलधर, स्याम, तुम जनि चोट लागै गोड़—१०-२१३।

बरजो—क्रि. स. [हिं. बरजना] **रोको, मना करो।** उ.—कोऊ खीझो कोऊ कितने बरजो जुवतिन के मन ध्यान—८७०।

बरजोर—वि. [हिं. बल+फा जोर] (१) **बली, बलवान।** (२) **बल का अनुचित प्रयोग करनेवाला।**

क्रि. वि.—(१) **जबरदस्ती।** (२) **बहुत जोर से।**

बरजोरन—संज्ञा पुं. [सं. वर+हिं. जोड़ना] **विवाह।**

बरजोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बरजोर] **बल प्रयोग, जबरदस्ती।** उ.—नंद बाबा की गऊ चरावो हमसो करो बरजोरी—२४०६।

क्रि. वि.—**बलपूर्वक, जबरदस्ती।**

बरजौं—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना करूँगी।** उ.—करत अन्याय न बरजौं कबहूं अरु माखन की चोरी—२७०८।

बरजौ—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना करो, रोको।** उ.—सूर सुतहिं बरजौ नँदरानी अब तोरत चोलीबँद-डोरि—१०-३२७।

बरज्यौ—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना किया, रोका निषेध किया, निवारण किया।** उ.—(क) ब्रह्म-पुत्र सनकादि गए बैकुण्ठ एक दिन। द्वारपाल जय-विजय हुते, बरज्यौ तिनकौं तिन—३-११। (ख) बार-बार बरज्यौ, नहिं मान्यौ, जनक-सुता तैं कत घर आनी—९-१६०।

बरत—संज्ञा पुं. [सं. व्रत] (१) **व्रत, उपवास।** उ.—दृढ़ बिस्वास बरत कौ कीन्हौ। गौरीपति-पूजन मन दीन्हौं—७६६। (२) **निष्ठापूर्ण और अनन्य प्रीति।** उ.—सूर प्रभु पति बरत राखै, मेटि कै कुलकानि—८६५।

संज्ञा स्त्री. [हिं. बरना] (१) **रस्सी।** (२) **नट की रस्सी।**

संज्ञा पुं. [सं. व्रण] **(छड़ी आदि से) मारे जाने का उभरा या सूजा हुआ चिह्न।**

वि. [हिं. बलना] **जलता-बलता हुआ।** उ.—दसहुँ दिसा तैं बरत दवानल आवत है ब्रज जन पर धायौ—५९१।

बरतत—क्रि. अ. [हिं. बरतना] **संबंध रखते हैं, व्यवहार करते हैं, साथ निभाते हैं।** उ.—प्रभु तैं जन, जन तैं प्रभु बरतत, जाकी जैसी प्रीति हिऐं—१-८९।

बरतन—संज्ञा पुं. [सं. वर्तन] **पात्र, बर्तन।**

संज्ञा पुं. [हिं. बरतना] **बरताव, व्यवहार।**

बरतना—क्रि. अ. [सं. वर्तन] **बरताव करना।**

क्रि. स.—**काम या व्यवहार में लाना।**

बरताना—क्रि. स. [हिं. बरतना] **काम में लाना।**

क्रि. स. [सं. वितरण] **बाँटना, वितरण करना।**

बरताव—संज्ञा पुं. [हिं. बरतना] **व्यवहार, बर्ताव।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरतावै—क्रि. स. [हिं. बरताना] **भोग करे, व्यवहार में लाये।** उ.—अरु जो परालब्ध सौं आवै। ताहीं कौं सुख सौं बरतावै—३-१३।

बरति—क्रि. अ. [हिं. बलना] **बलती-जलती है।**

मुहा०—आँखि बरति है—**आंख जलती है, दुख और क्रोध होता है।** उ.—काहे को अब रोष दिवावत, देखति आँखि बरति है मेरी—३०१२।

क्रि. स. [हिं. बरना] **ब्याहती है।** उ.—मरे से अपसरा आइ ताकौ बरति भजिहैं देखि अब गेह नारी।

बरती—बि. [हिं. व्रती] **जिसने व्रत रखा हो।**

बरतोर—संज्ञा पुं. [हिं. बार+तोरना] **रोम या बाल उखड़ने से होनेवाला फोड़ा।**

बरदारि—वि. [फा.] (१) **ढोनेवाला।** (२) **माननेवाला।**

बरदौर—संज्ञा पुं. [सं. बरद+औैर] **गोशाला।**

बरध, बरधा—संज्ञा पुं. [सं. बलीबर्द] **बैल।**

बरन—वि. [सं. वर्ण] (१) **रंग, वर्ण।** उ.—ग्वाल-बाल सब बरन बरन के, कोटि मदन की छबि किए पाछे—५०७। (२) **भाँति-भाँति।** उ.—बरन बरन मंदिर बने लोचन नहिं ठहरात—२५६०।

बरनन—संज्ञा पुं. [सं. वर्णन] (१) **वर्णन।** (२) **विवरण।**

बरनना—क्रि. स. [सं. वर्णन] **वर्णन करना।**

बरना—क्रि. स. [हिं. बरनना] **वर्णन किया, कहा।** उ.—(क) काहू कह्यौ मंत्र-जप करना। काहूँ कछु, काहूँ कछु बरना—१,३४१। (ख) जड़ तन कौं है जनमऽरु मरना। चेतन पुरुष अमर-अज बरना—३-१३।

क्रि. स. [सं. वरण] (१) **ब्याहना, विवाह करना।** (२) **नियुक्त करना।** (३) **दान देना।**

क्रि. अ. [हिं. बलना] **जलना।**

बरनि—क्रि. स. [हिं. बरनना] **वर्णन करके।** उ.—मुण्ड माल सिव-ग्रीवा कैसी? मोसौं बरनि सुनावौ तैसी—१-२२६।

प्र०—बरनि सकौं—**वर्णन कर सकूं, बखान सकूं।** उ.—ता रिस मैं मोहिं बहुतक मार्‌यौ, कहुँ लगि बरनि सकौं—१-१५१।

बरनिऐ—क्रि. स. [हिं. बरनना] **वर्णन कीजिए, बखानिए, कहिए।** उ.—सुनि याके उतपात कौं, सुक सनकादिक भागे (हो)। बहुत कहाँ लौं बरनिऐ, पुरुष न उब्बरन पावै (हो)—१-४४।

बरनी—क्रि. स. [हिं. बरनना] **वर्णन की।** उ.—(क) तुम हनुमंत पवित्र पवनसुत, कहियौ जाइ जोइ मैं बरनी—९-१०१। (ख) सुता लई उर लाइ, तनु निरखि-पछिताइ, डरनि गई कुम्हिलाइ, सूर बरनी—६६८।

प्र०—बरनी जाइ—**वर्णन की जाय, कही जाय।** उ.—हृदय हरि-नख अति बिराजत, छबि न बरनी जाइ—१०-२३४।

बरने—क्रि. स. [हिं. बरनना] **वर्णन किये।**

प्र०—बरने जाइ—**वर्णन किये (जाते हैं), वरने (जाते हैं) कहते (हैं)।** उ.—बाबर बरने नहिं जाई। जिहिं देखत अति सुख पाई—१०-१८३।

बरनेत—संज्ञा स्त्री. [हिं. बरना+ऐत] **विवाह की एक रीति।**

बरनौं—क्रि. स. [सं. वर्णन] **वर्णन करूँ, कहूँ।** उ.—कहा गुन बरनौं स्याम, तिहारे—१-२५।

बरन्यौ क्रि. स. [हिं. बरनना] **वर्णन किया, कहा।**

प्र०—बरन्यौ जाइ (जाई)—**वर्णन किया जा सकता है।** उ.—(क) मुख देखत मोहिनि सी लागी, रूप न बरन्यौ जाई री—१०-१३६। (ख) बृन्दाबन ब्रज कौ महत कापै बरन्यौ जाइ—४६२।

बरफी—संज्ञा स्त्री. [फा. बरफ] **एक मिठाई।**

बरबंड—वि. [सं. बलवंत] (१) **बली।** (२) **प्रचंड।**

बरबर—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **व्यर्थ की बात, बकवाद।**

बरबस—क्रि. वि. [सं. बल+वश] (१) **बलपूर्वक।** (२) **व्यर्थ, फिजूल।** उ.—खेलत मैं को काकौ गुसैयाँ। हरि हारे, जीते श्रीदामा, बरबस हीं कत करत रिसैयाँ—१०-२४५।

बरबाद—वि. [फा.] (१) **नष्ट।** (२) **व्यर्थ खर्चा हुआ।**

बरबादी—संज्ञा स्त्री. [फा.] **नाश, तबाही।**

बरम—संज्ञा पुं. [सं. वर्म, **कवच, जिरह बख्तर।**

बरम्हा—संज्ञा पुं. [सं. ब्रह्मा] **ब्रह्मा।**

बरम्हाना—क्रि. स. [सं. ब्राह्मण] **(ब्राह्मण का) आशीर्वाद देना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरम्हाव—संज्ञा पुं. [सं. ब्रह्म+राव] (१) **ब्राह्मणत्व।** (२) **ब्राह्मण का आशीर्वाद।**

बरवा, बरवै—संज्ञा पुं. [देश.] **एक प्रसिद्ध छंद।**

बरष, बरस—संज्ञा पुं. [सं. वर्ष] **साल, वर्ष।** उ.—सहस बरस गज जुद्ध करत भए, दिन इक ध्यान धरे १-८२।

यौ० —बरष-बरषनि—**प्रति वर्ष, बहुत वर्षों तक।** उ.—कान्ह बरष-गाँठि उमँग, चहति बरष बरषनि—१०-९६।

बरषगाँठ, बरसगाँठ—संज्ञा स्त्री. [हिं. बरस+गाँठ] **जन्म-दिन, सालगिरह।** उ.—सूर स्याम ब्रज-जन-मन-मोहन-बरष-गाँठि कौ डोरा खोल—१०-९४।

बरषत, बरसत—क्रि. स. [हिं. बरसाना] (१) **बरसाती हुई, गिराती या बहाती है।** उ.—इतनी सुनत कुंति उठि धाई, बरषत लोचन नीर—१-२९। (२) **बरसाते या गिराते हैं।** उ.—स्रवत स्रोनकन, तन सोभा, छबि-घन बरसत मनु लाल—१-२७३।

बरषना, बरसना—क्रि. अ. [सं. वर्षण, हिं. बरसना] (१) **मेह पड़ना।** (२) **वर्षा-जल के समान ऊपर से गिरना।** (३) **अधिकता से प्राप्त होना।** (४) **अच्छी तरह झलकना।**

बरषा, बरसा—संज्ञा स्त्री. [सं. वर्षा] (१) **पानी बरसने की क्रिया, वृष्टि, वर्षा।** उ.—कीजै कृपा-दृष्टि की बरषा, जन की जाति लुनाई—१-१८५। (२) **वर्षा-काल, बरसात।**

बरषाइ, बरसाइ—क्रि. स. [हिं. बरसना] (१) **मेह गिरा-कर।** (२) **ऊपर से गिराकर।** उ.—जय जय धुनि नभ करत हैं हरषि पुहुप बरषाइ—४३१।

बरषाऊ, बरसाऊ—वि. [हिं. बरसना] **बरसनेवाला।**

बरषात, बरसात—संज्ञा स्त्री. [सं. वर्षा] **वर्षाकाल।**

बरषाती, बरसाती—वि. [हिं. बरसात] **बरसात-संबंधी।**

बरषाना, बरसाना—क्रि. स. [हिं. बरसना] (१) **मेह गिराना।** (२) **ऊपर से मेह की तरह गिराना।** (३) **खूब प्राप्त करना।**

बरषावति, बरसावति—क्रि. स. [हिं. बरसाना] (१) **बरसाती है।** (२) **वर्षा के जल के समान (कोई वस्तु) गिराती है।** उ.—आनँद उर अंचल न सम्हारति, सीस सुमन बरषावति—१०-२३।

बरषासन, बरसासन—संज्ञा पुं. [सं. वर्षासन] **एक मनुष्य या एक परिवार के लिए पर्याप्त एक वर्ष की भोजन-सामग्री।**

बरषी, बरसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बरस] **वार्षिक श्राद्ध।**

बरषावै, बरसावै—क्रि. स. [हिं. बरसाना] **वर्षा के जल की तरह ऊपर से गिराते हैं।** उ.—व्योम-जान फूल अति गति बरसावै री—९९।

बरषै, बरसै—क्रि. स. [हिं. बरसना] **बरसता है, मेह पड़ता है।** उ.—निसि अँधेरी, बीजु चमकै सघन बरसै मेह—१०-५।

बरष्यौ, बरस्यौ—क्रि. स. [हिं. बरसना] **बरसा, जल गिरा (गिराया), मेह पड़ा।** उ.—देवराज मख-भंग जानि कै बरष्यौ ब्रज पर आई—१-१२२।

बरह—संज्ञा पुं. [हिं. बरही] **मोर, मयूर।** उ.—बरह-मुकुट कैं निकट लसति लट, मधुप मनौ रुचि पाए—१०-४१७।

बरहहिं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. बरह+हि (प्रत्य.)] (१) **वृक्ष के पत्ते।** (२) **वृक्ष की पतली सींक या डाल को, तिनके को।** उ.—सोवत काग छुयौ तन मेरौ, बरहहिं कीनौ बान। फोरयौ नयन, काग नहिं छाँड़यौ सुरपति के बिदमान—९-८३।

बरहा—संज्ञा पुं. [हिं. बहना] **खेती की छोटी नाली।**

संज्ञा पुं. [हिं. बरही] **मोर, मयूर।** उ.—बरहा पिक चातक जै जै निसान बाजै—२८१९।

बरही—संज्ञा पुं. [सं. वर्हि] (१) **मोर, मयूर।** उ.—बरही-मुकुट इंद्रधनु मानहुँ तड़ित दसन-छबि लाजति—६३८। (२) **'साही' नामक जंतु।** (३) **मुरगा।** (४) **आग।**

संज्ञा स्त्री. [देश.] **मोटा रस्सा।**

संज्ञा पुं. [हिं. बारह] **जन्म का बारहवां दिन।**

बरहीपीड़—संज्ञा पुं. [सं. बर्हिपीड] **मोरमुकुट।** उ.—बरहीपीड़ दाम गुंजामनि अद्भुत वेष बनावत—सारा० ४७५।

बरहीमुख—संज्ञा पुं. [सं. वर्हिमुख] **देवता।**

बरहौं—संज्ञा पुं. [हिं. बरही] **जन्म का बारहवां दिन।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरा—संज्ञा पुं. [हि. बरा, बड़ा] **एक पकवान जो उर्द की मसालेदार पीठी की टिकियों को घी या तेल में तल कर बनता है, (दही) बड़ा** । उ.—दधि दूध बरा दहिरौरी । सो खात अमृत पककौरी—१०-१८३ ।

संज्ञा पुं. [सं. बट] **बरगद का पेड़** ।

वि. [हिं. बड़ा] **बड़ा, जो छोटा न हो** । उ.—बरा कौर मेलत मुख भीतर, मिरिच दसन टकटौरै—१०-२२५ ।

संज्ञा पुं. [देश.] **भुजदंड का भूषण, टाँड़** ।

बराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बड़ाई] **बड़ाई, प्रशंसा** ।

बराक—संज्ञा पुं. [सं. वराक] (१) **शिव** । (२) **युद्ध** ।

वि.—(१) **नीच, अधम** । (२) **बापुरा, बेचारा** ।

बरात—संज्ञा स्त्री. [सं. वरयात्रा] (१) **बर का संबंधियों और इष्टमित्रों-सहित सजधजकर कन्या के यहाँ जाना, जनेव** । उ.-(क)जनकराज तब विप्र पठाये वेग बरात बुलाई—सारा. २२९ । (ख) सो बरात जोरि तहँ आयौ—१० उ.-७ । (२) **बहुत से लोगों का सजधज कर साथ जाना** । (३) **शव ले जाने वालों का समूह** ।

बराती—संज्ञा पुं. [हिं. बरात+ई (प्रत्य.)] (१) **विवाह के अवसर पर वर-पक्ष की ओर से सम्मिलित होनेवाले** । उ.—(क) तेरी सौं, मेरी सुनि मैया, अबहिं बियाहन जैहौं । सूरदास है कुटल बराती, गीत सुमंगल गैहौं—१०-१६३ । (ख) भए जो मन्मथ सैन्य बराती—पृ. ३४५ (५) । (२) **शव के साथ जानेवाला** ।

बराना—क्रि. अ. [सं. वारण] (१) **बेमतलब की बात बचा जाना** । (२) **बहुत सी बातों या विचारों में कुछ को बचा जाना** । (३) **रक्षा करना** ।

क्रि. स. [सं. वरण] **चुनना, छाँटना** ।

क्रि. स. [हिं. बलाना] **जताना, बताना** ।

बरावर—वि. [फ़ा. बर] (१) **समान, तुल्य, एक सा** । (२) **समान पद या मर्यादावाला** । (३) **समतल** ।

मुहा०—बराबर करना—**समाप्त कर देना** ।

क्रि. वि.—(१) **लगातार** । (२) **एक साथ, साथ** । (३) **सदा** ।

बराबरि, बराबरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बराबर] (१) **बराबर होने की क्रिया या भाव, समानता** । उ.—हरि, हौं सब पतितनि कौ राउ । को करि सकै बराबरि मेरी, सो धौं मोहिं बताउ—१-१४५ । (२) **सादृश्य** । (३) **सामना, मुकाबला** ।

वि.—(१) **सम, समान, तुल्य** । उ.—ज्वाला देखि अकास बराबरि, दसहुँ दिसा कहुँ पार न पाइ—५६४ । (२) **समान रूप, गुण, मूल्यवाला** । उ.—सूरदास प्रभु पारस परस लोहौ कनक बराबरी—३३३१ ।

बरामद—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **निकासी, आमदनी** । उ.—बढ़ौ तुम्हार बरामद हूँ कौ लिखि कीनौ है साफ—१-१४३ ।

वि.—(१) **सामने आया हुआ** । (२) **खोज निकाला हुआ** ।

बराम्हण, बराम्हन—संज्ञा पुं. [सं. ब्राह्मण] **ब्राह्मण** ।

बराय—अव्य. [फ़ा.] **लिए, वास्ते, निमित्त** ।

बरायन—संज्ञा पुं. [सं. वर+आयन] **दूल्हे का लोहे का छल्ला जिसमें गुंजा लगे रहते हैं** ।

बराव—संज्ञा पुं. [हिं. बराना+आव] **बचाव, निवारण** ।

बराह—संज्ञा पुं. [सं. वराह] **सुअर (पशु)** ।

बरि—क्रि. अ. [हिं. बलना] **जल-बलकर** । उ.—देती अबहिं जगाइ कै, जरि बरि होत्यौ छार—५८९ ।

बरिआई—क्रि. वि. [सं. बलात्] **जबरदस्ती, बलात्** । उ.—कृषि आइहैं सब लैहैं बरिआई—१२-३ ।

संज्ञा स्त्री.—**बल-प्रयोग, जबरदस्ती** । उ.—(क) अपनी ओर देखि धौं लीजै ता पाछे करियै बरिआई—११३४ (स) सूरस्याम जो देखिहैं करिहैं बरिआई—पृ. ३१७ (६१) ।

बरिआत—संज्ञा पुं. [हिं. बरात] **बरात** ।

बरिया—क्रि. वि. [हिं. बलात्] **ज़बरदस्ती** । उ.—हरि हौं महा अधम संसारी । आन समुझ मैं बरिया ब्याही, आसा कुमति कुनारी—१-१७३ ।

बरियाई—क्रि. वि. [हिं. बलात] **जबदस्ती, बल से** ।

बरियाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बलात्] (१) **जबरदस्ती** । (२) **धृष्टता, अन्याय** । उ.—देखौ माई बदरनि की बरियाई—९८५ ।

बरियार—वि. [हिं. बल+आर] **बली, बलवान्** ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरिल—संज्ञा पुं. [हिं. बड़ा] **'बड़े' जैसा एक पकवान।**

बरिबंड—वि. [सं. बलवंत] (१) **बलवान, बली प्राणी।** उ.—आगर इक लोह जटित लीन्ही बरिबंड। दुहूँ करनि असुर हयौ, भयौ मांस पिंड—९-९६ (२) **प्रचंड।**

बरिष, बरिस—संज्ञा पुं. [सं. वर्ष] **साल, वर्ष।**

बरिषा, बरिसा—संज्ञा स्त्री. [सं. वर्षा] **वर्षा।**

बरिष्ठ—वि. [सं. वरिष्ठ] **बड़ा, श्रेष्ठ।**

बरी—संज्ञा स्त्री. [सं. बटी, बड़ी] (१) **टिकिया, बरी।** (२) **उर्द या मूँग की पीठी की सुखायी हुई छोटी पकौड़ियाँ।** उ.—(क) पापर बरी अचार परम सुचि। (२) कूटबरी कचरी मिठौरी—३९६। (३) **वह मेवा, मिठाई, आदि जो वर के यहाँ से कन्या के यहाँ जाय।**

क्रि. स. स्त्री. [हिं. बरना] **विवाही, ब्याह किया।** उ.—(क) बहुरि हिमाचल कैं अवतरी। समय पाइ सिव बहुरौ बरी—४-५। (ख) जद्यपि रानी बरी अनेक—९-५।

वि. [हिं. बली] **बलवान्, बली।**

वि. [फ़ा.] **जिसे मुक्त किया गया हो, मुक्त।**

बरीस—संज्ञा पुं. [हिं. बरस] **वर्ष, साल, बरस।** उ.—नंदराइ कौ लाड़िलौ, जीवै कोटि बरीस—१०-२७।

बरु—अव्य. [सं. वर=श्रेष्ठ, भला] (१) **भले ही, चाहे, कुछ हर्ज नहीं, ऐसा भले ही हो जाय।** उ.—(क) बरु मेरी परतिज्ञा जाय—१-२७३। (ख) सूरदास बरु उपहास सहोई, सुर मेरे नंद-सुवन मिलैं तो पै कहा चाहियै। (ग) बरु मरि जाइ चरै नहिं तिनका सिंह को इहै सुभाइ रे—३०७०। (२) **प्रत्युत, बल्कि।** उ.—तब कत कंस रोकि राख्यौ पिय, बरु वाही दिन काहैं न मारी—१०-११। (३) **अब तो।** बरु ऐ बदरौ बरषन आए—३९२६।

बरुआ—संज्ञा पुं. [हिं. बटु] (१) **ब्रह्मचारी।** (२) **जनेऊ।**

बरुक—अव्य. [हिं. बरु] (१) **चाहे।** (२) **प्रत्युत।**

बरुन—संज्ञा पुं. [सं. वरुण] **वरुण देवता।**

बरुनी—संज्ञा स्त्री. [सं. वरण=ढाँकना] **पलक के बाल।**

बरुवा—संज्ञा पुं. [हिं. बरुआ] (१) **ब्रह्मचारी।** (२) **जनेऊ।**

बरूथ—संज्ञा पुं. [सं. वरूथ] **सैन्य, सेना।** उ.—इतनी बिपति भरत सुनि पावैं आवैं साजि बरूथ—९-१४७।

बरुथी—संज्ञा स्त्री. [सं. वरूथ] **एक नदी।**

बरेंड़ा—संज्ञा पुं. [सं. वटंडक=गोल लकड़ी] (१) **खपरैल या छाजन की आधार गोल लकड़ी।** (२) **खपरैल या छाजन का निचला ऊँचा भाग।**

बरे—क्रि. वि. [सं. बल] (१) **बलपूर्वक, जबरदस्ती से।** (२) **ऊँचे स्वर में।**

अव्य. [हिं. बद] (१) **बदले में।** (२) **निमित्त।**

क्रि. अ. [हिं. बलना] **जल-बल गये।** उ.—कै वह स्याम सिखाय प्रबोधे कै वह बीच बरे—२९८२।

बरेखी, बरेषी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाँह+रखना] **बाँह का एक गहना।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. बर+देखना] **विवाह के लिए वर या कन्या को देखना, ठहरौनी।**

बरैं—क्रि. अ. बहु. [हिं. बलना] **जल-बल जायँ।**

मुहा०—जरैं-बरैं वै आँखि—**आँखें नष्ट हो जायँ। या फूट जायँ।** उ.—डीठि लगावति कान्ह को जरैं-बरैं वै आँखि—१०६६।

बरै—क्रि. अ. [हिं. बलना] **बल जाय, नष्ट हो जाय।** उ.—बरै जेंवरी जिहिं तुम बाँधे, परै हाथ भहराइ—३८९।

क्रि. स. [हिं. बरना] **विवाह करे।** उ.—अंतःपुर भीतर तुम जाहु। बरै तुम्हें, तिहिं करौं बिवाहु—९-८।

बरों—क्रि. स. [हिं. बरना] **वरण करूँ।**

बरो—क्रि. स. [हिं. बरना] **वरण करो।**

बरोक—संज्ञा पुं. [हिं. बर+रोक] **वह धन जो कन्या पक्ष वाले विवाह-संबंध को पक्का करने के लिए वर को उसी कन्या के लिए रोक रखने को देते हैं; बरच्छा, फलदान।**

संज्ञा पुं. [सं. बलौक] **सेना, दल।**

बरौं—क्रि. स. [हिं. बरना] **वरण करूँ, वर या वधू के रूप में स्वीकार करूँ।** उ.—(क) देखि सुर असुर सब दौरि लागे गहन, कह्यौ मैं बर बरौं आपु-भायौ—८-८। (ख) कन्या एक नृपति की बरौं—९-८।

बरौ—क्रि. स. [हिं. बरना] वरण करो, वर या वधू-रूप में स्वीकार करो। उ.—या कन्या कौ प्रभु तुम बरौ—९-३।

वि. [हिं. बड़ा] **बड़ा, श्रेष्ठ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरोठा—संज्ञा पुं. [हिं. बार+कोठा] (१) **द्वार।** (२) **बैठक।**

मुहा०—बरोठा-चार—**द्वार-पूजा।**

बरोरु—वि. स्त्री. [सं बरोरु] **सुडौल जाँघवाली।**

बरोह—संज्ञा स्त्री. [हिं. वट+रोह] **बरगद की जटा।**

बरौनी—संज्ञा स्त्री. [सं. वरण] **पलक के बाल।**

बरौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बरी] **बड़ी या बरी (पकवान)।**

वर्ज—वि. [सं. वर्य] **वर, श्रेष्ठ।**

वर्जना—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना करना, रोकना।**

बर्णना—क्रि. स. [हिं. वर्णन] **वर्णन करना।**

बर्त—संज्ञा पुं. [सं. व्रत] **व्रत, उपवास।**

बर्तना—क्रि. स. [सं. वर्तन] (१) **व्यवहार करना।** (२) **काम, उपयोग या व्यवहार में लाना।**

बर्ताव—संज्ञा पुं. [हिं. बरताव] (१) **काम।** (२) **व्यवहार।**

बर्द—संज्ञा पुं. [सं. बलद] **बैल।**

बर्नना—क्रि. स. [हिं. वर्णन] **वर्णन करना।**

बर्फ—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. बर्फ] (१) **पाला, हिम, तुषार।** (२) **जमाया हुआ दूध आदि।** (३) **ओला।**

बर्बर—वि. [सं.] **असभ्य, उद्दंड।**

संज्ञा पुं.—(१) **घुँघराले बाल।** (२) **असभ्य मनुष्य।**

बर्यौ—क्रि. स. [हिं. बरना] **वर या वधू के रूप में स्वीकार किया, बरा, ब्याहा।** उ.—(क) पारबती सिव-हित तप करयौ। तब सिव आइ तहाँ तिहिं बरयौ—४-७। (ख) हरि करि कृपा ताहि तब बरयौ—१० उ.-७।

बर्राना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **व्यर्थ बकना।** (२) **स्वप्न या अति ज्वर की अवस्था में बकना।**

बर्रै—संज्ञा पुं. [सं. बरट] **भिड़, ततैया (कीड़ा)।**

बलंद—वि. [फ़ा.] **ऊँचा।**

बल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शक्ति, सामर्थ्य।** उ.—अति बल करि करि काली हारयौ—५७४। (२) **भार उठाने की शक्ति।** (३) **सहारा, आश्रय।** उ.—मुनि-मन-हंस-पच्छ-जुग, जाकैं बल उड़ि ऊरध जात—१-६०। (४) **आसरा, भरोसा।** (५) **सेना, दल।** (६) **बलराम।** उ.—जबहि मोहिं देखत लरिकनि सँग तबहिं खिझत बलभैया—१०-२१७। (७) **बगल, पहलू, पार्श्व।**

संज्ञा पुं. [सं. वलय] (१) **ऐंठन, मरोड़।** (२) **फेरा, लपेट।** (३) **लहरदार घुमाव।** (४) **टेढ़ापन।** (५) **सिकुड़न।** (६) **लचक।** (७) **कमी, कसर।**

बलकत—क्रि. अ. [हिं. बलकना] (१) **उमंग, आवेश या जोश में आता है।** उ.—पिये प्रेम बर बारुनी बलकति बल न सँभार। पग डगमग जित तित धरति मुकुलित अलक लिलार—११८२।

बलकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **उबलना, उफनना।** (२) **उमंग, आवेश या जोश में आना।**

बलकर—वि. [सं.] **बलकारक।**

बल्कल—संज्ञा पुं. [सं. वल्कल] **वृक्ष की छाल।**

बलकाना—क्रि. स. [हिं. बलकना] (१) **उबालना, खौलाना।** (२) **उभारना, उत्तेजित करना।**

बलकि—क्रि. अ. [हिं. बलकना] **आवेश में आकर, जोश में आकर।** उ.—सखा कहत हैं स्याम खिसाने। आपुहिं आपु बलकि भए ठाढ़े, अब तुम कहा रिसाने—१०-२१४।

बलद—संज्ञा पुं. [सं.] **बैल।**

वि.—**बल देनेवाला, बलकारी।**

बलदाउ, बलदाऊ—संज्ञा पुं. [सं. बल+हिं. दाऊ=दादा=बड़ा भैया] **बलदेव, बलराम, जो रोहिणी के पुत्र थे।** उ.—कछु बलदाऊ कौं दीजै। अरु दूध अधावट पीजै—१-१८३।

बलदेव—संज्ञा पुं. [सं.] **बलराम।**

बलना—क्रि. अ. [सं० वर्हण] **जलना, दहकना।**

बलनिधि—वि. [सं.] **बली, बलवान।** उ.—इंद्रजीत बलनिधि जब आयौ, ब्रह्मअस्त्र उन डारे-सारा. २८४।

बलबलाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **ऊँट का बोलना।** (२) **व्यर्थ बकना।** (३) **निरर्थक शब्द बोलना।**

बलबलाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. बलबलाना] (१) **ऊँट की बोली।** (२) **बकवाद।** (३) **उमंग।** (४) **घमंड।**

बलबीर, बलबीरा—संज्ञा पुं. [सं. बल=बलराम+हिं. बीर=भाई] **बलराम के भाई, श्रीकृष्ण।** उ.—है करयौ सिरावन सीरा। कछु हठ न करौ बलबीरा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०-१८३ । (ख) छहौ रागिनी गाय रिझावत अति नागर बलबीर ।

त्रि.—**बली, बलवान** । उ.—जनि पूछौ तुम कुसल नाथ की, सुनौ भरत बलबीर—६-१५१ ।

बलभद्र—संज्ञा. पुं. [सं.] **बलदेव** ।

बलभी—संज्ञा स्त्री. [सं वलभि] **मकान की ऊपरी कोठरी** ।

बलम—संज्ञा पुं. [सं. वल्लभ] (१) **पति** । (२) **प्रेमी** ।

बलय, बलया—संज्ञा पुं. [सं. वलय] **चूड़ी** । उ.—(क) कनक-वलय, मुद्रिका मोदप्रद, सदा सुभग संतनि काजैं —१-६६ । (ख) छूटी लट भुज फूटी बलया टूटी लर फटी कंचुकी झीनी—३४४६ ।

बलराम—संज्ञा पुं. [सं.] **रोहिणी-पुत्र बलराम** ।

बलवंड—वि. [सं. बल+वंतः] **बली** । उ.—आगर इक लोह जटित लीनी बरिबंड । दुहूँ करनि असुर हयो भयो मांस पिंड—६-६६ ।

बलवंत—वि. [सं. बलवंतः] (१) **प्रधान** । उ.—भरम ही बलवंत सबमैं, ईसहू कैं भाइ—१-७० । (२) **बली** । उ.—जो ऐसे बलवंत हौ मथुरा काहे न जात—११३६ ।

बलवा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **दंगा** । (२) **विद्रोह** ।

बलवाई—वि. [हिं. बलवा] (१) **उपद्रवी** । (२) **विद्रोही** ।

बलवान—वि. [सं. बलवान्] (१) **बली, सशक्त** । (२) **दृढ़** ।

बलवीर—संज्ञा पुं. [हिं. बलबीर] **श्रीकृष्ण** ।

बलशाली, बलसार—वि. [हिं. बलशाली] **बली** । उ.—कुंभकरन पुनि इंद्रजित यह महाबली बलसार—सारा. २६२ ।

बलशील, बलसील—वि. [सं. बलशील] **बली, सशक्त** ।

बला—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **विपत्ति** । (२) **दुख** । (३) **भूत-प्रेत** । (४) **रोग, व्याधि** ।

मुहा०—बला का—**गजब का** । बला से—**कुछ चिंता नहीं** ।

बलाइ—संज्ञा पुं. [अ. बला] (१) **आपत्ति, विपत्ति, बला** । उ.—बालगोपाल लगौ इन नैननि रोग-बलाइ तुम्हारी—१०-६१ । (२) **दुख, कष्ट** ।

मुहा०—लेत बलाइ—**दूसरे के दुख को अपने ऊपर लेती है, मंगल-कामना करते हुए प्यार करती है** । उ.—निकट बुलाइ बिठाइ निरखि मुख, अंचर लेत बलाइ । चिरजीवौ सुकुमार पवन-सुत, गहति दीन है पाइ—६-८३ ।

(३) **दुखदायी वस्तु या प्राणी** । उ.—स्याम सौं वै कहन लागे, आगैं एक बलाइ—४२७ ।

बलाक—संज्ञा पुं. [सं.] **बक, बगुला** । उ.—(क) मुक्ता-दाम बिलोकि, बिलखि करि, अँवलि बलाक बनावत ६६५ । (ख) मनहु बलाक पाँति नव घन पर यह उपमा कछु भाजै री—१३४३ ।

बलाका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बगुली** । (२) **बगुलों की पंक्ति** । (३) **कामुकी नारी** ।

बलात्—क्रि. वि. [सं.] (१) **बलपूर्वक** । (२) **हठपूर्वक** ।

बलात्कार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बलपूर्वक काम करना** । (२)**अत्याचार** । (३) **स्त्री से बलपूर्वक संभोग** ।

बलाध्यक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] **सेनापति** ।

बलाय—संज्ञा पुं. [अ. बला] (१) **विपत्ति** । उ.—बाल गोपाल लगौ इन नैननि रोग-बलाय (बलाइ) तुम्हारी —१०-६१ । (२) **दुख, कष्ट** । (३) **भूत-प्रेत की बाधा** (४) **रोग, व्याधि** । (५) **शत्रु, दुखदायी प्राणी** ।

मुहा०—बलाय करे—**स्वयं नहीं कर सकता** । बलाय लेना—**किसी का रोग-दुख अपने ऊपर लेने को प्रस्तुत होकर उसकी मंगल-कामना करते हुए प्यार करना** । लेति बलाय—**मंगलकामना करके प्यार करती है** । उ.—(क) निकट बुलाय बिठाय निरखि मुख आँचर लेति बलाय । (ख) लेति बलाय रोहिनी नारि के सुंदर रूप निहारी—सारा. ४५७ ।

बलाहक—संज्ञा पुं. [सं.] **मेघ, बादल** । उ.—कहा कहौं वर्षा रबि-तमचुर-कमल-बलाहक कारे—२८६२ ।

बलि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **राजकर** । (२) **उपहार, भेंट** । (३) **पूजा की सामग्री** । (४) **देवता को उत्सर्ग किया गया खाद्य पदार्थ** । (५) **भक्ष्य, अन्न** । उ.—हम सेवक वै त्रिभुवनपति, कत स्वान सिंह-बलि खाइ—६-४७ । (६) **चढ़ावा, नैवेद्य** । उ.—(क) सक्र कौ दान-बलि-मान ग्वारनि लियौ, गह्यौ गिरि पानि, जस जगत छायौ—१-५ । (ख) पर्वत सहित धोइ ब्रज डारौं देउँ समुद्र बहाई । मेरी बलि औरहिं लै अर्पत इनकी करौं सजाई । (७) **वह पशु जो किसी देवी-देवता पर भेंट**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ़ाने के लिए मारा जाय।

मुहा०—बलि चढ़ना—**मारा जाना।** बलि चढ़ाना—(१) **मारना।** (२) **देवता के लिए मारना।** बलि-बलि जाना—**निछावर होना।** बलि जाइ—**निछावर होता है।** उ.—यह सुख निरखि मुदित सुर-नर-मुनि, सूरदास बलि जाइ—९-२९।

(८) **प्रहलाद का पौत्र और विरोचन का पुत्र जिसे छलकर वामन भगवान ने पाताल भेजा था।** उ.—जुग जुग बिरद इहै चलि आयो भए बलि के द्वारे प्रतिहार—२६२०।

संज्ञा स्त्री. [सं. बला=छोटी बहन] **सखी।**

बलिकर्म—संज्ञा पुं. [सं.] **बलिदान।**

बलित—वि. [हिं. बलि] **बलि चढ़ाया हुआ।**

वि. [सं. वलित] **घूमा या मुड़ा हुआ।**

बलिदान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवी-देवता को नैवेद्य चढ़ाना।** (२) **पशु को देवी-देवता के नाम पर मारना।**

बलिनंदन—संज्ञा पुं. [सं.] **बाणासुर।**

बलिपशु—संज्ञा पुं. [हिं. बलि+पशु] **वह पशु जो देवी-देवता पर भेंट चढ़ाने के लिए मारा जाय।**

बलिष्ठ—वि. [सं.] **बहुत बली या सशक्त।**

बलिहारना—क्रि. स. [हिं. बलि+हारना] **निछावर करना।**

बलिहारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बलि+हारना] **निछावर, अपने को उत्सर्ग कर देना।** उ.—बेर मेरी क्यौं ढील दीन्ही, सूर बलिहारी—१-१७६।

मुहा०—बलिहारी जाना—**निछावर होना, बलैया लेना।** बलिहारी लेना—**प्रेम दिखाना।** लेन लगीं बलिहारी—**बलैया लेने लगीं।** उ.—दरसन करि जसुमति-सुत को सब लेन लगीं बलिहारी। बलिहारी है—(१) **इतना सुंदर है कि मैं अपने को निछावर करने को प्रस्तुत हूँ (प्रशंसा)।** (२) **इतना बुरा या बेढंगा है कि धन्य है (व्यंग्य)।**

बलिहि—संज्ञा पुं. सवि. [सं. बलि+हिं. हि] **भोजन से निकाला हुआ ग्रास।** उ.—पिक चातक बन बसन न पावहिं बाइस बलिहिं न खात—३४६०।

बली—वि. [सं. बलिन्] **बलवान, पराक्रमी।** उ.—काल बली तैं सब जग काँप्यौ—१-५२।

बलीमुख—संज्ञा पुं. [सं. वलिमुख] **बंदर।**

बलुआ—वि. [हिं. बालू] **रेतीला।**

बलैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. बलाय] **बला, बलाय।** उ.—(क) फोरतौ बासन सब, जानति बलैया—३७२। (ख) यह सुनिकै हरि हँसे, काल्हि मेरी जाय बलैया—४३७।

मुहा०—बलैया लेना—**मंगल-कामना करते हुए प्यार करना।** लेति बलैया—**मंगल-कामना करते हुए प्यार करती है।** उ.—(क) सिखवति चलन जसोदा मैया। ········। कबहुँक सुंदर बदन बिलोकति उर आनँद भरि लेति बलैया—१०-११५। (ख) सूर निरखि जननी हँसी, तब लेति बलैया—६६६।

बल्कल—संज्ञा पुं. [सं. वल्कल] **वृक्ष की छाल के वस्त्र जिन्हें तपस्वी पहनते थे।** उ.—पात्र स्थान हाथ हरि दीन्हे। बसन-काज बल्कल प्रभु कीन्हे—२-२०।

बल्कि—अव्य. [फ़ा.] (१) **प्रत्युत।** (२) **अच्छा हो यदि।**

बल्लभ—संज्ञा पुं. [सं. वल्लभ] (१) **पति।** (२) **प्रेमी।**

बल्लम—संज्ञा पुं. [हिं. बल्ला] (१) **सोंटा।** (२) **भाला।**

बल्लव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चरवाहा।** (२) **रसोइया।**

बल्ला—संज्ञा पुं. [सं. वल=लट्ठा] (१) **डंडा।** (२, **डाँड़ा।**

बल्लिन, बल्लिनि—संज्ञा स्त्री. बहु. [सं. वल्ली] **लताएँ, बेलें।** उ.—पुहुप गए बहुरौ बल्लिन के नेक निकट नहिं जात—३३५४।

बल्ली—संज्ञा. स्त्री [हिं. बल्ला] (१) **खंभा।** (२) **डाँड़।**

संज्ञा स्त्री. [सं. वल्ली] **लता, बेल।**

बवँडत—क्रि. अ. [हिं. बवँडना] **मारा-मारा फिरता है।** उ.—इत उत है तुम बवँडत डोलत करत आपने जी की।

बवँडना—क्रि. अ. [सं. व्यावर्त्तन, प्रा. व्यावट्टन] **घूमना।**

बवंडर—संज्ञा पुं. [सं. वायु+मंडल] (१) **बगूला, चक्रवात।** (२) **आँधी, तूफान।**

बवघूरा—संज्ञा पुं. [हिं. वायु+घूर्णन] **बगूला, बवंडर।**

बवना—क्रि. स. [सं. वपन] (१) **बोना।** (२) **बिखराना।**

क्रि. अ.—**छिटकना, बिखरना।**

संज्ञा पुं. [सं. वामन] **वामन अवतार।**

बवरना—क्रि. अ. [हिं. बौरना] **आम में बौर लगना।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसंत—संज्ञा पुं. [सं. वसंत] **वसंत ऋतु ।**

क्रि. अ. [हिं. बसना] **बसते हो ।** उ.—ब्रज-बनिता के नयन प्रान बिच तुमही स्याम बसंत ।

बसंती—वि. [हिं. बसंत] (१) **बसंत ऋतु संबंधी । (२) सरसों के रंग का, खुलते पीले रंग का ।**

संज्ञा पुं. (१) **हलका पीला रंग । (२) पीलाकपड़ा ।**

बसंदर—संज्ञा पुं. [सं. वैश्वानर] **आग ।**

बस—संज्ञा पुं. [सं. वश] (१) **अधिकार, काबू ।** (२) **वशीभूत, विवश, अधीन ।** उ.— (क) जिहिं जिहिं जोनि फिर्यौ संकट-बस तिहिं-तिहिं यहै कमायौ—१-१११ । (ख) सदा सुभाव सुलभ सुमिरन बस, भक्तनि अभै दियौ—१-१२१ । (३) **किसी बात को अपने अनुकूल घटित करने की सामर्थ्य, शक्ति, काबू ।** उ.—गर्भ परिच्छित रच्छा कीनी, हुतौ नहीं बस माँ कौ—१-११३ ।

वि. [फा.] **पर्याप्त, बहुत काफी ।**

मुहा०—बस या बस करो—**इतना पर्याप्त है ।**

अव्य.—(१) **पर्याप्त । (२) केवल, इतना मात्र ।**

बसत—क्रि. अ. [हिं. बसना] (१) **बसा है, स्थिति है ।** उ.—कालिंदी कैं कूल बसत इक मधुपुरि नगर रसाला—१०-४८। (२) **बसते हैं, रहते हैं ।** उ.— जाति-पाँति हमतैं बड़ नाहीं,नाहीं बसत तुम्हारी छैयाँ—१०-२४५ ।

मुहा०—प्रान बसत हैं—**इन्हीं को देखकर जीवित हूँ ।** उ.—इनहीं में मेरे प्रान बसत हैं, तेरे भाएँ नैकु न माई—७१० ।

बसति—क्रि. स. [हिं. बसना] **बसती है, वास करती है ।** उ.—(क) परम कुबुद्धि, अजान ज्ञान तैं, हिय जु बसति जड़ताई—१-१८७ । (ख) नाहिंन बसति लाल कछु तुम्हरैं—७३५ ।

बसतै—क्रि. अ. [हिं. बसना] **बसता, निवास करता ।**

प्र०—बसतै रहियै—**निवास कर सकूँ, बसूँ, बसा रहूँ ।** उ.—सोइ करौ जु बसतै रहियै, अपनौ धरियै नाउँ—१-१८५ ।

बसन—संज्ञा पुं. [सं. वसन] **वस्त्र ।** उ.—कमलनैन काँधे पर न्यारो पोत बसन फहरात—२५३६ ।

बसना—क्रि. अ. [हिं. वसन] (१) **रहना, वास करना । (२) आबाद होना ।**

घर बसना—**विवाह करके गृहस्थ बनना ।** घर में बसना—**घर बनाकर सुख से रहना ।**

(३) **टिकना, ठहरना, डेरा डालना ।**

मुहा०—मन में बसना—**हर समय ध्यान रहना ।**

क्रि. अ. [हिं. बास] **सुगंधित हो जाना ।**

संज्ञा पुं. [सं. वसन] (१) **बेठन । (२) थैली ।**

बसनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. बसना] **बास, निवास ।**

बसवास—संज्ञा पुं. [हिं. बसना + वास] (१) **निवास ।** उ.—(क) मथुरा में बसवास तुम्हारौ । (ख) जौ तुम पुहुप पराग छाँड़ि कै करौ ग्राम बसवास । (२) **रहने का ढंग, स्थिति । (३) रहने का डौल या ठिकाना ।** उ.—अब बसवास नहीं लखौं यहि तुव ब्रज नगरी ।

बसर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **गुजर, निर्वाह ।**

बसह—संज्ञा पुं. [सं. वृषभ, प्रा. बसह] **बैल ।** उ.—अमरा सिव रवि ससि चतुरानन हय गय बसह हंस मृग जावत ।

बसा—संज्ञा स्त्री. [देश.] **बर्रे, भिड़, ततैया ।**

बसाइ—क्रि. अ. [सं. वश] **वश, जोर या अधिकार चलता है ।** उ.—(क) तौ हम कछु न बसाइ पार्थ जौ श्रीपति तोहिं जितावै—१-२७५ । (ख) जहाँ तहाँ सोइ करत सहाइ । तासौं तेरौ कछु न बसाइ—७-२ । (ग) यासौं हमरौ कछु न बसाइ—७-७ ।

बसाई—क्रि. स. [हिं. बसाना] **बसने या रहने को प्रवृत्त किया ।** उ.—पृथी सम करि प्रजा सब बसाई—४-११ ।

क्रि. अ. [सं. वश] **वश, जोर या अधिकार चलता है ।** उ.—चाहत बास कियो बृन्दाबन बिधि सौं कछु न बसाई—१० उ०-१०६ ।

बसाए—क्रि. स. [हिं. बसाना] **बस जाने दिया, रहने दिया, रहने को ठिकाना दिया ।** उ.—नूपुर कलरव मनु हंसनि-सुत रचे नीड़, दै बाँह बसाए—१०-१०४ ।

बसात—क्रि. अ. [हिं. बस] **वश या जोर चलता है ।** उ.—नाहिंन बसात लाल कछु तुमसौं सबै ग्वाल इकठैयाँ ।

बसाना—क्रि. स. [हिं. बसना] (१) **रहने को स्थान देना ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) **आल्हाद करना।**

मुहा०—घर बसाना—**विवाह करके गृहस्थ बनना।**

(३) टिकने देना, ठहराना, स्थित करना।

मुहा०—मन में बसाना—(१) **हर समय ध्यान बनाये रखना।** (२) **प्रेम करना।**

क्रि. अ.—**रहना, बसना, ठहरना।**

क्रि. स. [सं. वेशन] (१) **बैठाना।** (२) **रखना।**

क्रि. अ. [हिं. बस] **वश या जोर चलना।**

क्रि. अ. [हिं. बास] **महकना, सुगंध देना।**

बसायो, बसायौ—क्रि. स. [हिं. बसना] (१) **बसाया, टिकाया।**

मुहा—हृदय बसायौ—**चित्त में इस प्रकार जमाया कि सदैव ध्यान बना रहे, हृदय में (सदा के लिए) अंकित किया, हृदयंगम किया।** उ.—व्यासदेव जब सुकहिं पढ़ायौ। सुनि कै सुक सो हृदय बसायौ—१-२२७।

(२) **स्थित किया।** उ.—हरि जी कियौ बिचार, सिंधु-तट नगर बसायौ—१० उ०—३।

क्रि. अ. [हिं. बस] **वश, जोर या अधिकार चल सका।** उ.—उनसौं हमरौ कछु न बसायौ। तातैं तुम कौं आनि सुनायौ—६-४।

बसावै—क्रि. अ. [हिं. बस] **बस, जोर या अधिकार चलता (है)।** उ.—कह्यौ, इंद्रानी मोवै आवै। नृप सौं ताकौं कहा बसावै—६-७।

बसाहीं—क्रि. अ. [हिं. बसना] **बसते हैं।** उ.—सूरदास प्रभु टरत न टारे नैननि सदा बसाहीं—१४३६।

बसिऐ—क्रि. अ. [हिं. बसना] **रहिए, वास कीजिए।** उ.—गोकुल होत उपद्रव दिन प्रति, बसिऐ बृन्दावन में जाई—४०२।

बसियाना—क्रि. अ. [हिं. बासी] **बासी हो जाना।**

बसिबे, बसिबो, बसिबौ—संज्ञा पुं. [हिं. बसना] **रहना, बास करना।** उ.—(क) नगर आहि नागर बिनु सूनो कौन काज बसिबे सौं—३३६५। (ख) वहाँ के बासी लोगन को क्यों ब्रज को बसिबो भावै री—१० उ०—८४। (ग) या ब्रज कौ बसिबौ हम छाँड्यौ—१०-३३७।

बसियै—क्रि. अ. [हिं. बसना] **बसते या रहते हैं, वास है, रहना है।** उ.—बसियै एकहिं गाँउ कानि राखत हैं ताते—११२५।

बसियै—क्रि. अ. [हिं. बसना] **बास कीजिए, रहिए।** उ.—सूर कहि क्रूर तैं दूर बसियै सदा, जमुन कौ नाम लीजै जु छानैं—१-२२३।

बसिष्ठ—संज्ञा पुं. [सं. वसिष्ठ] **वसिष्ठ मुनि जो राजा दशरथ के कुल-गुरु थे।**

संज्ञा पुं. [हिं. बसीठ] **संदेशवाहक, दूत।** उ.—तुम सारिखे बसिष्ठ पठाए कहिए कहा बुद्धि उन केरी—३०१२।

बसी—क्रि. अ. [हिं. बसना] **(प्रजा) सुख से रहने लगी।** उ.—सुबस बसी मथुरा ता दिन ते उग्रसेन बैठायौ—सारा. ५३३।

बसीकर—वि. [सं. वशीकर] **वश में करनेवाला।**

बसीकरन—संज्ञा पुं. [सं. वशीकरण] **तंत्र के चार प्रकारों (मारण, मोहन, वशीकरण और उच्चाटन) में एक, मणि, मंत्र या औषध द्वारा किसी को वश में करने का प्रयोग।** उ.—मोहन, मुर्छन, बसीकरन पढ़ि अग मिति देह बढ़ाऊँ—१०-४६।

बसीठ—संज्ञा पुं. [सं अवसृष्ट, प्रा. अवसिट्ठ=भेजा हुआ] **दूत, संदेशवाहक।** उ.—(क) अति सठ ढीठ बसीठ स्याम को हमैं सुनावत गीत। (ख) मैं कुल-कानि किये राखति हौं, ये हठि होत बसीठ—पृ. ३३४ (३६)।

बसीठि, बसीठी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बसीठ] **दूत-कर्म, संदेश देने का कार्य।** उ.—(क) नैननि निरखि बसीठी कीन्हीं मनु मिलियो पद पानी—११६७। (ख) हारि-जोहारि जो करत बसीठी प्रथमहिं प्रथम चिन्हारि—१३५२।

बसीना, बसीनो—संज्ञा पुं. [हिं. बसना] **रहना, बसना।** उ.—इनही ते ब्रजबास बसीनो—१०८६।

बसु—संज्ञा पुं. [सं. वसु] (१) **आठ वैदिक देवताओं का एक गण।** (२) **आठ की संख्या।**

बसुदेव—संज्ञा पुं. [सं. वसुदेव] **श्रीकृष्ण के पिता।**

बसुधा, बसुधाऊ—संज्ञा स्त्री. [सं. वसुधा] **वसुधा, पृथ्वी।** उ.—बामन रूप धरयौ बलि छलि कैं, तीनि परग बसुधाऊ—१०-२२१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है। इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर छै नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड लगेगा।

१००००.६.५६।

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्ववि
हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवभारत प्रेस नादान महल, रोड लखनऊ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

STOCK VERIFY
2020
G.K.V. Library

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar